प्रकाशक :
चौपासनी-शिक्षासमिति
जोधपुर

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय
द्वारा संचालित प्रादेशिक भाषाओं के
विकास सम्बन्धी योजना से सहायता प्राप्त

प्रथम संस्करण

मूल्य 75 रु०

मुद्रक :
हरिदत्त थानवी
श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस,
जोधपुर

नर काई चिंतवै, करै परमेस्वर कांई
नर तो धारै सहज, करै मुसकल्ल गुसांई
रांवण मन जाणतौ, करूं सीता पटराणी
रांडि मंदोदरि हुई, लंक पुनि हुई विरांणी
कहियौ न हुवौ दसकंध रो, खांवंद रा अखरां खरां
कवि ओप अग्यांनी नर कहै, नव्वां री तेरा करां

—ओपौ आढौ

अपनी बात

राजस्थानी शब्दकोष के चतुर्थ खण्ड की प्रथम जिल्द सुहृदय पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष है। वर्षों की लगन से जो कार्य सम्पन्न होता है, उसमें व्यवधानों की संख्या भी कम नहीं होती। लेकिन हमारा कर्त्तव्य व्यवधानों से विचलित होना नहीं है अपितु कार्य की गति को कायम रखने में निहित है। कोष के कार्य को गति देने के लिए समिति की ओर से हर सम्भव प्रयत्न किये जा रहे हैं।

मैं इस उप समिति के पहले की उप समिति के सभी सदस्यों और अध्यक्षों को धन्यवाद देता हूं कि जिनके प्रयासों से यह कार्य यहां तक आगे बढ़ पाया।

मुझे विश्वास है कि कोष के विद्वान सम्पादक श्री सीतारामजी लालस, चौपासनी शिक्षा समिति के उत्साही सदस्यों और राजस्थान सरकार के सहयोग से यह कार्य यथा-समय सम्पन्न हो सकेगा।

प्रहलादसिंह
अध्यक्ष
उप-समिति राजस्थानी शब्द-कोष
व कोषाध्यक्ष, चौपासनी शिक्षा समिति,
जोधपुर।

जोधपुर,
३-१२-१९७३

प्रकाशकीय

चौपासनी शिक्षा समिति की विभिन्न गतिविधियों में राजस्थानी शब्दकोष का प्रकाशन भी एक महत्वपूर्ण कार्य है। यह कार्य शिक्षा समिति द्वारा संचालित राजस्थानी शोध संस्थान के अन्तर्गत प्रारम्भ किया गया था परन्तु कालान्तर में इस कार्य के वृहद स्वरूप को देखते हुए इस कार्य के संचालन के लिये शिक्षा समिति ने इस कार्य में विशेष रुचि रखने वाले अपनें सदस्यों की एक उप-समिति का गठन किया। तब से शिक्षा-समिति की ओर से यह उप-समिति इस कार्य की देख-भाल करती है।

समय समय पर शिक्षा-समिति की ओर से इस समिति के गठन में परिवर्तन भी किये गये हैं परन्तु समिति के सभी सदस्यों ने यथा शक्ति इस कार्य को आगे बढ़ाने का स्तुत्य प्रयास किया है। हम स्वर्गीय कर्नल श्यामसिंहजी का आभार कभी नहीं भूल सकते जिन्होंने हर प्रकार से इस कार्य को गति देने में अपना असाधारण योग दिया है।

कोष कार्यालय के नियमित संचालन के लिये राजस्थान सरकार द्वारा आवर्तक अनुदान दिया जाता है तथा कोष की छपाई व कागज आदि के लिये राजस्थान सरकार एवं केन्द्रीय सरकार द्वारा अनावर्तक-अनुदान दिया जाता है। अन्य साधनों से भी अर्थ-व्यवस्था की जाती है।

हम राजस्थान सरकार के भूतपूर्व शिक्षा मंत्री श्री चंदनमलजी वैद तथा शिक्षा आयुक्त श्री महेन्द्रसिंहजी के बड़े आभारी हैं कि इस कार्य के महत्व को समझते हुए उन्होंने अपने कार्यकाल में कोष को सरकारी अनुदान दिलवाने में बड़ी उदारता और सहृदयता से अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया। साथ ही कोष के सम्पादक श्री सीताराम लालस को, जो कि अब ६१ वर्ष के हो गये हैं, २ वर्ष तक और सवैतनिक कार्य करने की स्वीकृति देने की जो कृपा की है उससे भी हमारी एक बड़ी कठिनाई हल हो गई है।

कोश के इस चतुर्थ खण्ड की प्रथम जिल्द में य से ल तक के वर्ण छप चुके हैं। आगे इसी खण्ड के ३ भाग और निकलेंगे जिनके सम्पादन का बहुत सा कार्य सम्पन्न हो चुका है और हमें आशा है कि सरकार और विज्ञ पाठकों का सहयोग इसी प्रकार मिलता रहा तो २—३ वर्षों में यह कार्य पूर्ण हो जायगा।

कागज और छपाई की बढ़ती हुई मंहगाई के कारण इस जिल्द का मूल्य हमें रुपये रखना पड़ रहा है।

अन्त में हम पहले की उप-समितियों के सदस्यों और अध्यक्षों तथा उन सभी सज्जनों का आभार प्रकट करते हैं, जिन्होंने इस महत्वपूर्ण कार्य में अपना अमूल्य सहयोग दिया है।

प्रेमसिंह
मंत्री

जोधपुर, ३-१२-१९७३. उप-समिति राजस्थानी शब्द कोष व चौपासनी, शिक्षा समिति :

॥ श्री ॥

* निवेदन *

-:दूहा सोरठा:-

नारायण भूले नहीं, अपणी माया ईश । रोग पैल ओखद रचै, जगवाळा जगदीश ॥१॥
साच न बूढ़ो होय, साच अमर संसार में। कैतो घोवो कोय, ओ सेवट प्रकटे 'उदय' ॥२॥
सेवा देश समाज, धरती में साचो धरम । इण सूं पूरै आस सकल मनोरथ सांवरो ॥३॥
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज री । आवे इण एवाह ईसर किरपा सू उदय ॥४॥
खत ऊजळा संदेश, उदयराज ऊजल असै । दीपै वांरा देश, ज्यांरा साहित जगमगै ॥५।

भारत संसद में सन् १९५० रे करीब देशरी दूसरी सगला प्रान्तां री भासावां मानी गई उणां रे सामल राजस्थानी भाषा ने नहीं मानी तो कुदरती तौर सूं राजस्थान में अपणी भाषा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सारु आन्दोलन पत्रों में शुरू हुवो ।

राजस्थानी रै विरोध में अवसर आ बात कही जाती के इण रो कोई आधुनिक कोश नहीं हो । ओ घाटो मिटावण सारु म्हैं सीतारामजी लालस ने कयो क्योंकि हूं जाणतो हो के डिंगल रा संग्रह रो उणा ने काफी अनुभव है । श्री सीतारामजी इणा काम सारू तैयार हो गया ने म्हैं दोनु सामिल होय ने पूरा सहयोग सूं मेंनत सूं कोश रो काम शुरु कियो ने इण में खर्च री मदत री जरूरत हुई तो उसा बाबत म्है स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिंहजी साहब बार एटला पोकरण ने अरज करी । इणां कृपा करने मंजूर करी ने तारीख १-५-५१ सूं रुपीया री मदद देणी चालू कर दीवी । सीतारामजी मथाणिया में लेखक राख ने काम शब्द संग्रह री स्लिप कोपियां लिखावण रो चालू कर दीयो और म्हैं दोनू तारीख १-५-५१ सूं सन् १९५२ रा आखिर तक सामिल कोंम कियो जिण सूं कुल शब्द ११३००० स्लिप कोपियां में लिखीजीया फेर समय रा हेरफेर सूं श्री पोकरण ठाकुर साहब री सहायता बंद हो गई, इण सूं सन् १९५३ लगायत सन् १९५६ तक ४ साल तक कोश रो काम बंद रैयो ।

इण कोश ने पूरो करण री म्हां दोनूं री लगन ही । म्हैं करनल श्री स्यामसिंहजी रोडला ने जून सन् १९५६ में कोश में सहायता देवण सारु कागद लिखियो इण रो जवाब उणां तारीख २९-६-५६ रा कागद में म्हने लिखियो के कोश सारु माबार रु० ५०) ३ या ४ साल तक या कोश पूरो होवे जठा तक दे सकूंला । परन्तु उणारा पिता करनल श्री अनोपसिंहजी बीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू होणे में देरी हुई । उणां रे स्वर्गवास होणे रे बाद में नवम्बर रा अन्त में ने दिसम्बर रा शुरू में जोधपुर में ही जद कर्नल श्री सामसिंहजी कोश री मदत बाबत बातचीत करणने दोयवार म्हारे मकान पर आया और फिर सहायता देणी चालू कर दीवी ।

कोश रो काम उणां री सहायता सूं सन् १९५७ री जनवरी सूं सीतारामजी जोधपुर में चालू कर दियो क्योंकि जद उणां रो तबादलो जोधपुर में हो गयो हो । जो एक लाख तेरह हजार शब्दों की स्लिप कोपियां पेली बणी हुई ही । इणतरे सब शब्द अक्षरवार किया जाय ने उणां अक्षरवार रजिस्टर में लिख लिया गया इणतरे कोश सन् १९५८ री माह मई तक पूरो हो गयो । म्हैं पैली री तरे सीतारामजी रे साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखी ने काम कियो ओ कोप करनल श्री सामसिंहजी री रुपीया री सहायता सूं पूरो हुवो ।

इणरे बाद प्रेस कापी बणावण रो काम चालू हुवो । उणरे खरचे रो प्रबन्ध ठाकुर श्री गोरधनसिंहजी मेड़तिया खानपुर वाला श्री झालावाड़ दरबार सूं श्री नीवाज ठाकुर साहब सूं रुपियां री सहायता लेने करायो ने तरे छपण रो प्रबन्ध राजस्थानी सोध संस्थान चोपासणी जोधपुर सूं हुवो ने तारीख ११-३-५६ ने सीतारामजी ने इण सोध संस्थान शिक्षा विभाग सू लोन पर ले लिया जद सूं वे इण संस्थान में काम करण लागा ।

इण कोश ने तैयार करावण में व्युत्पति विभाग पूरो करावण में स्वर्गीय पं० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपुर की घणी मतद ही इण वास्ते वैकुंठवासी विदवान ने घणा धन्यवाद देवां हां । तारीख २२-५-५७ ने लिख दय्या नीचे मुजब हो:—

चांद बावड़ी
ता० २२-५-५७

सीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना को है। यह भारी कठिन कार्य का यंत्र श्री उदयराजजी उज्जवल यंत्री (मेंकेनिकल) के वल संचालित हुवा है। मैंने इसे देखा, इन्होंने प्रत्येक शब्द और धातु को जांचकर उनके प्रयोज्य सव प्रकार के प्रयोगों को प्रदर्शित किया है क्योंकि इन्होंने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश विविध भाषाओं के वल पर यह कार्य भार उठाया है। बीच बीच में हर समय मेरे साथ विचार विमर्श करते हुए आपने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन कार्य को पार करने में श्री सीतारामजी की ही पूर्ण कृपा ने सहायता की है। आशा है राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश की त्रुटी की पूर्ती से पूर्ण संतुष्ठ होगी और श्रम को समझने वाले विद्वान कार्य की प्रशंसा करेंगे। फकत-नित्यानन्द शास्त्री।

इण तरे ननण विश्वविद्यालय सूं डा० डब्लू० एस० एलन जो संसार री करीब चालीस भाषाओं रो जानकार है ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती रा भाषा शास्त्री है वे राजस्थानी भाषा रे ध्वनि विज्ञान संबंधी जांच वो शोध रो काम सारु सन् १९५२ में राजस्थान आया हा ने जोधपुर में दोय मास ठहरिया हा ने भाषा रे सिलसिले में म्हारे कने घणा आता उणांने म्हे ने सीतारामजी दोनू कोश वाली स्लिप कोपिया राय रे वास्ते म्हारे मकान पर दिखाई ही उणां म्हारो उत्साह बधायो उणां री सम्मति नीचे मुजब है:—

Thinity College Cambridge — **26 Feb., 1960**

It is excellent news for Indo/Aryan Linguistics that the Rajasthan Dictionary of Shri Udayraj Ujjawal and Shri Sitaram Lalas is new to be published Rajasthani has long pressented a serious gap in the comparative study of the voca-bulary of the Indo-Aryan Languages and now at Last it is filled by the evoted work of two Rajasthani Scholars and the support of their distinguished Sponsors. I know well the difficulties that have beset the undertaking of this task and its Completion is therefore all the more a menument to the courage of these who conceived the project and brought it to fruition. With this work added to the grammer by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthani language can no Longer be denied.

Sd. W. S. Allen M. A. P. H. D.
Professor Comprative Philology
In the University of Cambridge.

कोश दोय दातार राजपूत सरदारों री रुपया री मदत सूं शुरु होय ने पूरो बणियो इण वास्ते पुरानो प्रथा रे माफत म्हे ता० २६-६-५७ ने इण बाबत काव्य गीत, कविता, रचियो ने सीतारामजी कने भेजीया वो अठे दिया जावे है इण में दोनूं सरदारां रो धन्यवाद रे तौर पर वर्णन है। इण गीत री सीतारामजी पत्रों में तारीफ की है।

"गीत" राजस्थानी में

कोम मरू वाणरो सुणे वण्यो नह किण सू, लाख शब्दो तणे वडो लेखो गया भूपात, कवराज गुण गावता, दियो नह ध्यान इण हेत देखो ॥१॥
खूटगा सजना नरेसो देखता, गया तजमाल ठकरेत गाढा । सेव साहित्य री वणी न किणी सू, लागता पंथ घन छोड़ लाडा ॥२॥
सेव साहित्य ही रहे ससार में, सुजसफल लगावे घणी सरसे । गिले सुखलाध हितकर चित समाजां, दिनों दिन कितां सनमान दरसै ॥३॥
पांण मरू वांन है प्रांत रो परंपर, वेण परताप राजस्थान ऊंचो । रखी नह पढण में भावखां प्रांत री, निरखतां जाय है प्रांत नीचो ॥४॥
वणई चारणोंव्याकरण विधोवित्र, वणेगो कोश ही लाखसवदो। सीत रो परीश्रम अथग फलियो सिरे, रेटियो 'उदय' मिल सकल सवदो ॥५॥
पोकरण भवानीसीह चांपे प्रथम कोश रे हेत धन खर्च कियो । पडता लांच इण समेरा फेर सू, स्यामसी रोडले कांम सीधो ॥६॥
रोडले स्यामसो सपूतो सिरोमण, कमधज आज अखियाज कीधी। वार विपरीति में हजारों खरचवें, दाद उजल 'उदे' देस दीधी ॥७॥
चारणों दोय मिल व्याकरण कोश रचि, वण्या नह बडो कवराज मिलियो। कमधा दोय मिल कियो सुभ काम जो, महीयो कियो नह बीस मिलियो॥८॥

कवित

सूर्यमल मिशण ने वनाया वस भास्कर, बूंदी नृपराम ने खजाना खोल करके ।
सावल कविराज ने लिखाया इतिहास त्योंही उदियापुर रान के कोष वल घर के ।
सीताराम लालस ने की राजस्थानी कोश उदयराज उज्जवल के योग शक्ति भरके ।
पोकरण भवानीसिंह स्यामसिंह रोडला के कोष हित कोप वने दानी धन घर के ।
प्रांत की प्रवल भाषा प्रतिष्ठित परंपरा विवुधन दीनमाल वीरपद वाला है ।
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त हूं में रखी नहीं होय कोटि जनता को दास गति डाला है ।
डूबत है मात्र भाषा वीर राजस्थान केरी, प्रान्त का भविष्य याते दर्शित विदाजा है ।
जीवित उट्ठेगी प्रीय राजस्थानी आशामात्र, व्याकरण कोश याके वनेगे जिशाला है ।

Compared by
Sd. Bhawar Singh
Sd. लक्ष्मीप्रकाश गुप्ता

Sd. ह० उदयराज उज्वल
Sd Nami chand Jain
Civil Judge. Jodhpur.

संकेत और चिह्न

सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम	सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम
अं०	अंग्रेजी भाषा	भू०	भूतकाल
अ०	अरबी भाषा	भू० का० क्रि०	भूतकालिक क्रिया
अक०	अकर्मक	भू० का० कृ०	भूतकालिक कृदन्त
अक० रू०	अकर्मक रूप	भू० का० प्र०	भूतकालिक प्रयोग
अनु०	अनुकरण	म०	मराठी भाषा
अप०	अपभ्रंश	मह० महत्व०	महत्ववाची शब्द
अल्प०, अल्पा०	अल्पार्थ रूप	मा०	मागधी भाषा
अव्य०	अव्यय	यू०	यूनानी भाषा
इरा०	इरानी भाषा	यौ०	यौगिक शब्द
उप०	उपसर्ग	रा०, राज०	राजस्थानी भाषा
उभ० लि०	उभयलिंग	रा० प्र०	राजस्थानी प्रत्यय
कर्म वा०, कर्म वा० रू०	कर्मवाच्य, रूप	लै०	लैटिन भाषा
क्रि०	क्रिया	व०	वर्तमान काल
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक	व० का० कृ०	वर्तमान कालिक कृदन्त
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग	वि०	विशेषण
क्रि० प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक	विलो०	विलोम
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण	व्या०	व्याकरण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक	शक०	शकन्ध्वादि
गु०	गुजराती भाषा	सं०	संस्कृत
गो० र०	गोरादि	सं० उ०	संज्ञा उभयलिंग
ची०	चीनी भाषा	सं० पु०	संज्ञा पुल्लिंग
जा०	जापानी भाषा	सं० स्त्री०	संज्ञा स्त्रीलिंग
डि०	डिंगळ	स०	सकर्मक
तु०	तुर्की भाषा	स० रू०	सकर्मक रूप
पं०	पंजाबी भाषा	सर्व०	सर्वनाम
पा०	पाली भाषा	स्त्री०	स्त्रीलिंग
पु०	पुल्लिंग	स्पे०	स्पेनिश भाषा
पुर्त०	पुर्तगाली भाषा	उ०	उदाहरण
पृप०	पृषोदरादि	कहा०	कहावत
प्र०	प्रत्यय	क्व० प्र०	क्वचित प्रयोग
प्रा०	प्राकृत	ज० खि०	जग्गो खिड़ियौ
प्रे०	प्रेरणार्थक	ज्यो०	ज्योतिष सम्बधी
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप	दे०	देखो
फा०	फारसी भाषा	प्रा० प्र०	प्राचीन प्रयोग
फ्रां०	फ्रांसीसी भाषा	प्रा० रू०	प्राचीन रूप
ब० व०	बहुवचन	मि०	मिलाओ
भाव वा०	भाव वाच्य	मु० मुहा०	मुहावरा
भाव वा० रू०	भाव वाच्य रूप	वि० वि०	विशेष विवरण

चिन्ह

चिन्ह का स्वरूप	स्थान		प्रयोजन
*	शब्द के आगे	...	यह शब्द कविता में ही प्रयोग होता है।
'	शब्द के अक्षरों के बीच में सिर पर	...	यह ध्वनी–लोपिक चिन्ह है, जहां 'ह' की ध्वनी लोप होती है वहां आता है।
—	शब्द के नीचे	...	उच्चारण की ध्वनी भिन्नता बतलाता है।
'...'	शब्द के दोनों ओर सिरों पर	...	व्यक्ति वाचक संज्ञा का सूचक (इन वर्टिड कॉमा)

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

संक्षिप्त नाम	पूर्ण नाम	रचयिता का नाम
ग्रनेक० ग्रनेका०	ग्रनेकार्थी कोप	उदयराम वारहठ
ग्रमरत	ग्रमरत सागर	महा० प्रतापसिंह जयपुर
ग्र० मा०	ग्रवधांन माळा	उदयरांम वारहठ
ग्र० वचनिका	ग्रचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
ऊ० का०	ऊमरकाव्य	ऊमरदांन लाळस
उ० र०	उक्ति रत्नाकर	साधु सुन्दरगणि
एका०	एकाक्षरी नाम माळा	वीरभांण रतनू, उदयरांम बारहठ
ऐ.जै०का०सं०	ऐतिहासिक जैन काव्य सग्रह	संपा. ग्रगरचन्द नाहटा
क० कु० बो०	कविकुळ वोध	उदयरांम वारहठ
कां० दे० प्र०	कान्हड़दे प्रवंध	पद्मनाभ
गी० रां०	गीत रांमायण	ग्रमृतलाल माथुर
गु० रू० वं०	गुण रूपक बंध	केसोदास गाडण
गो० रू०	गोगादे रूपक	पहाड़खां ग्राढो
डिं० को०	डिंगळ कोश	कविराजा मुरारीदान, बूंदी
डिं० नां० मा०	डिंगळ नांम माळा	हरराज कवि
ढो० मा०	ढोला मारू	सम्पादकत्रय रामसिंह तंवर, सूर्यकरण पारीक व नरोत्तमदास स्वामी
द० दा०	दयालदास री ख्यात	दयाळदास सिंढायच
द० वि०	दळपत विलास	सम्पादक रावत सारस्वत
देवी०	देवियांण	ईसरदास वारहठ
ध० व० ग्रं०	धर्म वर्द्धन ग्रन्थावलि	संपा० ग्रगरचन्द नाहटा
नां० मा०	नांम माळा	ग्रज्ञात
ना० डिं० को०	नागराज डिंगळ कोश	नागराज पिंगळ
ना० द०	नागदमण	साइयां भूला
नी० प्र०	नीति प्रकाश	सगरांमसिंह मुहणोत
नैणसी०	नैणसी री ख्यात	मुहणोत नैणसी
पं० पं० च०	पंच पंडव चरित्र	सालिभद्र सूरि
प० च० चौ०	पद्मिनी चरित्र चौपाई	कवि लब्धोदय
पा० प्र०	पाबू प्रकाश	मोडजी ग्रासियो
पिं० प्र०	पिंगळ प्रकाश	हमीरदांन रतनूं
पी० ग्र०	पीरदांन ग्रन्थावळि	पीरदांन लाळस
पे० रू०	पेमसिंह रूपक	प्रतापदांन गाडण
बां० दा०	बांकीदास ग्रन्थावळि	बांकीदास
बां० दा० ख्या०	बांकीदास री ख्यात	बांकीदास
बी० दे०	बीसलदे रासो	कवि नाल्ह
भ०मा०	भक्तमाल	ब्रह्मदास
भिक्खु०, भि०द्र०	भिक्खु दृष्टान्त	भीखणजी
मा० कां० प्र०	माधवानल कांम कंदला प्रवंध	कवि गणपति

मा० म०-	मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट	मुन्शी देवीप्रसाद
मा० वचनिका-	माताजी री वचनिका	जती जयचन्द
मीरां	मीरां बाई	...
मेघ०	मेघदूत	नारायणसिंह भाटी
मे० म०	मेहाईमहिमा	हिंगलाजदांन कवियो
र० ज० प्र०	रघुवरजस प्रकास	किसनो आढो
र० रू०	रघुनाथ रूपक	मंछाराम
र० वचनिका	रतनसिंह महेसदासोत री वचनिका	जग्गो खिड़ियो
र० हमीर	रतना हमीर री वारता	महा० मानसिंह जोधपुर
रा० जै० रासो	राउ जैतसी रो रासो	अज्ञात
रा० जै छंद	राउ जैतसी रो छंद	वीठू सूजो नगराजोत
रां० रा०	रांमरासो	माधोदास दधवाड़ियो
रा० रू०	राज रूपक	वीरभांण रतनू
रा० वं० वि०	राठौड़ वंस री विगत	अज्ञात
रा० सा० सं०	राजस्थानी साहित्य संग्रह	संग्रह, सम्पादन स्वामि नरोत्तमदास
ल० पिं०	लखपत पिंगळ	हमीरदांन रतनू
ला० रा०	लावा रासो	गोपाळदांन कवियो
लो० गी०	राजस्थानी लोकगीत	संग्रह सम्पादन
वं० भा०	वंश भास्कर	सूर्यमल मीसण
व० स०	वर्णक समुच्चय	सम्पादक भोगीलाल सांडेसरा
वि० कु०	विनयकुमार कृति कुसुमांजलि	कविवर विनयचंद्र
वि० सिं०	विड़दसिणगार	कविराज करणीदांन कवियो
वी० मा०	वीरमायण	वहादर ढाढी
वी० स०	वीर सतसई	सूर्यमल मीसण
वी० स० टी०	वीर सतसई री टीका	किसोरदान वारहठ
वेलि०	वेलि क्रिसन रुकमणी री	अज्ञात
वेलि टी०	वेलि क्रिसन रुकमणी री टीका	अज्ञात
शा० हो०	शालि होत्र	अज्ञात
शि० वं०	शिखर वंशोत्पत्ति	गोपाळदांन कवियो
शि० सु० रू०	शिवदान सुजस रूपक	लालदांन वारहठ
स० कु०	समय सुन्दर कृति कुसुमांजलि	महाकवि समयसुन्दर
सू० प्र०	सूरज प्रकाश	कविराजा करणीदांन
ह० नां० मा०	हमीर नांम माळा	हमीरदांन रतनू
ह० पु० वां०	श्रीहरीपुरुषजी की वाणी	श्री हरीपुरुषजी
ह० र०	हरिरस	ईसरदास वारहठ
हा० झा०	हालां झालां रा कुंडळिया	" "

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]

(प्रथम जिल्द)

य

य—देवनागरी लिपि का २६ वां व्यंजन जिसका उच्चारण स्थान तालु है तथा जो यत्न भेद के अनुसार घोष, प्राण भेद के अनुसार अल्पप्राण तथा प्रयत्न भेद के अनुसार ईषत्स्पृष्ट है एवं स्थिति भेद के अनुसार अंतस्थ है।

यंछां—देखो 'इच्छा' (रू. भे.)

उ०—करखि प्रांण केवियां, दसा अमरखि दुरवंछां।
मु रिख वांण सासन, जांण नुरं तारिख यंछां।

—रा. रू.

यंत—सं. पु. [सं. यन्तृ] १. सारथी, गाड़ीवान। (डिं. को.)

२. परिचालक।

यंता—वि. [सं. यंतृ] चलाने वाला।

उ०—नियंता यंता ना चपळ चित चिंता भन चुके, प्रचेता नेता ना जियत हम प्रेता बन चुके।

—ऊ. का.

यंत्र—सं. पु. [सं. यंत्रम्] १ मशीन, कल।

उ०—गढ कैलास जिम ऊंचउ, गरूई पोलि, सबर कपाट, लोहमय भोगल, विजयहरी तणी पद्धति, यंत्र तणी श्रेणी, ढींकली तणी परंपरा; —व स.

२ औजार।

३ अस्त्र, हथियार। (व. स.)

४ वाद्य, बाजा।

उ०—यंत्र बजाया साज कर, कारीगर करतार।
पंचों का रस नाद है, दादू बोलणहार।

—दादू वांणी

५ तावीज।

उ०—पाघ ऊपर चौकड़ी तरवारियां री पड़ रही छै। पण अेक अतीत री दियोड़ी यंत्र पाघ में रहतो अोर महाराजा करणसिंहजी री दीन्ही स्याळियासींगी सदा पाघ रै मांही रहती तिणसूं सरीर री रक्षा रहती।

—पदमसिंह री वात

६ जादू, टोना।

उ०—हिवै ईयां रै देस माहे धांन घणा। वहवारियां रै लाखे ग्यांन हुवो। केळेकोट, वगे, काछ, पावर रा महाजन एकठा हुवा होइनै एकै वरतीयै नुं कह्यौ, जु "धांन म्हाहरै घणौ। ज्युं करी, ज्युं धांन रा पईसा हुवै।" ताहरां महाजन मेह वंधायो। ताहरां यंत्र लिखि अर हिरण रै सींग में यंत्र घालीयो। घालि नै हिरण छोडि दियो।

—लाखे फूलांणी री वात

यंत्रकार—सं. पु. [सं. यंत्र+कार] यंत्र को संचालन करने वाला, मैकेनिक।

यंत्रणा—सं. स्त्री. [सं.] कष्ट, पीड़ा। (डिं. को.)

यंत्रमात्रका—सं. स्त्री. यौ. [सं. यंत्र+मातृका] ६४ कलाओं में से एक जिसमें यंत्रों का बनाना व उनका व्यवहार करना शामिल है।

यंत्रमुक्त—सं. पु. [सं.] एक प्रकार का अस्त्र विशेष।

उ०— कोदंड धनुस चडाव्या, कुंत करागि कीव, छुरी पासु परसु पट्टिस सक्ति करमुक्त यंत्रमुक्त मुक्तामुक्त दुस्फोट तरवारि अग्नि तेल लोहबद्ध लुडि एवं विध आयुध विसेसि ढांचा भरियां, पत्तियुद्ध प्रवर्तिउं। —व. स.

यंत्रराज—सं. पु. [सं.] ग्रहों एवं तारों की गति जानने का एक यंत्र।

यंत्रवाद—सं. पु. [सं.] ७२ कलाओं में से एक।

यंत्रवादी—वि. [सं.] यंत्रवाद का ज्ञाता।

उ०—वागघर सुजांण चित्र-जांण धातुनिस्पत्तिजांण ज्योतिराजांण मंत्रवादी यंत्रवादी तंत्रवादी धातुवादी अंजनवादी खन्यवादी गजवैद्य।

—व. स.

यंत्रवाहक—[सं.] मशीन चालक।

उ०—राय पंवायण राजा बइठउ छइ, डावइं पखइं मंत्रि, वीर पउंतार दीवटीया वयगरणा यंत्रवाहक चमरहारि छडायता गांगिक विनांणी सूयार सूडकर मसाहणी मीठाबोला सरसतरुणा इसी सभा अनइ एतला देस तणउ अधिपति।

—व. स.

यंत्रविद्या—सं. स्त्री. [सं.] मशीन या कलों को बनाने या संचालित करने की विद्या।

यंद, यंदर—देखो 'इंद्र' (रू. भे.)

उ०—१ भीमक धमचाळ, केवियां का काळ। अरजुन का बांण, दुरज्योधन का मांण, रस विलास का यंद, वचनका हरचंद। सुमेर का भार, कूमेर का भंडार। अनेक खांनदांन वाळा थूंकळा उडावै छै, उदैपुर का बाग मैं वारां वजावै छै।

—वगसीराम पुरोहित री वात

उ०—२ चंद यंद समंद हमाऊ पंखी दीठ चोजां, कमोदनी गोम मछां लोकीक कवंद।

—क. कु. बो.

यंदरा—१ देखो 'इंदिरा' (रू. भे.)

२ देखो 'इन्द्रांणी' (रू. भे.)

यंदु, यंदू—देखो 'इंदु' (रू. भे.) (अ. मा.)

यंद्र—देखो 'इंद्र' (रू. भे.) (अ. मा., ना. मा.)

उ०—वारवेस जोम गाज गाळिया त्रिकूट-वासी, राजचील जाळिया

तारगी तेज रुस। कुमंगी कुळेगां यंद्र ढाळिया गिरंद काळा, वीर 'सिवा' वाळै रिमां राळिया विधूम।

—हुकमीचंद खिड़ियो

यंद्रजीत–'इंद्रजीत' (रू. भे.)

यंद्रपुर, यंद्रपुरी–देखो 'इंद्रपुरी' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—जुध वारंगना वरै 'जोगावत' वेधि घड़ा यंद्रपुर वसियो। मह चौडां मळखां ग्रिणमाळां, कमधज कुटंब ऊजळो कियो।

—गीत हटीसीघ जोगावत रो

यंद्राण–देखो 'इंद्र' (रू. भे.)

यंद्राणी–देखो 'इंद्राणी' (रू. भे.) (अ. मा.)

यंद्रावरज–देखो 'इंद्रावरज' (रू. भे.)

यंद्रावरध–देखो 'इंद्रावध' (रू. भे.)

यंद्रासण–देखो 'इंद्रासण' (रू. भे.)

उ०—'ऊदलो' 'जगो' 'माधव' 'करन' आफळै, यंद्रासण लेवण कारण अथाया। वधै नेता जसी भांत सु वधाग, वधै ज्यूं यज याग कळै वाया।

—उजैण रै झगड़ा री गीत

यंद्रिय, यंद्री–देखो 'इंद्रिय' (रू. भे.)

यंनांम–देखो 'इनांम' (रू. भे.) (ए. का.)

यंनांमी–वि. [अ. इनाम+रा. प्र. ई.] इनाम प्राप्त करने वाला।

उ०—आबादांन गांवां में किसांणां नै वसाया, उदकी भी यंनांमी देसवासी चैन पाया।

—शि. वं.

यंवर–देखो 'अंवर' (रू. भे.)

उ०—ग्राह गयंद विढवा लगा, वळ वळ दाखै पांण। उदध छौळ यंवर लगा, फेर मथै महरांण।

—गज उद्धार

यंम–सं. पु.–१ कपट, छल। (अ. मा.)
२ देखो 'यम' (रू. भे.)

य–सं. पु. [सं. यः] १ गाड़ी, यान, सवारी। २ हवा, वायु। ३ कीर्ति, यश। ४ सम्मेलन। ५ यव, जौ। ६ बिजली, विद्युत। ७ रोक, रुकावट। ८ यमराज। ९ त्याग
१०. योग। ११. संयम। १२. प्रकाश, रोशनी। १३. गणेश। १४. ईश्वर। १५. पुरुष। १६. छन्द शास्त्र में यगण का संक्षिप्त रूप। (एका.)
वि.–जाने वाला। (एका.)
क्रि. वि.–पुनः, और। (एका.)

यक—देखो 'एक' (रू.भे.)

उ०—१ चव आद खटकळ दुकळ, गुरु यक पाय मत अठवीसयं। हरि गीत सौ जिण अंत लघु सो रांम गीत मती सयं।

—र.ज.प्र.

उ०—२ गुरु नवदह लघ फेर गन, पंच गुरु लघु प्रमान। यक गुरु मिळ गोतम उभै, सो गुमिळा कवि मान।

—र.ज.प्र.

यकअंगी–वि. [सं. एक+अंगी] १ एक अंग वाला।
२ जिसके केवल एक ही पति या पत्नी हो।

यककुंडळ–सं. पु. [सं. एक कुंडलः] शेष नाग। (ह.नां.मा.)

यकता–देखो 'एकता' (रू.भे.)

यकवारगी–देखो 'एक वारगी' (रू.भे.)

यकलंक, यकलिंग–देखो 'एकलिंग' रू.भे.)

उ०—यण प्रकार नागौ भींम, कीरति को······भोजनाळाविसंद जिलरौ नगर, आसारा री इंद, सरणायां साधार, हिंदूपति पातस्याह यकलंक रो पधणार, महिमा अपार, यसौ राणौ भींम।

—भगनीराम प्रोहितरी वात

यकलास–देखो 'इखलास' (रू.भे.)

यकवीस, यकवीम–देखो 'इकवीस' (रू. भे.)

उ०—विप्री भेरव लघुय दीजै, लघु यकवीस गिरगुरु लीजै। गनावीस लघु नैगी मोर्दै, है लघु अधिक गुदमी होदै।

—र. ज. प्र.

यकहत्तर–देखो 'इकोतर' (रू. भे.)

उ०—विध यकहत्तर छपय वद, गतार गुरु लघु धार। अजय जिको गुरु घट वधै, ये लघु नांम निहार।

—र. ज. प्र.

यकांवन–देखो 'इक्यावन' (रू. भे.)

उ०—'सेवै' गज नयामै यकांवन नाल पायो, मयानै नरेपत सैर सीकरी नै वसायो।

—शि. वं.

यकार–सं. पु. [सं. यः+कार] १ छंद शास्त्र में 'यगण' गण का नाम।
२ य वर्ण का नाम।

यकावन–देखो 'इक्यावन' (रू. भे.)

यकीन–सं. पु. [अ. यकीन] विश्वास, प्रतीति।

उ०—१ दादू गल काटे कुलमा भरे, अया विचारा दीन। पंचों वक्त नमाज गुजारे, साबित नहीं यकीन।

—दादूवाणी

उ०—२ दादू सिदक सबूरी सांच गह, साबित राख यकीन। साहिब सौ दिल लाइ रहु, मुरदा ह्वै मिस्कीन।

—दादूवांणी

यक्ष–[सं. यक्षः] देखो 'जक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ तद नौ नाथ चौरासी सिद्ध कह्–जे थे दोनूं ही पूरव जनम में यक्ष था, सो कुवेर रै खजांनै पर रुखाळा था।

—ढाढाला सूर री वात

उ०—२ यक्ष राक्षस ग्ररु भूत पिसाचर, यह तो हम नहिं कोई। चारण सिद्ध नाग ग्ररु गंधरव, देव जात नहिं होई।

—मुग्वरांम जी महाराज

यक्षकरद्दम—सं. पु. [सं. यक्षकर्दमः] कपूर, अगर, कस्तूरी एवं कंकोल को बराबर मिलाने से बना लेप।

उ०—कुंकम तणा छड़ा दीधा, पद्मिनी तणा पगर भरिया छइं, दमणउ कुरबक महमहइ छइ, केतकी तणा समूह, यक्षकरद्दम तणा पोतां दीधां छइं, कस्तूरी तणा स्तबक दीधां छइं।

—व. स.

यक्षग्रह—सं. पु. यौ. [सं. यक्ष+ग्रहः] १ पुराणानुसार एक प्रकार का कल्पित ग्रह, जिसकी दशा लगने पर मनुष्य विक्षिप्त हो जाता है। २ प्रेत-बाधा।

यक्षतरु—सं. पु. यौ. [सं. यक्ष+तरु] वट-वृक्ष, वड़ का पेड़।

यक्षधूप—सं. पु. यौ. [सं. यक्ष+धूप] गूगल, लोबान।

यक्षनायक—देखो 'जक्षनायक' (रू. भे.)

यक्षपत, यक्षपति—देखो 'जक्षपति' (रू. भे.)

यक्षपुर, यक्षपुरी—देखो 'जक्षपुरी' (रू. भे.)

यक्षराज—देखो 'जक्षराज' (रू. भे.)

यक्षरात्रि—देखो 'जक्षरात' (रू. भे.)

यक्षरूप—सं. पु. [सं.] महादेव।

यक्षलोक—देखो 'जक्षलोक' (रू. भे.)

यक्षवित, यक्षवित्त—सं. पु. [सं. यक्ष+वित्त] कंजूस, कृपण।

यक्षस्थळ—सं. पु. यौ. [सं. यक्ष+स्थल] पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

यक्षाधिप, यक्षाधिपति—देखो 'जक्षाधिप' (रू.भे.)

यक्षावास—सं. पु. यौ. [सं. यक्ष+ग्रावास] वट-वृक्ष।

यक्षिणी—देखो 'जक्षणी' (रू.भे.)

यक्षी—देखो 'जक्षि, जक्षी' (रू.भे.)

यक्षेंद्र—देखो 'जक्षेंद्र' (रू. भे.)

यक्षेस्वर—देखो 'जक्षेसर' (रू. भे.)

उ०—चक्रवरतिरिद्धिः, चउद रत्न, नव निधांन, सोल सहस्र यक्षेस्वर, ३२ सहस्र नरवर, ३६ सहस्र कुलांगना, ३२ सहस्र वारांगना।

—व.स.

यखु—सं. पु. [सं. इषु] तीर, बांण। (ग्र. मा.)

यखुग्रास—सं. पु. यौ. [सं. इषु+ग्रास] धनुष। (ग्र. मा.)

यखूधीयता—सं. पु. यौ.—तरकस। (नां. मा.)

यगण—सं. पु. [सं.] छन्द-शास्त्र में ग्राठ गणों में से एक, जिसमें प्रथम एक लघु एवं बाद में दो गुरु होते हैं।

यगताळीस—देखो 'इकताळीस' (रू.भे.) (डिं. को.)

यग्य—देखो 'जिग' (रू.भे.)

उ०—भाऊ दिली निगमबोध रा घाट ऊपर यग्य करायौ, देवी री ग्राग्या हुई-हमैं भाऊ पाछौ दिखण नूं परौ जावै, दूजै महीनै ग्राग साह सूं जंग करै तौ भाऊ री फतै हुवै। —वां. दा. ख्या.

यग्यकारी—सं. पु. [सं. यज्ञकारी] यज्ञ करने वाला।

यग्यक्रतु—सं. पु. [सं. यज्ञक्रतुः] विष्णु का नाम

यग्यक्रिया—सं. स्त्री—१ यज्ञ का काम। २ कर्मकांड।

यग्यकोप—सं. पु. [सं. यज्ञकोप] रावण के पक्ष का एक राक्षस, जो राम के द्वारा मारा गया था।

यग्यदत्त सं. पु. [सं. यज्ञदत्त] १ कांपिल्य नगर का एक ग्रग्नि-होत्रि ब्राह्मण, जिसके पुत्र का नाम गुणनिधि था।

२ भगदत्त राजा के पुत्र 'वज्रदत्त' का नामांतर।

३ वसिष्ठकुलोत्पन्न एक ब्राह्मण, जो यज्ञकर्म में निपुण था।

४. एक राजा, जो भविष्य पुराण के ग्रनुसार शतानीक राजा का पुत्र था।

यग्यपति—सं. पु. [सं. यज्ञपति] १ विष्णु भगवान, २ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

यग्यपसु—सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+पशु] १ यज्ञ में बलि दिया जाने वाला पशु। २ घोड़ा। ३ बकरा।

यग्यपात्र—सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+पात्रम्] यज्ञ में काम ग्राने वाले पात्र।

यग्यपाळ—सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+पाल] यज्ञ का संरक्षक।

यग्यपुरुष—सं. पु. [सं. यज्ञ+पुरुष] विष्णु।

यग्यबाहु—सं. पु. [सं. यज्ञबाहु] १ ग्रग्नि का एक नाम २ शाल्मलि द्वीप का एक राजा, जो भागवत के ग्रनुसार प्रियव्रत राजा का पुत्र था। इसकी माता का नाम बर्हिष्मती था।

यग्यभाग—सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+भाग] १ यज्ञ का वह भाग (ग्रंग) जो देवताग्रों को दिया जाता है।

२ इन्द्र ग्रादि देवता, जिन्हें उक्त ग्रंश या भाग मिलता है।

यग्यभाजन—सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+भाजन] यज्ञ में काम ग्राने वाले पात्र, बर्तन।

यग्यभूमि—सं. स्त्री. यौ. [सं. यज्ञ+भूमि] वह स्थान जहां यज्ञ किया जाय।

यग्यमंडप—सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+मंडप] यज्ञ हेतु बनाया जाने वाला मंडप।

यग्यमंडळ—सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+मंडल] यज्ञ करने हेतु घेरा गया स्थान।

यग्यमंदिर—सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+मंदिरम्] यज्ञशाला।

यग्यमय—सं. पु. [सं. यज्ञमय] विष्णु।

यग्ययूप—सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+यूप] बांस या लकड़ी का वह खंभा जिसके यज्ञ में बलि दिए जाने वाले पशु को बांधा जाता है।

यग्यवराह—सं. पु. [सं. यज्ञवराह] वराहरूपधारी श्री विष्णु का नामान्तर।

यग्यवाह—सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+वाह] १ यज्ञ करने वाला।

२ कार्तिकेय का एक अनुचर ।
३ अगस्त्य कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।
४ स्कंद का एक सैनिक ।

यग्यवाहन–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+वाहन] १ विष्णु ।
२ ब्राह्मण ।
३ शिव ।
४ यज्ञवाही, याज्ञिक ।

यग्यव्रक्ष–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+वृक्ष] वट–वृक्ष ।

यग्यसत्रु–सं. पु. [सं. यज्ञ+शत्रु] एक राक्षस, जो लंका निवासी खर नामक राक्षस का अनुगामी था ।

यग्यसरण–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+शरण] यज्ञमण्डप ।

यग्यसाळा–देखो 'जिगसाळा' (रू. भे.)

यग्यसास्त्र–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+शास्त्र] वह शास्त्र, जिसमें यज्ञ एवं उसकी क्रिया का विवेचन हो ।

यग्यसील–सं. पु. [सं. यज्ञ+शील] १ वह जो यज्ञ करता हो ।
२ ब्राह्मण ।

यग्यसूकर–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+शूकर] विष्णु ।

यग्यसूत्र–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+सूत्र] जनेऊ, यज्ञोपवीत ।

यग्यसेन–सं. पु. [सं. यज्ञसेनः] १ पांचाल नरेश द्रुपद राजा का नामांतर ।
२ विष्णु ।

यग्यसेनी–देखो 'जग्यासेनी' (रू. भे.)

यग्यस्तंभ–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+स्तंभ] यज्ञ में बलि दिये जाने वाले पशु को बांधने का खंभा ।

यग्यस्थळ–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+स्थल] वह स्थान, जहां यज्ञ होता हो, यज्ञमंडप ।

यग्यहोता–सं. पु. [सं. यज्ञ+होतृ] १ यज्ञ में देवताओं का आह्वान करने वाला ।
२ मनु के एक पुत्र का नाम ।

यग्यहोत्र–सं. पु. [सं. यज्ञहोतृ] १ यज्ञ में देवताओं का आह्वान करने वाला २ उत्तम मनु के पुत्रों में से एक ।

यग्यांग–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+अंग] १ यज्ञ की सामग्री ।
२ विष्णु ।
३ गूलर ।
४ खदिर ।

यग्यात्मा–सं. पु. [सं. यज्ञात्मा] विष्णु ।

यग्याधिपति–सं. पु. [सं. यज्ञाधिपति] यज्ञ के स्वामी, विष्णु ।

यग्यारमौं–देखो 'इगियारमौ' (रू. भे.)

यग्यारि–सं. पु. [सं. यज्ञारि] १ शिव, महादेव ।
२ राक्षस ।

यग्यारेक–देखो 'इगियारेक' (रू. भे.)

यग्योपवीत–देखो 'जग्योपवीत' (रू. भे.)

यचरज–देखो 'अचरज' (रू. भे.)

यछै–अव्यय–चाहे ।
उ०—जांणायउ राजा वारीक हो जांण, दुई का मील्यां छै येक परांण । जे किम यछै दूरी था, कूलह की वेड़ी, मीवलै जंजीर ।
—बी. दे.

यजंगम–देखो 'अजंगम' (रू. भे.)

यज–सं. पु. [सं.] १ विजय, जीत । (डिं. को.)
२ वस्त्र विशेष ।
उ०—चलाया मलागा देवदूस्य वंधाल्ग कोठालग कलह्म कोकची पंचवरण यज, दुरंगी यज, मांगलुरी यज, गढगजी सवागजी नुगजी पंटणी पटपाट्ट ।
—व. स.

यजदां–सं. पु.–पारसियों के अनुसार ईश्वर का एक नाम । (मा. म.)

यजन–देखो 'जजरण' (रू. भे.)
उ०—भजन, यजन कर पिता थांनै पाया, अमर अराव्यां अवनी पै आप आया ।
—सी. रा.

यजनकरता–सं. पु. [सं. यजनं+कर्ता] यज्ञ करने वाला ।

यजमांन–देखो 'जजमांन' (रू. भे.)

यजमांनलोक–सं. पु. [सं. यजमानलोक] वह लोक जिसमें यज्ञ करने वाले मृत्यूपरांत निवास करते हैं ।

यजमांनी–देखो 'जजमांनता, जजमांनी' (रू. भे.)

यजार–देखो 'इजारबंद' (रू. भे.)
उ०—सुरखी बनि सूथनि भारनकी, लटकी लर स्यांम यजारन की । कुरती कचिया मखतूलन की, उर माळ चमेलिय फूलन की ।
—ला. रा.

यजुरवेद–देखो 'जजुवेद, जजुरवेद, (रू. भे.)

यजुरवेदी–देखो 'जजुरवेदी' (रू. भे.)

यजुरवेदीयौ–सं. पु. [सं. यजुरवेदिन्] यजुर्वेद का ज्ञाता ।
उ०—सघला सामक अथरवणी, यजुरवेदीया जांण । रघुवेदी सवि रयि चड्या, पंडित पोकारि पुरांण ।
—मा. कां. प्र.

यडग–देखो 'अडिग' (रू. भे.)

यण–देखो 'अण' (रू. भे.)
उ०—तिका यण वार अवतार सकती तणा, भाव भकती तणा घणा भूका । फजर ग्रह रांण तप तेज मुख फाबियां, ढाबियां सूळ 'बीकांण' ढूका ।
—मे. म.

यतन, यतन्न–देखो 'जतन' (रू. भे.)

उ०—गादह दाव्यउ दग करि, सासू कहइ वचन्न। करहउ ए फूड़ड मनइ, खोड़उ करइ यतन्न।

—ढो. मा.

यतमांमी—सं. पु. [अ. इहतिमाम+रा. प्र. ई] व्यवस्थापक —नैणसी

यतलाक नवेस—सं. पु. एक राज्याधिकारी —नैणसी

यतवत—क्रि. वि. इधर-उधर।

उ०—जन हरिदास सतगुरु सबद, अंतरि लागा बांण। हरि हेरत हरि मन हरचा, यतवत लहे न जांण।

—ह. पु. वा.

यति—देखो 'जती' (रू. भे.)

यतिदेवर—सं. पु. [सं] चूहा। (डि. को.)

यतिधरम—सं. पु. यौ. [सं. यति+धर्म] सन्यास।

यतिभंग, यतिभ्रष्ट—सं. पु. यौ. [सं. यति+भंग या यति+भ्रष्ट] छंद शास्त्र में वह दोष, जब किसी छंद में यति उचित स्थान पर न होने के कारण लय या प्रवाह बिगड़ जाता है।

यतिसांतपन—सं. पु.—तीन दिन का एक व्रत जिसमें केवल पंचगव्य और कुश जल पीकर रहना पड़ता है।

यती—सर्व.—१ इतना।

२ देखो 'जती' (रू. भे.)

यतीम—सं. पु. [अ.] १ वह बालक जिसके माता-पिता मर गये हों, अनाथ।

२ ऐसा बड़ा मोती जो सीप में एक ही होता हो।

३ बहुमूल्य रत्न।

यतीमखांनौ—सं. पु. [अ. यतीम+फा. खानः] वह स्थान जहां अनाथ बालकों का पालन-पोषण होता है, अनाथालय।

यतीस्वर—सं. पु. यौ. [सं. यति+ईश्वर] योगीराज, यतिराज, यतीश्वर।

उ०—स्रीयुगप्रधांन यतीस्वरु, देखतां हो हुवै सफली दीह। नित विजय हरख वंछित दीयै, धरि भावं हो गावै धरमसीह।

—ध. व. ग्रं.

यतौ—सर्व.—१ इतना।

उ०—१ जुध 'पाल' हुवौ मन मोद जितौ, अन भूप न आवत ब्याव यतौ। वरणी रवि ऊगम सेन विधू, चंद ऊगम सूरजपाल सिधू।

—पा. प्र.

उ०—२ आद तिको यज अंत में, इधक मु खुलतै अंक। अकारादि कहिया यता, सम अखरोट असंक।

—र. रू.

२ जहां।

यत्न—देखो 'जतन' (रू. भे.)

यत्र—देखो 'जत्र' (रू. भे.)

यत्रतत्र—अव्य. [सं.] १ जहां-तहां, इधर-उधर।

२ यहां-वहां सभी जगह, अनेक स्थानों पर।

३ कुछ यहां, कुछ वहां।

यथा—देखो 'जथा' (रू. भे.)

उ०—कुच मरद्दन, कप्पड अधर, लीड चुरासी लाग। सुहड यथा समरंगणि, भडतां कोड न भाग।

—मा. कां. प्र.

यथाक्रम—देखो 'जथाक्रम' (रू. भे.)

यथानियम—देखो 'जथानियम' (रू. भे.)

यथापूरब—अव्य. [सं. यथा+पूर्व] जैसा पहले था वैसा ही। पूर्ववत, ज्यों का त्यों।

यथायोग्य—देखो 'जथाजोग' (रू. भे.)

यथाविधि—देखो 'जथाविधि' (रू. भे.)

यथासक्ति, यथासगती—देखो 'जथासकती' (रू. भे.)

यथोचित—अव्य. [सं. यथा+उचित] जैसा उचित हो वैसा। उपयुक्त।

यदपि—देखो 'जदपि' (रू. भे.)

उ०—मीरां को प्रभु सांची दासी बणाउ। झूठे धंधा रे मेरा फंदा छुडाउ। लूटेहि लेत विवेक का डेरा। बुद्धिबळ यदपि करूं बहुतेरा।

—मीरां

यदा—देखो 'जद' (रू. भे.)

उ०—एक दिन मरणौ हो राजाजी यदा तदा, छोटो नीं कांम विसेस। बीजी तौ तारण जग में को नही, तारै जिणजी रो धरम एक।

—जयवांणी

यदि—देखो 'जदी' (रू. भे.)

यदु—देखो 'जदु' (रू. भे.)

यदुनंदन—देखो 'जदुनंदण' (रू. भे.)

यदुनाथ—देखो 'जदुनाथ' (रू. भे.)

यदुपति—देखो 'जदुपति' (रू. भे.)

यदूभूप, यदुराज—सं. पु. [सं.]—श्रीकृष्ण।

यदुवंस—देखो 'जदुवंस' (रू. भे.)

यदुवंसमणि—सं. पु. यौ. [सं. यदु+वंश+मणि] श्री कृष्ण।

यदुवंसी—देखो 'जदुवंसी' (रू. भे.)

यदुवर, यदुवीर—देखो 'जदुवर, जदुवीर' (रू. भे.)

यद्यपि—देखो 'जदपि' (रू. भे.)

यधक—देखो 'अधिक' (रू. भे.)

यभ—१ देखो 'इभ' (रू. भे.)

उ०—दळ सभ्भत खळ दाह, यभ बाज अणथाह, गह रचण गजगाह, नरनाह रघुनाथ।

—र. ज. प्र.

यम–सं. पु. [स. यमं] १ दमन, निग्रह ।
२ नियंत्रण ।
३ आत्म संयम ।
४ चित्त को धर्म में रखने वाले कर्मों का साधन ।
५ योग के आठ अंगों में से प्रथम ।
वि. वि.–योग के आठ अंग निम्न हैं:—
(१ यम, २ नियम, ३ आसन, ४ प्राणायाम, ५ प्रत्याहार, ६ धारणा, ७ ध्यान और ८ समाधि)
६ एक साथ उत्पन्न बच्चों का जोड़ा ।
७ देखो 'जम' (रू. भे.)
क्रि. वि.–१ ऐसे, इस प्रकार ।
उ०—१ मुगत वचन रणजीत **यम** आगम असुर समाज । मनहु जुत्थ मातंग पर, लखि गमन्यौ अगराज ।
—ला. रा.
उ०—२ प्रथम त्रीय मत बा'र पढ, अग्र पद वियौ अठार । चौथै पनरह मात रच, **यम** गाथा उच्चार ।
—र. ज. प्र.
२ ज्यूं, जैसे ।
उ०—त्यांहां जइ तेह नि विरहि, लगाडूं प्रीतकरि **यम** नारि । गुण असी कल थांमि नहीं, राई विक तेहनु अवतार ।
—नळाख्यांन

यमक–देखो 'जमक' (रू. भे.)

यमककरिणिक–सं. पु. सेना में व्यूहरचना का प्रबन्धक ।
उ०—सौवरण-करिणिक देवकरिणिक मंडल करिणिक उष्ट्रकरिणिक इष्टिकाकरिणिक घोडककरिणिक **यमककरिणिक** पुरोहितकरिणिक ।
—व. स.

यमघंट–१ देखो 'जमघंट' (रू. भे.)
२ देखो 'जमघटजोग' (रू. भे.)

यमचक्र–देखो 'जमचक्र' (रू. भे.)

यमजातना–देखो 'यमयातना' (रू. भे.)

यमजित–वि. [सं.] मृत्यु को जीतने वाला । मृत्युंजय ।
सं. पुं.–शिव, महादेव ।

यमणी, यमवौ–देखो 'जीमणी, जीमवौ' (रू. भे.)
उ०—पग न चांपूं पुरुस कोएना, न यमूं कुहुनूं छांड्यूं अन्न, वाट जोऊं माह्ला प्रीउडा केरी, राखी तेहनि चरणि मंग । —नळाख्यांन

यमियोड़ौ–देखो 'जीमियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. यमियोड़ी)

यमदंड–देखो 'जमदंड' (रू. भे.)

यमदग्नि–देखो 'जमदग्नि' (रू. भे.)

यमदूत–सं. पु. यौ. [सं. यम+दूत] १ कौआ ।
२ नौ समिधों में से एक ।
३ विश्वामित्र ऋषि का एक पुत्र ।
४ वह घोड़ा जिसके शरीर का रंग श्वेत हो किन्तु चारों पैर श्याम वर्ण के हों (अशुभ) (शा. हो.)
५ वह घोड़ा जिसके होठ परस्पर न मिलते हों (अशुभ) (शा. हो.)
६ देखो 'जमदूत' (रू. भे.)

यमन–सं. स्त्री.–संगीत में एक राग विशेष ।

यमनक्षत्र–देखो 'जमनख्तर' (रू. भे.)

यमनाथ, यमनाह–देखो 'जमनाह' (रू. भे.)

यमपद–सं. पु.–शाक विशेष ।
उ०—येठीमधु नइं यावनी, यवपत्नटी यवांनि । यक्षलता योसिम हरी, **यमपद** पांनि पांनि ।
—मा. कां. प्र.

यमपुर, यमपुरी–देखो 'जमपुर' (रू. भे.)

यमभगिनी–देखो 'जमभगनी' (रू. भे.) (डिं. को.)

यमया–देखो 'जमया' (रू. भे.)

यमयातना–सं. स्त्री. यौ. [सं. यम+यातना] पुराणानुसार मृत्यु के बाद यम द्वारा दी जाने वाली यातना या कष्ट ।
रू० भे०–यमजातना ।

यमराज–सं. पु. [सं.] १ एक ग्रन्थकार, जिसने 'भास्करसंहिता' के अन्तर्गत ज्ञानार्णवतंत्र की रचना की थी ।
२ देखो 'जमराज' (रू. भे.)
उ०—**यमराज** उबारे, रांमण मारे, ते हरणः कंस अमंता है । कह बुद्ध किलंकी ईस ऊसंकी, कळ पूरण सीकंता है ।
—र. ज. प्र.

यमल–सं. पु.–१ वाद्य यन्त्र विशेष ।
उ०—एकि बलबुद्धि आयुबृद्धिकार सीतल सर अप्यायक पांणी आपतां त्रसा चूरइ, एकि वीणा वेणु म्रदंग **यमल** संख पटह कंसालप्रमुख अगुणपंचास वादित्रस्वर सांभलावइं मधुर ।
—व. स.
२ देखो 'जमल' (रू. भे.)
उ०—स्रीरांम **यमलां** रूखमणी, दीसंति सकल सरूप । नारद तुंबर गीत गावई, विप्रदांन अघट्ट । मंगळीक अनेक वरत्या, विड़द बोलई भट्ट ।
—रूकमणी मंगळ

यमलोक–देखो 'जमलोक' (रू. भे.)

यमवारौ–देखो 'जमारौ' (रू. भे.)
उ०—रात हुई सट मासनी, चितवे मनरे मांयजी । दुख रा दाधा मांणसा, **यमवारौ** किम जायजी ।
—जयवांणी

यमवाहन–देखो 'जमवाहण' (रू. भे.)
यमहंता–देखो 'जमहंता' (रू. भे.)
यमहर–देखो 'जमहर' (रू. भे.)
उ०—चंदणु कमलताल पुण मेल्हइ जाल, चंद्रकांति ज्वलइ, पुष्प सय्या वलइ, हार भावइ अंगार, कदलीहर मानइ यमहर, जे जलसीकर ने उद्वेग करइ, जे सीतलोपचार इंग विकारइ, इणि परि प्रज्वलित स्नेहपटल विरहानल दीपनेइ।
—व. स.
यमालय–सं. पु. यौ. [सं. यम+आलय] यम के रहने का स्थान, यमपुरी।
यमि–सं. पु. [सं.] इन्द्रियों को वश में रखने वाला।
सं. स्त्री.–यमुना नदी। (डि. को.)
यमुना–देखो 'जमना' (रू. भे.)
यमनोत्तरी–देखो 'जमनोतरी' (रू. भे.)
यमेस–सं. पु. [सं. यमेश] भरणी नक्षत्र का नामान्तर।
यम्रत–देखो 'अम्रत' (रू. भे.)
ययाति–सं. पु.–राजा नहुष के पुत्र एवं राजा पुरु के पिता, जिनका विवाह शुक्राचार्य जी की पुत्री से हुआ था।
वि. वि.–इन्होंने शुक्राचार्य जी से जर्जर अवस्था को प्राप्त होने के अभिशाप के कारण अपने पुत्र पुरु से यौवनावस्था को प्राप्त किया और पुरु को जर्जर अवस्था प्रदान कर १००० वर्ष तक जीवन का सुख भोगा। अन्त में पुरु को पुनः यौवनावस्था लौटाकर उन्हें राज्य-पद दिया एवं स्वयं ने वृद्धावस्था को अंगीकार किया।
ययावर–देखो 'यायावर' (रू. भे.)
ययी–सं. पु.–१ शिव।
२ बलि चढ़ाया जाने वाला घोड़ा।
३ घोड़ा।
४ मार्ग, रास्ता।
५ बादल।
यरंद, यर–देखो 'अरि' (रू. भे.)
उ०—१ खुलत रिख नयण सुण, पंख पळचर खरर। डगमगत यर धुमत, भाज परव्रत डरर।
—र. ज. प्र.
उ०—२ अरक आकरो 'मांन' भूपत तपै आजरो, थटै दळ कळह समांन आतां। पैसकस भरै सुज 'मांन' ओवड़ पगां, यरां मत करो अभमांन आतां।
—चिमनजी आढ़ो
यरथाट–देखो 'अरिथाट' (रू. भे.)
उ०—चुग नहीं मळे पळचार स-चीता, चखण काज लभै नह चारो। 'घीरजीयों' यरथाट थकावण, हाल गयो दळ मेळण हारो।
—सुखजी खड़ियौ

यरहर–देखो 'अरिहर' (रू. भे.)
उ०—दूसरा 'माल' संग लियां चुतरंग दळ, यरहरां मार सैणां उबारै। रण भड़ां महल जूझा गहल राठवड़, महल रमतां पड़ै दहल सारै।
—कल्याणदासजी महड़ू
यरादो–देखो 'इरादो' (रू. भे.)
उ०—दाया बैर का तो ब्याहि बेटी दूर कीनां, भूखरी का यरादा डायजा में छोड़ दीनां।
—शि. वं.
यळ–देखो 'इळा' (रू. भे.)
उ०—१ करुणा निधांन कोदंड कर, नित चालण यळ रीत नय। रघुकुळ दिनेस जन लाज रख, जग अवार अोधेस जय।
—र. ज. प्र.
उ०—२ चारणां वरण संकट सुणै, लाख वात अंजस न लै। कमध यळ सीस राखण कथां, घणां खळां खपरां घलै।
—पा. प्र.
यळधीस–सं. पु. [सं. इलाधीश] राजा, नृप (डि. को.)
यळनाथ–सं. पु. [सं. इलानाथ] राजा, नृप (डि. को.)
यळप्रभ–सं. पु. [सं. इलाप्रभा] नगर, शहर (अ. मा.)
यलम–देखो 'इलम' (रू. भे.)
उ०—उतन विलायत किलकता कांनपुर आविया, ममोई लंक मदरास मेळा। यलम धुर वहण अंगरेज दाटण यळा, भरतपुर ऊपरा हुआ भेळा।
—कविराजा बांकीदास
यलल्लाह–देखो 'इलल्ला (रू. भे.)
उ०—रहै पीरदोना मदत्ति तिहारी, यलल्लाह के हाथ है जीति हारी।
—ला. रा.
यळसुवन–सं. पु. [सं. इला+सूनु] पृथ्वीपुत्र मंगल। (अ. मा.)
यळा–सं. स्त्री [सं. इला] १ इन्द्र की राणी इन्द्राणी। (ना. मा.)
२ देखो 'इळा' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—फौजां देख न कीधी फौजां, दोयण किया न खळा डळा। खवां खांच चूड़ै खावंदरै, उणहिज चूड़ै गई यळा। —बां. दा.
यळाइन्द–सं. पु. [सं. इला+इंद] राजा, नृप। (डि. को.)
यलापत, यलापति–सं. पु. [सं. इला+पति] राजा, नृप।
यवन–सं. पु. [सं.] १ कृष्ण के द्वारा मारे गए 'कालायवन' राजा का नामान्तर।
२ हैहय राजा का एक साथी, जिसे सगर ने पराजित किया था।
३ एक लोक समूह, जो गांधार देश के सीमा भाग में स्थित 'अरिआ' एवं 'अर्कोशिया' प्रदेश में रहते थे।
४ देखो 'जवन' (रू. भे.)

यवमध्य–सं. पु. [सं. यव+मध्य] १ एक प्रकार का चांद्रायण व्रत।
उ०–कनकावलि रत्नावलि मुक्तावलि सिंहविक्रीडित महासिंहाविक्रीडित गुणरत्न संवत्सर भद्र महाभद्र भद्रोतर सर्वतोभद्र **यवमध्य** चंद्रायण वज्रमध्य चंद्रायण आचाम्ल वरद्धमांन।
—व. स.
२ पांच दिवस में समाप्त होने वाला एक प्रकार का यज्ञ।
३. एक प्राचीन नाप।

यवरोटिका–सं. स्त्री. [सं. यव+रा. रोटिका] यव की बनी रोटी या चपाती।
उ०—एकं कुभोजनं अन्यत्तु प्रथम कवले मक्षिकापातः, एकुथिता रथा अंतरगता कंसारिका, एका **यवरोटिका** अन्यत्काकभक्षिता च एक पंकुला रथ्या।
—व. स.

यवागू—सं. पु. [सं.] जौ या चावल का वह मांड जो सड़ा कर कुछ खट्टा कर दिया गया हो।

यविनर–सं. पु. [सं.] १ द्रुह्युकुलोत्पन्न एक सुविख्यात राजा, जो मत्स्य के अनुसार अजमीढ राजा का, एवं भागवत, विष्णु एवं वायु के अनुसार द्विमीढ राजा का पुत्र था।
२ उत्तर पंचाल देश का एक राजा, जो भागवत पुराण के अनुसार भर्ग्यस्व राजा का पुत्र था।

यवियस–सं. पु. [सं.] १ एक राजा, जो वायु के अनुसार ऋक्ष राजा का पुत्र था।
२ एक आचार्य, जो वायु के एवं ब्रह्मांड के अनुसार, व्यास की सामशिष्य परंपरा में से हिरण्यनाभ ऋषि का शिष्य था।

यस–सं. पु.–१ भोजन, अन्न।
२ सुतभ देवों में से एक।
३ विकुंठ देवों में से एक।
४ देखो 'जस' (रू. भे.)

यसड़ौ—देखो 'इसड़ौ' (रू. भे.)

यसनांमिक–वि. [सं. यशनामिक] यशस्वी।
उ०—**यसनांमिक** क्रत्य ताहरं, पुरीसादाणी विरुद, वामाकुल वडभागीयो, 'पारसनाथ' मरद्द। जिन सासननी भूपति, वरद्धमांन जिनभांण, दूसम पंचम आरके, सकल प्रवर्त्ते आंण।
—कवियण

यसब—सं. पु. [अ. यश्ब] एक हरा कठोर पत्थर जो दिल धड़कने की बिमारी के लिए औषध रूप में काम आता है।

यसवंत–यशस्वी।

यसस्कर–सं. पु. [सं. यशस्कर] शिवदेवों में से एक।
वि.–यशस्वी,

यसस्वी–देखो 'जसवांन' (रू. भे.)

उ०—देव अनाथनाथ जगन्नाथ त्रिभुवनस्वामी, विमलवाहन चक्षुस्मंत **यसस्वी**–अभिचंद्र–प्रसेनजित–मरुदेवनइ अन्वयि नाभि नरेस्वरकुल–नभस्थल–मयूखमाली।
—व. स.

यसारत–देखो 'इसारौ' (रू. भे.)
उ०—नमे कदम्मां तदि निजर, **यसारत** वरियांम। तदि पाण वैठो मत्री, सभे तीन सल्लांम।
—सू. प्र.

यसु–सं. पु. [सं. अयस्] लोहा। (अ. मा.)

यसुमति–देखो 'जसुमती' (रू. भे.)

यसूं–वि. [सं. यादृशकम्] जैसा।
उ०—एणी पिरि चींतव (तां) तांहां सरोवरनी तीरि, वरटापति सुंदर तां दीठु कनक **यसूं** सरीर।
—नळाख्यांन

यसोदा–देखो 'जसोदा' (रू. भे.)

यसोदानंदन–देखो 'जसोदानंद' (रू. भे.)

यसोदेवी–सं. स्त्री.–अनुवंशीय सम्राट वृहन्मनस की पत्नी।

यसोधन–सं. पु.–पांडववंसीय दुर्मुख पांचाल नामक राजा का पुत्र।

यसोधर–१ भूतकाल के १८ वें तीर्थंकर का नाम।
२ भविष्यतकाल के १९ वें तीर्थंकर का नाम।
३ देखो 'जसोधर' (रू. भे.)

यसोधरा—देखो 'जसोधरा' (रू. भे.)

यस्टकुटी–सं. स्त्री.–पहाड़। (अ. मा.)

यस्टि–सं. स्त्री–१. लकड़ी का शस्त्र।
उ०—**यस्टि** सपन, पठमु, हल, मुसल, कुलिस, कातर, करपत्र, तरवारि, कुद्दाल, यंत्र, गोफल, डाहिणि, मंडासिका, कुहाडी, ल्हिपुम, इति छतीस दंडायुधानि।
—व. स.

यह–सर्व. [सं. इदं] निकट की वस्तु, व्यक्ति अथवा विचार (संज्ञा) के लिए प्रयुक्त शब्द, जो वह का विपरीतार्थक होता है।
रू० भे०–यहु, येह।

यहां–क्रि. वि. [सं. इह] इस स्थान पर।

यहि, यही–सर्व.–निश्चित रूप से यह, यह ही।
रू० भे०–यहु, येई, योई, योही, यौही।

यहीं–क्रि. वि.–इस स्थान पर ही।
रू. भे.–यांही।

यहु–१ देखो 'यही' (रू. भे.)
उ०—क्रोध विरोध भरया सुर केवि रे, निकलंक निरदोस **यहु** नित मेव रे।
—ध. व. ग्रं.
२ देखो 'यह' (रू. भे.)

उ०—दादू सिर करवत वहै, अंग परस नहि होइ। मांहि कळेजा काटिये, यहु व्यथा न जांणै कोई।

—दादूवांणी

यहूद–सं. पु.–देश का नाम, जहां हजरत ईसा पैदा हुए थे।

यहूदी–सं. पु.–१ यहूद देश का निवासी।

२ उक्त देश की एक जाति।

सं. स्त्री.–३ यहूद देश की भाषा।

वि०–यहूद देश का, यहूद देश सम्बन्धी।

यां—सर्व०–१ इन।

उ०–१ जिकण नूं मीणां रा मारण री निस्चय जणाइ उणरी वडौ पुत्र कुंभराज तिणहूं छोटौ कन्हड़ यां दोही वंधवां नूं वडी वरात रै साथ वरणनूं बुलाइ मीणां रै मावण जिसड़ौ एक वाडौ जुदौ ही वणायौ। —वं. भा.

उ०—२ विलै इग्यारस वरस भगति ऊपरि प्रभ भीजै। पिप्पळ तुळछी पांन रांम यां ऊपरि रीजै। —पी. ग्रं.

२ इन्होंने।

उ०—१ तद्व राव मेरवैजी कहायौ, 'गढ अठै मती घाळज्यौ, परै जांगळू री हद में घाल्जौ।" सू यां मांनी नही। —द. दा.

उ०–२ एतां आद छतीस कुळ, सीस 'अजौ' पत धार। हलचल्ली मेछां धरा, यां झल्ली तलवार। —रा. रू.

३ इम।

क्रि. वि.–१ इस प्रकार, इस तरह।

उ०—१ लघु तै दीरघ पुन पुलित, यां माता इवकाय। त्यां छोटे न वड किय 'पता', वडै महांन वढाय।

—जैतदांन बारहठ

उ०—२ महाराजा भांमी महळ, नर सुर नागां नूर। कुसळ नही कंस केसरै, यां दाखै अक्रूर। —पी. ग्रं.

२ इसमें।

उ०–लग मत्ता चौवीस छंद मत्त लेखजै, सुज यां अधिका मत उपछंद विसेखजै। वरण मत सम नहीं असम पद जांणजै, वै छंदां मिळ दंडक मत्त वखांणजै।

—र. ज. प्र.

३ यहां।

उ०—तठै वीरमदेजी रै सांमा जोय पातसाहजी फुरमायौ कै वीरम तुम अव तलक यां ई हौ। —द. दा.

रू. भे. यांह

यांन–सं पु. [सं. यानं]–१ सवारी, वाहन।

२ विमान।

३ गति, चाल।

क्रि. वि.—इस प्रकार, इस तरह।

यांनी–देखो 'यांनै' (रू. भे.)

यांनै–अव्य.— मतलब यह है कि, अर्थात।

रू. भे.—यांनी

यांम–देखो 'जांम' (रू. भे.)

यांमल–देखो 'जमल' (रू. भे.)

यांह–१ देखो 'यहां' (रू. भे.)

उ०—ते संतान तणी चिंता करनु राजा यांह, दमन नांम रिसि ईछा आवु मंदिर तेणि तांह।

—नळाख्यांन

२ देखो 'यां' (रू. भे.)

उ०—पचीसां नूं ही कूट मारिया, जांनीवासै ऊपर जाय नै जांनियां नूं कूट मारिया, जांनी सोह मारिया, आवू भाई लूंणी थौ तठै खवर मेलणी, तितरै एकण यांह रै रजपूत कह्यौ—'हूं जाईस' तरै कह्यौ 'तूं क्यूं कर जाईस ? —नैणसी

या–सर्व.–यह

उ०—१ मतवाला हो पोढ़ग्या, सुध–बुध दीन्ही भूल। पर हाथां रा हो गया, या हिड़दा में सूल।

—अज्ञात।

उ०—२ या कहतां ही पातसाह री सैन सूं वजीर रौ तीर मंकुवांण री छाती रै पार फूटौ।

—वं. भा.

उ०—३ एक अखंडी ब्रह्म की, जा घट झिलमिल जांनि। हरीया उत्तिम साध की, या ही रीत पिछांनि।

—अनुभव वांणी

क्रि. वि.–अथवा।

उ०—सरव वंस तारणी, रांम या भागीरथी। —रांमरासौ

याक–सं. पु.–हिमालय पहाड़ पर प्रायः तिब्बत में होने वाला एक चौपाया जानवर, जो बोझा ढोने के काम आता है।

याकूत–सं. पु. [अ.] एक प्रकार का लाल रंग का बहुमूल्य पत्थर।

याग–देखो 'जाग' (रू. भे.) (डिं. को.)

यागवलक–देखो 'याग्यवल्क्य' (रू. भे.)

यागि–देखो 'जाग' (रू. भे.)

उ०—जो फल पांमइ तपसी सवे, जे फळ हुइ वांद छोडवै। जे फल पांमइ कीधइ यागि, जे फल भेट्यां हुइ प्रियागि।

—कां. दे. प्र.

याग्य–सं. पु.–भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

याग्यतुर–सं. पु.–ऋषभ नामक अश्वमेध करने वाले राजा का पैतृक नाम।

याग्यदत्त–सं. पु.–वशिष्ठकुलोत्पन्न याज्ञवल्क्य नामक गोत्रकार का नामान्तर।

यवमध्य-सं. पु. [सं. यव+मध्य] १ एक प्रकार का चांद्रायण व्रत ।
उ०-कनकावलि रत्नावलि मुक्तावलि सिंहविक्रीडित महासिंहाविक्रीडित गुणरत्न संवत्सर भद्र महाभद्र भद्रोतर सर्वतोभद्र **यवमध्य** चंद्रायण वज्रमध्य चंद्रायण आचाम्ल वरद्धमान ।
—व. स.

२ पांच दिवस में समाप्त होने वाला एक प्रकार का यज्ञ ।
३. एक प्राचीन नाप ।

यवरोटिका-सं. स्त्री. [सं. यव+रा. रोटिका] यव की बनी रोटी या चपाती ।
उ०—एकं कुभोजनं अन्यत्तु प्रथम कवले मक्षिकापातः, एकुथिता रथा अंतरगता कंसारिका, एका **यवरोटिका** अन्यत्काकभक्षिता च एक पंकुला रथ्या ।
—व. स.

यवागू—सं. पु. [सं.] जौ या चावल का वह मांड जो सड़ा कर कुछ खट्टा कर दिया गया हो ।

यविनर-सं. पु. [सं.] १ द्रुह्युकुलोत्पन्न एक सुविख्यात राजा, जो मत्स्य के अनुसार अजमीढ राजा का, एवं भागवत, विष्णु एवं वायु के अनुसार द्विमीढ राजा का पुत्र था ।
२ उत्तर पंचाल देश का एक राजा, जो भागवत पुराण के अनुसार भर्ग्यस्व राजा का पुत्र था ।

यवियस-सं. पु. [सं.] १ एक राजा, जो वायु के अनुमार ऋक्ष राजा का पुत्र था ।
२ एक आचार्य, जो वायु के एवं ब्रह्मांड के अनुसार, व्यास की सामशिष्य परंपरा में से हिरण्यनाभ ऋषि का शिष्य था ।

यस-सं. पु.-१ भोजन, अन्न ।
२ सुतभ देवों में से एक ।
३ विकुंठ देवों में से एक ।
४ देखो 'जस' (रू. भे.)

यसड़ी—देखो 'इसड़ी' (रू. भे.)

यसनांमिक-वि. [सं. यशनामिक] यशस्वी ।
उ०—**यसनांमिक** कृत्य ताहरु, पुरीसादाणी विरुद्द, वामाकुल वडभागीयो, 'पारसनाथ' मरद्द । जिन सासननी भूपति, वरद्धमांन जिनभांण, दूसम पंचम आरके, सकल प्रवर्त्ते आंण ।
—कवियण

यसव—सं. पु. [अ. यश्व] एक हरा कठोर पत्थर जो दिल धड़कने की विमारी के लिए औषध रूप में काम आता है ।

यसवंत-यशस्वी ।

यसस्कर-सं. पु. [सं. यशस्कर] शिवदेवों में से एक ।
वि.-यशस्वी,

यसस्वी-देखो 'जसवांन' (रू. भे.)
उ०—देव अनाथनाथ जगन्नाथ त्रिभुवनस्वामी, विमलवाहन चक्षुस्मंत **यसस्वी**-अभिचंद्र-प्रसेनजित-मरुदेवनउ अन्वयि नामि नरेस्वरकुल-नभस्थल-मयूसमाली ।
—व. स.

यसारत-देखो 'इसारो' (रू. भे.)
उ०—नमे कदम्मां तदि निजर, **यसारत** वरियांम । तदि पाए वैठो मंत्री, सभे तीन सल्लांम ।
—सू. प्र.

यसु-सं. पु. [सं. अयस्] लोहा । (अ. मा.)

यसुमति-देखो 'जसुमती' (रू. भे.)

यसूं-वि. [सं. याद्दशकम्] जैसा ।
उ०—एणी पिरि चीतव (तां) तांहां मरोवरनी तीरि, वरदापति सुंदर तां दीठु कनक **यसूं** सरीर ।
—नळाख्यांन

यसोदा-देखो 'जसोदा' (रू. भे.)

यसोदानंदन-देखो 'जसोदानंद' (रू. भे.)

यसोदेवी-सं. स्त्री.-अनुवंशीय सम्राट वृहन्मनस की पत्नी ।

यसोधन-सं. पु.-पांडववंमीय दुर्मुख पांचाल नामक राजा का पुत्र ।

यसोधर-१ भूतकाल के १८ वें तीर्थंकर का नाम ।
२ भविष्यतकाल के १९ वें तीर्थंकर का नाम ।
३ देखो 'जसोधर' (रू. भे.)

यसोधरा—देखो 'जसोधरा' (रू. भे.)

यस्टकुटी-सं. स्त्री.-पहाड़ । (अ. मा.)

यस्टि-सं. स्त्री-१. लकड़ी का शस्त्र ।
उ०—**यस्टि** सपन, पठमु, हल, मुसल, कुलिस, कातर, करपत्र, तरवारि, कुद्दाल, यंत्र, गोफल, डाहिणि, संडासिका, कुहाडी, छिपुम, इति छतीस दंडायुधानि ।
—व. स.

यह-सर्व. [सं. इदं] निकट की वस्तु, व्यक्ति अथवा विचार (संज्ञा) के लिए प्रयुक्त शब्द, जो वह का विपरीतार्थक होता है ।
रू० भे०-यहु, येह ।

यहां-क्रि. वि. [सं. इह] इस स्थान पर ।

यहि, यही-सर्व.-निश्चित रूप से यह, यह ही ।
रू० भे०-यहु, येई, योई, योही, यीही ।

यहीं-क्रि. वि.-इस स्थान पर ही ।
रू. भे.-यांही ।

यहु-१ देखो 'यही' (रू. भे.)
उ०—क्रोध विरोध भरया मुर केवि रे, निकलंक निरदोस **यहु** नित मेव रे ।
—ध. व. ग्रं.

२ देखो 'यह' (रू. भे.)

उ०—दादू सिर करवत वहै, अंग परस नहिं होइ। मांहि कळेजा काटिये, यहु व्यथा न जांणै कोई।

—दादूवांणी

यहूद-सं. पु.—देश का नाम, जहां हजरत ईसा पैदा हुए थे।

यहूदी-सं. पु.—१ यहूद देश का निवासी।

२ उक्त देश की एक जाति।

सं. स्त्री.—३ यहूद देश की भाषा।

वि०—यहूद देश का, यहूद देश सम्बन्धी।

यां—सर्व०—१ इन।

उ०—१ जिकण नूं मीरणां रा मारण री निस्चय जगाइ उणांरी बडी पुत्र कुंभराज तिणहूं छोटौ कन्हड़ यां दोही बंधवां नूं बडी बरात रै साथ वरणनूं बुलाइ मीरणां रै मावण जिसड़ी एक वाटी जुदी ही बणायी। —वं. भा.

उ०—२ विलै इग्यारस वरस भगति ऊपरि प्रभ भीजै। पिप्पळ तुळछी पांन रांम यां ऊपरि रीजै। —पी. ग्रं.

२ इन्होंने।

उ०—१ तद्व राव मेरुजी कहायो, 'गड अठै मती घाळज्यो, परै जांगळू री हद में घातै।" नू यां मांनी नहीं। —द. दा.

उ०—२ एतां आद छतीस कुळ, सीस 'अजो' पत धार। हलचल्ली मेछां धरा, यां झल्ली तलवार। —रा. रू.

३ इस।

क्रि. वि.—१ इस प्रकार, इस तरह।

उ०—१ लघु तैं दीरघ पुन पुलित, यां मात्रा उपकाय। त्यां छोटे न वड किय 'पता', वडै महांन वढाय।

—जैतदांन बारहठ

उ०—२ महाराजा भांमी महळ, नर सुर नागां नूर। कुसळ नहीं कंस केमरै, यां दाखै अकरूर। —पी. ग्रं.

२ इससे।

उ०—लग मत्ता चौवीस छंद मत्त लेखजै, मुज यां अधिका मत उपछंद विसेखजै। वरण मत सम नहीं असम पद जांणजै, वै छंदां मिळ दंडक मत्त वखांणजै।

—र. ज. प्र.

३ यहां।

उ०—तठै वीरमदेजी रै सांमा जोय पातसाहजी फुरमायो कै वीरम तुम अब तलक यां ई ही। —द. दा.

रू. भे. यांह

यांन-सं पु. [सं. यानं]—१ सवारी, वाहन।

२ विमान।

३ गति, चाल।

क्रि. वि.—इस प्रकार, इस तरह।

यांनी—देखो 'यांनै' (रू. भे.)

यांनै—अव्य.— मतलब यह है कि, अर्थात।

रू. भे.—यांनी

यांम—देखो 'जांम' (रू. भे.)

यांमल—देखो 'जमल' (रू. भे.)

यांह—१ देखो 'यहां' (रू. भे.)

उ०—तै संतान तणी चिंता करनु राजा यांह, दमन नांम रिसि ईछा आवु मंदिर तेणि तांह।

—नळाख्यांन

२ देखो 'यां' (रू. भे.)

उ०—पचीसां नूं ही कूट मारिया, जांनीवासै ऊपर जाय नैं जांनियां नूं कूट मारिया, जांनी सोह मारिया, आवू भाई लूंणी थां तठै खबर मेलणी, तितरै एकण यांह रै रजपूत कह्यौ—'हूं जाईस' तरै कह्यौ 'तूं क्यूं कर जाईस ? —नैणसी

या—सर्व.—यह

उ०—१ मतवाला हो पोढ़ग्या, सुध-बुध दीन्ही भूल। पर हायां रा हो गया, या हिड़दा में सूल।

—अज्ञात।

उ०—२ या कहतां ही पातसाह री सैन सूं वजीर री तीर मंकुवांण री छाती रै पार फूटौ।

—वं. भा.

उ०—३ एक अखंडी ब्रह्म की, जा घट झिलमिल जांनि। हरीया उत्तिम साध की, या ही रीत पिछांनि।

—अनुभव वांणी

क्रि. वि.—अथवा।

उ०—सरव वंस तारणी, रांम या भागीरथी। —रांमरासौ

याक—सं. पु.—हिमालय पहाड़ पर प्रायः तिब्बत में होने वाला एक चौपाया जानवर, जो वोझा ढोने के काम आता है।

याकूत—सं. पु. [अ.] एक प्रकार का लाल रंग का बहुमूल्य पत्थर।

याग—देखो 'जाग' (रू. भे.) (डि. को.)

यागवलक—देखो 'याग्यवल्क्य' (रू. भे.)

यागि—देखो 'जाग' (रू. भे.)

उ०—जो फल पांमइ तपसी सवे, जे फळ हुइ वांद छोडवै। जे फल पांमइ कीधइ यागि, जे फल भेटयां हुइ प्रियागि।

—कां. दे. प्र.

याग्य—सं. पु.—भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

याग्यतुर—सं. पु.—ऋषभ नामक अश्वमेध करने वाले राजा का पैतृक नाम।

याग्यदत्त—सं. पु.—वशिष्ठकुलोत्पन्न याज्ञवल्क्य नामक गोत्रकार का नामान्तर।

याग्यवल्क्य–सं. पु.–१ विश्वामित्र कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
२ वशिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
३ एक आचार्य, जो व्यास की ऋक्‌शिष्य परंपरा में से वाष्कल नामक ऋषि का शिष्य था।
४ एक आचार्य, जिसके आश्रय से विष्णुयशस् नामक ब्राह्मण के घर, कल्कि नामक विष्णु का ग्यारहवां अवतार उत्पन्न होने वाला है।
५ विश्वामित्र के ब्रह्मवादी पुत्रों में से एक।
६ एक प्रसिद्ध ऋषि, जो वैशम्पायन के शिष्य थे।
७ राजा जनक के दरबार में रहने वाले एक ऋषि, जिनकी पत्नियों का नाम मैत्रेयी एवं गार्गी था।
८ योगीश्वर याज्ञवल्क्य के वंशज, एक स्मृतिकार।

याग्यसेनी–सं. पु. [सं.] यज्ञसेन की पुत्री, द्रौपदी।

याग्यिक–सं. पु. [सं.] यज्ञ करने या कराने वाला।

याचक–देखो 'जाचक' (रू. भे.)

याचनी–सं. पु.–अमुक वस्तु मुझे दो–ऐसी याचना करने वाला। (जैन)

याजक–सं. पु. [सं.] १ यज्ञ कराने वाला।
२ राजा का हाथी।
३ मस्त हाथी।

याजन–सं. स्त्री. [सं. याजनं] यज्ञ की क्रिया।

याजि–सं. पु.–यज्ञ करने वाला।

यातना–सं. स्त्री. [सं.] १ अत्यन्त शारीरिक कष्ट या पीड़ा।
२ यम द्वारा पापियों को दिया जाने वाला दण्ड।

यातायात–सं. पु. यौ. [सं. यात+आयात] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया, गमनागमन, आना जाना।
२ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का साधन।

यातुधांन–देखो 'जातुधांन' (रू. भे.)

यात्र, यात्रा–देखो 'जातरा' (रू. भे.)
उ०—१ सिद्ध वड़हि सदाई जी, दीपै सुर दाई। प्रगटी पुण्याई जी, जिण यात्रा पाई।
—ध. व. ग्रं.

यात्राळू–वि. [सं. यात्रा+रा. प्र. ळू] यात्री।
उ०—महाराज कोई यात्राळू जाइ छै। सीले पीहर हुवो छै। पछै धूप चढिसी, तिणी थी नगारो हुवो छै। कूच हुसी।
—जैसा सरवहिया री वात

यात्री–देखो 'जातरी' (रू. भे.)
उ०—किता केइ मार्ग मांहि कलेस, आवै केइ यात्री लोक असेस। गरै छै कांम तियां सतमेव, दीगै सुख वंछित रिसभदेव।
—ध. व. ग्रं.

याद–सं. स्त्री. [फा.] १ स्मरण शक्ति, स्मृति।
२ स्मरण करने की क्रिया या भाव।
क्रि. प्र.–करणी, कराणी दिराणी, होणी।

यादगार, यादगारी, यादगीर, यादगीरी–सं. स्त्री. [फा. यादगार] स्मृति चिन्ह, स्मारक।
उ०—इण सराय में आवणै री फळ यादगीर रै बगैर कुछ बाकी नहीं रहसे।
—नी. प्र.

याददास्त–सं. स्त्री. [फा. याददाश्त] १ स्मरण शक्ति, स्मृति।
२ स्मरण रखने के लिए लिखी हुई कोई बात।

यादवगसी–सं. पु.–राजा का एक विशेष अधिकारी।

यादम–सं. पु. [अ. आदम] आदमी, पुरुष।
उ०—लाज सरम छोडी नै भागा नै कहण लागा, यारी कोई मुनि यादम लड़ै तो तिण से लड़िये पिण क्या जांणां केते ही जगमालि थे।
—गींदोली री वात

यादव–'देखो' जादव' (रू. भे.)
उ०—भावसिंघ राठौड़ां री भांणेज, भगवंतसिंघ नरुकां री भांणेज, भारथसिंघ यादवां री भांणेज।
—बां. दा. ख्या.

यादवकुळ, यादवकुळि–सं. पु. यौ. [सं. यादव+कुल] यादव वंश।
उ०—आदिपुरुस अवतार धुरि, यादवकुळि जयवंत। असुरवंस निकंदीउ, ते प्रणमूं स्रीकंत।
—कां. दे. प्र.

यादवपति–देखो 'जादवपत' (रू. भे.)
उ०—यादवपति जावे हो प्रभुजी ने वांदवा, नगरी द्वारिका सिणगार। घर घर मांहे हो महोच्छव मंड रह्यो, हरस सूं जावै नर नार।
—जयवांणी

यादववंश–सं. पु.–यदु राजा का वंश, जिसमें श्री कृष्ण हुए थे।
उ०—राजकुली ३६; सूरयवंस, सोमवंस, यादववंस, कदंब, परमार, इक्ष्वाक, चाहुमान, चालुक्य, मोरी, सेलार सैंधव······
—व. स.

याबू–सं. पु. [फा.] छोटे डील–डौल का घोड़ा, टट्टू।

यायावर–सं. पु. [सं.] १ इधर–उधर घूमने वाला।
२ एक स्थान पर टिक कर न रहने वाला जरत्कारु ऋषि।
३ वह ब्राह्मण जिसके घर पर गार्हस्पत्य अग्नि सदा प्रज्वलित रहती हो।
४ ययरी नामक नागकन्या के वंशज, चारण।
रू. भे.–ययावर।

यार–सं. पु. [फा.] १ मित्र, दोस्त।

उ०—श्री पतीत पावन प्रभु, इणरी करी उचार। इणि री नांम कल्यांण छै, श्री अरिजण री यार।

—पी. ग्रं.

२ साथी, मददगार।

३ वह व्यक्ति जिसका किसी स्त्री से अनुचित सम्बन्ध हो, उपपति।

उ०—मालजदा मन मांहि रांड सूझै दिनराती, मालजादि मन मांहि यार सूझै अकुलानी।

—ऊ. का.

४ प्रेमी।

उ०—नेंन हमारे यार मु, रहीया उलिझि उलिझि। हुंनीया न्यारा नां हुवै, सुलझाया न सुलिझि।

—अनुभव वांणी

यारी—सं. स्त्री. [फा.] १ मित्रता, दोस्ती।

उ०—इण परवांणी नाह उचारै, सुणतां मितर वहोतग सारै। इण थी जो राखै भड़ यारी, हुवै कमंध गुज पंचहजारी।

—रा. रू.

क्रि. प्र.—करणी, होणी।

२ स्त्री-पुरुष का अनुचित सम्बन्ध।

याळ—सं. स्त्री. [तु.] घोड़ा, सिंह आदि के गर्दन के बाल। अयाल।

उ०—१ कसंता बिजैमंट कोदंट कंधां, वणावै अथा वेर रै जेरबंधां। सटा याळ जाळी लटाळी सुहावै, प्रिया नागवाळी लसे दाग पावै।

—वं. भा.

उ०—२ लसै पति पच्छर पिट्ठ निसंक, कसै कर वग्गनि कंबुर वंक। गुहे कच यालन के भरि बत्थ, सितासित पीत क नादिक सत्थ।

—ला. रा.

२ गर्दन।

यालुक—सं पु.—अनन्त, अगीग।

यावनी—सं. पु.—करंक यानि नामक ईंव, रमाल।

उ०—येठीमधु नइं यावनी, यवपत्तडी यवांनि। यक्ललता योसिम हरी, यमपद पांनि पांनि।

—मा. कां. प्र.

यास्क—सं. पु. [सं.] १ निरुक्त नामक सुविख्यात ग्रंथ का कर्ता, जो 'शब्दार्थतत्व' का परम ज्ञाता माना जाता है।

यि—सर्व.—ये।

उ०—अग मिग्नि चमरी वन मांहां नाठां; कमल मीन गयां वारि; इंदु ऊहोलाई यिनु गुण गाई स्याधी हारि।

—नळाख्यांन

यिऊं—क्रि. वि.—ऐसा, ऐसे।

उ०—नै खापरी रात पोहर १ पाछली थकी आवू निजीक उठै उतरियौ, जांणियौ "हूं तौ कुसळै पड़ियौ, अठै घड़ी १ वैसां" यिऊं उतर बैठो; तितरै धरती फाटण लागी, तरै इण जांणियौ औ कासूं हुवै छै।

—नैणसी

यिभ—देखो 'इभ' (रू. भे.)

यिम—देखो 'उम' (रू. भे.)

उ०—नारीमांहां यिम एक तूं छि, पुरुस मांहि तेह। विध्या नाइ अमूलक ए रत्न मरज्यां वेहि।

—नळाख्यांन

यिमरत—देखो 'अमरत' (रू. भे.)

उ०—अमरत दध नहै तिय अवर, विधु यिमरत न वखांण। के जन अजरांमर करण, जस हर यिमरत जांण।

—र. ज. प्र.

यिहां—क्रि. वि.—यहां।

उ०—नैनध नांमि देस मनोहर, वीरसेन वसुधेस। प्रांणीमात्र नहीं को दूखियु, यिहां वरसिम्ट नरेस।

—नळाख्यांन

यी—सर्व.—यह।

उ०—यी वरखा रित वौळवी, रीती सरद अदुंद। हिम रत आधी वीच रयौ, फेर प्रगट्टयौ फंद।

—रा. रू.

यूं—देखो 'यूं' (रू. भे.)

उ०—१ जो गांगी मोभत री १ गांम मारै तौ रायमल जोधपुर रा २ गांम मारै। यूं रहतां थकां इंयारी वेध चालियौ जाइ।

—नैणसी

उ०—२ तरै राठौड़ प्रिथीराज कूंपावत जैतमाल नै कह्यौ—तु मत रोवै। परमेस्वर कीयौ तौ हूं कूंपा रै पेट री जो यूं चंद्रसेन नुं रोवाडूं।

—राव चंद्रसेन री वात

यूंमल—देखो 'जमल' (रू. भे.)

युक्त—१ देखो 'जुकत' (रू. भे.)

२ देखो 'जुगत' (रू. भे.)

युक्ति—सं. स्त्री. [सं.] १ साहित्य में एक अलंकार विशेष, जिसमें कोई अपना रहस्य छिपाने के लिये किसी क्रिया द्वारा अन्य को वंचन करे (ठगे)।

२ देखो 'जुकती' (रू. भे.)

३ देखो 'जुगती' (रू. भे.)

युक्तियुक्त, युक्तियुत–वि. [सं. युक्ति+युक्त] १ युक्ति संगत, ठीक, वाजिब ।

उ०—इत्यादि **युक्तियुत** वच उदार, सरकार स्रवन भेजे सु द्वार । पय थांन करन पोरस प्रकास, पहुंच्यौ दळ औरंगजेव पास ।

—ऊ. का.

युग–देखो 'जुग' (रू. भे.)

उ०—आ वस्त्र याहारि ओढसु ताह्हि थासु रूप प्रकास । वस्त्र **युग** ते आपियां नि सीस दीधी आस ।

—नळाख्यांन

युगति–देखो 'जुगती' (रू. भे.)

युगमंधर–देखो 'जुगमंधर' (रू. भे.)

उ०—पूरव विदेह विजय पुखलावती आठमी ठाम, पुंडरीकरणी नगरी तिहां स्री सीमंधर स्वाम, वप्र विजय पच्चीसमी विजयापुर नी नाम, पच्छिम विदेह बीजी **युगमंधर** की जै प्रणांम ।

—ध. व. ग्रं.

युगळ, युगल–देखो 'जुगळ' (रू. भे.)

उ०—इण अवसर स्रीक्रस्णजी, मा ने वंदन काज । आवे प्रणमी चरण **युगल**, वेठा स्री महाराज ।

—जयवांणी

युगलियौ–देखो 'जुगलियौ' (रू. भे.)

उ०—त्रिण कोडा कोडि सागर सुखम वीय अरो, देह दो कोस दोई पल्ल आयु धरो । वोर परिमांण आहार बीजै दिनै, **युगलीया** मानवी एह कहिया जिणै ।

—ध. व. ग्रं.

युगवर–देखो 'जुगवर' (रू. भे.)

उ०—**युगवर** 'जंबू' जेहवउ, रूपइ 'वइर-कुमार' 'पंच-नदी' साधी जिगई, सुभ लगन सुभ वार ।

—ऐ. जै. का.

युगांतक–देखो 'जुगांतक' (रू. भे.)

युगादि–देखो 'जुगादि, जुगादी' (रू. भे.)

युगादिदेव–सं. पु. [सं.] सृष्टि के आरंभ के देवता ।

उ०—समीहितारथकारी, सरवातिसयसरवस्वधारी, व्यवहार परमारथप्रव्रत्तिप्रथमावतार, संसारभयभीतभविकजनरक्षावज्रांकुर, युगादिक्रतावतार **स्रीयुगादिदेव** ।

—व. स.

युगेस–१ फलित ज्योतिष में गति के अनुसार वृहस्पति के साठ वर्षो के राशिचक्र में पांच-पांच वर्ष के युगों के अधिपति ।

२ देखो 'जुगेस' (रू. भे.)

युग्मपद–सं. पु. [सं.] शृंगार में एक आसन विशेष ।

युतवेध–देखो 'जुतवेध' (रू. भे.)

युतिस्ट–सं. पु.–छप्पय छंद का एक भेद, जिसमें ३८ गुरु, ७६ लघु से ११४ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं । इसे अजगम भी कहते हैं ।

युत्थ–देखो 'जूथ' (रू. भे.)

उ०—फतयसिंघ की करि फतह, बहुरे सुभट समाज । मनु गयंदनि **युत्थ** हनि, आये थहि म्रगराज ।

—ला. रा.

युद्ध–देखो 'जुध' (रू. भे.)

युद्धवाद–सं. पु. [सं.] ७२ कलाओं में से एक ।

युधिस्ठिर–देखो 'जुधिस्ठर' (रू. भे.)

युरोप–सं. पु. [अं.] पूर्वी गोलार्द्ध में एशिया के पश्चिम में स्थित एक महाद्वीप ।

रू० भे०–यूरप, यूरोप, योरोप ।

युरोपियन–सं. पु. [अं.] युरोप देश का निवासी ।

वि.–युरोप महाद्वीप से सम्बन्धित, युरोप का ।

रू० भे०–यूरोपियन, योरोपियन ।

युवक–वि. [सं.] १६ से ३५ वर्षों तक की अवस्था वाला जवान ।

युवति, युवती–देखो 'जुवति' (रू. भे.)

युवनासव–देखो 'जुवनासव' (रू. भे.)

युवराज, युवराजकुमार–देखो 'जुवराज' (रू. भे.)

उ०—कुंवर रूपवंत सुकुमाल, सिव भद्र नो वरण संभाल । राज चिंता काम-काज, जिण ने पदवी दी **युवराज** ।

—जयवांणी

युवरासी–सं. स्त्री.–१ एक तीर्थ का नाम ।

उ०—बदरीनाथ केदार गंगोतरि, वैजनाथ कैलासी । पंचवटी पंपापुर रुक्मिणि, देव कपिल **युवरासी** ।

—मीरां

युवा–देखो 'जवांण' (रू. भे.)

उ०—गोपाळ भगत्त-निवारण गव्भ, परम अम्रत्त परम्म सु प्रब्भ । सदा अप्रमाद जोगाणंद सिद्ध, नहीं तूं बाळ **युवा** नहि व्रद्ध ।

—ह. र.

युवावरणी–सं. स्त्री.–जवान स्त्री ।

उ०—वय वाळ विहाय **युवावरणी**, कटिवद्ध भयौ करनी करनी । विमनां अनुराग विराग वह्यौ, चितव्रत्तिय जोग प्रयोग चह्यौ ।

—ऊ. का.

युव्वनास–देखो 'जुवनासव' (रू. भे.)

उ०—सुत **युव्वनास** सेसट स्ववेस, निज हुवौ मांनधाता नरेस । पुरु-कुसीमांन सुतवंस रूप, पुर कुत्ससु तणौ संभूत भूप ।

—सू. प्र.

यूं–क्रि. वि.–१ इस प्रकार, ऐसे ।

उ०—१ मंत्र सकत्ती मंत्र सूं, ज्यों तीटी ले जाय। अभंग दुवाह 'दुरंग' यूं, नेगों साह थकाय।

—रा. रू.

उ०—२ घडी उरण अंवक लागत घाय, चढी चित रीस लेडीपत चाय। मुरो कय 'पेम' कमंघ सधीर, घुरां खग बोलत यूं रणवीर। —पे. रू.

उ०—३ यूं करतां दिन ऊगो। राव मालदेजी री फौज थांरां ऊपर दौड़ी।

—नैणसी

रू० भे०—युं।

यूंही—क्रि. वि.—१ निरर्थक, निरुद्देश्य।

उ०—उनाळा रा चौक में, चौमासा रा मेड़ी में, सियाळा रा ओरिये, पीढावो म्हांरा जोड़ी रा रतन सियाळो राजन यूंही गियोजी।

—लो. गी.

रू० भे०—युंही, यूही।

यूथ—देखो 'जूथ' (रू. भे.)

यूथनाथ—देखो 'जूथनाथ' (रू. भे.)

यूथप—देखो 'जूथप' (रू. भे.)

यूथपति—देखो 'जूथपति' (रू. भे.)

यूथपाळ—देखो 'जूथपाळ' (रू. भे.)

यूनान—सं. पु.—यूरोप का एक देश, जो एशिया के सबसे अधिक पास पड़ता है।

यूनानी—सं. स्त्री.—यूनान देश की भाषा।

वि.—१ यूनान देश का निवासी।

२ यूनान देश से सम्बन्धित।

यूनाइटेड—वि. [अं.] मिला हुआ, संयुक्त।

यूनाइटेड किंगडम—सं. पु. [अं.] आधुनिक इंगलैण्ड, जिसमें इंगलैण्ड, स्काटलैण्ड एवं आयरलैण्ड शामिल हैं।

यूनाइटेड स्टेट्स—सं. पु. [अं.] संयुक्त राज्य, जिसमें छोटे-छोटे राज्य सम्मिलित हैं।

यूनियन—सं. स्त्री. [अं.] कुछ व्यक्तियों का किसी उद्देश्य से बनाया हुआ संगठन, संघ।

यूनिवरसिटी—सं. स्त्री. [अं.] उच्च कोटि की शिक्षा प्राप्त करने की संस्था, विश्वविद्यालय।

यूनीफारम—सं. स्त्री. [अं.] किसी विशिष्ट समुदाय के लिए निर्धारित पोशाक, वर्दी।

यूरप—देखो 'युरोप' (रू. भे.)

यूराल—सं. पु.—१ एशिया व यूरोप के बीच में स्थित एक पहाड़।

२ उक्त पहाड़ के आस-पास का प्रदेश।

सं. स्त्री.—३ उक्त पहाड़ से निकलने वाली नदी।

यूरोप—देखो 'युरोप' (रू. भे.)

यूरोपियन—देखो 'युरोपियन' (रू. भे.)

यूह—देखो 'जूथ' (रू. भे.)

यूही—देखो 'यूंही' (रू. भे.)

उ०—आळस वाळा राजवी घर रा घर में दारू पी रोटी खाय सूय रैणो घर रो कांम परोपकार वीरता देस सेवा आदि आछा कांम न करणा में व्रथा यूही वेस ऊमर गमावै है।

—वी. स. टी.

ये—सर्व. [यह का ब. व.] समीपस्थ वस्तुओं या प्राणियों के लिए प्रयुक्त शब्द।

येई—देखो 'यही' (रू. भे.)

येऊ—अव्य.—यह भी।

येक—देखो 'एक' (रू. भे.)

उ०—ओडणपुड येक येक पुड असमर, हाते मूंठज हात लिया। कोप खुवार थके तळ काठां, दांणव भांत नवी दळिया।

—महाराणा हम्मीरसिंघ री गीत

येकण—देखो 'एकण' (रू. भे.)

येकणि—क्रि. वि.—अकेले में, एकांत में।

उ०—राजा प्रोहित येकणि साथी, वांह लागा पूछइ वनी वात। नयनी रूप में रूवड़ी, कोट कोमीसा अंत न पार।

—वी. दे.

येकल—देखो 'एकल' (रू. भे.)

येकलौ—देखो 'एकलौ' (रू. भे.)

(स्त्री० येकली)

येटलौ—वि. (स्त्री. येटली) जितना।

उ०—निद्रा वसि छि, सूती त्यजूं, आ वनथी बीजूं वन भजूं। जागी नहि देखि येटलि, कुंदनपुर जसि तेटलि।

—नळाख्यांन

येठीमधु—सं. स्त्री.—मुलैठी।

उ०—येठीमधु नइं यावनी, यवपत्रटीं यवांनि। यक्षलता योसिम हरी यमपद पांनि पांनि।

मा. कां. प्र.

येण—सर्व.—इस।

उ०—अभैदांन जेसांण वीकांण अप्पै, तिका आज जोधांण रै राज तप्पै। आई आवड़ा नांम विख्यात येळा, इंद्रबाई जिका येण वेळा।

—मे. म.

येता—क्रि. वि.—जिस प्रकार, जैसे।

उ०—दादू पड़दा पलक का, येता अंतर होइ। दादू विर ही रांम विन, क्योंकरि जीवै सोई।

—दादूवांणी

येतौ–सर्व. (स्त्री. येती) इतना।

उ०—१ वरुण **येतौ** कठा आंणसूं विचारै, चवै इम तरण सूं मूंह चडियौ। करण दरियाव री रीत लख कैलपुर, पुरंदर भरण री चीत पडियौ।

—महारांणा राजसिंहजी री गीत

उ०—२ ईडर सांखीवार ऊपरै, आंण वधारे **येती**। नवकोटी मारवाड़ खगां नर, सीहे लीव सहेती।

—श्री ओसथांनजी री गीत

येन–क्रि. वि.–१ जिस प्रकार जैसे।

२ जिससे।

येलम–देखो 'इलम' (रू. भे.)

उ०—भावनगर को तुरक यक, सब तुरकन सिरताज। कुसती पटो विनोट फ़त, सब **येलम** उसताज।

—ला. रा.

येळा–देखो 'इळा' (रू. भे.)

येळापत, येळापति, येळापती–देखो 'इळापत' (रू. भे.)

येह–देखो 'यह' (रू. भे.)

येहड़ौ–सर्व.–(स्त्री. येहड़ी) ऐसा।

उ०—**येहड़ौ** ज्याग आहड़ा, हुओ तूझ घर वीयां न होय। दत देतां ग्रीखम दरमांणी, सीत वदीत हुई सगळोय।

—जोगीदास कवारियौ

उ०—२ चंदवदनी मुख चोज हंसगति चालवी, हावभाव गावंत हवोळ हालवी। तार जरी पोमाख वीच तन तेहड़ी, इंदपुरी उणियार विराजै **येहड़ी**।

—बगसीरांम प्रोहित री वात

येहां–अव्य.–१ यहां।

२. ऐसे।

यै–सर्व.–१ इस।

उ०—भील ही भगत थारै भला, कैये नां मीजां करै। हमां सत वूकि विरता हुयै, **यै** रै काजि अवतरै।

—पी. ग्रं.

२ इन।

यैसें–क्रि. वि.–ऐसा, इस प्रकार।

उ०—दिन तौ **यैसें** सकुचिवा लागौ जैसे रिणाई को देखें दांम को देणहार संकुचै।

—वेलि

यौं–क्रि. वि. [सं. एवमेव] १ इस प्रकार, ऐसे।

उ०—१ **यौं** कह्यौ, तरै लाडक पण आरे हुवौ। तरै तोत करनै रावळ नै लाडक चड़मड़िया। रावळ लाडक नूं खांसड़ी वाह्यौ।

—नैणसी

उ०—२ राहु गिळै ज्यों चंद को, गहण गिळै ज्यों सूर। करम गिळै **यौं** जीव को, नख सिख लागै पूर।

—दादूवांणी

२ उसी तरह, वैसे ही।

उ०—दादू चंबुक देखि कर, लोहा लागै आइ। **यौं** मन गुण इंद्री एकसौं, दादू लीजै लाइ।

—दादूवांणी

सर्व.–इसके।

उ०—रोम रोम रस पीजिए, एती रसना होइ। दादू प्यासा प्रेम का, **यौं** बिन त्रप्त न होइ।

—दादूवांणी

यौंही–क्रि. वि.–१ इसी प्रकार से, ऐसे ही।

२ देखो 'यूंही' (रू. भे.)

यो–देखो 'यौ' (रू. भे.)

उ०—१ जु राति अरु दिन की संधि संध्या वंदरण उठै। अर ए वाल अवस्था योवन की संधि उठै। तातैं **यो** भाव लियौ।

—वेलि. टी.

उ०—२ जदी रजपूतांणी घणी ही रजपूत है समजावै। पण **यो** मांनै नहीं।

—पंचमार री वात

योई–देखो 'यही' (रू. भे.)

उ०—जनम मरण का कारण **योई**, मूल वासना जांणा। ग्यांन अग्नि कर जाळी वासना, जन्म मरण मिटांणा।

—श्री सुखरांमजी महाराज

योग–देखो 'जोग' (रू. भे.)

उ०— ओछा बोल न बोलीइं रे, दिल में राखी **योग**। बोल बोल बेऊं हत्यारे, हाथ देई तालि जोग रे।

—प. च. चौ.

योगकन्या–सं. स्त्री. [सं.] यशोदा के गर्भ से उत्पन्न वह कन्या जो मथुरा लाई गई थी तथा जिसके विषय में यह मान्यता है कि कंस ने उसे मारना चाहा था परन्तु वह उड़ कर आसमान पर चली गई।

योगज–सं. पु. [सं.] योग साधना की एक अवस्था जिसमें योगी में अलौकिक वस्तुओं को प्रत्यक्ष कर दिखाने की शक्ति आ जाती है।

योगजात्रा–देखो 'योगयात्रा' (रू. भे.)

योगदंड–सं. पु. [सं.] योगी के हाथ में रखा जाने वाला डंडा।

उ०—करतल कलित **योगदंड**, स्कंधप्रतिष्ठित योगपट्ट प्रसावित–प्रचंड चंडिकामंत्र, पिसाचसाधन स्वतंत्र, साकिनीनिग्रह साहसिक रसायनप्रयोगरसिक, प्रदरसितवलिपलित, वसीकरणि अमूढ, लक्ष खडी चापडीप्रमुख विद्याकुतूहली अ साधक, आकासपातालबंधक।

—व. स.

योगदरसन–सं. पु. [सं. योगदर्शन] दर्शनकार महर्षि पतंजलि रचित योगसूत्र ।

योगनाथ–सं. पु. [सं.] शिव ।

योगनिद्रा–देखो 'जोगनिद्रा' (रू. भे.)

योगनिद्राळु–देखो 'जोगनिद्राळु' (रू. भे.)

योगनी–देखो 'जोगणी' (रू. भे.)

योगनीइग्यारस, योगनीएकादसी–सं. स्त्री. [सं. योगिनिएकादशी] आषाढ़ कृष्ण पक्ष की एकादशी ।

योगपट्ट–सं. पु. यौ. [सं. योग+पट्ट] एक प्राचीन पहनावा, जो पीठ पर से जाकर कमर में बांधा जाता था और जिससे घुटनों तक का अंग ढका रहता था, योगियों का पहनावा ।

उ०—करतल कलित योगदंड, स्कंध प्रतिष्ठित **योगपट्ट**, प्रसाधित प्रचंडचंडिका मंत्र ।

—व. स.

योगपति–सं. पु. यौ. [सं. योग+पति] १ विष्णु ।

२ शिव ।

योगपदक–सं. पु. यौ. [सं. योग+पदक] चार अंगुल चौड़ा एक प्रकार का उत्तरीय वस्त्र जो पूजन आदि के समय पहना जाता है ।

योगपाद–सं. पु. यौ. [सं.] ऐसा कृत्य जिससे अभीष्ट की प्राप्ति हो । (जैन)

योगपारंग–सं. पु. यौ. [सं. योग+पारंग] शिव, महादेव ।

वि.–योग-साधन में प्रवीण ।

योगपीठ–सं. स्त्री. यौ. [सं. योग+पीठः] देवताओं का योगासन ।

योगफळ–सं. पु. यौ. [सं. योग+फल] दो या दो से अधिक राशियों को जोड़ने से प्राप्त होने वाली राशि ।

योगबळ–देखो 'जोगबळ' (रू. भे.)

योगभ्रस्ट–देखो 'जोगभ्रस्ट' (रू. भे.)

योगमाता–देखो 'जोगमाता' (रू. भे.)

योगमाया–देखो 'जोगमाया' (रू. भे.)

उ०—वेदो चारण वेकरै गांम रहै कछ देस मांहे । वेदै रै वडो द्रव्य । सयणी बेटी । महासक्ति **योगमाया** ।

—सयणी री वात

योगमाल–सं. स्त्री.–बहोत्तर कलाओं में से एक ।

—व. स.

योगमूरतिधर–सं. पु. [सं. योग+मूर्तिधर] शिव, महादेव ।

योगयात्रा–सं. पु. यौ. [सं. योग+यात्रा] यात्रा के लिए उपयुक्त योग (फलित ज्योतिष) ।

रू० भे०–योगजात्रा ।

योगराजगुग्गळ–सं. पु. [सं. योगराज गुग्गलः] गुग्गल प्रधान कई द्रव्यों के योग से बनी हुई वात रोग नाशक एक प्रसिद्ध औषधि विशेष ।

रू० भे०–जोगराजगुगळ, जोगराजगूगळ ।

योगरूढ़, योगरूढ़ि–सं पु. यौ. [सं. योग+रूढ़] दो शब्दों के योग से बना वह शब्द, जो अपना सामान्य अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ प्रकट करता है ।

योगरोचना–सं. स्त्री. यौ. [सं. योग+रोचना] इन्द्रजाल करने वालों का एक विशेष प्रकार का लेप जिसको लगाने से आदमी अदृश्य हो जाता है ।

योगवांणी–सं. स्त्री. यौ. [सं. योग+वाणी] योग का उपदेश ।

योगवांन–सं पु. [सं. योगवत्] योगी ।

योगवासिस्ठ–सं. पु. [सं. योगवाशिष्ठ] वशिष्ठ मुनि का बनाया हुआ वेदान्त शास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ ।

रू० भे०–जोगवासिसट, जोगवासिस्ट ।

योगवाही–सं. पु. यौ. [सं. योग+वाहिन] भिन्न गुणों की दो या कई औषधियों को एक में मिलाने योग्य करने वाली औषधि या द्रव्य ।

योगव्रत्ति–सं. स्त्री. यौ. [सं. योग+वृत्ति] योग के द्वारा प्राप्त होने वाली चित्त की वृत्ति ।

योगसक्ति, योगसगती–देखो 'जोगसकति' (रू. भे.)

योगसास्तर, योगसास्त्र–सं. पु. यौ. [सं. योग+शास्त्र] पतंजलि ऋषि द्वारा रचित योग-साधना पर एक ग्रन्थ ।

रू० भे०–जोगसास्त्र ।

योगसासतरी, योगसासत्री, योगसास्त्री–सं. पु. यौ. [सं. योग+शास्त्री] योग-शास्त्र का ज्ञाता ।

योगसिद्ध–सं. पु. यौ. [सं. योग+सिद्ध] योग-शास्त्र की सिद्धि प्राप्त कर लेने वाला योगी ।

योगसिद्धि, योगसिधी–सं. स्त्री. यौ. [सं. योग+सिद्धि] योग के द्वारा प्राप्त सिद्धि ।

रू० भे०–जोगसिधी ।

योगसूत्र–सं. पु. यौ. [सं. योग+सूत्र] पतंजलि द्वारा रचित योगशास्त्र के सूत्रों का संग्रह ।

योगांग–सं. पु. यौ. [सं. योग+अंग] योग के आठ अंग–यम, नियम, आसन–प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ।

योगांत–सं. पु. [सं. योग+अन्त] ज्योतिष के अनुसार मंगल ग्रह की कक्षा के सातवें भाग का एक अंश ।

योगांतराय–सं. पु. [सं. योग+अन्तराय] आलस्य आदि दस प्रकार की बातें, जो योग में विघ्न डालती हैं ।

रू० भे०–जोगांतराय ।

योगागम–सं. पु. यौ. [सं. योग+आगम] योग-दर्शन ।

रू० भे०–जोगागम ।

योगाचार–सं. पु. यौ. [सं. योग+आचार] १ योग का आचरण, योग-साधन ।

२ बौद्धों का एक सम्प्रदाय, जो महायान की शाखाओं में से एक है, जिसके अनुसार दीखने वाले पदार्थ शून्य हैं।

योगाभ्यास–सं. पु. यौ. [सं. योग+अभ्यास] योग–शास्त्रानुसार योग का साधन।
रू० भे०–जोगाभास, जोगाभ्यास।

योगाभ्यासी–सं. पु. यौ. [सं. योग+अभ्यासी] योग की साधना करने वाला, योगी।
रू० भे०–जोगाभ्यासी।

योगारूढ़–सं. पु. यौ. [सं. योग+आरूढ़] वह जिसने अपनी चित्त–वृत्तियों का निरोध कर योगाभ्यास शुरू कर दिया हो।
रू० भे०–जोगारूढ़।

योगासन–सं. पु. यौ. [सं. योग+आसन] योग–साधन का एक आसन, योग की मुद्रा या बैठने का ढंग।
रू० भे०–जोगासन।

योगिणी–सं. स्त्री.–देखो 'जोगणी' (रू. भे.)

योगिणीपुर–देखो 'जोगणपुर' (रू. भे.)
उ०—कीयो कूड सुरतांण, सांमि मोरउ ग्रहि वंध्यउ, पदमणि द्यु तु जाउ, काजि करणह समंधउ। भलो न कीयो किरतार, केम गहिलोत बंधीजइ, कीयो मंत्र मंत्रीयां, राय राखवि त्रिय दीजइ। तदिन जीभ खंडवि मरउं, योगिणिपुर नवि दीखसउं। पदमिणी नारि डंम उचरइ, अंबं कह सरणागति पडठिसिउं।
—प. च. चौ.

योगिनिद्रा–देखो 'जोगनिद्रा' (रू. भे.)

योगिनी–देखो 'जोगणी' (रू. भे.)
उ०—तव तूठी योगिनी, हुई प्रसिद्धि प्रसनी, ब्रह्म रुद्र करि वाच वाच निस्चल करि दीन्ही। जिहां हकारइ मोहि, तोहि माचउ करि जांणइ, आदि अंत उतपत्ति, विपति तौ सहु पीछान्इ। आस्थांन आप जोगिन हुइ, विप्र पंथ आश्रम करचउ, आणंद अंग ऊलट घणइ, तव टीली गढ संचरचउ।
—प. च. चौ.

योगिराज–सं. पु. [सं. योगी+राज] योगियों में श्रेष्ठ या बड़ा योगी।
रू० भे०–योगीराज।

योगींद्र–देखो 'जोगिंद्र' (रू. भे.)

योगी–देखो 'जोगी' (रू. भे.)

योगीकुंड–सं. पु. [सं.] हिमालय का एक तीर्थ।
रू० भे०–जोगीकुंड।

योगीनाथ–सं. पु. [सं.] शिव, महादेव।
रू० भे०–जोगीनाथ।

योगीराज–देखो 'योगिराज' (रू. भे.)

योगीस, योगीस्वर–देखो 'जोगीस' (रू. भे.)
उ०—और जिकेइ विरोधी न था त्यांह स्रीनारायण को स्वरूप जांण्यौ। वेद का अरथी थां। त्यांह कह्यौ मूरत वंद वेद आयौ योगीस्वरां जांण्यौ जोग तत योही।
—वेलि.

योगीस्वरी–देखो 'योगेस्वरी' (रू. भे.)

योगेंद्र–देखो 'जोगिंद' (रू. भे.)

योगेस, योगेस्वर–देखो 'जोगीस' (रू. भे.)
उ०—१ जैसे योगेस्वरां कै माया का पटल दूरि थै छै। तैसौ ही तौ रात्रि दूरि हुई छै। अर प्राणायांम योगेस्वरां का इहै जोति प्रकास हुऔ।
—वेलि

उ०—२ नृपति तु माधव दीठउइ, पीयु माधव–प्रेम। नारि निमेग धरी रही, जगि योगेस्वर जेम।
—मा. का. प्र.

योगेस्वरी–सं. स्त्री. [सं. योगेश्वरी] दुर्गा, देवी।
रू० भे०–जोगेसरी, जोगेस्वरी, योगीस्वरी।

योग्य–वि. [सं.] १ उपयुक्त, ठीक।
उ०—मिवांणो गढ सीह लंकै है, सरापियळ जायगा है, और किलो कड़तोड़ी है जिणसूं राजवियां रै रहण योग्य नहीं।
—नैणसी

२ लायक, काबिल। ३ प्रवीण, होशियार। ४ विद्या, शील, गुण, शक्ति आदि से संपन्न, श्रेष्ठ। ५ दर्शनीय, सुन्दर। ६ आदरणीय, सम्माननीय। ७ उचित, ठीक, मुनासिब।
रू० भे०–जोग्य।

योग्यता–सं. स्त्री. [सं.] १ योग्य होने की अवस्था या भाव। २ क्षमता, सामर्थ्य। ३ लायकी, काबलियत। ४ विद्वत्ता। ५ गुण, सिफ्त। ६ ठीक या अनुकूल होने का भाव, उपयुक्तता। ७ शक्ति, सामर्थ्य, औकात। ८ बड़प्पन, महत्ता। ९ इज्जत, प्रतिष्ठा।

योजक–वि. [सं.] जोड़ने या मिलाने वाला।

योजन–सं. पु. [सं.] दूरी का एक माप, जो दो कोस, चार कोस, या आठ कोस का होता है।
उ०—भिक्खु अणगार निज नांम मन सुद्ध भणी, तीन गढ छत्र त्रिण राज त्रिभुवन तणी। वचन गुप्ते वली नांम वाचंयमा, योजन वांणि सुं गाजै च्यारुं गमा।
—ध. व. ग्रं.

रू० भे०–जोजन।

योजनगंधा–सं. स्त्री. [सं.] १ व्यासमाता सत्यवती का नामान्तर। २ कस्तूरी। ३ सीता।
रू० भे०–जोजनगंधा।

योजना–सं. स्त्री. [सं.] १ किसी कार्य को निष्पन्न करने हेतु प्रस्तावित कार्यक्रम। २ व्यवस्था, आयोजन। ३ प्रस्ताव। ४ प्रयोग, इस्तेमाल।

योतिस–देखो 'ज्योतिस' (रू. भे.)

उ०—दिन थोड़े दिल्ली गयौ, नगर हुग्रौ जस नांम नाल। योतिस जांणं अति घणी मन।

—प. च. चौ.

योग्राड़णौ, योग्राड़वौ–क्रि. स. [सं. युज्]–जुताना, जुतवाना।

उ०—रामसिंघजी कन्है जाइ अर कहिया। पधारौ ज्यूं म्हारा गाडा योग्राड़ि अर म्हां ही नूं नाथि ले ग्रावौ।

—द. वि.

योग्राड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.–जुताया हुआ।

(स्त्री. योग्राड़ियोड़ी)

योनि–सं. स्त्री. [सं.] १ स्त्री की जननेन्द्रिय, भग।

२ उद्भव स्थान, जिससे कोई वस्तु पैदा हो।

३ खान।

४ देह, शरीर।

५ उक्त के आधार पर प्राणियों के विभाग या वर्ग।

वि. वि. पुराणानुसार ८४ लाख योनियां कही गई हैं—जलचर ९ लाख, मनुष्य ४ लाख, स्थावर २७ लाख, कृमि ११ लाख, पक्षी १० लाख और चौपाये २३ लाख।

६ जन्म।

७ जल, पानी।

८ अंतःकरण।

९ पुराणानुसार कुश द्वीप की एक नदी।

रू० भे०–जूंण, योनी।

योनिकंद–सं. स्त्री. [सं.] योनि में एक प्रकार की गांठ हो जाने का स्त्रियों का रोग, जिसमें रक्त या पीब निकलता रहता है।

योनिजंत्र–देखो 'योनियंत्र' (रू. भे.)

योनिफूल–सं. पु. यौ. [सं. योनि+फूल] योनि के अन्दर की एक उभरी हुई गांठ जिसके ऊपर एक छेद होता है जिससे वीर्य गर्भाशय में जाता है।

योनिभ्रंस–सं. पु. [सं. योनिभ्रंश] गर्भाशय का अपने स्थान से कुछ हट जाने का योनि का एक रोग।

योनियंत्र–सं. पु. [सं.] गया, कामाक्षा आदि कुछ विशिष्ट तीर्थ स्थानों में बने हुए संकीर्ण मार्ग जिनमें से निकलने पर मोक्ष-प्राप्ति होना माना जाता है।

रू० भे०–योनिजंत्र।

योनिसंकोचन–सं. पु. यौ. [सं. योनि+संकोचन] १ योनि को सिकोड़ने की क्रिया।

२ ऐसी औषध जिसके प्रयोग से योनि संकुचित हो जाती है।

योनिसूळ–सं. पु. [सं. योनिशूल] बहुत पीड़ा होने वाला योनि का एक रोग।

योन्यासन–सं. पु. यौ. [सं. योनि+आसन] योग के ८४ आसनों के अन्तर्गत एक आसन विशेष जिसमें उपस्थ को संकुचित करके उन पर बायें पांव की एडी सम्यक प्रकार से स्थापित करके बांई जांघ पर दाहिने पांव को रखा जाता है तथा दोनों हाथों के अंगूठे, तर्जनी और मध्यमा से अनुक्रमवार दोनों तरफ के कान, आंख और नासा पुटों को बंद किया जाता और दृष्टि को भ्रूमध्य रखकर स्थिर होकर बैठा जाता है। इससे इन्द्रियों, प्राण और चित्त का रुंधन होता है।

योरोप–देखो 'युरोप' (रू. भे.)

योरोपियन–देखो 'युरोपियन' (रू. भे.)

योसा–सं. स्त्री. [सं. योषा] युवती, नारी।

योही–देखो 'यही' (रू. भे.)

उ०—योही भंवरजी सीकरी रांणी री देस, तालर थोड़ा सरवर बौ घणा जी म्हारा राज।

—लो. गी.

यों–क्रि. वि.–ऐसा, ऐसे, इस प्रकार।

उ०—छभा रूप छवि परख, सरव चख वदन सुरंगे। यों लगे रस रूप, अखिर किर कागद अग्गे।

—रा. रू.

यौ–सर्व.–१ यह।

उ०—अब मोहि दरस दिखाव माधवे, यौ औसर लाभे नांही। दिन दिन घटतौ जाय माधवे, प्रीति घटै तो जिनि मिळौ।

—ह. पु. वां.

क्रि. वि.–२ ऐसे, इस प्रकार।

उ०—१ इससे 'अभमाल' का प्रताप देखि इंद्र का गरब भजै। नरइंद की कीरति सुणि सुरिंद्र यौ लजै।

—सू. प्र.

उ०—२ आद कंठ चव अखिरां, अंत दोय ठहराव। यौ सुबंध घट अखियां, बिगड़ै कंठ वणाव।

—र. ज. प्र.

रू० भे०–यो।

यौगिक–सं. पु. [सं.] १ वह शब्द जो प्रत्यय एवं प्रकृति से बना हो।

२ अट्ठाईस मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

वि.–१ मिला हुआ, मिश्रित।

२ योग अर्थात् जोड़ से सम्बन्धित।

यौध–देखो 'जोध' (रू. भे.)

उ०—राजा पूछे कुण तमे रे, तव वलि ते कहे योध। 'कनक-केतू' रा रजपूत छां रे, तमे कीधी वात अलोघोरे।

—जयवांणी

योवनियौ—देखो 'जोवन' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—चित्त धरज्यो धरम चाह, योवनियो ।। आंकणी ।। च्यार दिनां री एह चटक छै, नेट नहीं निरवाह।

—ध. व. ग्रं.

योवंन, योवण—देखो 'जोवन' (रू. भे.)

उ०—१ भीम राइं लवणे सुणु रे, पुत्री नि पीडा तंन। विहिवा गु समय थयु रे, अवला थई योवंन।

—नळाख्यांन

उ०—२ मु छह तोन वाळक अवस्था माहे यू अै छै। नै योवण आपै जागै छै।

—वेलि. टी.

यौवन—देखो 'जोवन' (रू. भे.)

उ०—यौवन वय आव्यां थकां, कीधी सगाई अभिराम। 'द्रुप' राजा नी पुत्रिका, 'प्रभावती' इण नाम।

—जयवांणी

यौवनी—वि.—यौवनसंपन्न, यौवनयुक्त।

उ०—दादू मन पंगुळ भया, सब गुण गये विलाइ। है काया नवयौवनी, मन बूढा ह्वै जाइ।

—दादूवांणी

यौही—देखो 'यही' (रू. भे.)

उ०—जोग पंथ पग मनि धरै, धरै तो सीस उतारि। हरीदास जन यूं कहै, यौही अरथ विचारि।

—ह. पु. वां.

र

र—सं. पु. [सं.] देवनागरी लिपि की वर्ण माला का सत्ताईसवां व्यंजन, जिसका उच्चारण स्वर और व्यंजन के मध्यवर्ती तथा जीभ के अग्र भाग की मूर्द्धा के साथ कुछ हलकासा स्पर्श कराने से होता है।

रंक—वि. [सं. रंक, रङ्क] १ गरीब, निर्धन।

उ०—१ जग मांही जसवंत री, सीधी हुती सुभाव। दिन उज्जळ नहिं वदळती, रंक मिळो चाहे राव।

—ऊ. का.

उ०—२ डोकरी कह्यो—अठै वा वात कोनीं भाया, सगळां नै दूध एक सरीखो मिळै, चाहे राजा व्है चाहे रंक, अर चाहे कोई लखपती सेठ-साहूकार व्है, चाहे कोई तोटायलो।

—फुलवाड़ी

उ०—३ ताजदार बैठो तखत, रज में लोटै रंक। गिणै दुवांनूं हेक गत, निरदय काळ निसंक।

—वां. दा.

उ०—४ रोळै लेण लंक रा निसंक रा विभाड़ रांम, हायां भीक रंक रा लंक रा देण हार।

—र. ज. प्र.

२ दरिद्र, कंगाल।

उ०—रंक कुकवि दोनूं रहै, कोस हूंत सौ कोस। आयां सुपन अलंकृती, होण तणी नह होस।

—वां. दा.

३ भिखारी, फकीर।

उ०—माया पापनि पैम करि, कीया काळजै घाव। हरीया वौह वळवंत कुं, रंक न पहुंचै राव।

—अनुभव वांणी

४ कृपण, कंजूस।

उ०—मानिक मिळीया धिल नुमी, हरीया होय निहाल। पांनै पड़ीया रंक कै, कोडी वदळै लाल।

—अनुभव वांणी

५ क्षुधा पीड़ित, भूखा।

६ नीच।

उ०—तिकै रंक चंदासिराज रा कुळ री कन्या किण रीति लहै।

—वं. भा.

७ आलसी, सुस्त।

८ उदास, सुस्त।

रू० भे०—रंकि, रंकु, रंकू, रांक।

अल्पा. रंको

रंकता—सं. स्त्री. [सं. रंक+ता प्र.] १ गरीबी, निर्धनता।

२ कृपणता, कंजूसी।

३ नीचता।

रंकार—सं. स्त्री.—१ राम नाम का जाप, स्मरण।

उ०—हुए गळतार रंकार मुख हैकंपै। तांतवा ग्राह वळ साह तूटा।

—द. दा.

२ उक्त जाप करते समय मुंह से निकलने वाली ध्वनि।

उ०—रसनां नख चख वीच मैं, रोम रोम रंकार। जन हरीया सुख ब्रम का, जहां नहीं मंकार।

— अनुभव वांणी

३ राम-नाम।

उ०—सब अछर सहजां पढै, पढि पढि मिटचा संनेह। एक सबद रंकार हुय, हरीया अगम अछेह।

—अनुभव वांणी

रंकि—देखो 'रंक' (रू. भे.)

उ०—ससि-वयणी को सुंदरी, चाली चित्रा लंकि। चंद्रोदय चक्कवि गणी, रोयणि लागी रंकि।

—मा. कां. प्र.

रंकु, रंकू—सं. पु. [सं. रंकु] १ एक प्रकार का हरिण जिसकी पीठ पर सफेद चित्तियां होती हैं।

२ मृग, हरिण। (ह. नां. मा.)

३ देखो 'रंक' (रू. भे.)

उ०—कुंडल सरिसउ लावउ वालो, रंकु लहइ जिम रयण झमालो। तिणि दिणि दीठउ सुमिणइ सूरो, ग्रम्ह घरि ग्राविउ पुत्रह पूरो।

— सालिभद्र सूरि

रंको—देखो 'रंक' (ग्रल्पा. रू. भे.)

उ०—लोक जठै रंको नहीं, नंह संको परथाट। सोढां जस डंको धुरै, पावर वंको, वाट।

—बां. दा.

रंगंगण, रंगंगणि, रंगंगणी—सं. पु. [सं. रंग+ग्रंगणम्] १ रंगमंच, ग्रभिनय स्थल।

उ०—नृप ग्रायस लही वर वेस, रंगंगणि कीयउ प्रवेस।

—हीराणंद सूरी

२ युद्ध भूमि, रण भूमि।

रंग—सं. पु. [फा., सं.] १ दृश्य पदार्थ का वह गुण जो उसके ग्राकार या रूप से भिन्न होता है ग्रौर जिसकी ग्रनुभूति ग्रांखों से की जाती है, वर्ण।

वि० वि०—वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि रंग वास्तव में प्रकाश की किरणों में ही होता है ग्रौर वस्तुग्रों के भिन्न रासायनिक गुणों के कारण ही हमारी ग्रांखों को उनका ग्रनुभव वस्तुग्रों में होता है। किसी वस्तु पर पड़ने वाले प्रकाश के तीन भाग होते हैं—पहला वह भाग जो परावर्त्तित हो जाता है, दूसरा जो वर्त्तित हो जाता है तथा तीसरा वह जो उस वस्तु द्वारा सोख लिया जाता है। परन्तु सभी वस्तुग्रों में ये गुण समान रूप से नहीं होते। कुछ पदार्थ ऐसे होते हैं, जिनमें से प्रकाश परावर्त्तित नहीं होता—या तो वर्त्तित होता है या सोख लिया जाता है। जैसे—शुद्ध जल। ऐसे पदार्थ प्रायः बिना रंग के होते हैं। जिन पदार्थों पर पड़ने वाला सारा प्रकाश परावर्त्तित हो जाता है, वे श्वेत दिखाई पड़ते हैं। जो पदार्थ ग्रपने ऊपर पड़ने वाला सारा प्रकाश सोख लेते हैं, वे काले दिखाई देते हैं।

प्रकाश का विश्लेषण करने पर पाया गया कि उसमें ग्रनेक रंगों की किरनें मिलती हैं, जिनमें ये सात रंग मुख्य हैं—बैंगनी, नीला, श्याम या ग्रासमानी, हरा पीला, नारंगी ग्रौर लाल। जब ये सातों रंग मिलकर एक हो जाते हैं तब हमें सफेद दिखाई देते हैं ग्रौर जब इन सातों में से एक भी नहीं रहता, तब हम उसे काला कहते हैं। किन्हीं दो रंगों के सम्मिश्रण से एक तीसरा रंग बन जाता है- ग्रौर कुछ रंग एक दूसरे के परिपूरक भी होते हैं। बाजार में मिलने वाली बुकनियों के नियम प्रकाश के नियमों से भिन्न होते हैं।

२ कुछ विशिष्ट रासायनिक क्रियाग्रों से बनाया जाने वाला वह पदार्थ जिसे द्रवमान करके किसी वस्तु, (विशेष कर वस्त्र) को रंगा जाता है। (Colour)

उ०—१ चम रंगरेजा में नहि चाहूं, भल नहि सोभा भंग। ग्रलमित देखिर जळै ग्रंग में, रांड कसूंमल रंग।

—ऊ. का.

उ०—२ घणीजै केसर चंदन घोल, रचीजै पूज सदा रंग रोल। ग्रवल्ले फूले धूप उखेव, दीयें सुख वंछित रिखभदेव।

—ध. व. ग्रं.

उ०—३ नाई सिसकारी न्हाकतौ बोल्यौ—यूं खांचौ कांई ग्रंदाता। केस कोई चिपकयोड़ा थोड़ाई है। रंग देखो तौ भंवरां नै मात करै।

—फुलवाड़ी

३ रूप, स्वरूप।

उ०—रमै तूं रांम जुवा घरि रंग, तुंहीज समंद तुंहीज तरंग। ग्रनोग्रन मांय तुहाळो ग्रंस, हमें न संताय छतौ थयौ हंस।

—ह. र.

४ शरीर का वर्ण।

उ०—गोचर रूप न रंग न रेख, ग्रगोचर ग्रग्रन कूप ग्रलेख। थिरा नभ थावर जंगम थांन, महा पद ग्रापद मांन ग्रमांन।

—ऊ. का.

५ छवि, नूर, सौन्दर्य।

उ०—चढ़तै जोबन रंग चुवै, पायल बाजै पाय। चालै मुंदर चौहटै, जांण पटाभर जाय।

—ग्रज्ञात

६ रौनक, शोभा, ठाट।

७ ग्रनुराग, लगाव, इश्क।

उ०—१ जठै किसतूरी पागां रा वध पछांण्या। ऐ तो निडर सा भंवर रसिया मिजमांन जांण्या। जठै पारसी मैं बोली, पनां वधाई दीनी, मन चायो ग्रायो रंग भीनी।

—पनां

उ०—२ माळवगढ राजा सुधू, कुंवरी माळवणीह। ढोलइ तिण वहु प्रीति छइ, ग्रति रंग नेह घणीह। —ढो. मा.

उ०—३ हरीया सो दिन वार गिन, आय मिळै सतसंग। अब तो चढै न ऊतरै, लागा हरि का रंग।

—अनुभव वांणी

उ०—४ अगा एक राग रंग राता, प्रांण गयां गुण रीझिये। मैंगळ मद मतवाळा अंधा, रसरा स्वाद वंदीजिये।

—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—५ पोता री परणी प्रिया, रागे तिण सुं रंग। सील धरै न करै सही, पर स्त्री प्रसंग।

—ध. व. ग्रं.

७ हर्ष, आनन्द, खुशी, प्रसन्नता।
उ०—१ रांम गयं वनवास, साथहि सब रंग ले गये। ले गये (म्हारी) काया को सिणगार, तुळसी की माळा दे गये।

—मीरां

उ०—२ ग. म. वाणगि घटीआ घटी, मिद म पूरिगि सिग। वांछित पांमीउ वल्लह, हुं अवधारिगि रंग।

—मा. कां. प्र.

उ०—३ औरां का पिवजी घरां ए वसत है, म्हारा वसै परदेस। औरां की तीज सुरंगी होसी, म्हारे घर रहसी रंग कानो।

—लो. गी.

उ०—४ ईव वरस्या लागी छै, गोठां जीम रंग करो।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—५ रंग विण व्याह, वेस विण रांमति, सुंदरि विण ग्रिह वास जिसौ। सुरतांण कहै कलियांण सगोभ्रम, त्याग पखै कुळ जनम तिसौ।

-- अज्ञात

८ रति क्रीड़ा, संभोग, मैथुन, केलि।
उ०—१ राजा रूप न रीझियै, माथा वदु नहि काय। थे रांण्यां सूं रंग करो, (म्हे) धूड़ धमासां मांय।

—जगमादे ओडगी री वात

उ०—२ लोरां गांवग लूंवियौ, घोरां घण घररास। गांमीगर रंग मांण अब, प्याला भर मद पाय।

—अज्ञात

उ०—३ अकबर रत्ता राग सूं, रंग त्रिया रस लद्ध। जो उतपात प्रगट्टियौ, सो सुणियौ निस अद्ध।

—रा. रू.

उ०—४ मैं म्हांरा वालम खेलस्यां जी कंई रंग ढोल्यां रै बीच। वादळी वरसै क्यूं नी ए, वीजळी चमकै क्यूं नी ए।

—लो. गी.

उ०—५ राज पिए हकीकत की ही सो म्हे तो जावस्यूं। रंग भोग विलास करनै अलोप हुई।

—वीरमदे सोनगरे री वात

९ गुण।
उ०—दादू रंग भर खेलूं पीव सौं, तहं बाजै बाजा बसंत। सेवक सदा अनंद है, जुग जुग देखूं तोर।

—दादूवांणी

१० उत्सव।
उ०—राजा मिळ नाम मालीयो, नगर सैणासूं मांम थै। घर घर रंग वधावणा, श्रिर पर मंगळ गांव थै।

—सैणासू री वात

११ नृत्य, गायन।
उ०—१ राग छत्तीस होय छै जी, गायन का पीहर। नादर शिव पर्वतीगना जी, रंग विनोद अपार।

—रूपवाणी

उ०—२ रंग राग विनोद विलासन अनूप। नदि नारीन सुंदर मिदरयं मढ़ुं। मिश मागल कुंदग रसरास विलासं, मोतीन हार विभूषणनग धगिन।

—गु. रू. ब.

१२ अभिनय।
१३ खेल, तमाशा।
उ०—पवन गुलाल अबीर उडावौ, सकल पिचरका रंग भरावौ। बीन नाद मोड चंग बजावौ, रंग फाग सब जग रचावौ।

— रू. भा.

१४ अभिनय का स्थान, रंगमंच।
उ०—वजि मृदंग नंग रंग उमंग बारंग, अनग रुचि संग उमंग अंग संग। त्रिनंग रित वह तरंग रंग रंग, सुरंग रस संग सुरंग चतुरंग।

—सू. प्र.

१५ सभा स्थान।
१६ वेश्या, गणिका। (प. मा.)
१७ आमोद-प्रमोद, मनोरंजन।
उ०— रंग राग बाग अंगराग सूं न कीजै। पातिसाह महमद साह मिना मैं मौजै।

—रा. रू.

१८ युवावस्था, यौवन।
१९ मन की मर्जी, मन की मौज।
उ०—१ लबवट चलै 'जसौ' गेडेचौ, हिंगियौ अहमंद भुजां हुई। रंग पारकै न रीझै राजा, राजा रंग आपरै रहै।

—गु. रू. बं.

उ०—२ मांणस कोई गरळ री नांव नहीं लेवै आप आप रै रंग रहै।

कुंवरसी सांखला री वारता

२० नशा, मस्ती।
उ०—अपणाया कर एक जको वळ जुध सूं आगो। रेवत-नैणां विव-मुरा रै रंग न लागो।

—मेघ

२१ स्वभाव, प्रकृति।
२२ दशा, हालत, ढंग, अवस्था।
उ०—अठै रह कासूं वफादारी लेयस्यां। हाली घरां हालां। नौ सूरै इसड़ौ रंग खींवै री दीठौ, जे सगा सूं विकार पैदा हो विगाड़ हुवै।

—सूरे खींवै कांधळोत री वात

उ०—२ कुंवरसी कही तीज रै दिन आयसे तौ खरी पण कीं ठांव आऊं इठै तौ औ रंग छै।

—कुंवरसी सांखला री वारता

२३ चाल-ढाल, गति-विधि।
उ०—मांणस एक खोखर रै गांव मेल्ह खवर मंगाई-जे उहां रै कितरो'क लोक कुण कुण कांम आयौ। कानूं रंग विचार छै, सो मारी खवर लेय आवौ। सो मांणस उठै जाय खवर रंग देख पाछौ आयौ। —सूरै खींवै कांधळोत री वात

२४ ढंग, आसार, हालात, वातावरण।
उ०—१ करनाळ वजावां जिण वखत सताव आवज्यौ। नहीं तौ देखो जसौ रंग वरतज्यौ।

—गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—२ जे रंग दीठौ तौ कजियौ करस्यां, नहीं तौ रंग देख वरतस्यां।

—भाटी सुंदरदास वीकूंपुरी री वारता

२५ व्यवहार।
उ०—तद मुलाहूी रंग फोड़ कही-ठाकुरां, पटायत चाकर दरवार रा छो, आ कानूं कही। अठै तौ वकरी म्हारै भावै हाथी छै।

—अमरसिंह गजसिंहोत री वात

२६ प्रभाव, असर, रौब।
उ०—१ वृद्धिया ओनौ खावै पण गोमदो गांव रा आखा कांम पूरा करणा चावै। पण अटकळ जांणै न ढंग, कौरी करड़ावण री रंग।

—दसदोख

उ०—२ जे जन हरि के रंग रंगै, सौ रंग कदे न जाइ। सदा सुरंगै संत जन, रंग में रहे समाइ।

—दादूवांणी

२७ गौरव, प्रतिष्ठा, मान, इज्जत,।
उ०— वांधै तैं वार किता वळिराव, विगोयौ दांणव केता वाव। जीत्यौ तैं वार किता वळ जंग, रहावण तात जनेता रंग।

—ह. र.

२८ धन्यवाद, साधुवाद, शावासी।
उ०—१ रंग देऊं वां नरां काछ रा पूरा काठा। रंग देऊं वां नरां माछु देवण हिय माठा।

—ऊ. का.

उ०—२ तद साहजादे ऊपर सूं तरवार झलाई सो लेय गौड़ आय पहुंचौ कहियौ-रंग छै, राठौड़ थां विना हिंदुवां री मरजाद सरम कुण राखै। यूं कहि जाय पोहंच्यौ सौ ड्योढी मांहे निसरतै नै वाही सो खंवे आय वाजी

—अमरसिंह गजसिंहोत री वात

उ०—३ कट पड़ियौ ठाकर कनैं, अपछर वरियौ अंग। संग लड़चौ सुरतांण रै, (उण) 'रुपावत' नैं रंग।

—अज्ञात

उ०—४ भड़ भड़ै के लड़थड़ै भारथ, अड़ै के अखड़ैत। वड़ वड़ै के हड़हड़ै वीजळ, जड़ै के जरदैत। अड़वड़ै के वड़हड़ै आसत, जुड़ै के कज जैत। विच समर हेकण घड़ै राघव, वडै रंग विरदैत।

—र. ज. प्र.

२९ कृपा, अनुग्रह।
३० जोश, आवेश।
उ०—ताजण लाग्या ताजणा, मरदां कै मटक्या वोल। रजपूतां के रंग चढचौ, वै ढुळक्या कायर लोग।

—डूंगजी जंवारजी री छावळी

३१ युद्ध, लड़ाई।
उ०—१ कहियौ हंसि हाडै कंवर, गिणौ न मो जिम 'गंग'। आज निसा न जड़ां अरर, रुपगी मौनै रंग।

वं. भा.

उ०—२ दोनूं ही माहिव म्हारी पीठ पाछै खड़ा रहौ ललकारा करौ। चाकरां रौ रंग देखो।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

३२ युद्ध भूमि, रणांगन।
३३ पांनी, जल। (ना. डिं. को.)
३४ चौपड़ के खेल में गोटियों की वह दशा, अवस्था (रंग) जो जीत की प्रतीक मानी जाती है।
३५ तास के पत्तों के चार रंगों में से कोई एक जो काट माना जाता है।
३६ वह घोड़ा, जिसके मुख पर हरिन के से रंग के चकते होते हैं।

(अशुभ)

३७ तरह, भांति, प्रकार।
उ०—१ केहास विहूं धज रंग कन्न। प्रतहाम गौम रिप चहर पन्न।

—सू. प्र.

उ०—२ त्रितंग रित अंग करंग नादंग। रस तरंग वह तरग रंग रंग।

—सू. प्र.

३८ गगा नामक धातु।
३६ सुहागा।
४० किसी विशेष अवसर पर अफीम की मनुहार के समय, अद्भुत व विलक्षण या आदर्श के कार्य करने वाले किसी व्यक्ति की प्रशंसा में पढ़ा जाने वाला दोहा, सोरठा, छप्पय इत्यादि।

उ०—१ ईस उमा अरवंग, भर प्यालौ ले भंग री। रंग हो 'भारथ' रंग, उरा वेळा दै आपनै। अमला रा उछरंग, गळियां थळियां चौगणां, रंग हो 'भारथ' रंग, उरा वेळा दै आपनै। गोस्ठि विरादर संग, प्याला मद पावै पिवै। रंग हो 'भारथ' रंग, उग वेळा दै आपनै।

—ला. रा.

वि० वि०—एक प्रथा के अनुसार मांगलिक अवसरों पर-विशेष कर दीपावली, होली व अक्षय तृतीया इत्यादि पर राज दरबारों, रजवाड़ों या सामंतों (ठाकुरों) के यहां अमल गाला जाता था। उस समय राजा या ठाकुर सर्व प्रथम अपने चारण-कवि को अमल की मनुहार अपने हाथ से करता था। तब वह कवि मनुहार लेने से पूर्व उन व्यक्तियों की प्रशंसा में दोहे या सोरठे कहता कि जिन्होंने समाज हित, मातृ भूमि की रक्षार्थ या किसी आदर्श के लिये अथवा स्वामीभक्ति में अद्भुत रूप से प्राणोत्सर्ग किया हो। जैसे—निमाज के ठाकुर सुरतांणसिंह पर महाराजा मानसिंह का कोप हुआ और महाराजा ने ठाकुर की हवेली पर अपनी सेना भेजकर तोपों से हमला कर दिया। उस समय संयोग वश वहां एक रूपावत शाखा का राठौड़ राजपूत सुरतांणसिंह की हवेली पर आया हुवा था और उसने वहां की दाल खा ली थी। उस दाल के बदले अथवा उसमें खाये हुए नमक का बदला चुकाने के लिये वह रूपावत महाराजा की सेना से लड़ा और अपने प्राणों का उत्सर्ग करते हुए वीर गति को प्राप्त हुआ। इसलिये उपर्युक्त अवसरों पर उस रूपावत की प्रशंसा मे दोहे कहे जाते है—

कट पडियो ठाकर कनै, अपछर वरिया अंग।
संग लड़यौ सुरताण रै, (उरा) 'रूपावत' नै रंग।

ऐसे ही अनेकों उदाहरण इतिहास में और भी मिलते है।

मुहा०—१ रंग आणौ=किसी वस्त्र या वस्तु पर किसी रंग विशेष का लगना या चढ़ना। नशा आना। जोश आना। क्रोध आना। गति आना।

२ रंग उड़णौ=धूप या हवा के कारण किसी वस्त्र या पदार्थ का रंग फीका पड़ना। होश-हवास खो बैठना। कान्ति या आभाहीन होना। फीका पड़ना।

३ रंग जमणौ=वस्त्र या वस्तु पर कोई रंग ठीक बैठना। किसी उत्सव का ठाट जमना। गति आना।

४ रंग फिरणौ=मन मुटाव होना। अन्तर पड़ना। स्वभाव, प्रवृति या वातावरण बदल जाना।

५ रंग फोड़णौ=झगड़ा करना। क्रोध करना। दुर्व्यवहार करना।

६ रंग में आणौ=मस्ती में आना, प्रसन्न दिखाई देना। जोश या आवेश चढ़ाना, क्रोध करना।

७ रंग रैणौ=प्रेम या मेल रहना, इज्जत या मान रहना।

८ रंग लागणौ=प्रेम होना, ईश्वर भक्ति में मन का लगना। किसी कार्य की धुन सवार होना।

रू० भे०—रंगि, रंगी।

रंग-आंमास—सं. पु. [सं. रंग+आवास] रंग महल, केलि गृह।

उ०—जेथि रंगआंमास, तेथि क्रीडंति कुरंगह। जेथि नृपति वैसता, तेथि उड्डंत विहंगह।

—गु. रू. बं.

रंगकार—सं. पु. [सं. रंगकार] १ चित्रकार।

उ०—रंगकार तैलार विनु, विनु कुम्हार दरवेस। सार बंध 'लावै' असुर, पुर नहिं करत प्रवेस।

—ला. रा.

२ वस्त्र रंगाई आदि का कार्य करने वाली एक जाति या वर्ग।

३ उक्त जाति का व्यक्ति, रंगरेज।

रंगकेळ, रंगकेळि—सं. स्त्री. [सं. रंग+केलि] १ रति क्रीड़ा, मैथुन।

उ०—गुरू गुर है चिरंजीव, जिरा जोड़ी का मेळ। हूं तरणी थू तरण पिव, करलै रस रंगकेळ।

—अज्ञात

२ आनन्द, मौज।

रंगक्षेत्र—सं. पु. [सं.] १ अभिनय स्थल, रंगमंच।

२ युद्ध भूमि, रणक्षेत्र।

रंगड़—देखो 'रंघड़' (रू. भे.)

रंगजणणी, रंगजननि—सं. स्त्री. [सं. रंग+जननी] लाख, लाक्ष।

(डि. को.)

रंगजीव—सं. पु. [सं. रंग+जीवक] चित्रकार।

रंगट—देखो 'रंघड़' (रू. भे.)

उ०—रंगट भट फुट भ्रकुट मरकट। कुळट नट वट उछट कटकट।

—सू. प्र.

रंगढंग—स. पु.—१ हालचाल, आसार, हालात।

२ व्यवहार, बर्ताव।

३ चाल-ढाल, गतिविधि ।
४ सजावट, ठाट ।
उ०—निजर नांखी, भोमी ताकी पण किमनजी कमरै रै रंगढंग सूं ढीली, लटट्ू ह्वैग्यो ।
—दमदोख
५ लक्षण-गुण ।

रंगणौ, रंगबौ—क्रि. अ.-१ लीन होना, तल्लीन होना, तन्मय होना, अनुरक्त होना ।
उ०—१ मुनेसर मन, अनंग सुमति । रंगै वह अंग, विवै रंग रति ।
—रांमरासौ
उ०—२ कांई रे स्वरूप कहूं हरि रौ, रूप कहूंगी स्वरूप कहूंगी, रांमैया न रंग मांहि रंगियौ रहूंगी ।
—मी. रां.
उ०—३ जे जन हरि के रंग रंगे, सो रंग कदे न जाइ । सदा सुरंगे संत जन, रंग में रहै समाइ ।
—दादूबांणी
२ आसक्त होना, मोहित होना ।
उ०—रही सवीरा राजवण, नैण न नांखी नीर । रंगै मत डण रंग में, चंगी भीजै चीर
—अज्ञात
३ ओत-प्रोत होना ।
उ०—इमड़ा पिता रा प्रताप में जुड़ौ ही नांम काढण रै काज पराई पुहवी लेण रा वीर रस में रंगियौ ।
—वं. भा.
४ रंग से युक्त होना ।
उ०—१ मरै नहीं भले मार, तिकै जीवण ने ताता । मारै जूंवां ममळ, रहै रंगिया नख राता ।
—ऊ. का.
५ भीगना ।
उ०—ऊभा थकै अनेक श्रोण रंगाणा सूर नर ।
—रा. रू.
उ०—२ जुध दुरंग दंत चढिया जिता, खित पाड़ै मुगळां खळां । दळ साह डोहि आयौ दुभळ, वेढक रंगिया वीजळां ।
—गू. प्र.
क्रि. सं.-६ वस्त्रादि किसी पदार्थ को किसी रंग विशेष या कई रंगों में रंगना, रंग से युक्त करना ।
उ०—१ लोढ़ै, पींजै, कात लपेटे । वणै रंगै फाड़ै कई वार ।
—स्वरूपदास
उ०—२ नाहरी इम कहै सुणीजै नाहर, तज ववियां गिरवास उताळ । अण ठांमां नित करै ऊथाळा, भाला नित रंगै भूपाळ
—रांमसिंघ हाडा बूंदी री गीत
७ अनुकूल करना ।
८ प्रभाव में करना ।
९ प्रेम में फंसाना ।
१० निरर्थक लिखना या किसी के विरुद्ध लिखना ।
रंगणहार, हारौ (हारी), रंगणियौ —वि. ।
रंगिओड़ौ, रंगियोड़ौ, रंग्योड़ौ —भू. का. कृ. ।
रंगीजणौ, रंगीजबौ । —भाव वा./कर्म वा. ।

रंगत—सं. स्त्री. [सं. रंग+त प्रत्य.] १ दशा, हालत, अवस्था, ढंग ।
उ०—१ राजाजी सूं रीस रै पांण तुरत कीं नीं बोलीजियौ तौ वै थूक गिटता रह्या । आंख्यां काढता रह्या । दीवांणजी आ रंगत देख वांरी मन री बात समझग्या ।
—फुलवाड़ी
उ०—२ डर रै कारण लोगां रा मूंडा लुकबुका पड़ग्या । आ रंगत देख मासी नै हंसी आयगी ।
—फुलवाड़ी
उ० —३ पण जे भगवांन मिनख नै आपरी जरूरतां पोखण वास्तै ई कमाई री सुमत देतौ तौ आज दुनियां री रंगत ई दूजी व्हैती ।
—फुड़वाड़ी
उ०—४ वखत रै मागै-मागै दुनिया री रंगत ई बदळती जावै ।
—वरसगांठ
२ आनन्द, मौज ।
उ०—प्रीत भरीजै नैण वियौ द्रग नीर न आवै । ताप विजोगां ताय संजोगां रंगत लावै ।
—मेघ
३ रंग, वर्ण ।
उ०—रंग-विरंगा चीर, अमोलख भूखण भारी । सुरा करंता पांन ज तैणा रंगत न्यारी ।
—मेघ
४ शोभा, छवि ।
उ०—धू दिस रळियां राज अणीणी धर जां सोवै । तोरण धनक समांण, रूपाळी रंगत होवै ।
—मेघ
५ सुर्खी, आभा. कान्ति, झलक ।
६ प्रभाव, छाप ।
७ इच्छित कार्य पूर्ण होने पर मिलने वाला सुख ।
उ०—डागैरी डोकरी मां रै चाव रूंख में पांन-फूल सूं रंगत आई ।
—दसदोख

८ संतोष, चैन, शान्ति।

ज्यूं०—इण नैं बैठा नै रंगत नीं है।

९ मजलिस, गोष्ठी, महफिल।

उ०—एक नाथ सोनजी री दातारी सूं रीझ'र गांव में आगण ही लगा बैठ्यी। बस, सुलफै अर भांग री रंगत छिड़गी है।

—दसदोख

१० रंग से युक्त होने की दशा, अवस्था या भाव। (मा. म.)

११ रंगाई का कार्य व इस कार्य का पारिश्रमिक।

रंगथळ—देखो 'रंगस्थळ' (रू. भे.)

उ०—चंगा चीर धारियां धू पर, अखन कुंवारी बाळा सुंदर। रमत मात रंगथळ ऊपर, सूवा सिखर अळंग अध्धफर।

—मा. वचनिका

रंगना—स. स्त्री.—१ स्त्री, औरत। (ह. ना. मा.)

२ रमणी, सुंदरी।

रंगनाथ—सं. पु.—१ विष्णु का एक नामान्तर।

उ०—सरब परिगह सहित रंगनाथ जी रै मंदिर पधारिया रंगनाथ जी नूं गंगाजळ चढावण नूं।

—बां. दा. ख्यात

२ एक तीर्थ स्थान।

उ०—दिस पूरब जगन्नाथ, दिखण रंगनाथ विराजै। पच्छिम द्वारकनाथ, उदध गहरै सद गाजै।

—गजउद्धार

रंगनिवास—सं. पु.—१ रंग महल, क्रीड़ा भवन, केलिगृह। अन्तः पुर।

उ०—गींदोली गुजरात सूं, असपत री धी आंण। राखी रंगनिवास मैं, तैं जगमाल जुआंण।

—बां. दा.

२ रति क्रीड़ा या भोग विलास का स्थल।

रंगपांचम—सं. स्त्री.—चैत्र कृष्ण पंचमी।

रंगपीत—सं. पु. [सं. पीतरंगः] १ बृहस्पति का एक नामान्तर। (अ. मा.)

२ ब्रह्मा।

रंगपुर—सं. पु.—रंग महल, अन्तःपुर।

उ०—मारवाड़ में परण्योड़ी, रंगपुर में रम्योड़ी। मितराई न दोस्ती, आपी न प्यार।

—दसदोख

रंगबिरंग, रंगबिरंगो—वि. (स्त्री. रंगबिरंगी) विविध रंगों का, अनेक रंगों वाला।

उ०—वतावण आंचळ रंग मजीठ, वंधाणी छेहड़ै काळो रंग। खलै कुण जांणै किण पुळ गांठ, हुवै सह धरती रंगबिरंग।

—सांझ

रंगभवन—सं. पु.—अंतःपुर, रंगमहल।

रंगभीनी—सं. स्त्री.—१ वेश्या, रंडी।

उ०—पांणी सूं पोसाक री, धरख्यो रंग धुपीज। यो रंगभीनी दूसरी, रंगभीनी नूं रीझ।

—बां. दा.

२ प्रेम या रंग में डूबी हुई स्त्री।

उ०—घर आ मिळवै रंगभीनी परी।

—रसीलै राज री गीत

वि. स्त्री.—१ अनुराग या रति क्रीड़ा में मग्न।

उ०—अतरा मांहे घड़ी प्रहर रात जातां वीरमदे री बेटी, तका घणी महेलियां रै घूमरै, आभा री बीज, रंगभीनी हंसणी, छतियां रै फूंद आय ऊभी रही।

—कल्याणसिंघ नगराजोत बाढेल री वात

२ रंग से युक्त, रंगमें भरी हुई, रंगवाली। रंग से भीगी हुई।

उ०—पांणी सूं पोसाक री, धरख्यो रंग धुपीज। थो रंगभीनी दूसरी रंगभीनी नूं रीझ।

—बां. दा.

३ सुंदरी।

रंगभीनो—वि. (स्त्री. रंगभीनी) १ प्रेम या रति क्रीड़ा में मग्न।

उ०—१ सायबाजी म्हांरै महल पधारो नै आज, किरपा करो मायवा महल पधारो। रंगभीना रसराज।

—रसीलैराज री गीत

उ०—२ सालुड़ो मंगाद्यो सांगानेर री, अजी रंगभीना राजा जी।

—रसीलैराज री गीत

२ प्रेमी, रसिक।

उ०—आवो आवो जी रंगभीना म्हारै म्हैल, प्यालो तो लियां हाजर खड़ी।

—मीरां

३ रंग से युक्त, रंगवाला।

४ रंग में भीगा हुआ।

रंगभू—देखो 'रंगभूमि'

उ०—इमा रंगभू ढंग रा अट्ट ऊंना, सिटावैं जिकां हेठ पंगी समूना। उदै हाट की वंगड़ां दंत ईसा, गुहावै लियां आर राका ससी सा।

—वं. भा.

रंगभूति—सं. स्त्री.—आश्विन मास की पूर्णिमा की रात्रि।

रंगभूमि, रंगभोमि, रंगभोमी, रंगभौमि, रंगभौमी—सं. स्त्री.—[सं. रंग+भूमि] १ रंगमंच, अभिनय स्थल।

उ०—चऊद राज कीवी रंगभूमि, अनेकि रूपि नचाविउ करमि। नव नव मुहरां नव नव वेस, भमइ अनारिज आरिज देस।

—वसिग

२ रंग शाला, नाट्य शाला।

उ०– सुरंग रंगभोमि में तरंग है न तांनकी। डमंक ढोलकी न त्यूं धमंक घुग्घरांन की।

—ऊ. का.

३ उत्सव मनाने का स्थान।

४ क्रीड़ा स्थल।

५ युद्ध भूमि, रणक्षेत्र।

६ अखाड़ा।

७ महफिल।

उ०– प्रथ्वी पै रंगभोमि हुई। पंखी है इहै मेळगर हुआ। मेळगर इहै जु आखाडा की सब सामग्री नाटफो।

—वेलि. टी.

रंगमल्ली–सं. स्त्री. [सं.] बीन, वीणा।

रंगमहल, रंगमहलि–सं. पु. [सं. रंग+फा. महल] १ भोग विलास व रति क्रीड़ा करने का भवन, रंगपुर, अन्तः पुर।

उ०—१ मीचों सीनो नवल हुसियार राज आवो रंगमहल में। बना क्योंकर आवां थारे रंगमहल में आवें आवें बाबाजी री लाज म्हांने आवें नांऊजी री लाज राज किस विध आवां थारा महल में।

—लो. गी.

उ०—२ तठा उपरांत करि राजांन मिलांमत रंगमहल में प्रेम झड़ लागि नें रही छै। सुरतांत-समय हुवो छै। महलां री हवा मांणीजें। कांचुआं री कस छूटी। मोतियां री माळ तूटी। जांणे सुख री लंका लूटी। इण भांत सुख-सेजें पोढिया।

—रा. सा. सं.

उ०—३ पिक-वांण जांण वैणी पनंग, हिरणाखी हंसा-गमणि। रंगमहल मिध राजांन सुर, रमति राज-पुत्री रमणि।

—गु. रू. बं.

उ०—४ घर करि अमन पदम छत्र धारें। सुंदरि नवलापुरी सिगारें। रंगमहलि दंपनि दुति राजें, छक सुसतालि कांम छवि छाजे।

—गु. रू. बं.

२ आमोद-प्रमोद व मनोरंजण करने का स्थान।

रू० भे०–रंगमैंल।

रंगमांण–सं. पु.–भोग विलास, रतिक्रीड़ा।

उ०—लालांजी थांहरो ठाकुर हुतो सो अबै नहीं छै। सांखली सूं रंगमांण हुआ छै।

— लाली मेवाड़ी री वात

रंगमातो–वि. (स्त्री. रंगमाती) १ उन्मत, मस्त, प्रसन्न चित्त।

उ०—मद अहती मदा मदा रंगमाती। ढाहण दुरंगा दयण धका।

—लाखा फूलाणी री गीत।

२ रसिया, रसिक।

रंगमाळ–सं. पु.–बीस मात्रा का एक मात्रिक छंद जिसके अन्त में गुरु होता है।

उ०—बीस मात्र पाये विमल नवां अंति गुरु टेव। रंगमाळ रूपक रा, इण तक रा उवेव।

—ल. पिं.

रंगमैंल–देखो 'रंगमहल' (रू. भे.)

उ०—१ पण खोळा में महकता फूल भरयां ठाकर रंगमैंल में पधारया तो ठकरांणी री मूंडो उतरग्यो।

—फुलवाड़ी

उ०—२ रंगमैंल में पांच सात जणियां बैठी ही। नाई नैं पिछांणतां थकां ई वे बारै जावण लागी तद दीवांणजी कह्यो–आं हां, बारै क्यूं जावो।

—फुलवाड़ी

रंगरंगीलो–वि. (स्त्री. रंगरंगीली) १ छैल-छबीला, शौकीन।

२ प्रेमी, रसिक।

उ०—सोभा रा सिणगार, सयणां रा सुख दायक। रंगरंगीला केसर रा क्यारा छोगाला छबीला प्रांण प्यारा।

—र. हमीर

रू० भे०–रांगरंगीलो।

रंगरजवो–देखो 'रंगरेजो' (रू. भे.)

उ०—रंगै है किण घण री कुण चीर, केहि पथ रंगरजवो नित आय। उगुणी आथूणी दै छोळ, सुखावै आखै अंबर मांय।

—सांझ

रंगरळियात, रंगरळी–सं. स्त्री.–१ रतिक्रीड़ा, संभोग।

उ० – १ जुवती जुव-जन भंवरा-भंवरी, गावत धमाळ वहार मिळी। विरछ वेल ज्यों अब मिळ कैं होयगी, रसीलाराज गै रंगरळी।

— रसीलै राज री गीत

उ०—२ आंगळीयां जण री यसी, सूंग तणी फळीयांह। 'म्यारा' 'जगकी' सूं मिळै, कीजो रंगरळीयांह।

—मयारांम दरजी री वात

२ आनन्दोत्सव, हर्ष, खुशी।

उ०—१ घणा भाट, मंगत जणां नै राजी किया। घणी रंगरळियात हुई।

—पलक दरियाव री वात

उ०—२ घणी आजी रंगरळी सूं राजस कीवी। लोग सगळी सुख हाल सवोळी राखियो।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ अलिम पति कूच करायौ रे, वेघौ दिल्ली गढ आयौ रे
घरि घरि गूडी ऊछलीयां रे, वहु मंगल धुनी **रंगरलीयां**।
—पं. न. चौ.

३ आमोद-प्रमोद, मनोरंजन, मौज।
उ०—मुरधर नाह 'सुमेर' मुरद्धर माभळी। जुड़ आया जोधांण रचाई रंगरळी।
—किसोरदांन बारहट

४ चैन, आराम, सुख, संतोष।
५ प्रेम, अनुराग।
रू० भे०—रंगरेळ, रंगरेळि, रंगरेलि, रंगरेळी, रंगरोळ, रंगरोल, रंगरोळि, रंगरोलि, रंगरोळी, रंगरोली, रंगिरोल, रंगिरोली, रंगिरौल।
मह०—रंगरोली

रंगरस—सं. पु. यौ. [सं.] १ आनन्द, हर्ष।
२ आमोद-प्रमोद, मनोरंजन।
३ रतिक्रीड़ा, भोगविलास।
४ चोसठ जोड़े पान व मेंहदी को पीसकर वर-वधू के हाथ में रखने की क्रिया या प्रथा। (पुष्करणा ब्राह्मण)

रंगरसियौ, रंगरसीयौ—वि. [सं. रंग+रसिक] १ प्रेमी, प्रियतम, रसिक।
उ०—१ अह्या पराक्रम रूप गुण, दिल रा दाईदार। हदफ हेत लै हालियौ, **रंगरसियौ** रिझवार।
—र. हमीर

उ०—२ साकुर कसीया साज, **रंगरसीया** ठाकुर लियां। अलंगां खडीयौ आज, वालमीयौ वाटां वहै।
—पनां

रंगराग—देखो 'रागरंग' (रू. भे.)
उ०—१ जुत **रंगराग** कटाच्छ करै जदि। तरग गमदन कीव खाली तदि।
—सू. प्र.
उ०—२ **रंगराग** अगर केसर अतर, उच्छवि छक आणंद अति। अनपुरां आदि उदियापुरां, परणै कमधज छत्रपती।
—सू. प्र.
उ०—३ अंध कै आगें दरपण दीखायौ छै। गूंगै के आगें **रंगराग** करायौ छै। नागर वेल को पांन पसु नें चवायौ छै।
—बगसीरांम प्रोहित री वात।
उ०—४ हमै मयारांम नै 'जसां' **रंगराग** मांणै छै। जकां नैं इंद्र भी वखांणै छै। रंगराग री चोरी लागी छै। विरह भोली भागी छै।
—मयारांम दरजी री वात

रंगराज—सं. पु.—ताल के मुख्य साठ भेदों में से एक।

रंगरातौ—वि. [सं. रंग+रत] (स्त्री. रंगराती) १ प्रेम या अनुराग में लीन, प्रेमासक्त।
उ०—१ मारू मैं'लां आयी है मांभल रात। अजी कांई लटपटिया पेच री। अलबेलिया नैणां री मदमाती, **रंगरातौ** संग गाथ।
—रसीलेराज री गीत
उ०—२ **रंगरातौ** चीत कवट-हर राजा, अवगं हूंत ऊतरियौ। तौ मुख दीठै लाख-नियागी, 'विजा', जगत सह वीसरियौ।
—ईसरदास बारहठ

२ भोग विलास या रतिक्रीड़ा में संलग्न, विलासी।
उ०—१ जातौ आहेड़ां जठै, तीण करण नातोह। **रंगरातौ** निस दिन रहै, मद जोवन मातोह।
—र. हमीर
उ०—२ बंद तुड़ाय हाथी वहै, मुख **रंगराती** मीच। मदमाती हंस मुख करौ, वसवौ छाती वीच।
—महादांन महड़ू

३ छैल छवीला, रंगीला, रसिया, प्रेमी, रसिक।
४ जो किसी के प्रभाव में हो। किसी से प्रभावित हो।
उ०—रांणाजी (हो) मैं माधुन रंगराती।
—मीरां

रंगरास—सं. पु. [सं. रंग+रास] १ रतिक्रीड़ा, भोग विलास, मैथुन।
उ० — जमला री बेटी सूं अठै बोहत **रंगरास** हुवौ। अठै इण हीज दिन इण रै पेट आसा रही।
—नैणसी

२ आमोद-प्रमोद, मनोरंजन।
३ उत्सव, आनन्द, हर्ष।
४ नृत्य-गायन।
५ खेल-तमाशा।
६ रंग का खेल।

रंगरूट—सं. पु. [अं. रिक्रूट] नया भर्ती होने वाला सिपाही, सैनिक।

रंगरेज—सं. पु. [फा.] (स्त्री. रंगरेजण, रंगरेजणी) १ वस्त्र रंगाई का कार्य करने वाली एक मुसलमान जाति।
(मा. म.)
२ उक्त जाति का व्यक्ति।
उ०—अनें **रंगरेजण** कहै-अरे कायर लंपट लोभी कूड़ा ठाकर होवणा रंगरेजण ही भुर रही है। रे इण साक्षात सती रूपी धण रा कपड़ा रंगता आ सत करणनै पौसाक मंगावसी जद म्हांरां दाळद्र गमाय देसी, सो इणने जीवतै रांड करदी कायर।
—वी. स. टी.

रंगरेजौ—सं. पु. (स्त्री. रंगरेजण) रंगरेज जाति का व्यक्ति।

उ०—चल रंगरेजा में नहीं चांहूं, भल नहिं सोभा भंग। अलमित देखिर जळै अंग में, रांड कसूंमल रंग।

—ऊ. का.

रू० भे०—रंगरजवौ।

रंगरेटा—सं. स्त्री.—सिक्ख सम्प्रदाय के अन्तर्गत एक जाति विशेष।

उ०—चंडाळ तेग बहादुर रे साथे कांम आयौ, उण रा सिख रंगरेटा कहावे 'रंगरेटा गुरु दा बेटा'।

—वां. दा. ख्यात

रंगरेळ, रंगरेळि, रंगरेलि, रंगरेळी—देखो 'रंगरळी' (रू. भे.)

उ०—१ कपड़ा भीनां कुंमकुमै, अलका अंतर उजेळ। चंद वदन्यां आवै चतुर, रमण जीत रंगरेलि।

—पनां

उ०—२ वसीकरण छइ म्युं तुझ पानइ, अथवा मोहन वेलि। साच कही ते अंतर खोली, जिम थायइ रंगरेलि।

—वि. कु.

उ०—३ साहब ख्यांम समाळ, महेत सहेलियां। रुड़ै नीर सुगंध वरा रंगरेळियां।

—वां. दा. ख्यात

उ०—४ महाराज सिलांमत, आपरै तौ पुत्र हुवौ छै, सो रंगरेळी हुई छै।

—रीसालू री वारता।

रंगरेलौ—देखो 'रंगीलौ' (रू. भे.)

उ०—मांडूं रंग रंग मांडणा, कंत न राखै कोय। थव रंगरेला पग घरै, सदा सावरत सोय।

—रेवतसिंह भाटी

रंगरोळ, रंगरोल, रंगरोळि, रंगरोलि, रंगरोळी, रंगरोली—देखो 'रंगरळी' (रू. भे.)

उ०—१ ताजां आंणीयां दही, पछै विलंब करवी नहि। करंबा आंणीया रंगरोल, भीरा-लूण वासीयौ घोल दहीवडा' बनाविया घोल, नाखयी राई तणौं भोल।

—व. स.

उ०—२ सांभि रे गाई सांभी रे, म्हारी सांभी हुया रंगरोल रे। संघ सहु को हरखियउ, वारु दीधा नवल तंबोल रे।

—स. कु.

उ०—३ अंग इग्यारे मइं धुण्या सहैली हे आज थया रंगरोल कि।

—वि. कु.

उ०—४ मुग जोड नितु टेयरी, माता दइ हींचोल। नितु नितु मांगि घूघरी, प्रेम करी रंगरोळ।

—मा. कां. प्र.

उ०—५ त्रसणा-पीडित तारुणी, पणिकर कुंकम-रोळ। निरमळ पांणी-नइं गणइ, रुधिर तणा रंगरोळ।

—मां. का. प्र.

रंगरोली—१ देखो 'रंगरळी' (मह., रू. भे.)

उ०—भोजन भक्ति किवी उपरले माल, मध्यान्ह काल, केल पत्र छाया इसा मंडप निपाया, निरमल पांणीए पखाली, आगे मेली सोनांनी थाली, कीधा रंगरोला, भाजा मेलीया रूपा-सोना ना कचोला।

—व. स.

२ देखो 'रंगीली' (रू. भे.)

रंगली—देखो 'रंगीली' (रू. भे.)

उ०—आज्यो रंगली तीजां पांवणा, हंसा समदर जब छोडी जी काई, जब समदर खारी होय।

लो. गी.

रंगवाई—देखो 'रंगाई' (रू. भे.)

रंगवाग—सं. पु. [सं. रंग+फा. बाग] वह उद्यान जहां केवल महिलाएं ही जा सकती हों, जनाना बाग।

उ०—घोड़ी इसौ ताती खड़ियौ, दिन ऊगै रंगवाग निजर पड़ियौ।

—र. हमीर

रंगविद्याधर—सं. पु.—ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

रंगसाई—सं. स्त्री.—रंग से सुसज्जित करने की क्रिया।

उ०—वरं वेहड़ा वांद सोभा वणाई, वंदै तोरणां रंगसाई वधाई। रचै कुंभ सोव्रन्न थंमा अरेहं, वणौ आद्रवै वंस सोव्रन्न वेहं।

—सू. प्र.

रंगसाज—सं. पु. [फा.] १ वस्तुओं पर रंगाई या चित्रकारी का कार्य करने वाला व्यक्ति।

२ चित्रकार।

३ रंग बनाने वाला।

रंगसाजी—सं. स्त्री. [फा.] १ रंग साज का कार्य।

२ रंगाई या चित्रकारी।

रंगसाळ, रंगसाळा—सं. स्त्री. [सं. रंग+शाला] १ नाट्य शाला, अभिनय कक्ष, अभिनय स्थल, रंगमंच।

उ०—मांय जनांना में मैंल कराया नै रंगसाळ कराई।

—नैणसी

२ वह स्थान जहां महफिल लगती है

उ०—आसोप रंगसाळ में नाहरसिंघ राजसिंघोत गळियोड़ा अमल सूं चकडियौ भरायो।

—वां. दा. ख्यात

रंगस्थळ—सं. पु. [सं. रंगस्थल] १ युद्ध स्थल।

उ०—घोड़ नगर के रंगस्थळ में जवनन सूं जुद्ध करै बिन ही संतांन परलोक पायौ।

—वं. भा.

२ अभिनय स्थल, रंगमंच।
३ क्रीड़ा स्थल, आमोद-प्रमोद गृह।
४ वह स्थान जहां रति क्रीड़ा की जाय।
रू० भे०—रंगथळ।

रंगाई—सं. स्त्री.—१ रंगने का कार्य।
२ उक्त कार्य का पारिश्रमिक।
रू० भे०—रंगवाई।

रंगाउळिय, रंगाउळीय—देखो 'रंगावळी' (रू. भे.)

उ०—छकड़ी जरद सउं अंगि छाई, रोपियउ टोप सिरि 'जइत राइ'। राइ जइति' पहरि रंगाउळीय सज सइ करि हाथळ मंकळीय।

—रा. ज. सी.

रंगाणौ, रंगाबौ—क्रि. स. (रंगणौ क्रि. का. प्रे. रू.) १ रंगने का कार्य करवाना, रंगने के लिये प्रेरित करना, रंगाई कराना।
२ किसी रंग में तरवतर या ओतप्रोत कराना, रंग में डुबवाना।
३ किसी में लीन या तल्लीन होने के लिये प्रेरित करना।
४ प्रेम में फंसवाना।
५ प्रभाव में कराना, अनुकूल कराना।
६ व्यर्थ या किसी के विरुद्ध लिखवाना।
रंगाणहार, हारौ (हारी), रंगाणियौ —वि.।
रंगायोड़ौ —भू. का. कृ.
रंगाईजणौ, रंगाईजबौ। कर्म वा.।
रंगावणौ, रंगावबौ। रू. भे.।

रंगाभरण—सं. पु.—ताल के मुख्य साठ भेदों में से एक। (संगीत)

रंगायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ रंगने का कार्य करवाया हुआ, रंगने के लिये प्रेरित किया हुआ, रंगाई कराया हुआ. २ किसी रंग में तरवतर या ओतप्रोत कराया हुआ, रंग में डुबाया हुआ. ३ किसी में लीन या तल्लीन होने के लिये प्रेरित किया हुआ. ४ प्रेम में फंसवाया हुआ. ५ प्रभाव में कराया हुआ, अनुकूल कराया हुआ. ६ किसी के विरुद्ध या व्यर्थ लिखवाया हुआ। (स्त्री. रंगायोड़ी)

रंगार—सं. पु.—१ प्रायः मेवाड़ और मालवे में रहने वाली एक राजपूत जाति।
२ रंग देने वाला व्यक्ति

उ०—काती राती हूं थई, माधव केरइ नामि। रंग नथी रंगार परि, ऊकालई कुण कांमि।

—मा. कां. प्र.

रंगाळ, रंगाल—वि.—१ रंग का, रंग सम्बन्धी।
२ रंगीन।
३ रंगीला।

रंगालय—सं. पु. [सं. रंग+आलय] १ नाट्य शाला, रंगमंच, रंग स्थल।
२ युद्ध भूमि, रणक्षेत्र।

रंगाळी—वि.—१ रंग का, रंग सम्बन्धी।
२ रंग से युक्त, रंगीन।

उ०—मडते रंगाळा मतीरिया जीमण में घणा सुवाद लागै है, ऊपर सूं काकड़िया गटकावण नै ही जी जागै है।

—दगदोग

३ रंगीलौ।

रंगावट—सं. स्त्री.—१ रंगने की क्रिया या भाव।
२ रंगाई।

रंगावणौ, रंगावबौ—देखो 'रंगाणौ, रंगाबौ' (रू. भे.)
रंगावणहार, हारौ (हारी), रंगावणियौ —वि.।
रंगाविओड़ौ, रंगावियोड़ौ, रंगाव्योड़ौ —भू. का. कृ.।
रंगावीजणौ, रंगावीजबौ। —कर्म वा.।

रंगावळ, रंगावळि, रंगावळी—सं. पु.—१ एक प्रकार का कवच विशेष।

उ०— टोप रंगावळ सारकां, सिलहां रज भरियांह। राव पधारै 'पाल' पर, पिंड वज पाखरियांह।

—पा. प्र.

२ रान का कवच, उरत्र।

उ०—१ जिणसाल, जुआंण करंत जरादी, कूसण बांधै जम्मजटा। हद ओप विटोप रंगावळि हाथळ, सूमाआ करि सिद्ध सटा।

—गु. रू. बं.

उ०—२ रंगावळि सत्थळ हत्थे हत्थळ भूळरियाळा घू टोपं। जड़िया ले जूसण बंधै कस्सण, सिद्धक जांणै सक्कोपं।

—गु. रू. बं.

उ०—३ करि सिलहि जीणसाला किलक्कि, धर टोप रंगावळि असुर धक्कि।

—मा. वचनिका

रंगावियोड़ौ—देखो 'रंगायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रंगावियोड़ी)

रंगि—देखो 'रंग' (रू. भे.)

उ०—१ माता आंणंदइ भरी, ऊलट माइ न अंगि। मुंपी सोविन-जीभड़ी, मलीउ माधव रंगि।

—मा. कां. प्र.

उ०—२ आभा चित्र रचित तेणि रंगि अनि अनि, मणि दीपक करि सूध मणि। मांडि रहे चंद्रवा तणै मिसि, फण सहसेई सहस-फणि।

—वेलि.

उ०—३ मारवणि मनि रंगि, वाटइ तिणि आवी वहइ। कुंभी एकणि मंगि, तालि चरंती दिठ्ठियां।

—ढो. मा.

२ देखो 'रंगी' (रू. भे.)

रंगिका-सं. स्त्री.-२८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसमें १६ व १२ पर यति होती है। इसके अन्य नाम-सार, ललित, नरेन्द्र आदि भी हैं।

रंगिया-सं. स्त्री.-मृत पशु की उतारी हुई खाल को रंगने का कार्य करने वाली एक जाति या वर्ग। जटिया रंगर। (बीकानेर)

रंगियोड़ो-भू. का. कृ.-१ लीन, तल्लीन, तन्मय या अनुरक्त हुवा हुआ. २ आसक्त या मोहित हुवा हुआ. ३ ओत-प्रोत हुवा हुआ. ४ रंग से युक्त हुवा हुआ. ५ भीगा हुआ. ६ किसी रंग विशेष या कई रंगों में रंगा हुआ, रंग से युक्त किया हुआ. ७ अनुकूल किया हुआ. ८ प्रभाव में किया हुआ. ९ प्रेम में फंसाया हुआ।

(स्त्री. रंगियोड़ी)

रंगिरोल, रंगिरोली, रंगिरौल-देखो 'रंगरळी' (रू. भे.)

उ०—चंदन भरी कचोली (थरी) यनि रंगिरोली, प्रीसइ रस घोली, हाथि लिउ पांन कुली, पहिरणि पीत पटुली, कांचली कांनी आली, उढणि नवरंग फाली रूपनी चित्रमाली, अही मीआलक।

—व. स.

रंगी-सं. स्त्री.-१ शारदा, सरस्वती। (अ. मा.)

२ शतमूली।

३ कैवर्त्ति की लता।

४ २८ वर्ण का एक वर्णिक छन्द विशेष। (पिं. प्र.)

५ निसांणी छंद का एक भेद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में ६ गुरु और ११ लघु वर्ण होते हैं।

वि.-१ हंसमुख, विनोद शील।

२ मनमौजी, मस्त।

३ छैल-छबीला, शौकीन।

४ सुंदर, मनोहर।

उ०—धरम्म बिनां देखो धरनी में, भये किते इक भंगी। धरम प्रताप धरापति वारत, रजवांनी वहु रंगी।

—ऊ. का.

रू० भे०-रंगि।

५ देखो 'रंग' (रू. भे.)

रंगीन-वि. [फा.] १ जिस पर कोई रंग चढा हो, रंगा हुआ, रंगदार, रंग से युक्त।

२ चित्रित, शोभित।

३ चमत्कार पूर्ण, अद्भुत।

४ जो स्वभाव से विनोद प्रिय हो और आमोद-प्रमोद रुचि रखता हो। मस्त, मौजी।

५ विलास प्रिय, विलासी।

रंगीली-सं. स्त्री.-१ स्त्री, नारी।

२ प्रेमिका, प्यारी।

उ०—परगह ले वांधी पगां, सेंठी गूघर साथ। हंजा री सारी हुकम, हुओ रंगीली हाथ।

—बां. दा.

वि. स्त्री.-१ हर्ष और आनन्द मे युक्त, मस्ती भरी।

उ०—म्हारै आज रंगीली रात, मनडा रा म्हरम आइया।

—मीरां

२ रंगों से युक्त, विविध रंगों वाली।

उ०—रे सांवरिया म्हारै आज रंगीली गणगोर छै जी।

—मीरां

३ सुन्दर, खूबसूरत।

४ मजेदार, बढ़िया।

उ०—पीं पीं ज्यूं पिक वैण, पीपटी वर्ण रंगीली। देव दुकांनां मिळै, मुफत रै मोल चंगीली।

—दसदेव

५ छैल-छबीली, शौकीन।

६ छिनाल, आवारा।

रू० भे०-रंगली।

रंगीलीटोड़ी-सं. स्त्री.-सब शुद्ध स्वरों की सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी। (संगीत)

रंगीलौ-वि. (स्त्री. रंगीली) १ रंग भरा, रंग से युक्त, रंगीन।

२ आकर्षक।

उ०—रंगीलौ चंग वाजणूं, म्हारै वीरै जी मंढायो चंग वाजणूं। म्हारी देगर मंढ कै लायो ए, रंगीलौ चंग वाजणूं।

—लो. गी.

३ आनन्द व मस्ती भरा, हर्ष व खुशी देने वाला।

उ०—वसंत पंचमी पछै, नीकळै काची केळां, कूंपळ दांतण तणी रंगीली रुत री वेळां।

—दसदेव

४ प्रेम व अनुराग से युक्त, प्रिय, प्रेमी।

उ०—आप रंगीला, सेज रंगीली और रंगीलौ सारो साथ छै जी।

—मीरां

५ मौजी, मस्त, विनोदी, रसिक।

६ रंग मे भीगा हुआ, रंग से सराबोर।

रू० भे०-रंगरेलौ।

रंगोचंगो–वि.–१ बढ़िया, मजेदार।
२ हर्षोन्मत्त, आनन्दित।
३ मस्त, मौजी।

रंघड़–सं. पु.–१ राजपूत।
उ०—जंगल जाट न छेड़िये, हाटां बीच किराड़। रंघड़ कदै न छेड़ियै, जद तद करै विगाड़।
—अग्यात
२ एक राजपूत जाति जो आजकल मुसलमान हो गई है।
वि.–१ सुभट, भट, योद्धा, सैनिक, वीर, बहादुर।
उ०—वखत हरीसिंघ बाहदुर, ठावा द्वै भुज ठौड़। 'पातल' संग जुध प्रगटिया, रंघड़ बतीस रठौड़।
—जुगतीदांन देथौ
२ अड़ियल, अक्खड़।
रू० भे०–रंगड़, रंगट, रांगड़, रांघड़। अल्पा०—रांगड़ौ, रांघड़ौ।

रंच–वि. [सं. न्यंच, प्रा. णंच] १ अत्यल्प, अल्प, थोड़ा, किंचित, तनिक।
उ०—१ किल कंचन कांमनि त्याग करै, धन संच प्रपंच न रंच धरै।
—ऊ. का.
उ०—२ वडो कठण पण पिता कियो, कोई रंच न कियो विचार। धनुख चढो कै मत चढो, म्हारो रांम भंवर भरतार।
—गी. रां.
उ०—३ पय कर मीठो पाक, जो अमरित सींचीजिये। उर कडवाई आक रंच न मूकै राजिया।
—किरपारांम
उ०—४ हठ इंद्री निग्रह करै, जोग जप तप ग्यांन। हरीया सहजां सवद का, रंच न पावै ध्यांन।
—अनुभव वांणी
२ तुच्छ, न्यून।
सं. स्त्री–१ पार्वती, दुर्गा, देवी। (क. कु. बो.)
रू० भे०–रंचक।

रंचक–देखो 'रंच' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—अगै रंचक दोस पै अति दंड न गाया।
—वं. भा.

रंज–सं. पु. [फा०] १ दुख, गम।
२ मृतक का शोक।
३ खेद, अफसोस।
४ चिंता, फिकर।
५ दर्द, पीड़ा, संताप।
६ नाराजगी।
७ विपत्ति, मुसीबत।
८ आघात, चोट।
वि. [सं. रंज, रञ्ज] १ अनुरक्त, आसक्त।
२ लिप्त, संलग्न।
३ रंगा हुआ।
४ प्रसन्न, खुश।
उ०—जाई बेटी जांनकी, रांम जमाई रंज। भाग बडाई जनक री, गाई वेद अगंज।
—र. ज. प्र.
रू० भे०–रंजि, रंजी।
५ देखो 'रज' (रू. भे.)

रंजक–सं. पु. [सं.] १ चित्रकार, चितेरा।
२ लाल चंदन।
३ सिन्दूर।
४ एक प्रकार का हरिन। मृग।
उ०—पाछै रंजक सुडियांण काळै गोरे स्रग नरगोन जाणै न पावै। जहां देखै तहां मारि गिरावै।
—सू. प्र.
५ पित्त के अन्तर्गत पेट की एक अग्नि। (सुश्रुत)
[फा.] ६ रंगरेज, रंगसाज।
७ बन्दूक या तोप की प्याली में रखी जाने वाली बारूद की थोड़ी सी मात्रा।
उ०—१ अहि खग म्रिग दम हंस अळूझै, सुणै न सवद गात नह सूझै। दहूं दळां बळि हुवै दिखाई, रंजक झळां गोळां रुसनाई।
—सू. प्र.
उ०—२ ईण भांत वात कहतां तो वार लागै। रंजक जागी। कनां तोपखांना री ईक पलीती दागी। हर गोळी छुटी।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
८ अग्नि।
उ०— घड़ा री धणी पण कई वार अकेली ही लोहां मिळयो। सोर मे पण रंजक। तिण भांत रजपूती री तीव्र री तस भख।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
वि.–१ रंगने वाला, रंग चढ़ाने वाला।
२ रंज या उदासी मिटाने वाला।
३ हर्ष या खुशी देने वाला, आनन्द कारक।
४ उत्तेजना या प्रोत्साहन देने वाला।
५ आकर्षित या मोहित करने वाला।

रंजण–सं. पु. [सं. रञ्जनम्, प्रा. रंजण] १ रंगने की क्रिया या भाव।

२ चित्त को प्रसन्न करने की क्रिया या भाव।
३ आनन्द, हर्ष।
४ पित्त।
५ लाल चंदन की लकड़ी।
६ मूंज।
७ सोना, स्वर्ण।
८ जायफल।
९ कमीला नामक वृक्ष।
१० छप्पय छन्द का एक भेद जिसमें २१ गुरु व ११० लघु कुल १५२ मात्राएं होती हैं। मतान्तर से छप्पय छन्द का बावनवां भेद जिसमें १९ गुरु तथा ११४ लघु कुल १५२ मात्राएं होती हैं।
—र. ज. प्र.

वि.—१ रंज या उदासी मिटाने वाला, आनन्द व खुशी देने वाला।
उ०—१ मंत्रीसर घरि आवीउ सयल लोक रंजण सुलक्खण। पूरव पुण्य पसाउ लइ त्रिण्णि नारि विलसइ वि अक्खणि।
—हीराणंद सूरी

उ०—२ दुखियां नें सुख ना दातार। भय भंजण रंजण अवतार।
—वृ. स्त.

उ०—३ चंदण देह कपूर रस, सीतळ गंग प्रवाह। मन रंजण तन उल्हवण, कदै मिळैसी नाह।
—ढो. मा.

२ पालन-पोषण करने वाला।
उ०—जगत ठांम जग सांमि, जगत रोपण जग रंजण। जग वंदण जग जेठ, जगत भेदण जग भंजण।
—पीरदांन लाळस

३ शान्ति या संतोष देने वाला।
उ०—वाद भणी विद्या भणी जी, पर रंजण उपदेस। मन संवेग धरचउ नहीं जी, किम संसार तरेस।
—स. कु.

रू० भे०—रंजन।

रंजणी—वि. (स्त्री. रंजणी) १ प्रसन्न या खुश करने वाला, प्रसन्न या खुश होने वाला।
उ०—१ कोडि वरीसणी लखवीर वडाकर राजिंद रूपक रंजणी। वैर वराह लिग्रां दळ बादळ भूप खळां दळ भंजणी।
—ल. पिं.

उ०—२ भारांणी दुख भंजणी, गुण रंजणी गहीर। जाग खजांनै जगत री, साहिब कीवी सीर।
—बां. दा.

२ रंगने वाला।
३ आकर्षित करने वाला।
उ०—गरब सत्रां गंजणा, रमा सुचित रंजणा। भुजां राजोर भंजणा, चढाय सिंभ चाप।
—र. ज. प्र.

४ तृप्त करने वाला, तृप्त होने वाला।
५ दीप्तिमान करने वाला।
उ०—भारत भू भरतार, रजव्वट रंजणौ। अवतरियौ नर एक गनीमां गंजणौ।
—किसोरदांन बारहठ।

रंजणौ, रंजबौ—क्रि. अ. [सं. रंजनम्] १ प्रसन्न होना, खुश होना, हर्षित होना।
उ०—१ मुन्नि आखै हरि मंत्र वदन कजि अंत विकस्सै। कियौ ग्रेह परवेस रंजी पुरवेस दरस्सै।
—रा. रू.

उ०—२ लूणीए फसले लाग देखी करी, राख्या आपणइ पासी जी। रूड़ी रहणी देखी रंजिया, सहु को कहइ साबासी जी।
—रा. कु.

उ०—३ कल्यांणमल्ल राय रंजिया उदर नगर मझार। मा० सहजू उत्सव करउ, वरत्यौ जय जयकार।
—कवि गुण विजय

२ तृप्त होना, संतुष्ट होना।
उ०—१ गिळै गूंद सादड़ी सयळ साव्ज मन रंजै। कोनर नोडि करंक, गूह गरजी ग्वत भंजै।
—गु. रू. बं.

उ०—२ लोक खुस्याल सहू थया रे, रंज्या रांणी भूप।
—स्रीपाल रास

३ मोहित होना, मुग्ध होना, आकर्षित होना, रीझना।
उ०—१ सिंघल द्वीपे मूकि नें रे, आयस हूअउ अलोप रे। राजा री मन रंजीयौ रे देख्यौ नगर अनोप रे।
—प. च. चौ.

उ०—२ जोतां नवरस एणि जुगि सविहूं धुरि सिणगार। रागइं सुर-नर रंजियइ अबळा तसु आधार।
—ढो. मा.

४ शोभायमान होना, शोभित होना।
उ०—१ चादर हौज फुंहार नीर चलि, अम्रत नदी आय फिर ऊझळि। रंजत सुजळ केइक अंतरामै, केइक हौद भरचा कुमकुम्मै।
—सू. प्र.

उ०—२ मजै पग छांह सातूं रिख स्यांम, रंजै पग छांह जिसा वळरांम। देखै पग सेव करै दुड़इंद, चरच्चै पग्ग निरम्मळ चंद।

—ह. र.

५ उलझना, फंसना।

६ प्रभावित होना, प्रभाव में आना।

७ रंगीजना, रंगमय होना।

८ चमकना, दीप्तिमान होना।

क्रि. स.-९ प्रसन्न करना, खुश करना, आनन्द देना, हर्ष या खुशी देना।

उ०—१ नयणां री अंजन सांवरी म्हारै हिवड़ा री रंजणहार।

—मी. रां.

उ०—२ थे तौ भूखां नी भावठ भंजउ, राजि निज सेवक तणा मन रंजउ राजि०।

—वि. कु.

१० तृप्त करना, सतुष्ट करना।

११ आकर्षित करना, मुग्ध या मोहित करना, रीझाना।

१२ चमकाना, दीप्तिमान करना।

१३ प्रभावित करना, प्रभाव में लाना।

१४ रंगना, रंग से युक्त करना, रंग चढ़ाना।

१५ निर्भय करना, निश्चित करना, भय मुक्त करना।

उ०—सर गिरवर तारै पदम अठारै, सेन उतारै जगत सखै। भिड़ रांवण भंजै गाढिम गंजै, अमरां रंजै ब्रहम अखै।

—र. ज. प्र.

रंजण हार, हारौ (हारी), रंजणियौ —वि.।

रंजिओड़ौ, रंजियोड़ौ, रंज्योड़ौ — भू. का. कृ.।

रंजीजणौ, रंजीजबौ। —भाव वा./कर्म वा.।

रंजवणौ, रंजवबौ। —रू. भे.।

रंजत-सं. स्त्री. (सं. रंज्) १ तृप्ति, संतोष।

उ०—१ भांणजी कह्यौ-मासी थनै ई राड़ करियां बिना रंजत नी व्है। थारा बेटा पटिया तुड़ाता व्हैला, थूं छेकी जावै जकी बात करै नी, क्यूं विरथा आडी-डोढी ग्वसकती फिरै।

—फुलवाड़ी

उ०—२ गांव रै लोगां नै म्हैं जांणूं। एक री इक्कीस नी मेल्नै जित्तै आंनै रंजत ई नीं व्है।

—फुलवाड़ी

२ हर्ष, खुशी, आनन्द।

रंजन-देखो 'रंजण' (रू. भे.)

रंजवणौ, रंजवबौ-देखो 'रंजणौ, रंजबौ' (रू. भे.)।

उ०—कंचणमउ अउ १३ कलसु मिहरि सांणउ रंजविअउ। जगु सुतरणि तउ १४ तवउ तिव्वु (त्थु) आयासि सउन्नउ।

—कवि पल्ह

रंजवियोड़ौ-देखो 'रंजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रंजवियोड़ी)

रंजाट-रंगा हुआ, लीन।

उ०—१ इण वेळा रजपूत वे, राजस गुण रंजाट। सुमिरण लग्गा वीर सब, वीरां री कुळवाट।

—वी. स.

उ०—२ भूप ऊछाहरां माजै महूंसां तरिदां भेडै। रांमेड़ा गरिदां छेड़ै नाहरां रंजाट।

—राजा रांमसिंघ हाडा री गीत

रंजाणौ, रंजाबौ–क्रि. स. ['रंजणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ प्रसन्न करना/कराना, हर्षित करना/कराना, आनन्दित करना/कराना। २ तृप्त करना/कराना, संतुष्ट करना/कराना। ३ मोहित करना/कराना, मुग्ध करना/कराना, आकर्षित करना/कराना, रीझाना। ४ शोभायमान करना/कराना, शोभित करना/कराना, सज्जित कराना। ५ उलझवाना, फंसवाना। ६ प्रभावित कराना, प्रभाव में लाना। ७ चमकाना, दीप्तिमान करना/कराना। ८ रंगमय कराना, रंगाना। ९ भय मुक्त करना/कराना, निर्भर करना/कराना, निश्चित करना/कराना।

रंजाणहार, हारौ (हारी), रंजाणियौ —वि.।

रंजायोड़ौ। — भू. का. कृ.।

रंजाईजणौ, रंजाईजबौ। —कर्म वा.।

रंजायोड़ौ-भू. का. कृ.-१ प्रसन्न या हर्षित किया हुआ/कराया हुआ, आनन्दित किया हुआ/कराया हुआ. २ तृप्त किया हुआ/कराया हुआ, संतुष्ट किया हुआ/कराया हुआ. ३ मोहित या मुग्ध किया हुआ/कराया हुआ, आकर्षित किया हुआ/कराया हुआ, रीझाया हुआ. ४ शोभित या शोभायमान किया हुआ/कराया हुआ, सज्जित किया हुआ/कराया हुआ. ५ उलझवाया हुआ, फंसवाया हुआ. ६ प्रभावित किया हुआ/कराया हुआ, प्रभाव में लाया हुआ। ७ चमकाया हुआ, दीप्तिमान किया हुआ/कराया हुआ. ८ रंग मय कराया हुआ, रंगाया हुआ. ९ भय मुक्त, निर्भय या निश्चित किया हुआ/कराया हुआ।

(स्त्री. रंजायोड़ी)

रंजि-१ देखो 'रज' (रू. भे.)

उ०—जिकां पार जोवतां वार लग्गै वरणंतां, तड़ित सार अवतार अणी गुण धार अनंतां। वेदांणी तन मजि रंजि आभीच लगन्ने, घड़ै सघर पुळ सज्जि धूप डंबर वासन्ने।

—रा. रू.

२ देखो 'रंज' (रू. भे.)

रंजित–वि. [सं. रज्ज्] १ रंग से युक्त, रंगीन। २ भीगा हुआ, सना हुआ। ३ रज से भरा हुआ, धूलि धूसित। ४ प्रेम में फंसा हुआ, अनुरक्त। ५ लिप्त, संलग्न।

रंजियोड़ो–भू. का. कृ.–१ प्रसन्न, खुश या हर्षित हुवा हुआ. २ तृप्त या संतुष्ट हुवा हुआ. ३ मोहित, मुग्ध या आकर्षित हुवा हुआ, रीझा हुआ. ४ शोभित या शोभायमान हुवा हुआ. ५ उलझा हुआ, फंसा हुआ. ६ प्रभाव में आया हुआ, प्रभावित. ७ रंगमय हुवा हुआ, रंगा हुआ. ८ चमका हुआ, दीप्तिमान हुवा हुआ. ९ प्रसन्न या खुश किया हुआ, आनन्द, हर्ष या खुशी किया हुआ. १० तृप्त या संतुष्ट किया हुआ. ११ आकर्षित, मुग्ध या मोहित किया हुआ, रीझाया हुआ. १२ चमकाया हुआ, दीप्तिमान किया हुआ. १३ प्रभाव में लाया हुआ, प्रभावित किया हुआ. १४ रंग से युक्त किया हुआ, रंग चढ़ाया हुआ, रंगा हुआ. १५ भय मुक्त या निर्भय किया हुआ, निश्चिंत किया हुआ।
(स्त्री. रंजियोड़ी)

रंजिस–सं. स्त्री. [फा. रंजिश] १ किसी प्रकार की चिंता, फिक्र या उदासी।
२ अप्रसन्नता।
३ नाराजगी।
४ मन मुटाव, मनोमालिन्य।
५ शत्रुता।

रंजो–१ देखो 'रज' (रू. भे.)
उ०—१ रंजो सिकता स्वेत, वालुमय घोरा पीळा। चांदी तणो उजाम, रुपेली रातां सीळा।
—दमदेव
उ०—२ रंजो आसमांण ढंकी चंद यो छयाळी रहै, टूट ताळी मुनिंद्रां व्है अताळी नमांम।
—मुरारदान कवियो
उ०—३ आखो नगर पोड़ां री रंजो सूं ढकग्यो तो ई वै माठ नीं झेली।
—फुलवाड़ी
२ देखो 'रंज' (रू. भे.)

रंजीदगी–सं. स्त्री. [फा.] १ रंजिश होने की अवस्था या भाव।
२ चिंता उदासी।
३ दुख, संताप, रंज, गम।
४ वैमनस्य, शत्रुता।

रंजीदो–वि. [फा. रंजीदः] १ दुखी, संतप्त, गमगीन।
२ नाराज, अप्रसन्न।
३ असंतुष्ट।

रंड–सं. स्त्री. [सं. रंडः] १ बांझ केकोड़ा नामक एक लता, जिसमें फल नहीं लगते।
उ०—भाइ काला नाग तुं, चढै विलोती रंड। वारू वली विचारसी, रखे भणंतां भंड।
—मा. कां. प्र.
२ देखो 'रांड' (मह., रू. भे.)
उ०—तिण रै बेटी नांम लीलां। सु बाळ रंड।
—देवजी बगड़ावतां री वात
३ देखो 'रंडी' (रू. भे.)

रंडकारो–सं. पु. [सं. रंडा+रा. कारो] १ किसी स्त्री के सम्बोधन में प्रयोग किया जाने वाला अपशब्द।
उ०—सो सपूत हुवै सो तौ पिण माता रा यत्न करै अनें कपूत हुवै ते ऊंधा अवळा बोलै। माता नै रंडकारा री गाळ बोलै।
—भि. द्र.

रंडनी–१ देखो 'रंडी' (रू. भे.)
उ०—वना विहार तें वहै मना किये नहीं मनै। इमा महा अभग्ग नित रंडनी जनें।
—ऊ. का.
२ देखो 'रांड' (रू. भे.)

रंडपोखो–सं. पु. [सं. रंडा+पोषकः] वेश्याओं का पोषण करने वाला, व्यभिचारी। वेश्या गमन करने वाला।
उ०—रंडपोखां रा राज में, खळगी भूखां रैत। सूंकां नित सीरा करै, दंड न चूकां देत।
—ऊ. का.

रंडमाळ, रंडमाळा, रंडमाला–देखो 'रुंडमाळा' (रू. भे.)
उ०—स्मसांन वसनि, असभ गति, रंडमाला भूखण, अनेकि दूखण, इस्या ईस्वर तणी करतां भगति किम पांमीइ मुगति ?
—व. स.

रंडवो–सं. पु. [सं. रंडः] १ वह पुरुष जिसकी स्त्री मर चुकी हो, विधुर।
२ वह पुरुष जिसकी शादी न हो सकी हो, अविवाहित व्यक्ति।
रू० भे०–रंडुओ, रंडुवो।

रंडा–वि.–१ मूर्ख, अज्ञानी।
उ०—निरगुण थी सरगुण हुआ, क्या जांणै रंडा।
—केसोदास गाडण
२ देखो 'रांड' (रू. भे.)
उ०—१ मेलै पग मंडा अग्र अखंडा, रंडा प्रिय राचंदा है। पढ दुग्स प्रमादी सुरमद मादी, महंत पुरस माचंदा है।
—ऊ. का.

उ०—२ जलि वलि जा रे जीभडी, जउ न वखांणी नाथि।
रंडा तुं मुखि रहिसि तु, बोलसि बीजां साथि।

—मा. कां. प्र.

३ देखो 'रंडी' (रू. भे.)

रंडातक–वि.–विधवा स्त्री के समान।

उ०—जावक पावक जिम रंडातक जीवै, सातां ठोडां सूं चंडातक मीवै।

—ऊ. का.

रंडापण, रंडापणौ–देखो 'रंडापौ' (रू. भे.)

उ०—सूरां रण में जाय के, लोहा करौ निसंक। ना मुझ चढै रंडापणौ, ना तुझ चढै कळंक।

—अग्यात

रंडापौ–सं. पु.–१ विधवा होने की अवस्था या भाव, वैधव्य, विधवापन।

उ०—१ बापड़ी भोळी-डाळी किन्यावां नै कुड़कै में नांख'र वेगी सी विधवा बणा देवै। सुवाग री नीं रंडापै री चंवरी चाढै।

—दसदोख

उ०—२ यो सवाग खारौ लगै, जद कायर भरतार। रंडापौ लागै भलौ, होय सूर सिरदार।

—वी. स. टी.

२ विधवा का सा जीवन, दुखी जीवन।

उ०—दुख सतियां री सुणै न दिलकी, बिलकी फिरै विचारी रे। धणी जीवतां देखी घरां में, भोगै रंडापौ भारी रे।

— ऊ. का.

रू० भे०–रंडापण, रंडापणौ, रंडेपड़ौ रंडेपौ, रांडापौ रांडपौ।

रंडाळ–१ देखो 'रांड' (मह., रू. भे.)

उ०—कुळहीन अंग चरमा वितुंड, बंबील उरद्ध सिर महिख मुंड। रंडाळ बाळ बिथुरे अमुभ्र, लज्या विहीन मिर रक्त कुंभ।

—ला. रा.

२ देखो 'रढाळ, रढाळौ' (मह., रू. भे.)

रंडाळौ–१ व्यभिचारी।

२ देखो 'रढाळ, रढाळौ' (रू. भे.)

उ०—वसिया मैंणा लोधिया भीला भुरजाळा, भोम विगाड़ू भोमिया आया अरसाळा। पीहर 'पाल' विग्गायतां घर ठांभण वाळा। जिके विगाड़ू जगत रा, रजपूत रंडाळा।

—पा. प्र.

रंडि–देखो 'रंडी' (रू. भे.)

रंडी–सं. स्त्री. [सं. रंडा] १ धन लेकर नाचने गाने व संभोग कराने वाली स्त्री, वेश्या।

२ वह विधवा स्त्री जो व्यभिचार से धन कमा कर जीविका चलाती हो।

३ स्त्रियों की एक गाली।

रू० भे०–रंड, रंडनी, रंडा, रंडि।

४ देखो 'रांड' (रू. भे.)

रंडीजणौ, रंडीजबौ–देखो 'रांडीजणौ, रांडीजबौ' (रू. भे.)

रंडीजियोड़ी–देखो 'रांडीजियोड़ी' (रू. भे.)

रंडीजियोड़ौ–देखो 'रांडीजियोड़ौ' (रू. भे.)

रंडीबाज–वि. [सं. रंडा+फा. बाज] १ वेश्यागामी, व्यभिचारी।

उ०—भूंडा ही करदै भलौ, कदियक आछौ कांम। रंडीबाजां राखिया, नांमरदां रा नांम।

—प्रभुदांन आसियौ

रंडीबाजी–सं. स्त्री.–१ 'रंडीबाज' होने की अवस्था या भाव।

२ रंडी या वेश्या के साथ किया जाने वाला संभोग, व्यभिचार।

रंडुओ, रंडुवौ–देखो 'रंडवौ' (रू. भे.)

रंडेपड़ौ–देखो 'रंडापौ' (रू. भे.)

उ०—क्यों भेळीजै त्रिकटगढ, क्यों तूटै दस सीस। तो नै दीन रंडेपड़ौ, छोडावण तेतीस।

—मेहौ गोदारो

रंढ–देखो 'रढ' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ सत पराक्रम सूरमां, मन्न स हुआ उदमाद। रोस फुणिंदां रंढ त्रियां, हम्मीरां हठ वाद।

—गु. रू. बं.

रंढरांण, रंढरांणौ–देखो 'रढरांण' (रू. भे.)

उ०—१ भूपां रूप 'लाखौ' वंस भांण, राखै रीति मांमौ रंढरांण।

—ल. पिं.

उ०—२ मलण मांण असुरांण रंढरांण वेढीमणा, आंण तारांण दुनियांण आभौ।

—महेस बारहठ

उ०—३ काढै माल किलांणमल, धूणै जोधांणा। तो गम भग्गा रायसिंघ, रोहै रंढरांणा।

— द. दा.

रंढाळ, रंढाल, रंढाळौ, रंढालौ–देखो 'रढाळ' (रू. भे.)

उ०—१ हुवा तेणै वस हुवौ हिंदूकार हरि हंस। राव राजां जांणै रांणा रावळ रंढाळ।

—नैणसी

उ०—२ मूळू मंकड़ दीयण मुख, कर लागौ कूंटाळ। बीकमसी बीसूत्रमी, रतनौ पूंछ रंढाळ।

—नैणसी

उ०—३ रांणौ दांणौ पूरवै, रावल रण रंढाल । भारथ में योद्धा भिड़ै, रिणयोद्धा जिम काल ।

—प. च. चौ.

उ०—४ रांणौ हे सखि रांणो हे अति रंढाल ।

—प. च. चौ.

उ०—५ सकतावत छळि धणी सिधाळा, ग्राया चांपा वंस उजाळा । रिणमलोत रिणताळ रंढाळा, भेळा चांपावतां भुजाळा ।

—रा. रू.

उ०—६ सूर कहै गजसिंघ नूं, रखि धीर रंढाळा । कळह करी तदि 'केहरी', ग्राय मंडे ग्राळा ।

—सू. प्र.

उ०—७ तवल वाज गजराज, सकवंध ग्रकवर तणा, रहचिया मीर हाले रंढाळै । सतै ग्राफाळिया भला खुरसांण सूं, काछ पंचाळ सोराठ काळै ।

—नैणसी

रंढू–देखो 'रांढू' (रू. भे.)

रंण–देखो 'रण' (रू. भे.)

रंणझण–देखो 'रणझण' (रू. भे.)

रंणथंभ–देखो 'रणथंभ' (रू. भे.)

रंत–देखो 'रत्त' (रू. भे.)

रंति–देखो 'रति' (रू. भे.)

रंतिदे, रंतिदेव–सं. पु. [सं. रन्तिदेव] १ एक चन्द्रवंशी राजा, जो बड़ा दानी था और जिसने बहुत से यज्ञ किये थे ।

(पौराणिक)

२ विष्णु का एक नामान्तर ।

रू० भे०–रंतीदे, रंतीदेव ।

रंतिनदी–सं. स्त्री. [सं.] चंबल नदी ।

रंतीदे, रंतीदेव–देखो 'रंतिदेव' (रू. भे.)

उ०—नमजी चंवल हेत हिये में ग्रादर ग्रांणौ । रंतिदे भूकंत जिगन री कीरत जांणौ ।

—मेघ

रंद–देखो 'रंध्र' (रू. भे.)

उ०—पिंड पिसणां रा गुड पडै, उड गोल्यां ग्रण चूक । रंद जांण वर-दुरंग रा, वांधा थया वंदूक ।

—रेवतसिंह भाटी

रंदणौ, रंदबौ–क्रि. स.–१ लकड़ी को साफ करने के लिये रंदा फेरना, लकड़ी पर रंदा लगाना ।

२ देखो 'रंधणौ, रंधबौ' (रू. भे.)

रंदाई–सं. स्त्री.–१ रंदा लगा कर लकड़ी को साफ करने की क्रिया या भाव ।

२ देखो 'रंधाई' (रू. भे.)

रंदाणौ, रंदाबौ–क्रि. स.–१ रंदा लगा कर लकड़ी को चिकनी व साफ कराना ।

२ देखो 'रंधाणौ, रंधाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तेजाजी ग्रो लापी रंदाऊ बाबा लसपसी, ऊपर लीलोड़ा नारेळ ।

—लो. गी.

उ०—२ नणदल बाई रे लापसड़ी रंदाय, हे ग्रो धण वारी रे हूंजा ।

—लो. गी.

रंदायोड़ौ–भू. का. कृ.–१ रंदा लगवाया हुआ ।

२ देखो 'रंधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रंदायोड़ी)

रंदेज, रंदोज–देखो 'रंधीण' (रू. भे.)

रंदौ–सं. पु.–१ बढई का एक उपकरण जिससे लकड़ी साफ व चिकनी बनाई जाती है ।

२ कमान की डोरी, प्रत्यञ्चा ।

३ ऊंट के पिछले पैर के ऊपर के भाग में होने वाला एक रोग ।

४ उक्त रोग से पीड़ित ऊंट ।

रंध–देखो 'रंध्र' (रू. भे.)

रंधक–सं. पु. [सं.] रसोइया, बावर्ची ।

वि.–ग्रनिष्ट कारक ।

रंधण, रंधन–सं. पु.–१ रसोई या भोजन बनाने की क्रिया ।

२ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक । (व. स.)

रंधणौ, रंधबौ–क्रि. ग्र.–खिचड़ी, खीच ग्रादि का पकना ।

रंदणौ, रंदबौ (रू. भे.)

रंधर–देखो 'रंध्र' (रू. भे.)

उ०—कनंक ग्रंग रंग क्रंति सोभ नाभ सुंदरं । मुनेस मोह रूप भोम, राम जांगि रंधरं ।

—सू. प्र.

रंधांण–देखो 'रंधीण' (रू. भे.)

उ०—पीसण खांडण लीपणौं, रांधण रंधांण । छै कूटौ छःकायनौ, जयणा करै जांण ।

—ध. व. ग्रं.

रंधाई–सं. स्त्री.–किसी खाद्य पदार्थ को पकाने की क्रिया या भाव ।

—रू. भे. रंदाई

रंधाणौ, रंधाबौ–क्रि. स.–भोजन या कोई खाद्य पदार्थ पकाना, पकवाना ।

उ०—१ मांस रंधाणा देगना वेसयार अपारा। सुना त्याग किया मही, जाजे घ्रत भारा ।

—पा. प्र.

उ०—२ तरै जगमालजी नै रैजगी रा रजपूतां री थाळ थार आई । तरै लापसी, थाकुळा, लिनट, दाळिया, सांकुलिया कराई मण मै-पांच अथवा छः सै मण धांन रंधायो ।

—जगमाल मालावत री वात

उ०—३ जीण मेरी वाई थे, उजळा रंधायूं थे थानै चावळथा ।

—लो. गी.

रंधाण हार, हारो (हारी), रंधाणियो —वि.

रंधायोड़ो —भू. का. कृ.

रंधाईजणो, रधाईजवो —कर्म वा.

रंदाणो, रंदावो, रंधावणो, रंधाववो —रू. भे.

रंधायोड़ो—भू. का. कृ.—पकाया हुआ, पकवाया हुआ ।
(स्त्री-रंधायोड़ी)

रंधावणो, रंधाववो— देखो 'रंधाणो, रंधावो' (रू. भे.)

उ०—मीर रंधावै कारतिक रे,तापस वैठो जे आय ।

— जयवांणी

रंधावियोड़ो—देखो 'रंधायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. रंधावियोड़ी)

रंधियोड़ो—भू. का. कृ.—पका हुआ, सीजा हुआ ।
(स्त्री. रंधियोड़ी)

रंधीण, रंधेज सं. पु.— १ खिचड़ी, लपसी, हलवा आदि पकवान ।

२ ठण्डी रोटी को छाछ या पानी में पका कर बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ ।

रू० भे०—रंदेज, रन्दोज, रंधांण, रांदण, रांधण ।

रंध्र—सं. पु. [सं.] १ छिद्र, छेद, सुराख ।

उ०—१ केहर रा नख रंध्र सूं, गज मोतियां निपान ।
सूरत कीरत वेन रा, वीज वधै अवदान । —बां. दा.

उ०—२ वेवे कवांण भूथांण वंध । अससांन छिवत रोसांण अन्ध ।
चख मछी रंध्र छेदै चकाम, उड़ता विहंग वेधै अकाम ।

—वि. सं.

२ गव्हर, गुफा ।

उ०—१ दुखीवंत भू वंदरां रंध्र देखै ।
पंखी उड़ुता चक्कवा हंस पेखै । —सू. प्र.

३ दीवार का वह छेद जिसमें से तीर या बन्दूक की गोलियां चलाई जाती थी, तीरकश ।

४ तरकश, तुणीर ।

५ योनि, भग ।

६ त्रुटि, कमी, दोष, ।

७ दुर्बल या कमजोर स्थान । (लाक्षणिक)

रू० भे०—रद, रध, रंधर ।

रंब—देखो 'रंभा' (रू.भे.)

उ०—[illegible]
[illegible]
[illegible]
रंब पद [illegible] ।

—[illegible]

रंबो—सं पु०—१ लोहे का मोटा दंड, जो भारी चीज उठाने के काम आता है ।

२ लोहे का मोटा डंडा जो दीवार में छेद करने के काम आता है

रू० भे०—रभो,

रंभ—सं. पु. [सं. आरम्भ] १ शुरुआत, आरंभ, प्रारम्भ ।

उ०—[illegible]
[illegible] रंभ किदै ।
[illegible] निदै ।

— [illegible]

२. युद्ध, समर ।

उ०—[illegible]
रंभ । —[illegible]

३ एक प्रकार का बांस, तीर ।

४ बाण ।

५ जोर का शब्द या आवाज ।

६ एक प्रकार का [illegible] ।

७ महिषासुर का पिता । (पौराणिक)

८ एक राजा जो आयु राजा का पुत्र था, इसकी माता का नाम प्रभा था ।

९ एक राजा जो विविंशति राजा का पुत्र था ।

१० राम-सेना का एक वानर ।

११ रंभ-करंभ नामक दो दानवों में से एक ।

रू० भे०—रंब ।

१२ देखो 'रंभा' (रू. भे.) (प. मा.)

उ०—१ अति महा सती, किरि लक्ष्मी जागती, सरस्वती बोलती. रूपि पारवती, नवयौवनारंभ कि बीजी रंभ ।

—व. स.

उ०—२ नावै नर पांणी भरै, गोरी गात अनूप ।
ज्यां आगै पांणी भरै, रंभ अलौकिक रूप । —बां. दा.

उ०—३ पत सुधारै जोगणी, माळ सुधारै रंभ ।

थंभ चलेवौ सोम रवि, पेखै व्योम अचंभ। —रा. रू.

उ०—५ नितंवणी जंघ सु करभ निरूपम, रंभ खंभ विपरीत रूख। जुग्रळि नाळि तनु गरभ जेहवी, वयणे वाखांणै विदुख।

—वेलि

उ०—६ लहंत द्रव्य साख लाख, रंभ खंभ रोपियौ।
'अजौ' नरिंद जेणवार, इंद्र जेम ओपियौ।

—सू. प्र.

उ०—७ लहलहती नाचै लता, पवन संगीती पाय।
पंखावरदारी करै, रंभ विचै वणराय। —वां. दा.

उ०—८ रंभ खंभ कुंजर सूंड राजै, जुगळ जंघा जांमली।
कंज पौहप कुरम चरण कांमा पहिर नूंपर प्रावली।

—मा. वचनिका

रंभगांण—सं० पु० [सं. रंभा+गायन] अप्सराओं का गायन।

उ०—तहक नीसांण गिरवांण हरखांण तन,
चितां मरसांण रंभगांण चालै। —र. रू.

रंभा—सं. स्त्री. [सं.] १ इन्द्रलोक की एक अप्सरा, जो नल कूवर की स्त्री थी और अद्वितीय सुंदरी थी। यह कश्यप एवं प्राधा की पुत्री थी।

उ०—१ नूकेसी उरवसी, छितेची मैना रंभा।
इंद्रलोक अपछरा, इसी उणहारि असंभा।

—गु. रू. वं.

उ०—२ हंसगमणी, साख्यात पदमिणी, आभै री बीज, भादुवै री आकास परी, मोल्यां सरी, सोना री कांब, किरत्यां री भूमकौ। इंद्रलोक री अपछरा। रूप री रंभा। चित्रांम री पूतळी।

—फुलवाड़ी

२ इंद्रलोक की परी, अप्सरा। (नां. मा.)

उ०—१ वाजिंद तांण विमांण भांण तक रहै अचंभा।
वीर वडाळां वरण रचै वरमाळां रंभा।

—र. रू.

उ०—२ 'अभमाल' आप छळि करि अचड़,
वप विहंडाय रंभा वरूं। —सू. प्र.

३ पार्वती, गौरी।

उ०—नमौ रूप नद्दा सवद्दा रसीली, नमौ लच्छि रंभा नमौ वीम लीली। नमौ मोहणी कंमळा मुग्ध मूंनी,
नमौ धोम धूतारणी संभ धूनी।

—मा. वचनिका

४ मयदानव की पत्नी व मंदोदरी की माता।

५ प्रेमिका।

उ०—घट में देख्या एक अचंभा, आपौ आपी खेलै रंभा।
घट में खूल्हा केवळ नांमा, वाचैं राचै आतम रांमा।

—अनुभव वांणी

६ वेश्या, रंडी।

७ उत्तर दिशा।

८ कदली, केला। (डि. को.)

रू०भे०—रंब, रंभ।

रंभांणौ, रंभावौ—क्रि. अ. [सं. रवणं] १ गाय का बोलना।

उ०—धेनूं चरतोड़ी धोरां खड़ धाती, ऊखां भरतोड़ी लोरां भड़ आती। रातीवासै री माती रंभाती, जाया गोधा सै जाती जंभाती।

—ऊ. का.

२ ममत्व भाव से हुलसकर दौड़ना।

रंभावणौ, रंभाववौ, रांभणौ, रांभवौ —रू. भे.

रंभातर, रंभातरु—सं. पु. [सं. रंभा+तरु] केले का वृक्ष, कदली वृक्ष।

रंभातीज—सं. स्त्री. [सं. रंभा+तृतीया] जेष्ठ शुक्ला तृतीया।

वि. वि.—प्रताप जयन्ती भी इसी दिन मनाई जाती है। (वी. वि.)

रंभापत, रंभापति, रंभापती—सं. पु. [सं. रंभा+पति] १ इन्द्र। (अ. मा.)

२ कुवेर पुत्र-नलकूवर।

रंभाळ—देखो 'रंभा'

उ०—गळमाळ रंभाळ गूंथाळ गहै।
करमाळ मुंछाळ भूटाळ कहै। —पा. प्र.

रंभावणौ, रंभाववौ—देखो 'रंभाणौ, रंभावौ' (रू. भे.)

उ०—भैंस्यां रिड़कै रिड़ गायां रंभावै, प्रांणी तिरखातुर पांणी कुण पावै। —ऊ. का.

रंभोरू—वि. [सं. रंभा+उरुः] कदली-वृक्ष के तने के समान जंघावाली सुन्दरी।

उ०—मांथरवाड़ैसी वाडै में मोती, आंनन अंभोरू रंभोरू रोती।

—ऊ. का.

रंभौ—देखो 'रंबौ' (रू.भे.)

रंमतारांम—सं. पु.—वह साधु जो एक स्थान पर टिक कर न रहता हो, रमताजोगी। स्वच्छन्द रहने वाला साधु।

उ०—रंमतारांम एक रंग रता, माया मोह विखै नहीं मता।
उतिम साध सु लच्छन धीरा, सो कहीयै अजरांमर वीरा।

—अनुभववांणी

रंमाझंमा—देखो 'रिमझिम' (रू. भे.)

उ०—रंमाझंमा, रंमांझंमा, झंमा झंमां रंम।
ठमकां रमकां झंका रमकां ठमंक। —र. ज. प्र.

रंयणौ, रंयवौ—देखो 'रहणौ, रहवौ' (रू. भे.)

ररंकार—देखो 'ररंकार' (रू.भे.)

उ०— हरिदास जन यूं कहै, रंरंकार मूळ निज नांग।
मूल मंत्र सतगुरू दिया, दुख मुख दीय दूर सराय।
—ह. पु. वां.

र-सं. पु. [सं. रः] १ पावक, अग्नि, आग। (डिं. को.)
२ काम पिपासा, कामाग्नि। (एका.)
३ जलन।
४ गर्मी, ताप, आंच।
५ प्रेम, स्नेह।
६ गति, वेग, चाल, रफ़्तार।
७ सोना, स्वर्ण।
८ रगरण का संक्षिप्त रूपान्तर। (पिंगल)
वि०-प्रखर, तीव्र, तेज।

रग्र-देखो 'रत' (रू. भे.) (जैन)

रग्रय्यत-देखो 'रइयत' (रू. भे.)
उ०-जिण में आठ हजार सिरकार रा तावेदार नै दस हजार रग्रय्यत। —बां. दा. ख्यात

रइं-१ देखो 'रइ' (रू. भे.)
२ देखो- 'रई' (रू. भे.)
३ देखो 'रति' (रू. भे.)

रइंण, रइंणि-देखो 'रयण' (रू. भे.)
उ०—निरखियौ 'भीम' सखे भड़े नारीयण, देवता देवतां तणौ डाडौ।
विसन नर रइंणि री वाह सूरति छि करतार नाडौ।
—पी. ग्रं.

रइ-सं. पु.-१ धैर्य, संतोष।
उ०—सेवग त्हारा 'लखा'-समोभ्रम, अविपति बीजां थया अकूप।
रइ किम करै अवर नदि रावळ, रेवा नदी तणा गजरूप।
—ईसरदास बारहट

२ देखो 'रति' (रू.भे.)
उ०—जन्ह नरिंदह केरी धूय, गंगा नांमि रइ सम रूय।
उठइ नरवई सांमुहीय। —सालिभद्र सूरि

३ देखो 'रै' (रू.भे.)
उ०—१ कोइक पूरव भव संबंध सुं रे, आइ मिल्यौ संजोग।
भवितव्यता रइ जोग मिलइ इस्या रे, वरिणयौ एम वियोग।
—प. च. चौ.

उ०—२ सयणा रइ मेलइ करी रेलौ, सफल हुवइ अवतार रे सनेही। —वि. कु.

उ०—३ मारू त्रिहुं वरसै वडी, चंपा रइ उणिहार।
सा कुंमरी परणाविरयां, चालउ राजकुंमार।
—ढो. मा.

उ०—४ उत्तर आज सउत्तरउ, सीय पड़ेसी थट्ट।
सोहागिण घर आंगणउ, दोहागिण रइ घट्ट।
—ढो. मा.

४ देखो 'रे' (रू. भे.)
५ देखो 'रई' (रू. भे.)

रइग्रत-देखो 'रइयत' (रू. भे.)

रइण-देखो 'रयण' (रू. भे.)

रइणाइर-देखो 'रत्नाकर'।
उ०—घण अग्नि दुरिज्जण घड़िय धाड़, रइणाइर बाधउ जोधि राड़। जोधि मेवाड़ काढिय जड़ांह। भंगवट्ट दीध मोटा भड़ांह।
—रा. ज. सी.

रइणि-देखो 'रयण' (रू. भे.)
उ०—सा धाळा प्री चितवइ, गिणगिण रयणि विहाइ। तिण हर हार परट्ठव्यउ, ज्यूं दीवळउ बुझाइ।
—ढो. मा.

रइन-देखो 'रयण' (रू. भे.)
उ०—द्रग स्यांम बादर देखि दादुर रटत रस भरि रइन। वन मोर बोलइ पिच्छ डोलइ, द्विरद गोलइ पुनि नइन।
—वि. कु.

रइवारी-देखो 'रैवारी' (रू. भे.)
उ०—१ थां सूतां म्हे चालिस्यां, एह निचिंती होइ। रइवारी ढोलउ कहइ, करहउ आछउ जोइ।
—ढो. मा.

उ०—२ राजडीउ भाथाडत जेउ, नइ केल्हण रइवारी वेउ। राउल भणी गया परि मुणी, वेगइ मांगइ वधामणी।
—कां. दे. प्र.

रइयत, रइयति-सं. स्त्री. [अ. रईयत] प्रजा, रिआया, जनता।
उ०—आयौ भरथ अवध अभंग, मंडै पावडौ उतमंग। रइयत कीध अत उछरंग, इम आवास जाय उमंग।
—र. रू.

रू० भे०-रग्रय्यत, रइग्रत, रईयत, रएयत, रऐयत।

रइवल्लह-सं. पु. [सं. रतिवल्लभ] रति पति, कामदेव।
उ०—नंछ सो सिरि थूलि भद्द जो जुगह पहांणो। मलियउ जिणि जगि मल्लसल्ल रइवल्लह मांणो।
—जिन पद्म सूरि

रइवास-देखो 'रहवास' (रू. भे.)

उ०—डिडवांणउ पालटि घाइ दाइ। रइवास लीध कासिली राइ।

—रा. ज. सी.

रइहीण, रइहीणु–वि. [सं. रति+हीन] जो रति–विहीन हो, कामेच्छा से विरक्त हो।

उ०—वात सुणी पाछउ वलइ जां नवि देखइ गंग। चउवीसं [वासं] रहइ जिमु रइहीणु [अणंगु]।

—सालिभद्र सूरि

रई–सं. स्त्री.–१ दही विलोने की मथनी, मंथन–दण्ड। (डिं. को.)

उ०—१ आंणे सुर असुर नाग नेत्रै नहि, रास्वियौ जई मंदर रई। महण मथे मूं लीध महमहण, तुम्हां किणै सीखव्या तई।

—वेलि

उ०—२ संयोगिणि चीर रई कैरव स्त्री, घर हट ताळ भमर गोघोख। दिणयर ऊगि एतला दीवा, मोखियां बंध बंधियां मोख।

—वेलि

२ भूमी, चाकर।

रू० भे०–रइ, रयी।

३ देखो 'रति' (रू. भे.)

४ देखो 'रइ' (रू. भे.)

रईय–देखो 'रचित' (रू. भे.)

उ०—सोवन ए रासि करेवि वंधव आगलिउ गिणं ए। गितह ए रईय मणि चूड राय रहइं सभा रयणमए।

—सालिभद्र सूरि

रईयत–देखो 'रइयत' (रू. भे.)

उ०—इणां जोर घालियौ कै के जाळोर री मांहे वसिया, के जेसळमेर री मांहे वसिया। रईयत मरव गई।

—नैणसी

रईवत–देखो 'रैवत' (रू. भे.)

रईस–सं. पु. [अ.] १ अमीर, धनवान, धनाढ्य।

उ०—नवलजी रै काळजै में लाट ऊपड़ी–मेरी आज आः हालत जींवता ही हुयगी? कै जंवाई ही वैरी बणग्यो। ऐः लोग रईस अर हूं जूंवा री खायोड़ी कंगली कलीर।

—दसदोख

२ नाजुक, कोमल।

उ०—केई दिनां सूं पड़द्या भाव है। रईस किरांणी है, घणा दिना तक रोकणी वाजिव कोनीं।

—फुलवाड़ी

३ प्रतिष्ठित व्यक्ति।

४ रियासत का स्वामी, भूस्वामी, शासक।

५ अध्यक्ष, प्रधान।

रू० भे०–रहिस, रहीस।

रउ–१ देखो 'रव' (रू. भे.)

उ०—दादुर मोर करइं अति सोर, प्रीयु प्रीयु बोलइ ए बप्पीउ रउ। मेहरउ टबकइ बिजुरी झबकइ, कहउ क्यूं करि ठउर रहइ हियरउ।

—स. कु.

२ देखो 'री' (रू. भे.)

उ०—बीजउ पुहरि उलांघियउ, आउवळा रउ घट्ट।

—ढो. मा.

रउताई–देखो 'रावताई' (रू. भे.)

रउद, रउद्द–देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

उ०—चांपलउ तुरी दीपतक चंक्ख, नाटारंभि नाचइ खूत नक्ख। काफरा खड़ग वाहण मखुद्द, रिणि किसन चडिय भांजण रउद्द।

—रा. ज. सी.

रउद्द–१ देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

२ देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

रउद्र–१ देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

उ०—नीसांण वाजि नरगा नफेरि, रउद्र गति डउंडि भरहरी भेरि। मरुआड़ि सेन हालिया मसत्त, साइयर जांणि फाटा सपत्त।

—रा. ज. सी.

२ देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

उ०—माड़ रउ राइ मुहि मूंछ मोड़ि, केल्हणि कटवक तांणिया कोड़ि। काळउ कलूळि जांगळू काजि, रउद्रां दळ तांणिय देवराजि।

—रा. ज. सी.

रउद्रि–१ देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

उ०—रीसाइ रोड़ि वाजा रउद्रि, मेखळा जांणि मेल्ही समुद्रि। मोटा गढ जीपिय हेळ मत्त, छह खंड खिडइ सिरि खेड छत्त।

—रा. ज. सी.

२ देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

उ०—गहगहिय थाट बेऊं गरीठ, राठउड़ि रउद्रि वाजियउ रीठ। मूरा सधीर वाजइ सरोस, पड़िकाळे ऊडइ जिरह पोस।

—रा. ज. सी.

रएयत, रऐयत–देखो 'रइयत' (रू. भे.)

रओड़ी–देखो 'रसोई' (अल्पा. रू. भे.)

रखोड़ौ–देखो 'रसोड़ौ' (रू. भे.)

रकतंवर–सं. पु. [सं. रक्त+अंबर] १ लाल रंग का वस्त्र।

२ गेरुआ वस्त्र धारी संन्यासी या परिव्राजक।

३ सूर्य, रवि।

उ०—सिविता रवि सूर पतंग सही। रकतंवर अंवर ज्योत रही।

—पा. प्र.

रू० भे०–रातंवर,

रकत–१ देखो 'रक्त' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—रुंड रकत भारिया, मुंड भारिया खडग्गां। किता अंग निरलंग, भड़े भड़ पग्ग करग्गां।

—रा. रू.

२ देखो 'रखत' (रू. भे.)

रकतकंद–सं. पु. [सं. रक्त+कन्दः] १ प्रवाल, मूंगा। (डिं. को.)

२ लाल चंदन।

३ केसर।

रकतबीज–देखो 'रक्तबीज' (रू. भे.)

उ०—दांनव महिख रकतबीजादिक, मार लिया महमाई।

—मे. म.

रकतांक, रकतांग–देखो 'रक्तांग' (रू. भे.) (डिं. को.)

रकबौ–सं. पु. [अ. रकबः] क्षेत्रफल।

रकम–सं. स्त्री. [अ. रकम] १ धन, दौलत, सम्पत्ति।

२ गहने, आभूषण।

उ०—दे गजराज तुरंग द्रव, तोरा सपत वसन्न। मुगतमाळ सरपेच नग, रकमां सात रतन्न।

—रा. रू.

३ व्यापार में लगाई जाने वाली पूंजी।

उ०—आपरै साथै म्हारै ई कमाई री जोग सज जावै तौ कांई भूंडी। आप सात हजार रिपिया लगाय दो, बाकी री सगळी रकम री जिम्मी म्हारी।

— फुलवाड़ी

४ रुपया, पैसा।

५ धन की एक निश्चित मात्रा।

६ लगान, राजस्व कर।

उ०—पेमजी वैंडो च्योड़ै राज री रकम रा आयोड़ा ढाई हजार रिपियां री थैली भरियोड़ी मेल दी, दलाल–देवता रै आगै वगा नांखी अर कैयौ कीं वत्ता ले जावौ सा। —दसदोख

७ आमदनी, आय।

८ छाप, मुहर।

९ लिखावट।

१० चलता–पुर्जा व्यक्ति, धूर्त, पाखण्डी। (लाक्षणिक)

रू० भे०–रक्कम।

मह. रू. भे.–रकमांग।

रकमांण–देखो 'रकम' (मह. रू. भे.)

उ०–जाट भया सिध जग नाथांणा, छूट गई तेरै रकमांणा। सिर परि सांग और का धारी, अपना साहिब गयौ विसारी।

—अनुभववांणी

रकांन–सं. पु.–नियम, प्रथा, जाग, दस्तूर।

रकाव–सं. स्त्री. [फा.] १ ऊंट या घोड़े की जीन का पांवदान, पागड़ा।

उ०–कर डोर उतंग हजूर किया। दुरवेगिय पाव रकाव दियौ।

—रा. रू.

रू० भे०–रकाव, रकेव, रकेवी, रक्केव।

२ देखो 'रकाबी' (रू. भे.)

रकावदार–सं. पु. [फा.] १ मिठाई बनाने वाला कारीगर, हलवाई।

२ रकाबियों में खाना सजाने वाला, खानसामा।

३ किसी बादशाह या रईस के साथ खाना लेकर चलने वाला नौकर।

४ रकाव पकड़ कर घोड़े पर चढ़ाने वाला साईस।

रकाबी–सं. स्त्री. [फा.] १ तश्तरी, प्लेट।

२ कटोरदान का ढक्कन।

रू० भे०–रकाव, रकेव, रकेवी।

रकार–सं. पु. [सं.] १ 'र' वर्ण का बोधक अक्षर, र।

२ रांम नांम का पूर्वाक्षर।

उ०—मनी मन मांह रकार मकार, लगा धक धूंनन की ललकार।

—ऊ. का.

३ छन्द शास्त्र में रगण नामक गण का संक्षिप्त रूप।

— पिं. प्र.

रकाव–देखो 'रकाव' (रू. भे.)

उ०—इण भांति तीसरा पोहोर वागां अमल कीधा, आंजां रा गोख छांटि पाघां रा पेच लीवा। घोडां रा उवटा तांणि रकावां पाव धारियां।

—पनां

रकेव–१ देखो 'रकाव' (रू. भे.)

उ०—सिलह पूर करि सूर, सस्त्र कसि पकड़े सावळ। पांव रकेवां परठि, वहसि चढिया अतुळीवळ।

—सू. प्र.

२ देखो 'रकावी' (रू. भे.)

रकेवी–१ देखो 'रकावी' (रू. भे.)

उ०—ताहरां पहिली जांणियौ कोई राज दिसा का रांणीजी दिसा समाचार आयौ। इम जांणि अर रकेवी हाथा नांखि दी।

—द. वि.

२ देखो 'रकाव' (रू. भे.)

उ०—१ चढियौ मछर चढेह, रोपै रांम रकेव है। भोळी भंग पडेह, मिव नाटा रंभ 'सूर उत'।

—गु. रू. वं.

उ०—२ के आरव ऊवरा हेक धजराज हरेवी। आरूहतां उत्तंग अंग जुगि लगै रकेवी।

—रा. रू.

रक्कम–देखो 'रकम' (रू. भे.)

उ०—तोरा सपत दकूळ, मेरा जवहर वर रक्कम।

—रा. रू.

रक्केव–१ देखो 'रकाव' (रू. भे.)

उ०—चडै सेन चतुरंग गै मद्द कादी। चडै रांम रक्केव दे साहिजादी।

—गु. रू. वं.

रक्खण–वि.–रखने वाला।

उ०—मिळि मंत्री परवांन में, विधि दक्खै विच्चार। जळ रक्खण गढ जोधपुर, के रक्खौं जोधार।

—गु. रू. व.

२ देखो 'रक्षण' (रू. भे.)

रक्खणौ–देखो 'रखणौ' (रू. भे.)

उ०—सांमरथ भभीखण रंक राखै सरणा, तसां आपण सुदत लंक तेहा रजवट्ट रक्खणा।

—र. ज. प्र.

रक्खणौ, रक्खबौ–१ देखो 'राखणौ, राखबौ' (रू. भे.)

उ०—१ किल्ले रक्खणहार नहि, आज 'मनौ' अनभंग। रैनालय' में थट्टियौ, तुज्जि भरोसे जंग।

—ला. रा.

उ०—२ आयां वरम चहीतरै, सांवण सांवळ पक्ख। आयौ धर मारू 'अजौ,' गुज्जर थांणा रक्ख।

—रा. रू.

उ०—३ पारंभ करण आरंभ में, लियण लंभ सोरंभ–जस। रखपाळ मंडोवर राखिया, भू डंडे रक्खै अडस।

—गु. रू. व.

उ०—४ कल्ह तुर्भंदा पित्र सौ, 'अजमाल' उपंदा। जंदा रक्खंदा सजै, राजस रांणंदा। रज्ज डिगंदा रक्खिया अंब–नयरंदा, दिलू उमंदा 'अभै' दिट्ठ, तू घाट तिन्हंदा।

—सू. प्र.

उ०—५ कियौ अभै न्रप कूरमां, पावां लियौ बचाय। प्रभू परीख्त रक्खियौ, जेम जळंती लाय।

—रा. रू.

२ देखो 'रखणौ, रखबौ' (रू. भे.)

रक्खणहार, हारौ (हारी), रक्खणियौ —वि.

रक्खिओड़ौ, रक्खियोड़ौ, रक्योड़ौ भू. का. कृ.

रक्खीजणौ, रक्खीजबौ —कर्म वा.।

रक्खपाळ–देखो 'रक्षपाल' (रू. भे.)

उ०—रिणमल्ल धरा छळ रक्खपाळ। गडकियउ गांड गोत्र गोवाळ।

—रा. ज. सी.

रक्खवाळी–देखो 'रुखाळी' (रू. भे.)

उ०—हरि गयण रत्थं तांण हत्थं बाधि कत्थं वेणियं। वाजै सचाळी कुंभवाळी, रक्खवाळी रैणयं।

—रा. रू.

रक्खस–देखो 'राक्षस' (रू. भे.)

उ०—खिज्जि कह्यौ रे जनक तुल्य खळ। गजब होहु रक्खस न्रप वीमळ।

—वं. भा.

रक्खसी–सं. स्त्री.–१ एक प्रकार की लिपि।

उ०—हंस लिवी, भूय लिवी जक्खा तह रक्खसीह बोधव्वा। उड्डी जवणि तुरक्की कीरी दविडी य सिंधवियो।

—व. स.

२ देखो 'राक्षस' (स्त्री.)

रक्खियोड़ौ–१ देखो 'राखियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'रखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रक्खियोड़ी)

रक्खी–१ देखो 'रखी' (रू. भे.)

उ०—तीनूं जणा सोच अर कळाप करता जावता हा के मारग में एक डोकरियौ थकियौ। धोळी पाग, धोळी ई अंगरखी अर हळदिया धोती। धोळी ई खत। घांटी डिगै मिगै। बूढी खंगर। खांधै रक्खी टिरै। हाथ में चिटियौ।

—फुलवाडी

२ देखो 'रिसि' (रू. भे.)

रक्त (रकत)–सं. पु. [सं. रक्तं, रक्तः] १ जीव-जन्तुओं और प्राणियों के शरीर की नाड़ियों में बहने वाला लाल रंग का तरल पदार्थ, खून, लहू, रुधिर, शोणित।

उ०—देवी राखसं धोम रे रक्त रूती, देवी दुरज्जटा विक्कटा जम्मदूती। —देवी.

२ लाल रंग।

३ केसर।

४ सिन्दूर।

५ लाल चंदन।

६ कुसुंम।

७ आंवले का पका हुआ फल।

८ कमल।

९ पुष्प, फूल (नां. मा.)

१० ताम्र, तांबा।

११ पतंग नामक वृक्ष की लकड़ी।

१२ एक प्रकार का बेंत।

१३ एक मछली विशेष।

१४ एक जहरीला मेंढक विशेष।

१५ एक बिच्छू विशेष।

१६ प्रवाल।

वि०–[सं. रक्त] १ रंगा हुआ, रंगीन।

२ लाल रंग का, लाल, सुर्ख।

३ जिसका रंजन हुआ हो।

४ अनुरक्त, आसक्त।

५ प्रिय, प्यारा, माशूक।

६ सुन्दर, मनोज्ञ, मनोहर।

७ क्रीड़ा-प्रिय, खिलाड़ी।

८ शुद्ध, स्वच्छ, स्पष्ट।

रू० भे०—रकत, रगत, रगतर, रगति, रगत्त, रगत्तर, रगत्र, रक्त रक्त, रत्र।

रक्तकंठ–सं. पु. [सं. रक्त–कण्ठिन्] १ कोयल।

२ बेंगन।

वि०–मधुर कण्ठ वाला।

रक्तकमळ–सं. पु. [सं.रक्त+कमलः] लाल रंग का कमल।

रू. भे. —रगत कमल,

रक्तकास्ठ–सं. पु. [सं. रक्त–काष्ट] १ पतंग की लकड़ी।

२ लाल चंदन।

रू. भे. —रगतकास्ठ,

रक्तकुस्ठ–सं. पु. [सं. रक्त–कुष्ठ] एक प्रकार का रोग जिसमें सारे शरीर में जलन होती है। कभी कभी कुष्ठ की भांति शरीर गलने लगता है। विसर्प रोग।

रू. भे. —रगतकुस्ठ, रगतकोढ।

रक्तगभ–सं. स्त्री [सं. रक्तगर्भा] मेंहदी।

रक्तगुलम–सं.पु. [सं०] एक रोग जिससे गर्भाशय में रक्त की गांठ बंध जाती है।

रू. भे. —रगतगुलम

रक्तग्रीव–सं. पु. [सं.] १ कबूतर, २ राक्षस।

रक्तचंचु–सं. पु. [सं.] तोता, शुक।

रू० भे०—रगतचंचु, रगतचूंच।

रक्तचंदन–सं. पु. [सं.] लाल रंग का चंदन। (अमृत)

रू० भे०—रगतचंदन, रतचंदण, रतचंदन।

रक्तता–सं. स्त्री. [सं.] १ लाल होने की अवस्था या भाव।

२ लालिमा, ललाई, सुर्खी।

रक्ततुंड–सं. पु. [सं. रक्त तुंडः] तोता, सुग्गा।

रू० भे०—रगततुंड

रक्तदंता, रक्तदंत्ता, रक्तदंतिका–सं. स्त्री. [सं. रक्त दंता] शुंभ और निशुंभ को खाने के लिये धारण किये गये दुर्गा के रूप का नाम, चंडिका।

उ०—दूजै दिन कंवर तौ पहली सुरथपुर जाइ रक्तदंता रौ पूजन कीवौ।

—वं. भा.

रू० भे०—रगतदंता, रगतदंतिका, रगतदंती।

रक्तधरा–सं. स्त्री. [सं.] रक्त को धारण करने वाली मांस के भीतर की दूसरी कला या झिल्ली। (वैद्यक)

रू० भे०—रगतधरा।

रक्तनायक–सं. पु.–एक आभूषण विशेष।

उ०—मध्यनायक करुणानायक नीलनायक पीतनायक स्वेतनायक रक्तनायक अत्तनायक......इति आभरणानि।

—व. स.

रक्तनैत्र–सं. पु.–१ कोयल, २ चकोर।

३ कबूतर, ४ सारस पक्षी।

रू० भे०—रगतनैत्र।

रक्तपक्ष, रक्तपख–सं. पु. [सं रक्त पक्षः] गरुड़।

रू० भे०—रगतपक्ष, रगतपख, रगतपांख।

रक्तपात–सं. पु. [सं.] १ भयंकर मारकाट की दशा। खूनी झगड़ा।

२ खून गिरने का रोग या दशा।

रू० भे०—रगतपात

रक्तपिंड–सं. पु. [सं.] अपने ही रक्त के बनाए हुए धूलि पिंड, जो युद्ध में घायल होकर पड़ा हुआ वीर, अपने पितरों को पिंड दान करने के लिए बनाता है।
रू० भे०—रतपंड, रतपिंड ।

रक्तपित, रक्तपित्त–सं. पु. [सं. रक्तपित्त] १ एक प्रकार का रोग जो पित्त के कुपित होने से होता है। इसमें मुख, नाक, गुदा, योनि आदि इन्द्रियों से खून गिरने लगता है।

उ०—रक्तवात भस्मवात, उस्णवात अग्निवात लोहवात लूतिवात हरखावात आंमवात सोफवात विगंछावात, कफवात साकिनीवात रक्तपित्त अम्लपित्त राजिकापित्त ।

—व. स.

रू० भे०—रगतपित, रगतपित्त ।

रक्तपित्ती–सं. पु. [सं. रक्तपित्त] रक्तपित्त का रोग ।
रू० भे०—रगतपित्ति, रगतपित्ती ।

रक्तप्रदर–सं. पु. [सं.] स्त्रियों के प्रदर रोग का एक भेद जिसमें योनि द्वार से रक्त गिरता है।
रू० भे०—रगतप्रदर ।

रक्तप्रमेह–सं. पु. [सं.] पुरुषों का एक रोग जिसके कारण पुरुष का पेशाब खून के रंग का, बदबूदार व गरम आता है।
रू० भे०—रगतप्रमेह ।

रक्तबीज–सं. पु. [सं.] १ एक असुर जो शुंभ-निशुंभ का सेनापति था ।

उ०—मुंड चंड महिसासुर मारे, सुंभ निसुंभ सकल संहारे ।
जनमें वक्तबीज तन ज्यों ज्यों तैं निरबीज किये हनि त्यों त्यों ।

—मे. म.

वि. वि.–इसके सम्बन्ध में ऐसा कहा जाता है कि इसके रक्त की प्रत्येक बूंद जो धरती पर गिरती थी उससे एक राक्षस की उत्पत्ति होती थी। दुर्गा ने इसके रक्त का शोषण कर इसका विनाश किया।
२ अनार, दाड़िम ।
रू० भे०—रकतबीज, रक्तबीज, रगतबीज, रगतवीज, रतबीज ।

रक्तमंडळ–सं. पु. [सं. रक्तमंडल] एक प्रकार का सांप ।
रू० भे०—रगतमंडळ ।

रक्तमोचन–सं. पु. [सं] शरीर से रक्त का मोचन, निवारण
रू० भे०—रगतमोचन निवारण ।

रक्तलोचन–देखो 'रक्तनेत्र' ।

रक्तवरण–सं. पु. [सं. रक्तवर्ण] वीर बहूटी नामक लाल रंग का कीड़ा ।
रू० भे०—रगतवरण

रक्तवात–सं. पु, [सं] एक प्रकार का रोग ।

उ०—अथ रोगा: कास स्वास, ज्वर भगंदर गुल्म वात गल्लवात रक्तवात भस्मवात उष्णवात अग्निवात लोहवात

—व. स.

रक्तबिंदु–सं. पु. [सं.] १ किसी रत्न में दिखाई देनेवाला एक प्रकार का लाल दाग । (दोष)
२ खून की बूंद ।
रू० भे०—रगतबिंदु ।

रक्तबीज–देखो 'रक्तबीज' (रू.भे.)

रक्तब्रस्टि–सं. स्त्री. [सं. रक्तवृष्टि] आसमान से होने वाली लाल रंग के पानी की वर्षा ।
रू० भे०—रगतब्रस्टि ।

रक्तस्राव–सं पु. [सं] १ रक्त का बहना, रक्त-पतन ।
२ घोड़ों का एक रोग जिसमें घोड़े की आंखों से रक्त के समान लाल रंग का पानी गिरने लगता है।
रू० भे०—रगतस्राव,

रक्तांग–सं. पु. [सं.] १ केसर ।
२ लाल चंदन ।
३ मंगल ग्रह ।
४ धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग जो जन्मेजय के सर्प सत्र में दग्ध हुआ
५ प्रवाल, मूंगा ।
रू० भे०—रकतांक, रकतांग, रगतांग ।

रक्ता–सं. स्त्री. [सं.] १ संगीत में पंचम स्वर की चार श्रुतियों में से दूसरी श्रुति ।
२ गुंजा का पौधा ।
३ लाख ।
रू० भे०—रगता ।

रक्ताकार–सं. पु. [सं.] मूंगा, प्रवाल ।
रू० भे०—रगताकार ।

रक्ताचळ–सं. पु. [सं. रक्ताचल] उदियाचल पर्वत ।

रक्तातिसार–सं. पु. [सं.] एक प्रकार का अतिसार (रोग) जिसमें खून की दस्तें लगती हों।
रू० भे०—रगतातिसार ।

रक्तोत्पळ–सं. पु. [सं. रक्तोत्पल] लाल रंग का कमल ।
रू० भे०–रगतोत्पळ ।

रक्ष, रक्स–सं. पु. [सं. रक्ष] १ बचाव, रक्षा, हिफाजत ।
२ रखवाली, चौकीदारी, चौकसी ।
३ प्रशासन, शासन ।
४ छप्पय छन्द का साठवां भेद जिसमें ११ गुरु और १३० लघु मात्राएं होती है । मतान्तर से ११ गुरू एवं १२६ लघु मात्राएं भी मानी जाती हैं । इसका दूसरा नाम मनहर भी है ।
५ देवता ।
उ०—गुह्यक यक्ष रक्ष गंधरवह, सिद्ध पिसाच भजत तव सरवह ।
—मे. म.
वि.–१ रक्षा करने वाला, रक्षक ।
२ रखवाला, चौकीदार ।
रू० भे०–रक्ख, रच्छ ।

रक्षक–वि. [सं.] १ रक्षा करने वाला, बचाने वाला ।
उ०—करुणानिधांन करुणामय नित निसकांमी । इस आरय्यावरत्त को रक्षक अंतरयामी ।
—ऊ. का.
२ पालन–पोषण करने वाला ।
३ चौकसी करने वाला ।
सं. पु.–चौकीदार, पहरेदार ।
रू० भे०–रच्छक, रच्छिक, रछक ।

रक्षण–सं. पु.–१ रक्षा या हिफाजत करने की क्रिया या भाव ।
२ रक्षा, हिफाजत ।
३ सहारा, आसरा ।
४ पालन–पोषण ।
वि.–रक्षा करने वाला, बचाने वाला ।
रू० भे०–रक्खण, रख्यण ।

रक्षणकरता–वि. [सं. रक्षण+कर्तृ] रक्षा करने वाला, रक्षक ।

रक्षपाळ–सं. पु. [सं. रक्षपाल] १ जिसका काम रक्षा करना हो, रक्षक ।
२ चौकीदार ।
रू० भे०–रक्खपाळ, रखपाळ, रछपाळ ।

रक्षफळ–सं. पु. [सं.] वेहड़ा । रू. भे.–रखफळ

रक्षस–देखो 'राक्षस' (रू. भे.)

रक्षा–सं. स्त्री. [सं.] १ वह कार्य या प्रयत्न जिसमे आघात, आक्रमण, विनाश, मृत्यु आदि से किसी का बचाव होता हो । बचाव या हिफाजत के लिये किया जाने वाला प्रयास, रक्षण, सुरक्षा ।
उ०—१ जिण रवि सूं रक्षा जग जांणै, पौरस अंस वंस प्रगटांणै जग में वंस उग्र गुण जोई, क्रत रवि वंस समो नह कोई ।
—रा. रू.
उ०—२ असनिकुमार अगनि वन आखौ, देवनाथ महि वांमण दाखौ । समंद प्रजापति आदि सुरेसर, कमंधां धणी तणी रक्षा कर ।
—रा. रू.
२ सहारा, आसरा, शरण ।
३ देख–रेख, निगरानी ।
४ गोद ।
५ बच्चों को रोग, भूत–प्रेत, नजर आदि से बचाने के लिये बांधा जाने वाला यन्त्र, सूत्र, तावीज, कवच ।
६ राखी का बंधन ।
७ भस्म ।
रू० भे०–रच्छया, रच्छ्या, रच्छा, रछिया ।

रक्षाप्रदीप–सं. पु. [सं.] भूत प्रेत या अन्य बाधा से रक्षा के लिये जलाया जाने वाला दीपक (तंत्र)

रक्षाबंधन–सं. पु. [सं. रक्षा बंधनम्] १ श्रावण शुक्ला पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला हिन्दुओं का एक त्योहार । इस दिन सभी बहनें अपने भाइयों के हाथों में राखी बांधती हैं ।
२ उक्त दिवस को बांधी जाने वाली राखी ।

रक्षाभूसण–सं. पु. [सं. रक्षाभूषणम्] भूत प्रेत आदि से रक्षार्थ बांधा जाने वाला यन्त्र, भूषण ।

रक्षामंगळ–सं. पु. [सं. रक्षामंगलः] एक प्रकार का अनुष्ठान जो भूत–प्रेत, रोगादि के अनिष्ट से बचने के लिये किया जाता है ।

रक्षामण, रक्षामणि, रक्षामिण–सं. स्त्री. [सं. रक्षामणिः] किसी ग्रह के प्रकोप से बचाव के लिये पहनी जाने वाली कोई मणि या रत्न ।

रक्षारांम–देखो 'रांमरक्षा' (रू. भे.)
उ०—ब्रह्म कवच पंजर विसनु, रक्षारांम बचाय । ईस तणौ बळ ऊठिया, अंबर सीस लगाय ।
—रा. रू.

रक्षावत–वि.–रक्षक, सहायक ।

रक्षित–वि.–१ जिसकी रक्षा करली गई हो । जो खतरे से बाहर हो ।
२ पालित, पोषित, प्रति पालित ।
३ रखवाली किया हुआ, संरक्षण में लिया हुआ ।
४ संभाला हुआ, व्यवस्थित किया हुआ ।
५ किसी कार्य विशेष या व्यक्ति विशेष के लिये निश्चित करके

रखा हुआ। (Reserved)
६ संचित।
रू० भे०–रखित, रच्छित।

रख–१ देखो 'रिसि' (रू. भे.)
उ०—१ मुज दुरलभ रखां बळ सिधां साधकां, जोगीराजां दुलभ जग।
—वां. दा.
उ०—२ जतै एक तो इंद्रायणी नै अपच (छ) रा वैकुंठ सूं आयनै रखां नै जीमाड नै ग्यांन चरचा सुणनै दहुं वखत वैकुंठ जाती।
—मयारांम दरजी री वात
२ देखो 'रिख' (रू. भे.)
उ०—१ भुवन सौन सादूळ, फूल वनचरां विचाळै। जिसो चंद जग वंद, वीज रख ग्रंद समाळै।
—रा. रू.

रखड़णौ, रखड़बौ–क्रि. अ.–इधर–उधर, मारा–मारा फिरना।

रखड़ी–१ देखो 'राखड़ी' (रू. भे.)
उ०—१ वीरा म्हारै माथा नै मेहमद लाज्यो, म्हारी रखड़ी वैठ घड़ाज्यो जी, म्हारै रिमक झिमक भाती आज्यो।
—लो. गी.
उ०—२ माथा ने मंमद वनड़ी पहरल्यो ये हां ये वनी, रखड़ी की अधिक बहार, वनडी ने भावै डहर को बाजरो।
—लो. गी.
२ देखो 'राखी' (अल्पा. रू. भे.)

रखण–देखो 'रक्षण' (रू. भे.)

रखणआतप–सं. पु. [सं. आतप रक्षण] सूर्य्य, रवि। (नां. मा.)

रखणी–सं. स्त्री.–१ रखने की क्रिया या भाव।
२ रखने का ढंग।

रखणौ–वि.–१ रक्षा करने वाला।
२ रखने वाला।
रू० भे०–रक्खणौ।

रखणौ, रखबौ–देखो 'राखणौ, राखबौ' (रू. भे.)
उ०—१ रजनी सजनी माहरी, तु रहिजै जुग चियारि। दिणयर दीसंतु रखै, नीसत नयणां-वारि।
—मा. कां. प्र.
रखणहार, हारौ (हारी), रखणियौ —वि.।
रखिओड़ौ, रखियोड़ौ, रख्योड़ौ। —भू. का. कृ.।
रखीजणौ, रखीजबौ। कर्म वा.।

रखत–सं. पु. [सं. ऋक्थं] १ धन, द्रव्य। (अ. मा.)
उ०—१ चालुक्य रो रखत रहियो जिको सौ समस्त ही रंका रै कनै लुटवाय लीधौ।
—वं. भा.
उ०—२ सह रखत तखत सहेत, लूटै छत्र लिया। दिल्लेस निजर दुझाळ महपति मेलिया।
—सू. प्र.
२ आभूषण, गहना, जेवर।
३ उत्तराधिकार में मिली हुई सम्पत्ति।
४ सामान।
५ स्वर्ण, सोना।
६ मोती। (ना. मा.)
[सं. ऋक्ष:] ७ नक्षत्र, तारा।
[सं. रक्षित] ८ रक्षित व्यक्ति।
९ रक्षित भूमि।
[सं. रक्षणं] १० रक्षा।
११ रखवाली।
१२ पालन–पोषण।
१३ परहेज।
उ०—काया रखत तपस्या कीजै, दांन वलै धन सारु दीजै।
—व. व. ग्रं.
रू० भे०–रकत, रिकथ, रखत्त, रखित।

रखतंत–वि.–रक्षा करने वाला, रक्षक।

रखत्त–देखो 'रखत' (रू. भे.)
उ०—प्रवीण कंकिणीस पौच, गज्जरा ज नौग्रही। हिमंकरं रखत्त हस्त, भेद जांणि सोभही।
—सू. प्र.

रखपाळ–देखो 'रक्षपाळ' (रू. भे)
उ०—'करन' 'तेजळ' कुळ-कळाधारी नवे कोट। 'हराउत' खागधारी रेणा रखपाळ।
—नैणसी

रखफळ–देखो 'रक्षफळ' (रू. भे.) (अ. मा.)

रखभ–देखो 'रिसभ' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

रखमंडळ–देखो 'रिखमंडळ' (रू०भे०)

रखव–देखो 'रिसभ' (रू. भे.)
उ०—स्वर वाजंत्रूं का भेदि दिखाय सो कैसे खडज रखव गंधार मधम पंचम धईवंत निखाद सप्त सुर के अलाप करि कोकिलूं की वांणी सै बोलतै हैं।
—सू. प्र.

रखवाई–सं. स्त्री–१ रखने की क्रिया या भाव ।
२ रखने की मजदूरी ।
३ देखो 'रखवाळी' (रू. भे.)

रखवाणौ, रखवाबौ–देखो 'रखाणौ, रखाबौ' (रू. भे.)

रखवारू, रखवारौ–वि०—१ रक्षा करने वाला ।
२ चौकसी करने वाला, चौकीदारी करने वाला ।
उ०—खड़ग बंध नर खड़ा रहै, पौहरै रखवारू ।
—पा. प्र.

रखवाळ, रखवाल, रखवाळक, रखवालक–देखो 'रुखाळौ' (रू. भे.)
उ०—१ एहवुं ग्रायस लहइ प्रधांन, ऊदलपुरि ऊतारउखांन ।
सरिसा एक सहस भाथाळ, राजडीउ मेल्हिउ रखवाळ ।
—कां. दे. प्र.
उ०—२ एहिवूं ग्रंतरि चीत वीनि वदि न (ल) भूपाल ।
मंदिर मांहां मि किम जवाइ द्वारि वहु रखवाल ।
—नळाख्यांन
उ०–३ सांभलि वाचा मुझ भूपग्ल,
इणि वणि ग्रछउं ग्रम्हि रखवाल । —सालिभद्र सूरि

रखवाळण, रखवालण–१ देखो 'रुवाली' (रू. भे.)
उ०—इण कारण 'चांदय' हूंत ग्रखौ ।
रखवालण ढैंबोय कोट रखौ । —पा. प्र.
२ देखो 'रखवाळी' (रू. भे.)
उ०—रखवाळण रा चार भाई ग्रर उणरी बूढौ बाप धुराधूर दौड़ता ग्राया । बाई तौ जवरी ऊंधौ कांम करियौ ।
—फुलवाड़ी

रखवाळणौ, रखवाळबौ–देखो 'रुखाळणौ, रुखाळबौ' (रू. भे.)
उ०–१ तिण मारी ताड़का जिकण रिख मख रखवाळै ।
हण सुबांह मारीच पंज खित्रवट ध्रम पाळै ।
—र. ज. प्र.
उ०–२ जो रखवाळत जगत मैं झाड़ी जंबक झूळ ।
तौ करता त्रिभुवण तणौ, सिरजत नह सादूळ । —ग्रां. दा.
उ०—३ महल कवण रखवालस्ये जी, कवण करसी सार ।
एकण जाया वाहिरोजी, सूनौ सहू संसार ।
—जयवांणी
रखवाळण हार, हारौ (हारी), रखवाळणियौ वि. ।
रखवाळिग्रोड़ौ, रखवाळियोड़ौ, रखवाळचोड़ौ —भू. का. कृ.
रखवाळीजणौ, रखवाळीजबौ —कर्म वा. ।

रखवाळी–सं. स्त्री.–१ रक्षा, हिफाजत, बचाव ।
उ०–१ राज म्हारी रखवाळी करण हार हो तौ रक्षा करौ ।
—पंचदंडी री वारता
२ निगरानी, चौकसी, चौकीदारी ।
उ०—लोही सींच्यौ लीली राखी, म्हे मोती निपजाया ।
पाक्या जद तक की रखवाळी करसां ने संभळाया ।
—चेतमांनखौ
३ निरीक्षण, देखरेख ।
४ रखवाली करने की मजदूरी ।
५ निगरानी का कार्य ।
वि० स्त्री०—रक्षा करने वाली, निगरानी करने वाली ।
रू० भे०—रखवाळण

रखवाळ॰, रखवाळ॰, रखवाळौ–देखो 'रुखाळौ' (रू. भे.)
उ०—१ तहां राजा कहण लाग्यौ ग्रवंति रौ रखवाळौ छै ।
राजा रौ रखवाळौ छै । —पंचदंडी री वारता
उ०—२ इळ रखवाळौ ग्वांन 'इनायत' ।
ग्रासतखां ग्रजमेर सिहायत । —रा. रू.

रखस–देखो 'राक्षस' (रू. भे.)

रखांराज–देखो 'रिसिराज' (रू. भे.)
उ०—खुलै सिद्धां तालियां रूप्‍रा नचै वीर बेळा ।
रचै गांन चाळियां धूप रा रखांराज ।
—दुरगादत्त बारहट

रखाई–सं स्त्री.–१ रखने की क्रिया या भाव ।
२ हिफाजत, रक्षा ।
३ निगरानी, चोकसी ।
४ उक्त कार्य का पारिश्रमिक ।

रखाणौ, रखाबौ–क्रि. स. ('रखणौ या राखणौ' क्रिया का प्रे. रू.)
१ किसी ग्राधार या तल पर किसी वस्तु को रखवाना, धरवाना, टिकवाना । रखने के लिए प्रेरित करना ।
२ नष्ट होने या विगड़ने से बचाव कराना ।
३ रक्षा कराना, बचाने के लिए प्रेरित करना ।
४ पालन कराना, पोषण कराना ।
५ एकत्र, इकट्ठा या संग्रहीत कराना ।
६ सुपूर्द कराना ।
७ ग्रधिकार में कराना, कब्जे में कराना, ग्रधीन कराना ।
८ नियुक्त कराना ।
९ रुकवाना ।
१० पकड़वाना ।
११ चोट कराना ।
१२ धारण कराना ।
१३ ग्रारोपित कराना, ग्राक्षेप कराना ।
१४ लदवाना ।

१५ कोई विषय विचारार्थ प्रस्तुत करवाना, सामने रखवाना।

१६ आवास की दृष्टि से किसी को कहीं ठहरवाना, ठहराने की व्यवस्था कराना।

१७ गहने या वस्तु गिरवी रखवाना, रहन धरवाना।

१८ रखवाली, निगरानी या देखरेख कराना।

१९ सामाजिक या पारिवारिक सम्बन्ध बनवाना।

२० अवलंबित कराना।

रखाणहार, हारौ, (हारी), रखारियौ — वि.।

रखायोड़ौ —भू. का. कृ.

रखाईजणौ, रखाईजवौ —कर्म वा.।

रखवाणौ, रखवावौ, रखावणौ, रखाववौ। —रू. भे.।

रखायोड़ौ-भू. का. कृ.-१ किसी आधार या तल पर रखवाया हुआ, धरवाया हुआ, टिकवाया हुआ, रखने के लिये प्रेरित किया हुआ. २ नष्ट होने या बिगड़ने से बचाव कराया हुआ. ३ रक्षा कराया हुआ, बचाने के लिये प्रेरित किया हुआ. ४ पालन-पोषण कराया हुआ. ५ एकत्र, इकट्ठा या संग्रहीत कराया हुआ. ६ सुपुर्द कराया हुआ. ७ अधिकार में कराया हुआ, कब्जे में कराया हुआ, अधीन कराया हुआ. ८ नियुक्त कराया हुआ. ९ रुकवाया हुआ. १० पकड़वाया हुआ. ११ चोट कराया हुआ. १२ धारण कराया हुआ. १३ आरोपित कराया हुआ, आक्षेप कराया हुआ. १४ लदवाया हुआ. १५ विचारार्थ प्रस्तुत करवाया हुआ, सामने रखवाया हुआ (विषय). १६ आवास की दृष्टि से ठहरवाया हुआ. १७ गिरवी रखवाया हुआ, रेहन धरवाया हुआ (गहने आदि). १८ रखवाली, निगरानी या देख रेख कराया हुआ. १९ सामाजिक या पारिवारिक सम्बन्ध बनवाया हुआ. २० अवलंबित कराया हुआ।

(स्त्री. रखायोड़ी)

रखाळ, रखाळू-देखो 'रुखाळौ' (रू. भे.)

उ० तिथ रखाळुअ 'ढेंव' वयौ धुर ढोन पाबू 'अमरांण' गयौ।

—पा. प्र.

रखावणौ, रखाववौ-देखो 'रखाणौ, रखावौ' (रू. भे.)

रखावणहार, हारौ (हारी), रखावणियौ। —वि.।

रखाविओड़ौ, रखावियोड़ौ, रखाव्योड़ौ। भू. का. कृ.।

रखावीजणौ, रखावीजवौ। —कर्म वा.।

रखावियोड़ौ-देखो 'रखायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रखावियोड़ी)

रखि-देखो 'रिसि' (रू. भे.)

उ०—सउं परिवारिहिं सुं दलिहिं हस्तिनागपुरि नगरि आवइं। अन्न दिवसि रिखि नारदह नारि कज्जि आदेसु पांमइं।

—सालिभद्र सूरि

रखित-१ देखो 'रखत' (रू. भे.)

उ०—उठै 'गजरा' आवियौ, अभंग दळ लियां अथाहां। राव हुवां जिम रखित, पेस न कियौ पतिसाहां।

—सू. प्र.

२ देखो 'रक्षित' (रू. भे.)

रखियोड़ौ-देखो 'राखियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. रखियोड़ी)

रखिस-देखो 'रिखीस' (रू. भे.)

रखी-सं. स्त्री [सं. रक्षी] १ एक प्रकार का थैला जो कंधों पर इस प्रकार लटकाया जाता है कि शरीर के दोनों ओर लटकता रहे। इसके दोनों सिरों पर थैलियां बनी होती हैं।

रू० भे०-रखवी।

२ देखो 'रिसी' (रू. भे.)

उ०—१ तठै हेक रखी तापता हुंता। तठै आय पागड़ौ छांड नमसकार कीधौ। रखी मुनमांन दीधौ। तरै आप रुजक पगे मेलिओ।

—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

रखीकेस-देखो 'रिसिकेस' (रू. भे.)

उ०—मेखला कोस द्वादस प्रमांण, मही जागै करनी महमाय। रुखवाळी जंगळ धरा राय, केदार द्वारका रखीकेस। वळ गंगा गोमती प्रागवेस।

— रांमदांन लालस।

रखीराज-देखो 'रिसिराज' (रू. भे.)

रखीसर, रखीसुर, रखीस्वर-देखो 'रिसीस्वर' (रू. भे.)

उ०—१ जोवन की अरुणोदै मुख ऊपर प्रकासी छै। सूरज की उदै रखीसुर ध्यांन करण लागा छै। जोवन कै उदै ऊर ऊत्तंग जागा छै।

—वगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—२ ऐसी अंधारी हुय गयी छै। जु रखीस्वर छै सु संध्यावंदण को समय चूक चूकि जाय। रिखीसर परिण गति अर दिन री खबर नहीं पावै छै।

—वेलि टी.

रखे-अव्य.-१ कदाचित, शायद, संभवतः।

उ०—जाति-समरण पांमिया रे, बनै भाई दोनुं वांन। उतरता इम चितवे रे, रखे पड़ नीलौ पांन के।

—जयवांगी

२ ऐसा न हो।

उ०—करी कूच जाई नइ लेज्यो मारुग्राडि नूं पासूं। पातिसाह गहवूं मुखि बोलइ, वली रखे हुइ हासूं।

—कां. दे. प्र.

३ कभी नहीं।

उ०—सजि व्यापार तुं पुंजी सारु, ग्रटकलि ठांम देइ उधारुं। रखे बधारै रिण नै रोग, लखण लीजै ज्युं हसै न लोग।

—ध. व. ग्रं.

४ देखें।

उ०—तठै रिसाळू नै हिरण याद ग्रायौ रखे ग्राज छींक हुई छै, हिरण कुसळै ग्रावै तो भलौ।

—रीसाळू री वात

रू० भे०—रखै।

रखेड़ियौ—सं. पु.—१ केवल राख लपेट कर घूमने वाला साधु।

२ ढोंगी साधु।

रखेल, रखेली—सं. स्त्री.—वह स्त्री जो बिना विवाह किये पत्नी के रूप में पुरुष के पास रहे, उपपत्नी।

रखेस, रखेसर, रखेसुर, रखेस्वर—देखो 'रिसीस्वर' (रू. भे.)

उ०—१ तरे मारग में हरद्वार ग्राइ। तठै गोतम रखेसर रौ चेलो तपस्या करै छै।

— रा. वं. वि.

उ०—२ ग्ररणी ग्राद तीरथ ग्रठै ग्ररण रखेसु रहता। तपस्यां करतां गंगाजी प्रगट हुवा।

—नैणसी

उ०—३ ब्रह्मा कै टीकै तो मारीच १ ग्रात्रेय २ भ्रगु ३ ग्रंगराज ४ पुलहक्रत ५ पुलहस्त ६ वासिस्ट ७ ए सात रखेस्वर हुवा।

—रा. वंसावळी

उ०—४ पांणी उत्तर दिस था ग्रावै नै मंडोवर रखेस्वर तपस्या कीवी तिण सुं नांम मंडोवर कहीजियौ।

—नैणसी

रखै—देखो 'रखे' (रू. भे.)

उ०—नरक रा भाई निरखि, माते कुविसन मोई। इण हुंती रहिज्यो ग्रलग, करो रखै संग कोई।

—ध. व. ग्रं.

रखोपौ—सं. पु.—रक्षा का स्थान।

उ०—कोठइ कोठइ करयां रखोपां, मोटा गटा घटाव्या। चाहू-ग्रांगिणि चिहुं पासे भीति भला यंत्र मंडाव्या।

—कां. दे. प्र.

रखौ—स. पु. [सं. रक्षा] १ परहेज।

२ रक्षा, बचाव।

रख्ख—देखो 'रक्ष' (रू. भे.)

रख्खण—देखो 'रक्षण' (रू. भे.)

रख्खणौ, रख्खवौ—देखो 'राखणौ, राखवौ' (रू. भे.)

उ०—पंथी एक संदेसड़उ, भल मांणस नउ भख्ख। ग्रातम तुझ पासइ ग्रछइ, ग्राळग रूड़ा रख्ख।

—ढो. मा.

रख्खणहार, हारौ (हारी), रख्खणियौ —वि.।

रख्खिग्रोड़ौ, रख्खियोड़ौ, रख्योड़ौ। भू. का. कृ.।

रख्खीजणौ, रख्खीजवौ। —कर्म वा.।

रख्खियोड़ौ—देखो 'राखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रख्खियोड़ी)

रख्यण—देखो 'रक्षण' (रू. भे.)

रख्या—देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—पणि केसवरायजी री रख्या करि समाधिया हीज रहिया। ग्राहल एक लिगार ही नाई।

—द. वि.

रग—सं. स्त्री. [फा.] १ शरीर के ग्रन्दर की नस, रक्त सिरा, नाड़ी, स्नायु।

उ०—१ हुदे हुय नांम हली हमगीर। सवी रग रोम खुली सुख सीर।

ऊ. का.

उ०—२ जन हरीया सिवरन सहज, रमनां रग रग मांहि। रोम रोम ररंकार हुय, ममंकार मुख मांहि।

—ग्रनुभववांणी

मुहा०—१ रग दबणी=ग्रपनी कमजोरी के कारण किसी का सामना न कर सकना, दबना।

२ रग फड़कणी=ग्राने वाली ग्रापत्ति की ग्राशंका होना।

३ रग रग जांणणी=किसी के स्वभाव व प्रकृति से पूर्णतया ग्रवगत होना, भलीभांति जानना।

४ रग रग नाचणी=खुशी में झूमना, किसी ग्रच्छी बात या कार्य से ग्रत्यन्त हर्षित होना।

५ रग रग पिछांणणी=देखो 'रग रग जांणणी'

६ रग रग फड़कणी=ग्रावेश, गुस्सा, उत्तेजना, प्रसन्नता ग्रादि के लक्षण प्रगट होना।

७ रग रग बाढणी=टुकड़े-टुकड़े करना, किसी शस्त्र से शरीर के ग्रंग-प्रत्यंग को काट कर मारना।

८ रग रग में विस घुळणी=किसी बात, घटना या कार्य से किसी के प्रति मन में प्रतिशोध उत्पन्न होना, क्रोध व घृणा के भाव उग्र रूप से प्रगट होना, मन में ग्लानि पैदा होना।

१० रग रग सीतल होना—तृप्त होना, सुखी होना, आनन्दित होना, मरना, अवसान होना, शान्त होना।
२ पत्ते की नस।
३ एक प्रकार का मोटा ऊनी वस्त्र जो ओढ़ने के काम आता है।
४ देखो 'रिगवेद' (डि. को.)
रू० भे०—रगी, रग्ग।

रगड़, रंगड़क—सं. स्त्री. [सं. घर्षणम्] १ रगड़ने की क्रिया या भाव।
२ किन्हीं दो वस्तुओं, अंगों या अंग पर किसी वस्तु का होने वाला घर्षण।
३ उक्त घर्षण से पड़ने वाला निशान, चिन्ह।
४ उलझन, झगड़ा।
५ कठोर परिश्रम।
६ किसी गतिमान वस्तु का, चलते समय किसी से किया जाने वाला स्पर्श।
उ०—तेज धमकतौ तावड़ौ, चमकै जांणै सांग।
ले ले रगड़क आंवतां, लूआं लेवै प्रांण। —लू
७ घिसाव।

रगड़कौ—देखो 'रगड़क' (रू. भे.)
उ०—दूजी वेळा वळै परस करणा रै मिस आपरा हाथ मूं उण री पग अळगो लेय बोल्या—औ कोई गै'णौ थोड़ौ ई जकौ थांरा पग में पजावूं मोती जड़ी रिमजोळां में रगड़कौ लाग जावैला।
—फुलवाड़ी

रगड़णौ, रगड़बौ—क्रि. स. [सं. घर्षणम्] १ घर्षण करना, घिसना।
उ०—१ आपरी तवलौ ऊजळी करची, कोरां री धार सिलड़ी पर रगड़ रगड़ सागीड़ी तीखी-तेज काढी।
—दसदोख
उ०—२ ऊजळी उत्तम रेत, ओकळी मूं ले आवै।
वेदी जिगां विवाह साज, सुभकार सजावै।
ग्रह रेणुका राख दांत, निरमळ कर निरखै,
बासण बरतण रगड़, ऊजळां ओरां हरखै।
—दसदेव
२ किन्हीं दो वस्तुओं या अंगों का परस्पर स्पर्श कराना, अंग का किसी वस्तु से स्पर्श कराना।
३ पीसना, घोटना।
४ अभ्यास के लिये किसी कार्य का बार बार करना।
५ परिश्रम करना।
उ०—राजी हुयां कांम में रगड़ै, नराजियां करै नुकसांण।
छोटकियां गोटोड़ां छोडी, मिळी सरीखां चाही मांण।
—चंडीदांन सांदू
६ व्यर्थ तंग करना, परेशान करना।
७ घसीट में लिखना।
८ घसीटना।
९ मसलना
१० संभोग या मैथुन करना।
रगड़ण हार, हारौ (हारी), रगड़णियौ —वि.
रगड़ाड़णौ, रगड़ाड़बौ, रगड़ाणौ, रगड़ाबौ, रगड़ावणौ रगड़ावबौ —प्रे. रू.
रगड़िओड़ौ, रगड़ियोड़ौ, रगड़चोड़ौ भू. का. कृ.
रगड़ीजणौ, रगड़ीजबौ —कर्म वा.।

रगड़ाणौ, रगड़ाबौ—क्रि. स. [रगड़णौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ घर्षण कराना, घिसवाना।
२ किन्ही दो वस्तुओं या अंगों का परस्पर स्पर्श करवाना, अंग का किसी वस्तु से स्पर्श करवाना।
३ पिसवाना, घुटवाना।
४ अभ्यास के लिये किसी कार्य को बार बार कराना।
५ परिश्रम कराना।
६ व्यर्थ तंग करवाना, परेशान करवाना।
७ घसीट में लिखवाना।
८ घसीटवाना।
९ मसलवाना।
१० संभोग या मैथुन कराना।
रगड़ाणहार, हारौ (हारी), रगड़ाणियौ —वि.
रगड़ायोड़ौ —भू. का. कृ.
रगड़ाईजणौ, रगड़ाईजबौ —कर्म वा.
रगड़ावणौ, रगड़ावबौ —रू. भे.

रगड़ायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ घर्षण कराया हुआ, घिसवाया हुआ. २ किन्ही वस्तुओं का या अंगों का परस्पर स्पर्श करवाया हुआ, अंग का किसी वस्तु से स्पर्श करवाया हुआ. ३ पिसवाया हुआ, घुटवाया हुआ. ४ किसी कार्य का बार बार अभ्यास कराया हुआ. ५ परिश्रम कराया हुआ. ६ व्यर्थ तंग करवाया हुआ, परेशान करवाया हुआ. ७ घसीट में लिखवाया हुआ. ८ घसीटवाया हुआ. ९. मसलवाया हुआ. १० संभोग या मैथुन के लिए प्रेरित किया हुआ।
(स्त्री. रगड़ायोड़ी)

रगड़ावणौ, रगड़ावबौ—देखो 'रगड़ाणौ, रगड़ाबौ' (रू. भे.)
रगड़ावणहार, हारौ (हारी), रगड़ावणियौ — वि.
रगड़ाविओड़ौ, रगड़ावियोड़ौ, रगड़ाव्योड़ौ —भू. का. कृ.
रगड़ावीजणौ, रगड़ावीजबौ — कर्म वा.

रगड़ावियोड़ौ—देखो 'रगड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रगड़ावियोड़ी)

रगड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ घर्षण किया हुआ, घिसा हुआ. २ किन्हीं दो वस्तुओं या अंगों का परस्पर स्पर्श किया हुआ, अंग का किसी वस्तु से स्पर्श कराया हुआ. ३ पीसा हुआ घोटा हुआ. ४ किसी कार्य का बार बार अभ्यास किया हुआ. ५ परिश्रम किया हुआ. ६ व्यर्थ में तंग किया हुआ, परेशान किया हुआ. ७ घसीट में लिया हुआ. ८ घसीटा हुआ. ९ मसला हुआ. १० संभोग या मैथुन किया हुआ।
(स्त्री. रगड़ियोड़ी)

रगड़ी–वि.–रगड़ा या झगड़ा करने वाला, झगड़ालू।

रगड़ौ–सं. पु.–१ झगड़ा, टंटा, फिसाद।

उ०–फूमी कांपती सी बोली–हैं ! म्है थांनै कैयौनी, मोटां–घोटाळ रै रगड़ै में ना पड़ो।
—दसदोख

२ उलझन, समस्या, झंझट।

उ०—त्रिपुटी चौपुटी पंचा छः सत नव पनरा जी।
जोग विजोग संजोग भोग सब, माया में रगड़ा जी।
—श्री सुखरांमजी महाराज

३ विपत्ति, आपत्ति, संकट।

उ०—विणज विभौ हळ हांसल विगड़ै, कुवद कमाई जगत कहै।
झगड़ो लागै जिकां झूंपड़ां, रगड़ौ तलवां तणों रहै।
—बां. दा.

४ निरन्तर किया जाने वाला श्रम।
५ रगड़ने की क्रिया या भाव।

रगटळ, रगटाळ–सं. पु.–१ ऊंट का रोग जिसमें उसके पिछले पैर की नस ऊंची चढ़ जाती है इससे उसका पैर बराबर नहीं टिक पाता।
२ उक्त रोग मे पीड़ित ऊंट।
३ ऊंटों का एक अवगुण।
४ देखो 'रुगटाळ'

रगण–सं. पु.–१ छंद शास्त्र के आठ गणों में से एक गण या तीन अक्षरों का वह शब्द (समूह) जिसका पहला व अन्तिम वर्ण दीर्घ होता है तथा मध्य का लघु होता है। इसका सांकेतिक रूप ऽ।ऽ ऐसा होता है।
२ गजानन, गणेश। (अ. मां.)

रगणौ, रगबौ–क्रि. स. १ रेंगना, रेंगते हुए चलना।
२ पशु का रंभाना।

रगत–देखो 'रक्त' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ वहता रगत देखि ग्यळ वाटै। चंद्रप्रहास ग्रहै थक चाटै।
—सू. प्र.

उ०—२ करैं मुख रगत युवगत आलिम धणी, डारि द्युं फूंकि थकी गढ चीतोड। रांण सुं पदमणी चिडी जिम पाकड़ूं, कवण हिंदू करै हम तणी होड।
—प. च. चौ.

उ० – ३ क्रोध रगत लोचन किया। —रांमरासौ

रगतकमळ–देखो 'रक्तकमळ' (रू. भे.)

रगतकास्ठ–देखो 'रक्तकास्ठ' (रू.भे.)

रगतकुस्ठ, रगतकोढ़–देखो 'रक्तकुस्ठ' (रू. भे.)

रगतगुल्म–देखो 'रक्तगुल्म' (रू. भे.)

रगतचंचु–देखो 'रक्तचंचु' (रू. भे.)

रगतचंदण, रगतचंदन–देखो 'रक्तचंदण' (रू. भे) (अमरत)

उ०—कंठ जनोई पाट की, रगतचंदन की पीली किमाड। सीसम सार की पाटली, ऊंचा घरि घरि तोरणवार। —वी. दे.

रगतचूंच–देखो 'रक्तचंचु' (रू. भे.) (अ. मा.)

रगतजीभ–सं. पु. [सं. रक्त जिह्वा] सिंह।

रगततुंड–देखो 'रक्ततुंड' (रू. भे.)

रगतदंता, रगतदंतिका रगतदंती–देखो 'रक्तदंता' (रू. भे.)

रगतधरा–देखो 'रक्तधरा' (रू. भे.)

रगतधातु–सं. पु. [सं. रक्त+धातु] १ लाल रंग का कोई धातु, तांबा।
२ गेरू

रगतधारा–सं. स्त्री. [सं. रक्त+धारा] रक्त की धारा।

रगतनैत्र–देखो 'रक्तनैत्र' (रू. भे.)

रगत पंछी–देखो 'रगतवंसी' (रू. भे.)

रगतपक्ष, रगतपख, रगतपांख–देखो 'रक्तपक्ष' (रू. भे.)

रगतपात–देखो 'रक्तपात' (रू. भे.)

रगतपित, रगतपित्त–देखो 'रक्तपित्त' (रू. भे.)

रगतपित्ति, रगतपित्ती–देखो 'रक्तपित्ती' (रू. भे.)

रगतप्रदर–देखो 'रक्त प्रदर' (रू. भे.)

रगतप्रमेह–देखो 'रक्तप्रमेह' (रू. भे.)

रगतबंबाळी–सं स्त्री.–दुर्गा का एक नामान्तर।

उ०—रगतबंबाळि निमौ रुद्रराया, मुं सुं क्रपा करै महमाया।
—पी. ग्रं.

रगतबिंदू–सं. पु. [सं. रक्त+बिंदू] रक्त की बूंद, कतरा।

रगतबीज–देखो 'रक्तबीज' (रू. भे.)

उ०—देवी धूम लोचन्न, हूंकार धोंस्यौ, देवी जाड़वा में **रगतवीज** सोख्यौ।

—देवि.

रगतभव—सं. पु. [सं. रक्तभव] मांस, आमिष। (डिं. को.)

रगतमंडळ—देखो 'रक्तमंडळ' (रू. भे.)

रगतमल—सं. पु. [सं. रक्त+मल्ल] भैरव का एक नाम।

उ०—काळा गोरा कंवर, **रगतमल** लांगो कळवो। मांण भद्र हनुमांन, कौइलौ नरसिंघ फळवौ।

—मा. वचनिका

रगतमोचन—देखो 'रक्तमोचन' (रू. भे.)

रगतर—देखो 'रक्त' (रू. भे.)

रगतवंसी—सं. पु.—एक प्रकार का विषैला सर्प।

रू० भे०—रगतपंछी।

रगतवरण—देखो 'रक्तवरण' (रू. भे.)

रगतविंदु—देखो 'रक्तविंदु' (रू. भे.)

रगतवीज—देखो 'रक्तवीज' (रू. भे.)

रगतवस्टि—देखो 'रक्तवस्टि' (रू. भे.)

रगतसंधक, रगतसिंधक—सं. पु. [सं. रक्त+संध्यक] १ फूल, पुष्प। (ह. नां. मा.)

२ लाल कमल।

रगतस्राव—देखो 'रक्तस्राव' (रू. भे.)

रगतांग—१ देखो 'रक्तांग' (रू. भे.)

२ देखो 'रकतांग' (रू. भे.)

रगता—देखो 'रक्ता' (रू. भे.)

रगताकार—देखो 'रक्ताकार' (रू. भे.)

रगतातिथ, रगतातिथी—देखो 'रिक्ता' (रू. भे.)

उ०—खुरपण जीमणी, वार थावर खरी। **रगतातिथ** नें मेह अण गाळ रौ।

—रुकमणी हरण

रगतातिसार—देखो 'रक्तातिसार' (रू. भे.)

रगताळ—सं. पु. [सं. रक्त+आलुच्] रक्त प्रवाह, खून की धारा।

उ०—१ काळ लंकाळ करठाळ जड़ियो कमंध, व्है विकराळ **रगताळ** वांई। भाळ छकडाळ चगताळ चूनाळ भिद, ताळ गी भाळ भर वरण तांई।

—तेजसी खिड़ियौ

रगतासुर—सं. पु. [सं. रक्तासुर] एक असुर।

उ०—**रगतासुर** आगै खद, भेळा होय भुंजाळ। सांमंद्र मांहे सांपरत, नदियां भिळै निराळ।

—मा. वचनिका

रगति—देखो 'रक्त' (रू. भे.)

उ०—१ कांविया रंग मौहरा करै, रंगं वां भैंसा **रगति**। जदि चाढ़ि मदां ज्वाळामुखी, सभै तांम तोपां सगति।

—सू. प्र.

उ०—२ दवटे वाज जुतै दुजड़ां हथ, गिरा गिरीस पूजिवा गात। केवी **रगति** कमळ तिण कारण, जुगति पत्ती मन क्रम दे जात।

—राजसिंघ राठौड़

रगतेस—देखो 'रगतासुर' (रू. भे.)

उ०—छंडीला दीसै छकर, जोगिण रिख खीजाई। भड़ मांभी **रगतेस** भड़ वकतौ अंब संभाई।

—मा. वचनिका

रगतोतपळ—देखो 'रक्तोतपळ' (रू. भे.)

रगत्त—देखो 'रक्त' (रू. भे.)

उ०—१ केसर वूठी द्वारका, दिल्ली वूंद **रगत्त**। थई पुरांणां उग्रता, मिटी कुरांणां वत्त।

—रा. रू.

उ०—२ भयांणख भेख सरां छड़ भार। दुहूं वळ धार **रगत्त** दुसार।

—सू. प्र.

रगत्तर—देखो 'रक्त' (रू. भे.)

उ०—अपाकर टोप वगत्तर अंग, रंगै नंह चक्र **रगत्तर** रंग।

—मे. म.

रगत्यौ—सं. पु.—१ बलिदान किया हुआ वह बकरा जो प्रसूती गृह में जच्चा के पलंग के नीचे भूमि में गाड दिया जाता है।

उ०—धरा जोउ है जीव धर, समहर मंडौ सोय। अज **रगत्या** रौ है न अज, काट गाड़ दे कोय।

—रेवतसिंह भाटी

२ चौसठ भैरवों में से एक।

रू० भे०—रिगतियौ, रिगत्यौ।

रगत्र—देखो 'रक्त' (रू. भे.)

उ०—चटच्चट पत्र **रगत्र** चटट्टि। समै अनुसार रमै चवसट्टि।

—मे. म.

रगदण—१ मोटी-ताजी व हृष्ट पुष्ट स्त्री।

२ वेडौल व भद्दे आकार की स्त्री।

उ०—वीजावण विध चित धरौ, हळवळ मत होवीह। **रगदण** ज्यां नह राजवण, जीवित तो जोवोह। —र. हमीर

रगदळ–वि.–कुबड़ा ।

रगदोळणौ, रगदोळवौ–१ वस्त्र या किसी चीज को मिट्टी या कीचड़ में मसलना, लथपथ करना ।
२ रगड़ना, मसलना ।
३ पछाड़ना, झकझोरना ।

रगदोळियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ मिट्टी या कीचड़ में लथपथ किया हुआ. २ रगड़ा हुआ, मसला हुआ. ३ पछाड़ा हुआ, झकझोरा हुआ ।
(स्त्री. रगदोळियोड़ी)

रगवेद, रगवेद–देखो 'रिगवेद' (रू. भे.)

रगी–सं. स्त्री.–१ सरस्वती । (अ. मा.)
२ देखो 'रग' (रू. भे.)

रगुवंसी–देखो 'रघुवंसी' (रू. भे.)
उ०—जात्री मेळै कमळ जोयैवा, जगत जुहारै जुग्रौ जुग्रौ । **रगुवंसीयां** अनै राठोड़ां, हेक वळै अवतार हुग्रौ ।
—दुरसौ आढौ

रग्ग–१ देखो 'रग' (रू. भे.)
२ देखो 'राग' (रू. भे.)

रग्घुवीर–देखो 'रघुवीर' (रू. भे.)
उ०—वळै पाय रैणा तरी **रग्घुवीरं** । मियल्लेसरै ज्याग आए समीपं ।
—सू. प्र.

रग्त–देखो 'रक्त' (रू. भे.)
उ०—देवी **रग्त** वंवाळ गळमाळ रुंडा ।
—देवि.

रघुंस–सं. पु.–देखो 'रिगवेद' ।
उ०—पढंत जोतकी पुरांण, तारकेस के तवै । **रघुंस** सांम जुज्ञ अग्न च्यार वेद के चवै ।
—सू. प्र.

रघु–सं. पु. [सं.] १ सूर्यवंशी एक प्रसिद्ध राजा जो सम्राट दिलीप (द्वितीय) का पुत्र एवं अज राजा का पिता था ।
उ०—संभ्रम दिलीप **रघु** न्रिप सकाज । 'रघु' रै सुत अज राजाधिराज ।
—सू. प्र.

२ दशरथ नन्दन श्री रामचन्द्र, राम ।
उ०—१ विहुं **रघु** लखमण पुत्र बुलाय । सभे जग त्रिस्वामित्र सहाय ।
—ह. र.

उ०—२ अज सुत दीह सपत में आया । अति **रघु** जांन वणावै आया ।
—रांमरासौ

३ रघु राजा के वंशज ।
४ देखो 'रघुवंस'
रू० भे०–रुघ ।

रघुईस–सं. पु. [सं. रघुईश] श्रीरामचंद्र भगवान ।
रू० भे०—रुघईस

रघुकुळ–सं. पु. [सं. रघु+कुल] रघु राजा का वंश, कुल ।

रघुकुळतिलक–सं. पु.–श्री रामचन्द्र, श्रीराम ।
रू० भे०—रुघकुळ तिलक

रघुचंद–सं. पु. [सं. रघुचंद्र] श्री रामचंद्र भगवान ।
रू० भे०–रुघचंद ।

रघुदेव–सं. पु. [सं. रघुदेव] श्री रामचंद्र भगवान ।
रू० भे०–रुघदेव ।

रघुनंद, रघुनंदण, रघुनंदन–सं. पु. [सं. रघु+नंदन] १ श्री रामचन्द्र, श्रीराम । (ना. मा.)
उ०—थे तौ पूत सपूत हो हो रघुवर जी । ईश्वर थे पिता वचन ल्यौ पाळ, हो **रघुनंदन** जी ।
—गी. रां.

रू० भे०–रुघनंद, रुघनंदण, रुघनंदन, रुघुनंदन ।

रघुनाथ–सं. पु. [सं.] १ श्री रामचन्द्र ।
उ०—भड़ परखण भूपाळ तांम ऊभौ असि तांणै । रांमायण **रघुनाथ**, जोध परख कपि जांणै ।
२–ईश्वर, परमेश्वर —सू. प्र.
रू० भे०–रुघनाथ, रुघुनाथ ।

रघुनायक–सं. पु. [सं.] श्रीरामचन्द्र ।
उ०—नर च्यार असी नाचै निकूं, निज हरि आगळ नाचियौ । जाचणौ जिकां रहियौ न जग, ज्यां **रघुनायक** जाचियौ ।
—र. ज. प्र.

रू० भे०–रुघनायक ।

रघुपत, रघुपति–सं. पु. [सं. रघुपति] श्री रामचन्द्र ।
उ०—१ तिलक छाप तुलिछिका माळ धारिया महाबळ । हरवळ लखमण हुवौ 'अभा' **रघुपति** च आगळ ।
—सू. प्र.

रू० भे०–रघूपति, रघूपती, रुघपति, रुघपत्ती ।

रघुभूप–सं. पु.–श्री रामचंद्र भगवान ।
रू० भे०–रुघभूप ।

रघुवर–देखो 'रघुवर' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—भूप **रघुवर** सभत धनु सर।

—र. ज. प्र.

रघुबीर–देखो 'रघुवीर' (रू. भे.) (डिं. को.)

रघुइंद्र–सं. पु. [सं.] श्री रामचंद्र भगवान।

रू० भे०–रुघयंद, रुघयंदि।

रघुरांण–सं. पु. [सं. रघुराज] श्री रामचंद्र भगवान।

रू० भे०–रुघरांण।

रघुरांणी–सं. स्त्री. [सं. रघु, राज्ञी] सीता, जानकी।

रू० भे०–रुघरांणी।

रघुरांम–सं. पु. [सं. रघुराम] श्री रांमचंद्र भगवान।

रू० भे०–रुघरांम।

रघुरज, रघुराइ, रघुराई, रघुराज, रघुराजा, रघुराय, रघुराया–सं पु. [सं. रघु+राज] १ श्री रामचन्द्र।

उ०—१ सभा भूप दसरथ सुत, रूप इसौ **रघुरज**।

—रांमरासौ

उ०—२ राज मौहरि उपति **रघुराई**। भिड़ू जेण विव लखमण भाई।

—सू. प्र.

उ०—३ अस्तुति कर सब देव सिधाया, जग में जय जय धुन छाई। आनंद भयौ भवन सारां में, राज विराज्या **रघुराई**।

—गी. रां.

उ०—४ कळ सत 'कंत' जिण जगणंत। रट **रघुराय**, थिर सुख थाय।

—र. ज. प्र.

उ०—५ राज तणी इच्छा **रघुराया**,। अखिल चराचर जीव उपाया। —ह. र.

२—ईश्वर, परमेश्वर।

३ विष्णु का नामान्तर।

रू० भे०–रुघराई, रुघराउ, रुघराज, रुघराजा।

रघुवंस–सं. पु. [सं. रघुवंश] १ इक्ष्वाकुवंशीय राजा रघु का वंश।

उ०—नमौ **रघुवंस** तणा रवि रांम, विधूंसण लंक बडा वरियांम। —ह. र.

२ श्रीरामचंद्र।

३ ईश्वर, परमेश्वर।

४ कालिदास द्वारा रचित 'रघुवंश' नामक महाकाव्य।

रू० भे०–रुघवंस।

रघुवंस कुमार–सं. पु. यौ. [सं. रघुवंश+कुमार] १ श्री रामचन्द्र।

२ रघु के वंश का कोई राजकुमार।

रघुवंसमणि–सं. पु. [सं. रघुवंशमणि] श्री रामचन्द्र भगवान।

रू० भे०–रुघवंसमणि।

रघुवंसरव, रघुवंसरवि–सं. पु. [सं. रघुवंशरवि] श्री रामचंद्र भगवान।

रू० भे०–रुघवंसरव।

रघुवंसी–सं. पु. [सं. रघुवंशी] १ राजा रघु के वंश में उत्पन्न व्यक्ति।

२ श्री रामचन्द्र।

रू० भे०–रगुवंसी, रुघवंसी।

रघुवर–सं. पु. [सं.] १ रघु के वंश में श्रेष्ठ, श्री रामचन्द्र।

उ०—१ नह हुई न होवें है नहीं, सो छव जोड़ समांन की। मिळ वसौ 'मंछ' मन मंदिरां, जो स्री **रघुवर** जांनकी।

—र. रू.

उ०—२ थे तौ पूत सपूत हो हो **रघुवर** जी। थे पिता वचन ल्यो पाळ, हो रघुनंदनजी।

—गी. रां.

उ०—३ लिछमन जती सील व्रत लेके, सांम्रत अंग समाई। वरस चतुर दस वन **रघुवर** की, करी कठिन सिवकाई।

—ऊ. का.

२–ईश्वर, परमेश्वर।

३ विष्णु।

रू० भे०–रघुवर, रुघवर।

रघुवीर–सं. पु. [सं.] १ राजा रघु के वंश में वीर व्यक्ति, श्री रामचन्द्र।

२ विष्णु, ईश्वर। (डिं. को.)

३ राम भ्राता लक्ष्मण।

रू० भे०–रग्घुवीर, रघुबीर, रुघवर, रुघवर, रुघबीर, रुघवीर।

रघुवेदी–देखो 'रिगवेदी' (रू. भे.)

उ०—सघला सांमक अथरवणी, यजुरवेदीया जांण। **रघुवेदी** सवि रथि चड्या, पंडित पोकारि पुरांण।

—मा. कां. प्र.

रघूपति, रघूपती–देखो 'रघुपति' (रू. भे.)

उ०—१ सदा नित आनंद नाम सहस्स। **रघूपति** उच्चित अम्रत रस्स।

—ह. र.

उ०—२ वदै मुनेस जेण वार, देखि भूप वीनती। मखं महाय काज मेलि, पुत्र तो **रघूपती**।

—सू. प्र.

रड़–सं. स्त्री.–१ करुण-क्रन्दन।

२ रुदन ।
३ चिल्लाहट ।
४ देखो 'रड़ौ' (मह. रू. भे.)
५ देखो 'रड़ी' (मह. रू. भे.)

रड़क—सं. स्त्री.—१ कंकड़, फूस या कोई कण आंख में गिर जाने से होने वाली पीड़ा ।
२ टक्कर ।

उ०—रिण झणणणणण नाद खुरमांण खागां रड़क । बाजि खण णणण कड़ियाळ बंधां बड़क ।

—महादांन महड़ू ।

३ हमला ।
४ ध्वनि विशेष, आवाज ।

उ०—रेवंतां बाजीया पोड़ रड़क धराधर धूजीय कोम धड़क ।

—गो. रू.

५ कसक ।
६ खरोच ।
७ वैर, बदला, दुश्मनी ।

उ०—गांव भेळौ करतां तीन दिन हुयग्या । भाटां रा फिरतां गोडा टूट ग्या । खुरड़ा घिसग्या । लोगां थरपेड़ा पंचां मागै लड़ भिड़'र आछी रड़कां काढी ।

—दसदोख

८ देखो 'रिड़क' (रू. भे.)

रड़कणौ, रड़कबौ—क्रि. अ.—१ आंख में कोई कंकड़, फूस या कण के गिरने से दर्द होना, चुभना, कसकना, खटकना ।
२ मानसिक दृष्टि से कोई बात या घटना मन में बराबर खटकना, मानसिक कष्ट होना ।

उ०—१ जच्चा-रांणी री डील तो साजी-सूरी, निरोगी अर बादळां रै पांणी ज्यूं निरमळ व्हैगौ, पण मन रै किणी खुणा में एक ठौड़ किरकर रड़कती ही ।

— फुलवाड़ी

उ०—२ खूंद गधेड़ा खाय, पैलां री बाड़ी पड़ै । आ अण-जुगती आय, रड़कै चित में राजिया ।

—किरपारांम

३ टक्कर होना, टक्कर लगना ।

उ०—१ सो इतरी मार खावतौ हाथी लोप पाधरौ राव रै हाथी कन्है आयौ सो राव रा हाथी रै पाछलै पग रै इसौ खग लगायौ सो हाड जाय रड़कियौ ।

—डाढाळा सूर री बात

४ किसी बात को सुनने या किसी व्यक्ति अथवा वस्तु को देखने से मन में क्रोध, घृणा आदि विकार पैदा होना । बुरा मालूम होना ।

उ०—१ हाथ री चतर अर मैण्यां उसी है कै आंख में घाली ई को रड़कै नीं ।

—वरसगांठ

उ०—२ भेळा मिनखां में सदा मूं हू-हल्लौ हुंतौ आयौ है, पण कैदी तौ आंख में घाल्या नीं रड़कै ।

—दमदोख

५ ध्वनि या आवाज होना, बजना ।
६ लुढकना, घुड़कना ।

उ०—आगै चढतां गढ सूं कांकरौ एक रड़क्यौ नै नाहरी चमक नै आवतां रै माथा नै मूंढौ घातै ज्यु टोप मुंडा में आयौ ।

—राव रिड़मल री बात

७ परस्पर टकराना ।
८ देखो 'रिड़कणौ, रिड़कबौ' (रू. भे.)

उ०—इतरै में खाट रै नजीक पहुंचिया सौ भैंसां रड़कती मुणी छै।

—कुंवरसी सांखला री वारता

रड़कणहार, हारौ (हारी), रड़कणियौ —वि. ।
रड़किग्रोड़ौ, रड़कियोड़ौ, रड़क्योड़ौ —भू. का. कृ. ।
रड़कीजणौ, रड़कीजबौ भाव वा. ।
रड़क्कणौ, रड़क्कबौ । —रू. भे.

रड़कली—सं. स्त्री.—कोई छोटी पहाड़ी ।

रड़कियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ आंख में चुभा हुआ, कसका हुआ, खटका हुआ. २ मानसिक कष्ट हुवा हुआ, मन में खटका हुआ. ३ टक्कर हुवा हुआ, टक्कर लगा हुआ. ४ किसी बात के सुनने या किसी व्यक्ति अथवा वस्तु को देखने से क्रोध, घृणा आदि विकार पैदा हुवा हुआ, बुरा मालुम हुवा हुआ. ५ परस्पर टकराया हुआ. ६ ध्वनि या आवाज हुवा हुआ, बजा हुआ. ७ लुढका हुआ, घुड़का हुआ ।
८ देखो 'रिड़कियोड़ौ' (रू. भे.) (स्त्री. रड़कियोड़ी)

रड़क्कणौ, रड़क्कबौ—१ देखो 'रड़कणौ, रड़कबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पत्राजे खड़क्कै पंगी धड़क्कै कायरां प्रांण ।
वड़क्कै उरेब छड़ां रड़क्कै भू सीस ।

—चिमनजी रौ गीत

उ०—२ देखतां गेहबौ जंग धड़क्कै आगरौ दिल्ली ।
बंबी जैत माग रा रड़क्कै वारंवार ।

झड़क्कै खाग रा बाढ़ भड़क्कै कायरां झुंड,
हमल्लां नाग रा माथा रड़क्कै हजार।
—सूरजमल मीसण

२ देखो 'रिडकणौ, रिडकबौ' (रू भे.)
रड़क्कणहार, हारौ (हारी), रड़क्कणियौ —वि.।
रड़क्किओड़ौ, रड़क्कियोड़ौ, रड़क्क्योड़ौ —भू. का. कृ.
रड़क्कीजणौ, रड़क्कीजबौ —भाव वा.
(स्त्री. रड़क्कियोड़ी)

रड़ड़ाट–सं. स्त्री. [अनु.] ध्वनि विशेष।

रड़णौ, रड़बौ–क्रि. स. [सं. रद्] १. रुदन करना, रोना।

उ०—चौरंग चूरिया वर सेत 'चांदै', भिड़ै नवलौ भांति।
गोरड़ी काढै गात गोखै, रड़ै गळती राति।
—चांदा वीरमदेवौत मेड़तिया री गीत

२ चिल्लाना, क्रन्दन करना।
३ कुचलना, रौंदना।
४ अव्यवस्थित करना, उथल पुथल करना।
५ युद्ध करना।
६ प्रवाहित होना, बहना।
७ घुड़कना, डौलना।
८ दूध का गर्म होना।
रड़णहार, हारौ (हारी), रड़णियौ —वि.
रड़िओड़ौ, रड़ियोड़ौ. रड़्योड़ौ —भू. का. कृ.
रड़ीजणौ, रड़ीजबौ, —भाव वा.
रडणौ, रडबौ, रढणौ, रढबौ —रू. भे.

रड़द, रड़दौ–सं. पु.–अत्यधिक परिश्रम का कार्य।

रड़बड़–सं. स्त्री.–१ लुढ़कने या घुड़कने की क्रिया या भाव।
२ पदार्थो, वस्तुओं आदि की परस्पर टक्कर से उत्पन्न ध्वनि, आवाज।
३ कार्य।
४ टक्कर, भिड़न्त।
५ आवारागर्दी।
६ कुचले जाने की क्रिया या भाव।
रू० भे०—रड़ब्बड़, रड़भड़, रड़व्वड़, रड़वड, रडव्वड।

रड़बड़णौ, रड़बड़बौ–क्रि. अ. १ किसी चीज का इधर उधर लुढकना, ठोकरें खाना।

उ०—१ उळझ आखड, रुंड रड़बड़, पंख भड़पड़ वीर वड़वड़।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ दड़त पड़िसै घणा दड़दड़, रुंड राकस तुंड रड़बड़।
खाग खासा वहै खड़खड़, त्रिगड़ां त्रड़त्रड़।
—पी. ग्रं.

२ इधर उधर मारा मारा फिरना, अवारा घूमना, भटकना।

उ०—सगपण करतौ थकौ, तूं रड़बड़ियौ संसार रे। एक एक री जून में, तूं उपनौ अनंत वार रे।
—जयवांणी

३ ध्वनि होना, आवाज होना।
४ टकराना, भिड़ना।
रड़बड़णहार, हारौ (हारी), रड़बड़णियौ —वि.।
रड़बड़िओड़ौ, रड़बड़ियोड़ौ, रड़बड़्योड़ौ —भू. का. कृ.
रड़बड़ीजणौ, रड़बड़ीजबौ —भाव. वा.
रड़ब्बड़णौ, रड़ब्बड़बौ, रड़भड़णौ, रड़भड़बौ, रड़वड़णौ, रड़वड़बौ
रडवडणौ, रडवडबौ। —रू. भे.

रड़बड़ाट–सं. स्त्री.–ध्वनि विशेष।
रू० भे.—रड़भड़ाट

रड़बड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ इधर उधर लुढका हुआ, ठोकरें खाया हुआ. २ इधर उधर फिरा हुआ, अवारा घूमा हुआ. ३ ध्वनि हुवा हुआ, आवाज हुवा हुआ. ४ टकराया हुआ, भिड़ा हुआ।
(स्त्री. रड़बड़ियोड़ी)

रड़बौ–सं. पु.–१ बूढा व बदसूरत ऊंट।
२ मतीरा (हिन्दवानी) का ऐसा फल जो दूषित, विकृत या अनुपयोगी हो।

रड़ब्बड़–देखो 'रड़बड़' (रू. भे.)

रड़ब्बड़णौ, रड़ब्बड़बौ–देखो 'रड़बड़णौ, रड़बड़बौ' (रू. भे.)

उ०—रड़ब्बड़ मुंड पड़े चड़ि रुंड।
तिसा विण सुंड वणै गज तुंड।
—रा. रू.

रड़ब्बड़ियोड़ौ–देखो 'रड़बड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रड़ब्बड़ियोड़ी)

रड़भड़–देखो 'रड़बड़' (रू. भे.)

रड़भड़णौ, रड़भड़बौ–देखो 'रड़बड़णौ, रड़बड़बौ' (रू. भे.)

उ०—पिंडत-पिंडत अर साधू-साधू, सागै हुवै जद सागीड़ा लड़ै-झगड़ै। पण कैदी भाई जेळ में कदै ही नीं रड़भड़ै।
—दसदोख

रड़भड़ाट–देखो 'रड़बड़ाट' (रू. भे.)

रड़भड़ियोड़ौ–देखो 'रड़बड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रड़भड़ियोड़ी)

रड़मलपण, रड़मलपणौ–सं. पु.–वीरता, बहादुरी।

रड़मान–देखो 'रिड़मान' (रू. भे.)

रड़बड़णौ, रड़बड़बौ–देखो 'रड़बड़णौ, रड़बड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ सुन्दर घर चांद जैड़ी ना कुछ चीजां नौ प्रीत री ठोकरां मे रड़बड़ै। —फुलवाड़ी

उ०—२ विनिध गड बप भटं, मुंड रडवड़ं धन्ती।
गर्द गप बेरडा, नट गह घड़ं दुरत्ती। —रा. रू.

उ०—३ ग्यान बिना ए जीवड़ो, रड़बड़ियौ संसार।
जो थारै निस्तो हूवै, ग्यान अपूरब सार।

—जयवांणी

उ०—४ पगासंग पागड़िया आहुव अड़िया धूजे रगतासुर धड़हड़िया। मजा रड़बड़िया छन आहुड़िया रिम गाहट जांगी रुड़िया।

मा. वचनिका

रड़बड़णहार, हारौ (हारी), रड़बड़णियौ —वि.
रड़बड़ियोड़ौ, रड़बड़ियोड़ौ, रड़बड़्योड़ौ —भू. का. कृ.
रड़बड़ीजणौ, रड़बड़ीजबौ —भाव वा.

रड़बड़ियोड़ौ–देखो 'रड़बड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रड़बड़ियोड़ी)

रड़बड़–देखो 'रड़बड़' (रू. भे.)

रड़ि–देखो 'रड़ी' (रू. भे.)

रड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ रोया हुआ, रुदन किया हुआ. २ क्रन्दन किया हुआ, चिल्लाया हुआ. ३ कुचला हुआ, रौंदा हुआ. ४ उथल पुथल किया हुआ, अव्यवस्थित किया हुआ. ५ युद्ध किया हुआ ६ प्रवाहित हुआ हुआ, बहा हुआ. ७ घुटका हुआ, लौटा हुआ।
(स्त्री रड़ियोड़ी)

रड़ी–सं. स्त्री.—१ टीला, मगरा।

उ०—१ डूंगर नहि ऊंचे रड़ी, गावै हरि का गीत।
[illegible] मिळो, सूरा [illegible] प्रीत।

—अनुभववांणी

उ०—२ [illegible] रड़ी परेरी, [illegible] दिन जाता-जाती।
[illegible] हुई [illegible]।

—डो. मा.

२ [illegible]।

उ०—[illegible] री रो देखो है। [illegible] रड़ी माथै 'मोजन' रो [illegible] है। [illegible] मोजन री मारी [illegible] है।

—मोजन री [illegible] री बात

३ कंकरीली पहाड़ी भूमि।

उ०—बांभण ईसा रै कहै रावळ जेसळ कपूरदेसर री पाळ कनै रड़ी सी थी उण कुंड रा पांणी ऊपर संमत १२१२ रा सांवण वद १२ आदीतवार मूळ नखत्र रावळ जेसळ जेसळमेर री रांग मंडाई। —नैणसी

रू. भे.–रडी, रढि।

४ देखो 'रड़' अल्पा.–रडकवी, (रू. भे.)

रड़ौ–सं. पु.–१ टीला, मगरा।

उ०—जद ब्राह्मण नांव इसी, एक सौ बीस वरस री ऊमर् में, तिण जैसळ नूं कह्यौ–म्हारा खेत कनै रड़ौ है, जठै स्रीक्रस्ण गदा सूं पांणी प्रगट कर पांडवां नूं पायौ।

—बां. दा. ख्यात

२ छोटा पहाड़।
३ कंकरीला व ऊंचा-नीचा पहाड़ी भूखंड।
रू० भे०—रडौ।

रचक–सं. पु. [सं. रचकः] १ धोबी
सं. स्त्री.–२ टक्कर, भिड़त।

उ०—ठहक डक शंबकवां कायरां ठेलवा, क्रोध धक कठीनै नाग काळा। आय रूकां रचक लीयै कुण आहाड़ा, वगां रण भचक कुमिआळ वाळा। —गुनजी आढ़ो

३ चोट, आघात, प्रहार।
४ लड़ाई, युद्ध।
वि०—रचना करने वाला, रचने वाला, रचयिता।

उ०—रथ रूपी पिंजर रचक सकळ नियंता सांम रौ। और रौ डर नहीं डर अवस रात दिवस उण रांम रौ।

—ऊ. का.

रचण–वि०—रचने वाला।
रू० भे०—रचणा

रचणअजवासी–सं. पु.–ईश्वर, परमात्मा। (नां. मा.)

रचणा–देखो 'रचना' (रू. भे.)

रचणी–सं. स्त्री.–१ रचने की क्रिया या भाव।

२ रचने का ढंग।
३ देखो 'रचना' (रू. भे.)

उ०—दुनियां झूठ रचणी, साच न पैठै जाय। सांई झूठ न भावई, हरीया मचि मुहाय।

—अनुभववांणी

रचणौ-वि. (स्त्री. रचणी) १ बनाने वाला, तैयार करने वाला।
२ निर्माण करने वाला, सृष्टा।
३ उत्पन्न करने वाला, उत्पादक।
४ श्रृंगार करने वाला, सजाने वाला।
५ स्थापित करने वाला।
६ फैलाने वाला।
७ कुछ करने वाला।
८ लगाने वाला।
९ लेख लिखने वाला।
१० निश्चित करने वाला।
११ एकत्र करने वाला।
रू० भे०—रच्चणौ।

रचणौ, रचबौ-क्रि. स. [सं. रचनं] १ बना कर तैयार करना या बनाना।

उ०—१ वेच्याड याहि वदन ज रचिऊं व्याहारिसार इंदु नूं हरिऊं। तर लीधी तांहां खांण थई छि, मुख मनोहर करिऊं।
—नळाख्यांन

उ०—२ खेडेचा विन खोडे, परमेस्वर रचयौ पुरुस। जसवंत थारी जोड, नर दूजौ दीसै नहीं।
—ऊ. का.

२ सृजन करना, निर्माण करना।

उ०—१ ईंडौ कनक अछेह देह धरि हरि तिण द्वारे। रचै नाभ नीरज्ज, रज्ज अंज प्रज गुण सारै।
—रा. रू.

उ०—२ तास चरण सेवक सदा रे, मधुकर पंकज जेम। प्रमुदित चित नी चूंप सुं रे, रास रच्यौ मैं एम।
—वि. कु.

३ उत्पादन करना, उत्पन्न करना।

उ०—१ देखे भव दरियाव, रची पगां सूं स्त्री रमण। नरां अपूरव नाव, नाविक विण निरझर नदी।
—बां. दा.

४ श्रृंगार करना, सजाना।

उ०—लाज वरद सील सुपेद जंघाळ जुगत अत। रचि अमास नवरंग, करै मधि चित्र देव क्रत।
—रा. रू.

५ स्थापित करना।

उ०—जई रूंखां मारू हुई, छवडउ पड़ियउ तास। नइ हुंती चंदउ कियइ, लइ रचियउ आकास।
—ढो. मा.

६ फैलाना।

उ०—१ साह किताके सरबगल, रचै फंद दिन रात। मच्छ गळा-गळ मांहि बस, बच जावै हर बात।
—बां. दा.

उ०—२ साची एक ब्रह्म की बाता, दूजी सकळ आंन की जाता। जुग मां बीत रचै पाखंडा, एक न जांणै नाव अखंडा।
—अनुभववांणी

७ कुछ करना।

उ०—१ सतरै प्रकार नीं पूजा रचै है तिण मांहीं सूं तोने दस बीस रुपया देस्यां।
—भि. द्र.

उ०—२ कळह रचै दसकंध, नवग्रह बंध निवारियौ। हुवा धनुख गुण सबद व्है, गतमद जग मदगंध।
—बां. दा.

उ० – ३ रिण रचिया मा रोइ, रोए रिण छांडे गया। इण घर तौ आगा-लगै, मरणै मंगळ होइ।
—मा. वचनिका

उ०—४ समर उजैण रचै नव-सहसौ। गूर सहस भेदै नव थांन।
—गु. रू. बं.

८ लगाना।

उ०—जेहा जीण जड़ाव, गजगांवा मिम कुंअरगुर। रचि सपंख हय राव, दीधा तैं लाखा दुआ।
—बां. दा.

९ लेख लिखना, रचना करना।

उ०— भाखा व्रज मारू सुर भाखा, भाखा प्राक्रत जांन भर। पायौ रचण रूपगां पेंडौ, मेहाहौ थारी महर।
—बां. दा.

१० निश्चित करना।
११ एकत्र करना।

उ०—इण में मरजी री कांई बात। मरजी री बात व्हैती तौ पंचायती थापण री औ मेळौ क्यूं रचियौ।
— फुलवाडी

१२ देखो 'राचणौ, राचबौ' (रू. भे.)

उ०—१ उण दिन सूं सगळा महल लोगांरी तवज्या करणै लागिया अर कुंवरजी नूं इसा खुस किया जे रच रहिया छै।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ पांणी ल्यावै डोरि करि, हाथे भात पचाय। राजस तांमस रचि रह्यौ, सातिग नावै दाय।

—अनुभववांणी

रचणहार, हारौ (हारी), रचणियौ —वि.।
रचिश्रोड़ौ, रचियोड़ौ, रच्योड़ौ —भू. का. कृ.।
रचीजणौ, रचीजवौ —कर्म वा.।
रच्चणौ, रच्चवौ। —रू. भे.

रचन—सं. स्त्री.—१ रचने की क्रिया या भाव।
२ रचने का ढंग।

उ०—वचन रचन सुणज्यौ हिवै, आंगी भाव प्रधांनौ रे। देज्यौ दांन इसी परै, जेम लह्यौ तुमै मांगौ रे।

—वि. कु.

रचना—सं. स्त्री. [सं.] १ रचने या रचना करने की क्रिया या भाव।
२ निर्माण या रचना करने की कला, कौशल।

उ०—दरजी फाड दुकूल नूं, सींवै लिए सुधार। इण विध री **रचना** अठै, जांणै जांणणहार।

—वां. दा.

३ लीला, माया।

उ०—**रचना** ईस्वर री ईस्वरता रोचै। संम दम स्रद्धा विण संभव नहि मोचै।

—ऊ. का.

४ निर्माण, सृजन, सृष्टि, उत्पादन।
५ निर्मित या उत्पादित वस्तु।
६ वनावट, स्वरूप।
७ वनाने का ढंग, प्रकार।
८ सजावट, श्रृंगार।
९ केश विन्यास।
१० व्यूह, जाल, फंदा।
११ कल्पना।
१२ कोई लेख, काव्य-कृति, ग्रन्थ।
१३ स्थापित करने की क्रिया।
१४ कार्य, काम।

उ०—भळै थें भोळा-संकर बाजौ, दीन-दुखियां रा दुख मेटण री गुमांन करौ! थांरै वैठां आ **रचना** व्है तौ साव खुटगी।

—फुलवाड़ी

१५ विश्वकर्मा की पत्नी का नाम।

रचयिता—वि० [सं. रचयितृ] १ रचने वाला, निर्माण करने वाला
२ लिखने वाला, लेखक।

रचांनौ—देखो 'रछांनौ' (रू. भे.)

उ०—नाई **रचांनौ** खोलतौ खोलतौ कै'वण लागौ वापजी, एक वात पैला कै दूं। इलाज कीं दोरौ है।

—फुलवाड़ी

रचाड़णौ, रचाड़वौ—देखो 'रचाणौ, रचावौ' (रू. भे.)

उ०—केतां गजां पछाड़ै, **रचाड़ै** खेत नरां केतां।
अग्वाड़ै मचाड़ै वीर, विहंडै अपार।

—बुधसिंह सिढायच

रचाड़णहार, हारौ (हारी), रचाड़णियौ —वि.
रचाड़िश्रोड़ौ, रचाड़ियोड़ौ, रचाड़्योड़ौ —भू. का कृ.
रचाड़ीजणौ, रचाड़ीजवौ —कर्म वा.

रचाड़ियोड़ौ—देखो 'रचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रचाड़ियोड़ी)

रचाणौ, रचावौ—क्रि. स. ['रचणौ' क्रिया का प्रे. रू., 'राचणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ वनाकर तैयार करवाना, वनवाना।
२ सृजन कराना, सृष्टि कराना।
३ उत्पादन कराना, उत्पन्न कराना।
४ शृंगार कराना, सजवाना।
५ स्थापित कराना।
६ फैलवाना।
७ करने के लिये प्रेरित करना, करवाना।

उ०—१ वीर नाद सोई चंग वजाग्री, रंग फाग सम जंग **रचायौ**।

—ऊ. का.

उ०—२ उकटिया उदियापुर ऊपर, मेवाड़ा मिळिया तिण मौसर। रांण कंवर थी गुंज **रचायौ**। प्रगट करै कांइ देस परायौ।

—रा. रू.

८ लगवाना।
९ लेख लिखवाना।
१० निश्चित कराना।
११ एकत्र कराना।
१२ जमाना,
१३ आयोजन करना। ऊ. का
१४ रंजित करना/कराना।

उ०—वनड़ा महदड़ली दिन चार हाथ **रचाल्यौ**. वनड़ा काजळिया दिन चार नैण घुळाल्यौ। —लो. गी.

१५ अनुरक्त करना/कराना। १६ शोभित करना/कराना।
१७ प्रसन्न करना/कराना। १८ प्रभावित करना/कराना।
रचाणहार, हारौ (हारी), रचाणियौ —वि.

रचायोड़ी —भू. का. कृ.
रचाईजणी, रचाईजबौ —कर्म वा.
रचाड़णौ, रचाड़बौ, रचावणौ, रचावबौ —रू. भे.

रचायोड़ौ–भू. का. कृ.–१ बनाकर तैयार करवाया हुआ, बनवाया हुआ. २ सृजन कराया हुआ, सृष्टि कराया हुआ. ३ उत्पादन कराया हुआ, उत्पन्न कराया हुआ. ४ श्रृंगार कराया हुआ, सजवाया हुआ. ५ स्थापित कराया हुआ. ६ फैलवाया हुआ. ७ कुछ करने के लिये प्रेरित किया हुआ. ८ लगवाया हुआ. ९ लेख लिखवाया हुआ. १० निश्चित कराया हुआ. ११ एकत्र कराया हुआ. १२ जमाया हुआ. १३ आयोजन किया हुआ. १४ रंजित किया हुआ।
(स्त्री. रचायोड़ी)

रचावणौ, रचावबौ–देखो 'रचाणौ, रचावौ' (रू. भे.)

उ०—१ आयौ आयौ सांवणिया रौ मास, सुसरोजी वियाव **रचावियौ**।
—लो. गी.

उ०२—पण व्याव **रचावै** जैड़ी हीमत तौ किणी री कोनीं। व्याव री बुदबुदी तौ ऊठतां ई मिटग्यी।
—फुलवाड़ी

रचावणहार, हारौ (हारी), रचावणियौ —वि.
रचाविग्रोड़ौ, रचावियोड़ौ, रचाव्योड़ौ भू. का कृ.
रचावीजणौ, रचावीजबौ —कर्म वा.

रचावियोड़ौ–देखो 'रचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रचावियोड़ी)

रचित, रचिय–वि. [सं. रचित] १ रचा हुआ, बनाया हुआ।
२ निर्मित, सृजित।
३ उत्पादित।
४ सजाया हुआ, शृंगारा हुआ।
५ लिख कर तैयार किया हुआ।
६ स्थापित।
रू० भे०–रईय।

रचियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ बनाकर तैयार किया हुआ, बनाया हुआ. २ निर्माण किया हुआ, निर्मित, सृजित. ३. उत्पन्न किया हुआ, उत्पादित. ४ श्रृंगार किया हुआ, सजाया हुआ. ५ स्थापित किया हुआ. ६ फैलाया हुआ. ७ किया हुआ. ८ लगाया हुआ. ९ लिखा हुआ, लिखित. १० निश्चित किया हुआ. ११ एकत्र किया हुआ।
१२ देखो 'राचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रचियोड़ी)

रच्चण–देखो 'रचण' (रू. भे.)

रच्चणौ–देखो 'रचणौ, (रू. भे.)

उ०—धरती जेहा भरखमा, नमणा जेही केळि। मज्जीठां जिम **रच्चणा**, दई सु सज्जण मेळि।
—अग्यात

रच्चणौ, रच्चवौ–१ देखो 'रचणौ, रचवौ' (रू. भे.)
२ देखो 'राचणौ, राचवौ' (रू. भे.)

रच्चियोड़ौ–१ देखो 'रचियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'राचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रच्चियोड़ी)

रच्छ–देखो 'रक्ष' (रू. भे.)

उ०—पाड़िया जुवां विपच्छ, रांम पाय सेव **रच्छ**। ओर मेर रूप अच्छ, लच्छ लच्छ लच्छ।
—र. ज. प्र.

रच्छक–देखो 'रक्षक' (रू. भे.)

उ०—वळ के अगराज कुळवट के अंकुर। पांणी के **रच्छक**, थळवट के कोहर।
—रा. रू.

रच्छया, रच्छया–देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—सो थिर राखण काज क भूखण साजिया। जड़िया **रच्छया** जंत्र मनोज मुनि दिया।
—बां. दा.

रच्छा–देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—म्हारी **रच्छा** कीज्यौ हे मा देसांणा री राय। जग जननी जगदंबा धावळ वाळी धाय।
—राघवदास भादौ

रच्छिक–देखो 'रक्षक' (रू. भे.)

उ०—पर छती जगि रिण जीपियौ। दस महस **रच्छिक** दीपियौ।
—सू. प्र.

रच्छित–देखो 'रक्षित' (रू. भे.)

रच्छी–सं. स्त्री.–धूलि, रज ?

उ०—झुकियौ वेळू झड़ आधौ फर आधौ, हाथा ताळी हणि लुकियौ नहिं लाधौ। कच्छीयौ करकर **रच्छी** रुळिजावै, तड़फै मच्छीतळ पच्छी पुळजावै।
—ऊ. का.

रछक–देखो 'रक्षक' (रू. भे.)

रछपाळ–देखो 'रक्षपाळ' (रू. भे.)

उ०—१ 'आसक्रन' तणी 'बीठल' तणौं कहै एम। पात रछपाळ ग्रहियां खडग पांण।

—वां. दा.

उ०—२ गढ़ रछपाळ दूसरा 'गोकळ', पाळण सत्र दिली दळ पूर। रावत तणौं भरोसे रांणौं, सैलां रमैं हिंदवौ सूर।

—संग्रामसिंह चूंडावत री गीत

रछस–देखो 'राक्षस' (रू. भे.)

उ०—भरचौ पूर अघ जगत अभावण, आगम ग्रत कीवौ फिर आवण। जवर दूत मेलै समुझावौ, रछस अजू समजै तो रावण।

—र. रू.

रछांनी–स. स्त्री.–नाई की वह छोटी पेटी या मंजूषा जिसमें हजामत वनाने के उपकरण रहते है।

उ०—देसोतां री खाट, वैठै आय वरावरी. नाई किसव निराट, रछांनी सूं राजिया।

—किरपारांम

रछाकरण–सं. स्त्री. १ माता, जननी। (ग्र. मा.)

वि०–रक्षा करने वाला, रक्षक।

रछिक–देखो 'रक्षक' (रू. भे.)

उ०—'कुंभ' रांण वाळवक जुगत राजऊ न जांणै, राव जतन कजि रहै, रछिक चीतौड़ घरांणै।

—सू. प्र.

रछिपाळ–सं. स्त्री. [सं. रक्षा+पालनम्] रक्षा

उ०—कहचौ–सारा अठै आय वसौ, जवनेंद्र आपोरी रछिपाळ करसी।

—वां. दा. ख्यात

रछिया–देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—खितपति सुणै अधिक हरखांणौ, ठीक वात निहचौ ठहरांणौ जपियौ मधि कनिया ले जावौ, करि रछिया पय पांन करावौ।

—सू. प्र.

रज–सं. स्त्री. [सं. रजस्] १ धूल, वालूरेत, गर्द।

(अ. मा., डिं. को., ह. नां. मा.)

उ०—१ गाढ़ी गयणांगण रज ले गरणाटा। सांवण सूकी गौ देतौ मरणाटा।

—ऊ. का.

उ०—२ औरां कुं गफजा गिनै, आपा होय निकज। हरीया हरिजन जांणीयै, जिसी राह की रज।

—अनुभववांणी

२ पृथ्वी, भूमि।

३ रात, रात्रि।

उ०—रज पलटै दिन ही घटै, सूर पलट्टै छांह। सूरां हंदा वोलिया, वैण पलट्टै नांह।

—राव रिणमल री वात

४ गौरव, प्रतिष्ठा, इज्जत, मर्यादा।

उ०—१ कमधज भुज निमज सकज मु सुपह कज। राखै रज रिणतूर रुडै।

—गु. रू. व.

उ०—२ आपरी राख रज मुरग वसियौ 'अंनौ'। राज विध भोगवै महाराजा।

—अनोपसिंह री गीत

रू० भे०–रंज, रंजि, रंजी, रजि, रजी, रज्ज, रज्जी, रज्जु, रज्जू, रय।

५ कीर्ति, यश।

उ०—लोयण लाज लाज रा लंगर, भारी साज राज रा भाव। सत रा ओटभ रज रा सारण, रज रा कोट तणौ महाराव।

—आईदांन पाल्हावत

६ चांदी, रजत।

उ०—सुभ सुभड़ मंत्रि कति लोक सव्व। दुति करति नजर घण रज दरव्व।

—सू. प्र.

सं. पु.–७ जल, पानी।

८ वादल, मेघ।

९ वाष्प, कोहरा।

१० स्तन पाई मादा प्राणियों के योनि द्वार से प्रतिमास निकलने वाला रक्त जो गर्भकाल में वंद रहता है। आर्तव। (अनेका.)

उ०—तरुवर साखा मूळ विन, रज वीरज रहिता। अजर अमर अतीत फळ, सौ दादू गहिता।

—दादूवांणी

११ पुष्परज, मकरंद, पराग। (डिं. को.)

१२ केसर।

१३ धार्मिक क्षेत्र में, प्रकृति के तीन गुणों में से दूसरा गुण, रजोगुण। (सांख्य)

उ०—१ सत रज तम रस पंच रहत रस, ता रस सूं मन लागा। यंम्रत जरै प्रांण रस पीवै, भरम गया भै भागा।

—ह. पु. वां.

उ०—२ सतगुण अधिक सोई है ग्यांना, रज तम दोई अग्यांना। रज तम गुण का वेग प्रचंडा, सत्वगुण ग्यांन नसाया।

—स्री सुखरांम जी महाराज

१४ आकाश, गगन।

१५ धूल का कण, जर्रा।

उ०—१ तौ पण प्रताप मेछां तणौ, अतस दाप बाधौ अकस। राव रांण कांण लेखै न रज, एक पांण थंभै अरस।

—रा. रू.

उ०—२ रण कर रज रज हुए, रवि ढंकै रज हूंत। रज जेती धर ना दिये, रज रज व्है रजपूत।

—नाथूरांम महियारियौ

१६ अंधकार।

१७ मानसिक अन्धकार, अज्ञान।

१८ मेल।

१९ पाप। (अनेका.)

२० भुवन–लोक।

२१ कांति, आभा, नूर।

उ०—लोयण लागणिया तणिया लजवाळा। कोयण काजळिया रळिया रज वाळा।

—ऊ. का.

२२ शौर्य, पराक्रम, वीरता।

उ०—मुख नहं नूर उछाह मन, बळ नहं कंध विसेख। मावड़िया लोयण मही, रज हंदी नहं रेख।

—वां. दा.

२३ रौब, प्रभाव।

२४ क्षत्रित्व, रजपूती। (अनेका.)

उ०–पड़पंच करै न लाज जिकां पिंड, खोटौ लाभ कुलाभ खरौ। रज वेचवा न आयौ रांणौ, हाटां वीच 'हमीर' हरौ।

—पृथ्वीराज राठौड़

२५ क्षत्रिय, रजपूत।

उ०—चेतै नह चारण चव्यां, रज वौ नह पिण रज्ज। खाय खपै खळ खूंसड़ा, भोम जाय जिण भज्ज।

—रेवतसिंह भाटी।

२६ राज्य, सत्ता।

उ०—१ ताहरां पतिसाह जी हिंदुवां कांनी देखि अर कहियौ जु राठौड़ छै सु तौ रज रा धणी छै। राजा छै।

—द. वि.

उ०—२ उमरावां दाखी अरज, कुसळि करण रज काज। जगत अछांनी जांणणौ, सो मांनी महाराज।

—रा. रू.

२७ टुकड़ा, खण्ड।

उ०—१ निहसै खळां 'नवल्ल' री, अग्गै दळां दुझाल। हिच पड़ियौ रज रज हुवै, सांदू सूरज माल।

—रा. रू.

२८ वीर्य की बूंद या कतरा।

उ०—तरुवर साखा मूळ बिन, रज वीरज रहिता। अजर अमर अतीत फळ, सौ दादू गहिता।

—दादूवांणी

सं. पु.–२९ एक सप्तर्षि, जो वसिष्ठ एवं ऊर्जा के पुत्रों में से एक था।

३० धर नामक वसु का एक पुत्र।

३१ विरज राजा का पुत्र एक राजा।

३२ स्कंद का एक सैनिक।

रू० भे०–रज्ज।

रजक–सं. पु. [सं.] (स्त्री. रजकी) १ वस्त्र धोने वाला धोबी। (डिं. को.)

उ०—अरि गज घटा पीठि पछटै इम। जळ सिल तटा रजक पछटै जिम।

—सू. प्र.

रू० भे०—रजिक।

२ देखो 'रिजक' (रू. भे.)

उ०—कुंवर तुहाळौ स्रीकमळ, नित झळहळतौ नूर। देखतड़ां दुख दूर व्है, पाय रजक सुख पूर।

—वां. दा.

रजग–देखो 'रिजक' (रू. भे.)

उ०—काळ रहंदा गाळ रजग रोजी जाकी।

—केसोदास गाडण

रजगुण–देखो 'रजोगुण' (रू. भे.)

रजडंबर, रजडंमर–सं. पु. [सं. रजस्+आडंबर] धूल या गर्द का गोटा, गुब्बारा जो आकाश में छाकर अंधकार कर देता है।

उ०—मिळै रजडंबर सु ब्रहमंड। झुल्यौ विचवांसुर तिमर झुंड।

—अज्ञात

रजढांणी–सं. स्त्री.–राजधानी।

उ०—ब्रह्मंड इकवीस मंड तोरी रजढांणी।
—केसोदास गाडण

रजणी—देखो 'रजनी' (रू. भे.)

रजणीचर–देखो 'रजनीचर' (रू. भे.)

रजणी, रजवी–देखो 'राजणी राजवी' (रू. भे.)

उ०—१ रांम रजू तो में रजू, मैं न रजू रज रांम।
हरीया जांमण अर मरण, जांह तांह हरि सुं कांम।
—अनुभव वांणी

उ०—२ रांम सरखा नरप कोय यळ ना रजै।
छात्रपत रांम सम रांम करणां छजै। —र. ज. प्र.

रजतंत—सं. पु. [सं. राज+तत्व] शूरता, वीरता।

रजत–सं. स्त्री. [सं. रजतम्] १ चांदी, रूपा। (अ. मा., डि. को., ह. नां. मां.)

उ०—१ देव पितर इन सूं डरै, रसक तरै किण रीत।
हेम रजत पातर हरै, पातर करै पलीत। —बां. दा.

उ०—२ वणि रतन हौदा वाधि, सोवनी रजत असाधि।
—सू. प्र.

२ स्वर्ण, सोना (अ. मा., डि. को.)
३ पृथ्वी, भूमी। (नां. मा.)
४ स्वर्ण, कंचन। (अ. मा.)
५ रक्त, रुधिर।
६ हाथी दांत।
७ कंठहार।
८ शाकद्वीप के अस्ताचल का नाम। (पौराणिक)
९ नक्षत्र।
वि०–१ लाल * (डि. को.)
२ शुभ्र, श्वेत। * (डि. को.)
३ चांदी का बना, रुपाहैला।
४ उज्ज्वल।
रू० भे०—रजित, रयय।

रजतकूट–सं. पु. [सं.] मलय पर्वत की एक चोटी।

रजत-धात, रजतधाता रजतधातु,–सं. पु. [सं. रजत धातु] १ स्वर्ण, सोना। (ह. नां. मा.)
२ चांदी।

रजताचळ–सं. पु. [सं. रजताचल] १ कैलाश पर्वत। (डि. को.)
२ अस्ताचल।

रजतात–सं. पु. [सं. रजतातः] सूर्य, भानु। (क. कु. बो.)

रजताद्रि—सं. पु. [सं.] कैलाश पर्वत।

रजथांन–देखो 'राजस्थान' (रू. भे.)

रजधर–देखो 'राजधर' (रू. भे.)

उ०—मिणधर छत्रधर अवर गेल मन,
ताइधर रजधर 'सींध' तण।
पूंगी दळ पतसाह पैरतां, पेरै कमळ न सहंस फण।
—महारांणा प्रताप री गीत

रजधरम–सं. पु. [सं. राजधर्मः] १ क्षत्रित्व, रजपूती।

उ०—१ 'आसकरन' तणां 'नीवा' हरा वापयण, रजधरम सार मुंहडै रहायो। प्रथी साधार अदधार होता पहल, प्रथी साधार अद अवै पायो।
—दुरगादास राठौड़ रो गीत

उ०—२ रजधरम राखियो भूप 'रासा' हरै।
गजधरम राखियो गरड़ गांमी। —द. दा.

२ वीरत्व, पराक्रम।
३ राज्यधर्म।
४ देखो 'रजोधरम' (रू. भे.)

रजधांणी, रजधांन, रजधांनी–देखो 'राजधांनी' (रू. भे.)

उ०—१ पुर चळ चळ मुख अन्न न पांणी।
रिपी सोध लीधी रजधांणी। —रा. रू.

उ०—२ धरम्म बिनां देखो धरणी में भयै किते हक भंगी।
धरम प्रताप धरापति धारत, रजधांनी बहुरंगी। —ऊ. का.

रजधारी–देखो 'रजधर' (रू. भे.)

रजन–सं. स्त्री.–बादल। (अ. मा.)

रजना–सं. स्त्री.–संगीत की एक मूर्च्छना।

रजनि, रजनी–सं. स्त्री. [सं. रजनी] १ रात्रि, निशा, रात।
(अ. मा., डि. को., नां मा., ह. नां. मा.)

उ०—दादू धरती को अम्बर करै, अम्बर धरती होइ। निस अंधियारी दिन करै, दिन को रजनी सोइ।
—दादूवांणी

२ लाख, लाक्षा।
३ हल्दी। (अ. मा.)
४ जतुका नामक लता
५ दारू हल्दी।
६ एक पौराणिक नदी।
७ हाथी।
८ गर्द।

उ०—गुडियंत जूह गडाड ए, सरजीत जांणि पहाड ए। मदगंध मद ऊमंड ए, हय पाई रजनी ऊडु ए। —गु. रू. वं.

रू० भे०—रजणी, रजीनी, रयणि, रयणी, रयनि, रयनी।

रजनीकर–सं. पु. [सं.] चन्द्रमा।

रजनीचर–सं. पु. [सं.] १ चन्द्रमा, चांद।

२ राक्षस, असुर।

उ०—देखि देखि दांनव अति दारुन, राजिव नयन भये रोसारुन। **रजनीचरन** करन निरमूळहि, सारदूळ चढ़ि गहिय त्रिशूळहि। —मे. म.

रू० भे०—रजणीचर,

रजनीति–देखो 'राजनीति' (रू. भे.)

उ०—तिण रीति सु बुद्धि धरम सी तिकौ, धुरा द्रस्टि ऊंडी धरै। जल वाली पालि वांधै जरु, काज **रजनीति** हि करै। —ध. व. ग्रं.

रजनीपत, रजनीपति, रजनीपती–सं. पु. [सं. रजनी+पति] चन्द्रमा। (डिं. को.)

रजनीमुख–सं. पु. [सं.] सायंकाल, संध्या। (डिं. को.)

रजनीस–सं. पु. [सं. रजनीश] चन्द्रमा।

उ०—तरवर नदियांण सुरसरी सुरतर, सरपां गज ऐरावत सेस। सरां नखत **रजनीस** मांनसर, अवनीसां ओपम अवधेस। —र. रू.

रजपती, रजपत्ती–सं. पु. [रा. रज=भूमि+सं. पति] भूपति, राजा।

उ०—जो रचना जगपत्ती, लोतै आळ भ्रमे त्रयलोकं। सोई सत्यं सद्रढं, रेखा सार अंक **रजपत्ती**। —रा. रू.

रजपाट–देखो 'राजपाट' (रू. भे.)

उ०—हणै गज भूलकई **रजपाट**, भडै रिण दोयण दे खग झाट। —पे. रू.

रजपूत–सं. पु. (स्त्री. रजपूतण) १ सिपाहि, सैनिक।

उ०—इसड़ी वातां सुणि भीमराजजी उठ मुजरौ कर कही बावाजी साहिब हूं तो आपरौ **रजपूत** छूं। —मारवाड़ रा अमरावां री वात

२ योद्धा, भट, वीर।

उ०—१ एक बुरहांन पठांण वडौ **रजपूत** पेहली राव मालदे रै वास थौ। पछै छांड नै नागौर रा धणी रै वास वसीयौ थौ, सु बुरहांन नै प्रिथीराज जी वणी सुख थौ। —राव मालदै री वात

उ०—२ रायसिंह साथै वीकौ ईडरियौ नै पठांण हवीव वडा **रजपूत** था सु वाजिया। —नैणसी

३ अनुचर, सेवक।

उ०—ताहरां दलै कह्यौ–वीरमजी आज वाळा दिन थांहरा दिया छै। थें मांहरै गुढै आवस्यो तो म्हे थांरा हीड़ा करस्यां। थांहरा **रजपूत** छां। —नैणसी

४ देखो 'राजपूत' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ रुळचा खुळचा **रजपूत** विरांमण मिळगा विटळा। वैस्य मिळ गया विकळ सूद्र कुळ रळगा सिटळा। —ऊ. का.

उ०—२ फेर पाछौ आयनें वोल्यौ–म्हारी मा कह्यौ है **रजपूत** तो लेखै लेवै धणी है। —भि. द्र.

रजपूतण–देखो 'रजपूतांणी' (रू. भे.)

उ०—पण थूं मांनजा भीमा। क्यूं म्हारै हाथ सूं एक **रजपूतण** नै रांड वणावै। —रातवासौ

रजपूतपण, रजपूतपणौ–सं. पु.–क्षत्रित्व, वीरत्व।

उ०—वित वाड़ धकै अनरौ सुहवै। **रजपूतपणौ** तन रौ न रहै। —पा. प्र.

रजपूतवट–सं. पु.–रजपूती का गौरव, क्षत्रित्व, वीरत्व।

उ०—तिसा ही वागां रा वणाव, तिसा ही मूंछां रा मरट, तिसा ही भुजां रा आंमला, तिसा ही पोरस रा गाढ़, तिसा ही कांमवट रा अंग, तिसा ही **रजपूतवट** रा आचार देख नै महाराजा राजेसर अजमे रै थांणै राखैआ छै। —रा. मा. मं.

रजपूतांणी–देखो 'राजपूतांणी' (रू. भे.)

उ०—१ **रजपूतांणी** रुच सींचांणी सिरखी। नैणां जळ भरती सैणां थळ निरखी। —ऊ. का.

उ०—२ जाया **रजपूताणियां**, वीरत दीधी वेह। प्रांण दियै पांणी पुराग, जावा न दियै जेह। —वां. दा.

रजपूताई, रजपूती–देखो 'राजपूती' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ तरै कह्यौ, जैतसी भतीज, तूं रजपूताई में सखरो छै, कळियां वैरां री वाहरू छै, तिको श्री वैर पहिर।

—जैतसी ऊदावत री वात

उ०—२ हरीया दुबिध्या दूरि करि, पासी पकड़ी एक। रजपूती जिसकी रहै, छाडि न जावै टेक।

—अनुभववांणी

उ०—३ महिजातां चींचातां महिळा, ऐ दुय मरण तणां अवसांण। राखो रे किंहिक रजपूती मरद हिंदु की मुस्सलमांण।

—वां. दा.

रजबंद, रजबंध–सं. पु. [सं. रजबंध] १ मासिक धर्म रुक जाने की स्थिति।

२ देखो 'रजामंद' (रू. भे.)

उ०—जयचंद हरा तो सिर जपूं रजबंद सब दिन रहूं। इण भाकर सूं राजस अगड, सौ सौ कोस दिसा चहूं।

—पा. प्र.

रजवट–देखो 'रजवट' (रू. भे.)

उ०—पन प्रबळ पिसन पिक्खै न पिट्ठ। रजवट बटदै रट्ठौर रिट्ठ।

—ऊ. का.

रजवनांमौ–सं. पु. [फा. रजम+नामः] फारसी भाषा में अनूदित महाभारत का ग्रंथ।

उ०—भारत री तरजुमौ फारसी में अकबर करायौ, नांम रजवनांमौ।

—वां. दा. ख्यात

रजवळी, रजवली–सं. पु.–१ राजा। (डिं. को.)

२ वीर, वहादुर।

रजवौ–सं. पु.–१ साग आदि पकवान में दी जाने वाली खटाई।

उ०—मांस उतार-उतार टुकड़ियां में घातजै छै। मिरच धाणा सूंठ लूण हळदी वेसवार दीजै छै। दही रो रजवौ दीजै छै।

— रा. सा. सं.

२ देखो 'रजमौ' (रू. भे.)

रजमंडळ–सं. पु.–धूलि समूह, धूल का गुब्बारा, गर्द के बादल।

उ०—हैमरां हींस नर लसकरां क्रह' हुई, वहै सिंधुर कहर समर वेंडा। आहाडा खंड रजमंडळ ओछाइयौ, पहाडां अगम सर सुगम पेंडा।

—महाराजा जसवंतसिंह री गीत

रजमी–सं. स्त्री.–एक प्रकार की लाल रंग की मिट्टी।

रजमौ–सं. पु.–१ साहस, पुरुषार्थ, वीरत्व।

उ०—रजब रजमा पाइया गुरु दादू दरबार। घरै अबर का सुख लह्या, सनमुख सिरजण हार।

—रजबदास जी महाराज

२ शक्ति, बल।

उ०—क्या कहिए कहणी कहा, रजमां रहणी मांहि। सो साहिब कै हाथि है, दे तो अचिरज नांहि।

—ह. पु. वां.

३ रजोगुण।

रू० भे०–रजवौ।

रजरोगी–वि.–राज्य प्राप्त करने की इच्छा वाला।

उ०—जोगी कहौ, भव भोगी कहौ, रजरोगी कहौ, कौ फेसेड हैं। न्याई कहौ, औ अन्याई कहौ, कुकसाई कहौ जग जेसेइ हैं।

—ऊ. का.

रजवंती–सं. स्त्री. [सं. ऋतुमती] रजस्वला स्त्री।

रजवड़–१ देखो 'राजवण' (रू. भे.)

उ०—थारे घूंघटिया में सोळै सूरज ऊग्या। म्हारी रजवड़ घूंघटियौ हीरां जड़यौ।

—लो. गी.

२ देखो 'रजवाड़ी' (रू. भे.)

रजवट, रजवट्ट–सं. पु.–क्षत्रित्व, रजपूती, वीरत्व। (डिं. को.)

उ०—१ तौ रघुरांम रै रघुरांम, रजवट धारियां रघुरांम।

—र. ज. प्र.

उ०—२ अकबर हियै उचाट, रात दिवस लागी रहै। रजवट वट समराट, पाटप रांण 'प्रतापसी'।

—दुरसौ आढौ

उ०—३ एकण दिसि रावळ अनम्म, आलिमपति दिसि एक। भभकारै वेहुं सुभट, राखण रजवट टेक।

—प. च. चौ.

उ०—४ विचत्रांण कोट जमणां विचै गज भिड़जां कीधां गरा। रजवट्ट साफ चड़िया रथे, हिच पड़िया 'ऊदा' हरा।

—रा. रू.

रू० भे०–रजवट, रजवाट, रजव्वट।

रजवण–देखो 'राजवण' (रू. भे.)

उ०—वनड़ी थारै ए घूंघटिए रै कारणै कजळी देसां रा हसती ल्याया म्हारी रजवण, घूंघटियौ हीरां जड्यौ। मारू देसां रां

घुड़ला ल्याया, म्हारी रजवण, वनड़ी हीरां ए जड्यौ मोत्यां ए जड़्यौ। थारे घूंघटिए में चांद पवास्यौ म्हारी रजवण।
—लो. गी.

रजवांण-सं. स्त्री.-राजपूती, क्षत्रित्व।

रजवाइत-सं. पु.-१ राज्यत्व, राजापन।
सं. स्त्री.-२ राज्य करने की क्रिया या भाव।

रजवाड़, रजवाड़ौ-सं. पु.-१ रियासत या राज्य।

उ०—१ तद संवत १५८८ जेठ वद ३ नै मालदे राव हुवौ। पण वडौ दुस्ट, सू साराई रजवाड़ां सू किसौ कियौ। —द. दा.

उ०—२ मूळी रौ पापा रजवाड़ां में रैवणियौ स्यांणौ हाजरियौ, राजनीत सूं रंग्योड़ौ-सुधरयोड़ौ मिनख ! ख्यात अर जात नै जांणै विड़द अर वडाई वखांणै। —दसदोख

रू० भे०—रजवाडौ।

रजवाट-देखो 'रजवट' (रू. भे.)

उ०—'वखत' सुत आउवै भाट खग वजाई,
काट घण दळां रजवाट केवै।
—ठा. सिवनाथसिंह कूपांवत री गीत

रजवाडौ-देखो 'रजवाड़ौ' (रू. भे.)

उ०—रावां सिर-हर राव, राज सिर-हर रजवाडां।
म थरहर हैजमां संक थक, थरहर सीवाडां।
—पनां

रजवार-देखो 'राजकुमार' (रू. भे.)

उ०—म्हारै मन वसियो भंवर, उर वसीयौ रजवार।
मो सूगणी रो साहिवौ, नीला को असवार।
—पनां

रजव्वट-देखो 'रजवट' (रू. भे.)

उ०—भारत भू भरतार, रजव्वट रंजणौ।
अवतरियौ नर एक गनीमां गंजणौ।
—किसोरदांन वारहठ

रजस्वळा-सं. स्त्री. [सं. रजस्वला] वह स्त्री जिसकी ऋतुमति की अवस्था चल रही हो।

उ०—१ रजस्वळा नारीह, कथा गोप किण सूं कहूं।
समझी हरि सारीह, सरम मरम री सांवरा।
—रांमनाथ कवियौ

उ०—२ लता जु पुहपवती छै। सु ए रजस्वळा कही छै। तांह सों पवन परस करै छै। इह मतवाळा को अंग छै।
—वेलि टी.

रू० भे०—रज्जसुळा।

रजा-सं. स्त्री. [अ.] १ इच्छा, मरजी, मंसा।

उ०—१ अमरसिंह गजसिंहजी रै वडौ कुंवर। सांचोर रा चहुवांणां रौ दोहितौ। सो गजसिंहजी री रजा नहीं।
—अमरसिंह राठौड़ री बात

उ०—२ स्त्री दीवांण रै भलां हुवै ज्युं करज्यौ पिण खांनजादां नै लिखीयौ छै। आगै तौ धणीयां री रजा।
—राव रिड़मल री बात

२ कृपा, दया, अनुग्रह।

उ०—१ ररा मन राखि रजा में रहिए, विन हरि रजा वहौत दुख सहिए।
—ह. पु. वां.

उ०—२ रांम वाळी रजा सीम ज्यांरै रहै। कूण त्यांनै हुवा हींणं मांणं कहै।
—र. ज. प्र.

उ०—३ हम खिजमत कवूल, हम्म फरजन्न तुमारै। हम सिरि ऊपरि रजा, हुकम हम कीयी आरै।
—गु. रू. वं.

उ०—४ इव करतां घणा वरस वीतिया वाशाह री रजा महरवांनी घणी रहै।
—राठौड़ राजसिंह री वारता

३ आज्ञा, हुक्म।

उ०—१ ध्यावतां निजर तो सूं वरै, तो निवांण निसचै तिरै। राजाधिराज तोरी रजा, ईसर चा सिर ऊपरै।
—ह. र.

उ०—२ रजा तुम्हारी रांम कहौ त्यूं मैं करूं। मन गहि पवन संवाहि अटकि उलटी धरूं।
—ह. पु. वां.

उ०—३ रीस करी भावै रळियावत (यत) गज भावै खर चाढ गुलांम। माहरै सदा ताहरी माधव, रजा सजा सिर ऊपर रांम।
—प्रथीराज राठौड़

४ अनुमति, स्वीकृति, सहमति।
५ छुट्टी, रुखसत।
६ खुशी, प्रसन्नता।
७ आशा, उम्मीद, चाह।
८ राजा होने का भाव।

रजाइस–सं. स्त्री.–१ आज्ञा, हुक्म।
२ राज्यत्व।
रू० भे०–रजायस।

रजाई–सं. स्त्री.–१ सर्दी के बचाव के लिये ओढ़ने का लिहाफ या खोला जिसमें रूई भरी हुई होती है।
उ०—य्यांन पथरणौं घरियौ गूढां, मेली विद्या रजाई मूढां।
—ऊ. का.
२ राज्य प्रथा। राज्यत्व।

रजापण, रजापणौ–सं. पु.–१ हर्ष, प्रसन्नता।
२ सहमति।
३ देखो 'राजापणौ' (रू. भे.)

रजावंद–देखो 'रजामंद' (रू. भे.)
उ०—१ बादशाह देख बहुत रजावंद हुवौ।
—गौड़ गोपाळदास री वारता
उ०—२ इसौ रजावंद हुवौ तींकौ क्यूं वखांण करणै में नहीं आवै।
—कुंवरसी सांखला री वारता

रजावंदी–देखो 'रजामंदी' (रू. भे.)
उ०—बादसाह नूं चाहिये कांम करै तिण में रजावंदी प्रभू री चाहै मन री चाही न करै।
—नी. प्र.

रजावंध–देखो 'रजामंद' (रू. भे.)
उ०—भीवैंजी कह्यौ, पठांण रीसांणौ जाय छै, तिकौं इसां नै बांह वेली राखीजै, किण हेक वेळा आडौ आवैं, तिण सूं अठै पाछौ ल्याय, गोठ जीमाय नै सीख देस्यां, गाढौं रजावंध करि हसि हसाय नै सीख द्यां नै सीख करां।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

रजावंधी–देखो 'रजामंदी' (रू. भे.)
उ०—सब रै मुंहडे आज भरमल ही भरमल होय रही छै। भली ही रजावंधी सगळां नूं हुई।
—कुंवरसी सांखला री वारता

रजामंद–वि. [फा. रिजामंद] १ जो प्रसन्न या खुश हो।
उ०—सो जलाल मारां नूं रीझ मौज जसा दीठा जिसी दीवी। सारा रजामंद हुवा।
—जलाल बूबना री वात
२ संतुष्ट।
३ जो किसी कार्य या बात पर सहमत हो, तैयार हो। राजी।
उ०—तरै बादसाह कहियौ–तुम जलाल रै पास जावौ और छोटी रा नारेळ हमारे ठहरावौ तो हम रजामंद हैं।
—जलाल बूबना री बात
रू० भे०–रजबंद, रजबंध, रजावंद, रजावंध।

रजामंदी–सं. स्त्री. [फा. रिजामंदी] १ 'रजामंद' होने की अवस्था या भाव।
२ प्रसन्नता, खुशी।
उ०—ज्ये क्यूं करै सो संसार रा भला व प्रभू री रजामंदी नूं करै।
—नी. प्र.
३ सहमति, अनुमति।
उ०—तौ बळद, कुत्तौ गोघू अर मिनख री रजामंदी सूं ऊमर रौ औ नवौ जमा खरच व्हैगौ।
—फुलवाड़ी
४ इच्छा, मर्जी।
रू० भे०–रजावंदी, रजावंधी।

रजायस–देखो 'रजाइस' (रू. भे.)

रजि–देखो 'रज' (रू. भे.)
उ०—नगां असि नाळ, वजै विकराळ। धरा रजि धोम, वणै उडि वोम।
—सू. प्र.

रजिक–१ देखो 'रजक' (रू. भे.)
उ०—बंध बंदूकां बंध, धुप छोळां जळधारां। दियै फूल दाग्वां, रजिक पाड़िजै अपारां।
—सू. प्र.
२ देखो 'रिजक' (रू. भे.)

रजित–देखो 'रजत' (रू. भे.)
उ०—वड वड कुळ वरियांम, सार्ख पैंतीस सकाजां। सुता दियण वासतै रजित स्रीफळ सभि राजां।
—सू. प्र.

रजितमई, रजितमय–वि.–१ चांदी का, चांदी सम्बन्धी।
२ श्वेत।

रजियोड़ौ–देखो 'राजियोड़ौ, (रू. भे.)
(स्त्री. रजियोड़ी)

रजिस्टर–सं. पु. [अं.] पंजिका, पुस्तिका।

रजिस्टरी–सं. स्त्री. [अं] १ राज्य के नियमानुसार किसी सरकारी

कार्यालय में प्रतिज्ञा-पत्र आदि को किसी पंजिका में दर्ज कराने का कार्य। पंजीयन।

२ डाकखाने में, सामान्य दर से अधिक दाम देकर, पंजीकृत करा कर, भेजा जाने वाला पत्र, पार्सल आदि।

३ किसी जमीन या मकान आदि की खरीद के दस्तावेज।

रजिस्ट्रार-सं. पु. [अं.] किसी विश्व विद्यालय, हाईकोर्ट, बोर्ड आदि के कार्यालय में होने वाला पंजीयक का पद।

२ उक्त पद पर कार्य करने वाला व्यक्ति।

३ कानूनी दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाला अधिकारी।

रजी-देखो 'रज' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ उडे तुरंग तें रजी समग्ग धावती अटे।
छके छकांन छावती छिना, विछावती छटे।
—ऊ. का.

उ०—२ दळ दोऊं दिस आवरे, सूर दमांमां देह।
हरीया रवि छायौ रजी, आयां गयां न छेह।
—अनुभव वांणी

उ०—३ कोसिक ज्याग अभंग सिहायक, दांणव घायक दूधरी पाय रजी रघुराम परस्सत, आ त्रीय गौतम उघरी।
—र. ज. प्र

उ०—४ झळहळ वृग सावळ भूल, गुडिली गयण मिळि गोधूल।
ऊपर रजी धार अंधार, दौड़े खुरस रा दळकार।
—गु. रू. वं.

रजीडंट-देखो 'रेजीडेंट' (रू. भे.)

रजीदांनी-सं. स्त्री. [सं. रजः+फा. दान+रा. प्र. ई.] स्याहि सुखाने के लिए बारीक रेत रखने का पात्र, जिसके ढक्कन में चलनी की तरह छिद्र होते हैं। वालूदानी।

रजीनी-देखो 'रजनी' (रू. भे.)

रजु-१ देखो 'रज्जु' (रू. भे.)
२ देखो 'रज्जू' (रू. भे.)

रजुआत-सं. स्त्री. [अ. रुजूआत] १ मित्रता, मेल-जोल।

उ०—रावळ माहप रा वागड़ धणी। ऐ सदा चीतोड़ रा रांणा री चाकरी करता पछै सै दिलीरा पातसाहां सुं पिण रजुआत रखै छै।
—नैणसी

२ लगाव, झुकाव।

रजुता-सं. स्त्री.-१ रज्जू होने की अवस्था या भाव।
२ सरलता, सीधापन
३ सहमति।

रजू-१ देखो 'रज्जू' (रू. भे.)

उ०—१ रांम रजू तौ में रजू, मैं न रजू रज रांम। हरीया जांमण अर मरण, जांह तांह हरि सूं कांम।
—अनुभव वांणी

उ०—२ दोनुं चितोड नु चालीया। चितोड़ जाइ रजू हूवा।
—चौवोली

उ०—३ पीछै भींवराजजी घोड़ा ५० सूं चढ दिल्ली गया। नै पातसाह हमायूं रै पावां लागा। तद पातसाहजी चाकरी में रजू किया।
—द. दा.

उ०—४ पाखती भोमिया था त्यांनू मेल्हिया और मारिया सो लोग सगळा रजू हुइ गया।
—ठा. जे.

२ देखो 'रज्जु' (रू. भे.)

रजूबाकी-सं. स्त्री.-ऋण का लेखा जोखा करने के बाद ऋण की अवशिष्ट रहने वाली रकम।

रजूनांमौ-स. पु. [अ. रजू+फा. नामः] स्वीकृति-पत्र, सहमति-पत्र।

उ०—सं.१७१६ चैत्र मैं एक दिन आलमगीर कहायौ साहिजांन जी कैद मैं हा त्यांनूं, जो हजरत पातसाही इनायत करण का मेरे तांई रजूनांमा लिखदेवौ।
—द. दा.

रू० भे०—रज्जुनांमौ।

रजोकुळ-स. पु.-राज्य कुल।

रजोगुण-सं. पु. [सं.] धार्मिक क्षेत्र में, प्रकृति के तीन गुणों में से दूसरा गुण। इसकी अभिव्यक्ति, सात्विक तथा तामसी वृत्ति के बीच की दशा होने पर होती है।

उ०—रजोगुण ब्रह्मगुण सातसी, तिकौ ग्यांन पतिसाह गिणी। तांमसी रूप सकर तणौ पति गुणा मा रांम पिणि।
—पी. ग्रं.

रू० भे०—रजगुण।

रजोगुणी-सं. पु.-१ ब्रह्मा। (ना. मां.)
सं. स्त्री.-२ रजोगुण वाली वृत्ति या भावना।
वि.-रजोगुण के भाव वाला।

उ०—अबै इण वखत मैं वे रजपूत रजोगुणी राज राग रंग में रंजीयोड़ा वीर है।
—वी. स. टी.

रजोदरसण-सं. पु. [सं. रजो-दर्शन] स्त्रियों की रजस्वला होने की अवस्था या दशा।

रजोधरम-सं. पु. [सं. रजोधर्म] स्त्रियों का मासिक धर्म।
रू० भे०—रजधरम।

रजोमूरती–सं. पु. [सं. रजोमूर्ति] ब्रह्मा ।

उ०—तु ही भीळणी भेख संभू भुळावै। रजोमूरती लेख तूंही रुळावै ।

—मे. म.

रज्ज–१ देखो 'रज' (रू. भे.)

उ०—१ मांम तणौ वळ सूरमा, रिमां गिणै तिल रज्ज । ऊथाळै अजमाल छळ, भाळै प्रांण मकज्ज ।

—रा. रू.

उ०—२ गज्ज ऊधोळिया रज्ज सूं गूडळा । धोम में पव दीपै किरै धूवळा ।

—गु. रू. बं.

उ०—३ हाळिया एहड़ा घेर वंकी घड़ा। रज्ज उड्डै रवी धोमतै धूंधळै ।

—सू. प्र.

२ देखो 'राज्य' (रू. भे.)

उ०—ओरंग पतिसाही ग्रही, दहवटि करि दाराह। रज्ज पियारा रज्जियां, भाइ दुपियाराह ।

—व. व. ग्रं.

रज्जणी, रज्जवी–देखो 'राजणी राजवी' (रू. भे.)

उ०—दवूळ पीत लोभयं, सुरुप बीज सोभयं। निखंग पीठ रज्जयं, सुचाप पांणि सज्जयं ।

—र. ज. प्र.

रज्जसुळा–देखो 'रजस्वळा' (रू. भे.)

रज्जियौ–देखो 'राजवी' (रू. भे.)

उ०—ओरंग पतिसाहि ग्रही, दहवटि करि दाराह । रज्ज पियारा रज्जियां, भाइ दुपियाराह ।

—व. व. ग्रं.

रज्जी–१ देखो 'रज' (रू. भे.)

२ देखो 'रज्जु' (रू. भे.)

३ देखो 'रज्जू' (रू. भे.)

४ देखो 'राजा' (रू. भे.)

रज्जु–सं. पु. [सं.] १ रस्सी, डोरी, रस्सा ।

उ०—रज्जु विलंबी नै कुमर, पइसै कूप मझार ।

—वि. कु.

२ बागडोर ।

३ स्त्रियों के सिर की चोटी ।

४ शरीरस्थ रंग विशेष ।

५ एक प्रमाण विशेष (जैन)

वि. वि.–जैन मतानुसार ३, ८१, २७, ६७०, इतने मण के वजन को 'एक भार' कहते हैं। ऐसे १००० भार का लोहे का गोला उसे कोई देवता ऊंचे स्थान से नीचे को डाले, वह गोला ६ मास, ६ दिन, ६ पहर और ६ घड़ी में जितना क्षेत्र पार कर, उल्लंघन कर नीचे आवै, उतने क्षेत्र को एक रज्जु प्रमाण जगह कहते हैं।

६ देखो 'रज' (रू. भे.)

७ देखो 'रज्जू' (रू. भे.)

रू० भे०–रजु, रजू, रज्जी ।

रज्जुनांमौ–देखो 'रजूनांमौ' (रू. भे.)

रज्जू–वि.–१ प्रसन्न, खुश ।

२ सहमत, एकमत ।

३ अनुकूल ।

४ प्रत्यक्ष, सामने, रूबरू ।

रू० भे०–रजु, रजू, रज्जी ।

५ देखो 'रज्जु' (रू. भे.)

उ०—१ रज्जू में सरप सीप मांही रुपा, भ्रन होता है योई । तमगुण यूं समांन मुमुक्षी, कहने मातर होई ।

—श्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ तरु जड़ सरप दराड़ दिस्ट मिटी, सुद्ध रज्जू आतम थांणी । जाग्रत स्वप्न सुसुपती तुरीया, च्यारूं ई भरम विलांणी ।

—श्री सुखरांमजी महाराज

रटंत–देखो 'रट' (रू. भे.)

रटंती–सं. स्त्री.–माघ कृष्णा चतुर्दशी, जिस दिन सूर्योदय से पूर्व स्नान करना उत्तम माना जाता है ।

रट–सं. स्त्री.–१ ईश्वर या इष्ट के नाम को बार बार उच्चारण करने की क्रिया या भाव, ध्वनि, जप ।

उ०—रट हरि सुख पति ध्यांन रहायौ । मंजण कर सिणगार मंगायौ ।

—रा. रू.

२ किसी शब्द का बार बार किया जाने वाला उच्चारण या उच्चारण करते हुए याद करने का अभ्यास ।

रटक–सं. स्त्री.–१ मुकाबला, सामना, भिड़ंत, टक्कर ।

उ०— काळीगे ऊपरै करै काइमि कटक ।
राकसां हुंति रहमांण लीजै रटक । —पी. ग्रं.

२ तीव्र गति से किया जाने वाला आक्रमण, हमला ।

३ युद्ध, लड़ाई, झगड़ा ।

उ०— साहां तणी धरा सिर साटै, रहतौ खाय लेतौ रटक।
ग्रंत दिन पैलां ग्रनै ग्रापरा, करि माथै लेगौ कटक।
—राजा केसरीसिंघ शेखावत री गीत

क्रि. वि.–४ चाव से।

उ०—गुठा जीमतौ गटक, ग्रंव नहिं भावै वांनै।
राव रोगतां रटक, जरै नह सीरी ज्यांनै।
—जुगतीदांन देथौ

रू० भे०—रटक्क, रटाका, रट्टक।

ग्रल्पा०—रटकौ, रटक्कौ।

रटकणौ, रटकबौ–क्रि. स.–१ दौड़ना. भागना।

उ०—धाड़ा पाड़ कर रटके धूरत, वन पटकै घरधूंस।
नटके साधू बनै निराळा, सटके माळा मूंस।
—ऊ. का.

२ मुकाबला करना, सामना करना, टक्कर लेना।
३ आक्रमण करना, हमला करना, किसी पर टूट पड़ना।
४ युद्ध या लड़ाई करना।
रटकणहार, हारौ (हारी), रटकणियौ —वि.
रटकिग्रोड़ौ, रटकियोड़ौ, रटक्योड़ौ —भू. का. कृ.
रटकीजणौ, रटकीजबौ —कर्म वा.
रटक्कणौ, रटक्कबौ —रू. भे.

रटकियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ दौड़ा हुग्रा, भागा हुग्रा. २ मुकाबला किया हुग्रा, सामना किया हुग्रा, टक्कर लिया हुग्रा. ३ आक्रमण या हमला किया हुग्रा, किसी पर टूट कर पड़ा हुग्रा. ४ युद्ध या लड़ाई किया हुग्रा।
(स्त्री० रटकियोड़ी)

रटकौ–देखो 'रटक' (रू. भे.)

रटक्क–देखो 'रटक' (रू. भे.)

उ०—वधि चक्क उचक्कत राह वियै, करि हक्क कटक्क रटक्क कियै। —सू. प्र.

रटक्कणौ, रटक्कबौ–देखो 'रटकणौ, रटकबौ' (रू. भे.)

रटक्कियोड़ौ–देखो 'रटकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रटक्कियोड़ी)

रटक्कौ–देखो 'रटक' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०–१ रिम-न रटक्कां राचणा, जंगी जुड़ै न जंग। सिव जोगण भैरूं सगत, बिलखै लख बारंग। —रेवतसिंह भाटी

उ०—२ भटक्कां हजारां वहै, सरीखां वटक्कां भड़ै। रटक्कां वटक्कां, रिमां करै गाढै राव।
—बुधसिंह सिंढायच

रटण, रटणी–सं. स्त्री.–१ रटने की क्रिया या भाव, रट, जाप।
२ घोषणा।
३ जिव्हा, जीभ। (ग्र. मा.)

रटणौ, रटबौ–क्रि. स. [सं. रटनम्] १ इष्ट या ईश्वर के नाम का बार-बार उच्चारण करना, जाप करना, जपना, रटना। भगवत् भजन करना।

उ०—१ बन वे पुरख वडा पण बारी, खलक सिरोमण सुजस खटै। उमगै दांन ऊवमै ग्राचां, रांम रांम मुख हूंत रटै।
—र. रू.

उ०—२ उदर भरण घर घर ग्रटै, रटै नहीं स्रीरांम।
मूंस करै कवडी सटे, ते गुण घटे तमांम। —बां. दा.

उ०—३ ग्रथ ग्रोमकार ग्रक्षर उचार, निस दिवस नांम रट रांम रांम। —ऊ. का.

उ०—४ रांम रांम रसना रटै सोई जुग में साध।
हरीया सिवरन सहज का, वाका मता ग्रगाध।
—ग्रनुभव वांणी

२ किसी शब्द का बार बार उच्चारण करके याद करने का ग्रभ्यास करना।
३ किसी के गुण गाना, कीर्ति या यशोगान करना।
४ कहना, बोलना।

उ०—१ इम सुणि जवाब ग्रवरंग हूं, रावत जसवंत रा रटै।
नह दियां साह खावंद नरिंद, सीस दियां खावंद सटै।
—सू. प्र.

उ०—२ रटै हैक 'पदमौ' 'रतनावत'
दूजौ 'पदम' रटै 'दीलावत'। —सू. प्र.

५ विलाप करना, रुदन करना, रोना।

उ०—१ लागी दळि कळि मळयानिळ लागै, त्रिगुण परसतै खुधा त्रिस। रटति पूत मिसि मधुप रूंखराइ, मात स्रवति मधु दूध मिसि। —वेलि.

उ०—२ राजस्थांन रटै कविराजा, कीरत दांन कहांणी। गयौ जहांन हूंत गुण ग्राहक, 'मांन' हरौ माडांणी।
—ऊ. का.

६ जोर से बोलना, चिल्लाना, चीखना।
७ घोषणा करना।
८ गर्जना।
९ भूंकना।
रटणहार, हारौ (हारी), रटणियौ —वि०।
रटिग्रोड़ौ, रटियोड़ौ, रटचोड़ौ —भू. का. कृ.

रटीजणौ, रटीजवौ —कर्म वा.
रट्टणौ, रट्टवौ, रठणौ, रठवौ, —रू. भे.

रटांण—सं. स्त्री.—१ अनाज या फलादि की परिपक्वावस्था।
२ रटने की ध्वनि।

रटा—सं. स्त्री.—टक्कर

उ०—रिमां धू उथाळौ चंडी रीम गी रटा री जायौ। भालौ किनां ईस री जटा री जायौ भूत।

—सूरजमळ मीसण

वि०—गायक, गाने वाला।

उ०—दती घटा छटा सग दांमणि, सेलां पटां सिळाव सर। कवि जस रटा थटा गुण केकी, हरिदन छटा अजीत हर।

—महाराजा मांनसिंहजी री गीत

रटाका—देखो 'रटक' (रू. भे.)

उ०—ले भड़ा रटाकां पूर अरिंदा ताड़वा लागा, महावीर खीज मे पाड़वा लागा मूंठ।

—सुखदांन कवियौ

रटाणौ, रटावौ—क्रि. स. ['रटणौ' क्रिया का प्रे. रू.] इष्ट व ईश्वर के नाम का बार बार उच्चारण कराना, जाप कराना, जपाना, रटाना। भगवत भजन कराना।
२ किसी शब्द का बार बार उच्चारण करवा कर याद कराने का अभ्यास कराना।
३ किसी के गुण गाने या यशोगान करने के लिये प्रेरित करना।
४ बोलाना।
५ रुदन या विलाप कराना, रुलाना।
६ घोषणा कराना।
रटाणहार, हारौ (हारी), रटाणियौ —वि.
रटायोड़ौ —भू. का. कृ.
रटाईजणौ, रटाईजवौ —कर्म वा.
रटावणौ, रटाववौ —रू. भे.

रटायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ इष्ट या ईश्वर के नाम का बार बार उच्चारण कराया हुआ, जाप कराया हुआ, रटाया हुआ, भगवत भजन कराया हुआ। २ किसी के गुण या यश गाने के लिये प्रेरित किया हुआ। ३ किसी शब्द का बार बार उच्चारण कराकर याद कराने का अभ्यास कराया हुआ। ४ बोलाया हुआ। ५ रुदन या विलाप कराया हुआ, रुलाया हुआ। ६ घोषणा कराया हुआ।
(स्त्री. रटायोड़ी)

रटावणौ, रटाववौ—देखो 'रटाणौ, रटावौ' (रू. भे.)
रटावणहार, हारौ (हारी), रटावणियौ —वि.।
रटाविओड़ौ, रटावियोड़ौ, रटाव्योड़ौ —भू. का. कृ.।
रटावीजणौ, रटावीजवौ कर्म वा.।

रटावियोड़ौ—देखो 'रटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रटावियोड़ी)

रटियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ इष्ट या ईश्वर के नाम का बार-बार उच्चारण किया हुआ, जाप किया हुआ, जपा हुआ, रटा हुआ, भगवत् भजन किया हुआ। २ याद करने के लिये किसी शब्द का बार-बार उच्चारण किया हुआ. ३ किसी के गुण, यश या कीर्ति का गान किया हुआ. ४ कहा हुआ, बोला हुआ. ५ विलाप या रुदन किया हुआ, रोया हुआ. ६ जोर से बोला हुआ, चीखा हुआ, चिल्लाया हुआ. ७ घोषणा किया हुआ. ८ गर्जा हुआ. ९ भूंका हुआ।
(स्त्री. रटियोड़ी)

रट्टक—देखो 'रटक' (रू. भे.)

उ०—रट्टक तीरा की रची, थर अरुकट चित धार। फिर दट कर कीधी फतै, 'लाकहरट' की लार।

—जुगतीदांन देथौ

रट्टणौ, रट्टवौ—देखो 'रटणौ, रटवौ' (रू. भे.)

उ०—रीझ दिया रिड़माल नैं, नव कोट नमै नर। राव मुखां इम रट्टियौ, कमधज जोड़ै कर।

ठा. जुझारसिंह मेड़तियौ

रट्टियोड़ौ—देखो 'रटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रट्टियोडी)

रट्ठ—सं. स्त्री.—१ कड़ाके की सर्दी, तेज सर्दी।
२ देखो 'राष्ट्र' (रू. भे.)

रट्ठवड़, रट्ठवर, रट्ठोड़, रट्ठोर, रट्ठौड़, रट्ठौर—देखो 'राठौड़' (रू. भे.)

उ०—१ आज विहांणै रट्ठवड़, लड़सी लंकाळा।

—सू. प्र.

उ०—२ वंस प्रगट धिन भासकर, रट कुळवट रट्ठोड़। भल तो 'पातल' मुच्छ वट, जग उप्रवट जम जोड़।

—जैतदांन बारहठ

उ०—३ रनबंका ध्वज धज धुर रहंत। है कौन हूम रट्ठोर हंत।

— ऊ. का.

रठ–वि.–दृढ़, मजबूत ।

रठठ–सं. स्त्री.–१ भारी बोझ के कारण गाड़ी या शकट से चलते समय निकलने वाली ध्वनि विशेष ।
२ तलवार ।
उ०—'तेजलै' बियै कर **रठठ** भेळै तुरी, धोम पुड़ कठठ काय भटकती बीज ।
—मूळौ वीरांमियौ

रठठणौ, रठठबौ–क्रि. अ.–भारी बोझ के कारण गाड़ी या शकट का चलते समय आवाज करना ।

रठठाणौ, रठठावौ–क्रि. स.–घींसना, घसीटना ।
उ०—गाडीग्रां डांगरां घातिग्रां चरू **रठठाविजै** छै। तांह चरवां रा निहाव्या सूं पहाड़े पड़िसादानें रहिग्रा छै ।
—रा. सा. सं.

रठठायोड़ौ–भू. का. कृ.–घसीटा हुग्रा, घींसा हुग्रा ।
(स्त्री. रठठायोड़ी)

रठिठयोड़ौ–भू. का. कृ.–ग्रावाज किया हुग्रा ।

रठणौ, रठबौ–देखो 'रटणौ, रटबौ' (रू. भे.)

रठवड़–देखो 'राठौड़' (रू. भे.)

रठावठ–स. स्त्री.–मारकाट, मारपीट ।

रठीठ–वि.–दृढ, मजबूत ।

रठौर–देखो 'राठौड़' (रू. भे.)
उ०—बाल वय हूमैं जयकार हूवौ **रठौर** रंग। जंग सग दीन्ह ग्रंग नांहि ग्ररसायौ है ।
—साधु सेवादास

रड–देखो 'रढ' (रू. भे.)

रडकवौ–देखो 'रड़ौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)
उ०—ताहरां 'वेसवटै' कह्यौ, भाद्रवै री तेरस **रडकवौ** कनै चौगांन मुहै ग्राय ऊभी रहै ।
—मूळवै सांगावत री वात

रडणौ, रडबौ–देखो 'रड़णौ, रड़बौ' (रू. भे.)
उ०—१ खीजइ मूंभइ **रडइ** वाल जिम सयरु संतावइ। कमलिणि कांगणि मरण समाधि सा किमइ न पांमइ ।
—सालिभद्र सूरि

उ० –२ ग्रन्नदिणंतरि गिरिसिहरे राजा रमलि करेइ। कुंती करयल ग्रडवडिउ **रडयउ** भीमु रुडेइ ।
—सालिभद्र सूरि

उ०—३ रोती **रडती** ग्रावजै ।
—धरम पत्र

उ०—४ राय **रडइ** ग्रवनी पडइ, त्रूटइ ग्रूटइ वेणि। ग्रस्रुपात इम उल्लरइ, सवळ न खूटइ स्रेणि ।
—मा. कां. प्र.

उ०—५ कापडीग्रा मांहि कांमिनी, सो नर सूतउ भालि। कांम-कंदला कही **रडइ**, ग्रवर न वीजी ग्रालि ।
—मा. कां. प्र.

उ०—६ भाद्रवडइ सरोवर भरियां, नीर निरंतर होइ। रिदयां-भींतरि हुं **रडुं**, नीर निवारि न कोइ ।
—मा. कां. प्र.

रडवड–देखो 'रड़वड़' (रू. भे.)
उ०—तडफड साकुर हिंज तुंड। **रडवड** उड गड़ां जिम रुंड ।
—गो. रू.

रडवडणौ, रडवडबौ–देखो 'रड़वड़णौ, रड़वड़बौ' (रू. भे.)
उ०—**रडवडता** गलीए मूग्रा रे, मडा पड्या ठांम ठांम। गलि मांहे थइ गंदगी रे, छै कुण नांखण दांम ।
स. कु.

रडव्वड–देखो 'रड़वड़' (रू. भे.)
उ०—भडीयड भांजि मरग्गड मूंड। **रडव्वड** रैण करंडक रूंड ।
—गु. रू. वं.

रडाळ, रडाळौ–देखो 'रढाळ, रढाळौ' (रू. भे.)

रडियोड़ौ–देखो 'रड़ियोड़ौ' (रू. भे.) (स्त्री. रडियोड़ी)

रडी–देखो 'रड़ी' (रू. भे.)
उ०—राजा कह्यौ, **रडी** सांम्ही हंती तिका वात इये उपर ग्रांण उभी राख ।
—मूळवै सांगावत री वात

रडौ–देखो 'रड़ौ' (रू. भे.)
उ०—तू छै माघ कीयौह, गोल्हाटी ग्रावै **रडौ** । पेधर डिगीयौ पावडौ, बुडौ दीहाड़ोह ।
—देपाळ धंध री वात

रड्ड–देखो 'रढ' (रू. भे.)
उ०—मारुवाडि का देसमइं, एक न जाई **रड्ड**। कदि ही होइ ग्रवसरणउ, कइ फाकउ कइ तिड्ड ।
—ढो. मा.

रढ–स. पु.–१ हठ, जिद्द।

उ०—१ तरै कांनड़दे तो घणूं ही कह्यौ–वे कुण? म्हें कुण? पण वैर रढ मांड रही।

—नैणसी

उ०—२ स्त्री बालक पुहोवी धणी रे, ए तिहुं एक सभाव। रढ नवि छांडे आपणी रे, भावें तो घर जाय।

—प. च. चौ.

२ गर्व, अभिमान।

उ०—रढ मेटण रांमण रढरांण।

—ह. नां. मा.

३ अहंकार। (अ. मा., ह. नां. मा.)

४ कष्ट, संकट।

५ बल, शक्ति, पौरुष।

वि.–१ आन-बान वाला, महान, बड़ा।

२ वीर, बलवान।

३ दृढ़, मजबूत।

रू० भे०–रंढ, रड, रढ्ढ, रढि, रढ्ढ, रढ्ढ, रढ्ढ।

रढणौ, रढबौ–देखो 'रड़णौ, रड़बौ' (रू. भे.)

उ०—रढै डाढ काढे वढै नाग रीसे, वदन्ने वहे सोळ पंचास वीसे। काळी नागनी जुद्ध मातौ क्रसन्ने, वही जम्मनां पूर सिंदूर व्रन्ने।

—नागदमण

उ०—२ सिरै धणी 'आसोप' दुभल भळहळ तण दारण। रढै 'कन्ह' रांम रौ, स्यांम कांम रौ सुधारण।

—सू. प्र.

रढणहार, हारौ (हारी), रढणियौ —वि.।

रढिग्रोड़ौ, रढियोड़ौ, रढ्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रढीजणौ, रढीजबौ —कर्म वा.।

रढरांण, रढरांमण, रढरांवण–वि.–१ दृढ़, मजबूत, अटिग।

उ०—मुड्या नह केक तज्यौ नह मांण। रह्या वे पूरबिया रढरांण।

—गिरधरदांन ऊजळ

२ अपनी आन पर मरने वाला, दृढ़ प्रतिज्ञ।

उ०—१ 'सुरतौ' 'गजौ' लड़ण जुध सारां, 'हरी' तणां मीहरी हजारां। 'रांमौ' 'करन' तणौ रढरांमण, वाधै खगै पगै जिम वांमण।

—रा. रू.

उ०—२ मुरतांण मूं दीवांण संचित, तांण गर तुड़तांण। दे पांण जमदढ़ पांण दाखव, रांण जिण रढरांण।

—नैणसी

३ बलवान, शक्तिशाली।

उ०—चूंडराव रिणमल्ल, राउ 'जोधौ' रढरांमण। 'सूजौ' 'बाघौ' 'गंगेव' 'माल' गढ कोट पलट्टण।

—गु. रू. बं.

४ हठी, जिद्दी।

५ वीर, बहादुर।

उ०—रकेवां पाव दिया रढरांण हुवौ असवार मैंगळ रढरांण।

—गो. रू.

६ दुष्ट।

रू० भे०–रंढरांण, रंढरांणौ, रंढरांमण, रढराव।

रढराव, रढरावण–देखो 'रढरांमण' (रू. भे.)

उ०—१ जुड़ै रढराव बैहुंय जोध।

—गो. रू.

रढाळ, रढाळौ–वि.–१ हठी, जिद्दी।

उ०—१ झाटक कोट हुग्रौ झुंझाळ, रच भाराथ रढाळौ। पड़ियां सीस पछै पालटमी। अनडू पळोधी आळौ।

—आवड़दांन लालस

उ०—२ गौड़ मौड़, बंध ठौड़ गराढ़, राढ़ सूरति मिरी रढाळ। दुलहणि जोय 'बीदळ' रौ दुलहौ, मन उलही मेळै बरमाळ।

—कल्यांणदास राव

२ वीर, योद्धा।

उ०—१ रांम तणौ रिणछोड़ रढाळां धांधू वधि वाजण धाराळां। 'सुंदर' सुत 'सांमंत' सिधाळा, 'रैणायर' 'लखमण' रखवाळा।

—रा. रू.

उ०—२ 'करमसिंघ' कळिमत्थ, रूक 'राइसिंघ' रढाळा। बीदा विक्रमादित 'भीम' भारमल भुजाळा।

—गु. रू. बं.

३ शक्तिशाली, बलवान।

उ०—अंगद मेलियौ सद दूत अपंपर, बळ अकळां मजबूत वडाळौ। वप मिणगार धूत बळ वैठौ, रचै सभा अदभुत रढाळौ।

—र. रू.

रू० भे०–रंडाळ, रंडाळौ, रंढाळ, रंढाल, रंढाळौ, रंढालौ, रडाळ, रडाळौ, रढिग्राळौ, रढीलौ।

रढि–१ देखो 'रड़ी' (रू. भे.)
२ देखो 'रढ' (रू. भे.)

रढिग्राळौ–देखो 'रढाळौ' (रू. भे.)
उ०—के कांई कांमण करच्यूं, रे रढिग्राळा मित्त। तिणकी सुध भूली गई, चोरी लीवौ चित्त।
—ढो. मा.

रढियोड़ौ–देखो 'रड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रढियोड़ी)

रढीलौ–देखो 'रढाळौ' (रू. भे.)
उ०—ग्रालिम ग्रडीलौ रे किण ही परि ढीलौ रे। होवै न रढीलौ तुरक गयौ गुसे रे।
—प. च. चौ.

रढु, रढू, रढ्ढ–देखो 'रढ' (रू. भे.)
उ०—देवी रढ्ढ रे रूप दमकंध रूठी। देवी सील रे रूप सोमित्र त्रूठी।
—देवि.

रणंकणौ, रणंकवौ–देखो 'रणकणौ, रणकवौ' (रू. भे.)
उ०—१ रणंकै तिकां घोर रूड़ी रचाई, ठणंकै किनां भल्लरी ठोर ठाई।
—वं. भा.

उ०—२ खेलै कळाधार धींग डंडाळां पंखाळां खमै, रणंकै भेरी वीरूप सूरा भरै रीस।
—राव सत्रसाळ री गीत

उ०—३ वढै वीर तोपां सनाहां भणंका वजै। ग्रच्छरां रणंकै नगां नूपरां एवास।
—चिमनजी री गीत

रणंकियोड़ौ–भू. का. कृ.–ध्वनि हुवा हुग्रा, ध्वनित। भंकृत।
(स्त्री. रणंकियोड़ी)

रणंकौ–सं. पु.–किसी वाद्य या ग्राभूषण की ध्वनि, भणकार।
उ०—धे धी कट्ट था धा कट्ट, ताथिमंक ताधिमंक, रमा भमां ठमां ठमां क्रमै एण रीत। रणंका भणंका खांति भांति का रसाल सांमां, राइजादी देखै नाटक संगीत।
—ल. पिं.

रणंजय–सं. पु.–सूर्यवंशी एक राजा।
उ०—जिण न्रप वहनि मुजाव क्रंतजय। जेण सुजाव नरेस रणंजय।
—सू. प्र.

रणंताळ–देखो 'रणताळ' (रू. भे.)
उ०—राठौड़ रचेवा रणंताळ, वांमंग डहै वीजळा भाळ। वांधै कंदील संधै विवांण, कोसीस भुजै दीना कवांण।
—गु. रू. वं.

रण–सं. पु. [सं. रणम्] १ युद्ध, समर, जंग।
उ०—१ पास ग्राए की लाज कुळ काज विचारौ। मेरा रण मरणा कै जीवणा सुधारौ।
—रा. रू.
उ०—२ 'पीथल' जयचंद प्रगट मार खाई रण मीठी। नवरोजी परनार दिली गळ गई सह दीठी।
—ऊ. का.
उ०—३ गाहै गजराजां गुड़ां रुहिर मचावै कीच। ज्यांरै नवग्रह पाथरा, जे वंका रण वीच।
—वां. दा.
२ रण क्षेत्र, समर भूमि, युद्ध का मैदान।
उ०—सजै फौज कांठळ घरर घणां नीसांण घुर। ग्रनळ धुंग्रा रवण रण ऊजाथै।
—गु. रू. वं.
३ शोर गुल, ग्रावाज, ध्वनि।
४ वीणा का स्वर।
५ गति, चाल।
६ स्वर का ग्रल्पतम ग्रंग।
७ निर्जन वन।
उ०—ग्रोपौ ग्राढौ कहै ईसवर, नित राखूं चित थारौ नांम। तूं छती मांय देवण सुख तूं ही, रणां तणी वसती तूं रांम।
—ग्रोपौ ग्राढौ
८ नमक की भील।
९ वीणा वजाने का गज।
[सं. ऋणं] १० ऋण, कर्जा।
रू० भे०—रंण, रणि, रणी, रणु, रणौ, रन, रन्न, रिण, रिणौ।

रणकंकण–सं. पु.–१ एक प्रकार का वाजा जो राजा की सवारी के ग्रागे वजता था।
वि० वि०—एक भाले में कुछ छल्ले पिरोये होते थे जिनको हिलाने से छन छन की ग्रावाज होती थी। यह एक राज चिन्ह माना जाता था।
२ युद्ध के समय धारण किया जाने वाला कंकण नामक ग्राभूषण विशेष।

रणक–सं. स्त्री.–१ पायल या नूपुर की ग्रावाज, भनकार।
उ०—१ रंग पायलड़ी रणक मिळी भणक मंजीर। चंगा चसमां री चमक, सावन भमक सरीर।
—ग्रग्यात
उ०—२ पायल री रणक रै समचै दीवांणजी री रूं रूं ऊभौ व्हैगौ।
—फुलवाड़ी

२ किसी शस्त्र या वाद्य की आवाज ।

उ०—रणक घंट ददराज गाज ज्यूं ही गज गाजत । सिर अंकुस सिरताज, वीज उपमा ज विराजत ।

—सू. प्र.

३. याद, स्मरण ।

रू० भे०—रणांक, रनक ।

रणकणौ, रणकबौ–क्रि. अ.–१ किसी आभूषण या वाद्य की छन-छन आवाज होना, झनकार होना, मधुर ध्वनि होना, बजना ।

उ०—१ नाचत रणकत नेउरी ए, विहुं आगलि इंद्र अंतेउरी ए । टिगमिग जोवै जग सहुए, रंगहि गुण गावै सुर बहुए ।

—वृ. स्त.

उ०—२ जाभर पग रा भण भणै, त्यूं विछियां री तेज । किंकण रणकै कमर री, सिस वदनी री सेज । —अग्यात

२ शस्त्र खनकने की या टकराने की आवाज होना ।

३ रटने की आवाज होना ।

उ०—रमणी वरहीनां निरख नवीनां, रांम रांम रणकंदा है । कद्रप रा कीटा फबतन फीटा, भवर गुफा भणकंदा है ।

—ऊ. का.

रणकण हार, हारौ (हारी), रणकणियौ —वि.
रणकिग्रोड़ौ, रणकियोड़ौ, रणक्योड़ौ —भू. का. कृ.
रणकीजणौ, रणकीजबौ, —भाव वा.
रणकणौ, रणकबौ, रणणंकणौ, रणणंकबौ, रणणौ, रणबौ, रणवणणौ, रणवणबौ, रनंकणौ, रनंकबौ —रू. भे.

रणकाणौ, रणकाबौ–क्रि. स.–१ किसी वाद्य या आभूषण को बजाना ।

२ शस्त्र से आवाज करना ।

३ रट लगाना ।

रणकाण हार, हारौ (हारी), रणकाणियौ —वि.
रणकायोड़ौ —भू. का. कृ.
रणकाईजणौ, रणकाईजबौ —कर्म वा.
रणकारणौ, रणकारबौ, रणकावणौ, रणकावबौ —रू. भे.

रणकायोड़ौ–भू. का. कृ.–१ बजाया हुआ. (वाद्य या आभूषण) २ आवाज किया हुआ. (शस्त्र) ३ रट लगाया हुआ ।
(स्त्री. रणकायोड़ी)

रणकार–सं. स्त्री. १ आभूषण या वाद्य की झनकार ।

उ०—१ ठमके जांझर रणकार माथण देवै ।
म्हारा घण हेताळू सरदार संगत आछी लागै सा ।

—लो. गी.

उ०—२ जय जय नंदा कहै, लीयै टंटा रस गार ।
भेर भूगळ साथै, मरणाइ रणकार ।

—साह लाधौ

२ ध्वनि, रट ।

३ गुंजन ।

४ शस्त्र के टकराने की आवाज ।

रू० भे०—रणुंकार ।

रणकारणौ, रणकारबौ–देखो 'रणकाणौ, रणकाबौ' (रू. भे.)

उ०—झालर घंट जठै झणकारत, राव हजार गिरा रणकारत । ध्यांन गिनांन प्रभु गुण धारत, म्यांम सदा ग्रप कांम सुधारत ।

—अग्यात

रणकारियोड़ौ–देखो 'रणकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रणकारियोड़ी)

रणकारौ–सं. पु.–१ आभूषण या शस्त्र के खनकने की आवाज, झनकार ।

उ०—१ रम झम विछियां रा बजता रणकारा । झम झम जेहरि रा उठता झणकारा ।

—ऊ. का.

उ०—२ रेसमी गाभां रा सरणाटा उडावती । गैणां रा रणकारा पाडती । सौरम री भभरोळा विखेरती ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ घूघरा रा ऐड़ा रणकारा सुणण सारू हजार कांन व्है तौ ही थोडा । एक एक ततकार माथै इंदरापुरी री राज वारै तौ ही थोड़ौ ।

—फुलवाड़ी

उ०—४ नाई कह्यौ–अंदाता, इत्तौ कांई गैणौ पैरयौ । डील हिलतां ई रणकारा उठै ।

—फुलवाड़ी

२ राम नाम की रट या जाप से होने वाली ध्वनि ।

३ नगारे या वाद्य की ध्वनि ।

रणकालौ–वि.–युद्धोन्मत ।

उ०—किसै काम आवण रणकालौ, बांधै माथै मोड़ विलालौ । भुजडंड पकड़ ऊठियौ भालौ, लेवा भचक रुठियौ 'लालौ' ।

—लालसिंह राठौड़ रौ गीत

रणकावणौ, रणकावबौ–देखो 'रणकाणौ, रणकाबौ' (रू. भे.)

उ०—कपट कोट दहवट्ट गमावइ, नित नयवाद घटा रणकावइ जी ।

—वि. कु.

रणकावियोड़ौ–देखो 'रणकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रणकावियोड़ी)

रणकाहल–सं. पु.–युद्ध वाद्य विशेष ।

उ०—सरणाई सरतूर **रणकाहल** नफेरी तवल अनेक भेर तणे निरघोसि करी कटक सोभतू छइ ।

—व. स.

रणकियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ झनकार, आवाज या ध्वनि हुवा हुआ. (आभूषण, वाद्य) २ खनकने या टकराने से आवाज हुवा हुआ. (शस्त्र) ३ रटने की आवाज हुवा हुआ ।
(स्त्री. रणकियोड़ी)

रणकोविद–वि.–युद्ध कला में प्रवीण, रणकुशल ।

रणकौ–देखो 'रणकारौ' (रू. भे.)

उ०—डाळ डाळ बैठा पंछी उण रै वधावा रा गीत गावण मंडिया । वां मीठा गीतां रै **रणकै** वादळ अगाढ नींद सूं जागने बैठौ व्हियौ ।

—फुलवाड़ी

रणक्षेत्र–सं. पु. [सं. रणक्षेत्रम्] युद्ध का मैदान, रणभूमि ।
रू० भे०–रणखेत ।

रणखण–सं. पु. [सं. रण+क्षण] युद्ध के समय ।

उ०—खगवाहौ मिळियो खळां, मिळियौ **रणखण** पग्ग ।

—रा. रू.

रणखेत–देखो 'रणक्षेत्र' (रू. भे.)

उ०—नैतवंध वांनैत, मेळ **रणखेत** महंतां । विना दिवाळी वंध, जीण खाली मेमंतां ।

—रा. रू.

रणगळियार–सं. पु.–१ घायल ।

उ०—आढौ **रणगळियार** उठायौ, लागि नजांन अप्पपुर लायौ ।

—व. भा.

वि.–२ रणोन्मत्त ।

उ०—अर च्यारिही भायां समेत माधांणी हाडौ मुकुंदसिह गोड अरजुनसिंघ राठौड़ रत्नसिंह जिसड़ा जोवार काली रा कळस **रणगळियार** होड हाथियां रै माथै हाथ करता साथियां रै सूरतां गै मांग लगावता साहजादां रै समीप हालिया ।

—वं. भा.

रणगहल, रणगहिलउ–वि.–रणोन्मत्त, युद्धोन्मत्त ।

उ०—पंप नीरि परथै पवंग, अमिराइ साख अमहाय अंग । हीरड सतेजि ऊन्हई हठाळ, **रणगहिलउ** चडियउ राडपाळ ।

—रा. ज. सी.

रणचंगौ–वि.–युद्ध कला में प्रवीण, रण कुशल ।

उ०—मांणीगर दातार में, **रणचंगौ** जस खग्ग । जायौ नह अर जनमसी, जलाल जैसौ नग्ग ।

—जलाल बूबना री वात

रणचरचा–सं. स्त्री.–एक प्रकार की कला । (व. स.)

रणछोड़–सं. पु.–१ परमेश्वर, ईश्वर । (ह. नां. मा.)
२ श्रीकृष्ण का एक नामान्तर ।

उ०—१ नमौ जदुराज हळद्धर-जोड़। रैणायर-रूप नमौ **रणछोड़** नमौ सिसुपाळ मनावण संक, जरासंध जीपण सेन उजंक । —ह.र.

उ०—२ दीज्यो म्हांनै द्वारिका को वास, रूडा **रणछोड़** जी हो ।

—मीरां

वि०—युद्ध से भागने वाला, कायर । रू० भे० रिणछोड़

रणजीत–वि. [सं.] युद्ध में विजयी रहने वाला ।

रणजेव–सं. स्त्री. [म. रण+फा. जेव] एक प्रकार की तलवार विशेष ।

उ०—उठी 'विलंद' दळ असुर, वंधि मुगरवां जनेवां । पेमकवज खंजरां, जकड़ वणिया **रणजेवां** । मू. प्र.

रणझंण, रणझण–सं. स्त्री. [अनु.] ध्वनि विशेष, झनकार ।

उ०—घम घमंत घूघरी, पाय नेउरी **रणंझण** । डम डमंत डाकली ताळ ताळी वज्जै तण । —देवि.
रू० भे०—रंणझण,

रणझणकार, रणझणण–सं. स्त्री. [अनु.] मधुर झनकार ।

उ०—१ हार निगोदर वहिरखा, सखी नेउर **रणझणकार** कि ।

—कां. दे. प्र.

उ०—२ **रणझणण** नाद खुरमांण खागां रड़क, वाज खणखणण कडीयाल वंदी बड़क ।

—महादांन महड़

रणझणणौ, रणझणवौ–क्रि. अ.–मधुर ध्वनि होना ।

उ०—मरहट्ठी गादहि किसिउं कुंकुणउं वासइं, मालवी वांछ किसिउं मारुयं भासड, गोवर कीडउ किमिउं भ्रमर जिम **रणझणइ**

—व. म.

रणझुणौ–वि. जिससे मधुर झनकार निकलती हो ।

रणणंक–देखो 'रणकार'

रणणंकणौ, रणणंकवौ–देखो 'रणकणौ, रणकवौ' (रू. भे.)

उ०—सणणंकै खुरसांण खागधारां खणणकै। रणणंकै रणराग झलम पाखर झणणंकै। —वं. भा.

रणणंकियोड़ौ–देखो 'रणकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रणणंकियोड़ी)

रणण–सं. स्त्री.–देखो 'रणक'

उ०—थेइ थेइ थेइ ठवति पाय, वेणु वीणा करि वजाय। झें झें झंझरिय लाय, रणण रणण नेउरी।
मुरियाभ सुर करि प्रणांम, मांगति अव मुक्तिधांम। समयसुंदर सुजस नांम जय जय जय सांमरी। —स. कु.

रणणौ, रणवौ–देखो 'रणकणौ, रणकवौ' (रू. भे.)

रणतभंवर–सं. पु. [सं. रणस्तम्भ-पुर] १ राजस्थान का एक प्रदेश रणथंभोर (ऐतिहासिक)

उ०—माहपुरौ वराहडी ऐ सीसोदिया नूं दिया। टोडौ मालपुरौ ते कछवाहां नूं दिया। रणतभंवर खालसे राखियौ। कई परगना नरूकां नूं दिया।

गौड़ गोपाळदास री वारता

२ उक्त प्रदेश का गढ या किला।

उ०—गढ रणतभवर मे आवौ विनायक करो राज नीचीती विडदडी। —लो. गी.

३ उक्त किले में स्थित गणेशजी की मूर्ति।

४ मांगलिक अवसरों पर उक्त गजानन के नाम पर गाया जाने वाला एक लोक गीत।

रणताळ, रणताळि–सं. पु.–१ युद्ध, संग्राम। (ह. नां. मा.)

उ०—१ विकट रूप वीदगी, खुरम घट कीध आडंबर। लगन प्रव्व रणताळ, वमळ-मंगळ सिंधू-सुर।

गु. रू. वं.

उ०—२ ऊंनै राव वंमी वंस ऊंनै गोपाळ। दोनां तेग वरछी तोलि कीनू रणताळ। —शि. व.

२ युद्ध स्थल, रण भूमि।

उ०—१ चलै रत खाळ रणताळ इंद माचियौ। खेंग किरणांर देखण समर खांचियौ। —र. रू.

उ०—२ खित पड़ियौ नह पलचरां खाधौ, पावक घट सकियौ नह प्रजाळ। 'वीठल' सुन तणौ तन बढतां, त्रिजड़ां लाग गयौ रणताळ। —अरजुण गौड़ रौ गीत

उ०—३ चर मुरति निसाचर सपत चार, परि रूढ़ वयन्नर मसि पहार। आरुहिय अग्गि वनियउ अरूप, रणताळि रयनपण देस रूप।

—रा. ज. सी.

रू० भे०–रणंताळ, रिणताल अल्पा.—रणताळौ।

रणताळौ–देखो 'रणताळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ० – गड़ंकै जंगाळां नाळां कुंडाळां भणंकै गोग, तोड़वै तेजाळा रणंताळा में नवीठ।

—रावत सारंगदेव री गीत

रणतुर, रणतूर, रणतूरच–सं. पु.–एक समर-वाद्य विशेष।

उ०—१ ढोल तणौ ढमढ्रिमाट, पटह तणौ गुमगुमाटि, रणतुर तणे रणरणाटि घोडा तणौ हिंसाटि। —व. स.

उ०—२ निज धांम कांमी कांमिनी वे, लड्ड वेवक वयण नु। रणतूर नेउर खड़ग वेणी, धनुख रूपी नयण मु। —वि. कु.

उ०—३ विहुं पखे पाट पाखरयां घोड़ां, विहुं पखे रणतूरच वाजिवा लागां। —व. स.

उ०—४ वजवाडउ कोठी सहर वेव, हालिया हुव्य आगी हरेव। नांमिया समांण मोहनदि, रणतूर सहि पाखर रवदि। —रा. ज. सी.

रणत्कार–सं. पु.–शस्त्र प्रहार की ध्वनि।

उ०—जिकै वासुकि नाग री तरह लगलगाट करती मिलहबंध री कड़ियां नूं कतरती पिंड में पैठतां रणत्कार पड़ी।

—वं. भा.

रणथंब, रणथंबोर, रणथंभ, रणथंभोर–सं. पु. [सं. रण+स्तम्भ]

१ राजस्थान का रणथम्भोर प्रदेश व इस प्रदेश का गढ।

उ०—१ वढियौ मुखेस 'पतौ' वाढाळौ, वंकियौ सुरजन देख वढ। गढ चित्तौड़ गरव तण गरजै, गाडौ गौ रणथंब गढ।

—रावत पत्ता री गीत

उ०—२ राउ रणथंभ तणाह, जउहर जउहर जेहवा। कीधा भोजा कउ कंवरि, ववता वीस गुणाह। —अ. वचनिका

२ विजय स्मारक।

वि.–युद्ध को थाम कर रखने वाला योद्धा, वीर।

उ०—जीव दियौ जमवंत जद, चमकै लोक अचंभ। थिर पर

राजस्थांन रौ, थंभ गिरचौ रणथंभ ।

—ऊ. का.

रू० भे०-रणथंभ, रनथंभ ।

रणथंमण-वि. [सं. रण स्तम्भन] योद्धा, वीर ।

उ०—घट 'पातल' उवजौ घणौं, रणथंमण राठौड़ । थे मरियां मूं थाहरी, ठाली रहसी ठोड़ ।

—ऊ. का.

रणथट्ट-सं. पु. [सं. रण स्थात] १ युद्ध की शोभा, युद्ध की स्थिति ।

उ०—कट थट्ट गयौ खग भट्ट कहै । रणथट्ट घणा भट पास रहै ।

—पा. प्र.

रणथळ-देखो 'रणस्थल' (रू. भे.)

रणधीर-सं. पु.-१ विष्णु, ईश्वर, परमेश्वर । (डिं. को.)

२ श्री कृष्ण का एक नामान्तर ।

३ योद्धा, वीर ।

वि.-रण में धैर्य रखने वाला ।

रणधीरोत-सं. पु.-राठौड़ों की एक उप शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

रणनंदीतूरच-सं. पु.-एक युद्ध-वाद्य या समर वाद्य विशेष ।

(व. स.)

रणपखर-सं. पु.-एक प्रकार का कवच ।

उ०—किसी किसी पाखर, रणपखर जीणपखर गुडि पखर ।

—कां. दे. प्र.

रणप्रिय-सं. पु. [सं.] १ बाजपक्षी ।

२ विष्णु ?

रणबंकड़ौ, रणबंकौ, रणबांकुरौ, रणबांकौ-वि. [स. रणवक्र] १ युद्ध कला में प्रवीण । युद्ध-कुशल ।

२ वीर, योद्धा ।

रू० भे०-रणवंकौ, रनवंकौ ।

रणबुद्ध-वि.-युद्ध में कुशल ।

रणभणु, रणभणू-सं. पु. [अनु.] ध्वनि विशेष ।

उ०—राउल माहिं रणभणू राय थयु परिण मंद । ब्राह्मण-वड्डउ मांभरड, सभा-तणउ ते चंद ।

—मा. कां. प्र.

रणभमर, रणभांमर-वि. [सं. रण भ्रमरः] १ युद्धोन्मत ।

उ०—'माहव' को 'किरतौ' दळ मांहै, बाधै लड़ण जिकौ खग बाहै । 'जैतौ' 'वीक' तणौ जोरावर, 'भाऊ' तणौ सिवौ रणभांमर ।

—रा. रू.

२ युद्ध प्रिय ।

रणभूमि, रणभोम-सं. स्त्री. [सं. रणभूमि] लड़ाई का मैदान, युद्ध स्थल ।

उ०—सूर बाहर चढै चारणां सुरहरी, इतै जस जितै गिरनार आबू । बिहंड खळ खीचियां तणा दळ बिभाड़ै, पौढियौ सेज रणभोम 'पाबू' ।

—बां. दा.

रणमंडण-सं. पु. [सं. रणमंडनम्] युद्ध के आभूषण, साज-सज्जा ।

वि०-युद्ध की शोभा बढाने वाला वीर ।

रू० भे०—रणमांडण ।

रणमंडप-सं. पु. [सं. रणमंडपः] १ पृथ्वी भूमि ।

२ युद्ध स्थल, लड़ाई का मैदान ।

रणमंडा-सं. स्त्री.-पृथ्वी, भूमि । (डिं. को.)

रणमत्त-सं. पु. [सं.] हाथी, गज ।

वि०—युद्ध का मतवाला ।

रणमल्ल-सं. पु. [सं] योद्धा, सुभट, वीर ।

रणमांडण-देखो 'रणमंडण' (रू. भे.)

रणमांनी-वि. [सं. रणमानिन्] वीर, बहादुर, पराक्रमी ।

उ०—इण कुळ ही देवट अभिधांनी, मही भुजंग हुवौ रणमांनी । कुळ जिण रा देवड़ा कहाय, दांन समर अनुपम दरसाय ।

—वं. भा.

रणरंक-सं. पु.-हाथी के दोनों दांतों (बाहर दिखने वाले) के बीच का स्थान ।

रणरंग-सं. पु. [सं] १ युद्ध की उमंग या उत्साह ।

२ समर भूमि, युद्धस्थल ।

३ युद्ध, संग्राम ।

रणरणक-सं. पु.-१ कामदेव का एक नाम ।

२ प्रबल इच्छा, पिपासा ।

३ विकलता, घबराहट, त्वरा ।

४ देखो 'रणकार'

रणरणाट, रणरणाटि-सं. स्त्री.-किसी वाद्य की आवाज, ध्वनि, शब्द ।

उ०—ढोल तणे ढमढिमाट, पटह तणे गुम गुमाटि, रणतुर तणे रणरणाटि घोडा तणे हिसाटि ।

—व. स.

रणरसियौ, रणरसु–वि. [सं. रणम्+रसिकः] युद्ध रसिक, पराक्रमी, वीर, योद्धा ।

उ०—१ सखी अमीणौ साहिबौ, जम सूं मांडै जंग । ओळै अंग न राखही, रणरसियौ दै रंग ।

—बां. दा.

उ०—२ तींह्नि हूंफी ऊठइ करणु, अरजुनु पांमइ मूं करि मरणु । गेसि ऊठइं वेउ झूमेवा, रणरसु जोइं देवी देवा ।

—सालिभद्र सूरि

रणराग–सं. स्त्री.–सिंधु राग, वीर राग ।

उ०—दीनी सांवळां रणराग दुहीं । हिक वार पावू मन मोद हुवौ ।

—पा. प्र.

रणरीढ–वि.–युद्ध में तलवार चलाने वाला, योद्धा ।

रणरुह, रणरूह, वि.–जिसे युद्ध की उमंग हो, उत्साह हो ।

उ०—दिल्ली हूंत दुरूह, अकबर चढ़ियौ एकदम । रांण रसिक रणरूह, पलटै क्रेम प्रतापसी ।

—दुरसौ आढ़ौ

रणरोहि, रणरोही–सं. स्त्री.–१ निर्जन-वन, शून्य-जंगल, बीहड़ वन ।

उ०—गुणी सपत सुर गाय, कियौ किसब मूरख कनै । जांणै रुनौ जाय, रणरोही में राजिया ।

—किरपारांम

रू० भे० रनरोई, रनरोहि, रनरोही ।

रणलक्ष्मी, रणलखमी, रणलिखमी–युद्ध में विजय प्राप्त कराने वाली एक देवी, विजय लक्ष्मी ।

रणवंकौ–देखो 'रणवंकौ' (रू. भे.)

उ०—कर वागां नर भूं विया, तिजड परक्खै ताव । अणसंका आगै इता, रणवंका उमराव ।

—रा. रू.

रणवट्ट–सं. पु.–१ क्षत्रित्व, वीरत्व ।

उ०—रिमराह तियार वंधै रणवट्टां 'खेम' समोभ्रमि रोकि खळां । रुकै रिमराह बहादर राजै, भार ग्रहै निय भूग्रवळां ।

—गु. रू. बं.

२ युद्ध का मार्ग ।

रू० भे०—रणवाट ।

रणवणणौ, रणवणवौ–देखो 'रणकणौ, रणकवौ' (रू. भे.)

उ०—रणवणीया सवि संख तूर अंबर आकंपीउ । हय गयवर खुरि खणीय रेणु ऊडीक जगु झंखीउ ।

—सालिभद्र सूरि

रणवाड सं. पु.–युद्ध की चुनौती, ।

उ०—दिवस सात जां इण परि जाइं तां अच्चभू को रणवाइं । एतइं आविउं कटकु अपारु पंडव धाया लेई हथियार ।

—सालिभद्र सूरि

रू० भे०–रणवाद ।

रणवाट–देखो 'रणवट्ट' (रू. भे.)

उ०—कहर खग भाटणा वीर दूजा 'कुमळ' गाटणा विरद फौजां गजां खभ । पाट रा थंभ रणवाट रा थंभ पण, थाट रा राज रा मिमल रा थंभ ।

—सेरसिंह मेड़तिया रौ गीत

रणवाद–देखो 'रणवाड' (रू. भे.)

रणवादी–वि.–योद्धा, वीर ।

रणवास–सं. पु.–१ अन्तःपुर, रनिवास, जनानखाना ।

उ०—१ पछै इंद्र मान आमेर वण पवारचा, दिई जिण नींव अवदात दाढी । करी घण क्रपा रणवास पावन करण, चरण रज रांणियां सीस चाढी ।

—मे. म.

उ०—२ बूंदी महाराज छत्रसाल जी ने उदैपुर रांणै अड़सीजी मिकार रमतां चूक कर गोळी चलाई सो मुरछा आय गई, इतरै बूंदी रणवास में मोळियौ गयौ तद वारै माता कयौ थें सत मत करौ इण म्हारौ दूध लजायौ ।

—वी. स. टी.

२ अन्तःपुर में रहने वाला स्त्री–समुदाय ।

उ०—पाती वाची आ ती सजन समाज । पाती वाची आ तौ मारौ रणवास ।

—गी. रां.

३ रानी ।

उ०—राजा निय रणवास हूं, अक्खी एक सु वत्त । न्रप सोभा खत्री धरम, त्रिय सोभा पतिव्रत्त ।

—गु. रू. बं.

रू० भे०–रणिवास, रनवास, रनिवास ।

रणव्रति, रणव्रती–सं. पु.–सैनिक, योद्धा ।

रणसिंगौ, रणसिंघौ, रणसींगौ-सं. पु.-१ युद्ध के समय बजाया जाने वाला एक वाद्य जो सींग का बना होता है।

उ०—१ तुरी करनाळ रणसींगौ वाज रह्यौ छै।
—रा. सा. सं.

उ०—२ दया रणसिंघौ वाजियौ, जागौ जागौ नरनार। मुगत नगर में चालणौ तुमे वेगा हुयजो त्यार रे।
—जयवांणी

रणसुणौ, रणसूणौ-वि.-युद्ध में झूंझ कर वीरगति प्राप्त करने वाला।

रणस्तंभ-देखो 'रणथंभ' (रू. भे.)

रणस्थल-सं. पु. [सं.] युद्ध का मैदान, रणक्षेत्र।
रू० भे०-रणथळ।

रणांक-देखो 'रणक' (रू. भे.)

रणांगण, रणांगन-सं. पु. [सं. रण+अंगनं] रणभूमि, रणक्षेत्र।

उ०—ईम अरजन रणांगण रुधउ, बांण पंजरि घणउं दळ मूंवउं आकुलउ अति सुयोधन हूउ, कउण जीवड किहां कुण मूउ।
—मालिसूरि

रू० भे०-रिणांगण।

रणि-१ देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—१ चांपां धणी मांडिया चावै, वीठळ खळां सरिस खग वाहि। अड़ियौ 'जमै' मेल्हियौ ऊभौ, पड़ियै रणि पायौ पतिसाहि।
—विठळदास चांपावत री गीत

उ०—२ रांमा अवतारि वहै रणि रावण, किसी सीख करुणाकरण।
—वेलि

२ देखो 'रेण' (रू. भे.)
३ देखो 'रिण' (रू. भे.)
४ देखो 'रिणी' (रू. भे.)

रणियु-देखो 'रिणी' (रू. भे.)

उ०—तेहनि सुत नल नांमि सुंदर, जांणै मन्मथ रणियु। देव पितर नि मनुस्य तणां रे, राय टल्यु ते रणियु।
—नळाख्यांन

रणिवाउल. रणिवाउलौ-वि. [सं. रणवातुल] युद्धोन्मत।

उ०—पहिली तुरक तणी ऊठवणी, रणिवाउला विछूटा। घोंड माटे देई हींदू नी, फोज मांहि जई फूटा।
—कां. दे. प्र.

रणिवास-देखो 'रणवास' (रू. भे.)

रणी-वि.-१ योद्धा, वीर।
२ देखो 'रण' (रू. भे.)
३ देखो 'रेण' (रू. भे.)
४ देखो 'रिणी' (रू. भे.)

रणुंकार-देखो 'रणकार' (रू. भे.)

उ०—रणुंकार की धुंन सूं, यूं कर जीव जगीजे ए। स्रवण सुची रुची वारके, सार अनहद को लीजे ए।
—स्री सुखरांमजी महाराज

रणु-देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—करि करवालु जु करीउ करणु समहरि रणु माडइ। फारक पायक तुरग, नाग नवि कोइ छंडइ।
—सालिभद्र सूरि

रणेचर-सं. पु. [सं. रणचर] विष्णु।
वि.-१ योद्धा, वीर।
२ मांसाहारी।

रणेत-देखो 'रनेत' (रू. भे.)

रणेस-सं. पु. [सं. रणेश] १ विष्णु।
२ शिव।
वि.--योद्धा, वीर।

रणोई-सं. स्त्री. [सं. रण+रा. रोही=सुनसान] २ युद्धस्थल, रण भूमि।

उ०—रण खेतां में ऊगै नाही दूव, कोई रणोई तो बोलै आधी रात ने ए मोरी सइयां।
—अग्यात

रू० भे०-रिणोई, रिणोही।

रणौ-देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—गाया म्है मांगिया पखै गुण, गढपति गांमां पती गणौ। मोटा खत्री द्रवौ मेवाडा, रांण खत्री वंस तणौ रणौ।
—दुरसौ आढौ

रतंग-सं. पु.-रक्त, खून।

उ०—१ रवदां खग वाहतौ रांमावुत, रेणा पुड़ भेदियौ रतंग। भुजंग सुपेद लाल रंग भेदियौ, भूली तिण आंटै भुयंग।
—चतुरा रांमावत री गीत

उ०—खळ कटै सहेता जरद खगां खतंग, खळक धावां रतंग दरद खाथै। तठै लड़वा घड़ी खेल रीझव पतंग, मरद सुजड़ी जड़ी मतंग माथै।
—गुलाबसिंह चूंडावत री गीत

वि. [सं. रक्त+अंग] रक्तिम, लाल।

रतंनागर–देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—ए रतंनागर पास गोमती, जादव जगत्र नरेस। हरख वदन हुआ हरि जोसी, कीधुं अग्र प्रवेस।

—रुकमणि मंगळ

रतंबर–वि. [सं. रक्ताम्बर] रक्त वर्ण, लाल।

उ०—कब काजळ जळ चले रार डांसियां रतंबर। अंग तणंच आछटै ओढ न्हांखै सिर अंबर।

—पा. प्र.

रत–सं. पु. [सं. रतम्] १ रति-क्रीड़ा, मैथुन, संभोग।

उ०—१ वीरपाळ साह री बेटी गौरज्या विधवा वरस तेरह री पुसकरजी ऊपर तप करती। नवै वरस च्यार हुआ जद जबरी सुं वीमळदे डण सू रत कियी।

—बां. दा. ख्यात

उ०—२ रत ज्यूं दत जाचक रसक, जांचै वे कर जोड़। ननी भंणै नव नार ज्यूं, मूढ क्रपण मुख मोड़।

—बां. दा.

२ प्रेम, प्रीति, प्यार।

[सं. रति] ३ कामदेव की स्त्री रति।

उ०—रावण ससा दिग्गज रूप दंडकवन रमैं, निरलज सुपनखा तिण नांम नरक अनंग में। सीतानाथ आगळ सार आई विण समैं, भाळ मकाति अदभुत नरम सुचि रत संभ्रमें।

—र. रू.

४ गुह्यांग।

५ हर्ष, खुशी, आनन्द।

[सं. रात्रि] ६ रात्रि, रात।

उ०—१ सो पीउं छंदि हथड़ै, सरस पत्रीभत। जांगुं ढोलो जागवी, गळती मझम रत।

—ढो. मा.

उ०—२ मंझि समंदां वींट घर, जळ सूं जांमो पत्त। किणही अवगुण कूंझड़ी, कुरळी मांझिम रत्त।

—ढो. मा.

[सं. ऋतु] ७ ऋतु, मौसम।

उ०—१ वाघ सिंघ वितर घणा, भुंइ वीहती चालइ रे। चालइ नइ सालइ वरसा रत घणु ए।

—नळदवदंती रास

उ०—२ आवी सब रत आंमळी, त्रिया करइ सिणगार। जिका हिया न फाटही, दूर गया भरतार।

—ढो. मा.

[सं. रक्तः] ८ रक्त, खून, रुधिर।

उ०—१ उडै पग हात किरका हुवै अंग रा, वहै रत जेम मावण वहाळा। आग आवी वरी जोयनै आड़ियां, लड़ै रिण झळझला निराताळा।

—र. रू.

उ०—२ ढहै ढींचाळ रत गाळ खळकै धरा। जुड़ै वड़पड़ै भड़दड़ जड़ालै।

—नैणसी

उ०—३ भव-नार फिरै रत पत्र भरै, जुड़ वाक गिरै काई छाक जरै।

—रा. रू.

उ०—४ कठठी वे घटा करै काळाहणि, समुहै आंमहो सांमुहो। जोगिणि आवी आडंग जांणे, वरसै रत वेपुड़ी वहै।

—वेलि.

वि. [सं. रत] १ प्रेम में फंसा हुआ, अनुरक्त, आसक्त।

उ०—१ नारी नागिनि एक-सी, बाघिनी बड़ी बलाइ। दादू जे नर रत भये, तिनका सरवस खाइ।

—दादू वांणी

उ०—२ लग्गी हांम विलासं, वित्ती अग्यात प्रात मध्यांनं। सायंकाल निसीतं, रतं भूप चूंप मदनायं।

—रा. रू.

२ मुग्ध, मोहित।

३ मस्त, मग्न।

उ०—१ महीना बारै होय गया छै, म्यारांमजी मैलां मैं रत होय रहा छै।

—मयारांम दरजी री वात

उ०—२ ऐसे वन में रत थकी, करतो केळि किल्लोळ। निडर थकी विचरत सदा, संग लिये सब टोळ।

—गज उद्धार

४ लीन, तल्लीन, तन्मय।

उ०—१ रहै रत ध्यांन अठयासी रिख्ख, लहै नंहं पार ब्रहम्मा लक्ख।

—ह. र.

उ०—२ राता तत चिंता रत चिंता रत, गिरि कंदरि घरि विन्है गए। निद्रावस जग एहु महानिसी, जांमिए कांमिए जागरए।

—वेलि

उ०—३ अह मत तज ईसर भज ईसर, करणाकर सघर सुतन दसरथ को। अक छिन तन ऊधारण, रत कर चित्त चरण रघुबर रे।

—र. ज. प्र.

५ प्रसन्न, खुश ।

६ प्रिय ।

उ०—ओर वस्त रत नही मुहि भावै (हो रांणाजी) यह गुरुयांन हमारा । —मीरां

७ युक्त ।

उ०—१ संपेख अग नग साखसी, रत रोस मारग राखसी । तिह नाक पांण विछेद पाडै, वांण इक रघुवीर । —र. रू.

[सं. रक्तम्, रक्तः] ८ लाल ।

उ०—बावहिया रत पंखिया, बोलह मधुरी वांणि । काइ लवंतउ माठि कर, परदेसी प्रिउ आंणि । —ढो. मा.

रू० भे०—रति, रत्त ।

रतकील, रतकीलर—सं. पु. [सं. रतकीलः] श्वान, कुत्ता । (अ. मा.)

रतखाळ, रतखाळौ—सं. पु. [सं. रक्तः+रा. खाळ] रुधिर का नाला, खून की धारा ।

उ०—१ पड़ै बुरजां धजां ऊपरै पाथरां, सूर जमहर करै पड़ै सारां । पड़ै परनाळ रतखाळ चीखळ पड़ै, वीढि पड़ै गौड़ गढ़ पड़ै वारां । —उदैभांण हरभांण गौड़ री गीत

उ०—२ रिळिया रिणताळां कट किरमाळां, सीस भुजाळां मूंडाळा । चालै रतखाळां तेण विचाळां, पंखरिणयाळा पोम्वंतू । —भगतमाळ

रतग—सं. स्त्री.—कोयल । (अ. मा.)

रतगुरु—सं. पु. [सं.] पति, खाविंद ।

रतचंदण, रतचंदन—देखो 'रक्तचंदन' (रू. भे.)

उ०—घणा रत द्रुव फटा खिळ घाट । पड़ै रतचंदण जांणि कपाट । —सू. प्र.

रतजगौ—देखो 'रातीजोगौ' (रू. भे.) (मा. म)

रतडउ—देखो 'रातौ' (अल्पा., रू. भे.)

रतण—देखो 'रत्न' (रू. भे.)

उ०—दियौ गाजता गयंद, दियै तोखार विवह परि । दियै गांव कोठारि, दियै रतण थाळां भरि । —जगदेव पंवार री वोत

रतणाकर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—चरण पग्वारयां रतणाकर री धारा गोमत जोर । धजा पताका तटतट राजां झालर री झक झोर । —मीरां

रतदांन—देखो 'रतिदांन' (रू. भे.)

उ०—एह समिए एक अगन, सांमी मिळी सुजांन । देह अग रतदांन मोही, विरह संतावत वांन । —कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

रतद्रग—देखो 'रक्तनेत्र' (अ. मा.)

रतन—सं. पु.—१ सूर्य, रवि । (अ. मा.)

२ चन्द्रमा, शशि । (अ. मा., ना. डि. को.)

३ उडगन, तारा ।

उ०—रतनां छाई रात । —अग्यात

४ द्दग, नेत्र, आंख । (ना. डि. को.)

उ०—मी सजन चालंतड़ां, रोय रोय गमै रतन । पडीया विसरा चौसरा, आंसु मोती व्रन । —ढो. मा.

५ अमृत, सुधा । (अ. मा., ह. नां. मा.)

६ शंख । (अ. मा., ह. नां. मा.)

७ छप्पय छंद का बासठवां भेद जिसमें ९ गुरू व १३४ लघु होते हैं । मतान्तर से १२ गुरु व १२८ लघु भी होते हैं ।

८ एक छंद विशेष जिसमें प्रथम दो जगण, एक सगण, एक नगण तथा अंत लघु-गुरु होते हैं ।

९ डिंगल के वेलिया सांणोर (छोटा सांणोर) छंद का एक भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले में ४ लघु ३० गुरु कुल ६४ मात्राएं होती हैं तथा इसी क्रम से शेष द्वालों में ४ लघु ५८ गुरु कुल ६२ मात्राएं होती हैं । —पि. प्र.

१० एक मात्रिक छंद विशेष जिसमें १३ मात्राएं व अंत गुरु-लघु होता है । (र. ज. प्र.)

रू० भे०—रतन्न, रतन्नि ।

११ देखो 'रत्न' (रू. भे.)

उ०—१ मुरधर में 'पातल' मरद, इक्को रतन अमोल । लोकां ने तो लादसी, मरियां पाछै मोल । —ऊ. का.

उ०—२ पायौ जी म्हैं तो रांम रतन धन पायौ । —मीरां

उ०—३ सूरज खांखळ रतन सल, पोहमी रिण जळ पंक । कायर कटक कळंक इम, कुकवी सभा कळंक । —बां. दा.

उ०—४ भूप जड़ावै मुगट मझ, रोहणगिर उतपत्त । निस दीपग प्रतिनिध रतन, प्रभा अपूरब भत्त । —बां. दा.

उ०—५ कूंभाथळ मोताहळां, भरिया वप गिर भांत । चद्र वरण गज रतन मैं, वंगड़ वरणिया दांत । —बां. दा.

उ०—६ मोर मुकट वनमाळ, माळ तुलसी नव मंजर । रुचि कुंडळ कळ रतन, तिलक मंजुल पीतांबर । —रा. रू.

रतनकर—देखो 'रत्नकर' (रू. भे.) (नां. मा., ह. नां. मा.)

रतनकचोळियौ, रतनकचोळौ—सं. पु.—कटोरा, प्याला ।

उ०—१ पेट गवां की जी लोथ, मिरगानैणी जी राज, सूंडी तौ कहियै रतनकचोळियां जी, म्हांरा राज । —लो. गी.

उ०—२ महंदी भीजै भीजै रतनकचोळै वीच । पेम रस महंदी राचणी । —लो. गी.

रतनकांवळ, रतनकांवल—देखो 'रत्नकंवळ' (रू. भे.)

उ०—पछि वस्त्र पहिरावइ, देवदूखित वस्त्र, रतनकांवल, चीर, सोनइरी पांमरी खीरोदक खासा अधोतरी...... । —व. स.

रतनकूट—देखो 'रत्नकूट' (रू. भे.)

रतनगरभ—देखो 'रत्नगरभ' (रू. भे.)

रतनगरभा—देखो 'रत्नगरभा' (रू. भे.)

रतनगिरि, रतनगिरी—देखो 'रत्नगिरि' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

रतनघर—देखो 'रत्नघर' (रू. भे.) (पिं. प्र.)

रतनचंद्र—देखो 'रत्नचंद्र' (रू. भे.)

रतनचौक—स. पु.—एक आभूषण विशेष ।

उ०—जड़ाव रा बाजूबंध कांकण रतनचौक आरसी बींटी विराज रही छै । वळै चूड़ी सोनैरी बंगड़ीदार विराजै छै । —रा. मा. सं.

रतनजोत, रतनजोतियौ—सं. स्त्री.— १ एक प्रकार की मणि ।

स. पु.—२ काश्मीर व कुंमाऊ की पहाड़ियों में पाया जाने वाला एक क्षुप विशेष ।

३ पुनर्नवा नामक क्षुप विशेष ।

४ एक प्रकार का पौधा जिसके दूध के लगाने से तलवार का घाव मिट जाता है ।

उ०—जांगणिर रतनजोत रा, पय रौ प्रथक प्रभाव । गात करै घण घाव वौ, घणा भरै औ घाव । —रेवतसिंह भाटी

रतनपारख—देखो 'रत्न परीक्षा' (रू. भे.)

रतनपारखी, रतनपारखू—देखो 'रत्न परीक्षक' (रू. भे.)

रतनपेच—सं. पु.—शिर में पगड़ी के साथ धारण करने का आभूषण विशेष ।

उ०—मोतियां का तुररा रतनपेचूं के वीच ऐसा दरसाए । मांनू नवग्रह पास तारा गण आए । —सू. प्र.

रतनभरी—देखो 'रत्नभरिता' (रू. भे.)

उ०—एतइं अतिरथि सारथि आवइ । करण तणु कुलु राउ जणावइ । मइं गंगा ऊगमतइ दीस लाधी रतनभरी मंजुस । —सालिभद्र सूरि

रतनमालती—सं स्त्री. १ एक प्रकार की लता ।

२ उक्त लता का फूल । (अ. मा.)

रतनमै—वि. [सं. रत्न-मय] रत्नों से युक्त ।

उ०—मुख सिख संधि तिलक रतनमै मंडित, गयौ जु हूंतौ पूठि गळि । आयै क्रिसन मांग मग आयौ, भाग कि जांणै भालियळि । —वेलि

रतनरांणौ—सं. पु.—१ ऊमरकोट के सोढा रांणा रतनसिंह की याद में गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

रतनरासी—देखो 'रत्नरासि' (रू. भे.)

रतनसांन, रतनसांनु—देखो 'रत्नसांनु' (रू. भे.)

रतनसिंहोत—सं. पु.—राठौड़ों की एक उपशाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

रतनांगरभ—देखो 'रत्नगरभा' (रू. भे.) (डिं. को.)

रतनांळिय—सं. पु.—१ एक मांसाहारी पक्षी जिसकी चोंच लाल होती है ।

उ०—गिर आंग तजै अड मग्गि ग्रही । रतनांलिय अंबर लाग रही । —पा. प्र.

२ रुधिर-नाली ।

रतनाकर, रतनागर, रतनाघर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.) (अ. मा., डिं. नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ वय किसोर ऊतरै, जोर जोबन परगट्टै । अणमायौ अंग मै, ति किरि रतनाकर तट्टै । —रा. रू.

उ०—२ बदळी ए म्हांरी चांद छिपायौ रतनागर सूं नीर जे भरियौ वरसण ने घेरौ ए लगायौ । —लो. गी.

उ०—३ मथै रतनागर माहव मन्न । रंभा सु पसाय सुं लीध रतन्न । —मा. वचनिका

उ०—४ करमसीहौ गत्री करम का उजागर । कांम कांम अवसांण मांम का रतनागर । —रा. रू.

रतनार—वि.—१ लाल रंग का, लाल ।

२ सुर्खी लिए हुए, सुर्ख ।

रू० भे०—रतिनार ।

सं. पु.—पुरुवंशीय रंतिभार राजा का नामान्तर ।

रतनारा, रतनारी—सं. स्त्री.—१ लालिमा, लाली ।

२ सुर्खी ।

रतनाळ, रतनाळिय, रतनाळी, रतनाळीय, रतनाळौ—वि.—लाल, सुर्ख ।

उ०—१ जो जो झांवड़ियां जाती जतनाळी। रौ रौ आंखड़ियां राती रतनाळी। —ऊ. का.

उ०—२ धन धन देव देव जगंनाथ। अमर काया रतनाळीय आंख। —वी. दे.

उ०—३ इण भांति री तूं जी हलका ज्यों लचकती, रतनाळा लोचनां, अणिआळा काजळ सारीजै छै। —रा. सा. सं.

उ०—४ वांहुडीयां रतनाळीयां, छकी भूह नैणेह। जण जण साथ न वोलही, मारु सुगंध घणेह। —ढो. मा.

रतनावळी—देखो 'रत्नावली' (रू. भे.) (अ. मा.)

रतन्न—१ देखो 'रतन' (रू. भे)

उ०—१ 'वीक' हर राउ मांभळि वचन्न, रीसाइ किया राता रतन्न। ऊससिय वोमि लागउ अवीह, सांभळिए कथिने जइतसीह। —रा. ज. सी.

उ०—२ राता किया रतन्न, तैं विछड़ता दिन तिकण। विछुहा मोती व्रन्न, वे आंसू सालै अजैं। —अग्यात

२ देखो 'रत्न' (रू. भे.)

उ०—१ नमो कंस-केसि-विधूंसण कन्ह। रुकम्मणि-प्रांण पुरुक्ख रतन्न। —ह. र.

उ०—२ अगम अगोचर राखिये, कर कर कोटि जतन्न। दादू छांना क्यों रहै, जिस घट रांम रतन्न। —दादूवांणी

उ०—३ जस गाडा भरियो जुड़ै, जग सो करां जतन्न। श्री आभरणां आभरण, रतनां सिरै रतन्न। —वां. दा.

रतन्नगरभा, रतन्नग्रभा—देखो 'रत्नगरभा' (रू भे)

उ०—सुवपि सोळ स्रंगार, लाज वत्रीसड लक्खण। खम्या धरम धीरज, सील संतोख सतोगुण। रभा देवांगना, रतन्नगरभा पति रत्ती। गगा गवरि लिछम्मि, जिसी सीतासतवंती। अखेराज वंस जसराज ध्रू, ध्रू जिम धारण नह फिरी, 'अमरेस' पुत्र जिण जमियौ, धन चहुवांण कणंगिरी। —गु. रू. वं.

रतनासबोध—स. पु.—सागर, समुद्र।

रतन्नि,—१ देखो 'रत्न' (रू. भे.)

उ०—१ वर्णं सांमलौ गात भीणे वसन्ने, तिसी भूखणे जोत मोती रतन्ने। —रा. रू.

उ०—२ रमणी घणी रूपि रतन्नि, निरखी एकाएक असंम। पण जाळोर नगर पदमनी, दीठी गउखि जांणि दांमिनी। —ढो. मा.

२ देखो 'रतन' (रू. भे.)

रतपंड—देखो 'रक्तपिंड' (रू. भे.)

उ०—पिंड विहंड वह भरत रतपंड। सिहंड ध्वज मुख वयंड ध्वजसंड। —सू. प्र.

रतपति, रतपती—देखो 'रतिपति' (रू. भे.) (अ. मा.)

रतपरस—सं. पु. [सं. ऋतु-स्पर्श] श्वान, कुत्ता। (अ. मा.)

रतपिंड—देखो 'रक्तपिंड' (रू. भे.)

उ०—वढै वप वीजळ खंडविहंड। पड़ै धर तांम किया रतपिंड। —सू. प्र.

रतफळ—सं. पु.—वट वृक्ष। (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

रतवंध—देखो 'रतिवंध' (रू. भे.)

रतवीज—देखो 'रक्तवीज' (रू. भे.)

रतमुंहौ—वि. [सं. रक्त+मुख] १ लाल मुंह वाला।

२ जिसका मुख रक्त मे सना हो।

रतमेळ—देखो 'रतिमेळ' (रू. भे.)

रतरस—सं. पु. [सं. रतिरस] श्रृंगार रस। प्रेम रस।

रतराज—देखो 'रितुराज' (रू. भे.)

रतळ—देखो 'रताळ' (रू. भे.)

रतवंती—देखो 'रतिवंती' (रू. भे.)

रतवा—सं. स्त्री.—१ एक प्रकार की घास जो घोड़ों के लिये अच्छी समझी जाती है।

२ गेहूं की फसल का एक रोग।

३ वालकों का एक रोग, जिसके कारण शरीर पर लाल लाल फुंसियां हो जाती हैं।

रतवाह, रतवाहौ—देखो 'रातीवाहौ' (रू. भे.)

उ०—१ रतवाह पावू पर...... । —पा. प्र.

उ०—२ पडसां रतवाहै रवदां पर, आवै आप करीजौ ऊपर। —पा. प्र.

रतवील—सं. पु.—श्वान, कुत्ता। (अ. मा.)

रतसांई—सं. पु. [सं. ऋतुस्वामी] कुत्ता, श्वान। (अ. मा.)

रतांजणि, रतांजणी—सं. स्त्री.—वनस्पति विशेष।

उ०—१ रांमोडी नइं रासना रीगिणी रुद्र-जटाय। रांग रतांजणि हंमड़ी, रनिवनि रंग धराय। —मा. कां. प्र.

उ०—२ रावण रांग रतांजणी रवणी नइं रुद्राख। रुकरुदंती रायसलि, रोहड रोहिणि लाख। —मा. कां. प्र.

रतांनो—वि.—लाल मुंह वाली (भेड़)।

रता—सं. स्त्री.—दक्ष प्रजापति की एक कन्या, जो धर्म ऋषि की पत्नी थी।

वि.–अनुरक्त, आशक्त, रत ।

रताळ, रताळू–सं. पु.–पिंडालू नामक कंद, जिसकी तरकारी बनती है ।

उ०—१ अमरकंद आदूं अलां, सूरण रोभ रताळ। वच्छ नाग वाकुंभियां, भेडागारी भालि । —मा. कां. प्र.

उ०—२ अजरख जमीकंद रताळू का विसतार। अंबु नीबू अंगीर कैरूं का आचार । – सू. प्र.

रू० भे०–रतळू ।

रति–सं. स्त्री. [सं.] १ धर्म ऋषि के पुत्र कामदेव की स्त्री, जो दक्ष प्रजापति की पुत्री थी ।

उ०—१ इक दिस कांन्ह इक दिस राधा। रति मनमथ दोऊं लख लाजै । —रसीलेराज री गीत

उ०—२ वसुदेव पिता सुत थिया वासुदे, प्रदुमन सुत पित जगत पति । सासू देवकी रांमा सु वहू, रांमा सासू वहू रति । —वेलि

उ०—३ दीसती मनोहारिणी इसी की स्वरग आवी उरवसी, सुवरण चंपक गोरी, इसीउ आवी गोरी, राजहंस गति कि दीसती छइ रति, वचन विग्यांनवती सरस्वती । —व. स.

२ रति क्रीड़ा, काम क्रीड़ा, संभोग, मैथुन ।

उ०—१ संकुड़ित समसमा संध्या समयै, रति वंछति रुखमणि रमणि। पथिक वधू द्रिठि पंख पंखियां, कमळ पत्र सूरिज किरणि । —वेलि

उ०—२ मंदिरंतरि किया खिणंतरि मिळिवा, विचित्र सखिए समाव्रत। कीधै तिणि वीवाह संसक्रित, करण सु तणु रति संसक्रत । —वेलि

उ०—३ सध्या को समय हुओ छै। क्रस्णजी रति वांछै छै। —वेलि टी.

३ मैथुन या संभोग की इच्छा, काम वासना ।

उ०—येक तौ तत चिंता सो राता छै। परमेस्वर स्यूं लीन हुआ । अर दूसरा रति सौं राता छै। —वेलि टी.

४ प्रीति, प्रेम, अनुराग ।

५ आनन्द, तृप्ति, संतुष्टि ।

६ किसी में रत होने की दशा या भाव, आशक्ति ।

७ कान्ति, दीप्ति, आभा, सुंदरता, छवि, शोभा ।

उ०—कुळ वैदही जनकजा रति कोटी अभिरांम ।

—अवधांन माळा

८ सौभाग्य ।

९ गुप्त भेद, रहस्य ।

१०–शृंगार रस में स्थाई भाव । (साहित्य)

११ अलकापुरी की एक अप्सरा ।

१२ ऋषभदेव के वंशज, विभुराजा की पत्नी और पृथुसेण की माता ।

१३ सोना, औषधि आदि तोलने का एक तोल विशेष ।

१४ घुघची ।

रू० भे०—रंति, रइं, रद, रई, रती, रत्ति ।

१५ देखो 'रितु' (रू. भे.)

उ०—१ साहब स्यांम समाळ, महेल महेलियां । रूड़ै नीर सुगंध, धरा रंगरेलियां । रति अनुकूळ विलास घणां रळियांमणा, मौसम दीसै इंद्र लियूं हूं भांमणा । —बां. दा.

उ०—२ रति छह मेह अणछेह दूजो रयण । तेह रायण जुगां चार तांई । —छत्तरसिंह हाडा रो गीत

३ घर अंबर घड़हड़ै, छिपां धूमर भर छाए । रज अंबर अरड़ाव जेठ रति जिम चढि आए । —सू. प्र.

१६ देखो 'रात' (रू. भे.)

उ०—राजा भूलरि रांणियां, सोहै ईही भांति । किरि वेधांणै किरतियां, चंदो पूनम रति । —गु. रू. बं.

१७ देखो 'रत' (रू. भे)

उ०—१ मुनेसर मन अनंग सुमति । रंगै बद अग विगै रंग रति । —रांमरासो

उ०—२ दीया दे दे पोढती, रहती पीया रति । जन हरिया जम आयके, लेग्यो आगै घति । —अनुभववांणी

१८ देखो 'रत्ती' (रू. भे.)

रतिक–देखो 'रत्तीक' (रू. भे.)

रतिकर–वि. [सं.] १ आनन्द व सुखप्रद ।

२ कामी, विलासी, विलासप्रिय ।

सं. पु.–कामी व्यक्ति ।

रतिकळह–सं. पु. [सं. रतिकलहम्] रतिक्रीड़ा, संभोग, मैथुन ।

रतिकळा, रतिकला–सं. स्त्री. १ श्रीकृष्ण की एक प्राणसखी ।

२ मैथुन कला ।

रतिकांत–सं. पु. [सं.] रतिपति कामदेव ।

रतिका–सं. स्त्री. [सं.] संगीत के ऋषभ स्वर की एक व अंतिम श्रुति ।

रतिकील–सं. पु. [सं.] कूकर, श्वान । (ह. नां. मा.)

रतिकुहर–सं. पु. [सं.] योनि, भग ।

रतिकेळि–सं. स्त्री.–संभोग, मैथुन ।

रतिक्रिया—सं. स्त्री.—संभोग, मैथुन।

रतिगुण—सं. पु. [सं.] एक देवगंधर्व जो, कश्यप एवं प्राधा के पुत्रों में से एक था।

रतिग्रह—सं. पु. [सं. रतिगृह] १ योनि, भग।
२ केलिगृह।

रतिताल—सं. पु.—संगीत में ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

रतिदांन—सं. पु.—संभोग की आकांक्षा वाली स्त्री के साथ किया जाने वाला संभोग, मैथुन।

उ०—देवरणनै **रतिदांन** जाच जाचूं फिर जाचूं। रीझावरण दिन रात नाच नाचूं फिर नाचूं। —ऊ. का.
रू० भे०—रतदांन

रतिनाग—सं. पु. [सं.] कामशास्त्र के अनुसार सोलह प्रकार के रतिबंधों में से एक।

रतिनाथ, रतिनायक—सं. पु. [सं] कामदेव। (डिं. को.)

रतिनार—सं. पु. [सं.] १ पुरुवंशीय रंतिभार राजा का नामान्तर।
२ देखो 'रतनार' (रू. भे.)

रतिनाह—सं. पु. [सं. रतिनाथ] रतिपति कामदेव।

रतिपति, रतिपती—सं. पु. [सं. रतिपति] कामदेव।

उ०—१ अत परमल पसर पसरिया आंबा, मुक पिक बोलै सुखद सराग। **रतिपति** तांरणै धनुख जठै रुच, वरसांरणै देखरण ज्यूं बाग। —वां. दा.

उ०—२ **रतिपति** रयरिण दिवस संतापति, व्यापति विरह दुक्ख दियु दियु रे। राजुल कहइ सखि सांमि सुंदर विणु, कइसइ ठौर रहइ जियु जियु रे। —स. कु.
रू० भे०—रतपति, रतपती, रतीपति, रतीपती।

रतिपद—सं. पु.—नव अक्षर का एक वृत्त जिसमें आठ लघु और अन्त में एक गुरु होता है। (र. ज. प्र.)

रतिप्रिय—सं. पु. [सं.] कामदेव।
वि.—कामुक, विलासी।

रतिप्रिया—वि. स्त्री. [सं.] कामुक (स्त्री), अधिक मैथुन या संभोग कराने वाली।

सं. स्त्री.—शक्ति की एक मूर्ति (तांत्रिक)।

रतिप्रीता—सं. स्त्री. [सं.] काम वासना में रत रहने वाली स्त्री, कामुक स्त्री।

रतिबंध—सं. पु. [सं.] काम शास्त्र के अनुसार, मैथुन का एक ढंग।

रतिवाह—देखो 'रातीवाहौ' (रू. भे.)

उ०—अर बूडता वचता बीजा चतुरंग नूं चळ-विचळ हुवौ जांरिण **रतिवाह** देर अचांणक आइ वाढियौ। —वं. भा.

रतिभवन—सं. पु. [सं.] १ योनि, भग।
२ मैथुन करने का स्थान, कक्ष। केलिगृह।
रू० भे०—रतिभौन।

रतिभाव—सं. पु. [सं.] १ शृंगार रस का स्थाई भाव (साहित्य)।
२ प्रेम, प्रीति।
३ स्त्री पुरुष का परस्पर प्रेम।

रतिभौन—देखो 'रतिभवन' (रू. भे.)

रतिमंदिर—सं. पु. [सं.] १ योनि, भग।
२ वह स्थान जहां पर मैथुन या संभोग का कार्य किया जाता है। केलिगृह।

रतिमित्र—सं. पु. [सं.] काम शास्त्रानुसार मैथुन का एक आसन।

रतिमेळ—सं. पु.—मैथुन क्रिया।
रू० भे०—रतमेळ।

रतिया—देखो 'रात' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—पनरां दिनां **रतियां** पख एक पुजाई। —केसोदास गाडरण

रतियाव—सं. पु.—देखो 'रातीवाहौ' (रू. भे.)

रतिरमण—सं. पु. [सं.] १ कामदेव।

उ०—कुंअर-कमला **रति-रमण**, मयरण महाभड नांम। पंकजि पूजिय पय-कमळ, प्रथम जि करूं प्रणांम। —मा. कां. प्र.
२ रतिक्रीड़ा।
रू० भे०—रतिरयरण।

रतिरयण—देखो 'रतिरमरण' (रू. भे.)

उ०—**रतिरयण** सुदि नर नारि रांमति, गाळि प्रमदति गावही। मुख गांन दिन निस स्वांम मंगळ, वैंण चंग वजावही। —रा. रू.

रतिराज, रतिराय—सं. पु.—कामदेव, मदन।

उ०—१ कर गहि लीधी ढोलिये, सायधरण कंत सकाज। हाथां हाथ मीलावीयी, रति जांरणै **रतिराज**। —पनां

उ०—२ नवरंग सनेह आणंद नव, उभळ प्रफूळ उझाळ सूं। **रतिराज** जोड़ नर रज्जिए, महाराज 'अभमाळ' सूं। —सू. प्र.

उ०—३ त्रिरिण वरस माहि निज प्रांरिण साधि सुंधुं मनावी आंरण, पनर वरस पोढउ रांजांन, रूपवंत **रतिराय** समांरण। —ढो. मा.

रतिरास—सं. पु.—रति क्रीड़ा।

उ०—नह उंन्हालु सीत रति, नहु पावस प्रकास। जिरिण मंदिरि नवि जांणीइ, तिहां रमइ **रति-रास**। —मा. कां. प्र.

रतिलील-सं. पु.-संगीत में ताल का एक भेद ।

रतिलीला-सं. स्त्री. [सं.] रतिक्रीड़ा ।

रतिवंत-वि. (स्त्री. रतिवंती) १ सुन्दर, खूब सूरत, मनोरम ।
 २ प्रियतम, प्रेमी ।
 ३ रसिक ।
 ४ बलवान, शक्तिशाली ।

रतिवंती-वि. स्त्री.-१ प्रेम से युक्त, प्रेममय ।
 उ०—रतिवंती आरति करै, रांम सनेही आव । दादू अवसर अब मिळै, यहु विरहनि का भाव । —दादूवांणी
 २ सुन्दरी, रूपसी ।
 ३ प्रियतमा, प्रेमिका ।
 रू० भे०—रतवंती,

रतिवर-सं. पु. [सं.] कामदेव ।

रतिवरद्धन-सं. पु. [सं. रतिवर्द्धन] वैद्यक में कई प्रकार की वस्तुओं के योग से बनने वाला एक पुष्टिकारक मोदक ।

रतिवल्लभ-सं. पु. [सं.] कामदेव, मदन ।

रतिवाउ-देखो 'रातीवाहौ' (रू. भे.)
 उ०—पाछ पीलि पापी करइ कूडु दीधउ रतिवाउ । निहणीय पंच पंचाल बाल अनु राखसि जाउ । —सालिभद्र सूरि

रतिवास, रतिवासौ रतिवाह रतिवाहौ-देखो 'रातीवाहौ' (रू. भे.)
 उ०—१ सायपुरै रतिवास जठै डेरा तज भागौ । सफरा तट जुध समैं, लोह हेकौ नह लागौ । बरस निनांणु बिचै, सुक्रत ऐकौ नह कीधौ, रांणी अड़सी छोड, पटौ रतनारौ लीधौ । देवसा कवर मरै दुसट, पदियौ वांदी पूजियौ । मीकमा कमंध मोटा मिनख, तै जीवर कामूं कियौ । —अरजुनजी बारहट

 उ०—२ अर नागपुर री लजा केगास नूं भळाय अणिहलपुर गजनवी रा अनीक में रतिवाह देण वणाय हांकियौ हूवौ । —वं. भा.

 उ—३ मेंवासे रा मेर, भरै कोचर में भाभा । रतिवाहा ध्रै राज, प्राछ करि जायइ प्राभा । —ध. व. ग्रं.

रतिविदग्धा-सं. स्त्री. [सं.] हस्तिनापुर की एक वेश्या ।

रतिसरवस्वा-सं. स्त्री. [सं. रतिसर्वस्वा] श्रीकृष्ण की एक प्राण सखी ।

रतिसाधन-सं. पु. [सं.] १ पुरुष का शिश्न ।
 २ मैथुन सम्बंधी साधन ।

रतिसास्त्र-सं. पु. [सं. रतिशास्त्र] काम-शास्त्र ।

रतिसुंदर-सं. पु. [सं.] काम शास्त्र के अनुसार एक प्रकार का रतिबंध ।

रती-सं. स्त्री.-१ शक्ति, बल ।
 २ देखो 'रत्ती' (रू. भे.) (अ. मा.)
 उ०—१ हेक रती नह हालियो सोनो रांवण साथ । निजावण लोभी करै, आय साथ अससाथ —बां. दा.

 उ०—२ महातम ध्येय रती नहि गम्य । गनी निगमागम गेय अगम्य । —ऊ. का.

 उ०—३ सत्रु ग्राह आगी, गयो दूध मारा । रती मान राखी रही सूंट बारा । —भगतमाळ

 उ०—४ हरिजन सोनो सोळवो, रती न खोट समाय । हरीया साकट लोह ज्युं, काटै सरघोई थाय । — अनुभववांणी
 ३ देखो 'रति' (रू. भे.)

 उ०—भूपाळ सिघ घन भूपती, रिझवार कीरत वड रती । अंग लियां पोरस आसती, अवधेस जुध अणभंग । —र. ज. प्र.
 ४ देखो 'रात' (रू. भे.)

 उ० रिम दौड़ियो दिवस [illegible] रतीयां । मोहर सक्र पुगि मेड़तियां । —रा. रू.

रतीक-देखो 'रत्तीक' (रू. भे.)

रतीपति, रतीपती-देखो 'रतिपति' (रू. भे.)
 उ०—त्रिसन्न विमोह विमन्न त्रियांन । रतीपति तात प्रकन्न राजांन । —ह. र.

रतीयन, रतीयेक-देखो 'रत्तीक' (रू. भे.)
 उ०—१ हरीया लेख लिलाट का, मेटया कभी न जाय । या मैं तिल भरि नां वधै, रतीयन घाटै थाय । —अनुभव वांणी

 उ०—२ कांमी नर कै कांम कौ, हरीया रतीयेक सुख । या तैं अधिको ऊपजै, मेर प्रवांणै दुख । —अनुभववांणी

रतीवांन-देखो 'रतिवंत'
 उ०—इत्तै ई में तो एक लंबधड़ंग, काळी कांबळ ओढियोड़ी, रतीवाळी जीवती जागती मूरती आय धमकी । —वरसगांठ

रतीवाहौ-देखो 'रातीवाहौ' (रू. भे.)
 उ०—पछै राठौड़ किलांणदास रायमलोत रतीवाहौ मांणस ५० तथा ६० सुं दीयौ । —नैणसी

रतुओ-सं. पु.-बरसात की मौसम में होने वाला एक पौधा, जिसके पत्ते छोटे व गोल होते हैं तथा फूल पीले होते हैं ।

रतोपळ-देखो 'रक्तोत्पळ' ।

रतोर-सं. पु.-लाल मुंह का बड़ा चूहा।

रतौ-देखो 'रातौ' (रू. भे.)

उ०—१ जौंरौ करै फजीतीयां, रोय रोय रता नैंण। हरीया हरि विन जीव कौ, मजन नां कोई सैंण। —अनुभववांणी

उ०—२ रंमता रांम एक रंग रता, माया मोह विखै नहीं मता। उतिम साध मु लछन थोरा, मो कहीयै अजरांमर वीरां।

—अनुभववांणी

उ०—३ रांण री लीव गुढवाड़, समहर रतौ। मालगढ़ वासि जिणि लीध गढ़ मेड़तौ। —सू. प्र.

उ०—४ मरद छतौ आपह मतौ, थप्पै मोटी थाप। रावत वट रतौ रहै, यौ रावत परताप।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

रत्त-देखो 'रक्त' (रू. भे.)

उ०—१ एक असुर ऊवरै, तांम भागी रत्त भरतां। झाग मुख छिव छिवै, नैणा तरवरै तरतां। —मा. वचनिका

उ०—२ गडग्गड जोगणि रत्त गिळंत। हृडहृड नारद रिख हसंत। —गु. रू. वं.

उ०—३ मरदिया जेम जगमल्ल मल्ल। ढण्डोळि ढल्ल मारिय मुगल्ल। रळतळइ रत्त सोखइ सपत्त, सम्भळइ सत्त विसथरइ वत्त। —रा. ज. सी.

उ०—४ घुम्मै खेतरपाळ रे घन रत्त घुटक्के। —व. भा.

२ देखो 'रत' (रू. भे.)

उ०—१ घरि पूठी घर सांमहा, मह जुवांणा सत्थ। मन रत्त मनमत्थ सूं, मन चाहै मनरत्थ। —गु. रू. वं.

उ०—२ रत्ता सांमी धरम सूं, रांमा कांम ही रत्त। मन मोटा दिन पद्धरा, भड वका गहमत्त। —गु. रू. वं.

३ देखो 'रात' (रू. भे.)

उ०—मंझि समदां वींट घर जळ सूं जांमौ, पत्त। किणही अवगुण कूंझड़ी, कुरळी मांझिम रत्त। —ढो. मा.

४ देखो 'रातौ' (रू. भे.)

रत्तउ-देखो 'रातौ' (रू. भे.)

उ०—अहर रंग रत्तउ हुवइ, मुख काजळ मसि-अन्न। जांण्यउ गुंजाहल अछइ, तेण न ढूकउ मन्न। —ढो. मा

रत्तक-सं. पु.-लाल रंग का एक पत्थर विशेष। (ग्वालियर)

रत्तड़ी-देखो 'रात' (अल्पा., रू. भे.)

रत्तड़ौ-देखो 'रातौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ तीखा लोयण कटि करळ, उर रत्तड़ा विवीह। ढोला थांकी मारुई, जांणि विलूधउ सीह। —ढो. मा.

उ०—२ केहर कुंभ विदारियौ, तोड़ दुहत्थां दंत। रुहिर कळाई रत्तड़ी, मद तर तैं महकंत। —बां. दा.

उ०—३ केहरि मरू कळाइयां रुहिरज रत्तड़ियांह।

(स्त्री. रत्तड़ी) —हा. झा.

रत्तडउ-देखो 'रातौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—क्षणु ऐक जि रवि रत्तडउ, आथमतइ आकासि। दैवइं दुस्ट करि लिखिउ, तिम माहरि घरवासि।

—मा. कां. प्र.

रत्तर-देखो 'रक्त'

उ०—पियै भर रत्तर पत्तर पूर, वगत्तर टोप उडै खगवूर।

—पे. रू.

रत्तळ-देखो 'रक्त' (रू. भे.)

उ०—गयंदां ढळ ऊथळ- पथळ गयंडीथळ, मूळ नहीं सळ दुझळ मुडै। रत्तळ झळ खखळ वखळ खळळ रिणरीथळ, जोध रिणमल अपल जुडै। —गु. रू. वं.

रत्ति-१ देखो 'रति' (रू. भे.)

२ देखो 'रत्ती' (रू. भे.)

३ देखो 'रात' (रू. भे.)

रत्ती-सं. स्त्री. [सं. रक्तिका] १ आठ चावल के बरावर या माशे के आठवें अंश के बरावर का एक तोल जो, प्रायः सोना जवाहरात आदि तोलने में काम आता है।

वि. वि.—मतान्तर से छठा अंश भी माना जाता है।

२ उक्त मान का बाट।

३ उक्त मात्रा के बरावर सोना या अन्य पदार्थ।

४ चिरमी या घूंघची का दाना जो उक्त तौल के बरावर माना जाता है।

[सं. रत्ती]-५ शोभा, छवि, कान्ति।

उ०—पंगराज प्रमांण प्रगट चढ़ियौ 'अभपत्ती'। सह जांणियौ संसार, राज झाळाहळ रत्ती। —सू. प्र.

६ प्रेम, अनुराग।

उ०—परणिजै त्रिभुवन पत्ती, भगतवछळ एण भत्ती। मेघ किनिया रूपमत्ती, रांम सां रत्ती। —पी. ग्रं.

वि०—१ अत्यल्प, तनिक, किंचित, रंचमात्र।

२ लाल, रक्ताभ।

उ०—१ यां मुख झूठी आखनैं, पुगी साह दवार। अरज हुवंतां असपती, कीवी रत्ती रार। —रा. रू.

उ०—२ 'जगपत्ती' उण जोस में, रत्ती आग समांण। वनसपती, खळ जाळवा, कर तत्ती केवांण। —रा. रू.

३ अनुरक्त, आशक्त।

४ लीन।

५ देखो 'रात' (रू. भे.)

रत्तीक-वि.-रत्तीभर, तनिक, थोड़ा सा।

रू० भे०—रतिक, रतीक, रतीयेक।

रत्तौ- देखो 'रातौ' (रू. भे.)

उ०—१ रत्ता तो नाम जिकै घण रूप। कदै न पड़ै नर सौ भव कूप। —ह. र.

उ०—२ अकबर रत्ता राग सूं. रंग त्रिया रस लद्ध। जो उतपात प्रगट्टियौ, सो सुणियौ निस-अद्ध। —रा. रू.

उ०—३ नकेलां न के घात गोळां नुखत्तां। रसै बाधियै खोलिया कोप रत्तां। —रा. रू.

उ०—४ मेवाडी नीमे मरण, रत्तौ रिण गिम्मार। लोह सवाहै भुज्जवळ, छडै मोह संसार। —गु. रू. वं.

रत्थ-देखो 'रथ' (रू. भे.)

उ०—हैकंपै कायरां प्रांण छूटगा वीरांण हांसै। भैचक्कै भूलोक रत्थां थंमायी सु भांण। —बादरदांन दधवाड़ियौ

रत्थ्या-स. पु. [सं] मार्ग।

उ०—वैरस वैरागी त्यागी तन तावै, वेला तेला विधि सहजां वण आवै। पत्थ्या पाटण दै भिक्ष्याटण भाजी, रत्थ्या करपट लै चरपटवत राजी। —ऊ. का.

रत्थी-देखो 'रथी' (रू. भे.)

रत्थौ-देखो 'रथ' (रू. भे.)

उ०—काळ भैरव रुद्र भद्र काळी, हरखि हसि दीध नारद ताळी। दपण सूं दियौ राठौड़ वत्थां, रवी रहतांण आकास रत्थां। —गु. रू. वं.

रत्न-सं. पु. [सं.] १ आभूषणों में जड़ने, कंठाहार बनाने या औषधियों में काम आने वाले, विशिष्ट प्रकार के छोटे व चमकीले खनिज पदार्थ या पत्थर, जो बड़े कीमती होते हैं। हीरे, जवाहरात, मोती, मणियां आदि।

वि. वि.-इनकी संख्या ५, ९ या १४ मानी जाती है।

२ कोई अमूल्य वस्तु।

३ कोई सर्व श्रेष्ठ वस्तु।

उ०—अत्र थो प्रसिद्ध आतपत्र मात्र आरव्यन को, छत्र छत्रधारिन नछत्र मुख्य माता को। जाता रह्या लेके वो अमोल रत्न दाता 'जसू'। पोल में विधाता पायौ मोल मांनधाता को। —ऊ. का.

४ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक। (व. स.)

५ पांच, नौ व चौदह की संख्या। ※

वि०—१ जो अमूल्य हो।

२ जो सर्व श्रेष्ठ हो।

३ पांच, नौ व चौदह।

देखो 'रतनत्रय'।

रू० भे०—रतण, रतन, रतन्न, रतन्नि।

रत्नकंवळ, रत्नकंवल-सं. पु.-एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—पछइ भला वस्त्र पहिराया ते कुण कुण, देव दुस्य वस्त्र रत्नकंबल पांमडी खीरोदक मसज्जर चीणी बुलबुल चसमा अतलस लाहि अटांण खासा सेलां मुलमुल.................. —व. स.

रू० भे०—रतनकांवळ, रतनकांबल।

रत्नकर-सं. पु. [सं.] कुवेर।

रू० भे०—रतनकर।

रत्नकूट-सं. पु. [सं] १ एक पर्वत का नाम। (पौराणिक)

२ एक वोधिसत्व।

रू० भे०—रतनकूट।

रत्नकूटा-सं. स्त्री. [सं.] अत्रि ऋषि की पत्नियों में से एक।

रत्नगरभ-सं. पु. [सं. रत्नगर्भः] समुद्र, सागर।

रू० भे०—रतनगरभ।

रत्नगरभा-सं. स्त्री. [सं. रत्नगर्भा] १ पृथ्वी, भूमि।

२ नर रत्न उत्पन्न करने वाली (स्त्री)

रू० भे०—रतनगरभा, रतनागरभ, रतन्नगरभा, रतन्नग्रब्भा।

रत्नगिरि-सं. पु. [सं.] बिहार का एक पर्वत। (ऐतिहासिक)

रू० भे०-रतनगिरि, रतनगिरी, रत्नागरि, रत्नागिरि।

रत्नग्रीव-सं. पु. [सं.] कांचन नगरी का एक राजा, जो विष्णु का परम भक्त था।

रत्नघर-सं. पु. [सं.] समुद्र, सागर।

रू० भे०-रत्नघर।

रत्नचंद्र-सं. पु. [सं.] रत्नों के अधिष्ठाता एक देवता।

रत्नचूड-सं. पु. [सं.] पाताल लोक का एक राजा।

रत्नजटित, रत्नजड़ित-वि. [सं. रत्नजठित] जिसमें रत्नजड़े हुए हों।

उ०—रत्नकरंड ऊघाड्यौ, रत्नजटित छइ हार। आभरण वीजा घणा, अनोपम छइ सार। —नळदवदंती रास

रत्नजालक, रत्नजालि–सं. पु.–एक प्रकार का आभूषण। (व. स.)

उ०—चंद्रावली सूरयावली नक्षत्रावली स्रोणीसूत्र कांचीकलाप रसना किरीट चूडांमणि मुद्रांनंतक दसमुद्रिका अंगुलीयक अंगूथला हेमजालक मणिजालक रत्नजालक मांनक। —व. स.

रत्नत्रय–सं. पु.–जैन दर्शनानुसार–सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान व सम्यक चरित्र इन तीनों का समूह।

रत्नदांमा–सं. स्त्री. [सं. रत्नदामा] राजा जनक की स्त्री व सीता की माता का नाम।

रत्नदीप–देखो 'रत्नप्रदीप'

रत्नधेनु–सं. स्त्री. [सं. रत्न+धेनु] रत्नों की बनी गाय, जिसके दान का बड़ा माहात्म्य माना है।

रत्ननाभ–सं. पु. [सं.] विष्णु का एक नामान्तर।

रत्ननिधांन–वि. [सं. रत्ननिधानम्] जिसके पास रत्नों की निधि हो।

उ०—किहां मातंग ग्रहांगण किहां ऐरावत, किहां दुरगत विपणि, किहां चिंतांमणि, किहां दग्धै मरु किहां कल्पतरु, किहां निरद्धन संतान किहां रत्ननिधांन, किहां ऊखर किहां कमलसर, किहां मुनि सकल गुणावास। —व. स.

रत्ननिधि–सं. पु. [सं.] १ समुद्र, सागर।

२ सुमेरु पर्वत।

३ विष्णु का एक नामान्तर।

रत्नपरीक्षक–सं. पु. [सं.] रत्नों की परीक्षा करने वाला जौहरी।

रू० भे०–रतनपारखी, रतनपारखू, रत्नपारख, रतनपारखि, रत्नपारखी।

रत्नपरीक्षा–सं. स्त्री. [सं.] १ पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक। (व. स.)

२ हीरे, पन्ने, जवाहरात आदि की जांच कला।

रू० भे०–रतनपारख।

रत्नपारख–देखो 'रत्नपरीक्षक' (रू. भे.)

उ०—एक ठांमि वइठा जवहरी, एक जांणे हेम परीक्षा करी। वणा तिहां छइ रत्नपारख ग्राहक जोवा वइठा लक्ष। —नळदवदंती रास

रत्नपारखि, रत्नपारखी–देखो 'रत्नपरीक्षक' (रू. भे.)

उ०—तेर पसाइता, चऊद चडियात, पन पउंतार, सोल महां-मसांणी, सतर आडणीय, अढार भूभार, अगुणीस मांणिक्य विनांणी, वीरा रत्नपारखि, परिवारि वसु सभाइं वइठी। —व. स.

रत्नप्रदीप–सं. पु. [सं.] १ दीपक के समान प्रकाशित रहने वाला एक कल्पित रत्न विशेष। ऐसा माना जाता है कि पाताल में इसीसे प्रकाश रहता है।

२ रत्न का दीपक।

रत्नप्रभा–सं. स्त्री. [सं.] १ पृथ्वी, भूमि।

२ एक नरक। (जैन)

रत्नबाहु–सं. पु. [सं.] विष्णु का एक नामान्तर।

रत्नभारिता–वि. स्त्री. [सं. रत्न भरिता, प्रा. रयण भरिया] जो रत्नों से भरी हुई हो, परिपूर्ण हो।

रू० भे०–रतनभरी।

रत्नमाळया, रत्नमाळा, रत्नमाळिका–सं. स्त्री. [सं. रत्न+माला]

१ रत्नों का हार रत्नों की माला, मणिमाला।

२ राजा बलि की कन्या का नाम।

रत्नमाळी–सं. पु. [स. रत्नमालिन्] एक प्रकार के देवता (पौराणिक)

रत्नरासि, रत्नरासी–सं. पु. [सं. रत्न राशि] १ रत्नों का ढेर।

२ समुद्र, सागर।

रू० भे०—रतनरासी।

रत्नवसी–सं. स्त्री. [सं] पृथ्वी, भूमि।

रत्नसांनु–सं. पु. [स. रत्नसानु] सुमेरु पर्वत का नाम।

रू० भे०—रतनसांन, रतनसांनु।

रत्नसागर–सं. पु. [सं.] १ समुद्र में वह स्थान जहां रत्न निकलते हैं।

२ वह समुद्र जिसमें रत्न पाए जाते हों।

रत्नसाळा–सं. स्त्री. [सं रत्नशाला] १ वह स्थान या कक्ष जिसमें रत्न रक्खे जाते हों।

२ वह महल जिसकी दीवारों में रत्न जड़े हों।

रत्नांगद–सं. पु. [सं.] पांड्य देश के वज्रांगद राजा का नामान्तर।

रत्ना–सं. स्त्री. [सं] यादव राजा अक्रूर की पत्नियों में से एक।

रत्नाकर–सं. पु. [सं.] १ समुद्र, सागर।

२ रत्नों की खान।

३ गौतम बुद्ध का एक नामान्तर।

४ वाल्मीकि ऋषि का पुराना नाम। (पौराणिक)

५ एक वैश्य जो एक बैल के द्वारा मारा गया था। (पौराणिक)

रू० भे०—रइणाइर, रतंनागर, रतनाकर, रतनागर, रतनाधर, रयणागर, रयणायर, रयणायरु, रेणाइर, रेणायर, रैणइर, रैणाइर, रैणायर, रैणावर।

रत्नागर, रत्नागिरि–देखो 'रत्नगिरि' (रू. भे.)

उ०—भद्र जाती हस्ती विंध्याचल, राजहंस मांनसरोवरि,

चिंतामणि, रोहणाचलि, रत्न रत्नागरि प्रवरत्तइ............
—व. स.

रत्नाचळ—सं. पु. [सं. रत्नाचल] १ बिहार का एक पर्वत (ऐतिहासिक)

२ पहाड़ के रूप में लगाया जाने वाला रत्नों का ढेर; जिसका दान करने का बड़ा माहात्म्य है। (पौराणिक)

रत्नाद्रि—सं. पु. [सं] एक पर्वत विशेष।

रत्नाधिपति—सं. पु. [सं.] १ धनपति कुबेर।
२ रत्न सम्पदा का मालिक।

रत्नाभूसण—सं पु. [सं रत्नाभूषण] ऐसा आभूषण जिसमें रत्न जड़े हों।

रत्नावळि, रत्नावलि—सं. पु. [सं. रत्नावली] १ एक राजकन्या, जिसे रत्नेश्वर नामक शिवमंदिर में शिव की नृत्योपासना करने के कारण, पाताल लोक का रत्नचूड नामक राजा पति के रूप में प्राप्त हुआ।
२ एक प्रकार का व्रत।

उ०—जोगसिद्ध भद्र, महाभद्र भद्रोत्तर, सरवतो भद्र, रत्नावलि, कनकावलि, मुक्तावलि, यवमध्य, वज्रमध्य, चंद्रायण, सूरायण, पक्षोपवास। —व. स.

३ देखो 'रत्नावळी' (रू. भे.)

रत्नावळी, रत्नावली—सं. स्त्री. [सं. रत्नावली] १ मणियों या रत्नों की माला, हार।

उ०—१ हार अरद्ध हार प्रलंब प्रालंब नवसर कटक कंकण केयूर नुपूर करण्ण कुंडल एकावली कनकावली रत्नावली वज्रावली पत्रावली चंद्रावली सूरयावली। —व. स.

उ०—२ सुख भरि सूती सुंदरि, पेखि सुपन सवराति। रगत चोल रत्नावली, प्रिउ नै कहइ ए बात। —कवि धरम कीरति

२ दीपक राग की पुत्र वधू एक रागिनी। (संगीत)
३ एक अर्थालंकार विशेष।

रू० भे०—रतनावळी, रत्नावलि, रयणावली।

रत्नोत्तमा—सं. स्त्री.—एक तान्त्रिक देवी।

रत्याव—देखो 'रातीवाहौ' (डि. को.)

रत्र—देखो 'रक्त' (रू. भे.)

उ०—१ पत्रां भरि रत्र हेको हिक पांण, आंणे करकंठ कढावत प्रांण। वढावन 'केहरि' केहरि वाग, नखायुध गाजत भाजत नाग।
—मे. म.

उ०—२ 'जसै' पाडिया सेन भड नेनबंधा जिकै, लगै परमळ सदळ लोह लागै। सबळ पत्र भरै रत्र पी न सकै सकति, अलिअळां तणा गुंजार आगै। —गु. रू. बं.

रथंतर—सं. पु. [सं. रथन्तर] १ एक अग्नि जो पांचजन्य नामक अग्नि का पुत्र था।
२ एक साम जो मूर्तिमान स्वरूप में ब्रह्मा की सभा में उपस्थित रहता था।

रथंतरी—सं स्त्री. [सं. रथन्तर्या] १ पुरुवंशीय राजा दुष्यंत की माता।

रथ—सं. पु. [सं.] १ पुराने जमाने की एक प्रकार की सवारी जिसमें दो या चार पहिये होते थे और जिसमें दो से लेकर दस तक घोड़े जोते जाते थे। स्यंदन, (डि. नां. मा.)

उ०—२ जेतइ वीर मस्तक पडइं तेतइ कायर पगि पिंडि चडइं, हाथिउ हाथिइं, घोडौ घोडइं, रथ रथइं, पायक पायकइं।
—व. स.

२ इसी प्रकार की कोई गाड़ी, बहल।
३ वाहन, सवारी।

उ०—१ हर रथ माठौ होय, सकत रथ होय सयांणी। सितरथ देवै पूठ, घटै उतराव पयांणी। —चौथ बीठू।

उ०—२ राजा मांनधाता पूछै। कहो गरुड़-पंख तोनुं किसै वासतै रोकियौ छै। गरुड़ पंख कहै छै हुं ठाकुरां री रथ छूं, सौ ऊपर असवार हुवौ तौ ठाकुरां री दरसण करावइ ल्याऊं।
—चौबोली

उ०—३ तुरियंद जिसा रथ आपताप। मुरधरा खेत रा वळ अमाप। —सू. प्र.

४ सप्त राज्य लक्ष्मियों में से एक।

उ०—करि तुरंग रथ पायक सेन भांडागार, ५. कोरटागार ६. गढ ७ सप्तांग राज्य लक्ष्मी। —व. स.

५ आत्मा का यान, शरीर।
६ सेना।
७ पैर, पग।
८ क्रीड़ा या विहार का स्थान।
९ कनिष्ठा के मूल के पास होने वाला एक सामुद्रिक चिन्ह।

उ०—मणिबंध तीन मणि जव प्रमांणि। मछ कच्छ कुंभ गज रथ मंडांणि। —सू. प्र.

१० किसी चट्टान को काट कर बनाया हुआ शिला मन्दिर।
११ छन्द शास्त्र के अनुसार डगण के द्वितीय भेद का नाम।

रू० भे०—रत्थ, रघु, रथ्थ। अल्पा., रथड़ी।
मह०—रत्थौ।

रथकरता—सं. पु. [सं. रथ+कर्त्ता] १ बढ़ई।
२ रथ बनाने वाला कारीगर।

रथकार-सं. पु.-रथ बनाने वाला, बढ़ई।

उ०—वस्त्रकार विभूसणकार पुंतार अस्व शिक्षाकार रथकार साव्यकार प्रतीहार छुरीकार छत्रधार वांणहीधर वागधर।
—व. स.

रथकारक-देखो 'रथकार' (रू. भे.)

उ०—मोटौ रिसि वलदेव मुनिसर, प्रतिबोध्या पसु वरग जी। दांन सुपात्र दियौ रथकारक, पांम्यउ पांचमउ स्वरगजी।
—स. कु.

रथकारतिक-सं. पु. [सं. कार्त्तिकेय+रथः] मोर, मयूर। (ह. नां. मा.)

रथकुमार-सं. पु.-[सं.] मोर। (नां. मा.)

रथक्रत-सं. पु. [सं. रथकृत] एक यक्ष, जो वातृ नामक आदित्य के साथ चैत्र माह में भ्रमण करता है।

रथक्रांत-सं. पु.-संगीत में एक ताल।

रथखांनौ-सं. पु.-वह स्थान या कक्ष जहां रथ रखे जाते हैं, रथागार।

रथड़ो-देखो 'रथ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ रथड़ा वहल जुपाइया जी, ऊंटा कमिया भार।
—मीरां

उ०—२ राज म्हांनै रथड़ौ जुनाय दो हो, हां ओ म्हारां भर जोड़ी रा भरतार भंवरजी रथड़ौ जुनाय दो हो। —लो. गी.

रथचरण-सं. पु. [सं.] चक्रवाक पक्षी।

रथचरया-सं. स्त्री. [सं. रथचर्या] एक प्रकार की विद्या। (व. स.)

रथजातरा, रथजात्रा-देखो 'रथयात्रा' (रू. भे.)

रथध्वज-सं. पु. [सं] विदेह देश के 'कुशध्वज-जनक' राजा के पिता।

रथध्वांन-सं. पु.-वीर नामक अग्नि का नामान्तर।

रथपति-सं. पु. [सं.] रथ का नायक, रथी।

रथप्रभु-सं. पु. [सं.] १ वीर नामक अग्नि का नामान्तर। २ रथ का मालिक।

रथवाहण-देखो 'रथवाहन' (रू. भे.)

रथमोड़ण-वि.-शत्रु के रथ को पीछा घुमाने वाला।

उ०—अथ कुमार उद्धतस्कंधवंधुर, वज्रमय भुजादंड, विस्तीरण्ण वक्षःस्थल, रणरसिक, समर भरधुरि धवल, अतुलबल पराक्रम, रथमोड़ण परदलण, सूर वीर। —व. स.

रथयात्रा-सं. स्त्री. [सं.] आषाढ शुक्ला द्वितीया को मनाया जाने वाला एक पर्व। इसमें प्रायः जगन्नाथजी, बलरामजी और सुभद्राजी की प्रतिमाओं को रथ पर सवार करा कर सवारी निकालते हैं। इस रथ को लोग स्वयं खींचते हैं।

उ०—तीरथ यात्रा, रथयात्रा सट्पंचासत्दिक्कुमारिकास्नांत्र-ध्वजारोपण। —व. स.

वि. वि.—बोद्धों और जैनियों में भी उनके देवताओं की रथ यात्राएं निकाली जाती हैं।

रू० भे०—रथजातरा, रथजात्रा।

रथराजी-स. स्त्री.-वसुदेव की पत्नियों में से एक।

रथवर-सं. पु. [सं.] एक यादव राजा, जो भीमरथ राजा का पुत्र था।

रथवांन-सं. पु. [सं रथवान्] १ रथ को हांकने वाला, सारथी

उ०—भारत में अरजुन के आगे, आय भयै रथवांन। उणने अपने कुळ को देखा, छुट गये तीर कमांन। —मीरां

रथवाह-सं. पु. [सं.] घोड़ा।

रथवाहक-सं. पु. [सं.] रथ को चलाने वाला।

रथवाहन-सं. पु. [सं.] मत्स्य नरेश विराट का एक भाई।

रू० भे०—रथवाहण

रथसप्तमी, रथसातम-सं. स्त्री. [सं. रथ सप्तमी] माघ शुक्ला सप्तमी।

रथसाळ, रथसाळा रथसाला-सं. स्त्री. [सं. रथशाला] वह कक्ष या स्थान जहां रथ रखा जाता है, रथागार।

उ०—जिन मंदिर धवल मंदिर राजकुल देवकुल अट्टाल प्रासादमाल लेखसाल पौसधसाल रथसाला हस्तिसाल तुरंगमाल व्यायांमसाल टंकसाल············ —व. स.

रथसेन-सं. पु. [सं] पाण्डव पक्ष का एक योद्धा, जिसके रथ के अश्वों का रंग मटर के फूल जैसा था और उनकी रोमावली श्वेतलोहित वर्ण की थी।

रथस्वन-सं. पु. [सं.] एक यक्ष, जो मित्र नामक सूर्य के साथ ज्येष्ठ मास में भ्रमण करता है।

रथांग-सं. पु. [सं. रथ+अंग] १ रथ या गाड़ी का कोई भाग, अंग। २ रथ का चक्का, पहिया। ३ विष्णु का सुदर्शन चक्र।

उ०—वांनखी रथांग धार मेर विबुधांन पांणां, किन्नरां अप्सरां नरां धरा ओपवै सुधाव।

—भगतरांम हाडा रौ गीत।

४ चक्रवाक नामक पक्षी। (डिं. को)
५ कुम्हार का चक।

रथांगधर-सं. पु. [सं.] विष्णु।

रथांगपाणि-सं. पु. [सं. रथांगपाणि] १ विष्णु ।
२ श्रीकृष्ण ।

रथाक्ष-सं. पु. [सं] स्कन्द का एक सैनिक ।

रथाग्रणी-सं. पु. [सं.] रामचन्द्र के अश्वमेधीय अश्व के संरक्षण में शत्रुघ्न के साथ जाने वाला एक योद्धा ।

रथालि, रथाली-सं. स्त्री. [सं. रथ+आली] रथों की पंक्ति, कतार ।
उ०—तुरंग मातंग रथालि पाला, ते पारथ ने वारि हूया पंखाला । बांणावली कोरव नी वि गंड, करइं क्षुरप्रे बलवंड चंड ।
—सालिसूरि

रथि-१ देखो 'रथ' (रू. भे.)
उ०—मघवा सांमक अथरवणी, यजुरवेदीया जांण । रघुवेदी सवि रथि चड्या, पंडिता पोकारि पुरांण । —मा. कां. प्र.
२ देखो 'रथी' (रू. भे.)

रथी-सं पु. [सं. रथिन्] १ रथ पर सवार होकर युद्ध करने वाला योद्धा ।
२ वह रथपति योद्धा जो अकेला हजार योद्धाओं से युद्ध कर सकता हो ।
३ सारथी ।
उ०—भ्रूं महरी भ्रूह नयण अग जूता, विमहर रासि की अलक वक्र । वाली किरि वांकिया विराजै, चंद रथी तांटंक चक्र ।
—वेलि
४ रथ की सवारी करने वाला ।
५ मृतक के शव को अन्तिम संस्कार के लिये ले जाने हेतु बांस या लकड़ी का बनाया हुआ ढांचा, सीढ़ी, शवयान ।
उ०—हरि हरि उचार नर पुर, हुए हेर वाम विस्मी हुई । उण वार रथी नृप ऊपड़े, आप सुरामग आरुही । —रा. रू.
६ चिता ।
उ०—सीढी सूं उतारनै रथी माथै सुवांणियौ तोई उणरौ मन नीं टिगियौ । —फुलवाड़ी
रू० भे०—रत्थी, रथि ।
७ देखो 'रथ' (रू. भे.)
उ०—सील व्रत भीसम नें साच्यौ, बरनी व्याम बडाई । चूक करण ने रथी चक्र कों, सील प्रताप संभाई । —ऊ. का.

रथीतर-स. पु. [स.] १ मनु वैवस्वत कुलोत्पन्न एक राजा जो नाभाग वंशीय पृषदश्व राजा का पुत्र था । (पौराणिक)
२ बौधायन श्रौत सूत्र में निर्दिष्ट एक आचार्य ।

रथु-देखो 'रथ' (रू. भे.)
उ०—कूद्द करीउ गोविंदि देवि रथु वरणिहिं खूतउ । मारीउ अरजुनि करणु कूडि रणि अण भूभंतउ ।
—सालिभद्र सूरी

रथ्य-देखो 'रथ' (रू. भे.)

रद-सं. पु. [सं.] १ दांत, दंत । (अ. मा., डिं. को., ह. नां. मा.)
उ०—१ साह सुजा गंजै समर, सांमंतां र सनेम । मद विण पाछौ मेल्हियौ, जिम्हग रद विण जेम । —वं. भा.
उ०—२ आणंद सु जु उदी उहास हास अति, राजति रद रिखपंति रुख । नयण कमोदणि दीप नासिका, मेन केस राकेस मुख । —वेलि.
उ०—३ इक अमर संग मतंग आंनन, सेक मित रद मंडितं । प्रम नेत हेत सिंदूर पूरित, पास स्रुति रव पंडितं । —रा. रू.
२ हाथी दांत ।
उ०—सिंधुर गाजै सिद्ध रा, आयौ फिर आसाढ । ऐ तकियौ आसाढ नूं रद आसाढी चाढ । —बां. दा.
३ चीर-फाड़ ।
४ सरौंत्र ।
५ वस्त्र विशेष ।
उ०—रदां फरदां मुसवरां चौपसीदां ललचाव । कंदां बेळसी कांमणी, वेहद हदां वणाव । —पनां
६ श्वेत । * (डिं. को.)
७ देखो 'रद्द' (रू. भे.)
उ०—१ चाप वैर हर चाप, जाप वकव्व जपिया, उभै रांम जुध कारण, तांम अड़पिया । लछवर वनंस साथ तेज निज हर लिया, रद कर मद दुजरांम, अवधपुर आविया ।
—र. ज. प्र.
उ०—२ अटक हीण असपती, पाप छित आंमर पायौ । रद करवा रज्जियां, दुरद जेही मद पायौ । —रा. रू.
उ०—आपा मारि मरै जो कोई, हरि धरगा मैं हटक न होई । आपा मारि मरै जनै सदका, विन आपै मूंवा सो रद का ।
—अनुभववांणी

रदएक-सं. पु. गजानन, गणेश ।

रदकार-सं. स्त्री.-पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक । (व. स.)

रदघर, रदच्छद, रदछ्व, रदछदन-सं. पु. [सं. रदगृह, रदच्छद, रदछद] ओष्ठ, होठ । (अ. मा., डिं. को., ह. नां. मा.)

रदछदरमण-सं. पु.-पान, ताम्बूल । (अ. मा.)

रददांन-सं. पु.-रति एवं प्रेम के समय दांतों से कसकर दबाना जिससे चिन्ह पड़ जाय ।

रदधर–सं. पु.–ओष्ठ; होठ। (ह. नां. मा.)

रदन–सं. पु., [सं. रदनः] दंतपंक्ति, दंतसमूह, दांत।
(अ. मा., डि. को., ह. नां. मा.)

उ०—रदन छदन वदन सरुप। —रांमरासौ

रदनच्छद, रदनछद, रदनछदन–सं. पु. [सं. रदनः+छदः] ओष्ठ, होठ।

रदनवसन–सं. पु. [सं. रदन+वसनम्] ओष्ठ, होठ। (अ. मा.)

रदनावळी–सं. स्त्री. [सं. रदनावलि] दंतपंक्ति।

उ०—कुंद कली रदनावळी, अद्भुत अधर प्रवाल। सोवन देह सुहांमणी, निरमल ससिदळ भाल। —स. कु.

रदनोरी–सं. स्त्री.–१ लक्ष्मी, गृह लक्ष्मी।

उ०—भारी नांणां विन दांणां विन भूमैं। घर री रदनोरी सदनां विन घूमैं। —ऊ. का.

२ सुदन्ती, सुन्दरी।

रदपट–सं. पु. [सं.] ओष्ठ, होठ।

रदबद–सं. पु.–घुल-मिल जाने की अवस्था।

उ०—नापी दरबार रे सारै लोगां सूं रदबद हुवी। भी लोग सारी राजी रहै। —नापै सांखला री वारता

रदबदळ, रदळबदळ–देखो 'रद्दोबदळ' (रू. भे.)

उ०—१ पछै नीवाव जुलफारखां री मारफत पातसाह मोजदीन सुं रदबदळ कराइ। रायजी रुघनाथजी नु दीली मेलीया।
—रा. वं. वि.

उ०—२ तद ऊगै कह्यौ, थारा धणी नै छुडावै तौ म्हांसूं रदळबदळ करि। —कहवाट सरवहिया री वात

उ०—३ अबु नुं मेहमद मुराद कह्यौ–राजा रा लोग सुं थे असनाव छौ। इणां री रदळबदळ थे करौ। —नैणसी

रदलोही–सं. पु.–रक्तातिसार।

रदि, रदी–१ हाथी, गज।

२ देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—बाहुक वलतु वांणी वदि, गद गद कंठ दुख अति रदि। सती साचवि सील सुजात, कस्ट पडि करिसी वात
—नळाख्यांन

३ देखो 'रद्दी' (रू. भे.)

रदीफ–सं. पु. [अ.] १ घोड़े पर सवार के पीछे बैठने वाला व्यक्ति।

२ गजल में काफिए के बाद आने वाला शब्द या शब्द-समूह।

स. स्त्री.–३ पीछे चलने वाली स्त्री।

४ पीछे की ओर की सेना।

रदौ–देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—१ सीत-पती कह, ओघ अघं दह। देह अभै करि, रांम रदे धरि। गावत पांमर, झूठ पयंवर, ऊंबर सौ वित कांय गमावत। —र. ज. प्र.

२ देखो 'रद्दौ' (रू. भे.)

रदोबदळ–देखो 'रद्दोबदळ' (रू. भे.)

रद्द–वि. [अ.] १ निरस्त, खारिज, रद्द।

उ०—ठाकर आपरी आंट में पट्टौ कर दियौ तौ कांई व्है, वांणियौ आपरी अकल आपै जद चावै तद उणनै रद्द कर सकै।
—फुलवाड़ी

२ जिसे निरर्थक मान लिया गया हो, व्यर्थ, अप्रयोज्य।

३ परिवर्तित, बदला हुआ।

४ नापसंद।

५ दूषित।

६ हीन, न्यून।

उ०—हालै दळ हद्दं जांणि जळद्दं गयण गरद्दं मिळि तद्दं। फत्तै मिरि हद्दं, रैण रहद्दं रांवां मद्दं थिय रद्दं।
—गु. रू. वं.

७ पराजित।

उ०—राजा दखिण विराजियौ, गा दखणी हुइ रद्द। साह सुपारिस सांभळै, की फत्तै सरहद्द। —गु. रू. व.

८ देखो 'रद' (रू. भे.)

उ०—उर कोप आंणे अप्रमांणे सिद्ध जांणे सद्दयं। ओपै अखाड़ै गैं उडाड़ै रूक झाड़ै रद्दयं —रा. रू.

९ देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

रद्दी–वि. [अ. रदी] १ विकृत, दूषित।

२ बेकार, खराब।

३ जो उपयोगी न हो।

४ निम्नकोटी का, न्यून।

५ निकम्मा।

सं० स्त्री०—पुराने अखबार या फालतू कागजों का ढेर या समूह।

रू० भे०—रदि, रदी।

रद्दीखांनौ–सं. पु. [अ. रदी+फा. खानः] वह स्थान या कक्ष जहां खराब या निकम्मी वस्तुएं पटक दी जाती हैं।

रद्दोबदळ–देखो 'रद्दौबदळ' (रू. भे.)

रद्दौ—सं. पु.–१ कुछ ऊंची उठी हुई किनारों का, पीतल या लोहे का बड़ा थाल, जिसमें मिठाई रक्खी जाती है।

२ दीवार की चुनाई में पत्थर की एक पंक्ति।

३ मिट्टी की दिवार का चारों ओर से बराबर उठा हुआ भाग।

रू० भे०—रदौ।

रद्दोवदळ—सं. स्त्री. [अ.] १ अदल-बदल, हेर-फेर।

२ किन्ही दो या अधिक वस्तुओं का परस्पर होने वाला स्थानान्तरण, हस्तान्तरण।

रू० भे०—रदवदळ, रदोवदळ, रद्दोवदळ।

रनंकणौ, रनंकवौ—देखो 'रणकणौ, रणकवौ' (रू. भे.)

रनंकियोड़ौ—देखो 'रणकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रनंकियोड़ी)

रन—देखो 'रण' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—सीता लखमण साथ, परम ए पदवी पाई। गोह भील गोविंद, रहे रन मां रघुराई। —पी. ग्रं.

उ०—प्रज कंपै तारै छिपै रन जंपै दिन रात। अंगां आगस केत ज्यों, झड़ लागौ वरसात। —रा. रू.

रनक—सं. पु.—१ लोहा। (अ. मा.)

२ लाश, शव।

३ देखो 'रणक' (रू. भे.)

रणथंभ—देखो 'रणथंभोर' (रू. भे.)

उ०—धायन विहायन नों संतत समर मांडै। राखि रणथंभ राज गोपन समाह्यौ नां। —सूरयमल्ल मिस्रण

रनधीस—सं. पु. [सं. हिरण्याधीश] १ कुबेर। (डिं. को.)

रनबंकौ—देखो 'रणबंकौ' (रू. भे.)

उ०—रनबंका ध्वज धज धुर रहंत, है कोन हूस रठौर हंत। —ऊ. का

रनरोई, रनरोहि, रनरोही—देखो 'रणरोही' (रू. भे.)

रनवास, रनवा—देखो 'रणवास' (रू. भे.)

उ०—१ हठ बादसाह नहिं परहिं हत्थ, मरुधराधीस रनवास मत्थ। —ऊ. का.

उ०—२ नद भ्रो ढंढोरौ राजा रै रनवास हैंतौ नाई तैरी वहू गुणीयो। —चौबोली

उ०—३ रनवां महित निकार रमांणी। नकट सथांन गयौ नांनांणी —सू. प्र.

रनांरांणी, रनारांणी—सं. स्त्री. १ युद्ध की देवी।

२ दुर्गा का एक नामान्तर।

उ०—देवी वैस्नवी महेसी ब्रहमांणी, देवी इंद्रांणी चंद्रांणी रनांरांणी। —देवि.

४ निर्जन वन की रक्षा करने वाली एक देवी।

रनिवास—देखो 'रणवास' (रू. भे.)

रनेत—सं. पु.—भाला।

रन्न—देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—१ अनियत भिक्षा गोचरी, रन्न वन्न काउ सग लेस्युं जी। समभाव सत्रु नइ मित्र सुं, संवेग सुद्ध धरस्युं जी। —स. कु.

उ०—२ पहाड झाड वन्न ए, रहद्द कीध रन्न ऐ, उडंति डाव डंबरे, लग (?) सिलीण अंबरे। —गु. रू. बं.

रपचूतांणी—देखो 'राजपूतांणी' (रू. भे.)

उ०—तरै अक्वाई कह्यो, जुहार जुहार, पिण ग्रैहणीं तौ उतारे आपि नैं जोर रपचूतांणी काई हुखरी दीसै छै, जांणै पावाहर री हांह तो रपचूतांणी अमनै आपिनै थारा हाच ऊपरां जीवतूं नै हथियार वगह्या। —जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

रपट—सं. स्त्री.—१ रपटने या फिसलने की क्रिया या भाव।

२ ऐसा स्थान जहां से पांव रखते ही फिसल जाता हो।

३ उतार, ढलाव।

४ देखो 'रपोट' (रू. भे.)

५ देखो 'लपट' (रू. भे.

उ०—सो रंजक री रपट। वाज री झपट।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात।

रपटक—सं. स्त्री.—ऊंट की एक चाल विशेष।

उ०—खारच री काठी धरती पर ठाकर रा ऊंठ रपटक चाल सूं जाय रह्या हा। ठाकर ई लारै धर मजलां, धर कुचलां में हो। —रातवासौ

रपटणी—वि. स्त्री.—१ जिस पर से पांव या कोई वस्तु फिसल जाती हो। (स्थान)

उ०—ऊंची नीची राह रपटणी पांव नहीं ठहराय। सोच-सोच पग धरूं जतन से, वार वार डिग जाय। —मीरां

२ ढालू, नीची।

रपटणौ, रपटबौ—क्रि. अ.—१ फिसलना।

उ०—बनी म्हेला में ओढी ए सेजा में निरखां धनसपुरी। बना ओढ र निकली जी क चांनणी में रपट परी। —लो. गी

२ तीव्र एवं अबाध गति से चलना।

३ दौड़कर जाना या आना, दौड़ना।

उ०—पाछौ रौ पाछौ गांव रपट्टूं, म्हनै केई कांम सारणा है। —फुलवाड़ी

४ झपटना, छलांग लगाना।

उ०—अणगिण भेळा व्हियोड़ा 'कबूड़ा जिण भांत मिनकी रै रपटियां कांनी कांनी उड जावै, उणी भांत थारा वा रै आयां हीया में एकठ व्हियोड़ी मगळी बातां कांनी कांनी बिखरगी। —फुलवाड़ी

५ घसीटना।

रपटणहार, हारौ (हारी), रपटणियौ —वि.।

रपटिश्रोड़ौ, रपटियोड़ौ, रपट्योडौ —भू. का. कृ.।

रपटीजणौ, रपटीजबौ —भाव. वा.।

रफड़णौ, रफड़बौ —रू. भे.

रपटियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ फिसला हुआ. २ तीव्र या अबाधगति से चला हुआ. ३ दौड़ कर गया या आया हुआ, दौड़ा हुआ. ४ झपटा हुआ, छलांग लगाया हुआ. ५ घसीटा हुआ।
(स्त्री. रपटियोड़ी)

रपुर—सं. पु. [सं. हरिपुर] स्वर्ग।

रपोट—सं. स्त्री. [अं. रिपोर्ट] १ सूचना, इत्तला।
२ किसी घटना या वारदात के सम्बन्ध में लिखा जाने वाला प्रतिवेदन, जो किसी सरकारी अधिकारी को प्रस्तुत किया जाता है।
उ०—१ चौधरचां थांणै में रपोट कर दी, पंचा मुळजमां री परचौ कटा दियौ। —दसदोख
उ०—२ कग्णौ माथै पंचायत बौरट में रपोट कराई, बात जोर खायौ। —दसदोख
३ किसी कार्य की प्रगति आदि का विस्तृत-विवरण, कार्य-विवरण। ४ टिप्पणी।
रू० भे०— रपट

रफ—वि. [अं.] १ जिसमें चिकनाई या सफाई न हो, खुरदरा, भौंडा (कागज, वस्त्रादि)
२ जो नमूने के रूप में विचारार्थ तैयार किया गया हो, जिसे अन्तिम रूप न दिया गया हो। (लेख, विवरणादि)
३ जो नाजुक न हो, कोमल न हो।
स. पु. [अ.] १ मचान, मंच।
२ दरवाजे का बड़ा ताक।
३ सोने-चांदी के आभूषणों की खुदाई को साफ करने का एक लोहे का औजार।

रफड़णौ, रफड़बौ—क्रि. स. [देशज] १ रगड़ना, मलना।
उ०—१ सोढै संग रस रळै, सावणां सुंदर भावै। काया कंचन हुवै, रफड़ उण सूं जे न्हावै। —दसदेव
उ०—२ भाख फाटी, तारा झड़या अर कूकड़ै बांग मारी। करणी रफड़ रफड़ मल मले न्हायौ-धोयौ अर मिळणै खातर मन री दियौ संजोयौ। —दसदोख
२ देखो 'रपटणौ, रपटबौ' (रू. भे.)

रफड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ रगड़ा हुआ, मला हुआ।
२ देखो 'रपटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रफड़ियोड़ी)

रफतंद—वि.—दूर किया हुआ।
उ०—आसिकां रह कब्ज करदा, दिल वजा रफतंद। अल्लह आले नूर दीदम दिल हि दादू वंद। —दादूवांणी

रफता, रफता, रफते-रफते—क्रि. वि. [फा. रफ्त: रफ्त:] १ धीरे-धीरे, शनैः शनैः।
२ क्रमशः।
रू० भे०—रफ्ता, रफ्ता।

रफनाळ—सं. स्त्री.—एक प्रकार की बन्दूक।
उ०—धुब सोर जुजरवा अत सधीर, तद चलै रांमसंगी त तीर। तमचा दुनाळी रफनाळ तांम। तद झड़ै कुरावीणा तमांम। —पे. रू.

रफा—वि. [अ. रफ़्‌] १ पोंछा हुआ, मिटाया हुआ, साफ किया हुआ।
२ दूर किया हुआ, हटाया हुआ।
३ निवृत्त।
४ शान्त।
५ पूर्ण किया हुआ।
६ दबाया हुआ।

रफादफा—वि. [अ.] १ मिटाया हुआ, साफ किया हुआ।
२ निपटाया हुआ, सम्पूर्ण किया हुआ।
३ तय किया हुआ।
४ शान्त किया हुआ।

रफू—सं. पु. [फा.] १ भागने की क्रिया या भाव।
२ कीमती वस्त्रों में, यदा कदा फटने पर, की जाने वाली एक सिलाई विशेष।
३ उक्त सिलाई करने की क्रिया या भाव।
वि.—चपत, गायब, अलोप।

रफ्ता, रफ्ता—देखो 'रफते-रफते' (रू. भे.)

रफ्फी—सं. स्त्री.—गर्द, धूलि, रज जो प्रायः हवा में उड़ती रहती है और वस्त्रों, वस्तुओं आदि पर पड़ती रहती है। (शेखावाटी)

रब—सं. पु. [अ.] १ ईश्वर, परमात्मा, खुदा, ब्रह्म।
उ०—१ मूरख कथन न मांनियौ, लसियौ मूंछ लजाइ। तोनूं रब न दियौ तख्त, दोनूं रखत दिखाइ। —वं. भा.
उ—२ विरहन को वैराग सा, रब सा नां कोई रंग। हरस

न सा हासा नहीं, सत सा नां कोई संग। —अनुभववांणी

२ पति।

३ वड़ा भाई।

४ अभिभावक।

५ मालिक, स्वामी।

उ०—दुजळ 'मदू' 'देपाळदे', भाखै आ वांणी, अपणावां घर आंपणी काय देवां पांणी। एकण घर दोय राजवी, रव नांह रहांणी। —वी. मा.

रू० भे०—रव्व।

रवकणौ, रवकबौ—क्रि. अ.—अवारा की भांति व्यर्थ घूमना, भटकना, मारा मारा फिरना।

रवकियोड़ौ—भू. का. कृ.—अवारा की भांति व्यर्थ घूमा हुआ, भटका हुआ, मारा मारा फिरा हुआ।
(स्त्री. रवकियोड़ी)

रवकौ—सं. पु.—१ संकट, कष्ट।

२ अवारा घूमने की क्रिया या भाव।

रवड़—सं. पु. [अं. रबर] १ वट जाति के एक वृक्ष का सूखा हुआ दूध या इस दूध का बना पदार्थ, जिससे खिलौने, वर्तन, ट्यूब-टायर आदि अनेक वस्तुएं बनती हैं। यह नर्म एवं लचीला होता है।

उ०—चौमासै में घेटां री, माईत मरै बेटां री अर गरीबां रै पेटां री सूझ बूझ टिकी नहीं रै सकै। रवड़ री दड़ी दांई ठोकर मारै जकांरै ही आगै भाज भीर हुवै। —दसदोख

२ उक्त पदार्थ का कोई टुकड़ा या अंश।

रवड़कणौ, रवड़कबौ—क्रि. अ.—भैंस का दौड़ना।

रवड़कौ—सं. पु.—भैंस आदि के दौड़ने की क्रिया या भाव।

रवड़णौ, रवड़बौ—क्रि. स.—१ किसी तरल पदार्थ में कलछी आदि डालकर चारों ओर फिराना।

२ देखो 'रड़वड़णौ, रड़वड़बौ' (रू. भे.)

उ०—वौ सिरावौ जात रौ वेलदार हौ। जेठ री बळती लाय में वीस पच्चीस कोस गांव गांव रवड़णा रै उपरांत ई उण सिरावा सूं पेटौ नीं पड़ियौ। —फुलवाड़ी

रवड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ किसी तरल पदार्थ में कलछी डालकर चारों ओर फिराया हुआ।

२ देखो 'रड़वड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रवड़ियोड़ी)

रवड़ी—सं. स्त्री.—दूध को औटाकर गाढ़ा एवं लच्छेदार बनाते हुए चीनी मिलाकर तैयार किया जाने वाला व्यंजन, बसौंधी।

उ०—काजू किसमिस रां कलेवा, दूध-**रबड़ियां** री दफारी, सेव संतरां री मनवार, पांन-सिपारियां रा पुड़ा,…… —दसदोख

रवद—१ देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

२ देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

रवांण, रवांणी—वि. [अ. रब+रा. आंणि] ईश्वर का परमेश्वर का, खुदा का।

उ०—दादू गाफिल छो वतैं अन्दर पीरी पसु। तखत **रवांणी** वीच में, पेरै तिन्हीं वसु। —दादूवांणी

रवाव—सं. स्त्री.—१ सारंगी की तरह का एक प्रकार का वाद्य।

उ०—१ नै इण वीण रवाव जिकूं वतीमूं जंत्र तयार करनै औ दूहौ गायौ। —नैणसी

उ०—२ म्रदंग ढोल मंगळी, रवाव तार सारली। वजंति वेरि वेरियं, भणंकि भंकि भेरियं। —रा. रू.

उ०—३ आइ नै करही वांधि नै ऊपर पधारीया। देखै तौ संदली ऊपर रवाव पड़ीयौ छै। —लाखा फूलांणी री वात

२ भय, आतंक, रौब।

३ प्रभाव।

रवावियौ—सं. पु.—१ रवाव नामक वाजा वजाने वाला व्यक्ति।

२ ढोलियों की एक शाखा जो उक्त वाजे (रवाव) पर गायन करती है।

उ०—मिरासी नांम मरदांनों तेगवहादुर रै साथ मारांणौ, जिण रा मिरासी मरदांना पंथ रा सिख **रवावी** है। —वां. दा. ख्यात

रवारी—देखो 'रैवारी' (रू. भे.)

उ० -१ रहिया **रवारी** जागरी वली वागुरी धाय। गुण गाता गंधरव पाणि, सतूआरी समवाय। मा. कां. प्र.

उ०—२ जाट वांणीया सीरवी रजपूत वसै। धरती हळवा ३० खेत काठा कंवळा। अरट ढीवड़ा ८। सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ४ पांणी। वाहळौ को नहीं। **रवारी** लुंभा री वसायौ, लुंभड़ावास कहीजै। —नैणसी

रवि—देखो 'रवि' (रू. भे.)

रविलआलमींनां—सं. पु. [अ. रब्बुल आलमीन] समस्त ब्रह्मांड का स्वामी, ईश्वर।

उ०—अनि चढै तुरां विकटां अगै, **रविलआलमींनां** रटै। खळ खटै रमण भपटै खगां, असुरायण दळ ऊपटै। —सू. प्र.

रू० भे०—रब्बलआलमीन।

रवी—सं. स्त्री. [अ. रबीअ] १ वसंतऋतु।

२ उक्त ऋतु में तैयार होकर कटने वाली फसल

उ०—साख कनाळी फसल रबी । —नैणसी

३ देखो 'रवि' (रू. भे.)

उ०—रवी ध्रुव चंदह ध्यांन धरेस । आदेस आदेस आदेस आदेस । —ह. र.

रब्ब—देखो 'रब' (रू. भे.)

उ०—१ मुड़ै हुय विस्मळ गात गनीम, रटै मुख नब्बिय रब्ब रहीम । 'छेली' कर छूटत वार छटाळ, भलौ धरकंत पटाम्बर भाळ । —मे. म.

उ०—२ अल्ला एक करीम, रब्ब रहमांण संभारे । कहि खुदाइ सालिक, उत्तम वनोद विचारै । —सु. रू. बं.

उ०—३ दादू गाफिल छो वतैं, मंझे रब्ब निहार । मंझेई पिव पांण जो, मंझेई मु विचार । —दादूवांणी

रब्बड़िया—सं. स्त्री.—पंवार वंश की एक शाखा ।

रब्बड़ियौ—स. पु.—पंवार वंश की रब्बड़िया शाखा का व्यक्ति ।

रब्बलआलमीन—सं. पु.—देखो 'रब्बिलआलमींनां' (रू. भे.)

उ०—खाविंद बहुत खूद खलक खैर, गफूर गैर टंमाफ गैर । वालिक नहि खालिक मुसलमीन, अल्ला हैं रब्बलआलमीन । —ऊ. का.

रब्बारी—देखो 'रैबारी' (रू. भे.)

उ०—रब्बारा धप्पन्दे, वग्घ पाकेट भयंकर । नेला चमळक नयण, नाक लापूं रा नीकर । —सू. प्र.

रभस—सं. स्त्री. [सं.] शीघ्रता, जल्दी । (ह. नां. मा.)

रभेणक—सं. पु. [सं.] तक्षक कुलोत्पन्न एक नाग जो जनमेजय के सर्प सत्र में मारा गया था ।

रमंकौ—सं. पु.—पायल या किसी आभूषण की ध्वनि या शब्द ।

उ०—रंमां-झंमां रंमां-झंमां रंमां-झमां झंमां रंमां । ठमंकां रमंकां झंका रमंकां ठमंक । —र. ज. प्र.

रम—सं. पु. [सं.] १ हर्ष, आनन्द ।

२ कामदेव ।

३ पति ।

४ प्रेमी, आशिक ।

[सं. रिपु] ५ शत्रु, वैरी, रिपु ।

रू० भे०—रिम ।

वि.—१ सुन्दर, मनोहर । (अ. मा.)

२ प्रिय, प्यारा ।

३ आनन्ददायक, मनोरंजक ।

रमइयौ—देखो 'रांमइयौ' (रू. भे.)

उ०—बालपने की प्रीत रमइयाजी, कदे नहीं आयौ थारो तोल । —मीरां

रमक—सं. स्त्री.—१ ध्वनि विशेष, झनकार ।

२ एक चाल विशेष, जेवर पहन कर चलने की क्रिया विशेष ।

उ०—रमक बताय गया सांवरे नाठांणिया । कदै मिळै रसराज सांवळड़ा । —रसीलेराज रौ गीत

३ लहर, तरंग ।

सं. पु.—१ प्रेमी, उपपति ।

२ प्रेमपात्र ।

रमकड़ी—देखो 'रमेकड़ौ' (रू. भे.)

उ०—ठीक कहतां टै म्हूं डण नैं लेयनै आवूंला । ए देख थारै वास्तै उणै थेली भर रमकड़ा भेज्या है अर कैवायौ है कै इणां में सूं थापू नै एक ई मत दीजै । —अमरचूनड़ी

रमकियौ—देखो 'रांमनियौ' (रू. भे.)

रमकीलौ—वि. (स्त्री. रमकीली) छैल-छबीला, रसीला, रसिया, चटकीला ।

उ०—नमीली रसीली चकीली अंगीली रंगीली छकीली रंगीली रमकीली समकीली चटकीली जीव री जड़ी । —र. हमीर

रमजां—सं. स्त्री.—१ छवि, शोभा ।

उ०—लगी पिया वे दो नैणा दी रमजां । उन रमजां दे नाल मोही गई सांवरा । —रसीलेराज रौ गीत

२ हंसी मुस्कराहट ।

३ मजाक ।

रू० भे०—रमसां, रमूंजा ।

रमजांन—सं. पु. [अ. रमजान] एक अरबी महीना विशेष । इस महिने में मुसलमान रोजा रखते हैं ।

रमझोळ—देखो 'रिमझोळ' (रू. भे.)

रमझम—देखो 'रिमझिम' (रू. भे.)

उ०—१ डोळा हींडोळा होकर हुचकाती, अणबट ठोकर दे एंडी उचकाती । रमझम बिछियां रा बजता रणकारा, झमझम नेहुरि रा उठता झणकारा । —ऊ. का.

उ०—२ डला में मखमल पोसाख कर गांहणौ पैहर हांस-कांस-लोचनी आनै री बीज सांवण री तीज चावादर री हंस ज्यूं मलकती धकी मुंघै मौनै गात रमझम करती आई ।

—हुंबलो सांखला री वात्ता

रमझमक—देखो 'रिमझिमक' (रू. भे.)

उ०—रमझमतें चालै हंसला रै हीयड़ै मार्ग हो । गैंनै नयण निहाळै, बिण बात किसी परि थाळै हो । —वि. कु.

रमझां–देखो 'रमजां' (रू. भे.)

रमझोळ–देखो 'रिमझोळ' (रू. भे.)

उ०—१ वेघ पवन हूंता वहै, झळंम साज **रमझोळ**। वीर पुत्री लीधां वकट, आवै छोळ अरोळ।

—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ सोळै सिणगार ठवियां थकां फूलां रा चौंस पैहरियां थकां टोय अणियाळां काजळ ठांसियां थकां वांका नैणां री झोक नांखती पायल रै ठमकै सुं घूघरै रै घमकै सूं विछियां रै छमकै सूं **रमझोळ** करती अंगूठा मोड़ती नखरा करती बाजारि चालि जाए छै। —रा. सा. सं.

उ०—३ झीणी गिरिश्रै ऊपरि वाजणी पायल रा घूघरा **रमझोळ** झणकिआ जांणै कळहंस रा वच्चा वकोर करि रहिआ छै।

—रा. सा. स.

उ०—४ सोवन कलस सुहांमणा जी, करी जरी **रमझोल**। महस दोय सावत करोजी, चित्र रचित चकडोल।

—प. च. चौ.

रमझोळी–सं. पु.–१ हमजोली।

२ देखो 'रिमझोळ' (रू. भे.)

रमठ–सं. पु.–एक म्लेच्छ जाति जो मांधातृ के राज्य काल में उसके राज्य में बसती थी।

रमड़णौ, रमड़बौ–देखो 'रमणौ, रमवौ' (रू. भे.)

उ०—टोड़ा कंधलोटा जूटणनै घुमडै, महिखी महिखी ज्यूं डावर में **रमड़ै**। —ऊ. का.

रमडोळ–सं. पु.–शत्रुदल, रिपुदल।

उ०—काळरा जुवां घणा बोळ दुजा 'किसन', झेड़ खग वाढ **रमडोळ** झुडा। वीरवर भुजांन भमतोळ पाछी वळै, चोळ रंग कीयां समसेर 'बूंडा'। —मेगराज आढो

रमढोळ–वि.–सीधा, सादा।

उ०—रोळ खोळ **रमढोळ** आखां, जीवां हरख हिलोळ है। वोळ करै छोळ धमरोळा फोगां पोळ किलोळ है। —दसदेव

रमण–सं. पु. [सं.] १ हर्ष, आनन्द या आह्लाद देने वाली कोई क्रिया या घटना, क्रीड़ा, आमोद प्रमोद।

२ रतिक्रीड़ा, संभोग, मैथुन।

उ०—१ महल सेज नह **रमण** उमाहै। चौकी खास न खिलबति चाहै। —सू. प्र.

३ कामदेव।

४ पति, स्वामी, प्रीतम। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—ललना रमणी सिरोमणी लिछमी। जास **रमण** जांमी जगत। —ह. नां. मा.

५ हर्ष, आनन्द।

६ विहार, भ्रमण।

७ सूर्य का सारथि अरुण।

८ अण्डकोश।

९ कूल्हा, कमर।

१० एक वसु जो धर नामक वसु का पुत्र था।

११ दो सगण एक छन्द विशेष। (र. ज. प्र.)

१२ प्रथम दो लघु फिर एक गुरु इस प्रकार तीन वर्ण का एक वर्णिक छन्द विशेष। (पिं. प्र.)

१३ योद्धा वीर।

उ०—अनि चढै तुरां विकटां अगै, रविलआलमीनां रटै। खळ खटै **रमण** झपटै खगां, असुरायण दळ ऊपटै। —सू. प्र.

वि.–१ सुन्दर, मनोहर, मनोज्ञ। (ह. नां. मा.)

२ आनन्ददायक।

उ०—कव सिनांन कर धूप कर, अधपत ले एकंत। रव मंजीर सुणतां **रमण**, परी उडी नभ पंत। —पा. प्र.

३ रमण करने वाला।

४ रमण करने योग्य।

५ प्रिय, प्यारा।

६ देखो 'रमणी' (रू. भे.)

७ देखो 'रमणौ'

उ०—घण मेळै घमसांण, राखस आहेड़ै **रमण**। चंड मंड वे भ्राता चढ़ै, प्राजळिता निज प्रांण। —मा. वचनिका

रू० भे०–रवन।

रमणक–सं. पु. [सं.] १ जम्बू द्वीप के एक खण्ड या वर्ष का नाम।

२ उक्त खण्ड का राजा।

३ देखो 'रमणीक' (रू. भे.)

रमणि–देखो 'रमणी' (रू. भे.)

उ०—१ अति रीझै इक विरद उचारै, सुख उपजै सुज सुमति संभारै। राज **रमणि** महाराज रिझावै, अति हित निरख हरख उपजावै। —रा. रू.

उ०—२ नेमजी हो भुगति **रमणि** मोह्या तुमे हो राजि, पिण तिण मां नहि स्वाद। —वि. कु.

रमणियौ–वि.–१ रमण करने वाला।

२ खेलने वाला।

३ भोग विलास करने वाला।

रमणी–सं. स्त्री. [स.] १ स्त्री, औरत, नारी।

उ०—१ **रमणी** वरहीनां निरख नवीना, रांम रांम रणकंदा है।

कंद्रप रा कीटा फश्रत न फीटा, भंवरगुफा भरणकंदा है।
—ऊ. का.

उ०—२ रमणी जेह कुरूप स्यु कहीयै तास सरूप हो।
—वि. कु.

२ रमण करने योग्य युवती, सुन्दर स्त्री।

उ०—बोलै केहै जोरि करारि बावली। हरिहां रमणी तज हठ चालि दुवाई रावळी। —मा. वचनिका

३ पत्नी, प्रियतमा।

उ०—१ गत गैंवर कटि केहरी, रमणी हाटक रंग। कुच गिरवर लोयरण कमळ, ऐ हैं कुसळे अंग। —वां. दा.

उ०—२ मनगमरणी रमणी हुस्युंजी, मेवस्युं ताहरा पाय।
—वि. कु.

४ सुगन्ध वाला।

५ कर्णाटकीय पद्धति की एक रागिनी। (संगीत

६ साधु संन्यासियों द्वारा की जाने वाली यात्रा। भ्रमरण।

रू० भे०—रमरिण, रवनि, रवनी।

रमणीक, रमणीय—वि. [सं.] १ सुन्दर, मनोहर, मनोज्ञ।
(अ. मा., ह. नां. मा.)

उ—१ रमणीक दीप 'पावु' रही, सिघ अगमागम सूझसी। थांन नैं पांन तो थापना, 'पाल' प्रथी सह पूजसी। —पा. प्र.

उ० - २ अति अथिर चंचल आउखउ, रमणीक यौवन रूप। चक्रवरत्ती सनतकुमार ज्युं, जीव जोई देह सरूपो रे।
—स. कु.

उ०—३ व्रिदं फूल मुगंवं, वंधे सारत्ति पांन मादिकं। रत्तं चक्ख सहासं, आमासं पासि रमणीयं। —रा. रू.

२ रमण करने योग्य।

उ०—दोयरण रमणीय कवेसुर दासा, जत्र समर सुरतर निज जोत अवध भूप दरसै तो वाळां, अवनी मोहै रूप उद्योत।
—र. रू.

सं. स्त्री.—१ स्त्री, सुन्दरी।

२ प्रथम एक लघू वर्ण तदनन्तर तीन गुरु वर्ण, यह क्रम चार वार होने पर बनने वाला एक छन्द विशेष।

उ०—प्रथम लघू गुर गुर पछै, ठवि चत्र फेरा ठीक। सहस च्यारि त्रिरणसौ सतरि, रूप छंद रमणीक। —ल. वि.

रमणीयता—सं. स्त्री [सं.] सुन्दरता।

रमणौ—सं. पु.—१ खिलौना।

२ खेल का कोई उपकरण, साधन।

३ शिकार खेलने का मैदान, शिकारगाह।

उ०—१ रमणैं रमण सिकार, सझै दळ पूर सकाजा। नौवति वाजा निहंसि, रजां ढांकै ग्रहराजा। —सू. प्र.

उ०—२ और ही अनेक राजभांत रा ऊंठ छै। सू साथ री घूमरी कियां थकां रमणैं सिर आंण खड़ा हुवा है। —रा. सा. सं.

४ जंगल, वन या मैदान जहां पर प्रायः रमण या विचरण करते रहते है।

वि०—खेलने वाला।

रमणौ, रमबौ—क्रि. स. [सं. रमणं] १ कोई खेल खेलना, खेलकूद करना, क्रीड़ा करना, खेलना।

उ०—१ बांधरो उठै ऊभी छांनो रह्यौ छै। रात आधी गयां सोझळ रमणनु नीसरी, सु देवीजी री भाखरी गई।
—नैणसी

उ०—२ पगल्यां ने पायल लाय भंवर म्हारे पगल्यां ने पायल लाय, हांजी म्हारा बिछिया रतन जड़ाय, भंवर म्हांनै खेलण दो गणगौर बिलाला म्हांनै रमण दो दिन चार। —लो. गी.

२ कोई नाटक या तमासा करना।

उ०—१ तीरथ जात समस्त, सकल सावां मिळ संगा। रास तमासा रमें, हुलस नाचै हुड़दंगा। —ऊ. का.

उ०—२ लुगाई री जूंण विना रखवाळण, कंवरांणी, महारांणी, अर गूजरी री आ रांमत कुण रमतौ। —फुलवाड़ी

३ भोग विलास करना, रतिक्रीड़ा, संभोग या मैथुन करना, रमण करना।

उ०—१ ताहरां गंगा नुं भीतर एकै मोहल में राखी। अर गंगा नुं कही, "हूं पातसाह नूं जीपीस, तैं राते तैंमुं रमीस। ईतरै हूं थारै मोहल मांहे कोई नाईस। —देपाळ धंध री वात

उ०—२ परीणत स्वास उसास प्रभाव, प्रिया प्रिय पास पलोटत पाव। रमें रस रास विलास सुरंग, परस्पर प्रीतम प्रीत प्रसंग।
—ऊ. का.

उ०—३ एकतो देवर म्हांने जी राखल्यो दूजी है दोरांणी। ऊगणी कहिये भायला तो कोई चोथा देवर आवजी, देवरिया प्यारा ए जी वो देवर छिनगारा रम रया पर नारियां।
—लो० गी०

उ०—४ दूजी कीं बस री वात नीं देख दीवांणजी सेजां रम्योड़ी लुगायां नैं मन ही मन याद करण लागा। कदास याद करयां कीं निवास मिळै। —फुलवाड़ी

उ०—५ पिकावांण जांण वैंणी पनंग, हिरणाखी हंसा-गमरिग।

रंग-महल सिघ राजांन सुर, **रमति** राज-पुत्री रमणि।
—गु. रू. बं.

४ भोग विलास के लिये रह जाना, रहना। मन लग जाने के कारण कहीं ठहरना, निवास करना, टिकना।

५ आनन्द करना, मौज करना।

६ शिकार में जंगली जानवरों को मारना, शिकार खेलना।

उ०—१ एकदा प्रस्तावि राजा प्रिथीराज सिकार नीसरीया। सिकार **रमता रमता** एक दिन सवालख मे आइ नीसरीया।
—जांगळू री वात

उ०—२ एक दिन री समाजोग छै। रावळ कांनड़दे सिकार चढिया छै। सरव रजपूत साथै छै। मालो पण साथै छै। सिकार **रमी** अर अपूठा वळिया। —नैणसी

७ आनन्द पूर्वक इधर उधर घूमना, भ्रमण करना, विहार करना।

उ०—असि चढि विस वनि **रमै** अकेलौ। चौकीदास खवास न चेलौ। जळ वन जंतु **रमंतां** जोवै। हरख उछाह तांम चित होवै।
—सू. प्र.

८ साधु संतों का विचरण करना, चला जाना।

उ०—१ आतम ग्यांन समुद्र अथागी। **रमता** परम हंस वैरागी।
—सू. प्र.

उ०—२ जाहर जुग जोगी है अणभोगी, ओघट घाट **रमंदा** है।
—अनुभववांणी

९ चुपके से कहीं चले जाना, गायब हो जाना, अज्ञात स्थान पर चले जाना। लुप्त हो जाना।

उ०—१ यूं कहि गुर चेलौ **रमिया** नै कह्यौ तूं वात मांनीस नहीं, पण तिण वात री ओ सहनांण छै जो थांरी बाप आज सूं पनरै दिनै मरै तो सोह साच मांनै। —नैणसी

उ०—२ नगर आइ जोगी **रम** गया रे, मो मन प्रीत न पाइ। मैं भोळी भोळापन कीन्हौ, राख्यौ नहीं बिलमाइ। —मीरां

१० किसी में या सर्वत्र व्याप्त होना, मौजूद रहना, वर्तमान रहना। समाना।

उ०—१ रोम रोम में **रम** रयौ देख अखंड दईव। —र. ज. प्र.

उ०—२ **रमै** आप तुं आप मां, नमै आपनां आप। आप खवारैं आप नां, साहिव निमो संताप। —पी. ग्रं.

उ०—३ घट घट मांहै **रम** रही, तूं सकळ मभांही। जंगम थावर जेतळा, तो विण को नांही। —गज उद्धार

उ०—४ मोहि पिया अवकै मिळौ, पलक न छोडूं वास। रोम रोम में **रमि** रहूं, विध जिण फूलां वास। —र. हमीर

११ लीन होना, रंगीजना, लिप्त होना।

१२ अनुरक्त होना, आसक्त होना, मोहित होना।

१३ चारों ओर से लोक प्रिय होना, व्यापक होना।

१४ युद्ध करना, रणक्रीड़ा करना।

उ०—*ढळै ढीचाळ तणी रणढांगि, पड़ै ध्रू रेणु विवै पीठांण।* मरुधर मंडण उत्तर मौड़, **रमै** रण मीर अनै राठौड़।
—राउ जैतसी रौ रासौ

रमणहार, हारौ (हारी), रमणियौ —वि.।

रमिओड़ौ, रमियोड़ौ, रम्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रमीजणौ, रमीजबौ —भाव वा.

रम्मणौ, रम्मबौ —रू. भे.।

रमत–देखो 'रामत' (रू. भे.)

उ०—१ बाळपणौ **रमत** में गमायौ, भर जोबन अहंकारी। बूढापा में माळा लीधी, अब कुण मुगोला थारी। —अग्यात

उ०—२ इण सासरिये भाई रै साथै पै'लीवार अठै आई तौ म्हनै ओ लगायौ के म्हैं लुकमीचणी री **रमत** रमूं हूं।
—फुलवाड़ी

रमतारांम–वि.–घूमने फिरने वाला, निरन्तर, भ्रमण करते रहने वाला, परिभ्रमण करने वाला।

उ०—भजिए **रमतारांम** एह वड़ घात है। हरिहां जनहरिदास हरि परम उदार अपार हमारा तात है। —ह. पु. वां.

सं. पु.–१ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—१ महंस कळा सूरज ले ऊगा, अंधै कै ऊगा ज्युं पूगा। भूत प्रेत डाकिन डर नांही, **रमतारांम** हमारै मांही।
—अनुभववांणी

उ०—२ नमौ नमौ **रमतारांम** नारायण निरसिंघ, सकळ निरंतरि नरहरि········· —ह. पु. वां.

उ०—३ बाई ऊदां करै तो पड़्या झक मारो, मन लाग्यौ **रमतारांम** सूं। —मीरां

रमतियौ–देखो 'रामतियौ' (रू. भे.)

उ०—१ ऐ रिपिया दूजी ठौड़ धरदौ—वांनै कुण खावै। म्हारा ऐ **रमतिया** गमै घणा। —फुलवाड़ी

उ०—२ 'मेह मांमौ म्हांनै कांई देसी, दादी ?, 'लाडू'। 'भळै ?' दूध, दही, **रमतिया** गैणा। 'साचै ई ?' 'हां, बेटा।'
—वरसगांठ

रमतू–स. पु.–एक पक्षी विशेष।

उ०—मीर सिकारूं का हुन्नर नजर होत है। लगतूं **रमतूं** के आतुरी। चरज सीचांणू मो लाग आतुरी। —सू. प्र.

रमयोड़ो–देखो 'रमियोड़ो' (रू. भे.)

रमल–सं. पु. [अ.] १ फलित ज्योतिष में भविष्य फल निकालने की एक विधि या ढंग।

वि. वि.–इसमें एक पासे को फेंक कर उसकी बिंदियों की गणना की जाती है। तदनुसार फल निकाला जाता है।

२ उक्त फल निकालने की विद्या।

रमलि, रमली–सं. स्त्री. [सं. रमणिका, प्रा. रमणिआ, अ. रमलिआ] क्रीड़ा, खेल, विनोद।

उ०—१ आह मनमाहि नरिंदौ पारधि संभावइ। सइं दलि **रमलि** करंतउ गंगा तडि आवइ। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ जिसी **रमलि** कीजइ रवाडी तिसी एक भली वाडी, जेह दीठइ आणंद हूआ। —व. स.

उ०—३ कांमीय केतिकि परिमलि, **रमलि** करइ बहु भंगि, रमइ रसालि तरुणीय, करणीय नव नव रंगि। —प्राचीन फागु-संग्रह

२ रतिक्रीड़ा, संभोग, भोग।

उ०—१ कंकण चूडि अनइ आभरण, हारै तेजि तपइ रवि किरण। केतक सरीसी **रमलि** करंत, गौरी गाइ राग वसंत। —प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ दीपइं ए राता कणयर दिणयर किरि अवतार। पारधि पाडल परिमलि **रमलि** करइं मधुकार। —धनदेव गणि

रमांइण–देखो 'रांमायण' (रू. भे.)

उ०—उभै पतिसाह भिडै अण-भंग। **रमांइण** भारथ ए रिण-जंग। —गु. रू. बं.

रमा–सं. स्त्री. [सं.] १ लक्ष्मी, कमला। (अ. मा, ह. नां. मा.)

उ०—लोकमाता सिंधु सुता स्री लिखमी, पदमा पदमालया प्रमा। अवर ग्रहै अस्थिरा इंदिरा, रांमा हरि वल्लभा **रमा**। —वेलि

२ सीता।

उ०—**रमा** हुतासणि सरणि रहाए। हथि रांमण स्रिय छांह हराए। —सू. प्र.

३ दुर्गा।

उ०—ओ३म नमस्ते चंडका चंद्रभाळ री नवीन आभा। छटा मणि माळ री भुजाटां रही छाय। आरोहा लंकाळ री क सत्रां धू झाळ री आग, **रमा** रूप जयौ काछ पंचाळ री राय। —नवलजी लाळस

४ पत्नी।

५ स्वामिनी।

६ प्रजा।

७ सम्पत्ति, धन।

८ चंचलता।

उ०—सभि अंग उतंग ग्रहास समा, रवि वाहण रेवंत सोह **रमा**। —मा. वचनिका

रू० भे०–रमाय।

रमाइण–देखो 'रांमायण' (रू. भे.)

रमाएकादसी–सं. स्त्री.–कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

रमाकंत–सं. पु. [सं. रमाकान्त] १ विष्णु।

उ०—**रमाकंत** ची वंक वे भ्रूह रंजी, लखै कांमसुर सांम ची चाप लज्जी, त्रिहूं लोक चा ग्वाळ रै भाळ टीको, नरां भूप मोभा लखै रूप नीको। —रा. रू.

२ राम।

रमाक, रमाकड़, रमाकड़ो–वि. [सं. रम्+रा. प्र. आक, आकड़] खेलने में निपुण, खिलाड़ी।

रमाड़णी, रमाड़बौ–देखो 'रमाणी, रमावौ' (रू. भे.)

उ०—१ कथां तु ही कंथ क्रीड़ा तु ही कांम। **रमाड़** मो पग्ग लाधौ हिव रांम। —ह. र.

उ०—२ गोपीनाथ रा हाथ आया गडुदे, अही गारडी जांण छांव्यौ अडुदे। अही मूंठ वाजीन जेही उपाडै, रमे गारडी जेम काळी **रमाड़ै**। —नागदमण

रमाड़णहार, हारौ (हारी), रमाड़णियौ —वि.।

रमाड़िओड़ो, रमाड़ियोड़ो, रमाड़्योड़ो —भू. का. कृ.।

रमाड़ीजणी, रमाड़ीजबौ — कर्म वा.।

रमाड़ियोड़ो–देखो 'रमायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. रमायोड़ी)

रमाचोर–सं. पु. [सं.] रावण। (अ. मा.)

रमाज–वि. [अ. रम्माज] १ भेद जानने वाला, भेद बताने वाला।

उ०—बाथे ऊंचांणां सुमेर पाथै तेरसा अचूक वांण, रांणवाला राड़ि वेळां वेरसा **रमाज**। रिमंदा ऊवेड़ जाड़ा सेरसा गजां रा गौड़, सांमंतां समांन राखै येरसा समाज। —महाराज सनमांनसिंघ हाडा रा जोधारां री गीत

२ गुप्तचर, भेदिया।

रमाडणी, रमाडबौ–देखो 'रमाणी, रमावौ' (रू. भे.)

उ०—गुरि वीनविउ अवसरि राउ सविहुं वेठां करउ पसाउ। तुम्हि मंडावउ नवउ अखाडउ नव नव भंगि पूत्र **रमाडउ**। —सालिभद्र सूरि

रमाड़ियोड़ौ–देखो 'रमायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रमाड़ियोड़ी)

रमाणौ, रमावौ–क्रि. स. ["रमणौ" क्रिया का प्रे. रू.] १ कोई खेल खिलाना, खेल में लगाना, खिलाना।

उ०—१ रिमि रूप **रमाया** खळ सहि खाया गेम गमाया गुण गाया। धिणिग्रांणी धाया विलंब न लाया, आराधां नां सुणि ग्राया। —पी. ग्रं.

उ०—२ लेग कंत ग्रच्छरां गैणाग माग ग्रावा लागी। पूरां सूरां वीरां सूं जमावा लागी प्रीत। ललक्का उछट्टै भैरूं चंडका **रमावा** लागी, गावा लागी जोगणी वीरांण मंत्र गीत।
—सुखदांन कवियौ

२ कोई नाटक या तमासा कराना।
३ मौज कराना, आनन्द कराना।
४ भोग विलास, रतिक्रीड़ा, संभोग या मैथुन करने के लिये प्रेरित करना, रमण कराना।

उ०—चाकर कह वतळावज्यौ, छागळ राखूं हाथ। पग दाबूं पोहरौ दिऊं, सेज **रमाऊं** साथ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

५ भोग विलास के लिये रखना, कहीं ठहराना, निवास कराना, टिकाना।
६ शिकार कराना, शिकार खिलवाना।
७ घूमने, भ्रमण करने या विहार करने के लिये प्रेरित कराना।
८ गायब कराना, लुप्त कराना।
९ लीन कराना, लिप्त कराना।
१० अनुकूल करना, अपने अन्दर मिलाना।
११ नव विवाहित वर के साथ उसके सुसराल में सालिग्रों ग्रादि द्वारा मनोविनोद कराना।

वि. वि.–इसमें पहेलियां व कुछ अटपटी बातें पूछी जाती हैं और वर द्वारा समुचित उत्तर न देने पर हंसी ठिठोली की जाती है।
१२ वेष्टन करना, परिवेष्टित करना, लेपन करना।

उ०—१ कांनां विच कुंडळ गळे विच सेळी ग्रंग भभूत **रमाय**। तुम देख्यां बिन कल न पड़त है, ग्रिह ग्रंगणौ न सुहाय।
—मीरां

उ०—२ गोपीचंद भरथरी के लाग्यौ, तन में खाक **रमाणी** जी।
—मीरां

१३ भुलावा में डालना, फुसलाना।
रमाणहार, हारौ (हारी), रमाणियौ —वि.।
रमायोड़ौ —भू. का. कृ.।
रमाईजणौ, रमाईजवौ —कर्म वा.।
रमाड़णौ, रमाड़बौ, रमाडणौ, रमाडबौ, रमावणौ, रमाववौ
—रू. भे.।

रमाद–सं. पु. [स. रमा+द] कुबेर। (नां. मा.)

रमाधव–सं. पु. [सं.] विष्णु।

रमानंद, रमानंदण, रमानंदन–सं. पु. [सं. रमानंद, रमानंदनः] कामदेव। (ह. नां. मा.)

रमानरेस–सं. पु. [सं. रमा+नरेश] विष्णु।

रमानाथ–सं. पु. [सं.] विष्णु।

उ० - नीत पंथ वनै बीड़ा जांणंगी अजोध्यानाथ, ह्वैकवी गांणंगी क्रीड़ जादुनाथ हूस। राजंगी सीमोद नाथ सदा चीत माथ राखै, **रमानाथ** रूप भूप ग्रंत्ररीख रूस। —हुकमीचंद खिड़ियौ

रमानिवास–सं. पु. [सं. रमा+निवास] विष्णु।

रमापत, रमापति, रमापती–सं. पु. [सं. रमा+पति] विष्णु।
(डिं. को.)

उ०—रमइं **रमापति** रांणिय ग्रांणिय ग्रांपणइ पासि। तीणि छलइं नवि छीपइ ए दीपइ ए ग्यांन प्रकासि।
—जयसेखर सूरि

रमावर–देखो 'रमावर' (रू. भे.) (नां. मा.)

रमाय–देखो 'रमा' (रू. भे.)

उ०—रहै नित सेव **रमाय** सुरेस, ग्रादेस ग्रादेस ग्रादेस ग्रादेस।
—ह. र.

रमायण–देखो 'रांमायण' (रू. भे.)

उ०—ग्रांन दसा सूं जब मन थाका, करम भरम संगि नांखैंगे। रांम **रमायण** का मतिवाळा, ग्राद्व प्रीति पिछांणैंगे।
—ह. पु. वां.

रमायोड़ौ–भू. का. कृ.–१ कोई खेल खिलाया हुआ, खेल में लगाया हुआ. २ कोई नाटक या तमासा कराया हुआ. ३ मौज कराया हुआ, आनन्द कराया हुआ. ४ भोग विलास, रतिक्रीड़ा, संभोग, मैथुन करने के लिये प्रेरित किया हुआ, रमण कराया हुआ. ५ भोग विलास के लिये रखा हुआ, कहीं ठहराया हुआ, निवास कराया हुआ, टिकाया हुआ. ६ शिकार कराया हुआ, शिकार खिलवाया हुआ. ७ घूमने, भ्रमण करने या विहार करने के लिये प्रेरित किया हुआ. ८ गायब कराया हुआ, लुप्त कराया हुआ. ९ लीन किया हुआ, लिप्त किया हुआ. १० अनुकूल किया हुआ, अपने अन्दर मिलाया हुआ. ११ नव विवाहित वर

को सुसराल में सालियों द्वारा मनोविनोद कराया हुआ. १२ वेष्ठन किया हुआ, परिवेष्ठित किया हुआ, लेपन किया हुआ. १३ भुलाया हुआ, फुसलाया हुआ।

(स्त्री. रमायोड़ी)

रमारम, रमारमण–सं. पु. [सं. रमा+रमण] लक्ष्मीपति, विष्णु।

रमाराव–सं. पु. [सं. रमाराज] विष्णु।

उ०—**रमाराव** रा वदिया पाव राजा। वजै चाय दूणै घणै-घाय वाजा। —रा. रू.

रमावणौ, रमाववौ–देखो 'रमाणौ, रमावौ' (रू. भे.)

उ०—१ इंद्र धनुख तणियौ अजब, चातुक धुन मन चाव। वीज न मावै वादळां, रसिया तीज **रमाव**। —वां. दा.

उ०—२ अला वन मां जाइ मुरळी वजावै, राजा रांम नां ओथि राधा **रमावै**। —पी. ग्रं.

रमावर–सं. पु. [स.] लक्ष्मीपति विष्णु।

रू० भे०—रमावर।

रमावियोड़ौ–देखो 'रमायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रमावियोड़ी)

रमावीज–स. पु. [स.] लक्ष्मीवीज नामक एक तांत्रिक मंत्र, श्री।

रमास्यांम–सं. पु. [सं. रमा+स्वामी] लक्ष्मीपति विष्णु।

रमिझोळ–देखो 'रिमझोळ' (रू. भे.)

उ०—अमवारी वणी छः गीतां रा **रमिझोळ** लाग रह्या छः। —जगमाल मालावत री वात

रमियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ कोई खेल खेला हुआ, खेलकूद किया हुआ, खेला हुआ. २ कोई नाटक यां तमासा किया हुआ. ३ भोग विलास, रतिक्रीड़ा, संभोग या मैथुन किया हुआ, रमण किया हुआ. ४ भोग विलास के लिये रहा हुआ, मन लग जाने के कारण कही ठहरा हुआ, निवास किया हुआ, टिका हुआ. ५ आनन्द या मौज किया हुआ. ६ शिकार खेला हुआ. ७ आनन्द पूर्वक इधर उधर घूमा हुआ, भ्रमण किया हुआ, विहार किया हुआ. ८ चुपके से कहीं गया हुआ, गायब हुवा हुआ। लुप्त हुवा हुआ. ९ सर्वत्र व्याप्त हुवा हुआ, मौजूद रहा हुआ, वर्तमान रहा हुआ, समाया हुआ. १० लीन हुवा हुआ, लिप्त हुवा हुआ, रंगा हुआ. ११ अनुरक्त, आशक्त या मोहित हुवा हुआ. १२ चारों ओर लोक प्रिय या व्यापक हुवा हुआ।

(स्त्री. रमियोड़ी)

रमीईयौ–१ देखो 'रांमइयौ' (रू. भे.)

उ०—भली करी तै आवतै, विरहा मेरै अंग। एक **रमीईयो** रमि रह्यौ, लगै न दूजा रंग। —अनुभववांणी

२ देखो 'रांम' (अल्पा., रू. भे.)

रमीस–देखो 'रमेस' (रू. भे.)

उ०—**रमीस** प्रमीस हणै अघरीस, तवै जस आलम जेण तमांम। महा वळवांन अभंग महीप, रटां जन लाज रखै रघुरांम। —र. ज. प्र.

रमूंजां, रमूंझां–देखो 'रमजां' (रू. भे.)

उ०—अरु कयौ, 'महरवांन, रावळ मोसूं घणी **रमूंझां** कीवी। —द. दा.

रमेकड़ौ–सं. पु. [सं. रम्+प्र. एकड़ौ] १ खिलौना, खेलने का उपकरण।

उ०—मोती जड़चा कांकण वाळौ हाथ धकै करती वा अबूझ री गळाई वोली–म्हारो हाथ इण में पजायनै वतावौ। औ तौ अणूंतौ मजेदार **रमेकड़ौ** व्है ज्यूं है। —फुलवाड़ी

२ योनि, भग। (वाजारू, ग्रामीण)

रू० भे०—रमकड़ौ

रमेस–सं. पु. [सं. रमेश] विष्णु।

रू० भे०—रमीस, रमैस।

रमेस्वर–सं. पु. [स. रमेश्वर] विष्णु।

रमैनी–सं. स्त्री.–कबीर के बीजक का एक भाग।

रमैयौ–देखो 'रांमइयौ' (रू. भे.)

उ०—तुम दरसण की आस **रमैया**, कव हरि दरस दिखावै। चरण कवळ की लगनि लगी नित, विन दरसण दुख पावै। —मीरां

२ देखो 'रांम' (अल्पा., रू. भे.)

रमैस–देखो 'रमेस' (रू. भे.)

रम्म–देखो 'रम्य' (रू. भे.)

उ०—सो धम्म **रम्म** जो गुण सहिय, दांन सील तव भाव मउ। भो भविय लोय तुम्हि पर करिय, नर भव आलिम नीगमउ। —अभयतिक यति

रम्मणौ, रम्मवौ–देखो 'रमणौ, रमवौ' (रू. भे.)

उ०—धरै इक पाप धरै इक ध्रम्म, करै इक जीव करै इक क्रम्म सरज्जै आप त्रिधा संसार, हुवौ मझ आप ही **रम्मणहार**। —ह. र.

रम्मणहार, हारौ (हारी), रम्मणियौ —वि.।

रम्मिओड़ौ, रम्मियोड़ौ, रम्म्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रम्मीजणो, रम्मीजवो —भाव वा.

रम्मत–देखो 'रांमत' (रू. भे.)

रम्माल–वि. [अ.] 'रमळ' विद्या का जानने वाला, ज्योतिषी।

रम्य–वि. [सं.] १ जिसमें मन रमता हो, रमणीय।

२ मनोहर, मनोज्ञ, सुन्दर।

३ प्रिय।

सं. पु. १ वीर्य।

२ चम्पा का पेड़।

३ परवल की जड़।

४ वायु के सात भेदों में से एक।

रू. भे.—रम्म।

रम्या–सं. स्त्री. [सं.] १ मेरु की नौ कन्याओं में से पांचवी कन्या, जो 'रम्यक' राजा की पत्नी थी।

२ धैवत स्वर की तीन श्रुतियों में से अन्तिम श्रुति का नाम। (संगीत)

३ महेन्द्रवारुणी।

४ लक्ष्मणा नामक कंद।

५ गंगा नदी।

६ रात, रात्रि।

रय–सं. पु. [सं.] १ पुरूरवस राजा का पुत्र एक राजा।

२ स्वायंभुव मनवन्तर के वसिष्ठ ऋषि का पुत्र एक प्रजापति।

३ प्रवाह, धारा।

४ गति, वेग, तेजी। (अ. मा.)

५ उत्साह, धुन।

६ संतोष, सब्र।

उ०—हंसा बुगां पटंतरी, बीछड़ीयां परवांण। बुग छीलरीयां रय करै, हरीया हंस विलखांण। —अनुभव वांणी

७ देखो 'रज' (रू. भे.)

८ देखो 'रव' (रू. भे.)

रयण–सं. पु. [सं. रत्न प्रा. रयण] १ रत्न।

उ०—१ वाउव। संभलि वीनती, सूर देवरावूं साखि। यौवन मइं इम जालविउ, रंक रयण जिम राखि। —मा. कां. प्र.

उ०— २ कापड माल असंख, हेम मिण रयण विभूखण। परिमळ चंदन अगर, पान कप्पूरह अस्सण। —गु. रू. बं.

२ राजा, नृपति।

उ०—'पातल' पांण क्रपांण री, रयण विलोकै राड़। असणी जाणक इंद्र री, पड़ै सीस पाहाड़। —किसोरदांन बारहठ

३—समुद्र।

सं. स्त्री [सं. रजनी] ४ रात, रात्रि, निशा।

उ०—१ रति रयण सुदि नर नारि रांमति गाळि प्रमदति गावही मुख गांन दिन निस स्वांम मंगळ बैंण चंग बजावही। —रा. रू.

उ०—२ जिण रुत ब्रहु बादळ झरइ, नदियां नीर वहाय। तिण रुत साहिब वल्लहा, मो किम रयण विहाय। —ढो. मा.

५ पृथ्वी, भूमि।

उ०—रयण दियण पाताळ न राखै, कनक ब्रवण रूधी कविळास। महि पुड़ि गज दातारज मारै, विसन किसै पुड़ि मांडू वास। —दुरसौ आढौ

६ धूलि, रज।

७ मोतियों से स्वस्तिकादि की की जाने वाली रचना।

रू० भे०—रइंण, रइंणि, रइण, रइणि, रइन, रेण, रैंण।

मह०—रयणौ।

रयणपत, रयणपति–सं पु. [सं. रजनी+पति] १ चन्द्रमा, शशि। (डिं. को.)

उ०—गहमत गत असत अवर तत परगत, अखत दुचित रत भरथ अत। जगपत हित मुखदुति इण भत जिम, प्रभुत हुवत दिन रयणपत। —र. रू.

[रा. रयण=भूमि+सं. पति] २ राजा, नृप।

रयणमइ, रयणमई, रयणमए, रयणमय–वि. [स. रत्न+मय, प्रा. रयणमई] रत्नों से युक्त।

उ०—सोवन ए रासि करेवि बंधव आगलिउ गिणं ए, मित्तह ए रईय मणिचूड राय रहइं सभा रयणमए। राइहिं ए संति जिणद नवउ प्रसादु करावीउ ए, कंचण ए मणिमय थंभ रयणमइ बिंब भरावीयां ए। —सालिभद्र सूरि

रयणा–सं. स्त्री. [सं. रय:+रा. प्र. णा=गति] १ गति, चाल।

उ०—झालै भार जुझारौ झाले, सीस आपाणै सरव सही। रांणा वडै ऊबरे रांणा, रवि रयणां ज्यां वात रही। —अज्जा झाला री गीत

२ रचना।

उ०—सुयक्खंध एक दसमइ अंगइ, पणयालीस अज्झयणा। पणयालीस उद्देस वलीपद, सहस संख्यात नी रयणा।
—वि. कु.

३ देखो 'रैणा' (रू. भे.)

रयणागर, रयणायर, रयणायरु—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—१ घर वसियौ घण नेह, चीत न वसियौ चूंडरा। रेह सगै तौ रेह, रयणागर रहतूं थियौ।
—फेफांणंद री वात

उ०—२ रासि रसाउलु चरीउ थुणीजइ, किम रयणायरु हीयडं तरीजइ। —सालिभद्र सूरि

उ०—३ रयणायर पुत्री रमा, डाटी कर दुरभाव। रयणायर ते डूबवै, सूं मा केरी नाव। —वां. दा.

उ०—४ अनंतनाथ रा गुण अगम अनंता, सांभलजो सहु संता। रयणायर में गिणती रयणे, मुनि न कहै मतिमंता।
—ध. व. ग्रं

रयणावळी—देखो 'रत्नावळी' (रू. भे.)

रयणि, रयणी—१ देखो 'रजनी' (रू. भे.)

उ०—१ पांखड़ियां ई किउं नहीं दैव अवाइू ज्यांह। चकवीकइ हुइ पंखड़ी, रयणि न मेळउ त्यांह। —ढो. मा.

उ०—२ सुणीये अगजी आजरी, रयणी गई रे सबे। अंग फूरक ठीक पीण, ए सूकनै दुखल सबै।
—रीसाळू री वात

२ देखो 'रैणा' (रू. भे.)

रयणीहत—सं. पु. [सं. रजनी+हत] सूर्य, रवि।

उ०—सिविता रवि सूर पतंग सही, रकतंवर अंवर ज्योत रही। किरणाळ प्रभाकर भांण कहं। रयणीहत मित्र सुचित्र रहं। —पा. प्र.

रयणौ—देखो 'रयण' (मह., रू. भे.)

उ०—सद्गुरु आवी समोसस्या, सांभलि नलणि अभयणौ जी। जाति समरण पांमियउ, संजम परम रयणौ जी।
—स. कु.

रयत—देखो 'रय्यत' (रू. भे.)

उ०—गरथ लेत गोसेह, रात दिवस रोसै रयत। मांय मांय मोसेह, मुनसी खोसै मुरधरा। —ऊ. का.

रयतदोस, रयदोस—सं. पु.—दूषित आहार लेने से बनने वाला दोष।
(जैन)

रयनाक—सं. पु.—समुद्र, सागर

उ०—कवि 'गंग' अकव्वर अक्कभन (अन)। न्रप निपांन सव वस करिय। रांना प्रताप रयनाक मभ, छिन डुव्वत छिन अच्छरिय। —कवि गंग

रयनि, रयनी—देखो 'रजनी' (रू. भे.)

रयय—देखो 'रजत' (रू. भे.)

रयवारी—देखो 'रैवारी' (रू. भे.)

उ०—नागरखेली नित चरइ, पांणी पीवइ गंग। ढोला रयवारी कहइ, करहउ एक सुचंग। —ढो. मा.

रयवाड़ी—देखो 'रैवाड़ी' (रू. भे.)

उ०—१ महाराय! रयवाड़ी ये रमवांनौ छे लाग। जईये रमवा आज प्रभु, फूल रह्यौ छे वाग। —स्रीपाल रास

उ०—२ स्रेणिक रयवाड़ी चढचउ पेखियउ मुनि एकांत। वर रूप कांति मोहियउ, राय पूछई कहउ रे विरतंत।
—स. कु.

रया—सं. स्त्री. [अ. रिआया] प्रजा, जनता।

उ०—१ गरीव रया री तौ भगवांन माथा सूं ईं विस्वास उठग्यौ हो। चौड़ै वात करण री हीमत तौ किणी री नीं ही पण पीढियां सूं विखा रा तायोड़ा अभ्यागत मन ई मन उण कुचमादी नै ई भगवांन री ठौड़ आपरा हिवड़ा में थरप लियौ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ क्यूं मौत री मरजी माथै, जीवण री पड़गी हड़ताळ। हिरणी वोली रया करै कांई, रखवाळा री पड़ग्यौ काळ।
—चेतमांनखा

रयासत—देखो 'रियासत' (रू. भे.)

रयिस्ठ—सं. पु. [सं. रैस्ठ] १ कुवेर।

[सं. रजस्थ] २ अग्नि, आग।

रयी—देखो 'रई' (रू. भे.) (डि. को.)

रयोसयौ—वि.—१ शेप, अवशिष्ट।

२ वचा-खुचा।

रय्यत—सं. स्त्री. [अ. रअय्यत] प्रजा, जनता, रिआया।

उ०—काविल कलांम कहियत करीम, रहमांन इल्म रय्यत रहीम।
—ऊ. का.

रू. भे.—रयत, रैत।

ररंकार—सं. पु. [सं. रकार] राम नाम की ध्वनि, जप, माला।

उ०—१ रट रै ररंकार धार मन ईस्वर। तोइ निधि पार उतारण तेम। ओ संसार अलप घन 'ओपा', जळ-निधि तणा वुदवुदा जेम। —ओपौ आढौ

उ०—२ अति उतिम सिवरन सहज, नाभ कवळ असथांन। रोम रोम ररंकार हुय, भाग वडे का डांन। —अनुभववांणी

रू० भे०—ररंकार।

रर–सं. स्त्री. [प्रा. रड] रटन, रट।

ररणौ, ररबौ–क्रि. स.–१ रटना, जपना।

उ०—रसना पतसीत न कूं ररियौ, भव डंड जिकां जम रै भरियौ। रसना पतसीत तणौ ररियौ, भव डंड जिकां जम नां भरियौ। —र. ज. प्र.

२ कहना, कथना।

उ०—ररै ससा भायां रसा, वीर पिण न. महवीर। विण माथै दळ वाढणा, धर सांचा रणधीर। —रेवतसिंघ भाटी

३ बोलना।

उ०—नृप मांन के वंक सुभाव विलोकत चित्त की अति अचंभौ धरै। चतुरानन आंन पढ़ावै विचच्छन, तौ उन जीभ नकार ररै। —वां. दा.

ररौ–सं. पु.–१ राम नाम का प्रथम अक्षर।

उ०—१ पोथी पुसतग टीपणौ, विद्या दूरि वहाय। हरीया सवहि छाडिकै, ररै ममै चित लाय। —अनुभववांणी

उ०—२ तीकम पाळगर जन देवत री सौ। गान दिनां मुग नांम ररौ सौ। —र. ज. प्र.

२ 'र' वर्ण या अक्षर।

रळ, रल–स .पु.–तुच्छ, न्यून।

उ०—१ आसमुद्द धरहि धणिय इक्केक्कइं कढि चीरि। हाकीउ रल जिम काढीइंउ आथमतई सूरि। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ अन्न दिवसि वंभणु मकुटंब रल जिम विलवइ पाटइ वुंब। पूछइ भीमु करी एकंतु आविउं दूस किसुं अचिंतु। —सालिभद्र सूरि

रळक–सं. स्त्री.–१ फिसलन।

२ लपट।

३ इच्छा।

रळकणौ, रळकबौ–क्रि. अ.–१ फिसलना, रपटना, खिसकना, सरकना।

उ०—१ माता रै मन्दिर चढतां सालूड़ौ रळक्यौ ए माय। तेटौ वजाजी री वेटी सालूड़ौ ले आवै ऐ माय। —लो. गी.

उ०—२ खावासजी नै एकाएक विस्वास नी व्हियौ के उण रै पाखती ऊभी आ कोई लुगाई बोलै है। जे एकर ई कोयलां आ वोली सुणलै तौ बोलणौ भूल जावै। गळा रै मांय बोली रा आखर रळकता दीसै। मूंडां में दांता री ठौड़ जांणै तारा खिवै। —फुलवाड़ी

२ प्रगट होना, निकलना।

उ०—१ वा घणी ई गवर रागियौ तौ ई उण रै मूंडा सूं माटै ई बोल रळक पड़िया —फुलवाड़ी

उ०—२ हिवड़ा में ओट्योड़ी मन री अगूट दरद आखरां री रूप धार माछांणी रळक पड़्यौ। —फुलवाड़ी

उ०—३ भोळा टावर री गळाई उण रै मूंडा सूं बोल रळक पड़्या–देखूं, म्हारौ पग इण में पजायौ। कैड़ीक फूठरी लागै। —फुलवाड़ी

३ टपकना, गिरना, ढुलकना।

उ०—१ कान्नी मासी अर भटियांणी रै पगां हाथ लगाय सिधावती वेळा गूंगी अर गवाळजी री आंख्यां सूं ठळाक ठळाक आसू रळक पड्या। —फुलवाड़ी

उ०—२ कागद मांयट नै जबरू ऊंचौ जोयौ नौ कानी री ग्याना जैड़ी मोटी-मोटी आंख्यां में पांणी देख्यौ। टप करतौ एक बळबळतौ आंसू उण रा गाल माथै कर रळक्यौ तौ वौ कागद नांख नै नाठग्यौ। —अमर चूनड़ी

४ गेंद के समान लुढकना। घुडकना।

५ लटकना, लूंमना।

उ०—१ गोडां रळकंती काळी भवर आंटी री फटकारौ देय ठकरांणी भचकै आडी फिरी। —फुलवाड़ी

उ०—२ मांथां सूं ई हेटै रळकंता झडूला रा काळा–भवर केस जांणै काळा रंग री नांव उजागर करता व्है। —फुलवाड़ी

उ०—३ विमळा कमळा सी अमळा वेसां री, कढिया रळकंता कमळा केसां री। भूखण आभूखण मनना भरियोड़ी, वेळा मनवंछित केळा करियोड़ी। —ऊ. का.

वि० वि०—यहां 'रळकणौ' का शाब्दिक अर्थ यद्यपि लटकना ही होगा क्योंकि केश मस्तक से होकर कमर की ओर लटक रहे हैं। लेकिन शब्द की भावना को समझने के लिये यहां लटकते बालों में होने वाली हरकत की ओर ध्यान देना आवश्यक है। मस्तक की हरकत के अनुसार बालों का हिलना डुलना स्वाभाविक ही है और बाल हिलने के साथ साथ पीठ, कमर आदि अंगों को स्पर्श करते है इससे उनमें एक फिसलन पैदा होती रहती है और हिलने डुलने से बालों में लटकने व फिसलने की दोनों क्रियाएं साथ साथ होती है। अतः यहां 'रळकणौ' का अर्थ लटकना व फिसलना मिश्रित रूप में है। किसी खूंटी के बंधी रस्सी को भी लटकना माना जा सकता है परन्तु यहां 'रळकणौ' का भाव नहीं आ सकता।

६ किसी आधार पर लटक कर झूमना, झूलना, हिलना-डुलना।

उ०—केहरी लंक लग थग कंदल, झळकि पदम नग डग भरै।

ऐ वात पलकि नख मैं दियां, रळकि हार उर ऊपरै।
—पनां

७ धीरे धीरे वहना।

उ०—सिळगती धरती री काळजौ ठाडौ हेम व्हैगौ। वळवळती रेत रै माथै ढाळोढाळ पांणी रळकण लागौ।
—फुलवाड़ी

८ प्रस्थान करना, जाना।

उ०—रळक्या सेला मारू ढळती सी रात, दिन तौ उगायौ रांणी मोकरी रे देस में जी म्हारा राज। —लो. गी.

९ मिटना, धूमिल होना।

उ०—अळगा अळगा गांवड़ा, करड़ा करड़ा कोस। लूग्रां रळक्या राहड़ा, पंथी कुण नैं दोस। —लू

रळकणहार, हारौ (हारी), रळकणियौ —वि.।

रळकिग्रोड़ौ, रळकियोड़ौ, रळक्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रळकीजणौ, रळकीजवौ —भाव वा.।

रळणौ, रळवौ —रू. भे.।

रळकाणौ, रळकावौ—क्रि. स. ['रळकणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ फिसलाना, रपटाना, खिसकाना, सरकाना।

२ प्रगट करना, निकालना।

उ०—मन रो भेद जीव में राखी जगां जगां रळकाई ना।
—गजानन वर्मा (बादळी)

३ गेंद के समान लुढकाना, घुड़काना।

४ टपकाना, गिराना, ढुलकाना।

उ०—भेली-भेली सुन्दर गोरी घोड़े री लगांम। आंसू तौ रळकाया कायर मोर ज्यूं, जी म्हांरा राज। —लो. गी.

५ लटकाना।

६ किसी आधार पर लटका कर हिलाना-डुलाना।

७ धीरे-धीरे वहाना।

८ प्रस्थान कराना, जाने के लिये प्रेरित करना।

९ मिटाना, धूमिल करना।

उ०—लूग्रां फिर फिर रोहियां, रळकाया सै राह। पथ मेटण मिस मारिया, पंथी दारुण दाह। —लू

१० अनाज के ढेर में से अच्छा व साफ अनाज पृथक करने के लिये उस पर हल्के हल्के हाथ फिराना। इसी प्रकार से अन्य पदार्थ भी।

उ०—इण भांत रा मूंग हाथां सूं रळकायजै छै। चुण-वीण कांकरा काढजै छै। —रा. सा. सं.

११ फैलाना, तानना।

उ०—छापरियौ देख नै तंबूड़ा तांणिया ए ग्रंबा, डूंगरियै रळकाई रेसम डोर। —लो. गी.

रळकाणहार, हारौ (हारी), रळकाणियौ —वि.।

रळकायोड़ौ —भू. का. कृ.।

रळकाईजणौ, रळकाईजवौ —कर्म वा.।

रळकावणौ, रळकाववौ —रू. भे.।

रळकायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ फिसलाया हुग्रा, रपटाया हुग्रा, खिसकाया हुग्रा, सरकाया हुग्रा. २ प्रगट किया हुग्रा, निकाला हुग्रा. ३ गेंद के समान लुढकाया हुग्रा. ४ टपकाया हुग्रा, गिराया हुग्रा, ढुलकाया हुग्रा. ५ लटकाया हुग्रा. ६ किसी ग्राधार पर लटका कर हिलाया हुग्रा. ७ धीरे धीरे वहाया हुग्रा. ८ प्रस्थान कराया हुग्रा, जाने के लिये प्रेरित किया हुग्रा. ९ मिटाया हुग्रा, धूमिल किया हुग्रा. १० हल्के हल्के हाथ फेरा हुग्रा (ग्रनाज ग्रादि पदार्थ) ११ फैलाया हुग्रा, ताना हुग्रा। (स्त्री. रळकायोड़ी)

रळकावणौ, रळकाववौ—देखो 'रळकाणौ, रळकावौ' (रू. भे.)

रळकावणहार, हारौ (हारी), रळकावणियौ —वि.।

रळकाविग्रोड़ौ, रळकावियोड़ौ, रळकाव्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रळकावीजणौ, रळकावीजवौ —कर्म वा.।

रळकावियोड़ौ—देखो 'रळकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रळकावियोड़ी)

रळकियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ फिसला हुग्रा, रपटा हुग्रा, खिसका हुग्रा, सरका हुग्रा. २ प्रगट हुवा हुग्रा, निकला हुग्रा. ३ टपका हुग्रा, गिरा हुग्रा, ढुलका हुग्रा. ४ गेंद के समान लुढका हुग्रा, घुडका हुग्रा. ५ लटका हुग्रा, लूंमा हुग्रा. ६ किसी ग्राधार पर लटक कर झूमा हुग्रा, झूला हुग्रा, हिला-डुला हुग्रा. ७ धीरे धीरे वहा हुग्रा. ८ प्रस्थान किया हुग्रा, गया हुग्रा. ९ मिटा हुग्रा, धूमिल हुवा हुग्रा।
(स्त्री. रळकियोड़ी)

रळकौ—सं. पु.—१ कभी-कभी ग्राने वाला शीतल हवा का झौंका।

२ थोड़े समय के लिये होने वाली वरसात की झड़ी।

उ०—छिन एक चाली परवा भांण, दोय घड़ी जे रळकौ दे दे तो, ताली भर जाय ग्रांगण मांय। —लो. गी.

३ पानी या द्रव पदार्थ का हल्का वहाव, प्रवाह।

४ दूसरी वार सींच कर जाव में पानी देने की एक क्रिया।

५ पतले गोवर का किया जाने वाला लेपन।

रळचळ—सं. पु.—वहाव, प्रवाह।

उ०—वळकै वीजूजळ कुटकै कम्मळ, सूं सर सावळ झळहळ ए। ग्रडडे कांछसळ कुटकै कम्मळ, सोणी रळचळ खळहळ ए।
—गु. रू. बं.

रळणौ, रळबौ—क्रि॰ अ॰—१ मिलना, सम्मिलित होना।

उ॰—१ जे हुडियार हुंता सूअर होइ तौ हिंदू मुसलमांन रळि खावौ। जो गाइ होय तो हिंदू मुसलमांन रळ खावौ।
—द. वि.

ऊ॰—२ गठ जोड़ौ तौ जुड़्यौ पण मन-मेळ जोड़ौ मिळ्यौ नहीं। मूळी लांबी अर जुवांन। पेमजी ओछौ, गट मींगणियौ बूढौ विरांन। दो-दो दुख सागै रळग्या।
—दसदोख

उ॰—३ सिर झुकिया सह साह, सींहासण जिण सांमने। रळणौ पंगत राह, फावै किम तोनै 'फता'। —केसरीसिंह बारहठ

उ॰—४ पण छोटा-मोटा टावर अर जुवांन घणैं कोड सूं डागै रै संघ में रळै है। —दसदोख

२ मिश्रण होना, मिश्रित होना।

उ॰—घर जाणैं हला-हला'र छल्यौ है। घर ह्वाळा तो आटै रे लूण दाई रळग्या। —दसदोख

४ घुलना, मिलना, रमना।

उ॰—१ रळ रही नैन में नींद गुमांनीड़ा। तार नसै की मार बोलन की। —रसीलै राज री गीत

उ॰—२ नागा नगर गयांह, मन मेळू मिळिया नहीं। मिळिया विन मिळियाह, जांसूं मन रळिया नहीं। —अग्यात

उ॰—३ डागै री विसवास जम्यौ अर दायजै-टीकै री मोल मांग्यौ न बम्यौ। सगै-सगै री रळग्यौ जी, मीठा हुया ज्यूं सक्कर घी। —दसदोख

उ॰—४ अब घणी खुस्याली हुई छै। राजा अर साह रंग रळीया छै। —वीजड़ वीजोगण री वात

४ समाना, मिलना, विलीन होना।

उ॰—१ ज्यूं जळ वूठौ थळ में रळियौ। ऊगी कूंपळ काची। पीळी कीकर पड़ग्यौ करसा, थें धरती नै राची।
—चेत मांनखा

उ॰—२ आछोड़ा ढिग आय, यौं आछा भेळा हुवै। ज्यूं सागर में जाय, रळै नदी जळ राजिया। —किरपारांम

उ॰—३ रिण लड़ै पड़ै करिणयागरी, विकट जोध 'दोळौ' वळै। 'सबळ' रौ कांम आयौ 'सुरिंद', रांमजोत भेळौ रळै।
—बखतौ खिड़ियौ

उ॰—४ सत गुरु सैन दई जब आकै, जोत में जोत रळी।
—मीरां

५ शोभित होना।

उ॰—रसिया नैणां रळ रह्यौ, काजळ तीखी कोर। किया चटाक कारणैं, चंदावदनी चोर। —अग्यात

६ प्रवेश पाना, पैठना, घुसना।

उ॰—१ पव्वै धारां पाण गौत रळैगौ अमरांपुरां। उजळै गो गोत वूंदी समरां आयांण। ढमरां घुळंता वास मळैगौ अदोत दीहां, चमरां ढुळंतां जोत भळैगौ चहुआंण।
—दुरगादत्त बारहठ

उ॰—२ छेकड़ नैं'रांळी गांवां में जाणौ ई पड़्यौ। ठतादै चाल-चल्लै में रळनौ पड़्यौ। —दसदोख

७ फैलना, छितराना।

उ॰—कुंजर कीडइ रवि रलइ, जाय न जाइ जेह। [माधव कहइ:] सुणि मांनिनी, सिघ-विहूणा तेह। —मा. कां. प्र.

८ उछलकर गिरना।

उ॰—घमंघम सेल बमक्कत घाव। रमझ्झम अच्छर झांझर राव। मिळै कर मूंछ गळै बरमाळ, चंडी पत्र रत्त रळै दहचाळ।
—मे. म.

९ लीन होना, मग्न होना।

१० पड़ना।

उ॰—चूडी सवि चटकी गई, रलिउ मुक्ताहल-हार। आभरणां ऊतरि पडइ, खाट खमई नहीं भार। —मा. कां. प्र.

११ लगना, स्पर्श होना।

उ॰—इण भांति गोल्यां री चाळी करै छै। प्याला भी फिरै छै। जठै अंतर में रळिया थका जांमां पहरिया छै। मांहोमाहि गुलाब छिड़कीजै छै। —पनां

१२ बरसना, वृष्टि होना।

उ॰—रळियौ जळ सुरराज, धर अंबर इक धार सूं। करण अभय व्रज काज, गिरि नख धारयौ कांन्हड़ा।
—रांमनाथ कवियौ

१३ नष्ट होना, बरबाद होना।

१४ चिरना फटना।

१५ ढलना

उ॰—रलीया हे सखी रलिया दिन नें रात। रहतां हे सखि रहतां हे दिवस वहूजी। —प. च. चौ. (१४)

१६ देखो 'रळकणौ, रळकबौ' (रू. भे.)

उ॰—मांग जड़्यां गज मोतियां, कड़्यां रळंता केस। ताळी हूंस दे तीजणी, चाळी कांमण वेस। —अग्यात

रळणहार, हारौ (हारी), रळणियौ वि.।

रळिग्रोड़ौ, रळियोड़ौ, रळचोड़ौ —भू. का. कृ.।

रळीजणौ, रळीजबौ —भाव वा.

रळतळ—देखो 'रळत्तळ' (रू. भे.)

उ०—खळहळां चलै **रळतळां** खाळ। वीजळां झळां वीमळां ग्राळ। गूंछळां गळां गूथळां गट्टु। सिघळी कळां सांकळां सट्टु।
—गु. रू. बं.

रळतळणौ, रळतळबौ—क्रि. ग्र.—१ फिसलना, रपटना।

उ०—**रळतळइ** रथ नई मगर कुंजर ग्रस्व जेहुवा कछ।
—रुखमणि मंगळ

२ फैलना।

उ०—१ रुधिर धर **रळतळी** वहु नाचइ कमंध महावळी। ग्राळूझइ ग्रांत्रावळी। —ग्र. वचनिका

उ०—२ रिण ग्रंगणि तेणि रुहिर **रळतळिया**। घणा हाथ हूं पड़ै घणा। ऊंधा पत्र वुदवुद जळ ग्राकृति, तरि चालै जोगिणी नगा। —वेलि

उ० –३ कोड भड कचरिया रायमल कोपिये, जुडण मोटा करै 'कुंभ' जायौ। **रळतळै** रुधर रणभोम रहियौ नहीं, ऊपटै नदी जळ मांह ग्रायौ। —महारांणा रायमल रौ गीत

३ गिरना, पड़ना, धराशायी होना।

उ०—पुळियां घणांघणां गलिपाळै, **रळतळिया** पैलां खळ रोद। ग्रमपनि दळां पडंतां ग्रांम्ही, सांम्ही धार वढ्यौ सीसोद।
—केसरिसिंह सीसोदिया रौ गीत

रळतळणहार, हारौ (हारी), रळतळणियौ —वि.।

रळतळिग्रोड़ौ, रळतळियोड़ौ, रळतळचोड़ौ भू. का. कृ.।

रळतळीजणौ, रळतळीजबौ —भाव. वा.।

रळत्तळणौ, रळत्तळबौ —रू भे.।

रळतळियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ फिसला हुग्रा, रपटा हुग्रा. २ फैला हुग्रा. ३ प्रवाहित हुवा हुग्रा, वहा हुग्रा. ४ धराशायी हुवा हुग्रा, गिरा हुग्रा, पड़ा हुग्रा।
(स्त्री० रळतळियोड़ी)

रळतळी—देखो 'रळत्तळ' (रू. भे.)

रळत्तळ—सं. स्त्री.—राठौड़ वीर गोगादे की तलवार का नाम। यह तलवार प्रहार के समय झटका लगने पर लम्बी फैल जाती थी।

उ०—ग्रखै कव ग्रोपग दीपत एम, जिका भड़ गोग **रळत्तळ** जेम।
—पे. रू.

क्रि. वि.—तीव्र गति मे, वेग से।

रू० भे०—रळतळ, रळतळी, रळथळी।

रळत्तळणौ, रळत्तळबौ—देखो 'रळतळणौ, रळतळबौ' (रू. भे.)

उ०—खगां चढि धार हुए वि वि खण्ड, पड़ै धर हिंदु मळेछ प्रचंड। **रळत्तळि** नीर जिहीं रुहिराळ, खळाहळि जांणि कि भाद्रव खाळ। —वचनिका

रळत्तळणहार, हारौ (हारी), रळत्तळणियौ —वि.।

रळत्तळिग्रोड़ौ, रळत्तळियोड़ौ, रळत्तळचोड़ौ —भू. का. कृ.

रळत्तळीजणौ, रळत्तळीजबौ —भाव. वा.

रळत्तळियोड़ौ—देखो 'रळतळियोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री. रळत्तळियोड़ी)

रळथळी—देखो 'रळत्तळ' (रू. भे.)

उ०—जोपस वाळी जवारिका जैण कीध जवाहर, गोगादे ने **रळथळी** दीधी कर मेहर —(मा. म.)
—सवळी नाळम

रळपट—सं. स्त्री.—१ हंसी, दिल्लगी, मजाक, मखौल।
२ उद्दण्डता, वदमाशी।
वि.—१ उद्दण्ड, वदमाश।
२ व्यर्थ, फालतू।

उ०—पकवांन परूसे **रळपट** रूसे, फरगट सुख फेंकंदा है।
—ऊ. का.

३ ग्रविश्वास पात्र।
४ लम्पट, वद चलन।
५ ग्रावारा।
रू० भे०—रुळपट।

रळमिळ—देखो 'रिळमिळ' (रू. भे.)

उ०—१ ज्यूं पांणी काढै त्यूं देवाळी धोरै धोरै वैवतौ क्यारां क्यारां **रळमिळ** जावै। —फुलवाड़ी

उ०—२ कदे न ल्याया भंवरजी सूतळीजी, हांजी ढोला। कदे वी वुणी नहीं खाट। कदेय न सूता **रळमिळ** सेज में जी, ग्रो जी पियाजी। ग्रव घर ग्राग्रो, थांरी प्यारी उडीके महल में जी। — लो. गी.

उ०—३ सूवटां रौ ग्रो झूलरौ मीठा सुर में धरती री कूख वधावै के म्हारी जच्चा-रांणी नै **रळमिळ** मीठा गीत सुणावै।
—फुलवाड़ी

उ० –४ हंसी ढव्यां राजाजी कीं वात पूछणी चावै उण वगत वळै हंसी ग्राय जावै। वोली हंसी में **रळमिळ** जावै।

रळमिळणौ, रळमिळबौ—क्रि. ग्र.—१ हिलना-मिलना, मिलना-जुलना।

उ०—चार कूंट की वावड़ी, जी में सीतल नीर। ग्रापां **रळमिल** न्हायस्यां, म्हारी लाल नणद रा वीर। —लो. गी.

२ फैलना, फैलकर समाना।

उ०—वै सोळा सूरज कीकर खिरिया कण री म्यांनी तौ म्हैं ई नीं जांणूं, पण वै धरती माथै खिरियां पैं'ली पैं'ली मगळी दुनियां में वातां वणनै रळमिळग्या। —फुलवाड़ी

३ सम्मिलित होना, मिश्रित होना।

उ०—चीकणा गुलाबी डील री परस पातां ई वादळां री पांणी मोत्यां ज्यूं जड़ग्यौ। काळा भड़ूला में अणगिण मोती ई मोती रळमिलग्या। —फुलवाड़ी

४ घुल-मिल जाना।

रळिमिळणौ, रळिमिळवौ —रू. भे.

रळमिळियोड़ौ-भू. का. कृ-१ हिला-मिला, मिला-जुला. २ फैला हुग्रा, फैलकर समाया हुआ. ३ सम्मिलित हुवा हुआ, मिश्रित हुवा हुआ. ४ घुला-मिला हुआ।
(स्त्री. रळमिळियोड़ी)

रळरळ-वि.-सुन्दर, मनोहर।

उ०—रथां जळहळ चित्र रळरळ, दुभळ अणवळ प्रवळ पैदळ। अचळ अ्रिय वळ महल पुरि यळ. प्रघळ दळ वळ रीभ इक पळ। —र. रू.

रळरळक, रळलळक-स. स्त्री.-सुन्दरता, चमक, आभा। प्रकाश।

उ०—मुळळळक पोहोप फूल भड़ै, मुखहार लड़ी रळलळक हुयौ प्रतपाळक बाळक रोग प्रचाळक, जोगणि नाळक नेच जयौ। —मा. वचनिका

रळवळणौ, रळवळवौ-देखो 'रळमिळणौ, रळमिळवौ' (रू. भे.)

रळवळियोड़ौ-भू. का. कृ.-देखो 'रळमिळियोड़ौ' (रू. भे.)

रळा-सं. स्त्री.-याद।

उ०—थां छडांणै गया था सो वरस दूजे आफे पाछे आया, थांनै दूजै तीजै वरस रळा आवै छै। —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

रळाणौ, रळावौ-क्रि. स. ['रळणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ मिलाना।

उ०—माथै काळा भंवर केसां री चीकणी भड़ूलौ, जांणै अणगिण भंवरा आपरी काळौ रंग अर चिकणाई आं केसां में रळाय नचीता व्हैगा। —फुलवाड़ी

२ मिश्रण करना, एक-मेक करना।

उ०—मूंद रै सागै पूजती विदांमां न्हाक एकण सांचै ढळिया लाडू सांध्या, वांणां रै सागै कायफळ, कमरकस्स, काचा गोळा, काळी मिरचां रळाय लाडू बांध्या। —फुलवाड़ी

३ आत्म सात करना, समाहित करना, रमाना।

४ लीन करना, मगन करना।

५ घुलाना, घोलना।

उ०—१ वाईजी म्हांग'ओ, आयौ ओ वाड़ गा' गाछ्यिं री जांन, केसर तो रळायौ जाभा नीर में। —लो. गी.

उ०—२ दो महीनां सूं निकलिंक गरु' के म्हारा डील में आलस घणी, पांच मेर कड़कड़ पांणी में रळाय नै पीवूं तौ कीं ठंडक वापरै। —फुलवाड़ी

६ शोभित करना।

७ फैलाना, छितराना, बिखेरना।

८ प्रवेश करना/कराना, पैठाना, घुमाना।

९ गिराना, पटकना।

१० बरसाना, वृष्टि करना।

११ नष्ट या बरबाद करना।

१२ चीरना, फाड़ना।

१३ रगड़ना।

१४ टपकाना।

रळाणहार, हारौ (हारी), रळाणियौ —वि.।

रळायोड़ौ —भू. का. कृ.।

रळाईजणौ, रळाईजवौ —कर्म वा.।

रळावणौ, रळाववौ —रू. भे.

रळायोड़ौ-भू. का. कृ.-१ मिलाया हुआ. २ मिश्रण किया हुआ, एक-मेक किया हुआ. ३ आत्मसात किया हुआ, समाहित किया हुआ, रमाया हुआ. ४ लीन किया हुआ, मगन किया हुआ. ५ घुलाया हुआ, घोला हुआ. ६ शोभित किया हुआ. ७ फैलाया हुआ, छितराया हुआ, बिखेरा हुआ. ८ प्रवेश कराया हुआ, पैठाया हुआ, घुमाया हुआ. ९ गिराया हुआ, पटका हुआ. १० बरसाया हुआ, वृष्टि किया हुआ. ११ नष्ट या बरबाद किया हुआ. १२ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ. १३ रगड़ा हुआ. १४ टपकाया हुआ।
(स्त्री. रळायोड़ी)

रळावढौ-वि.-मिश्रित।

उ०—लोर में सूती राजी री घणी नराजी सूं नाड़ देख'र मूंढौ मिचकोड़ची अर उड़दू-फारसी रा अटपटा रळावढा उळटा-सुळटा सवदां सूं वात वणा'र बोल्यौ —दसदोख

रळावणौ—देखो 'रळियांमणौ' (रू. भे.)

उ०—सपना में ओ मारूजी मैं'ल जो देख्यौ, मैं'नां रा थंभ रळावणां जी। —लो. गी.
(स्त्री. रळावणी)

रळावणौ, रळाववौ—देखो 'रळाणौ, रळावौ' (रू. भे.)

उ०—कालिंदर ई पाछा दरसण नी दिया। सेवट हाथ झाटक आंमू रळावती रळावती घरै आई। —फुलवाड़ी

रळावणहार, हारौ (हारी), रळावणियौ —वि.

रळाविश्रोड़ौ, रळावियोड़ौ, रळाव्योड़ौ —भू. का. कृ.

रळावीजणौ, रळावीजवौ —कर्म वा.

रळावियोड़ौ–देखो 'रळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रळावियोड़ी)

रळि–देखो 'रळी' (रू. भे.)

उ०—१ जनक हरखै जांनकी राज रळि बहरंग। मुरै वरखा पोहप स्रवि, नौबत घुरै निहंग। —रांमरासौ

उ०—२ रुखमणी मनि. रळि अंगी अमी ढळी, पदम वाचा प्रति नाथ तूठा। —रुखमणी मंगळ

रलिआंमणउ, रलिआंमणु, रलिआंमणौ–देखो 'रळियांमणौ' (रू. भे.)

उ०—१ रांणपुरइ रलिआंमणउ रे लाल, स्त्री आदीसर देव मन मोहयउ रे। —स. कु.

उ०—२ यइ दरिसण रलिआंमणु आंमणु दमणु जाई। जिम मुझ पहुंचइ आखड़ि, आखड़िया न उसाई। —स. कु.

रळिमळि–देखो 'रिळमिळ' (रू. भे.)

उ०—पीया सु परची भयौ, हरीया रळिमळि मेल। मेरै सांम सुहाग की, है अजरांमर बेल। —अनुभववांणी

रळिमिळणौ, रळिमिळवौ–देखो 'रळमिलणौ, रळमिलवौ' (रू. भे.)

उ०—खोड़उ हुंतउ डांभिज्यउ, वांध्यउ भूख मरेसि। थे विहुं सज्जण रळिमिल्यउ, हूं विच दुख्ख सहेसि। —ढो. मा.

रळिमिळियोड़ौ–देखो 'रळमिळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रळिमिळियोड़ी)

रळिय, रलिय–देखो 'रळी' (रू. भे.)

उ०—१ वत्तीस वद्ध नाडय घड, पत्ति पत्ति नच्चइ रलिय। इयसिय रिद्धि पिखेवि कर, दसणभद्द मउ गउ (इय) गलिय। —अभयतिक यति

उ०—२ सहजति निरुवम रूवधरु पंचइ राजकुमार। तहविह मायडिय रलिय लगि काराविय मिणगार। —प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—३ रळियां जायोड़ा गळियां में रुळिया। —ऊ. का.

रळियांमणौ, रलियांमणौ, रळियावणौ, रलियावणौ–वि. (स्त्री. रळियांमणी, रलियांमणी)

१ सुन्दर, मनोहर, सुहावना।

उ०—१ सैंयां सियावर घर आया हे, अवध नगर रळियांमणौ, सुख संपत छाया है। —गी. रां.

उ०—२ रूपाळो रळियांमणौ धोळागिर रौ थांन। तर नीझरण झंकर तटै, सिखर मेर समांन। —दुरगादत्त बारहठ

उ०—३ राजग्रही नगरी हो अति रलियांमणी। 'गुणसिल' नांमे वागजिणेसर। —जयवांणी

२ आनन्द दायक, उत्साह वर्धक।

उ०—१ रति अनुकूळ विलास घणां रळियांमणां। भीखण दीसै इंद्र लिवूं हूं भांमणां। —बां. दा.

उ०—२ संवत सोल अठांणुअइ, स्रावण पंचमी अजुवालइ रे। रास भण्यौ रलियांमणौ स्त्री समयसुंदर गुण गाइ रे। —स. कु.

उ०—३ पनां विळकुळी कहै, अवै सुख पावणौ। आवतां आज को दिन, रळियांवणौ। —पनां

३ मौज व मस्ती देने वाला।

उ०—राज छोड्यउ रलियांमणौ, तुम जांण्यउ अथिर संसार। वयरागे मन वालियुं, तुमे लीधउ संयम भार। —स. कु.

४ मोहक, आकर्षक।

उ०—१ मूरति मोहन वेलड़ी, प्रगटी पुण्य पडूर। रिखभ तणी रलियांमणी, प्रणमंता सुख पूर। —स. कु.

उ०—२ मूरति अति रलियांमणी, निरखण चाहै नैण। जेह करावै जातरा, साचा ते हिज सैण। —ध. व. ग्रं.

५ मधुर, प्रिय।

उ०—१ त्रिकनै हो चोक चचर सरव्वच, सांभळि पटहनी घोसणा मंडं प्रगट निवारचौ हो तेह, वचन सुणी रलियांमणा। —वि. कु.

उ०—२ ते नटुइ हो करि सोल स्निगार कि, गीत गायई रलियांमणा —स. कु.

६ सुखी।

उ०—सुख प्रांमियौ सजणां दुक्ख थियौ दुजणां। लोक रळियांमणौ लियै भांमणा। —गु. रू. बं.

७ श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—दिन-दिन डोहला पूरतां, वोल्या पूरा मास। सुत्त जायौ रलियांमणौ, सहुनी पूगी आस। —वि. कु.

रू० भे०–रळावणौ, रलिआंमणउ, रलिआंमणु, रलिआंमणौ, रळियावणउ, रळियावणिय, रळियावणौ, रळीआंमणू, रळीआंमणौ, रळीयांमण, रळीयांमणौ, रळीयावणौ।

रळियाइत, रळियात, रळियायत, रळियायित, रळियारत–सं. स्त्री.–
१ आनन्द, खुशी।

उ०—१ उठी ने सांम्ही गई, जोड़ी दोनूं हाथ। विनय सहित वंदना करी, मन में थई रलियात। —जयवांणी

उ०—२ रमता रावळिया रळियारत रोचै, धुन में धुन लागी धुन में सत सोधै। —ऊ. का.

२ लाड, प्यार।

वि.–१ प्रसन्न, खुश, मुदित।

उ०—१ राव कल्यांणमल अर सरव राजलोक दूलह दुलहणि देखि दूणा रळियाइत हुआ। —द. वि.

उ०—२ पांणी सुगम कीयो कुमर, जेह हुतौ दुरलंभ। रलियाइत सहु को थया, पीछो परिघल ग्रंभ। —वि. कु.

उ०—३ कहइ राजिमती रलियात थकी, शुभ भाग वडउ महिला मइ सखी। —स. कु.

उ०—४ रलियाय राजा थयो रे, सांभलि तास वचन। कुमरी अध्यापक भणी रे, लाख गमे दीधो धन। —श्रीपाल रास

उ०—५ राज तम हमसूं मिळै, हमह मिळै सुख-सात। हजरत रळियायित हुआ, हसि पूछी कुसळात। —गु. रू. बं.

२ उत्साहित। आशान्वित।

उ०—समाचार सविस्तर कह्या, पिंगळराय ही गहगह्या। छांना नितु पुहचइ परवांन, रळियात थ्या चिति परवांन। —ढो. मा.

३ आसक्त।

उ०—खंजन नेत्र विसाळ गति, नासिका दीपक लोय। ढोलो रळियायत हुवो, जे धण दीठी जोय। —ढो. मा.

रू० भे०–रळियावत, रळीग्राइत, रळीग्राईत, रळीग्राईती, रळीग्रात, रळिग्राति, रळीयाइत, रळीयाईत, रळीयाईती, रळीयात, रळीयायत, रळीयायित, रळीयावत।

रळियालउ, रळियाळो, रलियालो–वि. (स्त्री. रळियाली) १ सुन्दर, मनोहर।

उ०—बांह विहुं लटकाली, अति ओपै लुंब भुंबाली हो। गड़ी नैं रलियाली हीणी करि चंपक डाली हो। —वि. कु.

२ प्रिय, प्यारा।

उ०—दुख महोदधि पाज, भव जल तारण जहाज, आज हो रंगइ रे रलियालउ साहिब सेवियइ जी। —वि. कु.

३ प्रसन्न, खुश, आनन्दित।

उ०—रांमत रमता सुर में रता रळियाळा। —केसोदास गाडण

सं. पु.–ईश्वर, परमेश्वर।

रलियावणउ, रळियावणिय, रळियावणो–देखो 'रलियांमणो' (रू. भे.)

उ०—१ कांन्हड कुंतिपुत्रसउं रमलि करेनउ रंगे, धण वणगण रलियावणउ पहुतउ गिरिवर सिंगे। —प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ घर घर में धीणां घणा, घर घर घूमै माट। राग रंग रळियावणो, घरगुड़ मांभळ घाट। —बां. दा.

उ०—३ राज कंवर रळियावणा, नयणां रा है घन जीवण जेह के। —गी. रां.

उ०—४ भांत भांत रा रळियावणा म्हारा पंगल्ह रळियां करता हा। —फुलवाड़ी

(स्त्री. रळियावणी)

रळियावत–देखो 'रळियायत' (रू. भे.)

उ०—रीम करी भावै रळियावत, गज भावै खर चाढ़ गुलांम। माहरै सदा ताहरी माहव, रजा सजा सिर ऊपर रांम। —प्रथ्वीराज राठौड़

रळियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ मिला हुआ. २ सम्मिलित हुवा हुआ. ३ मिश्रण हुवा हुआ. ४ घुला-मिला हुआ, रमा हुआ. ५ समाया हुआ, आत्म सात हुवा हुआ. ६ एकमेक हुवा हुआ, एक हुवा हुआ. ७ शोभित हुवा हुआ. ८ प्रवेश पाया हुआ, पैठा हुआ, घुसा हुआ. ९ फैला हुआ, छितराया हुआ. १० उछल कर गिरा हुआ. ११ लीन हुवा हुआ, मग्न हुवा हुआ. १२ पड़ा हुआ. १३ बरसा हुआ. १४ नष्ट या बरबाद हुवा हुआ. १५ चिरा हुआ, फटा हुआ।
१६ देखो 'रळकियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. रळियोड़ी)

रळी, रली–सं. स्त्री. [सं. रति, प्रा. रइ या रयली] १ इच्छा, कामना, चाह।

उ०—१ सुख काज अमीर 'अगजीत' सूं, रस सधीर अप्पण रळी। वातां अथाह जावां वची, साह नवावां सांभळी। —रा. रू.

उ०—२ चंदन केसर चंपक कली, प्रतिमा पूजी मन नी रली। —स. कु.

उ०—३ आपणी रली चउसठी देवेंद्र जन्माभिसेक करइं, मेरु परवति मिली सुवरणारूप्य वस्त्रनी व्रस्टि निरंतर करइं,...... —व. स.

२ उत्कंठा।

उ०—१ दादू दरसन की रळी हमको बहुत अपार। क्या जांणू कब ही मिळे, मेरा प्रांण अधार। —दादूवांणी

उ०—२ चोली मइ चरणा चीर सखरा, मुंखड़ा सुसबद ए। रली रंग स्युं लइ जसोभद्रा, जांणइ जेठ प्रसाद ए। —स. कु.

३ उमंग, उत्साह।

उ०—१ सुखदुख पांमै ते सहै हो जी, कौतकियां नो राव। मलपइं मन नी रली तो पिण सुविसेखें वली होजी —वि. कु.

उ०—२ सुणिज्यइ गाजन नदण सूर महावली। सही विचारी वात कोइक रिण री रली। —प. च. चौ.

४ उत्साह या उमंग पूर्वक किया जाने वाला कार्य।

५ आनन्द, खुशी, हर्ष। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ छतीस राग छाजत्ती, निहाव घाव नोवत्ती। भजै विभास भैरवं, रळी कळी कळी रवं। —रा. रू.

उ०—२ क्रोड़ि वरीस मंत्री स्री करमचंद उत्सव करत्त रली। समय सुंदर गुरु के पद पंकज, लीनो जेम अली। —स. कु.

उ०—३ रळी रंग राग नांना विधि, मुनि, मंडळ के छाजै। पति सूं प्रीति जीति- गुण दूजा, वेणु गगन में वाजै। —ह. पु. वां

उ०—४ कटक थया अगिणत चहुं कोदां, सोच हुवौ मोटी सीसोदां। सहस त्रीस दळ देखै सपांणैं, रळी करै मन जैसिंघ रांणैं —रा. रू.

उ०—५ धजां तोरणां सोहियं धांम धांमं। रळी रंग वाधाय जै सीत रांमं। —सू. प्र.

उ०—६ आजे रळी वधांमणा, आजे नवला नेह। सखी अम्हीणी गोठ मइं, दूधे वूठा मेह। —ढो. मा.

६ खेल, क्रीड़ा, रास।

उ०—१ रली रलीउ आविउ मांणस माहि, एक दिवस वालापणि जाइं। —वस्तिग

उ०—२ आवौ सहेल्यां रळी करां हे, पर घर गवण निवारि। —मीरां

उ०—३ पुलिण रविसुता फहरावजै पीतपट, आवजै रासथळ व्रजनाथ आथ। कांन कवार विहरि गळी व्रज कुंज री, सुभ रळी कीजियै लाडली साथ। —वां. दा.

७ रतिक्रीड़ा, विलास, भोग।

उ०—१ पदमणि लग-थग पातळी, रळी तणै छक रूप। साय धण कळी गुलाब सम, उघड मीळी अनूप —पनां

उ०—२ दादा रै साईनी ऊमर वाळी रै साथै रळी पूरण रै आणंद री म्हारै ई मन में रै' जाती। —फुलवाड़ी

उ०—३ थारै राजाजी नै पूछ लेजै के वै व्याव करण सारू त्यार व्है तो म्हनै ई कीं आंट कोनीं। नींतर ठाली रळियां रै भरोसै इण गवाड़ी सांम्ही मूंडी ई करियौ तौ म्हारै पांडुवां नै ओळखौ ई हौ। —फुलवाड़ी

उ०—४ दो दिन री अंग रळियां पांच वरसां तांई फोड़ा घालैला। —फुलवाड़ी

८ मनोरंजन, विनोद, मौज।

९ विहार।

१० ठाट-बाट, वैभव।

रू. भे.—रळि, रळिय, रलिय।

रळीआंमणू, रळीआंमणौ—देखो 'रळियांमणौ' (रू. भे.)

उ०—१ सरव गुण जांणनइ वंसि वली भांणनइ, वीर अवतरज्यौ चहूआंणनइ ए। वली **रळीआंमणूं**, अरधासन वीरम तणउं, पांमिस्यूं सोनिगिर नूं वइसणउं ए। —कां. दे. प्र.

उ०—२ वनिता रूपे **रलीआंमणी**। —धरमपत्र

(स्त्री. रळीआंमणी)

रळीआइत, रळीआईत, रळीआईती, रळीआत, रळीआति—देखो 'रळियायत' (रू. भे.)

उ०—१ पहीरांमणी रै अणावौ, तेड़ौ नइं जादव राउ ए। रुखमणीउ **रळीआईत**, उल्हस अंगि न माई रे। —रुखमणी मंगळ

उ०—२ चाउरि मंडी चतुरनइं, राय थयु **रलीआति**। कइ ब्रह्मा कइ देव गुरु, क्षितिपति मंडइ ख्याति। —मा. कां. प्र.

रळीमण—वि०—प्रसन्न, खुश।

उ०—कांमणीयां तणै तांणीयै कसणै, मोहै दूजां तणां मण। 'राजड़' रांण रहै **रळीमण**, कसीयां जरदाळै कसण। —जोगीदास कवारीयौ

रळीयांमण, रळीयांमणौ, रलीयांमण, रलीयांमणौ—'देखो' 'रळियांमणौ' (रू. भे.)

उ०—१ फूलै फलै **रलीयांमणा**, देखाड़ै हे कुमरी आरांम। जल ना कुंड सुहांमणा, लेइ नै हे तिहां नांम सुठांम। —वि. कु.

उ०—२ राजवीयां ने साथि, आव्या हो राजकुमार **रलीयांमणा**। अमरपुरी अवतार, नगर विराजे हो मनुस्य सुहांमणा। —स्रीपाल रास

(स्त्री. रळीयांमणी)

रळीयाइत, रळीयाईत, रळीयाईती, रळीयात, रळीयायत, रळीयायित रळीयावत—देखो रळियायत' (रू. भे.)

उ०—१ लंका जाळि सीत सुधि लायी, रळीयाईती कीधी स्री स्यांम। —ह. नां. मा.

उ०—२ पोढउ ए पदवंव गणि, हूड-तणइ मनि हीक। **रलीयायत** थई रीझविसु, राजकुमर रंजीक। —मा. कां. प्र.

उ०—३ राजा **रळीयायत** थउ, दीवउ पंच पसाउ। उचित वली

आपिउं घणउं, चूकइ नहीं कांइ चाउ । —मा. कां. प्र.
उ०—४ वेहू जणा रलीयायत थया, घणा भव ना पाप ज गया । घरि तेडी नइ दिइ सन्मांन, स्रद्धा पूरवक दीधूं दांन । —नळदवदंती रास

उ०—५ कंवर चूंडा सुं मालम कीयो। मंडोवर सुं राठौड़ां नाळेर मेलीया छै। इसो कंवर चूडो सांभळ मन रळीयावत हुवो। वधाई कीजै छै। —राव रिणमल री वात

रळीयावणो–'देखो रळियांमणो' (रू. भे.)
(स्त्री. रळीयावणी)

रळीरंग–स. स्त्री.–खुशी व आनन्द के उत्सव ।
उ०—इसो कंवर चूंडो सांभळ मन में रलीयावत हुवो। वधाई कीजै छै। वाजा वाजै छै। रळीरंग होवै छै। —राव रिणमल री वात

रू. भे.—रंगरळी ।

रळो–वि. (स्त्री. रळी) १ कायर।
२ अशक्त, कमजोर।
सं. पु.–१ ऊंट की एक चाल विशेष ।
२ देखो 'रळौ' (रू. भे.)

रवंद–वि. १ तीव्र, तेज ।
उ०—उत्तर आज स उत्तरउ. पाळउ पड़इ रवंद। का वासंदर सेवियइ, कइ तरुणी कइ मंद। —ढो. मा.
२ कोलाहल युक्त ।

रव–सं स्त्री. [सं.] १ आवाज, ध्वनि, स्वर, शब्द। (ह. नां. मा.)
उ०—१ डूंगरिया हरिया हुए भरिया, भरिया ताळ तळायी। दादरिया करिया रव दीरघ, भीभरयां भरणायी। —लो. गी.
उ०—२ मिळ आवत न्योढ कि बोढ मही। जमना दळ वेळ समुद्र जही। उर माळ भणंभण ऊभरियं, पवंगां तुरियं रव पाखरियं। —रा. रू.
उ०—३ छतीस राग छाजती, निहाव घाव नोवती। भजै विभास भैरवं, रळी कळी कळी, रवं। —रा. रू.
२ गुंजार, गान, चहचाहट, कलरव।
उ०—हांजी रांमजी, करे सरोवर सरस, दरस रघुवीर रा जी म्हांरा रांम। हांजी रांमजी, कोयल नै कळहंस, सारी मुक रव करे जी म्हांरा रांम। —गी. रां.
३ शोरगुल, कोलाहल ।
उ०—भड़ अनड़ उड रव वांगि वहिभड़ । उरड़ अपहड़ दुजड़ ओभड़ । —सू. प्र.
४ करुण क्रन्दन, चीख-पुकार ।
उ०—१ दाहा सव होतां दैसोती, स्वाहा चव समसांणं। आहा हव हुयग्यो अरियां उर, हा हा रव हिंदवांणं। —ऊ. का.
उ०—२ भरियो भादरवो खाली पड़ भागो, लगतां आसू में आंसू भड़ लागो। छपनै घोरारव आरव रव छायो, सूरज ससि मंडळ गरव्वित गहणायो। —ऊ. का.
५ गर्जना, नाद ।
उ०—१ धनु भंजन रो रव घोर घणो, विचळायो है मड ब्रह्मांड तणो। —गी. रां.
उ० २ धरती जु प्रथी तै सी स्यांम जु तर व्रक्ष। जळधर मेघ गरज रव कीया। आपस में मिळ गया छै। लपटाय रह्या छै। —वेलि टी.
६ महीन धूलि, रज, गर्द ।
उ०—१ गडि गडि गोळा नाळि, विज खड़ड़ै किरि अंवर। अगन वांण ऊछळै, धोम धूंहा रव डंब्भर। —गु. रू. बं.
उ०—२ देसोत रवां धोय हाथ ऊजळा कर विसायतां ऊपर विराजमांन हुवा छै। —रा. सा. सं.
७ कण, जर्रा ।
उ०—व्याकुळत भमंग रव वळत धूळी रवण, 'सूर' री चढै तिण वार 'गजसाह'। - —कल्यांणदास महडू
रू. भे.—रउ, रय ।
८ दो लघु गणगण के दूसरे भेद का नाम।
९ एक छोटा कीड़ा जो पशुओं के शरीर पर चिपक कर रक्त चूसता रहता है।
१० देखो 'रवि' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—१ जमना जा गंग मिळी, गंग जा मिळी समंदां। आभा भरिया इंद, साख पूरी रव चंदां। —महारांणा राजसिंह रो गीत
उ०—२ पग हाथ पड़ै नस माथ पखै, लग चाव सुरां रव दाव लखै। अंग एक धकै तड़फै असुरां, सिर चीर नरां व्रण सेल सरां। —रा. रू.

रवक–स. स्त्री.–१ वह स्थान या भूमि जहां वर्षा का पानी एकत्र होने के कारण घास अच्छी होती है।
२ ऐरंड का वृक्ष ।

रवगा–सं. स्त्री. [सं.] नदी। (ह. नां. मा.)

रवजा–देखो 'रविजा' (रू. भे.) (अ. मा.)

रवण–सं. पु. [सं.] १ ऊंट ।
२ कोयल ।
३ फूल ।
४ कांसा नामक धातु ।
५ पीतल ।
६ शब्द, ध्वनि, आवाज, बोली ।
उ०—१ हाऊल हमस हंसा रवण, घण दमांम भेरी घुरै।

गजसिंघ लियरण जाळोर गढ, चढियौ हय गय पक्खरै ।
—गु. रू. बं.

७ धूलि, गर्द ।

उ०—गूदळ व्योम ढंकै गरद, रवि लुक्कै धूंआं रवण । आलम्म पयांणी एण पर, कोप तेण झल्लै कवण । —रा. रू.

८ विदूषक ।

वि.—१ शब्द या आवाज करने वाला, शब्दायमान ।

२ चिल्लाने वाला, पुकारने वाला ।

३ उष्ण. गरम, तपा हुआ ।

४ तीक्ष्ण, उग्र ।

५ चंचल, चपल ।

रू० भे०—रवन ।

रवणक—सं. पु. [सं.] ऊंट । (डि. को.)

रवणरेती—सं. स्त्री.—यमुना के किनारे व गोकुल गांव के आस पास की रेतीली भूमि ।

रवणि—सं. स्त्री.—वनस्पति विशेष ।

उ०—रावण रांग रतांजणी, रवणी नई रुद्राख । रुक रुदंती रायसलि, रोहड़ रोहिणी लाख । —मा. कां. प्र.

रवणौ, रववौ—क्रि. स.—आवाज, करना, बोलना ।

रवत—देखो 'रावत' (रू. भे.)

रवतांडव—सं. पु. [सं. रवि+तांडव] १ सूर्य का नग्न नृत्य, प्रलय नृत्य ।

उ०—कनकळ दिलीस काज, वै सांवत पखरैत वै । रुळग्यो देखो राज, रवतांडव ज्यूं राजिया । —किरपारांम

२ नृत्य और संगीत, नाच-गान ।

रवतांणी—देखो 'रावतांणी' (रू. भे.)

उ०—एक रवतांणी एक खतरांणी नारि । दोनां को अंमलराव राखी यक सारि । —शि. व.

रवताई—देखो 'रावताई' (रू. भे.)

रवताळ, रवताळौ—देखो 'रावताळौ' (रू. भे.)

उ०—१ रांण नजदीक जो होत रवताळ रिण, पिसण चौ न लागत दाव पूरो । —अरजुनसिंह चूंडावत रो गीत

उ०—२ 'रांम' तणौ रिणछोड़ रढाळां, धांधू वधि वाजण धाराळां । 'सुंदर' सुत 'सांमत' सिघाळा, 'रैणायर' 'लखमण' रवताळा । —रा. रू.

उ०—३ इळा आभ छावै उडै वघूळा गिरंदां वाळा, दाव घाव करंदां कराळा जोम दीठ । आहेसां छाकियां जड़ै प्रळै काळ वाळा आत्र, रवताळा ऊभा भोक खावै आकारीठ ।
—हुकमीचंद खिड़ियौ ।

रवतेस—देखो 'रावतेस' (रू. भे.)

रवतौ—देखो 'रावत' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ पड़ै वेध कूरम जदे रांण छळ 'पीथळौ,' खळां सर वीज जिम वहै खवतौ । जागरण भड़ा, भड़ छूट गोळां जठै, रूक झड़ डंडैहड़ रमै रवतौ । —वसरांम रावळ

उ०—२ सलहपुर सज वजै मंत्र पठी असटी सगत, खीज चत सांमठी बीज खवतौ । यर गढां जठी खग तोल आयौ 'अजन', रुद्र अेकादसी हठी रवतौ । —बद्रीदास खिड़ियौ

रवत्ताळ—सं. पु.—१ घोड़ा ।

२ घोड़े की टाप ।

३ योद्धा, वीर ।

उ०—रवताळा झोक खावै आकारीठ ।
—हुकमीचंद खिड़ियौ

रवद—देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

उ०—१ रगतासुर आगै रवद, भेळा होय भुंजाळ । सांमंद्र मांहे सांपरत, नदियां मिळै निराळ । —मा. वचनिका

उ०—२ 'लखौ' 'महेस' कहै विध लाखां । रवद अवंब बंध जिम राखां । —रा. रू.

उ०—३ आसक्रन तणौं 'बीठळ' तणौं कहै एम, पात रछपाळ ग्रहियां खड़ग पांण । राजरौ थापियौ राज न लहै रवद, धणी म्हे थापसां जको जोधांण । —बां. दा.

उ०—४ रवद 'पिराग' देखि छित्र रीधा । डेरा आय गंग तटि-दीधा । —सू. प्र.

रवदांण—देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

रवदांराव—सं. पु.—यवन बादशाह ।

रवदाळ—देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

उ०—उजवक परजळियौ अंग अंग । रवदाळ कीध चख चोळ रंग ।
—सू. प्र.

रवद्द—देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

उ०—१ रंजे 'रतनागिर' देखि रवद्द, निसांण रुड़ै सहि वाजित्र नद्द । —वचनिका

उ०—२ पाछै काळी छेड़ियौ, दिल्ली खूंद रवद्द । दुवौ अकव्बर अप्पियौ, हुवौ नगारे सद्द । —रा. रू.

उ०—३ चतुरंग सेन असंख्यां चल्लै, हेमाचळ परवत किरि हल्लै । देम दगग्गै सेन रवद्दं, किरि ऊळटिया सात समद्दं ।
—गु. रू. बं.

उ०—४ सकज्जां आसुर संभ निसंभ, रवद्दां नाथ वरै त्रिय रंभ ।
—मा. वचनिका

रवद्दि—देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

उ०—वजवाड़उ कोठी सहर वेव, हालिया हुइय आगी हरेव ।

नांमिया समांणा सीह नहि, रणतूर नहि पाखर रवहि ।
—रा. ज. सी.

रवद्र– देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

उ०—विन्हे दळ आहुरता बंगाळ, रवद्र रूप हुए रणताळ । डळा पुडि धूज धुबै असमांण, अदभुत ऊकळियौ आरांण ।
—गु. रू. बं.

२ देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

रवन– देखो 'रमण' (रू. भे.)

उ०—रावसा मोल भगी रवन, सुंदर रिण जीती सगी । डिगीयळ भाजि आवै दुरस, इम भिम गंभ आगळि अगी ।
—मा. वचनिका

रवनांमौ–देखो 'रविनांमौ' (रू. भे.)

उ०—अर कुंजर छावै आवरियौ, पिड मांझी मंडळीकां पाट । सरग हुवौ हिंगोळ तुरग हय, चंद नमै रवनांमो थाट ।
—गानो गांदू

रवनि, रवनी–देखो 'रमणी' (रू. भे.)

रवन्नौ–देखो 'रवांनौ' (रू. भे.)

रवमंडळ–देखो 'रविमंडळ' (रू. भे.)

रवमुखी–देखो 'रविमुखी' (रू. भे.)

उ०—डहडहत कुसम पूरत पराग, पल्लव दळ मिळ जेब जाग । रवमुखी दावदी पुन पळास, नाफुरमा परगस आग पास ।
—मयारांम दरजी री वात

रवरवौ–सं. पु.–बोल-बाला, दब-दबा, प्रभाव । ज्यूं–अबार गांवां में ताव री रवरवौ है । लोगां ने ताव आवै ।

रवराया–वि. स्त्री.–पुकारने पर दया करने वाली । दयालु ।

उ०—रवराया किहड़ी परि रीजै, कत्तीआंणी आदेस करीजै । देवी देवी रिवि सिधि दीजो, किहि कि अम्हां मिरि मया करीजो ।
—पी. ग्रं.

रववंसी–देखो 'रविवंसी' (रू. भे.)

उ०—चवतां रांम गुणांण गयौ चव, भव दुख काढै कौध भव । लव लागां फिर रांम रसण लव, रववंसी इम वहै रव ।
—र. रू.

रवस–देखो 'रहस्य' (रू. भे.)

उ०—मारकंड रिख वांणी रवस, कही तेम जैचंद कहै । भगवती भजन मोटी भगति, आमै संतां ऊमहै ।
—मा. वचनिका

रवसुत–देखो 'रविसुत' (रू. भे.) (अ. मा.)

रवां–सं. स्त्री. [फा.] १ प्राण ।

२ वायु, प्राण वायु ।

वि.–१ अभ्यस्त ।

२ प्रवाहित ।

३ तीक्ष्ण, धारदार ।

४ देखो 'रवा' (रू. भे.)

रवानगी–सं. स्त्री. [फा. रवानगी] प्रस्थान करने की क्रिया या भाव, प्रस्थान ।

रवाना–वि. [फा. रवानः] १ जो चल पड़ा हो, प्रस्थान कर चुका हो ।

२ विदा हुआ हुआ ।

३ भेजा हुआ, प्रेषित ।

रवांनौ–सं. पु. [फा. रवाना] १ कूच, प्रयाण, प्रस्थान ।

२ वह पत्र जिसमें प्रस्थान करने की इजाजत दी गई हो ।

३ वह कागज जिसमें भेजे जाने वाले माल का ब्यौरा लिखा हो ।

४ किसी वस्तु के साथ भेजी जाने वाली चुंगी आदि की रसीद ।

रू० भे०–रवन्नौ ।

रवा–वि. [फा.] १ उचित, वाजिब ।

उ०—हिन्द का इलाज है, रूसणा रवा नहीं ।
—किसोरदास महडू

२ इच्छित, वांछित ।

३ जाहिर, प्रगट ।

४ प्रसिद्ध, मशहूर ।

सं. स्त्री. [फा. रवाई] १ रौनक, शोभा ।

उ०—नगारा रवा गहमान रहै, नाळकियां हाजरि । चहुंमि गुरज वरदार, करै सनमान भयकारि ।
—सू. प्र.

२ परम्परा, रूढ़ि, प्रथा ।

३ इच्छा, कामना, मंशा ।

उ०—तरै खवास हुसैन परज नौ रुपीया २,०००००) माहे मेहतो हरा नुं दीयो छै, रुपीया ४,०००००) रूपजतां री ठौड़ छै । पछै पातसाहजी आप राजसिंघजी नुं फुरमायो हुंतो गांजा री रवा राखो ।
—नैणसी

४ दया, कृपा ।

उ० —बाद निवाडै वचन पोच विण, न्याय करण कर मिसर नरां । रोरव राह समंद पैंली रग, रांम रवा कर रांम रनां ।
—महारांणा हमीरसिंह रौ गीत

रू० भे०–रवां ।

रवाकातर–स. स्त्री.–स्वर्णकारों के काम में आने वाला लोहे का एक उपकरण या औजार, जिससे सोने चांदी के तार के एक ही नाप के छोटे छोटे टुकड़े काटे जाते है ।

रवाकी–वि.–रहने वाला ।

रवाड़ी–देखो 'रेंवाड़ी' (रू. भे.)

रवाज–देखो 'रिवाज' (रू. भे.)

रवाडी–देखो 'रेंवाड़ी' (रू. भे.)

उ०—१ सुख भरि वरस बहु वउलीग्रां, करी न सक्यउ प्रासाद
रवाडी गयि सांभरिउं, मनसिउं धरइ विसाद। —कल्यांण

उ०—२ वारे दरवाजे लोहमि पोलि, जिसी रमलि कीजइ रवाडी
तिसी एक भली वाडी······। —व. स.

रवादार–वि.–जिसमें कण, दाने या रवे पड़े हों, दानेदार।

रवायत–देखो 'रिग्रायत' (रू. भे.)

उ०—राजा कह्यौ–जा घास नै कोरड री निचिंताई कीधी तो म्हैं
थांसूं निपट घणी गोर करिस्यां, हासल मांहै रवायत
करस्यां। —कहवाट सरवहिया री वात

रवाळ–सं. स्त्री.–देखो 'रैवाळ' (रू. भे.)

रवाळी, रवाळो–स. पु.–ग्राभूषणों पर खुदाई या नक्काशी करने का
एक लोहे का ग्रौजार, कीला।

रवि–सं. पु. [सं.] १ सूर्य, ग्रादित्य। (नां. मा.)

उ०—१ पत्र सुवारै जोगणी, माळ सुवारै रंभ। थभ चलेवौ
सोम रवि, पेखै व्यौम ग्रचंभ। —रा. रू.

उ०—२ मझि ग्रंग उत्तंग ग्रहास समा। रवि वाहेण रेवंत सोह
रमा। —मा. वचनिका

उ०—३ चग्वाड़ै कूंत चखतां धणी चापड़ै, रौद घड़ पछाड़ ग्रचळ
राखी। जीवतां–सिभ महारांज वणियौ 'जसौ', समर चा करै
रवि चंद साखी। —गु. रू. वं.

२ ग्रग्नि।

रू० भे०–रवि, रवी, रव, रवी।

३ नायक।

४ जयद्रथ राजा का छोटा भाई।

५ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

६ ठगण के द्वितीय भेद का नाम (ऽ।ऽ) (र. ज. प्र.)

७ बारह की संख्या। * (डि. को.)

८ ग्रशोक का वृक्ष।

९ ग्राक।

रविग्रंस–सं. पु. [सं. रवि+ग्रंश] १ सूर्य का ग्रंश।

२ देखो 'रविवंस'

उ०—कमधां गुर ऊसस वैंण कहैं। रविग्रंस ग्रजे धर सीस रहै।
—पा. प्र.

रविग्रंसिय, रविग्रंसी–देखो 'रविवंसी'

उ०—कवळ पत लूंटण वैण कह्या, रविग्रंसिय ग्रोठेम ग्राय
रह्या। —पा. प्र.

रविउदै, रविऊगै–सं. पु. [सं. रवि+उदय] सूर्योदय।

उ०—ग्राया रविऊगै 'गोइंद' ऊपरि, ताता लोही रातिमिया।
ग्रसि छांड रकेवां कूंत ऊपाड़ै, वाराळां काढै वसिया।
—गु. रू. वं.

रविकर–सं. पु. [सं] सूर्य की किरण।

रविकांतमणि–स. पु. [सं.] सूर्यकान्त नामक एक मणि विशेष।

रविकिरण–सं. स्त्री. [सं.] सूर्य की किरण, प्रकाश।

उ०—गई रविकिरण ग्रहै थई गहमह, रहरह कोइ वह रहै रह।
सु जु दुज पुरा नीसरे मूतौ, निसा पड़ी चालियौ नह।
—वेलि

रविकुळ–सं. पु. [सं.] १ सूर्यकुल।

२ एक क्षत्रियवंश।

रविचंचळ–सं. पु. [सं. रविचंचल] काशी में लोलार्क नामक तीर्थ
स्थल।

रविचक्र–सं. पु. [सं.] १ सूर्य मण्डल।

२ सूर्य के रथ का पहिया, चक्र।

३ फलित ज्योतिष के ग्रनुसार मनुष्य–शरीर के ग्राकार का एक
चक्र।

४ एक की संख्या। * (डि. को.)

रविचक्रतळ, रविचक्रतळि–सं. पु. [स. रविचक्र तलम्] पृथ्वी मंडल,
भूमंडल।

उ०—१ साभियै तिपुर संकर जिसौ, वांमण चंपि पयाळ वळि।
गजसिंघ भीम गोडव्वियौ, तिसौ दीठ रविचक्रतळि।
—गु. रू. वं.

उ०—२ उवरइ विप्र एरिम वयण, लोग त्रिण्ह जीता तिरी।
इसी नहीं रविचक्रतलि, मइं नव खंड देख्या फिरी।
—प. च. चौ.

रविज–सं. पु. [सं.] १ शनिश्चर।

२ यम।

३ कर्ण।

४ वालि।

५ सुग्रीव।

६ वैवस्वत मनु।

७ ग्रश्विनि कुमार।

रविजकेतु–सं. पु. [सं.] पुच्छल तारा जिसकी उत्पत्ति सूर्य से मानी
गई है।

रविजा–सं. स्त्री. [सं.] यमुना नदी। (ग्र. मा.)

रू० भे०–रवजा।

रविजात–सं. स्त्री. [सं.] सूर्य की किरण।

रविजोग–सं. पु. [सं रवियोगः] सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र तक ४/९/६/
१०/१३/२० वां नक्षत्र तक बनने वाला योग।

उ०—सिद्ध जोग रविजोग, सुद्ध दिनमांन सहू सिसि। दिसा
सूळ थयौ पुठि, वळै जोगणि वांमीं दिसि। —गु. रू. वं.

वि. वि–यह योग सब दोषों का नाश करता है।

रवितनय-सं. पु. [सं.] १ शनिश्चर।
२ यमराज।
३ कर्ण।
४ वालि।
५ सुग्रीव।
६ वैवस्वत मनु।
७ अश्विनिकुमार।
रू० भे०-रवितणै।

रवितनया-सं. स्त्री. [स.] १ यमुना नदी।
२ सूर्य की कन्या।

रवितनुजा-सं स्त्री. [सं.] यमुना नदी।

रवितणै-देखो 'रवितनय' (रू. भे.)

रविथाव-सं. पु. [फा.] पारसियों के अनुसार, मध्यान्ह का समय, जो १२ वजे से ३ वजे तक माना जाता है और उस समय वे दूसरी वार नमाज पढ़ा करते हैं। (मा. म.)

रविदिन, रविदिवस-सं. पु. [सं.] सप्ताह का प्रथम दिन, रविवार, आदित्यवार।

रविनंद, रविनंदन-सं. पु. [सं. रवि+नंदन] सूर्य का पुत्र।
वि. वि.-देखो 'रवितनय'
उ०—१ ग्रहसपति भवन दसमैं वखांणि। जिण हीज भवन **रविनंद** जांणि। —सू. प्र.
उ०—२ वर्णीहउ जं मुहि कहइ तिणि, नांमिइं सहिनांण।
रविनंदन सहि नांम लहइ, कहि संतोस सुजांण।
— हीराणंद सूरि

रविनंदिनी-सं. स्त्री. [सं.] सूर्य की पुत्री, यमुना नदी।
वि. वि.-देखो 'रवितनया'

रविनांम, रविनांमौ-सं. पु.-१ ऐश्वर्य, वैभव।
उ०—सुकिया मिळ जूथ अनेक करै सुख। **रविनांम** नरंद सुरचंद तणौ रुख। —सू. प्र.
२ प्रताप, शौर्य, कीर्त्ति।
रू० भे०-रवनांमौ।

रविपुत्र, रविपूत-सं पु. [सं. रवि+पुत्र] सूर्य का पुत्र
वि. वि.-देखो 'रवितनय'
उ०—छगां छगां वरि नगां, चढै आगमणां महावन। राहस्त **रविपूत**, धूत थापळिया धूरत। —सू. प्र.
रू० भे०—रवीपूत।

रविवंसमनि-सं. पु. [सं. रविवंशमणि] सूर्यवंश का रत्न।
उ०—प्रवल प्रकासै तेज 'मांन' **रविवंसमनि**, ताकी त्रास मिथ मे जवन देस वरकै। —वां. दा.

रविमंडळ-सं. पु. [सं] १ सूर्य के चारों ओर दिखाई देने वाला मंडलाकार लाल गोला, रविविंब।
२ सूर्य की परिधि।
उ०—१ एक गया भगवाट, गांमि छळ मेल्हे कुळ छळ। हेक सुगति साजोन, गया भेदे **रविमंडळ**। —गु. रू. बं.
उ०—२ नहीं गया, मांचै सुवा, **रविमंडळ** रै राह। जूझ सुवा रण में जिके, गत-पंचमी गयाह। —वां. दा.
उ०—३ चहुंघां चकचूरण सूरणांगे चढनी, मसलत महिमंडळ नभ मंडळ मढती। रेणु **रविमंडळ** रसमी रथ रोकी। तन मन प्रज कांपत ढांपत त्रयलोकी। —ऊ. का.
रू० भे०—रवमंडळ।

रविमणि-सं. स्त्री [सं.] सूर्यकांत मणि।

रविमुखी सं. पु.-सूर्यमुखी नामक फूल।
रू० भे०-रवमुखी।

रवियोड़ौ-भू. का. कृ.-बोला हुआ, आवाज किया हुआ।
(स्त्री. रवियोड़ी)

रवियौ-सं. पु. [सं. रवि+रा. प्र. यौ.] सत्ताईस नक्षत्रों में से कोई एक या प्रत्येक, जिस पर, मास की कुछ अवधि (प्रायः १ से १३ या १५ दिन तक) सूर्य स्थित रहता है। सूर्य के प्रभाव में रहने वाला नक्षत्र।
वि. वि.—देखो 'नक्षत्र'

रविराई-सं. पु. [सं. रविराज] सूर्य, रवि।

रविवंस-सं. पु. [सं. रविवंश] सूर्य वंश नामक एक क्षत्रिय वंश।
उ०—जग में वंस उग्र गुण जोई। ऋत **रविवंस** समो नह कोई। —रा. रू.

रविवंसी-वि. [सं. रवि-वंशी] सूर्यवंशी।
रू० भे०-रववंसी।

रविवार, रविवासर-सं. पु. [सं.] प्रत्येक सप्ताह का प्रथम दिन, जो शनिवार के वाद व सोमवार से पहले आता है। (रा. रू.)

रविसंक्रांति, रविसक्रांति-सं. स्त्री. [सं. रवि संक्रांति] सूर्य का एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र पर जाने की अवस्था, सूर्य संक्रमण। (ज्योतिष)

रविस-सं. स्त्री. [फा. रविश] १ गति, चाल।
२ शैली, तर्ज।
३ व्यवहार, वर्ताव।
४ चालचलन, आचरण।

रविसारथी-सं. पु. [सं. रविसारथि] सूर्य रथ का सारथी, अरुण।

रविसुअन, रविसुत-सं. पु. [सं. रविसुनु, रविसुत] सूर्य का पुत्र।
वि. वि.-देखो 'रवितनय' (ह. नां. मा.)
रू० भे०-रवसुत, रवीसुत।

रविसुता-सं. स्त्री. [सं. रवि+सुता] सूर्य की पुत्री, यमुना।

उ०—पुलिए रविसुता फहरावजै पीतपट, आवजै रासथळ ब्रजनाथ आथ। कांन कवार विहरि गळी ब्रज कुंज री, सुभ रळी कीजियै लाडली साथ। —वां. दा.

रवींदू—सं. पु. [सं. रवि+इंदु] सूर्य, चन्द्र।

रवी—सं. स्त्री. [देश.] १ गेहूं के आटे को थोड़े से घी में भुनकर उसमें गुड़ का रस डाल कर पकाया हुआ तरल हलुवा या पेय पदार्थ, गुलराव।

२ देखो 'रवि' (रू. भे.)

उ०—१ छिपै मेघ सोभा इसी भाळ छाजै। रवी पंत द्वै कुंडळै क्रांति राजै। —रा. रू.

उ०—२ हालिया एहड़ा घेर वंकी घड़ा। रज्ज उड्डै रवी घोमतै घूंघळै। —सू. प्र.

रवीपूत—देखो 'रविपुत्र' (रू. भे.)

रवीसुत—देखो 'रविसुत' (रू. भे.)

रवेची—सं. स्त्री.—चारणकुलोत्पन्न एक देवी।

उ०—दुगरांणी मया तुं दुगाय, रवेची तुं ही नागांणराय। घूमड़ै ज्यांन रै तूंज धांम, तैमड़ै तुं ही ज डुंगरेच तांम —रामदांन लालस

रू० भे०—रवैची।

रवेज—देखो 'रिवाज' (रू. भे.)

रवेस—सं. पु. [सं. रवि+ईस] १ सूर्य।

उ०—वांमी दिस 'वखतेस', जुड़ मेड़तिया जींमणी। आभाड़ा साम्ही 'अभौ', राजा मइण रवेस। —रा. रू.

२ देखो 'रहवास' (रू. भे.)

उ०—वैसणी तणी इहडी रवेस, पहिरंति रजत ग्रहणा प्रवेस। पीतलि सूद्रणि रै सदा पासि, पंडितै एम कहिओ प्रकासि। —ल. पिं.

रवै—सं. स्त्री.—१ गाय, भैंस आदि मादा पशु की ऋतुमति होने की अवस्था।

२ खेत या भूमि की, जोतने के बाद बोवाई योग्य होने की दशा।

रवौ—सं. पु. [सं. रज, प्रा. रअ] १ किसी पदार्थ का छोटा कण, दाना, शक्कर आदि का दाना।

२ घुंघुरुओं में डाला जाने वाला छर्रा।

रस—सं. पु. [सं.] १ किसी वस्तु का सार, तत्व, शोरवा, जूस।

उ०—अमलांणों अर कांदा री रस घर घर छणण लागो। कूंजड़ा रा भाग खुलिया पण खुलिया। —फुलवाड़ी

२ खाने की वस्तु का स्वाद, जायका।

३ चस्का, स्वाद, लगाव।

उ०—धूरत दे धोखा वोडा बोखा, चोखा रस चाखंदा है। —ऊ. का.

४ आनन्द, हर्ष, खुशी।

उ०—१ घणौ रस रहियौ वडा वधावा हुआ। —गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—२ रीझै सांभळ राग, भीजै रस नह भैचकै। नैड़ी आवै नाग, पकड़ीजै छावड़ पड़ै। —वां. दा.

उ०—३ साथ सगळै नै सिरपाव दै, छोटां-मोटां सह नै याद करि विदा किया। वडो रस रह्यौ। —पलकदरियाव री वात

उ०—४ रितु किहि दिवस सरस राति किहि सरस, किहि रस संध्या सुकवि कहंति। वे पख सूचति विहूं मास बे, वसंत ताइ सारिखौ वहंति। —वेलि।

६ प्रेम, अनुराग, प्रीति।

उ०—१ दुरवेस गयौ पतसाह दिसी, उड मूठिय भूठिय वात इसी। सुणतां कमधां दळ मांन सही, रस बाध थयौ निस आव रही। —रा. रू.

उ०—२ तरै कह्यौ, भीवाजी, घरे सिधावै, पिण इण जखड़ा री खेत दिखावणी पड़सी। नही तर थांहरै नै माहरै रस रहैली नहीं। —जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

उ०—३ सु रांणा सुरजन री वडो वेटो मोहिल, तिण सूं सुरजन मया न करै। मांहोमांहि रस काइ नहीं। नै मोहिल वडो रजपूत, मु वाप सौं वणै नहीं। —नैणसी

उ०—४ आप लूणी जांन कर नै वेटै समधड़ै नूं परणावण नूं हालियौ। भली भांत सूं परणायौ। सगां विहुंवां वडो रस रह्यौ। —पीठवै चारण री वात

७ रति क्रीड़ा, काम-केलि, संभोग।

उ०—१ रमतां जगदीसर तणौ रहसि रस, मिथ्या वयण न तासु महै। सरसै रुखमणि तणी सहचरी, कहिया मूं मैं तेम कहै। —वेलि

उ०—२ कुण जांणै रहियौ कठै, रस रमतौ इण रात। हारचौ थकियौ आइयौ, कीन्हि कछू न वात। —जलाल वूवना री वात

८ किसी विषय का आनन्द।

९ सुख का अनुभव, सुख।

उ०—१ वरियांम अहमंद वाद, अमल जमावियौ। पिथ भूप जिम अणवार, इळ रस आवियौ। —सू. प्र.

उ०—२ नको रस भागी नको रहत न्यारा, नको आप हरता न करता व्योहारा। —अनुभववांणी

१० काम-वासना, कामेच्छा।

११ मौज, मस्ती।

उ०—अबै जलाल साहिब नितका वूवना रै महल जावै। चार

पहर रात रमै खेलै। घणी घणी राग रंग रस होवै।
—जलाल बूबना री बात

१२ उमंग, जोश, उत्साह, मनोवेग।
१३ यौवन काल में अनुराग का होने वाला संचार।
१४ इन्द्रिय सुख।
१५ मेल-जोल, मेल-मिलाप, ताल-मेल।
उ०—१ मूसा ने मंजार, हित कर बैठा हेकठा। सब जाणें संसार, रस नह रहसी राजिया। —किरपारांम
उ०—२ कीधी बहु पहिरावणी, राजवीयां नैं रंग। रस राख्यौ जस संग्रह्यौ, वाध्यौ प्रेम अभंग। —स्रीपाल रास
उ०—३ तद पातसाहजी राजा वीठळदास रै. डेरै उजीर वगसी उजरखां नूं मेलिया। अरु खरच नूं रुपिया लाख दोय दराया अरु लोदी खांनजहां रै गौड़ां रै रस रई नहीं। —द. दा.
१६ माधुर्य।
१७ अनुराग, दया आदि कोमल वृत्तियों के वश में रहने की अवस्था या भाव।
१८ इच्छा, भावना, भाव।
उ०—बाजोटा ऊपरि गादी बैठी, राजकुंअरि स्रिंगार रस। इतरै एक आली ले आवी, आंनन आगळि आदरस। —वेलि
१९ साहित्य में वह आनन्दात्मक चितवृत्ति या अनुभूति जो विभाव, अनुभाव और संचारी से युक्त किसी स्थाई भाव के व्यंजित होने से पैदा होती है।
२० साहित्य में माने जाने वाले दश रसों में से कोई एक या प्रत्येक।
उ०—१ पत्र अक्खर दळ द्राळा जस परिमळ, नव रस तंतु विधि अहोनिसि। मधुकर रसिक सु भगति मंजरी, मुगति फूल फळ भुगति मिसि। — वेलि
उ०—२ अकळ घूमांण यर रजी अवछाइयां, वाजै रस अवागळ प्रबळ वाजा। फौज आगळ गजां वरंग धजां फत्र, राज पंथ सुरंगां सीस राजा। —गु. रू. बं.
उ०—३ इण पर तहवरखांन अछायौ, विचित्र हुवौ लड़तां रस वायौ। सिर हिंदवांण तणौ रीसायौ, औरंग पीठ लगेहीज आयौ।
—रा. रू.

२१ सुन्दरता, मनोज्ञता, मनोहरता।
२२ तौर, तरीका, ढंग।
२३ गुण, विशेषता, महत्व।
२४ शरीरस्थ सप्त धातुओं में से प्रथम धातु।
२५ रक्त, रुधिर।
उ०—कमठ पर भार पड छिलै रस कचरकां, मचरकां सेस रा हलै माथा। —र. रू.

२६ प्राणियों के शरीर से निकलने वाला कोई तरल पदार्थ, पसीना आदि।
२७ कोई तरल पदार्थ, जल, पानी।
उ०—धरती रा कण कण में हरख समायग्यौ। पांन पांन में रस सांचरग्यौ। —फुलवाड़ी
२८ किसी वनस्पति को कूट-पीट या निचोड़ कर निकाला जाने वाला जलीय अंश।
२९ शराब, मदिरा, आसव।
३० विष, जहर। (अ. मा., ह. नां. मा.)
३१ अमृत।
उ०—१ रांम नांम रस वेलड़ी, जन हरीया सींचंत। ऊगै तो हरि अंस मैं, विळै नहीं जावंत। —अनुभववांणी
उ०—२ मंत्र वंसीकर मांनजै, वांणी रस वरसंत। सरसुति वीणा प्रगट सुर, कोयल लाज करंत। —अग्यात
३२ वीर्य।
३३ पारा। (डिं. को.)
३४ गोरस।
उ०—गोरस लीजे नंदलाल, रस मांगौ रस लीजै। —मीरां
३५ गंध रस।
३६ शिलारस।
३७ हिंगुल।
३८ मोती। (अ. मा.)
३९ कोई खनिज पदार्थ।
४० धातुओं से फूंक कर तैयार किया हुआ भस्म। (वैद्यक)
४१ घी, घृत।
उ०—खप्पर औ भैरव खप्पर भरावूं लापसी। जे ऊपर औ भैरव ऊपर रस री जी धार। —लो. गी.
४२ वह औषधि जो पारे या किसी धातु के योग से बनी हो।
(वैद्यक)
४३ उत्तम खाद्य पदार्थ।
उ०—धांन पांणी रस चोरिया, ते भेटइ सिध क्षेत्रौ जी। सेत्रुंज तलहटी साध नइं, पडिला भड सुध चितौ जी। —स. कु.
४४ गूदा, मिंगी।
४५ वनस्पती।
उ०—गो खीर स्रवति रस धरा उदगिरति, सर पोइणिए थई सुस्री। वळी सरद स्रगलोग वासिए, पितरे ही अत लोक प्री।
—वेलि
४६ वृक्षों के तने या शरीर से निकलने वाला तरल पदार्थ, गूंद आदि।
४७ घोड़े, ऊंट या हाथियों का एक रोग विशेष, जिससे उनके पैरों

से जहरीला पानी निकलने लग जाता है। (शा. हो.)
क्रि. प्र.—उतरणौ।
४८ मिश्री, शक्कर, गुड़ आदि का मीठा पानी।
४९ स्वादिष्ट पदार्थ।
५० चटनी, मसाला।
५१ गुण, तत्व, रूप, विशेषता।
५२ उक्त दृष्टि से कोई वर्ग, विभाग, तरह, भांति।
ज्यूं—एकरस, समरस।
५३ जीत, विजय।
५४ हार, पराजय

उ०—१ राड़ गोळां री दूजे तीजे महीने हुई, फौजां दोनूं वडी जबरी सो रस खावै नहीं।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ वडा अड़पायत रजपूत घणा भाई। धरती सारी में धाक। एकण पासै भाटियां रौ राज। एकण पासै जोइयां रौ राज। एकण पासै सीहवाग, खीचियां रा राज। एकण पासै पाहुवां रौ राज। भटनेर में पातसाही थांणौ। इतरां रै वीच खरळ रहै, राजस करै। सो सारां नूं रस खुवाय राखियौ। तै सूं पड़ौसी सारा संकौ राखे। —कुंवरसी सांखला री वारता

५५ आनन्द स्वरूप ब्रह्म। (उप निषद्)
५६ खेत या भूमि की जुताई के बाद बोवाई के योग्य होने वाली दशा।
५७ फसल की परिपक्वावस्था।

उ०—'पाहड़' हरा अवर कुण पूगै, 'जुगत' हरा हामल री जोड़। रस आई जांणी रजवाड़ां, रजवट री खेती राठौड़।
—लालसिंह राठौड़ री गीत

५८ पृथ्वी, धरती। (डि. को.)
५९ वश, काबू, नियन्त्रण।

उ०—१ सु कुंवर 'जोगो' भोळोसो ठाकुर हुतौ। सु जोगा सूं धरती रस नह आई, नै धरती मांहै मोहिलां री दखल हुवण लागौ
—नैणसी

उ०—२ 'जेसै' जीवतां धरती पातसाह रै रस पड़ी नहीं।
—नैणसी

६० कायस्थों की एक प्रथा के अनुसार, मृतक के पीछे बारह दिनों तक सगे सम्बन्धियों को खिलाया जाने वाला भोजन जिसमें लपसी, रोटी तथा चने या आंवले का साग होता है। (मा. म.)
६१ डिंगल का एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक विषम पद में १६ व सम पद में १२ मात्राएं होती हैं।
६२ छंद शास्त्र में एक लघु व एक गुरु का नाम। (र. ज. प्र.)
६३ तीन लघु के ढगण के तृतीय भेद का नाम। (डि. को.)
६४ रगण या सगण की संज्ञा।
६५ छै की संख्या। * (डि. को.)
६६ नौ की संख्या। * (डि. को.)
वि.—१ कामयाब, उपयोगी।

उ०—'वाघ' कन्है सुरजजी री कही घोड़ां री वात थी तीसूं चाहै जिसौ घोड़ौ हुवौ पण 'वाघ' कनै रस हुइ जावतौ।
—ठाकुर जेतसी री वारता

२ अनुकूल, माफिक।

उ०—गधा रै तौ रस वैठोड़ी वांण ही। मज्झ नदी पांणी में वैठो। —फुलवाड़ी

३ नौ।
४ छै।
क्रि. वि.—१ वश में, कब्जे में, अधीन।

उ०—१ सुण 'सूरसाह' दळवळ सझै, राजा पौरस रूप रा। रस करे धरा गुजरात री, आयां दक्खण ऊपरा। —सू. प्र.

उ०—२ सेहर रा लोग कहचौ—पातसाह रौ वडौ परताप, नवाब रौ वडौ भाग, आज 'जगौ' 'रतनौ' मारतां पातसाहजी रै गुजरात खरी रस पड़ी। —नैणसी

२ शीघ्र, जल्दी, तुरन्त। (ह. नां. मा.)
रू० भे०—रसा, रसि, रस्स।
अल्पा.—रसड़ौ।

रसउगाळ—सं. पु.—वह पशु जिसके मुंह से जुगाली करते समय रस नीचे गिरता हो।
रू० भे०—रस ओगाळ, रसुगाळ, रसूगाळ।

रसउत्तम—सं. पु. [सं. उत्तम+रस] दूध। (डि. को.)

रसउदभव सं. पु. [सं. रसउद्भव] मोती। (ह. नां. मा.)

रसउल्लाला—सं. पु.—२८ मात्रा का छंद विशेष जिसमें १५ व १३ पर यति होती है।

रसओगाळ—देखो 'रसउगाळ' (रू. भे.)

रसक—सं. पु. [सं.] १ फिटकड़ी।
२ देखो 'रसिक' (रू. भे.)

उ०—१ रत ज्यूं दत जाचक, रसक जाचै वे कर जोड़। ननौ भणै नव नार ज्यूं, मूढ़ क्रपण मुख मोड़। —वां. दा.

उ०—२ कही आज हूं पनरमैं दिन हरियाळी तीज रौ हंगांम है, जिण में राज जिसा रसक रिझवारां री ही कांम है।
—र. हमीर

उ०—३ देव पितर इण सूं डरै रसक तरै किण रीत। हेम रजत पातर हरै, पातर करै पलीत। —वां. दा.

रसकपूर—सं. पु. [सं. रसकर्पूर] शुद्ध पारा, फिटकरी, सैंधानमक व कसीस के योग से बनने वाली एक रसौषधि, जो रक्त विकार,

कुष्ठ, उपदंश आदि रोगों में काम आती है। (अ. मा.)

रसकरम, रसकरम्म–सं. पु. [सं. रसकर्म्म] पारे की सहायता से रसौषधि तैयार करने की एक प्रक्रिया। (वैद्यक)

रसकळ–सं. पु.–नौ मात्रा का एक मात्रिक छन्द जिसके अन्त में गुरु होता है।

रसकस–सं. स्त्री.–१ स्वाभाविक स्थिति।

उ०—उन्हाळा रै तपतै दिनां कांसी रा ठांव में खाटी छाछ कचवचै अर उगटै ज्यूं बादळ रौ मन ऐड़ौ उगटियौ के पाछौ **रसकस** वैठौ ई नी। —फुलवाड़ी

२ सार-तत्व।

उ०—१ **रसकस** तौ रसिया तै लियौ अब क्यूं झुरै गिंवार। —अग्यात

उ०—२ **रसकस** दिवलौ बळै, बड़ ढोल्या रै हेट। —फुलवाड़ी

३ आनन्द, मौज।

उ०—काची केरी घर पकी, बाग पकी है दाख। पिय **रसकस** दिन चार कौ चाख सकै तौ चाख। —अग्यात

रसकार–स. पु. [सं. रस+कार] शराब बनाने वाला।

उ०—सास्त्रकार, मैत्रकार सुद्धकार उद्दीसकार ध्रुतिकार रूपकार करणीकार **रसकार** क्षीरकार सस्यकार, वस्त्रकार विभूसणकार पुंतार अस्वमिक्षाकार...... —व. स.

रसकुंड–सं. पु. [स] अमृत का कुण्ड।

उ०—राजा तपस्वी नूं जगाय **रसकुंड** वतायौ। —सिंघासण बतीसी

रसकुळणी–सं. स्त्री.–घोड़े का एक रोग विशेष जिसके कारण घोड़े के शरीर पर बड़ी ग्रंथी हो और उसमें से खून बहे। (शा. हो)

रसकूपका, रसकूपिका–सं. स्त्री. [सं. रस कूपिका] योनि, भग।

उ०—जिसड़ी **रसकूपका** जिसड़ी ही नाभ। आ ओपमा सरीखी इण में टोटौ न लाभ। —र. हमीर

रसकेळि, रसकेळी सं. स्त्री [सं. रस+केलि] १ रति-क्रीड़ा, संभोग।

२ दिल्लगी, हंसी-मजाक।

रसकेसर, रसकेसरी–सं. स्त्री. [सं. रस+केसर] १ कपूर।

२ पारा, गन्धक, लौंग आदि के योग से तैयार की जाने वाली एक औषधि। (वैद्यक)

रसग, रसगना रसगिना–स. स्त्री. [सं. रसज्ञा] जिह्वा, जीभ। (अ. मा., ह. नां. मा.)

रसगाय, रसगाथा–सं. स्त्री.–रसयुक्त गाथा, रसीली गाथा।

उ०—मो मत प्रमांण कवि मछ कह, सुकवि वांण ग्रंथांण सुण। **रसगाथ** गीत पिंगळ रचै, गहर कहूं रघुनाथ गुण। —र. रू.

रसगुलियौ, रसगुल्लौ–सं. पु.–गुलाब-जामुन के समान गोल और चासनी में पड़ी एक मिठाई जो दूध की बनती है।

उ०—मिसरी मोतीपाक, भुरट री इतरी खोडी। **रसगुलियां** रै रूप, मधुर है, होडाहोडी। —दसदेव

रसग्य–वि. [सं. रसज्ञ] १ काव्य के रस का ज्ञाता, काव्य मर्मज्ञ।

२ जो रस का ज्ञाता हो, रस का जानने वाला।

३ किसी विषय का पंडित।

४ पारद के योग से रसायनिक दवाइयां बनाने वाला।

सं. पु.–१ समालोचक।

२ रसायनी।

३ कवि।

४ वैद्य।

रसग्यता–सं. स्त्री. [सं. रसज्ञता] १ रसज्ञ होने की अवस्था, भाव।

२ पंडिताई।

रसग्या–सं. स्त्री. [सं. रसज्ञा] १ जीभ, जिव्हा।

२ गंगा।

रसग्रंथ–सं. पु. [सं. रस+ग्रन्थ] १ शृंगार रस का ग्रन्थ या काव्य।

उ०—कुसम तणा सर पांच कर, जग जिण लीधौ जीत। तिण रौ सुमिरण करां, **रस ग्रंथां** री रीत। —र. हमीर

२ वह ग्रंथ जिसमें साहित्यिक रसों का विवेचन किया गया हो।

रसघण–सं. स्त्री. [सं. घनरसा] इन्द्र की माया। (अ. मा.)

रसघन सं. पु. श्रीकृष्णचंद्र।

वि०—१ स्वादिष्ट।

२ रसदार, रसवाला।

रसड़ौ–१ देखो 'रस' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ मारवण तणा ए ओलंबा जाय ढोलाजी नै कहजै रे, थारी मारवण पाकी वोर जिळं। ढोला **रसड़ौ** चाखण घर आव, करहला धीमा चालौ राज। —लो. गी.

उ०—२ मारवण तणा ए ओलंबा जाय ढोला जी ने कहीजे रे, थारी मारवण पाकी आंबा जियूं। ढोला **रसड़ौ** घोटण घर आव। —लो. गी.

२ देखो 'रसोड़ौ' (रू. भे.)

रसचारी–वि.–रसज्ञ, रसों का ज्ञाता।

उ०—मत सीखै मंत्रवी, राग सीखै **रसचारी**। सीखै ध्रम कुळ सकळ, रीत सीखै छत्रधारी। —सू. प्र.

रसजांणण–सं. स्त्री. [सं. रसज्ञा] १ स्वाद या रस का अनुभव करने वाली इन्द्रिय।

२ जिव्हा। (डिं. को.)

वि.–रसज्ञ।

रसण–सं. पु.–१ सूर्य, भानु। (ना. डिं. को.)

२ देखो 'रसना' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ **रसण** निपाप करिस इम राघव। भणै तूझ गुण तारण

दधि भव। —ह. र.

उ०—२ चवतां रांम मुखांण गयौ चव, भव दुख काढै कीध भव। लव लागां फिर रांम रसण लव, रववंसी इम वहै रव।

—र. रू.

उ०—३ राखौ आगै रसण रै, राघव नांम रसाळ। मुख मांभळ आंणौ मती, गिणां अवक ज्यूं गाळ। —बां. दा.

उ०—४ मग मागर तजि मुद्ध भंमर कुण वेड़ौ घल्लै। अहि कमणा ओटवै कमण रसण कर भल्लै। —रा. रू.

रसणांण, रसणा—सं. स्त्री. [सं. रश्मि] १ किरण।

उ०—इसी भांति सांमांन करतां दिन घड़ी एक पाछलौ आय रह्यौ। सूरज रसणां मांहे जाय पोतौ।

—जैतसी ऊदावत री वात

२ पृथ्वी।

३ क्षितिज।

४ देखो 'रसना' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ जालम तखत कंचण जांण, पधरा पावड़ी निज पांण। राजा रांम री रसणांण, आलम अदल वरती आंण।

—र. रू.

उ०—२ रसणा रांम रट ग्रांम रट गंम रट। —र. ज. प्र.

उ०—३ वैरण रसणा वस· असणां तनताई। आभा आंगण री अंन मांगण आई। —ऊ. का.

उ०—४ आतम ब्रह्म मंडा एक अखंडा, विण रसणा गावंदा है।

—अनुभववांणी

रसणि—देखो 'रसना' (रू. भे.)

उ०—उग्रंकार अनाहत अक्खर, सिद्धि बुद्धि दे सारद गुणेसर। मंडळीकां मोटां कुळि मउड़ां, रसणि सुवांणि कीति राठउड़ां।

—रा. ज. सी.

रसणौ, रसबौ—क्रि. अ. [सं. रसनं] १ पानी या किसी द्रव पदार्थ का धीरे धीरे बहना, रसना।

२ टपकना, चूना।

३ रसमय होना, रसीजना, रस या स्वाद जमना।

उ०—बंगाळै ए वीर, रसै ना सुरघर जेड़ा। खाटा बड़छ निकांम गिटै ना सूर गदेड़ा। —दसदेव

४ वश में होना, काबू में होना।

५ आसक्त होना, अनुरक्त होना।

६ प्रसन्न होना, खुश होना।

क्रि. स.–७ स्वाद लेना, रस लेना, रसास्वादन करना।

८ चीखना, चिल्लाना।

उ०—वंचन देखी ससि अग सूकर मोक रसंत। पूछइं प्रभु आघोरण तोरण वारि पहूत। —जयशेखर सूरि

९ दहाड़ना, गर्जना।

१० शोरगुल करना, बोलना।

११ ध्वनि करना।

रसणहार, हारौ (हारी), रसणियौ —वि.।

रसिओड़ौ, रसियोड़ौ, रस्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रसीजणौ, रसीजबौ —भाव वा./कर्म वा.।

रसत—सं. पु. [सं. रसित] १ शब्द, ध्वनि, आवाज।

२ निर्घोष, गर्जन।

उ०—बादळ मसत वयंड, रसत मादळ घहरावै। इंद्र धनुख आकार, फील भंडा फहरावै। —मे. म.

[देशज] ३ एक प्रकार का सरकारी कर। (मा. प. वि.)

४ देखो 'रसद' (रू. भे.)

उ०—१ बंधियौ अकबर बैर, रसत गैर रोकी रिपू। कंद मूळ फळ कैर, पावै रांण 'प्रतापसी'। —दुरसौ आढौ

उ०—२ मगरै 'ऊदा' हरा महाबळ, बीटे खळ लू बिया चहूंबळ। जवनां बीत चहूं दिस जावै, ऊंठ घटांण रसत नह आवै।

—रा. रू.

रसतन्मात्रा—सं. स्त्री. [सं.] सांख्य के अनुसार पांच तन्मात्राओं या महत्तत्वों में से चौथे तत्व–जल की तन्मात्रा।

रसतरंग—सं. पु.–१ एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—अतंग रित अंग करंग नादंग। रसतरंग वह तरंग रंगरंग।

—सू. प्र.

स. स्त्री.–२ रस की लहर, हिल्लोर।

रसतळ, रसतलि—देखो 'रसातळ' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

रसता—सं. पु.–दुकानों पर लगने वाला टैक्स।

उ०—कमंधां चाळौ मत करौ, करौ इजारौ आय। राजा खांण्यां भोगवौ, रसता चौथ सवाय। —रा. रू.

रसतारव—सं. पु.–मेघ गर्जन के समान शब्द।

उ०—गढ जंगम जंग समागम का, जुलमी अतिकाय धका जमका, सुघटा घट घाट घटा सरसै, रसतारव डांण पटा वरसै।—मे. म.

रसतौ, रसत्तौ—देखो 'रास्तौ' (रू. भे.)

उ०—१ जमलौ दिल री लालची, मन में फिरै दलाल। घणी वसत वेचै नहीं, रसतौ पकड़ जमाल। —जमाल

उ०—२ एक चित्त ऊजळा चळै सुभ नीत रसत्तै। एक खून छळवांन वहै कोळाहल मत्तै। —रा. रू.

रसत्याग—सं. पु. [सं.] स्वादिष्ट पदार्थों को त्याग करने का व्रत।

(जैन)

रसद—सं. स्त्री. [अ.] १ कच्चा अनाज जो पकाकर खाने के लिये हो, खाने का अनाज।

२ खाद्य पदार्थ, खाद्य सामग्री ।

३ सैनिकों के प्रवास काल में साथ रहने वाली खाद्य सामग्री ।

४ अंश, हिस्सा, भाग ।

५ वह अंश या भाग जो बंटवारे के अनुसार मिला हो ।

सं. पु.–६ चिकित्सक ।

७ मध्ययुगीन एक गुप्तचर जो किसी को विषादि खिलाता था ।

वि.–१ रसदायक, मजेदार, स्वादिष्ट ।

२ आनन्द दायक, हर्षप्रद ।

रू० भे०–रसत, रस्त ।

रसदायक, रसदायिनी, रसदायी–वि.–१ आनन्ददायक, आनन्ददायी, रमणीय ।

उ०—भाखा संस्क्रत प्राक्रत भणंता, मूझ भारती ए मरम । रसदायिनी सुंदरी रमतां, सेज अंतरिख भूमि सम । —वेलि

२ रसदार ।

३ स्वादिष्ट ।

रसदार–वि.–१ जिसमें रस हो, रस से परिपूर्ण ।

२ स्वादिष्ट ।

३ रमणीय ।

रसधातु–सं. पु. [सं.] १ पारद, पारा ।

२ शरीरस्थ सप्त धातुओं में से प्रथम धातु ।

रसधेनु–स. स्त्री. [सं.] गुड़ आदि से बनी वह गाय जो दान की जाय । (पौराणिक)

रसन, रसना–सं. स्त्री. [सं. रसना, रसना] १ जिव्हा. जीभ । (डिं. को., ह. नां. मा.)

उ०—१ नित 'किसन' किव रट नांम निरभै, रसन स्त्री रघुरांम । – र. ज. प्र.

उ०—२ आप नांम डळ ऊपरां, रसना राघव नांम । रूड़ी विधसूं राखियो, पुरखां जकां प्रणांम । —बां. दा.

उ०—३ देस तमासा सुन्य मैं, नैंन सुरति का खोलि । जनहरीया रसना विनां वचन अखंडी बोलि । —अनुभववांणी

२ वाणी, आवाज ।

उ०—उपजावै अनुराग, कोयल मन हरखत करै । कड़वो लागै काग, रसना रा गुण राजिया । —किरपारांम खिड़ियौ

३ करधनी, मेखला, किंकिणी । (अ. मा.)

उ०—भर स्रोणित पीठि विभाग नयौ, कटिको वित लूटि नितंव लयौ । रुचि रूप जराव जरी रसना, मुकता हिम नीलम हीर पनां । —ला. रा.

४ चन्द्रहार, आभूषण । (व. स.)

५ कमर बंद, कमर पेटी ।

६ रस्सी, डोरी ।

७ रास, लगाम ।

८ हठयोग के अनुसार पिंगला नाड़ी ।

९ बलगम, कफ । (अमृत)

१० प्रथम गुरु के गणगण का नाम । (र. ज. प्र.)

वि.–रक्ताभ, लाल । (डिं. को.)

रू० भे०–रसण, रसणांण, रसणा, रसणि, रस्सण ।

रसनागृह–सं. पु. [सं. रसना+गृह] मुख, मुंह । (अ. मा., ह. नां. मा.)

रसनालट, रसनालट्, रसनालीह्–सं. पु. [सं. रसनालिह्] श्वान, कुत्ता । (ह. नां. मा.)

रसनेन्द्रिय–सं. स्त्री. [सं. रसना+इन्द्रिय] जिव्हा, जीभ ।

रसनोपमा–सं. स्त्री. [सं.] एक प्रकार का उपमा अलंकार जिसमें उपमाओं की शृंखला बंधी होती है ।

रसन्न–देखो 'रसना' (रू. भे.)

उ०—ऊ करसी चित सोच असंग्रह, सास उसास संभार रसंन्नह । कीरत स्रीवर भाख 'किसन्नह', राख रिदे रघुराज । —र. ज. प्र.

रसपति–सं. पु. [सं.] १ चन्द्रमा, शशि ।

२ शृंगार रस ।

रसपरपटी–सं. स्त्री. [सं. रसपर्पटी] पारे को शोध कर बनायी जाने वाली एक रसौषधि । (वैद्यक)

रसपरिच्चाअ, रसपरित्याग–सं. पु. [सं. रस परित्याग] एक व्रत जिसमें रस पदार्थों का परित्याग कर दिया जाता है । (जैन)

रसपूर–वि.–१ वीर रस पूर्ण ।

उ०—सझै 'सिवड़ांपति' दारण सूर । पिरोहित 'केहरियौ' रसपूर । —सू. प्र.

वि.–२ रस से परि पूर्ण ।

रसपोटळी–देखो 'रसपोटी' (अल्पा., रू. भे.)

रसपोटी–सं. स्त्री.–१ घोड़े का एक रोग विशेष जिसके कारण घोड़े के पिछले पैरों में कठोर ग्रंथियां हो जाती हैं । (शा. हो.)

२ हाथी का एक रोग जिसमें हाथी के शरीर पर पोटली सी हो जाती है ।

अल्पा., रसपोटळी ।

रसबत्ती–सं. पु.–पुराने जमाने की तोप व बन्दूक चलाने का एक पलीता ।

रसबाय–सं. पु.–हाथियों का एक रोग, जिसमें हाथी के पेट में वायु बढ जाती है और हाथी बहुत कष्ट पाता है ।

रसभरी–सं. स्त्री. [अं. रैस्पबेरी] १ लाल–पीला एक स्वादिष्ट फल ।

२ उक्त फल का बना पेय पदार्थ ।

३ रस से परिपूर्ण एक मिठाई । वह मिठाई जिसमें रस भरा हुआ हो ।

रसनाव–सं. पु.–हाथियों का एक रोग जिसमें हाथी के पैर में सूजन आ जाती है, आंखें पीली पड़ जाती हैं, रंग पीला पड़ जाता है और वह आराम से सो नहीं सकता।

रसमंडूर–सं. पु. [सं.] गंधक मंडूर व हड़ के योग से बनाई जाने वाली एक रसौषधि।

रसमंत्री–सं. पु.–सलाहकार मंत्री, संधि कराने वाले मंत्री।

उ०—राजरूप कांनूगो लारां। **रसमंत्री** मिळिया राजा रा।
—रा. रू.

रसम–सं. स्त्री. [अ. रस्म] १ परंपरा, परिपाटी, नियम, प्रथा, रूढि।

उ०—आदू तिवार में सुगन, ओ देख अमल बिन दोघड़ा। आ **रसम** फसाई अमलियां, तार न सोचै टोघड़ा। —ऊ. का.

२ प्रचलित प्रथा के अनुसार दिया जाने वाला धन, नेग, दस्तूर।

३ कर, लगान।

४ वेतन, तनख्वाह।

५ संस्कार।

६ देखो 'रस्मि' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ वन सघन लसत मनु घन वसाल, संचरै नाहि रवि **रसम** रास। —मयारांम दरजी री वात

उ०—२ दहूं वळां तोप लग्गी दगरण, रूप काळ डाचा रुखी। रवि प्रळै काज जांणे **रसम**, ज्वाळ भाळ ज्वाळा मुखी।
—सू. प्र.

रू० भे०–रसम्म, रस्म, रस्सम।

रसमय–वि.–१ रस से परिपूर्ण, रस युक्त।

उ०—मिळि अंब साख प्रसाख **रसमय** अमिति मंजुर अंजुरे। रसहीन अनि तर सरब रेणा सीत छळ कृति संचरे। —रा रू.

२ मधुर, मीठा।

उ०—कोई कुकवी जीभ सूं, वांछै **रसमय** वांण। कंचण वांछै काढणौ, सो लोहा री खांण। —बां. दा.

सं. पु.–मकरंद। (अ. मा.)

रसमांण–सं. पु. [सं. रश्मि] १ सूर्य का प्रकाश, तेज।

उ०—असी तेज अप्रमांण 'जोदांण' पत आपरौ, लीक नह रांण सुरतांण लागै। मगज चसमांण ग्रह पांण आदम कमण, भांण **रसमांण** लग आंण भागै। —तिलोकसी बारहठ

२ सूर्य की किरण, रश्मि।

रसमाता–सं. स्त्री. [सं.] जिव्हा, जीभ। (डि. को.)

रसमि, रसमी–देखो 'रस्मि' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—ऊपर सरद सुखद रित आई, सुख धर नै पत उदत सवाई। सरवर अचळ निमळ जळ सोहै, मध पूरत विधु **रसमि** विमोहै।
—रा. रू.

रसमैत्री–सं. स्त्री. [सं.] स्वाद में वृद्धि करने वाले दो विभिन्न रसों का मेल, मिलान।

रसम्म–१ देखो 'रसम' (रू. भे.)

२ देखो 'रस्मि' (रू. भे.)

उ०—१ दंडकाळ करंगा तरेस सी गणेस दंत। सूर प्रळै **रसम्मां** मणेस सुवासार। —र. रू.

उ०—२ रोसाळ मिळै ग्रीखम **रसम्म**। चिंता विडाळ नाहर चसम्म। —वि. सं.

रसयौ–सं. पु.–रस से उत्पन्न होने वाला कीड़ा। कीटाणु।

रसरंग–सं. पु.–१ राग-रंग, आनन्द, उत्साह, खुशी।

२ तीन यगण व अंत में लघु मात्रा का एक छंद। (ल. पिं.)

रसरसाट–सं. स्त्री.–आवाज या ध्वनि विशेष।

उ०—असंख्य साहणि चालते हूंते समुद्र सलिल सलसल्यां, घांट घमघमी, वाघरयाल वाजी, रथीक राउत तणे **रसरसाटि** रोहणगि-रिस्निग रणरण्यां। —व. स.

रसराज–सं. पु. [सं.] १ पारद, पारा।

२ पारै, ताम्र भस्म और गंधक के योग से बनी एक रसौषध। (वैद्यक)

३ रसांजन, रसौत।

४ साहित्य में श्रृंगार रस।

५ रतिफल।

उ०—घुरै सुहांणी गाज मद्रंगा ताळ धमंकै, कळप तणा **रसराज** पियंतां कांम दमंकै। —मेघ

रसरी–सं. स्त्री. [सं. रसना, प्रा. रसणा] डोरी, रस्सी।

रसळ–सं. स्त्री. [देशज] छत पर चूना जमाने से पूर्व मुरड जमाने की क्रिया।

रसलीण, रसलीन–सं. पु.–कवि। (अ. मा.)

वि.–१ रस, प्रेम, आनन्द में लीन रहने वाला, मग्न रहने वाला।

२ कामी, विलासी।

रसलोभी, रसलोलुअ, रसलोलुप–वि. [सं. रस-लोलुप] रसका लोभी, रसिक, कामी।

उ०—लीयै तसु अंग वास **रसलोभी**, रेवा जळि क्रत सौच रति। दखिणांनिळ आवतौ उतर दिसि, सापराध पति जिम सरति।
—वेलि

सं. पु.–भ्रमर, भंवरा।

रसवंछक–वि.–रस का इच्छुक।

उ०—विधि पाठक सुक सारस **रसवंछक**। कोविद खंजरीट गतिकार प्रगलभ लाग दाट पारेवा, विदुर वेस चक्रवाक विहार।
—वेलि

रसवंत, रसवत–वि. [सं. रसवत्] (स्त्री. रसवंती) १ जिसमें रस हो, रसपूर्ण।

२ स्वादिष्ट, जायकेदार ।
३ भीगा हुआ, नम, तर ।
४ मनोहर, सुन्दर, मनोज्ञ ।
५ भाव पूर्ण ।
६ प्रीति पूर्ण, प्रेम मय ।
७ प्रेमी, रसिक ।
८ रसज्ञ ।
९ दिलचस्प, आकर्षक ।

रसवतमन–सं. पु. सुन्दर । (अ. मा.)

रसवति, रसवती–सं स्त्री. [सं.] १ रसोई घर, पाकशाला ।

उ०—अहमारी रसवती वरणवू, परिण कसी एक छि जे **रसवती** माहरइ ससरइ, देवांस पुरखि, ऊपनि मालि, प्रसन्न कालि, वारू मंडप निपाया, पंचवरण पटुलां. —व. स.

२ खाद्य सामग्री, भोजन ।

उ०—१ तउ वनि कांमुकि जाइ पंचह पंडव कुणवि सउं । मंत्रह तणइ उपाइ अरजुनु आंणइ **रसवती** य । —सालिभद्र सूरी

उ०—२ अगनि रतन थी सिद्धि हुवै, ते सुणि दीन दयालु मो । नवली नवली **रसवती**, चावल नैं वलि दाल मो । —वि. कु.

३ शाक, सब्जी ।

उ०—१ नेह विना सी प्रीतड़ी, कंठ विना स्यउ गांन । लूण विना सी **रसवती**, प्रतिमा विण स्यउ ध्यांन । वि. कु.

उ०—२ रावल भगति भोजन तणी रे, सहूअ कराई सभ । रूड़ी व्यंजन **रसवती** रे, आरोगण आलिम कज्ज रे । —प. च. चौ.

उ०—३ जिम लवण हीण **रसवती**, व्याकरण रहित सरस्वती, गंधरहित चंदन, घ्रत रहित भोजन, खांड रहित पकवांन, मांन रहित दांन, छंद रहित कवित, तेज रहित रवि, विवेक रहित मनुस्य । —व. स.

४ पृथ्वी, भूमि, धरा । (अ. मा., ह. नां. मा.)
५ रासवेलि नामक लता । (अ. मा.)
६ सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी । (संगीत)

वि.–१ रस भरी, रसपूर्ण ।
२ रसीली, रंगीली ।
३ रमणी, सुंदरी, प्रिया ।

उ०—सजनैं ढोलाजी सोले सणगार । **रसवती** मैंलां आयी ऐ मद छकिया थारी चोली प्यारी सा । —लो. गी.

४ स्वादिष्ट, रुचिकर ।

उ०—यथा आभरणि सुवण्णरत्न हीरा मुक्ताफलादि सरव संयोगी राजयोग्य आभरण, **रसवती** भोजन सालि दालि घ्रत पक्कवान्नादि । —व. स.

५ दिलचस्प ।

रसवतीकरम–सं. पु. [सं. रसवतीकर्म] १ भोजन या रोटी बनाने की क्रिया ।
२. ७२ कलाओं में से एक ।

रसवतीग्रह–सं. पु. [सं. रसवतीगृह] १ पाक शाला, रसोई, रसोड़ा ।

उ०—मज्जनग्रह विलेपन ग्रह प्रसाधन ग्रह, अलंकार ग्रह, आदरस ग्रह अंतपुर ग्रह, क्रीड़ाग्रह **रसवतीग्रह** भोजनग्रह आस्थान ग्रह कोस चैत्य प्राय मंदिर परिकरित विसाली प्रणाली चित्रसाली । —व. स.

रसवत्ता–सं. स्त्री.–१ रसीलापन, स्वाद ।
२ मीठास ।
३ सुन्दरता ।
४ प्रसन्नता ।

रसवांन–सं. पु. [सं. रसवान्] किसी विशेष गुण या शक्ति वाला पदार्थ, जिसके कण या अंश का संयोग रसना से होने पर, विशेष आनन्द या स्वाद की अनुभूति होती है ।

वि.–रसदार, रसयुक्त, जिसमें रस हो ।

रसवाद–सं. पु. [सं.] १ साहित्य में वह मत या सिद्धान्त, जिसके अनुसार काव्य में 'रस' की प्रधानता को माना जाता है ।
२ रस की बात, रसिकता की बात ।
३ छेड़ छाड़
४. ७२ कलाओं में से एक ।

रसवायौ–वि. (स्त्री. रसवायी) १ उमंग, जोश से युक्त ।

उ०—विढवा प्रथम अणी **रसवाया**, ऐ मछरीक वणी कळ आया । 'चूंडो' 'मुकन' सुजाव सचेळी, भूप तणै छळि 'केहर' भेळी । —रा. रू.

२ प्रसन्न, हर्षित ।

उ०–गिरध चील गोमायु विरक जंबू **रसवाया** । काक कंक कौ गिरैं ग्रास पळ संभळ आया । —रा. रू.

रसवाळौ–वि. [सं. रस+आत्म] (स्त्री. रसवाळी) १ रस से पूर्ण, रसदार । २ जायकेदार, स्वादिष्ट । ३ दिलचस्प ।
४ मधुर ।

रू० भे०–रसाउलु, रसाळ, रसाळौ ।

रसवास–सं. पु.–ढगण के प्रथम भेद का नाम । (ıs) (पिंगल)

रसविरोध–सं. पु. [सं. रसविरोधः] वे विभिन्न रस जिनका मेल उचित नहीं माना जाता है । (सुश्रुत)

रसविलास–सं. पु. [सं. रसविलासं] रतिक्रीड़ा, मैथुन ।

उ०—रिझवारां रिझवार कमरां सिणगार तीख चोख रौ राखणहार **रसविलास** रौ चाखणहार । —र. हमीर

रसवीर–देखो 'वीररस' (रू. भे.)

रसवेता, रसवेत्ता–वि. [सं.] रस मर्मज्ञ, रसज्ञ ।

रसवेलि—सं. स्त्री.—रस की वेल, लता।

उ०—वाही थी गुणवेलड़ी, वाही थी **रसवेलि**। पीणइ पीवी मारवी, चाल्या सूती मेलि। —ढो. मा.

रससंस्कार—सं. पु.—पारे के अट्ठारह प्रकार के संस्कार। (वैद्यक)

रससागर—सं. पु.—१ सात समुद्रों में से एक। (पौराणिक)

२ प्रेम का सागर।

रससात—सं. पु.—दूध, दुग्ध। (अ. मा.)

रससार—सं. पु.—१ शहद, मधु।

२ विष, जहर।

रससिंगार—सं. पु.—शृंगार रस।

वि.—मधुर। ✻ (डि. को.)

रससिंदूर—सं. पु. [सं.] पारे और गंधक के योग से बनने वाला एक रस। (वैद्यक)

रससिंधु—देखो 'रससागर'

उ०—आंखि आंजि सिर गूथत मारी, झूमक गावत अंचळ जोरी। मीरां प्रभु **रससिंधु** झकोरी, नवल हि गिरधर नवल किसोरी। —मीरां

रससिद्धि, रससिद्धी—सं. स्त्री. [सं.] १ रसायन विद्या में कुशलता, निपुणता।

उ०—१ राजा कही—अंबे! **रससिद्धि** देय। देवी तत्काळ किंवाड़ खोल अंतरध्यांन हुई। —सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ विक्रम विन त्यागी कहां, जे **रससिद्धी** पाय। कठिण परिस्रम कर सकळ, तपसी दियौ बताय। —सिंघासण बत्तीसी

रससेव—सं. पु.—बलराम का एक नामान्तर। (अ. मा.)

रसांण—क्रि. वि.—१ उचित ढंग पर, उपयुक्त स्थिति में, सही रास्ते पर।

उ०—विण सांवळ वाच बखांण भली विध, कंठ लगाय प्रमांण करी। न भरै जद वात **रसांण** न आवै, माहपणै किम हांम भरी। —भगतमाळ

२ देखो 'रसायण' (रू. भे.)

रसांणी—सं. स्त्री.—रसायन विद्या।

रसांमणा—सं. स्त्री. [सं. रश्मि] सूर्य की किरण, रश्मि।

उ०—सघर कर भभीखण रवि जम **रसांमणा**। भुजां रघुवर अडर, लीजिये भांमणा। —र. ज. प्र.

रसा—सं. स्त्री. [सं.] १ पृथ्वी, धरती, धरा। (डि. को., ह. नां. मा.)

उ०—१ राघव रयणायर **रसा**, सेस महेस्वर वैण। सुणै बचायौ गिरिसुता, सो व्हौ मो सुख दैण। —बां. दा.

उ०—२ महा ओस 'दूदा' चले रीस मत्ता। **रसा** काजि 'ऊदा' वडी लाज रत्ता। —रा. रू.

उ०—३ थारी आळस पणा री नींद है सो खोय देसी ने **रसा**। अथी सदा कंवारी है सो वीर हुवै जिकोई इण री वींद बणी है। —वी. स. टी.

२ दुनियां, जगत, संसार।

उ०—१ **रसा** रूठौ रूठौ अलख इक रूठौ मत रहै। हमारी देखै ना विरूद्ध निज लेखै वठ वहै। —ऊ. का.

उ०—२ दोख निज दीह न दीसै रे, **रसा** अवरां पर रीसै रे। वात निज हाथ विगाडी रे, आई सोइ पांत अगाड़ी रे। —ऊ. का.

३ जिव्हा, जीभ।

४ रसातल, पाताल।

उ०—अगहन मास ऋतू ग्यौ आखौ, पो' त्रेताजुग वीतौ पाखौ। द्वापुर माघ महीनों दाखौ, **रसा** सिवायौ आ चित राखौ। —ऊ. का.

५ नरक।

[फा. रसाई] ६ वेग, गति।

७ देखो 'रस' (रू. भे.)

रसाइण, रसाइन—देखो 'रसायण' (रू. भे.)

रसाई—सं. स्त्री. [फा.] १ पहूंच, क्षमता। (मा. म.)

२ मुलह, संधि।

रसाउलु—देखो 'रसवाळौ' (रू. भे.)

उ०—रासि **रसाउलु** चरीउ थुणीजइ। किम रयणायरु हीयइं तरीजइ। —सालिभद्र सूरि

रसागर—सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा, जिसका एक नैत्र लाल होता है तथा नैत्र में नीले रंग के डोरे होते हैं, साथ ही दूसरा नैत्र काला होता है। (अशुभ) (शा. हो.)

रसाणौ, रसावौ—क्रि. स. ['रसणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ पानी या किसी द्रव पदार्थ को धीरे धीरे बहाना, रसाना।

२ टपकाना।

३ रसयुक्त करना, स्वादिष्ट बनाना।

४ आशक्त करना, अनुरक्त करना।

५ प्रसन्न करना, खुश करना।

६ वश में करना, अधिकार में करना।

उ०—कमवज पत भूपत 'करन', इम राज **रसाया**। सुभ जिण कंवर अनोपसिंह, छत अवळां छाया। —द. दा.

७ रसास्वादन कराना, चखाना।

८ शोरगुल कराना, बोलाना।

९ ध्वनि कराना।

रसाणहार, हारौ (हारी), रसाणियौ —वि.।

रसायोड़ौ —भू. का. कृ.।

रसाईजणौ, रसाईजवौ —कर्म वा.

रसातळ, रसातळि—सं. पु. [सं. रसातल] १ पृथ्वी के नीचे के सप्तलोकों में से छटा लोक। (पौराणिक)

२ पाताल।

उ०—१ दादू भावै तहां छिपाइयौ, साच न छांना होइ। सेस

रसातळ गगन धू, परकट कहिये सोइ । —दादूवांणी

उ०—२ आकास रसातळ दिस असट, पारावार समंद्र पथ । जमजाळ दुसह जायै जहां, आंणी ग्रह मेरे अरथ । —रा. रू.

३ अधोलोक ।

उ०—१ राति रसातळ सात थई, दिवस थयु युग च्यारि । ऊवेखिउ नहू आथमइ, आदित आंखि ज वारि । —मा. कां. प्र.

उ०—२ साधू निरमळ मळ नहीं, रांम रमै सम भाइ । दादू अवगुण काढकर, जीव रसातळ जाइ । —दादूवांणी

उ०—३ आप आपकूं मारि करि, आप आपकूं खाय । आप आपणी नास करि न्याय रसातळि जाय । —ह. पु. वां.

४ अधोगति, नाश, पतन ।

उ०—१ उरध रोम उल्लसै जोम अरि करण रसातळ । भजि त्रिसळी निज भाळ, कळा सोखण सत्र कम्मळ । —रा. रू.

उ०—२ तूं ऊंचा खेंचै तिके, जग ऊंचा हुय जाय । मन खांचौ तूं माढवां, जिके रसातळ जाय । —ऊ. का.

५ पृथ्वी, भूमि, धरती ।

उ०—१ हरीया पंखी पंख विन, पड़ै रसातळि आय । ऊडण की मरवा नही, जीवत म्रितग थाय । —अनुभववांणी

उ०—२ परवत सुं पथर गिरयौ, परयौ रसातळ आय । हरीया हरि की भगति विन, सोई नीचा जाय । —अनुभववांणी

रू. भे.—रसतळ, रसतळि,

रसादार—वि.—जिसमें रस या शोरवा हो, रसदार ।

रसाधार—सं. पु. [स.] १ सूर्य, रवि ।

२ शेषनाग ।

रसाधी—सं. स्त्री.—भूमि, पृथ्वीमाता ?

उ० चितै होती चेतौ गहन नभ देती मन गसा । रसाधी क्यों रोती ह. ह. ह. किम होती दुरदसा । ऊ. का.

रसापत, रसापति—स. पु. [सं. रसा-पति] राजा, नृप । (डि. को.)

रसाभास—सं. पु. [सं. रस+आभास] १ साहित्य में किसी रचना की वह स्थिति जिसमें किसी रस विशेष का आभास मात्र हो गया हो अर्थात् रस की परिपक्वता नही आ पाई हो ।

२ मन मुटाव, वैमनस्य ।

उ०—नागोर पातसाह अकबर जद मोटा राजा नै राव चंद्रसेणजी एक हुवा, रसाभाव मेटियौ । —बां. दा. ख्यात

रसायक—देखो 'रसायण'

उ०—वईदराज के विसाळ, औखधी उपाइकं । तई रसायणी स्वधातु स्वच्छयं रसायकं । सू. प्र.

रसायण—सं. पु. [सं. रसायन] १ जरा व व्याधि को मिटाने वाली औषध, जो पारे या किसी धातु के योग से बनाई गई हो ।

उ०—कोई रसायण औषध खाय कुरूप सूं सुरूप हुवौ । —पंचदंडी री वारता

२ तांबे से सोना बनाने की एक कल्पित विद्या ।

उ०—करण रसायण कडछिया, हरि चिरतां हंसियाह । चुगलां ने गणिया चतुर, वनै गिरै वसियाह । —बां. दा.

३ धातुओं की भस्म बनाने की एक विद्या । इससे एक धातु को दूसरी धातु में भी बदला जा सकता है । (वैद्यक)

उ०—भणंत एक व्याकरण, वीर इस्ट के करै । तरक्क नीति सासत्रांणि, एक मुक्ख उच्चरै । मारतं एक सव्व वात, केळवै रसायणं । अगाध वैद राज राज ओखदी विचारणं । —गु. रू. बं.

४ वह विषय, क्षेत्र या तत्व जिसमें किसी प्रकार के रस या आनन्द की प्राप्ति होती है ।

उ०—सरव रसायण में रसी, हर रस समी न काय । टुक तन अंतर मेल्हियां, सब तन कंचन थाय । —ह. र.

५ इच्छित सिद्धि, मनोकामना की पूर्ति ।

उ०—वेयावच दस प्रकार नी, करजौ चित्त लगाय । कांइयक रसायण ऊपजै, दुख दालिद्र दूरे जाय । —जयवांणी

६ परिपक्वावस्था ।

उ०—गरढ पणै गुणकार, मार बहु बुद्धि रसायण । विण सै मल्ल वेसीया, गिणी तिम चाकर गायन । —ध. व. ग्रं.

७ रस काव्य ।

उ०—'नाल्ह' रसायण नर भणइ, राजा रह्यौ उडीसई जाय । वाग-वांणी मो वर दीयौ, अस्त्री रसायण करूं वरखांण । —वी. दे.

८ मधुर पेय रस ।

उ०—१ गूंगे का गुड़ का कहूं, मन जांणत है खाइ । त्यों रांम रसायण पीवतां, सो सुख कह्या न जाय । —दादूवांणी

उ०—२ जन हरिदास दोख तजि दुरभख, रांम रसायण पीवै । वूठै मेह पहम रुति पलटै, परचै लागा जीवै । —ह. पु. वां.

९ उत्तम खाद्य पदार्थ ।

१० कटि, कमर ।

११ गरुड़ पक्षी ।

१२ बहत्तर कलाओं में से एक । (व. स.)

रू० भे०—रसांण, रसाइण, रसाइन, रसायन ।

रसायणग्य—वि. [सं. रसायनज्ञ] रसायन क्रिया व विद्या का जानकार ।

रू० भे०—रसायनग्य ।

रसायणविग्यांन—सं. पु. यौ. [सं. रसायन+विज्ञान] पदार्थों में होने वाले गुणों व तत्वों का विवेचन करने तथा पदार्थों के परस्पर योग से होने वाली प्रतिक्रिया एवं रूपान्तर देखने की विधि या सिद्धान्त ।

रू० भे०—रसायनविग्यांन ।

रसायणसास्त्र—सं. पु. यौ. [सं. रसायन+शास्त्र] १ वह शास्त्र जिसमें

पदार्थों के गुण, तत्व आदि के विवेचन तथा पदार्थों के परस्पर योग से होने वाली प्रतिक्रियाओं एवं रूपान्तरों को देखने की वैज्ञानिक विधियों का संग्रह हो।

२ वह पुस्तक जिसमें रसायन विज्ञान की विधियों या सिद्धान्तों का संग्रह हो।

रू० भे०–रसायनसास्त्र।

रसायणी–सं. स्त्री. [सं. रसायनी] १ कोई रसायनिक औषधि।

उ०—वईदराज के विसाळ, औखधी उपाइकं। तई **रसायणी** स्वधातु, स्वच्छयं रसायकं। —सू. प्र.

२ उक्त औषधि बनाने की विधि या विद्या।

३ उक्त विद्या के जानने वाला वैद्य या चिकित्सक।

रू० भे०–रसायनी।

रसायन–देखो 'रसायण' (रू. भे.)

उ०—१ रांम रसायन पेम रस, ऐसा और न स्वाद। जन हरीया जै चखीया, विखै न आवै याद। —अनुभववांणी

उ०—२ अंग सकोमळ पेम सरभर, चूंप सभै चतरंग चितारो। माध सती जत राग **रसायन**, सूर खिम्या कवि दास दतारो। —अनुभववांणी

उ०—३ **रसायन** प्रयोग रसिकै, प्रदरसित वलिपलित, वसीकरणि अमूढ, लक्ष खडी चापडी प्रमुख विद्या कुतूहली अ साधक, आकास पाताल वंचक। —व. स.

रसायनग्य–देखो 'रसायणग्य' (रू. भे.)

रसायनचंदणा, रसायनचंदना–सं. स्त्री.–बहत्तर कलाओं मेंसे एक। (व. स.)

रसायनविग्यांन–देखो 'रसायणविग्यांन' (रू. भे.)

रसायनसास्त्र–देखो 'रसायणसास्त्र' (रू. भे.)

रसायनी–देखो 'रसायणी' (रू. भे.)

रसाळ, रसाल–वि. [सं. रस+आलय] १ रसयुक्त, रसमय।

२ मीठा, मधुर।

उ०—१ ग्वाळ बाळ रचि चारु मंडळ, बाजत बंसी **रसाळ**। —मीरां

उ०—२ दादू रंग भर खेलूं पीव सौं, तहं बाजै बेणु **रसाळ**। अकल पाट पर बैठा स्वांमी, प्रेम पिलावै लाल। —दादूवांणी

उ०—३ घट मांही घड़ियाळ, आठ पोहर लागी रहै। हरीया राग रसाळ, रग रग भीतर होत है। —अनुभववांणी

३ ठंडा, शीतल।

उ०—मुख दीसै विकसौ कमळ, चंदन वचन **रसाळ**। हियडै जांण कि करतरी, धूरत चिन्ह एमाळ। —पंच दंडी री वारता

४ सुन्दर, मनोहर। मोहक।

उ०—१ हंसी परी माधुरी सी चाल, अति अद्भुत रूप **रसाल**। मारग मिथ्यात उदाल। —वि. कु.

उ०—२ चंद्र-वदन अग-लोयणी जी, चपल लोचनी बाल। हरी लंकी अदु भाखणी जी, इंद्राणी सी रूप **रसाल**। —जयवांणी

उ०—३ वाचंती अगम्म वेद नाचंती वजाड़ै वीण। राचंती सुरंग अग नाचंती **रसाळ**। —मा. वचनिका

उ०—४ राधा रांणी संग लिये, गोपी निकट गुवाळ। ऊपर कीजै ईश्वर, सुंदर स्यांम **रसाळ**। —गज उद्धार

५ प्रिय, प्यारा।

उ०—ससि-वदन अगलोचना रे, हरि लंकी सुविसाल। राजा मांनै अति घणी रे, जीव सुं अधिक **रसाल**। —जयवांणी

६ फलदायक।

उ०—राखो आगै रसण रे, राघव नांम **रसाळ**। मुख मांझळ आंणी मती, गिणो अवक ज्यूं गाळ। —वां. दा.

७ शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल।

८ जोश पूर्ण।

उ०—विसाळ भाल कंवरा, **रसाळ** छत्ति युत्थरे। रहैं पदग्ग रेखतैं, सु देखतें अरी डरैं। —ऊ. का.

९ रसिक, प्रेमी।

१० आनन्ददायक, दिल चस्प।

उ०—मुझ नाचंतां भरह **रसाल** ए, स्युं जांणइ मूरख ताल। —हीराणंद सूरि

सं. पु.–१ रसमय या रसयुक्त पदार्थ।

२ आम, आम्र। (अ. मा., डि. को.)

३ सेब आदि फल, फ्रूट।

उ०—अथवा मेह खंच करे रे लाल, ऊपर पड़ जावै काल सुविचारी रे। तो देणी मोने मोकलो रे लाल। अटवी मांही **रसाल** सुविचारी रे। —जयवांणी

४ गन्ना।

५ ऋतु विशेष में होने वाला फल।

६ कटहल।

७ कंदुर तृण।

८ बोलसर नामक गन्ध द्रव्य।

९ अमलवेत।

१० हल्दी। (अ. मा.)

११ गेहूं।

१२ वनस्पती विशेष। (सभा)

१३ ज, स, त, य, र, ल और ७, ९. पर यति वाला एक छंद विशेष।

१४ एक वर्णिक छंद विशेष जिसमें चार सगण व अंत में दो लघु होते है। (ल. पिं.)

उ०—पाए एकरिण रुप परिण, चवदह सहस चमाळ। सगण च्यारि लघु दोइ सुजि, रूपक नांम रसाळ। —ल. पिं.

[अ. इर्साल, इरसाल] १५ भेंट, सौगात।

उ०—१ राव लाखणसीजी नै पाछा परवानां लिखनै ओठि नै सीख दीधी। रावजी नै रसाळ मेली।

—वीरमदे सोनगरा री वात

उ०—२ उठै वखतसिंह जी मेलियो भागु राइको आंवा री रसाळदार रसाळ लेय आयो। —मारवाड़ रा अमरावांरी वारता

१६ कर, महसूल, खिराज।

उ०—१ ताहरां मांडवगढ रै पातसाह मांणस चलाया। आदमीयां सागै एक कोड़ रुपीया घातिया। 'अकल-कँवास', 'मत-कँवास' साथे दीया—वीच कोई पूछै तौ कह्या, मांडव रै पातसाह विलाइत रै पातसाह नु रसाळ मेली छै।

—रिणमल राठौड़ खावड़ियै री वात

रू० भे०—रसावळ।

रसाळदार, रसालदार—वि.—१ रसदार, रसयुक्त।

उ०—उठै वखतसिहजी री मैलियो भागु राइको आंवां री रसाळदार रसाळ लेय आयो। —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

२ देखो 'रिसालदार' (रू. भे.)

रसाळू, रसालू, रसाळो, रसालो—देखो 'रसवाळो' (रू. भे.)

उ०—१ संवत चौद पंच्यासीइ ए वरचीउ चरी रसालू ए।

—हीराणंद सूरी

रसालो—१ देखो 'रिसालो' (रू. भे.)

उ०—१ रायांनैर वज्र सो वणायो गाढै रावरूपै, आयो खीगोवाळ वेल चाढै वंस आव। हजारां रसाला वाढै अखाडै दिखाया हाथ, नवी री कसमां काढै वखांणै नवाव। —वां. दा.

उ०—२ अरु सं० १७३६ मा'राज पदमसिंघ जादम राय दखणी सूं झगड़ो कर कांम आया तिणरी खवर मा'राज नूं हुई तद उणांरी रसालो सारो अवैरचो। —द. दा.

२ देखो 'रसवाळो' (रू. भे.)

उ०—१ जव नटवां की साला रे, गावै गीत रसाला रे।

—जयवांणी

उ०—२ निकल गया डाला रे, नहीं फल रसाला रे।

—जयवांणी

रसावळ—सं. पु.—१. २४ मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसमें १३ व ११ मात्रा पर यति होती है। (रूपदीप पिंगल)

२ देखो 'रसाळ' (रू. भे.)

रसास्वादी—वि. [सं. रसास्वादिन्] १ किसी प्रकार के रस का स्वाद लेने वाला।

२ किसी विषय का आनन्द लेने वाला।

३ रसिक, रसिया।

रसि—१ देखो 'रस' (रू. भे.)

उ०—१ अवगति अगम अगम गम कीया, नौग्रह पलटि गगन रस पीया। ता रसि मुनिजन रया समाय। ता रसि मनि उलटि न जाय। —ह. पु. वां.

उ०—२ लावण सार सुधा रसिका रसि ते सिंचंति। अग वरीये अगलोचना लोच ना रंग चूकंति। —जयसेखर सूरि

उ०—३ राति विहांणी एण रसि, प्रात हुवो अमवार। मेछ अभंग महावळी, आरुहि संग अपार। —रा. रू.

२ देखो 'रसी' (रू. भे.)

३ देखो 'रस्सी' (रू. भे.)

रसिक—वि [सं. रसिकः] (स्त्री. रसिका) १ किसी विषय का अच्छा ज्ञाता, मर्मज्ञ, काव्य मर्मज्ञ।

२ गुणग्राही।

३ रस पान करने वाला, रस लेने वाला।

उ०—नव द्वारां का रसिक नवेला, अलवत भग इधकाई। देख विचार द्वार दसवें दिस, बिल्कुल राख वगाई। —ऊ. का.

४ विलास प्रिय, मौजी, मस्त।

५ रस लोलुप, लम्पट।

उ०—विलळा ग्रंथ वांचै रसिक न राचै, छत्र छाती छोलंदा है। निकमा नर नारी वारंवारी, बळिहारी बोलंदा है। —ऊ. का.

६. भावुक सहृदय।

उ०—प्रथम नेह भीनो महाक्रोध भीनो पछै, लाभ चमरी समर झोक लागै। रायकंवरी वरी जेण वागै रसिक, वरी घड़ कंवारी तेण वागै। —वां. दा.

७ रसयुक्त, रसमय।

८ स्वादिष्ट, जायकेदार।

९ सुन्दर, मनोहर।

सं. पु. १ प्रेमी व्यक्ति।

२ सारस।

३ घोड़ा, अश्व।

४ हाथी, गज।

५ एक छंद विशेष।

रू० भे०—रसक।

रसिकता—स. स्त्री. [सं.] १ रसिक होने की अवस्था या भाव।

२ मौज, मस्ती।

३ परिहास, हंसी, आनन्द, हर्ष।

४ सुन्दरता, मनोहरता।

रसिकबिहारी—सं. पु. यौ. [सं.] श्रीकृष्ण का एक नामान्तर।

रसिका-सं. स्त्री.-१ प्रत्येक चरण में ११ लघु मात्रा का एक मात्रिक छंद। (र. ज. प्र.)

२ वह स्त्री जो रास विलास व रमण करने योग्य हो।

उ०—लाधइ सार सुवा **रसिका** रसि ते सिंचंति। अग धरीये अग लोचना लोच ना रंग चूकंति। —जयसेखर सूरि

३ देखो 'रसिक' (स्त्री.)

रसिकेस्वर-सं. पु. [सं. हृषिकेश्वर] श्रीकृष्ण।

रसियापण, रसियापणौ सं. पु. [सं. रसिक+त्व] १ रसिक होने की अवस्था या भाव।

२ रसिकता, शौक, मस्ती, मौज।

३ विलासिता।

रसियौ-वि. [सं. रस+रा. प्र. इयौ, सं. रसिक] १ आनन्द या रस लेने वाला, रसिक। २ रसज्ञ, मर्मज्ञ।

उ०—माया के रस रसिक है, वात कहत हैं दोय। रांम रसायण अजब है, पीवै **रसिया** होय। —ह. पु. वां.

३ जिसको किसी कार्य का विशेष शौक हो, शौकीन।

उ०—१ मुंह पतलै पूठै मोटा, छछोहा ने कांनै छोटा। मोने री माखत कसीया, राजा हुवै चुढतां **रसिया**। —ध. व. ग्र.

उ०—२ प्रथी भुगते तरण फतै पर्णा, हूंसनायक पर्णा मुनंद हंसियौ। 'मांन' हर धाड़ रे धाड़ जोवन मसत, राड़ रै वगत तणौ **रसियौ**। —महाराजा बहादरसिंघ री गीत

४ रति क्रीड़ा लोलुप, कामुक, विषयी, वेश्यागामी।

उ०—१ हंसियौ जग आसक हुवौ, वसियौ खोवण वीत। **रसियौ** नागी रांड सूं, फसियौ होण फजीत। —वां. दा.

उ०—२ सोवै अळगी सायधण, सुपनें ही नह संग। गणिका सूं राखै गुसट, **रसिया** तोनै रंग। —वां. दा.

५ हास परिहास करने वाला।

६ मस्त, मौजी। छैल, छबीला।

७ प्रिय, प्यारा

उ०— तुम ह्यां ही रहौ रांम **रसिया**, थारी सांवरी मुरति (में) मन वसिया। —मीरां

सं. पु.-१ पति, प्रियतम।

उ०—१ प्यारा थांसूं पलक ही, वांछूं नहीं विजोग। उरवसिया मो आवजो, **रसिया** थारो रोग। —वां. दा.

उ०—२ दळवादळ वीच चमकै जी तारा, सांज समै पीव लागै जी प्यारा। कांई रे जवाब करूं **रसिया**। —लो. गी.

२ एक राजस्थानी लोक गीत।

रू० भे०-रसीयौ,

रसी-सं. स्त्री. १ किसी घाव या फोड़े में पड़ने वाली पीव, मवाद।

२ देखो 'रस्सी' (रू. भे.)

रू० भे०-रसि।

रसीद-सं. स्त्री. [फा.] १ रूपये आदि की वसूली या अदायगी के बदले में दी जाने वाली पहुंच, प्राप्ति। प्राप्ति सूचना।

२ वह पत्र या प्रमाण-पत्र, जिसमें उक्त प्रकार की प्राप्ति लिखकर दी जाती है।

उ०—इण वास्तै फाटक में आयोड़ा रूळियार ढांढां री **रसीद** काटण मैं वांनै पूरी दिक्कत रै'वती। —अमरचूनड़ी।

रसीनौ-सं. पु.-प्रेमी।

उ०—अवसिरि आयौ यार असीनौ। आज सु दिन भयौ भाग पुरवलै, पायौ परम **रसीनौ**। —अनुभववांणी

रसीयौ-देखो 'रसियौ' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया दिल सावित भया, चितवा निहचळ होय। **रसीया** सोई जांणीयै, निज मन वसीया सोय। —अनुभववांणी

उ०—२ आव्यौ मास वसंत रे **रसीयां** री राजा। सुख द्यै साजा, तरु होइ ताजा। —वि. कु.

उ०—३ अवसर देखी पापी सेठै भूंडी द्रेठै, रांमा धन नौ **रसीया** रे लौ। —वि. कु.

उ०—४ रमतां हे सखि रमतां रूड़ी रीत, **रसीयौ** हे सखी रसियौ पदमणि मन वस्यौ जी। —प. च. चौ.

रसील-वि. [सं. रस+रा. प्र. ईल] रस युक्त, रसदार। मीठा, मधुर।

उ०—सिवरी कुळ भील कुचील सरीरी, चाखत वोर **रसील** संचै। गहावत ढील करी नह गोविंद, वीच अंगीर मंजार वंचै। —भगतमाळ

रसीलणौ-वि. (स्त्री. रसीलणी) प्रेम या आनन्द में निमग्न रहने वाला। मस्त।

उ०—भूटे फल लीन्हे रांम, प्रेम की प्रतीत जांण। ऊंच नीच जांने नहिं, रस की **रसीलणी**। —मीरां

रसीलापण, रसीलापणौ-सं. पु.-१ रसिक होने की अवस्था या भाव।

२ रसयुक्त या रसमय होने की अवस्था या भाव।

३ विलास प्रिय या कामुक होने की अवस्था या भाव।

रसीलौ-वि. [सं. रस+रा. प्र. ईलौ] (स्त्री. रसीली) १ रसयुक्त, रसमय। २ स्वादिष्ट, जायकेदार।

३ मधुर।

उ०—१ सोहागिण रंग रंगीली, तुं प्रेम महारस भीली, सांभलि मुझ वात **रसीली**। —वि. कु.

उ०—२ नमौ रूप नद्दा सवद्दा **रसीली**, नमौ लच्छि रंभा नमौ वौम लीली। —मा. वचनिका

४ दिलचस्प, मजेदार।

५ आनन्द दायक।

६ विलास प्रिय, कामुक।

७ बांका, छबीला।

८ सुन्दर, मनोहर, कमनीय।

उ०—१ सील सजीलौ रूप रसीलौ, छैल छवीलौ छावै। नील जळज तन छटा निराळी, लख लख कांम लजावै। —गी. रां.

उ०—२ वरतुळ सुछम कपोळ रसीली वांम रा। किया तयारी वेह, दरप्पण कांम रा। —बां. दा.

९ नाजुक, कोमल।

उ०—दस इग्यारै बरसां री सरावोर रसीली ऊमर में ई उण री मन अघोरी रै उनमांन व्हैगौ। —फुलवाड़ी

१० प्रियतम, प्रेमी, रसिया, रसिक।

उ०—कथ हरै निज कांमणियां रा अंवर ढीला। भांमण हुवी लाज न छोडे लार रसीला। —मेघ

११ रसज्ञ, मर्मज्ञ।

१२ सार युक्त।

उ०—हिवड़ां थांरी जाभौ रे, वैराग छै ताजौ रे। पायौ धरम रसीलौ रे, रखे पड़ि जाय ढीलौ रे —जयवांणी

रसुगाळ—देखो 'रसउगाळ' (रू. भे.)

रसूक—सं. पु.—संवंध, व्यवहार।

उ०—आछचा स्वभाव नै रसूक नरमी मन राखणै सूं छै। —नी. प्र.

रसूगाळ—देखो 'रसउगाळ' (रू. भे.)

रसूल—सं. पु. [अ.] १ ईश्वर का दूत।

२ ईश्वर का अवतार।

३ पैगंवर।

४ ईश्वर।

उ०—हो मोहि लागी प्रीत रसूलै, नांव निमख नहीं भूलै। —अनुभववांणी

रसेंद्र—सं. पु. [सं] पारद, पारा।

रसेस्वर—सं. पु. [सं. रसेश्वर] १ पारा, पारद।

२ छः दर्शनों से अलग एक दर्शन का नाम।

रसोइ—देखो 'रसोई' (रू. भे.)

उ०—१ गणपति गादह चारइ, कतांत कोट राखइ, सनीस्चर रसोइ चाखइ, मगल स्रीखंड घसइ। —व. स.

उ०—२ आदित्य रसोइ तपइ, चंद्रमा घडी घडी अम्रत झरड, यम पांणी वहइ, सात समुद्र मांजणउं करावइ। —व. स.

रसोइयौ—सं. पु.—१ भोजन वनाने वाला व्यक्ति, वावर्ची।

२ पाक शास्त्री। कारीगर।

उ०—हणै जावण दो। हूं काल रसोइयै नै बुलाय'र तै कर लेवूंला। रसोइयौ पैलै-श्री लंवर जोयीजै। चावै रुपिया पांच-ई लेवौ। —वरसगांठ

रू० भे०—रसोईयौ।

रसोई—सं. स्त्री. [सं. रसवती] १ भोजन के रूप में वनने वाली खाद्य सामग्री, भोजन, खाना।

उ०—१ ठाकर सगळी वातां री हुंकारौ भरचौ, गुलाव री मां धूप-दीप करचौ। रसोई वणाई, चूरमौ चूरचौ अर भूत देवता री जगां लेजा'र चढायौ। —दसदोख

उ०—२ अठी वाप-वेटा री संपाड़ौ सपूरण व्हियौ अर उठी सेठांणी री रसोई। गुळ रौ झरझरतौ मंगळीक सीरौ वणायौ। खीर वणाई। मालपूवा काढचा। पापड़-खीच्या तळचा। वाजोट्या ढाळ थाळ पुरसिया। —फुलवाड़ी

उ०—३ संपत री नह सोच सोच नह सरधा सोई। स्यांन गई नह सोच, सोच नह घ्यांन रसोई। —ऊ. का.

२ वह कक्ष जहां भोजन वनाया जाता है, रसोईघर, पाकशाला।

उ०—१ वेटौ पांणी पीवण सारू गियौ तौ परिंडौ रीतौ। रसोई में गियौ तौ चूल्हा में वासदी री निराग ई नीं। —फुलवाड़ी

उ०—२ कोई सुणियौ तौ माजना में कित्ती धूड़ घालैला—महाजन री रसोई में लोई रा छांटा। थांनै कीकर नींद आवै अर कीकर भूख लागै। —फुलवाड़ी

३ देव मन्दिर, मठ या किसी ब्राह्मण को दी जाने वाली, आटा, दाल, घृत आदि भोजन सामग्री।

उ०—ताहरां वांभण रसोई मांगै। द्यौ। ताहरां कहै माता, रसोई देसुं। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

रू० भे०—रसोड, रसोय। अल्पा. रसोड़ी, रसोड़ी।

रसोईखांनौ, रसोईघर—सं. पु.—वह कक्ष या स्थान जहां भोजन पकाया जाता है। पाकशाला।

रसोईदार—सं. पु. [राज. रसोई+फा. दार]१ भोजन या खाना वनाने के लिये नियुक्त व्यक्ति, वावर्ची।

उ०—सु कमाल दी नै कमाल दी री वैर इणांनूं छांना राखै। आपरा छोरूवां सूं उपरंत किया राखै छै। इणां रै रसोईदार वांभण २ जुदा जुदा राखिया छै। —नैणसी

२ विशेष प्रकार का भोजन वनाने वाला कारीगर, पाक शास्त्री।

रसोईदारी—सं. स्त्री.—१ व्यवसायिक रूप से भोजन वनाने का कार्य।

२ वावर्ची के रूप में की जाने वाली नौकरी।

रसोईवरदार—सं. पु. [राज. रसोई+फा. वरदार] खाना लेजाने वाला व्यक्ति।

रसोईयौ—देखो 'रसोइयौ' (रू. भे)

उ०—वार वार रा कारीगर रसोईया थमालिया। —दसदोख

रसोड़दार—देखो 'रसोईदार'

उ०—तिण समै रसोड़दार अरज कराई रसोड़ी तयार हुवौ छै। —राव रिणमल री वात

रसोड़ी–देखो 'रसोई' (अल्पा., रू. भे.)

रसोड़ो–सं. पु. [राज.] १ पका हुआ खाना, भोजन।

उ०—१ तिण समै रसोड़दार अरज कराई रसोड़ो तयार हुवौ छै।
—राव रिणमल री वात

उ०—२ मिळतां रांण घरे महाराजा, ऊछव प्रगटै मिटै अकाजा।
जिमी वस्त नित अन्नत जोड़ां, राजै नव नव भांत रसोड़ां।
—रा. रू.

२ भोजन सामग्री, खाद्य सामग्री।

उ०—अर सीम रसोड़ा आरंभे, भल कजाक घोड़ां भड़ां। अरि सांत अकव्वर ऊपरै, इसी भांत ऊरव्वड़ां। —रा. रू.

३ पाकशाला, रसोईघर।

उ०—१ सीकरि का धणी सों भूमि दौलतवांन सैंठा। सो भी मेवसिंघ जी कै रसोड़ै आंगणि वैठा। —शि. वं.

उ०—२ रसोड़ै वैठोड़ा बुजीसा वरजिया, मत जाओ जाया लड़ाई री लार ए, अन्नदाता भगड़े जूं जिया। —लो. गी.

रू० भे०–रओड़ो, रसड़ो, रसोवड़, रसोवड़ो, रसौडो, रहोड़ो, रहोड़ो।

रसोत–देखो 'रसौत' (रू. भे.)

रसोन–सं. पु. [सं.] लहसुन।

उ०—रसोना दी गादी विलम नरमादी हित रुच्यो। लग्यो स्वादी स्वादी उपक्रत प्रमादी नंहि लग्यो। —ऊ. का.

रसोपल–सं. पु. [सं.] मोती।

रसोय–देखो 'रसोई' (रू. भे.)

रसोयोईस–सं. पु. [राज. रसोई+सं. ईश] पाकशाला का अधिकारी, जो पाकशाला के कार्य की देख रेख करता है। रसोई दारोगा।
(डिं. को.)

रसोली–सं. स्त्री.–१ घोड़ों का एक रोग विशेष, जिसके कारण घोड़े के बगल में या पिछली टांग के टखने पर सूजन आजाती है या ग्रंथी हो जाती है।

२ कान में होने वाली एक फुंसी, फोड़ा।

३ आंख के ऊपर भोंहों के पास गिलटी निकलने का एक रोग।

४ शरीर के किसी अंग में उठने वाली ग्रंथी।

उ०—माई मभ्भनइ ऊपनी, एक असंभव व्याधि। रिदयडं रसोली विइ थइ, मन नहीं मोरि साधि। —मा. कां. प्र.

रू० भे०–रसौली।

रसोवड़, रसोवड़ो–देखो 'रसोड़ो' (रू. भे.)

उ०—१ एक दिन मरमल नूं कह्यो, "उठै तो दूध पावता अठै भूल गया।" तद अरज कीवी, "जो म्हैं जांणी, हमैं कुंवरजी धरै पधारिया छै। रसोवड़ै सूं आवतो हुमी।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ दूजै पण रसोवड़ै खवास कारखाने गंगाजळ वाळा सारा ही सूं हूं मिळूं छूं सो सगळा कहै छै खुस वे खुस री ही कोई खबर नहीं। —नापै सांखले री वारता

उ०—३ तद केसरीसिंह रसोवड़ो करायो, जीमियो। इतरै में सहर रो लोग सोवणी करणै लाग्यो।
—राठोड़ अमरसिंह री वात

उ०—४ वने जी री खातर भात हे रंधावां, जीमण रे मिस आय रे राय रसोवड़े राय रसोवड़े। —लो. गी.

उ०—५ रसोवड़ां थाट भोजन रंधै, पण छतीस परकार रै। रात दिन थाट थड़िया रहै, जिकण 'पेम' जोधार रै। —पे. रू.

रसौंत–देखो 'रसौत' (रू. भे.)

रसौ–सं. पु. [सं. रस] १ गुड़, शक्कर या मिश्री का मीठा पानी, रस।

२ जूस, शोरवा।

३ देखो 'रस्सौ' (रू. भे.)

रसौड़ो–देखो 'रसोड़ो' (रू. भे.)

उ०—राजा रै रसौड़े गया। मोड़ा गया।
—कल्यांणसिंह वाढेल री वात

रसौत–सं. पु. [सं. रसोद्भूत] दारु-हल्दी की जड़ और लकड़ी को औटाकर और उसमें से निकले हुए रस को गाढा करके तैयार की जाने वाली एक प्रसिद्ध औषधि।

रू० भे०–रसोत।

रसौली–देखो 'रसोली' (रू. भे.)

रस्त–देखो 'रसद' (रू. भे.)

उ०—मास २ तोपां री वा वंदूकां री राड़ हुयबो करी। अरु रस्त वंध कर दीनी। तद जगरूपसिंह विहारीदास लखवेरां जोड्यां नूं रस्त पोहचावण रो कहायो। —द. दा.

रस्तागीर–देखो 'रास्तागीर' (रू. भे.)

उ०—नदी नाळां रे ऊपर पुळ वंधावै तिण सूं रस्तागीर सगळा आरांम उठावै सो घणो भलो कांम छै। —नी. प्र.

रस्तौ–देखो 'रास्तौ' (रू. भे.)

उ०—१ अरु लाख दोय पोठिया रेत सूं भराय नैं हलो कियो सू अठै वडो भगड़ो हुवो। ऊली-पैली हजारां लोक कांम आयो। आखर पोठयां खाई मैं नाख रस्तौ कियो। द. दा.

उ०—२ रस्ते में रस्ता खव्वा खस्ता, हस्ता खूब हिलंदा है। मसकरियां मांडै भड़वा भांडै, गुंडा वांध गछंदा है। —ऊ. का.

रस्म–१ देखो 'रसम' (रू. भे.)

२ देखो 'रस्मि' (रू. भे.) (नां. मा.)

रस्मि–सं. स्त्री. [सं. रश्मि] १ किरण, रश्मि।

२ आभा, कान्ति, दीप्ति।

३ प्रकाश।

४ वागडोर, लगाम।
५ रस्सी, डोरी।
६ अंकुस, चाबुक।
रू० भे०-रसम, रसमि, रसमी, रसम्म, रस्म।

रस्य-वि. [सं.] रसवाला, रसदार।
सं. पु.-१ खून, रक्त।
२ शरीर का मांस।
३ देखो 'रहस्य' (रू. भे.)

रस्स-देखो 'रस' (रू. भे.)
उ०—पियै पग रस्स ब्रहम्मा पूत। अम्रत्त सोरंभ घुटै अवधूत।
—ह. र.

रस्सण-देखो 'रसना' (रू. भे.)

रस्सम-देखो 'रसम' (रू. भे.)
उ०—जांणै वो न जायी जमदूत जाडे, पुरांणे अढारे कियौ बूम पाडै। रस्समैं समथ्थैं कह्यो सन्नमख्खे, ममंपाद गातां ग्रहे पारसख्खे। —ना. द.

रस्सी-सं. स्त्री. [सं. रसना, प्रा. रसणा] १ सूत, मूंज, सण आदि के रेसों को बट कर बनाई हुई डोरी। रज्जु। गुण।
रू० भे०-रसि।
२ देखो 'रसी' (रू. भे.)

रस्सौ-सं. पु. [सं. रसना, प्रा. रसणा] १ सूत, मूंज, सण आदि के रेसों या तंतुओं का बटा हुआ मोटा डोरा, रस्सा।
२ घोड़ों की एक बिमारी।
३ देखो 'रसौ' (रू. भे.)

रहंचणौ, रहंचबौ-देखो 'रहचणौ, रहचबौ' (रू. भे.)
उ०— करेवा देव तणा कोड कांम, रहंचै मांहि महाजळ रांम। महागिड़ पैस महाजळ मज्झ, किया तैं जुद्ध प्रथम्मी कज्ज।
—ह. र.

रहंचियोड़ौ-देखो 'रहचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रहंचियोड़ी)

रहंतणौ, रहंतबौ-क्रि. स.-संहार करना, मारना।
उ०—वीरम सु देपाळ वढंतौ, अणी चढै नह ऊ वहीयौ। राव राठोड़ां तणौ रहंतै, राव जोईयां रण रहीयौ। —दूदौ वारहठ

रहंतियोड़ौ-भू. का. कृ.-मरा हुआ, संहार किया हुआ।
(स्त्री. रहंतियोड़ी)

रहंम-देखो 'रहम' (रू. भे.)
उ०—खांना ऊपर खीजियौ, खूंदालम्म रहंम। राजा नूं जाळौर रौ, दीनौ साह हुकंम। —गु. रू. वं

रहंमांन-देखो 'रहमांन' (रू. भे.)

रह-सं. पु. [सं. रथ, प्रा. रह] १ रथ।
उ०—ताहरइ नयरि गो हरि वाली, देखि भूमि कटकिइ रह वाली। धाउ उत्तर नराधिप आगइ, ताहरं भलूं रूप सु लागइ।
—सालिभद्र सूरि
२ ऐकान्त।
३ प्रेम, मेल।
४ देखो 'राह' (रू. भे.)
उ०—गई रवि किरण ग्रहे थई गहमह, रह रह कोइ वह रहे रह। सुजु दुज पुरा नीसरै सूतौ, निसा पड़ी चालियौ नह।
—वेलि

रहकळौ-देखो 'रैकळौ' (रू. भे.)
उ०—१ तद रावजी ठहर सारा घोडा खोलिया सिलहखांनौ लियौ खरची लीवी। रहकळां री गाडी दस एक थी सो लीवी।
—नापै सांखले री वारता
उ०—२ इकां वेहलां रहकळां ऊपर बैसांणजै छै।
—रा. सा. सं.
उ०—३ कठठ जूट रहकळां जूट नाळियां जंबूरां। रथ वहलां रैवत्त, भार पडतल भरपूरां। —सू. प्र.
उ०—४ भिड़ज जूथ विजई भाराथं, सहंस अठार रहकळां साथं।
—सू. प्र.

रहक्कणौ, रहक्कबौ-क्रि. स.-गाया जाना, गाना।
उ०—केई ढोल कंसाळ, धरा ब्रहमंड धड़क्कै। सुरणायं सालुळं, राग सींधूओ रहक्कै। —पी. ग्रं.

रहक्कियोड़ौ-भू. का. कृ.-गाया हुआ।
(स्त्री. रहक्कियोड़ी)

रहड़णौ, रहड़बौ-क्रि. स.-१ लूट-मार करना, लूटना।
२ जीतना, अधिकार में करना।
उ०—आहंचि मीर आगरइ आइ, रहड़िया देस वाजा रुड़ाइ। पहिलउ खड़गि चाढिय पठांण, आगरइ वयांनइ फेरि आंण।
—रा. ज. सी.

रहड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.-१ लूट मार किया हुआ, लूटा हुआ. २ अधिकृत किय हुआ, जीता हुआ।
(स्त्री. रहड़ियोड़ी)

रहड़ू-देखो 'रहडू' (रू. भे.)
उ०—सेलां रा घमोड़ा पड़ै छै। सेलां रा फळ सूरां रै मोरै भांजि भांजि रहिआ छै। सूरां रै मोरै भूखा वाग ज्यों असवार नै घोड़ौ आफळि रहिआ छै। सूअरां री सिकार मांणीजै छै। एकल ढाहिजै छै। रहड़ू मंगाइजै छै। रहड़ू घाति घाति नै चलता कीजै छै। —रा. सा. सं.

रहच-देखो 'रहचण' (रू. भे.)
उ०—घाइ घांण उतरै, खांन सुरतांण निघट्टा। राव रांण हुइ

रहच, मीर उमराव अहट्टा। —गु. रू. वं.

रहचक–सं. पु.–युद्ध, लड़ाई।

उ०—तड़ां अन तड़ां सीसोद कीधां तंडळ, रहचकां रांण सुरतांण रीधां। सिंधुरां पड़ाउ लियण बंध मेहुरां, देहुरां देहुरां चाढ दीधां।
—उम्मेदसिंह सिसोदिया रौ गीत

रू० भे०–रहच्चक, रहच्चक्क।

रहचट–सं. स्त्री.–तेज दौड़।

रहचण–सं. स्त्री.–१ संहार, नाश।

२ कष्ट, दुख, विपत्ति।

वि.–मारने वाला, संहार करने वाला।

रू० भे०–रहच्चण।

रहचणौ, रहचबौ–क्रि. स.–१ संहार करना, मार काट करना, मारना।

उ०—१ अजड मेवाड़ रायजीप 'मालव' तणा, तुरक दळ रहचिया रायमल तीर। असर घड तोड ओहाल मुंह ऊतरे, नदी नदियां मिळै रातड़ो नीर। —महाराणा रायमल्ल रौ गीत

उ०—२ रांवण कूंभ मेघ खर रहचै, कथ सौ वेद पुरांण कही। वगसी भूपां भूप वभीखण, सरणागत हित लंक सही।
—र. ज. प्र.

२ पराजित करना, हराना।

उ०—तवल वाज गजराज सकबंध अकबर तणा, रहचिया मीर हालै रंढाळै। —नैणसी।

३ वीरगति प्राप्त होना, मरना, जूझना।

उ०—रिण रहचिया म रोय, रोए रिण छाडै गया। इण घर तौ आगा लगै, मरणै मंगळ होय।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

रहचण हार, हारौ (हारी), रहचणियौ —वि.।

रहचिओड़ौ, रहचियोड़ौ, रहच्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रहचीजणौ, रहचीजबौ —कर्म वा.।

रहंचणौ, रहचबौ, रहच्चणौ, रहच्चबौ, रहिचणौ, रहिचबौ
—रू. भे.।

रहचाणौ, रहचावौ–क्रि. स. ['रहचणौ' क्रि. का. प्रे. रू.] १ संहार कराना, मार काट कराना, मरवाना।

२ पराजित कराना, हरवाना।

३ वीर गति प्राप्त कराना।

रहचाणहार, हारौ (हारी), रहचाणियौ —वि.।

रहचायोड़ौ —भू. का. कृ.।

रहचाईजणौ, रहचाईजबौ —कर्म वा.।

रहचावणौ, रहचाववौ —रू. भे.।

रहचायोड़ौ–भू. का. कृ.–१ संहार कराया हुआ, मार काट कराया हुआ, मरवाया हुआ. २ पराजित कराया हुआ, हराया हुआ. ३ वीर गति प्राप्त कराया हुआ।

(स्त्री, रहचायोड़ी)

रहचावणौ, रहचाववौ–देखो 'रहचाणौ, रहचावौ (रू. भे.)

रहचावणहार, हारौ (हारी), रहचावणियौ —वि.।

रहचाविओड़ौ, रहचावियोड़ौ, रहचाव्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रहचावीजणौ, रहचावीजवौ —कर्म वा.।

रहचावियोड़ौ–देखो 'रहचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रहचावियोड़ी)

रहचियोड़ौ–भू. का. कृ–१ संहार किया हुआ, मारा हुआ. २ पराजित किया हुआ. ३ वीरगति प्राप्त हुवा हुआ।

(स्त्री. रहचियोड़ी)

रहच्चक, रहच्चक्क–देखो 'रहचक' (रू. भे.)

उ०—हजारां गुड़ै वीछुड़ै एक होदां। रहच्चक्क मानौ छुटै तक्क रौदां। — रा. रू.

रहच्चण–देखो 'रहचण' (रू. भे.)

रहच्चणौ, रहच्चबौ–देखो 'रहचणौ, रहचबौ (रू. भे.)

उ०—१ मरोड़ै गजां कंध ओड़ै मरट्ट, रहच्चै जिसा सिंघ मुक्की रवट्ट। कुसीसै गुणं ओसटंकी कवांणं, वळी भीम वत्थां कळी पत्थ बांण। —वचनिका

उ०—२ महा दिय मांन करी गुह मीत, तारै सह कीर कुटुंब सहीत। करै कपि मित्र सुग्रीव सुकाज। रहच्चै वालि दियौ कपि राज। —ह. र.

रहच्चणहार, हारौ (हारी), रहच्चणियौ —वि.।

रहच्चिओड़ौ, रहच्चियोड़ौ, रहच्च्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रहच्चीजणौ, रहच्चीजवौ —कर्म वा.।

रहच्चियोड़ौ–देखो 'रहचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रहचियोड़ी)

रहछह–सं. स्त्री. महफिल, गोष्ठी।

उ०—१ गोठ री तयारी कीवी। अमलां री रह-छह मंडी छै। भूरी, मेवती, काळी, किसनागर, आगराई, मरोडी, मुहरतोली लाभै तिण भांत री केसरियौ, पीतां घोळियौ, मनुहारां हुवै छै।
—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ सिकार चढती वगत अमलां री रह-छह मंडी। मनुहारां माथै मनुहारां होवण ढूकी। —फुलवाड़ी

रहट–देखो 'अरट' (रू. भे.)

उ०—१ भव २ भमते पार न पायौ, मोह रहट की माला। पावु ग्यांनी तो अब पूछुं, कब यह मिटय कसाला। —ध. व. ग्रं.

रहडू, रहडूओ–सं. पु.–एक प्रकार की गाड़ी जिसमें भार लादा जाता है, शकट।

उ०—१ फौजां आगै आतस चालै छै। जबरजंग नाळि, किलकिला

नालि, जंबूरनाळ, गजनाळ, हथनाळ, सुतरनाळ, कुहकवांण, रांम चंगी कई भांति भांति रा आराबा रहडूए घाती आवै छै।

—रा. सा. सं.

उ०—२ बैलों को शिक्षित करने हेतु बनाया गया गाड़ी नुमा छोटा वाहन।

रू० भे०—रहड़, रैडू

रहडण—वि.—रोकने वाला, अवरुद्ध करने वाला।

उ०—राव राय रखपाळ, राव रहडण रिम राहां। राव कुरूप हराय, राव वैरी पतसाहां। —नैणसी

रहडणौ, रहडबौ—क्रि. स.—१ रोकना, अवरुद्ध करना।

२ नाश करना, तहसनहस करना।

रहण—सं. पु.—घर, गृह, आवास। (अ. मा.)

वि०—१ रहने वाला।

२ देखो 'रहणी' (रू. भे.)

उ०—१ रवाई गढ, पांणी गढ, कटक तणउं गढ, वयरीप्रवेस नहीं, हाथियां तणा ढोवा नहीं, पाखरिया रहण नहीं। —व. स.

उ०—२ पाधारिसिउ म रांनि वारण वति पुरि रहण करउ। ताय तणइ बहुमांनि हुं आराधिसु तुम्ह पय।

—सालिभद्र सूरि

रहणाक—सं. पु.—गृह, सदन, घर। (ह. नां. मा.)

रहणि—देखो 'रहणी' (रू. भे.)

उ०—दादू रहणि कबीर की, कठिन विसय यहु चाल। अधर एक सौ मिळ रह्या, जहां न झंपै काळ। —दादूवांणी

रहणी—सं. स्त्री. [सं. रह्] १ रहने की क्रिया या भाव।

२ रहने का ढंग, तौर-तरीका, चाल-ढाल, रहन-सहन।

उ०—रहणी में जोगेस्वर वहणी में जगदीस। ग्रहणी में सिवनेत्र महणी में अहीस। —रा. रू.

३ जीवन निर्वाह, व्यवहार, आचरण।

उ०—लूणीए फसले लाग देखी करी, राख्या आपणइ पासोजी। रूड़ी रहणी देखी रंजिया, सहु को कहइ सावासी जी। —स. कु.

४ किसी विशेष सिद्धान्त या साधना को अपने जीवन में व्यावहारिक रूप देते हुए किया जाने वाला जीवन निर्वाह। शुद्ध आचरण, मर्यादित जीवन।

उ०—१ कहणी प्रभु रीझे न कछु, रहणी रीझै रांम। सुपने की सी म्होर सूं, कोडी सरे न कांम। —ऊ. का.

उ०—२ कथि कथि कहणी अगम की, रहणी रह्या न जाय। हरीया भेद विचार विन, लूण लखण नहीं काय। —अनुभववांणी

उ०—३ उत्क्रस्टी रहणी रहइ रिखि रूड़उ रे, साधतउ मुगति नउ पंथ रिखीसर रूड़उ रे। —स. कु.

५ आवास, निवास, ठहराव, विश्राम।

६ निष्ठा, श्रद्धा।

रू० भे०—रहण, रहणि, रहिणि, रहिणी रैंणी।

रहणौ, रहबौ—क्रि. अ. [स. रह प्रा. रहट] १ विना किसी परिवर्तन के एक ही स्थिति में अवस्थान करना, रहना, एक रंग या समरस अवस्था में होना।

उ०—१ भजन करै याकौ वड भागी, भजै नहिं सो महा अभागी। लेवन लगन परम पद लागी। रात दिवस रहियै अनुरागी।

—ऊ. का.

उ०—२ जिम भविक रहइ सुतीरथ नइ दरसनि दातार रहइ मत्याभनइ संगमि......सुसिस्य रहइं सद्गुरुनइ संयोगि —व. स.

२ कहीं ठहरना, टिकना, विश्राम करना।

उ०—१ मइं घोड़ा वेच्या घणा, रहियउ मास चियारि। राति दिवस ढोलइ कन्हइ, रहतउ राज दुवारि। —ढो. मा.

उ०—२ वात सुणी पाछउ वलइ जां नवि देखइ गंग। चउवीसं [वासं] रहइ जिमु रइहीणु [अणंगु]। —सालिभद्र सूरि

उ०—३ कुळ न्यात हीण फीटा कुटळ, जिकै विगाड़ जात रा। मम सैंण वात सुणज्यो, मती रहण न दीज्यो रात रा।—ऊ. का.

३ चलते हुए का रुकना, जाते हुए का ठहरना।

उ०—१ वयणे माळवणी-तणइ, रहियउ साल्ह कुमार। प्रेमइ बंध्यउ प्री रहइ, जउ प्री चालणहार। —ढो. मा.

उ० २ सासू वहूय न चालइ पाउ, ऊभउ न रहइ जूठिलु राउ। माडी बोलइ सांभलि भीम, केती भुइं वयरी नी सीम।

—सालिभद्र सूरि

४ किसी क्रम का चलना बंद होना, रुकना।

उ०—पिड़ जुड़वा भड़ पांच सौ, रहिया अडिग अरेस। कमंध सजूझा कांम छळ, दूजा आया देस। —रा. रू.

५ निवास करना, वसना।

उ०—१ आडा डूंगर भुइ घणी सज्जण रहइ विदेस। मांगी-तांगी पंखुड़ी, केती वार लहेस। —ढो. मा.

उ०—२ राय वीहंतइ तीणइं अवसरि दीधी तास चपेट। मभि घरि म रहिसी रे तूं लंपट पुरु हुंस पूरिउं पेट। —हीराणंद सूरी

उ०—३ घर में समझ्या घर रहौ, वन समझ्या वन मांहि। हरिया घर वन समझिकै, बोलण कु कुछ नांहि —अनुभववांणी

६ मौजूद होना, वर्त्तमान होना, विद्यमान रहना।

उ०—१ जितै 'जसौ' पह जीवियौ, थिर रहिया सुरथांण। आंगळ ही 'अवरंग' सूं, पड़ियौ नह पाखांण। —वां. दा.

उ०—२ पछइ एह लक्ष्मी रहइ जउ वलतउ उपकार न कीजइं तउ कृतघ्न हुईइ...... —व. स.

उ०—३ हउं गाइ वाली कुरुराय जाउं, वहइ जिकौ भूतलि वीरनांमउं। रहु मु मूं आगलि लेइ वांण, दाखउं जिसिइं युद्ध तणूं प्रमांण। —सालि सूरि

उ०—४ करणी कीरतवंत री, रैणा अंत रहंत। सब दांनां रौ सेहरौ, कीरत दांन कहंत। —ऊ. का.

७ स्थित होना, स्थापित होना, स्थिर होना। पाबंद होना।

उ०—१ अवलंबि सखी कर पगि पगि ऊभी, रहती मद वहती रमणि। लाज लोह लंगरै लगाए, गय जिम आंणी गयगमणि —वेलि

उ०—२ तुझ रणांगणि कारणि कवण हुउ, नृपति तेडी आगलि हूं रहिउं। कहिकि द्रोण कि भसिम कि करण कइ, समरि हौ हिव तेडउं कइ सेवउ। —सालि सूरि

८ किसी आधार या सहारे पर अवस्थित रहना, आधारित रहना।

उ०—वार वार वाखांणवै, सर 'प्रताप' संसार। सको रहै धर आसरै, आ धर तो आधार। —जैनदांन बारहठ

९ किसी अवस्था या स्थिति विशेष में होना।

उ०—१ सालूरा पांणी विना रहइ विलक्खा जेम। ढाढी साहिब सूं कहइ, मो मन तो विण एम। —ढो. मा.

उ०—२ मन तन परमांनंद में, मानंद रह्यौ सदीव। मात सुखी संसार में, 'जसवंत' समौ न जीव। —ऊ. का.

उ०—३ या भव जग में यूं रह्यौ, ज्यूं कवळा जळ पास। हरिया जहां मन राखियै, जुरा न जम का पास। —अनुभववांणी

१० सम्पर्क में आना, साथ रहना।

उ०—दासीजादा दे दगा, पास रहंता पूर। रीझै खीजै रावणा, दासी जादा दूर। —बां. दा.

११ जीवन यापन करना, जीवित रहना, जीना।

उ०—१ धरीया अवतारूं अत न पारूं, रहता एक रहंदा है। —अनुभववांणी

उ०—२ जहां पहलवां जीभ सूं, केकाउस कहियोह। अंतक केहर अगर औ, रुस्तम नह रहियोह। —बां. दा.

उ०—३ कोई कोमळ वसत्रे कोइ कंबळि। जण भारियौ रहंति जगि। —वेलि

१२ बचना, शेष रहना।

उ०—मोताहळ रहसी नहीं, हैवर हीर चमीर। जेहलिया जांतां जुगां, वातां रहसी वीर। —बां. दा.

१३ छूट जाना, रह जाना। पीछे रह जाना।

उ०—२ जन हरीया निरकार कुं, भजि पुंहते भौ पार। से आसै आकार कै, रहिगै ऊलै वार। —अनुभववांणी

१४ काम पर लगना, नौकर होना।

ज्यूं—वौ कारखांना में रह गयौ।

१५ चुपचाप समय बिताना, शान्त रहना।

उ०—१ मेछां राह निभाह कज, दिल्ली औरंग साह। ज्यूं सांमंद्र मजाद सूं, यूं रहियौ खम दाह। —रा. रू.

उ०—२ महि मोरां मंडव करइ, मनमथ अंगि नमाइ। हूं एकलड़ी किम रहउं, मेह पधारउ माइ। —ढो. मा.

१६ किसी कार्य में लगा रहना, संलग्न होना।

उ०—१ जुध दिल्ली रहिया जुड़ै, 'रैणायर' 'रुघपत्त'। सिर रांणै दळ सज्झिया, 'औरंगसा' असपत्त। —रा. रू.

उ०—२ ज्यूं ए डूंगर समुहा, त्यूं जइ मज्जण हुंति। चंपावाड़ी भमर ज्यउं, नयण लगाइ रहंति। —ढो. मा.

उ०—३ सांवळि कांइ न सिरजियां, अंबर लागि रहंत। वाट चलंतां माल्ह प्रिव, ऊपर छांह करंत। —ढो. मा.

१७ होना।

उ०—१ सासू दादी सासुआं, राजी सयल रहंत। माजी नूं मीरां कहै, मोटा संत महंत। —बां. दा.

उ०—२ वैरे वेस न भर किये, मन मे रहौ सधीर। हरिया साहिब सा धणी, पारि उतारे तीर। —अनुभववांणी

उ०—३ प्रधांन मनोहर परिमत, सुभट स्रेणि, विनोदीयाना विनोद, साहस सो [वो] लांना समूह, उचित बोलानी ओलि, कला वतनी क्रीडा भूमि, कूबडांनी कोडि वांमणाना विनोद, पुण्यवंत रहइं प्रमोद, वयरीह विसाद, कवि ना कल्लोल, वादी नउ विवाद, वैदेसिक विलास। —व. स.

उ०—४ सोसइ मडरु महातपि आतपि रहइ गंभीर। मोह तणा जग बंधव बंध वछोडइ धीरु। —जयसेखर सूरि

रहणहार, हारौ (हारी), रहणियौ —वि.।

रहिओड़ौ, रहियोड़ौ, रह्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रहीजणौ, रहीजबौ —भाव वा.।

रंयणौ, रंयबौ, रहवणौ, रहवबौ, 'रे'णौ रे'बौ' —रू. भे.

रहत—देखो 'रहित' (रू. भे.)

उ०—१ विस्सा हाथ आवै नहीं, सिस्सा जीव रहत। जीव सहित ते योगसा, स्री जिन वांणी तहत। —जयवांणी

उ०—२ हरीया ऐसा को मिळै, चित चौथै विसरांम। ताप त्रिगुण सु रहत है, निज भगतां निहकांम। —अनुभववांणी

रहतिका—सं. स्त्री.—प्रथा, परम्परा, रीति रिवाज, रूढि।

उ०—काहूं के रस रहतिका, काहूं के रस कांम। काहूं के रस जोग का, हरिजन के रस रांम। —ह. पु. वां.

रहतौ—वि.—रहने वाला, न मिटने वाला, अमिट, अमर, स्थाई।

उ०—१ रहता सोई जांणीयै, रहता सूं मिळ जाय। हरीया रहता रांम विन, काळ घरासै आय। —अनुभववांणी

उ०—२ ऊ नांवज केवळ, वडे महाबळ, रोम रोम उचरंदा है। रहता सुं रहता, है निज तता, न्यारा हुय निरखदा है। —अनुभववांणी

रू० भे०–रहितौ।

रहन, रहनी–देखो 'रहणी' (रू. भे.)

उ०—१ रहन अनोखी रीति सहन स्वभाव सीधौ, कहन सुनन कथा यथा तौर तन के। —ऊ. का.

उ०—२ किन जायौ किन घर मैं आयौ, मोल लियौ अर जती कहायौ। कहा भयौ जे जती कहाई। रहनी एक रती नहीं राई।
—अनुभववांणी

रहम–सं. पु. [अ.] १ अनुग्रह, दया, कृपा।

उ०—विहद हदी रहम देस जमदूत दहलै। —केसोदास गाडण

रहमत, रहमति–सं. स्त्री. [अ. रहमत] दया, करुणा, कृपा, तरस।

उ०—१ पछै बादसाह नूं चाहीजै आमा प्रभू री कृपा री करै और हिम्मत रहमत रहीम री छै। —नी. प्र.

उ०—२ धारेला गुर धरम कुं, टारेला दुरमति। टारेला जम चोट कुं, तारेला रहमति। —अनुभववांणी

रहमदिल–वि. [अ.] दयावान, कृपा करने वाला। तरस खाने वाला।

रहमदिली–सं. स्त्री. [अ.] १ 'रहमदिल' होने की अवस्था या भाव। २ दया, करुणा, तरस।

रहमांण, रहमांन–वि. [अ. रहमान] दयालु, कृपालु, मेहरबांन।

उ०—काबिल कलांम कहियत करीम, रहमांन इलम रय्यत रहीम।
—ऊ. का.

सं. पु.–ईश्वर, परमात्मा, खुदा।

उ०—१ हरीया जुग विच नीदीयै, जा कुं भगति न भाय। से रत्ता रहमांण सुं, और न आवै दाय। —अनुभववांणी

उ०—२ हरीया हीदै बीच मैं, मुझि मिल्या रहमांन। पूरा लिख दिया पटा, खरच न खूटै खांन। —अनुभववांणी

उ०—३ दादू दिल अर वाह का सो अपना ईमान। सोई साबित राखिये, जहं देखै रहमांन। —दादूवांणी

रू० भे०–रहमांन, रहिमांण।

रहमांण-अंस–पु. [अ. रहमान+सं. अंश] ईश्वर का अंश, भगवान राम का अंश।

उ०—श्री सरसत गणपत नमसकार, दीजियै मुझ वर बुध उदार। अवसांण सिघ रहमांण, अंस वाखांण करूं न्रप भाणवंस।
—वि सं.

रहरह–अव्य. [अनु.] रुक-रुक कर।

उ०—गई रवि किरण ग्रहे थई गहमह, रह रह कोइ वह रहे रह। —वेलि

रहस–सं. पु.–रस, नून।

उ०—रहस मेहो राचियो, रगि धग विण सिर रीस। रखड़ी झळ न भू रसड़ी, सग सळंक न सळ सीस।
—रेवतसिंह भाटी

रहळ, रहल–सं. स्त्री. [अ.] १ पढते समय पुस्तक रखने का एक आधार जो लकड़ी की दो पट्टियों को क्रोस नुमा (X) जोड़ कर बनाया जाता है।

वि. वि.–इसमें दोनों पट्टियां बीच में से कैंची नुमा जुड़ी होती हैं, जिससे इसको खोला व समेटा जा सकता है।

२ कातिक मास में चलने वाली मंद-मंद व ठंडी-ठंडी पवन। ठण्डी हवा का एक हल्का सा झोंका। (नां. डि. को.)

उ०—ठंडी रहळ चलाई हे रांम। —लो. गी.

रू० भे०–रहळि, रहळी, रहिल, रैळ।

रहळि, रहळी–देखो 'रहळ' (रू. भे.)

उ०—अवरंग थाट झाट आछटिया, धड़ लूटिया भेळा धरण। वाळे हेम जिम वाहूडियो, रुक रहळि दे झीक रण।
—नाथौ सांदू

रहळू–वि.–खाली, रिक्त।

उ०—घर वसियौ घणा नेह, चीत न वसियौ चूंडरा। रेह सगै तौ रेह, रयणायर रहळू थयौ। —फैंफांणंद री वात

रहवइ–सं. पु. [सं. रथपति+प्रा. रहवइ] रथ में बैठने वाला, रथ पति।

उ०—चूरइ रहवइ नरक रोडि दंतूमलि डारइ। अरजुन पारवइ पंड कटकु हणतुं कुणु वारइ। —सालिभद्र सूरि

रहवणौ रहवबौ–देखो 'रहणौ, रहवौ' (रू. भे.)

उ०—आ उठै नायण रहै अर हीड़ा करै। रजपूतां तौ सीधौ मिठाई ले जाय देवै। इयै भांत रहवै। —चौबोली

रहवर–सं. पु.–१ सोलंकी वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति। २ उत्तम रथ, सुन्दर रथ।

उ०—हय गय रहवर जूजुवाए। लख चौरासी मदिर हुवाए।
—वृ. स्त.

रहवांण–देखो 'रहावण' (रू. भे.)

रहवाळ–सं. स्त्री. [फा. रहवार] घोड़े की एक चाल विशेष।

रू० भे०–रैवाळ।

रहवास–सं. पु.–१ रहने की क्रिया या भाव, निवास, विश्राम।

२ मकान, घर।

३ रहने का स्थान, निवास स्थान।

उ०—भरमल भहरो आप री रहवास रौ उठै कर राखियौ थौ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

४ विश्राम करने का स्थान।

उ०—इसी रहवास री जायगा देख नै कुंवरसी रो मन प्रसन्न हुवौ। —कुंवरसी सांखला री वारता

५ निजी महल, कमरा, कक्ष।

उ०—१ ताहरां कुंवर तो अठा सों ऊठ अर आपरै रहवास आयौ पण उदास वहोत हुग्रो। —नैणसी

उ०—२ तद भरमल री रहवास रै एक खिड़की कराई। —कुंवरसी सांखला री वारता

६ अन्तःपुर, रनिवास।

उ०—१ तठै रांणी देखवै सखी नूं कह्यौ—तुं जाइनै कहि, रांणी रहवास रै चहवचै मांहे डूबी। अर रांणी तौ आप री कोटड़ी मांहे छिप रही छै अर महेली जाय कही, राज, रांणीजी तौ रहवास रै चहवचै मांहे डूवा। —बूढी ठग राजा री वात

उ०—२ आदर ग्रत खित ऊठियौ, प्रथम सुता परवार। असवारी रा ऊघरा, ग्रस बाढिया अपार। घड़च कनातां घार सूं, गौ रहवास मझार, नूरमली लख ल्हामते, मौर झली तरवार। —रा. रू.

रू० भे०—रइवास, रहवासि, रहवासी, रहास, रेवास, रैवास।

रहवासि, रहवासी—सं. पु.—१ रहने वाला, निवासी।

२ देखो 'रहवास' (रू. भे.)

उ०—साह गयौ दरगाह सूं, निज रहवासि अनेह। हितकर बोलाया हितू, गौसल अंतर गेह। —रा. रू.

रहस—१ देखो 'रहसि' (रू. भे.)

२ देखो 'रहस्य' (रू. भे.)

उ०—१ गुनी गुन गायौ जस छायौ या जहांन बीच, चार को उधार चाह्यौ रहस रचायौ तें। —ऊ. का.

उ०—२ पढवौ वेद पुरांण, सोरौ इण संसार में। वातां तणा विनांण, रहस दुहेलौ राजिया। —किरपारांम

रू० भे०—रहसि, रहस्स, रहस्सि।

रहसणौ, रहसबौ—देखो 'रहचणौ, रहचवौ' (रू. भे.)

उ०—'पेम' 'मोहकम' 'अजन' 'लाल' मोटै परव, 'नवळ' 'ऊदौ' 'जगौ' 'जैत' हरनाथ। 'भोमसी' 'बाहदर' 'कसौरौ' खी······भड, सांम छळ रहसीया नहसीया साथ। —सतीदांन वारहठ

रहसि—पु. [सं. रहस्] १ संभोग, मैथुन, केलिरस्।

उ०—१ रमतां जगदीसर तणी रहसि रस, मिथ्या वयण न तासु महे। सरसै रुखमणि तणी सहचरी, कहिया मूं मैं तेम कहे। —वेलि

उ०—२ स्रोण भील कम कर्म, किये करिमरां चडाए। रचे सेज रिण— भोम, कुसम अरि कमळ विछाए। नक्ख तिक्ख सरकूंत, सहै अन-मंघ अचग्गळ। पांण पयोहर कठण, मथै मैंगळ कुंभायळ। विपरीत रहसि, वीरारस हि, रण दूभळ हुइ रठुवड। सूतौ संग्रांम करि स्रोण हर, भूप मांण संग्रांम घड़। —गु. रू. वं.

२ रहस्य, भेद।

रू० भे०—रहस, रहस्सी।

रहसियोड़ौ—देखो 'रहचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रहसियोड़ी)

रहस्य—सं. पु. [सं.] १ गुप्त भेद, गुप्त सूचना।

उ०—प्राणांत पहुमि परिणाम यस्य, रट्ठोर सकळ संवत रहस्य। हस्ताक्षर हेरहु हिय हुलास, दुरद्धर दुरुहरु 'दुरग्गदास'। —ऊ. का.

२ किसी विषय में होने वाला वह सूक्ष्म अर्थ जो सर्व साधारण के समझ में नहीं आता है। गूढार्थ।

उ०—जो आगे चौरासी वंध रूपका के सब भेद नवरस अलंकार संजुगति ऐतौ सब ही सुणवे में आया। पै एक खट-भाखा की जुदी जुदी रहस्य तौ कहां कहां किसी किसी कवीसुर पास दरसाई। —सू. प्र.

३ मर्म या भेद की बात, गूढ बात।

४ गोपनीय विषय, गोपनीय सिद्धान्त।

५ ईश्वर एवं सृष्टि से सम्बन्धित गुप्त बातें जो ज्ञान चक्षु एवं साधना से जानी जा सकती है। (अध्यात्मवाद)

६ एक तांत्रिक प्रयोग।

रू० भे०—रवस, रस्य, रहस, रहस्स, रहिस।

रहस्यमंदिर—सं. पु. [सं. रहस्+मंदिरं] केलिगृह, रतिक्रीड़ा-गृह, रंग-महल।

उ०—सखीयां आगै जाय केलिग्रह कहतां रहस्यमंदिर सयन मंदिर तिहिकौ अंगण मारजण कहतां संवारयौ। —वेलि टी.

रहस्स—१ देखो 'रहस्य' (रू. भे.)

२ देखो 'रहसि' (रू. भे.)

रहस्सी—१ देखो 'रहस्य' (रू. भे.)

२ देखो 'रहसि' (रू. भे.)

रहां—देखो 'रहा' (रू. भे.)

रहांण—सं. पु.—१ गांव या मोहल्ले का वह स्थान जहां पर लोग गपशप करने के लिए एकत्रित होते हैं। अथाई, बैठक।

उ०—हिमै रतना चीता रौ गांव। विखै रहांण सारीखौ। —नैणसी

रू० भे०—रयांण।

२ देखो 'रहणी' (रू. भे.)

रहा—सं. स्त्री.—कान, श्रवण।

रू० भे०—रहां।

रहाड़णौ, रहाड़बौ—देखो 'रहाणौ, रहावौ' (रू. भे.)

उ०—१ ऐ दूहा मैं आखिया, रस नीत रौ रहाड़। सभा भरी मझ सांभळै, चिड़ै जिको हिज चाड़। —वां. दा.

उ०—२ जे कलभ क्रीडिउ निरमल नरमदा जलि, तेह कूपिका

जनि किम पूजइ भलि, जउ असभ चरिउ हुइ इक्षुवाडि, तसु रगणि किम पूजइ रहाड़ि, जेहे पीयउ हुइ इक्षुरस, तीहं किम भावइ लीवरस, जीहं हुइं दूध पासि, तीह किम भावइ लींव रम, जीहं हुइं दूध पासि, तीहं किम भावइ छासि''' ।

—व. स.

रहाड़णहार, हारो (हारी), रहाड़णियो —वि. ।

रहाड़िग्रोड़ो, रहाड़ियोड़ो, रहाड़्योड़ो —भू. का. कृ. ।

रहाड़ीजणो, रहाड़ीजबो —कर्म वा. ।

रहाड़ियोड़ो—देखो 'रहायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. रहाड़ियोड़ी)

रहाणो, रहावोह—क्रि. स. ['रहणो' क्रिया का प्रे. रू.] १ बिना किसी परिवर्त्तन के एक ही स्थिति में अवस्थान कराना, एक रस या समरस अवस्था में कराना ।

२ अस्थाई रूप से कहीं ठहराना, टिकाना, विश्राम कराना ।

उ०—कमंध घड़ा पूरे किलवांणी, पड़ियो चाढ़ मुरद्धर पांणी । उण पर माह उदैपुर आयो, आजमसा चीत्तोड़ रहायो । —रा. रू.

३ चलते हुए को रोकना, जाते हुए को ठहराना ।

४ किसी क्रम का चलना वद कराना, करना । रोकाना, रोकना ।

५ निवास कराना, वसाना ।

उ०—गोरीसाह का खूनी हुसेन नागोर आया । मेरे दादे प्रथीराज प्रांण ज्यां रहाया । —रा. रू.

६ मौजूद करना, उपस्थित करना, विद्यमान रखना ।

७ स्थित, स्थापित या स्थिर करना, पाबंद करना ।

८ किसी आधार या सहारे पर अवस्थित रखना, आधारित रखना

९ किसी अवस्था या स्थिति विशेष में करना ।

१० सम्पर्क में लाना, साथ रखना ।

११ जीवन यापन कराना, जीवित रखना ।

१२ छोड़ देना, रख देना ।

१३ बचाना, शेष रखना ।

१४ काम पर लगाना, नौकर रखाना ।

१५ शांत व चुप-चाप रखना ।

१६ किसी कार्य मे लगा रखना, संलग्न या व्यस्त करना ।

१७ अधिकार में या अधीन रखना ।

उ०—नोपामेर किल्ला छोडि बारें कांम आया । किल्लो मैर दोनूं राव मेगा कै रहाया । —शि. वं.

१८ रखना ।

उ०—अळवा काज नरकी जादम, धुर ऊठी पतिवरत तणै ध्रम । रट हरि भुज पनि ग्यांन रहायो । मंजण कर सिणगार मंगायो ।

—रा. रू.

रहाणहार, हारो (हारी), रहाणियो —वि. ।

रहायोड़ो —भू. का. कृ. ।

रहाईजणो, रहाईजबो —कर्म वा. ।

रहाड़णो रहाड़बो, रहावणो, रहावबो —रू. भे. ।

रहायोड़ो—भू. का. कृ.—१ बिना किसी परिवर्तन के एक ही स्थिति में अवस्थान कराया हुआ, एक-रस या सम-रस अवस्था में किया हुआ. २ अस्थाई रूप से कहीं ठहराया हुआ, टिकाया हुआ, विश्राम कराया हुआ. ३ चलते हुए को रोका हुआ, जाते हुए को ठहराया हुआ. ४ किसी क्रम का चलना वंद किया हुआ, रोका हुआ. ५ निवास कराया हुआ, बसाया हुआ. ६ मौजूद किया हुआ, उपस्थित किया हुआ, विद्यमान रक्खा हुआ. ७ स्थित, स्थापित या स्थिर किया हुआ, पाबंद किया हुआ. ८ किसी आधार या सहारे पर अवस्थित रक्खा हुआ, आधारित रक्खा हुआ. ९ किसी अवस्था या स्थिति विशेष में किया हुआ. १० सम्पर्क में लाया हुआ, साथ रक्खा हुआ. ११ जीवन यापन कराया हुआ, जीवित रक्खा हुआ. १२ छोड़ा हुआ, रख दिया गया हुवा. १३ बचाया हुआ, शेष रक्खा हुआ. १४ काम पर लगाया हुआ, नौकर रक्खा हुआ. १५ शांत या चुप चाप रक्खा हुआ. १६ किसी कार्य में लगा कर रक्खा हुआ, संलग्न या व्यस्त किया हुआ. १७ अधिकार में या अधीन रक्खा हुआ. १८ रक्खा हुआ ।

(स्त्री. रहायोड़ी)

रहावण—सं. स्त्री.—१ रहने की क्रिया या भाव ।

२ रहने का ढंग, तरीका ।

३ सभा, बैठक ।

वि.—१ रहने वाला/वाली, रहने योग्य ।

उ०—कीध तें तिका राव-रांण जांणै कमध, रहावण वात सिर दुवै राहां । जसा-अखियात ऐ साहि सूं जूटतां, सार वळि लूटतां पातिसाहां । —जसवंतसिंह राठौड़ री गीत

२ रखने वाला ।

उ०—गढ जाळंधर राखियो, भंडारी मनरूप । अनमी त्यां नांमण डळा, भोमि रहावण भूप । —रा. रू.

रू० भे०—रहवांण ।

रहावणो—वि.—रखने वाला ।

उ०—रीति रहावणो जी, ऊंची आादरी कीरति कवि करै जी । पर भुंइ पस्सरी प्रघट प्राकमी जी, खत्रवट वपि खरी वासो खग वसै जी । —ल. पि.

रहावणो, रहावबो—देखो 'रहाणो, रहावो' (रू. भे.)

उ०—१ ईंदो इंद्र जिही पण आादर । सुर सुर धरम रहावण गंभर । मारो दळ भांजां पतसाही । नरां बखांण वाच निरवाही ।

—रा. रू.

उ०—२ जस गल्ह रहावण जे सहल, मडयळ भंजै मेहवर। 'गजमल्ल' 'मल्ल' 'गंगे' कुळी, रिण दुभल्ल रट्टौड-हर।
—गु. रू. बं.

उ०—३ कायथ करथ रहावणा सांम कांम ममराथ। काया त्यागी केहरी, नह दी माया नाथ।
—रा. रू.

रहावणहार, हारौ (हारी), रहावणियौ —वि.।
रहाविग्रोड़ौ, रहावियोड़ौ, रहाव्योड़ौ —भू. का. कृ.।
रहावीजणौ, रहावीजवौ —कर्म वा.।

रहावियोड़ौ–देखो 'रहायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री, रहावियोड़ी)

रहास–देखो 'रहवास' (रू. भे.)

उ०—वागो पं'रै, पाघ बांधै, मुद्रा लपेटी राखै, रजपूतां नै घोड़ा ऊंट वगसीस करै, नै मांहै तो कोइ जायै नहीं, वारै हीज रहास करायनै रह्यो। —जसड़ा मुखड़ा भाटी री वात

रहिचणौ, रहिचवौ–देखो 'रहचणौ, रहचवौ' (रू. भे.)

उ०—रामि जसहि रहिचीया पलंब वुसट गांपड़ियौ। मधुवन मां माहवा, लाग दैतां सूं लड़ियौ। —पी. ग्रं.

रहिचिग्रोड़ौ–देखो 'रहचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रहिचियोड़ी)

रहिणि, रहिणी–देखो 'रहणी' (रू. भे.)

उ०—एकणि रहिणि वही मति ग्रासति, सांमां मोह चंडावण साथ। विरिद उजाळ भाळ भुजाळ धजावंध, भूपति भेद लहै खट-भाख। —ल. पि.

रहित–वि. [सं.] १ हीन, विहीन।

उ०—भीखणजी स्वांमी वोल्या—तिम ए धोवण उन्हौ पांणी पीवै पिण समकित चरित्र रहित तिण सूं वणी वणाइ ग्राह्मणी रा साधी है। —भि. द्र.

२ वगैर, विना।
३ ग्रभाव पूर्ण, ग्रपूर्ण।
४ पृथक, ग्रलग, मुक्त।
५ त्यागा हुग्रा, त्यक्त, छोड़ा हुग्रा।
६ निर्जन।
७ ग्रकेला।
रू० भे०–रहत, रहिय।

रहितौ–देखो 'रहतौ' (रू. भे.)

रहिमांण–देखो 'रहमांण' (रू. भे.)

उ०—दईवांण सुरतांण दीवांण तूं हीज देवा, मांडिया मंडांण केई समंद मथांण। कुरवांण रहिमांण कुरांण पुरांण कहै, ग्रापरी कल्यांण दांण उग्रसेन ग्रांण। —पी. ग्रं.

रहिय–देखो 'रहित' (रू. भे.)

उ०—विरचइ विपिन विच क्षण तक्षण दस वि दसार। नव नव निरमल भूखण दूखण रहिय सिंगार।
—जयसेखर सूरि

रहियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ विना किसी परिवर्तन के, एक ही स्थिति में ग्रवस्थान किया हुग्रा, रहा हुग्रा, एक रस या सम रस ग्रवस्था में हुवा हुग्रा. २ ग्रस्थाई रूप से कहीं ठहरा हुग्रा, टिका हुग्रा, विश्राम किया हुग्रा. ३ चलने से रुका हुग्रा, जाने से ठहरा हुग्रा. ४ बंद हुवा हुग्रा, रुका हुग्रा। (क्रम) ५ निवास किया हुग्रा, वसा हुग्रा. ६ मौजूद हुवा हुग्रा, वर्तमान हुवा हुग्रा, विद्यमान रहा हुग्रा. ७ स्थित, स्थापित या स्थिर हुवा हुग्रा, पावंद हुवा हुग्रा. ८ किसी ग्राधार या सहारे पर ग्रवस्थित रहा हुग्रा, ग्राधारित रहा हुग्रा. ९ किसी ग्रवस्था या स्थिति विशेप में हुवा हुग्रा. १० सम्पर्क में ग्राया हुग्रा, साथ रहा हुग्रा. ११ जीवन यापन किया हुग्रा, जीवित रहा हुग्रा, जीया हुग्रा. १२ बचा हुग्रा, शेष रहा हुग्रा. १३ छूटा हुग्रा, रहा हुग्रा, पीछे रहा हुग्रा. १४ काम पर लगा हुग्रा, नौकर हुवा हुग्रा. १५ चुपचाप समय विताया हुग्रा, शान्त रहा हुग्रा. १६ किसी कार्य में संलग्न हुवा हुग्रा. १७ हुवा हुग्रा।
(स्त्री. रहियोड़ी)

रहिळ–देखो 'रहळ' (रू. भे.)

उ०—हेमंत रित लागी। सिसिर रित री रूक रहिळ वागी।
—रा. सा. सं.

रहिस–देखो 'रहस्य' (रू. भे.)

उ०—१ जद सुसलौ वोल्यौ–सैंहदी जागां छूटै नही। ज्यूं साची स्रद्धा री रहिस वेठी पिण ग्रागला सैंहदा कुगुरु त्यांरौ संग छोडै नहीं। —भि. द्र.

उ०—२ गढूं कोट्टूं पर ग्रमल रंग का चढाव तिस वखत रंग–राज के हीक (वै) रस रहिस की वात। ग्रमलूं का चढाव सोभा दरसात। —सू. प्र.

रहीम–सं. पु. [ग्र.] १ ईश्वर का एक नामान्तर, परमात्मा, खुदा।

उ०—एकादसी वरत हिंदवांणै, रोजा ईद भया तुरकांणै। करि करि ईद इग्यारसि रोजा, रांम रहीम न पाया खोजा।
—ग्रनुभववांणी

२ वादशाह ग्रकवर के दरवार के एक मंसवदार, ग्रब्दुल रहीम खानखाना का कविताई उपनाम।
वि. वि.–ये एक ग्रच्छे कवि थे। साहित्य जगत में ग्राज भी इनका नाम प्रमुख कवियों में गिना जाता है।
वि.–दयालु, कृपालु।

उ०—काविल कलांम कहियत करीम, रहमांन इलम रय्यत रहीम।
—ऊ. का.

रहीस–देखो 'रईस' (रू. भे.)

उ०—महिमा महीस तें सहीस लों सुनी है मुख। मारू धराधीस की रहीस सुन रीसे ना। —ऊ. का.

रहोड़ौ, रह्रोड़ौ–देखो 'रसोड़ौ' (रू. भे.)

रह्यौ-सह्यौ–वि. [अनु.] बचा-खुचा, रहा-सहा, अवशिष्ठ, शेप।

रां–देखो 'रा' (रू. भे.)

उ०—पछिमिसां आव तूं ल्याव पांडव प्रभू, महमहण ताहरा असंख मेळा। बांधिया कांइ वळिराउ रां वेलियां, भूघरा करौ पहिळाद भेळा। —पी. ग्रं.

रांइणि–देखो 'रांयण' (रू. भे.)

उ०—नीलां नारिंगां, रंगइ दीसतां सुरंगां, पाकी नीकोली रांइणि, प्रीसी भांडरिण, दाडिमनी कली, खातां पूजइ रली। —व. स.

रांक–वि. [सं. रंक] १ कायर, डरपोक, भीरु।

उ०—एक वीर तनु रोम उध्रसइं, एक रांक रिण मांहि नीसरइ हैय देव कुणि दुरमति दीधी, एउ ओळग अह्मे कांइं लीधी। —सालिभद्र सूरि

२ देखो 'रंक' (रू. भे.)

उ०—१ राजीया केई दीवांण रांक, सुर कोडि तीम सुर करै सांक। प्रणमंति नाग अनेक पीर, साहिवी नमौ सांमळ सरीर। —पी. ग्रं.

उ०—२ अगनि फूल, सती रौ नाळेर, काली रौ वेहड़ौ, रळीआरां रौ जोड़, रांकां रौ माळवौ, कुंआरी घड़ा रौ वींद। —रा. सा. सं.

रांकड़ौ–देखो 'रंक' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—काळप्या कोड़ि किनंक, लीला ही लाभै नहीं। मो रांकड़ै रतंन, दियौ दया करी देवजी। —वील्हौजी

रांकमुहा–सं. पु.–पंवार राजपूत वंश की एक शाखा।

रांकावत–स. पु.–ऋग्वेदी ब्राह्मणों की एक जाति जो साधु, स्वामि नाम से संबोधित की जाती है।

रांग–सं. स्त्री.–१ मकान, महल किले आदि की नींव।

उ०—१ पछै घणौ साथ राखियौ। घणा घोड़ा लिया। गढ घातण री रांग रोपाई। भीत हूंण लागी। —नैणसी

उ०—२ तळाव किलांणसागर रांणी हाडीजी नांम जसरंगदेजी हाडी माहाराज स्त्री जसवंतसिंघजी री रांणी बूंदी रा राव छतरसालजी री वेटी सं० १७२० रा वैसाख सुद १५ रांग मांडी नै सं. १७३० रा जेठ सुद प्रतसटा हुई। —मारवाड़ री ख्यात

२ दरार।

३ बबूल व वैर के वृक्ष की छाल, जो शराब बनाने तथा चमड़ा कमाने के काम आती है।

४ एक वृक्ष विशेष, वेर का वृक्ष।

उ०—१ रावण रांग रतांजणी, रवणी नइं रुद्राख। रूक रदंती रायसलि, रोहड़ रोहिणी लाख। —मा. कां. प्र.

उ०—२ रांमोड़ी नइं रासना, रीगिणि रुद्र-जटाय। रांग रतांजणि रुंमड़ी, रनि वनि रंग धराय। —मा. कां. प्र.

५ देखो 'रांन' (रू. भे.)

उ०—कंध कूकड़ वंक मुहा कवळा। उछळंत कुळांछि जिके अंवळा। अवलक्ख ऐराकी सग्गां अंजणी। रांग दावत नाचत मोर रणी। —मा. वचनिका

रांगड़–देखो 'रंघड़' (रू. भे.)

रांगड़ापण, रांगड़ापणौ–सं. पु.–वीरत्व, योद्धापन।

उ०—जांगियां ठोर सिंधु गावै जांगड़ा, नड़गा रण रांगड़ा वीर हलकै। भेर तण जठै पीघा अमल भांगड़ा, जो मरद रांगड़ापणौ भळकै। —माघोसिंह सक्तावत रौ गीत

रांगड़ौ–देखो 'रंघड़' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—साकुरां ऊपड़ी वागां हैकपै आलमां सारी, हणू मार लंक नै दिखाया भारी हाथ। वेढीगारां रांगड़ां यू घगारां वातां, नगारां वागतां गांम लूटिया निघाथ। —विसनसिंघ राठौड़ रौ गीत

रांगजड़–सं. स्त्री.–वेर वृक्ष की जड़। (शेखावाटी)

उ०—रळा रांगजड़ रंग, वणावै दारू देमां। मुळकत मन मतवाळ, कोटड़्यां हुवै हमेसां। —दमदेव

वि. वि.–यह औषध में भी काम आती है। (अमरत)

रांगटौ–देखो 'रूंगटौ' (रू. भे.)

रांगणवाय–सं. स्त्री. [सं. रिंग] एक प्रकार का वात रोग जिससे कमर, कूल्हों और टांग में दर्द होता है, गृध्रसी।

रू० भे०–रींगणवाव, रींघणवाव।

रांगरंगीलौ–देखो 'रंगरंगीलौ' (रू. भे.)

उ०—गुड्डी तेरी रांगरंगीली तकली चक्करदार। चोखौ वण्यौ दमड़कौ तेरौ, कूकड़िये रौ लार। —लो. गी.

(स्त्री. रांगरंगीली)

रांगलौ–वि.–रंगदार, रंगीन।

उ०—चरखौ तो ले ल्यूं भंवरजी रांगलौ जी, हां जी ढोला। पीढौ लाल गुलाल। —लो. गी.

रांगै–क्रि. वि.–१ सही रास्ते पर।

उ०—म्हें माळै ऊभी आं सगळां नै घणा ई वरजिया। किणी भाव नीं मांन्या तौ म्हें गोफण रा सटीड़ उडाया। दो असवारां रै ढिगली व्हियां पछै ऐ रांगै आया। —फुलवाड़ी

२ वश में, कावू में, प्रभाव में।

उ०—नांनी पोटाय पोटाय, बिलमाय-बिलमाय हार थाकी पण दस बरसां रौ बाळ-हठ रांगै नीं आयौ सो नी आयौ। —फुलवाड़ी

३ सामान्य दशा या अवस्था में, साधारण स्थिति में।

रांगो–सं. पु. [सं. रंग] श्वेत रंग की एक अत्यन्त मुलायम धातु जो बहुत चमकीली होती है और जिसकी बर्तनों पर कलई की जाती है।

रांघड़, रांघड़ौ–देखो 'रंघड़' (रू. भे.)

उ०—१ चसळकै दंत चरखी चलाय, गिज रया दिवांना भंग खाय। **रांघड़ा** थळी रा जूंग राज, गूंगला जोड रा करय गाज। —पे. रू.

उ०—२ टाव्या मिरदारां रा माथा देयां पछै ई थें चलाय नै बीड़ौ उठायौ। ऐ **रांघड़ां** रा कांम तौ रांघड़ां नै ई छाजै। —फुलवाड़ी

रांचणौ, रांचबौ–क्रि. अ.–१ खड़े खड़े तकना, लालायित होना। किसी को एक-टक देखते रहना।

उ०—पग तौ ममांणां लग पूगा अर हाल पातर रै घरै **रांचतौ** फिरै। —फुलवाड़ी

२ चोरी करने या हड़पने की दृष्टि मे ताकना, घात लगाना।

उ०—१ जार तणौ गुण जाय, रात पड़ै जद **रांचवा**। ठग कोई साधु थाय, माळा ग्रहियां 'मोतिया'। —रायसिंह सांदू

उ०—२ दूसरां जेम नह **रांचियौ** देख नै, अरस रौ खांचियौ थकौ आयौ। लांघड़ौ कपी ज्यूं रांम लायौ लड़ै, लड़ै जिम 'जुहारौ' भ्रात लायौ। —बुधजी आसियौ

उ०—३ दातार है जिण सूं धन नहीं धन विनां मैहल वणै नहीं सूरवीर पणा सूं धन री कुमी नहीं जिण सूं धाड़ायत **रांचीया** नै खाणार पीणार जिण सूं धन जमै होवै नहीं तद ऐवास वणै नहीं। —वी. स. टी.

३ किसी बात का ध्यान देना, ध्यान रखना।

उ०—सह **रांचै** जन सादियां, मत वहरौ कर मांन। कीड़ी पग नेवर भणक, भणक सुणै भगवांन। —र. ज. प्र.

४ देखो 'राचणौ, राचबौ' (रू. भे.)

रांचणहार, हारौ (हारी), रांचणियौ —वि.।

रांचिओड़ौ, रांचियोड़, रांच्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रांचीजणौ, रांचीजबौ —भाव वा.।

रांचियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ खड़े खड़े तका हुआ, लालायित हुवा हुआ, किसी को एक टक देखा हुआ. २ चोरी करने या हड़पने की दृष्टि से ताका हुआ, घात लगाया हुआ. ३ किसी बात का ध्यान दिया हुआ, ध्यान रक्खा हुआ।

४ देखो 'राचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रांचियोड़ी)

रांझट–सं. स्त्री.–तकरार, विवाद, झंझट।

उ०—'मां'राज ! वारांना में जचा'र आठांना कियां देवौ हौ।' क्या कैवूं ? म्हारी डोकरी गोरमिटी इयैं ऊपर म्हारी जोर को चालै नीं।' डोकरी बोली—नाखै कनी रांड रा, क्यूं **रांझट** करै है ? —वरसगांठ।

रांझौ–सं. पु.–१ समस्या, उलझन।

उ०—पुटियौ तो लियां दियां वैठो हौ। कैवण लागौ—ऐड़ौ एक कावळ **रांझौ** पड़ग्यौ। सात समंदरां पार लोग इण वात री लेखौ लेवण सारू भेळा व्हिया के दुनिया में मिनख घणा है के लुगायां घणी। —फुलवाड़ी

२ व्यवधान, विघ्न, अड़चन, बाधा।

उ०—१ थें निरांत सूं सोवौ म्हैं इण सनमन में की **रांझौ** नीं पटकूंला। इण सगाई में रांझौ पटकियां म्हारी सीख में पै'ला **रांझौ** पड़ै। —फुलवाड़ी

उ०—२ थूं डोकरी नै इत्ती डराय दी तो पछै की **रांझौ** ई नीं रह्यौ। —फुलवाड़ी

रांटलौ–देखो 'रांटौ' (अल्पा., रू. भे.)

रांटौ–वि. (स्त्री. रांटी) १ मुड़ा हुआ, टेढ़ा।

२ टंटा फिसाद करने वाला। (अल्पा. रांटलौ)

रांड–सं. स्त्री. [सं. रण्डा, रडा] १ वह स्त्री जिसका पति मर गया हो, विधवा स्त्री।

उ०—१ हाथ झटक झिझकार हंस, नाथ न लेऊं नांमजी। भव भांड इसे भरतार सूं, **रांड** भली औ रांमजी। —ऊ. का.

उ०—२ चल रंगरेजा में नहिं चाहूं, भल नहिं सोभा भंग। अलमित देखिर जळै अंग में, **रांड** कसूमल रंग। —ऊ. का.

२ वेश्या, रंडी, पतुरिया।

उ०—हंसियौ जग आसक हुए, वसियौ खोवण वीत। रसियौ नागी **रांड** सूं, फसियौ होण फजीत। —वां. दा.

३ व्यभिचारिणी स्त्री, कुल्टा नारी।

उ०—जुरती नहिं आवन जावन की, फुरती नहिं **रांड** फंसावन की। परवाह न पाट पटंबर की, अध चाह सु कंवर अंवर की। —ऊ. का.

४ स्त्री के लिए एक भद्दी गाली।

उ०—१ 'लाव तमाखू लाव' पाव पुळ चैन न पावै। '**रांड** सूयगी राड' जुलम सब रैन जगावै। —ऊ. का.

उ०—२ जद हिंसा धरमी बोल्या—दया २ स्यूं पुकारौ छौ। दया **रांड** पड़ी उखरली में लोटै। —भि. द्र.

उ०—३ पेट रा जाया ई धावळां रा गुलांम वणग्या। पछै ऐ लिछमियां क्यूं वारै। **रांडां** रा तन तन में कीड़ा पड़ै। —फुलवाड़ी

५ स्त्री जाति के लिये एक भद्दा सम्बोधन।

६ वह गाथा छंद जिसमें 'जगण' का अभाव हो।

उ०—जगरा विना सो रांड गणीजै। किणी मांझ सो गाहा न कीजै। —र. ज. प्र.

रू० भे०—रंडनी, रंडा, रंडी, रांडो।

अल्पा. रांडोली—मह०—रंड, रंडाळ।

रांडणी, रांडबौ—क्रि. स. [सं. रण्डा] किसी स्त्री के पति को मार कर विधवा बनाना।

उ०—रांवण मन जांणियो करूं सीता पटरांणी। रांडी मंदोदरी लंक पुनि हुई विरांणी। —ओपो आढो

रांडापौ—देखो 'रंडापो' (रू. भे.)

रांडावणौ, रांडावबौ—देखो 'रांडणौ, रांडबौ'।

रांडियौ—वि—१ स्त्री—लोलुप।

उ०—दाम री भांम झेली दुकर, भव सारै नै भांडियो। छिता पर इता गुण छोड दै, रांड न छोडै रांडियो। —ऊ. का.

२ अयोग्य, नामर्द, कायर।

उ०—गोरी री कमाई खासी रांडिया रे, हां ए गोरी, कै गांधी कै मणियार। म्हे छां बेटा साहूकार रा जी। —लो. गी.

रांडी—देखो 'रांड' (रू. भे.)

उ० १ पांचे पाटे भद्रिउं भीमि भिडी ऊपाडी रीस। नवि मारिउ छइ माडी वयरणि जिम नवि दीसइ रांडी भयरणि। —सालिभद्रसूरि

उ०—२ भाभै आगं हुवा जोतिगी, आ' तो आई वात वरतगी। राम भगति विन व्हैगी भांडी, मुवै कुं परणायां रांडी। —अनुभववांणी

रांडीरांड—स. स्त्री.—विधवा स्त्री।

उ०—वा धणी रै मरणा री सुणावणी, वो मां री रोवणो, वो रांडीरांड रो भेख— —फुलवाड़ी

रांडीरोणौ, रांडीरोवणौ—सं. पु.—व्यर्थ की टांय-टांय, अनर्गल प्रलाप। अपना रोना हर किसी के सम्मुख रोने की क्रिया या भाव।

उ०—म्हे थारो मरम सुणण सारू आई हूं, पण पैं'ला थोड़ो सो म्हारो रांडी-रोवणो-रोवूं'ला। —फुलवाड़ी

रांडूल्यौ—देखो 'रांडोलो' (रू. भे.)

रांडेपौ—देखो 'रंडापो' (रू. भे.)

उ०—वडि विग वाद न कीजै रांणा, अथग न पैसे पांणी। राज गयो रांडेपो आयो, भणै मंदोदर रांणी। —मेहोजी गोदारो

रांडोलियौ—देखो 'रांडोलो' (रू. भे.)

रांडोली—देखो 'रांड' (अल्पा.; रू. भे.)

उ०—नैणा रा मोगन करै, भैं मांनै सुण भूत। रांमत ढूलां री रमै, रांडोली रा पूत। —बां. दा.

रांडोलौ, रांडोल्यौ—वि.—स्त्रियों केसे स्वभाव वाला, कायर, नामर्द, अयोग्य

उ०—नां नारी नां नांह, अद विचला दीसै अपत। कारज सरे न कांय, रांडोलां सूं राजिया। —किरपारांम

२ जिसकी स्त्री मर गई हो।

रू० भे०—रांडूल्यो, रांडोलियो,

रांढु, रांढू—सं. पु.—मोटा, रस्सा।

उ०—१ साखत रांढु मूंज को, भीनो करै मरोड़। हरीया गुर विन वहि गया, केता लाग करोड़। —अनुभववांणी

उ०—२ तुरत बंधावी रांढु में ए, जेह ना हाथ ने पाय। नगरी मांहे वाहिरे ए, फेरी जे तसु काय। —जयवांणी

उ०—३ तद मूंज ऊंठ दोयरी मंगायी नै जाडा जाडा रांढू वंटाया अर बीच में हाथ रै आंतरै लकड़ी रा गाता दिया रसां वीच। —द. दा.

उ०—४ पछै रावळ जैतसी जिण भुरजां दिसा धरती नीचे री थी, तिणां दिसा रांढू नखाय नै लूणकरण करमसी नूं नै डणां रो साथ गढ ऊपर चाढियो। —नैणसी

रू० भे०—रंढू

रांण—सं. पु. [सं. राट] १ राजा, नृप। (डि. को., डि. नां. मा.)

उ०—विखे आरांण मुवै केवांण, खसै खुरसांण मरुध्धर रांण —राउ जैतसी रो रासो

२ रावण, दशानन।

उ०—१ सांमद उलहो भोम मिरै, कै रांण प्रगट्टो रांम दळ। —रा. रू.

उ०—२ विचित्रां दिश्रा विछाइ, भालै हरिण भगवांनिए। जांणि कि वाग विधूंसिआ, रांण तणा कपिराइ। —वचनिका

उ०—३ हुई लंक में बूंब आया हकारै। मंत्री रांण रा सात हज्जार मारै। 'अखौ' रांण रो पूत जूटो अछायो, घणै क्रूधि तेनूं हणूमांन घायो। —सू. प्र.

३ स्वामी, मालिक।

उ०—१ पाड़, चकारां पांण, हमणो वित ले हैंडियों। रे कछवर री रांण, आज कठी गी 'आवड़ा'। —पा. प्र.

उ०—२ सेखावतां रांण खळां भंज खेल। पाछी सबदीध पलट्टण ठेल। सबै नर आग्रत भोक अभंग। रिपु बहु 'ज्वार' हण्या विच जंग। —अग्यात

४ देखो 'रांणो' (मह., रू. भे.)

उ०—मांझी मोह मराट, 'पातल' रांण प्रवाडमल। दुजड़ां किय द्रहवाट, दळ मैंगळ दांणव तणा। —सूरायचजी टापरचो

उ०—२ ओरां नै आसांण, हाकां हरवल हालणो। किम हालै कुळ-रांण, हरवल साहां हांकिया। —केसरीसिंह बारहठ

उ०—३ आलापै रागि गारहू अकवरि, दीयै त्रीस खट कुळि दाउ। रांण सेम वसुधा सत्र रावण, रागि न पांतरियो अहिराउ। —गोरधन वोगसो

रांणकरा, रांणकिया, रांणक्या—सं स्त्री.—सोलंकी वंश की एक शाखा।

रांणखमांण, रांणखुमांण-सं. पु. यौ.-छोटे बड़े जलाशय।

उ०—ढूंढ्या-ढूंढ्या रांण-खमांण मिरगे विना मिरगी एकलड़ी। मिरगौ छोड गयौ वनखंड मांय, मिरगी ने एकलड़ी। —लो. गी.

रांणदे-सं. स्त्री.-सूर्यदेव की पत्नी।

उ०—इतरा में भळकते कमळ तेज रौ पुंज निसचर निरदळण कालिंगदैत रौ कळण वौम रौ सिणगार ग्रोटण ग्रंधार भाभीजोत कासिव वंस रौ उद्योत रांणदे रौ नाह भासकर देवाध वोलिया। —मा. वचनिका

रांणपर-सं. पु.-एक प्राचीन नगर विशेष का नाम।

उ०—जूनुगढ चांपानेर मांडवगढ, ग्रणहलपर पाटण, रांणपर वीसलनगर वडुदरू······ —व. म.

रांणबांण-वि.-१ निपुण, दक्ष।

२ चतुर, बुद्धिमान।

३ दृढ, पक्का।

४ पूर्ण स्वस्थ।

रांणवत-देखो 'रांणावत' (रू. भे.)

रांणवाळौ-वि. महाराणा का, महाराणा से सम्बन्धित, महाराणा के योग्य।

उ०—१ 'ग्रभा' ग्रादि उमराव रांणवाळा मन रक्खै। वरण इंद्र घनवंत, इमौ 'ग्रगजीत' निरक्खै। —रा. रू.

उ०—२ 'ग्रमरसी' रीत 'ग्रवरंग' तणी ग्रादरी, चित्रगढ़ तणी ग्रादू तजी चाल। सांमद्रोहां हुग्रा रांणवाळा सुपह, रांण पाराथियौ वियौ रिड़माल। —दुरगादास राठौड़ ग्रासकरणोत रौ गीत

रांणा-सं. स्त्री. [सं. राट]१ भिन्न २ राजवंशों का उपटंक जो उन राज वंशों के शासक के नाम के साथ लिखा या बोला जाता है।

२ देखो 'रांना' (रू. भे.)

रांणाई-सं. स्त्री.-१ 'रांण' होने की ग्रवस्था या भाव।

२ राणा का पद या पदवी।

उ०—संवत १६१६ रा भाद्रवा वद ३ सीसोदिया सगर उदैसिंघोत रौ जनम। पातसाह जहांगीर मया कर ग्रजमेर, नागौर चित्तोड़ दे रांणाई दीवी। —बां. दा. ख्यात

३ राणा पद का गौरव, स्वाभिमान।

४ राजा होने वाली ग्रवस्था या भाव, राजत्व।

उ०—पछै मूळराज रावळ हुवौ। रतनसी नूं रांणाई रौ विरद। —नैणसी

रांणादे-देखो 'रांणदे' (रू. भे.)

रांणापति-सं. पु.-राणादेवी का पति, सूर्य भगवान्, सूर्य।

रांणापण, रांणापणौ-सं. पु.-१ वीरता, बहादुरी।

२ देखो 'रांणाई'

रांणाराव-सं.पु.-१ महाराणा।

२ श्रेष्ठ पुरुष।

रांणावत, रांणावत्त-सं. पु.-१ महाराणा उदयसिंह के वंश की एक शाखा, सीसोदिया वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—जगमाल उदैसिंघोत रै वंस रा रांणावत १ कांनावत २ कछवाहा सुरताणोत राजावत ३ राठोड चांदावत ४··············· —बां. दा. ख्यात

२ राठौड़ों की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

रू० भे०-रांणवत,

२ देखो 'रांणी' (रू. भे.)

रांणी-सं. स्त्री. [सं. राज्ञी; प्रा. राणी] १ किसी राजा या राणा की स्त्री, रानी।

उ०—१ वडै वंस ऊपनी वडी रांणी भाटियांणी, बोली राजा हूंत जिका पूरै व्रत जांणी। —रा. रू.

उ०—२ गिरमीं गिरमीं में गिरवै मुड़ियोड़ा, जांन्है डैरूं ज्यूं गोडा जुड़ियोड़ा। कुलटा साची व्है ठुकरांणी कूड़ी। पड़दै पड़दायत रांणी मूं रूड़ी। —ऊ. का.

२ ताश का वह पत्ता जिस पर स्त्री की तस्वीर हो।

३ स्वामिनी, मालकिन।

४ एक प्रकार का वर्षा ऋतु में होने वाला कीट विशेष।

रू० भे०-रांणि।

रांणीजणियौ, रांणीजायौ-सं. पु.-१ राणी की कुक्षि से पैदा होने वाला राजपुत्र, राजकुमार।

२ राजपूत, क्षत्रिय।

उ०—सुणियौ ग्रागम सत्रु रौ, ग्ररर जड़ै निज ऐण। रांणीजाया किम रहै, विरुद धरम कुळ वेंण। —वी. स.

रांणीपद, रांणीपदौ-सं. पु.-सभी रानियों में प्रमुख होने का सम्मान या ग्रधिकार। रानी का पद।

उ०—१ लिखमी रै बेटा दोय हुग्रा-वाघौ, नरौ। वडा जोरावर हुग्रा। सातल रै छोरू न हुवौ। ताहरां टीकौ सूजेजी नूं दियौ। रांणीपदौ लिखमी नूं दियौ। —नैणसी

उ०—२ रांणी स्री पतापदेजी रै रांणीपदा रौ दसतूर सुं रांणी स्री हाडी जी नु रांणीपदा रौ वंटौ दियौ। —मारवाड़ री ख्यात

रांणीमंगाभाट-सं. पु.-केवल रानियों की ससुराल में नामावली लिखने की वृत्ति करने वाला भाट।

रांणेराव-सं. पु.-महाराणा।

रांणेस-सं. पु.-१ राजाग्रों में श्रेष्ठ, महाराजाधिराज।

२ महाराणा।

रांणोरांण-सं. पु.-सभी प्रमुख व प्रतिष्ठित व्यक्तियों का समूह।

वि.-समस्त, सब।

रू० भे०-रांणौरांण।

रांणो-सं. पु. [मं. राट्] (स्त्री रांणी) १ राणा पदवी धारी राजवंश का राजा। २ उदयपुर के राजाओं का उपटंक, पदवी, उपाधि।
३ उदयपुर का राजवंश।
४ उदयपुर का राजा, महारांणा।
उ०—१ थाटपति मेवाड़ थांणौ रचे, निजरा दीध रांणै। बापहूं चवगुणी बाजी, गुमर धरियौ बियै 'गाजी'। —सू. प्र.
उ०—२ परवत पई पछाड़िया, मेरौ चाचग देव। कुंभकरण रांणो कियौ, अइयौ 'रयण' अजेव। —वां. दा.
उ०—३ जुव दिल्ली रहिया जुड़ै, 'रैणायर' 'रुघपत्त'। सिर रांणै दळ सज्झिया, औरंगसाह असपत्त। —रा. रू.
५ राजा, नृप।
उ०—१ पातसा स्री अकबर वरणवू, पणि कस्या एक पातसा स्रीअकबर जंबूद्वीप मांहइ प्रवरत्ततु छइ, अन्य पराय रांणा, मोटा मीर मालिक माहाभड खांन, खोजा, सरक्षिल साहणा, ते सघला करइ सेवा......। —व. स.
उ०—२ रीझी सुण चंद्रावत रांणी। सांम साथ कज स्रवण सुहांणी। —रा. रू.
उ०—३ तूं हीज राजा रांमचंद तूं रांवण रांणा।
—केसोदास गाडण
६ रावण, दशानन।
उ०—रांणै सतवंती हरण मारीच पठाया। —केसोदास गाडण
७ नक्कारची, ढोली। (ढूंढाड़, जयपुर)
उ०—रांणो एक जूटो दोय राज का दरोगा। पारासुर वंसी दोय टूक टूक होगा। —शि. वं.
रू० भे०—रन्नो।
मह०—रांण।

रांणोरांण-देखो 'रांणोरांण' (रू. भे)
उ०—सिसिपाळ संक्यौ चित्त चमक्यौ, जरासंधि नइं जांण। हिवइं मांहरा हाथ जोज्यौ, मिळी रांणोरांण। —रुकमणी मंगळ

रांती-वि.-अत्यन्त ही क्षीणकाय, मड़ियल, कृशतन।
उ०—बीम दिनां में थांरो सांस तो आंख्या में आयग्यो। हाथी व्है जैड़ो डील हो, याकनै रांती व्है ज्यूं व्हैगो। —फुलवाड़ी

रांदा-सं. स्त्री.-राठौड़ वंश की एक उपशाखा।

रांदो-सं. पु.-राठौड वंश की रांदा शाखा का व्यक्ति।

रांधण-सं. स्त्री.-१ पकाने की क्रिया या भाव, पकाने की विधि।
उ०—ते महाजन जीमतां वखांण करै, फलांणा गांम री रांधण देसी। अमकड़ियै महर नी रांधण देसी। पिण इसी चतुराइ कोइ देसी नही। —भि. द्र.
२ देखो 'रंधीण' (रू. भे.)

रांधणछठ-सं. स्त्री. यौ.-भादो शुक्ल पक्ष की छठ।

रांधणां-सीधणां-सं. पु. यौ.-भोजन-सामग्री, खाद्य पदार्थ। भोजन के रूप तैयार वस्तुएं।
उ०—कुघरणि महा कुहाडि सदा घरइ आटोप, बइठी भरतार दिइ निरोप, डोइला हेठै किंकिउ घरइ, मुहि सांम्ही चीवर वरइ। रांधणां-सीधणां नितु अणाहर करइ, सकल दिवस सूअर जिम चरइ......। —व. स.

रांधणौ, रांधबौ-क्रि. स. [सं. रंधनं] १ चावल, खिचड़ी, भोजन, खाना आदि पकाना, पक्वान्न बनाना।
उ०—१ दळिया रांधै दळवळिया हळवांणै, वेचण वींदणियां ईंधणियां आंणै। लादी भारी नैं ओळावौ लेती, दुरवख बारी नै वोळावौ देती। —ऊ. का.
उ०—२ जाहरां भगति हुई सु चावळां रै औसांवण सुं घोड़ा ऊंठ पाया, इतरा चावल रांधा। —जांगळू री वात
उ०—३ सो एकै दिन देपाळ घाड़ी लेनै आवतौ हुतौ। सो हरख री आप रै तळाव ऊपर गोठ कीवी। अठै मांस रांधौ। चावळ रांधा। अर रोटा हुवै छै। —देपाळ धंध री वात
२ कष्ट देना, तंग करना, यातना देना।
उ०—१ औगुणगारा और, दुखदायी सारी दुनी। चोदू चाकर चोर, रांधै छाती राजिया। —किरपारांम
उ०—२ म्हनैं देखियौ तौ डोकरी म्हारै माथै उलळगी। किड़कि-ड़ियां चावती वोली—तड़कै तड़कै औ लैणायत रांधण नै वळग्यौ।
—फुलवाड़ी
रांधणहार, हारौ (हारी), रांधणियौ —वि.।
रांधिओड़ौ, रांधियोड़ौ, रांध्योड़ौ —भू. का. कृ.।
रांधीजणौ, रांधीजबौ —कर्म वा.।

रांधियोड़ौ-भू. का. कृ.-१ पकाया हुआ, पका कर बनाया हुआ. २ कष्ट दिया हुआ, तंग किया हुआ, यातना दिया हुआ।
(स्त्री. रांधियोड़ी)

रांन-सं. स्त्री. [फा. रान] १ जंघा, जांघ।
[सं. आरण्य] २ वन, जगल।
उ०—मोटां रैं पिण कस्ट में, जतन नेह सहु जाय। रातै रमणी रांन में, नांखि गयौ नळराय। —ध. वं. ग्रं.
३ देखो 'रांण' (रू. भे.)
उ०—यां विचार वैण वोलै, तेज सूं समसेर तोलै। मूछ के रोम व्योम कूं उट्ठै, रांन के आए जमरांन से रुट्ठै।
—रा. रू.

रांनळ-सं. स्त्री.-सूर्य की पत्नी।
रू० भे०—रांनिळ, रांनिल्ल

रांनळपति, रांनळपती-सं. पु.-सूर्य, भानु, रवि। (अ. मा.)

रांनळवर, रांनळसुवर-सं. पु. [राज. रांनळ+सं. वर] सूर्य, भानु
(नां. मा., ह. नां. मा.)

रू० भे०—रांनिल्लवर

रांना—सं. स्त्री.—१ सूर्य की पत्नी या स्त्री।

उ०—कूरंमी कमधज्ज सूं, ओपै वांमै अंग। रवि रांना ससि रोहिणी, सुरपति सचि किर संग। —रा. रू.

२ देखो 'रांणा' (रू. भे.)

रांनापत, रांनापति—सं. पु.—सूर्य, रवि। (ना. डि. को.)

रांनिल रांनिल्ल—देखो 'रांनळ' (रू. भे.)

उ०—ए तूं आगिइं ऊपनुं, आगि जि वरसइ अंगि। रांनिल किम रंगि रमइ, सूरिज केरउ संगि। —मा. कां. प्र.

रांनिल्लवर—देखो 'रांनळवर' (रु. भे.)

उ०—सहिस-किरण सिर संचरइ, नहू सरयांसर जेम। रांनिल्लवर रुडुं नहीं, अवला पीडइ एम। —मा. कां. प्र.

रांनी—देखो 'रांणी' (रू. भे.)

रांनुड़ौ—सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा। (शा. हो.)

रांप—सं. स्त्री.—जलाशय का जल समाप्त होने पर निकलने वाली ऊपरी तह की चिकनी और पतली मिट्टी।

उ०—खड़ी जिसड़ी रांप, पंचाम्रत पांणी पालर। मोल मळाई स्याळ, चीकनौ चूंटी कालर। —दसदेव

रांपड़ौ—सं. पु. [देशज] १ पतले लोह का बना छोटा गडासा, एक कृषि उपकरण। (शेखावाटी)

२ देखो 'रांपी' (अल्पा., रू. भे.)

रांपलौ—देखो 'रांपी' (अल्पा., रू. भे.)

रांपी—सं. स्त्री. मोचियों का चमड़ा तराशने, काटने और साफ करने का एक औजार जो खुरपी के आकार का होता है।

रांपौ—सं. पु.—वह व्यक्ति जो पैर में वात रोग के कारण कोई कार्य करने में असमर्थ हो।

अल्पा०—रांपड़ौ, रांपलौ,

रांफल—सं० स्त्री.—१ बहुत से लोगों की भगदड़।

२ लड़ाई, फिसाद।

रांफळणौ, रांफळबौ—देखो 'आफळणौ, आफळबौ'

उ०—भड़ खाटण प्रभत्त सकोहा सांफळै। लै जरमन परलोक रहच्चै रांफळै। —किसोरदांन बारहठ

रांफळियोड़ौ—देखो 'आफळियोड़ौ'

(स्त्री. रांफळियोड़ी)

रांभणौ, रांभबौ—देखो 'रंभाणौ, रंभाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ मौ गायां मरसीह, सुण पाबु आखै सगत। अण दिन री तरसीह। रांभै घांवळराव उत। —पा. प्र.

उ०—२ दादी सासू, पोतियां जुंवाई नै देखण नै तरसी अर हाथ री कांपती दो आंगळयां एक आंख रै एड़ै-छेड़ै देय' र रसोई री बारी सूं ऊलळी, जांणै सुवाड़ी गाय लुवारै टोघड़ियै पर रांभी है। —दसदोख

रांमस—सं. स्त्री.—एक प्रकार की घास।

रांम—सं. पु. [सं. राम] १ ईश्वर, परमात्मा, (नां. मा.)

उ०—१ रांम नांम सदा वांणी, रांम नांम सदा कथा। रांमं नांम सदा सब्दं, ते सबद, सुक्यारथा। —ह. र.

उ०—२ हर रांम रु रांम गिणै हर से, जग में गुरु जेमल में दरसै। —ऊ. का.

उ०—३ जेसलमेरी जोड़, अवर भटियांणी आखै। उर अचेत इण कांम, रांम त्यां हेत न राखै। —रा. रू.

उ०—४ वडौ तू नांन्हौ एकोजि ब्रह्म, पढां जस कासूं कांसू भ्रम। रीझावां तुझ किसी विधि रांम, पूजीजै कीजै केम प्रणांम। —पी. ग्रं.

उ०—५ मिंदर में जाय हाथ जोड़नै वौ ठाकुरजी नै माथौ निवावण लागौ उण पं'ला ई उणरी निजर कळाकंद सूं भरियोड़ौ थाळां रै परसाद माथै पड़ी। मूंडा में रांम नांव रै बदळै लाळां सळवळण लागी। —फुलवाड़ी

२ ब्रह्म

उ०—रांम सकळ मैं रमि रह्या, हाजरि खड़ा हजूर। हरीया अंध न देखई, चुंह दिस ऊगा सूर। —अनुभववांणी

मुहा०—१ रांमकहणी=मरना, मृत्यु को प्राप्त होना।

२ रांमजांणै=जिसे राम ही जानता है, मनुष्य की जानकारी में न हो।

३ रांमनिकळणौ=अशक्त या क्षीण होना, श्रीहत होना, मरणासन्न होना। मति भ्रष्ट होना, ईमान समाप्त होना।

४ रांम बोलणौ=कोई अच्छी बात किसी के मुंह से स्वतः प्रगट होना, मरना

५ रांम रांम करणौ=राम नाम से किसी का अभिवादन करना, जैसे-तैसे समय गुजारना।

६ रांमसरण होणौ=ईश्वर की शरण में जाना अर्थात मृत्यु को प्राप्त होना, मरना।

३ विष्णु का एक नामान्तर

४ सूर्य वंशी राजा दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र जो विष्णु के अवतार माने गये हैं। (अ. मा., नां. मा.)

उ०—१ उणवार तहव्वर जोर इसौ, जुध रांम दळां सिर कुंभि जिसौ। —रा. रू.

उ०—२ निमौ रुघनंदण रांम नरेस। सत्रघण सांच लखमण सेस। —पी. ग्रं.

उ०—३ केसरीसिंघ रांमसिंघ सबलसिंघ के जाए। रांम बांण से अचूक रोद्र छोभ पाए। —रा. रू.

उ०—४ असुर मार तूं आतमा, निमौ तुहारा नांम। मारै तां समपै मुगति, राकस तारै रांम। —पी. ग्रं.

५ श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम, का नामान्तर।

६ परशुराम ।
७ श्रीकृष्ण, श्याम ।
८ घोड़ा ।
९ एक मृग विशेष ।
१० मारतत्व ।
११ ईमान ।
१२ शक्ति, सामर्थ्य ।
१३ योग्यता ।
१४ पुत्र के लिये प्रयुक्त होने वाला एक सम्बोधन । ज्यूं-म्हारो रांम तो अठै काले आयो ।
१५ वरुण ।
१६ अशोक वृक्ष ।
१७ हरितकी, हरड़ । (अ. मा.)
१८ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १७ मात्राएं होती हैं व अंत में यगण होता है ।
१९ देखो 'रांमदेव' ।
वि०-१ सुन्दर, मनोहर, अभिराम ।
२ प्रसन्न करने वाला, आनन्द दायक ।
३ श्वेत, सफेद । * (डि. को.)
४ कृष्ण वर्ण, श्याम । * (अ. मा., ह. नां मा.)
अल्पा०-रमीईयो, रमैयो, रांमडओ, रांमड्यो, रांमड़ो, रांमयो, रामूड़ो, रांमो, ।

रांमअंजीर-सं. पु. यो.-पाकर वृक्ष ।

रांमअजवांण-सं. पु.-एक पौधा विशेष जिसके फूल एवं पत्तों में अजवायन की गंध आती है ।

रांमदओ, रांमदयो-सं. पु.-१ रामदेव पीर जो रुणीचा के ठाकुर अजमाल जी के पुत्र थे ।

उ०—रांमदओ अजमाल रो आलमजी रो यार । गांभिळिमैं कलि मां मही, पीरिया तणी पुकार । —पी. ग्रं.

रू० भे०-रमड्यो, रमीईयो, रमैयो, रांमयो ।

२ देखो 'रांम' (अल्पा., रू. भे.)

रांमकचेड़ी-सं. स्त्री. ईश्वर का न्यायालय ।

उ०—सुख में प्रीत सवाय, दुख में मुख टाळा दिवै । जे के कहसी जाय, रांमकचेड़ी राजिया । —किरपारांम

रांमकळी-सं. स्त्री.-भैरव राग की स्त्री, एक रागिनी । (संगीत)

रांमकियौ-देखो 'रांमनियौ' (रू. भे.)

रांमकी-सं. स्त्री.-किसी संत की शिष्या ।

रांमकेळी-सं. पु.-१ एक प्रकार का बढ़िया केला ।

२ घास की एक जाति ।

रांमक्षेत्र-सं. पु.-दक्षिण का एक प्राचीन तीर्थ । (पौराणिक)

रांमगंड-सं. पु.-एक प्राचीन तीर्थ का नाम । (पौराणिक)

रांमगंगा-सं. स्त्री.-कन्नौज के पास गंगा में मिलने वाली एक नदी ।

उ०—देवीनांम भागीरथी नांम गंगा, देवी गंडकी गोगरा रांमगंगा । —देवि

रांमगिरि-सं. पु.-१ नागपुर के पास का एक पहाड़ जो आजकल रामटेक कहलाता है ।

२ एक राग विशेष । (संगीत)

रांमगीता-सं. स्त्री.-१ एक मात्रिक छंद विशेष । (र. ज. प्र.)

२ वेदान्त का एक छोटा ग्रन्थ

रांमड़ो-देखो 'रांम' (अल्पा., रू. भे.)

रांमचंग, रांमचंगा, रांमचंगी, रांमचंगीय-सं. स्त्री.-एक प्रकार की बंदूक

उ०—१ धवै नाळा भड़ा भड़ी धड़ाधड़ी धूजै धरा । छूटै वांणां-गोळी, रांमचंगियां छछोह । —रा. रू.

उ०—२ सो जोइयां नूं रांमचंगी वांणा री खबर न थी सो नेड़ा चालिया आया । —कुंवरसी सांखला री वारता ।

उ०—३ सज रांमचंगिय सार, तेह करत भरत तयार । केई करत पाग्गर काज, सब टोप बकतर साज । —पे. रू.

उ०—४ जबर जंग नाल्या रां निहा उपड़ि नै रहीआ छै । गज नाल्यां सुतर नाल्यां, जंबूरा नाल्यां, रांमचंगी हथनाल्या रा चण-णाट वाजै छै । —रा. सा. सं.

२ एक प्रकार की तोप ।

उ०—एकै दिन सुजांण साह ढाल दोय असल गेंडारी थी, तिकै निजर कीधी । तरै बडी रांमचंगी रो गोळो वाहि दीठो, तिको चापटो होय पड़ियो, पिण ढाल रै रंग री चिटक उतरी नहीं । —कहवाट सरवहियै री वात

रांमचंद, रांमचंद्र, रांमचंद्रेस-सं. पु. [सं. रामचन्द्र] १ सूर्यवंशीय राजा दशरथ के बड़े पुत्र 'राम' जो एक आदर्श पुत्र, आदर्श पति व आदर्श राजा थे और जिन्होंने एक वचन, एक पत्नी व एक बांण, इन व्रतों का निष्ठापूर्वक आचरण किया ।

उ०—प्रतापि लंकेंद्र, गुरुजन विनय रांमचंद्र, साहसि विक्रमादित्य, त्यागलीला करण, वचन प्रतिस्टां युधिष्ठिर —व. स.

२ ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा (नां. मा.)

रांमचरण-सं. पु.-शाहपुरा रामस्नेही सम्प्रदाय के प्रवर्तक एक साधु जो कृपाराम के शिष्य थे ।

रांमचरित-मांनस-स. पु. [सं.] गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित अति प्रसिद्ध एवं अत्यन्त लोक प्रिय धार्मिक ग्रन्थ, जिसमें श्रीराम के जीवन चरित्र का वर्णन है ।

रांमचिड़ी-सं. स्त्री.-मछलियां पकड़ कर खाने वाला एक जल पक्षी ।

रांमजणी-सं. स्त्री.-१ हिन्दू वेश्या, रंडी । (मा. म.)

उ०—रांमजणी अर कंचणी, पातर देवै पांम । है बाधण वन हेक री, राखै अळगी रांम । —बां. दा.

२ वह स्त्री जिसके पति का पता न हो ।

रू० भे०-रांमजनी,

रांमजन-सं. पु.-ईश्वर का भक्त, संत, साधु।

उ०—१ जन हरीया माया सबै, खाया जुग संसार। एक न खाया **रांमजन**, सतगुर कै आधार। —अनुभववाणी

उ०—२ रांम कहैं से **रांमजन**, हरीया दूजा भेख। दुनीयां सेती दोसती, धरै संत सु ं धेख। —अनुभववांणी

रांमजननी-सं. स्त्री. [सं. रामजननी] १ राम की माता कौशल्या। (रामायण)

२ बलराम की माता रोहिणी।

रांमजनी-देखो 'रांमजणी' (रू. भे.)

उ०—छोरि किते पतनी अपनी, मन **रांमजनी** मुख के अभिलाखै। मत्त कित्ते मदिरा मद ह्वै वस नीद कितेक लखै रित भाखै। —फतहकरण ऊजळ

रांमजयंती-सं. स्त्री. [सं. रामजयंती] रामनवमी

रांमजांमुन-सं. पु.-मंझोले कद का एक प्रकार का जामुन का वृक्ष।

रांमजी-सं. पु.-ईश्वर का एक आदर युक्त सम्बोधन।

उ०—जन हरीया ऊभै धणी, खेत न खंडै कोय। जांह रूखवाळा, **रांमजी**, माळ न वंको होय। —अनुभववांणी

रांमजी री गाय-सं. स्त्री. वीरबहुटी, इंद्रवधू।

रांमजोत, रांमजोती-सं. स्त्री. [सं. रामज्योति] १ ब्रह्म का प्रकाश। ब्रह्म ज्योति।

उ०—लीधा नाम नीठ नीठ अनेक जनमां लगां, अभै धांम पावै ठाम वैकुंट अदोत। दे रीठ संग्रांम खागां घडी हेक भांज देही, जोधा मळै रांम रा सनेही **रांमजोत**। —साधां री गीत

२ मोक्ष, मुक्ति।

रांमझारो-सं. पु.-एक बड़ी झारी जिसके एक लंबी टूंटी लगी होती है

रांमझोळ-देखो 'रिमझोळ' (रू. भे.)

रांमटेक, रांमटेकरी-सं. स्त्री.-एक पहाडी।

वि० वि०-देखो 'रांमगिरि'

रांमण-देखो 'रांवण' (रू. भे.)

उ०—काज अहोणी ही करै, एह प्रक्रत खळ अंग। **रांमण** पठियौ रांम दिस, कर सोव्रनी कुरंग। —बां. दा.

रांमणखंड, रांमणखंडौ-देखो 'रांवणखंडौ' (रू. भे.)

रांमणगढ़-देखो रांवणगढ' (रू. भे.)

रांमणगांजौ-स. पु.-एक प्रकार का भाला या सैल।

उ०—तठां उपरांति करि नै राजांन सिलांमति असवारी वाग ऊपाड़ि किलकिला ज्यों ऊपाड़ि ऊपाड़ि हेमरां नाखीजै छै। भूसणां ऊपरै वरछी चमकि नै रही छै। **रांमणगांजा** मेला रा धमोड़ा पड़ि नै रहीआ छै। —रा. सा. सं.

रांमणरिप, रांमणरिपु-देखो 'रांवणरिपु' (रू. भे.)

रांमणहत्थौ, रांमणहथियौ, रांमणहथौ-सं. पु. [सं. रवण+हस्तं] एक प्रकार का तार वाद्य विशेष।

रू० भे०-रांवणहथौ।

रांमणारि-देखो 'रांवणारि' (रू. भे.) (नां. मा.)

रांमणि-देखो 'रांवण' (रू. भे.)

रांमणौ, रांमवौ-देखो 'रमणौ, रमवौ' (रू. भे.)

उ०—रति रयण सुदि नर नारि **रांमति** गाळि प्रमुदित गावही। मुख गांन, दिन निस स्वांम मंगळ वैण चंग बजावही। —रा. रू.

रांमत-सं. स्त्री. [स. रम्यति, प्रा. रम्मति] १ क्रीड़ा, खेल।

उ०—१ पित मौ बाघौ पाळणै, **रांमत** रिझवारै। इम रांमण सुणि अंगदह, खळ वायक खारै। —सू. प्र.

उ०—२ कूंत आहावतौ ढाहतौ केवियां, त्रजड़ **रांमत** रमें कमंध त्यारा। 'गजण' रै नांखियां वाज मचती गहण, 'सूर' हर आभरण पूर सारा। —गु रू. वं.

२ मनोविनोद।

३ हसी, मजाक, ठिठोली।

उ०—१ मारवणी जांणियौ औ तो और पंथी छै। मीमां मो सुं **रांमत** करै छै। —ढो. मा.

उ०—२ मु पहली तो आ वात अदावत री हुई थी, तरै तौ सारां ही जांणियौ थो-ऐ साळा बैहनेइ थकां **रांमत** करै छै। नै आ वात रायसिंघ हालतां कही तरै तौ सारै ही जांणियौ-जु आवात साची हुई। कोई उपाव उपद्रव हुईसी। —नैणसी

उ०—३ दळ करण नूं राजपूतां निराठ मन्हा कियौ जे वडा सरदार असी कोई कहै नहीं छै। कूड़ी सू तौ **रांमत** मसकरी सांची सूं गाळ छै। —भाटी सुंदरदास बीकूपुरी री वारता

४ अभिनय, नाटक।

उ०—१ लुगाई री जूंण विना रखवाळण कंवरांणी, महारांणी अर गूजरी री आ **रांमत** कुण रमतौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ मां इण **रांमत** सूं तौ म्हारौ जीव साफ फाटग्यौ। थारै आगै म्हारौ बस नी चालै, नीतर म्है तौ कदैई म्हाय छूटती। कांई लुगाई री जलम फगत इण रामत सारू ई व्हियौ है। —फुलवाड़ी

उ०—३ आवै जाय अपार, ग्रीधां पळ भरि भरि गळां। फिर नटवाळां गोटका, विचरै **रांमत** वार। —रा. रू.

५ तमाशा, खेल।

उ०—१ अर गांव मांहे रावळिया **रांमत** रमता हुता। सीधळां री साथ रमत देखण नूं गयौ हुंतौ। —नैणसी

उ०—२ तुम वैठे **रांमत** लखौ, नह वेवत पर-पीर। मो वा... कीजै मही, भले भले रघुवीर। —गज ७८

६ नौटंकी का खेल।
७ चौपड़ आदि का खेल, द्यूत क्रीड़ा।
उ०—रांमत चौपड़ राज री, है धिक वार हजार। धरा सूंपी लूंठा धकै, धरमराज धिरकार। —रांमनाथ कवियौ
रू० भे०—रमत, रम्मत, रांमति, रांमती।
रांमतरणी—सं. स्त्री. यौ. [सं.रामतरुणी] १ श्री रामचन्द्र की पत्नी सीता।
२ सफेद गुलाब, सेवती।
रांमतारक—सं. पु. यौ. [सं. रामतारक] रामोपासक लोगों द्वारा जपा जाने वाला मंत्र, 'रां रामाय नमः'।
रांमति—देखो 'रांमत' (रू. भे.)
उ०—१ लघु लघु मर कर धनक लघु, लघु वय बाळक लार। रांमति सरजू तटि रमै, कीला राजकुमार। —सू. प्र.
उ०—२ नल ते रांमति नवि त्यजइ, हारइ नळराय रे। पासा पडइ अवला तव, कूबर सविसेखु थाइ। —नळदवदंती रास
उ०—३ रांमति रमती ढूलीयां, कन्या कुवारी थाय। रुतवत पीछै रमण की, हरीया प्यास मिटाय। —अनुभववांणी
रांमतियौ—सं. पु.—१ खेलने का उपकरण या साधन, खिलौना।
२ योनि, भग (बाजारू)
रू० भे०—रमकियौ, रमतियौ, रामकियौ।
रांमती—देखो 'रांमत' (रू. भे.)
रांमतीरथ—सं. पु. [सं. रामतीर्थ] रामगिरि नामक स्थान।
रांमतोरू—सं. स्त्री.—भिंडी नामक फली जिसकी सब्जी बनाई जाती है।
रांमदळ—सं. पु. [सं. रामदल] १ श्री रामचन्द्र की वानर-सेना।
२ कोई विशाल सेना जिसका मुकाबला करना कठिन हो।
रांमदवाई—देखो 'रांमदुआई' (रू. भे.)
रांमदवारौ—सं. पु. [सं. राम-द्वारा] रामस्नेही सम्प्रदाय के साधुओं के रहने का स्थान, मकान।
रू० भे०—रांमदुवारौ, रांमद्वारौ।
रांमदास—सं. पु. [सं. रामदास] १ श्री रामचन्द्र का दास, हनुमान।
२ दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध महात्मा जो शिवाजी के गुरु थे, समर्थ-गुरु रामदास।
रांमदुआई, रांमदुवाई—सं. स्त्री.—१ श्रीराम की शपथ, ईश्वर की सौगन्ध।
२ राम-नाम की दुहाई।
रू० भे०—रांमदवाई, रांमदुहाई।
रांमदुवारौ—देखो 'रांमदवारौ' (रू. भे.)
उ०—लोग हाल तांई नांढ घणा है, वै रांमदुवारा अर मिंदर में चोरी सारू हाथ नी घालै। —फुलवाड़ी
रांमदुहाई—देखो 'रांमदुआई' (रू. भे.)
रांमदूत—सं. पु. [सं. रामदूत] हनुमानजी।
उ०—दुवाह अखाड़ाजीत वाड़ा रांमदूत। —र. ज. प्र.
रांमदे—देखो 'रांमदेव' (रू. भे.)
उ०—राउत रिणिसी रांमदे वडिमि धिणोरी वाह। सगळाई सांधा सिरै, नेतळदे रौ नाह। —पी. ग्रं.
रांमदेरौ—देखो 'रांमदेवरौ' (रू. भे.)
उ०—कोस १ साथै गया, उठै जाय ऊतरीया, वात विगत करनै स्त्रीजी रा साथ नै सीख दी। राजा रौ डेरौ रांमदेरै हुवौ। —नैणसी
रांमदेव—सं. पु.—१ प्रसिद्ध तुंवर वंशीय अनंगपाल जी के वंशज अजमालजी के सुपुत्र रामदेव, जो सिद्ध पुरुष (पीर) माने गये हैं।
वि. वि.—इनका जन्म संवत १४६१ में हुआ और संवत १५१६ में ये समाधिस्थ हुए। इनकी समाधि पोकरण (राजस्थान के जोधपुर जिले में) से नौ मील दूर है। इनके अनुयायी प्रायः अनुसूचित जाति के लोग हैं जो इन्हें ईश्वर का अवतार मानते हैं।
२ उक्त पुरुष को सम्बोधित कर गाया जाने वाला लोक गीत।
३ उक्त पुरुष के अनुयायी लोगों का सम्प्रदाय।
४ श्रीरामचन्द्र।
रू० भे०—रांमदे, रांमदै।
रांमदेवरौ, रांमदे'वरौ—सं. पु.—१ रामदेवजी का समाधिस्थान, मन्दिर। देवालय।
२ उक्त नाम का गांव।
रू० भे०—रां देरौ।
रांमदै—देखो 'रांमदेव' (रू. भे.)
रांमद्वारौ—देखो 'रांमदवारौ' (रू. भे.)
रांमधरम—सं. पु.—१ ईश्वर को साक्षी बनाने की क्रिया या भाव।
२ अपनी मर्यादा में रहने की अवस्था या भाव।
उ०—चालै कुळ री चाल, रांमधरम धारचा रहै। दुखियां पर दयाळ, भव क्यूं बिगड़ै भैरिया। —रतलांम नरेस बळवंतसिंह
३ ईमान।
रू० भे०—रांमध्रम।
रांमधांम—सं. पु. [सं. राम-धाम] १ वह लोक जहां ईश्वर राम रूप में नित्य विराजमान रहते हैं, साकेत धाम, अयोध्या।
२ वैकुण्ठ।
रांमध्रम—देखो 'रांमधरम' (रू. भे.)
रांमनम, रांमनमी, रांमनवमी—सं. स्त्री. [सं. रामनवमी] चैत्र शुक्ला नवमी की तिथि, जिस दिन श्री रामचन्द्र का जन्म हुआ था। एक पर्व दिन।
रू० भे०—रांमनांमी, रांमनोमी, रांमनौमी।

रांमनांमी-सं. स्त्री.-१ राम नाम छपा हुआ कोई दुपट्टा या चादर जिसको प्रायः विधवा स्त्रियां ओढा करती हैं।
२ गले में पहनने का एक स्वर्णहार विशेष जिसे प्रायः विधवाएं पहनती हैं।
३ सोने चांदी के आभूषणों पर रेखाओं की खुदाई करने का कीला। (स्वर्णकार)
४ देखो 'रांमनवमी' (रू. भे.)

रांमनोमी, रांमनौमी-देखो 'रांमनवमी' (रू. भे.)

रांमपद-सं. पु.-मोक्ष, मुक्ति।
क्रि. प्र.-पाणौ, मिळणौ।

रांमपयोध-सं. पु. [सं. राम+पयोधि] राम के यश रूपी समुद्र।
उ०—आछौ कीध इसोह, रस ले साहित-सिंधु रौ। जग सह पियण जिसोह, रूपक **रांमपयोध** रुख। —उत्तमचंद भंडारी

रांमपुर-सं. पु.-१ अयोध्या नगरी।
२ स्वर्ग, वैकुण्ठ।

रांमपुरा-सं. स्त्री.-एक प्रकार की बन्दूक।

रांमपुरी-सं. स्त्री.-१ अयोध्या नगरी।
२ स्वर्गलोक, वैकुण्ठ।
३ एक प्रकार की तलवार।

रांमपुरीकत्ती-सं .स्त्री.-तलवार के आकार की एक कत्ती विशेष।

रांमप्रिया-सं .स्त्री.-श्री सीताजी। (नां. मा.)

रांमफळ-सं. पु.-सीताफल, सरीफा।
उ०—खरबूजा जग सह जाय रे, मौ असोक अमर सदै। सैमळ सरीस तज आंन सुण, दाख **रांमफळ** सेव दे। —र. ज. प्र.

रांमफळी-सं .स्त्री.-ग्वार की सूखी हुई फळी, जिसे तेल में तलकर मिर्च मसाले लगाकर खाया जाता है।

रांमवांम-सं .स्त्री. [स. राम+वामा] श्रीरांम की पत्न श्री सीताजी।

रांमबांस-सं. पु.-१ एक प्रकार का बांस।
२ केवड़े या केतकी की जाति का एक पौधा।

रांमभक्त-स. पु.-१ श्री राम का उपासक कोई व्यक्ति।
२ हनुमान।

रांमभीच-सं. पु.-हनुमान का एक नामान्तर। (नां. मा.)

रांमभोग-सं. पु.-१ एक प्रकार का चावल।
२ एक प्रकार का आम।
३ श्री राम को भोग (चढ़ाया) लगाया जाने वाला पदार्थ।

रांममंत्र-स. पु.-'रां रामायः नमः' नामक मंत्र।

रांममन-सं. पु. [सं. राममन] हनुमान। (अ. मा.)

रांमयौ-सं. पु.-१ काव्य छंद का एक भेद विशेष। (पि. प्र.)
२ देखो 'रांम' (अल्पा., रू. भे.)
३ देखो 'रांमइयौ' (रू. भे.)

रांमरक्षा-सं. स्त्री. [सं. रामरक्षा] विश्वामित्र द्वारा रचित श्री राम का एक स्तोत्र।
रू० भे०-रक्षारांम।

रांमरज-सं. स्त्री.-वैष्णव लोगों के तिलक लगाने की एक प्रकार की पीली मिट्टी।

रांमरमी-सं. स्त्री.-दीपावली व होली के दूसरे दिन परस्पर मिलकर किया जाने वाला अभिवादन, प्रणाम आदि।

रांमरस-सं. पु.-१ नमक।
उ०—मही मही मिरची पीसी, दियौ **रांमरस** न्हांख। तेलरौ म्हैं छूंकण दीनो, दीन्ही हांडी चढाय, यौ पंचमेळ रौ साग, देवतड़ां नै भी नांय मिळै जी राज। —लो गी.
२ रांम की भक्ति।
उ०—१ रहो वीवरे **रांमरस**, अनरथ घणौ अलंत। या हिज है ध्रम आतमा, ऐ तीरथ ऐ तंत। —बां. दा.
उ०—२ सतगुर भागी भरमना, निहचै पायौ नांम। हरीया घट मैं **रांमरस**, क्या कूंडै सु कांम। —अनुभववांणी
३ रांम की भक्ति रूपी अमृत।
उ०—हरीयै पीया **रांमरस**, आठुं पोहर अभंग। और किसी कुं पावसी, करै हमारा संग। —अनुभववांणी

रांमरांम-सं. पु.-१ परस्पर मिलने पर इसी शब्द को बोलते हुए किया जाने वाला अभिवादन, दुआसलाम, प्रणाम, नमस्कार। (हिन्दू)
२ रामनाम की माला, जाप।

रांमराज, रांमराज्य-सं. पु. [सं. राम+राज्य] १ श्री रामचन्द्र का शासन, जिसमें प्रजा को बहुत आराम मिला और संस्कृति का विकास हुआ।
२ ऐसा शासन जिसकी उपमा श्री रामचन्द्र के शासन से की जाती है। सुखदायी शासन।
उ०—वारा हरचंद रा वहै, **रांमराज** री रीत। कुममां छाई कनक रां, पुहमी वंटै प्रवीत। —बां. दा.

रांमलवण-सं. पु.-सांभर नमक।

रांमलाल-सं. पु.-एक मारवाड़ी लोक गीत।

रांमलीला-सं. स्त्री.-१ श्री रामचन्द्र के जीवन-चरित्र पर किया जाने वाला नाटक।
२ एक मात्रिक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में २० मात्राएं तथा अन्त में एक जगण होता है।

रांमवट-सं. पु.-पड़िहार वंश की एक शाखा।

रांमवाड़ो-सं. पु.-पश्चिमि भारत का एक तीर्थ स्थान।
उ०—वनं रांमचंद्र वसै **रांमवाड़ै**। सर पास कोटेमर संग चाढै। —सू. प्र.

रांमसंगी–१ देखो 'रांगचगी'

उ०—ध्रुव सोर जुजरवा ग्रत सधीर, तद चलै **रांमसंगी** सा–तीर। —पे. रू.

२ देखो 'रांमसखा'

रांमसखा–सं. पु. [सं.] सुग्रीव।

रांमसनेह–सं. पु. [सं. रामस्नेह] राम की भक्ति।

उ०— नही थिर देह न गेह न गेह। सही थिर थप्पहु **रांमसनेह**। —ऊ. का.

रांमसनेही–स. पु. [सं. रामस्नेही] १ राजस्थान का एक प्रसिद्ध साधु–सम्प्रदाय, जिसका ग्राविर्भाव श्री हरिरामदासजी महाराज (सीथल) से माना जाता है।

वि. वि.–संत साहित्य में प्रमुख सतों की रचनाग्रो से ऐसा प्रतीत होता है कि यह सम्प्रदाय रामानन्द की वैष्णव परम्परा के ग्रन्तर्गत ग्राता है। (ग्रनुभववांणी भू. पृ. २८) रामावत सम्प्रदाय की शिष्य परम्परा में श्री जेमलदासजी दिव्य पुरुष हुए, जिन्हों ने सगुणोपासना को निर्गुण की ग्रोर प्रवृत किया ग्रोर 'राम राम' को मूल मंत्र स्वीकार किया। इनका यह प्रयास ही इस सम्प्रदाय का वीज माना जाता है। श्री जेमलदास जी के मुख्य शिष्य श्री हरीरामदास जी ने इस सम्प्रदाय की ग्रोपचारिक प्रतीष्ठा की। ग्रतः श्रीहरीरामदास जी द्वारा इस सम्प्रदाय का ग्राविर्भाव सीथल से हुग्रा। सींथल में रामसनेही सम्प्रदाय का मुख्य पीठ ग्राज भी वर्तमान है। श्रीहरीरामदास जी के मुख्य शिष्य श्री रामदास जी ने इस सम्प्रदाय का ग्रत्यधिक प्रचार–प्रसार किया ग्रोर खेड़ाप ग्राम में एक पीठ की स्थापना की जो ग्राज भी वर्तमान है। सींथल एवं खेड़ापा के ग्रतिरिक्त शाहपुरा व रेण में दो पीठ ग्रोर हैं, जिनके मूल पुरुष क्रमशः रामचरणजी तथा दरियाव जी महाराज माने जाते हैं। इस सम्प्रदाय के साधु या ग्रनुयायी का प्रमुख उद्देश्य 'राम नाम' की माला जपना ही होता है।

२ उक्त सम्प्रदाय का ग्रनुयायी साधु।

उ०—सब जुग विध्या जेवरी, निरवंधन नहीं कोय। जन हरीया निरवंध है, **रांमसनेही** होय। —ग्रनुभववांणी

३ वह व्यक्ति जो उक्त सम्प्रदाय का ग्रनुयायी हो।

वि०–राम से स्नेह रखने वाला।

रांमसरण–सं. पु. [सं. रामशरणः] स्वर्गवास, मोक्ष।

वि०–जो ईश्वर की शरण में चला गया हो, स्वर्गवासी हो गया हो।

उ०—१ जांहरां कितरै हेके वरसै दूदो **रांमसरण** हुवौ, ताहरां भोज वूंदी ग्रायौ। भोज नूं पातसाह धरती दीधी। —नैणसी

उ०—२ पच्चीस बरसां री परण्यौ–पांत्यौ मोट्यार काटी बेटी रहनै ग्रर धीनणी नै विगा री लाय में दाभण नाख छोडनै **रांमसरण** व्हेगौ। —फुलवाड़ी

रांमसरी–सं. स्त्री.–एक चिड़िया का नाम।

उ०–ग्रांगणि जळ निरख उरप ग्रनि पिग्रनि, मग्नगज गिरि लियत मरू। **रांमसरी** गुगरी लागी रट, धूमा माठा चद धरू। —वेलि

रांमसाल–स. पु.–फल विशेष।

उ०—द्रुम दाड़गी घमका केळ दाख। महतूत सीताफल **रांमसाल**। —[illegible]

रांमसागर–स. पु.–१ पानी की बड़ी झारी जिसके लम्बी टूंटी लगी होती है।

२ चौड़े मुह व गहरा एक पात्र जिसके ऊपर पकड़ने का एक हत्था लगा होता है तथा जो दूध, नीर ग्रादि तरल पदार्थ परोसने के काम ग्राता है।

रांमसापीर–देखो 'रांमदेव'

रांमसिला–स. पु. [स. रामशिला] गया की एक पहाड़ी (तीर्थ)।

रांमसेतु–सं. पु. [सं. राम सेतु] दक्षिण में रामेश्वर तीर्थ के ग्रागे, समुद्र में पड़ी हुई चट्टान, जिसे रावण पर चढाई के समय श्रीराम द्वारा बनाया हुग्रा पुल (सेतु) माना जाता है।

रांमांण–देखो 'रांमायण' (रू. भे.)

रांमा–सं. स्त्री. [सं. रामा] १ लक्ष्मी।

उ०—१ लोक माता सिंधुसुता स्री लिखमी, पदमा पदमालया प्रमा। ग्रवर ग्रहे ग्रस्थिरा इंदिरा, **रांमा** हरिवल्लभा रमा। —वेलि

उ०—२ **रांमा** कहितां लक्ष्मीजी तिहिको ग्रवतार। ताकउ नांम रुकमणी। —वेलि टी.

२ रुक्मणी।

३ सीता।

४ राधा।

५ सुन्दर स्त्री।

उ०—रत्तां सांमी धरम सूं **रांमा** कांम ही रत्त। मन मोटा दिन पद्धरा, भड वंका गहमत्त। —गु. रू. बं.

६ प्रेमिका, प्रेयसी।

७ भार्या, पत्नी, स्त्री।

८ सती–साध्वी स्त्री।

९ गायन विद्या में निपुण स्त्री।

१० कार्त्तिक कृष्णा एकादशी।

११ नदी।

१२ ग्रार्या या गाहा छन्द का १७ वां भेद। इसमें १७ गुरु ग्रौर ३५ लघु वर्ण होते है ग्रौर कुल ५७ मात्राएं होती हैं। (ल. पिं.)

रांमाइण–देखो 'रांमायण' (रू. भे.)

उ०—**रांमाइण** ही रांम कीयउ जे हूंती कन्हइ। सकति विहूणउ स्यांम विढण न होयइ वीस–हथि। —अ. वचनिका

रांमातुळसी–सं. स्त्री.–तुलसी का एक भेद, जिसके डंठल का रंग सफेदी लिये हुए हरा होता है।

रांमादेवी–सं. स्त्री.–एक देवी विशेष।

उ०—च्यार कुळदेवी सहाय हुई। समरणादेवी सरीर लांबौ कीयौ १ सांमरादेवी सरीर हलवौ कियौ २, रांमादेवी सरीर अभंग कीनौ —रा. वंशावली

रांमानंद–स. पु.–१ एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य जो रामावत नामक सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक थे।

२ इनके द्वारा चलाया हुआ सम्प्रदाय।

रांमानंदी–सं. पु.–'रांमानंद' सम्प्रदाय का अनुयायी।

वि०–रामानन्द का, रामानन्द सम्बन्धी।

रांमानुज–सं. पु. [सं. राम+अनुज] १ श्रीराम का छोटा भाई लक्ष्मण। (अ. मा., नां. मा.)

२ भरत, शत्रुघ्न।

३ वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध आचार्य जिन्होंने वेदान्तसार, वेदांतदीप तथा वेदार्थसंग्रह नामक ग्रन्थों की रचना की थी। इनका स्वर्गवास ११९४ (संवत) में हुआ।

४ उक्त आचार्य द्वारा चलाया हुआ सम्प्रदाय।

रांमानुजी–सं. पु.–उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

वि०–रामनुज का, रामानुज सम्बन्धी।

रांमाश्रत–सं. पु.–ईश्वर। (नां. मा.)

रांमायण–सं. स्त्री. [सं. रामायण] १ वाल्मिकी ऋषि द्वारा रचित एक अति प्रसिद्ध धार्मिक ग्रंथ, जिसमें श्रीरामचन्द्र के जीवन–चरित्र का वर्णन है।

उ०—लंक जिम वाद अहमंद लियण, लख गोळां, झड़ लागियौ। वमरीर अभायण जुध विखम, जुध **रांमायण** जागियौ। —सू. प्र.

रू० भे०–रमांइण, रमाइण, रमायण, रांमांण, रांमाइण।

२ जीवन गाथा।

उ०–म्हारी **रांमायण** री छुट–पुट कड़ियां थनै बताई, इण सूं म्हारौ जीव हळकौ व्हियौ। —फुलवाड़ी

३ व्यर्थ का प्रवचन। (व्यंग)

उ०—विणियांणी बोली–थे तौ म्हनै पूरी बात ई नीं कैवण दी, बीच में ई थांरी **रांमायण** वांचणी चलू कर दी। —फुलवाड़ी

रांमायणी–वि. [सं. रामायणी] रामायण का, रामायण सम्बन्धी।

रांमावत–सं. पु.–१ आचार्य रामानन्द द्वारा चलाया हुआ एक वैष्णव सम्प्रदाय।

२ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

रांमासांमा–सं. पु. १ अभिवादन, दुआ सलाम।

उ०—रणछोड़ **रांमासांमा** करनै चिलम आघी करतां पूछ्यौ–सेठां सिरावण करौ तौ थोड़ौ माखण नै सोगरौ लाय दूं। —रातवासौ

२ दीपावली व होली त्यौहारों के दूसरे दिन परस्पर मिल कर किया जाने वाने वाला अभिवादन, भेंट, प्रणाम आदि (हिन्दू)

उ०—उण मौकै दिवाळी रौ तिवार होवण सूं मा उण नै घणा कोड सूं नवा नवा कपड़ा पैराया। कांना में नगदार लूंग हाथां में सोना री माठियां अर पगां में झांझरिया घालिया। **रांमासांमा** रै दिन वाळ ओस, काजळ घाल अर लीलाड़ माथै निजर री काळी टीको लगाय नै वास ग्वाड़ में तसळीम करण वास्ते भेजियौ ..... । —अमर चूनडी

रांमूड़ो–१ देखो 'रांम' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—ओ जी ओ, मनै **रांमूड़ा** री टेवटियौ घड़ा दे, मोरी माय, लूवर रमवा मैं जास्यूं। —लो. गी.

रांमेस्वर–सं. पु. [सं. रामेश्वर] दक्षिण भारत में समुद्र तट पर स्थित शिव लिंग (तीर्थ) जो हिन्दुओं के चार प्रमुख तीर्थों में से एक माना जाता है।

रांमोड़ी–सं. स्त्री.–वनस्पती विशेष

उ०—**रांमोड़ी** नइं रासना रींगणि रुद्र–जटाय। रांग रतांजणि रूंमड़ी, रनिवनि रंग धराय। —मा. का. प्र.

रांमौ–१ देखो 'रांम' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो रांमदेव

उ०—'गोगौ' मोगौ हुय गोरंघा गिरियौ, 'तेजौ' मोळौ पड़ि नेजौ लै तिरियौ। पीरां पतधीरां पैली घर धायौ, उण दिन **रांमौ** डर सांमौ नहिं आयौ। —ऊ. का.

रांमौपीर–देखो 'रांमदेव'

उ०—पोढी सूं जोधांपती, प्रात हुवौ असवार। दरसेवा सुभ देहरौ **रांमौपीर** उदार। —रा. रू.

रांयकंवर–१ देखो 'रायकुंवर' (रू. भे.)

२ देखो 'राजकुमार' (रू.भे.)

रांयकंवरी–१ देखो 'रायकंवरी' (रू. भे.)

२ देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

रांयण, रांयन–सं. स्त्री.–१ नीम से बड़े आकार का वृक्ष जिसके पत्ते पीपल के पत्ते से मिलते जुलते होते हैं और फल मीठे तथा लकड़ी मजबूत होती है।

उ०—पाडर पुन **रांयन** तरु तमार, तहां सरु वकायन सरसतार। चदन अगर तोया कुंद चारु, सीताफळ चपक अरु अनारु। —मयारांम दरजी री वात

२ उक्त वृक्ष का फल।

उ०—१ अखरोट चारोली केला **रांयण**, नालेर द्राख आंवां साख। —व. स.

उ०—[illegible], [illegible], रांवण गीरोल्या, [illegible] —[illegible]

रू० भे०—[illegible]

रांवटो—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] रांवटो [illegible] मंल्लानियां [illegible] —[illegible]

रांवण—सं. पु. [सं. रावण] १ [illegible] दशानन, जो [illegible] का पुत्र था। दशरथ नन्दन श्रीरामचन्द्र ने जानकी सीता के साथ लंका पर चढ़ाई करके इसका वध किया। ऐसा माना जाता है कि इसके बीस भुजाएं [illegible]।

उ०—१ [illegible], रांवण [illegible] 'विनंद' [illegible]। —सू. प्र.

उ०—२ [illegible] 'शीश' [illegible], [illegible] पैंतीस [illegible], [illegible] रांवण मेर-गिरै। —[illegible]

[illegible]

रू० भे०—[illegible]

रांवणनंद, रांवणनंदो—सं. पु. [सं. रावण+नंदन] [illegible]

उ०—१ [illegible]। [illegible] —[illegible]

उ०—२ रांवणनंदो [illegible], [illegible] 'कुंभ' [illegible]। [illegible] —[illegible]

रू० भे०—[illegible]

रांवणपुर—सं. पु.—[illegible]

रू० भे०—[illegible]

रांवणवास, रांवणवासो—सं. पु.—[illegible]

उ०—[illegible]। [illegible]। —[illegible]

रांवणसुत—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] रांवणसुत। —[illegible]

रांवणारि, रांवणारिपु—सं. पु. [सं. रावण+अरि] १ श्री रामचन्द्र। २ [illegible] ([illegible])

रू० भे०—[illegible], [illegible], [illegible]।

रांवणेश्वर, रांवणेश्वरो—सं. पु. [सं. रावण+ईश्वर] १ [illegible] [illegible]।

उ०—मिथलाविहारी सीमुरारी रमां नारी रंज। पहू सस्त्रधारी मिळ मपारी मांगा हारी मंडळी, धनु जेगवारी रांवणारी जटाधारी मंज। —र. ज. प्र.

२ ईश्वर, परमेश्वर।

रू० भे०—रामणारि, रवणारि।

रांसीलौ—वि. (स्त्री, रांसीली) १ रस पूर्ण, रसीला।

उ०—धे चावळ हूं दाळ हगामी ढोला रे ऐके ने रांसीलै, दोय जीमिया हो राज। धे मांडी हूं ढाल, हंगामी ढोला रे, ऐके ने रांसीलै दोय भेळिया हो राज। —लो. गी.

२ रसीक, रसिया।

उ०—होठलड़ा मूमल रा रेसमिये रे तार ज्यूं, हां जी रे, दांतड़ला उजळ दंती रा दाड़म बीज ज्यूं। म्हांजी हरियाळी मूमल, हालै नी रांसीलै रै देस। —

रा—विभ.—१ षष्ठी विभक्ति चिन्ह, के।

उ०—१ म्हक हुय पेयियो, हाथ जमराज रा। ठियतां पांव धीरा दियो ठाकुरां। —हा. भा.

उ०—२ वडा भगत भगवांन रा, रांम रीझां सिर रीजै। —पी. ग्रं.

उ०—३ हाथ नमो तुं नीम हथि, जुधि जुधि कीधी जैत। गिळिया लोही रा गटक, देवी दळिया दैत। —पी. ग.

रू० भे०—रां।

२ देखो 'रै' (रू. भे.) (नां. मा.)

३ देखो 'राज' (रू. भे.)

उ०—१ किसलय निकलता गहगहइ, वेनाफूलै रा गहगहइ। मूंड सघळ धान्य नीपजइ, मकल वांछित गुण संपजइ। —नळ दवदंती रास

उ०—२ फाटि पटुली फटकडै, वेगि विगाणी हथि। रा भीतरि मेडिउ, दूलह दामी हथि। —मा. कां. प्र.

रा'—१ देखो 'राम' (रू. भे.)

२ देखो 'रामि' (रू. भे.) (नां. मा.)

३ देखो 'राय' (रू. भे.)

४ देखो 'राह' (रू. भे.)

राइठोड़—देखो 'राठोड़' (रू. भे.)

उ०—राइठोड़ मुंगे पर बैठ रह्यो। जिन धाम धामीणीय [illegible]। —[illegible]

राइत—देखो 'रायत' (रू. भे.)

राइ—देखो 'राइ' (रू. भे.)

उ०—१ राइ [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]। [illegible] —मा. का. प्र.

उ०—२ [illegible], राइ [illegible]। [illegible]

कुण कारणि दुखी ? सरसिइ किम संयोग। —मा. कां. प्र.

राइंदिय, राइंदिव–सं. पु. [सं. रात्रिन्दिवं] रात-दिन।

राइ–सं. पु. [सं. राजा, प्रा. राआ, राया] १ राजा नृप।

उ०—१ आखय ऊमा देवड़ी, सांभळि पिंगळ **राइ**। विरह वियापी मारुई, नहि राखण कउ दाइ। —ढो. मा.

उ०—२ पाल्हणसी पुहविहि रहचउ, अनि संमहया सरग्गि। तिणि वेळा हीया भरी **राइ राइ** रोवण लग्गि। —अ. वचनिका

उ०—३ वडै चिति कीरति खाटण आंकण वार। सिरोमणि **राइ** सहाइ संसार सधार। —ल. पिं.

उ०—४ आंपणी **राइ** फेराइ आंण। ममसेर साहि मुरितांण सांण। —रा. ज. सी.

उ०—५ तूडि-तांण 'अमर' सुरिजना तणौ, सांम कांम वाहण सुजड। राखिया **राइ** राठौडवे, कुमरां पामि इता मुहड। —गु. रू. वं.

२ छोटा राजा, सरदार, सामंत।

सं. स्त्री. [सं. राजिः] ३ कतार, पंक्ति।

उ०—लागि दळि कळि मळयांनिल लागै, त्रिगुण परमतै खुधा त्रिस। रटति पूत मिमि मधुप रूंख **राइ**, मात स्रवति मधु दूध मिमि। —वेलि

४ रात्रि, रात।

उ०—पाछिली रातइ उठइं नइ हो, स्रावक हुयइ सावधांन। **राइ** पायछत काउसग करी हो, देव वांदइ सुभ ध्यांन। —स. कु.

वि.–श्रेष्ठ, उत्तम

रू० भे०–राइं, राई, रायि, रायी।

राइअंगण, राइआंगण–सं. पु. [सं. राज अंगण] राज प्रसाद का आंगन, प्रांगण।

उ०—१ मुहडा स्रब अंग चंग दिग्गवर, **राइअंगण** सोभ ए। मधुकर गुंजार डंबरी मांमळ, परिमळ वास लोभ ए। —गु. रू. वं.

उ०—२ कडि लंछण केहरी, जंघ जांणे जाळंधर। **राइआंगण** गति क्रमति, हंस किरि मांण-सरोवर। —गु. रू. वं.

राइकुंअर, राइकुंवर–१ देखो 'रायकंवर' (रू. भे.)

२ देखो 'राजकुमार' (रू. भे.)

राइकुंअरि, राइकुंवरि–१ देखो 'रायकवरी' (रू. भे.)

२ देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

उ०—कर मूं करि कुंकुंम तिलक, चाढै चावळ भाळ। कुंअर वधावै **राइकुंवरि**, ले सोव्रन मैं थाळ। —गु. रू. वं.

राइगण–सं. पु.–रात्रिगण, रातदिन का समूह।

राइड़ियौ–देखो 'रेड़ियौ' (रू. भे.)

राइजादौ–देखो 'रायजादौ' (रू. भे.)

उ०—१ मछरीकां सिर मछरियौ, **राइजादौ** राठौड़। वैर पुरांणा वाळिया, करै नवल्ली दौड़। —गु. रू. वं.

उ०—२ **राइजादै** ओपम राठवड, विहूंवै पक्ख निरंमळा। वळवंत कुमर विय चांद जिम, कुंवरां-गुर चढती कळा। —गु. रू. वं.

उ०—३ इण भांत ऊजळै पतिव्रत री पाळणहार, ऊजळी सखि-आंरी टोळी सूं राजहंस **राइजादी**। —रा. सा. सं.

(स्त्री. राइजादी)

राइजी–देखो 'रायजी' (रू. भे.)

उ०—बाइसी रीयां आय डेरा कीया तरे मसल ठहरी तरे कवरजी स्रीअभेसंघजी नुं ने **राइजो** स्री रुगनाथजी नुं साथे दीना। तरै बाइसी पाछी गइ। —रा. वं. वि.

राइठौड़–देखो 'राठौड़' (रू. भे.)

उ०—ठेलिग्रे प्रधाने **राइठौड़**। मालइ जिम बोलिय वंसि मोड़। —रा. ज. सी.

राइण, राइणि, राइणी–देखो 'रांयण' (रू. भे.)

उ०—१ **राइणि** तल पगला नम्या मन मोह्यउ रे, अदबुद आदि जिणंद लाल मन मोह्यउ रे। —स. कु.

उ०—२ सदा फळांणि निंबु आंणि, **राइणी** महूअडा। कल्हार जंबुई नारंग, रंग बाग रूअडा। —गु. रू. ब.

राइतौ–देखो 'रायतौ' (रू. भे.)

राइफळ–सं. स्त्री.–एक घोड़ेदार विलायती बन्दूक।

रू० भे०–रायफल।

राइवेल, राइवेलि–देखो 'रायवेल' (रू. भे.)

उ०—१ नितंब कटोरा सा। जंघा कदळी री ग्रभ। पग अंगुळि **राइवेलि** री कळि। —फुलवाड़ी

राइवर–देखो 'रायवर' (रू. भे.)

राइवेलि, राइवेली–देखो 'रायवेल' (रू. भे.)

उ०—पग अंगुली **राइवेळि** री कळी हीरा सा नख. आरीसा ज्यों भांखि रहिआ छै। —रा. सा. सं.

राइहर–देखो 'रायहर' (रू. भे.)

उ०—१ व्यांमोह वर वीर घर-घर सत देखे घणउ। आयउ **राइहर** आप-रइ समहरि 'अचळ' स-धीर। —अ. वचनिका

उ०—२ वसुदेव कुमार तणौ मुख वीखे, पुणै सुणै जण आय पर अौ रुखमणी तणौ वर आयौ, हर म करौ अनि **राइहर**। —वेलि

राई–सं. स्त्री. [सं. राजिका, प्रा. राइआ] १ बहुत छोटी सरसों जिसका दाना काला होता है। इसका स्वाद चरपरा होता है।

उ०—१ वना पंसारी रे जाइजौ जी वठा से ल्याजौ **राई** री पुड़ी। वना बागां में जाजोजी वठा से लाजौ मिरच हरी। —लो. गी.

उ०—२ [illegible] माहि [illegible] राई, [illegible] [illegible] अविदान, [illegible] पति [illegible] ।

—व. म.

उ०—३ [illegible] समाई [illegible] । ऊपर राई लूण उतारे ।

—ग. रू.

उ०—४ [illegible] राई लूण [illegible] । —कुंवरसी सांखला री वारता

मुहा०—१ राई रो परवत करणो—बात का बतंगड़ बनाना, छोटी [illegible] ।

२ राई रो [illegible]—[illegible] ऐसा कहा जाता है । [illegible] ।

३ राई [illegible]—[illegible] ।

४ [illegible] ।

उ०—५ [illegible], [illegible], [illegible] राई [illegible] ।

—व. म.

५ [illegible] ।

उ०—[illegible] में राई न [illegible] । [illegible] में भुगतो रे [illegible] ।

—के. का.

६ [illegible] ।

[illegible] । [illegible] ।

उ०—[illegible] सौ [illegible], राई सो भोलाई ।

—लो. गी.

[illegible] (रू. भे.)

उ०—[illegible] राई [illegible] । [illegible]

[illegible] । —[illegible]

उ०—[illegible], [illegible] राई । [illegible]

[illegible] । —[illegible]

राईड़ा—[illegible] (रू. भे.)

उ०—[illegible] राईड़ा । —[illegible]

राईण—[illegible] राई [illegible] ।

२ [illegible] ।

राईतन—[illegible] ।

[illegible] । (मा. म.)

राईत—[illegible] ।

उ०—[illegible]

[illegible] ।

—[illegible]

उ०—[illegible] राईत [illegible]

[illegible] ।

राईतू—[illegible]

पकने पर पीले रंग के होते है ।

राईण—देखो 'रायण' (रू. भे.)

उ०—१ अंतर बंदक मेर सिखर गिरी, अंतर दारुण मूंसा । एवडो अनर हारि मिमि पाळई, राईण रंग जवाना ।

—रुकमणी मंगळ

उ०—२ प्रीति नारी पातली, गदबूजां गोटा, नीकोल्यां राईण, इसी फलहुनि प्रीमाइ ।

—व. स.

राईतन—सं. पु. [सं. राजा+तनय] राजवश ।

उ०—१ पछै सोढी नूं पूछण लागी—रावळ कानड़ दे री वडी ठोड़ री नाळेर आयी छै, सु पाछो फेरत्यां तो राईतनां मांहे बुरा दीसस्यां ।

—नैणसी

उ०—२ नरै कह्यो—'इणै म्हारी बूढै बारै इजत पाड़ी । मोनूं लोक मांहे किंयो ।' सारै राईतनै गुणियो ।

—नैणसी

राईतो—देखो 'रायतौ' (रू. भे.)

उ०—१ छम छमाती भाजी, चमचमाता चीभड़ां गुड्हड़ेती पानी, मिरी भरी मांडिमी, वाल ईंदरी, गडां राईतां, संधरी सांगरी

—व. स.

राईवर—देखो 'रायवर' (रू. भे.)

उ०—म्हांवत तू मत जांणे राईवर एकलो ए, सागै छडीदार चोपदार हाकिम हवलदार, मांग्या उब्यो किल्लेदार भाई भतीजा सब परिवार......

—लो. गी.

राईबोर—सं. पु.—झड़बेरी के वृक्ष के फल, छोटे बेर ।

राईभोयण—सं. पु.—रात्रि भोजन । (जैन)

राईया—देखो 'राजा'

उ०—[illegible] वैकठ नगर राईया [illegible] ।

—पी. ग्रं.

राईलूण—सं. पु.—राई व लूण का मिश्रण जो मंगल कामना करने के लिये किसी के ऊपर वारे जाते हैं । (एक प्रथा) ।

राईवर—देखो 'रायवर' (रू. भे.)

उ०—[illegible] राईवर [illegible] गज । [illegible] सिरदार [illegible] ।

—लो. गी.

राईवाई—सं. स्त्री.—१ [illegible], [illegible] ।

उ०—[illegible], [illegible] । [illegible] । [illegible] राईवाई [illegible] । [illegible] [illegible] ।

—नैणसी

सं. पु.—२ [illegible] ।

[illegible] ।

राईसर—सं. पु.—[illegible] ।

उ०—वली धन राईसर मांडव, जाव कोटुम्बी सत्थवाहो रे। ते वीर कने घर छोडने, साधु होय ले छे लाहो रे। —जयवांणी

राउ—सं. पु. [सं. राजा, प्रा. राश्रो] राजा, नृप।

उ०—१ नितु नितु राउ अहेडइ चल्लइ। रोमि चडी रांणी इम बुल्लइ। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ राठउड़ उदियउ चउंड राउ, वेगड़इ सांड वीरम वियाउ। —र. ज. सी.

उ०—३ नरवर नळराजा तणउ, ढोलउ कुंवर अनूप। रांणि राउ पिंगळ-तणी, रीभी देखे रूप। —ढो. मा.

उ०—४ चूंडराव रिणमल्ल, राउ 'जोधो' रढरांमण। 'सूजो' 'वाघो' 'गंगेव' 'माल' गढ कोट पलट्टण। —गु. रू. बं.

रू० भे०—राऊ, राए।

राउत—देखो 'रावत' (रू. भे.)

उ०—१ राउतां पति राउत, पातिसाहां रा नर हैंवर कुंजर घड़ा पछाड़ां। चंद जसनांमी चाडां। —वचनिका

उ०—२ पडइं बंध त्रलवलइं चिंध सींगिणी गुण सांधइं। गड़ंवरि गइंवरु तुरगि तुरगु राउत रण रूंधइं। —सालिभद्र सूरि

उ०—३ तिहां नगर मध्ये किसा लोक वसइं। भणइ राय रांणा। मंडलीक। महाधर। मउड़धर। सांमंत। सेलुत। वर वीर। राउत पायक। डिडिमायन। —सभा

राउतजाई—सं. स्त्री.—वीरांगना।

राउतवट—देखो 'रावतवट' (रू. भे.)

राउति—देखो 'रावत' (रू. भे.)

उ०—देव तणइ प्रासादि चिहुं दिसि राउति दीधा हाथ। करी सनांन धरी सिरि तुलसी, सरण करचउ सोमनाथ। —कां. दे. प्र.

२ देखो 'रावती' (रू. भे.)

राउत्त—देखो 'रावत' (रू. भे.)

उ०—१ चउंड राउ दिय ऊधूल चाउ। राउत्त आपहे आप राउ। —रा. ज. सी.

उ०—२ राउत्तां गात वंबाळ रगत्त। करंमर वाहि किया करवत्त। —गु. रू. बं.

राउर, राउरौ—देखो 'रावळौ' (रू. भे.)

राउळ, राउल—१ देखो 'रावळ' (रू. भे.)

उ०—१ सौ जांणि राउळ मल्लीनाथ पुत्र रै छांनै जोयां नूं काढी दीवा। —वं. भा.

उ०—२ नळवर गढ मुझ वसिवा ठाउ मागउं राउळ हुंसु पसाउ। इह आव्यउ जस कीरति सुणी, पिंगळ राजा भेटण भणी। —ढो. मा

उ०—३ खांन भणइ-कुणि कारणि आव्या, कहउ तुम्हारउं काज। कहइ प्रधांन राउल आएसइ, कटक जोएस्यूं आज। —कां. दे. प्र.

उ०—४ द्रव्य उपारजिउं कुणहं तणौ स्वासातउ न हुई, कुणहिनौ द्रव्य उपारजिउं चोर हि उपगरइं, कु. राउल उपगरहिं, कु. द्रव्य अग्नि उपद्रवइ...... —व. स.

२ देखो 'रावळौ' (रू. भे.)

उ०—राउल माहिं रण भाणूं राय थयु पगि मंद। ब्राह्मण-वईउ सांभरइ सभा-तणउ ते चंद। —मा. कां. प्र.

राउळी, राउली—देखो 'रावळी' (रू. भे.)

उ०—स्वांमि! जु सनमुख हुसि, तु तां राउलि रांनि। वयरी वांकु म्युंकरि, आहां ऊमटइ निवांनि। —मा. कां. प्र.

राऊ—देखो 'राउ' (रू. भे.)

उ०—१ पुगळि पिंगळ राऊ, नळ राजा नरवरे नयरे। अदिठा दूरिठ्ठा ये, सगाई दईय सजोगे। —ढो. मा.

उ०—२ एक राऊ थप्पइण, एक रावां ऊथप्पण। एक राव गढ़ लियण, एक रावां गढ अप्पण। —गु. रू. ब.

राए—देखो 'राउ' (रू. भे.)

उ०—१ रट्ठौड़ रूप राए दीनौ, सुरतांण नांम दळ थंभण। हिंदुवै मुसलमांणी, विरदावियौ जोध विरदैता। —गु. रू. बं.

उ०—२ केस जरा धौवण करै, धोळा अत ही धोय। अंतक राए ऐंचतां, हात न मैला होय। —वां. दा.

राकस—देखो 'राक्षस' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—१ निरवीज करूं राकस निकर, मेट्टूं फिकर त्रिलोक मिण। धारूं वभीख लंका धणी, तो हूं दसरथ राव तण। —र. रू.

उ०—२ नमौ कुंभेण-तणा-भुज-काळ। नमौ कुळ-राकस वंस-खेंगाळ। —ह. र.

(स्त्री. राकसण, राकसणी)

राकसराय—सं. पु. [सं. राक्षस+राजा] दशानन, रावण, लंकेश। (डि. को.)

राकसरोळण—सं. पु.—राक्षसों का संहार करने वाला, विष्णु, श्रीकृष्ण, श्री रामचन्द्र आदि।

राकसवांणी—सं. स्त्री.—छै प्रकार की भाषा में से एक, पिशाची भाषा (नां. मा.)

राकसांभयंकर—स. पु.—१ ईश्वर, भगवान।

२ श्री रामचन्द्र। (नां. मा.)

३ श्रीकृष्ण।

राकसि—देखो 'राक्षसी' (रू. भे.)

राकसिया—सं. पु.—चौहान राजपूत वंश की एक शाखा।

राकसियौ—सं. पु.—उक्त शाखा का व्यक्ति।

राकसी, राकस्सी—देखो 'राक्षसी' (रू. भे.)

उ०—१ तजै राकसी देह व्है दिव्य तासं वधै देवलोकं किया जेण तासं। —सू. प्र.

उ०—२ हरीया मांस मसांण है, भूत राकसी म्हांण। सोई मखै निसाचरी, वेगुण वस्त अजांण। —अनुभववांणी

उ०—३ दळ नका दगग्गानि, रूप माया राकस्सी। बहुतरी सत्तरि नई, गात ढंचरा हूवस्सी। —गु. रू. वं.

राकां, राका—सं. स्त्री. [सं. राका] १ पूर्णिमा की रात्रि, पूनम की रात।

उ०—१ उदियागर उगियो, इंदु राकां अविरचां। रंग कुरंग दिखरणी, पाय बाधी अरचां। —कील्हजी चारण

उ०—२ सो केलपास छै सोइ राति भई। राका कहतां पूरणिमा मासो ईस चंद्रमा सोई मुग हुग्रो। —वेलि टी.

उ०—३ मजळ, मनहर, सपम, सतप, सुरस्रंग, ससीतळ। प्रात, पुनिम मत जेठ अना, विग्रह राका मिळ। —र. ज. प्र.

२ पूर्णिमा की तिथि, एक पर्व-दिन।

उ०—१ उच्छव वर्ष अजोधिया, प्रभु दरसण परमांणि। चंद्र देखि सांमंद्र वढै, जळ राका निस जांणि। —सू. प्र.

उ०—२ करि ठांम ठांम वदरण कळस, सगन गांम निज गांम सुर। न्है नजर नगं सांमंद हरग, राका निस सांमंद रुग्र। —सू. प्र.

३ पूर्णिमा की अधिष्ठात्री देवी।

४ रात्रि, रात।

५ वह युवति जो पहले-पहल रजस्वला हुई हो।

६ खुजली रोग।

७ खर तथा शूर्पनखा की माता।

राकापत, राकापति—सं. पु. [सं. राका+पति] चन्द्रमा। (डि. को.)

उ०—नगि ज्योमता जांणि वपि ताजै। राकापति निकळंक छवि राजै। —सू. प्र.

राकेस, राकेसि—सं. पु. [सं. राकेश] १ पूर्णिमा का चंद्रमा।

२ चन्द्रमा। (अ. मा., ना. डि. को.)

उ०—१ वैरी वैर न वीसरे, विना हियै ही वंक। राहु ग्रहै राकेस नूं, नभ सिर मात निसंक। —बां. दा.

उ०—२ अब गोकुळ पसवात, संकर मन भावै सदा। वांका साची वात, पूरणी जळ राकेस सम। —बां. दा.

३ श्री कृष्ण। (अ. मा.)

राक्षस—सं. पु. [सं.] (स्त्री. राक्षसी) १ एक मानव जाति विशेष जो हिन्दू धर्मशास्त्र में, अत्यन्त क्रूर व मनुष्य देव, पितर आदि की शत्रु मानी गई है।

२ दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति जो दानव, दैत्य, निशाचर, असुर आदि नामों से सम्बोधित होता है।

३ कोई अति भयंकर, क्रूर या दुष्ट प्राणी।

४ आठ प्रकार के विवाहों में से एक विवाह (राक्षस-विवाह) जिसमें कन्या के लिये उभय पक्ष में युद्ध होता है।

५ साठ संवत्सरों में से उनचासवां संवत्सर।

६ वार व नक्षत्रों सम्बन्धी बनने वाले २८ योगों में से पचीसवां योग। (ज्योतिष)

७ गंधक व पारे के योग से बनने वाला एक रस। (वैद्यक)

८ एक देव जाति।

रू० भे०—रखस, रखसस, रक्षस, रखस, रछस, राकस, राखस, राखसु।

राक्षसकेदी—सं. पु.—राक्षसों को कैद करने वाला, इन्द्र। (ना. डि. को.)

राक्षसी—वि.—१ राक्षस का, राक्षस सम्बन्धी।

२ राक्षसों के अनुरूप, अमानुषिक।

सं. स्त्री.—१ राक्षस जाति की स्त्री।

२ कोई क्रूर या दुष्ट प्रकृति की स्त्री।

रू० भे०—रच्छसी, राकसि, राकसी, राकस्सी, राक्षिसी, राखसि, राखसी।

राक्षा—सं. स्त्री. [सं. लाक्षा] लाख, लाह, जतु। (डि. को.)

राक्षिसी—देखो 'राक्षसी' (रू. भे.)

उ०—भूंटि भूंखिय महीतलि रोली। काढिवा वसन कीध हीयाली। अंतरालि थई राक्षिसी राखी, तीराइ हूई हिव होअत चाखी। —सालि सूरि

राखंद, राखंदो—वि.—रक्षक।

उ०—पूठी वांमै दाहिणै, आगळि अग्गै वांण। राजा 'गाजी साह' नूं, राखंदो रहमांण। —गु. रू. वं.

राख—सं. स्त्री—१ किसी वस्तु या पदार्थ के बिलकुल जल जाने के बाद अवशिष्ट रहने वाला तत्व या अंश, भस्म, भस्मि, राख।

उ०—घर हाळा घणो ही समझावै, पण सिर में गूंग चढायेड़ो, भूंवाळो मांतो फिरै ! मांनै कद ! माथै में राख घाल राखी है। —दमदोस

क्रि. प्र.—करणी, होणी।

मुहा०—१ राखउडणी=सब कुछ नष्ट हो जाना। ठाट बाट व रौनक समाप्त हो जाना। प्रतिष्ठा या गौरव समाप्त हो जाना।

२ राख फेंकणी, राख वगाणी=किसी व्यक्ति, कार्य या वस्तु के प्रति घृणा करना, अवहेलना करना।

३ माथै में राख घालणी=वैराग्य लेना, अपने कर्तव्य के प्रति उदासीन होना, निर्धन होना।

२ धूल, गारा।

उ०—नर द्वारां रा रसिक नवेला, अलवत भग इधकाई। देख विचार द्वार दरवै दिस, बिलकुल राख वगाई। —ऊ. का.

मह०—राखड़ो, राखूंडो, राखेड़ो।

राखउडियो–वि.–जिसकी इज्जत चली गई हो, निर्लज्ज, वेशर्म, नालायक।

उ०—१ ओटाळ, पेट रा जाया ई म्हारै मरण री बाट न्हाळै। पण आंरी छाती माथै तौ वंदी हाल बीस वरसां तांई मूंग दळैला। राखउडियां- नै आई दुरासीस देवूं के म्हनै संताई ज्यूं बुढापै थांनै ई थांरा कुणकिया संतावै। —फुलवाड़ी

उ०—२ विणियांणी कह्यौ–देखौ राखउडिया री सित्या निकळी। फेर ओ हड़मांनजी रौ पुजारी बाजै। बावरियां री गळाई चरतां इण नै लाज को आइ नीं। —फुलवाड़ी

सं. पु.–एक देशी गाली।

उ०—अबै म्हनै सगळी वात बतावौ, कठैई राखउडियौ पाछौ वेगौ नीं वळ जावै। —फुलवाड़ी

राखडो–सं. पु.–१ शिर का आभूषण विशेष, चूड़ामणि।

उ०—साजां सोल सिंगार, सोना री राखडां। सांवळियां सूं प्रीत, औरां सूं आखड़ां। —मीरां

२ देखो 'राख' (मह., रू. भे.)

राखड़ी–सं. स्त्री. [सं. रक्षिका, प्रा. रक्खिआ] १ सुहागिनी स्त्रियों के सिर (मस्तिष्क) पर धारण करने का एक स्वर्णाभूषण। (व. स.)

उ०—१ पहिरणि गजवड फालडी ए ओढवि नवरंग घाटडी ए। करअलि चूडी खलकती ए सिरि सोवन राखड़ी झलकती ए। —हीराणंद सूरि

उ०—२ पटली ब्रह्म–गन्यांन, हरी वर राखड़ी। पहरि सुवागण नारि, झरोखै आखडी। —मीरां

उ०—३ जीण म्हारी बाई ऐ रतनां जड़ाद्यूं थारी राखड़ी, हीरां जड़ाद्यूं थारौ हार। —लो. गी.

२ शीशफूल।

३ रक्षा–सूत्र, गंडा, तावीज।

उ०—१ भाठा जितरा देव पूज्या, राखड़ी मांदळिया ई कराया, गांव रा गुरांसा खने इलाज ई करायौ अर जोधपुर जाय'र डाक्टरां री छाती में रुपिया ई वाळिया पण गरज कांई सजी कोयनी। —रातवासौ

उ०—२ ताहरां कुंवरी कही सिद्ध आगा इसी राखड़ी कराई। जे बांधीजै तौ आदमी हुवै। —चौबोली

उ०—३ बार बार मांनुस जनम, पांमसी नहीं रे गिंवार। डोरा डंडा राखड़ी, जंत्र तंत्र निवार। —जयवांणी

४ खरीफ की फसल के प्रारंभ में ऊंट के गर्दन में और बैल के के सींगों के चारों ओर बांधा जाने वाला रेशम या सूत के गुच्छोंदार धागा जो मांगलिक माना जाता है।

उ०—कैणा आखड़ियां जूड़ा दै कांधै। वैंणा वळधां रै राखड़ियां बांधै। —ऊ. का.

रू० भे०–रखड़ी।

५ देखो 'राखी' (रू. भे.)

उ०—ढ़ड़लो आयौ आयौ राखड़ियां (री) तेंहवार। कुण नै बांवै ओ थारे राखड़ी। —लो. गी.

राखड़ीडोरो–सं. पु.–१ रक्षा–बंधन के दिन बांधा जाने वाला सूत्र, राखी।

२ गंडा, तावीज।

राखड़ीपूनम–देखो 'राखीपूनम' (रू. भे.)

राखण–वि.–रखने वाला, रक्षा करने वाला।

उ०—'जगड़' रांण दीधा जिता, गेवर हैवर गांम। अत्र पातां देसी इता, न्रप कुण राखण नांम। —वां. दा.

सं. स्त्री.–रखने की क्रिया या भाव।

राखणभगत–सं. पु.–भक्तों की रक्षा करने वाला, ईश्वर। (ना. मां.)

राखणप्रांण–सं. पु.–प्राणों की रक्षा करने वाला कवच, जाली। (डि. को.)

राखणो–वि.–रखने वाला।

उ०—भली राखणो रीति लाखौ भुजाळ। भडां रूप भूपाळ लीला–भुआळ। —ल. पि.

राखणो, राखबो–क्रि. स. [सं. रक्षणं] १ किसी आधार या तल पर किसी वस्तु को ठहराना, टिकाना, रखना, धरना।

२ नष्ट न होने देना, बिगड़ने न देना, रक्षा करना, बचाना, उबारना।

उ०—१ आयौ दक्खण इळा, खेड इलकार तुरंगम। राजसिंघ राखियौ कोट रखवाळ दुरंगम। —गु. रू. वं.

उ०—२ असुर बोलियौ कुबोल, पतसाह मुह आगळी, राज विण खत्री धरम कमण राखै। —केसोदास गाडण

उ०—३ हरीया क्या पछताईयै, आप और कै काज। राखणहारा रांमजी, लोक सकल की लाज। —अनुभववांणी

उ०—४ मेड़तै रूप 'भीमौ' 'किसन', 'चांपै' नाहरखांन चव। 'केहरी' पड़ै 'पातावतां', राख नांम लग चद रव। —रा. रू.

उ०—५ किण ही कह्यौ सूत्र में साधू नें जीव राखणा कह्या। —भि. द्र.

३ पालन करना, पोषण करना।

४ अपने अधिकार में करना, कब्जे में करना।

उ०—१ राखण हारा राखि तूं, आप आपणै हाथि। भी फिरि मन चाले नहीं, ऊठी और के साथि। —ह. पु. वां.

उ०—२ रांमजी री माळा रै वासदी लगाय धणी सूं छांनै बचायोड़ी गूंजी हाथ में राखती तौ म्हनै ऐ दिन नीं देखणा पडता। —फुलवाड़ी

५ सुपुर्द करना, सौंपना।

६ एकत्र करना, इकठ्ठा करना, संग्रहीत करना, मिलाना।
७ नियुक्त करना, तैनात करना, काम पर लगाना।
उ०—हटड़ों जड़ दियो, खेत खड लियो। ऊंट लीनो, हाळी राख्यो ल्हाम करी अर खेत बुहायो। —दसदोख
८ जाने न देना, रोक रखना, ठहराना, रोकना, गतिरोध करना।
उ०—१ पुडी चडियो 'जसो' सीस पतसाहां, सुभट जोत भेजवा सक। रच कंदळ त्रिण पौहर राखियो तरण मंडळ नट कुंडळ तक —जगन्नाथ सांदू
उ०—२ धावउ धावउ हे सखी, को दांवणि को लाज। साहिव म्हांकउ चालियउ, जइ कउ राखइ ग्राज। —ढो. मा.
९ कुछ करने न देना, रोकना, वर्जन करना, मना करना।
उ०—१ रांणी जळती 'ऊदै' राखी। सुख नव कोट किया जग माखी। —रा. रू.
उ०—२ तिहिवारा हूं सघलानि मारत रोती देखी ने नारी। सूं कीजै जो, वीरा माहारा, तमो ज राखो वारी। —नळाख्यांन
१० आश्रय देना, प्रश्रय देना, संरक्षण देना।
उ०—१ दांमोदर दीजै मती, कायर कांठै वास। सरणै राखै सूर नै, तेथ न व्यापै त्रास। —वां. दा.
उ०—२ हुरमां राखै अंतरे, उड़दाबेगण दुंद। हाजर खिजमत कारणै, मुख नाजर हुसमंद। —रा. रू.
उ०—३ तेरै तो आसांन सब, मेरै वौहत जरूर। हरीयै कुं करि आपनो, राखो रांम हजूर। —अनुभववांणी
११ आवास की दृष्टि से किसी को कहीं ठहराना, टिकाना, बसाना।
उ०—१ माधव तुम्हे म चालसिउ, गोरी जंपइ गुज्झ। भलुं कराविसि भुंइरूं, मांहि राखिसि तुज्झ। —मां. कां. प्र.
उ०—२ कहि तु काळिज-मांहां धरूं, रांखू ह्रदय-मझारि। मूझनि मूकी माधवा, पगलूं रखे पवारि। —मा. कां. प्र.
उ०—३ विधि सहित वधावै वाजित्र वावै, भिन भिन अभिन वांणि मुख भाखि। करै भगति राजांन क्रिसन री, राज रमणि रुखमिणि ग्रह राखि। —वेलि
१२ धारण करना, वहन करना, स्वीकार करना, मानना।
उ०—लोक लाज कुल की मरजादा, यांमें एक न राखूंगी। —मीरां
१३ चोट करना।
१४ आरोपित करना, मढ़ना, थोपना, लादना।
१५ रेहन या गिरवी रखना।
१६ सामने लाना, आगे रखना, प्रस्तुत करना।
१७ पारिवारिक या सामाजिक सम्बन्ध बनाना, मेल-मुलाकात रखना, सम्पर्क रखना।
उ०—इणी भांत मिनख रै हाथां लगायोड़ी लाय में लुगाई जै दिन रात सिळगै तौ ई मिनख सूं नातो तौ उण नै राखणौ ई पड़ैला। —फुलवाड़ी
१८ रखवाली करना, ध्यांन रखना, चौकसी करना।
उ०—म्हांरे हाटे आप भलांइ उतरचां। म्हांरी थेली राखी। एड वन चौर ले जावता तो म्हारा च्यार बेटा कुंवारा रहिता। —भि. द्र.
१९ अवलंबित करना, आधारित करना।
उ०—१ आधी रोटी ऊपरै जे कोई राखै मंन। हरीया हरि का हुय रहै, भूख त्रिखा नहीं तंन। —अनुभववांणी
२० निभाना, पालन करना।
उ०—१ रितु गांमी व्है सील राखियौ पुत्रोत्पत्ति फल पाई। पति पतनी दम्पति पिये प्यारी, नवला देह निभाई। —ऊ. का.
उ०—२ ठीक सील इक राखणौ मन करि निज अनुकूल। —वि. कु.
२१ कुछ तैयार कर रखना।
उ०—१ जाळी मगि चढ़ि चढि पंथी जोवै, भुवणि सुतन मन तसु भिळित। लिखि राखे कागळ नेख लेखणि, मसि काजळ आंसू मिळित। —वेलि
उ०—२ सीखावि सखी राखी आखै सुजि, रांणी पूछै रुखमणी। आज कहौ तो आप जाइ आवूं, अंब जात्र अंबिका तणी। —वेलि
२२ करना।
ज्यूं—विस्वास राखणौ, भरोसो राखणौ, गरव राखणौ।
उ०—१ जिण वखत मेळ पड़सी जरां कोडी रै नह कांमरो। तन चाख लगी मेटी तिका राख भरोसो रांम रो। —ऊ. का.
उ०—२ दादो सा गुमांनसिंघजी इयां री घणौ लाड राखता हा। छोटी ऊमर में ही ब्याह कर दियो हो। —दसदोख
२३ रखना।
उ०—१ हां अर नां, दोनूं मोखम में राख'र उंकारै सूं हंकारो भरचौ अर मुड्ढै सूं उठ'र रावळै कांनी मूंढौ मोड़्यौ। —दसदोख
उ०—२ वीछू, वांनर व्याळ विस, गंडक गरदभ गोल। ऐ अळगाहिज राखणा औ उपदेस अमोल। —वां. दा.
उ०—३ मनि संकांणी मारुवी, खुणसउ राखइ कंत। हंसतां प्रीसूं वीनवइ, सांभळि प्री विरतंत। —ढो. मा.
राखणहार, हारौ (हारी), राखणियौ —वि.।
राखियोड़ौ —भू. का. कृ.।
राखीजणौ, राखीजबौ —कर्म वा.।
रखणौ, रखबौ, रखणौ, रखबौ, रक्खणौ, रक्खबौ —रू. भे.।
राखदुपी—सं. पु.—चीता, तेंदुआ। (डिं. को.)

२ रखने का ढग ।

राखवरण, राखवरणौ–वि.–जिसका रंग या वर्ण राख के समान हो, श्याम, काला ।

सं. पु.–एक प्रकार का घोड़ा ।

राखस–देखो 'राक्षस' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—१ राखसां पथळ रांम महल आकास रेरा, मचीणां रा सल सांमी मांडी युध मल । —पी. ग्रं.

उ०—२ चलै राजकुमार पिता चौ, सासण पाय सहल्लै । रांवण सहत घणां खळ राखस दारुण, दैंत दहल्लै । —र. रू.

उ०—३ तद फूलमती बोली रे मांनवी तूं अठै कासूं आयौ । अठै राखस आयौ तौ तनैं मारसी । —चौबोली

उ०—४ जावतां जावतां देखे तो कासूं एक पहाड़ मांहे राखस, राखसणी रै गोडै माथौ दे सूतो छै । —चौबोली

(स्त्री. राखसणी, राखसी)

राखसपुरि–सं. स्त्री. [सं. राक्षस+पुरी] १ राक्षसों का नगर ।

उ०—इंद्र अछइ रहतू पुरराउ, विज्जमालि ते लहुडउ भाउ । चपलु भणी नइ काढिउ राइ, रोसि चडिउ राखसपुरि जाइ । —सालिभद्र सूरि

२ लंका ।

राखसि, राखसी–देखो 'राक्षसी' (रू. भे.)

उ०—१ कन्या राखसि तणीय जि सही, भीलि वाली ऊभी रही । मणि माला नु पाया नीरु, पांचइ हूया प्रकट सरीर । —सालिभद्र सूरि

उ०—२ संपेख अग नग साख सी, रत रोस मारग राखसी । तिह नाक पांण विछेद ताडे, बांण इक रघुवीर । —र. रू.

राखसु–देखो 'राक्षस' (रू. भे.)

उ०—एतइं राखसु रोसि जलंतु आवइ फुड फेकार करंतु । बेटी बूसट मारइ जांम भीमु भिडेवा ऊठिउ तांम । —सालिभद्र सूरि

राखियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ किसी आधार या तल पर ठहराया हुआ, टिकाया हुआ, रक्खा हुआ, धरा हुआ. २ नष्ट न होने दिया हुआ, बिगड़ने न दिया हुआ, बचाया हुआ, उबारा हुआ, रक्षित. ३ पालन किया हुआ, पोषण किया हुआ. ४ अधिकार या कब्जे में किया हुआ. ५ सुपुर्द किया हुआ, सौंपा हुआ. ६ एकत्र, इकट्ठा या संग्रहीत किया हुआ, मिलाया हुआ. ७ नियुक्त या तैनात किया हुआ, काम पर लगाया हुआ. ८ जाने न दिया हुआ, रोक रक्खा हुआ, ठहराया हुआ, गतिरोध किया हुआ. ९ कुछ करने से रोका या मना किया हुआ, वर्जित. १० आश्रय, प्रश्रय या संरक्षण दिया हुआ. ११ आवास की दृष्टि से कहीं ठहराया या टिकाया हुआ, बसाया हुआ. १२ धारण या वहन किया हुआ, स्वीकार किया हुआ, माना हुआ. १३ चोट किया हुआ. १४ आरोपित किया हुआ, मढा हुआ, थोपा हुआ, लादा हुआ. १५ रेहन या गिरवी रक्खा हुआ. १६ सामने या आगे लाया हुआ, प्रस्तुत किया हुआ. १७ पारिवारिक या सामाजिक सम्बन्ध बनाया हुआ, मेल-मुलाकात रक्खा हुआ, सम्पर्क रक्खा हुआ. १८ रखवाली किया हुआ, ध्यांन रक्खा हुआ, चौकसी किया हुआ. १९ अवलंबित या आधारित किया हुआ. २० निभाया हुआ, पालन किया हुआ. २१ कुछ तैयार कर रक्खा हुआ. २२ किया हुआ. २३ रक्खा हुआ.

(स्त्री. राखियोड़ी)

राखी–सं. स्त्री. १ श्रावण शुक्ला पूर्णिमा की तिथि, जिस दिन हिन्दुओं में, बहनें अपने भाइयों के तथा प्रोहित-ब्राह्मण अपने यजमानों के हाथ की कलाई के मंगल-सूत्र (रक्षा-बंधन) बांधते हैं ।

वि० वि०—हिन्दुओं में यह पर्व दिन माना जाता है और इस दिन बड़ा त्यौहार मनाया जाता है । ब्राह्मण इस दिन तर्पण करके जनेऊ बदलते हैं ।

२ उक्त दिन को बांधा जाने वाला मंगल-सूत्र, रक्षा-बंधन ।

३ गंडा-तावीज,

अल्पा०—रखड़ी, राखड़ी,

राखीपूनम–सं. स्त्री. [सं. रक्षापूर्णिमा] श्रावण शुक्ला पूर्णिमा की तिथि जिस दिन रक्षा बंधन का त्यौहार मनाया जाता है ।

रू० भे०—राखड़ीपूनम,

राखीबंध, राखीबंधण–सं. पु. सं.] रक्षाबंधनम्] रक्षा बंधन, रक्षा-सूत्र, मंगल सूत्र ।

राखीबंध भाई, राखी भाई–सं. पु.–जिसको राखी बांध कर भाई बना लिया गया हो ।

राखूंडौ, राखेड़ौ–देखो 'राख' (मह., रू. भे.)

राखोड़ियौ, राखोड़ौ–देखो 'राख' (मह., रू. भे.)

उ०—जेहा केहा त्याग, हैवर राखोड़ा हुवै । ताजी दीजै त्याग, जस लीजै सोई जगन । —बां. दा.

वि०—राख से ओत-प्रोत, राख से लिप्त, लिपटा हुआ 'संन्यासी' फक्कड़ ।

राखौ–सं. पु.–किसी रोग के निवारणार्थ मनुष्य (या किसी जानवर के भी) के शरीर पर लोहे की गर्म सलाका से, लगाया जाने वाला डाम ।

उ०—अठै रांणीजी आगै इयूं कहियौ जु कुंवरजी नू खुधा न लागै सु म्हे जांणां छां । एक गांठि छै, गिटक एक रै मांन सू भूख लागण नहीं देती छै । जाहरां नीबू जवड़ी हुसी ताहरां दलपतजी रा दुसमणां नूं दोहरी होसी । पण क्याल तेजसी बडी वेद छै, आज धनंतर छै, तिण कन्हां मूंग हेक हेक जवड़ा राखा च्यारि दिराड़ीजै तौ समाधि हुवै । —द. वि.

रागंगी–वि.–गायक, गवैया।

राग–सं. [सं.] १ अनुराग, प्रेम, स्नेह, प्यार। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ वडो धन वेस, म खोय मुदेस। चवां चित चेत, पुणी मत प्रेत। भणां धन भाग रघुब्बर **राग**। —र. ज. प्र.

उ०—२ अंग सकोमळ पेम सर भर, चूंप सभै चतरंग चितारी। साध सती जत **राग** रसांयन, सूर खिम्या कवि दास दतारी। —अनुभववांणी

—उ० ३ मुख करि किम कहतइ वर्णौ, जे तुम्ह सेती **राग**। ते मन जांणै तेह नौ, लागी जिण विधि लाग रे। —प. च. चौ.

उ०—४ फल कड़ुवा **राग** द्वेस ना, आण्यो मन सुभ ध्यांनी रे। —जयवांणी

२ ममत्व, ममता, मोह।

उ०—१ मुनि जांण्यौ जहर ज दियौ, **राग** द्वेस फल जोयौ रे। भांणेजा ने राज में दियौ, पुत्र ऊपर **राग** होयौ रे। —जयवांणी

उ०—२ कांम न ऊठै कलपना, **राग** न किन सुं दोख। जन हरिया उंन संत कुं, जीवत कहीयै मोख। —अनुभववांणी

३ लगाव, सम्बन्ध।

उ०—टिपस करै लेवा टका, नहीं मन माहै नेह। **राग** करे इण सुं रखै, गणिका अवगुण गेह। —ध. व. ग्रं.

४. आकर्षण।

उ०—ईसांन कूण मांहे हुंतो रे,कारटक नांमे बाग। पांन फलै करि सोभतो रे, दीठां उपजै **राग**। —जयवांणी

५ श्रद्धा, भक्ति, आस्था, विश्वास।

उ०—१ करियइ पूजा अनइ प्रभावना रे, धरियइ सद्‌गुरू ऊपरि **राग** रे। —वि. कु.

उ०—२ हंस कर मीरां पीय गई है प्रभु प्रसाद पर **राग**। डब्बो एक रांणांजी भेज्यौ, उसमें कारा नाग। —मीरां

६ मैथुन की भावना।

उ०—१ अकबर रत्ता **राग** सूं, रंग त्रिया रस लद्ध। जो उतपात प्रगट्टियौ, सो सुणियो निस अद्ध। —रा. रू.

उ०—२ आज सखी सपनतर दीठ, **राग** चूरे राजा पल्यंगे वईठ। —बी. दे.

७ इच्छा, अभिलाषा, कामना।

उ०—माया तजि ज्यांकूं ब्रह्महि दरसे, किया बाळक दाई। **राग** त्याग अभिमांन न कोई, आय सरूप सदाई। —स्री मुखरांमजी महाराज

८ राग रंग।

उ०—१ हरीया **राग** न रीझवौ, वेद न विद्या पाठ। काया जामी एकली, माथै खफण काठ। —अनुभववांणी

उ०—२ घट मांही घड़ीयाळ, आठ पोहर लागी रहै। हरीया **राग** रसाळ, रग रग भीतर होत है। —अनुभववांणी

९ मन में होने वाली कोई सुखद अनुभूति।

१० सुन्दरता, खूबसूरती।

११ आभा, छटा, कान्ति, शोभा।

उ०—डाभ-अणी-जल-बिंदवौ ए, जैसो संझा नौ **राग**। सुपन दरसन नी ओपमा ए, सड़न पड़न ए लाग। —जयवांणी

१२ हर्ष, खुशी, आनन्द।

१३ मनोरंजन।

१४ बातों में ली जाने वाली चुटकी, व्यंग।

१५ भाव, आशय।

ज्यूं—रोवणा में **राग** है।

१६ खेद, शोक।

१७ ईर्ष्या, द्वेष, डाह।

१८ क्लेश, पीड़ा।

१९ क्रोध, गुस्सा।

२० ग्रह अंश एवं न्यास स्वरों का वह कलात्मक प्रयोग, जिससे सुनने वाले का मन अनुरंजित हो सके। या ध्वनि की वह विशिष्ट रचना जो स्वर एवं वर्णों विभूषित हो और जो प्रांणी के चित्त को रंजित करता हो। (संगीत)

उ०—१ स्वतंत्र न्रत्यसाळ में नितंबिनीं नचैं नहीं। सुहागिनी स्वराग **राग** रागनी रचै नहीं। —ऊ. का.

उ०—२ रीझै सांभळ **राग**, भीजै रस नह भेचकै। नैड़ो आवै नाग, पकड़ीजै छावड़ पड़ै। —बां. दा.

उ०—३ तड़ लाग गयौ संग भाग तणै, सुध हीण अकब्बर **राग** सुणै। —रा. रू.

२१ छत्तीस राग-रागनियों में से कोई एक। (संगीत)

उ०—१ ताल अस्ट द्वादस तवन, सोळह भेद संगीत। **राग** छत्तीसह रागणी, पंच उकति सूप्रवीत। —मु. प्र.

उ०—२ घट मैं रास रच्यौ नर नारी, आप ही नाचै को गति-हारी। पातरि नाचै पांच पचीसुं, गावे अणभै **राग** छतीसुं। —अनुभववांणी

२२ किसी वाद्य से निकलने वाली तान, धुन, लय। (संगीत)

उ०—१ विन पावां जांह नाचिबौ, विण कर ताळ बजाय। विनां **राग** रीझायबौ, विनां कंठ सुर गाय। —अनुभववांणी

उ०—२ दिन आथमियां पछै ई पींजारा रै घरै तांत धूं-धट धूं-धट री **राग** अलापती ही। —फुलवाड़ी

२३ आवाज, स्वर, शब्द, ध्वनि।

२४ आत्मा का मूर्छा रूपी परिणाम। (जैन)

२५ रंग।

२६ लाल रंग, लाखी रंग।

२७ ललाई, लालिमा ।

उ०—तुम्हसुं लागउ नेहलउ, जांण मजीठउ राग । पट्टकूल फाटै थकें, रहैं आगा सुं लागो रे । —प. च. चौ.

२८ हाथ का कवच ।

उ०—पोरस्स नकुळ पंडव प्रमांणि, तण वधै जूसण कसण तांणि । अोपंत राग हायां अनोप, वुडतांण सीस रोपंत टोप । —गु. रू. बं.

२९ छोटा हरिण ।

उ०—तिके किण भांत रा हिरण छै ? काळा वडा वेगड़ छै, मुहडां रै डार में मेघ हुय रह्या छै मांहे राग छै जिके कूद-उछळै छै । —रा. सा. सं.

वि. वि.—कृष्ण हिरण के युवा बच्चे को 'राग' कहा जाता है । इसका रंग जन्म से श्याम नही होता । इसकी श्यामता आयु के साथ साथ बढ़ती रहती है ।

३० घोड़ा । (नां. डि. को.)

३१ राजा ।

३२ सूर्य ।

३३ चन्द्रमा ।

३४ पैर में लगाने का अलता ।

३५ एक वर्ण वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण में १३ वर्ण होते हैं ।

सं. स्त्री.—३६ छै की संख्या । * (डि. को.)

वि.—छै ।

रू० भे०—रग ।

अल्पा.—रागळी ।

रागकर—सं. पु.—एक प्रकार का रत्न । (व. स.)

रागड़—सं. पु.—१ भैंसा ।

उ०—खड़ो लांगड़ो वीर वीराधि खेतू । करै रागड़ां छागड़ां राह केतू । —मे. म.

२ बड़ी उम्र का काला हरिण ।

अल्पा०—रागड़ो ।

रागड़ो—देखो 'रागड़' (अल्पा., रू. भे.)

रागजांगड़ो—सं. पु.—वीर रस पूर्ण राग, सिंधुराग ।

उ०—जवर अभग जुध सुभट अंग कड़ां जरद्दां जड़ै । प्रगट हद राग-जांगड़ो हाका पड़ै । —विसनदास वारहठ

रागजोगिया—सं. स्त्री.—एक राग विशेष ।

रागण, रागणी—सं. स्त्री. [सं. रागिणी] १ किसी राग की स्त्री, रागिनी । (सगीत)

वि. वि.—इनकी संख्या ३६ मानी गई है । अर्थात ३६ प्रकार की रागिनियां होती हैं ।

२ कोई राग जिसकी एक निश्चित स्वरावली हो ।

३ चतुर स्त्री ।

४ मेना की बड़ी कन्या ।

५ जय श्री नामक लक्ष्मी ।

६ स्वेच्छाचारिणी, या छिनाल स्त्री ।

७ छत्तीस की संख्या । *

वि. १—स्नेह या प्रेम करने वाली, अनुरक्त ।

उ०—चित चोखो चिहुं नारि नो रे, गुणवंती कहवाय । प्रिउ ऊपरि अति रागणी, ते कथन न लोपै काय । —वि. कु.

२ छत्तीस ।

रू० भे०—रागनि, रागिणी, रागिनी ।

रागणो, रागबो—क्रि. स.—१ किसी राग या रागिनी को अलापना, साधना, गाना ।

२ अनुराग या प्रेम करना ।

क्रि. अ.—३ अनुरक्त या आसक्त होना ।

४ लीन होना, लिप्त होना ।

रागणहार, हारो (हारी), रागणियो —वि. ।

रागिओड़ो, रागियोड़ो राग्योड़ो —भू. का. कृ. ।

रागीजणो, रागीजबो । —कर्म वा./भाव वा. ।

रागदोख, रागदोस, रागद्वेस—सं. पु. यौ. [सं. राग+द्वेष] १ प्रेम व ईर्ष्या आदि मन के विकार, रागद्वेष ।

उ०—नको रागदोखं, नको बंध मोखा । नको घाटि वाधं, नको आध ओखा । —अनुभववांणी

२ छल-कपट, पक्ष-पात ।

उ०—आतम ध्यांनी आगरो, जारे बीकांनेर । रागदोख गुजरात में, निंदक जेसळमेर । —अग्यात

रागनि—सं. स्त्री.—१ जांघ, जंघा, रान ।

उ०—उडै नभ रागनि लग्ग छछोह, मलपफत पंच वरच्छनि बोह । —ला. रा.

२ देखो 'रागणी' (रू. भे.)

उ०—पुनि पारन पाठ पठावन में, गुणग्यांन न रागनि गावन में । —ऊ. का.

रागवागेस्वरी—सं. स्त्री. यौ. [सं. राग+वागेश्वरी] छत्तीस राग रागिनियों में से एक राग विशेष ।

रागमाळा—सं. स्त्री.—१ समान रूप वाली विभिन्न रागों का मिश्रित रूप ।

२ रागों के देवमय स्वरूप का काव्यात्मक वर्णन एवं चित्रात्मक अंकन ।

रागरंग—सं. पु.—१ आनन्द, प्रसन्नता, खुशी ।

उ०—१ रागरंग उछरंग रचांणा, वाग राई के वाकी । सोग

अथाग सिंधु विच सारां, त्याग पधारण ताकी। —ऊ. का.
२ आनंद व खुशी का उत्सव।
उ०—तरै असवारी कर काळीयैद्रह सिधाया। रागरंग हुवै छै छड़वड़ा खिलवत रा साथ सुं बैठा छै।
—राव रिणमल री वात
२ आमोद-प्रमोद, खेल, क्रीड़ा, मनोरंजन। हास-विलास, मौज मस्ती।
उ०—१ करंत एक दांन पुन्नि, जिग्ग होम जप्प ए। करंत एक रागरंग मोहिए सरप्प ए। —गु. रू. बं.
उ०—२ जकै दिन ही कींरो सोनो उडावै, रागरंग में जा परा'र गमावै है। —दसदोख
उ०—३ हमेसां सुधा में गरकाव रहै। कलावंत तवायफां, सात चाकर राखिया। रागरंग में मस्त रहै।
—जलाल बूबना री वात
३ नृत्य-गायन।
उ०—१ अनेक पद्मणी अवास, रूप भोमि रच्चए। अनेक रागरंग ओप, न्रतकार नच्चए। —सू. प्र.
उ०—२ वाजंत्र वजत विसाळ, रस रागरंग रसाळ। मिळ भूळ सुकिया वांम, क्रत रूप रति जिम कांम। —सू. प्र.
४ रतिक्रीड़ा।
उ०—भरमल कन्है रही सो दोनूं ही रागरंग हंसिया खेलिया मन प्रसन्न हुवौ। —कुंवरसी सांखला री वारता
रू० भे०—रंगराग।
रागरज्जु—सं. पु. कामदेव। (डिं. को.)
रागरस—सं. पु.—१ हंसी, खुशी, आनन्द।
२ आमोद-प्रमोद, हास विलास।
३ नाच-गान।
रागलता—सं. स्त्री.—कामदेव की स्त्री, रति।
रागळी—देखो 'राग' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ मंद गती तप तेज कम, छूटी रागळियां। पूरा दिन लू पोखियां, प्रगटी वादळियां। —लू.
उ०—२ डकार लेवै ही, सागीड़ी सूंसावै ही अर रागळी गुण गुणावती गैलै वगै ही। —दसदोख
रागलौ—वि. (स्त्री. रागली) जिसके मन में राग हो, राग-द्वेष, मोह करने वाला।
रागवडाळौ—सं. पु.—वीर रस पूर्ण राग, सिंधु राग।
उ०—मारू भड़ चढिआ मच्छर, करिवा भारथ कत्थ। रागवडाळा वज्जिआं, सको सचाळा सत्थ। —वचनिका
रागांरळ, रागांरळी—सं. स्त्री.—हंसी-खुशी, आमोद-प्रमोद व क्रीड़ा से मिलने वाला रस, तृप्ति।
उ०—ऊंधा चूंधा कर फेरा उळझावै, वनड़ो वनड़ी वर मनड़ो मुरझावै। रस में वेरस वस रागांरळ रीसै। दुलहणि दुलहै नै दावांनळ दीसै। —ऊ. का.
रागाउर, रागातुर—वि. [सं. राग+आतुर] प्रेम, मोह, हास-विलास आदि के लिये व्याकुल, आतुर।
उ०—सांभलि एहवा वचन कुमार, रागातुर हूवौ तिणवार। एहवी छै गुणवंती जेह, मदालसा हुसइ नहीं तेह। —वि. कु.
रागि—देखो 'रागी' (रू. भे.)
रागिणी, रागिनी—देखो 'रागणी' (रू. भे.)
उ०—१ हूं प्रीयुड़ा तुझ रागिणी, तूं का हृदय कठोर। चंद चकोर तणी परि, मांन्यउ तूं मन मोर। —स. कु.
उ०—२ राति दिवस तोरी रागिणी, राखु हृदय मझारि रे। सीत तावड हूं सहु सहूं, तूं छइ प्रांण आधार रे। —स. कु.
उ०—३ प्रीतम सूं अति रागिणी रे, रूपवंत अभिरांम।
—जयवांणी
रागी—वि. [सं. रागिन्] (स्त्री. रागणी, रागिणी) १ राग से युक्त।
उ०—जाग्यौ जैन चंद सागी, सौभागी रागी जैन धरम। वैरागी पुण्याई जागी अविकै उछाह। —ध. व. ग्रं.
२ मोह-माया में फंसा हुआ।
उ०—१ दुख सुख का कारण मन जीता, सो जन है वैरागी। कहै सुखरांम सुणो भाई साधां, और सबी है रागी।
—श्री सुखरांमजी महाराज
उ०—३ सांतिनाथ सोभागी हो लाल, सोलम जिन सागी हो। 'विनयचंद्र' रागी हो लाल, जयो तु वड भागी हो। —वि. कु.
३ ईर्ष्यालु, द्वेष करने वाला।
उ०—हरजीमल सेठ रागी थयौ जद रुघनाथजी से उरजोजी साधु मोटौ ओलियौ लइ वांचवा लागौ —भि. द्र.
४ अनुरक्त, आशक्त, मोहित।
५ विषय वासना में लीन, कामी।
६ प्रेमी, अनुरागी।
७ प्रेम पूर्ण, प्रीति पूर्ण।
८ लाल रंग का, लाल सुर्ख।
९ रंगा हुआ, रंजित।
सं. पु.—१ अशोक वृक्ष।
२ मंडवा या मकरा नामक कदन्न।
३ छै मात्रा का छंद।
४ आभूषणों में गोल चक्रनुमा खुदाई करने का लोहे का एक औजार।
रू० भे०—रागि।
रागु—देखो 'राग' (रू. भे.)

उ०—कीजइ अवसरि अवसरि नवरसि रागु वसंत। तरुणी दळ दोलारस सारस भमइ हसंत। —जयसेखर सूरि

राघव-सं. पु. [सं.] १ परमेश्वर, ईश्वर। (ह. नां. मा.)

उ०—१ ते आलेही हर तणा, जे नर नांम लियंत। से जमडंडा परहरे, राघव सरण रहंत। —ह. र.

उ०—२ आप नांम इळ ऊपरां, रसना राघव नांम। रूड़ी विध सूं राखियौ, पुरखां जकां प्रणांम। —वां. दा.

उ०—३ निमौ नरसिंघ तुहारौ नांम, कियौ पहिळाद तणौ सिध कांम। कियौ तैं राघव रूप करूर, चत्रभुज दैत हुवौ चकचूर। —पी. ग्रं.

२ विष्णु का एक नामान्तर।

उ०—राघव रयणायर रसा, सेस महेस्वर वैंण। सुणैं वधायौ गिरि सुता, सो व्हौ मो सुख दैण। —वां. दा.

३ दशरथ नन्दन श्री रामचन्द्र।

उ०—१ राघव उमंग हंस हंस रटै, खेलूं खगां खतंग रौ। रिम हणै आज पुरूं रळी, जुडूं अखाडौ जंग रौ। —र. रू.

उ०—२ रांमचंद्र नें सील राख के, कसर न राखी काई। रावन वस खोय के राघव, विजय निसांन वजाई। —ऊ. का.

उ०—३ वैर महीं तोटौ वसै, वसै नफौ नह वंक। सिया विरह राघव मह्यौ, रावण पलटी लंक। —वां. दा.

४ रघु का वंशधर।

५ अज।

६ एक बड़ी जाति की मछली।

रू० भे०—राघवि, राघव्व, राघौ।

अल्पा.—राघवौ।

राघवराई-सं. पु. [सं. राघव+राजा] १ श्री रामचन्द्र।

२ ईश्वर।

उ०—संत सिहाई, राघवराई वौ हरि गावौ पै उध पावौ। —र. ज. प्र.

राघवानंदी-सं. पु.-वैष्णव संप्रदाय की एक शाखा व इस शाखा का अनुयायी।

राघवि-देखो 'राघव' (रू. भे.)

राघवेंद्र-सं. पु. [सं. राघव+इन्द्र] रघुवंशियों में इन्द्र, श्री रामचन्द्र।

राघवेस-सं. पु. [सं. राघव+ईश] श्रीरामचन्द्र।

उ०—सदा नमंत ओघराय, पाय धू सुरेस रे। वदां नरेस आंन कुण, जोड़ राघवेस रे। —र. ज. प्र.

राघवौ-देखो 'राघव' (अल्पा., रू. भे.)

राघव्व, राघौ-देखो 'राघव' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ समांणौ तूझ महीं घणस्यांम, राघव्व अम्हीणौ आतम रांम। —ह. र.

उ०—२ नगां आकर तणौ रूप हर मणी निज। रूप कुळ दिवाकर तणौ राघौ। —र. ज. प्र.

उ०—३ कीजै वारणै छिब्र कांम कौटिक, दीन दुख दाघौ। साभाव सरण-सधार स्रीवर, राज रौ राघौ। —र. ज. प्र.

उ०—४ सही सेस लाखंमणां धारि सोधा। जगदीस राघौ सको देव जोधा। —सू. प्र.

राड़-सं. स्त्री. [सं. रारि, प्रा. राडि] १ युद्ध, झगड़ा, समर। (अ. मा.)

उ०—१ तोयधी गिरराज तारै, प्रगट कर कपि सेन पारै। रची लका राड़। —र. ज. प्र.

उ०—२ कोतकंसो मंडे भाल कपी, थाटां हुय सुण जै राड़ थपी। थिर थाटां मैं जग राड़ थपी, करस्यूं निरवीजा भाळ कपी। —र. रू.

उ०—३ धाड़े पुकार पड़ लाखि धाड़। रवि उदय अस्त लग पंच राड़। —रा. रू.

उ०—४ चौवारां लाखीक चाडतौ, किलम पंचाहर कीयां कर। राड़ विभाड़ सोहियौ राजा, अरवक ज्यूंई दळ फाड यर। —गु. रू. ब.

२ कळह, गृह-कळह।

उ०—१ इणरै सागै तीजी लुगाई री गिरै। वा हजारां में टाळकी ही। राड़ री तौ उण नै फगत मिस चाहीजतौ। बांणिया रै तौ नाकां दम कर दियौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ रोग अगन अरु राड़ जांण अलप कीजै जतन। वधियां पछै विगाड़, रोक्यौ रहै न राजिया —किरपारांम

३ तकरार, हुज्जत।

उ०—१ मासी सैं समझती, पण जोर कांई करती। नित जणा जणा सूं राड़ करचां के खसियां कांई हाथ आवै। —फुलवाड़ी

उ०—२ भांणजी कह्यौ—मासी थनै ई राड़ करियां विना रंजत नीं व्है। थारा बेटा पटिया तुड़ाता व्हैला, थूं छेकी जावै जकी वात करै नी, क्यूं विरथा आडी-डोढी खसती फिरै। —फुलवाड़ी

४ दिक्कत, समस्या, रगड़ा।

उ०—चोरां रै तौ आज नांमी सुगन व्हिया। यूं माल चौड़ै मिळ जावै तौ कांई चाहीजै। सेठांणी राड़ जंडी ई वात को राखी नी। —फुलवाड़ी

५ दरार।

उ०—घण घण साच बधाय, नह फूटे पाहड़ निवड़। जड़ कोमळ भिद जाय, राड़ पड़ै जद राजिया। —किरपारांम।

६ शाप, बददुआ।

रू० भे०—राड़ि, राड़ी, रार, रारि, रारी

राड़क-सं. पु.-योद्धा, वीर।

वि०—कळहप्रिय, झगड़ालू।

राड़गारो–देखो 'राड़ीगार' (रू. भे.)

उ०—१ सो जतन तौ घणा ही किया पिण उहां रौ लोग **राड़गारौ** सो भिळ गयौ —मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता

उ०—२ पछै हिसार रौ फौजदार चढ़ आइयो सो भागियौ इसा जालम **राड़गारा** बड़ा मरद राजपूत था। —ठाकुर जयतसी री वारता

राड़थंभ–सं. पु.–योद्धा, वीर।

राड़द्रह–सं. स्त्री.–१ राठौड़ों की एक उप-शाखा।

उ०—सू बालीत देवळा (ड़ा) सींधळ, दवि वोड़ा वाळीसा देवळं। **राड़द्रहां** सोढां मछरीकां, सेव ग्रही भिळि मसळि सरीकां। —रा. रू.

२ देखो 'राड़धरा'

उ०—मिळ दळ प्रवळ **राड़द्रह** मारै। सार ग्रसुर साचोर संघारै। —रा. रू.

राडधड़ा, राड़धरा–सं. स्त्री.–बाड़मेर जिले के एक क्षेत्र विशेष का प्राचीन नाम जो राड़ ऋषि के नाम पर पड़ा था। (मा. म.)

वि० वि०—इस प्रदेश के घोड़े बढ़िया माने जाते थे।

राड़धरी–वि. स्त्री.–राड़द्रह की, राड़द्रह सम्बन्धी।

उ०—रांमाजी री ठकुरांणी **राड़धरी** जिण री रावजी नूं कह्यौ रावजी नूं बाहर काढी। —बां. दा. ख्यात

राड़ांजीत, राड़ाजीत, राड़ाजीतौ–वि. (स्त्री. राड़ांजीतणी) युद्ध में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, वीर।

उ०—उकंधां नमाय कंधा संधा रा विरद्दां ग्रादू, तौरा जोंमरद्दां वाळां बखेरे तरांह। 'भवानेस' हरा **राड़ांजीत** रांण वारां माळी, समंदरां वारपारां तुहाळी सराह। —गोरांदांन ग्रासियौ

राड़ि–देखो 'राड़' (रू. भे.)

उ०—१ त्रिपि नसां मांहि चकचूर, हुय, सरघा दूर सिधायगी। खित **राड़ि** समै किय खत्रियां, वाड़ खेत नै खायगी। —ऊ. का.

उ०—२ छयल्ल देह छेदती, भ्रुहां कोवंड भेदती। धांनंखणी सु घाड़ि घाड़ि. रुति मांडै वीर **राड़ि**। —मा. वचनिका

उ०—३ देवि द्रूपदिय **राड़ि** सांभळी, हाथि लेइ हथीयार ग्रांखिळी भीमु भीरु इम कीचइ कूटइ, तेह ग्रागली न कोई छूटइ। —सालिसूरि

२ देखो–'राड़ी' (रू. भे.)

राड़िगार, राड़िगारौ–देखो 'राड़ीगारौ' (रू. भे.)

उ०—मारै वैरियां ग्रखूटी ग्राव भूपाळां खांडियौ मांण, तेग धारै नकौ पांण छांडियौ तमांम। वीर राव छळां जाग तांडियौ दला रै वैर, **राड़िगारै** उखेलौ मांडियौ 'जोगीरांम'। —बनजी खिड़ियौ

राड़ी–वि.–१ लड़ाई या झगड़ा करने वाला, झगड़ालू।

२ जबरदस्त, जोरदार।

३ योद्धा, वीर।

उ०—१ खींचीकुल 'दूदौ' ग्ररि खावण। राड़ी दुलह हुवौ वळ रांवण। —वं. भा.

उ०—२ इक पड़ै रीठ गोळां ग्रतर, देखि रुठा कमधज **राड़िया**। भूखाळ वधै जिम देखि भख, ग्राया बागा उपाड़िया। —सू. प्र.

४ देखो 'राड़' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—राव बिन फिरंग झेलै कवण **राड़ियां**। (जिण रौ) भमै नवनाड़ियां बीच भंमरी। —रावत जोधसिंह कोठारिया री गीत

रू० भे०—राड़ि

राड़ीगार, राड़ीगारौ–१ योद्धा, वीर

उ०—१ **राड़ीगार** चहुग्रांण जाती राड़ थोब राखी। साखी चंद-सूर जेते वातां माह सूर। —रावत जोधसिंह कोठारिया री गीत

उ०—२ चळ लवबै कूरमां निवावां, वोलै वांका तेण जवावां। कोट धरै सांमांन ग्रकारा, गरट किया भड़ **राड़ीगारा**। —रा. रू.

२ कलह प्रिय, झगड़ालू

रू. भे.—राड़गार, राड़िगार, राड़िगारौ

राड़ौ–देखो 'राड़' (मह., रू. भे.)

उ०—**राड़ौ** सालूळौ ग्रत्यगां वेघ वधै सोवां रायजादां, सतारा उछाजां जूह उमडै सजीत। घोर बेळा प्रथम्मी ग्रांणतां सूत हेक घाटै, ग्रासमांन फाटै थंभ लगायौ 'ग्रजीत'। —ग्रजीतसिंह चूंडावत री गीत

राच–देखो 'राछ' (रू. भे.)

राचणी–वि. स्त्री.–१ जिसका रंग अच्छा व गहरा जमता हो, रंजित होने वाली।

उ०—महंदी वायी-वायी वाळूड़ा री रेत। पेमरस महंदी **राचणी**। महंदी सींची सींची जळ जमना रे नीर, पेमरस महंदी **राचणी**। —लो. गी.

२ शोभा देने वाली, सुन्दर लगने वाली, खिलने वाली, निखरने वाली।

उ०—पांनां रे सरीसी थारी धण **राचणी** ग्रो राज। राज ढोला राखो नी थांरे मुखड़े रे मांय। —लो. गी.

३ अनुरंजित होने वाली।

सं. स्त्री.–मेंहदी।

उ०—हरसा मेरा बाला रै, कुण तो रै गूंथैलै वाई रौ सीस। ग्रोदर का रै लोट्या, कुण तो मांडेगो हाथां **राचणी**। —लो. गी.

राचणो–वि. (स्त्री. राचणी) रंजित होने वाला, रंजित होकर खिलने वाला, जमने वाला।

उ०—प्रेम विहूंणी प्रीति, जोए मन न ठरै 'जसा'। रस विण पांना रीति, रंग न ग्रावै **राचणो**। —जसराज

राचणौ, राचबौ–क्रि. ग्र. [सं. रक्तिति प्रा. रच्चइ] १ किसी रंग

का किसी वस्त्र या वस्तु पर बैठना, जमना, जमकर कर चमकना।
२ मेंहदी के रंग से रंजित होना, मेंहदी का रंग खिलना।

उ०—मौराकीन रौ लंघौ, गुलाबी चीर अर कसूमल चोळी री सोणी पैरांन। हाथां रै राच्योड़ी मैंदी हीगळू री टीकी, गज-गज लांबा, वांसवाळी सूं सरगळ वाळ। —दसदोख

३ रंजित होना, रंगजाना।

उ०—रिधि सिधि सवही दासी, जोड़ै हाथ खड़ी। इनके रंग राचे नहिं कवहूं, आतम जांण जुड़ी। —स्त्री सुखरामजी महाराज

४ अनुरक्त होना, आसक्त होना, प्रेम के रंग में रंगीजना।

उ०—१ रांम राजै रसा रूप रे, नेतवंधी वर्णं नूपरे। सीत वाळौ पती साच रे, रे मना जेणहूं राच रे। —र. ज. प्र.

उ०—२ नर राचौ म्है ना लखी, तूं कत लख्यौ मुजांण। पढ कुरांण रीतौ रह्यौ, राच्यौ नहं रहमांण। —अग्यात

उ०—३ पति वरता सो जांणीयै, हरीया पति सूं हेक। रांम विनां राचै नहीं, आवौ जाय अनेक। —अनुभववांणी

उ०—४ रयणाहर रयणे भरयउ, गंभीर सुंदर रीति। राजहसा राचइ नहीं, मांन सरोवर प्रीति। —स. कु.

उ०—५ अताची आगलि नाचसि, मनेका गुण गाई राचसि। रुहूं सुख पांमिस मुंदरी, सुरपति नि भरत्तार ज वरी। —नलाख्यांन

५ लीन होना, मग्न होना, मस्त होना।

उ०—साखी रे भांण नसापत सारै, कीध महाजुध कीत सकांम। साच तकौ कज साधां सारत, राच महीप सु रांमण रांम —र. ज. प्र.

उ०—२ हदि बैठा हदि की कहै, वेद पुरांनां वाचि। हरीया वेहद वावरा, रहया रांम सुं राचि। —अनुभववांणी

उ०—४ स्रीरांम चरण चित राचियौ, जन दूजौ हे नहिं आवै दाय। —गी. रां.

६ लिप्त होना, उलझना, फंसना।

उ०—१ सांच झूठ झूठ सांच राचतौ रहचौ। रूप कूं कुनांव नांव नांवतौ रहचौ। —ऊ. का.

उ०—२ मेहल पिलंगादिक अथिर छै, सो तो आया आपणे हाथ। आंपै भोग मांहे राची रह्या, आप समझै प्रथ्वीनाथ। —जयवांणी

उ०—३ तै भद्रक परिणांम थी जी, सुविसेखैं मन लाय। ऊपरलै आडंवरैंजी, राचि रहचौ सुरभाय। —वि. कु.

७ प्रभावान्वित होना, प्रभाव में आना।

उ०—तरुणी जिण धनवांन तजि, तजियौ वेस विभाग। चारुदत द्विज ही चहै, राची गुण अनुराग। —वं. भा.

८ शोभित होना, शोभा देना, फवना।

उ०—१ म्हारा जांमण जाया भावज रै राचै रे विछिया वाजणा —लो. गी.

उ०—२ सुर में फोग महेस, रेत भमसी पर राचै। चांद आगिया माथ, जटा लासूड़ा जांचै। —दसदेव

९ प्रसन्न होना, खुश होना।

उ०—१ चारण भट्टां वांभणां, वयण सुणावैं सूंव। थे राजी सनमांन सूं, दीवै राचै हूंव। —वां. दा.

उ०—२ मुख में कदै न राचियै, दुख नां रहियै रोय। अजैं धणीरा दीहड़ा, की जांणू की होय। —अग्यात

१० फैलना, छा जाना।

उ०—१ माचै खाग झांटां राचै तंवाई छ खंडां माथै। रत्रां आटपाटां नदी वहाई रोसाग। —सूरजमल मीसण

राचणहार, हारौ (हारी), राचणियौ —वि.।
राचिओड़ौ, राचियोड़ौ, राच्योड़ौ —भू. का. कृ.।
राचीजणौ, राचीजवौ —भाव वा.।
रातणौ, रातवौ —रू. भे.।

राचियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ वस्त्र या वस्तु पर बैठा हुआ, जमा हुआ, जमकर चमका हुआ. (रंग) २ मेंहदी के रंग से रंजित हुवा हुआ, मेंहदी का रंग खिला हुआ. ३ रंजित हुवा हुआ, रंगा गया हुआ. ४ अनुरक्त या आसक्त हुवा हुआ, प्रेम के रंग में रंगा हुआ. ५ लीन, मग्न या मस्त हुवा हुआ. ६ लिप्त हुवा हुआ, उलझा हुआ, फंसा हुआ. ७ प्रभावान्वित हुवा हुआ, प्रभाव में आया हुआ. ८ शोभित हुवा हुआ, फबा हुआ. ९ प्रसन्न या खुश हुवा हुआ. १० व्याप्त हुवा हुआ, फैला हुआ, छाया हुआ।
(स्त्री. राचियोड़ी)

राचोड़ी—स. स्त्री.—१ वढ़ई के औजार रखने की पेटी।
२ देखो 'रछांनी' (रू. भे.)
रू० भे०—राछोड़ी।

राचोड़ौ—देखो 'राचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. राचोड़ी)

राछ—सं. पु. [स. रक्ष] (रक्षा प्रयोजनं अस्य तद् रक्षम्) १ किसी कारीगर के काम आने वाला औजार, उपकरण या साधन।

उ०—१ खूंट्यां माथै पैरण रा गाभा वाळ में डोला, तेजाव में घड़्या-घाट खोळा हा। आळां में राछ अर मोखी-झरोखा में भांत-भांत रा न्हांना-मोटा सचा मेल्या पड़्या है। —दसदोख

उ०—२ अर हरांमखोर तेजसी वैद वेवै एकठां मिळ अर कारीगर महूरत पूछि, आप मांहै सिरचद तेजसी मिळी मसलत करी अर डांभ रौ राछ एकै जिनस रौ घड़ायौ। —द. वि.

२ शिश्न।

उ०—सत्रू सूं दिल साफ, सेणा सूं दोखी सदा। वेटा साहूं वाप, राछ घस्या क्यों राजिया। —

२ अस्त्र-शस्त्र।

रू० भे०—राच ।

राछांनी—देखो 'रछांनी' (रू. भे.)

राछपीछ—सं. पु.—देखो 'राछापूंजी'

उ०—ढोर-डांगर, थोड़ो घणो गैणों गांठो **राछ-पीछ** अर दोनूं भूंपड़ा, जिकांनैं रणछोड़ रातदिन एक करनैं वडी मुस्किल सूं बणाया हा, सगळा ई सेठां रा व्हैगा। भूंपड़ा रा बारणां माथै राज रा चेपा लागग्या। —रातवासो

राछापूंजी—सं. स्त्री. यौ.—१ किसी कार्य में उपयोग किये जाने वाले औजार या उपकरण।

२ गृहस्थ सम्बन्धी सम्पूर्ण सामान।

उ०—भूख सूं मिळग्या। **राछा-पूंजी** वेच-वेच'र खाणी पळा'ली। मूंघो ल्यावै अर सूंघो वेचै है उपज अर खरच री लीक नी खैंचै। —दसदोख

(मि. आथापूंजी)

राछोड़ी—१ देखो 'राचोड़ी' (रू. भे.)

२ देखो 'रछांनी' (रू. भे.)

राजंद, राजंद्र—देखो 'राजेंद्र' (रू. भे.)

उ०—१ ऐस रमण सेजां अंतर, रूडौ धण रौ रूप। **राजंद** रौ हित निरखवै, ऐनक छाप अनूप। —पनां

उ०—२ नमो जप तप्प किता जोगिंद, राजा स्रीराम नमो **राजंद**। —ह. र.

उ०—३ तुरंगां पाखरां सिलहां साखतां, **राजंद** एहा वोल रहावै। मोहकमियौ मेवासां माथै, ऊगै विहांणै चोकस आवै।

—म्होकमसिंघ राठौड़ री गीत

उ०—४ अणुहार अखाडौ इंद्र रौ, जोधह-पुर इंद्रा-पुरी। 'गजमिंघ' इंद्र **राजंद्र** गति, सरव इंद्र सामगरी। —गु. रू. बं.

राजंसी—वि. [सं. राज्य-वंशी] राज वंशी, राजा के खानदान का।

उ०—सुरा पांन भामुख सैहेत, करी गोठ तिण ठोड़। रात सरोवर पर रह्यौ, **राजंसी** राठौड़। —पा. प्र.

राज—सं. पु. [सं. राज्य] १ किसी राजा के अधीन रहने वाला देश, जनपद, राज्य।

उ०—१ सब कूं छांड भज्यौ साहिब कूं गुरु की सरण गई। रांणाजी रौ **राज** त्यागौ संत मुख आइ गई। —मीरां

२ शासन, सत्ता, हुकूमत, राज्य।

उ०—१ रावळ रांमचंद सिंघ रौ। सिंघ भांनीदास रौ। भांनीदास हरराज रौ टीकै बैठौ। मास १० दिन २० **राज** कियौ। पछै **राज** फिरियौ। —नैणसी

उ०—२ अकबर लेख प्रमांणे, तहवर सहत **राज** लोभांणे। भावी चित अचींती, विणसण गा (का) ळ बुद्धि विपरीती।

—रा. रू.

उ०—३ बजाड़ै केता फेरां वंस, किता तैं फेरां जीत्यौ कंस। राजा उग्रसेण समंपे **राज**, करै जदुवंस तणा सिध काज।

—ह. र.

उ०—४ मन बुद्धि चित्त अहंकार मति, समरंनि तनां अेवड सकति। रहमांण तुहारौ अटल **राज**, वीठल्ला छिमै सिणगार वाज। —पी. ग्रं.

उ०—५ सवार-सिञ्झ्यां तीनूं भेळा वैठनैं लूखी-सूखी खायनैं माथै ठाडो पांणी पीलां तो म्हांनै जांणै सुरग रौ **राज** लाधौ।

—फुलवाड़ी

३ शासन करने वाली संस्था, प्रशासन, सरकार प्रशासन मण्डल।

उ०—१ **राज** रै आं लखणां सूं तो सुभट दीसै के अबै आपांरी माया आपांनै ई रुखाळणी पड़ैला। भरोसै रह्यां थांरै साथै ई आपांनै ई मरणो पड़ैला। —फुलवाड़ी

उ०—२ पोहरा देवणिया छोटा आदमी पोहरा देवै अर **राज** करण वाला राज करै। —फुलवाड़ी

४ कुछ करने की सामर्थ्य या अधिकार।

५ प्रशासन या शासन करने की अवधि, शासन-काल, राज्य काल।

उ०—क्रत पूरण वधियौ कळू, रीत दवापुर **राज**। वंस हूंस अवतंस विध, 'अभैसाह' महाराज। —रा. रू.

६ प्रभाव, प्रभुत्व, नियंत्रण।

उ०—ओउं सोउं सवद की, सहजां सुणी अवाज। जनहरीया इन ऊपरै, ररंकार का **राज**। —अनुभववांणी

[सं. राज्, राजन्] ७ राजा। (डिं. नां. मा.)

उ०—१ **राज** भगीरथ रांम, जुजठळ जस जण जण जपै। कीधां मोटा कांम, नांम रहै 'जेहळ' नरां। —बां. दा.

उ०—२ द्रूपदी रहइ ओलग कीजइ, तूं कन्हइं हिव दीह गमीजइ। जां न **राज** सह पांडव होइ, मूं हरइ अवर ठांम न कोई। —सालिसूरि

८ पति, प्रियतम।

उ०—१ ऊंची चढ चढ गोखड़े, ऊंची ऊंची होय। जोऊं मारग **राज** रौ, आवण किण दिन होय। —अग्यात

उ०—२ सिकारां रम रह्यौ म्हांरौ **राज**। चंगा वाज राजे असवारां, संग अलबेलो साज। —रसीलेराज रो गीत

उ०—३ अंब तजइ नहि कोइलां, सरवर सालूरांह। **राज** हिवइ मा पांतरउ, आ धण छउ अवरांह। —ढो. मा.

९ स्वामी, मालिक।

उ०—थां री धण री भेजी अठे आई जी, थांरी धण रा कागद साथ। भंवर, थे बांच लेवो, म्हांरा **राज**। —लो. गी.

१० राजा या किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिये सम्मान-सूचक सम्बोधन शब्द, श्रीमान ।

उ०—१ तरै दमनी छोकरी बोली, राज इसी वात मूंढा मांहि सूं क्यूं काढो छो । —पंचदंडी री वारता

उ०—२ ताहरां पावूजी कह्यौ-राज आप विराजो । हूं ले आईस । —नैणसी

११ राजा या राज्य से सम्बन्धित व्यक्तियों, विषयों या तत्वों के नाम के पूर्व लगने वाला शब्द

ज्यूं—राजवेद, राजकवि, राजमहल, राजहंस ।

१२ धर्मराज ।

१३ कवि ।

१४ तामीर का कार्य करने वाला मिस्त्री, शिल्पी ।

१५ दीपक बुझने की क्रिया, अवस्था या भाव ।

१६ अंधेरा ।

१७ गीत की लय ।

उ०—सुणोश्रो भंवर । म्हांनै सपनौ सो आयो जी राज । सपना री अरथ वतावो जी राज । कहो ऐ गोरी थांनै किण विध आयो जी राज सपना री अरथ वतावो जी राज —लो. गी.

[फा. राज] १८ गुप्त वात, भेद, रहस्य ।

सर्व०—आप, श्रीमान

उ०—१ राज तणी इच्छा रघुराया । अखिल चराचर जीव उपाया । —ह. र.

उ०—२ तरै भाटिये सारां कह्यौ—हमैं राज कहौ सु करां । —नैणसी

उ०—३ निरधन के धन राज हो, निरवळ के वळ राज । राज विना हम दीन को, कौन सुधारे काज । —गजउद्धार

वि०—१ प्रिय, प्यारा ।

उ०—तूं छै, ए कुरजां, भायेली, तूं छै धरम री बैण । एक संदेसो, ए वाई म्हारी, ले उडो, ए म्हारी राज, कुरजां म्हारो पीव मिळा दे ए । —लो. गी.

२ प्रमुख, मुख्य ।

रू० भे०—राजि, राजु ।

राजभंग—सं. पु.—मंत्री । (डि. नां. मा.)

राजइंद—देखो 'राजेंद्र' (रू. भे.) (डि. को.)

राजकंवर, राजकंवार—१ देखो 'राजकुमारि' (रू. भे.)

२ देखो 'राजकुमार'

उ०—१ महाराज तणी चिंता मिटै, विध इण आज विचारियां । सुभ काज वार रहसी सिघर, राजकंवर पाधारियां । —रा. रू.

उ०—२ मरण जनम चौ सळ मिटण, सौ सलभ व्है संभार । जंम मौ सळ भंजै जिसौ, कौसळ राजकंवार । —र. ज. प्र.

(स्त्री. राजकंवरी, राजकंवारी)

राजकंवरी, राजकंवारी—देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

उ०—नेह निज रीझ री वात चित ना धरी, प्रेम गवरी तणौ नाहिं पायो । राजकंवरी जिका चढी चंवरी रही, आप भंवरी तणी पीठ आयो । —गिरवरदांन सांदू

राजकथा—सं. स्त्री. [सं.] १ राजाओं का इतिहास, तवारीख ।

२ राजनीतिक चर्चा ।

उ०—रोटी चरखो रांम, अतरो मुतळब आपरो । की डोकरियां कांम, राजकथा सूं राजिया । —किरपारांम

राजकदंब—सं. पु. [सं.] १ कुछ बड़े और स्वादिष्ट फलों वाला एक प्रकार कदंब का वृक्ष ।

२ उक्त वृक्ष का फल

राजकन्या—सं. स्त्री. [सं] राजा की पुत्री, राजकुमारी ।

रू० भे०—रायकन्ना ।

राजकमळा—सं. स्त्री. [सं. राज-कमला] राज्य लक्ष्मी ।

उ०—पाळ गजां पांच दोमजां प्रिथमी, जां लग मेर मेखळा । तां लग कमधज्ज राज चिजी, व्है भुगतै राजकमळा । —गु. रू. वं.

राजकर—सं. पु. [सं.] राजा द्वारा प्रजा से लिया जाने वाला कर, महसूल ।

राजकरता—वि. [सं. राज्यकर्तृ] राज्य करने वाला, राज्य का शासक ।

सं. पु.—वह व्यक्ति जो किसी राज्य के सिंहासन पर किसी को बैठाने या उतारने की क्षमता रखता हो ।

राजकवार—१ देखो 'राजकुमार' (रू. भे.)

२ देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

राजकाज—सं. पु. यो.—राज्य के काम काज, शासन सम्बन्धी कार्य ।

उ०—आसिरवाद द्विज रीझ उचारै, राजकाज सिध व्हो राजा रै । —सू. प्र.

राजकार—सं. पु.—राज्य कर्मचारी ।

उ०—मंत्रिमहामंत्री ग्रहवाहक स्त्रीकरणिक व्ययकरणि राजकार वरमाधिक सौवरणककरणि······ —व. म.

राजकारिज—सं. पु.—राज्य व शासन सम्बन्धी कार्य ।

उ०—देवीसिंघ वाला ही पण में राज पायो । काकै बुद्धसिंघजी राजकारिजै नै जमायो । —शि. व.

राजकिरिया—सं. स्त्री. [सं. राज्य-क्रिया] राजनीति ।

रू० भे०—राजक्रिया

राजकुंअर—१ देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

२ देखो 'राजकुमार' (रू. भे.)
(स्त्री. राजकुंअरी)

राजकुंअरि, राजकुंअरी—देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

उ०—१ राजकुंअरि देखी नइ हसी पूछी वात सवे तिण जसी। इण परि जांणी सघलउ भेउ दोरउ वांधि पगि वलि लेउ। —हीराणंद सूरि

उ०—२ संग सखी सील कुळ वेस समांणी, पेखि कळी पदिमणी परि। राजति राजकुंअरी राय-अंगण, उडीयण वीरज अंब हरि। —वेलि

राजकुंआर—१ देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)
उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति जिके रायजादी राजकुंआर छै त्यांरी खवास्यां देही री आरासि करै छै। —रा. सा. सं.

२ देखो 'राजकुमार' (रू. भे.)
(स्त्री. राजकुंआरी)

राजकुंआरी—देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

उ०—इण भांत ऊजळै पतिव्रत री पाळणहार ऊजळी सखिआंरी टोळी मूं राजहंस राइजादी राजकुंआरी झरोखै चडी झांखै छै। —रा. सा. सं.

राजकुंवर, राजकुंवार—१ देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)
२ देखो 'राजकुमार' (रू. भे.)

उ०—१ परभात हुवौ तद नायण कही राजकुंवर जी कठै। ताहरां इयै कही कुंवर तौ रातै मूवौ। सु रातोरात राकस उठाय ले गया। —चौबोली

उ०—२ मोज महण मूरत मयण, लोयण लाज अपार। जेहल राजकुंवार जिम, कुण अन राजकुंवार। —बां. दा.
(स्त्री. राजकुंवरी, राजकुंवारी)

राजकुंवरी, राजकुंवारी, राजकुआरि, राजकुआरी—देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

उ०—वाललीला माहे राजकुआरि ढूलडिया रमै छइ। —वेलि टी.

राजकुमार—सं. पु. [सं.] (स्त्री. राजकुमारी) राजा का पुत्र, राजकुमार।
रू० भे०—रांयकंवर, राइकुंअर, राइकुंवर, राजकंवर, राजकंवार, राजकवार, राजकुंअर, राजकुंआर, राजकुंवर, राजकुंवार, रायकंवर, रायकूंअर, रायकूयर, रायांकवर।

राजकुमारी—सं. स्त्री. [सं.] राजा की पुत्री, राजकुमारी।

रू० भे०—रांयकंवरी, राइकुंअरि, राइकुंवरि, राजकंवरी, राजकंवारी, राजकुंअरि, राजकुंअरी, राजकुंआर, राजकुंआरि, राजकुंवरी, राजकुंवारी, राजकुआरि, राजकुआरी, रायकंवरी, रायकुंवरी।

राजकुळ, राजकुल—सं. पु. [सं. राज्य-कुल] १ राजा का वंश, राजा का कुल, राजवंश।

उ०— माम दस माता के उदर रहे महिमा तैं, राजपद पावै या कहावै राजकुळ में। —ऊ. का.

२ राजा का दरवार, न्यायालय।

उ०—जिन मंदिर धवल मंदिर राजकुल देवकुल अट्टाल प्रासादमाल लेग्वसाल ओसधमाल रयसाल। —व. स.

रू० भे०—राजकुळि, राजकुळी, राजकुली।

राजकुळि, राजकुळी, राजकुलि, राजकुली—वि.—राजा के वंश का, राजा का वंशज राजवंश का।
स. पु.—१ राजवंश।
उ०—तिण नगरी रै विगै राजा भोज राज्य करै। छत्तीस राजकुळी राजा री सेवा करै। —चौबोली
२ राजा के परिवार का सदस्य।
३ देखो 'राजकुळ' (रू. भे.)

उ०—१ खट-त्रीस वंस राजकुळी सिरोमणि सूरज वंसी राजांन मारवाड़ि रा नव कोट री ठकुराई जळावोळ राज-पदवी भोगवै। —रा. सा. सं.

उ०—२ क्षण एक जाइ आयुधसालां, क्षण एक जाइ वाहणि, क्षण एक जाइ राजकुलि, क्षण एक जाई देवकुलि, क्षण एक जाइ राजवाटिकां, क्षण एक जाइ वाटिकां, इसी क्रीड़ा करइ। —व. स.

राजकोलाहल—सं. पुं—संगीत में ताल का एक भेद विशेष।

राजक्रिया—देखो 'राजकिरिया' (रू. भे.)

राजखग—सं. पु. [सं. खगराज] गरुड़।

उ०—हुवै गाज गजराज घजराज ठड़हड़ हुवै, भिड़ै कर साज भड़ जिकै भागै। विकट अरिराज अहिराज री वरोवरि, उड़ै पंख राजखग डकर आगै। —रावदेवीसिंघ सेखावत री गीत

राजग—सं. पु [देशज] राठौड़ वंश की एक उप शाखा व इस उप शाखा का व्यक्ति।
वि.—राज्यगामी।

राजगत, राजगति, राजगत्ति—सं. स्त्री.—१ राजनीति।

उ०—विराजमांन राजयांन कमंधज्ज भूपती। जुगत्ति राजगत्ति जांणि, इंद्र अंमरावती। —गु. रू. वं.

२ राज्य या शासन की गति-विधि।

३ भाग्य की अदृश्य गति।

राजगद्दी—सं. स्त्री. [सं] १ राजसिंहासन।
२ राज्याभिषेक, राज्याधिकार।
रू० भे०—राजगादी, राजगीदी।

राजगहेली-वि.-प्रीत की बावली।

उ०—मिळी अंधेरी रैण सुहेली, मोरा गावै मल्हार। राजगहेली रै संग मांणणी, सरस तीज री रात। —रसीलैराज रौ गीत

राजगादी-देखो 'राजगद्दी' (रू. भे.)

राजगिरि-सं. पु. [सं.] मगध देश का एक पर्वत। (ऐतिहासिक)

राजगीदी-देखो 'राजगद्दी' (रू. भे.)

उ०—प्रीत री कूख सूं जलमियौ राजगीदी रौ हकदार नी व्है अर व्याव री कूख सूं जलमियौ राज रौ हकदार व्है। —फुलवाड़ी

राजगीर, राजगीरी-सं. पु.-वह कारीगर जो मकान बनाने का कार्य करता हो। शिल्पी।

राजगुर, राजगुरू-सं. पु.-१ राज्य पुरोहित।

उ०—जैतारण था कोस ४ ऊगवण मांहे, दत्त राव जैतसी ऊदावत रौ ब्रि. वरसंघ पीथावत जात राजगुर नुं। मोरवी वडी प्रोहत राजा उदीत दोया नुं ऐ खेत दीया। —नैणसी

२ राजा का गुरु।

रू० भे०—रायगुर, रायांगुर।

राजग्रह-सं. पु. [सं. राज+गृह] राज-महल, राजा का महल।

उ०—कछवाहां उच्छव किया, देख वधाईदार। किया बवाया राजग्रह, रांणी कियौ स्रिंगार। —रा. रू.

रू० भे०—रायगिह, रायघर।

राजघ्रनीका-सं. स्त्री.-रामवेलि नामक लता। (अ. मा.)

राजड़-सं. पु.-१ भाटी वंश की एक शाखा जो आजकल मुसलमांन हो गई है।

२ लंगा जाति की एक शाखा विशेष। (मा. म.)

राजड़ा-स. स्त्री.-राजबाई नामक एक देवी।

उ०—लंकाळे चड़े चाल जंघाल लेलं। हली राजड़ा ज्यों प्रथीराज हेलै। —मे. म.

राजचंपक, राजचंपौ-सं. पु. [सं. राजचंपक] पुन्नाग का पुष्प, एक प्रकार का फूल, सुल्ताना चंपा।

राजचील-सं. पु. [सं. राज+राज. चील=सर्प] शेषनाग।

उ०—वारधेस जोम गाज गाळिया अकूट वासी। राजचील जाळिया तारखी तेज रूसं। कुमंखी कुळेसां यंद्र ढालिया गरंद काळा, वीर 'सिवा' वाळै रिमां मार लिया वधूंस। —हुकमीचद खिड़ियौ

राजचूड़ामणि-सं. स्त्री. [सं.] संगीत के ताल के साठ भेदों में से एक।

राजजांमुन-सं. पु.-जामुन की एक जाति विशेष।

राजजोग-देखो 'राजयोग' (रू. भे.)

राजठोड़-सं. स्त्री.-राजधानी।

राजणौ, राजबौ-क्रि. अ. [सं. राज्] १ आसीन होना, बैठना।

उ०—ब्रह्मा सिव इंद्रादि दे, आंन खरे कर जोर। सिंघासण आसण किये, राजत जुगळ किसोर। —गज उद्धार

२ शोभित होना, शोभा देना।

उ०—१ मद सिलल तणां चांटा हियै नीलमण, राजिया रुघर चांटा पदमराग। अडग पग मांड। राधारमण, नग समौ त्रिलंद मग विप गगन मग नाग। —बां. दा.

उ०—२ राजति अति एण पदाति कुंज रथ। हंस माळ बंधि लास हय। ढालि खजूरि पूठि ढळकावै, गिरिवर सिणगारिया गय। —वेलि

उ०—३ जंगळ बोर सुहावणि राजै, फिर सकति री आंण। मढ मैं आपूं आप विराजौ, भळहळ ऊगौ भांण। —राधवदास भादौ

३ सुन्दर लगना।

उ०—१ संग सखी सील कुळ वेस समांणी, पेखि कळी पदिमणी परि। राजति राजकुंअरि राय अंगण, उडीयण वीरज अम्र हरि। —वेलि

४ चमकना।

उ०—१ आणद सु जु उदौ उहास हास अति, राजति रद रिखपति रुख। नयण कमोदणि दीप नासिका, मेन केस राकेस मुख। —वेलि

उ०—२ रूप खडग अदभुत दुति राजै। तडित सिळाव घोम तराजै। —सू. प्र.

५ राज्य करना, शासन करना।

उ०—दक्खिण दिसि देस विदरभति दीपति, पुर दीपति अति कुंदण पुर। राजति एक भीखमक राजा, सिरहर अहि नर असुर सुर। — वेलि

राजणहार, हारौ (हारी), राजणियौ —वि.।

राजियोड़ौ, राजियोड़ौ, राज्योडौ —भू. का. कृ.।

राजीजणौ, राजीजबौ —भाव वा.।

रजणौ, रजबौ, रज्जणौ, रज्जबौ —रू. भे.।

राजत-देखो 'राजित' (रू. भे.)

राजतरंगिणी-स. स्त्री. [स.] संस्कृत का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ, जिसकी रचना काश्मीर निवासी कल्हण के द्वारा की गई, ऐसा माना जाता है।

राजतरुणी-सं. स्त्री. [सं.] सफेद गुलाब की एक लता जिसके फूल बड़े एवं श्वेत होते हैं, बड़ी सेवती।

राजतिलक, राजतीलक-सं. पु. [सं. राजतिलक] १ किसी राज्य के राजसिंहासन पर नए व्यक्ति को राजा बनाने के लिये, ससम्मान बैठाने की प्रक्रिया, राज्याभिषेक।

२ उक्त अवसर पर, नए राजा के मस्तक पर, विधि पूर्वक किया जाने वाला तिलक।

उ०—वीभीछन कु **राजतीलक** दियौ, मुकति माळ पहराई।
—रुखमणि मंगळ

३ उक्त समय में नए राजा के सम्मान में मनाया जाने वाला उत्सव।

रू० भे०—राज्यतिलक।

राजतीमुद्रा—सं. स्त्री.—चांदी का सिक्का, रौप्य मुद्रा।

राजतेज—स. पु.—१ राज्य या सत्ता का जोर, प्रभाव, रौब, शक्ति।

उ०—नकौ **राजतेजं** नकौ देसपती। नकौ गढ छाजा नकौ द्वारि हसती। —अनुभववांणी

२ राजसी पदार्थों या वस्तुओं का ठाट-बाट, चमक-दमक।

राजथंभ—सं. पु. [सं. राज्य+स्तम्भ] १ वह व्यक्ति (मंत्री या सामत) जो किसी राज्य की समस्त व्यवस्था का उत्तरदायी हो, राज्य का स्तंभ माना जाने वाला व्यक्ति।

उ०—**राजथंभ** मंत्रियां, राज रच्छिक उमरावां। राजद्वार बहु कुरब, राज जसधर कविरावां। —सू. प्र.

२ राजा, नृप।

राजथांण, राजथांन—देखो 'राजस्थांन' (रू. भे.)

उ०—१ सू आप वडी रेख रा गांम दीठा चावौ तौ हूं सारा जांणू छूं, सू गांम चाहौ जिसा हूं वतासूं, पण आप **राजथांन** वांधणौ किसी जागा विचारियौ है? —द. दा.

उ०—२ तरै जोगियै इतरौ कर वतायौ—थारी साहुवी **राजथांन** लाखड़ी करै नै जोगियां रौ आसण धींणोद करै। —नैणसी

उ०—३ विणजारै रै सदाई हुवै छै, इसौ वहांनौ करि चालतौ चालतौ गिरनार री तळहटी पावासर माहै **राजथांन** छै, तठै आय पड़ियौ। —कहवाट सरवहियै री वात

राजथाट—सं. पु.—राजसी-टाट वाट, राज्य वैभव।

राजदंड—सं. पु.—१ राज्य या शासन का दण्ड विधान।

२ राज्य की आज्ञानुसार भरा जाने वाला दण्ड।

३ सजा।

राजदरबार—सं पु.—१ किसी राज्य या राजा की वह सभा या वैठक जिसमें राज्य के राजा सहित सभी मंत्री एवं सामंत उपस्थित होते हैं और जिसके द्वारा शासन का संचालन किया जाता है। राजा की सभा।

उ०—१ लाधूरांम **राजदरवार** रौ इतौ वडौ निधड़क चोधरी होवतां थकां भी, भूत-पलीत, डोरा-डंडा, देई-देवता अर डाकण-स्यारी नै कदै ही कूड़ा नीं बतावै। —दसदोख

उ०—२ राजाजी फरमायौ के वीज रै चांद री खुसियां मनायां पछै वै **राज-दरदरवार** सूं पाधरा पोहरै चढ-जावै। —फुलवाड़ी

२ वह स्थान या कक्ष, जहां उक्त सभा वैठती है या जुड़ती है।

३ राजा की अदालत, कचहरी।

राजदवार, राजदुआर—देखो 'राजद्वार' (रू. भे.)

उ०—घाली टापर वाग मुखि, भैंक्यउ **राजदुआरि**। करहइ किया टहूकड़ा, निद्रां जागि नारि। —ढो. मा.

राजदुलारी—सं. स्त्री.—राजा की कन्यां, राजकुमारी।

उ०—दूलह सिर सिर **राजदुलारी**। करै चमर कन्या कोमारी। —रा. रू.

राजदुवार—देखो 'राजद्वार' (रू. भे.)

उ०—१ वाजा वाजिया जिणवार, दीपै हरख **राजदुवार**। —रा. रू.

उ०—२ पिंगळ राजा नूं मिल्यउ, सउदागर तिणिवार। **राजदुवार** इ तेड़ियउ, आदर करै अपार। —ढो. मा.

राजदूत—स. पु. [सं.] १ किसी राजा या राज्य का वह व्यक्ति जो दूसरे देश में अपने राज्य का प्रतिनिधित्व करता हो।

२ वह व्यक्ति जो अपने राजा का कोई विशेष संदेश लेकर किसी अन्य राजा के पास जाता है। राजा का संदेश वाहक।

३ राजाज्ञा प्रसारित करने वाला कर्मचारी।

राजद्रोह—सं. पु. [सं.] १ किसी राज्य की प्रजा या सेना द्वारा, राजा या प्रशासन के विरुद्ध किया जाने वाला विद्रोह, वगावत।

२ ऐसे कार्य जो वगावत की संज्ञा में आते हों और जिनसे राज्य का अहित होता हो।

राजद्रोही—वि. [सं. राजद्रोहिन्] १ विद्रोह या वगावत करने वाला, राजद्रोह करने वाला।

२ वागी।

राजद्वार, राजद्वारौ—सं. पु. [सं. राजद्वारम्] १ राजमहल का दरवाजा।

उ०—१ सुकीर नासिका सरूप, वेस नीत राजियै। सुरू गुरु र भोम सुक्र, **राजद्वार** राजियै। —सू. प्र.

उ०—२ गज कोटि **राजद्वारौ**, मिंदरउतंग महल अटाला। संपेख धांम वांम, विसक्रमा विभ्रम भवेत। —गु. रू. बं.

२ राजा का दरवार, राज–दरवार।

३ अदालत, कचहरी, न्यायालय।

रू० भे०—राजदवार, राजदुआर, राजदुवार।

राजद्वारिक, राजद्वारी—सं. पु.—राज्यपदाधिकारी विशेष।

उ०—कोस्टाकारिक पारिग्रहिक, प्रतिहार चतुद्वरिक कास्टिक **राजद्वारिक** संधि विग्रहिक भांडपति स्रेस्टि। —व. स.

राजधणी—सं. पु. [सं. राज+धनिक] १ किसी राज्य का स्वामी, नृप, राजा।

उ०—१ बल पर हरै वना वध वोलै, सनस असा राखै धरसूत रांण तुहाली पोळ रायमल, **राजधणी** सेवै रजपूत।
—महारांणा रायमल रौ गीत

उ०—२ निज स्रवण सुणत फळ उपजै, गुरु वंसावळी अरध करि।
वोह राजधणी गज वाज हुइ, हरत लहै मचकुंद वर।
—रा. वंसावली

२ राज्य का अधिपति।

राजधर-सं. पु.-१ राजा, नृप। (डि. को.)
२ भाटी वंश की एक शाखा।
रू० भे०-रजधर, राजोधर, राजौधर रायधर।

राजधरम, राजधरम्म-सं. पु. [सं. राज-धर्म्म] १ राजा का कर्त्तव्य, धर्म।
२ वह धर्म, जिसे राजा द्वारा 'राजधर्म' घोषित किया गया हो।
३ महाभारत का वह विभाग, जिसमें राजा के कर्त्तव्यों का उल्लेख है।

राजधांनी-सं. स्त्री. [सं. राज+धानी] किसी देश या राज्य के राजा या शासक के रहने का प्रधान-नगर, वह नगर या स्थान, जहां देश या राज्य के शासन का केन्द्र हो।
रू० भे०-रजधांणी, रजधांन, रजधांनी, रायहांणी।

राजन-सं. पु. [सं. राजन्] १ राजा, नृप।
उ०—राजन में सुर राज समौ, महा राजन में महाराज समेळै।
पाज अपाहिज सरव समाज सु, पुत्र जहाज मिळै भव पैलै।
—ऊ. का.

२ पति, प्रियतम।
उ०—१ राजन चाल्या चाकरी, कांधे धर वंदूक। के तो सागै ले चलो, के कर डालो दो टूक।
—लो. गी.
उ०—२ ऊनाळा रा वापरै, चौमासा रा मांमा रे, सियाळा रा मांने लेइ चाल्यो म्हांरा जोड़ी रा। रतन सियाळो राजन यूं ही गियो जी।
—लो. गी.

राजनीत, राजनीति-सं. स्त्री. [सं. राजनीति] १ किसी राजा या शासक द्वारा, राज्य की रक्षा, आंतरिक सुव्यवस्था एवं शांति रखने के लिये बनाई गई शासन की पद्धति, विधि, नियम या कानून। इसमें साम, दाम, दण्ड और भेद इन चारों का समावेश किया जाता है।
उ०—१ इळ राजनीत जांणै अनेक। वर मंत्र-सकति कविता विवेक।
—सू. प्र.
उ०—२ मूळी री पापा रजवाड़ां में रैवणियो स्यांणो हाजरियो राजनीत सूं रंग्योड़ो-सुधरयोड़ो मिनख।
—दसदोख
२ कूटनीति, भेद नीति, गुप्त नीति।
३ वर्तमान के राजनैतिक दलों की दलगत नीति।
उ०—डिपटी सा'वनै थे ही कै' देवता-के सा'व! लोग म्हारी कूड़ी ही सिकायत करै है। म्हैं की री ही पालटी में भाग नीं ल्यूं अर ना कोई राजनीत फैलावूं।
—दसदोख
४ बहत्तर कलाओं में से एक। (व. स.)
रू० भे०-रजनीति।

राजनीतिक-वि. [सं.] १ राजनीति सम्बन्धी।
२ राजनीति जानने वाला।

राजनील-सं. पु. [सं.] मरकतमणि, पन्ना।

राजन्य-सं. पु. [सं.] १ क्षत्रिय।
२ सरदार, सामन्त।

राजपंख, राजपंछ-सं. पु. [सं. पक्षिराज] गरुड़।
उ०—जय वाखांण राजपंछ वाजै, अलख भुयण घण सुणै इम।
रांणा अवर घणा दिन रहसी, जुग जुग पंगी चंग जिम।
—महारांणा जगतसिंघ री गीत

राजपंथ-सं. पु. [सं. राजपथ] किसी राज्य या नगर का प्रमुख मार्ग, राज मार्ग।
रू० भे०-राजपथ।

राजपट्ट-सं. पु.-१ एक वस्त्र विशेष।
उ०—मेघाडंवर नेत्रपट्ट धोतपट्ट राजपट्ट गजवडि हंसवडि वोरि-आवडी, ऊमावडी।
—व. स.
२ देखो 'राजपाट' (रू. भे.)

राजपति-सं. पु. [सं.] १ राजा, सम्राट, नृपति।
२ राज्य का अधिपति, शासक।

राजपत्नी-सं. स्त्री. [सं.] राजा की पत्नी, रानी, साम्राज्ञी।

राजपत्री-सं. पु. [सं. राजपत्रिन्] पक्षीराज गरुड़।
उ०—१ जोमंगी भंडीस ज्याग आयो ज्यूं चंडीस जायो, राजपत्री आयो थंडीस व्याळ रेस। ओडंडीस असीसतो लांगड़ो कपीस आयो, कोडंडीस कसीसतो आयो गुडाकेस।
—हुकमीचंद खिड़ियो
उ०—२ पूरा माप आढू गांठ वेग भाटां राजपत्री। दूजो 'गौड़' क्रीत साटां तुराटां देवाळ।
—क. कु. बो.

राजपथ-देखो 'राजपंथ' (रू. भे.)

राजपद-सं. पु. [सं.] १ राजा का पद, राजा का अधिकार, राजत्व।
उ०—मास दस माता के उदर रहे महिमा तैं, राजपद पावै या कहावै राजकुळ में।
—ऊ. का.
२ कम कीमत का हीरा।

राजपद्धति-सं. स्त्री. [सं.] १ शासन प्रणाली, शासन विधि।
२ राजनीति।
३ राजमार्ग, राजपथ।

राजपाट-सं. पु. [सं. राज्य+पट्टः] १ राज्य सिंहासन, राजगद्दी।
उ०—मंडोवरगढ़ राव चूंडोजी राज करै। तिण रै १४ कंवर। तिण में राजपाट टीकायत राव रिणमलजी।
—राव रिणमल री वात

२ राजा के अधिकार, राजत्व ।

उ०—ऊंदा बाई मन समझ, जावो अपणे धांम । राजपाट भोगो तुम्हीं, हमें न तासूं कांम । —मीरां

रू० भे०—रजपाट, राजपट्ट ।

राजपात्र—सं. पु. [सं.] एक वर्ग विशेष ।

उ०—कंदाई देमाली कलाली गोली गवाल पसूयाल राजपात्र विद्यापात्र विनोदपात्र । —व. स.

राजपाळ, राजपाल—सं. पु.—१ एक राजवंश ।

उ०—गोहिल गुहलिपुत्रक धांन्यपाल राजपाल अनंग निकुंभ दधिकर कालामुह दापिक हूण हरियर डोसमार । —व. स.

२ देखो 'राज्यपाळ' (रू. भे.)

राजपिंड—सं. पु.—राजा का दिया हुआ पिंड, आहार ।

उ०—राजपिंड सुककार, एहवे न लेवे आहार । मरदन नहीं करे ए, दांतण परिहरे ए । —जयवांणी

राजपुत्र—सं. पु. [सं.] (स्त्री. राजपुत्री) १ राजा का पुत्र, राजकुमार ।

उ०—अथ कुमार, उद्धतस्कंधवंधुर, वज्र, मय भुजादंड, विस्तीरण वक्षः स्थल, रण रसिकु, समर भर धुरि धवल, अतुलवलपराक्रम, रथ मोडण, परदलण, सूर वीर, धीर सौंडीर इसउ राजपुत्र कुमर । —व. स.

२ राजपूत, क्षत्रिय ।

३ बुध ग्रह ।

रू० भे०—रायपुत्त, रायपुत्र ।

राजपुत्री—सं. पु. [सं.] १ राजा की कन्या, राजकुमारी ।

२ क्षत्रिय कन्या ।

रू० भे०—रायपुत्रिय, रायपुत्री ।

राजपुरुस—सं. पु. [सं. राज-पुरुष] १ राजा घराने या राजा के वंश का कोई व्यक्ति ।

२ राज्य कर्मचारी ।

३ अमात्य, मंत्री ।

राजपुस्पी—सं. पु. [सं. राजपुष्पी] वन-मल्लिका, जातिपुष्प ।

राजपूत—सं. पु. [सं. राज+पुत्र, प्रा. राजपुत्त] (स्त्री. राजपूतण, राजपूतांणी) १ क्षत्रिय-जाति, क्षत्रिय-वंश ।

वि. वि—आर्यों की वर्ण व्यवस्था के अनुसार देश की शासन व्यवस्था क्षत्रियों को सौंपी गई थी । राज्य के शासक को राजा कहा जाता था । राजा के पुत्र एवं वंशजों को राजपुत्र कहा जाता था । राजपुत्र शब्द का प्रयोग, कोटिल्य अर्थ शास्त्र, कालीदास के नाटक, बाण भट्ट के ग्रंथों तथा प्राचीन शिलालेखों में राज-वंशीयों के लिए कहा गया हैं । राजा के वंशज या राजवंशीय होने के कारण, कालान्तर में सम्पूर्ण क्षत्रिय जाति का 'राजपुत्र' पर्यायवाची सम्बोधन बन गया । अतः संस्कृत 'पुत्र', प्राकृत पुत्त' से अपभ्रंश या राजस्थानी में 'पूत' शब्द बना और मुसलमानों के शासन काल में क्षत्रियों को 'राजपूत' कहा जाने लगा । यह जाति बड़ी बहादुर और पराक्रमी रही है । जन्म भूमि की रक्षा तथा कुल गौरव की रक्षा, इस जाति का विशेष गुण रहा है ।

२ उक्त जाति का व्यक्ति ।

३ योद्धा, वीर ।

४ देखो 'रजपूत' (रू. भे.)

रू० भे०—राजपुत्र ।

राजपूतांणी—सं. स्त्री.—राजपूत जाति की स्त्री ।

रू० भे०—रजपूतण, रजपूतांणी, रपचूतांणी ।

राजपूतांनो—सं. पु.—भारत के उत्तर पश्चिम का एक प्रान्त जो आज राजस्थान कहलाता है । ब्रिटिश शासन काल में यहां विभिन्न राजाओं की रियासतें थीं ।

राजपूताई, राजपूती—सं. स्त्री.—१ राजपूत होने की अवस्था या भाव ।

२ राजपूत जाति का गौरव, क्षत्रित्व ।

उ०—तरै उमरावां भेळा होय नै मसलत कीधी । भांणेज ऊगै राजपूताई मांहे धूळ नांखी । —कहवाट सरवहिये री वात

३ शौर्य, पराक्रम, बहादुरी ।

रू० भे०—रजपूताई, रजपूती ।

राजबण, राजबणि—देखो 'राजवण' (रू. भे.)

उ०—रती न जांणै राजबणि, दिल मिळिया जे दूर । रहसी डबां कपूर रा, फूंकर नहीं कपूर । —र. हमीर

राजबळ—सं. पु.—राज्य, शासन या सत्ता का बल, शासन-शक्ति ।

उ०—'जसराज' मरण 'जोधा' हरा, रुक सओधा राजबळ । छित लाज दिली महाराज छळ, इळ पड़िया राखे अचळ । —रा. रू.

राजबाई—सं. स्त्री.—सम्राट अकबर की समकालीन एक देवी जो उदयराज चारण की पुत्री थी । इसे राजल देवी भी कहते हैं ।

राजबाड़ी—सं. स्त्री. [सं. राज-वाटिका] किसी राजा का उद्यान ।

राजभंडार—सं. पु. [सं. राज-भंडार] १ किसी राज्य का खजाना, राजकोश ।

२ वह कक्ष जिसमें खाद्य सामग्री संग्रहीत रहती है ।

राजभक्त—सं. पु.—राजा का स्वामीभक्त अनुचर ।

रू० भे०—राजभगत ।

राजभक्ति—सं. स्त्री.—किसी राजा के प्रति किया जाने वाला प्रेम, भक्ति, श्रद्धा ।

रू० भे०—राजभगती ।

राजभगत—देखो 'राजभक्त' (रू. भे.)

राजभगती—देखो 'राजभक्ति' (रू. भे.)

राजभवन-स. पु. [सं.] १ राजमहल, राजप्रासाद ।
२ जन्म पत्री में दसवां स्थान ।
उ०—निरख छठै रिपु ग्रह ससिनंदण, कुळ मातुळ सुख अरी निकंदण । राजभवन सुर गुर सुभ राजै, विसव एक छात्र आंण विराजै । —रा. रू.

राजभोग-सं. पु. [सं.] १ देव मन्दिरों या देवालयों में मध्यान्ह के समय भगवान की मूर्ति के आगे चढाया जाने वाला नेवैद्य, जिसमें नाना प्रकार की मिठाइयां एवं भोजन सामग्री होती है। बड़ा भोग ।
उ०—राजभोग अरोगौ गिरवर, सन्मुख राख्यौ थाळ जी । मीरां दासी चरण उपासी, कीजै वेग निहाल जी । —मीरां
२ देव मूर्ति के आगे चढाया जाने वाला नेवैद्य, प्रसाद ।
३ एक प्रकार की मिठाई ।
४ राजा द्वारा लिया जाने वाला कृषि उपज का एक निर्धारित अंश
रू० भे०—रायभोग ।

राजमंडळ, राजमंडल-सं. पु. [सं. राज-मंडल] किसी राज्य के चारों ओर के राज्यों का समूह ।

राजमग-देखो 'राजमारग' (रू. भे.)
उ०—सुख राजमग जळ सींच, वणि कुसमगर तिण वीच । प्रति हाट दांम प्रकास, सोरंभ फूल सुवास । —रा. रू.

राजमद-सं. पु. [सं.] शासन या सत्ता के प्रभाव से होने वाला गर्व, अहंकार, राज्य का नशा ।
उ०—राजाजी नै आपरी प्रीत विचैई आपरै राजमद री घणी गुमांन है । —फुलवाड़ी

राजमराळ-सं. पु. [सं. राज-मराल] राजहंस ।

राजमल-सं. पु.-राठौड़ों की एक उपशाखा ।

राजमहल, राजमहलि-सं. पु.-राजा का महल, राज-प्रासाद ।
रू० भे०—राजमै'ल ।

राजमारग, राजमारगि-सं. पु. [सं. राज-मार्ग] राज्य या नगर का मुख्य मार्ग, मुख्य सड़क ।
उ०—१ अथ नगर, प्रासाद प्रतोली राजकुल देवकुल त्रिक चउक चच्चर राजमारगि गंधिकापण...... । —व. स.
उ०—२ मठ विहार प्रपा मंटप त्रिक चतुस्क चत्वर चतुस्पद राजमारग गंधिकापण...... । —व. स.
रू० भे०—राजमग ।

राजमिंदर-सं. पु. [सं. राज+मन्दिर] १ राजमहल, राजप्रासाद ।
उ०—रमै हसै नरिंदरं, मभार राजमिंदरं करै उछाह सुक्किया, पचास सात सै प्रिया । —सू. प्र.
२ राजमहलों में बना देवमन्दिर या देवालय ।

राजमै'ल-देखो 'राजमहल' । (रू. भे.)
उ०—१ मिंदर ३ गुलावसागर ऊपर १ राजमै'लां में । १ लाल वावे रै मिंदर कनै । —मारवाड़ री ख्यात
उ०—२ राजमै'ल में आंधियां रै कारण खंख घणी उडै, इण कारण नगर रै चारूं मेर दस दस कोस तांई राजाजी दोवड़ी लगावणी चावै । —फुलवाड़ी

राजम्रिगांक-सं. पु. [सं. राजमृगांकः] यक्ष्मा रोग में दिया जाने वाला एक मिश्ररस । (वैद्यक)

राजयोग-सं. पु. [सं.] १ अष्टांग योग, जिसका प्रतिपादन पतंजलि ने अपने योगशास्त्र में किया है । मूल योग ।
उ०—नहि कोई करना नहीं अकरना, नहि कोई म्हारा थारा । साखी एक सकळ में व्यापक, राजयोग विस्तारा । —अनुभववांणी
२ जन्म कुण्डली में होने वाला ग्रहों का एक विशेष योग, जिससे व्यक्ति का राजा या राजा तुल्य होना लक्षित होता है । (फलित)
रू० भे०—राजजोग ।

राजरथ-सं. पु. [स.] राजा का रथ ।
उ०—वेग लीयै मूंठी वाव । राजरथ पंखां राव । मैंगळां ऊरध मंड । खेसै आठ भीत खंड । —गु. रू. वं.

राजरमणी-सं. स्त्री. [सं.] राजरानी ।
उ०—१ विळकुळे राजरमणी वदन, निरखे रूप नरचंद री । जांणै विकास प्रांमै जळज, देखि प्रकास दुदिंद री । —रा. रू.
उ०—२ रण-वास राज रमणी, सूरज किरण तुल सोभा । फूलीक कांम वल्ली, करि मज्झे कांम आराम । —गु. रू. वं.

राजरसतौ-देखो 'राजपंथ'

राजरसि-देखो 'राजरिसि' (रू. भे.)
उ०—विग्रह राज राज्यपदस्थापना वसरविक स्वरयसः प्रकास, राजरसि परमारहत धरमात्मा...... । —व. स.

राजरांणी-सं. स्त्री.-१ राजा की रानी, महारानी । २ देवी, दुर्गा ।
उ०—थिर थांन थांभां अतीय अचंभा रूप रंभा भळकती । भजियै भवांनी जगत जांनी धी राजरांणी सरस्वती । —मा. वचनिका

राजराज, राजराजा-सं. पु. [सं.] १ कुबेर का एक नामान्तर । (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)
२ राजाओं का राजा, राजेश्वर ।
३ सम्राट ।
४ चन्द्रमा ।

राजराजा खाखड़ी-सं. पु -बच्चों का एक देशी खेल ।

राजराजेसर-देखो 'राजराजेस्वर' (रू. भे.)
(स्त्री. राजराजेसरी)

राजराजेसरी-देखो 'राजराजेस्वरी' (रू. भे.)

राजराजेस्वर-सं. पु. (सं. राजराजेश्वर) (स्त्री. राजराजेस्वरी) राजाओं में श्रेष्ठ, सम्राट ।

उ०—दाखे वार वार दिल्लेसुर, स्रीमहाराज **राजराजेस्वर**। श्रौर उमीर सको न्रप श्रावै, जोधां नाथ हूंत मिळ जावै।—रा. रू.

रू० भे०—राजराजेसर।

राजराजेस्वरी—सं. स्त्री. [सं. राजराजेश्वरी] महारानी, पटरानी, साम्राज्ञी।

रू० भे०—राजराजेसरी,

राजरिख, राजरिखि—देखो 'राजरिसि' (रू. भे.)

उ०—राइ दसरथ श्राए **राजरिख**। —रांमरासौ

राजरिद्धि, राजरिध—सं. स्त्री. [सं. राज-ऋद्धि] राज्य की समृद्धि, राज्य का वैभव, राज्य लक्ष्मी।

उ०—**राजरिद्धि** सहू समुदाय जीहं चत्ति एक वसइ जिणनाह। —वस्तिग

राजरिसि, राजरिसी—सं. पु. [सं. राजर्षि] १ वह ऋषि जिसका जन्म राजकुल या क्षत्रिय वश में हुश्रा हो।

२ पुरूरवस, जनक, विश्वामित्र, ऋतुपर्ण।

रू० भे०—राजरमि, राजरिख, राजरिखि, राजस्सी, रायरिख, रायरिसि, रायरिसी।

राजरीत, राजरीति—सं. स्त्री. १ राज्य या शासन की पद्धति, राजनीति

२ राज्य परिवार की परम्परा।

३ शासक वर्ग के व्यवहार का ढंग।

राजरोग—सं. पु. [सं.] १ राज यक्ष्मा या क्षय रोग।

२ कोई श्रसाध्य रोग।

राजरोगी—वि.—राजरोग से पीड़ित रोगी।

राजल—सं. स्त्री. राजबाई नामक एक देवी।

रू० भे०—राजुल।

राजलक्षण—सं. पु.—बहत्तर कलाश्रों में से एक। (व. स.)

राजलक्ष्मी, राजलछमी—सं. स्त्री. [सं. राजलक्ष्मी] राज्यश्री, राज्य का वैभव।

रू० भे०—राज्यलक्ष्मी, राज्यलिछमी।

राजलोक, राजलोग—सं. पु. [सं. राज-लोक] १ महारानी, रानी, रानी समूह।

उ०—१ कूंभौ परणियौ। हथळेवौ छोडियौ, श्रर कूंभै कह्यौ मोनूं विदा द्यौ। तांहरां कह्यौजी—दोय पोहर रहौ, **राजलोक** कहै छै। —नैणसी

उ०—२ चहुवा इम चहुमंत्र उचारै। पट्ट सांभळि निज महल पधारै। बूझै **राजलोक** सुर बीजै। करै श्ररज मन व्है सुजि कीजै। —सू. प्र.

उ०—३ **राजलोक** रिग दूंग वीस पड़दायत प्यारी। संग सहेली च्यार श्रगन मिन्नांन उचारी। —रा. रू.

२ श्रन्तःपुर, रनिवास।

उ०—तिसै भींवै गोठ जीम नै श्रसवार होय पिउसंघी नै **राजलोक** में मेली, श्रापो परकास्यौ। —जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

३ परिजन, परिग्रह।

उ०—१ हिवै राजा श्रजयपाळ कन्है राजा मांनधाता रहै। श्रजयपाळ मांमौ छै, मांम्यां रा मुजरा करै। एक दिन राजा श्रजय पाळ री **राजलोक** रांणी रै डेरै एकठौ हुयौ छै। —चौबोली

उ०—२ रावळ मनोहरदास घणी वेढ क्रीती। संमत १७०६ रा मिगसर में काळ कियौ। बेटौ को न हुतौ, पछै भाटियां बीजै **राजलोग**, भाटी रांमचंदसिघोत नूं टीकौ दियौ। —नैणसी

राजवंस—सं. पु. [सं. राजवंश] राजा का वंश।

उ०—वदै महल छतीस **राजवंश** कमध नगारा त्रहळ किये। दहळ पड़ै श्रवरां देसोतां, थारै सहल सिकार थियै। —रुघो मुहतौ

राजवट—स. स्त्री.—१ हुकूमत, सत्ता।

उ०—१ तठा पछै वरिहाहां सूं दावौ मांगण री मन में राखै, सु घणो साथ राखियौ। घणा घोड़ा पायगाह किया। वडी **राजवट** जमती गई। —नैणसी

उ०—२ तठा उपरांति करिनै राजांन सिलांमति तिण राजांन री **राजवट** च्यार ठिकांणै विराजमांन दीसै छै। —रा. सा. सं.

२ क्षत्रित्व, वीरत्व।

उ०—पती म्हारौ एक लौ पूगसी सो मारीजसी पती नें जांण सूं वरजूं तो सरै नहीं **राजवट** रजपूती रा मारग उलटा छै। —वी. स. टी.

३ डिंगल के कुंडलिया छंद का एक भेद विशेष।

राजवण—सं. स्त्री.—१ राजकुमारी।

उ०—जो मांगै देवर जसू, जोड़ै हाथाळै, 'रांणल' मांगै **राजवण** भाभी वरमाळै। भवगुण भूलूं नही, ध्रमपाज विचाळै। कहियो जद किसमीरदे, चढ़ क्रोध वडाळै। —वी. मा.

२ रानी।

३ पत्नी, स्त्री, प्रियतमा।

उ०—१ हां ए राजगोरी काची केसर पीश्रो, हे **राजवण** प्यारी काची केसर पीश्रो। हे म्हांरी सदा हे सवागण घर नार, सुंदर गोरी। काची केसर पीश्रो हो। —लो. गी.

उ०—२ मारूड़ो मिळण घर श्रायौ हे मारवणी, करो नै तयारी उठ म्हांरी **राजवण** थांरै। बिंदली दौ भाळ संवारी श्रलबेलड़ी, श्रणीयाळा नैणां श्रंजन री श्रणी। —रसीलै राज री गीत

उ०—३ रहो सधीरा **राजवण**, नैण न नांरो नीर। रंगी मत इण रंग में, चंगी भीजै चीर। —श्रग्यात

उ०—४ रंग री वातां **राजवण** टोळौ मति कर टेक। मन सुद कर म्हांसु मया श्रडवी छोडो ऐक। —पनां

रू० भे०—रजवरा, राजवरा, राजवरिए

राजवनो—सं. पु. (स्त्री. राजवनी) १ राजकुमार।

२ प्रिय, प्यारा, प्रियतम

उ०—पनां वरए घर पल्लही, कलि पनां करतार। श्रौ चित्रांम सो आपना, राजवनो रिझवार। —पनां

राजवरग—सं० पु० [सं. राज्य वर्गः] १ शासक समुदाय, शासक वर्ग।

२ राजकुल, राजवंश

३ राज्य या राज दरबार में महत्वपूर्ण पदों पर कार्य करने वाला, दल, समूह या वर्ग विशेष।

वि० वि०—राजस्थान में अधिकांश राज्यों में ओसवाल जाति के कुछ वंशों को राज्य के महत्वपूर्ण पद जैसे, दीवान, बक्षी, फौज-बक्षी, दीवाण, बक्षी, सेनापति आदि मिलते रहे हैं। जिनको उन्होंने बड़ी योग्यता—दक्षता व उत्तरदायित्व से निभाया है अतः इसी जाति या दल के व्यक्तियों को उच्च पद मिलते रहे। कालान्तर में इस दल के व्यक्तियों ने राज्य की नौकरी करना एक गौरव की बात समझी थी और इस जाति के ही व्यक्ति प्रायः राज्य में छोटे और बड़े पदों पर कार्य करते रहे हैं। वंश परम्परागत राज्य की नौकरी करने तथा राज्य सत्ता और शासक के निकट रहने के कारण लोग इनको 'राजवरगी' कह कर संबोधन करने लग गये।

४ राज्य वैभव, राज्य सुख।

उ०—राजवरग मनें कुछ नहिं चहियै, रांमजी मिळणरी म्हारै मन में लग रही। —मीरां

राजवरगी—वि० [सं० राज्य+वर्गः+रा० प्र० ई] १ शासक समुदाय का, शासक वर्ग का।

२ राजकुल का, राजवंश का।

स० पु०—वह वर्ग या दल विशेष जिसका वंश परम्परागत राज्य की नौकरी करने का ही पेशा रहा है।

वि० वि०—देखो, 'राजवरग'

रू० भे० राजव्रगी।

राजवाटिका—सं० स्त्री [सं०] राजा का उद्यान।

उ०—क्षण एक जाइ देवकुलि, क्षण एक जाइ राजवाटिकां क्षण एक जाइ वाटिकां, इसी क्रीड़ा करई। —व. स.

राजवाह—सं० पु० [सं०] घोड़ा, अश्व।

राजविद्या—सं० स्त्री० [सं०] राजनीति।

राजविद्रोह—सं० पु० [सं०] राज्य या शासन के विरुद्ध किया जाने वाला विद्रोह, बगावत।

राजविद्रोही—वि० [सं०] राज्य में विद्रोह करने वाला, बागी।

राजविहंग, राजविहंगी—सं० पु०—राजहंस।

राजवी, राजवीय—सं० पु० [सं. राज्+रा. प्र. वी] १ राजा, नृपति।

उ०—सांपणिया रै पेलड़े मास रिड़मल घुड़ला मोलवै रे। हां रे म्हांरी जोड़ री रे गढ़ां री राजवी रे रिड़मल राव। —लो. गी.

उ०—२ सु जमलो अहीर खेरड़ी गांव छै तठै घोड़ो फूल नूं ले आयो, तरै वैर हेकण दीठो तरै जमला नूं खबर हुई, कोई राजवी छै। घणां ग्रहणां पैहरियां घोड़ा ऊपर बेसुध हुवो छै। —नैणसी

उ०—३ नळ राजा आदर दियउ, जउ राजवियां जोग।
देसवास सवि रावळा, अइ घोड़ा अइ लोग। —ढो. मा.

उ०—४ देस देसरा राजवी, करता झाक-जमाल।
वाची कागद ऊठिया, जांन सजी तत्काल —जयवांणी

२ राजा के वंश का या राज घराने का व्यक्ति, राजपुरुष।

उ०—१ रांणी जाया राजव्यां, सहजाहूं वळिहार।
तूकारी तारीफियां, वरसो सोना धार। —वां. दा.

उ०—२ सु जगमाल सिकार चिढियो, तरै घड़सी ऊभो थो सु जुहार न कियो। तरै रावळजी नू जगमाल आय कह्यौ—जु गांव मांहे आज इसड़ो रजपूत आयो छै, सु कैतो कोई गिंवार छै, कै कोईक राजवी रै घर रो छोरू छै। —नैणसी

३ राजेश्वर, सम्राट।

उ०—१ ताहरी पुत्री नो ते वर जांणजै जी। महीना नै अंतर मिलस्यै तेह हो। समस्त राजा नो थास्यै राजवी जी,तेहनो प्रताप अखंड अछेह हो। —वि. कु.

उ०—२ हमें कैसी हुसी, वडा वडा राजवीयां रै मांही प्रतिस्ठा घटसी। —पंचदंडी री वारता

रू० भे०—राजिव।

राजवेद—सं० पु० [सं. राज-वैद्य] राजा या राज घराने के लिये नियुक्त वैद्य, मुख्य वैद्य, वैद्यराज।

उ०- नी, नीं, राजवेद नै बुलावै जैड़ी कांई वात।
थूं राजवेद सूं कम थोडोई है। यूं ई जचगी तो थनै पूछ लियो। —फुलवाड़ी

राजव्यास—सं० पु० [सं०] राज दरबार का ज्योतिषि।

उ०—पाड़ोसियां रै घर रा किणी मोट्यार नै भेज राजव्यास जी नै बुलाया। --फुलवाड़ी

राजव्रगी—देखो, 'राजवरगी' (रू. भे.)

राजसंसद—सं० स्त्री० [सं.]—वह सभा या संस्था जो राज्य के शासन की सम्पूर्ण व्यवस्था करती है। राज-सभा।

राजस—सं० स्त्री० [सं.] १ राज्य, हुकूमत, शासन, सत्ता।

उ० १ विविध धांम पुर ग्रांम वसां है, माली राजस पूरब माहे।
सेतरांम सकवंध नरेसर। दळ (ठा) लग राजस पूरब अंतर। —रा. रू.

उ०—२ एक वरस रहि आप री राजस बांध फेर आप बादसाह री हजूर गयो। —ठा. जैतसी री वारता

उ०—३ सो एक दिन जंगळ रा गांवा री एक रजपूत पल्हू गांव

परणियौ थौ सो सासरै गयौ। उठै खीचियां रा गांव अर राजस खरळां री। —कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—४ चित समंद थांनिक 'चौंडरे'। कमधज्ज राजस इम करै।
—सू. प्र.

२. राजधानी।
उ०—अग्रज हूं तो सेव अभ्यासी, पारकेत सिव तणौ उपासी।
इण कजि मूझ नवौ पुर आपौ, सिव सथांन मो राजस थापौ।
—सू. प्र.

३. शासन-काल, राज्य-काल।
उ०-१ व्रथा कांमां मांही समयौ राजस रौ खोइयौ तिण सूं पादसाही खोई। —नी०प्र०
उ०-२. रही स्वछंद रैत तव राजस, सुभ अमंद सुखियारी।
आणंद कद एक दम उठग्यौ, 'तखत' नंद अवतारी —ऊ० का०

४. राजसी ठाट-बाट से किया जाने वाला जीवनयापन।
उ०-१ सो इण भांत जलाल गहरी मौज आणंद सूं रहै। फूलां री तिवारा दारू पी'र लाल रहै। दिन रात सारौ साथ मतवाळौ छकियौ रहै। सो इण भांत जलाल राजस करै।
— जलाल बूबना री वात
उ०—२. अड़धू लाग रैया, वंब वाजै ही। घर रा लोग राजस करै हा। कमाई में सर्फ अर वरकत ही — दसदोख
उ०—३, वाता कर दिन पोहर चढतां भुंजाई रावजी कनै जीमै। दरबार रौ कांम कर दोपोहरै भरमल रै जाय पोढै।
इण तरै राजस सुख करै। —कुंवरसी सांखला री वारता

५. सुख भोग, भोग-विलास।
उ०—सावण आयौ सायवा, वांधौ पाग सुरंग। महल वैठ राजस करो. लीला चरै तुरंग। —अग्यात

६. काम क्रीड़ा, मैथुन।
उ०—मंगळ वारै मंड कर, परणी आंणे कंथ।
सेजा चढ राजस किया, पूरै मन सूं कंथ। —अग्यात

७ राज्य (क्षेत्र की दृष्टि से)
उ०—नाव तिरै नहं नीर में, निबळां नावड़ियांह।
राजस नंह सावत रहै, मिनखों मावड़ियांह। —बां० दा०

८. राजा, नृप।
उ०—१ प्रण कियां पछै पाछौ नहीं फिरणौ, राजस रौ मोटौ गुण हठ नूं जांणजे। —नी० प्र०
उ०—२. वर मोनूं प्रापत नहीं सुण सांची दीवांण। राजस संगति हूं करी तींसू मन पहचांण।
—नापै सांखले री वारता

९. राजत्व।

१०. राजसभा, राज दरबार।

११. रजोगुण।
उ०—१ महतत्व थकी अहंकार नीपनौ। अहंकार त्रिहूं प्रकारे कहियै। एक सात्विक। बीजौ राजस। तीजौ तांमस। सात्विक अहंकार थी मनु अरु देवता इंद्रियां का अधिष्टाता नीपना।
—द० वि०
उ०—२. पांणी ल्यावै डोरि करि, हाथे भात पचाय।
राजस तांमस रचि रह्यौ, सातिग नावै दाय। —अनुभववांणी
उ०—३. दादू राजस कर उतपति करै, सात्विक कर प्रतिपाल।
तांमस कर परळै करै, निरगुण कौतिक हार। —दादूवांणी

१२. रजोगुण से उत्पन्न, रजोगुण सम्बन्धी, रजोगुणी।

१३. आवेश।

१४. क्रोध।

रू० भे०—राजस्स, राजिस्स।

राजसगुण— सं० पु०—रजोगुण।
उ० - इण वेळा रजपूत वे, राजसगुण रजाट।
सुमिरण लाग्गा वीर सब, वीरां रौ कुळ वाट। —वी. स.

राजसठाट—सं० पु०—राजसी वैभव।

राजसत्ता—स० स्त्री० [सं.] किसी देश की सर्व प्रभुत्व शासन शक्ति, सरकार।

राजसथांन—देखो 'राजस्थांन' (रू. भे०)
उ०—१ थिर ते राजसथांन महि इक छत्र भोम सांमथ।
एके आंण अखंड. खंडण मांण प्रांण नव खंड। —रा० रू०
उ०—२. सूंम मिळै अन सहर में, सहर उजाड़ समांन।
जो 'जेहौ' वन में मिळै, वन ही राजसथांन। बां. दा.

राजसथांनी—देखो 'राजस्थांनी' (रू. भे)

राजसधारी—वि. – पौरुषवान, वीरत्ववाला।
उ०—राव भाट लोगां नूं घणा दांन मांन दीन्हा। वडौ ही सेधाळ राजसधारी सिध्दिवत हुवौ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

राजसनगर—सं. पु.— राजधानी, राजधानी का नगर।
उ०—'मालौ' राजसनगर में 'सोवत' 'जेत' सिवांण।
थांन खेड़ 'वीरम' थपै, जग जाहर घण जांण। —वी. मा.

राजसभा—सं. स्त्री.—१. राजाओं की सभा, राजाओं की मजलिस।
उ०—राणसभा के भूखण दिल के उदार। विरदूं के भारै समसेर बहादरूं के समसेरूं के चितारे। —सू. प्र.
२. देखो 'राजदरबार'
उ०—विद्या विलासि सुणी ए वांणि, ततखिणी पडहउ छबिउ सुजांणि। राजसभां प्रणमी भूपाळ, लिपि वांची इम भणीय रसाल।
—हीराणंद सूरि

३. देखो 'राज्यसभा' (रू. भे.)

राजसमंद-सं.पु.—कांकरोली के पास बना एक बड़ा तालाव(उदयपुर)।

राजसमाज-सं. पु.—१. नृप मण्डली, राजा लोग।

२. शासक-वर्ग।

राजसर—देखो 'राजसमंद'

उ०—रचतां इसौ **राजसर** रांणा, लेखौ जग रो कवण लहै।

अस सूरज वहतौ आघंतर, वेळां पग मांडतौ वहै।

—महाराणा राजसिंघ रौ गीत

राजसरप-सं० पु० [सं. राज-सर्प] दो मुंह वाला सर्प।

राजसवंकौ-वि०—१ राजनीति में निपुण एवं दक्ष। अच्छा राज-नीतिज्ञ।

२ शासन करने में निपुण, शक्तिशाली।

उ०—सुत व्यारूं सेळखैस रै, कुळ में किरणाळा। **राजसवंका** राठवड़, वर वीर वडाळा। —वी. मा.

राजसिंहासन-सं० पु० [सं.] राजा के बैठने का सिंहासन, राजगद्दी।

रू० भे०—राजसींघासण, राजासन।

राजसिरी-सं० स्त्री० [सं. राज्य श्री] राज्य लक्ष्मी।

राजसींघासण—देखो, 'राजसिंहासण' (रू. भे.)

राजसी-वि०—१ राजाओं के योग्य, राजाओं के समान।

२ राजाओं जैसी शान-शौकत व वैभव वाला।

३ जिसमें रजोगुण की प्रधानता हो, रजोगुणी।

४ रजोगुणी वृत्ति वाला।

रू० भे०—राजस्सी।

राजसीव्रत्ती-सं० स्त्री०—ऐसी प्रवृत्ति जिसमें रजोगुण की प्रधानता हो, रजोगुणी वृत्ति।

राजसुजगन-सं० पु० [सं. राजसूयः राजसूयं यज्ञ] राजसूय यज्ञ।

उ०—**राजसुजगनां** जीत प्रवाड़ा कायवा रंजे, दाखै घाड़ा दंसू दसा क्रीतरा ददम। एहड़ा हमीर हेळा-आलमां जेहांन आखे, पखां नीर चाडा भोका विजाई 'पदम' —बूंगजी गाडण।

राजसुर—देखो 'राजेस्वर' (रू. भे.)

राजसू, राजसूय-सं० पु० [सं० राज सूयः] बड़े बड़े राजाओं द्वारा किया जाने वाला एक प्रकार का यज्ञ विशेष। इसके करने से वह राजा चक्रवर्ती पद का अधिकारी होता था।

उ०—१रचियौ जिण जिग **राजसू**, मेच्छां कर वळ मंद। पत कनौज दळ पांगळौ, जग जाहर जैचंद। —वां. दा.

उ०—२ धरा सुधेनु छूय छूय दूय दूय घूं धरै। क्रतू समांन **राजसूय** भूय भूय भू करै। —ऊ. का

राजस्थांन-सं० पु०—[सं. राजस्थान] १ भारत वर्ष का एक प्रान्त, जो देश के पश्चिमोत्तर भाग में है और जिसकी राजधानी जयपुर नगर में है।

२ बहुत से राज्यों या रियासतों वाला प्रदेश, राजपूताना।

३ राजधानी।

उ०—१ इतरै गोहिलां पिण आलोच कियौ—जो राठोड़ जोरावर सिरांणै आय **राजस्थांन** मांडियौ। जो कुं' ललौ-पतौ कीजै तौ टिग सगीजै। —नैणसी

उ०—२ तरै भींवैजी गुर सूं अरज करि कह्यौ, गरूजी, हुकम करौ तौ अठासूं कोस तीन ऊपरां म्हारौ **राजस्थांन** रौ पाटण गांव छै नै माता भाई छै, थे कहौ तौ कुटंबजात्रा करि आऊं।

—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

४ राज्य।

रू० भे०—रजथांन, राजथांण, राजथांन, राजसथांन, रायथांन।

राजस्थांनी-वि०—राजस्थान का, राजस्थान सम्बन्धी।

सं० पु०—१ राजस्थान प्रदेश का निवासी।

सं० स्त्री०—२ राजस्थान प्रदेश की मरु या डिंगल भाषा।

३ इस प्रदेश की बोली।

राजस्स—देखो 'राजस' (रू. भे.)

उ०—मास तीन वावीस दिन, पंताळीस वरस्स।

अमरापुर वसियौ 'अजौ', राजा कर **राजस्स**। —रा. रू.

राजस्सी—१ देखो, 'राजसी' (रू. भे.)

२ देखो 'राजरिसि' (रू. भे.)

उ०—राजा सुणि तेड़ै **राजस्सी**, जोध मंत्री समणी जोतस्सी।

थटपति चहूं हूंत मंत्र थपियौ, जनमंती कनिया जुध जपियौ।

—सू. प्र.

राजहंस-सं पु० [सं.] १ प्रायः झीलों के किनारे रहने वाला व झुण्ड बना कर उड़ने वाला एक प्रकार का हंस। इसकी चोंच व पैर लाल होते हैं। इसे सोना पक्षी भी कहते हैं।

उ०—१ **राजहंस** पंखी रहै रे लाल, मांन सरोवर मांहि रे सो०।

तिण पंखी नी पांखड़ी रे लाल, ते देखी पतिसाहि रे सो०।

—प. च. चौ.

उ०—२ कमलां री घणी सांघणी मेळ है, तठै **राजहंस**, कळहंसां री इधकी केळ है। बतक सरदा घरट हंजा मुरगा पयां भट्टिया तरै है, सारसां री टोळ जकै भंगोर करै है। —र० हमीर

२ एक प्रकार की लता जिसके फूल पीले होते हैं। यह जलाशयों या नदी किनारों पर होती है। यह ठण्डी होती है।

उ०—चुगलां जीभ न चालही, पर उपगार प्रसंग। नह नीपजही नील सूं, **राजहंस** री रंग। —वां. दा.

३. मालव, मनोहर व श्रीराग के मेल से बनने वाला एक संकर राग। (संगीत)

राजांन—देखो 'राजा' (रू. भे.) (ह. नां मा.)

उ०—१ एणी परि वोला मुनि मांभलि तूं राजांन।
एक मन प्रसन्न करीनि आपणूं रे। —नळाख्यांन

उ०—२ सउदागर पिंगल मिल्यउ, बहुत दियु सनमांन।
रात-दिवस प्रेमइ मिल्यउ, इम पिंगळ राजांन। —ढो. मा.

राजांन-सिलांमति—देखो 'हजूर-सलांमत'

उ०—हमैं नठा उपरांति करि नें राजान-सिलांमति एकांणि प्रस्ताव महाराजा श्री राजेसर रा परमांण आवूगढ रा मंडावरि आया छै। —रा. सा. स.

राजा—सं. पु. [सं. राजन्] (स्त्री रांणी) १. किसी देश, जनपद या राज्य का अधिपति, स्वामी, मालिक, राजा, नृप। राज्य का प्रधान शासक। (ह. नां. मा.)

उ०—१. राणां राजां रावळां, उर पड़ सोच अथाह।
जग वाको 'जसराज' रौ, सुणियौ औरंगसाह। —रा. रू.

उ०—२ राजा जुवराजकुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सांमंत लघुसामत तलवर तंत्रपाल चतुरमीतिक ताडकपति मत्रि महामत्रि ग्रहवाहक········ —व. स.

उ०—३. राजा तूझ सभी अन राजां, होड कियां नृप विया हमैं।
पांणी-हड पहरै दोहुं पागां, नासा नार जिहुंइ नकसैं। —सांइयौ झूलौ

२ स्वामी, मालिक।

३ क्षत्रिय।

४ युधिष्ठिर का एक नाम।

५ इन्द्र का एक नाम।

६ चन्द्रमा। (ना. डिं. को.)

७ उल्लू पक्षी।

उ०—भैरव डावी भणें, दुगड़ियौ मांन दिरीजै।
जै राजा जीमणौ, पोहर हेकण ठैहरीजै। —पा. प्र.

८ यज्ञ।

९ वीर्य, शुक्र।

१० पति, प्रियतम या प्यारे के लिये किया जाने वाला एक सम्बोधन।

११ ताश का वह पत्ता जिस पर राजा का चित्र हो।

१२ अंग्रेजी सरकार द्वारा रईसों व जमीदारों को दी जाने वाली एक उपाधि।

१३ धनवान व समृद्धिशाली व्यक्ति।

१४ राजा की उपपत्नी की संतान (पुरुष) को दिया जाने उपटंक या पदवी। (जयपुर)

वि०—१ उदार, दानी।

२ जिसे राजा तुल्य माना जाता हो, राजा के समान।

उ०—हरीया होदै ऊपरै, रावत वाई रीठ। मारचौ राजा मोह कू, पड्यौ तळफै पीठ। —अनुभववांणी

रू० भे०—रज्जी, राम्रा, राईम्रा, रागांन, राया।

अल्पा०—राजौ, रायौ।

राजाई—सं. स्त्री—१ राजा होने की अवस्था या भाव, राजत्व।

उ०—राजाई कहीजै किनां पातसाही धारी रांम। —पी. ग्रं.

२ राजा का पद, राजा के अधिकार।

उ०— मायपुरै राजाई भारतसिंघजी पायी। —वां. दा. ख्यात

३ शासन, हुकूमत।

उ०— रांजा राइसिंह सवत १६६१ राजाई पाई। नारायणदाम पातावत रौ दोहीतौ। —नैणसी

रू० भे०—राजोई,

राजाधिकारी—सं० पु० [सं.] १ राज्य का अधिकारी, राजा।

२ न्यायालय में बैठ कर न्याय करने वाला, न्यायाधीश, विचारपति।

राजाधिराज—सं० पु० [सं.] १ राजाओं का राजा, सम्राट, राजेश्वर।

उ०—राजाधिराज मा'राज रांम। ते ताज सीस आलम तमांम। —र. ज. प्र.

२ मुगल काल में देशी राजाओं को दिया जाने वाला सम्मान-सूचक पद।

राजापण, राजापणौ—सं० पु० [सं. राजत्व] १ राजा होने की अवस्था या भाव, राजत्व।

२ राजा का पद, राजा के अधिकार।

रू० भे०—रजापण, रजापणौ,

राजापति, राजापती—सं० पु० [सं. राजन्+पति] राजाओं का राजा, सम्राट, राजेश्वर।

उ०—मन-भावै चालै खत्रीवट मारग, वीरत दावै धडा वरै। राजापती "जसौ" महाराजा, कमध मुहावै जकूं करै। —नाथौ सांदू

राजाराज—सं० पु०—१ चन्द्रमा, शशि। (डिं. को.)

२ कुबेर।

३ राजेश्वर, सम्राट।

राजालावु—सं० पु० [सं.] एक प्रकार का कद्दू।

राजावटी—सं० पु०—जयपुर जिलान्तर्गत एक भू-भाग।

राजावत—सं० पु०—कछवाहा वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—जगमाल उदैसिंघोत रै वंस रा रांणावत १, कांनावत २, कछवाहा सुरतांणोत राजावत ३, राठोड़ चांदावत ४, ए च्यार·

उमराव साहपुरै । —वां. दा. ख्यात

राजावरत्त–सं० पु० [सं. राजावर्त्त] एक प्रकार का रत्न जिसे लाजवर्द कहते हैं ।

राजावळी–सं० स्त्री० [सं. राजन्+अवली] १. राजवंशावली, किसी राजा के वंश की विगत ।

२ किसी सभा या दरबार बैठे राजाओं की पंक्ति

राजासन—देखो 'राजसिंहासन'

राजिंद, राजिंदर, राजिंदो, राजिंद्र, राजिंद्रौ—देखो 'राजेन्द्र' (रू. भे.)

उ०—१ म्हारी बाईजी रो कांई छै हवाल, राजिंद चालै चाकरी —लो.गी.

उ०—२ मिठड़ा राजिंद भिल रहो, डक मांनो मोरी वात । महिर करो मो ऊपरै, जिम न हुवै उतपात । —वि. कु.

उ०—३ गांजि फरसि असपती, भांजि धांनंख मुदप्फर । मखवाळा मंडळि करै सगळा राजिंदर । —रा. रू.

उ०—४ सोढा रांणा मनै म्हारै पीहरियै पहुंचाय, राजिंदा ढोला, ओळूंड़ी तो आवै म्हारा बाभोसा री । —लो. गी.

उ०—५ मेद-पाट राजिंद्र, देखि सरहद्दां दौड़ी । गुड़वांणी मेल्हियो, 'भीम' रांणो चीतौड़ो । —गु. रू. बं.

उ०—६ साहण समंद सूरो ईस्वर, अवतार देव राजिंद्रौ । —गु. रू. बं.

राजि—१ देखो 'राज' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां महाराजाधिराज महाराजा स्री रायसिंघजी बीड़ो झालियो । राजि विदा हुआ । —द. वि.

उ०—२ अभंग मछरीक इण भांति सूं ऊचरै, मुदो माहरो खरो कांम माथै । वैस हूंतां कह्यौ, राजि अपछर वरो, सरम, थे हुवो इंदलोक सायै । —लिखमीदास व्यास

उ०—३ थे तो भूखा नी भावठ भजउ, राजि निज सेवक तणा मन रंजउ राजि । म्हारा मननी आसा पूरो । राजि म्हांरा कठिन करम दल चूरउ । —वि. कु.

उ०—४ ताहरां सोढी कहै-राजि पधारो छो, हुं तो रावळे दरसण विणां अन नहीं खांवती, ताहरां ओढण रो पीतांवर दीन्हो, यो देखिज्यो । —लाखा फूलांणी री वात

देखो 'राजी' (रू. भे.)

राजिउ–सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—सारीयी तिलवास गरब्भसूभू राजिउ बयराजीउं महिदउरउं तीतआगिउं········ —व. स.

राजिक–वि.—[अ. राजिक] पालन-पोपण करने वाला ।

उ०—दादू राजिक रिजक लीये खड़ा, देवे हाथों हाथ । पूरक पूरा पास है, सदा हमारे साथ । —दादूवांणी

सं. पु.—ईश्वर, परमात्मा ।

राजिकापित्त–सं. पु. एक प्रकार का रोग ।

उ०—आंमवात सोफवात विगंछावात कफवात साकिनीवात रक्तपित्त अम्लपित्त राजिकापित्त········ —व. स.

राजित–वि. [सं.] सुशोभित, शोभित ।

उ०—अधर सुधारस मुरळी राजित, उर वैजंती माळ । क्षुद्र घंटिका कटितट सोभित, नूपुर सब्द रसाळ । —मीरां

रू. भे.—राजत

राजिम—देखो 'राजा' (रू. भे.)

उ०—आंणो रिख संग कहै विप्र एह । मुगता ही दूंध राजिम मेह । —रांमरासो

राजियउ—देखो 'राजियो' (रू. भे.)

उ०—एक दिवस सुंदर रूप देखी, राजा चित्त विचारियउ । भोगवुं जिम तिम करी भउजाई, राज करइ तिहां राजियउ —स. कु.

राजियोड़ो—भू. का. कृ. १ बैठा हुआ आसीन. २. शोभित हुवा हुआ. ३ सुंदर लगा हुआ. ४ चमका हुआ. ५ राज्य किया हुआ, शासन किया हुआ ।

(स्त्री. राजियोड़ी)

राजियो–सं. पु. [सं. राज्] १ राज्य का स्वामी, राजा ।

उ०—१ जीहो मिथिला नगरी रो राजियो —जयवांणी

उ०—२ तिण समइ युग प्रधांन जगि राजियो । स्री स्रजिन चंद तेजे सवायो । —स. कु.

२ राजा के वंश का, राजा का वंशज ।

रू. भे.—राजियउ, राजीयो, ।

३. कविवर कृपाराम खिड़िया का अनुचर, जिसको सम्बोधन करते हुए सोरठे रचे गये जो "राजिया के सोरठे" कहे जाते हैं ।

राजिल–सं. पु. [सं. राजिल] एक प्रकार का सर्प जो भयकर विषैला होता है । (अमरत)

२ विषरहित और सीधे सर्पों की एक जाति या इस जातिका सर्प ।

राजिव—१ देखो 'राजीव' (रू. भे.)

२. देखो 'राजवी' (रू. भे.)

राजींद, राजींद्र—देखो 'राजेंद्र' (रू. भे.)

उ०—ऐकरिये ओ मारूजी, करला पाछा जी मोड़, राजींदा ढोला, ओळूं घणी आवै म्हारी माय री । —लो. गी.

राजी–वि० [अ.] १ प्रसन्न, खुश, आनन्दित ।

उ०—देखो आद अनाद सूं, राजी व्है स्रीरांम । संतांरा संसारमें,

किसड़ा सारै काम । —भगतमाळ

उ०—२ पितारी हुकम सुण चौगुणा पाळियो, वजाया घरा ले घरा वाजा । हुतो राजी तरै हेक राजा हुतो, रीसीयौ साहतो विनै राजा ।

—द. दा.

उ०—३ एह अणख छै आपणी जी, सदा न चलस्यै रे एम । करि मुझ नइ राजी हिवैंजी, जिम वाधइ बहु प्रेम । —वि. कु.

२ महरवांन, कृपालु ।

उ०—नाई पीडियां नैं सुथराई सूं दबावतौ वोल्यौ—नीं बापजी, ग्रो तौ वैंम इज म्हारै माथै मत करौ । कांनां सुणी सौ पाछी होठां निकळै ई नीं । इण वास्तै ई तौ राजाजी म्हारै माथै इत्ता राजी है । —फुलवाड़ी

३ अनुकूल, पक्ष में ।

४ किसी कार्य को करने या बात को मानने के लिये तैयार, प्रस्तुत सहमत, सम्मत ।

उ०—१ म्हैं तौ उण नाकुछ काम वास्तै नटी जकौ इण मूंडै तौ पाछौ हुंकारौ नीं भरियौ । कांवड़ियां सूं मार मारनै म्हारी डील लीलौ चम कर दियौ पण म्हैं राजी नीं व्ही । —फुलवाड़ी

उ०—२ वौ नांनी मां रै पाखती आय रिसांणी करतौ व्हे ज्यूं वोल्यौ—म्हारै पैंला ई उणनै टोगड़ी वताय दी । पण वा एकली देखण सारू कीकर राजी व्ही । —फुलवाड़ी

उ०—३ वा तड़कनै कह्यौ—म्हनै समझावण नै आया है, पैंला थांरा हीया माथै हाथ धरनै सोचौ के एकाएक वेटा नै दिसावर भेजण सारू थैं राजी व्हिया तौ व्हिया इज कीकर । —फुलवाड़ी

५ संतुष्ट ।

उ०—१ सुंदरदास भलौ सांचौ सिरदार सारी वात मांही साव । सयांणी समझणी । मांणसां री बैठणहार सौ लोग सारौ जीव टेक खडौ रहै । सगळा राजी ।

—भाटी सुंदरदास वीकूंपुरी री वारता

उ०—२ 'मोनग' घोको संभरै,सुण जौखो निज साथ । दाह मिटी राजी थयौ, औरंगसाह समाथ । —रा. रू.

६ मस्त, मग्न ।

उ०—१ वाजी पर साजी चढ वैठै, व्है राजी विन होस । पड़ै सवार आप खुद पाजी, दै ताजी सिर दोस । —ऊ. का.

उ०—२ मैं तो राजी भई मेरे मन में, मोहि पिया मिळै इक छिन में —मीरां

७. निरोग स्वस्थ ।

'स. स्त्री [सं.] १ पंक्ति, कतार ।

उ०—रचै लार गुंजार रोलंब राजी । भगांणा भंडां रोव ग्रोलंब भाजी । —वं. भा.

२ रेखा, लकीर ।

रू० भे०-राजि ।

राजीखुशी—वि० १ प्रसन्न, खुश, आनन्द में ।

२ चैन से, आराम से ।

सं० स्त्री० १ प्रसन्नता, खुशी ।

२ चैन, आराम, कुशलता ।

उ०—साळा वारै आया, राजी-खुशी पूछी अर पागो पकड़'र वैठ्या । —दसदोख

राजीड़ौ—सं० पु० [सं. राज+रा. प्र. ड़ौ] १ पति, प्रियतम ।

उ०—१ उठ म्हारा राजीड़ा दांन द्यौ, थारे हुई छै धरम की रात, झालर वाजै राजा रांम की । —लो. गी.

उ०—२ पांन सुपारी धण रे हाथ, जोसीड़ा ने वूजन राजीड़ा की वण गई । —लो. गी.

२ राजा, नृप । (अल्पा., रू. भे.)

राजीनांमौ—स० पु० [फा० राजी नामः] १ किसी विवाद या झगड़े को समाप्त करने के लिये, वादी व प्रतिवादी द्वारा सुलह करके लिखा जाने वाला संधि-पत्र, सुलह-नामा ।

२ स्वीकृति-पत्र ।

राजीपौ—सं० पु०—१ हर्ष प्रसन्नता या खुशी होने की अवस्था या भाव ।

उ०—तद कही लोग राजीपै मौ कनै ढूकै छै कना वैराजी ढूकै छै । —ठाकुर जेतसी री वारता

राजीवाजी—वि० प्रसन्न, खुश

राजीमति, राजीमती—सं० स्त्री०—एक राजकुमारी, जिसका सम्बंध नेमीनाथ के साथ हुआ था पर शादी न हो सकी ।

उ०—कविता कालिदास नी, विघ्नापहारता परस्वनाथ नी, अप्रकंपता स्री वीरनी, निरसनता ढंढण कुमारनी, वाचा धनांनी, सील प्रभाव राजीमती तणउ । —व. स.

राजीयौ —देखो'राजियौ' (रू. भे.)

उ०—१ वेढ वडाई राजीयां सूरौ दळ सिणगार । सेल घमंका सिर सहे, आवै जव इकतार । —अनुभववांणी

राजीव—सं० पु० [सं.] १ नील कमल, कमल । (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—छऊं भैंन छोटी दहूं ओड़ छाजै । विचै पाट राजीव माजी विराजै । —मे. म.

२ हाथी ।

३ एक प्रकार का सारस ।

४ एक प्रकार का मृग जिसके पीठ पर धारियां होती हैं ।

५ रैया-मछली ।

रू० भे०—राजिव ।

राजु—देखो 'राज' (रू. भे.)

उ०—राजु तुम्हारुं पूत्तु तुम्हारउ, अज्जीउ गंगे किसुं विचारउ।
—सालिभद्र सूरि

राजीवलोचन–वि०—जिसके नैत्र कमल के समान सुन्दर हो।

उ०—उपत्ति-खपत्ति-प्रकत्ति-असंग, राजीव-लोचन जांणै ध्रुव रंग।
—ह. र.

राजुल—१ देखो 'राजल' (रू. भे.)

२ देखो 'राजमति'

राजेंद्र–स० पु० [सं. राजेन्द्र] १ राजाओं का राजा, सम्राट, राजेश्वर।

२ इन्द्र।

३ पति, प्रियतम।

४ किसी प्रिय व्यक्ति के लिये आदर युक्त सम्बोधन।

रू० भे०—राजंद, राजंद्र, राजइंद, राजिंद, राजिंदर, राजिंदौ, राजिंद्र, राजिंद्रौ, राजींद, राजींद्र, राज्यंद, राज्यंद्र, राज्येंद्री।

राजेस, राजेसर, राजेस्वर, राजेस्वुर, राजेंसुर–सं० पु० [सं. राजेश्वर]

१ राजाओं का राजा, सम्राट, राजाधिराज, राजेश्वर। (डिं. को.)

उ०—अवद्धेस राजेस जांनेस आया। विदेहेस सांम्हैस आंणै वधाया।
—सू. प्र.

उ०—२ रुघपति हरां जोड़ राजेसर, गयद हरण हरवळ गाढां गुर।
—रा. रू.

उ०—३ तिण राजेसर राजारै महारांणी महामाया पटरांणी तिण रा पेट री नीपनौ कुंअर गुर पाट पति कुंअर स्त्री राजांन कुंअर पदौ भोगवै।
—रा. सा. सं.

उ०—४ गुण धारी सुविचारी रे लौ, म्हारा राजेसर जी रे लौ।
—वि. कु.

उ०—५ सुखदाता सरणायां, निज संतां जानुकी नायक। दस सिर भंज दुवाहं, राहं जग क्रीत राजेस्वर।
—र. ज. प्र.

२ इन्द्र।

रू. भे.—राजसुर,

राजोई—देखो 'राजाई' (रू. भे.)

उ०—'सोभाग' सुजाव चांढ पुंआर उदार सोभा, गोखां हेट लागा मद्दां करीजे अग्राज। सारा छत्र धारचां राजा रांण दीधां सुरां, राजोई आयांण भूरा क्रोड़ जुगां राज।
—राव सवाई केसवदास परमार री गीत

राजोघर—देखो 'राजघर' (रू. भे.)

राजौ—देखो 'राजा' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ वेसण नाहि बुलावणौ, नही वचन रो साजौ रे। माहरी आयां की राखी नहीं, हूं दीन दुखी को राजौ रे।
—जयवांणी

उ०—२ एक दिन एकांते आव ए, प्रारथना करइ राजौ जी।
—स. कु.

राजौघर—देखो 'राजघर' (रू. भे.)

राज्यं—देखो 'राज्य' (रू. भे.)

उ०—समाचारेण विस्वासः, अभ्यासेन विद्या, न्यायेन राज्यं, औचित्येन महत्वं,औदार्येण प्रभुत्वं
—व. स.

राज्यंद, राज्यंद्र—देखो 'राजेंद्र' (रू. भे.)

उ०—१ ढाढी जे राज्यंद मिळइ, यूं दाखविया जाइ। जोबण हस्ती मद चढचउ, अंकुस लइ घरि आई।
—ढो. मा.

उ०—२ काळा दळवळ वळ चाढे सक्रोध। जोग्यद्र रूप राज्यंद्र जोध।
—सू. प्र.

राज्य–सं० पु० [सं.] १ वह देश, राज्य या प्रदेश जो किसी एक राजा के शासन या स्वामित्व में हो।

२ शासन, हुकूमत।

उ०—प्रथम अचळदास खीची गढ गागुरन को धणी। गढ गागुरन राज्य करै छै।
—लाली मेवाडी री वात

३ शासन या हुकूमत के अधिकार।

रू. भे.—राज्यं।

राज्यकळा–स. स्त्री. [स. राज्य+कला] १ शासन करने की पद्धति, प्रणाली, विधि।

२ राजनीति।

राज्यकाळ–सं. पु. [सं. राज्यकाल] किसी राजा या शासक के हुकूमत की अवधि, शासन-काल।

राज्यतिलक—देखो 'राजतिलक' (रू. भे.)

उ०—गोतम गोत्री थापना करि, राज्यतिलक करि, रास्टेस्वर राजा नै विदा कियौ।
—रा. वंशावली

राज्यपाळ–सं. पु. [स. राज्यपाल] १ प्रजातन्त्रात्मक या संसदीय प्रणाली के अन्तर्गत, देश के प्रत्येक राज्य या प्रान्त के लिए बनाया हुआ प्रधान शासक का पद। (गवर्नर)

२ उक्त पद पर नियुक्त व्यक्ति, जो राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किया जाता है।

रू० भे०—राजपाळ।

राज्यलक्ष्मी, राज्यलिछमी—देखो 'राजलक्ष्मी' (रू. भे.)

राज्यलोभ–सं पु. १ राज्य या सत्ता का लोभ।

२ कोई बडा लोभ। ३ उच्चाकांक्षा।

राज्य-व्यवस्था–सं. स्त्री. [सं] शासन करने का ढंग, शासन का विधान, राज्य का नियम।

राज्यसभा–सं. स्त्री० सं. [स.] भारतीय संसद का एक सदन, उच्चसदन, अपर हाउस।—वि. वि.–यह लोक सभा से अतिरिक्त एक सदन है जिसके अधिकांश सदस्य राज्यों की विधान सभाओं

द्वारा चुनकर भेजे जाते हैं । कुछ सदस्यों का मनोनयन राष्ट्रपति द्वारा किया जाता है। लोक सभा द्वारा पारित किया हुआ बिल इस सभा से भी पारित होना जरूरी है।

रू० भे०—राजसभा,

राज्याभिसेक—देखो 'राजतिलक'

राज्येंदौ, राज्येंद्रौ—देखो 'राजेंद्र' (अल्पा., रू भे.)

उ०—राज्येंद्रौ जोग्येंद्रौ संगौ सांमरथ नेह एकंगौ। लेवै सेव सुहित्तं आसंगौ नइव लेखंती। —रा. रू.

राट—सं पु १—राजा, नृप। (ह. नां. मा.)

उ०—भजि जात प्रजा भय वात भगेळा, पाटण तूंअर कंप पुरे। वडगूजर जाट अहीर तजे वळ, दाट लगा पुर राट दुरे। —रा रू.

२ प्रधान या श्रेष्ठ व्यक्ति।

३ देश, राष्ट्र, राज्य। (सभा)

उ०—खहर गये अत दुज्जड़ां, सहर करै दहवाट। आधा धांणां 'अजन' रा, लूट विडांणा राट। —रा रू.

रू भे.—राट्ठ।

राटक—स. पु.—१ शस्त्र-प्रहार।

सं. स्त्री.—२ शस्त्र प्रहार की ध्वनि।

३ युद्ध के नगाड़े की ध्वनि।

उ०—अंबाटक राटक सुण असि नाटक, रचता माळू रण राळू जम माळू सा जचता। —किसोरसिंह

राटणी—सं. स्त्री.—वाद्य की आवाज, ध्वनि।

उ०—राटणी तवल्लां सोरां रचायौ सवेरी राग। पाटणी हिंदवां गोरां मचायौ पीठांण। —दुरगादत्त बारहठ

राटपाट—वि. नष्ट भ्रष्ट।

उ०—झाडिया सनाह तन तुरग जीण, हुय गया मुगळ दुख दहल हीण। पड़ झाट थाट छल राटपाट। दिल्लीस जळे दळ वळै दाट। —रा. रू.

राटी—सं. स्त्री—साधारण या सामान्य स्त्री।

उ०—किहां भीति नइ किहां आटी रे ? किहां रंभा नई किहां राटी। अंतर दीसइ एवडु, किहां दूध किहां छासि खाटी रे।

—नळदवदंती रास

राटेस्वरी—सं. स्त्री.—राठौड़ों की कुल देवी।

उ०—चक्रेस्वरी वळे स्थांने राटेस्वरी तथा रट। पंखणी सस माग्रेण, नागणेची नमस्तुते। —पा. प्र.

राट्ठ—देखो 'राष्ट्र' (रू. भे.)

राठ—सं. पु.—१ भाटी वंश से निकली हुई एक मुसलमान जाति।

उ०—१ केलण भाटी रा बेटा दोय धीरो १, खुमांण २, मुसलमांन हुवा ज्यांरा वंस रा राठ। —बां. दा. ख्यात

उ०—२ जग खोसिय कोलिय मीर जता। मिर वंध सराहिय राठ छता। —पा. प्र.

२ एक प्राचीन राजवंश।

३ एक प्रकार का मजबूत पौधा।

राठउड—देखो 'राठौड़' (रू. भे.)

उ०—मंडळीकां मोटां कुळि मउडां, रमणि सुवांणि कीति राठउडां। —रा. ज. सी.

राठरीठ—सं. स्त्री.—१ शस्त्र प्रहार।

उ० खतगे कुराट झाट राठरीठ वगे सगे, जगे पाठ प्रेतकाळी अनाठ जुआंण। सतारा हजार आठ लोहलाट आया सजे, ['रासा'] रा तीन सै साठ नीमजे आरांण। —पहाड़खां आढौ

२ शस्त्र प्रहार की ध्वनि।

रू० भे० राठारीठ

राठवड़, राठवड—देखो 'राठौड़' (रू. भे.)

उ०—१ निजर परखै राठवड़, अकबर तेज दिणंद। जांणे व्योम विमाण, सम, भोम प्रगट्यो इंद। —रा. रू.

उ०—२ जैचंद हुवौ दळ पांगळौ, असी लाख साहण सबळ। छत्तीस वंस राजनकुळी, वडौ वंस राठवड घर। —रा. वंशावली

राठारीठ—देखो 'राठरीठ' (रू. भे.)

उ०—कैवांण पीछटै सुरस नाह नुवड़ै कड़ा, देख चाव घड़ा सुर खुलै सीदां दीठ। खड़ै धाड़ तोड़ चांपो मारणो नहीं छो बीनां खून। गैघड़ा वदारणो छो उडे राठारीठ।

—ठा. जैतसिंह आउवे रो गीत

राठासण, राठासेण—सं. स्त्री. [स. राष्ट्रश्येना] राठौड़ों की कुलदेवी।

उ०—बापा नुं रिखीस्वर आग्या दी, ते म्हारी घणी सेवा करी। म्हे तोनूं मेवाड़ रो राज महादेवजी देवीजी प्रसन्न कर दिरायो छै। इण ठौड़ एकलिंग प्रकट हुवा छै। और देवी राठासण छै, तिण री तूं घणी सेवा करजै। —नैणसी

राठोड़—देखो 'राठौड़' (रू. भे.)

उ०—रिण राठोड़ां आधिआ, भाटी अंग अभंग। इळ छळ झल्लै ऊठिया, घल्ले बांथ निहंग। —रा. रू.

राठोड़ी—वि.—देखो 'राठौड़ी' (रू. भे.)

उ०—जला जी मारू, राजां मांयलौ राज भलो राठोड़ी हो मिरगा-नैणी रा जलाल। —लो. गी.

राठौ—सं. पु.—रीढ की हड्डी।

उ०—तरै मास १० पुरण हुवा। तरै राजा रो वांसे सुं राठो फाड़नै बालक काढीयो ने पाटो बांध्यो। —रा. वं. वि.

राठौड़-सं. पु. [सं. राष्ट्रवर] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राज-वंश, जिनका मूल राज्य दक्षिण में था और वहां से गुजरात, काठियावाड़, राजपूताना, मालवा, मध्य प्रदेश, गया, बदायूं आदि में इनके कई स्वतन्त्र राज्य स्थापित हुए। इस वंश की व्युत्पत्ति के विषय में काफी बड़ा मतान्तर है। प्राचीन शिला लेखों एवं वंशावलियों के आधार पर कुछ विद्वान इन्हे रामचन्द्र के द्वितीय पुत्र कुश के वंशज अर्थात् सूर्यवंशी मानते हैं, परन्तु कुछ विद्वान "रट्ट" यदुवशी से इनकी व्युत्पत्ति मान कर इनको चद्रवंशी मानते हैं। चन्द्रकला नगरी के राजा यवनसुत की रीढ़ से बालक मानधाता की उत्पत्ति एवं उसके वंशज राठौड़ कहलाने की एक प्रतीकात्मक कथा भी सर्व प्रचलित है।

उ०—राठौड़ां पण झल्लियौ, नृप 'अगजीत' निमत्त।
सुण तहवर उर छीजियो, अत खीजियो दुरत्त। —रा. लो.

२ उक्त वंश का व्यक्ति।

रू० भे०—रट्ठवड़, रट्ठवर. रट्ठोड़, रट्ठोर, रट्ठौड़, रट्ठौर, रठवड़, रठौर, राअठोड़, राडठौड़, राठउड़, राठवड, राठवड, राठोड़, राठोर।

राठौड़वै-सं. पु. [सं. राष्ट्रवरपति] राठौड़ वश का राजा।

उ०—सुख जिके इंद्र भुगतै सरगि, जिकै सुक्ख स्रब भोगवै।
अवतार वीर राजा इसौ, 'गजपति' राठौडवै। —गु. रू. बं.

राठौड़ी-वि.—राठोड़ों का, राठौड़ों संवंधी।

उ०—वनी ए थांरी राठौड़ी धरती म्हारा चलता घुड़ला हारचा —रा. ले.

सं. स्त्री.—१ साफा वांधने का ढंग विशेष।

उ०—रंग-रंग री पोसाखां इनायत करै छै, नै माता घोड़ा उडणा ताजी ऊपर भीण करावै छै। राठौड़ी वंध वंधावै छै ऊपर वाला वदी तुररा सिर पेच वंधीजै छै। —पनां

२. राठौड़ों की हुकूमत या सत्ता।

मुहा०—राठौड़ी चलाणी=अपनी इच्छानुसार कार्य करना या करवाना, रोव गालिब करना।

रू. भे. राठोड़ी

राठौर—देखो 'राठौड़' (रू. भे.)

राढ़, राढा-सं. स्त्री.—१ जिद्द, हठ।
२ शोभा, छवि। (नां. मा., ह. नां. मा.)

राढांमणि, राढांमणी-सं. स्त्री—काच की मणि।

राढ़ाळी-वि. हठीली, जिद्दिली।

म. स्त्री.—१ लड़ाई, झगड़ा, युद्ध।

उ०—बाढाळी वहतांह, राढाली त्रम्मक रुड़ै। साढाळी सहतांह, डाढाळी ऊपर करै। —महाराज वखतावरसिंह (अलवर)

२ संकट।

रातंक—देखो 'रातंग' (रू. भे.)

उ०—छोह छक रातंक थका छावतां, गुमर वगड़ावतां रूपगाढै।
घमोड़ा तड़ा अवरी घड़ा धावता, चमू सगतावतां नूर चाढै। —माधोसिंह सक्तावत रो गीत

रातंखियौ—देखो 'रातांखियौ' (रू. भे.)

रातंखी-स. स्त्री.—१ चील रूपधारी देवी।

उ०—अइयौ सगति अनंत, प्रगट किया सारी प्रथी।
मुंदराळी मैंमत रातंखी तूं हीज रिधू। —मा. वचनिका

२ देखो 'रातंग'

रातंग-सं. पु.—१ गिद्ध।

उ०—थंम जंगा बोम बाट जोड़तो रातंगां थाट। तोडतो मातंगां घाट रोड़तो आंवाट। —हुकमीचद खिडियो

२ चील।
३ लाल चोंच वाला मांसाहारी पक्षी।

रातंब, रातंबर—देखो 'रकतंवर' (रू. भे.) (ना. डि. को., नां. मा)

उ०—१ तेरह लोह अंग रातंबर, पह आंणै अग्र सेत पटाभर।
पोहचि तठै सिक्का पौढाणै। इम पण पूर भरथ अग्र आंणै। —सू. प्र.

उ०—२ घण भेरी थरहर हुई सिंधु सुर ढूका कुजर कोट ढहे।
गीधणियां गह हुवर छायौ अंवर, रथ रातंवर तांणि रहे। —गु. रू. बं.

उ०—३ इंद लोक ऐरापति खेध करै खळ गोड़वि आंणै गेह।
सपतास रातंवर साजि असंमर रोहड़ळ धारेह। —मा. वचनिका

रातंवरी-वि. [सं. रक्त+अंवर] रक्त वर्णकी, लाल।

उ०—रोळसी खळदळां चखां रातंवरी।
कळायां मरू त्यां जसौ गज केहरी। —हा. झा.

रातंमर—देखो 'रकतंवर' (रू. भे.)

उ०—यम देवालय मध्य दीन जुहे दहुं मम्मर।
आलवाल भरि स्रोन भई प्रतिमा रातंवर। —ला. रा.

रात—सं. स्त्री. [सं. रात्रि] सायंकाल से प्रातः काल तक का समय रात्रि, निशा, रजनी। (डिं. को.)

उ०—१ रात दिवस होवै मन राजी, निरख पराई नारी।
पढण पढावण मोसर पायौ, चूक गयौ विभचारी। —ऊ. का.

उ०—२ रात ढलनै लागी, जद मा'राजा घम मे वड्या। फूसी वियां नै घणा उदास अर मूंढौ उतारचां जोया। —दसदोख

रू. भे.—रति, रती रत्त, रत्ति, राति, राती, रातु, रातूं।

अल्पा.—रतियां, रत्तड़ी, रातड़, रातड़ली, रातड़ी, रातडि, रातडी।

रातउ-सं. पु.—१ एक वस्त्र विशेष।

उ०—बहूमूलं घूणोलियं मीणीयं कालं फूटडउं रातउं फूटडउं सूपउती मेघावली मेघडंबर पद्मावलि पद्मोत्तर इत्यादि वस्त्रांणि ।
—व. स.

२ देखो 'रातौ' (रू. भे.)

उ०—भणइ कोस साचउ कियउ, नवलउ राचइ लोउ ।
मूं मिल्हिवि संजम सिरिहि, जउ रातउ, मुणिराउ ।
—जिनपद्म सूरि

रातकडाहउं-सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—कणवीरं सोवन्नच्छलेउं मनेत्र नीलउं नेत्र रातकडाहउं वडंगणीउं कल्ही गुरूडसन्नाह.........
—व. स.

रातड़-सं. स्त्री.—१ लालिमा, ललाई ।

उ०—असुभ सुकन अंब रे, दाह दिन दिग रातड़ दीसै ।
—मा. वचनिका

२ देखो 'रात' (अल्पा., रू. भे.)

रातड़ली—देखो 'रात' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कहां वसियौ कांन्हा रातड़ली ।
अरे तेरे मुख बिच आंखे मोहे वासड़ली ।
—मीरां

रातड़ामुखां-वि.—लाल मुंह वाली/वाला, रक्त-मुखी ।

उ०—आपणै गात काय अरि कमळ ऊपरां ।
चापड़ै रातड़ा मुखां आंमिख चरां ।
—हा. भा.

रातड़ियौ-स. पु.—१ एक असुर का नाम ।

उ०—रमते डूंगरराय, अंग वाखळौ उवारे ।
रमते डूंगरराय, मेक रातड़ियौ मारे । —ठा. केसरीसिंह मनांणा

२ गिद्ध ।

३ देखो 'रातौ' (अल्पा., रू. भे.)

रातड़ी देखो 'रात' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ रातड़ी सवाई हो रांमजी वहि गई, पल पल छीजै गात ।
करणां सुणि करणामइ, महलि पधारौ हो नाथ । —ह. पु. वां.

उ०—२ एही उजळी रातड़ी, किण दुसमण दी वाळ ।
पड़ी जळूं मैं भवन में. प्रीतम विन बेहाल ।
—जलाल बूबना री बात

उ०—३ तारां तो छाई ढोला रातड़ी रे कोई फुलड़ां तो छाई ढोला सेज ।
—लो. गी.

रातड़ौ—देखो 'रातौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ पाका बिंब मधु ममा रे, ओपित विद्रुम जांण रे ।
मामोल्या जिम रातड़ा रे, अधर सुधारस खांण रे ।
—प. च. चौ.

उ०—२ ऊजळी धार पतसाह घड़ आछटै । मेलियौ रातड़ौ नीर 'मांनै' ।
—मानसिंह सक्तावत री गीत

रातजगण-सं. पु.—१ कुत्ता, श्वान । (अ. मा.)

२ रात्रि को जगने की क्रिया या भाव ।

रातजागौ—देखो 'रातीजोगौ' (रू. भे.)

रातडि, रातडी—देखो 'रात' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ काजळ मांहि कालिमा, रगति रातडि जेम । सुणि प्रीऊडा तिम माहरउ, पंजरि पसरिउ प्रेम ।
—मा. कां. प्र.

उ०—२ कां रे काली रातड़ी, थिर रही थांनक जोय । अम्हनइं तूं आंणइ, समइ सिउं संकरनी होय ।
—मा. कां. प्र.

रातणौ, रातवौ—देखो 'राचणौ, राचवौ' (रू. भे.)

उ०—पहले हम सब कुछ किया, भरम करम संसार । दादू अनुभव उपजी, रातै सिरजन हार ।
—दादूवांणी

रातदिन-सं. पु. [सं रात्रिदिवं, रात्रिदिवा] १ चौबीस घंटोंका समय या समय की अवधि जिसमें, रात-दिन पूरे व्यतीत होते हैं ।

२ प्रति-दिन, नित्य ।

रातब—देखो 'रातिब' (रू. भे.)

उ०—१ सगळा घोड़ां नूं रातब दिराय ताजा किया ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ नाडी आया सेह भरिया, जठै अलायदी जायगां देख नै अमल पांणी करण नै उतरीया । जठै घोड़ां नै तौ रातब की पींडियां खुवाय नै कायजै कीया ।
—पनां

रातमिण-सं. पु, [सं. रात्रि+मणि] चन्द्रमा ।

रातमुख, रातमुखौ-सं. पु. [सं. रक्तमुख] मुसलमान, यवन ।

उ०—घर धुजवी घरा पुड घुवतै, घरट घाय घण घेरविया ।
रातमुखा गोहूं अर रांणै, आवध वारै ओरविया ।
—महारांणा खेतसिंह रौ गीत

वि.—लाल मुख वाला, रक्तमुखी ।

रातरतन-सं पु. [सं. रात्रि+रतन] चन्द्रमा, शशि । (डि. को.)

रातरली—देखो 'रात'

उ०—कहां वसियौ कांन्हा रातरली । अरे तेरे मुख विच आवै मौहे वासरली ।
—मीरां

रातरांणी-सं.स्त्री. १ एक पौधा विशेष जिसके फूल रात्रि में सुगंध देते हैं ।

उ०—चंपौ, कंवड़ौ, केतकी, मोगरौ, जुई, कंवळ, गुलाब, रातरांणी कणेर, गुलमोर.........
—फुलवाड़ी

२ उक्त पौधे के फूलों का बना इत्र ।

रातराजा-सं. पु.—रात्रि का राजा उल्लू-पक्षी ।

उ०—विग्रह-वाजा पर वढर, करता जण काजाह । रा जाता राजा

न रह, रह्या रातराजाह। —खेतसिंह

रातरी—देखो 'रात्रि' (रू. भे.)

रातरोळौ—सं. पु. रात्रि का आक्रमण, रात्रि का झगडा।

रातळ, रातल—सं. स्त्री.—१ गिद्ध, गिद्धनी।

उ०—१ केवी भूप रायसिंघ कोपीवै। जुड़ खागां मुह कीध जुवा। रातळ सुरंग हुई भखती रत। हाली भाखर सुरंग हुवा। —द. दा.
उ०—२ परि सौक झौक रातळ अपार। वजि सौक काळ चक्र विखमवार। —सू. प्र.

२ मादा ऊंट।

रू. भे.—रातल्ल,

रातळौ—वि. १ लाल रंग का।

२ क्रुद्ध, क्रोधित।

सं. पु.—ऊंट।

रातल्ल—देखो 'रातळ' (रू भे.)

उ०—रुंड मुंड रातल्ल, पिंड सत खंड परक्खै। गूड सार गळ भरै, छंडि पळ लोयण भक्खें। —रा. रू.

रातवासी—वि.—१ रात्रि विश्राम करने वाला।

२ केवल रात्रि में ही रहने वाला, रात तक ही ठहरने वाला।

सं. पु.—रात्रि का विश्राम।

उ०—अर दोनूं एकै पींजरै में घातिया। पीछै रातवासो भेळा रया। अरु प्रात रै वखत सैहर में वेचण आयौ। —द. दा.

रातवासौ, रातवाह, रातवाहौ—देखो 'रातीवासौ (रू. भे) (डिं. को.)

उ०—१ म्है कठै आगा छां, याद करिस्यौ जद ही रातवासै आप कनै देखस्यौ। —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ म्हें तौ आछी तरै सूं ओळख लियौ पण अठै कोई सराय है कांई, जो रातवासौ लेवणौ है। —रातवासो

उ०—३ धरमसाळ री सवार-सिञ्झ्या फूस वाड़दो काढै। मारग चालता बटावू निसंक रातवासौ लेवता। —फुलवाड़ी

रातविरात—सं. पु.—रात्रि का समय।

रातांखियौ—वि. सं. पु. (स्त्री. रातंखी, रातांखी) आरक्त नेत्रवाला, लाल नेत्र वाला, सिंह, शेर।

उ०—तूटियों, प्रधाप वेग, होफरेल रातांखियो, सांप पांखियो क धाप डांखियो संठीर। ताप खाई मेंगळा अळा हूं, अमाप तेज, कुमारां सिंगार आप बुलायौ कंठीर—प्रतापसिंह राठौड़ री गीत

रू. भे.—रातंखियौ

रातादेई—वि. स्त्री.—माता के लिए प्रयुक्त होने वाला विशेषण शब्द।

उ०—१ जळ हर जांमी वावी मांगौ, रातादेई माय। कांन्ह कंवर सौ वीरौ मांगां, राईसी भोजाई। —लो. गी.

उ०—२ चुड़लौ चितरा दे, ए हां ए म्हारी रातादेई माय। आइ ए सांवरणिया री तीज, वाई पहरसी। —लो. गी.

रातापात—सं. स्त्री. [सं. रक्तपत्र] रंगशाल नाम पौधा विशेष।

रातिंदौ—देखो 'रातींदौ' (रू. भे.)

उ०—ज्यांनै परखिया तीन सौनार रात रा रातिंदौ नै दिन रा दीसै ई नीं। —फुलवाड़ी

राति—देखो 'रात' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—१ राति विढियौ इसी भाति नरवै रयण, सम-समी मार देतो सवांही। —किसनो आढौ

उ०—२ राति दिवस जे जायइं छइं, पाछा नावइ तेहो जी। खिण खिण त्रूटइं आउखुं, खीण पडइ वलि देही जी। —स. कु.

देखो 'राती' (रू. भे.)

रातिचर सं. पु [सं. रात्रि+चर] निशाचर, राक्षस।

रातिजागर देखो 'रातीजागर' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

रातिब—सं. पु [अ.] १ घोड़े, कुत्ते आदि पालतू पशुओं को नियमित खिलाया जाने वाला पौष्टिक खाद्य पदार्थ जो चारे से अतिरिक्त होता है।

उ०—१ ताहरां नरवद जी वैहलिया २ मोल लिया। सौ वैहल जोड़ने नित फेरै, भूंय चाढै रातिब दै। —नैणसी

उ०—२ ऊदै रै चढणनूं काछिण घोड़ी हुती। तिरैनूं रातिब अणायी जवां री आटौ अर गुळ दीनौ। —ऊदै उगमणावत री वात

२ पौष्टिक खाद्य पदार्थ की नियमित ली जाने वाली खुराक

३ मांस।

रू. भे.—रातव,

रातिबबंध—सं. पु.—पौष्टिक भोजन की प्रतिदिन की खुराक।

उ०—तार रहित मघइ पत्र ताजा। रातिबबंध भखै नित राजा। —सू. प्र.

रातिवास, रातिवासौ, रातिवाहि, रातिवाहौ—देखो 'रातीवासौ' (रू. भे.)

उ०—१ यूं वात चीत करतां रातिवास लीयौ हर दौड़ आय रही तदि दोनूं पोढि रह्या। —ढो. मा.

उ०—२ गोधूळक समै परणीया। रातिवासै पोढीया। प्रभाते सुखपाळ मैं वैसांण नै गढ जालौर ले आया। —वीरमदे सोनगरै री वात

उ०—३ तद स्त्री मांताजी री आग्या हुई तूं रातिवाहो देय म्हे थारी मदद छां। —ठाकुर जेतसी री वारता

उ०—४ हेरा करै डेरा हणौ, रातिवाहै राजो रे। मुगल घणां तिहां मारिया, सवल लूटाणां साजी रे। —प. च. चौ.

उ०—५ रातिवाहि विढिया रांन राउ, घण घाउ मेच्छ मभावि घाउ । —रा. ज. सी.

रातींदौ, रातींधौ—सं. पु. [सं. रात्रि+अंध] एक प्रकार का नेत्र रोग जिसमें रोगी को सूर्यास्त के बाद दिखना बंद हो जाता है अथवा धूंधला दिखाई देता है (अमरत)
रू. भे.—'रातिंदौ'

राती—वि. स्त्री.—१ लाल ।

उ०—१ राती कांनी री पोतड़िया रूडी । ऊनी लोवड़ियां वगला में ऊड़ी । —ऊ. का.
उ०—२ नारी वैरी वीड नहं, उलझै लेगो अरथ । राती पाघड़िया तणा सुलझावण समरथ । —बां. दा.
उ०—३ स्त्री स्वभाव लाडणउ, सांड आडणउ कुमित्र फाडणउ, दुरजन दुस्ट स्वजन सिस्ट आगि ताती, धातु राती । —व. स.
उ०—४ स्यांम सनेसी कबहु न दीनो, जांन बूझ गुझ वाती । ऊंची चढ चढ पंथ निहारू, रोय रोय अंगिया राती हो । —मीरा
२ रंगी हुई, रंजित ।
उ०—१ भर यौवन मा माती, पिण जैन धरम री राती । न सकै देखि मिथ्याती, जिणै दूर कीया कुरापाती । —वि. कु.
उ०—२ सखी री मै तो गिरधर के रंग राती । पचरंग मेरा चोळा रंगा दे, मैं झुरमुट खेलन जाती । —मीरा
३ अनुरक्त, आसक्त ।
उ०—१ मन मोहन सुंदरि माती रे, रहे पथ भरतारे राती रे । सखरी पहिरै ते साड़ी रे, तौ पिण सहु अंगे उघाड़ी रे । —ध व. ग्रं.
उ०—२ पीव मिल्या जीऊं खरी रे, नांतर तजिहुं देह । दासी मीरां रांम राती, हरि बिन किसी सनेह । —मीरा
४ मस्त, मग्न ।
उ०—१ ओलै बैठी एकली, करै सगलाई कांमो रे । राती रस भीनी रहै, छोडै नहीं निज ठांमो रे । —ध. व. ग्रं.
उ०—२ नारी मिरगा नयन, रंग रेवा रस राती । वदै सुकोमल वयण, महा भर यौवन माती । —वि. कु.
५ क्रुद्ध, क्रोधित ।
रू. भे.—राति,
६ देखो 'रात' (रू. भे.) उ०—१ भई कम्ठी यांमा, व्यसन मन भांमा स्रुत भरै । महा राती मारैं अतन तन जारैं नहं मरैं । —ऊ. का.

उ०—२ राती महल पोढ़ण गयौ । ओळगुवा नै हुकम हुवौ । चारि पहर रात झरोखै उलंगिया । परभात लाख एक री इनांम हुवौ । —पलक दरियाव री वात

रातीचांदी—सं. स्त्री.—लाल रंग की एक प्रकार की मिट्टी विशेष ।

रातीचोळ—वि.—लाल सुर्ख ।

उ०—इंदर भगवान परियां रो नाच जोवण सारू हीरा-मोती जड़्या सिंघासण माथै विराज्या हा नगा में पलायन । आंख्यां राती-चोळ । —फुलवाड़ी

रातीजगइ, रातीजगौ—देखो 'रातीजोगौ' (रू. भे.)

उ०—१ मास पहिरण पवसरि मांणी मन उछरंग, पर मास खरचइ धन बहु भंगि । रातीजगइ आगइ ताजा तुरग तंबोल, गीत गान गवावइ पावइ अति रंग रोल । —स. कु.
उ०—२ जोतकी टीपणां में सिरै-मोसर सभाळै, मोनकी धूप खेवता धका जोत करै । जागण-जम्मारा, घर रातीजगा रा मैं नेगचार हुवै —दगदोग

रातीजवार—सं. स्त्री.—लाल रंग की जवार । एक घास विशेष ।

रातीजागर—सं. पु. [सं. रात्रि+जागर] कुत्ता, श्वान । (अ मा.)

रातीजागौ, रातीजुगौ, रातीजोगौ—सं. पु. [सं. रात्रि+जागरणम्]

१ ईश्वर, देवि-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए, देवालय या उनकी मूर्ति के सम्मुख बैठकर, किया जाने वाला रात्रि-जागरण, जिसमें उनकी स्तुति, प्रार्थनाएं तथा भजन-कीर्तन किया जाता है ।

उ०—इसी विधि कीधा रातीजुगा, माहवीचन्द्र मारोजी । पटकूलै कीधी पहिरावणी, बहु संघने सोभागी जी । —ध. व. ग्रं.
२ विवाहादि उत्सवों पर औरतों द्वारा मांगलिक गीत गाते हुए किया जाने वाला रात्रि-जागरण ।
उ०—१ मास पहरण अवसर प्राणीमन उछरंग, पर मास खरचै धन बहुभंग । अति उछव कीजै रातीजोगौ दिलखोल, गीत गान गवावै पावै अति रंग रोल । —वृ. स.
उ०—२ गोरण निमि गोरा री रात परणीजण रै वास्तै पधारे जावै वा तो रातीजुगा री नै परणीजण रै दूसरा दिन री रातगोरा री सो गोरा री रात सूता म्हारै विणास री समूघां जारै चटण में बाहर रो ढोल वाजियो । —वी. स. टी.
रू. भे.—रतजगौ, रातजग, रातजगौ ।

रातीवासौ, रातीवाहौ—देखो 'रातीवासौ' (रू. भे.)

उ०—१ रातीवासै री माती रंभाती, जाया गोपा सै जाती जंभाती —ऊ. का.

उ०—२ पछै राठौड़ कीलांणदास रायमलोत रातीवाहो मांणस ५० तथा ६० सुं दीयौ —नैणसी

रातीभाजी—सं. स्त्री.—मांस ।

रातिवाहु, रातीवाय, रातीवास, रातीवासौ, रातीवाह' रातीवाहि, रातीवाहौ—सं. पु.—[सं. रात्रि+वस=आच्छादने+घञ=रात्रिवास, सं. रात्रि+वा=आघात, प्रहार] १ रात्रि को किया जाने वाला आक्रमण या हमला ।

उ०—१ दीधी सीज़ पातसाह इ घणी फौज करेज्यो आपापणी। वचन दीउं जालउरड राय, कटक न आवड रातीवाय —कां. दे. प्र.

उ०—२ परवतसिंघ देवड़ौ मेहाजळोत राव कला री भाई कल्यांण दासजी रातीवासौ दियौ जद मारांणौ। —वां. दा. ख्यात

उ०—३ एक खांति पूरवउ अम्हांरी, कटक चिहुं दिसि जोस्यूं। मनजांणिस्यु वरांसु वीतु, रातीवाहु देस्यूं। —कां. दे. प्र.

उ०—४ ताहरां रात पोहर १ गई. ताहरां इयां ठाकुरां रातीवाहौ दियौ। ताहरां हेमैं सीमाळोत जाइ पैहली तोड़ि कनात, भांज थांभौ, अर मुगल नूं घाव कियौ। मारनै माथै री कुलह लीवी। — नैणसी

उ०—५ तद जोधपुर रा विगाड़ कूंपैजी कीया। घणां गांव मारिया। घणै थांणै भूंविया। कटकां नुं रातीवाह दीया। —राव मालदेवजी री वात

[सं. रात्रि+वस=निवासनं] २ रात्रि को किया जाने वाला विश्राम, पड़ाव, निवास।

रू. भे.—रतियाव, रतिवाउ, रतिवाम, रतिवासौ, रतिवाह, रतिवाहौ, रातवासौ, रातवाह, रातवाहौ, रातिवास, रातिवासौ, रातिवाहौ, रातीवासौ, रातीवाहौ।

रातु, रातूं—१ देखो 'रातौ' (रू. भे.)

उ०—जेह ना, गुण जेह नइ हई इ वसइ, ते देखी तेह ना नयण हसइ। जे ऊपरि प्रांणी रातु घणउं, नांम मेल्हइ कहु किम तेह तणउं। —नळदवदंती रास

२ देखो 'रात' (रू भे.)

उ०—१ रातूं दे रोड़ा लूला खोड़ा. दुखियारा दीसंदा है। झोळी भड़कावै पोटी पावै, टोली सूं टाळंदा। —ऊ. का.

रातूलौ—वि. (स्त्री. रातूलौ) रक्तवर्ण, लाल।

उ०—पीलौ तौ ओढ सूरज नीं पूज्यौ। रातूलौ ओढ जळवा नीं पूजी ए माता रांणकदे। —लो. गी.

रातेरींगे—वि.—क्रोधित।

उ०—सुळ-सुळ सरु हुई। लोगां कांनां फूंसीं करी वात वीन रै वाप कनै गई। 'फूं फा मांणसियौ गिवावै'। सगौ रातेरींगे आयग्यौ।

रातोंरात—देखो 'रातोरात' (रू. भे.)

उ०—तद सारा अमराव भेळा होय राजा नूं काढियौ सो सौ असवारां सूं रातोंरात देसणोक स्री माताजी रा पावां आइयौ। —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

रातोकोट—सं. पु.—जेसलमेर जिलान्तर्गत पोकरण, ग्राम का कोट, किला, गढ।

रातोड़—सं. स्त्री.—१ ललाई, लालिमा।

उ०—उण री आंख्यां में जोयौ। हाल रींस अर रातोड़ मिटी नीं ही। आंख्यां थोड़ी सूज्योड़ी दीसी। —फुलवाड़ी

२ किसी दर्द या फोड़े के स्थान की ललाई।

रातोचंदण—सं. पु [सं. रक्त+चंदन] लाल चंदन।

वि.—रक्तवर्ण. लाल। * (डि. को.)

रातोदुरंग—देखो 'रातोकोट'

रातोबंब—वि.—गहरा लाल, रक्ताभ।

रातोमातौ—वि.—हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा, मोटा ताजा।

रातोरात—क्रि. वि.—रात ही रात में. रात के रहते-रहते।

उ०—१ जठै हरणे कोट छै तठै आया। अठै खुडियै री उनाव हतौ सु अठै आय रातो-रात सूता। —नैणसी

उ०—२ ताहरां इयै कही कुंवर तौ रातै मूवौ। सु रातोरात राकस उटाय ले गया। —चौबोली

रू. भे.—रातोंरात, रात्यूंरात,

रातौ—वि. [स. रक्त, प्रा. रत्त] (स्त्री राती) १ रक्तवर्ण, लाल, सुर्ख।

उ०—१ जळजाळ स्रवति जळ काजळ ऊजळ, पीळा हेक राता पहल। आधौ-फरै मेघ ऊधमता, महाराज राजै महल। —वेलि

उ०—२ बीछुड़तां ई सज्जणां, राता किया रतन्न। वारां विहुं चिहुं नांखिया, आसू मोती-वन्न। —ढो. मा.

उ०—३ वाळ-कन्हैया नै अजांण ई थोड़ी घणी रीस आयगी। मूंडो रातौ व्हैगौ। —फुलवाड़ी

२ रंगा हुआ, रंजित।

उ०—दादू विसय विकार सौं, जब लग मन राता। तब लग चित न आवही, त्रिभुवन पति दाता। —दादूवांणी

३ लाल रंग से रंगा हुआ।

उ०—अति घणु राता हो चीर न पहिरिवा, न करूं कड़यै स्नांन। वलि न विछाउं हो फूलनी सेजड़ी, न लहुं केह मांन। —वि. कु.

४ आशक्त, अनुरक्त।

उ०—१ अगा एक राग रंग राता, प्रांण गयौ सुण रीझियै। —स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ दादू राता रांम का, पीवै प्रेम अघाइ। मतवाळा दीदार का, मांगै मुक्ति बलाइ। —दादूवांणी

५ तल्लीन, मग्न।

उ०—१ मद का माता मद पीयैं, सौ मदवा नहीं जांनि। हरीया राता रांम रस, मन मतवाळा मांनि। —अनुभववांणी

उ०—२ रांम भजन सूं राता, महत भाग जे मांन। ज्यां सारीखौ जग में, उत्तम न जांणै आंन। —र. जं. प्र.

उ०—३ राता तत चितारत चितारत, गिरि कंदरि घरि विन्हे गए। निद्रावस जग एहु महानिसि, जांमिए कांमिए जागरण। —वेलि

६ उन्मत्त, मदमस्त ।

उ०—१ रातौ झूफ विग्गम वच रोड़ै, जवर दगो गुण जोमंड । गौ ऊभां संकर चौ कोमंड, तांण भीच किण तोड़ै । —र. रू.

७ प्रसन्न, खुश ।

उ०—तीरथ वरत सव मांड उनो, तहां नालै जांहि । भूंठ मूं संसार राता, साच देखै नांहि । —ह. पु. वा.

८ उलझा हुआ, फंसा हुआ, संलग्न ।

उ०—१ समझि नहिं काइ निज वंघ रातौ रहैं, एह अग्यांन मिथ्यात पंचम कहे । —ध. व. ग्रं.

उ०—२ परपंच रातौ प्राणियां, हरि सूं नाहि हेत । पर वसि पड्यौ विगूचसी, अव सूं चेत अचेत । —ह. पु. वा.

सं. पु. [सं. रक्त] रक्त, खून

उ०—दुस्ट सहज समुदाय, गुण छोडै अवगुण गहै । जोग चढ़ी कुच जांय, रातौ पीवै राजिया । —अग्यात

रू. भे.— रतौ, रत्त, रत्तउ, रत्तौ, रातउ, रातु, रातूं ।

अल्पा.—रतड़उ, रत्तड़ौ रत्तउउ, रातड़ियौ, रातड़ौ ।

रातोदीह—देखो 'रातदिन' (रू. भे.)

उ०—जैनूं जीहा रातोदीहा जी जंपो । कांतो थे कीनाला हूंता ही कंपो । —र. ज. प्र.

रात्य—देखो 'रात्रि' (रू. भे.)

रात्यूं–क्रि. वि.—१ रात में ।

उ०—१ जलाजी मारू. रात्यूं घण री पेटड़लो भल दूख्यौ हो मिरगानैणी रा जलाल । —लो. गी.

उ०—२ ठाकर ठाला ठोठ, ठकरांणी गिरधर जिसी । फरै विभै रा कोट, रात्यूं सूता राजिया —किरपाराम

२ देखो 'रात्रि' (रू. भे.)

रात्यूंरात—देखो 'रातोरात' (रू. भे.)

उ०—बापड़ी बूढ़ी डोकरी मोयां सूं पकड़योड़ी घणी रोई अर बेहोस हुयगी । पण धन रा घायोड़ा गवेड़ कँवै-तेनर आवै अर फरेब करै है । सगळै डांम घाल देवौ अर रात्यूंरात इयै रै घरां नाग आवौ । —दसदोख

रात्रि–सं. स्त्री. [सं.] १ संध्या से प्रातः काल तक का समय, निशा, रजनी (डि. को.)

उ०—विवाहादिक सुख री रात्रि छोटी लखावै अनें समीं सांझ मनुख मूंया ते दुख री रात्रि घणी मोटी लखावै । —मि. द्र.

२ रात की अधिष्ठात्री एक देवी ।

३ निराशापूर्ण अवस्था, या स्थिति (लाक्षणिक)

रू. भे.—रात्री ।

रात्रिकार–सं. पु. [सं.] चन्द्रमा, शशि ।

रात्रिचर–सं. पु. [सं.] राक्षस, निशाचर ।

उ०—छोटाग्या नर रात्रिचर ज्यूं करि गै मबन मढाई । गांडन पांणी परगट कीचड़, मह जांणै मुरझाई । —वि कु.

रू भे.—रात्रैंचर.

रात्रिज–सं. पु. [सं.] तारा, नक्षत्र ।

रात्रिंबळ–सं. पु. [सं रात्रिबल] निशाचर, राक्षस । (डि को.)

रात्री—देखो 'रात्रि' (रू. भे) (ना. मा.)

उ०—स्वांमीजी बोल्या–रात्री में लघु परठता हुग्यो जद त्रस री दया किम रहै ? —भि. द्र.

रात्रैंचर—देखो 'रात्रिचर' (रू. भे.)

उ०—ते रात्रैंचर मनि चिंतन विकल वदन विकराल । विरम वचन बोलतो, झूठो जांणि कराल । —वि. कु.

राद–सं. पु.—किसी घाव या फोड़े से निकलने वाला गंदा पानी, जो कुछ पीला व गाढ़ा होता है, पीव, मवाद ।

उ०—कानी मांगी घर भटियाणी रै दुख गो ई कोई पार नी हो । राद भरया तीनां रा काळजा अस्टपोर कुळता, बळीता भेलता । —फुलवाड़ी

रू. भे.—राध, राधि, राध्य । मह०, रादरड़ौ, राधड़, राधौ,

रादनी–सं. स्त्री. [सं. ह्लादनी] १ बिजली, विद्युत । (ना. मा., ह. नां. मा.)

२ वज्र ।

रादरड़ौ–सं. पु.—देखो 'राद' (मह., रू. भे.)

उ०—आज री बकबकी माफ थारी काली मामी नै माफ करज्यै । सित्तर बरसां रौ रादरड़ो आज घोड़ो सो फूटने बारै आयो । —फुलवाड़ी

रा'दारी—देखो 'राहदारी' (रू. भे.)

उ०– सारा है मुरधर डळ सारी, भूपां अंगरेजां वद भारी । आज 'वभूत' अवतारी, रैणव नोज भरै रा'दारी ।

रादौड़ौ—देखो 'राद' (मह., रू. भे.)

राध–सं. पु. [सं. राधः] १ वैशाख मास का एक नाम । (डि को.)

२ ज्येष्ठ मास का नाम । (डि. को.)

३ आग ।

४ देखो 'राद' (रू. भे.)

उ०—वैतरणी लोही राध नी, तिण री तीखो नीर । तिण में दुबावै तेह ने, छिन छिन होय सरीर । —जयवांणी

राधड़—देखो 'राद' (मह., रू. भे.)

राधमास–सं. पु.—वैशाख मास । (डि. को.)

राधा–सं. स्त्री. [सं.] १ श्रीकृष्ण की एक सुविख्यात प्राण सखी जो वृषभानु गोप की कन्या थी।

उ०—वडा भड़ माधा राधा वंद, नमै पगि लागौ इंद नरिंद। —पी. ग्रं.

वि, वि.—पुराणों में इसे गोलोकवासी श्रीकृष्ण की पत्नी भी माना है।

२ विष्णु की सृष्टि उपकारक पांच शक्तियों में से एक।

३ अधिरथ सूत की पत्नी, जिसने कर्ण का पालन-पोषण किया था।

उ०—अतिरथि सारथि तहिं वसए राय तणइ घरि सूत्तु। राधा नामिहिं तसु घरणि, करणु भणूं तसु पूत्तु। —सालिभद्र सूरि

४ विजली, विद्युत।

५ वैशाख मास की पूर्णिमा।

६ विशाखा नक्षत्र।

७ समृद्धि, सफलता।

८ विष्णुक्रांता नामक एक लता।

९ आंवला।

१० एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, तगण, मगण और यगण तथा एक गुरु होता है।

रू. भे.—रावाई, राधि, राधिका, राधे।

राधा अस्टमी, राधा आठम–सं. स्त्री. [सं. राधा+अष्ठमी] भाद्रपद शुक्ला अष्ठमी की तिथि जिस दिन राधा का जन्म होना माना जाता है।

रू. भे.—राधास्टमी।

रावाई—देखो 'राधा' (रू. भे.)

उ०—राधाई रुकमण और सतभांमा, कुब्जा कांई (थारै) संग पटै। मीरां के प्रभु गिरधर नागर, तुम सुमरां सूं म्हांको संकट कटै। —मीरां

राधाकांत–स. पु. [स.] श्री कृष्ण।

राधाकुंड–सं. पु.—व्रज में गोवर्धन पर्वत के निकट का एक सरोवर।

राधातनय–सं. पु. [सं.] राजा कर्ण। (अ. मा., ह. नां. मा.)

राधारमण–सं. पु. [सं.] श्री कृष्ण।

उ०—मद सिलल तणां चांटा हियै नीलमण, राजिया रुघर चांटा पदम राग। अडग पग मांड राधा-रमण उडायो, नग समौ विलंद मग विप गगन मग नाग। —वां. दा.

राधावर–स. पु. [स.] १ श्रीकृष्ण।

उ०—थारी छव प्यारी लागै राज, राधावर महाराज। रतन जटित सिर पेच कलंगी, केसरिया सब साज। —मीरां

२ श्री विष्णु। (डिं. को.)

राधावलभ, राधावल्लभ—सं. पु. [सं. राधा] १ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

२ श्री विष्णु।

राधावल्लभी–सं पु.—१ एक वैष्णवी सम्प्रदाय।

२ उक्त सम्प्रदाय का अनुगामी।

राधावेध, राधावेधु, राधावेधौ, राधावैधी–स. पु.—१ अर्जुन। (अ. मा., ह. ना. मा.)

२ बहत्तर कलाओं में से एक। (व. स.)

३ लक्ष्य पर तीर आदि लगाने की किया या ढग।

उ०—१ राधा वेधु सु अरजुनि साधिउ, मनचीतिउ वरु लाडीय लाधउ। जां मेल्हि गलि अरजुन माल, दीसइ पांचह गलि समकाल। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ त्रिभुवन जय पताका लेवी. चलचक्रांतरालि राधावेध करेवउ, जइव्रत मुद्रां संवेरउ। —व. स.

उ०—३ जिम वैस्वानर मध्य प्रवेस करी न सकइ, जिम राधावेध साधि न सकइ, जिम पांणी पोटल बांधी न सकइ, जिम वायनउ को घट भरी न सकीइ। - व. स.

रू. भे.—राहावेहु।

राधास्टमी—१ देखो 'राधाअस्टमी' (रू. भे.)

राधि—१ देखो 'राधा' (रू. रू.)

२ देखो 'राद' (रू. भे.)

राधिका–सं. स्त्री. [सं] १ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १३ और ९ के विश्राम से २२ मात्राएं होती हैं।

२ देखो 'राधा' (रू. भे)

उ०—राधिका क्रसण रास, व्रंदावन व्रज विलास। गिनका गज अजामेल गीध, पद गाता। —उ. का.

राधेय–सं. पु. [सं.] १ राजा कर्ण का एक नामान्तर।

उ०—मांगणां निवाजै रीझां, राधेय तराजै मांझी। क्रोवंगी समाजै रूप धनंजै क्रपांण। भूडंडां आजांन वाळौ विराजै आथांण भूरो, 'माधवेस' राजै बीजो गनीमां मथांण। —किसनसिंह बारहट

२ अंगद।

राधौ—देखो 'राद' (मह., रू. भे)

उ०—पंचेंद्रिय काय मांय रे फसियौ, उत्क्रस्टो सात आठ भव वसियौ। पिंड असुच उदारिक लोही राधौ। —जयवांणी

राध्य—देखो 'राद' (रू. भे.)

रापती, राप्तीनदी–सं. स्त्री.—एक नदी जो धवलगिरि पर्वत की पश्चिमि ढाल से निकल कर करनाली की ओर होती हुई गोरखपुर जिले में घाघरा नदी में जाकर मिल जाती है। (वीर विनोद)

राफ–सं. स्त्री.—१ मुंह का वह भाग, स्थान या कोना, जहां दोनों होठ

मिलते हैं। होठों का परस्पर मिलने का संधि स्थान।

उ०—व्याहरी नावौ काना पड़ियौ, हाथ सूं काच छूट र टुकड़ां हुयग्यौ। दलाल सांमो मूंढो ढीलो करचौ, राफां तिड़ाई जद ल्याळ चाल पड़ी। —दसदोख

२ फन।

उ०—नाग मंडळ मेवाड़ निरखतौ, कमधज गुरड़ फिरै कोवंग्र। कूंभकरन सिर सकै न काढे, जा उर राफ महाजद पंख। —बादर सूरी

उ०—२ किहि किहि काली नाग ना, रांनि ऊमटइ राफ। वनस्पति प्रज्वलि पडइ, तेह ना मुंह नी वाफ। —मा. कां. प्र.

३ यवन, मुसलमान।

उ०—गढ गढ राफ राफ मेटै गह, रेण खभी धम लाज ग्ररेस। पडर वेस नाद ग्रग पीगग, मेम न ग्रायी 'पतौ' नरेस। — महाराणा प्रतापसिंह री गीत

राफजी—देखो 'राफसी' (रू. भे)

उ०—चढै सेख चंदवळां, मुगल वर गोळज गोळां। रचै गोळ राफजी, सयद, पाठांण हरोळां। — सू. प्र

राफट-रोळ, राफटरोळियौ, राफटरोळीयौ, राफटरोळो—सं. पु.—गड़-बड़ी, अव्यवस्था।

उ०—धरमराज रीस में पग पटकता कैवण लागा—ग्रबै म्हैं कांई कैवूं ग्रर कांई नीं कैवूं। बिना ग्वातै सुरग-नरक री न्याय कीकर करूं। थें तौ सगळी राफट-रोळियौ कर दियौ —फुलवाड़ी

राफसी—सं. पु.—एक मुसलमान या यवन जाति व इस जाति का व्यक्ति

उ०—रवद स्यांम के रूम के, सुनी राफसी मोय। साह हुकम चौड़ै स्रवण, सुण सोनिया मकोय। —रा. रू.

रू. भे.—राफजी।

राफौ—सं. पु.—१ ऊंटों का एक रोग। इसमें ऊंट के किसी पैर के तलवे में सूजन आकर उसमें मवाद पड़ जाता है।

२ उक्त रोग से पीड़ित ऊंट।

राब—सं. स्त्री.—१ बाजरी, जवार या मक्की आदि के आटे को छाछ में पका कर बनाया जाने वाला एक पेय पदार्थ।

उ०—१ पहियां राब न पावही, पड़ी बीज उण पौळ। ऊ फळसी रहजौ अडग, दूवां दहियां छौळ। —बां. दा.

उ०—२ नीत रीत सूमां नहीं सवाव। सूमां धरै सुगाळ, में रंधै रसोड़ै राब। —बां. दा.

२ आंच पर पका कर गाढा किया हुआ गन्ने का रस जो गुड़ से पतला व शीरे से गाढा होता है।

३ रबड़ी।

४ कोई गाढा पेय पदार्थ।

अल्पा., राबड़ी,

राबड़यो, राबड़ियो—सं. पु.—औटा कर गाढा किया हुआ दूध।

उ०—सौ ग्राछी खानी रोटी करै नै छाळी गाडर रा दूध है। राबड़यो करै मांहे लौंग मिसरी घालै नै गुवाळ री मां हाथै जीमण मोकळै। —गांम रा धणी री बात

राबड़ियो-खाटो—सं. पु. कढी नामक पेय शाक।

राबड़ी—देखो 'राब' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ नीं थाळा पीवै राबड़ी, ऐ सोळा रोटी खाय। वौ वर टाळो माता गोरल, म्हें थांनै पूजण आय —लो. गी.

उ०—२ बापड़ी महिनो भर राबड़ी पीवी जद कठैई जाय नै ठीक हुई। पण उण री गोरी चांमड़ी पर द्वारका री छापां रै ज्यूं राबळी छापां रैयगी। —रातवासौ

रायंगण, रायंगणि, रायंगणो—देखो 'रायग्रांगण' (रू. भे.)

उ०—१ सउदागर खवास नूं पूछइ लइ तिण मन्न। दीसइ रायंगण मही, कुंवरी कंचन ग्रन्न। —ढो. मा.

उ०—२ चाउडा हरीयड डोडीया, वेगि करी रायंगणि गया। जयवंता यादव वीहल्ल, नर निकुंभ गिहया गोहिल्ल। —कां. दे. प्र.

उ०—३ हियडइ ताहरइ हे सखी! थण हरनुं थट वक। ग्रलग घरड ग्रालिंगतां, रायंगणि जिम रुक। — मा. कां. प्र.

उ०—४ रायंगणी रांण कुंभकरन रूठे, हाथे लहै हिंदूयेराव। कीदी राघव भली कटारी, दांतां सिरसी ऊपर दाव। —हरी सूर बारहठ

राय—स. पु. [सं. राजा, प्रा. राग्रा] १ राजा, नृप। (डिं. को.)

उ०—१ यळ न ग्रनड ऊबहै ग्रांन का, नेणां दीसै सहै नवाय। यो करतार ग्रांचियौ करतां, मोटै री मेवाडी राय। —महाराणा लाखा री गीत

उ०—२ रीझियौ ग्रहं दसरत्थ राय। ग्रवतार वहु इण ग्रेह ग्राय। —सू. प्र.

उ०—३ ग्रात्मा ग्रस्थांन ग्रातुर, विग्ह विखहर खाय। मन भया व्याकुळ कब मिळोगे, सकळ व्यापी राय। —ह. पु. वां.

उ०—४ कमलापति कैवल्य ग्रति, चौद भुवननु राय। पणि ग्रेह-नइ पूजतु, मंत्र तणा महिमाय। —मा. कां. प्र.

उ०—५ नयणह ग्रागलि गयउ कुरंगू, राय चींति जां हूयउ विरंगू। —सालिभद्र सूरि

२ स्वामि, मालिक।

उ०—ग्रो३म नमस्ते चंडका चंद्रभाळ री नवीन ग्राभा, छटा मणि-माळ री भुजाटां रही छाय। ग्रारोहा लंकाळ री क सम्रां घू भाळ री ग्राग, रमा रूप जयी काछ पंचाळ री राय। —नवलजी लाळस

३ धन, द्रव्य।

उ०—सोदौ प्रथिन सुहाय ग्रो, दुभळ, ग्राय किम दाय। रूक लेय

घण राय दे, गढ़ ले कुछ न गमाय। —रैवतसिंह भाटी

४ राजा, महाराजा बड़े शासकों द्वारा रईसों, श्रीमानों को दी जाने वाली एक उपाधि।

५ भाटी वंश की एक शाखा। (बां. दा. ख्यात)

६ कायस्थों का एक सम्बोधन या उपाधि।

७ बंगाली कायस्थों का एक भेद।

८ दरार।

उ०—चित गयौ चहुं चालि दिस, एक पड़ी अण राय। हरीया वाड़ी फूल ज्यूं, लेग्यौ पौ'ण लुड़ाय। —अनुभववांणी

[अ. राए] ९ सलाह, सम्मति, अभिमत परामर्श।

१० विचार, ख्याल।

रू. भे.—रांय,

रायग्रंगण, रायग्रंगणि, रायग्रंगणी, रायग्रांगण—स. पु. [सं. राज+ग्रंगनं, ग्रंगण] १ राजमहल का चौक, राजमहल का प्रागण।

उ०—१ तठा उपरांति करि नें राजान सिलांमति अनेक राग रंग वधाई वांटिजै छै। रायग्रंगण धोळहरै गेहणी घणां मंगळाचार गीत नाद खंभाइची गावै छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ लहि फतै भड़ां निजरां लियै, सभि नौबत नंद तिण समै। ऊगतै भांण बाळक 'ग्रभौ' रायग्रांगण इण विध रमै। —सू. प्र.

उ०—३ रायग्रांगण चौंपड रमौ, महिलां सरब सुदाह। रखमी 'वांकळ' राज री, चूड़ो ग्रमर सदाह। —पा. प्र.

उ०—४ ताहरां जियै बहू री वारी हुंती, सु मारग रोकि ऊभी। ज्यु हरदास पाछली रात री वाहुड़ियौ, ताहरां कह्यौ-सासूजी! हरदास वाहुड़ो छै। मासू पण ऊभी हुंती। सु ऊपरां सूं हरदास उतरियौ। सु राय-ग्रांगण मांहै मारग। ताहरां राय-ग्रांगण में हरदास ग्रायौ, ताहरां मेखैरी मा भीतर तेडायौ —नैणसी

रू. भे.—रायंगण, रायंगणि, रायगणी, रायागण,

रायकंवर—१ दुल्हा।

रू. भे.—रांयकंवर, राइकुंग्रर, राइकुंवर।

२ देखो 'राजकुमार' (रू. भे.)

उ०—रायकुंवर चढियौ पाडिये, सुपने पनरमे देख्यौ रे। गज जिम जिन धरम छोडने, ग्रौर धरम विशेखौ रे। —जयवाणी

(स्त्री. रायकंवरी)

रायकंवरी-सं. स्त्री.—१ दुल्हिन।

रू. भे.—रांयकंवरी, राइकुंग्ररि, राइकुंवरि

२ देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

उ०—प्रथम नेह भीनौ महाक्रोध भीनौ पछै, लाभ चमरी समर झोक लागै। रायकंवरी वरी जेण वागै रसिक, वरी धड़ कंवारी तेण वागै। —वां. दा.

रायकन्ना—देखो 'राजकन्या' (रू. भे.)

रायकुंवरी—देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

रायकूंग्रर, रायकूंयर—१ देखो 'राजकुमार' (रू. भे.)

उ०—गुरु परिक्खइ गुरु परिक्खइ ग्रन्नदीहमि। दुरयोधन पमुह सवि रायकूंयर वण माहि लेविणु · —सालिभद्र सूरि

२ देखो राजकुमारी (रू. भे.)

रायकेळ-सं. पु.—एक प्रकार का केले का पौधा, केले की एक जाति।

उ०—मेहको ममोलौ, बावनौ चंदण, सोळमी सोनौ, रायकेळ को ग्रभ, हंस को बच्चौ। —लाली मेवाडी री वात

रायखाती-सं पु.—राजा का वढई।

उ०—रायखाती के नें वेग बुलाय। जच्चा रांणीं को पिलंग वणावौ, जी राज। —लो. गी.

रायगिह—देखो 'राजग्रह' (रू. भे.)

रायगुर—१ देखो 'रायांगुर' (रू. भे.)

उ०—हाथां ग्र वसी हुए वसि हाथां, वाहै ग्रणी खत्री ले वाढ। राघव काढी तणै रायगुर, दांत विसेख किए जमदाढ। —हरीसूर वारहठ

२ देखो 'राजगुरु' (रू. भे.)

रायघर—देखो 'राजग्रह' (रू. भे.)

उ०—हींदवां छात दोय वात लै हालियो, वाळ ग्यौ ग्रांक जग दुहूं वांनै। हसत हव हीडता देखसौ रायघर, कोडियां खजांना सुणौ कांनै। —दुरसो ग्राढो

रायचंपेली-सं. स्त्री. [सं. राज+चम्पा+वल्ली] एक प्रसिद्ध लता जिसके पीलापन लिए सफेद रंग के छोटे छोटे सुगंधदार फूल लगते हैं।

उ०—सोढी रांणी रांयचपेली री फूल, मूमल केळू कांमठी। महकण लागो चंपेली री फूल, लळकण लागी केळू कांमठी। —लो. गी.

रायचंपौ-सं. पु.—एक वृक्ष विशेष।

उ०—१ सजन ग्राया हे सखी, थांनै कुण कहियाह। रायचंपा रा फूल ज्यूं महले महमहियाह। —ढो. मा.

उ०—२ रसकस दिवळी वळै, धड़ ढोल्या रै हेटै। सुगरा नै नुगरी मारचौ, रायचंपा रै हेटै। —फुलवाड़ी

रायचोक, रायचौक-सं. पु.—राज महल का चौक, राज महल का प्रांगण।

रायजण-सं. पु.—राजा।

उ०—सरण रायजण चरण वाखांण मन करै सिव, दांन वाखांण कव रसण देवी। कळाधर वदन वाखांण तरणी करै, करै रण करग वाखांण केवी। —हुकमीचंद खिड़ियौ

रायजादी-सं. स्त्री. [सं. राज+फा. जाद, रा. प्र. ई.] १ शाहजादी।
उ०—झुरै म्रग-नयणी झुरै रे, मेह तणी रुत मोरां। जोगण पूठ दियां रायजादी, घूमर ऊपर घोरां। —अमरसिंह राठौड़ री गीत
२ राजकुमारी।
उ०—तठा उपरांत करिनै राजांन सिलांमति उवै चतुरंग रायजादी कितीयां री भूविव्वी मोतीग्रां री लड़ी हुवै तिण भांति री ऊजळी गोरंगीग्रां —रा सा सं.
३ दुल्हिन।

रायजादौ, रायजाधौ-सं. पु. [सं. राज+फा. जादः] (स्त्री. रायजादी)
१ राजा का पुत्र, राजकुमार।
उ०—१ कोमंडा भणंके गुणां उडै तीर केवरांण, अरावां धड़ूकै किना फाटै आसमांण। जांमळा ऊछळै छड़ा रायजादौ साहिजादां, 'ओरंगा' 'मुराद' 'सतौ' तेवड़ै आरांण। —राव सत्रसाळ री गीत
उ०—२ सीख मांगी जसी रमै, रांमत ससत्र। जोख मांणी असी रायजाधौ। —महाराजा बहादरसिंघ री गीत
२ दुल्हा, वर।
उ०—रायजादौ लुळ लुळ पाछौ जोवै, जांणु म्हारी जांन में भावोसा पधारै। —लो. गी.
रू. भे.—'राइजादौ'

रायजी-सं. पु.—१ कायस्थों का एक सम्मान सूचक शब्द।
२ देखो 'राय' (रू. भे.)
रू. भे.—राइजी,

रायजीप-सं. पु.—राजाओं पर विजय प्राप्त करने वाला, राजाधिराज।

रायडोडी-सं. स्त्री.—राजमहल का द्वार। ड्योढी।
उ०—रायडोडी राजा दनी रे लाल, वली खुरसांणी सेव। दाडिम दाख सोहांमणा रे लाल, खरबूजा स्यूं टेव। —प. च. चौ.

रायण, रायणि-सं. पु. [सं. राजादनी, प्रा. रायणी] १ एक प्रकार का वृक्ष विशेष।
उ०—१ आंबा री पेड़, महुवा री पेड़, रायण री पेड़, आंमली री पेड़, गुजरात में करसणी थीत गिणै। —वां. दा. ख्यात
उ०—२ वर विलसइं अलवेसर केसर होठि मुवेस। अव पूगइं ऊत-रायणि रायणि फलिय असेस। —जयसेखर सूरि
२ उक्त वृक्ष के फल।
उ०—नीलां नारिगां, रंगि दीसता सुरंगा, नीकोली रायण, ते प्रीसी मन भाइण, दाडिम नी कुली, खातां पूजै रली, नि मजा निम्रखोड, द्राख नइ बदांम, केइ कागदी केइ स्याम…… —व. स.

रायतेली-सं. पु.—राजा का तेली।
उ०—रायतेली के ने वेग बुलाय, जच्चा राणी की सोड़ भरावौ जी राज। —लो. गी.

रायतौ-सं. पु. [सं. राजिकाक्त, राजीत] दही, छाछ या मट्ठे में, नमक-मिर्ची जीरा आदि मसाले डाल कर छौंक लगा कर बनाया जाने वाला एक पेय पदार्थ।
उ०—१ सीरौ पूड़ी रायतौ, रोटा चावळ मांस। सूला घी सूं करै सदा, सास एक हि रास। —कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—२ आथण चावळ-मूंगां री खीचड़ी आध-पाव घी सूं मथ-मथ 'र गटकावै अर बड़ी-कढी रा रायतां सूं रंजै है। —दसदोख
रू. भे.—राइती, राईतौ,

रायथांन—देखो 'राजस्थांन' (रू. भे.)
उ०—सबळ रायथांन उथापण। निरजोर राय सहाय करि थापण। —रा. रू.

रायधर—देखो 'राजवर' (रू. भे.) (वां. दा., ख्यात)

रायपसेणिय, रायपसेणियो, रायपसेणी, रायपसेणीइ, रायसेणीय-सं. पु.—राजप्रश्नी नामक सूत्र। (जैन)
उ०—२ रायपसेणिया बीय उपांग मैं, दोइ हज्जार अठहोत्तर मन गमै। —घ. व. ग्रं.
उ०—२ रायपसेणी सूत्र में, राय प्रदेसी ना भाव। सूरयाव देव मरने हुवो, धरम तणो परभाव। —जयवांणी
उ०—३ प्रतिमा पूजी सुर सुरिया भइरे, रायपसेणीइ अक्षर लाभ-इरे। —स. कु.
रू. भे.—रायप्पसेणइज्ज।

रायपाळोत-सं. पु.—राठौड़ों की एक उप शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

रायपुत्त, रायपुत्र देखो 'राजपुत्र' (रू. भे.)
(स्त्री. रायपुत्ती, रायपुत्री)

रायपुत्रिय, रायपुत्री—देखो 'राजपुत्री' (रू. भे.)
उ०—ओप दीप आरती रूप देखै रायपुत्रिय। जिसौ रांमपुर जनक दरसि अभिरांम अद्वितिय। —रा. रू.

रायप्पसेणइज्ज—देखो 'रायपसेणी' (रू. भे.)

रायफळ—देखो 'राइफळ' (रू. भे.)
उ०—लोह रै फाटक आगै सिपाही रायफलां पिसतोलां कांधै उठायां तण्योड़ा गेड़ा काटै। —दसदोख

रायफूल-सं. पु.—हाथ का आभूषण विशेष।

रायब-सं. स्त्री.—एक नदी जो बांसवाड़ा की मुख्य नदी माही की सहायक नदी मानी जाती है। —(वी. वि.)

रायबर—देखो 'रायवर' (रू. भे.)
उ०—लाडली रौ चीर बवज्यौ, रायबर रो वागो-मोळियौ। —लोक गीत

रायबहादुर-सं. पु.—ब्रिटिश शासन काल में भारत के रईसों या सरकारी अधिकारियों को दी जाने वाली एक उपाधि ।

रायबेल, रायबेली—देखो 'रायवेल' (रू. भे.) (अ. मा.)

रायबोर-सं. पु.—झड़बोर के आकार के छोटे बोर ।

रायभोग—देखो 'राजभोग' (रू. भे.)

उ०—**रायभोग** गरडा तणी रे लाल, साठी सख री सालि । देवजीर परुसै भला रे लाल, दिल मानै ते दालि । —प. च. चौ.

रायमल, रायमलोत-सं. पु.—राठौड़ वंश की एक उप शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

रायरांणा—देखो 'रावरांणा' (रू. भे.)

उ०—तेड़ावि मोटा **रायरांणा**, रचौ मंडप माळ ।
—रुखमणी मंगळ

रायरसोई, रायरसोयी-सं. स्त्री.—पाकशाला, रसोई ।

उ०—१ जद म्हैं **रायरसोई** आई चौको दियो सजाय मण भर रा म्हैं माडा पोया घड़ी एक रांधी छै दाळ मारूणी घणी कमावणी
—लो. गी.

उ०—२ जद म्हैं जाऊं **रायरसोयी** माजन री सुध आवै । कुण जीमै म्हारी राय रसोई कुण म्हारो भोजन सरावै —लो. गी.

रायरातीभंवरौ-सं. पु.—एक प्रकार का लोक-गीत ।

उ०—थाळकिये में खाजा, म्हारो बाप दिली रो राजा । **रायराती-भंवरौ**, पटियार राती भंवरौ —लो. गी.

रायरायांन-सं. स्त्री. [स. राज राज] रईसों, सरकारी कर्मचारियों व जमीदारों को मुगलों द्वारा दी जाने वाली एक उपाधि ।
(मुगलकाल)

रायरिख, रायरिसि, रायरिसी—देखो 'राजरिसि' (रू. भे.)

उ०—राय संतोखै **रायरिख**, प्रोहित सीख प्रमांण । --रांमरासौ

रायरौ-स. पु.—गेहूं के ढेर में, एक घास विशेष का होने वाला दाना जो राई के आकार का होता है और गेहूं की फसल के साथ ही उग जाता है ।

रायलोम—देखो 'लोमंजदराव' ।

उ०—भेल्है **रायलोम** प्रधांन समथ । राजा मित्र कन्है दसरथ ।
—रांमरासौ

रायवनौ-सं. पु.—१ दुल्हा, वर ।

उ०—दई रे देवतां ने नारेळ वधास्यां, **रायवनौ** परणावस्यां ।
—लो. गी.

२ राजा ।

रायवर-सं. पु. [सं. राज-वर] १ बड़ा राजा, महाराजा ।

२ पति, खाविंद ।

३ दुल्हा, वर ।

रू. भे.—राइवर, राईवर, राईवर, रायवर ।

रायविभाड़, रायविभाड-वि.—राजाओं को पराजित करने वाला ।
(बांकीदास)

रायवेल-सं. स्त्री.—सुगंधित फूलों वाली एक लता विशेष । (अ. मा.)

रू. भे.—राइवेल, राइवेलि, राइवेल, रायवेल, रायवेलि ।

रायवैकुंठ-सं. पु. [सं. वैकुंठ-राज] वैकुण्ठ का राजा या पति श्री विष्णु ।

रायसालि-सं. पु.—वृक्ष विशेष ।

उ०—रावण रांग रतांजणी, रवणी नइ रुद्राख । रुकरुदंती **रायसलि**, रोहड रोहिणि लाख । —मा. कां. प्र.

रायसाहब-सं. पु.—ब्रिटिश शासन काल में भारतीय रईसों, जमींदारों व सरकारी कर्मचारियों को दी जाने वाली उपाधि ।

रायसेण-सं. पु.—एक प्रकार का वृक्ष ।

उ०—खिजूर गूंदी लेमूड़ी, केसूला खिरणी मोळसिरी फरवास **रायसेण** महुवा ढाक कुंभरा कीकर ढूला झुकनै रह्या छै ।
—रा स. सं.

रायहंस—देखो 'राजहंस' (रू. भे.)

उ०—स्रावण ऊजल पूनिमइ, स्री जिनवर हरिवंस । माता कुक्षि सरोवरइ, अवतरियउ **रायहंस** । —स. कु.

रायहर-सं. पु.—राजा का वंशज, राजा (डि. नां. मा.)

उ०—१ हुआ दल राजथांनां दखत **रायहर**, जठै प्रीछत वसन वहै जांणै । —जवान जी आढौ

उ०—२ अनि **रायहर** घणै ओछड़िया, खांन जिहां सिर लोह मुख । पांडव घड़ा ऊपरां पड़ियो, राव कूरंम किलकिलां रुख ।
—ईसरदास सांदू

रायहांणी—देखो 'राजधांनी' (रू. भे.)

रायहींदवौ-सं. पु.—हिन्दुस्तान या हिन्दुओं का राजा ।

रायांकवर—देखो 'राजकुमार' (रू. भे.)

रायांगण—देखो 'रायआंगण' (रू. भे.)

उ०—राजद्वार **रायांगण** जइ नइ, भीतरी भेद जणायो ।
—रुखमणी मंगळ

रायांगुर-सं. पु.—राजाओं में श्रेष्ठ राजा, सम्राट ।

उ०—रोहणियाळ सभै **रायांगुर**, आयै असुर उतारै घांण । अवळा वाळ न धारै आडी, खूदालम घातै खूमांण ।
—महारांणा सांगा रौ गीत

रू. भे. रायगुर

२ देखो 'राजगुरु' (रू. भे.)

रायांतिलक-सं. पु.—१ राजाओं के तिलक, श्रेष्ठ-राजा।

उ०—परियां अधक कहां किम 'पातल' **रायांतिलक** हींदवां रांण।
—महारांणा प्रतापसिंह री गीत

२ देखो 'राजतिलक'

रायांराव-सं. पु.—मुगल काल में भारतीय रईसों व सरकारी कर्मचारियों को दी जाने वाली एक पदवी।

उ०—**रायांराव** साथि 'रुधपत्ति'। भंडारी मतिसागर भत्ती।
—रा. रू.

राया-सं. स्त्री.—१ सोलंकी वंश की एक शाखा।

२ देखो 'राजा' (रू. भे.)

रायातन-सं. पु.—राजा, नृप।

रायि, रायौ—देखो 'राइ' (रू. भे.)

उ०—एहिवी वारता **रायि** करि छि, एटलि आव्यु मुंनि। अहदस्व तां नांम तेहि (नूं. हरख्यौ) भूपति मनि।
—नळाख्यान

रायौ—देखो 'राजा' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—जीव-काया न्यारा कह्या, तव वोल्यौ छै **रायौ** रे। चित्त नर योग्य छै, हूं जाऊं चलायौ रे।
—जयवांणी

रारंग, रार, रारि, रारी-सं. स्त्री [सं. राजृ=दीप्तौ=रात्रिका]

१ नेत्र, आंख। अ. मा., ना डि. को.)

उ०—१ वारंगां उमंगां रंगां बिमांणांगा सोक वाज, **रारंगां** अभंगां भड़ां दमंगां री सार। पनंगां विहंगां ढंगां नारगां अभीच पड़ा, सारंगां खतंगां अंगा मातंगां धू सार।
—बद्रीदास खिड़ियौ

उ०—२ नवहत्थौ मत्थौ वडौ, रोस भटक्कै **रार**। श्री कूंभाथळ ऊपरा, हाथळ वाहणहार।
—वां. दा.

उ०—३ यां मुख भूठी आख नैं, पूगौ साह दवार। अरज हुवतां असपती, कीधी रत्ती **रार**।
—रा. रू.

उ०—४ कहि कै नेहो कौ करां, रांम कमळ री **रारि**। करै पुकारां पीर कवि, श्री वाराह उवारि।
—पी. ग्रं.

उ०—५ रोड़ वजि हैवरां आगि धकि **रारियां**, धजर भाला खेवण अभागो वारियां।
—जालमसिंघ मेड़तिया री गीत

उ०—६ **रारियां** सुभट तूटै दमंग रीस रा। त्रिलोचण जिसा खूटै नयण तीसरा।
—र. ज. प्र.

उ०—७ ऊपाड़े नर वाहणां, आसी सौ तावूत। **रारी** व्रन्नां चोळ मुख, साह थवै जमदूत।
—नैणसी

२ वृद्ध मादा ऊंट।

३ देखो 'राड़' (रू. भे.)

रा'रीत—देखो 'राहरीत' (रू. भे.)

रारौ-सं. पु.—राजा, नृप। (जैन)

राळ, राल-सं. स्त्री.—१ दक्षिणी भारत में पाया जाने वाला, सदाबहार एक बड़ा वृक्ष।

२ उक्त वृक्ष को चीरने से निकलने वाला रसदार पदार्थ या निर्यास, जो औषधों, मसालों आदि में काम आता है तथा सुगंध के लिये जलाया जाता है।

३ बच्चों या बूढ़ों के मुंह से टपकने वाली लसदार थूक की बूंद।

४ एक रोग विशेष।

उ०—ताप सन्निपात जांणी अतीसार संग्रहांणि, फीहो विध **राल** पांडु गोला मूल खेण है। हीया-रोग सास खास रुधिर प्रवाह रूप, सीस पीड रोग अरु जेतें रोग नैन हैं।
—ध. व. ग्रं.

५ आवाज, ध्वनि।

६ पशुओं का एक रोग विशेष।

रू. भे.—राळि।

राळक-सं. पु.—वृक्ष, पेड़। (अ. मा.)

रालड—देखो 'राली' (मह., रू. भे.)

उ०—खर ऊखर लुं, मांकुण मांचां भरिया, जु भरियां गोदड़ां, कांन मिलि भरियां, **रालडां** फुहडा, पग भरिउ साडलउ, घरसाला भरिउं घुंटण...........
—व. स.

राळणौ, राळवौ, रालणौ, रालवौ-क्रि. स.—१ ओढ़ना, ढकना।

उ०—१ मा मोरी, सूत्या अक भंवर सुजांण। वाईजी रै वीरै मुख पर दुपटो **राळियौ**।
—लो. गी.

उ०—२ रोद्रणी वींदणी छेहड़ां **राळियां**। रुधर तंबोल मुग हूंत **राळै**।
—दुरसौ आढौ

२ बिछाना, फैलाना, छितराना।

उ०—ठाकर हींगळू ढोल्या माथै फूल **राळता** कैवण लागा—आज तो थांरै भाग री बचियौ पण बचियौ।
—फुलवाड़ी

३ पहनना, धारण करना।

उ०—किण री गुरुजी में पाग बणाऊं। किण रा जांमा **राळू** रे लोय। साच सत री चेला पाग बणावौ। त्याग रा जांमा **रळावौ** रे लोय।
—श्री हरिरांमजी महाराज

४ ऊपर से गिराना, पटकना, डालना, फेंकना।

उ०—१ राजा इतरी सुण वै चारू रतन बांध, छांन ऊंची कर घर मांहीं **राळ** दीन्हा।
—सिंघासन बत्तीसी

उ०—२ मोने सूंप्यौ कवल जजाल ए। फरसी दीधी हेठी **राल** ए।
—जयवांणी

उ०—३ लेवै अवळा लाज, सवळा हुय बैठा मकौ। गरढ सभा पर गाज, सुणतां **राळौ** सांवरा।
—रांमनाथ कवियौ

५ ढहाना ।

उ०—भलौ भाई सेखा राळै बिखेर सारकी भींत । सारां सिरै छांवणी मारकी सोज सोज । —गिरवरदांन कवियौ

६ चलाना, फेंकना ।

उ०—मांड्यौ चारण चोमर हंदौ ख्याल, राजा की रांणी पासा राळिया जी । —लो. गी.

७ खिलाने या उपभोग कराने की दृष्टि से कोई चीज किसी के आगे डालना, रखना, देना ।

उ०—देखै तो एक मड़ौ नदी मांहीं बहितौ आवै । मो राजा नदी मांहीं उतर तीं नूं काढ वी की जांघ चीर रतन हाथ लिया । मड़ौ पयावरी नूं राळियौ । —सिंघासन वत्तीसी

८ ढुलकाना, टपकाना, बहाना ।

उ०—१ वींदणी आंसू राळती बोली—तौ अबै म्हारा जीवणा में ई की मार नीं । मरद्यां की सार निगै आवै तौ ध्यांन राखजी । —फुलवाड़ी

उ०—२ डब डब भर आया नैण हजारी ढोला । आंसू तौ राळै हरियै मोर ज्यू जी महारा राज, लीनी पना मारू हिवड़ै लगाय, हजारी ढोला । आंसू तौ पूछ्यौ जी पेच सूं जी म्हारा राज । —लो. गी.

९ लगाना, देना ।

उ०—दीज्यौ दीज्यौ सासूजी म्हांनै सीख, सहेल्यां हेलो राळियौ जी म्हारा राज । —लो गी.

१० रखना, धरना ।

उ०—किण री गुरुजी में सिंघासण ढाळूं । किण री गादी राळूं रे लोय । जरणा जुगत चेला सिंघासण ढाळौ । ग्यान री गादी राळौ रे लोय । —श्री हरिरांमजी महाराज

राळणहार, हारौ (हारी), राळणियौ—वि० ।

राळिओड़ौ, राळियोड़ौ, राळचोड़ौ—भू०का०कृ० ।

राळीजणौ, राळीजबौ—कर्म वा० ।

राळावोलो—स. पु.—१ उपद्रव, उत्पात ।

उ०—राळावोळै रात रा, पहलै वख्त पधार । मियां घड़सी मारिया, वेग्रां आगळ च्यार । —वी मा.

२ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला ।

राळि—१ देखो 'राळ' (रू. भे.)

राली—सं. स्त्री.—विछाने या ओढने की गुदड़ी ।

उ०—राली नहीं ओढै गूदड़ौ नहीं ओढै । ओ तौ ओढै वांरा साळाजी रौ तिलक पछेवड़ौ । —लो. गी

वि०—कायर, डरपोक, अशक्त ।

मह.—रालड ।

राव—सं. पु. [सं. राजा प्रा. राया] १ राजा, नृप, अधिपति । (डि. नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ एक राउ थप्पइण, एक रावां ऊथप्पण । एक राव गढ़ लियण एक रावां गढ अप्पण । एक राव परिभवण, एक रावां पडि गाहण, एक राव जडगमण, एक राऊ सरणं रखण । इक राव रक करि रोळवण, एकौ आलवण थियौ, कमधज अजागि 'गज' केसरी, आगि खाइ इम ऊठियौ । —गु. रू. वं.

उ०—२ ए सारस कहिजइ पसू पंखी केरा राव । उवै बोल्या सर ऊपरइ थां कीधी अणुराव । —ढो. मा.

उ०—३ चाळकां लीधि चाकै चहोड़ि, ज्यां दीध सुता कर विहुँ जोड़ि । 'तीड़ै' इहं विध जुध खगां ताव, रजवट पाघोरै पंच राव । —सू. प्र.

२ स्वामी, मालिक ।

उ०—भली करजो रुणेचा रा राव, म्हे तो खड़ मांगणसियां हां, मिरघा सूं हाथ जोड़ती-जोड़तौ चौधरी बोल्यौ । —रातवासौ

३ सरदार, सामंत ।

उ०—नांणौ गुर नांणौ इसट, नांणौ राणौ-राव । नांणा बिन प्यारौ न कौ, साहां जात सुभाव । —बां. दा.

४ राजपूताने के कुछ राजाओं का उपटंक या पद ।

उ०—'फरमायौ'—हूं थारी बहन छूं । तू म्हारौ भाई छै तूं खातर जमै राखै । हूं तोनूं म्होटौ करीस ।' सिवा नूं राव रौ खिताव देरायौ । —नैणसी

५ रईस, अमीर ।

उ०—१ राजी राव रंक भूप, नारिहौ पुरख राजी । भूठ सौं विनाई बाजी, खुली आप खाळ मैं । —अनुभववांणी

उ०—२ राव रंक हिंदू रवद, गोलां सगळां गेह । सागै जात सुणां-मियां, छुद्र दिखावै छेह । —बां. दा.

उ०—३ हरीया पाटनपुर नगर, राव रंक नहीं भूप । अलख अभंगी आप है, नारि न पुरखा रूप । —अनुभववांणी

६ वंदीजन, भाट ।

[सं. राव] ७ शब्द, आवाज, ध्वनि । (अ. मा., ह नां. मा.)

८ चीख, चीत्कार ।

उ०—एह कारणि न मइं पणि मारिउ, मारतउ अनइं राखिसी वारिउ । तूं कन्हइं रही राव करेवा, आज दीह मुझ नाह मरेवा । —सालिसूरी

९ नाद, गर्जना ।

१० गूंजार ।

११ घोड़े की एक गति विशेष ।

१२ छोटे आकार का एक पेड़ विशेष जिसकी लकड़ी की छड़ियां

बनाई जाती हैं।

अल्पा.—रावौ,

रावउत—सं. पु. [सं. राज+पुत्र] राजकुमार, राजा का पुत्र।

उ०—पूरण परवाडीह झरड़ा रौ सू सबद जथौ। सब दिन सवा-डींह रहजै धांधळ रावउत। —पा. प्र.

रावड़, रावड़ियौ—सं. पु.—धूल के महीन कण जो अनाज में मिल जाते हैं।

उ०—वाळी लूआं हिये रमाई, नैण रेत रौ रावड़ियौ।

—चेतमांनखौ

रावजादौ—सं. पु.—राजकुमार।

उ०—साहजादां समरूप, भोपत सुत चढती भरण। रावजादां रौ रूप, सारंगदे कंवरा सिरै। —पा. प्र.

रावट—देखो 'रावत' (रू. भे.)

उ०—खाटा थाट दही जेम खागै, रीदां मथै वांकड़ौ रावट।

—दूदा नगराजोत री गीत

रावटी—सं. स्त्री. [सं. राज-कुटी] १ राजा महाराजाओं का एक खुला व हवादार महल। बारहदरी।

उ०—रावटी पुरांणी हो गई जे, हांजी कोई टपकण लाग्या जूण। अब घर आवौ गौरी का सायबा जे। —लो. गी.

उ०—२ ऊंची सी मेड़ी रावटी, वै में माळी को सोवै ए नचीत। म्हांरे रंग बनड़ै रा सेवरा। —लो. गी.

२ एक प्रकार का छोटा तंबू।

उ०—१ असपका खड़ी हुई छै। तंबू, सांमीआंणा, सिराइचा, रावटी, वाडि समेत करणाटी, गूडर तांणीआ छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ कपड़ कोट उज्जळ बहु कीजै। वर बगळा रावटी वणीजै।

—सू. प्र.

रू. भे. रांवटी।

रावडी—सं. स्त्री. [सं. राव+डी. प्र.] १ फरियाद, पुकार।

उ०—तुझ ऊपरि मोरी आसड़ी, किम जाइस मझ रातड़ी। कहि आगलि करूं रावडी, चरण कमल की दासडी।—नळदवदंती रास

२ देखो 'रावड़ी' (रू. भे.)

रावण—देखो 'रांवण' (रू. भे.)

उ०—१ असुर मारि इंदजीत मेघ गहि रावण मारै। निसचर नीचा नाखि, सत्र इंदतणा संघारै। —पी. ग्रं.

उ०—२ करचौ स कांम, भज्यौ स रांम। कोई ही कांम करां-करां नहीं करणौ, झट कर ही लेणौ चाहिजै। लारै राख्योड़ा कांमां खातर मरती विरियां रावण ही मोकळौ पिछतावौ करतौ मरचौ।

—दसदोख

रावणखंड, रावणखंडौ देखो 'रांवणखंड' (रू. भे.)

उ०—१ थांन इनायत जोधपुर, वैठौ रावणखंड। प्रयुत पमंगे पाखरां, जंगे सेन प्रचंड। —रा. रू.

उ०—२ मांनौ इंदौ सेतौ रावणखंडा, धांधू मेतसी आसायच'''।

—रावचंद्रसेण री बात

रावणरिप, रावणरिपु—देखो 'रांवणरिपु' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—नांम नाव चढियौ हूं जगन्नप। रखै हुवै डोलू रावण-रिप।

—ह. र.

रावणसिर—सं. पु.—दश की संख्या। * (डिं. को.)

रावणा—सं. स्त्री.—एक जाति विशेष जिसके सदस्य राजा-महाराजाओं के यहां सेवा चाकरी किया-करते थे।

रावणारि—देखो 'रांवणारि' (रू. भे.)

रावणि—सं. पु.—१ रावण का पुत्र, मेघनाद।

२ देखो 'रांवण' (रू. भे.)

रावणौ—सं. पु.—रावणा जाति का व्यक्ति।

रावत—सं. पु. [सं. राज-पुत्र, प्रा. राज-पुत्त] १ राजा, नृप।

२ छोटा राजा।

उ०—सांमेतां सुहडां सांमता, वेरदेतां जोधां वळवंतां। 'गाजीसाह' सिरै गैमंतां, रांणो-रांण मिळै रावतां। —गु. रू. बं.

३ सामंत।

उ०—रहे किमि पासि भो राखियां रावतां। स्यांमि रै कांमि हणवंत जिसा सांवतां। —हा. झा.

४ योद्धा, वीर, शूरवीर।

उ०—१ दोनों भाई भेळा हुवा। राव जोधेजी कही कांधळ तूं बडौ रावत छै। —नापे सांखले री बारता

उ०—२ तिल तिल जुध हुवौ खगां मुख तुटै, चुण न सकै वेहुं करां सचूंप। रावत कमळ काज सिव रचियौ, सहंसा अजजुण तणौ सरूप। —महाराम महडू

उ०—३ धिन वे रावत वीरपै, भागा रावतियांह। धारा अणियां मैं धसै, चखमुख चोळ कियांह। —वां. दा.

उ०—४ झट खग जवन कवट वड़ झाड़ै। पांच हजार रावतां पाड़ै। —सू. प्र.

५ राजा महाराजाओं द्वारा सामंतो को दी जाने वाली एक पदवी।

६ एक व्यवसायिक जाति जिसका मुख्य कार्य दौने-पत्तल बनाना है, बारीदार। (मा. म.)

७ पति, प्रियतम।

उ०—दासी कुण विलमायौ ए, रावत नहीं आयौ अब तक बारणै।

—लो. गी.

रू. भे.—रवत, राउत, राउति, राउत्त, रावट, रावत्त।

अल्पा.,—रवतौ, रावतियौ।

रावतबट—देखो 'रावतवट' (रू. भे.)

उ०—१ निगम निवांण तणाह, नागद्रहा नर हर ज्युंहीं। रावत-बट रांणाह, पिंड अण खूट प्रतापसी। —सूरायच टापरियौ

उ०—२ सेखावत रावतबट साजै, सुतन 'बहादर' समर सगाह। फौजां तणौ मुदी नह फिरियौ, गिरियौ बीच करै गजगाह। —केसरीसिंघ सेखावत री गीत

रावतरियां—देखो 'रावत्रियां' (रू. भे.) (मा. म.)

रावतरी—सं. स्त्री.—सोने व चांदी के आभूषणों में लगाया जाने वाला जोड़।

रावतवंस-सं पु.—क्षत्रिय वंश।

उ०—वंदै पग रावतवंस विसुद्ध। सेवै पग चारण किन्नर सिद्ध। —ह. र.

रावतवट-सं. पु.—१ क्षत्रित्व, वीरत्व।

उ०—चहुं रिण जिके पुजै रिण चाचरि, सुजडे पिसणां पाडि मिरं। वीटांणा जिके रहै रावतवट, माभी परवत मेर गिरं। ग. रू. वं.

२ शासन, सत्ता, हुकूमत।

रू. भे.—राउतवट, रावतबट।

रावतांणी-सं. स्त्री.—राजपूत जाति की स्त्री, राजपूतानी।

रू. भे.-रवतांणी,

रावताई-सं. स्त्री.—'रावत' नामक पदवी।

उ०—तरै मेवाड़ पाछौ रांणा अमरसिंघ नुं दीयौ। सगर नुं रावताई दीवी। पूरब में जागीरी दीवी। —नैणसी

रू. भे.—रउताई, रवताई।

रावताळौ-सं. पु. [सं. राजपुत्र, प्रा. राअपुत्त, अप.-रावत+आळौ] योद्धा, वीर।

उ०—दीपै भुजाई देव में कळा, रांणौ रांणि रावताळा। भडां हुवै भाटकळा आठौ पुहर। —गु. रू. वं

रू. भे.—रवताळ, रवताळौ, रिवताळ, रिवताळौ।

रावतियां—देखो 'रावत्रियां' (रू. भे.)

रावतियौ—देखो 'रावत' (अल्पा.) (रू. भे.)

उ०—१ काकौ वांरौ कूपंदे भाई भारतमल्ल। घोड़ौ वांरै नव-लखौ रावतियौ रिड़मल्ल। —रिड़मल्ल खावड़िया री वात

उ०—२ रावतिया पग रोपसी, बतलासी थह बाघ। वौहळा पाटा वांधणां, आछौ होसी आघ। —वां. दा.

रावती- सं. स्त्री. —१ रावत होने की अवस्था या भाव।

२ रावत को उपाधि, पदवी।

रू. भे.-राउती,

रावतेस- सं० पु०—१ राजा, नृप, राजाओं में श्रेष्ठ।

२ वीर योद्धा। वीर सरोमणि।

रू० भे०-रवतेस, रावत्तेस,

रावत्त— देखो 'रावत' (रू० भे०)

उ०-१ 'बालौ' भालौ झल्लियां, रिण कालौ रावत्त। जुध वालौ बेली जिहां, 'तेजा' सुजावत। -रा. रू.

उ०- के हबसी कन्नडा, केइ पाईक फरीबर। के राजा के राव, केइ रावत्त बहादर। -गु रू. वं.

रावत्तेस— देखो 'रावतेस' (रू. भे.)

रावत्रियां- सं. स्त्री, ब. व.— लोक देवियों का एक समूह।

वि. वि.- इनके सम्बन्ध में एक ऐतिहासिक कथा पाई जाती है, जो इस प्रकार है:- प्रतिहारों के वंश में मंडोवर का अंतिम राजा राणा रूपड़ा हुआ इससे तुर्कों ने मंडोवर छीन लिया तब वह अपने दल-बल सहित जैसलमेर के गांव बारू और चायण में गया। वहां 'बुध' शाखा के भाटियों का शासन था। राणा ने इन भाटियों से अपने लिये रहने की जगह मांगी और इसके बदले भाटियों को अपनी बेटियां ब्याहने का प्रस्ताव किया। भाटी इस पर सहमत हो गये तब राणा ने १४ लड़कियों की सगाई भाटियों से कर दी। जिनमें १ राणा की बेटी ६ उसके भाईयों की तथा ७ लड़-कियां भील व मेघवालों की थी। अब राणा ने भाटियों से दगा करने के लिये उन्हें बरात लेकर बुलाया और पूरी बरात को एक बाड़े में ठहराया। उस बाड़े में राणा ने पहले से ही बारूद की सुरंगे बिछा दी थी। राणा ने विवाह आदि की रस्म पूरी करने के लिये उन लड़कियो को भी उस बाड़े में भेज दिया और रात को मौका पाकर सुरंगों में आग लगा कर उन कुंवारी लड़कियों सहित भाटियों को जला कर भस्म कर डाला। इन लड़कियों ने मरते समय राणा को शाप दिया कि "तुमने हमको दाग लगाकर धोखे से मारा है। अतः तुम भी ऐसे ही नष्ट हो जाओगे।"

ऐसा माना जाता है कि ये लड़कियां देवगति को प्राप्त हुई और कालान्तर में रुणेचे गांव के रावतसर तालाब से प्रगट होकर उन्होंने लोगों को परचे दिये तथा "रावत्रियां" नाम से प्रसिद्ध हुई। राजपूत व नीच जाति के लोग इनको मानते हैं।

इनके पुजारी भील होते है. गुड़ का मीठा दलिया जिसे "लड़कछ" कहते हैं" तथा बकरा इनका भोग माना जाता है।

रावत्रिया जी के थान में सात सात खड़ी मूर्तिया ऊजली और "मेली" रावत्रियां की, अलग अलग खुदी हुई होती हैं। इसका आशय यह है कि जो सात लड़कियां उज्जवल जाति की थीं वे "ऊजलियां" के नाम से तथा सात जो नीच जाति की थी वे "मेलड़ियां" के नाम मे प्रसिद्ध हुई।

ऊजली रावत्रियां जो उज्वल और मेली रावत्रियां नीच-जाति के लोग-लुगाईयों के सिर पर चढ़कर, खेलती, बोलती और 'बकरती' हैं।

उपर्युक्त कथा का इतिहास में कोई पुष्ट प्रमाण नहीं पाया जाता। ऐसी दशा में यह कथा जनश्रुति के आधार पर चल पड़ी है। ऐसा प्रतीत होता है। वास्तव में 'रावत्रियां पौराणिक लोक देवियां ही है, जिनके विषय में विस्तृत विवरण 'मावलियां' में दिया जा चुका है। देखें 'मावलियां'

रू. भे.—रावतरियां, रावतियां

रावनागां-सं. पु. [सं. नाग-राज] शेष नाग।

उ०—खुलै पोळां भित खागां, नमै मस्तक रावनागां। महर थंभे गयण मागां, तुरी वागां तांण। —र. रू.

रावमारू-सं. पु.—१ मरु प्रदेश का राजा, अधिपति। राठौड़ राजा।

उ०—मोटा पह सहज रावमारू, रुद्र दूहत्थो करै फिर रीझ। अम लोगां ऊपरा न रावै, खूंदाळमा हिळाई खीज। —चतरी मोतीसर

२ पति, प्रियतम।

रावराजा-सं. पु—१ राजपुताने के कुछ राजाओं की एक उपाधि।

उ०—रावराजा 'र अमीर, करै सेवा जोड़े कर। अमल कीध घर इती, सरां तोरां सर संभर। —सू. प्र.

२ जोधपुर के राज्यकुल के उस व्यक्ति की उपाधि जो राजा की उपपत्नि की संतान हो।

३ उक्त उपाधि धारी व्यक्ति।

रावरौ—देखो 'रावळौ (रू. भे.)

उ०—वाद ओ विवाद को मवाद तें भह्यौ। रावरौ निनाद ऊंट पाट ज्यूं गयौ। —ऊ. का.

रावळ, रावल,-सं. पु. [सं. लाकुलि] १ राजपुताना के कुछ राजाओं की एक उपाधि।

वि. वि.—रावळ, 'नाथ-सम्प्रदाय' की एक बड़ी शाखा है। यह शाखा वस्तुतः 'लाकुलीश पाशुपत सम्प्रदाय' की उत्तराधिकारी है। प्राचीन काल में इस प्रदेश (राजस्थान) पर उक्त लाकुलीश सम्प्रदाय का अत्यधिक प्रभाव रहा। कई प्रसिद्ध राजवंश इनके अनुयायी हो गये। जिसमें (१)मेवाड़ के राजकुल—इसके अन्तर्गत बप्पा-रावळ प्रसिद्ध राजा हुआ, जिसने यह उपाधि धारण की, जो इस सम्प्रदाय का अनुयायी होने की द्योतक है। (२) आबू के परमार। (३) जालोर के चौहान। (४) लुद्रवा (जैसलमेर) के भाटी—इनमें राजा देवराज को योगी रतननाथ ने राजतिलक करके 'रावळ' उपाधि दी थी। (५) इसी प्रकार मालाणी के मल्लीनाथ ने भी रतननाथ से 'रावळ' उपाधि प्राप्त की थी। इत्यादि। बाद में यह उपाधि परम्परागत हो गई और राजवंश के वंशजों तथा कतिपय राजवंशों द्वारा भी यह उपाधि धारण की जाने लगी। अतः मूल रूप में यह एक साम्प्रदायिक उपाधि है, जो राजवंशों के साथ लगाते रहने से कालान्तर में शासक (राजा) के लिये भी एक उपाधि बन गई। (६) कच्छ व जामनगर के जाडेचा भाटियों की उपाधि भी रावळ है।

२ उक्त उपाधिधारी राजा या शासक।

उ०—१ जो ओ जगतसिंघ रौ बेटौ नै बुधसिंघ रौ छोटौ भाई, तिणसूं जेसळमेर अखैसिंघ पायौ। वडो परतापीक रावळ हुवौ। वरस ४० राज कियौ। —नैणसी

उ०—२ तै सौ लाख समापिया, रावळ लालच छड्ड। सांसण सीचांणा जिसा, जेथ डुळै जळहड्ड। —बां. दा.

उ०—३ जैत हथौ 'जैतो' जाळाहळ, उदियारांम तणौ दळ आगळ। मिणयड़ छात कलौ दळ मांहे, रावळ अणी थयौ कुळ राहै। —रा. रू.

उ०—४ कांम घणा स्री रांम ना, कीधा स्री हणमंत रावत। तिमहुं स्री रावळ तणा, करस्यूं कांम अनंत रावत। —प. च. चौ.

३ नाथ-सम्प्रदाय की रावळ शाखा व इस शाखा का योगी या साधु।

उ०—१ बाई म्हारै नैंना रावळ भेख। व स्वांमी वहो जटाधारी, अब ही अंजन रेख। —मीरां

उ०—२ देव कहे रावळ पुछावौ। मोय आवै नहीं अवर को दावौ। मिळिस्यै जोगी नै संन्यासी, मिळिस्यै तापस तीरथवासी। —जांभौ

४ भिक्षा-वृत्ति करने वाले जोगी जो नाद बजा कर, तथा विभिन्न बोलियां बोल कर भिक्षा-वृत्ति करते हैं। (मा. म.)

[सं. राजकुल, प्रा. राअउल] ५ चारणों के याचकों का एक वर्ग या जाति।

उ०—१ वेस्या सुख भोगै पति वरता व्याधी, इण सूं ईस्वर री ईस्वरता आधी। सावळ सुर साधक सुख सूं नह सोया, सकुनीं सकुनावळ रावळ बळ रोया। —ऊ. का.

वि. वि.—इस जाति या वर्ग की उत्पत्ति के सम्बन्ध में इतिहास मिलता है। इस जाति के व्यक्ति जूनागढ की चूडासमा यादव शाखा के क्षत्रिय हैं और महाराज नौघण की संतान हैं। एक बार जूनागढ के नरेश राव माण्डलिक ने चारण जाति की नागबाई, जो देवि का अवतार मानी जाती थी, की पुत्रवधु को कुदृष्टि से देखा। इस पर नागबाई ने क्रुद्ध होकर राव माण्डलिक को पुंमत्वहीन होने का शाप दिया और समूची चूडासमा शाखा को राज्यच्युत कर दिया। इस शाप से ग्रसित होने पर मांडलिक ने नागबाई से बहुत क्षमा-याचना व अनुनय-विनय की। तब देवी ने उसको नपुंसत्व से मुक्त कर दिया और कहा कि तेरी संतान चारणों की याचना करेगी और उनको रिझाने के लिये, उनके

सम्मुख गाना-बजाना व खेल तमाशा करेगी। अतः तब से वे चारणों के याचक हुए।

रावळ प्रायः चारणों के अतिरिक्त किसी अन्य के सामने तमाशा नहीं करते और यदि कारणवश करना पड़े तो वहां किसी चारण की उपस्थिति अनिवार्य है।

६ उक्त जाति का व्यक्ति।

७ प्रधान-सरदार।

८ बद्रीनारायण के प्रधान पंडे की उपाधि।

९ मथुरा के निकट एक गांव का नाम जहां राधिका का जन्म हुआ था।

१० एक ब्राह्मण वंश।

रू. भे.—राउळ, राउल।

रावळइ—देखो 'रावलौ' (रू. भे.)

उ०—दासी सरिसा झिणां हंसीउ। सूनइ रावळइ तु मती जाई। —बी. दे.

रावळगन—सं. पु. [सं. राजकुल+गण] १ राज परिवार के लोग,

उ०—ताहरां राठी कह्यौ—औ लड़को छत्रधारी राजा हुसी। ताहरां रावळगन भेळी हुवौ। —नैणसी

२ वह मोहल्ला या स्थान जहां राजा या जागीरदार के भाई-बन्धुओं के निवास स्थान हों।

रावळांसा—सं. पु. किसी सगे सम्बन्धियों, की स्त्री माता या बेटी के लिये एक आदर युक्त सम्बोधन। (चारण)

रावळा— सर्व.— आपके।

उ०— वले हूं लुळै रावळा पाव वंदूं। अड़ी नाव ऊधारवा आव ईंदूं'। —मे. म.

रावळाई— सं० स्त्री०—१ रावल होने की अवस्था या भाव। २ रावल की पदवी।

उ०— पातसाह चढ लुद्रवा ऊपर आयौ। रावळ भोजदे वाज कांम आयौ। पातसाह सारौ सहर लूटियौ। रावळ रौ घर भार-जेसल नूं दियौ। जेसलमेर माथे टीकौ काढ रावळाई दी। —नैणसी

रावळि--देखो 'रावळी' (रू. भे.)

उ०— रावळि होइकै किनरै जाऊं, तुम हो हिवड़ा रौ साज। मीरां के प्रभु और न कोई, राखौ अब तो लाज। —मीरां

रावळियौ, रावलियौ—१ देखो 'रावळ' (५) (अल्पा., रू. भे.)

उ० –१ अर गांव मांहे रावळिया रांमत रमता हंता। सीवलां रौ साथ रमत देखण गयौ हंतौ अर तै वेळा सुपियारदे नीसरी। —नैणसी

उ०—२ रावळिया रांमत समै, मावड़ियौ ले मांग। तौ रतना पातर तणौ, सखरौ लावै सांग। —बां. दा.

३ एक साहुकार री हवेली मुंहडै रावलियां तमासौ मांड्यौ जद साहुकार वरज्यौ। इण ठांम तमासौ मत करौ। —भि. द्र.

२ देखो 'रावळौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—सुसरौ जी म्हारा घर रा राजा, सासु जी ठुकरांणी जी। सुसरौ जी री हुकम कोटड़्यां चालै, सासड़ री रावळियां जी। —लो. गी.

वि.—१ ठाकुर (सामन्त) की, ठाकुर सम्बन्धी।

रू. भे.—रावळि,

रावळै—सं. पु.—१ मध्यम पुरुष के लिए प्रयुक्त होने वाला आदर सूचक सर्वनाम शब्द।

२ राजा, ठाकुर या जागीरदार।

उ०—डांग नीची नांख नै साफौ रावळै पगां में धर नै ऊभौ व्हैगौ। —रातवासौ

३ अन्तःपुर, जनानी ड्योढी

सर्व.—आप, श्रीमान्।

वि.—आपके।

उ०—१ रांणी कहै—रावळै गंगारि जाति काइ करणी छै नहीं, रावळै विमाह करणौ छै। —चौबोली

उ०—२ ताहरां राखायत एक दिन लाखैजी नूं पूछियौ—मांमाजी आज ठाकुर री क्रपा कर अर रावळै सोह थोक छै अर धरती बरकरार छै। —नैणसी

राज दरबार में, अन्तःपुर।

रावळोत—सं. पु.—१ भाटी राजपूतों की एक उप शाखा।

२ इस उप शाखा का व्यक्ति।

उ०—रावळोत परतापसी, उरजनोत 'अजबेस' जादव जंगां जीपवा संगां थया नरेस। —रा. रू.

रावळौ, रावलौ—सं. पु. [सं. राजकुल] १ किसी राजा, ठाकुर या जागीरदार का महल, राजमहल। राज गृह।

उ०—सिरदारां रौ पांणी उतरग्यौ। थर थर धूजता, सिसका-रियां भरता नागा-तड़ंग रावळां कांनी वहीर व्हिया। —फुलवाड़ी

२ राज-दरबार।

उ०—धन कारण बांधव बढ़े, धन तौड़ावै नेह रे। धन रोकावै रावळै, धन छिदावै देह रे। —जयवांणी

३ अन्तः पुर, रनिवास।

उ०—१ नूंई ठुकरांणीसा रावळै पग धरचा, आंणंद रा झरणा झरचा। —दसदोख

उ०–२ टेपरिया सूं ई रंभा पर मार ज्यादा पड़ी। उण री चीखां टेट रावळा में मुणीजी जद दयाळू ठकुरांणी हुकम देय नै उणाने छुडाय दी। —रातवासौ

उ०–३ इण बात री सुरबुर बांणियौ सुणी तौ वौ मांय रावळा में सीधौ ठकरांणीसा रै पाखती गियौ। —फुलवाड़ी

वि०— आपका ।

उ०—१ कथन किया सो कवरजी सिर माथे धरस्यां । म्हे तो हुकमी रावळा कह्म्यो सो करस्यां । —पनां

उ०—२ नळराजा आदर दियउ, जउ राजवियां जोग । देस वास मवि रावळा, अइ घोड़ा अइ लोग । —ढो. मा.

उ०—३ महाराज, पइसो लीजो, म्हां में तकसीर पड़ी, मोड़ो आयो गुन्हो माफ कीजै । हूं रावळो चाकर यूं चूक पड़ी, तकसीर माफ करणी । —पलक दरियाव री वात

उ०—४ तांहरां सोढी कहै, राजि पधारो छो, हूं तो रावळै दरसण विनां अन नहीं खांवती । तांहरां ओढण रो पीतांवर दीन्हो । —लाखा फूलाणी री वात

२. ठाकुर साहब, सरकारी ।

उ०—१ रावळो साथ फळोधी आयो, भा: वदि १२ फलोधी था कूच कीयो । —नैणसी

उ०—२ भांवी उण वगत कोट में गियोड़ो हो । रावळा घोड़ा-घोड़ियां री काठियां रै टेका-टवका देवण सारू । —फुलवाड़ी

रू. भे.—राउर, राउरो, रावळइ ।

रावसाहब-सं. पु.—ब्रिटिश शासन काल में रईसों व अमीरों को दी जाने वाली एक उपाधि ।

रावांराव-सं. पु. राजाओं का राजा, सम्राट ।

रावा-सं. स्त्री.—गायों के रंभाने का शब्द, पुकार ।

उ०—करै साद सांपू गई आज करनी कठै, चोर गायां लियां जाय चौड़े । फेरड़ा बापड़ा घरे रावा करै, देव रावां तणी मदत्त दौड़े । —गोपीनाथ गाडण

रावाई-सं. स्त्री.—१ 'राव' या राजा होने की अवस्था या भाव ।

उ०—२ भीम आ वात सुणी तरै आपरो साथ ले जाय साहबी ली । माल विन रो धणी हुवो । रावाई रो टीको काढियो । —नैणसी

२ राव का पद या उपाधि ।

उ०—पछै आप चढनै पूगळ गयो, तरै रांणंगदे री वैर कहचो-भारेजारो सासतर करो । तरै राव केल्हण कह्यो—आज तो रावाई रा नामनर रो मोहरत छै, सवारै बीजो सासतर करस्यां । —नैणसी

३ शासन, हुकूमत । राज्य ।

उ०—राठोड़ सूरजमल प्रिथीराजोत घणां ही गळवट किया, पिण सोजत रावाई पातसाह 'कला' नूं दीधी । —रावचंद्रसेण री वात

रावी-सं. स्त्री. [सं. ऐरावती] पश्चिमी पंजाब या पाकिस्तान में बहने वाली एक नदी ।

रावेटउं-सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—पट्टकूल, हीरवटि गजवटि नीलवटि मेघवीवटि मोवनवटि जादर पोती पट साउली अगहल नेत्र रावेटउं सांभारावउं मटवी फूल पगर कणवीरउं पोतिउं······ —व. स.

देखो 'राव' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—राजा येह रांण सुणो अन रावो, 'रतन' कहै भड़ अमर रहावो । गाटवरा मत माल गमावो, खत्री धरम वांट धन खावो । —कुंपावत रतनसिंह

रास- सं. पु.- [सं०] १ वह नृत्य. लीला या क्रीड़ा जो श्री कृष्ण ने व्रज की गोपिकाओं के साथ मिल कर किया था ।

उ०—राधिका क्रस्ण रास व्रंदावन व्रज विलास । गिनका गज अजामेल, गीध पद गाता । —ऊ. का.

२ गोप लोगों की एक क्रीड़ा, जिसमें वे वृत्ताकार हो कर नाच-गान करते हैं । (प्राचीन)

३ उक्त आशय से ही वृत्ताकार होकर किया जाने वाला नाच-गान ।

उ०—१ विन करताल डफ विन तूरा, पग विन पातरि नाचै । अखंड मडल में रास रच्यो है, जांह मेरा मन राचै—अनुभववांणी

उ०—२ पदिमनी हस्तिनी चित्रणी नारी लीलावंती रमई मुरारि सोल सहस वनइ मिली आनन्द, रास भासि गाई गोव्यद । —प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—३ साता दीप रास रमै सातूं घूघरिया धमकांणी । वीण म्रदंग बजावै डैरू, गावै अम्रत वांणी । —राघवदास भादो

४ नृत्य ।

५ खेल, क्रीड़ा, अभिनय ।

उ०—कदळी चील सीप पिक केरी, नृपति प्रजादि आस बहुतेरी । वरणै धरा नव उच्छव वारा, प्रतिनिस रास विलास अपारा । —रा. रू:

६ हास-विलास ।

७ काव्य ।

६ कोलाहल, शोर गुल ।

१० जोर की ध्वनि या शब्द ।

११ वाणी ।

१२ तेरह मात्राओं का एक ताल । (संगीत)

[सं. रसना, रश्मि, प्रा०रस्सी, अप. रस्सि,]—१३ बागडोर, लगाम, बाग ।

उ०—१ घोड़ा री रास फणकारी के घोड़ो तो पाथरो भूलरा रै मांय वडग्यो । —फुलवाड़ी

उ०—२ रासां फणकारतां ई रथ रा घोड़ा आगे वधिया । —फुलवाड़ी

१४ बैलों को बांधने की रस्सी ।

उ०—मूतळ नाथा सर नामां सणकारी । फुरणी दू'धातां रासां फणकारी । —ऊ० का०

१५ घोड़े की चाल विशेष ।
१६ रस्सी, डोरी ।
१७ जंजीर, शृंखला ।
१८ प्रत्यंचा, डोर ।
उ०— दसत चाप ग्ररु रास दसत्तां, महाप्रबळ नदि सुजळ ममत्तां । वरपति गोळ हरोळ तोप धुरि, पूठि पहाड़ दुरंग तारापुरि । –सू.प्र.
१९ तिलों को फटकार कर निकाला जाने वाला भूसा ।
[सं. राशि] २० खलिहान में अनाज का ढेर। २१ बारह की संख्या । *
२२ देखो 'राशि' (रू. भे.)
उ०—१ भख पुंहचावै भूधरो, अजगर रै अनय्यास । किम भूलो संतां 'किसन' संभरतां सुख रास । —र. ज. प्र.
उ०—२ रसा सुर सुगति में सुख रास, दसा मिळगौ गुरु जेमलदास। सदा चित्त चैन हरी पद सेव, दया कर सेन करी गुरुदेव । —ऊ का.
उ०—३ नाच गाय कर निलजता, रच वप भूखण रास । मार निजारा मोहियो, हजै मुखरे हास । —बां. दा.
रू. भे.—रा'
अल्पा., 'रासड़ली'

रासचक्र—देखो 'रासिचक्र (रू. भे.)
रासड़ली—देखो 'रास' (अल्पा., रू. भे.)
रासट–सं. पु. [सं. राष्ट्र] देश, मुल्क, राष्ट्र । (ह. नां. मा.)
रासत–सं. स्त्री. - रियासत, राज्य ।
रासती–स. स्त्री.—मित्रता, दोस्ती ।
रासतीक–वि०—मित्रता करने वाला ।
रासतौ—देखो 'रास्तौ' (रू. भे)
रासथळ–सं. पु. [सं. रास+स्थल] १ रंगशाला, नृत्य शाला ।
२ क्रीडा स्थल ।
उ०—पुलिण रविसुता फहरावजे पीतपट, आवजे रासथळ व्रजनाथ आथ । कांन कवार विहरि गळी व्रज कुंज री, सुभ रळी कीजियै लाडली साथ । —वा दा.
रासधारी–सं. पु.—[सं. रास धारिन्] १ श्रीकृष्ण ।
२ श्रीकृष्ण की रासलीला का अभिनय करने वाला व्यक्ति ।
रासन–सं. पु.—१ देश में खाद्य पदार्थों की मात्रा सीमित होने की दशा में प्रजा को उचित दामों पर उचित मात्रा में वे पदार्थ उपलब्ध कराने के लिये, सरकार द्वारा की जाने वाली व्यवस्था । वितरण प्रणाली । (इसी प्रकार अन्य पदार्थ भी जो दैनिक उपयोग के हों ।)
२ उक्त व्यवस्था के अन्तर्गत, सरकार द्वारा प्रत्येक परिवार को दिया जाने वाला एक प्रपत्र (कार्ड), जिसमें परिवार के सदस्यों की संख्या व नाम लिखे होते हैं और सामान के वितरण के समय उसमें इन्द्राज किया जाता है ।
३ उक्त प्रपत्र के आधार पर समय-समय पर मिलने वाला सामान या सामान की निश्चित मात्रा ।
४ खाने-पीने का सामान, रसद ।
रासना—देखो 'रास्ना' (रू. भे.)
उ०—रामोड़ी नइं रासना, रीगिणी रुद्र-जटाय । रांग रतांजणि रुमंडी, रनिवनि रंग धराय । —मा. कां. प्र.
रासनित्य–स. पु. [सं. रास-नृत्य] एक प्रकार का नृत्य विशेष ।
वि० वि०—देखो 'रास'
रासपूनम, रासपूरणिमा–स. स्त्री. [सं. रासपूर्णिमा] मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा । ऐसा माना जाता है कि श्रीकृष्ण ने इसी दिन रास क्रीड़ा प्रारंभ की थी ।
रासब, रासभ–स. पु. [सं. रासभ] (स्त्री. रासभणी) गधा, गर्दभ ।
रू. भे.—रासव, रासिभ ।
रासभणी–सं. स्त्री.—गधी, गदही ।
रासभूमि–स. स्त्री. [सं.] रासक्रीड़ा करने का स्थान ।
रासमंडळ–सं. पु. [सं. रास-मण्डल] १ वह स्थान जहां पर श्रीकृष्ण रासक्रीड़ा किया करते थे ।
२ रासक्रीड़ा करने वालों का समूह ।
३ रासक्रीड़ा करने वालों का अभिनय ।
उ०—साथै सहेलियां री टोळी मो रासमंडळ रमण रै ओछाह चांदणी री राति री चली जाइ छै । —रा. सा. सं.
रासमंडळी–सं. स्त्री.—रास क्रीडा करने वालों का समाज, टोली या संघ ।
रासरमण–सं. पु. [सं.] १ ईश्वर, परमेश्वर । (ह. नां. मा.)
२ श्रीकृष्ण ।
रासलीला–सं. स्त्री. [सं.] १ वह नृत्य, अभिनय या क्रीड़ा जो श्रीकृष्ण ने व्रज की गोपियों के संग में की थी ।
२ उक्त के आधार पर किया जाने वाला अभिनय या नाटक ।
रासव—देखो 'रासभ' (रू. भे.)
उ०—रासव पुरण पलांण कर कोई हसत्त बंधावै । —केसौदास गाडण
रासविलास–सं. पु. [सं.] रासक्रीडा ।
रासविहारी–सं. पु. [सं.] १ श्रीकृष्ण ।
२ ईश्वर, परमेश्वर ।
रासायण, रासायन—वि. [सं. रासायन] रसायन का या रसायन सम्बन्धी ।
रासायनिक–वि. [सं.] १ रसायन शास्त्र का, रसायन शास्त्र सम्बन्धी ।
२ रसायन शास्त्र का ज्ञाता ।

रासि-सं. स्त्री. [सं. राशि] १ किसी वस्तु का ढेर, समूह, पुंज, राशि। संग्रह।

उ०—सोवन ए रासि करेवि वंधव आगलिउ गिणं ए।
– सालिभद्र सूरी

२ कोई ऐसी सख्या जिसके लिये जोड़, बाकी, गुणा, भाग किया गया हो। (गणित)

३ किसी का उत्तराधिकारी।

४ क्रान्ति वृत के बारह तारा-समूह जो, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन मकर, कुंभ और मीन कहे जाते हैं। (ज्योतिष)

उ०—दिन रात सम तुल रासि, दिन कर सरकि अनुक्रमि सरवरी। स्त्रिय जीत पति गुण परखि चखि, सुख सकस पखि जिम सुंदरी। —रा. रू.

५ बारह की संख्या। ❋

रू. भे.—रा', रासी।

६ देखो 'रास' (रू. भे.)

उ०—१ अस्व चलाव्या मंत्र भणी, ते गरुड तणी गति चालि। वाहुक सज्ज थईनि विठ्ठ, रासि भेद सूं भालि। —नलांख्यांन

उ०—२ जूं सहरी भ्रूह नयण अग जूता, विसहर रासि कि अलक वक्र। वाली किरि वांकिया विराजै, चंद रथी ताटंक चक्र। —वेलि

रासिचक्र-सं. पु. [सं. राशि चक्र] १ मेप, वृष आदि राशियों का चक्र या मंडल। (ज्योतिष)

२ ग्रहों के चलने का मार्ग या चक्र।

रू. भे.—रासचक्र।

रासिनांम-सं. पु. [सं. राशि-नामन्] किसी शिशु के जन्म के समय की राशि के अनुसार होने वाला नाम। (फलित ज्योतिष)

रासिप-सं. पु. [सं. राशिप] किसी राशि का अधिपति देवता।

रासिबि—देखो 'रासभ' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

रासिभाग-सं. पु. [सं. राशिभाग] ज्योतिष में किसी राशि का भाग या अंश।

रासिभोग-सं. पु. [सं. राशि-भोग] किसी ग्रह का किसी राशि में कुछ काल तक रहने की अवस्था। (ज्योतिष)

रासी—देखो 'रासि' (रू. भे.)

उ०—दूध में रांधसी घी में खासी, करमी ज्यूं हुगी जांणी. उघड़गी रासी। —दसदोख

रासीक-वि.—साधारण, मामूली।

रासु—देखो 'रासौ' (रू. भे.)

उ०—पुनिम गछमुणिंद सालिभद्र ए सूरिहिं नींमीउ ए। देवचंद्र उपरोधि पंडव ए रासु रसाउलु ए। —सालिभद्र सूरि

रासेस्वरी-सं. स्त्री. [सं. रासेश्वरी] राधा।

रासौ-सं. पु.—१ वह पद्यमय रचना या काव्य जिसमें युद्धों तथा वीरत्वपूर्ण कृत्यों का विस्तृत वर्णन हो।

२ उक्त काव्य की पुस्तक या ग्रंथ।

३ युद्ध, लड़ाई।

उ०—डडकारा डाकरिण करै, राक्षस देवइ रासौ रे। रुंड तणी माला रचै, ऊमयापति उल्लासौ रे। —प. च. चौ.

४ तकरार, विवाद, झंझट, बखेड़ा।

५ अव्यवस्था।

उ०—नीं दाद-फरियाद अर नीं कीं सुणवाई। दिन बीतै सौ वत्तौ। आंधा पीसै नै कुत्ता खावै। जबर रुळियार रासौ मचियौ। —फुलवाड़ी

६ उलझन, चक्कर, समस्या।

उ०—१ बाप नै रोवतौ देख नै नैन्यौ ई मा री छाती में मूंडो घाल नै रोवण लाग्यौ। उण नै ठा नीं पड़ी के औ कांई रासौ है। —रातवासौ

उ०—२ लुगायां री चकचक सूं राग बदळग्यौ। हे मावड़ी–एक ई उणियार रा दो धणी! कुण साचौ, कुण कूड़ो! औ कांई रासौ औ कांई कौतक? कोई कठीनै न्हाटी, नै कोई कठीनै न्हाटी। —फुलवाड़ी

७ खेल, तमाशा, लीला।

उ०—१ महारांणी रा पग तौ बारणा माथै ई चिपग्या। वा वोली वोली आंख्यां फाड़ती औ रासौ देखती री। — फुलवाड़ी

उ०—२ ठाकरसा कीं कैवण लागा तौ सेठ ठीमर वणनै कह्यौ– आ वात किणी रै सांमी चौड़ै नीं करणी चावूं। पांचवै कांन ई भणक पड़गी तौ रासौ बिगड़ जावेला। —फुलवाड़ी

८ ढंग।

उ०—१ जे राजा रौ मूंडौ मोखी री गिणती में आजावै तौ दुनिया रौ रासौ ई बिगड़ जावैला। —फुलवाड़ी

उ०—२ औ रूप काळपिया नीं बादळ बरसैला। नीं बीजळियां पळकेला। नीं सूरज ऊगैला अर नीं चांद। कुदरत रौ सगळौ रासौ ई परवार जावैला। —फुलवाड़ी

रू. भे.—रासु।

रास्ट, रास्ट्र-सं. पु. [सं. राष्ट्र] १ राज्य, साम्राज्य।

उ०—खवास पासवांन कृपापात्र भ्रत्य रास्ट्र भर। सुघर सुचाळ सभ्य सबको सुहायौ तूं। —ऊ. का.

२ वह क्षेत्र या भू भाग जिसमें एक सी भौगोलिक स्थिति तथा जिसमें बसने वाले लोगों की भाषा, संस्कृति, धर्म, तथा रीति-रिवाज एक से हों। देश, मुल्क, नेशन।

३ देश, मुल्क। (अ. मा.) (सभा)

४ किसी एक ही शासन या शासन विधान के अधीन रहने वाले लोगों का समूह।

५ देशव्यापी बाधा, उपद्रव, ईति।

६ पुरुरवा के वंशज काशीराजा का पुत्र एक राजा।

रू. भे.—रट्ठ।

राष्ट्रकूट-सं. पु. [सं. राष्ट्रकूट] एक क्षत्रिय राजवंश, राठौड़।

उ०—प्रतिहार लब्धक राष्ट्रकूट सक करवट कारट पाल चांदिल गोहिल············ —व. स.

राष्ट्रपति-सं. पु. [सं. राष्ट्रपति] प्रजातन्त्रात्मक या संवैधानिक प्रणाली के अन्तर्गत किसी देश का सर्वोच्च शासक।

राष्ट्रपाळ-सं. पु. [सं. राष्ट्रपालक] १ राजा।

२ कंस का एक भाई।

राष्ट्रभंगी-सं. पु. [सं. राष्ट्र भंगी] वह घोड़ा जिसकी पीठ पर भंवरी (चक्र) हो।

राष्ट्रभेद-सं. पु. [सं राष्ट्र भेद] प्राचीन भारत की एक राजनीति, जिसके द्वारा शत्रु राजा के राज्य में विद्रोह करवाया जाता है।

राष्ट्रवासी-सं. पु. [सं. राष्ट्र वासिन्] १ देश का निवासी, देशवासी।

२ परदेशी।

राष्ट्र विप्लव-सं. पु. [सं. राष्ट्र विप्लव] किसी देश में होने वाला विद्रोह, गदर, बलवा।

राष्ट्रीय-वि. [सं. राष्ट्रीय] राष्ट्र का, राष्ट्र सम्बन्धी।

रास्तागीर-सं. पु—रास्ते पर चलने वाला, राहगीर, पथिक।

रू. भे.—रस्तागीर।

रास्तौ-सं. पु. [फा. रास्तः] १ मार्ग, पथ, राह।

मुहा०—१ रास्तौ करणौ=मार्ग या पथ या मंजिल पूरी होना, मंजिल तय होना, यात्रा का समय आसानी से पूरा होना।

२ रास्तौ काटणौ=रास्ता पार करना, मंजिल तय करना। यात्रा पूरी करना।

३ रास्तौ देखणौ=इंतजार करना, रास्ते चल पड़ना।

४ रास्तौ पकड़णौ=रास्ते चलना, कहीं चले जाना।

५ रास्तौ बताणौ=जाने के लिये कहना, सही मार्ग बताना, मार्ग दर्शन करना।

६ रास्तै लाणौ=उचित मार्ग पर चलने का कहना, सुधारना।

२ परंपरा, रीति, प्रथा।

३ तरकीब, उपाय, तरीका।

रू. भे.—रसतौ, रस्तौ, रस्तौ, रासतौ।

रास्ना-सं. स्त्री. [सं.] १ गंधनाकुली नामक काष्ट औषधि विशेष।

२ रुद्र की प्रधान पत्नी।

रू. भे.—रासना।

राह-सं. स्त्री. [फा.] १ मार्ग, रास्ता, पथ।

उ०—१ पछै सोरभ पातसाहजी रा डेरा हुवा। तद राह मांहे स्त्री कंवरजी जाय पातसाहजी रै पांवे लागा। —नैणसी

उ०—२ नहीं गया मांचै मुवा, रविमंडळ रै राह। जूझ मुवा रण मैं जिके, गतपंचमी गयाह। —बां. दा.

२ परंपरा, प्रथा, रीति-रिवाज, कायदा।

उ०—१ साह व्है असाह, चाह दाह तें सह्चौ। राह छोड अहा तू कुराह क्यूं गयौ। —ऊ. का.

उ०—२ जदी वै ओर था सु तौ आपके घरां ऊठि गया अरु कुंभारं—कुंभारी लड़का तीनूं रोते है। जदी राहिव कह्या, रै ये काहा हुवा? इतनी वार तौ सादी होती थी अरु अबै येह रोणै लगा। सो इनके येह ई राह होयगा। मेळ कूं रोतै होयगे। —राहब साहब री वात

३ धार्मिक सम्प्रदाय, पंथ।

उ०—१ मेछां राह निभाह कज, दिल्ली औरंगसाह। ज्युं सामद्र अजाद सूं, यूं रहियौ खम दाह। —रा. रू.

उ०—२ फिरग प्रळै जळ फैलियौ, तज दूहूं राहां टेक। पांन अखै-वड़ 'पदम' रौ, ऊंचौ रहियौ एक। —राघोदास सांदू

उ०—३ करवा एक राह मन कीधौ। लेख प्रमांण धेख व्रत लीधौ। —रा. रू.

४ धर्म, कर्त्तव्य।

उ०—१ 'जगतसी' 'अमरसी' 'उदैसी' जेहवौ, छातपत केम कुळ राह छाडै। रांण सीसोदियौ टेक झालै रहै, एक पतसाह सूं कंध आडै। —गोविंद बारहठ

उ०—२ 'केहरि' कहियै सांभळौ, ऐ खत्रीपण राह। बोल न जाए सूरिमा, काया जाइ त जाह। —गु. रू. बं.

५ कार्य, कर्म।

उ०—आकास में खेती करणी असंभव, आकास में खेती करै नें बीज धरती मैं बावणौ उलटौ राह छै। —बी. स. टी.

६ प्रतीक्षा, इंतजार।

उ०—१ तन का त्यागूं कापड़ा जी, ऊगंते परभात। खड़ी जोवती राह में जी, सतगुरू पोंछे आय। —मीरां

उ०—२ हूं तौ जोऊं जोऊं रांमजी री राह। कद तौ आवेला स्वांमी सांवरौ। —गी. रां.

७ आशा, उम्मीद।

८ प्रयत्न, यत्न, कोशिश।

९ युक्ति, तरकीब, उपाय।

१० तरह, भांति, प्रकार।

उ०—१ 'राजौ' भिड़त सूरिमा राह। 'बिसनावत' सीहक सिंधु-राह। —गु. रू. बं.

उ०—२ घोर घमंकी पखरां छोनी तळ छाया। रंग विरंगे राह के गज गाह लगाया। —वं. भा.

११ तौर, तरीका, ढंग।

१२ मस्तक, सिर।

१३ घोड़े की एक चाल विशेष।

रू. भे.—रह, रा', अल्पा.,–राहड़ी, मह., राहड़ो,

१४ देखो 'राहु' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ पुणैं निजूम अरज मत आजो। सनि रवि राह केत दन साजो। —सू. प्र.

उ०—२ खड़ो लांगड़ो बीर वीरावि मेतू। करै रागड़ां छागड़ां राहु केतू। —मे. म.

उ०—३ अंतर दीसइ एवडू, किहां चद्रमा किहां राह रे, अंतर दीसइ एवडू आक छाया व्रक्ष छांह रे —नळदवदती रास

राहखरच–सं. पु.—किसी यात्रा में जाते समय मार्ग में होने वाला व्यय।

राहगीर–सं. पु. [फा.] रास्ते चलने वाला पथिक, राही, बटाऊ, मुसाफिर।

राहड़–सं. स्त्री.—१ संध्या, शाम।

उ०—पछै प्रोळ रांणी ढकाई। पछै राहड़ वेळा ताई मांहै तेजसी वांसै हुवौ आयौ। —नैणसी

सं. पु.—२ भाटी वंश की एक शाखा।

राहड़ी–स. स्त्री.—१ रस्सी, डोरी, रज्जु।

उ०—१ दोनूं धणियां नै राहड़ियां सूं बांध काठा जरू करचा। —फुलवाड़ी

उ०—२ म्हैं कोई ढोर-डांगर तौ कोनीं जकौ म्हनै राहड़ी थमाय दूजां रै लारै करौ। —फुलवाड़ी

मह.—राहड़ो।

२ देखो 'राह' (अल्पा., रू. भे.)

राहड़ोत–सं. पु.—'राहड़' शाखा का भाटी राजपूत।

राहड़ो—१ 'राह' (मह., रू. भे.)

उ०—अळगा अळगा गांवड़ा, करड़ा करड़ा कोस। लूआं रळक्या राहड़ा, पंथी कुण नै दोस। —लू.

२ देखो 'राहड़ी' (मह., रू. भे.)

राहचक, राहचकौ, राहचक्र–सं. पु.—युद्ध, लड़ाई।

उ०—१ मुहणोत सुंदरदास जैमलोत गांव कवळै सींधळ सींधळां रा आदमी कट पांच सै जणा मारिया, पचीस सती हुई। वडो राहचक हुवौ। —बां. दा. ख्यात

उ०—२ वाज फोजा गजां वीच लोकां वकी, हूवकै ऊवकां कूंत हाकी हकी। 'जसौ' नै 'कांन' जगमाल 'पीथौ' जिके। चोळ होळी हुवा रूक राहचके। —कांनसिंह सक्तावत री गीत

रू. भे.—राहाचरक, राहाचरक्क।

राहजनी–सं. स्त्री: [फा.] राह चलते पथिकों को लूटने की क्रिया या भाव, लूट-खसोट, बटमारी।

राहणो–सं. पु.—परिग्रह, दरवारी।

उ०—१ रांणी वातां सुण कहण लागी, जो आसी चौकस के नही तद उण रै मांन दांन रै अहसांण सुं दूतरौ ओलौ प्रोहित राव गयौ, 'जो कुंवरसी जी री वस लगां तौ हर भांत आसी।' वाकी सारौ सहर देस राहणौ वरजण में छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ कुंवर रा मोहलां सिखाव दियौ। बीजौ पर कामदारां साहुकारां राज रै राहणै अमरावां ठाकुरां सारां वधाई दी। —कुंवरसी सांखला री वारता

राहणौ, राहवौ–क्रि. स.—१ युद्ध करना, लड़ाई करना।

२ मारना, संहार करना।

३ उद्दंड पशु को ठीक करना।

राहत–सं. स्त्री. [अ.] चैन, आराम, सुख।

राहदार–वि.—राह नामक चाल से चलने वाला। (घोड़ा)

उ०—१ रांणी वडै राहदार घोड़े चढी थकी नरसघ री पण म्हाह करै। —राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ ऐवियां मझै लागति उदार। दुति तीर वेग के राहदार। —सू. प्र.

सं. पु.—[फा.] १ चौकीदार, प्रहरी।

२ रास्ते पर आने जाने वाले से कर वसूल करने वाला व्यक्ति।

राहदारी–सं. स्त्री—१ चौकीदारी।

२ राह पर आने-जाने वालों से कर वसूल करने की क्रिया।

रू. भे.—रादारी।

राहबंधी–सं. स्त्री.—विचार-विमर्श, सलाह-मशविरा।

उ०—पछै जिण जोध पोकार सगलै पड़ी, धरै नहीं अरज पतिसाह धीठौ राहवधी हुइ रखै कोई रोकसी, देवै जसवंत री साथ दीठौ। —ध. व. ग्रं.

राहवारी—देखो 'रैवारी' (रू. भे.)

राहवेधी—देखो 'राहवेवी' (रू. भे.)

उ०—१ बीजो मांणस राहवेधी छै। जेगे सूं थांनै रात-दिन अचौ होसी। —नापै सांखळै री वारता

उ०—२ महाराजा वखतसिंह वडौ वुद्धिमांन राजा थौ। राहवेधी थौ। सांम, दांम, दंड, भेद चारूं वात में निपुण थौ। —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

राहरीत, राहरीति–सं. स्त्री.—१ परंपरा, प्रथा, रूढी, रिवाज।

२ व्यवहार, आचार।

३ लेन-देन।

राहरूंद्-वि.—१ रास्ता रोकने वाला।

२ मार्ग में बाधाएं उत्पन्न करने वाला।

राहरूत-वि.—राहु ग्रह के समान।

उ०—छगां छगां धरि नगां, चढै आसणां महावत। राहरूत रवि पूत, धूत थापलिया धूरत। —सू. प्र.

राहलणौ, राहलबौ-क्रि. स.—राह पर लाना, सीधा करना।

राहलियोड़ौ-भू. का. कृ.—राह पर लाया हुआ, सीधा किया हुआ। (स्त्री. राहलियोड़ी)

राहवणौ, राहवबौ-क्रि. स.—राह पर चलना।

२ रीति, प्रथा या परम्परा के अनुसार चलना, रीति निभाना।

उ०—सहनक तणां सुजांण, पारीसा 'पातल' तणा। तै राहविया रांण, एकण हूँता ऊदवत। —सूरायच टापरया

[सं. रक्षापयति, प्रा. रक्खावइ] ३ रक्षा करना।

उ०—१ पत राखै पंडवां, अंब कर मांझि उपाये। गजपत पत राहवै, अनंत खगपत चढ आए। —जगो खिड़ियौ

उ०—२ पभणइ जूठिलु राउ माइ म अरणइ तुहि करउ। निय घरि पाछां जायउ लोकु सहूयइ राहवउ। —सालिभद्र सूरि

राहवियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ राह पर चला हुआ. २ रीति, प्रथा या परम्परा के अनुसार चला हुआ, रीति निभाया हुआ. ३ रक्षा किया हुआ। (स्त्री. राहवियोड़ी)

राहवेधी-वि.—१ लुटेरा डाकू।

२ कूटनीतिज्ञ। दांव पेच जानने वाला।

उ०—१ राव मालदे राहवेधी ठाकुर छै। सु नागोर दौलतीया नूं कहाड़ीयौ—राव, वीरमदे म्हां साथै छै। बडा-वडा रजपूत सारा वीरमदे कनै छै। वीरमदे थांहांरी हाथी लायां रहै छै। थे ही वांसै आयै मेड़तौ मारौ नै वीरमदे रा माणस चचौ-वचौ सारौ वंद कर ले जावौ। —नैणसी

उ०—२ पीछै सांगैजी री भाई भारमलजी वडौ राहवेधी हुवौ। तिकै रतनसी रा भाई ग्रासकरण नूं फोरियौ नै कयौ, "राज थांहरौ है अरु रतनसी तौ रात दिन दारू में मतवाळौ थकौ गैर महलां इज रहै छै। —द. दा.

३ दूरदर्शी

उ०—सु गूढा रा लोग सारी वात सांखला रायसी नूं जाय कहै छै। सु रायसी राहवेधी छै। रायसी धरती लेण ऊपर निजर राखै छै। —नैणसी

४ नीति निपुण, नीतिज्ञ।

उ०—मूळराज रौ हाल हुकम हुवौ सु मूळराज वडौ राहवेधी, छै, वीज काकौ आंधौ बलाय रा वंधणा छै। —नैणसी

५ चतुर, प्रवीण, निपुण।

उ०—१ बुरहांन पिण राहवेधी रजपूत थौ। इणां री सूल अटकळियौ। —राव मालदे री वात

उ०—२ मेघौ टीकै वैठौ। रांणौ मेघौ हुवौ। वडौ रजपूत, वडौ तरवारियौ, वडौ राहवेधी, वडौ जोरावर। —नैणसी

६ बड़ा वीर, बड़ा योद्धा।

उ०—सांगौ वडवज नीवज वसती, वडौ राहवेधी रजपूत थौ। —नैणसी

७ राह रोकने वाला।

रू. भे.—राहवेधी, राहावेधी।

राहाड़-स. पु.—झगड़ा, लड़ाई।

उ०—गांम तौ ऐ भूला आया, दुसमणां रै गावै आया, राहाड़ हुवौ। —प्रतापमल देवड़ा री वारता

राहावरक, राहाचरक्क—देखो राहचक' (रू. भे.)

उ०—१ वीर हर तिलक वावाडिया, साइदांण वज्जै कटक। 'गजसिंह' कियौ भिड गज दळां, रिण संग्रांम राहाचरक। —गु. रू. बं.

उ०—२ चउंडराउ चड़िय मोहिल्ल चीति। राहाचरक्क देखाळि रीति। —रा. ज. सी.

राहाली-वि. स्त्री.—१ युद्ध कराने वाली।

२ राह या मार्ग धारण करने वाली।

राहालौ-वि.—१ राह पर चलने वाला।

२ रीति या परंपरा के अनुसार चलने वाला।

३ न्याय प्रिय।

४ चरित्रवांन।

५ "राह" चाल से चलने वाला। (घोड़ा)

राहावेधी—देखो 'राहवेधी' (रू. भे.)

उ०—१ पिण रा. वीरमदे राहावेधी हजार वात पातसाह नुं सुणाई आगली मायली सहल कर दीखायी। —नैणसी

उ०—२ रांणौ राहावेधी देवीदास हुतौ, तद ही समझ गयौ—बीजौ मारियौ राव रै साथ सीवांणौ लियौ, हिमें राव मोनूं मारसी। —नैणसी

राहावेहु—देखो 'रावावेध' रू. भे.)

उ०—तीणं परीक्षां गुर तणी पूगउ एकु जु पत्थु। राहावेहु तउ सिखवइ मच्छइ देविणु हत्थु। —सालिभद्र सूरि

राहि, राही-स. पु. [फा.] राहगीर, पथिक, मुसाफिर, यात्री।

राहीया—देखो 'राधा'

राहु-सं. पु. [सं.] १ नव ग्रेहों में से एक ग्रह जो पुराणानुसार विप्र-

चित्त के वीर्य और सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

उ०—राहु केत रिख अरुण, नवै ग्रह सांति करै नित। —ह. र.

२ उक्त नाम का दानव जो प्रच्छन्न रूप में अमृत पान करने के बाद राहु व केतु दो ग्रहों के रूप में परिवर्तित हो गया।

३ ग्रहण।

रू. भे.—राह, राहू।

४ रोहू नामक मछली।

राहुग्रसण, राहुग्रसन–सं. पु. [सं. राहु- ग्रसनं] १ सूर्य या चन्द्र का राहु के द्वारा ग्रसा जाने की अवस्था या भाव।

२ ग्रहण।

राहुग्रास–सं. पु. [सं.] ग्रहण।

राहुदरसण–सं पु. [सं. राहु+दर्शन] ग्रहण।

राहुभेदी–सं. पु. [सं. राहु+भेदिन] विष्णु।

राहुरत्न–सं. पु. [सं.] राहु के दोष का शमन करने वाली गोमेद मणि।

राहुल–सं. पु. [सं.] गौतम बुद्ध का पुत्र।

राहुसूतक–सं. पु. [सं.] ग्रहण।

राहू–वि.—१ काला। ✿

२ श्वेत। ✿

३ देखो 'राहु' (रू. भे.)

उ०—ग्रहण-वेलाइं गल-समां, पइसी पांणी मांहि। रूडी मंत्र जपइ रहइ, राहू तणी जिहां छांहि। —मा. कां. प्र.

राहूड़ो–सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा जिसके होठ छोटे होते हैं। (अशुभ)

रिंग–सं. स्त्री. [अ.] १ अंगूठी, मुद्रिका।

२ अंगूठी या चूड़ी के अनुसार कोई गोलाकार वस्तु।

रिंछी–सं. स्त्री.—देखो 'रींछी' (रू. भे.)

रिंछया—देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—म्हारो बेटो राजा रै सागै मिनख ई व्हैला। वो अकरमी अर अन्याइयां सूं रया री रिंछया करैला। खुद परजा री धणी नीं होय उण री चाकर व्हैला। —फुलवाड़ी

रिंजक—देखो 'रिजालो' (रू. भे.)

उ०—रिंजक प्याला सोरही भाला जगमगै। यारो परलै काळदी, ज्वाळांनळ जगै। —ला. रा.

रिंजाळो–वि.—देखो 'रिजालो' (रू. भे.)

उ०—हिसार रा लोग महा रिंजाळा सो कुड़ी वातां रा फड़ लगाय पग छुड़ाय दिया। —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

रिंझणी, रिंझबो - देखो 'रीझणी, रीझबो' (रू. भे.)

रिंझवार, रिंझवारो—देखो 'रिझवार (रू. भे.)

रिंझाणी, रिंझाबो—देखो 'रीझाणी, रीझाबो' (रू.भे.)

रिंझायोड़ो—देखो 'रीझायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. रिंझायोड़ी)

रिंझावन–सं. स्त्री.—मोहित, मुग्ध या आकर्षित करने की क्रिया या भाव।

उ०—नरतत मोर पपईया बोलै, मदन नरेस रिंझावन वार। —रसीलै राज री गीत

रिंडी–सं. स्त्री.— वह गाय, जिसके सींग ऊपर न उठकर पीठ की ओर हुए होते हैं व ललाट चौड़ा होता है तथा जिसका रंग लाल व चितकबरा होता है। रेडी।

रि–सं. स्त्री. [सं.] १ चलने या जाने की क्रिया या भाव।

२ देखो 'रे' (रू. भे.)

उ०—धिगु रि धिगु रि धिग दैव विलासु, पंचह पंडव हुइ वण-वासु। —सालिभद्र सूरि

रिआयत–सं. स्त्री. [अ.] १ नियमादि में किसी कारण-वश की जाने वाली शिथिलता, ढील, छूट।

२ किसी कार्य में दी जाने वाली सहूलियत, जिससे कार्य की गुरुता कम हो सके, राहत।

३ अनुग्रह, नर्माई या कोमलता का व्यवहार।

उ०—एक दिन बादसाह उमरावां सूं कही–मैं आज तलक रैयत री रिआयत में थो, आज पछै रिआयत बरतरफ करूं छूं जो मसलत होय तो आवो रैयत नूं लूट लेवां, रैयत रै कुछ न रहण देवां। —नी. प्र.

४ पक्षपात।

५ विशेष रूप से किया जाने वाला ख्याल, ध्यान।

६ वस्तु के मूल्य में की जाने वाली कमी या छूट।

रू. भे.—रवायत, रियायत।

रिआया–सं स्त्री. [अ. रआया] प्रजा, जनता।

रिउ—देखो 'रौ' (रू. भे.)

उ०—दउढ वरस री मारुवी, त्रिहुं वरसा रिउ कंत। उण रउ जोवन वहि गयउ, तूं किउं जोव्रन वंत। —ढो. मा.

रिक—देखो 'रिख' (रू. भे.)

रिकत, रिकतक—देखो 'रिक्त' (रू. भे.)

रिकता—१ देखो 'रिक्तता' (रू. भे.)

उ०—चमकता डागळ गोडा चिक चिकता। जंतू जळ रिकता सिकता में सिकता। —ऊ. का.

२ देखो 'रिका' (रू. भे.)

रिकता तिथ—देखो 'रिक्ता'

रिकथ—देखो 'रिक्थ' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

रिकसा—१ देखो 'रिक्षा' (रू. भे.)

२ देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

रिकसौ-सं. पु.—तीन पहियों की साईकिल नुमा गाड़ी जिसमें पीछे दो आदमियों को बैठाकर एक आदमी चला सकता है।

रिकाब-सं. पु. [अ.] १ सवारी का ऊंट।

उ०—वरकंदाज १००० अलाहधा। १२६८३ रिकाब, आसांमी १७६। ६५६४ जागीरी सुधा आसांमी। —नैणसी

२ देखो 'रकाब' (रू. भे.)

रिकाबी—देखो 'रकाबी' (रू. भे.)

रिकारौ—'रेंकारौ' (रू. भे.)

उ०—तुकारे रिकारे जिकोरे तमासू, आया आज सो माफ कीजै अमांसू। —ना. द.

रिक्ख—१ देखो 'रिसि' (रू. भे.)

उ०—१ रहै रत ध्यांन अठ्यासी रिक्ख। लहै नंह पार अहम्मा अक्ख। —ह. र.

उ०—२ गडगड जोगणि रत्त गिळंत। हडहड नारद रिक्ख हसंत। —गु. रू. बं.

२ देखो 'रिख' (रू. भे.)

रिक्खभ—देखो 'रिसभ' (रू. भे.)

उ०—राव वैकुंठ धनंतर रिक्खभ, गरुड़ारुढ विसन प्रसणीग्रभ। —ह. र.

रिक्खि—देखो 'रिसि' (रू. भे.)

उ०—हडाहड़ रिक्खि हुए हर हार। जयज्जय जोगणि किद्ध जिआर। —वचनिका

रिक्त-वि. [सं.] १ खाली किया हुआ, रीता।

२ रहित, विहीन।

उ०—कुळहीन अंग चरमा वितुंड, वंबीळ उरद्ध सिर महिस मुड। रंडाळ बाळ विथुरे असुभ्र, लज्या विहीन सिर रिक्त कुंभ। —ला. रा.

३ शून्य।

४ खोखला, थोथा।

५ विभक्त, वियुक्त।

६ मोहताज, गरीब, निर्धन।

सं. पु. [स. रिक्त] १ खाली या रिक्त स्थान।

२ वन, जगल।

३ आकाश।

रू. भे.—रिकत, रिकतक।

रिक्तता-सं. स्त्री. [सं. रिक्त+ता प्र.] १ रिक्त या खाली होने की दशा, अवस्था या भाव।

२ गुंजाईश, अवकाश।

३ खोखलापन।

४ शून्यता।

५ गरीबी, निर्धनता।

६ विहीनता की दशा।

रू. भे.—रिकता।

रिक्ता-सं. स्त्री. [सं.] चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी की तिथियां, जो शुभ कार्य के लिये वर्जित मानी गई है। (फलित ज्योतिष)

वि. स्त्री.—विहीन।

रू. भे.—रिकता, रिगता।

रिक्तारक-सं. पु. [सं. रिक्तार्क] चतुर्थी, नवमी, या चतुर्दशी की वह तिथि जो रविवार को पड़ती है।

रिक्थ-सं. स्त्री. [सं. ऋक्थम्] १ धन सम्पत्ति।

२ वह सम्पत्ति जो उत्तराधिकार में मिली हो।

३ स्वर्ण, सोना।

५ व्यापार या लेन देन में लगी हुई पूंजी।

रू. भे.—रिकथ, रिखथ।

रिक्ष—१ देखो 'रिसि' (रू. भे.)

उ०—रिक्ष तेड़ौ व्रक्ष आंणौ, सयल भार अढार। प्रथम पीपल साग सीसमइ, आंमली अधिकार। —रुकमणी मंगळ

२ देखो 'रिख' (रू. भे.)

रिक्षा-सं. स्त्री. [सं. लिक्षा] १ जूं का अंडा, लीख, लिक्षा।

२ चार या आठ तृसुरेणु के बरावर की एक तौल।

रू. भे.—रिकसा।

३ देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—ग्रहणा सेवन दुइ सिक्षा, सीखी संजम नी रिक्षा। —कवि सार

रिक्षास्त्र-सं. पु.—एक प्रकार का अस्त्र।

उ०—नागास्त्र गुरुडास्त्र सवरत्तकास्त्र मेघास्त्र प्रलयकालास्त्र रिक्षास्त्र आग्नेयास्त्र वारुणास्त्र दांनवास्त्र········· —व. स.

रिखंभ—देखो 'रिसभ' (रू. भे.)

उ०—नमौ रुसि तापस-रूप रिखंभ। नमौ अवतार उदार असंभ। —ह. र.

रिख-सं. पु. [सं. ऋक्ष] १ तारे, नक्षत्र। (अ. मा.)

उ०—१ राहु केत रिख अरुण, नवै ग्रह सांति करै नित। —ह. र.

—ह. र.

उ०—२ महि प्रगटि रास विलास मंगळ, अमळ रेण अकास ए। सोभंति रिख गण चंद्र सोभा, किरण जगमग कास ए। —रा. रू.

२ सूर्य। (नां. मा.)

[सं. ऋषि] ३ सात की संख्या।

उ०—आसाढऊ सुद नवमि, गुण आगे रिख (१७३७) लेख। जिके समत्सर जोधपुर, समहर थयौ विसेख। —रा. रू.

रू. भे.—रख, रिक, रिक्ख, रिक्ष, रिख, रिख्ख।

अल्पा.,–रिखड़उ, रिखड़ौ।

४ वन, जंगल। (अ. मा.)

उ०—रिख वद्री अनै अरवद तणा, तप कर कर तन तजियौ। मौकमा कमंध मोटा मिनख, तैं जीव 'र कासूं कियौ।

—अरजुन जी बारहठ

५ वट वृक्ष। (नां. मा.)

६ रामदेव के उपासक वर्ग का नाम। (मा. म.)

७ रीस, गुस्सा।

उ०—ना रिख करणौ है भलौ, धीर धारिये चित्त। भोळी टावर वेसमझ, ग्यांन न वींरें चित्त। —सूरे खींवे कांधळोत री वात

८ देखो 'रिसि' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा.)

उ०—१ जोड़े पांण महिपत जंपै, को रिख आग्या कीजै। आग्या एक सुणी न्रप आगम, संग उभै सुत दीजै। —रा. रू.

उ०—२ पदमण रिख असमांन पहूंती। पंखां विनां जिहांन पढीजै। —र. ज. प्र.

उ०—३ नै हारीत रिख विमांन वैस चालतौ थौ सु वापा नूं तेड़ियां थी सु मोड़ेरौ आयौ, सु पछै वापा नूं रथ वैसतां बांह झाली, वापा री देह हाथ दस वधी। —नैणसी

उ०—४ हद ओपमां तेण रिख हासां। पवन झुलै किर फुलै पळासां। —सू. प्र.

रिखग्रंख-सं. पु.—तीन अथवा सात नैत्र।

उ०—लघू मध्य रगण फळ अतक पत पवन लख, तात ऋतु जरा तन रगत आतंख। रखेसुर अंगारख भेड पुण रोद्र रस, उजेणी न्रपत कुळ सूद्र रिखग्रंख। —र. रू.

रिखग-सं. पु. [सं. ऋक्षः] तारा, उडगन।

उ०—झडां करि-माळ रिखग्ग झडंत। पडै भूइ धाउ निहाउ पडंत। —गु. रू बं.

रिखड़उ, रिखड़ौ—देखो 'रिसि' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ रिखड़उ रमतउ थकउ, चाल्यउ चंचल चित्त रे। उतावलइ आव्यउ अयोध्या, राज लेवा निमित्त रे। —स. कु.

उ०—२ न मरद न जोरू लख्या नहीं जावत, मस्तक मुंडित कन्न फड़ा। अचरिज्ज भया मोहि देख नहीं एहु, कुण दुकांण देखउ रिखड़ा। —स. कु.

२ देखो 'रिख' (अल्पा., रू. भे.)

रिखथ—देखो 'रिक्थ' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

रिखदेव-सं. पु.—शिव, महादेव।

उ०—पतित न्हाय व्है पीतपट, दिपै निकट रिखदेव। नचै मुगत नटनार ज्यूं, स्रीगंगा तट सेव। —बां. दा.

रू. भे.—रिसिदेव।

रिखधुनि-सं. स्त्री. [सं. ऋषि+ध्वनि] गंगा नदी। (ह. नां. मा.)

रिखपंति-सं. स्त्री. [सं. ऋक्ष+पंक्ति] नक्षत्रों की पंक्ति, कतार।

उ०—आणद सु जु उदौ उहास हास अति, राजति रद रिखपंति रुख। नयण कमोदणी दीप नासिका, मेन केस राकेस मुख।

—वेलि

रिखपत, रिखपति-सं. पु. [सं. ऋषि-पति] ऋषि-श्रेष्ठ, ऋषिराज, मुनिराज।

उ०—पंचवटी पहुंता सुणै रिखपत, उमंग सगळा आविया। प्रफुलंत पंकज जांण खटपद, हिये यू हरखाविया। —रा. रू.

रिखपांचम—देखो 'रिसिपांचम' (रू. भे.)

रिखपूनम—देखो 'रिसिपूरणिमा' (रू. भे.)

उ०—सीकर रै धणी सेखावत देवीसिंघ भायां नूं साथ ले खाद्द कजियौ कियौ रिखपूनम रै दिन। —बां. दा. ख्यात

रिखब-सं. पु. [स. ऋषभः] १ इन्द्र। (नां. डि. को.)

२ सूर्य। ३ अग्नि।

रू. भे.—रिखव।

४ देखो 'रिसभ' (रू. भे.)

उ०—कूरम मछ रिखब कपिल, खोधी अम्रत खाड। भगतवछल तै भांजिया, हरणाकुस रा हाड। —पी. ग्रं.

रिखबदेव—देखो 'रिसभदेव' (रू. भे.)

उ०—प्रीतम आसी पांवणौ, उग्यासी आथांण। सुपनौ आयौ हे सखी, रिखवदेव री आंण। —पनां

रिखभ—देखो 'रिसभ' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ नाभि सुत नमौ रिखभ नरेस, वरीयांम वाघ नरसिंघ वेस। वाह हो वाह वांमण वडाळ, दुज रांम नमौ दीनां दयाळ। —पी. ग्रं.

उ०—२ धवला नै माता घणा, वले छोटी सिंगड़ियां जांण रै लाल। दोनूं वरावर दीसता, तूं एहवा रिखभ आंण रे।

—जयवांणी

उ०—३ पांचमों रिखब नांम, पूरै सब इच्छा कांम। कांम धेनु कांम कुंभ कीने सब मादि मादि। —वि. कु.

उ० –४ खड़ग रिखभ गंधार, मद्दि पंचहम निखादह। सरिस कठ सुर-सपत, गीत संगीत अलापह। —गु. रू. बं.

रिखभजिन—देखो 'रिसभजिन' (रू. भे. (स. कु.)

रिखभदेव—देखो 'रिसभदेव' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—१ पुत्र अगनिध्वज, पुत्र नाभिराजा, मोरादे भारया पुत्र रिखभदेव। द्रिखभदेव भारया–२, सुनंदा १, सुमंगळा २।
—रा. वंशावली

उ०—२ सुरासुर सरव करै जसु सेव, दियै सुख वंछित रिखभदेव।
—ध. व. ग्रं.

रिखभधुज–सं. पु. [सं. ऋषभध्वज] शिव, महादेव।

रिखभांनन–सं. पु. [सं. ऋषभान्न] सातवें विरहमान का नाम।

रिखमंडळ–सं. पु. [स. ऋक्ष=मण्डल] १ नक्षत्र मण्डल, तारा मण्डल, आकाश, नभ।

२ तारे, नक्षत्र।

रू. भे.—रखमंडळ।

३ देखो 'रिखमंडळी' (रू. भे.)

रिखमंटळी–सं. पु. [सं. +ऋषि-मण्डली] १ ऋषि-समूह, मुनि महात्माओं की मण्डली।

२ हंस। (अ. मा.)

रू. भे.—रिखमंडळ।

रिखमातंग–सं पु —मातंग ऋषि।

रिखमूक—देखो 'रिस्यमूक' (रू. भे.)

उ०—रघुराजा! रे रघुराजा! रिखमूक गिडंद दराजा। —र. रू.

रिखयंद–सं. पु. [सं. ऋषि-इन्द्र] ऋषिश्वर, मुनिश्वर।

रिखय—देखो 'रिसि' (रू. भे.)

उ०—रिखय भख कर रखवाळ, तारी रिख धरणी चरण रज हूंता। —र. ज. प्र.

रिखया–सं. पु. [सं. ऋषि] वांभी जाति के वे लोग जो रामदेवजी की अविक भक्ति रखते हैं। (मा. म.)

रिखरांण, रिखराज—देखो 'रिसिराज' (रू. भे.)

उ०—१ तहक नीसांण गिरवांण हरखांन तन, चितां सरसांण रंभगांण चाळै। निडर रिखरांण गणपांण वीणा नचै, भांण रथतांण धमसांण भाळै। —र. रू.

उ०—२ नमो नमो सिध साध, नमो रिखराज मुनिवर। नमो नमो पित मात, नमो त्रव देव पुरंदर। —ऊदोजी नैण

रिखराजि–सं. स्त्री. [सं. ऋक्ष-राजि] तारों की पक्ति।

रिखराय – देखो 'रिसिराज' (रू. भे.)

उ०—यों वरखा रितु ऊतरी, आवी सरद सुभाय। पित्रेसुर कीजै प्रसन, पोखीजै रिखराय। —रा. रू.

रिखव—१ देखो 'रिखव' (रू. भे.)

२ देखो 'रिसभ' (रू. भे.)

रिखवर—देखो 'रिसिवर' (रू. भे.)

उ०—दधि पियण रिखवर जांणि अण डर, समर जाळण तिकर संकर। चूर त्रिण तर पसर वनचर, कना मेटण तिमर रवि कर।
—रा. रू.

रिखवरणी—देखो 'रिसिवरणी' (रू. भे.)

उ०—पै रज रिखवरणी गतिपाई, पळ तरणी भीवर तिरवाई। भण सीता रघुवर रघुवर सीता, सीता रघुवर भण भाई।
—र. ज. प्र.

रिखव्रत—देखो 'रिसिव्रत' (रू. भे.)

उ०—इम करतां रंभ कोड इलाजा। रिखव्रत चित डिगयो नहराजा। —सू. प्र.

रिखसपत—देखो 'सप्तरिसि' (रू. भे.)

उ०—सपत चिरंजी रिखसपत, सो भी सचीयारा।
—केसोदास गाडण

रिखसर—देखो 'रिसीस्वर' (रू. भे.)

उ०—आस्रम चौथे आय, राज तजता राजेसर, बेटा नै जुवराज देर, हो जाता रिखसर। —अरजुन जी बारहठ

रिखसात—देखो 'सप्तरिसि' (रू. भे.)

उ०—सपत दीप रिखसात, सातइ समंदु। नवइ नीय ही हाथ जोड़ै नरिंदु। —पी. ग्रं.

रिखस्त–सं. पु. [सं. ऋषि-अस्थि] वज्र। (नां. मा.)

रिखहेसरु—देखो 'रिसिस्वर' (रू. भे)

उ०—सैत्रुंजै नायक वीनति सांभलो, स्री रिखहेसरु स्वांम। दीन दयाल तुम्हाने दाखिवुं, अंतर वीतग आंम। —ध. व. ग्र.

रिखि—देखो 'रिसि' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ तरै हारीत रिखि महादेवजी रो ध्यांन कीयो, उग्र स्तुत करी, तिण थी पहाड़ प्रथ्वी फाड़ नै ज्योतिरलिंग स्री एक लिंगजी प्रगट हुवा। —नैणसी

उ०—२ त्रिजड़ आवाह 'किसनेस' हर 'विसन' तण, रिखि हड़हड़ हसै समर रीधी। —दलपत सांदू

उ०—३ वग रिखी राजांन सु पावसि वैठा। सुर सूता थिउ मोर सर। चातक रटै वलाहिक चंचळ, हरि सिणगारै अंवहर। —वेलि

२ देखो 'रिख' (रू. भे.)

उ०—उच लगन लखि रिखि उरधि, त्रव कूंण प्राचिय सुरधि। रचि कनक वेह सुरंग, श्रीपति नव खण श्रंग। —रा. रू.

रिखियौ–स. पु.—रामदेव जी का भक्त "रिखिया" चमार जाति का व्यक्ति।

रिखिराज, रिखिराय—देखो 'रिसिराज' (रू. भे.)

उ०—१ बोधि लता कापी पापी में तेड़ाव्यौ रिखिराज जी। —श्रीपाल रास

उ० २ सांभल चित्त अति हरखित हुवौ रे, रथ पर बैसी आय। मुनि वांदि ने वांणी सांभले रे, उपदेस दे रिखिराय। —जयवांणी

रिखी—देखो 'रिसि' (रू. भे.)

उ०—१ कोटन रिखी सील के कारन, परम मुक्ति जिन पाई। ऊमरदांन अब सील अराधत, पर हर नार पराई। —ऊ. का.

उ०—२ रज पाय परस जिम नार रिखी, तज देह सिला छिन मांह तरी। —र. ज. प्र.

रिखीग्रस्त—देखो 'रिसिग्रस्त' (रू. भे.)

रिखीकेस, रिखीकेसू—देखो 'रिसीकेस' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ समवाद रिखीकेस पाधरौ संभारियौ क, सिवा देण गाथ रौ उचारियौ सरस्स। बीछड़ेवौ साथ रौ प्रमाद भू विचारियौ, दूजा गोपीनाथ रौ जुहारियौ दरस्स। —साहिबौ सुरतांणियौ

उ०—२ वेद में विधाता हरी सत रौ चंदेम वाच, माधवांन छोळ श्रोप रिखीकेस नांम। —भगतरांम हाडा रौ गीत

रिखीपंचमी, रिखीपांचम—देखो 'रिसिपांचम' (रू. भे.)

रिखीमूक—देखो 'रिस्यमूक' (रू. भे.)

उ०—रिखीमूक कर नवरता, पूज सगत जगपाळ। सदळ कूच करवा समें, बाजै तहक त्रमाळ। —र. रू.

रिखीराज, रिखीराय – देखो 'रिसिराज' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ सूरां पूर भाटां माची भ्रकूटां उठावै संभू सांची तान लावै रंभा रचावै संगीत। रिखीराज वावै वीण प्रवीण हरक्खां रतौ गावै मुखा चौसठी अंगूठां रुखां गीत। —बद्रीदास खिड़ियौ

उ०—२ मास खमण नइ पारणइ, पडिलाभ्यउ रिखीराय। सालिभद्र सुख भोगवइ, दांन तणइ सुपसाय। —स. कु.

रिखीस, रिखीसर, रिखीसुर, रिखीस्वर—देखो 'रिसीस्वर' (रू. भे.)

उ०—१ देवीघोस रिखीस ईस अजयं ते सेव पारायण। पायं कंज 'किसन्न' रक्खि सरणं आणंद कारायणं। —र. ज. प्र.

उ०—२ एकट पग ऊभउ रह्यउ रिखी रूड़उ रे, सूरजि सांमी द्रस्टि रिखीसर रूड़उ रे। —स. कु.

उ०—३ बापा री रिखीस्वर बांह भाली हाथ दस बापा री डील वधियौ। —नैणसी

उ०—४ मारग विखै भेळा होय न सक्या नगर मांहि पैठा तव दून्यौ भाई एकठा होय पैठा। सजन दुरजन नर नारी नाग रिखीस्वर राजा समस्त देखै लागा। —वेलि टी.

रिखू—देखो 'रिसि' (रू. भे.)

उ०—चार निगमूं की उक्त सपतादि रिखूं के गण रिख पतनियां। —र. रू.

रिखेंद्र—देखो 'रिसींद्र' (रू. भे.)

उ०—रिखें तेड़े सुसरी दसरथ। —रां. रा.

रिखेस, रिखेसर. रिखेसुर, रिखेस्वर—देखो 'रिसीस्वर' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ रटै नृपेस हो रिखेस, आप एह उच्चरी। पयंस रांम नीर पेखि पेखि, मीन ज्यां परी। —सू. प्र.

उ० -२ सहस अठ्यासी रिखेसर, अणवर ब्रह्मा ईस। मिळिया मेळ सांभिरै, सुर कोड़ै त्रेतीस। —पी. ग्रं

उ०—३ आए सु गुलम रिखेसुर अखि। —रां. रा.

उ०—४ भयंकर रूप भुजां जुध भार। हणों खळ भूप भणों बळिहार। खणाक्खण खेटक भेटत खाग 'रिखेस्वर' वीण भणझ्भण राग। —मे. म.

रिख्ख—१ देखो 'रिसि' (रू. भे.)

उ०—वडा सिध रिख्ख भणै जसवास। वांछै तौ श्रोवण सेवा खास। —मा. वचनिका

२ देखो 'रिख' (रू. भे.)

रिख्या —देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—१ आसण गूढ करूं पण आसुर, ज्याग विधुंसे जावै। रिख्या वाट करै जो राघव, थाट संपूरण थावैं। —र. रू.

उ०—२ पछै देवी ऊपर लाघण पांच दस किया। देवी प्रसन हुई, कह्यौ—तूठी, मांग। तरै कह्यौ—गढ़ करण दीजै गढ़ री राज रिख्या करो। —नैणसी

रिख्यावंत–वि. [स. रक्षा+वत्] रक्षा करने वाला।

उ०—महादेवजी तो रिख्यावंत त्युं खपति पिण सूपी। पाछला जीव वधता देखै तरै आगला जीव खपाय देवै। —रा. वंसावळी

रिग—देखो 'रिगवेद' (रू. भे.)

रिगटोळ–सं. स्त्री.—हंसी, मजाक।

उ०—रमता कर रिगटोळ, खूंदता मारग हालै। खळां रूंसिया खोद, धाव खाई दे घालै। —दसदेव

रिगणौ, रिगवौ–क्रि. अ.—ललचाना, भौंकना।

उ०—घेर सबळ गजराज, केहर पल गजकां करै। सो सठ कर कम-

काज, रिगता ही रह राजिया । —किरपारांम

रिगतणो, रिगतबो—रू. भे.

रिगतणो, रिगतबो—देखो 'रिगणो, रिगवो' (रू. भे.)

रिगतभिच्छा-सं. स्त्री.—मामूली वस्तुओं के लिए-बार बार भीख मांगने की क्रिया या भाव ।

रिगता—देखो 'रिक्ता' (रू. भे.)

रिगतियोड़ो-भू. का. कृ.—लालायित हुवा हुआ, भीका हुआ ।
(स्त्री. रिगतियोड़ी)

रिगतियो, रिगतो-सं. पु.—देखो 'रगत्यो' (रू. भे.)

रिगदोळणो, रिगदोळबो—देखो 'रगदोळणो, रगदोळबो' (रू. भे.)

रिगदोळियोड़ो—देखो 'रगदोळियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री-रिगदोळियोड़ी)

रिगरिगाड़-सं. स्त्री.—हिचकिचाहट, झिझक ।

रिगल-सं. स्त्री—हंसी, दिल्लगी, मजाक, ठठा ।
उ०—तुरंत विगाड़े ताह, परगुन स्वाद स्वरूप ने । मित्राई पय माह, रिगल खटाई राजिया । —किरपारांम

रिगवेद-स. पु. [सं. ऋग्वेद] चार वेदों में से एक, ऋग्वेद ।
रू. भे.—रग, रगवेद, रगवेद, रिग, रुग, रुघवेद, रुघव्व ।

रिगवेदी-वि. [सं. ऋग्वेदिन्] ऋग्वेद का जानने वाला, ऋग्वेद का ज्ञाता ।
रू. भे.—रघुवेदी ।

रिगसणो, रिगसबो-क्रि. सं. [सं. रिंख] १ शरीर या शरीर के अंग को घसीटते हुऐ धीरे धीरे चलना, खिसकना, सरकना, रेंगना ।
उ०—१ कितराहेकां का तिग टूट गया छै । तिकै रिगसता थका लफ लफ कोट रै जाय जाय कटारी लगावै छै ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—२ दिन ५ ऽ ६ गुदरीया ताहरां एक दिन दोपहर री वरियां खीमो रिगसतो रिगसतो आयो । —चौबोली
२ चलायमान होना, गतिमान होना ।
उ०—घट में गंगा गोमती, ता विच किया सिनांन । जन हरीया मन रिगसीया, ऊंचा घर असमांन । —अनुभववांणी
३ खिचना, तनना, तनाव खाना ।
उ०—और गांठ खुल जात है, जंह लग पूरो हाथ । प्रीत गांठ नैणां घुळी, रिगस रिगस अड़ जाय । —अग्यात
४ घूमना, टहलना ।
रिगसणहार, हारो (हारी), रिगसणियो—वि०
रिगसिओड़ो रिगसियोड़ो, रिगस्योड़ो—भू० का० कृ० ।
रिगसीजणो, रिगसीजबो—कर्म वा० ।

रिगसियोड़ो-भू. का. कृ.—१ शरीर को घसीटते हुए चला हुआ, सरका हुआ, खिसका, हुआ, रेंगा हुआ. २ चलायमान हुवा हुआ, गतिमान हुवा हुआ. ३ खिचा हुआ, तना हुआ. ४ घूमा हुआ, टहला हुआ ।
(स्त्री रिगसियोड़ी)

रिड़-सं. पु.—१ भेंस के बोलने का शब्द ।
उ०—भेंस्यां रिड़कै रिड़ गायां रंभावै । प्रांणी तिरखातुर पांणी कुण पावै । —ऊ. का.
२ कंकरीली भूमि ।
३ समूह, भीड़ ।
४ युद्ध, टंटा ।

रिड़क-स. स्त्री.—भेंस के बोलने की आवाज ।
रू. भे.—रड़क ।

रिड़कणो, रिड़कबो-क्रि. स.—१ भेंस का बोलना ।
उ०—भेंस्यां रिड़कै रिड़ गायां रंभावै । प्रांणी तिरखातुर पांणी कुण पावै । —ऊ. का.
२ लुढकना, घुड़कना ।
रड़कणो, रड़कबो—रू. भे.

रिड़कली-सं. स्त्री.—छोटी पहाड़ी ।
मह.,—रिड़कलो ।

रिड़कलो—देखो 'रिड़कली' (मह., रू. भे.)

रिड़णो, रिड़बो-क्रि. स.—१ नगाड़े या ढोल का बजाना ।
२ युद्ध करना ।

रिड़मल-सं. पु. [सं. रण-मल्ल] १ योद्धा, वीर ।
२ जोधपुर के संस्थापक राव जोधाजी के पिता का नाम ।
उ०—रिड़मल ने मरुधर थळवट रो, राज दियो वगसाय ।
—राघवदास भाटी
३ राव रिड़मल राठौड़ के वंशजों की एक शाखा या उस शाखा का व्यक्ति ।
रू. भे.—रड़मल, रड़माल, रिड़मल्ल, रिड़माल ।

रिड़मलवट-सं. स्त्री.—शूरता, बहादुरी ।

रिड़मलोत-सं. पु.—राठोड़ राजपूतों की एक उपशाखा व इस उपशाखा का व्यक्ति ।

रिड़मल्ल, रिड़माल—देखो 'रिड़मल' (रू. भे.)
उ०—१ है गै रथ पायक हैसल्लां, मिळिया दळ जोधां रिड़मल्लां । महि मेड़तै संभाळै मारू, सभि खड़िया दिल्ली पुर सारू ।—रा. रू.

उ०—२ 'बखत' सुत ग्राऊवै झाट खग वजाई, काट घणा दळां रजवाट केवै। मुरधरा ढाल मम विरंग रंग मिटायौ, सुरंग रंग कियौ रिड़माल 'सेवै'। —ठाकुर सिवनाथसिंघ कूंपावत री गीत

रिड़ारिड़-सं. स्त्री. [ग्रनु.] एक ध्वनि विशेष।

क्रि. वि.—लगातार, क्रमशः।

रू. भे.—रिड़ोरिड़।

रिड़ी—देखो 'रड़ी' (रू. भे.)

रिड़ोरिड़—देखो 'रिड़ारिड़ (रू. भे.)

रिड़्यौ-क्रि. वि.—ग्रपने ग्राप गिरा हुग्रा।

उ०—वेरो तौ पाड़ां, ग्रो देवरिया, नारी-मरद को। नारी होय तौ पड़्या रिड़्या फळ खाय। मरद हुवै तौ तोड़ै फूल गुलाव रौ।
— लो. गी.

रिचा-सं. स्त्री. [सं. ऋचा] १ वेद मंत्र जो पद्य मय हो, वेद स्तोत्र।

२ ऋग्वेद की ऋचा।

३ ऋग्वेद।

४ चमक, कान्ति।

५ प्रशंसा।

रिच्छक—देखो 'रक्षक' (रू. भे.)

उ०—ग्रभ गंजण रिच्छक, सरणागत, संताभव भंजण संसार। सद उपमां जितरी तौ साजै, तितरी ही छाजै करतार। —र. रू.

रिच्छया, रिच्छा, रिच्छ्या—देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—ज्यांरी रिच्छ्या देवता, सेवा पीर प्रवांन। त्यां ग्रणचीती संपजै, मुसकळ में ग्रासांन। —रा. रू.

रिछक—देखो 'रक्षक' (रू. भे.)

रिछपाळ—देखो 'रक्षपाळ' (रू. भे.)

उ०—१ देवियां जोत ऊदोत करि दोवड़ी, लोवड़ीयाळ हूं सीख लीधी। ताकवां रिजक रिछपाळ सागर तणा, कंवरि भुरजाळ हूं सिद्ध कीधी। —मे. म.

उ०—२ भोजन कारण भेघ, जळावै सांभ सवारै। रोज ग्रह रिछपाळ, वाड़ती वा' रै लारै। —दसदेव

रिछपाळौ—देखो 'रक्षपाळ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—वन में तौ चिड़ियां चूंचाई, कव्वा बोल्या कारै। मीरां के प्रभु गिरधर नागर, सब संतन रिछपाळै। — मीरां

रिछया—देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—१ माम ही लगै प्रतिव्यम सार, कांमळा तव ये रिछ्या कवार। धिन एक रखै मुझ नोक धाय, जामी करण जोखम झुमळ खाय। —पा. प्र.

उ०—२ प्रभु को ध्यांन धरै रही, पति की रिछ्या काज। तातै करी निवाज कै, दिव्य देह महराज। —गजउद्धार

रिजक-सं पु. [ग्र. रिज्क] १ ग्राजिविका, रोजी, जीवन वृत्ति।

उ०—१ दादू रोजी रांम है, राजिक रिजक हमार। दादू उस परसाद सों, पोख्या सब परिवार। —दादूवांणी

उ०—२ म्हारै रिजक री सोगन काले री सपनौ देख्यां पछै तौ म्हांमै ग्रर बिरमाजी में कीं लांबौ चोड़ौ फरक निगै नीं ग्रायौ।
—फुलवाड़ी

२ ग्रामदनी, ग्राय।

उ०—१ धारा धर खंची जळधारा, सोवा रिजक विना हुय सारा। ग्रसुरां मुलक मेघ ग्रोछांणा, थया सचींत सहर पुर थांणा।
—रा. रू.

उ०—२ सीखौ दाखौ सास्त्र सहु, ग्रागम ग्यांन ग्रछेह। सांइ रै हाथै सही, मीच रिजक नै मेह। मीच रिजक नै मेह, एह छै वातां ऊंडी, कासुं झूटै कहयां, हाथ परमेसर हुंडी। —ध. व. ग्रं.

३ रोटी, भोजन।

उ०—रजपूतांणी रहै रिजक विन, धरम पतीव्रत धारी रे। विदरांणी परदां में बैठी, किसव कमावै सारी रे। - ऊ. का

४ ग्रन्न, ग्रनाज।

५ सेवा-चाकरी या नौकरी में मिलने वाली जागीर।

उ०—१ तद ठाकर ग्रापरै भायां रजपूतां सूं सला करी। ग्रक कयौ, "जन्म ग्रण तौ देह रौ सवंध छै पण ग्राछै परव पर मरियां नांम रहै"। तद भायां सारांई कयौ जो मोटौ परव है तथा घणा राठौड़ां इणां नूं ईमांन वदळ नै पकड़ाया है। सू ग्रापां इण वदळै मरां तौ इसौ परव मिळै नहीं, तथा ग्रापणै बीकानेर रौ रिजक तौ नहीं है पण जोधपुर रा राजा छै ज्यूंई बीकानेर रा धणी छै। —द. दा.

उ०—२ नमसकार सूरां नरां, विरद नरेस वरम्म। रिजक उजाळै सांम री, पाळै सांम धरम्म। —बां. दा.

६ प्रतिष्ठा।

उ०—रजपूत तौ पलक मुजरै वागतै उमर सारी सोवै। सु ईयै म्हांरै मोहड़ै कनै भला भला कांम कीया छै। ग्रवै कांई कीजै ? इण मांहे (कमी) हुग्री, रिजक घटसी.। – जैतमाल पुगार री वात

७ धन, द्रव्य।

उ०—ताहरां सेतरांमजी केइक दिन ग्रठै रहिनै राजा सूं विदा कीवी छै। राजा वळै दत-दायजौ घणौ रिजक दे ग्रर विदा दीवी।
— नैणसी

८ वढिया किरम का वारूद जो तोप या तोड़ादार वन्दुक के कांन में भरा जाता है।

रू. भे.—रजक, रजग, रजिक रिंजक रिजकि, रिजक्क, रिजग, रिजिक, रुजक।

रिजकणौ, रिजकवौ-क्रि. अ.—प्राप्त होना, वदा होना, लिखा होना ।

उ०—रैयत के जांणसी ? हुं व्याह जोग थोड़ी ही हूं ? हमें व्याह कर परौ 'र क्यूं कींरी ही भव विगाड़ूं ? कवर तौ करमड़ै में रिजक्योड़ो ही कोनी । —दसदोख

रिजकदांणी, रिजकदांनी-सं. स्त्री.—वंदूक या तोप छोड़ने का बारूद रखने की डिबिया ।

रिजकि—देखो 'रिजक' (रू. भे.)

उ०—जीव नव खंड रा रिजकि मागै जुग्रौ । मेह करि गावडै घास मागै । —पी. ग्रं.

रिजक्क, रिजग—देखो 'रिजक' (रू. भे.)

उ०—दिपावत हाथ न लेत उदक्क । रुकां वळ लेत पवित्र रिजक्क । —सू. प्र.

रिजगौ-सं. पु.—सिंचाई से उत्पन्न किया जाने वाला एक पत्तीदार घास जिसे ज्यादातर घोड़ों को खिलाया जाता है ।

रिजमट—देखो 'रेजिमेंट' (रू. भे.)

उ०—सैन रिजमट ग्रसंख पलटणां तणे संग । भड़ तिलंग वग किलंग तणा भिळिया । —कविराजा बांकीदास

रिजरव-वि. [ग्रं. रिजर्व] किसी के लिये ग्रारक्षित, रक्षित, सुरक्षित ।

रिजरवेसन-सं. पु. [ग्रं. रिजर्वेशन] रक्षित या सुरक्षित करने की क्रिया या भाव, ग्रारक्षण ।

उ०—इमी कुटेम में भीमजी रा ऊंठ भाड़ै करवा रौ मतळव सुरक्षा रौ रिजरवेसन करवाणौ है । —रातवासौ

रिजल्ट-सं. पु. [ग्रं. रिजल्ट] १ परिणाम, नतीजा ।

२ परीक्षा-फल ।

रिजवार—देखो 'रिझवार' (रू. भे.)

उ०—१ नेह नीभावण सैण लख, वैण बंध्याह जिणवार । तन ल्याया मन भेट करि, रीझौ तौ रिजवार । —पनां

उ०—२ साथ लीना ग्रै लागणा लोयणां देखि रिजवार ग्रड़वडै छै । —पनां

रिजाळी-स. स्त्री.—वदमाश ग्रौरत, वदचलन ग्रौरत ।

उ०—इव हीं जे वाहिर होयस्यां तौ सै लोक कुचरड़ी करस्यै जे रिजाळी थी सौ किहीं रै साथै परी गई ।

—कुंवरसी सांखळा री वारता

रिजाळौ-वि. (स्त्री. रिजाळी) १ वदमाश, नीच ।

उ०—सौ ग्रागे सूं दस्तूर इसौ ही जे छै के जसौ मांणस हुवै जसी ही सोभत राखै, तिसां सूं ही इकळास प्यांर राखै । कजिये रौ सरदार होसी सौ कजिये रौ मांणस कन्है राखसै । रिजाळा लक्षण होसी सौ रिजाळा भड़वां नूं कन्है राखसी, वधारसी ।

—महाराजा पदमसिंह री वात

२ धूर्त, चालाक ।

रू. भे.—रिजालौ ।

रिजिक—देखो 'रिजक' (रू. भे.)

उ०—परमेसर थारी पहुंच, निमौ निमौ निरवांण । सिहि जीवा नां साहिवा, रिजिक दीयै रहमांण । —पी. ग्र.

रिजु, रिजू—१ देखो 'रज्जु' (रू. भे.)

२ देखो 'रज्जू' (रू. भे.)

उ०—ग्रजस ग्रस्र घस्र घस्र विस्र पीवतौ वहचौ । रिजू दलील पोलकै की जलील जीवतौ रह्यौ । —ऊ. का.

रिज्जणौ, रिज्जवौ—देखो 'रीझणौ, रीझवौ' (रू. भे.)

उ०—घरणि घसक्कइ पडइ देवि राजल विहलघल । रोग्रइ रिजज्इ वेसु रुवु वहु मन्नइ निप्फलु । —राजसेखर सूरि

रिज्जियोड़ौ—देखो 'रीझियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रिज्जियोड़ी)

रिझकवार, रिझवार-वि.—१ रीझने वाला, मुग्ध होने वाला ।

उ०—१ रिझवारां रिझवार, कंवरा रौ सिणगार । तीख चोख रौ राखणहार, रस विलास रौ चाखण हार । —र. हमीर

उ०—२ या तन की मैं वीणा वजाऊं, रग रग वांवूं तार । समझ वूझ मिळ जाय दुलारौ, जद रीझै रिझवार । —मीरां

२ प्रसन्न होने वाला, खुश होने वाला ।

उ०—सूरज हिंदवांण रौ, गाड तोल रौ गिरंदह । रूपक रौ रिझवार ग्रने रूप रौ ग्रनंगह । —सू. प्र.

३ मस्त, मतवाला ।

उ०—१ मारुडो छै रिझवार म्हारी ग्राली हे । जाय सलांम कहै ग्रालीजा ने कुरनस वार हजार । —लो. गी.

उ०—२ रंगरातौ रळियावणौ, हितरस चाखणहार । उठ पदमन हित ग्रावियौ, रसिक भंवर रिझवार । —र. हमीर

४ रसिक ।

५ उदार चित्त, दातार ।

उ०—१ भूपाळ सिंघ घन भूपती, रिझवार कीरत वड रती । ग्रग लियां पौरस ग्रासती, ग्रवधेस जुध ग्रणसंक । —र. ज. प्र.

६ कृपा या ग्रनुग्रह करने वाला ।

उ०—तौ रिझवार जी रिझवार भगवत गावतां रिझवार ।

—भगतमाळ

रू. भे.—रिझवार, रिजवार, रींझवार रीजवार, रीझवार ।

ग्रल्पा.—रिझवारौ ।

रिझवाणौ, रिझवावौ— देखो 'रीझाणौ, रीझावौ' (रू. भे.)

उ०—जीभ दीधी जिकै क्रीत स्रीवर जपौ। होठ मुमुकाय रिझवाय पातक हरा। हाथ दीधा जिकी जोड़ आगळ हरी, उदर परसाद चरणा-अम्रत आचरा। पाय दीवा जिकै 'किसन' पर-दछ, फिर नाच राघव आगै सफळ कर तन नरा। —र. ज. प्र.

रिझवारी-सं. स्त्री.—१ रिझवार होने की अवस्था या भाव।

रिझाणौ, रिझावौ—देखो 'रीझाणौ, रीझावौ' (रू. भे.)

उ०—१ तांहरां वीदू कही धन्य ठकुरांणी नूं जिण कुंवरजी नूं इसा रिझाइया। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ तात को रिझायौ त्योंही आनद आघायौ तूं। —ऊ. का.

रिझाणहार, हारौ (हारी), रिझाणियौ —वि०

रिझायोड़ौ—भू० का० कृ०

रिझाईजणौ, रिझाइजवौ—कर्म वा.

रिझायोड़ौ—देखो 'रीझायोड़ौ' (रू. भे) (स्त्री. रिझायोड़ी)

रिझावणौ, रिझाववौ—देखो 'रीझाणौ, रीझावौ' (रू. भे.)

उ०—१ मात्रा दडक वरणिया, इण विध छंद उदार। 'किसन' रिझावण जस कियौ, रामचंद रिझवार। —र. ज. प्र.

उ०—२ काती, महीनै दीवाळी आवै बेटा, अर उण रै दो दिन पे'लां आवै धन तेरस। सेठ साहूकार उण दिन सगळोई गैणौ गांठौ'र पैसा-टक्का बारै काढै अर दरवाजा बंद कर नै रात रा लिछमी नै रिझावै। —रानवासौ

उ०—३ राज रमणि महाराज रिझावै। अति हित निरख हरख उपजावै। —रा. रू.

रिझावणहार, हारौ (हारी), रिझावणियौ—वि.।

रिझाविओड़ौ, रिझावियोड़ौ, रिझाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

रिझावीजणौ, रिझावीजवौ— कर्म वा.

रिझावियोड़ौ—देखो 'रीझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रिझावियोड़ी)

रिट्ठ—देखो 'रीठ' (रू. भे)

उ०—पन प्रवळ पिसन पिक्खें न पिट्ठ रजबट वटदै रट्ठौर रिट्ठ। —ऊ. का.

रिट्ठनेमि-सं. पु.—जैनियों के बावीसवें अरिहन्त, रिष्ट नेमिनाथ।

रिठ, रिठि—१ देखो 'रीठ' (रू. भे)

उ०—अति घण ऊनमि आवियउ, झाझी रिठि झड़वाड़। वग ही भला त बप्पड़ा, धरणि न मुक्कइ पाइ। —ढो. मा.

रिट्ठा-सं. स्त्री. धूमप्रभा नामक नर्क। (जैन)

रिट्ठ-सं. पु. - कष्ट, दुख।

उ०—मारू, थांकइ देसड़इ एक न भाजइ रिट्ठ। ऊचाळउ क अवरसणउ, कइ फाकउ, कइ तिट्ठ। —ढो. मा.

रिढ़-सं. स्त्री.—भेड़।

रिणंगण, रिणंगणि—देखो 'रणांगण' (रू. भे.)

उ०—१ कुर पंडव कळहिया, उभै कुर-खेत रिणंगण। हुग्रो जांम भारत्थ, खपे अट्ठारह खोहण। —गु. रू. बं.

उ०—२ रुंड मुंड रडवडइ रिणंगणि, लोही तणा प्रवाह। ऊभै हाथि असुर पोकारइ, पाग्वळि पाडइ धाह। —का. दे. प्र.

रिण-सं. पु. [सं. ऋण] १ कर्जा, उधार।

उ०—१ रिण राखियौ घणौ राजानै, मिळसां न करै मूझ मन। कर ऊरण 'कूंभेण' कळेवर, रांण अढारह रायहर। —दुरसौ आढौ

उ०—२ रोग सोक दुख पाप रिण, ऐ मत करो प्रवेस। रहौ अनीत अनीत विण, दाता हंदै देस। —बां. दा.

२ दुर्ग, किला। ३ जल। ४ भूमि। ५ देव ऋषि और पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला यज्ञ।

६ वेदाध्ययन और सन्तानोत्पत्ति नामक कर्त्तव्य।

रू. भे.—रणि, रणी, रिणउ, रिन।

मह.—रणौ।

२ देखो 'रण' (रू भे.) (अ. मा.)

उ०—१ रिणमालीत कहै रिण रुधां, अचड़ तियागी बोल इसौ। जूह विडार किसौ जीवरयां, केहर रुधां साथ किसौ। —द. दा.

उ०—२ रिण नहं भीनी रुधर मूं. मद सूं गोंठ मझार। मूंछ्या मादड़िया मुहें, व्रथा कियौ विस्तार। —बां. दा.

उ०—३ यांनै पकड़ निगर मो आंणौ। रिण गुण पछै संभाळूं गांणौ। —रा. रू.

रिण अठेल-वि.—युद्ध में पीछे न हटने वाला वीर, योद्धा।

रिणउ - १ देखो 'रिण (रू. भे.)

उ०—अवसर देखी अधिकउ ओछउ व्याज लीजइ दीजइ, देस देसना अरथ पूछीइं, जीरण्ण रिणउं खांधे पांजरे करी दीजइ, —व. स.

२ देखो 'रण' (रू. भे)

रिणका-सं. स्त्री.—एक ध्वनि विशेष।

रिणकालौ— देखो 'रणकालौ' (रू. भे.)

उ०—'वालौ' भालौ झलियां, रिणकालौ रावत्त। जुध वाळौ वेली जिहां, 'तेजा' सूजावत्त। —रा. रू.

रिणकाहल–सं. पु.—युद्ध का वाद्य विशेष।

उ०—कीधउ कूच पीयांणइ नवड, आव्यां कटक थांण से सवइ। विहु पहुरे रिणकाहल देई, कटक तोरकइ विलगा जई। —का. दे. प्र.

रिणखंभ–देखो 'रणथंभ' (रू. भे.)

उ०—तूं राजा रिणखंभ धीर दळ थंभ धराधर। नवकोटी सैंधणी, तेरै साखां उज्जागर। —गु. रू. वं.

रिणखेत, रिणखेति, रिणखेत्रि—देखो 'रणक्षेत्र' (रू. भे.)

उ०—१ अठै तौ रिणखेत में सूवणौ पड़सी, अरै भोळा वाड़वी थनै किण भरमायौ है सौ इण घर में लूटण री उमंग कर नै आयौ अठै सूरवीर रौ घर छै मार नांखैला। —वी. म. टी.

उ०—२ ते राजा नरसिंघदास सारीखा। बतीस सहस साहण रिणखेति मेल्हि चाल्यउ। —अ. वचनिका

उ०—३ साद्वळ सीह मलिक जे हूता, प्रांणइ वंदि करचा जीवता। दीठउं इस्यूं अम्हारइ नेत्रि, सादी मलिक पडिउ रिणखेत्रि। —कां. दे. प्र.

रिणखळौ–स. पु.—युद्धस्थळ, युद्धभूमि।

उ०–उपडी वाग अरजण'हरी, सूर धीर सत आगळै। तिण दीह रहै 'डूंगर' तणौ, 'राघव' भाटी रिणखळै। —गु. रू. व.

रिणगजण–सं. पु.—घोड़ा, अश्व। (ना. डि. को.)

रिणगहिलौ—देखो 'रणगहिलउ' (रू. भे.)

उ०—पड़ि ऊपड़ियइ पहिलउ पहिला। गइ गंजण ऊठिय रिणगहिला। —रा. ज. सी.

रिणघोर–सं. पु.—रण नाद, समर-नाद,।

उ०—झड़ ओझड़ वाहइ रिणघोर, जूझइ रांणी जाया जोर। लालचद कहै समझै सूर, दोन्यूं दल वीरारस पूर। —प. च. चौ

रिणछोड़–देखो 'रणछोड़' (रू. भे.)

उ०—पह चढै जाणि दध छिलै पाज रिणछोड़ दरस कजि महाराज। —सू. प्र.

रिणछोड़राय–सं. पु.—१ श्रीकृष्ण। २ ईश्वर।

उ०—पीरदास एम दाखै प्रभु, कूडै काल्है कांकना। रिणछोड़राय हो राघवा, रीझ समापै रांकना। —पी. ग्रं.

रिणजंग–सं. पु.—युद्ध।

उ०—प्रिथग मेक संग्रांम, कियौ महिकर आथांणह। दियौ कीध रिणजंग, दिखण कटकै मेल्हांणह। —गु. रू. वं.

रिणडोहण–वि.—युद्ध का आनद लूटने वाला, योद्धा।

उ०—सीसोदौ 'कल्यांण', रहै रावत निभैमण। हरीदास रट्ठवड, रहै 'कचरौ' रिणडोहण। —गु. रू. वं.

रिणढांण–सं. पु. [सं. रणस्थान] युद्ध स्थल, रण क्षेत्र।

उ०—१ आवटियौ एकोहटा, दे दुरहटा मेल्हांण। सांभर आयौ आपरा, गा सोवे रिणढांण। —गु. रू. वं.

उ०—२ तीन भंडारी नीवड़ै, मुहतौ पड़ै सुजांण। फोजदार वरियांम भड़, 'रांमौ' पड़ रिणढांण। —गु. रू. वं.

रिणततली—देखो 'रळत्तळ' (रू. भे.)

रिणताळ—देखो 'रणताळ' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ विकराळ जोम छकिया वहै, देव मनिख अहि नंह डरै। रिणताळ आळ माटै रवद, काळ चाळ पकड़ै करै। —सू. प्र.

उ०—२ रिणताळ रूक वाजंत रीठ, दांणव वरंगळ पड़त दीठ। घड़ घड़छ किलव घारां घिरौळ, हुई जैत जैत पहिलूं हिंगौळ। —मा. वचनिका

रिणताळौ—देखो 'रणताळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—किम खावौ टाळा 'किसन', ते वडि रिणताळा। हुवै हुक्म तौ साह रा, रहचां रवदाळा। —सू. प्र.

रिणतूटौ–वि.—युद्ध स्थल में मरने वाला।

उ०—रिणतूटा सूरा भला, फाटा भला कपास। भागा भला अबोलणा, लागा चंदणवास। —अग्यात

रिणतूर—देखो 'रणतूर' (रू. भे.)

उ०—कोट विनै मळ वंटे 'कलावत', चौपट कर वींझा चकचूर। अग्राजिया अणखळै ऊपर, तीडाहरै तणा रिणतूर। —द. दा.

रिणथंभ, रिणथंमर, रिणथंभोर—देखो 'रणथंब' (रू. भे.)

उ०—१ औरंग सुछळ वंधव मुंह आगळ, थाटां बिच रिणथंब थयौ। दरियर कहै अचूंभौ देखौ, कमधज आकारीठ कियौ। —सुजांणसिंघ राठौड़ रौ गीत

उ०—२ हुवौ रिणथंभ निम साथ विमुहै हुवै, त्रिदित्र मनव हूवा तिणि तमासै। सांमध्रम दाखि केसव तणौ सींवळी, वरै गौ रंभ सुरलोक वासै। —गिरधरदास केसोदासोत मेड़तिया रौ गीत

उ०—३ आया साह अलावदी, विढ़ कटकां सूं वीर। मांझी रिणथंमर मुओ, हठ निरवाह हमीर। —बां. दा.

उ०—४ रिणथंभोर हमीर रांण चहुवांण सैंभर का। —दुरगादत्त वारहठ

रिणथल—देखो 'रणस्थल' (रू. भे.)

उ०—कटि कमळ खळ, उछळ पड़ि, तड़िछ तड़ लल थहै रिणथल —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

रिणधीर—देखो 'रणधीर' (रू. भे.)

उ०—पुर अवध सुं हुय निज पगां, मुनि वहै आस्रम मारगां। संग

रांम लक्ष्मण कुमर दसरथ, धरम धुज रिणधीर। —र. रू.

रिणवंध-सं. पु.—योद्धा, भट।

उ०—पडे सांमा से पांच, कमध सोलंखी सो खंत। चावडां गुण-ताळीस, रहे रिणवंध रिणवट। —रा. वं. वि.

रिणभिक्षण-सं. पु. [सं. रण+भक्षण] लोहा। (अ. मा.)

रिणभुइ, रिणभूमि, रिणभोम—देखो 'रणभूमि' (रू. भे.)

उ०—१ खग हुए खंडां खंड किरि डंडीहड, रिणभुइ रींहड रत रिडै। वीहारी वडि वडि तूटै घडि घडि, अणियां चडि चडि अब्भ अडै। —गु. रू. वं.

उ०—२ हुवसी दळ हाकियो, मार कमधे कळि-मूळ। गया छाड रिणभूम, जांणि पंखी हुइ ढल्ले। —गु. रू. वं.

उ०—३ स्रोण भील कमकमैं, किये करिमरां चडाए। रचै सेज रिणभोम, कुसम अरि कमळ विछाए। —गु. रू. वं.

रिणमंडप—देखो 'रणमंडप' (रू. भे.) (ना. डि. को.)

रिणमल-सं. स्त्री.—१ देवी. शक्ति।

उ०—जैत कमंध कर जोड़ियां, जीहा एह जपत्त। करनळ रिणमल वाचरी पाळ करो त्रिसकत्त —राव जैतसी

२ राव रणमल्ल के वंशजों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—मारू जोधां रिणमलां भलै सम्रोधां भार। जांण हणू धावण मतै, द्रोण उठावण वार। —रा. रू.

३ देखो 'रणमल्ल' (रू. भे.)

रू. भे.—रिणमल्ल, रिणम्मल।

रिणमलोत-सं. पु.—राठौड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

रिणमल्ल—१ देखो 'रणमल्ल' (रू. भे.)

उ०—सुणि जोध वेण भाखंत संभ, रिणमल्ल मांण आंणियै रंभ। —मा. वचनिका

२ देखो 'रिणमल' (रू. भे.)

रिणमाल-सं. पु.—राठौड़ रिणमल के वंशजों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—ऐ भाटी दळ आगळा, खळ गंजण दळ ढाल। मिराल सवोभा मेळ सूं, यां हूंता रिणमाल। —रा. रू.

रिणम्मल—१ देखो 'रणमल्ल' (रू. भे.)

२ देखो रिणमल (रू. भे.)

उ०—वणि जोध रिणम्मल आठवळा, करगै वळवंत अतंत कळा। जुधवार सिरै उमराव जिता, तनुत्रांण धणी कज पांण तिता। —रा. रू.

रिणयोद्धा-सं. पु. [सं.] योद्धा, वीर।

उ०—खांणो दांणो पूरवै, रावळ रण रंढाल। भारथ में योद्धा भिड़ै, रिणयोद्धा जिम काल। —प. च. चौ.

रिणराव-सं. पु.—महावीर।

उ०—'रासौ' 'कलियांण' तणौ रिणराव। घणा जुध वीच करै खग घाव। —सू. प्र.

रिणरिण-सं. स्त्री.—दुख भरी आवाज, कराहने का शब्द।

उ०—हाथां हूकलिया लटकंता लोटा, रिणरिण रींकंता सुपनें में रोटा। —ऊ. का.

रिणरिढ्ळ, रिणरींधळ, रिणरीधळ-वि.—युद्ध से रीझने वाला, युद्धोन्मत, योद्धा।

उ०—१ आखडै जिकै सदा आवटियळ, रिणरिढ्ळ जीपंति रिणं। सूरातन जिकै सहस वळ सूरा, पह सादूळा पंचाइणं। —गु. रू. वं.

उ०—२ रांणी मम रोइ 'पिथौ' रिणरींधळ, रिण गा छाडि तिकै भड़ रोइ। घण जूझै रिणमाल तणै घरि, हुवै मरण तिम मंगळ होइ। —प्रिथीराज राठौड़ री गीत

उ०—३ 'वीकांहरो' सांभळै विवनो हाथी हियै न वैठो हारि। रिणरीधळ रहियो रिण माहे, मांझी मूवो मांझियां मारि। —आसो सिढायच

रिणवट, रिणवटि, रिणवट्ट—देखो 'रणवट्ट' (रू. भे.)

उ०—१ पडै सांमा से पांच, कमध सोलंखी सो खंत। चावडां गुण-ताळीस, रहे रिणवंध रिणवट। —रा. वं. वि.

उ०—२ साल्हु सोभतु ते समरंगणि, लखण सेभटउ वीजउ। रिणवटि रहिउ अजेसी माल्हण, माहि मूलिगउ त्रीजउ। —कां. दे. प्र.

उ०—३ आसक्रन्न द्रढ मन्न, रतन जेही रिणवट्टां। परगट्टां दाखवै, वारहट्टां कुलवट्टां। —रा रू.

रिणवत, रिणवत्त, रिणवत्ता-सं. स्त्री. [सं. रणं+वार्ता] युद्ध सम्बन्धी वार्त्ता।

उ०—रिणवत्तां रत्ता रहै, 'सकता' 'वीर' सुतन्न। जोड़ै सांम्हा ईस तण, रिण जगदीस प्रसन्न। —रा. रू.

रिणवाउलो—देखो 'रणगहिलउ'

उ०—एक तणा वांधव भरतार, एक तणा फूटरा कुमार। जे जे हता रिणवाउला, एक तणा मारचा माउला। —कां. दे. प्र.

रिणवाट—देखो 'रणवट्ट' (रू. भे.)

उ०—पोऐ तिरसूळ पछांटै प्रांण, घूंमाड़ै रौदां दोमझ घांण। दुवाहा जोध जुटै रिणवाट, घड़छै धाड़ मचे धर घाट। —मा. वचनिका

रिणवास—देखो 'रणावस' (रू. भे.)

उ०—तुम कारण दूत रमिरां, सूना सांभर का रिणवास। सूना चउरा चउखंडी, सूना मंदिर मढक विलास। —वी. दे.

रिणसाल—सं. पु. [सं. रणशल्य] १ योद्धा, वीर। २ युद्ध, झगड़ा (अ. मा.)

रिणसींग—देखो 'रणसींगौ' (रू. भे.)

उ०—न क्यों कांन छेदियै, न क्यों गळि-ताग लगायै। न क्यों नाद नीसांण, न क्यों रिणसींग वजायै। —सूरजनदास पूनियौ

रिणसेझ—स. स्त्री.—युद्धभूमि।

उ०—तरै आपरी कुळदेवता सांभरादेवी आराधी। तरै देवी आई तरै अरज कीधी—महाराज तौ रिणसेझ पोढ्या छै, राज मोटा छौ, वस री सरम राजनै छै, पाछै पुत्र नहीं, वंसनै राज मिल्यां ही गयौ। —रा. वंसावली

रिणसोर—सं. पु.—युद्ध का कोलाहल, युद्ध का शोरगुल।

उ०—आतस घोर मिळियौ अधार। रिणसोर जोर हुय रौद्रकार। —गु. रू. व'

रिणसोहौ—वि.—युद्ध का इच्छुक।

उ० - रिणसोहा रिणसूरमा वीको सोम वखांणि। नायक पायक भड़ निवड़ अरि भजण आराणि। — हा. झा.

रिणाई—वि. [सं. ऋण+रा. प्र. आई] १ ऋणदाता, कर्ज देने वाला।

उ०—दिन जेही रिणी रिणाई दरसणि, क्रमि क्रमि लागा संकुडिणी। नीठि छुडै आकास पोस निसि, प्रौढा करसणि पंगुरिणि। —वेलि

२ देखो 'रणोई' (रू. भे.)

रिणायर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—पातिसाह राघव, आय ऊभा तटि साइर। करउ मंत्र चेतन्न, कटक लंघीइ रिणायर। —प. च. चौ.

रिणि – १ देखो रिणी' (रू. भे.)

२ देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—१ वडै कांमि दळ थभ "गजसाह" दळ तोड़ वदै, छात्रपति कमध ऐ वौल छाजै। रूकि पतिसाह दळ राजते राखियौ, भिडै पतसाह रिणि तिहिज भांजै। —खेतसी लाळस

उ०—२ समझण जोग घणा रिणि साझण दछि जिगि जिम रिमां घट देस। वरद दियण लियण जस वाचा, भड़ 'सेवौ' राजै भूतेस। —नाथौ बारहठ

रिणिखेत, रिणिखेत्रि—देखो 'रणक्षेत्र' (रू. भे.)

उ०—१ वाथ वाथां पड़ै वांण वांणा वणण, मिलिक मिलिकां मिळै असरां मरण। वाजिया भला रिणखेत मां वीरवर, गाजिया रांमचंद किलंग करता गमर। —पी. ग्रं.

उ०—२ अलूखांन एकलउ नाठउ, जे हूंतउ सपरांणउ। सादी मलिक ऊंत्ररउ मोटउ, ते रिणखेत्रि मरांणउ। —कां. दे. प्र.

रिणिताळ, रिणिताळी—देखो 'रणताल' (रू. भे.)

उ०—त्रिगुण किलग रिणिताळ त्रिन्हैइ भिड़िसै अतळी बळ। तरुआरै त्रिगड़ां विलै त्रिढिसै नर विमळ। —पी. ग्रं.

रिणिरित—देखो 'रिणीरितु' (रू. भे.)

रिणिवट—देखो 'रणवट्ट' (रू. भे.)

उ०—खग झपट वे थपट छट खळ खट, विकट अविग्रट विढै रिणिवट। —ल. पिं.

रिणी—वि. [सं. ऋणी] १ जिसने कर्ज लिया हो, कर्जदार।

उ०—दिन जेही रिणी रिणाई दरसणि, क्रमि क्रमि लागा सकुडिणि। नीठि छडै आकास पोस निसि, प्रौढ़ा करसणि पंगुरिणि। —वेलि

२ जिस पर कोई अहमान हो, अहसान मंद।

३ उपकार मानने वाला, कृतज्ञ।

रू. भे.—रणि, रणियु, रणी, रिणि।

४ देखो 'रण' (रू. भे)

रिणीरित, रिणीरितु—सं. स्त्री.—ग्रीष्म ऋतु, जब गर्मी अधिक होती है और जंगल में घास का पूरा अभाव होता है।

रू. भे.—रिणरित।

रिणोइ, रिणोई, रिणोही—१ देखो 'रणोई' (रू. भे.)

उ०—१ तिण समीयै कंइक जोगेसर अकल पथ हींगुळा जंफरस आवै था। तिकै रिणोइ देखि वाता करै छै, भाई भाई, रजपूतांणियां धवड़ी रै खरणै रा लोहां वाय पौढिया छै, औ सुर भीवा रै कांनै आयो। —जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

उ० —वींभरै तरै केई मीर वजरै विकर. तणछ खग फरहरै वीर ताळी। कहर घर रिणोही वीर हाका करै, अजेही भीमड़ा तीर वाळी। —कुंभकरण सांदू

२ देखो 'रिणाई' (रू. भे.)

रिणौ – १ देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—परगना मांहे इतरा रिणै लूण खारी हुवै। —नैणसी

२ देखो 'रिण' (रू. भे.)

उ०—रोगियौ आप माथै रिणौ, रोज दुख सुख नहीं रती। मोहनी देखि घरमसी महा, जांणै तोइ न हुजें जती। —ध. व. ग्रं.

रित—१ देखो 'रितु' (रू. भे)

उ०—१ सांवण आयौ साहिवा, मोर हुआ महमंत। इण रित पीयर मोकळै, कठण हियारौ कंत। —अग्यात

उ०—२ दस मास समापित गरभ दीध रित । मन व्याकुळ मधुकर मुणणंति । कठिण वेयणि कोकिल मिसि कूजति, वनसपती प्रसवती वसंति । —वेलि

उ०—३ रित वसंत ग्रीखम तूं ही, वरखा रित आई । सरद हेम ससि तूं सकळ, खट रित महमाई । —गज उद्धार

२ देखो 'रति' (रू. भे.)

उ०—ढोलो रूप अनंग में, मारू रित अवतार । मिळीया वेहुं रंग-महल, कुंमरी राजकुमार । —ढो. मा.

३ रति ?

उ०—वजि अदंग चंग रंग उपंग वारंग । अनंग छवि चंग उमंग अंग अग । नूतंग रित अंग अंग करंग नादंग । रस तरंग वह तरंग रंग रंग । —सू. प्र.

रितपरण—देखो 'रितुपरण' (रू. भे.)

रितपति, रितपती—देखो 'रितुपति' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

रितपरस—देखो 'रितुपरस' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

रितमांन-सं. पु.—कामदेव । (अ. मा.)

रितरमण—देखो 'रितुरमण' (रू. भे.)

उ०—आवंत्त घोर अंधार मैं, सोर घोर माचै सघण । घोम-रिख जांणि धूंहर रचै, जोजण-गंधा रितरमण । —गु. रू. वं.

रितराज, रितराव—देखो 'रितुराज' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—सिध मुनिराव सेव इम साधै । इम रितराज समै आराधै । —सू. प्र.

रितवज—देखो 'रित्विज' (रू. भे.)

रितवसंत-सं. स्त्री.—वसंत ऋतु ।

उ०—रित वसंत सोभंत अंब तर मंजर ओपै । —रा. रू.

रितवियो-वि.—निर्बल, अशक्त, कमजोर ।

रितवीर-सं. पु. [सं. रिक्त-वीर] तरकस । (अ. मा.)

रितसांई-सं. पु. [सं. ऋतु-स्वामी] श्वांन, कूकर । (ह. नां. मा.)

रितहेमंत-सं. स्त्री.—हेमंत ऋतु ।

रितावणो, रितावबो-क्रि. स.—खाली करना, रिक्त करना ।

उ०—उवस वासै वस्या उजाड़ै, सहर करै दोय घरियो । रीता छालै छल्या रितावै, समंद करै छीलरियो । —जांभो

रिति—१ देखो 'रितु' (रू. भे.)

उ०—१ माह मास व्रतमांन, अरक वैठो उतराइणि । सुकळ पख्य रिति सिसिरि, महा सुभ जोग मिरोमणि । —ल. पिं.

उ०—२ सैसव जु वाळकपणो सोई तो ससिर रिति हुई । सीत रिति सु तौ वतीत हो गयो । —वेलि टी.

२ देखो 'रीति' (रू. भे.)

उ०—आवउ हो इस रिति हित सइं यदु कुल चंद । दयउ मोहि परम आनंद । —वि. कु.

३ देखो 'रति' (रू. भे.)

उ०—निस वसियौ सुख ग्रेह निज, वाधै रमणि विलास । अरज करै मुख ओरतां, हित रिति गरम हुलास । —रा. रू.

रितिपालटि-सं. पु.—ऋतु परिवर्तन ।

उ०—सूरज कळसि बैठो सु कुंभि आयो । रितिपालटि होण लागी । —वेलि. टी.

रितिफळ, रितिफल-सं. पु. [सं. ऋतु+फलम्] ऋतु के अनुसार होने वाला फल ।

उ० - रितिफल जे जे हुयडां, ते नेवेद्यां सार । मरकलीइ माधव करइ, मधुकर-परि आहार । —मा. कां. प्र.

रितिराइ, रितिराउ, रितिराज—देखो 'रितुराज' (रू. भे.)

उ०—१ रितिराइ कहतां वसंत तें कै पसाइ करि जन मनुस्य आगि सों सपरस करता था सु तें दुखतें रहता हुआ । —वेलि टी.

उ०—२ हिवइ रितिराउ कहतां वसंत रिति सरूपियौ जोवन सु आपणा नाना प्रकार गुण गति मति सहित यौं परिगह ले आयौ । —वेलि टी.

उ०—३ तठा उपरांति राजांन सिलांमति रितिराज वसंत वैसाख मास रा मंगळाचार विमाहरा सुख विलास करतां सरद रित आई छै । —रा. सा. सं.

रिती—देखो 'रीति' (रू. भे.)

रितु-सं. स्त्री. [सं. ऋतु] १ ऋतु, मौसम ।

उ०—१ माते गयंद घने गरजै घन की रितु मांनौ घटा घहरांनी । 'बंक' निसांन लगै फहरांन पिसाच रुप्रेत उमंग सी आंनी । —वां. दा.

उ०—२ गंग यमुना चमर ढालइं, छइ रितु पुस्प पुरइं सरस्वती वीणां वाइं, तुंवर गीत गाइं, रंभा तिलोत्तमा नाचइं, नारद ताल धरइं······ —व. स.

उ०—३ छ रितु मांहि धिन धिन, ए रितु रूडी वसंत । दवदंती नूं जेणी रतिइ ठरीउं तेहनूं चीत । —नळदवदंती रास

उ०—४ छड़ रितु वारै मास गणि आयौ फेर बसंत । सो रितु मूझ वताइ दै, तिय न सुहावै कत । —अग्यात

वि. वि.—प्राकृतिक दशाओं में होने वाले परिवर्त्तनों के अनुसार मौसम की स्थिति भी बदली रहती है । प्रत्येक वर्ष अर्थात् बारह मास में मुख्यतया तीन प्रकार की स्थितियां आती हैं—(१) सर्दी (२) गर्मी तथा (३) वर्षा । भारत-वर्ष में वर्ष भर की मौसम का वर्गीकरण करके इसे छै भागों में विभक्त किया गया है । प्रत्येक भाग की अवधि दो मास की मानी है और प्रत्येक भाग को एक "ऋतु" माना है । इस प्रकार वर्ष में कुल छै ऋतुएं होती है, जिनके नाम इस प्रकार हैं—वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर ।

२ जलवायु, आबोहवा ।

३ अब्द-प्रवर्त्तक-काल ।

४ उपयुक्त या ठीक समय। निर्धारित समय।

उ०—ऊनमि आई वद्ळी, ढोलउ आयउ चित्त। यौ बरसइ रितु आपणी, नइण हमारे नित्त। —ढो. मा.

५ रजोदर्शन।

६ रजोदर्शन के उपरान्त का समय जो गर्भाधान के लिये उपयुक्त काल होता है।

७ प्रकाश, चमक।

८ सत्य या उच्च वृत्ति से किया जाने वाला निर्वाह।

९ छै की संख्या। ✿ (डि को.)

रू. भे.—रति, रित, रिति, रितू, रुत, रुति, रुत्ति, रुत्ती।

रितुकाळ—सं. पु. [सं. ऋतु काळ] १ रजस्वला होने का समय। (स्त्री.)

२ रजो दर्शन के बाद १६ दिनों का समय जब स्त्री गर्भ धारण करने की स्थिति में होती है।

रितुगमन—सं. पु. [सं. ऋतु-गमन] ऋतु काल में किया जाने वाला संभोग या मैथुन।

रितुगांमी—वि. [सं ऋतु-गामिन्] समय या काल के अनुसार स्त्री ससर्ग करने वाला।

उ०—रितुगांमी व्है सील राखियौ, पुत्रोत्पत्ति फळ पाई। पति पतनी दंपति पियै प्यारी, नवला नेह निभाई। —ऊ. का.

रितुचरय्या—सं. स्त्री. [सं. ऋतु-चर्य्या] किसी मौसम के अनुकूल किया जाने वाला आहार-विहार।

रितुदांन—स. पु. [सं. ऋतु दान] १ ऋतुमती स्त्री के साथ सतान की इच्छा से किया जाने वाला संभोग।

२ गर्भाधान की क्रिया।

रितुपति—स. पु. [सं. ऋतु-पति] वसत।

उ० तउ अवतरिउ रितुपति तपति सु मन्मथ पूरि। जिम नारीय निरीक्षिण दक्षिण मेल्हइ सूरि। —जयसेखर सूरि

रू. भे.—रितपति, रितपती।

रितुपरण—सं. पु. [स. ऋतु-पर्ण] इक्ष्वाकु वशीय राजा अयुतायु का पुत्र जो द्यूत क्रीड़ा में अत्यन्त निपुण था। इसने आपाद स्थिति मे नल राजा की सहायता की थी।

रू. भे.—रितपरण।

रितुपरस—सं. पु.[सं. ऋतु-स्पर्श] श्वान, कुत्ता। (अ. मा.)

रू. भे.—रतपरस।

रितुमती—सं. स्त्री. [सं. ऋतु-मती] रजस्वला स्त्री, (मादा पशु भी)

उ०—वीं समै भूंडण रितुमती हुई थी सो भूंडण नै आसा रही। महीना पूरा हुआ जद चील्हर पांच जाया।—डाढाळा सूर री वात

रितुराइ, रितुराउ, रितुराज—सं. पु. [सं. ऋतुराज] वसंत।

उ०—१ भरिया तरु पुहप वहै छूटा भर। कांम वांण ग्रहिया करगि। वळि रितुराइ पसाइ वेसन्नर, जण भुरड़ीतौ रहै जगि। —वेलि

उ०—२ मीठि मनउ अवधि, रितुराउ वसंतनउ प्रणधि, उद्यांन वन मांहि आंणिउ, विलासीए वखांणिउ''' —व. स.

उ०—३ सखी अमीणौ साहिबौ, वांकम सूं भरियोह। रण विकसै रितुराज मैं, ज्यूं तरवर हरियोह। —वां. दा.

रू. भे.—रतराज, रितराज, रितराव, रितिराइ, रितिराउ, रितिराज, रुतिराई।

रितुवंती, रितुवती—सं. स्त्री. [सं. ऋतुमती] रजस्वला।

रितुसनांन, रितुस्नांन—सं. पु. [सं- ऋतु-स्नान] रजस्वला होने के चौथे दिन किया जाने वाला स्नान।

रितू—देखो 'रितु' (रू. भे.)

उ०—हरनाथ 'कांन्ह' सोजत जग कर कांम आया अडतीस (१७३८) वरखा रितू। —रा. रू.

रितेज—सं. पु. [सं. रिक्-तेज] तारा। —अ. मा.

रित्रुपरण—देखो 'रितुपरण' (रू. भे)

उ०—पुत्र तासु रित्रुपरण बुधि प्रकास। सुत जासु रित्रुपरण रै सुदास। —सू. प्र.

रित्विज—सं. पु. [सं. ऋत्विज्] यज्ञ मे पुरोहित के रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति। यज्ञ करने वाला। ये सावारणतया चार होते हैं और बड़े यज्ञ में ऋत्विजों की संख्या १६ होती है।

रू. भे.—रितविज।

रिद—सं. पु. [सं. हृद] १ जलाशय, सरोवर, तालाव।

उ०—रांमांनुज रिद गुपत रखावै, सिड़ियौ नीर वास सरसावै। मांहि सिवाल जाल नहिं मावै, पैमे बिन छांटौ नहिं पावै। —ऊ. का.

२ झील।

३ ध्वनि, आवाज।

४ किरण।

५ देखो 'हिरदौ' (रू. भे)

रिदय—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—१ ब्रह्मा विसन ईसर सुवर, केसव एक त्रय वथ किय। रिदय निलाट अरि नाभिहूं, ब्रह्मा विसन महेस थिय। —रा. वंसावसी

उ०—२ कोइलि कालि माधवउ, मुझनइं मिलइ जांणि। राखी रीस रिदय-महिं, मूढ ! मराविसि वांणि। —मा. कां. प्र.

उ०—३ माई ! मझनइ ऊपनी एक असंभव व्याधि। रिदयइं रसोली विइ थइ, मन नही मोरि साधि। —मा. कां. प्र.

उ०—४ भाद्रवडइ सरोवर भरियां, नीर निरंतर होय। रिदयां-भींतरि हुं रहुं, नीर निवारि न कोइ। —मा. कां. प्र.

उ०—५ तनु तरणा सरखु हवु, त्रूटइ रखे हिंचोलि । वनिता तुझनइं वागस्यइ, रहि रिदया नी खोलि । —मा. कां. प्र.

रिदौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भें.)

उ०—१ तेज कुमेर रिदौ वरण तारी । भुग्रंग तेज उदर वरण भारी । —मा. वचनिका

उ०—२ ऐसें चित रहै चौपरि मैं, हालै दाव सुंवारी । यु राखत हरि नांव रिदों मैं, तौ जुग पारि उतारी । —अनुभववांणी

उ०—३ स्यांम भजै तांम सुखी, दांम भजै ओर दुखी । सीतपती गाव सदा, राख जिको ध्यांन रिदा । —र. ज. प्र

रिद्ध—स. पु. [सं. ऋद्ध] १ विष्णु का एक नामान्तर ।

२ देखो 'रिद्धि' (रू. भे.)

उ०—१ जुवारौ घर रिद्ध कस, माकड़ कंठै हार । गहला माथै वेवडौ, कुसळ वे केती वार । —पंचदंडी री वारता

उ०—२ हुरम कबीला रिद्ध तर, साथै मीर प्रचंड । इण वांसै कर चल्लियौ, ग्रासा खट विखंड । —रा. रू.

उ०—३ नळ राजा नरवर रहै, आछै रिद्ध अपार । भलौ अनोपम भांमिणी, सुख मांणै संसार । —ढो. मा.

उ०—४ दरसांण भद्रराय रिद्ध तणौं, अभिमांन कीधौ आप । इंद्र ने पगै लगावियौ, धरम तणौ परताप । —जयवांणी

उ०—५ ताहरां राजा स्यांम सुंदर दीठौ, "ऐ भल्यां नहीं । विरक्त हुई नै ऊठि चालीयौ, राज-रिद्ध सव छेडि नै चलीयौ ।
—स्यांमसुंदर री वात

रिद्धि—सं स्त्री. [सं. ऋद्धि, प्रा. रिद्धि] १ लक्ष्मी देवी ।

२ पार्वती देवी ।

३ कुबेर की पत्नी जो नल कूबर की माता थी ।

४ गणेश की अनुचरी एक देवी ।

५ वरुण की पत्नी ।

६ एक अलौकिक शक्ति ।

७ धन, द्रव्य, सम्पत्ति, निधि, पूंजी ।

उ०—१ रिद्धि न मांगू सिद्धि न मांगू, मुक्ति न मांगू वडाई । साधु संगत मांगत हूं देवा, क्रपा कर वगसाई ।
—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ एतलो धन तो दीसै नहीं, क्याई थी काढइ छै सही, तेह नै पासे छै कांइ सिद्धि, खरचतां खूटै नइं रिद्धि । —वि.कु.

उ०—३ पुत्र कलत्र घण यौवन रिद्धि, देव लोक नी अनंती सिद्धि । संसार मांहि छइ सहू सलंभ, जिण सासण एक छइ दुरल्लभ ।
—वस्तिग

८ ऐश्वर्य, वैभव । ९ सफलता । १० वृद्धि, बढोतरी ।

११ पूर्णता ।

१२ एक लता विशेष, जिसका कंद ओषध के काम आता है ।

१४ वैद्यक में अष्ट वर्ग के अन्तर्गत एक औषधि ।

१५ आर्या या गाथा छन्द का भेद विशेष जिसमें प्रथम चरण में ६ दीर्घ वर्ण सहित १२ मात्राएं द्वितीय चरण में आठ दीर्घ और दो ह्रस्व सहित १६ मात्राएं तृतीय चरण में ६ दीर्घ वर्ण सहित १२ मात्राएं और चतुर्थ चरण में ७ सात दीर्घ वर्ण एक ह्रस्व सहित १५ मात्राऐं कुल ५७ मात्रा का छंद विशेष ।

रू. भे.—रिद्ध, रिद्धी, रिध, रिधि, रिधी, रिधु, रिधू, रीध, रिध्धि, रुद्धि ।

रिद्धिवंत, रिद्धिवती—धन एवं वैभव का स्वामी ।

उ०—वीर कहै सुण गोयमा, भय नहीं हो पर चक्र नो कोय । तिहां 'सुमुख' गाथापति, ए हुंतो रिद्धिवंतो सोय । —जयवांणी

रू. भे.—रिधवंत ।

रिद्धिसिद्धि—सं स्त्री. [सं. ऋद्धि-सिद्धि] १ गणेश की दो पत्नियां, ऋद्धि एवं सिद्धि । ये धन, समृद्धि और सफलता प्राप्त कराने वाली दो देवियां मानी जाती है ।

२ सभी प्रकार की समृद्धि, वैभव और धन-दौलत की परिपूर्णता की अवस्था ।

३ द्रव्य, समृद्धि ।

रू. भे.—रिधसिध, रिधिसिधि ।

रिद्धी—देखो 'रिद्धि' (रू. भे.)

उ०—१ मेघ कुंवर जिम महिमा कीवी, ग्याता में प्रसिद्धी जी । माता पिता ए आग्या दीधी, महोच्छव कियो अति रिद्धी जी ।
—जयवांणी

उ०—२ ध्यांन साथ सिद्धी जैसे ग्यांन साथ रिद्धी गेह, नीती साथ निद्ध नव सेस रघुराई के । —ऊ. का.

रिद्धौ—देखो 'रिद्धी' (मह., रू. भे.)

उ०—ए संसार असार छइ, छोडउ राज नइ रिद्धौ जी । तप संजय तुम्हें आदरउ, सीघ्र लहउ जिम सिद्धौ जी । —स. कु.

रिध—सं. पु.—१ तरह, भांति, प्रकार ।

उ०—सुजड-हथा "चांडराउ" समोभ्रम विधि वीरातन वैर विधि । रोपै जई पवंगि आसण रिध, रिप तई भजै राज रिधि ।
—गु. रू. वं.

२ घर, मकान ।

३ बड़े भोज में सर्वप्रथम निकाल कर सुरक्षित रखा जाने वाला भोजन का अंश ।

४ देखो 'रिद्धि' (रू. भे.) (नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ दियण वुद्धि रिध सिद्ध, विघन छेदन लंब्रोदर । नारसिंघ

हरामंत, अचळ नह खंडी अम्मर । —गु. रू. वं.

उ०—२ राखै संप जिका धन राखै, वांको दाखै सांच विध । न्याय नीमड़ै जितै नीमड़ै, राज चढै ज्यां तणी रिध । —वां. दा.

उ०—३ भ्रिगु पुरोहित रिध तज नीसरयौ । भूपत रे धन लावण रौ कांम । —जयवांणी

रिधदाता—वि.—दानी ।

उ०—नाकारौ जांणै नहीं, उभौ जा लग आथ । रिधदाता रेसांमेयौ, उणत अनै अनाथ । —रेसमीयै री वात

रिधवत—देखो 'रिद्धिवंत' (रू. भे.)

उ०—भद्दलपुर मांहे वसे जी, 'नग' सेठ रिधवंत । 'सुलसा' तेहने भारिया जी, रूप में घणी सोहंत । —जयवांणी

रिधसार—वि.—धनवान, अमीर ।

रिधसिध—देखो 'रिद्धि सिद्धि' (रू. भे.)

उ०—१ समापण वांभण नां रिधसिध, दमोदर दांन वड़ौ तै दीध । —पी. ग्रं.

उ०—२ सहजां जोग जुगती भी सहजां, सहजां रिधसिध दासी । सहजां गिगन ध्यांन धुनि लागी, सहज मिल्या अभिनासी । —अनुभव वांणी

रिधि—देखो 'रिद्धि' (रू. भे.)

उ०—१ जेणि जई नल राजा ज्याच्यु ते बीजी वार नवि मागि । अनेक्य यग्य करी धन खरचूं तोहि रिधि न भागि । — नळाख्यांन

उ०—२ राजा रिधि छइ आपणइं ईण परि पूरजई मन की आस —वी. दे.

उ०—३ दीपो वाळकिसन्न तण, पण ऊधरै विस्रास । साथ लियां रिधि सांम री, नव ही रिद्ध निवास । —रा. रू.

रिधिसिधि—देखो 'रिद्धिसिद्धि' (रू. भे.)

उ०—रिधिसिधि सब ही दासी, जोड़ै हाथ खड़ी । इनके रंग राचे नहीं कवहूं, आतम जांण जुड़ी । —स्री सुखरांमजी महाराज

रिधी—देखो 'रिद्धि' (रू. भे.)

रिधीसिधी—देखो 'रिद्धि सिद्धि' (रू. भे.)

रिधीसिधीदाता—सं. पु.—१ गणेश, गजानन ।

सं. स्त्री.—२ लक्ष्मी ।

रिधु, रिधू—सं. पु.—१ निश्चय ।

उ०—सहकोय साजत करौ सुभडां विरद भल वरियांम । कुळ जनक कुमरी व्याह करसी, रिधु वरसी रांम । —र. रू.

वि.—अटल, स्थिर ।

उ०—१ सार आचार कुळ भार धरियां सुरिंद, सुतण 'सादूल' जगि दीह साजै । रहौजी एतला थोक क़ाइम रिधू, रिधू 'नौळा' तणौ वचन राजै । —नाथौ सांदू

उ०—२ पूठ दुरगं वडा घातिया प्रवाड़ा, कवेसुर वात जुग च्यार कहसी । रांण चीतौड़ री राज पायौ रिध वडा राठौड़ री आंक वहसी । —दुरगादास राठौड़ री गीत

२ रिद्धि वाला, धनवान, समृद्धिशाली ।

उ०—१रिधू गोत कनवज्ज रहायौ । आप चमू संग दरसण आयौ । प्रसन करै जिण सारंग पांणी, एकण छत्र धरा धर आंणी । —रा. रू.

उ०—२ रिधू लाज पाता भदा काजि रूपा, इकां एक वाधू अनूपे अनूपा । —रा. रू.

३ उत्तम, श्रेष्ठ ।

उ०—'गोयंद' 'भगवांनौ' 'फतौ', ऐ धांधल्ल उदार । रैणायर प्रोहित रिधू, धाळदास सिकदार । —रा. रू.

क्रि. वि.—१ हमेशा, प्रतिदिन, नित्य ।

उ०—जोय दिन बीज वंदै जगत जेण ने, रिधू वदै तनै सुजस रोडै । तितर गुण इवक वाखांणजे ताहरा, जांण जै किसी विध चंद जोड़ै । —र. रू.

२ देखो 'रिद्धि' (रू. भे.)

उ०—अइयौ सगति अनंत, प्रगट किया सारी प्रथी । मुंदराळी मैंमंत रातंखी तूं हीज रिधू । —मा. वचनिका

रिध्धि—देखो 'रिद्धि' (रू. भे.)

रिन—देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—भारी तुज्ज भरोस । रिन मे थित वांधे रहचा । खीची लीनी खोस सारी मो वाली सुरै । —पा. प्र.

२ देखो 'रिण' (रू. भे.)

रिप—देखो 'रिपु' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ सत्थ न को वळ हत्थ के, नां जीपै छळ मत्त । जै पांमै रिप संग्रहे, तप हूंता छत्रपत्त । —रा. रू.

उ०—२ सुजड हथा 'चांडराउ' समोभ्रम, विधि वीरातन वैर विधि । रौपै जई पवगि आसण रिध, रिप तई भंजै राज रिधि । —गु. रू. वं.

रिपइयौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

उ०—गूजर मांग्या पांच रिपइया, वीं पकड़ाया सात । गूजर कै नै राजी करकै, मींडो ल्याया टाळ । —डूंगजी जवारजी री छावणी

रिपनाट—वि.—शत्रु के आगे नहीं झुकने वाला ।

उ०—रिपनाट परमळ हाट रावळ, धरण परधर धाट । पित-पाट-राखण पाटपत, नूप काट हूंत निराट । —नैणसी

रिपपतंग—सं. पु. [पंतग+रिपु] दीपक । (नां. मा.)

रिपबळी—स. पु.—इन्द्र । (ना. डिं. को.)

रिपयौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

रिपव—देखो 'रिपु' (रू. भे.)

रिपियौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

उ०—१ रिपिया हाथ वसू कर परा'र पछै व्याह री वात कैया।
—दसदोख

उ०—२ इतरो कहि रिपिया पांच छड़ीदार नै इनांम रा देय विदा कियौ। —पलक दरियाव री वात

रिपु, रिपुग—स. पु. [सं. रिपुः] १ शत्रु, वैरी, दुश्मन।

उ०—१ करि सारत ग्रस दव्वि ईख नरपत्ति ग्राडंवर। सिर सकर दौड़ियौ, जांण कोपै रिपु सवर। —रा. रू.

उ०—२ सादूळ ग्रमगळ सिह सावज, ग्रीठ केहर मयंद रिपु गज। वांण वाघ लंकाळ वनरज, दोख गम दाढाळ। —गु. रू. बं.

उ०—३ जरा रिपु भेसज के ढिग जाय। महाजन जांमण मरण मिटाय। —ऊ. का.

उ०—४ भूप ग्रनम्मी भाळवा, घण रिपु करण संहार। ऐ कूरम इळ पर उभै, जनम्या डूग जुहार। —डूगजी जवारजी रौ गीत

उ०—५ रिपुग्ग देत्य कस सी, ग्रजेत सुल्लती रहै। विजेत वीर वंस की विनेत घल्लती वहै। —ऊ. का.

२ गुणों की दृष्टि से वह वस्तु जो किसी अन्य वस्तु के प्रभाव या गुणों को नष्ट करने की क्षमता रखती हो।

३ जन्म कुण्डली मे लग्न से छठा स्थान।

रू. भे.—रिप, रिपव।

रिपुता—सं. स्त्री. [सं. रिपु+प्र. ता] १ शत्रु होने की ग्रवस्था या भाव।

२ दुश्मनी, शत्रुता, वैरभाव।

रिपुप्रताप—सं. पु.—शत्रु का प्रताप, प्रभाव, रौब।

वि.—गर्म। (डिं. को.)

रिपू—देखो 'रिपु' (रू. भे.)

उ०—कांम रिपू कूं सील सू मारघा, लोभ कूं मारघा त्याग। क्रोध कूं ग्राय संतोख झपेट्या, मोह कू ले वैराग।
—स्री सुखरांमजी महाराज

रिप्पियौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

रिवकणौ, रिवकबौ—क्रि. स.—इधर उधर ग्रावारा फिरना, घूमना।

रिवकौ—सं पु.—कष्ट, तकलीफ।

रिवणौ, रिववौ—क्रि. ग्र.—१ कष्ट पाना, तकलीफ पाना।

२ व्याकुल होना, त्रस्त होना।

३ तड़फना, छटपटाना।

रिवियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ कष्ट पाया हुग्रा, तकलीफ पाया हुग्रा. २ व्याकुल हुवा हुग्रा, त्रस्त हुवा हुग्रा. ३ तड़फा हुग्रा, छटपटाया हुग्रा।

(स्त्री. रिवियोड़ी)

रिभु, रिभू—सं. पु. [सं. ऋभु] देवता। (ग्र. मा., ह. नां. मा.)

रिभूकी, रिभूखी—स. पु. [स. ऋभुक्षिन] इन्द्र। (ग्र. मा., ह. नां. मा.)

रिमंद, रिम—सं. पु. [सं. ग्ररिम] शत्रु, दुश्मन, वैरी। (ग्र. मा.)

उ०—१ वाथे ऊंचांणा सुमेर पाथै तेरसा ग्रचूक वांण। रांणवाळा राड़ि वेळां वेरसा रमाज। रिमंदा ऊवेड जाड़ा सेरसा गजां रा गौड़, सांमतां समांन राखै येरसा समाज।
—सनमांनसिंघ हाडा रौ गीत

उ०—२ तीर कवांणां तोकि, रिमां ऊपर रीसांणां। ग्रांणां पोस नत्रीठ, पीठ खेटक खग पांणां। —मे. म.

रू. भे.—रिमि।

रिमक झिमक—देखो 'रिमझिमक' (रू. भे.)

उ०—म्हारै रिमकझिमक भाती ग्राज्यो। वीरा, म्हारै कांना ने पत्ता लाज्यो। —लो. गी.

रिमजोळ—देखो 'रिमझोळ' (रू. भे.)

उ०—ग्रो कोई गैणौ थोड़ौ ई है जको थांरा पग में पजावूं। मोती जड़ी रिमजोळां रै रगड़को लाग जावैला। —फुलवाड़ी

रिमझिम—सं. स्त्री. [ग्रनु.] १ छोटी-छोटी बूंदों में धीरे धीरे होने वाली वरसात, वर्षा की हल्की फुहार।

उ०—मन रो भेद लुकाती, नैणां ग्रांसूड़ा ढळकाती। रिमझिम ग्रावै विरखा वीनणी। —चेतमांनखौ

२ पैरों की पायल या नूपुर ग्रादि की ध्वनि।

उ०—रिमझिम रिमझिम विछिया वाजै। ठनक ठनक वाजै पायलड़ी। होळी ग्राई ए। —लो. गी.

३ ध्वनि, शब्द, झनकार।

उ०—१ ग्रासी ग्रो वाईजी। पाल भंवर री जांन कोई, रिमझिम करता ग्रासी करला-घोड़ला, ए मोरी सइयां। —लो. गी.

उ०—२ भळहळ छकड़ाळ पासरां रिमझिम, ग्रळवळता ग्रसवार उभा। दहुं दळि वीचि वाजिया दमांमां, सांमै तौ ऊपरै 'सुभा'।
—सुभराज गौड़ रौ गीत

क्रि. वि.—१ छोटी-छोटी बूंदों में, धीरे-धीरे।

उ०—रेवड़ वाळै रौ ग्रलगोजौ गूंज उठ्यौ। रिमझिम-रिमझिम मेवलो वरसै। ग्रतै में ही ग्रचाण चूको पून री एक लहरौ ग्रायौ ग्रर वादळी उड़गी। —कन्हैयालाल सेठियौ

रू. भे.—रमांझमा, रमझम।

रिमझोळ—स. स्त्री.—१ स्त्रियों के पावों में पहनने की घुंघुरूदार चूड़ी, पायल, नूपुर।

उ०—१ रंग रंग री पोसाकां करि ग्रावै छै। जिके ग्रपछरां का सा

झूल दरसावै छै। घमकतां रिमझोळां गोर कनै आइ। —पनां
उ०—२ आ रिमझोळां री रिम्मां-झिम्मां रणक सुणीजी। इण रणक सूं ऊंचौ कीं नाद नीं। —फुलवाड़ी
२ मस्ती में घूमने की क्रिया या भाव।
उ०—किरड़ा कर रिमझोळ, डोल डाळयां रंग घोळै। ऊंदरियां री ओळ कोळ बिल जड़ा टंटोलै। —दसदेव
रू. भे.—रमजोळ, रमझोळ, रमझोळी, रमिझोळ, रांमझोळ, रिमजोळ।

रिमझिमक-सं. स्त्री.—पायल, नूपुर या घुंघरू आदि की ध्वनि, झनकार, ध्वनि।
रू. भे.—रमझमक, रिमकझिमक, रुमकझुमक।

रिमणी—देखो 'रमणी' (रू. भे.)

रिमयाटचूर-वि.—शत्रुदल का संहारक।
उ०—'राजौ' निराट रिमयाटचूर 'सांवळ' सुतन्न ऊजळौ सूर। अभनमौ भोज अणखूट चाइ। घण कोपि आवूं घड वरण घाइ। —गु. रू. वं.

रिमपथल्ल-वि.—शत्रुदल को गिराने वाला, पराजित करने वाला।
उ०—"देदौ' भिडंत दाठक्क मल्ल। "रांणावत' रुकै रिमपथल्ल। —गु. रू. व.

रिमराह-सं. पु.—शत्रुओं के लिये राहु रूप। शत्रुओं के लिए काल रूप।
उ०—१ पळ खूटा पतिसाह, कर आवध वाहै किलंब। मारहथै मरि मारिऐ, रिण गौदौ रिमराह। —वचनिका
उ०—२ हायळ खळ पटकै केहरी हठमल, रायसाल दूजौ रिमराह। चौड़ै खेत अखाड़ै अणचळ, बांकड़मल ओखळ खगवाह। —ठाकुर नवलसिंघ सेखावत रौ गीत
उ०—३ रिण दूल्हौ रिमराह, इंद थपूं उथपूं। अकह कहंणी करै, अवस पदमिण तूं अपूं। —मा. वचनिका
उ०—४ थह कोट ऊथाप धरा थरसलै, रिम रेसां रेसे रिमराह। रायांपाळ वसै रढ-रांमण, वाघां दहूं विचै वाराह। —राव राययाळ रौ गीत
रू. भे.—रिमांराह, रिमिराह, रिम्मराह।

रिमरेसौ-वि.—शत्रुओं को पराजित करने वाला।
उ०—थह कोट ऊथाप धरा थरसलै, रिमरेसां रेसे रिम-राह। रायां-पाळ वसै रढ-रांमण, वाघां दहूं विचै वाराह। —राव रायपाळ रौ गीत

रिमहर, रिमहरि, रिमहरी-वि.—शत्रु वंशज, शत्रु।
उ०—ऊभटतौ तुरी ऊनागौ असमरि, समहरि भगत सिवा सिव साज रिमहरि रुहिरि मुंड 'रतना' हर, कुळवट करै इसट वट काज। —महाराजा राजसिंघ राठौड़

रिमांराह—देखो 'रिमराह' (रू. भे)
उ०—देवडौ "अंचळ" दोमज दुवाह, 'रावत्त' समोभ्रम रिमांराह। "डूंगरै" मेर" "परवत" "माळ", अरवद्द अढारै-गिरि उजाळ। —गु. रू. वं.

रिमांसाल-वि.—शत्रुओं के लिये शल्य रूप।
उ०—महाजोर 'बाला' अनै 'जैतमालां', घणौ अग्र वागा खगै जंग ढालां। रिमांसाल 'पातां' 'भदा' ढाल 'रूपा' जुड़ै 'ऊहड़' वंकड़ा भार जूपा। —रा. रू.

रिमि—देखो 'रिम' (रू. भे.)
उ०—रिमि रूप रमाया खळ सहि खाया गेम गमाया गुण गाया। धिणीयांणी धाया विलंब न लाया आराधां नां सुणि आया। —पी. ग्रं.

रिमिझिमि—देखो 'रिमझिम' (रू. भे.)
उ०—रिमिझिमि रिमिझिमि भिझिम कंसाल कररि कररि करि घट पट ताल। भरर भरर सिरि भेरिअ साद पाथडीउ आलवीउ नाद। —हीराणंद सूरि

रिमणौ, रिमवौ—देखो 'रमणौ, रमवौ' (रू. भे.)
उ०—दईव दईतां सरिसि घरिणि हेठी दियै, लाछिवर दईत रौ मांस झडपै लिऐ समदरै ऊपरा पांनि वड़रै सूअै, जोरावर दईत सांभळौ रिमियौ जुऐं। —पी. ग्रं.

रिमिराह—देखो 'रिमराह' (रू. भे.)
उ०—साध गरीब सुधारिसै, रिमां तणौ रिमिराह। पिंडतां पाट पधारिसै, पछिम तणौ पतिसाह। —पी. ग्रं.

रिमुकत, रिमुक्त-सं. पु. [सं. ऋमुक्त] ४९ क्षेत्रपालों में से ८ वां क्षेत्रपाल।

रिमेस-सं. पु.—शत्रुओं का अधिपति।
उ०—दळां खूर खंडतै चापड़ै धूजै दसूं देस, पूरै भै रिमेस करै, दरवेस वेस। नूर चिकतेस बवै खीण कै लंकेस नूर, धिवेसूर हिंदरा दिनेस कमंवेस। —दवारकादास दववाड़ियौ

रिम्म—देखो 'रिम' (रू. भे.)
उ०—(महा) मौड मुरधर तणां खलां दल मौडतां, दौड़ पतिसाह सूं करै दावा। रोड़ रमतां थकां 'चौंड' रिम्म चूरतां, ठौड़ ही ठौड़ राठौड़ ठावा। —ध. व. ग्रं.

रिम्मराह—देखो 'रिमराह' (रू. भे.)
उ०—रतनसी चईनउ रिम्मराह। सांकड़इ सत्रां सांमी सनाह। —रा. ज. सी.

रियांण–सं. पु.—१ सगाई ठहरने पर वधू के पिता द्वारा अफीम गलाकर अपने भाई बंधो व संबंधियों को पिलाने की रस्म। (बांभी)
२ अथाई, बैठक।

रियाई—देखो 'रिहाई' (रू. भे.)

रियाबेल–सं. स्त्री.—एक लता विशेष।

उ०—सोनजुह रियाबेल चंबेल चवेली के फुलवाद मोगरै की महक गुलाब फूलूं की सुगध जवाद। —सू. प्र.

रियायत—देखो 'रिग्रायत' (रू. भे.)

रियासत–सं. स्त्री. [ग्र.] १ भारत में ब्रिटिश-शासन के अन्तर्गत देशी राजाओं के राज्य।
२ वह क्षेत्र जो किसी एक राजा के शासन में हो। राज्य।
रू. भे.—रयासत।

रियासती–वि.—रियासत का, रियासत सम्बन्धी।

रिरायोड़ौ—देखो 'रीरायोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री. रिरायोड़ी)

रिरावणौ, रिराववौ—देखो 'रीराणौ, रीरावौ' (रू भे.)

उ०—भुवाळी खांवतौ फिरै। घर घर गेड़ा काटै। मिनखां में रिरावै, लीलड़ी काढै। गव्हायांरी गरज करै, वकीलां सूं वै'म राखै। —दसदोख

रिरावियोड़ौ—देखो 'रीरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रिरावियोड़ी)

रिळ–सं. पु.—मिलने या एक होने की अवस्था या भाव।

रिलकियौ–सं. पु.—फटे पुराने वस्त्रों (चिथड़ों) की बनी हुई छोटी गद्दी।

रिळणौ, रिळबौ—देखो 'रळणौ, रळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ रांम नांम रंग रिळ कांमनि कुसंग किळ, मोडन के संग माजनौ गमातौ। —ऊ. का.
उ०—२ पड़े चख नीर रिळै प्रथमीज, भूवा उर भीड़व लीन भतीज। —पा. प्र.
रिळणहार, हारौ (हारी), रिळणियौ—वि.।
रिळिग्रोड़ौ, रिळियोड़ौ, रिळयोड़ौ—भू. का. कृ.।
रिळीजणौ, रिळीजबौ—भाव वा.।

रिळमिळ–क्रि. वि.—हिलमिल कर, सम्मिलित रूप में, एक साथ।

उ०—इसड़ौ वधावौ सायवा, मोल मंगायदो जी। देवर-जेठांण्यां रिळ मिळ गावस्यां जी। —लो. गी.
रू. भे.—रळमिळ, रळिमळि।

रिळमिळणौ, रिळमिळबौ—देखो 'रळमिळणौ, रळमिळबो (रू. भे.)

उ०—तूटै घर सांवौ लगै, सूनै महल चिराग। रूठा राजंद रिळमिळै, आइयौ मित ऐराक। —फुलवाड़ी

रिळमिळियोड़ौ—देखो 'रळमिळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रिळमिळियोड़ी)

रिळाणौ, रिळावौ—देखो 'रळाणौ, रळावौ' (रू. भे.)

उ०—१ बैठक करो तो सूवा चांदणी रिळाऊं रे। प्रेम ही प्रताप सूवा भांभरी वजाऊं रे। —मीरां

रिळायोड़ौ—देखो 'रळायोड़ौ' (रू, भे.)
(स्त्री. रिळायोड़ी)

रिळियोड़ौ—देखो 'रळियोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री. रिळियोड़ी (रू. भे)

रिव—१ देखो 'रवि' (रू. भे.)

उ०—१ कमठ भार कसमस्स, दाढ़ वाराह खडक्कै। मंडळ मेर मेखळा घमस धूळी रिव ढक्कै। —गु. रू. बं.
उ०—२ सवळां सांड निवळ साधारण. ग्रवजै तू सांगा वर धीर। किव रांणा कीधा कैलपुरा, हिंदवांणा रिव विया हमीर। —हरिदास चारण
उ०—३ तिवर गया रिव तेज तैं, तेज गया निस पात। हरीया ग्यांन विचारतै, होय करम का नास। —ग्रनुभववांणी
२ देखो 'रव' (रू. भे.)
उ०—रांक सां कर रिव परी केरी, भूभवातइं मेल्ही फेरी। तीणि बात मनि हउं लाजउं, सैन्य कौरव तणै नवि भाजउं। —सालि सूरि

रिवताळ, रिवताळौ—देखो 'रावताळौ' (रू. भे.)

उ०—सुणतां इम तांणिया घांसाहर, कोटां लग छविया कटक। ऊभा पगां न देसी इजत, रिवताळौ लेसी रटक। —बळवंतसिंह हाडा रौ गीत

रिवमंडळ–देखो 'रविमंडळ' (रू. भे.)

उ०—है-खुर रज ऊछळी रजी लग्गी रिवमंडळ। चडी सेस सिर-हत्थ, पुहवि गाहट पग्गां तळ। —गु. रू. बं.

रिवदास—देखो 'रैदास' (रू. भे')

उ०—या सुं दास कबिरा नांनग, काळ 'र जाळ कढीजै। या सुं जन रिवदास उधरिये, मीरां वात वनीजै। —ग्रनुभववांणी

रिववंसी—देखो 'रविवंसी' (रू. भे.)

उ०—रिड़मल पाट जोध रिववंसी। इळ रखवाळ थयौ प्रम ग्रंसी। —रा. रू.

रिवाज–सं. पु. [ग्र.] प्रथा, रीति, रस्म।
रू. भे.—रवाज, रवेज।

रिवी—देखो 'रवि' (रू. भे.)

रिवीसुत—देखो 'रवितनय'

रिसग्र—देखो 'रिसि' (रू. भे.) (जैन)

रिसगारौ-वि.—क्रोधी स्वभाव का।

उ०—खींवौ रिसगारौ घणौ, हूं समझाऊं जाय। फिकर करौ ना ठाकुरां, मन महं धीरज लाय। —सूरै खींवै कांधळोत री वात

रिसणौ, रिसबौ-क्रि. अ. [सं. रसनं] १ द्रव पदार्थ का धीरे धीरे बहनां, रसना।

२ टपकना, चूना, झरना।

उ०—१ बेटा नै वतळायौ, कीं जवाब नी मिल्यौ। ठौड़ ठौड़ लोई रिसतौ हौ। गाभा झीर झीर व्हैगा हा। —फुलवाड़ी

उ०—२ अर यूं दीवांणजी रा होठ सूज्योड़ा, लोई रिसै, बोलतां तकलीफ इज व्हैला, आपरौ हुकम व्है तौ म्हैं अरज कर दूं। —फुलवाड़ी

३ समाना, आत्मसात होना।

उ०—बेकळू रेत रा लांठा धोरा में विरखा रौ पांणी रिसै ज्यूं उण राज री रया रै अंतस में सगळा अकरम अन्याव भरै, बुड़कौ ई नीं ऊठै। —फुलवाडी

रिसणहार, हारौ (हारी), रिसणियौ—वि.।

रिसिओड़ौ, रिसियोड़ौ, रिस्योड़ौ—भू. का. कृ.।

रिसीजणौ, रिसीजबौ—भाव वा.।

रिसतेदार—देखो 'रिस्तेदार' (रू. भे.)

रिसतौ—देखो 'रिस्तौ (रू. भे.)

रिसपत—देखो 'रिस्वत' (रू. भे.)

उ०—नांम रिसपत को मिटायौ है रियासत सौं। साफ इनसाफ होत संत औ असत को। —कविराजा मुरारीदांन

रिसपतखोर—देखो 'रिस्वतखोर' (रू. भे.)

रिसपतखोरी—देखो 'रिस्वतखोरी' (रू. भे.)

रिसपतियौ, रिसपती—देखो 'रिस्वती' (रू. भे.)

उ०—भावी वस पड़िया दुख भुगतौ, जुजमांना जिण री कीं जोर। सिर साटै लीधी धर सूरां, चाटै रिसपतिया नै चोर। —अग्यात

रिसपत्त—देखो 'रिस्वत' (रू. भे.)

उ०—भूप जसवता व्है न चिंता सुख सत्ता लेत। जमा खूब जत्ता रिसपत्त का न पत्ता मैं। —जुगतीदांन देथौ

रिसबत—देखो 'रिस्वत' (रू. भे.)

रिसबतखोर—देखो 'रिस्वतखोर' (रू. भे.)

रिसबतखोरी—देखो 'रिस्वतखोरी' (रू. भे.)

रिसभ-सं. पु. [सं. ऋषभः] १ नाभि तथा मरुदेवी का पुत्र एक राजा जिसको यज नामक इन्द्र ने अपनी कन्या जयन्ती ब्याहि थी।

वि. वि.—जयन्ती से इसके सौ पुत्र हुवे जिनमें भरत सबसे श्रेष्ठ था। इसने अपने राज्य को नौ खण्डों में विभक्त करके अपने नौ पुत्रों को दे दिया और स्वयं ससार से विरक्त हो गया। इसने प्रजा को धर्मानुकूल बनाया और पुत्रों को ब्रह्म विद्या का उपदेश दिया। इसने पश्चिमी भारत में जैन धर्म का प्रचार किया।

२ विष्णु के २४ अवतारों में एक, जो दक्ष सावर्णि मन्वन्तर में आयुष्मान व अंबुधारा के पुत्र के रूप में हुवा।

३ व्यास के निवृत्ति मार्ग का प्रसार करने के लिये होने वाला शिव का एक अवतार, जो वाराह कल्प के वैवस्वत मनवन्तर के अन्तर्गत हुआ। पराशर, गर्ग, भार्गव, गिरीश इनके शिष्य हुवे।

४ इन्द्र आदित्य का पुत्र।

५ स्वरोचिष मन्वंतर के सप्त ऋषियों में से एक।

६ इन्द्र और पोलोमी के तीन पुत्रों में से एक।

७ चन्द्र वंश का एक राजा, जो कौरवों के पक्ष में लड़ा था।

८ कुशवंश के राजा कुशाग्र का पुत्र जो सत्यहित का पिता था।

९ मेरु पर्वत के पास का एक पर्वत।

१० तारा, नक्षत्र।

११ सप्त स्वरों में से दूसरा स्वर जो बड़ा शुभ माना जाता है। इसके उच्चारण में नाभि से पवन उठकर तालव्य एवं जिह्वा के अग्रभाग से अवरुद्ध होता है। इसका स्वर स्थान मस्तक है।

१२ पंद्रहवां कल्प, जहां से ऋषभ स्वर की उत्पत्ति हुई।

१३ सांड।

१४ बैल।

१५ राम की सेना का वानर।

[सं. ऋभ्व] १६ इन्द्र।

१७ अग्नि।

[वि.] उत्तम, श्रेष्ठ।

रू. भे.—रखभ, रखब, रिक्खभ, रिखंभ, रिखब, रिखभ, रिखव, रिसह।

रिसभक-सं. पु. [सं. ऋषभक] अष्टवर्गीय औषधियों के अन्तर्गत एक औषधि विशेष। (अमरत)

रिसभजिन-सं. पु.—जैनियों के एक तीर्थंकर।

रू. भे.—रिखभजिन।

रिसभदेव-सं. पु. [सं. ऋषभदेव] विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक।

वि. वि.—देखो 'रिसभ'

रू. भे.—रिखभदेव, रिखबदेव, रुखभदेव।

रिसभधुज-सं. पु. [सं. ऋषभ-ध्वज] शिव, महादेव।

रिसवत—देखो 'रिस्वत' (रू. भे.)

रिसवतखोर—देखो 'रिस्वतखोर' (रू. भे.)

उ०—ऊजड़ खेड़ा व्हा भेड़ा व्हा ओरा। राजी साधू व्हा खळ रिसवतखोरा। —ऊ. का.

रिसवतखोरी—देखो 'रिस्वतखोरी' (रू. भे.)

रिसह—देखो 'रिसभ' (रू. भे.)

उ०—कइय आवूय डुंगरि जाइसिउं, रिसह नेमि तरणा गुरण गाइसिउं। —जयसेखर सूरि

रिसहेसर रिसहेसरू—देखो 'रिसीस्वर' (रू. भे.)

उ०—१ करमें वरस लगे रिसहेसर, उदक नया में अन्न। करमें जिननें जोऊं गिमारे, खीला रोंप्या कन्न। —वृ. स्त.

उ०—२ सेत्रुंजे नायक वीनति सांभलो, स्त्री रिसहेसरू स्वांम। दीन दयाल तुम्हारे दाखिवुं, अंतर बीतग ग्रांम। —घ. व. ग्रं.

रिसांण, रिसांणौ—वि. [सं. रिष् या रुष्] (स्त्री. रिसांणी)

नाराज, नाखुश।

उ०—तौ रांणी हंसकर कही जे पहलां ही या वात क्यों न कही। इण वात वदळै भला रिसांण रहिया। —नापै सांखले री वारता

२ जिसकी क्रोध करने की आदत है, क्रोधी स्वभाव का, रूठने की आदत वाला।

उ०—बांनर अनइं वीधी खाधउ, कांणी अनइ रिसांणी, साप अनइ पंखालउ, कादम अनइं कंटालउ …… —व. स.

सं. पु.—१ गुस्सा करने या रूठने की क्रिया या भाव। मान करने का भाव।

उ०—तद वा टावर री गळाई मूंडौ मस्कोर रिसांणौ करती व्हे ज्यूं बोली—थें तौ कैंता नीं के पग पाछौ निकळै ई कोनीं। —फुलवाड़ी

२ क्रोध, गुस्सा, मान।

उ०—नित री मार सूं आंती आय वा हवेली सूं रिसांणौ करनै वारै निकळगी पण अबै लुगाई री जात जावै तौ कठै जावै। —फुलवाड़ी

रू. भे.—रींणौ, रीयाणौ, रींसणौ, रींसांणौ, रीसणौ, रूसणौ, रूसांणौ।

रिसाघाती-सं. पु.—शत्रु, वैरी। (ह. नां. मा.)

रिसाणौ, रिणावौ—देखो 'रीसाणौ, रीसावौ' (रू. भे.)

रिसाण हार, हारौ (हारी), रिसाणियौ—वि.

रिसायोड़ौ —भू. का. कृ.

रिसाईजणौ, रिसाईजवौ—भाव वा.

रिसायल-वि.—क्रोधी स्वभाव का, गुस्सैल।

रिसायोड़ौ—देखो 'रीसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रिसायोड़ी)

रिसालदार-सं. पु. [अ.] १ अश्वारोही सेना के एक दल का नायक

२ उक्त नायक का पद।

रू. भे.—रसालदार।

रिसालौ-सं. पु. [अ. रिसालः] १ अश्वारोही सेना।

२ सैनिकों की टुकड़ी।

३ सेना, फौज।

उ०—जंगी रिसाला हलंतां प्रळै, सांमंद हिलोळां जेहा। छात-रंगी हसम्मां, भळतां काळ चोट। —राघोदास सांदू

४ रावणा राजपूतों के लिये प्रयोग में आने वाला शब्द।

वि.—गुस्सैल, क्रोधी।

उ०—पोयणियां मुख ओस पूंछसी रवि कोडाळौ। हाथ न थांमौ मेघ मांनसी रीस रिसाळौ। —मेघ

रू. भे.—रसाळू, रसालू, रसालौ।

रिसि-सं. पु. [सं. ऋषि; प्रा. रिसि] १ तपस्वी, मुनि, संन्यासी, ऋषि।

उ०—१ सिसमार चक्र ध्रुव विण सु तौ, भजै न कुण रिसि गण भ्रमण। अगमै साह अवरंग सूं, कमंधां विण चाळौ कवण। —रा. रू.

उ०—२ सउं परिवारिहिं सुं दलिहिं हस्तिनाग पुरि नगरि आवइ। अन्न दिवसि रिसि नारदह नारि कज्जि आदेसु पांमइ। —सालिभद्र सूरि

उ०—३ सरब सिरोमणि होवण सारू, लागा करण लड़ाई। मोक्ष गियोड़ा रिसि मुनियां में, अध विच टांग अड़ाई। —ऊ. का.

वि. वि.—इनकी राजर्षि, महर्षि, देवर्षि, ब्रह्मर्षि आदि श्रेणियां भी हैं।

२ श्रुति, सत्य और तप में पूर्ण निरत रहने वाला मंत्र द्रष्टा, वेद मंत्रों का आचार्य।

३ अनुष्ठानादि कर्म बतलाने वाले सूत्रों का रचयिता।

४ नारद, मुनि।

५ वृहस्पति।

६ एक देव जाति।

७ हरिद्वार के आगे का एक तीर्थ, ऋषिकेश।

८ प्रकाश की किरन।

९ मत्स्य विशेष।

रू. भे.—रक्खी, रख, रखि, रखी, रिक्ख, रिक्खि, रिक्ष, रिख, रिखि, रिखी, रिखूं, रिख्ख, रिसग्र, रिसी, रीख।

अल्पा.,—रिखड़उ, रिखड़ौ।

रिसिग्रस्त-सं. पु. [सं. ऋषि-ग्रस्त] उत्तर और वायव्य के मध्य की

दिशा, जिधर सप्तर्षि अस्त होते हैं।
रू. भे.—रिखीग्रस्त, रिसीग्रस्त।

रिसिक–सं. स्त्री. [सं. रिषीक] तलवार।

रिसिकेस—देखो 'रिसीकेस' (रू. भे.)

रिसिदत्ता–सं. स्त्री.—एक सती विशेष। (जैन)
उ०—रिसिदत्ता परणी घरि आव्यउ, सुख भोगवइ सुविवेक रे।
—स. कु.

रिसिदेव—देखो 'रिखदेव' (रू. भे.)

रिसिपूनम, रिसिपूरणिमा–सं. स्त्री.—श्रावण, शुक्ला, पूर्णिमा।
रू. भे.—रिखपूनम।

रिसिप्रतत्य–सं. पु.—ऋषियों द्वारा बनाये हुए शास्त्र।
उ०—थिरा उयत्य थत्य तें वियत्य थत्यते वहें।
रिसिप्रतत्य तत्य के प्रतत्थ तत्थ तें रहें। —ऊ. का.

रिसियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ धीरे धीरे वहा हुआ, रसा हुआ. २ टपका हुआ, चूवा हुआ. ३ आत्मसात् हुवा हुआ, समाया हुआ।
(स्त्री. रिसियोड़ी)

रिसिराई, रिसिराज, रिसिराय–स. पु. [सं. ऋषि-राज] नारदादि वड़े-वड़े ऋषि।
उ०—दुर बुद्धि की संग से आगे ही विगड़्या, वड़ा वड़ा रिसिराई।
मैं जिग्यासु जन हुं तेरा, दुर वुद्धि दूर रखाई।
—स्री सुखरांमजी महाराज
रू. भे.—रखांराय, रखीराज, रिखरांण, रिखराज, रिखिराज, रिखिराय, रिखीराज, रिखीराय, रीखाराज।

रिसिवर–सं. पु.—ऋषिश्रेष्ठ, श्रेष्ठ ऋषि। रू. भे.—रिखवर।

रिसिवरणी–सं. स्त्री. [सं. ऋषि-वर्णिनी] गौत्तम ऋषि की पत्नी अहल्या।
रू. भे.—रिखवरणी।

रिसिव्रत–सं. पु.—ऋषियों की तपस्या, साधना।
रू. भे.—रिखव्रत।

रिसिसूदन–सं. पु.—४९ क्षेत्रपालों में से सातवां क्षेत्रपाल।

रिसींद, रिसींद्र–सं. पु. [सं. ऋषि+इन्द्र] ऋषियों में श्रेष्ठ।
रू. भे.—रिखेंद्र।

रिसी—देखो 'रिसि' (रू. भे.)
उ०—१ थांमें ई थोड़ी घणी तो अकल व्हैला के जे पुरांणा रिसी मुनि माया री ताड़णा नी करता तो गिरस्ती मरियां ई साधु-सन्यासियां नै धन रा दरसण नी करावता। —फुलवाड़ी
उ०—२ अइमत्तउ रिसी जे रम्यउ, जल मांहै हो बांधी माटी नी पाल। तिरती मूकी काछली, तइं तारया हो तेहनइ तत्काल।
—स. कु.

रिसीग्रस्त—देखो 'रिसिग्रस्त' (रू. भे.)

रिसीकुल्या–सं. स्त्री. [सं. ऋषिकुल्या] एक पौराणिक नदी का नाम।

रिसीकेस–सं. पु. [स. हृषीकेश] १ विष्णु का एक नाम, ईश्वर।
(नां. मा.)
२ श्रीकृष्ण का एक नामान्तर।
३ एक तीर्थ का नाम।
रू. भे.—रिखीकेस, रखीकेस, रखीकेसर, रिखीकेसू, रीखीकेस।

रिसीपंचमी, रिसीपांचम–सं. स्त्री. [सं. ऋषि+पञ्चमी] भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी। इस दिन स्त्रियां जलाशयों पर जाकर ऋषि और पितृ तर्पण करती हैं और मणी या अन्न का भोजन करती हैं।
रू. भे.—रिखपांचम, रिखीपंचमी, रिखीपांचम।

रिसीमूक—देखो 'रिस्यमूक' (रू. भे.)

रिसीस, रिसीसर, रिसीस्वर–सं. पु. [सं. ऋषीश, ऋषीश्वर] ऋषियों में श्रेष्ठ, ऋषीश्वर।
उ०—उण कही में एक जंगळ में धरमसाळा वणवाइ थी उठै गरमी रै मौसम में एक रिसीस्वर आय छाया में वैठ सुख पायो ठंडा होय जळ पी घणा चैन सूं प्रभू नूं विनती करी। —नीं. प्र.
रू. भे.—रखीस, रखीसर, रखीसुर, रखीस्वर, राखेस, राखेसर, रखेसुर, रखेस्वर, रिखसर, रिखहेसरू, रिखीस, रिखीसर, रिखीसुर, रिखीस्वर, रिखेस, रिखेसर, रिखेसुर, रिखेस्वर, रिसहेसर, रिसहेसरू, रिहेसर, रिहेसरू, रीखीय, रुखेसर।

रिस्क–सं. स्त्री.—१ जोखम, खतरा।
२ जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व, भार।

रिसीस्रंग—देखो 'स्रिंगी रिसि' (रू. भे.)

रिस्ट–सं. पु. [सं. रिष्टं] १ सौभाग्य, समृद्धि, ऐश्वर्य।
२ अनिष्ट, हानि, नाश।
३ दुर्भाग्य, अभाग।
४ पाप।
५ उपद्रव।

रिस्टा, रिस्टि–सं. स्त्री. [सं. रिष्टिः] तलवार।

रिस्तेदार–सं. पु. [फा. रिश्तःदार] १ नातेदार, सम्वन्धी।
२ वंशज, वंधु-वांधव।
रू. भे.—रिसतेदार

रिस्तेदारी–सं. पु. [फा. रिश्तः दारी] नाता, रिश्ता, सम्वन्ध।

रिस्तेमंद–सं. पु. [फा. रिश्तेमंद] सम्वन्धी, नातेदार।

रिस्तौ–सं. पु. [फा. रिश्तः] १ नाता, सम्बन्ध, लगाव।

२ किसी प्रकार का सम्पर्क।

रू. भे.—रिसतौ।

रिस्यमूक–सं. पु. [सं. ऋष्यमूक] दक्षिण का एक पर्वत जिस पर श्रीराम और सुग्रीव की मित्रता हुई थी।

रू. भे.—रिखमूकर, रिखीमूक, रिसीमूक।

रिस्वत–सं. स्त्री. [फा. रिश्वत] किसी को कर्त्तव्यच्युत करके नियम विरुद्ध कार्य करवा कर, अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये, कार्य-कर्त्ता को अनुचित रूप से दिया जाने वाला धन या सामान, घूस, उत्कोच।

रू. भे. निसपत, निसबत, निस्पत, निस्वत, रिसपत, रिसपत्त, रिसवत, रिसवत।

रिस्वतखोर–वि. [फा. रिश्वतखोर] रिश्वत, घूस या उत्कोच लेने वाला।

रू. भे.—रिसपत खोर, रिसवतखोर, रिसवतखोर।

रिस्वतखोरी–स. स्त्री. [फा. रिश्वत खोरी] रिश्वत लेने की क्रिया या भाव। घूसखोरी।

रू. भे.—रिसपत खोरी, रिसवत खोरी।

रिस्वतियौ, रिस्वती–वि.—रिश्वत लेने वाला घूस खाने वाला।

रू. भे.—निसपतियौ, रिसपतियौ, रिसपती।

रिहणौ, रिहबौ—देखो 'रहणौ, रहबौ' (रू. भे.)

रिहा–वि. [फा. रहा] १ बंधन मुक्त, कैद से छूटा हुआ।

२ मुक्त।

रिहाई–सं. स्त्री.—मुक्ति, छुटकारा।

रू. भे.—रियाई।

रिहेसर, रिहेसरु, रिहेसरू—देखो 'रिसीरवर' (रू. भे.)

उ०—मुझ मन ऊलट अति घणौ रे, सो दिन सफल गिणेस। स्वामी स्री रिहेसरू, जब नयणे निरखेस। —वृ. स्त.

रींकणौ, रींकबौ–क्रि. म.—१ रोना, विलाप करना।

उ०—१ डांडा तांभाड़ें केरडिया ढींकै, रोटीपांणी नै टींगरिया रींकै। चित पर घोरारव आकर वरचावै, घर घर नर नायक लायक घबरावै। —ऊ का.

उ०—२ वड़िंदे रै वड़िंदे सिरदार रींकण लागौ जणां कह्यौ–हाल कांई व्हियौ, अबारू ई डाढै। दो वेळा वळे आवूंला, सावचेती करणी व्है उत्ती कर लेजै। —फुलवाड़ी

२ दुखी होना, करुणा करना, रंज करना।

उ०—रया मांय री मांय सीझै। जे थोड़ा बरस औ इज ढाळो रह्यौ तौ उण राज रा लोग-बाग मरणां री हरख मनावैला अर-जलम माथै रोवैला-रींकेला। —फुलवाड़ी

३ वड़वड़ाना।

उ०—हाथां हूकलिया लटकंता लोटा, रिण रिण रींकता सुपनें में रोटा। —ऊ. का.

रींकणहार, हारौ (हारी), रींकणियौ—वि.।

रींकिओड़ौ, रींकियोड़ौ, रींक्योड़ौ—भू. का. कृ.।

रींकीजणौ, रींकीजबौ—कर्म वा.।

रींगणौ, रींगबौ– रू. भे.।

रींकाणौ, रींकाबौ–क्रि. स. ['रींकणौ' क्रि. का प्रे. रू] १ रुलाना, विलाप कराना।

२ दुखी करना, करुणा या रंज कराना।

रींकाणहार, हारौ (हारी), रींकाणियौ—वि.।

रींकायोड़ौ—भू. का. कृ.।

रींकाईजणौ, रींकाईजबौ—कर्म वा.।

रींगाणौ, रींगाबौ—रू. भे.।

रींकायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ रुलाया हुआ, विलाप कराया हुआ।

२ दुखी किया हुआ, करुणा या रंज कराया हुआ।

(स्त्री. रींकायोड़ी)

रींकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ रोया हुआ, विलाप किया हुआ. २ दुखी हुवा हुआ, करुणा किया हुआ, रंज किया हुआ।

(स्त्री रींकियोड़ी)

रींखण–सं. पु. टिड्डी का छोटा बच्चा।

रू. भे.—रीखण।

रींगटियौ, रींगटौ–वि.—कृशकाय, पतला-दुबला।

रींगणवाव, रींगणवाव—देखो 'रांगणवाय' (रू. भे.)

रींगणि, रींगणी–सं. स्त्री.—एक प्रकार की औषधि, भुई रींगणी।

रू. भे.—रीगिणि, रींगिणी।

रींगणौ–स. पु. वेंगन, वृंताक।

रू. भे —रीगणौ।

रींगणौ, रींगबौ—देखो 'रींकणौ, रींकबौ' (रू. भे.)

रींगाणौ, रींगाबौ—देखो 'रींकाणौ, रींकाणौ' (रू. भे.)

रींगायोड़ौ—देखो 'रींकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रींगायोड़ी)

रींगिणि, रींगिणी—देखो 'रींगणी' (रू. भे.)

उ०—रांमोडी नई रासना, रींगिणि रुद्र-जटाय। रांग रतांजणि रुंमडी, रनि वनि रंग धराय। —मा. कां. प्र.

रींगियोड़ौ—देखो 'रींकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रींगियोड़ी)

रींगो–सं. स्त्री —शिकार किए हुए खरगोश का शिर ।

रींगो–सं. पु.—द्रव पदार्थ की धारा ।

रींघणवाय, रींघणवाव—देखो 'रांगणवाय' (रू. भे.)

रींछ–स. पु. [स. ऋक्ष, प्रा. रिच्छो, रिंछो] (स्त्री. रींछड़ी, रींछी)

१ एक चौपाया जंगली जानवर, जिसके समस्त शरीर पर लम्बे-लम्बे बाल होते है । भालू, ऋक्ष ।

उ०—१ सिघ व्याध्र म्रग रींछ वानरा सुहरा सांमरा घोर रे । आहेडी को अंत्यज आवि म्लेच्छ भयंकर चोर रे । —नलाख्यांन

उ०—२ घेरै सिकार मांहि ससा, लुंकड़ी, सीह, रोभ, स्याळ रींछ, अनेक हिरण आदि देअर भेळा हुया छै । —द. वि.

२ जाम्बुवान का एक नाम । जामवत ।

उ०—महाराज तणै कहिजै कंस मांमो, नरकासुर बेटो निज नेह । सुसरो रींछ रुखमयो साळो, अविगत तणै गनाइति एह ।
—पी. ग्रं.

वि.—कृष्ण वर्ण, काला । * (डि. को.)

रू. भे.—रीछ । अल्पा.—रींछीओ ।

रींछड़ी–सं. स्त्री.—१ श्री कृष्ण की एक पत्नी जो जाम्बुवान की पुत्री थी । जाम्ववंती ।

उ०—कालिद्री विदा भद्रा कुंअरी, कहि लखमणा क्रिपाळ रे । रींछड़ी नाग जीती निमो, पटरांणी प्रतिपाळ रे । —पी. ग्रं.

२ मादा भालू, मादा रीछ ।

रू. भे.—रीछड़ी ।

रींछपत, रींछपति–सं. पु. [सं. ऋक्ष-पति] जाम्ववंत ।

रू. भे.—रीछपत, रीछपति ।

रींछराज–सं. पु. [सं. ऋक्ष-राज] जाम्ववंत ।

रू. भे.—रीछराज ।

रींछी, रींछीट–सं. स्त्री.—१ धूंऐ का बादल जो वर्षा के दिनों में कोहरे की तरह ऊंचे स्थानों में छा जाता है । कोहरा, धुंध ।

उ०—१ रजी धोम सूं वीटिआ गज्ज राजै वडे अन्नडे जांणि रींछी विराजै । भयांणंक भैभीत सोभंत भारं, क्रमै जाणि आधी निसा अंधकार । —वचनिका

उ०—२ पिक करै कोहक रींछी चढ़ी पहाड़ां वाजती, रहचो पछम तणो वाव । पंथ सीतळ हुवा हुई लीली पुहव, 'रजा' दीजै 'अजा' मारवाराव । —सवळजी लाळस

२ पशुओ की मस्ती जिसके कारण वे दौड़ कूद कर प्रसन्न होते हैं ।

३ मस्ती ।

रू. भे.—रिंछी, रीछी ।

रींछी पाखर–सं. पु.—घोडे के गर्दन के बंधा रहने वाला चमड़े या कपड़े का उपकरण जो रीछ के मुख के आकार का होता है ।

रींज—देखो 'रीझ' (रू. भे.)

उ०—राजावां री रींज, सुखदाई सारां सुणी । खावद थारी खीज, जग निहाल करती 'जसा' । — ऊ. का.

रींजणो, रींजबो – देखो 'रीझणो, रीझबो' (रू. भे.)

उ०—१ रंग राग बाग अंगराग सूं न रींजै, पातिसाह महमदसाह चिंता मैं छीजै । —रा. रू.

उ०—२ साधां ऊपरि साहिवा, रींजो राघवड़ा । रेंवत चढ नै रांमडा आवै आलमड़ा । —पी. ग्रं.

रींजणहार, हारो (हारी), रींजणियो—वि. ।

रींजिओड़ो, रींजियोड़ो, रींज्योड़ो—भू. का. कृ. ।

रींजीजणो, रींजीजबो—कर्म वा. ।

रींजियोड़ो–भू. का. कृ.—देखो 'रीझियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. रीजियोड़ी)

रींझ—देखो 'रीझ' (रू. भे.)

उ०—पीरदास एम दाखै प्रभु, कूडै काल्है कांकनां । रिणछोड़ राय हो राघवा, रींझ समायै रांकनां । —पी. ग्रं.

रींझणो, रींझबो—देखो 'रीझणो, रीझबो' (रू. भे.)

उ०—१ आलीजे री सेजां में रींझ रहूंली । फहिं रे मिजाज करुं रसिया । —लो. गी.

उ०—२ जिनजी कुं देखि मेरउ मन रींझइ री । तीन छत्र ऊपर सोहइ, आप इंद्र चांमर वींझइ री । —स. कु.

उ०—३ आखी रात ल्होड़ी लाडी री चाकरी में गुजारै, आंख्यां मा'खर काडे है । पण आ बनड़ी कद रींझै ? टिरड़ाका करै ठींडा देवे है । —दसदोख

उ०—४ समझ हीण सरदार, राजी चित क्यों सूं रहै, भूमि तणा भरतार, रींझै गुण सूं राजिया । —किरपारांम

रींझणहार, हारो (हारी), रींझणियो—वि. ।

रींझिओड़ो, रींझियोड़ो, रींझ्योड़ो—भू. का. कृ. ।

रींझीजणो, रींझीजबो—कर्म वा. ।

रींझवणो, रींझववो—देखो 'रीझणो, रीझबो' (रू. भे.)

उ०—दीयै किसुं दलदरी, सवल रींझवीयो संता । सगलो ही संसार घरै आस धनवंता । —घ. व. ग्र.

रींझवार—देखो 'रिझवार' (रू. भे.)

रू०—अर्जी मेरा सांवरा नवेला सिरदार, वेपरवांही और चाह भरया महीड़ा । समझवार रींझवार । —रसीलै राज रो गीत

रींझवियोड़ो—देखो 'रीझियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. रींझवियोड़ी)

रींझाणो, रींझावौ—देखो 'रीझाणौ, रीझावौ' (रू. भे.)

उ०—घट मैं सिवरन एक अटला, मुजरा आतम कीया अपला। रोम रोम ररंकार लगाया, एक अरीझन कुं रींझाया।
—अनुभववांणी

रींझाणहार, हारौ (हारी), रींझाणियौ—वि.।
रींझायोड़ौ—भू. का. कृ.।
रींझाईजणौ, रींझाईजवौ—कर्म वा.।

रींझायोड़ौ—देखो 'रीझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रीझायोड़ी)

रींटौ-सं. पु.—कच्ची ककड़ी।

रू. भे.—रीटौ।

रींणौ, रींयांणौ, रींसणो रींसांणौ—देखो 'रिसांणौ' (रू. भे.)

री-सं. स्त्री. [सं.] १ गति, चाल। २ बहाव, प्रवाह। ३ ध्वनि, शब्द। ४ वध, हत्या। (एका.)
विभ.—की।

उ०—१ फेरै वग तुरंग री, तोले खग करग। रिण परण ऊमंगे लगै, 'रैणायर' गयणंग। —रा. रू.
उ०—२ अभवास टाळै परा जमवाळा प्रास ग्यांन। आपरा पगां री राखै पीरदास आस। —पी. ग्रं.

रीख—देखो 'रिसि' (रू. भे.)

उ०—ऊपड़ै वजर गगन दुरसि आभड़ै, भरै घट पांण अरांण रै भाय। थाट साहांण समंद लंक वाळा थया, रीख जेहीं पिया वूंदी तणै राय। —राव सत्रसाळ रो गीत

रीखण-देखो 'रींखण' (रू. भे.)

रीखांराज—देखो 'रिसिराज' (रू. भे.)

उ०—सूरां पूर झाटा माची भ्रकूटां उठावै संभू, सांची तांन लावै रंभा मचावै संगीत। रीखांराज वावै वीण प्रवीण हरखा रतौ, गावै सूखा चोसटी अगोठी रूखां गीत। —बदरीदांन खिड़ियौ

रीखीकेस—देखो 'रिसीकेस' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

रीखीस—देखो 'रिसीस' (रू. भे.)

रीख्या—देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—वाह सुग्रीव रीख्या उठी वंकरी, उठी चोकी विरूपाक्ष आतंक री। समसजै चोट वे तरफ निरसंकरी, रात दिन वजै घड़ियाल जिम लंक री। —र. रू.

रीगटौ-सं. पु.—युवा हरिण।

उ०—मांहे राग छै जिके कूद-उछळै, छै रीगटा हिरण छै, सु गेत आइ हिरणी नै घेचता फिरै छै। सवळौ हिरण निवळै न घेचै छै। —रा. सा. सं.

रीगणौ—देखो 'रींगणौ' (रू. भे.)

रीछ—१ देखो 'रींछ' (रू. भे.)

उ०—१ जरख रीछ वड्डाख, सिवा सत लस्स मलक्का। साकरिण डायणि सकति, काळ भैरव काळक्का। —गु. रू. बं.
उ०—२ एक हस्ति आरुही व्रखभ अस. उष्ट्र विगत्ति। सरभ चील सादूळ रीछ वंदर तर रत्ती। —रा. रू.

रीछड़ी—देखो 'रींछड़ी' (रू. भे.)

उ०—अगै कांड रीछड़ी आंणी, भगत वछळ वात भांणी। जादिवै री अकलि जांणी, मेघड़ी मांणी। —पी. ग्रं.

रीछपत, रीछपति—देखो 'रींछपति' (रू. भे.)

रीछराज—देखो 'रींछराज' (रू. भे.)

रीछा—देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

रीछी—देखो 'रींछी' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरान्ति करि नै राजांन सिलांमति उग्रां गज राजां आगै गड़ां चरखी दारू आरावा छूटि नै रहिया छै। जांणै धूंधळै पहाड़ पाखती रीछी लाग रही छै। —रा. सा. सं.

रीछीओ-सं. पु.—१ एक प्रकार का सिंह।

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति बड़ा सिकारी सिंघळी, सादूळ, पटाळा, केहरी नवहथां, कंठीरीआं, रीछीआ, तेलिआ, तींदूला, लकीरिआ, वघेरिया, चीतरा, भांति भांति, जाति जातिरा, नाहर सांकळै जड़िआ रहड़ुए गाडे वैठा, कसता कणणता, वूंवाड़ करतां वहै छै। —रा. सा. सं.
२ देखो 'रींछ' (अल्पा., रू. भे.)

रीजेंट-स. पु. [अं.] १ किसी राजा की अवयस्क अवस्था या अयोग्यता की दशा में राज्य का प्रवन्ध करने वाला प्रवन्धक।

रीजेंसी-सं. स्त्री.—१ रीजेंट का कार्य, शासन।
२ रीजेंट का पद।

रीज—देखो 'रीझ' (रू. भे.)

उ०—१ दांत दमंकै अहर दुत, जांण चमंकै वीज। ज्यांरी धुन लागी रहै, रहै तपोवन रीज। —वां. दा.
उ०—२ सुर दक्खै जै जै सबद, रस अदभुत लख रीज। ईढ करै खग सूं 'अभा', वजर न चकर न वीज। —रा. रू.

रीजड़ी—देखो 'रीझ' (अल्पा., रू. भे.)

रीजक—देखो 'रिजक' (रू. भे.)

उ०—रावतां वंदुकां उठाइ, जीकौ वंदुकां कीणीक भांत री छै। मात सात विलंद री, अकल वांण दूसरी, सो सो तासा सर्ज री करी।

लुकमांन रा हाथ री करी। नेखमा वाज नारंजा। पर लोक ही वरसं, रीजक जागी की नां लागी हीसें। सामी करी कीनां काळ री सूत। —पनां

रीजणौ, रीजबौ—देखो 'रीझणौ, रीझबौ' (रू. भे.)

उ०—१ किसन तूझ नां हिमैं कासूं कहीजें। रहै कोप नह कोप रीजें न रीजें। —पी. ग्रं.

उ०—२ रीज्यां देवै न मौज, चूक्यां चट चेतौ करै। जा ठाकर री चोज, रती न आवै राजिया। —किरपारांम

रीजणहार, हारौ (हारी), रीजणियौ—वि.

रीजिओड़ौ, रीजियोड़ौ, रीज्योड़ौ—भू. का. कृ.

रीजीजणौ, रीजीजबौ—भाव वा.

रीजवणौ, रीजवबौ—देखो 'रीझणौ, रीझबौ' (रू. भे.)

उ०—स्री महिपति मान रीजवै गुणस्रज, कवि समराथ इसौ नहि कोय। 'मांन' समापै लाख मागणां, 'जसा' 'गजन' रा, विरदां जोय। —वां. दा.

रीजवार—देखो 'रिझवार' (रू. भे.)

उ०—जिण भांत आप नै तौ इडर पोहोचावस्यां। म्हे अठै कांम आस्यां। रजपूती रा रीजवारां नै जीलै चढावस्यां। —पनां

रीजवियोड़ौ—देखो 'रीझियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रीजवियोड़ी)

रीजाणौ, रीजावौ—देखो 'रीझाणौ, रीझावौ'।

रीजाणहार, हारौ (हारी), रीजाणियौ—वि.।

रीजायोड़ौ—भू. का. कृ.।

रीजाईजणौ, रीजाईजबौ—कर्म वा.।

रीजायोड़ौ—देखो 'रीझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रीजायोड़ी)

रीजावणौ, रीजावबौ—देखो 'रीझाणौ, रीझावौ' (रू. भे.)

उ०—रीजावै कमधां राजा नै, वीदग केहौ उकति विसाल। 'विजा' हरी सोसहंस वरीसै, भूप विरद परियां रा भाळ। —वां. दा.

रीजावियोड़ौ—देखो 'रीझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रीजावियोड़ी)

रीजियोड़ौ—देखो 'रीझियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रीजियोड़ी)

रीझ—सं. स्त्री. [सं. ऋद्धि. प्रा. रिज्झि] १ प्रसन्न, खुश या मुग्ध होने की क्रिया या भाव।

२ प्रसन्नता, खुशी, हर्ष।

उ०—१ बांटे नहिं धन वांणियौ, खाटे धन कर खांत। रीझ करै ताळी दिए, हंसै दिखाळै दांत। —वां. दा.

उ०—२ सोग संताप सुख दुख दुनियां भरी, करत अकाज कहि कौंण काजा। और की रीझ अणखीज तैं क्या पड़ी, आपणी रीझ का खूब छाजा। —अनुभववांणी

उ०—३ ऐसी विध पंडत राज चातुरय कळा प्रवीण त्रिलोकूं का प्रवध अनेक विध विमळ वांणी सै उच्चरै जिनूं सै रीझ स्री माहाराज कनक जग्योपवीत चढाया। —सू. प्र.

३ पुरस्कार, इनाम।

उ०—१ साह अवरंग के पास या समै आवै। सो तौ मनसब रीझ इनांम मन वंछ्या पावै। —रा. रू.

उ०—२ ऐ ग्रहूंवै मैं वात उचारी। तहि हवि तूझ रीझ इकतारी —सू. प्र.

उ०—३ ईण भात सूं एवाळियौ देख नै पाछौ आय नै राजाजी नूं सारा समाचार कहिया—महाराज सिलांमत, स्री गोरखनाथ जी तपसांय वीराजीया छै जी। सुण नै राजाजी सवा लाख री रीझ दीवी। —रीसाळू री वारता

४ दान, वख्शीश।

उ०—१ रांक सरिस दे रीझ, अखिल कांइ खीज करै अति। वडौ विहळ हूं वुरौ, पीर सां रीस किसी पति। —पी. ग्रं.

उ०—२ करै फतै कमधज्ज, करै वह रीझ कवेसां। करि गुण परख सकाज, देस देसां परदेसां। —सू. प्र.

उ०—३ दातारां इक दाय, आथ नहीं जो आप रै। काढै व्याज कराय, रीझ परी दे राजिया। —किरपारांम

५ उदारता।

उ०—सुकवि निवाजै सोमसी, भूप रीझ जस भाख। पाल दिया परमारवै, साठ गांव सौ लाख। —वां. दा.

६ अनुग्रह, कृपा।

उ०—देस मांहि आवतां ही ओठी नूं सीख देर विपत्ति रा महारणव में मग्न मांगळियांणी पुत्र सहित वेस रौ विपरयास करि कैराऊ ग्रांम रा ठाकुर रोहड़िया वारहठ आल्हा रै वास जाइ रही अर थोडा दिनां में वडा विस्वास रै साथ महानस री मालिक होइ चारण री चाकरी में चित लगाइ चातुराई री रीझ चही। —वं. भा.

रू. भे.—रीज, रीझ, रीज, रीझु।

रीझण—वि.—मोहित या मुग्ध होने वाला।

उ०—पर घर रीझण करहला, नीधरिया घर आव। वीजां एक भत्रूकड़ा, वेलां एकौ साव। —अग्यांत

रीझणौ—वि.—१ खुश होने वाला, प्रसन्न होने वाला।

उ०—१ भट चारण गुण भरणै, तिकां रीझणौ सतीखौ। माया ऊवांमणौ, सघण वरसणै सरीखौ। सू. प्र.

उ०—२ तुरंगा कव्यंदां वांवराड़ भड़ां रांम ताखा । निखंगां रीझणा वाड़ जांनकी नरेस । —र. ज. प्र.

२ मोहित होने वाला, मुग्ध होने वाला ।

रीझणौ, रीझबौ–क्रि. अ. [सं. ऋध्, प्रा. रिज्झइ] १ प्रसन्न होना, खुश होना ।

उ०—१ कहणी प्रभु रीझे न कछु, रहणी रीझे रांम । सुपने की सौ म्होर सूं, कोडी सरे न कांम । —ऊ. का.

उ०—२ कहियौ सकति जेम दुज कहियौ । अति रीझै छत्रपति ऊमहियौ । —सू. प्र.

उ०—३ तद पातसाह री हजूर गया । इंयां कनै विद्या हुती सु दिखाई । पातसाह रीझीयौ । —नैणसी

२ मोहित होना, मुग्ध होना ।

उ०—१ नरवर नळराजा-तणउ ढोलउ कुंवर अनूप । रांणि राउ पिंगळ तणी, रीझी देखे रूप । —ढो. मा.

उ०—२ पोहू नूत गांन चंद्रका पेखै । दिल रीझियौ वाग छिवि देखै । —सू. प्र.

३ मस्त होना, मग्न होना ।

उ०—१ सखी अमीणौ साहिबौ, निरभै काळौ नाग । सिर राखै मिण सांमध्रम, रीझै सिंधू राग । —वां. दा.

उ०—२ हरीया राग न रीझबौ, वेद न विद्या पाठ । काया जासी एकली, साथै खफण काठ । —अनुभववांणी

४ तुष्टमान होना ।

उ०—१ रीझ दिया रिड़माल ने, नव कोट नूभै नर । राव मुवां इम रट्टियौ, कमधज जोड़ै कर ।

—ठाकुर जूंझारसिंह मेड़तियौ

उ०—२ सुणि सुरां अरज बोलै लछीस । आदू मौ सेवग अवधि ईस । रीझियौ अहं दसरत्थ राय, अवतार धरूं इण ग्रेह जाय ।

—सू. प्र.

५ उमंगित होना, उत्साहित होना ।

उ०—जइ कुरुदलि भूझउं सस्त्र नइं रनांनि सूझउं । तउ मनि अति रीझउं पाप रेखा न वीझउं । —सालि सूरि

६ प्रेम हर्ष आदि से पुलकित होना ।

उ०—निगरभर तरुवर सघण छांह निसि, पुहपित अति दीप गर पळास । मौरित अंब रीझ रोमंचित, हरखि विकास कमळ कृत हास । —वेलि.

रीझणहार, हारौ (हारी), रीझणियौ—वि.

रीझिओड़ौ, रीझियोड़ौ, रीझ्योड़ौ—भू. का. कृ.

रीझीजणौ, रीझीजबौ—भाव वा.

रिंझणौ, रिंझबौ, रींजणौ, रींजबौ, रींझणौ, रींझबौ, रींझवणौ, रींझववौ, रीजणौ, रीजबौ, रीजवणौ रीजववौ, रीझवणौ, रीझववौ, रीधणौ, रीधबौ । —रू. भे.

रीझळ–वि.—१ प्रसन्न होने वाला, खुश होने वाला ।

२ मोहित या मुग्ध होने वाला ।

३ जानने वाला ।

उ०—गूढ जिकै गुरु मंत्र ज्यूं, चुगली स्रवण सुनंत । राग तांन रीझळ नहीं, ढोलौ सीस धुणंत । —बां. दा.

४ दातार, दानी ।

रीझवणौ, रीझववौ—देखो 'रीझणौ, रीझबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ऊडै लोहां वूर झल, मूर न जाय सरक्क । चढ़ै गजां दांतूसळां, रण रीझवै अरक्क । —बां. दा.

उ०—२ दूहा गूढ़ा गीत स्यूं, कवित कथा बहु भांति । रीझवियौ रांणौ चतुर, क्रीड़ा केलि करंति । —प. च. चौ.

उ०—३ काची कळी न हेळियौ, गुणे न रिझवियोह । हेली थारौ करहलौ गहमाती गमियोह । —अग्यात

रीझवार—देखो 'रिझवार' (रू. भे.)

उ०—असै तमासै अनेक भांति भांति पातिसाहूं की दसतूरी की सिकार । हौसनायकां की जीवन स्रीमहाराजा जी की रीझवार आतुसूं के धमके वांणू की चोट । —सू. प्र.

रीझवारगी–सं. स्त्री.—१ रिझवार होने की अवस्था या भाव ।

२ दान करने की प्रवृत्ति, दान करने का स्वभाव ।

रीझवियोड़ौ—देखो 'रीझियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रीझवियोड़ी)

रीझविहापत–वि. [राज-रीझ+सं. विहापतं=दान] दातार, दानी ।

(अ. मा.)

रीझाणौ, रीझावौ–क्रि. सं. ['रीझणौ' क्रि. का प्रे. रू.] १ प्रसन्न करना, खुश करना ।

२ मोहित करना, मस्त करना ।

३ मस्त करना, मग्न करना ।

उ०—विन पावां जांह नाचिवौ, विण कर ताळ वजाय । विनां राग रीझायबौ, विनां कंठ सुर गाय । —अनुभववांणी

४ तुष्टमान होने के लिए प्रेरित करना ।

५ उमंगित करना, उत्साहित करना ।

३ पुलकित करना

रीझाणहार, हारौ, (हारी), रीझाणियौ–वि.

रीझायोड़ौ—भू. का. कृ.

रीझाईजणौ, रीझाईजबौ—कर्म वा. ।

रिझाणौ, रिंझावौ, रिझवाणौ, रिझवावौ, रिझवारणौ, रिझवारबौ रिझाणौ, रिझावौ, रिझावणौ, रिझाववौ, रीजाणौ, रीजावौ, रीजावणौ, रीजाववौ, रीझावणौ, रीझाववौ ।—रू. भे.

रीझायोड़ौ–भू.का.कृ.—१ प्रसन्न किया हुआ, खुश किया हुआ. २ मोहित

किया हुआ, मुग्ध किया हुआ. ३ मस्त किया हुआ, मग्न किया हुआ, ४ तुष्टमान होने के लिए प्रेरित किया हुआ. ५ उमंगित किया हुआ, उत्साहित किया हुआ ६ पुलकायमान किया हुआ।
(स्त्री. रीझायोड़ी)

रीझाळ, रीझाळू, रीझाळौ—वि.—१ खुश व प्रसन्न होने वाला।
२ मोहित व मुग्ध होने वाला।
३ उदार, दानी।
४ रसिक।

रीझावणौ, रीझावबौ—देखो 'रीझाणौ, रीझावौ' (रू. भे.)
उ०—१ देवण नै रतिदांन जाच जाचूं फिर जाचूं। रीझावण दिन रात नाच नाचूं फिर नाचूं। —ऊ. का.
उ०—२ वाय पखावज ताळ वजावै, सुर गुण गाय जगत रीझावै। —अनुभववांणी
उ०—३ गूंगा राग इलाप कर कोई राव रीझावै। —केसोदास गाडण
उ०—४ भलां परमेस्वर विना आ गूजरी किण सूं प्रीत कर सकै। फगत आपनै रीझावण सारू ईश्वर री जलम व्हियौ। —फुलवाड़ी
रीझावणहार, हारौ (हारी), रीझावणियौ—वि.।
रीझाविओड़ौ, रीझावियोड़ौ, रीझाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।
रीझावीजणौ, रीझावीजबौ—कर्म वा.।

रीझावियोड़ौ—देखो 'रीझायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रीझावियोड़ी)

रीझियोड़ौ, रीझीयोड़ौ—भू. का. कृ.—१ प्रसन्न हुवा हुआ, खुश हुवा हुआ. २ मोहित या मुग्ध हुवा हुआ. ३ मस्त या मग्न हुवा हुआ. ४ तुष्टमान हुवा हुआ. ५ उमंगित या उत्साहित हुवा हुआ. ६ पुलकित हुवा हुआ.
(स्त्री. रीझियोड़ी)

रीझु—देखो 'रीझ' (रू. भे.)
उ०—वेउ हूंफइं वेउ वाकर वाइं राय तणा मनि रीझु ऊपाइं। धरणि धसक्कइ गाजइ गयणु, हारिइ जीतइ जय जय वयणु। —सालिभद्र सूरि

रीझौ—वि.—रीझने वाला।

रीटौ—देखो 'रीटौ' (रू. भे.)

रीठ—सं. पु. [स. रिष्ट=प्रा. रिठ] युद्ध, समर। (डि. को.)
उ०—१ दगै अराव तांम दइवाणां, अगनि चढ़ै धर गिर असमांणां। दुगम रीठ गोळां दरसाई, वीरभद्र जिम घटा वणाई। —सू. प्र.
उ०—२ एक घड़ी धारां झड़ी, रीठ पड़ी रिण वार। दोनूं दुयण 'अजीत' रा, समहर थया संघार। —रा. रू.
उ०—३ भूंडण ई विकराळ चंडी रौ रूप धारचां रीठ वजायौ पण वजायौ। —फुलवाड़ी
[सं. रिष्टिः] २ तलवार।
उ०—१ जात सुभाव न जाय, रांगड़ के वोदौ हुवै। आरण वाज्यां आय, रीठ वजाड़ै राजिया। —किरपारांम
उ०—२ पिसण पीठ खग जो जड़ूं, पिसण जड़ै मो पीठ। किसूं नफौ कह कांमणी, राड़ वजायां रीठ। —बां. दा.
उ०—३ हरीया हौदै ऊपरैं, रावत वाई रीठ। मारचौ राजा मोह कुं, पडचौ तळफ़ै पीठ। —अनुभववांणी
३ शस्त्र।
४ शस्त्र प्रहार, आघात।
उ०—१ गड़क्कै जगाळां नाळां कुंडाळां भणंके गोण। तोडवै तेजाळां रणंताळां में नत्रीठ। दळां पेलां वाळां सजै दंताळां ढाहते दिये। रावतौ वंगाळां मांथै करम्माळां रीठ। —रावत सारंगदेव रौ गीत
उ०—२ पड़ै उत्तवंग चढ़ै तन पीठ। रीदाळां झीक किरमल्ल रीठ। —मा. वचनिका
उ०—३ गांव नजीक वेढ़ हुई, सु वडौ लोह रौ रीठ पड़ियौ। अठै उली-पै'ली घणौ साथ कांम आयौ। —नैणसी
५ शस्त्र प्रहार से उत्पन्न ध्वनि। शब्द, आवाज।
उ०—१ हरवळ 'गजवंध' हुवौ, 'अमर' लड़ियौ उण वारां। खेड़ेचां दिखणियां, रीठ वागौ खग धारां। —सू. प्र.
उ०—२ ताहरां पावूजी खेत बुहारनै लड़ाई कीवी। वडौ रीठ वाजियौ। ताहरां पावूजी कांम आया। —नैणसी
उ०—३ सो पोहर एक तक रीठ वाजियौ। —कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—४ निहसंति जोध नत्रीठि। रिण रूक वायरि रीठ। वे निहस सेन निसंक, किरि रांम रांमण लंक। —गु. रू. वं.
६ असह्य शीत, सर्दी।
उ०—उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पड़िसी रीठ। दोहागिण-घट सांमुहउ, सोहागिण री पीठ। —ढो. मा.
रू. भे.—रिट्ठ, रिठ, रिठि, रीठण।
मह.,—रीठौ।

रीठण—देखो 'रीठ' (रू. भे.)
उ०—फिर दोळा अळगा फिरंग, रण मोळा पड़ रांम। ओला नह ले आउवौ, गोळा रीठण गाम। —अग्यात

रीठौ—सं. पु.—१ एक वड़ा जंगली वृक्ष।
२ इस वृक्ष का फल जो वेर के वरावर होता है।
३ देखो 'रीठ' (मह., रू. भे.)

उ०—सिवां सावतां सहेतो आखाड़ै सोहियो, राग सिधु वजै खाग रीठौ। समर भूपाळ आदेस करतां सहूं, दळां माहेस माहेस दीठौ।
—महेसदास राठौड़ रो गीत

रीढ, रीढक—सं. पु. [सं. रीढकः] १ मनुष्य आदि कुछ विशिष्ट प्राणियों के शरीर के पृष्ठ भाग में गर्दन से कमर तक की सीधी मोटी हड्डी जो पसलियों से जुड़ी रहती है। मेरुदंड।

उ०—इमड़ो वचन सुणि विरोध रो क्रोध विसारि विजय सूर री जोड़ायत कर में कटार झालि साहस ढवण रै काज रीढक रै समीप आप री पीठ फाडि नैत्र-मूढ मूरच्छित बालक नूं······
—वं. भा.

२ किसी बात या विषय का मूल आधार।

३ नाश, संहार।

४ फूंक और वायु से बजने वाले वाद्यों में स्वर बनाने वाली वस्तु।

रीढणौ, रीढबौ—क्रि. स.—मर्यादा का उल्लंघन करना, अवज्ञा करना।

रीढा—सं. स्त्री.—हठ, जिद्द, दुराग्रह।

उ०—साह्यो हठ वप्पवस विरुद वढावन कों। रावन कों रीढा दै सिटावन को साह्यो नां।
—महाकवि सूरजमल्ल

रीढियोड़ौ—भू. का. कृ.—हठ या जिद्द किया हुआ, दुराग्रह किया हुआ। (स्त्री. रीढियोड़ी)

रीणयंबर—देखो 'रणथंबोर' (रू. भे.)

उ०—पछै दिन २ अजमेर रह नै साहजहां रीणयंबर री पाखती होय आगरै आयो।
—नैणसी

रीणवास—देखो 'रणवास' (रू. भे.)

उ०—थाप्या साहण वर तुरी। थाप्या मंदिर घरि कविलास। थाप्या चौरा चउखडि। थाप्या सांभरि का रीणवास।
—बी. दे.

रीणायर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—थळ माथै निवांण करि नर कांय लोडै नीर। नाळै खोळै न मिळै, रीणायर वीणि हीर।
—बील्होजी

रीणौ—१ देखो 'रण' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—झीणो करह कहूकीयो, रीणो मभि कराह। जांणै फूलांणी कांबाटीयो, ऊमाहीयो घरांह।
—लाखा फूलांणी री वात

२ देखो 'रिसांणौ' (रू. भे.)

रीत—सं. स्त्री. [सं. रीतिः] १ प्रथा, रस्म, रिवाज, परम्परा, रीति।

उ०—१ एक कहै आप रै, कियो मत स्वारथ कज्जै। एक कहै अण-गंम, रीत अण प्रीत सु रज्जै।
—रा. रू.

उ०—२ पैं'ली वै: बिहाल की बात नै डाढी चोखी बतावै, जिका ही पछै वीं बात री माड़ी चुगली करण लाग ज्यावै। दुनियां रो इसो धारो है, इसी रीत है। जगती रा भूठा जाळ है, पापां रा लपचेहु पंपाळ है।
—दसदोख

उ०—३ ससतर सुं नहीं छेदीयै, पावक लगै न सीत। हरीया ऐसी ब्रह्म की, उद बुद कहीयै रीत।
—अनुभववांणी

२ तौर, तरीका, ढंग, विधि।

उ०—१ साथ 'सवाई' तँड़ियो 'जोध' हरै 'जैसाह'। रीत विविध मनुहार री, अति उद्धरी अथाह।
—रा. रू.

उ०—२ राज काज रीत नीत बूझतो रह्यो। वाट आंधरे कि यार सूझतो रह्यो।
—ऊ. का.

३ नियम, कायदा।

उ०—१ आरा मांहि थी लापसी ल्याया सो तो उणां रा टोळा री रीत है पिण नेम में द्रढ़ रह्यो। काल कर गयो पिण काचो पांणी पीधो नहीं।
—भि. द्र.

उ०—२ सिस सेती सतगुर कहै, परापरी की रीत। और भरम कुं छाडि दे, रांम नांम सुं प्रीत।
—अनुभववांणी

४ स्वभाव, आदत, प्रकृति।

उ०—१ राव रंक धन और, सूरवीर गुणवांन सठ। जात तणो नह जोर, रीत तणो गुण राजिया।
—किरपारांम

उ०—२ सूर सती अर साध की, हरीया हेको रीत। ऊ त्यागै तन सांम कजि, हरिजन हरि की प्रीत।
—अनुभववांणी

५ मर्यादा।

उ० – कठण रीत रजपूत कुळ, खाग कमाई खाय। और कमाई आदरै गोलो भगड़ै गाय।
—बां. दा.

६ स्थिति।

उ०—क्रत पूरण वधियो कळ रीत दवापुर राज। वंस हंस अव-तंस विध, अभैसाह' महाराज।
—रा. रू.

७ धार्मिक विधान।

उ०—किण सूं जे पैगंबर रीत रा, बांधण हार छै अर बादसाह उण रा चलावण हार छै सो हिमायत करण हार उण री रीत रो कहियो छै।
—नी. प्र.

८ वर पक्ष की ओर से कन्या के पिता को, कन्या का सम्बन्ध करने के उपलक्ष में दिया जाने वाला, धन, रुपया आदि।

उ०—वर कन्या सनमन समै, तुलतै मांनु तराज। वर हळको (जद) टीको धरत, वर गुरु रीत रिवाज।
—उभयराज

रू. भे.—रिति, रिती, रीति, रीती।

रीतभांत—सं. स्त्री.—तौर, तरीका, ढंग, रीति।

रीत रिवाज—सं. पु.—रस्मो रिवाज, प्रथा, परम्परा।

उ०—जुग री जांणकारी राखतो थको आपरै गांवड़ै में मांड़ी रीत रिवाजां मिटावण नै नो जुवांनां रो संगठण करै है
—दसदोख

रीतवणौ, रीतववौ—क्रि. अ.— खाली होना, रिक्त होना ।

उ०—भरया सरवर रीतवै रीता जळ भारै । —कैसोदास गाडण

रीतवियोड़ौ—भू. का. कृ.—खाली हुवा हुआ ।

(स्त्री. रीतवियोड़ी)

रीतहड़, रीतहर, रीतहरी—सं. स्त्री.—शकुन शास्त्र के अनुसार ऊंघ दिशा का नाम । वि. वि.—देखो 'दिसा चक्र' ।

उ०—१ दीखरण-दहीया कोहर कुसलवै वरणाऊं चांमु । १ उत्तर नुं-घटीयाळी भेळ, बीकानेर था । १ रीतहड़-वाप कीरखंड री वा सींव पुड़ीयाळ सीरड़ सींव । —नैणसी

उ०—२ हासलपुर खुरद सोभत था कोस ६ रीतहड़ कूंण मां है । जाट खारोळ वसै । —नैणसी

उ०—३ खुटली कोस ६ रीतहर कूंण मां है । जाट पलीवाळ वसै । —नैणसी

उ०—४ हरसीयाहड़ो सोभत था कोस ७ रीतहर कूंण मां है । जाट वांणिया खारोळ वसै । —नैणसी

उ०—५ गोधेळाव कोस ४ रीतहरी कूंण माहे । जाट वसै । —नैणसी

रीति, रीती—सं. स्त्री. [सं. रीतिः] १ गीत या गायन की लय, तर्ज ।

उ० - सदा प्रिया सु प्रीति रीति, गीत सारणी नहीं । निसास रोज आंननी, उरोज वारणी नही । —ऊ का.

२ सस्कृत साहित्य में किसी विषय का वर्णन करने में वर्णों की वह योजना जिसमें ओज, प्रसाद या माधुर्य आता हो । यह चार प्रकार की मानी गई है ।

३ राजस्थानी या हिन्दी साहित्य की मध्य युगीन काव्य रचना की प्रणाली या शैली विशेष जो आचार्यों द्वारा निरुपित शास्त्रीय नियमों, लक्षणों आदि पर निर्भर थी । और जिसमें वर्ण मैत्री, अलंकार जथा उक्ति, पिंगल (छन्द शास्त्र), रस आदि का पूरा ध्यान रखा जाता था । इस प्रकार के ग्रंथों के नाम, रीति ग्रन्थ कहलाते थे । जैसे राजस्थानी में रघुनाथ रूपक, रघुवर-जस-प्रकास आदि ।

४—देखो 'रीत' (रू. भे.)

उ०—१ रोकी तैं कुरीति रीति सुरीति को भोंकी साथ, ताकत त्रिलोकी ऐसो मत अवगाह्यो तैं । —ऊ. का.

उ०—२ दांन देन सिख्यो आंन राखन को सीख्यो दिव्य, सीख्यो थांन ग्यांन मांन मुद्ध सीख्यो तू । साहस सरीर सीख्यो नीर छीर प्रीति सीख्यो, सीख्यो धीर रीति वड वीर वुद्धि सीख्यों तू । —ऊ. का.

उ०—३ रीती को लिहाज विपरीत ना लिहाज राख्यो, राख्यो मांन मांन कै न हांन वीच राख्यो तैं । —ऊ. का.

रीतोड़—सं. पु. [सं. रिक्त] 'झेलवे कुए में चरस खाली होने के वाद वैलों के लौटने का रास्ता ।

वि. वि.—देखो 'झेलवौं' ।

रीतौ—वि. [सं. रिक्त] (स्त्री. रीती) १ रिक्त, खाली ।

उ०—१ वरसि के वंन मांहि वीता, ग्यांन गोविंद रूप गीता । राकसां रा नेस रीता, आतम अजीता । —पी. ग्रं.

उ०—२ खाटी दाटी रहि गई, कुछी न चाली साथि । जन हरिया नर दीन विन, हाल्यी रीतै हाथि । – अनुभववांणी

उ०—३ आदि अनादि जीवड़ो, भमियो चऊं गति माय । अरहट घटि का नी परै, भरि आवै रीती जाय । —जयवांणी

२ अज्ञ, अज्ञानी ।

उ०—नर राची म्है न लखी, तू कत लख्यो सुजांन । पढ कुरांण रीतौ रह्यौ, राच्यौ नहीं रहमान । —अज्ञात

३ परवश, पराधीन, मोहताज ।

उ०—रांम नांम न चेतियो, आळस करि करि अंग । हरीया सै रीता रह्या, सूरां कूकर संग । —अनुभववांणी

४ गरीव, निर्धन, कंगाल ।

५ हताश, निराश ।

उ०—खळ चीघात विखम सी खोसै, वायक तोपां रह्यौ वणाय । दुरंग न दीधो दस सहसै, पात गयी रीतौ पतसाय ।

—महारांणा कूंभा रो गीत

६ रहित, विहीन ।

रीध—देखो 'रिद्धि' (रू. भे.)

उ०—भीवै मन मांहे जांण्यो वावड़ी मांहे किसूं करै छै । यां जांण वरंडी रा छेकड़ा मांहे जोवै । तठै देखै तो अस्त्री छै । देख नै माथो धूंणै छै । नै जांण्यो परमेस्वर रा घर मांहे घणी रीध छै, नै आ जो म्हारै वैर होय नै इण रै पेट रो कोई नग नीपजै तो हूं पृथ्वी मांहे अमर होवूं ।

—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

रीधणौ, रीधवौ—देखो 'रीझणौ, रीझवौ' (रू. भे.)

उ०—१ स्रम थोड़ै वोह नफो सांपजै, वीसर मती अनोखी वात । रहै प्रसन्न ऐं आयस रीधै, छात सिघां नरपतियां छात । —वां. दा.

उ०—२ मिळिया वंका राठवड़, चित हित दाख वचाव । सुख जाडो कीधो सगै, रीधौ हाडो राव । —रा. रू.

उ०—३ कवि आखर ज्यूं 'करन' तरण, मरहट्टी महिळाव । कुच आवा ढकिया निरखि, रीधौ चाळक राव । —वां. दा.

उ०—४ रायधण रात दिन सजनळ सूं नजरां सूं जोवती रहै, पण औ जांणै नहीं आ वैर छै कै मांटी छै । इयै रै रूप पर रीधी रहै । —रायधण भाटी री वारता

उ०—५ रवद पिराग देखि छिव रीधा, डेरा आय गंग तटि दीधा ।

पहरे जवन सवज पोसाकां, असि चहुंवै चढिया एराकां। —सू. प्र.

उ०—६ नरपति रहियो जैनगर, परम रिदै घर प्रीत। रीघौ भूप विलाम रस, कीधौ चैत विनीत। —रा. रू.

उ०—७ निजर नमो नरसंघ, कोप दांणव सिर कीधौ। लाधा थारा लगण, रांम भगतां सिरि रीधौ —पी. ग्रं.

उ०—८ तवै भू अहल्या गणका तराई, रटां बोर भीलणी तणा साय रीधौ। करां ताड़का मार ऊधार सांमी, करां ग्रीव वाळी यळै स्राध कीधौ। —र. ज. प्र.

उ०—९ राजा देखि कतूहळ रीधौ, दुगम जांणि चित सोच न कीधौ। धारण वीर तांम इम धरियौ, देखै मूझ भूप न डरियौ। —सू. प्र.

रीघणहार, हारौ (हारी), रीघणियौ—वि.।

रीधिग्रोड़ो, रीधियोड़ौ, रीध्योड़ौ—भू. का. कृ.।

रीधीजणौ, रीधीजबौ—भाव वा.।

रीघल—देखो 'रीझल' (रू. भे)

उ०—१ खागलां झलां ओखलां खोव, घायलां मलां घूमलां घोव। रीघलां रिलां ऊजळां रत्त, गउथलां भडां भड खळा गत्त। —गु. रू. बं.

रीम-सं. स्त्री—१ बीस दस्ते कागजों की गड्डी।

२ तलवार। (ना. डि. को)

रीयांणौ—देखो 'रिसांणौ' (रू. भे.)

रीर-सं. स्त्री.—१ प्रलाप।

उ०—१ रीर करइ हसइ, धसइ ऊध्रसइ अंग। क्षणु खीजइ क्षणु मांहि क्षमा क्षणि गहिलुं क्षणु चंग —मा. कां. प्र.

उ०—२ तिहार-पछी ते विह्वलइ, सिद्धि न सांन सरीर। कामकंदला कही कही, रोतु पाटइ रीर। —मा. कां प्र.

रीराटौ-सं. पु.—दर्द भरी आवाज, कराहट।

उ०—१ पछै स्वांमी जी पधारचा। धसक सूं ताव चढ आयो। गांझै दरसण करवा आई। जदै स्वांमी जी पूछ्यो। कांई थयो? यूं वयूं बोनै है। जद रीराटा करती कहै स्वांमी जी आप री पधारणो हुवो नै मोने ताव चड गयो। —भि. द्र.

रीराड़णौ, रीराड़बौ—देखो 'रीराणौ, रीराबौ' (रू. भे.)

रीराणौ, रीराबौ-क्रि. अ.—१ गिड़गिड़ाना।

उ०—१ जिण तिण री मुख जोय, निसचै दुख कहणो नहीं। काढ न दे वित्त कोय, रीरायां सूं राजिया। —किरपारांम

२ रुदन करना, रोना।

३ दुःख प्रगट करना।

रीराणहार, हारौ (हारी), रीराणियौ—वि.।

रीरायोड़ौ—भू. का. कृ.।

रीराईजणौ, रीराईजबौ—भाव वा.।

रीराड़णौ, रीराड़बौ, रीराणौ, रीराबौ, रीरावणौ, रीराववौ रू. भे.।

रीरायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ गिड़गिड़ाया हुआ. २ रुदन किया हुआ. ३ दुःख वर्णन किया हुआ.

(स्त्री. रीरायोड़ी)

रीरावणौ, रीराववौ—देखो 'रीराणौ रीराबौ' (रू. भे.)

उ०—१ भावे नहींज भात, लागै विणज विडावणो। रीरावै दिनरात रोस्यां वदळै राजिया। —किरपारांम

उ०—२ घरै न संका धीर, रीरावां रात्यू दिवस। सबळी मांहि सरीर, वेदन त्हारी वींझरा। —वींझरै अहीर ही वात

रीरावणहार, हारौ (हारी), रीरावणियौ—वि.।

रीराविग्रोड़ौ, रीरावियोड़ौ, रीराव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

रीरावीजणौ, रीरावीजबौ—भाव वा.।

रीरावियोड़ौ—देखो 'रीरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रीरावियोड़ी)

रीरी-सं. पु. [सं. रिरी] १ पीतल।

उ०—१ जउ लाधउ जिनधरम निरव्याज तउ अनेरइ धर्मि किसिउं काज, जउ लाधी सुवरण्ण तणीं कोडि तु रीरी पहिरवां हुइ खोडि। —व. स.

उ०—२ किहां रीरी किहां वरकणय, किहां दीवउ किहां भांण। सांमिणि मझ तुझ अंतरउं, ए एवडउं प्रमांण। —हीराणंद सूरि

रीरीया-सं. स्त्री.—१ गिड़गिड़ाना, विलबिलाना।

उ०—१ वाजवा लागी सुभट तणी कोटकडि, नाचेवा लागा घड़कवंध, पडिवा लागा ध्वजचिंध, प्रहार जरजर कुंजर पडइ, सूना सणा तुरंगम तडफडइं भारडीता गजेन्द्र आरडइं, रीरीया करता राउत हथिआर हारइ। —व. स.

रीळ-सं. स्त्री.—सहसा या रह रह कर उठने वाली वह पीड़ा या दर्द जिसके कारण शरीर का भीतरी भाग चीरता हुआ प्रतीत होता है, हूल।

उ०—१ सांचो सांचो दवायो। हाल जच्चा रै पेट में रीळां हालती ही। टील चभक चभक करतो ही। —फुलवाड़ी

उ०—२ कै तो आव घड़ी पै'ली वांरा दांत किटकिट बाजता हा, हाडकां में रीळां ऊठती ही। —फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—ऊठणी, चलणी, चालणी, हालणी।

२ शीतल वायु की लहर।

रू. भे.—रीळी।

रील-सं. स्त्री.—१ प्लास्टिक का फीता जिस पर किसी नाटक या खेल के प्रतिछायात्मक चित्र होते हैं और जिसे मशीन पर चढा

कर, पर्दे पर उन चित्रों के प्रतिबिंब देखे जाते हैं।

उ०—१ सपनै री घटना सिनेमे री धुंधळी रील री दायी एक आंखियां रै आगै फुरती सूं घूमगी। —वरसगांठ

२ बारीक और पक्के डोरे का गट्टा।

रीळी—देखो 'रीळ' (रू. भे.)

रीव-सं. स्त्री. [सं. रवः] हाहाकार, करुणा क्रंदन।

उ०—१ जोयउ चक्रवर्त्ती आठमउ, संभूम नउ जीव। सातमियउ नरकइ गयउ, करतउ मुख रीव। —स. कु.

उ०—२ किरिया करतां दोहिली जी आलम आंणइ जीव। धरम पखइ धंधइ पड़चौजी नर कइक करस्यइ रीव। —स. कु.

२ पीड़ा, कष्ट।

उ०—मोह मंद्यं सरिखूं कहिउरे घारिउ हींडइ जीव। परवसि थयु ते नवि जांणइ अण नरक रै दोहिली रीव। —स. कु.

३ चिल्लाहट।

उ०—रीव करइं वलि तरफलो रे जिय थोड़े जळ मीन। —वि. कु.

मह.,—रीवौ।

रीवणौ, रीववौ-क्रि. अ.—रोना, रुदन करना।

उ०—१ सबद झलका तन सहै, मना न आंणै संक। रावत सोहि मरि रहै, हरिया रीवै रंक। —अनुभववांणी

२ कराहना।

उ०—सबद मारको मारियो, रीवै सास उसास। हरिया बाहिर बोलिकै, काढि न संवै वास। —अनुभववांणी

रीवौ—देखो 'रीव' (मह., रू. भे.)

उ०—तउ तुं मूकइ नामूकूं गही, तिण परि नाटकी जीवो जी। परमाहम्मी खिण मूकइ नहीं, तिहां पच्यउते करइ रीवो जी। —स. कु.

रीस-सं. स्त्री. [सं. रिष् या रोष्] १ क्रोध, गुस्सा, कोप।

उ०—१ उगा मुख बारह दीत उदार, भिड़े तिणवार मुंछार भुंहार। जोए जुध रीस चढी वरजागि, उठी व्रत सीचिय जांणिक आगि। —सू. प्र.

उ०—२ काचड़गारा ऊपरा, रांमतणी हे रीस। काचड़गारा कूड़चा, बिगड़ै बिसावीस। —बां. दा.

क्रि. प्र.—आंणी, ऊठणी, करणी, चढणी।

२ डाह, ईर्ष्या।

रू. भे.—रीसौ।

रीसड़ली—देखो 'रीस' (अल्पा., रू. भे.)

रीसट, रीसटाळ, रीसटियौ, रीसटौ, रीसट्ट-वि.—कोप या क्रोध करने वाला, क्रोधी, गुस्सैल।

उ०—१ सूरे जी रै बेटौ बेरसी वरस आठ री खींवै रै बेटौ जागर वरस दस रौ सो सयांणौ अर बेरसी रौ सुभाव वादी रीसट सो सारा जाणै। —सूरै खींवै कांधलौत री वात

उ०—२ वळि रीसट वांणियौ दूत बोलै इम डोलै। —ध. व. ग्रं.

रीसणौ, रीसबौ-क्रि. अ. [सं. रिष् या रुष] १ क्रुध होना, खफा होना।

उ०—लखी; तोपां सालुळी, पुळी पलटण्यां पटैतां। संगीना सावळां, आभ छायौ अखड़ैतां। तीर कमांणां तोकि रिमां ऊपर रीसाणां। आंणां पोस नत्रीठ, पीठ खेटक खग पांणां॥ —मे. म.

क्रि. स.—२ क्रोध करना, कोप करना।

उ०—दोख निज दीह न दीसै रे, रमा अवरां पर रीसै रे। बात निज हाथ बिगाडी रे आई सोई पांत अगाडी रे॥ —ऊ. का.

रीसवंतौ-वि. [स्त्री. रीसवंती] १ क्रुद्ध स्वभाववाला, क्रोधी।

रीसवाड़णौ, रीसवाड़बौ—देखो 'रीसाणौ रीसावौ' (रू. भे.)

उ०—तद रावत रिणधीर नै 'सतौ' एक था। पछै सतै रिणधीर ही नुं रीसवाड़ियौ। तरै रिणधीर ही मेवाड़ आयौ। —राव रिणमल री वात

रीसांणउ, रीसांणौ—देखो 'रिसांणौ'।

उ०—सु किणीक वास्तै रीसांणौ हुवौ तरै छाडनै अहमदाबाद रा धणी रै चाकर मूसाखांन तिण कनै गियौ। —नैणसी

रीसाणौ, रीसावौ-क्रि. स.—१ क्रोध करना, कोप करना।

क्रि. अ.—कुपित होना, क्रुद्ध होना।

रीसायोड़ौ-भू. का. कृ.—क्रोध किया हुआ. २ कुपित हुवा हुआ।

(स्त्री. रीसायोड़ी)

रीसाळ, रीसाळू-वि.—क्रोध करने वाला, गुस्सा करने वाला।

२ डाह करने वाला, ईर्ष्या करने वाला।

रीसावणौ, रीसाववौ—देखो 'रीसाणौ, रीसावौ' (रू. भे.)

उ०—१ सांच कहियां थकां स्यांम रीसावस्यौ, कहैं वा वात साची कहायौ। पड़दळी मांय जे न हुतौ जोधपुर, आप रै कहौ किण रीत आयौ। —सवाईसिंह चांपावत री गीत

रीसावियोड़ौ—देखो 'रीसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रीसावियोड़ी)

रीसियोड़ौ-भू. का. कृ.—क्रोध किया हुआ, क्रुध।

(स्त्री. रीसियोड़ी)

रीसोद-वि.—१ क्रोध करने वाला, कोप करने वाला।

उ०—नाराजां आरांण झली बीजळी सिलाव नेजां, दुहूं फौजां उलळी दारणा मळी दीठ। लड़ाका रीसोद आडी चौड़े धाड़ै धाख लागी, राड़ी चौड़े सीसोदां गनीमां वागी रीठ। —बद्रीदास खिड़ियौ

रीसो—देखो 'रीस' (रू. भे.)

उ०—क्षमां धरम पहिलो खरो, इम भाख्यो जगदीसो रे । क्षमां करतो तो जीतसो, मत राखो कोई रीसो रे । —जयवांणी

रुं—देखो 'रोम' (रू. भे.)

रुंग्राळी—देखो 'रोमावळी' (रू. भे.)

रुंग्रो—देखो 'रोम' (रू. भे.)

रुंड—सं. पु. [सं. रुण्ड:, रुण्टम्] १ शिर शून्य शरीर, बिना शिर का धड़ कबंध ।

उ०—१ गौड़ राजा अरजुणसिंघ वैरियां रा थाट विरोळि वैंडा गजां रै चाचर चंद्रहास चलाइ सैंकड़ां सूरां नूं साथी करि महारुद्र री माळा में आपरा मुंड रो मेरु चढाइ रुंड थको भी धारा में तिल तिल पळचरां री पांती पुद्गल राखि इस्टलोक पुगो । —वं. भा.

उ०—२ संधार मार लैकार सेन, मिळ सार धार अंधार मेन । धड़ मुंड गंड वै रुंड धक्क, करमाळ वहे किरि काळ चक्क ।

—गु. रू. वं.

२ ऐसा शरीर जिसके हाथ पांव कट गये हों ।

३ शिर, मस्तक । (अ. मा.)

उ०—पड़ भाट झड़ झड़, काट कोरड़, छूटै लंबछड़, ताड़ तड़तड़ । वांण छूट वड़, सोक सड़सड़, फूट फिफरड़, कलिज झड़ फड़ । अंतड़ उधरड़, लोक लड़थड़, उळझ आखड़, रुंड रड़वड़ । पंख भड़ पड़. बीर बड़ बड़, अच्छर अड़वड़, धरा धड़हड़, इसो मचि आरांण । —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

यौ.—रुंडमाळ, रुंडमाळा ।

३ युद्ध के समय बजाया जाने वाला एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

रू. भे.—रुंट, अल्पा.,—रुंडलो, रूंडलो, मह.—रूंडल ।

रुंडमाळ, रुंडमाळका, रुंडमाळा—सं. स्त्री.—युद्ध में वीरगति प्राप्त वीरों के शिरों की माळा जिसे महादेव अपने गले में धारण करते हैं ।

उ०—१ पंचां मभि स्रोण वहे अणपार, जटा गग जांणिक धार हजार । वधंबर जेम खिचै विकराळ, मंडै गळि माळ जिका रुंडमाळ । —सू. प्र.

उ०—२ ताळ कर दियै मिळ भूत वैताळ का, करै किलकार रत नृत्य कै काळका । मरै जटधार धू कियां रुंडमाळका, आंन भड़ जीविया जिकै ले आळका । —जोरजी चांपावत री गीत

उ०—३ वरंगन कंठ धरै वरमाळ, रुकां उडि सीस चढै रुंडमाळ । पुरन्दर सूर जोड़ै हिज पाय, जई रथ बैठि घसै ग्रगि जाय ।

—सू. प्र.

उ०—४ कराळी धदधो वैन पै नैर लगो । चढी सिंघ काळी लगै दैत भग्गो । गिरिमादिक मेखळी रुंडमाला, गिरै अंत तंतावळी अग्ग ग्राळा । —ला. रा.

रू. भे.—रुंडमाळ, रुंडमाळा, रुंडमाळी, रुंडावळ, रुंडावळी, रूंडमाळ ।

रुंडमाळी—सं. पु.—१ रुंडों या शिरों की माळा धारण करने वाला, शिव, महादेव ।

स. स्त्री.—२ महाचंडी, रणचंडी, दुर्गा ।

३ देखो 'रुंडमाळा' (रू. भे.)

उ०—चौतरफां सतारेस चमू वरतेस चाली, पत्र पूर काळी हकै पाळी रत्र पीध । तपै कांन ताळी वज्र सिधां जच्र खुलै ताळी, किलकै कपाळी रुंडमाळी मेर कीध । —करणीदांन कवियो

रुंडमुंड—वि.—मुंडे हुए शिरका, मुंडित ।

रुंडळ—देखो 'रुंड' (मह. रू. भे.)

उ०—झट्टकै झाट ओझड़ी झोर, फेरी फुरंत फारक्क फोर । तांडलां दळां डूंगळां ट्रूक, रुंडळा रुलां सीकळां रूक । —गु. रू. वं.

रुंडहार—देखो 'मुंडमाळा' ।

उ०—मैमंता विभाड़ रथ्थी प्राहां रंगां भाराथ मैं, महाबंकी वार पांव अचल्लां मांडीस । वारुंवार भूतळेस ले रुंडहार भार वणी, प्रथीनाथ जहं वार भाटकै पांडीस । —भगतराम हाडा री गीत

रुंडावळ, रुंडावळी—देखो 'रुंडमाळा' (रू. भे.)

उ०—क्रुध भयंकर जैत सदा जुध, संग वसू सिध मौन समप्पै । ज्यूं भस्मी तन व्याळ रुंडावळ, हैत हळाहळ कंठ करप्पै ।

—क. कु. बो.

रुंडिका—सं. स्त्री. [सं.] युद्ध भूमि, युद्ध स्थल ।

रुंदणो, रुंदवो—क्रि. अ.—१ पैरों तले कुचला जाना ।

२ देखो 'रूंदणो, रूंदवो' (रू. भे.)

३ देखो 'रुंधणो, रुंधवो' (रू. भे.)

रुंदवाणो, रुंदवावो—क्रि. स.—पैरों तले कुचलवाना, रोंदवाना ।

रुंदियोड़ो—१ देखो 'रूंदियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'रूंधियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. रुंदियोड़ी)

रुंध—देखो 'रुंध' (रू. भे.)

रुंधणो, रुंधवो—देखो 'रूंधणो, रूंधवो' (रू. भे.)

उ०—१ चंदन तापइ ससि जळइ, पवन करइ प्रकास । मेह तणां मग रुंधिया, ग्रहो रे आसो मास । —मा. कां. प्र.

उ०—२ हरि हथिआर हलावतां, मुक त्यह रुंधि वट्टि । तै मुझ सीधइं आविजे. नाकि घणा जिवि घट्टि । —मा. कां. प्र.

रुंधियोड़ो—देखो 'रूंधियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. रुंधियोड़ी)

रुंमड़ो—सं. स्त्री.—एक प्रकार की हरी सब्जी विशेष ।

उ०—रांमोड़ी नई रासना, रींगणि रुद्र जटाय । राग रतांजणी रुंमड़ी, रनि वनि रंग धराय । —मा. का. प्र.

रुंवाळी—देखो 'रोमावली' (रू. भे.)

उ०—१ आज म्हारै मन मांयली बात पूरी, रुंवाळी रसीली वर्णी है । —दसदोख

रुग्रड़ो, रुग्रडौ—देखो 'रूड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ जिन वांणी छै रुग्रड़ी । —धरम पत्र

उ०—२ राजकुमार अमै रुग्रडा । —धरम पत्र

(स्त्री. रुग्रड़ी, रुग्रडी)

रुग्राव—देखो 'रौब' (रू. भे.)

रुग्रामाळ—सं. पु.—१ रुमाल (रू. भे.)

उ०—उरं ओर के सास अभ्यास आंणै, वडा जूह पूंतारिया पील-वांणै । गंडां मार वैसारिआ नीठ गजं, रुग्रामाळ फेरै करै भाड़ि रजं । —वचनिका

२ देखो 'रोमावळी' (रू. भे.)

रुग्रामाळी—देखो 'रोमावळी' (रू. भे.)

रुइ—१ देखो 'रुचि' (रू. भे.)

२ देखो 'रुई' (रू. भे.)

रुइर—देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

रुई—सं. स्त्री.—१ देखो 'रुचि' (रू. भे.)

२ देखो 'रुई' (रू भे.)

रुईदार—देखो 'रूईदार' (रू. भे.)

रुग्रोड़ी—देखो 'रसोई' (रू. भे.)

रुक—देखो 'रूक' (रू. भे.)

उ०—वरंगन कठ घरै वरमाळ, रुकां उडी सीस चढ़ै रुंडमाळ । —सू. प्र.

रुकड़—देखो 'रूक' (मह., रू. भे.)

रुकणी—सं. स्त्री.—रोक, बंधन, रुकावट ।

उ०—अरु अेक दिन दिली में मा'राज पदमसिंघजी वा जैसींघजी रा कंवर रांमसींघजी श्रै दोय सिरदार सैल करण नै गया हा तठै रुकणी में आय गया । —द. दा.

रुकणौ, रुकबौ—क्रि. अ.—१ रास्ता आदि ठीक न मिलने के कारण ठहर जाना, आगे न वढ़ सकना, अवरुद्ध होना, अटकना ।

२ अपनी इच्छा से ही ठहर जाना, अगाड़ी न वढ़ना ।

३ किसी कार्य का आगे न चलना, चलते हुए कार्य का बंद हो जाना ।

४ किसी चलते हुए क्रम या सिलसिले का अवरुद्ध होना, वंद होना ।

५ किसी कार्य का वीच में ही वन्द हो जाना, काम आगे न होना ।

६ मैथुन या सहवास के समय पुरुष का ऐसी अवस्था में होना कि उसका वीर्यपात न हो ।

रुकणहार, हारौ (हारी), रुकणियौ—वि.

रुकिग्रोड़ो, रुकियोड़ौ, रुक्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

रुकीजणौ, रुकीजबौ—भाव वा. ।

रुकनावाद—सं. पु. [फा. रुकनावाद] १ मुसलमानों का एक तीर्थ स्थान । (बां. दा. ख्यात)

२ ईरान में शीराज के पास वहने वाली नदी ।

रुकमंगद—देखो 'रुक्मांगद' (रू. भे.)

रुकम—सं. पु. [सं. रुक्मन्] १ स्वर्ण, सोना । (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ विध विध आभूखणां जवाहर, लख वगसै जस सुद्रढ लियौ । सिलासार पलटै अंग सुकवि, कमंध रुकमकर रुकम कियौ । —मांनजी लाळस

उ०—२ जग पुड़ 'जगा' पाखरां जंगम, रिमहर माथै धात रह । रुकमां जोख जोखियां रांणा, पड़ियौ जोखै दिली पह । —महाराणा जगतसिंह रो गीत

[सं. रुक्मी] २ विदर्भ देशाधिपति भीष्मक राजा के सव से वडे पुत्र का नाम ।

उ०—पंच पुत्र ताइ छठी सुपुत्री, कुंग्रर रुकम कहि विमळ कथ । रुकमवाहु अनै रुकमाळी, रुकमकेस अनै रुकमरथ । —वेलि

रू भे.—रुकमौ, रुकुम, रुकुमी, रुखम ।

अल्पा.—रुकमइयौ, रुकमणियौ, रुकमयौ, रुकमैयौ, रुखमइयौ ।

३ लखपत पिंगळ के अनुसार एक मात्रिक छंद विशेष ।

रुकमइयौ—देखो 'रुकम' (रू. भे.)

उ०—१ रुकमइयौ पेखि तपत आरणि रणि, पेखि रुकमणी जळ प्रसन । तणु लोहार वांम कर निय तणु, माहव किउ सांडसी मन । —वेलि ।

उ०—२ रुकमइयौ सिसपाळ बुलायौ, नहिं मुख देखूं वाकौ । थांका विड़द कूं लोग हसेगौ, जिव जावैगौ म्हांकौ । —मीरां

रुकमकर—सं. पु. यौ. [सं. रुक्म+कर] पारस ।

उ०—विध विध आभूखणां जवाहर, लख वगसै जस सुद्रढ लियौ । सिलासार पलटै अंग सुकवि, कमंध रुकमकर रुकम कियौ । —मांनजी लाळस

रुकमकारक—सं. पु. [सं. रुक्मकारक] सोना, स्वर्ण ।

रुकमकेस—सं. पु. [सं. रुक्मकेश] विदर्भ देशाधिपति भीष्मक राजा के पांच पुत्रों में से चतुर्थ पुत्र का नाम ।

उ०—तिहि राजा के पांच पुत्र छठी पुत्री । एक कउ नांम रुकम ।

दूजो रुकमबाह। तीजो रुकमाळी। चोथो रुकमकेस।
—बेलि टी.

वि. वि.—देखो 'रुकम' (२)

रुकमण—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)

उ०—१ वहियो गज वारीह, तूं रुकमण प्यारी तणै। मदती हरि म्हारीह, धजवंधी धारी नहीं। —रांमनाथ कवियो

उ०—२ राधाई रुकमण श्रोर सतभांमा, कुब्जा कांई (थारै) संग पटै। मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तुम सुमरां सूं म्हांको संकट कटै। —मीरां

रुकमणकंत, रुकमणकंथ—सं. पु. यौ. [सं. रुक्मिणीकांत] १ ईश्वर, परमेश्वर। (ह. नां. मा.)

२ श्री कृष्ण।

रुकमणवरण—सं. पु. यौ. [सं. रुक्मिणी+वरण] श्री कृष्ण।

(अ. मा.)

रुकमणि—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)

उ०—१ परि असरीखीय मांटइ ए मांटइ पाडि सुषामि। जपइ ए रमणि सिरोमणी, रुकमणि रांणिय रोलि।
—जयसेगर सूरि

उ०—२ यो सिसपाल चंदेरी को राजा, कूड़ी साखि भरैगो। मीरां कहै यूं रुकमणि कहत है, थांको ही विड़द लजैगो। —मीरां

रुकमणियो—देखो 'रुकम' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—हां ए साजन भीकमजी री धीय रुकमणिया री कहिजै बेनड़ी केसरिया स्रीक्रसण री नार। —लो. गी.

रुकमणिरमण—सं. पु. यौ. [सं. रुक्मिणी रमण] श्री कृष्ण।

रुकमणिवींद—सं. पु. यौ. [सं रुक्मिणी-विंद] श्री कृष्ण।

रुकमणिहार—सं. पु. यौ. [सं. रुक्मिणी+हार] १ विष्णु।
(डि. नां. मा.)

२ श्रीकृष्ण।

रुकमणी—सं. स्त्री. [सं. रुक्मिणी] विदर्भ देशाधिपति भीष्मक राजा की लक्ष्मी के अंश से उत्पन्न कन्या जो श्रीकृष्ण की पटरानी थी।

उ०—एक अधकार हिंदू तुरक ईसतां, जकी तो बात संसार जांणी। किसन घरि रुकमणी ले गयो कंवारी, 'अमर' रै कळोधर परणि आंणी। —कमो नाई

रू. भे.—रुकमण, रुकमणि, रुकमिणी, रुकम्मणि, रुकम्मणी, रुखमणी, रुक्मिणी, रुखमणि, रुखमणी, रुखमनी, रुखम्मणी, रुखिमिणी, रूकमणी, रूखमणी।

रुकमबाहु—सं. पु. [सं. रुक्मबाहु] विदर्भ देशाधिपति भीष्मक राजा के पांच पुत्रों में से तृतीय पुत्र का नाम।

वि. वि.—देखो 'रुकम' (२)

रुकमपुर—सं. पु. [सं. रुक्मपुर] पुराणानुसार गरुड़ के निवास करने के नगर का नाम।

रुकममाळी—सं पु. [सं.रुक्ममालिन्] विदर्भ देशाधिपति भीष्मक राजा के पांचवे पुत्र का नाम।

वि. वि.—देखो 'रुकम' (२)

रुकमयो—देखो 'रुकम' (अल्पा., रू. भे.)

रुकमरथ—सं. पु. [सं. रुक्मरथ] विदर्भ देशाधिपति भीष्मक राजा के दूसरे पुत्र का नाम।

वि. वि.—देखो 'रुकम' (२)

रुकमांगद—देखो 'रुक्मांगद' (रू. भे.)

रुकमिणी—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)

रुकमियो—देखो 'रुकम' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—रुकमिया री कहीजै म्हांरी जच्चा रांणी वहनड़ी हे केसरिया स्रीक्रस्णजी री नार। —लो. गी.

रुकमैयो—देखो 'रुकम' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सकल भवन करता सरणांमय, विना न व्यापै कांई। रुजा कहै सुणो रुकमैया, तहां दीजै भाई। —ह. पु. वा.

रुकमो—देखो 'रुकम' (रू. भे.)

उ०—थांनै थांनै श्रे म्हारी रुकमण बहन थांनै कूण लावेगो। लावै लावै श्रे म्हारो रुकमो वीर, माय मिळावेगो। —लो. गी.

रुकम्मणि—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)

उ०—नमो कंसकेसि विधूंसण कन्ह। रुकम्मणि प्रांण पुरक्ख रतन्न —ह. र.

रुकरुदंती—सं. पु.—एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

उ०—रांवण रांग रतांजणी, रयणी नई रुद्राग। रुकरुदंती रायसलि, रोहड़ रोहिणि लाग। —मा. कां. प्र.

रुकवाणो, रुकवाबो—देखो 'रुकाणो, रुकाबो' (रू. भे.)

रुकवायोड़ो—भू. का. कृ.—देखो 'रुकायोड़ो, रोकायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. रुकवायोड़ी)

रुकसत, रुकरत—देखो 'रुक्सत' (रू. भे.)

उ०—१ ती सूं कही तो काहैं कूं राखो। रुकसत देवो यूं ही क्यूं बुलाया। —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ सो सरची या फरमां रै पहलै पड़ी तद इण रुकस्त लीवी।
—ठा. जैतसी री वारता

रुकाणो, रुकाबो—क्रि. स. [रुकणो क्रि. का. प्रे.] १ रोकने का काम दूसरे द्वारा करवाना।

२ चलता हुआ काम या सिलसिला बंद करवाना, रुकवाना।
रुकवाणो, रुकवावो—रू. भे.।

रुकायोड़ो-भू. का. कृ.—१ दूसरे द्वारा रुकवाया हुआ, रोकने का काम दूसरे द्वारा करवाया हुआ. २ चलता हुआ काम या सिलसिला बंद करवाया हुआ, रुकवाया हुआ।
(स्त्री. रुकायोडी)

रुकाव, रुकावट-सं. स्त्री.—१ रुकने का कार्य, अवस्था या भाव, अटकाव, अवरोध, रोक।
उ०—अळगी अळगी भांय रा वासी आप आप री वोली में घाछंट वोलै और सुणणिया घाछट समझै। किणी भांत री रुकावट आडी नी आवै। —फुलवाडी
२ वह पदार्थ या बात जो रोक के रूप में हो, वाधा या विघ्न के रूप में होने वाली बात या काम।
३ मलावरोध, कब्ज।
४ स्तम्भन।

रुकियोड़ो-भू. का. कृ, —१ रास्ता आदि ठीक न मिलने के कारण ठहरा हुआ, आगे न वढा हुआ, अटका हुआ. २ अगाड़ी न वढा हुआ, ठहरा हुआ (अपनी इच्छा से). ३ चलता हुआ कार्य वन्द हुवा हुआ. ४ चलता हुआ क्रम या सिलसिला अवरुद्ध हुवा हुआ. ५ वीच में ही वन्द हुवा हुआ, आगे नही वढा हुआ. ६ संभोग या मैथुन के समय स्खलन न हुवा हुआ, रुका हुआ।
(स्त्री. रुकियोड़ी)

रुकुम, रुकुमी देखो 'रुकम' (रू. भे.)

रुको, रुक्को-सं पु. [अ. रुक्कअः] १ छोटा पत्र या चिट्ठी, पुरजा, परचा।
२ चिट्ठी, पत्र।
उ०—पछै राव गांगैजी कयो 'जैतसी कूंपै नूं वुलावो।" तद जैतसी कयो, "आप रुको लिखा दीजै' हूं ई कागद मेल सूं। पछै गांगैजी रुको लिखियो। —द. दा.
३ प्रमाण-पत्र, सनद।
उ०—१ अरु व्रंदावन वा गिरराज ऊपर मिंदर था सौ ढहाय दीना। तद गोरघन नाथजी नूं गुसांई जी लेय नै आंवेर पधारिया। अठै ई पातसाह जी रा भय सूं रया नही। पीछै अठ्या सू ठाकुरजी नूं उदैपुर रै गांव सीहाड़ पधारिया। तठै राणा राजसिंघजी सांमां आय दरसण कियो। अरु सिहाड़ किताई गांवां सूं निजर कीवी वा रुको लिख दीनो कै लाख सीसोदिया रा माथा भेट छै। —द. दा.
उ०—२ रुको द्यूं तुम हाथ, प्रीत वचन माहि लिखूंजी। जाइ पड़ै पर हाथ, आलम इम वचनै नही जी। —प. च. चौ.
४ प्रेम पत्र।
उ०—मालण छावड़ी देय नै पाछी आई। तद सुखै फिकरवान होय इण नू वतळाई। कांम रुक्को थो सो गुमायो। कतोदई फूलां में गिर पडियो होइ। जिण हूं कहां ही जाय नै छावड़ी जोइ। उठै फूलां में रुक्को रतना पायो। आप वांच चतरु नै वचायो उनमांन कियो मुद्दो जांण लियो। हमें जवाव रो रुक्को वणायो जिण में दिल रो सनेह जणायो।
सांचा पण रहियो सरस, लेखो समझ लियोह। आप दियो जद आप नूं, दिल म्हें पहल दियोह। —र. हमीर
५ ऋण या कर्ज लेते समय लिखा जाने वाला ऋणपत्र।

रुक्ख—१ देखो 'रुंख' (रू. भे.)
उ०—यों सज्जण सुख पुरिया, दूर गया सह दुक्ख। दळ नवपल्लव डहडहै, ज्यों जळ पायां रुक्ख। —रा. रू.
२ देखो 'रुख' (रू. भे.)
उ०—१ चोळम्मै रुक्खं मुक्खं चख, वयम् रूपं परचंडं। भारत्थ वत्थ पत्थं भीमं, माझी मेरे ब्रहमंडं। —गु. रू. व.
उ०—२ राठौड राउ असमांन रुक्ख, सीचियो त्रित किरि सुरांमुक्ख। —गु. रू. वं.

रुक्मणी—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)
उ०—नमो निरगुण सगुण नारियण निभै नर। वीर सुहिद्रा तणा रुक्मणी तणा वर। —पी. ग्रं.

रुक्मांगद-सं. पु. [सं.] एक इक्ष्वाकु वंशीय राजा जो ऋतुध्वज राजा का पुत्र था। इसकी पत्नी का नाम विंध्यावली एवं पुत्र का नाम धर्मांगद था।
उ०—रुक्मांगद राजा हवउ, गुरुमति ग्यांन प्रकास। अवला कहिणै आदरिउ, पुत्र करेवा नास। —मा. कां. प्र.
वि. वि.—मोहनी नामक अप्सरा के कहने से यह अपने पुत्र धर्मांगद का शिर काटने के लिए तैयार हो गया। इतने में श्रीविष्णु ने साक्षात् प्रकट होकर इस कृत्य से इसे परावृत कर दिया।
रू. भे.—रुकमंगद, रुकमांगद, रुखमांगद।

रुक्मिणि—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)
उ०—पंचवटी पंपापुर रुक्मिणी, देव कपिल युवरासी। नैमखार त्रंगीरिख मिसरिख, कामी पाप-विनासी। —मीरां

रुक्सत—देखो 'रुखसत' (रू. भे.)
उ०—१ महीनै छ री रुक्सत दीवी। विदा री हाथी सिरोपाव फेर दियो। —गोपाळदास गौड री वारता
उ०—२ सगळा सलांम कर रुक्सत हुवा। इण तरह महाराज मुजरो कर विदा हुआ।
—महाराजा जयसिंह आमेर रा धणी री वारता

रुख-सं. स्त्री. [फा. रुख़] १ कपोल, गाल ।

२ क्रोध, कोप । (अ. मा.)

३ चहरे का भाव, चेष्टा या आशय ।

उ०—१ सत्र सारत समधा सब कोई, जड़लग वह गई संग जिनोई । मुहकम रुख चख जांण कमाळी, सिर चलतै केवांण संभाळी ।
—रा. रू.

उ०—२ दीवांणजी तौ ई रुख नीं मेळचौ । होळै सीक जाडा सुर में कह्यौ—म्हैं जांण्यौ के राजाजी कोई कांम भेज्यौ दीसै ।
—फुलवाड़ी

उ०—३ काका बाबा भ्रात कवि, हूवै दूर रुख हेर । संत महत न सचरै, पातर रै पग फेर ।
—बा. दा.

४ मनोभाव ।

उ०—उण री रुख देखण सारू दीवांणजी जांण करनै अैड़ी बात करी ही । पण वा तौ साव इज भोळी निकळी । बोली-घरटी फेरण री कोई मेहणी थोड़ी ई लागै, नवी बींदणी नै ई फेरणी पड़ै ।
—फुलवाड़ी

५ इच्छा ।

उ०—१ थेट मूं भायां थकां जयसिंहजी री रुख औरंगजेब सूं ही रही ।
—महाराजा जयसिंह आंमेर रा वणी री वारता

उ०—२ चिगतां उखेल पखरै चरित, रखै मेळ अमेळ रुख । वघ वेव वळै खळ वांस ज्यूं, दाह जळै उर साह दुख ।
—रा. रू.

६ कृपा दृष्टि, महरवानी ।

उ०—१ वडो कुंअर अमरसिंह । बडो मोटो सिरदार मांटीपणै री आंक सो ती पर महाराज री रुख नहीं ।
—ठा. राजसिंह री वारता

उ०—२ तिकां सिर दया रुख होय हरि तौ तणी, किणी दिन न लागै जिकां आतंक ।
—र. ज. प्र.

७ सामने या आगे का भाग ।

८ शतरंज की किश्ती या हाथी नामक मोहरा ।

९ प्रकार, तरह, भांति ।

उ०—१ रीझवाळा नयण महोदधतणी रुख, खीजवाळा नयण बीज री खेल ।
—वखती खिड़ियौ

उ०—२ पड़ उसताज आहणै असपत, दुजड़ै देतौ खळां दुख । केस केस संधियौ केळपुरा, रावळ अंबर तणी रुख ।
—महारांणा अमरसिंह री गीत

उ०—३ उण ठांम तपै हाडो अनड़, पुर गढ ले जावद प्रमुख । संताप चितौड़ सिर, रहियौ एकल वाघ रुख ।
—वं. भा.

वि.—समान, सदृश्य, तुल्य ।

उ०—१ आणंद सु जु उदौ उहास हास अति, राजति रद रिखपंति रुख । नयण कमोदणि दीप नासिका, मेन केस राकेस मुख ।
—वेलि

उ०—२ मणियां रयण अमोल, रोप अणियां मोती रुख ।
—वं. भा.

क्रि. वि.—ओर, तरफ, सामने ।

ऊ०—म्हे थांनै आली वरजिया हे, रघुवर रुख मत जोय । सुख री सीख सुणी नह जद, वैठी तन मन खोय ।
—गी. रां.

देखो 'रूखौ' (रू. भे.)

उ०—अत कोप मुखां चख रोस अड़ै । भळ आग लगीं किर डूंग भड़ै । जपतै रसणा रुख वांण जुई, हित वादळ वीज सरोस हुई ।
—रा. रू.

रू. भे.—रुक्ख ।

रुखभदेव—देखो 'रिसभदेव' (रू. भे.)

उ०—देवतत्व वरण्णवीइ तउ स्त्री सरवग्य तणउ, सुख तउ सिद्धि तणउ, करम्मक्षपणा तउ सुक्ल ध्यांन तणी, आयुस्थिति स्त्री रुखभदेव तणी···।
—व. म.

रुखम—देखो 'रुकम' (रू. भे.)

उ०—सांमि रे रुखम साला काळा काळा जिके कांन्ह । संघारै सिंघाळा भाई कंस वाळा भेख ।
—पी. ग्रं.

रुखमइयौ रुखमईयौ—देखो 'रुकम' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—चूड़ांमंडण चूड़ांमणिजी, भीमक घरि अवतार । बंधव रुखमईयौ भलौ जी, मत्रीसर मंत्रीसार ।
—रुकमणीमंगळ

रुखमणि—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)

रुखमणिवर-सं. पु. यौ. [सं. रुक्मिणी+वर] श्री कृष्ण ।

उ०—धारीधर गिरधर वहि रुखमणिवर, चत्रभुज नरहर समर चित ।
—पि. प्र.

रुखमणी, रुखमनी—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)

उ०—१ ज्यूं हेमाचळ कै घरै पारवती, ज्यूं जनक राजा के सीता भीखम के घरै रु'खमणी जनम लीधौ ज्यूं आपके घरै जसां जनमी छै ।
—मयाराम दरजी री वात

उ०—२ आलिम साह पारवती ओपै, रुखमणी रांणी पासि रहै । श्री गंगसांम विराजै आछौ, देखै जिहां रा दळिद्र दहै ।
—पी. ग्रं.

रुखमांगद—देखो 'रुकमांगद' (रू. भे.)

उ०—१ सुप्रसन होय सांमण सारदा, विमळ सर आखर दै वयण । कळिजुग रुखमांगद रख कमधज, राजा वाखांणीसि 'रयण' ।
—दूदौ विसराळ

उ०—२ भलौ कमाळी भगत, किसन सरिखौ ले कीधौ, रुखमांगद ना रांम, दांन वैकुंठ री दीधौ ।
—पी. ग्रं.

रुखमी—देखो 'रुकम' (रू. भे.)

उ०—रुखमी ई रुडां भावीयइं, छोडावियै जो आजि । कर बंध

कापो ग्रास ग्रापो, भीम नी वहु लाज । —रुकमणी मंगळ

रुखमीणी, रुखमीनी, रुखम्मणी—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)

उ०—१ रांनांदे मिळियो सूरिज भरतार । रुखमीणी मिळियो क्रस्ण ग्राधार । —वी. दे.

उ०—२ ग्रगियारह गुर पायै एकणि, तवै मालती नांम छंद तिणि । भणियो पिंगळ तेम तूं ही भणि, राखि रिदै भरतारि रुखम्मणी । —पिं. प्र.

रुखळणो, रुखळबो—क्रि. ग्र.—१ रक्षा होना ।

उ०—खेत में ऊभो ग्रड़वो कांई ग्रापरै ग्रापै खेत रुखाळै है ? खेत तो उण रै कारण मतै ई रुखळै है । —फुलवाड़ी

२ निगरानी या चौकसी होना ।

रुखळणहार, हारो (हारी), रुखळणियो—वि. ।

रुखळिग्रोड़ो, रुखळियोड़ो, रुखळचोड़ो—भू. का. क्र. ।

रुखळीजणो, रुखळीजवो—भाव वा. ।

रुखळियोड़ो—भू. का कृ. १ रक्षा हुवा हुग्रा. २ निगरानी या चौकसी हुवा हुग्रा ।

(स्त्री. रुखळियोड़ी)

रुखवाळ—१ देखो 'रखवाळी' (रू. भे.)

२ देखो 'रुखाळो' (रू. भे.)

उ०—तिण वेळा तारण तरण, गिरधारी गोपाळ । मिळियो उर भ्रम मेटवा, हिंदू धम रुखवाळ । —रा. रू.

रुखवाळणो, रुखवाळवो—देखो 'रुखाळणो, रुखाळवो' (रू. भे.)

उ०—वाड़ करी रुखवाळनै वाड़ खेत नै खाय । राजा डंडै रैत नै, कूक किसै घर जाय । —ग्रग्यात

रुखवाळणहार, हारो (हारी), रुखवाळणियो—वि. ।

रुखवाळिग्रोड़ो, रुखवाळियोड़ो, रुखवाळचोड़ो—भू. का. कृ. ।

रुखवाळीजणो, रुखवाळीजवो—कर्म वा. ।

रुखवाळियोड़ो—देखो 'रुखाळियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. रुखवाळियोड़ी)

रुखवाळी—देखो 'रखवाळी' (रू.भे.)

उ०—सारा भेळा हूइ लेय देख्यो तो कोट री कुंवरजी री सोभा छै, ग्रांपणी रुखवाळी होयसी । —सुंदरदास बीकंपुरी भाटी री वारता

रुखवाळो—देखो 'रुखाळो' (रू. भे)

रुखसत—सं. स्त्री. [ग्र. रुख्सत] १ विदा होने की क्रिया या भाव ।

२ नौकरी, सेवा ग्रादि से मिलने वाली ग्रल्पकालीन छुट्टी या ग्रवकाश ।

३ ग्रनुमति, परवांनगी ।

—क्रि. प्र.—देणी, पाणी, मिळणी, लेणी, होणी ।

रू. भे.—रुकसत, रुखसत ।

रुखसति, रुखसती—वि. [ग्र. रुख्सत+रा. प्र. ई.] १ जिसे रुखसत या ग्रवकाश मिला हो ।

उ०—ग्रब गणगोरचां ग्रावसां, कीदो एम करार । दिन उगावियां देस नै, रुखसति राजकंवार । —पनां

२ रुखसत सम्बन्धी, रुखसत का ।

सं. स्त्री.—१ विदाई, रुखसत ।

२ पितृघर से कन्या का ससुराल में जाने की क्रिया या भाव । (मुसलमान)

३ उक्त विदाई के समय कन्या या दामाद को दिया जाने वाला धन । (मुसलमान)

रुखांनी—सं. स्त्री.—१ बढ़ई का एक ग्रौजार विशेष ।

२ संगतराशों की टांकी ।

रुखाई—सं. स्त्री.—१ रुखा होने की क्रिया या भाव, रुखावट, रुखापन ।

उ०—गायन भीन सुरावलि में गहि, ज्यूं वधिरादर वीन बजाई । फूल दियो नकटै कर में फिर, रीस करी रुख राख रुखाई । —ऊ. का.

२ व्यवहार ग्रादि की कठोरता या नीरसता ।

रुखानळ—सं स्त्री. [सं. रोषानल] क्रोधाग्नि, क्रोधानल ।

रुखापण, रुखापणो—देखो 'रुखाई'

रुखारुखी—सं. स्त्री.—१ लिहाज ।

उ०—डोकरो कह्यो—तोई वापड़ो थांरा सूं डरै—संकां मरतो कंवै कोनीं । रुखारुखी राखै । साची पूछो तो ग्रो मुगट ग्रर हार पांडुवां नै ग्रोपै जैड़ो मिनखां नै ग्रोप ई नीं सकै । —फुलवाड़ी

रुखाळणो, रुखाळवो—क्रि. स. [सं. रक्ष] १ रक्षा करना ।

उ०—१ दो वार तो घर मैं सांतो लागतो वचियो । लोग जीवण वास्तै सो भांत रा कळाप करैला, पण ग्रपां नै ग्रपां री घर तो रुखाळणो ई पड़ैला । —फुलवाड़ी

उ०—२ नाज उग्यो जद डांगर घेरचा, टीवां वैठ रुखाळचो । टीडी उडज्या ग्रे खेत परायो । —लो. गी.

२ निगरानी या चौकसी करना या रखना ।

उ०—खेत से ऊभो ग्रड़वो कांई ग्रापरै ग्रापै खेत रुखाळै है खेत तो उणरै कारण मतै ई रुखळै है । पण तो ई पंछियां नै डरावण वास्तै ग्रड़वा री ठागो जरूरी है । —फुलवाड़ी

उ०—२ गोरी म्हारी ग्रै ! हरियाळी रुखाळीजै क्यूं ? यूं म्हारा सायव ! यूं जी यूं । —लो. गी.

रुखाळणहार, हारो, (हारी), रुखाळणियो—वि. ।

रुखाळिग्रोड़ो, रुखाळियोड़ो, रुखाळचोड़ो—भू. का. कृ. ।

रुखाळीजणो, रुखाळीजवो,—कर्म. वा. ।

रखवाळणो, रखवाळवो, रुखवाळणो, रुखवाळवो, रूखवाळणो, रूखवाळवो—रू. भे. ।

रुखाळियोड़ो–भू. का. कृ. १ रक्षा किया हुआ. रक्षित. २ निगरानी या चौकसी रखी हुई या की हुई।
(स्त्री. रुखाळियोड़ी)

रुखाळी–वि. [सं. रक्षा] १ रक्षा करने वाला, रक्षक।

उ०—भोजन करणौ भूल खोलै, वूढा लारी खड़भड़ै। हेठै हालो चालो मरणौ, रुळा रुखाळी रड़भड़ै। —दसदेव

२ देखो 'रखवाळी' (रू. भे.)

उ०—१ भूंथरी की रुखाळी काज थांणा नै रखायो। माथो काट कोला को अमरसरनाथ आयो। —शि. वं.

उ०—२ काई करां गीगला री मां कमाई करणी तो सोरी है पण धन री रुखाळी करणी दोरी है। —फुलवाड़ी

रुखाळो–सं. पु. [सं. रक्ष] १ रक्षा करने का कार्य या भाव।
२ निगरानी, चौकसी, चौकीदारी।
३ निगरानी का कार्य।
४ रखवाली करने का पारिश्रमिक।
वि. (स्त्री. रुखाळी) १ रक्षा करने वाला, रक्षक।

उ०—सुध हीणा सिरदार, मत हीणा राखै मिनख। अस आंधो असवार, रांम रुखाळो राजिया। —किरपारांम
२ निगरानी करने वाला, चौकसी करने वाला।

उ०—आड़ंग आवै मावटै रो, पड़ण लागज्या पाळो। हेमाळा सूं होड करण नै, ऊभो खेत रुखाळो। —चेतमांनखो

रू. भे.—रखवाळ, रखवाळक, रखवाळण, रखवाळू, रखवाळी, रखाळू, रखाळू, रखाळो, रुखवाळ, रुखवाळो, रुखाळो।

रुखावट, रुखाहट–सं. स्त्री.—रुखाई, रूखापन।

रुखिता–सं. स्त्री. [सं. रुषिता] रोष या क्रोध करने वाली नायिका।

रुखमिणी—देखो 'रुकमणी' (रू भे.)

रुखी—देखो 'रुख' (रू. भे.)

रुखीस्वर, रुखेस्वर—देखो 'रिसीस्वर' (रू. भे.)

उ०—अहि अमर रुखेस्वर नर असुर, पहचि तुझ दाखै प्रघळ। हु महिरिवांण माया हिमै, वइण मुझ दीजै विमळ। —पी. ग्रं.

रुखो–वि. [स्त्री. रुखी] १ विना, रहित।

उ०—जिण री पोळ आधै थाळ लीवां कंकाळी आई तरै सगतसिंघजी खीची कह्यो–देखां मांमैजी कासूं दियो। तरै थाळ खोल नै दिखाळ्यो। तरै सगतसिंह एक आंख दिसी रुखो छै। तरै देखती आंख थी तिका आंगुळी घालि नै काढि थाल मां है मैली नै कह्यो मांमाजी होड नहीं पिण इतरी दुगांणी म्हारी ही ले पधारो। —जगदेव पंवार री वात

२. देखो 'रूखो' (रू. भे.)

रुग—सं. पु. [सं. रुग्ण] १ बीमार, रोगी।
२ रोग, बीमारी। (डि. को., ह. नां. मा.)
३ पीड़ा, दर्द। (अ. मा.)
४ तीरों के चलने से या पक्षियों के उड़ने से होने वाली ध्वनि विशेष।
उ०—भींगड़ा भालोड़ां रा वूम पड़िया छै। सवायै मेह रो जोरि सोक वाजै तिण भांति पंखां री रुग वाजिनै रही छै। —रा. सा. सं.
५ देखो 'रिगवेद' (रू. भे.)

रुगड़—देखो 'रुगड' (रू. भे.)

उ०—आज काल रा साधडा, व्याज वुहारण वेस। राज मांय झगड़ै रुगड़, लाज न आवै लेस। —ऊ. का.

रुगट–सं. स्त्री. खेल में किया जाने वाला कपट या वेईमानी, रुगटी।

रू. भे.—रुगटी, रोंगट, रोंगटी।

रुगटाळ–वि. १ खेल में कपट या वेईमानी करने वाला।
२ धूर्त, चालाक।
३ कपटी।
४ देखो 'रगटाळ' (रू. भे.)

रुगटी—१. देखो 'रुगट' (रू. भे.)
२ देखो 'रुगटाळ (रू. भे.)
३ देखो 'रगटाळ' (रू. भे)

रुगड–वि.—१ मूर्ख, नासमझ।

उ०—गह भरियो गजराज, मह माल्है आपण मतै। कुकरिया बेकाज, रुगड भुंसै क्यूं राजिया। —किरपारांम
२ दुष्ट, पतित, नीच।

उ०—न्याय न जांण्यो नितुर, निलज जांणी नहि नीती। निज नारी व्रतनेम, रुगड आंणी नही रीती। —ऊ. का.
रू. भे.—रूगड़।

रुगण–वि. [सं. रुग्ण] १ जो रोगग्रस्त हो, रोगी, बीमार।
२ जिसके शरीर में किसी प्रकार का दूषित विकार हो।

रुगणता–स्त्री. [सं. रुग्णता] बीमारी, रोग।

रुगदवंसी–सं. पु.—एक प्रकार का भयंकर विषैला सर्प जिसका फन और पूंछ दोनों काले रंग के होते हैं।

रुगनाथ—देखो 'रघुनाथ' (रू. भे.)

उ०—स्री रांमाअवतार में स्री रुगनाथ जी स्री सीताजी लिछमणजी सुग्रीव, वभीसण, हनुमांन तथा दूजी सेना साथै लै नै लंका सुं रांवण मार नै पुसप-वीमांण वीराजनै अठै स्रीमंडलेस्वरजी री पूजा पाछा पधारता कीवी नै सेना साथै घणी थी तिणसुं भीड़ में दरसण

हुवै नही तरै स्री रुगनाथ जी री स्री महादेव जी री ग्रग्या सुं कंकर सव संकर हुवा सु प्रीत री इक भाखर में सारा लिंगाकार रा दरसण हुवा, तरै सेन्या सारी नै दरसण हुवा। —नैणसी

रुगै टुगौ-स. पु.—काम चलाऊ पदार्थ।

वि.—खिन्नचित्त, उदासीन।

रुग्घौ-चुग्घौ-वि.—ग्रवशिष्ट, बचा हुग्रा।

उ०—मा रै खनै कंई रुग्घौ चुग्घौ हो जिको दादी रै ग्रोसर, बाप रै किरिया-करम ग्रर चंदू री जिन्दोई में लेखै लाग चुको हो। —वरसगांठ

रुघ-सं. पु. [सं. ऋग्वेद] देखो 'रिगवेद'

उ०—रुघ सांमवेद वाचंत विप्र नखतैत राय जद न्रप्प। दीसंत दुयंग पददेव गत्ति, दीवांण वडो वड देसपत्ति। —गु. रू. वं.

२ देखो 'रघु' (रू. भे.)

रुघईस—देखो 'रघुईस' (रू. भे.)

रुघकुळतिलक—देखो 'रघुकुळतिलक' (रू. भे.)

रुघुचंद—देखो 'रघुचंद' (रू. भे.)

रुघदेव—देखो 'रघुदेव' (रू. भे.)

रुघनंद, रुघनंदण, रुघनंदन—देखो 'रघुनंदन' (रू. भे.)

उ०—रुघनंदण रुघनाथ, निमो रुघपति नरेसर। रुघराजा रुघराउ, भूतभव भेख विसंभर। —पी. ग्र.

रुघनाथ, रुघनाथु—देखो 'रघुनाथ' (रू. भे.) (ग्र. मा, नां. मा.)

उ०—१ लांबी वाहां रावळी, मो सिर दीजै हाथ। तांतू जळ तांणी जता, राख लियो रुघनाथ। —गज उद्धार

उ०—१ रुघनंदण रुघनाथ, निमो रुघपति नरेसर रुघराजा रुघराउ, भूत भव भेख विसंभर। —पी. ग्रं.

रुघनायक—देखो रघुनायक' (रू. भे.)

उ०—इम जवाव सुणि ग्रसुर, खिजै कमवज खेधायक। ग्रंग दवात उथपियां, नरिंद जांणै रुघनायक। —सू. प्र.

रुघपत, रुघपति रुघपत्ति—देखो 'रघुपत्ति' (रू. भे.)

उ०—रुघनदण रुघनाथ, निमी रुघपति नरेसर। रुघराजा रुघराउ, भूतभव भेख विसंभर। —पी. ग्रं.

रुघवर—देखो 'रघुवर' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

रुघभूप—देखो 'रघुभूप' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

रुघयंद, रुघयंदि—देखो 'रघुइंद्र (रू. भे.)

रुघरज—देखो 'रघुरज' (रू. भे)

रुघरांण—देखो 'रघुरांण' (रू. भे.)

रुघरांणी—देखो 'रघुरांणी' (रू. भे.) (ग्र. मा., नां. मा.)

रुघरांम—देखो 'रघुरांम' (रू. भे.)

उ०—नारसिंघ थारो नांम फरसरांम निवाजै, देखतां दुवारिका धांम सदांमै रै दांम। सत्य रांम रुघरांम लिखमी वांमैं सहेत, गोविंद तुहारो भलै वैकुंठ रो ग्रांम। —पी. ग्रं.

रुघराइ, रुघराई, रुघराउ, रुघराज, रुघराजा—देखो 'रघुराज' (रू. भे.)

उ०—रुघनंदण रुघनाथ, निमो रुघपति नरेसर। रुघराजा रुघराउ, भूतभव भेख विसंभर। —पी. ग्रं.

रुघवंस—देखो 'रघुवंस' (रू. भे) (नां. मा.)

रुघवंसमणि, रुघवंसमणी—देखो 'रघुवंसमणि' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

रुघवंसरव, रुघवंसरवि—देखो 'रघुवंसरवि' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

रुघवंसी—देखो 'रघुवसी' (रू. भे.)

उ०—रुघवंसी राठौड़ हर, तेरह साख कमंध। विमर सकत्ती वरणवां, वंधै रुपक वंध। —गु. रू. वं.

रुघवर—देखो 'रघुवर' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—राजा रांम मनोहरं रुघवरं, सीता वरं सुंदरं। कोसल्या दसरत्थ रावऊं ग्ररं, पत्ती ग्रजोध्या पुरं। —पिं. प्र.

रुघवीर—देखो 'रघुवीर' (रू भे.) (ग्र. मा., नां. मा.)

उ०-वड़ो ठग धूत ग्रहो रुघवीर, सही तू एकलमल सधीर। ग्रइयो गुरड़ेस तणा ग्रसवार, महा मधु कीटक रांमण मार। —पी. ग्रं.

रुघवेद—देखो 'रिगवेद' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

रुघुनंदन—देखो 'रघुनंदन' (रू. भे.) (नां. मा.)

रुघुनाथ—देखो 'रघुनाथ' (रू. भे.) (नां. मा.)

रुड़, रुड़क-सं. स्त्री.—१ नगाड़े की ग्रावाज या ध्वनि।

२ तेज गति से भागने को क्रिया।

३ वीर रस के राग की लय या ग्रालाप।

रुड़कणौ, रुड़कबौ-क्रि. ग्र.—१ लुढ़कना।

२ देखो 'रुड़णौ, रुड़वौ' (रू. भे.)

रुड़काणौ, रुड़कावौ-क्रि. स.—१ लुढ़काना।

२ देखो 'रुड़ाणौ, रुड़ावौ' (रू. भे.)

रुड़कायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ लुढ़काया हुग्रा।

२ देखो 'रुड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुड़कायोड़ी)

रुड़कियोड़ौ-भू. का. कृ.—लुढ़का हुग्रा।

२ देखो 'रुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुड़कियोड़ी)

रुड़णो, रुड़बौ–क्रि. अ.—नगाड़े का बजना।

ऊ०—१ गढ पलटै गाहटै गिरवर घूपटिया धक धूण धर। 'रासै' तणा सुजस रा रुड़िया, समियांणै ऊपर सवर। —द. दा.

उ०—२ जड़क्कै खाग रा वजै ठेलिया कंपनी जंगां, मारू धरा रा ले लिया सारा माल। काहुळां रुड़ंतां जांगी हाकै निराताळा काछी, प्रळै काळ वाळी ज्वाळ सवाई 'गोपाळ।'

—विसनसिंघ राठौड़ री गीत

उ०—३ गुमुडै गरिमादिक ग्यांन गुनाड्य, रुड़ रुड़ अंबक ग्यांन घनाड्य। अबै वसुधा विन व्याज विचित्र, महाजन पुन्य जनेस्वर मित्र। —ऊ. का.

२ गुड़कना, चक्कर काटना, घूमना।

३ वीररस के राग का आलाप होना, गायन होना।

उ०—रुड़ै सिववौ राग, गुड़ै हल्लां गज ढल्लां। खळां उथल्लां खाग, वणै वगतर वरघल्लां। —ऊ. का.

४ रुदन करना, रोना।

रुड़णहार, हारौ (हारी), रुड़णियौ—वि.।

रुड़िओड़ौ, रुड़ियोड़ौ, रुड़चोड़ौ—भू. का. कृ.।

रुड़ीजणौ, रुड़ीजबौ—भाव वा.।

रुडणौ, रुडबौ, रुड़णौ, रूड़बौ, रूडणौ, रूडबौ—रू. भे.।

रुड़पाणौ, रुड़पावौ—देखो 'रुड़ाणौ, रुड़ावौ' (रू. भे.)

उ०—ताडा भरियोड़ा नैड़ा निजराता, गाडा गुड़काता पैड़ा रुड़पाता। लाखै फूलांणी भीणां मुर लेता, डीघा गाडीणां डब डब धुनि देता। —ऊ. का.

रुड़पायोड़ौ—देखो 'रुड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुड़पायोड़ी)

रुड़वाणौ, रुड़वावौ–क्रि. स. [रुड़णौ क्रिया का प्रे. रू.] १ 'रुड़ाणौ' कार्य किसी अन्य से करवाना।

२ नगारादि किसी अन्य द्वारा बजवाना।

रुड़ाणौ, रुड़ावौ–क्रि. स.—१ नगारादि बजाना।

२ वीर रसपूर्ण राग का आलाप करना।

३ गुड़ाना, चक्कर कटाना, घुमाना।

४ रुलाना, रुदन कराना।

रुड़ाणहार, हारौ (हारी), रुड़ाणियो—वि.।

रुड़ायोड़ौ—भू. का. कृ.।

रुड़ाईजणौ, रुड़ाजईबौ—कर्म वा.।

रुड़काणौ, रुड़कावौ, रुड़पाणौ, रुड़पावौ रुड़ावणौ, रुड़ाववौ, रुडाणौ, रुडावौ, रुडावणौ, रुडाववौ—रू. भे.।

रुड़ायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ नगारादि बजाया हुआ. २ वीररसपूर्ण राग अलापा या गाया हुआ. ३ गुड़ाया हुआ, चक्कर कटाया हुआ, घुमाया हुआ।

(स्त्री. रुड़ायोड़ी)

रुड़ावणौ, रुड़ाववौ—देखो 'रुड़ाणौ, रुड़ावौ' (रू. भे.)

उ०—धुवां घोर आतसां भळा रौ रुड़ावणौ धूंसा, सेना मुड़ावणौ खळां डळा रौ साइत। छत्रधारी कना हूं इळा रौ कोट छोडावणौ, तुड़ावणौ भूखा वाघ गळा रौ ताइत। —महादांन महड़ू

रुड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ नगाड़ा बजा हुआ. २ गुड़का हुआ, चक्कर काटा हुआ, घूमा हुआ. ४ वीररस के राग का आलाप हुवा हुआ. ४ रुदन किया हुआ, रोया हुआ।

(स्त्री. रुड़ियोड़ी)

रुड़ौ—देखो 'रूड़ौ' (रू. भे.)

उ०—जीव अम्हारु जोखिता ! ते थापणि तुम्ह-पासि। राखै तुं रुड़ी परि, पंजर भमइ प्रवासि। —मा. कां. प्र.

(स्त्री. रुड़ी)

रुच–स. पु. [सं.] १ वायु के अनुसार सूनीथ राजा के पुत्र का नाम।

२ अभिलाषा, रुचि।

उ०—जो रस अंगी भूलै जावै, रुच वरणंत अनंग रस। प्रक्रत विपजिय जठै पायजै, प्रक्रत रसाळ वन परस। —वीं. दा

वि.—सुन्दर, मनोहर। (अ. मा.)

उ०—सतियां म्हासतियां कहतां तन सोहै, मधुरी वांणी मुख प्रांणी मनमोहै। रजपूतांणी रुच सींचाणी सिरखी, नैणां जळ भरती सैणां थळ निरखी। —ऊ. का.

देखो 'रुचि' (रू. भे.)

उ०—मैलो अत अदतार मन, रुच जस तणो रहै न। तन काळो कंचुक तणो, कंचुक सेत सहै न। —बां. दा.

रुचक–सं. पु. [सं. रुचकः] १ पुराणानुसार सुमेरुपर्वत के निकट का पर्वत।

२ भागवत के अनुसार एक यादव राजा जो उसनस राजा का पुत्र था।

३ इक्ष्वाकु वंशीय मरुक राजा का नाम।

४ मणिभद्र एवं पुण्यजनी के पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

५ वास्तु विद्या के अनुसार ऐसा भवन जिसके चारों ओर के आलिंद में से पूर्व और पश्चिम का सर्वथा नष्ट हो गया हो तथा उत्तर और दक्षिण के पूर्ण रूप से ज्यों का त्यों हो।

६ घर, मकान। (अ. मा.)

७ जैनियों के अनुसार हरिवर्ष के एक पर्वत का नाम।

८ घोड़े को पहिनाए जाने वाले आभूषण।

९ दक्षिण दिशा।

१० कबूतर।

[सं. रुचकंम] ११ कंठ में धारण करने का आभूपण, हार, पुष्प-हार।
वि. [सं. रूचक] १ पसन्द आने वाला, प्रसन्नकारक, रोचक।
२ स्वादिष्ट, जायकेदार।

रुचणो, रुचबो—क्रि. अ.—१ प्रिय तथा प्यारा लगना, भला लगना।
उ०—क्रपणां जस भावै कठै, विधि विमुखां नूं वेद। 'वांका' भोजन नह रुचै, ज्यां रै वप ज्वर खेद। —वां. दा.
२ रुचि के अनुकूल होना।
३ आनन्द मय होना, रुचि युक्त होना।

रुचर—१ देखो 'रुचिर' (रू. भे.) (अ. मा.)
२ देखो 'रुचिकर' (रू. भे.) (अ. मा.)

रुचवप, रुचावप—सं पु. [सं. रुचवपु] रक्त, खून, रुधिर। (अ. मा.)

रुचि—सं. पु. [सं.] १ एक प्रजापति जो ब्रह्मा के मन से उत्पन्न हुआ था। इसकी पत्नी का नाम आकूति था।
सं. स्त्री. [सं. रुचिः] २ किरण। (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)
३ शोभा, सुन्दरता।
४ आभा, प्रकाश, दीप्ति, चमक।
उ०—वपु स्यांम सुंदर मेघ रुचि, फवि तड़ित पीत वटंवरं। सुज। वांम चाप निखंग कटि, तट दच्छ कर भ्रांमत सरं। —र. ज. प्र.
५ अभिलाषा, इच्छा, कामना।
उ०—चख चंचळ, मन अचळ कमळ चख भुहां अळीअळ। तन ऊजळ पति रत्त, रूप भरता रुचि मंभळ। —गु. रू. वं.
७ अलकापुरी की एक अप्सरा का नाम।
८ अप्सरा।
९ पसंदगी, अभिरुचि।
उ०—नहीं मोती माळा नहि न छक हाला सुचि नहीं। नहीं नारी प्यारी वचन, छिदगारी रुचि नहीं। —ऊ. का.
वि.—मनोहर, सुन्दर।
उ०—मोर मुकुट वन माळ, माळ तुळसी तव मंजर। रुचि कुंडळ कल रतन, तिलक मंजुल पितांबर। —रा. रू.
रू. भे.—रुइ, रुई, रुच।

रुचिकर, रुचिकारक, रुचिकारी—वि. [सं.] १ अभिरुचि उत्पन्न करने वाला।
२ स्वादिष्ट, जायकेदार।
३ भूख वढ़ाने वाला।

रुचिधांम—सं. पु. [सं. रुचि+धामन्] सूर्य, भानु। (डिं. को.)

रुचिभरता—सं. पु. [सं. रुचिभर्तृ] सूर्य, भानु।

रुचियोड़ो—भू. का. कृ.—१ प्रिय तथा प्यारा लगा हुआ. २ रुचि के अनुकूल हुवा हुआ. ३ आनन्दमय हुवा हुआ, रुचियुक्त हुवा हुआ। (स्त्री. रुचियोड़ी)

रुचिसती—सं. स्त्री. [सं.] श्री कृष्ण भगवान की नानी तथा महाराज उग्रसेन की रानी का नाम जो वसुदेव की सास थी।

रुचिर—सं. पु. [सं.] १ श्री कृष्ण के पुत्र सेत्रजित के पुत्र का नाम।
२ कुरुवंशीय राचिक राजा का नाम।
३ केसर।
वि.—१ सुन्दर, मनोहर।
उ०—१ एक रुचिर गणिका उठै, सुभ गुण सील समांन —वं. भा.
उ०—२ सोभि जांन सिरदार, रूप अणपार विराजै। रतन निकरि किरि, रुचिर भोमि वैरागर भ्राजै। —रा. रू.
२ अच्छा, भला।
३ मीठा, मधुर।

रुचिरा—सं. स्त्री.—१ एक प्रकार का वृत जिसके प्रत्येक चरण में जगण, भगण, सगण, जगण और अंत में गुरु होता है।
२ सुप्रिया छंद का दूसरा नाम।
३ केसर। (डिं. को.)

रुचिरोमा—सं. स्त्री. [सं.] स्कंद की अनुचरी एक मातृका का नाम।

रुज—सं. पु. [सं रुज्, रुजा] १ रोग, बीमारी। (डिं. को.)
२ पीड़, वेदना। (अ. मा., ह. नां. मा.)

रुजक—देखो 'रिजक' (रू. भे.)
उ०—१ तरै आप कहीजै—आप सखरी कही, म्हैं पण उदम करसां। तरै हेक दीहाड़ै रजपूतांणी सूं कहियोज म्हैं हमै परभोम रुजक रै आंटै हालां तो बैठा काहुं करां। तरै हालण लागो।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात
उ०—२ पछै कलियांणसिंघ सुकन मनवंछत लै, कांकड़ जाए उभा रहै घर सुमाचार दीन्हा। पछै रजपूतांणी घणै हरस सोंक दासी ले, कलेवो रुजक लै हजूर आई।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

रुजगार—देखो 'रोजगार' (रू. भे.)
उ०१ 'रुजगार खोल लै वाला फरीद।' रुजगार अवै किसा रया है माजी! वखत वळगी, सै देवै जिको थेई दियो। —वरसगांठ
उ०—२ घणा मूंघा मोती मत ढळका, रोयां रुजगार मिळै कोनी। व्हे लखपतियां रो राज जठै, भूखां री पेट पळै कोनी।
—चेतमांनखां
उ०—३ राज मांहे च्यार मास रो रुजगार अगाऊ दो तो रहूं।
—पंचमार री वात

उ०—४ उण देस री वळिहारी जाऊं जठै माथा मोल विकाय अरथात जिण सिरदार कनै रुजगार ले, सिर देण साटै, सूरवीर रहै है, वो देस धिन्न है। —वी. स. टी.

रुजा-सं. स्त्री. [सं.] रोग बीमारी। (डि को.)

रुजु—देखो 'रज्जू' (रू. भे.)

रुभणी-सं. स्त्री.—लंबी चोंच वाली एक प्रकार की छोटी चिड़िया जिसकी छाती सफेद और पीठ काली होती है।

रुभणौ, रुभवौ-क्रि. अ.—अवरुद्ध होना, रुकना।

उ०—रजी अरवक विद्द ए, पूरणा लग कै चंद ए। कुरंग सिघ रुभ ऐ, मरंति मज्भि मुज्भ ए। —गु. रू. वं.

रुभियोड़ौ-भू का. कृ. [स्त्री. रुभियोड़ी] अवरुद्ध हुवा हुआ, रुका हुआ।

रुट-सं. पु [सं. रुष्ट] रूठने की क्रिया या भाव, क्रोध, कोप, गुस्सा। (अ. मा.)

रू. भे.—रुठ।

रुट्टणौ, रुट्टबौ—देखो 'रूठणौ, रूठवौ' (रू. भे.)

उ०—यां विचार वैण बोलै, तेज सूं समसेर तोलै। मूछ कै रोम व्योम कूं उट्टै, रांन के आए जमरांन से रुट्टै। —रा. रू.

रुट्टियोड़ौ—देखो 'रूठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुट्टियोड़ी)

रुठ—देखो 'रुट' (रू. भे.)

रुठाणौ, रुठावौ-क्रि. स. [रुठणौ क्रि. का. प्रे. रू] रूठने में प्रवृत्त करना/कराना, नाराज करना/कराना।

रुठायोड़ौ-भू. का. कृ.—कुपित किया हुआ।

(स्त्री. रुठायोड़ी)

रुडणौ, रुडवौ—देखो 'रुड़णौ, रुड़वौ' (रू. भे)

उ०—१ पंचसद दमांम पूर रुडै डूड रिणतूर। प्रमांणै मेघ पड्डर (पडर), हैरान हुवै। —गु. रू. बं.

उ०—२ कमवज भुज निमज सकज सुसुपह कज, रावं रज रिणतूर रुडै। दम्मांमां गरज वहै व्रज दोमज, गज पाताडंक भुरज गुडै। —गु. रू. वं.

उ०—३ अन्नदिणंतरि गिरि सिहरै, राजा रमलि करेइ। कुंती करमल अडवडिउ, रडयड भीमु रुडेइ। —सालिभद्र सूरि

रुडाणौ, रुडावौ, रुडावणौ, रुडाववौ—देखो 'रुड़ाणौ, रुड़ावौ' (रू. भे.)

रुडावियोड़ौ—देखो 'रुड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुडावियोड़ी)

रुडियोड़ौ—देखो 'रुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुडियोड़ी)

रुणंजण—देखो 'रणभण' (रू. भे.)

रुणउणणौ, रुणउणवौ-क्रि. अ.—भौरों का मण्डराना।

उ०—सेवइ जसुपय साव अहै, पंकय महूअर रुणउणइ ए। घनु धन जै नरनारि अहै, नित नितु प्रभु गुण गण थुणइए। —ए. जै. का. सं.

रुणक-सं. स्त्री—१ याद, स्मृति।

२ इच्छा।

६ एक प्रकार की ध्वनि विशेष, झनकार।

रुणकभुणक-सं. स्त्री.—नुपुर आदि से उत्पन्न रुनझुन शब्द या ध्वनि।

रुणजुण—१ देखो 'रुणझुण' (रू. भे.)

उ०—रांमजी आप घोड़ै असवार, रुकमण नै रुणजुण वैल जुपाय —लो. गी.

२ देखो 'रणभण' (रू. भे.)

रुणभणणौ, रुणभणवौ-देखो 'रुणझुणणौ, रुणझुणवौ' (रू. भे.)

उ०—कांन वजावै वांसुरी, गोपी नाचै ताली छंद कै। पाए नेवर रुणभणै, हस हस रांमत रमै आंणंद कै। —जयवांणी

रुणभणियोड़ौ—देखो 'रुणझुणियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. रुणभणियोड़ी)

रुणभुण—१ देखो 'रणभण' (रू. भे.)

२ देखो 'रुणझुण' (रू. भे.)

उ०—१ वाईजी कै आयो रै गाड्लो, कांई म्हारै रुणभुण वैल रै नीमोळीड़ा। —लो. गी.

उ०—२ रुणभुण वैल भंवरजी ! मैं वणूं जी, हां जी ढोला ! वण ज्याऊं सुरही-रा वैल। —लो. गी.

रुणभुणकणौ, रुणभुणकवौ—देखो 'रुणझुणणौ, रुणझुणवौ' (रू. भे.)

उ०—रणका रुणभणकेह, राय आंगण रमियो नहीं। तौ पहिरस केम पगेह, वेड़ नेवरी वणीरउत। —वीरमदे सोनगरा री वात

रुणभुणकियोड़ौ—देखो 'रुणझुणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुणझुणकियोड़ी)

रुणभुणणौ, रुणभुणवौ-क्रि. अ.—नुपूर आदि आभूषणों से ध्वनि उत्पन्न होना, ध्वनि होना, रुनझुन की ध्वनि होना।

उ०—१ करयलै कंकण मणि भमकारे, जादर फालीय हप्पिरण ए। अहर तंवीलीय द्रूपदी वाल, पाए नेउर रुणभुणइं ए। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ वाजइ पड़ह पखावज पूर, ढोल निसांण वाजइ रिणतूर। वीर घंटा तिहां रुणझुणइ, मेघाडंबर छत्र सिर दीयो राय।
—वी. दे.

रुणझुणहार, हारो (हारी), रुणझुणियो—वि०।
रुणझुणिश्रोड़ो, रुणझुणियोड़ो, रुणझुण्योड़ो—भू. का. कृ.।
रुणझुणीजणो, रुणझुणीजवो—भाव वा.।
रुणभ्रणणो, रुणभ्रणवो, रुणझुणकणो, रुणझुणकवो—रू. भे.।

रुणझुणियोड़ो-भू. का. कृ.—नुपुर आदि आभूषणों से शब्द उत्पन्न हुवा हुआ, रुनझुन का शब्द हुवा हुआ।
(स्त्री. रुणझुणियोड़ी)

रुणझुणियो-वि.—रुनझुन की ध्वनि उत्पन्न करने वाला।
सं. पु.—१ एक राजस्थानी लोक गीत।
२ बच्चों के खेलने का एक खिलौना विशेष।
उ०—ऐ ढोल ढोलंता यूं केयो रुणझुणियो लै। सायब लाल चूड़ी पेराय, जाजो मरवो लै।
—लो. गी.

रुणा-सं. स्त्री. [सं.] सरस्वती नदी की एक सहायक नदी।

रुणावळी—देखो 'रोमावळी' (रू. भे.)

रुणी-स. स्त्री.—घोड़ों की जाति विशेष।

रुणी—देखो 'रुणी' (रू. भे.)।

रुत-सं. स्त्री.—१ रुई (कपास)।
उ०—रुत प्रति चदण कपूर, सभै समसांण सभाई। विविध अमित सुचि वसत, चेहग्नि निमति चलाई।
—रा. रू.
२ देखो 'रितु' (रू. भे.)
उ०—१ म्हैं मगरा मोरिया, काकर चूण करंत। रुत आयां बोलां नहीं, हीया फूट मरंत।
—अग्यात
उ०—२ परण चाल्या छा भवरजी, गोरड़ी जी हां जी ढोला, हो गई जोव जवांन। विलसण की रुत चाल्या चाकरी जी, ओ जी म्हारा लाल नणद रा ओ वीर, मत ना सिधावो पूरव री चाकरी जी।
—लो. गी.
उ०—३ फागुण मासि वसंत रुत, आयउ जइ न सुणेसि। चाचरिकइ मिस खेलति, होळी झंपावेसि।
—ढो. मा.
उ०—४ मांहे राग छै, जिकै कूद-ऊछळै छै-रीगटा हिरण छै, सु रुत आइ हिरणी नै घेचता फिरै छै। सवळो हिरण निवळै नै घेचै छै।
—रा. सा. सं.

रुतबो-सं. पु. [अ. रुत्वः] १ वह ऊंची और अच्छी स्थिति जिसमें समाज की ओर से यथेष्ट आदर, प्रतिष्ठा या सत्कार हो।
२ राज्य या शासन की सेवा में मिलने वाला ऊंचा पद।
३ रोब।
उ०—१ थाट अर रुतबा सूं पूरी करड़ावण रै साथै राजदरबार सूं पोहरो देवण सारु वहीर व्हिया।
—फुलवाड़ी
उ०—२ ओ तो म्हैं राजा री दीवांण हूं। जवाब में कीं गुमेज अर रुतवा री पुट ही।
—फुलवाड़ी
४ वड़ाई, महत्ता, श्रेष्ठता।

रुति—देखो 'रितु (रू. भे.)
उ०—१ घर करि अमल पदम छत्र धारै, सुंदरि नवलापुरी सिंगारै। रंगमहलि दंपति दुति राजै, छक मुसताकि कांम रुति छाजै।
—सू. प्र.
उ०—२ जिण रुति वग पावस लियइ, धरणि न मेल्हइ पाइ। तिण रुति साहिव वल्लहा, कोइ दिसावर जाइ।
—ढो. मा.
उ०—३ जिण रुति वहु पावस झरइ, वावहियउ वोलंत। तिण रुति साहिव वल्लहा, को मंदिर मेल्हंत।
—ढो. मा.
उ०—४ दुवां मासां मरजाद लग रुत एक रहाइ, रुतियां दोय हुवदियां, इक काळ वोळाई।
—केसोदास गाडण

रुतिराई—देखो 'रितुराज' (रू. भे.)

रुत्ति, रुत्ती—देखो 'रितु' (रू. भे.)
उ०—सीयाळइ तउ सी पड़इ, ऊन्हाळइ लू वाइ। वरसाळइ भुइं चीकणी, चालण रुत्ति न काइ।
—ढो. मा.

रुदंती—देखो 'रुद्रवंती' (रू. भे.)

रुदन-सं. पु. [स.] १ रोने की क्रिया या भाव।
उ०—वीतां पहर कंवर विग्रहियो, करि वह रुदन हेक अत कहियो। घरपति सुणि तिल सोच न धारै, विघ करि पांण समस्या वारै।
—सू. प्र.
२ रोने से उत्पन्न शब्द या आवाज।
उ०—जनमें नवत करूरां जिणसूं, तिण नूं वन नांखै दुख तिण सूं। जिण सुणि रुदन दया मनि जांणी, आस्रम रिख माया जित आंणी।
—सू. प्र.

रुदर—१ देखो 'रुद्र' (रू. भे.)
२ देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

रुदरांणी—देखो 'रुद्रांणी' (रू. भे.)

रुदराख, रुधराछ—देखो 'रुद्राक्ष' (रू. भे.)

रुदित-वि. [सं.] १ रोता हुआ।
२ व्याकुल।
३ दुखी।

रुद्द—देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

रुद्वीणा—देखो 'रुद्रवीणा' (रू. भे.)
उं०—सीमंडळ रवाव सार, रुद्वीणा झणंकार, तंत मझि घोर तार, म्रांमा त्रिहणे।
—गु. रू. वं.

रुद्रांणी—देखो 'रुद्राणी' (रू. भे.)

उ०—सूरज पुत्र करण, पेट कुंता उपन्नो, पवन पूत हणमंत, उदर अंजनी उपन्नो। ईस पुत्र खट-मुखस, पुत्र जनमें रुद्रांणी, राघव दसरथ पुत्र, जणैं कउसल्या रांणी। —गु. रू. बं.

रुद्ध–वि. [सं.] १ जिसकी चाल या गति बंद हो गई हो, बंद।

२ रुका या रुका हुआ. ३ घिराया या घेरा हुआ. ४ पकड़ा हुआ.

रुद्धणौ, रुद्धबौ—देखो 'रूंधणौ, रूंधबौ' (रू. भे.)

उ०—केवलि वयणं जु कूडउ थाइ, जउ नवि आव्या पंडवराय। पूछीउ भीमि कथा प्रबंधुवणि जाई वग रागस रुद्धु।

— शालिभद्र सूरि

रुद्धियोड़ौ—देखो 'रूंधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुद्धियोड़ी)

रुद्धा–वि. स्त्री.—१ रोकने वाली।

२ मिटाने वाली।

उ०—देवी नांम भागीरथी नांम गंगा, देवी गंडकी गोमती नांम गंगा। देवी सरसती जम्मना सरी सिद्धा, देवी त्रिवेणी त्रिस्थळी ताप रुद्धा। —देवि.

रुद्धि—देखो 'रिद्धि' (रू. भे.)

उ०—संवत अढार इग्यार में, प्रतिष्ठा 'लीवड़ी' मध्य। 'वढवांण' स्रावक ढुंढकी, बुभक्या खरची रुद्धि। —कवियण

रुद्र–सं. पु. [सं. रुद्रः] १ सृष्टि के प्रारम्भ में ब्रह्मा की भृकुटी से उत्पन्न एक प्रकार के देवता जो क्रोध रूप माने गये हैं तथा जिन से भूत, प्रेत, पिशाचादि उत्पन्न कहे जाते हैं। इनकी संख्या भी ग्यारह मानी गई है परन्तु सर्व प्रथम अथर्ववेद में इनके निम्नलिखित सात नाम ही पाये जाते हैं। यथा—१ ईशान, २ भव, ३ शर्व, ४ पशुपति ५ उग्र ६ रुद्र और ७ महादेव।

पुराणों में अष्ट रुद्रों की नामावली दी गई है जो शतपथ ब्राह्मण की नामावली से मिलती जुलती है। इन ग्रंथों के अनुसार ब्रह्मा से जन्म प्राप्त होने पर ये रोदन करते हुए इधर उधर भटकने लगे। तत्पश्चात् इनके द्वारा प्रार्थना करने पर ब्रह्मा ने इन्हें आठ विभिन्न नाम पत्नियां एवं निवास स्थान आदि प्रदान किये।

प्रमुख पुराणों में से विष्णु, मार्कंडेय, वायु एवं स्कंद पुराण अष्टमूर्ति महादेव की नामावली प्राप्त है।

इन पुराणों से प्राप्त रुद्र की पत्नियों, सन्तानों, निवास स्थानों आदि की तालिका निम्न प्रकार है—

रुद्र का नाम	पत्नी	संतान	निवास स्थान
१ रुद्र	सुवर्चला या सती	शनैश्चर	सूर्य
२ भव	उमा (उषा)	शुक्र	जल
३ शर्व (शिव)	विकेशी	मंगल	मही
४ पशु पति	शिवा	मनोजव	वायु
५ भीम	स्वाहा (स्वधा)	स्कंद	अग्नि
६ ईशा	दिशा	स्वर्ग	आकाश
७ उग्र	दीक्षा	संतान	दीक्षित ब्राह्मण
८ महादेव	रोहिणी	बुध	चन्द्र

एकादश रुद्र—महाभारत एवं पुराणों में प्रायः सर्वत्र रुद्रों की संख्या ग्यारह बताई गई है एवं उनकी उत्पत्ति ब्रह्मा की भृकुटी, कहीं शरीर से होने की कथा बताई गई है। परन्तु इन ग्रंथों से प्राप्त एकादश रुद्रों की नामावली एक दूसरे से मेल नहीं खाती है। उनमें से मुख्य ३ ग्रंथों से प्राप्त नामावलियां इस प्रकार है—

स्कन्द पुराण में—१ भूतेश, २ नीलरुद्र, ३ कपालिन ४ वृषवाहन, ५ त्र्यंबक, ६ महाकाल' ७ भैरव, ८ मृत्युंजय, ९ कामेश एवं १० योगेश।

महाभारत—१ मृगव्याध, २ सर्व, ३ निऋंति, ४ अजैकपात, ५ अहिर्बुधन्य, ६ पिनाकिन, ७ दहन, ८ ईश्वर, ९ कपालिन १० स्थाणु, ११ भव।

भागवत के अनुसार—१ मन्यु, २ मनु, ३ महिनस् (सोम), ४ महत्, ५ शिव, ६ ऋतध्वज, ७ उग्ररेतस्, ८ भव, ९ काल, १० वामदेव, ११ धृतध्वज।

उपर्युक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य पुराणों में प्राप्त एकादश रुद्रों के नाम एवं पाठ भेद इस प्रकार मिलते हैं—१ अजैकपात (अज, एकपात, अपात्), २ अहिर्बुधन्य, ३ ईश्वर (सुरेश्वर, विश्वेसर' अपराजित, शास्तृ, त्वष्टृ) ४ कपालिन्, ५ कपर्दिन, ६ त्र्यम्बक (दहन, दमन, उग्र, चंड, महातेजस्, विलोहित, हवन), ७ बहुरूप (निंदित, निऋंति, महेश्वर), ८ पिनाकिन (भीम), ९ मृगव्याध (रैवत, परंतप), १० वृषाकपि (विरुपाक्ष, भग), ११ स्थाणु, (शंभु, रुद्र, जयंत, महत, अयोनिज, हर, भव, शर्व, ऋत, सर्वसंज्ञ, संध्य एवं सर्प)।

२ भगवान शंकर का एक रूप जो कामदेव को भस्म करते समय एवं दक्ष यक्ष विध्वंस करते समय उन्होंने धारण किया था।

३ महादेव या शिव का एक नाम। (डिं. को.)

४ शनिश्चर। (अ. मा.)

५ घोड़े के कर्ण मूल पर होने वाली भौंरी (चक्र) जो विजय चिह्न माना जाता है। (शा. हो.)

६ ग्यारह की संख्या या ग्यारह। *

७ वटवृक्ष। (अ. मा.)

वि.—८ भयंकर, भयावह।

९ देखो 'रुधिर' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—तक भड़ चढ़ै सिकार, सभै छला सांभर मुग्रर। ग्रवै ग्रमेख रुद्र वार, कमवज पीरां की कबर। —गो. रू.

१० देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

रू. भे.—रउद्द, रउद्ध, रउद्र, रउद्रि, रवद, रवद, रवद्द रवद्दि, रवद्र, रुद्द।

मह.—रवदांण, रुद्रौ।

रुद्रप्रातमज—देखो 'रुद्रातमज' (रू. भे.)

रुद्रक—देखो 'रुद्राक्ष' (रू. भे.)

रुद्रकड़ौ—सं. पु. यौ. [सं. रुद्रः+कटकः] महादेव द्वारा भस्मासुर को दिया जाने वाला कड़ा।

उ०—१ जग सारो जांणै जोधपुरा, चौरंग तणी वार ग्रणचूक। जुड़तां लाख दोयणां जाळै रुद्रकड़ा सारीखो रुक। —रुघौ मुहतौ

उ०—२ रुद्रकड़ा ज्यूं रूक दें, दुजणां धरम द्ववार। तो हत्थां तखतेस तण, ब्रिटिन जाय वळिहार। —किशोरदांन बारहठ

रुद्रकरण—सं. पु. [सं. रुद्रकर्ण] तीर्थ विशेष का नाम।

उ०—ग्रम्रतकेस्वर ग्रति भलुं, रुद्रकरण कणवीर। मधुकेस्वर जिमलिंग तिम, वडवामुख धरि धीर। —मा. कां. प्र.

रुद्रकळस—सं. पु. यौ. [सं. रुद्रकलशः] ग्रहों ग्रादि की शान्ति के लिए स्थापित किया जाने वाला कलश।

रुद्रकाळी—सं स्त्री. [सं. रुद्रकाली] दुर्गा या शक्ति की एक मूर्ति।

रुद्रकोट, रुद्रकोटि—सं. पु.—एक प्राचीन तीर्थ जिसमें रुद्रों का निवास माना जाता है।

उ०—सिद्धकरण गोकरण पण, रुद्रकोट महाकोट। गुरजेस्वर जिहां गरज्जना, महिमा केरी मोट। —मा. कां. प्र.

रुद्रकुंड—सं. पु.—वृज स्थित एक तीर्थ का नाम।

रुद्रगण—सं. पु. [सं.] शिव के पार्षद या गण जिनकी संख्या तीस करोड़ मानी गई है।

रुद्रगरभ—सं. पु [सं. रुद्रगर्भ] ग्रग्नि, ग्राग।

रुद्रघरणी—स. पु. [सं. रुद्र गृहिनी] पार्वती, ऊमा।

उ०—रुद्रघरणी जंपै सोभळी रुद्र। ग्राज लगै तें लिया ग्रनेक। जैसिंघ घूय तणौ धू जोतां, ऊमर भर मो जुड़ियौ एक। —गोरधन बोगसौ

रुद्रघांण—सं. पु.—संहार, ध्वंस।

उ०—तोर जंगां तुरंगां 'जसूंत' जोम काढ़ै तूं ही, धावां क्रोध गाढ़ै तूं ही रचै रुद्रघांण। —हुकमीचंद खिड़ियौ

रुद्रज—सं. पु. [सं.] पारा।

वि.—रुद्र से उत्पन्न।

रुद्रजटा, रुद्रजटाय—सं. स्त्री.—१ रुद्र के शिर के बाल, महादेव के शिर के बाल।

२ एक प्रकार का क्षुप विशेष जिसके पत्ते मयूर शिखा के समान होते हैं।

उ०—रांमोडी नइं रासना, रींगणि रुद्रजटाय। रांग रतांजणी, रुमडी, रनिवनि रंग धराय। —मा. कां. प्र.

३ सौंफ।

४ इसरोल।

रुद्रतनय—सं. पु. [सं.] १ जैन हरिवंश के ग्रनुसार तीसरे श्रीकृष्ण का एक नाम।

२ स्वामी कार्तिकेय।

रुद्रताळ—सं. पु. [सं. रुद्रताल] सोलह मात्राग्रों का ग्रदंग का एक ताल विशेष।

रुद्रतेज—सं पु. [सं.] स्वामी कार्तिकेय का एक नाम।

रुद्रथांनक—सं. पु. यौ. [सं. रुद्रस्थान] कैलाश पर्वत।

रुद्रपत, रुद्रपति—सं. [सं. रुद्रपति] १ शिव, महादेव।

२ बादशाह।

रुद्रपत्नी—सं. स्त्री. [सं.] १ दुर्गा का एक नाम।

रुद्रप्रयाग—सं. पु.—गढ़वाल जिले के ग्रन्तर्गत एक तीर्थ का नाम।

रुद्रप्रिया—सं. स्त्री. [सं.] १ पार्वती।

२ हरीत की, हड़े।

रुद्रबीसी—देखो 'रुद्रवीसी' (रू. भे.)

रुद्रभू, रुद्रभूमि—सं. स्त्री. यौ. [सं.] श्मशान, मरघट।

रुद्रभैरवी—सं. स्त्री. [सं॰] दुर्गा की एक मूर्ति।

रुद्रमाळ—१ देखो 'रुद्रमाळय' (रू. भे.)

२ देखो 'रुद्रमाळा' (रू. भे.)

३ देखो 'रुंडमाळा'

रुद्रमाळका—देखो 'रुद्रमाळा' (रू. भे.)

उ०—तूटी वोम वाट निराताळ सों विछूटी तारो, केतां छूटी पीरांण आलखां ताकै कूप । कोप रुद्रमाळका विहंगनाथ जूटी किना, रूठो गोरां माथै प्रळै काल को सो रूप ।
—गिरवरदांन कवियो

रुद्रमाळय-सं. पु.—एक तीर्थ का नाम ।

उ०—अट्टहास ऊजेणीइ मरु जंगळ माहेंद्र । रुद्रमाळय सिद्धग्रय, रांमेसर सिरिचंद । —मा. कां. प्र.

रू. भे.—रुद्रमाळ।

रुद्रमाळा-सं स्त्री. [सं. रुद्रमालिका, रुद्रमाला] १ शिव के गले में लिपटे रहने वाला, सर्प, सांप ।

२ मुण्डमाळा ।

रू. भे.—रुद्रमाळ, रुद्रमाळका ।

रुद्ररस—देखो 'रौद्ररस' (रू. भे.) (डिं. को.)

रुद्ररांणी—देखो 'रुद्रांणी' (रू. भे.)

रुद्रराय, रुद्रराव-सं. पु. [सं. रुद्रराज] १ महादेव, शिव।

२ बादशाह ।

रुद्ररोदन-सं. पु. [सं.] स्वर्ण, सोना ।

रुद्ररोमा-सं. स्त्री.—कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।

रुद्रलता-स. स्त्री. [सं.] रुद्रजटा ।

रुद्रलोक-सं. पु. [सं.] रुद्र व रुद्रगण के निवास का स्थान ।

रुद्रवंती-सं. स्त्री. [सं.] एक प्रसिद्ध वनौषधि जिसकी गणना दिव्यौषधि वर्ग में की जाती है ।

रू. भे.—रुदंती ।

रुद्रवदन-सं. पु. [सं.] १ रुद्र के मुख जिनकी संख्या पांच मानी जाती है ।

२ पांच की संख्या या अंक । *

रुद्रवाचा-सं. स्त्री. [सं.] वह वचन जो सदैव सत्य रहता हो, सत्य-वचन ।

उ०—तरै इण देवराज कह्यो–ब्रह्मवाचा, रुद्रवाचा हूं दिन दोय मांय विचारनै मांगीस । —नैणसी

रुद्रवीणा-सं. स्त्री.—एक प्रकार की पुराने ढंग की वीणा, नारदवीणा ।

रू. भे.—रुद्रवीणा

रुद्रवीसी-सं. स्त्री.—साठ संवत्सरों में से अन्तिम बीस संवत्सरों का समूह जो अमांगळिक और कष्टप्रद कहा गया है, रुद्रविंशति ।

रू. भे.—रुद्रवीसी

रुद्रसावरणी-सं. पु. [सं. रुद्रसावर्णि] बारहवें मन्वंतर का अधिपति मनु जो भव राजा का पुत्र था ।

रुद्रसुंदरी-सं. स्त्री. [सं.] दुर्गा की एक मूर्ति ।

रुद्रांग्रांणी, रुद्रांणी-सं. स्त्री. [सं. रुद्राणी] १ रुद्र अर्थात शिव की पत्नी, पार्वती, शिवा । (डिं. को.)

उ०—१ सीता सी रांणी वेद वखांणी, सारंग पांणी सांम । मीढ न मघवांणी वळ ब्रह्मांणी, नहीं रुद्रांणी नांम —र. ज. प्र.

उ० —२ लक्ष्मी रुद्रांणी ब्रह्मांणी सुमिरू, सादर सुयस बखांणी।
—राघवदास भादो

२ रुद्रजटा नामक लता ।

३ संगीत में एक प्रकार की रागिनी ।

४ ग्यारह वर्षों की कन्या का नाम ।

रू. भे.—रुदरांणी, रुद्रांणी, रुद्र रांणी ।

रुद्राक्ष, रुद्राख, रुद्राछ-सं. पु. [सं. रुद्राक्ष] एक प्रकार का वृक्ष विशेष जिसके फलों के बीजों की जपने तथा कंठ में धारण करने की माला बनाई जाती है ।

उ०—१ मध्यांन में विराजमांन ध्यांन में धुनी । रुद्राक्ष माळ पांन में मुद्रा उनमुनी । —मे. म.

उ०—२ रांवण रांग रतांजणी, रवणी नइ रुद्राख । रुक खंती रायसली, रोहड़ रोहिणी राख । —मा. कां. प्र.

उ०—३ सोम धूपं खेव सतवारै, एक मुखी रुद्राछ अधारै । बीजो धूंप खेवि तिण वेलै, मझ दांहिणा-वरत संख मेलै । —सू. प्र.

रू. भे.—रुदराख, रुदराछ ।

रुद्राक्षमाळ, रुद्राक्षमाळा [सं. स्त्री. यौ.] रुद्राक्ष के बीजों की बनी माला विशेष ।

रुद्रायण-सं. पु. [सं. रुद्र+रा. प्र. आयण] यवन, मुसलमान ।

उ०—अणी सर सावळ फूटत ऊक, रुद्रायण वाह करै घण रूक । भयांणख भेख सरां छड़ भार, दुहूंवळ धार रगत्त दुसार ।
—सू. प्र.

रुद्रातमज-सं. पु. [सं. रुद्रात्मज] स्वामी कार्तिकेय ।
(नां. मा., ह. नां. मा.)

रू. भे.—रुद्रआतमज ।

रुद्रारि-सं. पु. [सं.] कामदेव, मदन ।

रुद्राळ-वि. पु. [सं. रुद्र+आलुच] रुद्र का, रुद्र सम्बन्धी ।

सं. पु.—१ महादेव, शिव ।

२ यवन, मुसलमान ।

३ देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

रुद्राळु, रुद्राळू-वि. [सं. रुद्र=भयंकर+रा. प्र. लु] भयंकर, भयावह ।

उ०—अंग आळस मोड़तौ, नैंण घोळतौ निद्राळू। कर मेंहदी रंगियां, रोस भरियौ रुद्राळू —पा. प्र.

रुद्रावास-सं. पु. [सं. रुद्र+आवास] शिव के निवास स्थान, काशी, कैलाश, श्मशानादि।

रुद्री-सं. स्त्री. [सं.] १ रुद्र सम्बन्धी वेद मंत्रों का लघु संग्रह जिसमें रुद्र देवता के मंत्र अधिक और विशिष्ट रूप से संग्रहित हैं, (वेद के रुद्रानुवाक या अघमर्षणसूक्त की ग्यारह आवृत्तियां) जिनका पाठ शुभ माना जाता है।

२ एक प्रकार की वीणा।

रुद्रौ—देखो 'रुद्र' (मह; रू. भे.)

उ०—सिवांण छभा रुद्रौ, वळि पयाळ स्रग इंद्रांणै। रट्ठोड वीर वसुधा, त्रिभवणै छभा चतुरह। —गु. रू. बं.

रुधक्क—देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

उ०—हव पंड लड़क्क हलै, खग भल्ल कड़क्क तड़क्क खुलै। भक भक्क रुधक्क खळक भलं, दक दक्क वकै जव थक्क दलं। —पा. प्र.

रुधर—देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

उ०—ठहिया भूखण सरव ठिकाणै, अहि कांकळि पुहपां अहि-नांणै। चोळ रुधर मद पियै सचाळी, विकट करै नाटक विकराळी। —सू. प्र.

रुधराळ—देखो 'रुधिर' (मह; रू. भे.)

रुधिर-सं. पु. [सं.] १ प्राणियों, जीवधारियों के शरीर का रक्त, शोणित, खून। (अ. मा; डिं. को.)

उ०—१ इम इक निसा अमावस आवी, लाल रुधिर सरिता न्रप लाधी। उभै तटां भळ रीठ अरावै, फाटा सीस कमळ बहु फावै। —सू. प्र.

उ०—२ रुधिर खेत माहे एकठी हुई छै। अर ऊपर जु रुधिर की वूंद पड़ै छै। त्यांह की जु ऊंची वूंद उछळै छै। सु चोटीयाळी कहावै। इहै चोसठि योगणि हुई। —वेलि टी.

२ रक्तवर्ण।

वि.—लाल।

रू. भे.—रुइर, रुद्राळ, रुधक्क, रुहिर, रूहिर, रुहि, रूही।

मह.—रुधराळ, रुधिराळ, रुहिराळ, रूहराळ।

रुधिरगुल्म-सं पु. [सं. रुधिरगुल्म] स्त्रियों का एक प्रकार का रोग विशेष जिसमें उनके पेट में एक प्रकार का गोला घूमता रहता है। (इसे राजस्थानी में छोड भी कहते है)

रुधिरांध-सं. पु —एक नरक का नाम।

रुधिरानन-सं पु. [सं. रुधिरानन] मंगलग्रह की वक्रगति विशेष। (ज्योतिष)

रू. भे.—रुहिणाण।

रुधिराळ—देखो 'रुधिर' (मह., रू. भे.)

उ०—गजसीस पड़ै धड़ पड़ै गात, पड़िया किर पाहड़ वज्र पात। गिळ धापै पळचर मंस गाळ, खळकिया घणा रुधराळ खाळ। —सू. प्र.

रुधिरासन—सं. पु' [सं. रुधिराशन] १. श्री रामचन्द्र भगवान द्वारा मारा जाने वाला खर राक्षस का एक सेनापति।

२ राक्षस, असुर।

३ खटमल, जोंक, मच्छरादि।

रुपइयौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

उ०—घणौ उच्छव करि मंगत जणां री घणी आसीस ले करि, करह, केकांण, सोना, सावट्ट, रुपइया, महुरा घणी दे, चीत्रोड़ि री मेघ कहाइ। —द. वि.

रुपट्टी—देखो 'रुपयौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—इसी म्हारी लांबी सीरख कोनीं। थें जांणो-ई-हो आगै जाय, र मनै मिळै तो खाली पंदरै रुपट्टी ही है। —वरसगांठ

रुपणौ, रुपबौ—क्रि. अ.—१ किसी कड़ी या नुकीली चीज का किसी पदार्थ में धसना, गड़ना।

उ०—१ नगर में वड़तां ई चारूं कांनी डीगो परकोटो देख्यौ, तो वां रै इचरज रो पार नीं रह्यौ। चारूं दिसां सांमी भरपूर डीगा दरवाजा। दरवाजा रै भाला रुप्योड़ा किंवाड़। —फुलवाड़ी

उ०—२ सो इकौ सिलै ठोय करने आयो छै। सो रांमदासजी आवता रै बरछी वाही। सो इकौ घोड़ो फूटनै वरछी जाती थकी धरती में रुपी। —रा. सा. स.

२ जमीन के अन्दर खोदे हुए गड्ढे में गाड़ा जाना।

ज्यू; मेळा में भडो रुपणौ।

३ किसी पदार्थ का कुछ अंश जमीन के अंदर इस प्रकार जमना या स्थापित होना कि वह पदार्थ वहां स्थिति हो जाय।

४ खड़ा होना, टिकना, रुकना, ठहरना।

उ०—१ मांय पधारो, उठै ई कांई रुपग्या। —फुलवाड़ी

उ०—२ खूंटा री गळाई रुप्योड़ा ऊभा रह्या। पछै वाग झाल फुरती सूं घोड़ा माथै वैठा। —फुलवाड़ी

५ सदा एक ही दशा, रूप या स्थिति में होना, निश्चल होना।

उ०—म्हैं तो थांनै निरंध आंधा जांणिया। सांमी भांत-भांत री मीठाइयां सजियोड़ी पड़ी अर थें पूतळी री गळाई रुप्योड़ा वैठा। आंख्यां सांमी हाथ वसू मिठाइयां पछै थें वांने खावो क्यूं नीं। —फुलवाड़ी

६ दृढता पूर्वक मुकावला करने हेतु एक स्थान पर टिकना, डटना।

उ०—१ वरती चवदह वरस, पड़ै डळ वेध अपारां, विकट लोग वदळियौ, सोच लागौ उर सारां। कांनी कांनी कळह, दाय कंपनी उर दीधी, खोज खजानौ खास, लुट अेरणपुर लीधौ। वजराग भाट लागा वहै, धके दिली दिस धाउवै। महाराज खीज लेवा मदत, आयर रुपिया आउवै॥ —गिरवरदांन कवियौ

उ०—२ लार 'मांन' वाहर लियां, भड़ जग जाहर भूप। ओखा थाहर ऊपरा, रुपियौ नाहर रूप। —महादांन मेहडू

रुपणहार, हारौ (हारी), रुपणियौ—वि.।

रुपिओड़ो, रुपियोड़ो, रुप्योड़ो—भू. का. कृ.।

रुपीजणौ, रुपीजवौ—भाव वा.।

रुपयो—स. पु. [सं॰ रूप्यक] १ चांदी का सिक्का विशेष।

ऊ०—घर में रांमजी राजी होवतां थकां ई सेट सेठांणी नै इण वात रौ वडो दुख हो के उणां रै कोई संतांन ही नी। कोसिस करण में सेठां पाछ को राखी नी। भाटा जितरा देव पूज्या, राखडी मादळिया ई कराया, गांव रा गुरांसा सनै इलाज ई करायो अर जोधपुर जायर डाक्टरां री छाती में रुपया वाळिया पण गरज कांइ सजी कोयनी। —रातवासौ

२ पुराने ६४ पैसे तथा नए सौ पैसे का नोट।

३ धन-दौलत।

रू. भे.—रिपइयौ, रिपयौ, रिपियौ, रिप्पियौ, रुपियौ, रूपीयौ, रूपैयौ।

अल्पा.—रुपट्टौ, रूपटियौ।

रुपियोड़ो—भू. का. कृ.—१ किसी नुकीली चीज का किसी पदार्थ में घसा या गड़ा हुआ. २ जमीन के अंदर गड्ढे में गाड़ा हुआ. ३ किसी पदार्थ का कुछ अंश जमीन में गड़ा हुआ, स्थितहुवा हुआ. ४ खड़ा हुवा हुआ, टिका हुआ. ५ दृढतापूर्वक एक स्थान पर डटा हुआ.

६ सदा एक ही दशा, रूप या स्थिति में हुवा हुआ, निश्चल हुवा हुआ.

(स्त्री. रुपयोड़ी)

रुपियो—देखो 'रुपयो' (रू. भे.)

उ०—दाळद घर दोळी हुवौ, परणि न आवै पास। रुपिया होवै रोकड़ा, सोरा आवै सास। —ऊ. का.

रुपेरण—देखो 'रूपेरण' (रू. भे.)

रुपेलो—वि. [स्त्री. रुपेली] १ श्वेत प्रकाश युक्त।

उ०—चांदै तणै उजास, रुपेली रातां सीळा। —दसदेव

२ रुपहला।

रुबाई—सं. स्त्री [अ.] १ उर्दू फारसी में एक प्रकार की मुक्तक कविता जिसमें चार मिसरा होते हैं।

२ एक प्रकार का तराना गाना।

रुमहरी—सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा।

उ०—रुमहरी हुसैनाबाद राति, जिण अरब गाय वळि नौख जाति। —सू. प्र.

रुमकझुमक—देखो 'रिमझिमक' (रू. भे.)

रुमांचित—देखो 'रोमांचित' (रू. भे.)

रुमा—सं. स्त्री.—सुग्रीव की पत्नी का नाम।

रुमापुर, रुमापुरी—सं. स्त्री. सांभर नगर का प्राचीन नाम। (त्रं. भा.)

रुमाल – देखो 'रूमाल' (रू. भे.)

रुरुओ—स. पु.—एक प्रकार का बड़ा उल्लू।

रुरक—१ देखो 'रुरुक' (रू. भे.)

२ देखो 'रुरु'

३ देखो 'रुरुक'

रुरु—सं. पु. [सं. रुरुः] मृग विशेष।

२ कस्तूरी मृग।

३ दुर्गा द्वारा मारा जाने वाला राक्षस विशेष।

४ रामराम शब्द की ध्वनि विशेष।

उ०—१ रुरु बोलन के विसवास रए, गुरु गोलन के हम पास गए। —ऊ. का.

रुरुक—सं. पु.—१ विजयसूर का पुत्र, सूर्यवंशी एक राजा का नाम।

उ०—१ संभ्रभ सुदेव न्रप विजयसूर, पुत्र जास रुरुक तप तेज पूर। —सू. प्र.

रू. भे.—रुरक।

रुरुभैरव—सं. पु.—दुर्गा की पूजा के समय पूजा जाने वाला भैरव विशेष।

रुरुरियो—सं. पु.—मारवाड़ राज्यान्तर्गत चलने वाला सिक्का विशेष। (प्राचीन)

रुळकणौ, रुळकबो—देखो 'रळकणौ, रळकवो' (रू. भे)

रुळणौ, रुळबौ, रुलणौ, रुलवौ—क्रि. अ. [सं॰ लुलनम्] १ अवस्था स्थिति या हालत का शोचनीय होना, बरबाद होना।

उ०—१ रंडपोखां रा राज में, रुळगी भूखां रेत। सूंकां नित सीरा करै, दंड न चूकां देत। —ऊ. का.

उ०—२ कंदोई बांरी भोळी वातां सुण नै पैलातो हसियो पछै कह्यो काला मिनखां, म्हैं यूं मिठाई खावूं तौ म्हारौ घर बरबाद नीं व्है जावै। म्हैं काठौ रुळ नी जावूं। —फुलवाड़ी

२ अच्छी या ठीक अवस्था से दुरावस्था या बुरी स्थिति को प्राप्त होना, बिगड़ना।

उ०—१ कनकळ दिली सकाज, वे सांवत पखरैतवे। रुळग्यो देखो

राज, रव-तांडव ज्यूं राजिया। —किरपारांम

उ०—२ जिसौ दधि खेवट हीण जिहाज, रुळे तिम पुत्र विहूणौ राज। —रांमरासौ

३ मन या विचार का शान्त न रहना, इधर उधर जाना, भटकना।

४ छितरना, फैलना, बिखरना।

उ०—१ इता में जोइया हुय भेळा, कर किचकिची पाछा घिरिया, सो आय भिळीया। सो इसौ रीठ वागौ, 'सो न भूतो न भवसते' दीठां ही वरण आवै। घणी तरवारयां रा बांड उछळ छै। घणा सेल आवोसले नीसरै छै। घणां रा फीफर बोल रह्या छै। अंत्रा-वळां रुळ रही छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—रिणंगण हेकां आंत रुळंत हसत्त दांतां हिक हिडुळंत। लड़ै हिक लावै लोह से लोध, जमद्दढ टेक उठै हिक जोध। —ग. रू. वं.

५ इधर उधर होना, तितर बितर होना, बिखरना।

उ०—१ वाह पदम खळ पदम विहारै, वाह पदम हथ पदम उचारै रिणघण थाळ मूंग जिम रुळिया, पड़िया किता किता खळ पुळिया। —सू. प्र.

६ धोखे या भ्रम में पड़कर निश्चित तत्त्व पर न पहुंचना।

उ०—१ आलोयण लीवां पखइ जी, रुळे ससार। रुपी लक्ष्मणा महासती जी, एह सुणयउ अधिकार। —स. कु.

उ०—२ राच रहचा मिथ्या मत मांही, ए रुळे जीव चारूं गति माही। भूलां नै आंणै ठांमी, सुमरो स्रीसीमंधर स्वांमी॥ —जयवांणी

७ घुसना, प्रविष्ट होना।

उ०—हाथा जोड़ी करनै चौगिरद दोळा फिर गया। गोळी तीर वाहणै लागिया। जद भूंडण पांचूं चीलहर छाती आगै लेय इसा ताव सूं नीसरी सौ का तौ थह मांह दीठी थी का फौज मांही रुळती ही दीठी सो पाळां नूं पाल पाधरी। —डाढाळा सूर री वात

८ अनिश्चित आचरणहीन अवांछनीय जीवन होना।

उ०—वौ घोड़ा री रास फुणकारी। मुळकतौ मुळकतौ भूलरा रै मांय घोड़ौ छोड दियौ। मार कूकारोळौ मच्यौ। एक जणी री पींडी घोडा रा खुर सूं चींथीजगी। पींडी अर काळजौ दोनूं चर-वण लागा। सुभाव री आकरी ही। रीस में दांत पीसती बोली—रुळती लायोड़ी रा डीकरा अैड़ा नाजोगा नीं व्हैला तौ किण रा व्हैला। —फुलवाड़ी

९ निरुद्देश्य इधर-उधर मारा मारा फिरना।

१० स्थायी आवास या स्थान के अभाव में कभी कहीं-कभी कहीं भटकते फिरना।

११ इधर उधर पड़ा होना अथवा उठाई पटका छोड़ा फेंकी होना।

१२ युद्ध के बाजे का बजना।

उ०—१ रुळि काहुल त्रंबाळ, तूरहि भेरि नफेरि त्रहि, आरोहै अैराकियां, झिलिया पंथ भूलाळ। —वचनिका

१३ दुर्दशाग्रस्त होकर इधर उधर भटकना, मारा मारा फिरना।

उ०—१ मांणस मुरधरिया मांणक सम मूंगा, कोडी कोडी रा करिया स्रम सूंगा। डाढी मूंछाळा डळियां में डुळिया, रळियां जायोड़ा गळियां में रुळिया। —ऊ. का.

उ०—२ पद्‌मण पांणी जावत प्रात, रुळंती आवत आधी रात। विल्लखा टावर जोवै वाट, धिनोधर वाट धिनोवर धाट। —रगेरेलौ बीठू

१४ लटक कर बार बार इधर उधर हिलना।

उ०—१ घणां मीह जांमा अतर मैं तिलवाय कीधां तिकां रा बध छाती उपरा सू खोल दीधा छै। जिके खुल रया छै। घणा मोति-यां री माळा नैं जवाहरा रा जाळ उर ऊपर रुळ रह्या छै। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

१५ देखो 'रळकणौ, रळकवौ' (रू. भे.)

उ०—मांग जड़चां गजमोतिया, कड़चा रुळंता केस। ताळी हस दे तीजणी, वाळी कामण वेस। —पनां

रूळणौ, रुळबौ —रू. भे.

रुळपट—सं. पु.—१ अव्यवस्थित।

उ०—अैड़ौ खेभौ तौ राज थपियां पछै ई नीं व्हियौ। सगळां पांना में अेक इज परवांनौ लिख्योड़ौ हौ। —इण रुळपट राज में सोना रो सूरज ऊगण वाळो इज है। —फुलवाड़ी

२ देखो 'रळपट' (रू. भे.)

रुळयौ—१ देखो 'रूळौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हुवै न बूझणहार, जांणै कुण किंमत जठै। विन ग्राहक व्योपार, रुळयौ गिणीजै राजिया। —किरपारांम

रुळाई—सं. स्त्री.—१ रोने की क्रिया या भाव।

२ अव्यवस्था।

रुळाणौ, रुळाबौ—क्रि. स.—१ अच्छी अवस्था या स्थिति से बुरी स्थिति को प्राप्त कराना, बिगड़ाना।

उ०—महाराजा अरजी सुणह, सत्रु सकळ मिळ साथ। दीन्हौ राज रुळाय सब, कीन्हौ मोहि अनाथ। —सिंघासण बत्तीसी

२ स्थिति, हालत, अवस्था, आदि को शोचनीय या बरबाद कराना।

३ छितराना, फैलाना।

४ तितर बितर कराना, बिखराना।

५ घुसाना, प्रविष्ट कराना।

६ युद्ध का बाजा बजाना।

७ रुदन कराना, रुलाना।

रुळायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ अच्छी या ठीक स्थिति से बुरी या खराब स्थिति में पहुंचाया हुआ। २ छितराया या फैलाया हुआ। ३ तितर-बीतर कराया हुआ, बिखराया हुआ। ४ प्रविष्ट कराया हुआ, घुसाया हुआ। ५ युद्ध का वाद्य बजाया हुआ। ६ रुदन कराया हुआ, रुळाया हुआ।

(स्त्री. रुळायोड़ी)

रुळिग्राउति, रुलिग्राउति—देखो 'रळियाइत' (रू. भे.)

उ०—पाप करी जीव नरके जाइं, परमाधरमी रुळियाउति थ्याई वाट जोग्रंता हुग्रा घणा दीह, भलइ तम्हि ग्राव्या माहरा सीह।

—वस्तिग

रुळियांमणौ—देखो 'रळियांमणौ' (रू. भे.)

उ०—कुल कीरती ग्रागइ घणी, वंस विसुद्ध वखांण। राजहंस रुळियांमणां, सोनिगिरा चहूग्रांण। —कां दे. प्र.

(स्त्री. रुळियांमणी)

रुळियाइत—देखो 'रळियाइत' (रू. भे.)

उ०—१ झगड़उ भागउ गीरियां, ढोलइ पूरी सख्ख। मारु रुळियाइत हुई, पांमी प्रीय परख्ख। —ढो. मा.

रुळियार-वि.—१ बदमाश, लुच्चा, लफंगा।

उ०—ग्रवै करै तौ हाजरियौ कांई करै। उणरा रुळियार साथीड़ा उणनै मोसा मारता—फिट रै नादार ! धणियां री मूंछ रौ वाळ वण्योडौ फिरै ग्रर एक मांवणकी ई थारै काबू में नीं ग्राई। ढाकणी में नांक डुबोय मर क्यूं नीं जावै। —रातवासौ

२ जिसके रहने या निवास करने का ठौर ठिकाना न हो।

३ दुष्ट, नीच, पाजी।

४ जो इधर-उधर विना मतलब घूमता फिरता हो।

५ चरित्रहीन, व्यभिचारी।

६ वह (पशु) जो फसलों को हानि पहुंचाता व उत्पात मचाता फिरता हो।

उ०—वसी रा लोकांरा खेत ऊभा खाईजै। सु लोक वसी रौ भाखरसी ग्रागै नित-प्रत पुकार घालै। ताहरां भाखरसी नूं छाजु ग्रोळभा तौ घणा ही दिरावै, पण रुळियार घण हुवौ सु रहै नहीं। —नैणसी

७ जिसका कोई सहारा न हो, ग्राश्रयहीन।

रुळियारगी-सं. स्त्री.—१ बदचलनी, लंपटता।

उ०—मन रौ छळ-प्रपंच ई उणरौ धरम, निवळापणौ उणरी जात, ग्रोछाई उणरी न्यात, रुळियारगी उणरी कुळ ग्रर फिटोळपणौ उणरी खांप है। —फुलवाड़ी

२ गड़बड़ी, ग्रव्यवस्था।

३ बदमाशी, लुच्चाई।

४ ग्रावारा होने की ग्रवस्था या भाव, ग्रावारगी।

रुळियाररासौ—१ ग्रराजकता।

उ०—दीवांण धौळै दोपार धाड़ा करै। राजरा ग्रैलकार चौड़ै धाड़ै लूटै। नीं दाद-फरियाद ग्रर नी कीं सुणवाई। दिन बीतै सो बत्तो। ग्रांधां पीसै नै कुत्ता खावै। जबर रुळियाररासौ मचियौ। —फुलवाड़ी

२ ग्रव्यवस्था।

उ०—कोई कैवै के बापनै भंवारा में घात राजगीदी दावली कोई कैवै के बापनै विस देय मरवाय न्हाकियौ। दोनूं छोटा भाइयां नै देस निकाळौ दे दियौ। सगळै राजमें रुळियाररासौ मचाय राख्यौ है। —फुलवाड़ी

रुळियारी-सं. स्त्री.—लंपटता, बदचलनी, व्यभिचार।

२ ग्रावारापन।

रुळियारौ-सं. पु.—गड़बड़ी, ग्रव्यवस्था।

उ०—देखौ ग्राजादी रौ रुळियारौ मचियौ। नितोतांई बेटौ जायौ, नाड़ा पैली नाक कटायौ। —फुलवाड़ी

रुळीग्रांमणौ—देखो 'रळियांमणौ' (रू. भे.)

उ०—जीणइ वसइ जालउरउ कांन्ह, राजरिद्धि छइ इंद्र समांन। रांमपोलि ग्रति रुळीग्रांमणी, चिणइ पोलि तलहटी तणी।

—कां. दे. प्र.

(स्त्री. रुळीग्रांमणी)

रुळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ बरबाद हुवा हुग्रा। २ ग्रच्छी या ठीक ग्रवस्था से बुरी स्थिति में पहुंचा हुग्रा। ३ इधर उधर भटका हुग्रा। ४ इधर उधर, तितर बितर हुवा हुग्रा। ५ छितरा या बिखरा हुग्रा। ६ घुसा हुग्रा, प्रविष्ट हुवा हुग्रा। ७ भ्रम में पड़कर इधर उधर भटका हुग्रा, निश्चित तत्व पर न पहुंचा हुग्रा. ८ ग्राचरणहीन हुवा हुग्रा. ९ निरुद्देश्य इधर उधर भटका हुग्रा. १० स्थायी ग्रावास या स्थान के ग्रभाव में भटका हुग्रा. ११ दुर्दशाग्रस्त होकर फिरा हुग्रा. १२ लटकते हुए हिला हुग्रा. १३ युद्ध का वाद्य बजा हुग्रा.

१४ देखो 'रुळौ' (ग्रल्पा. रू. भे.)

रुळी, रुली—देखो 'रळी' (रू. भे.)

उ०—नीकोली रायण, प्रीसीमन भाइण दाड़िमनी कुली खाता पूजै रुली। —व. स.

रुळीयायत—देखो 'रळियाइत' (रू. भे.)

उ०—खंजरण नैरा मुणाळ गति, नासा दीपका लोय । ढोलौ रुळीयायत हुवौ, जब घण दीठो जोय । —ढो. मा.

रुळेट—१ आवारा ।

२ व्यभिचारी, चरित्रहीन ।

३ वह जिसका विश्वास न किया जा सके ।

रुळो—वि. [स्त्री. रूळी] १ वह जिसका मालिक या स्वामी न हो, विना मालिक का ।

२ वह जिसकी कोई निगरानी न रखता हो, विना निगरानी का ।

३ आबादीहीन, निर्जन ।

४ आवारा ।

५ चरित्रहीन ।

६ व्यर्थ, फिजुल ।

अल्पा;—रुळयौ, रुळियौ, रुळचौ ।

रुळचौ—देखो 'रूळौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ रुळचा खुळया रजपूत, विरांमण मिळगा विटळा । वैस्य मिळ गया विकळ, सूद्र वूळ रुळगा सिटळा । —ऊ. का.

रुवौ—देखो 'रूणौ'

उ०—वें नू सहनांणी दिखाळै एक एक दिखाळै तौ राजा चौपड़ जीपै, तहां रुवा चुकै श्रौ उपाव छै । —पंच दंडी री वारता

रुवाव—देखो 'रौव' (रू. भे.)

रुसतम—देखो 'रुस्तम' (रू. भे.)

रुसतमी—देखो 'रुस्तमी' (रू. भे.)

रुसनाई—सं. स्त्री. [फा. रोशनाई] १ चमक दमक ।

उ०—दहुँ दळां वळि हुवै दिखाई, रजक भळां गोळां रुसनाई ।
—सू. प्र.

२ प्रकाश, रोशनी ।

उ०—१ जिस वखत स्त्रीमहाराज सब लोक की रुसनाई का मुजरा लेकरि राजमिंदरु पधारे । —सू. प्र.

उ०—२ पीळचोसा अढारदांनीश्रां री रुसनाई लागि रहि छै'। तेजपुंज आसप आरोगीजै छै । —रा. सा. सं.

३ आनद, हर्ष, खुशी ।

उ०—तठै कुंवर आ वात सुण घणौ खुस्याळ हुवौ । रुपीया पांच ऊपर सूं इनांम नांखिया अर साथ सारै नु कहचौ, ठाकुरां तयारी करो । घोड़ा जीण करावौ ज्यू चढा । सुअर मार ले आवां । परभात गोठ में नवी रुसनाई आण वपरांवा सतावी करो । भुंय अळगी है । —कुंवरसी सांखला री वारता

४ स्याही ।

उ०—रूका कलम रुघर रुसनायां, आहव खेत खता कर श्रेद । ब्याज मांय केता सर वाडै, काटा मांय कितां दे कैद ।
—बुधजी आसियौ

रू. भे.—रोसनाई ।

रुसभदेव—देखो 'रिसभदेव' (रू. भे.)

रुसा - देखो 'रसा' (रू. भे.) (अ. मा.)

रुसाणौ, रुसावौ—क्रि. अ.—क्रुद्ध होना कुपित होना, नाराज होना ।

उ०—ताहरा हरदास कह्यौ, कुरजपूत । म्है म्हारो पिंड ही वडायौ । ताहरां हरदास विना घाव सारा हुवां रुसायनै हालियौ । वास छोडियौ । —नैणसी

रुस्ट—वि. [सं. रुष्ट] नाराज, अप्रसन्न, कुपित ।

रुस्टता—सं. स्त्री. [सं. रुष्टता] अप्रसन्नता, नाराजगी ।

रुस्टपुस्ट—वि. [स. हृष्पुटष्ता] मोटा ताजा, हृष्ट-पुष्ट ।

रुस्टि—सं. स्त्री. [सं. रुष्टि] कोप, गुस्सा, क्रोध ।

रुस्तक—सं. पु.—एक प्रकार की मिठाइ विशेष ।

उ०—गुंद वड़ा पाया तणा रे लाल, आंवा रायण आंण । रुस्तक रा दांणा भला रे लाल, गूंदपाक सूख खांण । —प. च. चौ.

रुस्तम—सं. पु.—१ फारस का एक प्राचीन पहलवान ।

२ कोई वहुत वड़ा वीर व्यक्ति ।

उ०—देवीदास रुस्तम ज्यूं जंग कर कांम आयो । —वां. दा. ख्या.

रुस्तमी—सं. स्त्री.—वीरता, वहादुरी ।

रुहपत—सं. स्त्री. [सं. पत्ररुह] पृथ्वी, धरती । (अ. मा.)

रुहराळ—देखो 'रुधिर' मह., (रू. भे.)

उ०—हिय चाड पछाड़ सराड़ हुड़ी, भड़ पाड़ उडाड़ चुंहाड़ भड़ी । असवार विना अस जूंभ इसी, रुहराळ हुड रणरंग रसी ।
—पा. प्र.

रुहराळी—सं स्त्री. [सं. रुधिर+आलुच्] रक्त सम्वन्धी, रक्त की ।

उ०—वडी मसीत ईदगावाळी । रत सूवरां तणै रुहराळी ।
—रा. रू.

रुहाड़, रुहाडि—सं. स्त्री.—१ मनोरथ, मनोकामना ।

उ०—१ रे साजन तुझ मन तणी, पहुचसिइ सघळी रुहाडि । परिण नवि मोरा मन तणा, जांणौ म्हो रे पेलाडि । —जयवत सूरि

उ०—२ पूंगळ ढोलो पाहुणौ, रहियौ सासरवाड़ि । पनरा दिहाडा पदमणी, मांणि मनां रुहाडि । —ढो. मा.

रू. भे.—रुहाड़ ।

रुहितास—सं.—देखो 'रोहितास' (रू. भे.)

रुहिनाळ—सं. पु.—रक्त का नाला ।

उ०—पड़ै रुहिनाळ तणा परनाळ, खळकत जांणिक गैरुव खाळ ।
—सू. प्र.

रुहिर—देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

उ०—१ तड़िळ तड़लल थहे रिण थळ, रुहिर रळतळ प्रछड़ पड़

अचल जुवळ अणियल जुड़ै करिवा जेत ।
—प्रतापसिंघ म्होंकमसिंघ री वात

उ०—२ जोगण पहली खाय पळ, करै उतावळ काय । भर खप्पर वाल्हे रुहिर, देसी कत धपाय । —वी. स.

रुहिरांणण—देखो 'रुधिरांनन' (रू. भे.)

रुहिराख-सं. पु. [सं. रुधिराख्य] एक प्रकार का रत्न या मणि ।

रुहिराळ—देखो 'रुधिर' (मह., रू. भे.)

उ०—१ घरा पुड़ वेधि रगे अहि धोळ, छिलै रुहिराळ तणौ अति छौळ । —सू. प्र.

उ०—२ मिलक्किय दीन दहूं जूधपूर, हलक्किय वैठि विमांनांनि हूर । किलक्किय जुग्गनि सव्द कराळ, खळक्किय भूमि किते रुहिराळ । —ला. रा.

रुहुला—देखो 'रुहेला' (रू. भे.)

उ०—वारु वीरे वरांसिंह, रुहुला राज में खोहि । अवळा आप ऊतावळी, महिपति पडिसिय मोहि । —मा. कां. प्र.

रुहेलखंड-सं. पु. —रुहेला पठानों के वसने का अवध के उत्तर-पश्चिम का एक प्रदेस ।

रुहेला-सं. स्त्री—पठानों की एक शाखा ।

रूं-सं. पु.—देखो 'रूई' (रू. भे.)

उ०—कहे स्रीमुखां रांण जोधां करारां, हणूं पूंछ रूं व्रत वांधौ हजारां । —सू. प्र.

२ देखो 'रोम' (रू. भे)

उ०—२ पेट भार हिरण्यां वहे, रह्यौ न ओटौ कोय ।रूंआंरूंआं नीसरै, लूआं लूआं लोय ॥ —लू

उ०—३ मिनख री मरजादा सूं लुगाई री मरजादा मेळ नीं खावै । मांनूं के मिनखरै कारण लुगाई नै आपरी मरजादा निभावण री किणी दिस सूं कोई छूट नीं है । लुगाई रो रूं रूं मिनख रै खूंटै पंखड़ीजियोड़ी है —फुलवाड़ी

मुहा—रूं रूं फाटणौ=अत्यधिक दर्द होना ।

रूं रूं कांपणौ=भयभीत होना ।

रूं रूं ऊभौ व्हैणौ=रोमांच होना ।

रूं फाटणौ=सहम जाना ।

रूंआळी-सं. स्त्री.—कांति, दीप्ति, ओज ।

वि.—१ सुंदर, मनोहर ।

उ०—वांहड़ियां रूंआळियां घण वंकै नयणेह । जण जण साथ न वोल ही, मारू वहुत गुणेह । —ढो. मा.

रू. भे.—रूंवाळी ।

२ देखो 'रोमावळी' (रू. भे)

रूंआळौ-वि. [सं. रोम+आलुच] (स्त्री. रूंआळी) रोमयुक्त, रोम पूर्ण ।

उ०—१ नस ओछी अर जाडी । भरपूर रूंआळो डील ।
—विजयदांन देथौ

उ०—२ ऊंची नीची सरवरिया री पाळ, जठै ने ऊजळी रूपो नीपजै । रूपो सोहै पावू धणी रै पाव, रूआळा पींडों से रूपो हद सोहै । —लो. गी.

२ सुंदर, मनोहर, कांतिवान ।

रू. भे.—रूंवाळौ

रूंआवळ—देखो 'रोमावली' (रू. भे.)

रूंख-सं. पु. [सं. वृक्ष] १ पेड़, वृक्ष ।

उ०—१ बोल्यो – नांनी-मां म्हनै ई मात गुलगुला तळनै दे । म्हैं ई गुलगुला री रूंख उगावूंला । डालां माथै वैठ नित गुलगुला खावूंला । —फुलवाड़ी

उ०—२ हिवड़ा भीतर पेस करी, ऊगो सज्जण रूंख । नित सूखे नित पल्लवै, नित नित नवला दूख । —अग्यात

उ०—३ तांहरा एकै रूंख हेटीही जाजम विछायनै दोनूं सिरदार सूता —नैणसी

रू. भे.—रुक्ख, रुख, रूंखी रोंख ।

अल्पा.—रूंखलड़ो, रूंखड़ियो, रूंखड़ो, रूंखड़ौ, रोंखड़ो ।

मह.—रूंखड़ ।

रूंखड़-सं. पु.—१ दरियाई नारियल का खप्पर लेकर 'अलख' कह कर भीख मांगने वाले एक प्रकार के भिक्षुकों का दल ।

२ देखो 'रूंख' (मह; रू. भे.)

रूंखड़ियो-वि.—१ वृक्षों पर वास करने वाला ।

सं. पु.—१ वंदर ।

२ मूर्ख ।

३ देखो 'रूंख' (अल्पा; रू. भे.)

रूंखड़लो-सं. पु.—१ देखो 'रूंख' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—१ सुगनचिड़ी सूरज नै पूछ्यौ गिरजां नै कंकाळ । धोरां नै पूछै रूंखड़ला, लासां नै अगिनरी झाळ । —चेतनमांनखो

रूंखड़ी-सं. स्त्री—१ जड़ी-वूटी ।

रूंखड़ो—देखो 'रूंख' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ तळ पंथी गळ फूल फळ, सिर पंछी न समाय । औ हिज हरियौ रूंखड़ो, सूको ठूंठ कहाय । —अग्यात

उ०—२ जे भावित भवतव्यता रे हां, न चलै तात उपाय । जेहवौ वावै रूंखड़ो रे हां, तेहवा हीज फल थाय । —वि. कु.

उ०—३ सरवो व्है तो कांन लगा सुण, माटी थनै वुलावै है । नैण हुवो तो देख रूंखड़ा, धरती हात हिलावै है । —चेतमांनखो

रूंखड़ौ—देखो 'रूंख' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—ते धन्य ते वनसपती, व्रक्ष तणी धन्य छाया रे । धन्य ए

सघला रूंखडा, जिहां वइठा नलजी राया रे।
—नळ-दवयंती रास

रूंखराइ, रूंखराई—सं. स्त्री. [सं. वृक्ष+राजि] १ वृक्षों की कतार। २ वनस्पति।
उ०—१ रटति पूत मिसि मधुप रूंखराइ, मात स्रवति मधु दूध मिसि। —वेलि

रूंखां-सिणगार—स. पु. [सं. वृक्ष+शृंगार] १ चंदन। (ह. नां. मा.)

रूंखावळी—सं. स्त्री. [सं. वृक्ष+अवलि] १ वनस्पति।
उ०—१ रूंखावळिया पल्लव फूटा। विणा अंकुर हुआ घरती नीली दीसै लागी। सु मांनौ प्रथमी नीला वस्त्र ऊढ्या छै। —वेलि

रूंखावाळौ, रूंखाळौ—सं. पु १ [सं. वृक्ष+आलुच] वंदर।

रूंखी—सं. स्त्री.—देखो 'रूंख' (रू. भे.)
उ०—मारगि मोटा डूंगरा, नद वाहुला विसेखी। जलचर खेचर भूमिचर, वसुवा रूंघी रूंखी। —मा. कां. कं.

रूंग—देखो 'रूंगतौ' (रू. भे.)
उ०—१ रांमत्या रा वळगा रूंग, मोटा मोटा दिस्या ढूंग। —अज्ञात

रूंगटौ—देखो 'रूंगतौ' (रू. भे.)

रूंगटाळी—सं. स्त्री.—मेंड़।

रूंगतौ—१ रोम, रोआ, केश।
उ०—१ नाई मिसखरी करतां वोल्यौ—वां टाट्या सिरदारां रै माथै अेक ई रूंगतौ नीं है तोई वोखौ-खायगा। —फुलवाड़ी
उ०—२ इतरा में तौ न मालम कीकर ई सांकळ निकळगी अर हड़ड़ड़...ड़ धम्मीड़ करती पट्टी आंगणा पर। जे म्हूं फुरती से आगौ नी सरक जावतौ तौ चटणी-चटणी......। ओ ए मां! रूंगता ऊभा व्हैग्या अर उण चौवरी रौ गोडौ काठौ पकड़ लियौ। —रातवासौ
रू. भे.—रूंग, रूगटौ।

रूंगी—सं. स्त्री.—सनक।
उ०—१ सूंगी ढिग राग समाज सुरावट, मन रूंगी गो काजं मरे मूंगी हेक गिणै नह मारू, पूंगी राग अवाज परे। —ठा. गंभीरसिंह रौ गीत

रूंगीलौ—सं. वि. [स्त्री रूंगीली] १ सनक की आदत या स्वभाव वाला, सनकी।

रूंगूं—सं. पु.—अश्रु,वंद, आंसू।
उ०—१ वनफळ आपूं व्रक्ष थी, जु तुंहि भावि। द्रांमणी देखी तुझ नि मूंह्नि रूंगू आवि। —नलाख्यान

रूंचौ—वि. [मी रूंची] वह जिसके पांव तिरछे पड़ते हो।

रूंझ—सं. पु.—१ एक प्रकार का कंटीला वृक्ष जिसका पका फल खाने से वकरी मर जाती है। (अलवर)
अल्पा.,—रूंझट, रूंझड़ौ।

रूंझड़ौ—देखो 'रूंझ' (अल्पा., रू. भे.)

रूंझट—१ झंझट, झमेला।
देखो 'रूंझ' (अल्पा, रू. भे.)

रूंठ—सं. पु.—लकड़।
उ०—१ ले भड़ां रटाकां पूर अरिंदा ताड़व्वा लागा, महावीर खीज में पाड़व्वा लागा मूंठ। वीर वे सतावां जहां दूधारा झाड़व्वा लागा, रोजगारा खाती ज्यूं फाड़व्वा लागा रूंठ। —सुखदांन कवियौ

रूंड—१ देखो 'रुंड' (रू. भे.)
उ०—१ उर रूंडन की माळ विराजै, कर खप्पर विषधारी। मुमरू देवी को धणी जो, विघया वुध अपारी। —रुकमणी मंगळ
२ पिंगल के अनुसार एक मात्रिक छंद विशेष।

रूंडमाळ—देखो 'रुंडमाळ' (रू. भे)
उ०—१ दीठा नयण त्रिणि मुख पांचइ, कपिल जटा सुविसाल। रूंडमाळ दीठी करि तूंवा दीठउ व्रह्म कपाळ —कां. दे. प्र.

रूंडळौ—देखो 'रुंड (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ तांडळां दळां डूंगळा टूंक, रूंडळां रूळ सीकळां रूंक। —गु. रू. वं.

रूंण—देखो 'रूण' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

रूंणझूण—१ देखो 'रणझुण' (रू. भे.)
उ०—ओढण लालर ऊमदा, रति सचि रै रूप। रूंणझुण करती राजवण, आइ पिलंग अनूप। —अग्यात

रूंणझूणणौ, रूंणझूणवौ—देखो 'रणझुणणौ, रणझुणवौ (रू. भे.)
उ०—नेपुरां नांदइं रूणझूणइं, वहुविविध प्रतिरव भेख। —रुकमणी-मंगळ

रूंतणौ, रूंतवौ—देखो 'रूंदणौ, रूंदवौ' (रू. भे.)

रूंताणौ, रूंतावौ—देखो 'रूंदाणौ, रूंदावौ' (रू. भे.)

रूंतायोड़ौ—भू. का. कृ.—देखो 'रूंदायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रूंतावियोड़ी)

रूंतावणौ, रूंतावौ—देखो 'रूंदाणौ, रूंदावौ' (रू. भे.)

रूंतावियोड़ौ—देखो 'रूंदायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री रूंताड़ियोड़ी)

रूंतियोड़ौ—देखो 'रूंदियोड़ौ' (रू. भे.)

रूंतोड़—सं. पु.—१ वाल के जड़ से टूट जाने पर होने वाला फोड़ा।

रूंदणौ, रूंदवौ—क्रि. स.—पैरों तलै कुचलना।
२ मसलना।

३ अधिकार में करना, कब्जे करना।
४ रोकना।
रूंदणहार, हारौ (हारी), रूंदणियौ—वि.।
रूंदिग्रोड़ो, रूंदियोड़ो, रूंदयोड़ो—भू. का. कृ.।
रूंदीजणौ, रूंदीजवौ—कर्म वा.।

रूंदळणौ, रूंदळवौ—देखो 'रूंदणौ, रूंदवौ' (रू. भे.)
उ०—इतरै सूअर वळै फौज सूं भिळियौ सो सारी फौज फरोळतौ रूंदळतौ फिरै छै। इसी तरह घणौ कजियौ कर पार हुवौ।
—दाढाळा सूर री वात

रूंदाड़णौ, रूंदाड़वौ—देखो 'रूंदाणौ, रूंदावौ' (रू. भे.)
रूंदाड़णहार, हारौ (हारी), रूंदाड़णियौ—वि.।
रूंदाड़ियोड़ो, रूंदाड़ियोड़ो, रूंदाड़योड़ो—भू० का० कृ०।
रूंदाड़ीजणौ, रूंदाड़ीजवौ—कर्म० वा०।

रूंदाणौ, रूंदावौ—[रूंदणौ क्रि. प्रे. रू.] १ पैरों तले कुचलाना।
२ मसलाना।
३ अधिकार या कब्जे कराना।
४ रोकाना।
रूंदाणहार, हारौ (हारी) रूंदाणियौ—वि.।
रूंदायोड़ो—भू० का० कृ०।
रूंदाईजणौ, रूंदाईजवौ—कर्म वा०।
रूंताणौ, रूंतावौ, रूंदाड़णौ, रूंदाड़वौ, रूंदावणौ, रूंदाववौ। —रू. भे.

रूंदायोड़ो—भू. का. कृ.—१ पैरों तले कुचलाया हुआ. २ मसलाया हुआ. ३ अधिकार या कब्जा कराया हुआ. ४ रोकाया हुआ. (स्त्री. रूंदायोड़ी)

रूंदावणौ, रूंदाववौ—देखो 'रूंदाणौ, रूंदावौ' (रू. भे.)
रूंदावणहार, हारौ (हारो) रूंदावणियौ—वि०।
रूंदाविग्रोड़ो, रूंदावियोड़ो, रूंदाव्योड़ो—भू० का० कृ०।
रूंदावीजणौ, रूंदावीजवौ—कर्म वा०।

रूंधणौ, रूंधवौ—क्रि. स. [सं. अवरुद्धनम्] १ रोकना।
उ०—१ खळ पळ खेचरां वीर नारद खिले, ऊपरा ऊपरी गैढलां ऊथलै। चाय गुरु 'अचळ' दादौ तको मचचले, पतसाही कटक रूंधियौ 'पातले'। —सवतावत प्रतापसिंह री गीत
उ०—२ लाख नेस लुटिजै, देस कीजै फुड़ ऊंघै। जितौ भूक हुय जाय रूक साहे पथ रूंधै। एक मार चूरियां भार परवार न भाळै। करै एक पौकार दिली बाजार विचाळै। —रा. रू.
२ आच्छादित करना।
उ०—१ मारगि मोटा डूंगरा, नद वाहुळा विसेखी। जलचर खेचर भूमिचर, वसुधा रूंधी रुंखी। —मा. कां. प्र.
३ विचारों में उलझना, फंसना।
उ०—१ माईत तो पाछा आपरै मंसोवा में रूंधग्या अर टावर आपरी अबूझा-प्रीत में तारां रै सागै विचरतां विचारता वांनै ऊंग आयगी। —फुलवाड़ी
४ घेरना, आवेष्टित करना।
उ०—सूअर सूतौ नीद भर, भूंडण पोहरा देह। ऊठो नाथ निंदाळवां, घर रूंधौ घोड़ेह। —दाढाळा सूर री वात
उ०—१ जन्म लगइ जेहनां घन लीजइ, तेह चाडि संग्रांमि। कइ आपणा प्रांण ऊगारचा, रूंध्यउ मेल्हचउ स्वांमि। —कां. दे. प्र.
५ रौंदना, मसलना।
उ०—१ दांढाळी तूंड सूं घणा नै ई. उलाळ उलाळ हेटे थरकाया हाथी गुड़चा असवारा नै रूंधता न्हाय छूटा। —फुलवाड़ी
रूंधणहार, हारौ (हारी) रूंधणियौ—वि०।
रूंधिग्रोड़ो, रूंधियोड़ो, रूंध्योड़ो—भू० का० कृ०।
रूंधीजणौ, रूंधीजवौ—कर्म वा०।

रूंधाड़णौ, रूंधाड़वौ—देखो 'रूंधाणौ, रूंधावौ' (रू. भे.)
रूंधाड़णहार, हारौ (हारी) रूंधाड़णियौ—वि०।
रूंधाड़िग्रोड़ो, रूंधाड़ियोड़ो, रूंधाड़चोड़ो—भू० का० कृ०।
रूंधाड़ीजणौ, रूंधाड़ीजवौ—कर्म वा०।

रूंधाणौ, रूंधावौ—क्रि. स. [रूंधणौ क्रि. प्रे. रू.] १ रोकाना।
२ आच्छादित कराना।
३ विचारों में उलझाना।
४ मसलाना।
रूंधाणहार, हारौ (हारी), रूंधाणियौ—वि.।
रूंधायोड़ो—भू. का. कृ.।
रूंधाईजणौ, रूंधाईजवौ—कर्म वा.।
रूंधाड़णौ, रूंधाडवौ, रूंधावणौ, रूंधाववौ—रू. भे.।

रूंधायोड़ो—भू० का० कृ०—१ रोकाया हुआ २ आच्छादित कराया हुआ. ३ विचारों में उलझाया हुआ. ४ रौंदाया या मसलाया हुआ. (स्त्री. रूंधायोड़ी)

रूंधावणौ, रूंधाववौ—देखो 'रूंधाणौ, रूंधावौ' (रू. भे.)
रूंधावणहार, हारौ (हारी), रूंधावणियौ—वि०।
रूंधाविग्रोड़ो, रूंधावियोड़ो, रूंधाव्योड़ो—भू० का० कृ०।
रूंधावीजणौ, रूंधावीजवौ—कर्म वा०।

रूंधावियोड़ो—देखो 'रूंधायोड़ो' (रू. भे.) (स्त्री. रूंधावियोड़ी)

रूंधियोड़ो—भू. का. कृ.—१ रोका हुआ. २ आच्छादित किया हुआ. ३ विचारों में उलझा हुआ. ४ आवेष्टित किया हुआ. ५ मसला हुआ. (स्त्री. रूंधियोड़ी)

रूंन—१ रोने की अवस्था या भाव।

रूंवड़ी—सं. स्त्री.—१ शरीर से विकृत खून को बाहर निकालने का

उपकरण।

२ फोड़ा, फुन्सी।

रूंबरौ-सं. पु.—एक विशेष जाति का घोड़ा।

उ०—१ कनूजदेस ना कुलथा। मध्यदेस ना महूयडा। देवगिरा। देवगिरा देखाऊ। रूंबरा। वेवाण। संभ्रांणी। पांणीपंथा।
—कां. दे. प्र.

रूंम—देखो 'रोम' (रू. भे.)

उ०—गुरु गूंग गोला गुरु, गुरु गिदकां री मैल। रूंम रूम में यूं रमें ज्यूं जरवां मे तेल। —ऊ. का.

रूंस-वि.—सदृश्य, समान।

उ०—रावळ वापा जसौ रायगुर, रीस खीज सुरपतरी रूंस। दस सहंसा जेहो नह दूजो, सकती करै गळा रा सूंस। —वारूजी सोदो

सं. स्त्रीं.—१ तरह, प्रकार, भांति।

उ०—टणकारां गं घंटां झालरी झणंकार टोपां, धारां फूल चौसरां गळां रा जांगी धूंस। रुण्ड नच्चै मोती थाळ आरती उतारै रंभा, रुद्र गोती गनीमां चरच्चै इसी रूंस। —ऊमेदरांम मांदू

२ शोभा, छवि, सुंदरता।

उ०—१ कल कदमूं के लंगर भारी कनक की हूंस। जवाहर के जेहर दीपमाला की रूंस। —र. रू.

उ०—२ रूंस सहर री गांमडै, आजै वणियो ओट। हाथाळ हण हाथियां, कीधा पंजर कोट। —वी. स.

३ इच्छा, चाह।

उ०—२ झपट चमर छत्र छांह न झेलै, खेल वसंत गुलाल न खेलै। हित करि वाग रूंस नह हालै, चादर हौज फुंहार न चालै।
—मू प्र.

४ क्रोध, गुस्सा।

उ०—राजा कियो न रूंस, धन लै ढळिया धाड़वी। मांवत मद में सूंस, मूंमल सुणवे माळियां। —अग्यात

५ खाद्य पदार्थ।

उ०—संदरि परूस्या सालणा रे लाल, हिव पकवाने हूंस। खारिक निमजा खोपरा रे लाल, प्रीसतां रूंडो रूंस।
—प. च. चौ.

रूंसणौ-सं.—देखो 'रिसांणौ' (रू. भे.)

रूंसणौ, रूंसबौ—देखो 'रीसणौ, रीसवौ' (रू. भे.)

उ०—१ धसै दळ मूगळ कीध विधूंन, रुद्रगण दक्ष तणै जिग रूंस।
—सू. प्र.

रूंसणहार, हारौ (हारी), रूंसणियौ—वि०।

रूंसिग्रोड़ौ, रूंसियोड़ौ, रूंस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूसीजणौ, रूसीजवौ—भाव० वा०।

रूंसदार-वि.—१ शानदार, सुन्दर ठसकदार।

उ०—१ तद दासी मोजड़ी लेनै मांहे गई। कह्यौ—"वेगम साहिब आप दीनु पातिसाहां के फरजन हौ, तिको निपट सू.चूंप सूं रूंसदार मोजड़ी पगां पेहरौ हौ।" —वीरमदे सोनगरा री वात

रूंसाड़णौ, रूंसाड़वौ—देखो 'रूंसाणौ, रूंसावौ' (रू. भे.)

रूंसाड़णहार, हारौ (हारी), रूंसाड़णियौ—वि.।

रूंसाड़िग्रोड़ौ, रूंसाड़ियोड़ौ, रूंसाड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंसाड़ीजणौ, रूंसाड़ीजवौ—भाव० वा०।

रूंसाणौ, रूंसावौ-क्रि. स.—१ कुपित करना, क्रुध करना।

२ नाराज करना।

रूंसाणहार, हारौ (हारी) रूंसाणियौ—वि०।

रूंसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंसईजणौ, रूंसाईजवौ—कर्म वा०।

रूंसाड़णौ, रूंसाड़वौ, रूंसावणौ, रूंसाववौ —रू० भे०

रूंसायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ क्रुध किया हुआ। २ नाराज किया हुआ। (स्त्री. रूंसायोड़ी)

रूंसावणौ, रूंसाववौ—देखो 'रूंसाणौ, रूंसावौ' (रू. भे.)

रूंसावणहार, हारौ (हारी) रूंसावणियौ—वि०।

रूंसाविग्रोड़ौ, रूंसोवियोड़ौ, रूंसाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंसावीजणौ, रूंसावीजवौ—कर्म वा०।

रूंसावियोड़ौ—देखो 'रूंसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रूंसावियोड़ी)

रूंसियौ-सं. पु.—१ अनाज के ढ़ेर के चारों तरफ लगाई जाने वाली खाई।

उ०—१ रमता कर रिगटोळ खूंदता मारग हालै। खळां रूंसिया, खोद, घाव खाई दे घालै। —दसदोख

२ एक प्रकार का घास।

रूंसौ-सं. पु.—१ प्रेत।

उ०—१ इम कहनै दोनूं हाथ मोहड़ै ऊपर वळै फेर ने कहीयो, 'मेह वूठा तद पांणी पीयो हंतो। इय सुणनै वरछी रूंसौ ऊभी कीवी। —मांडणसी कूंपावत री वात

रूंह—१ देखो 'रुह' (रू. भे.)

उ०—१ सूरत के भयांणख जमराणूं के जोस, जंगू के जालम तीरमदाजूं के सिरपोस। रूंह के सुरख चमरूं के मंजार, रोसके झाळाहळ आतस के अंगार। —सू. प्र.

रू—१ देखो 'रोम' (रू. भे.)

उ०—१ कांगरै थूवरा, मोटै पूठै रा, छोटे पींडांरा, झांमरै पूंछरा, भुवरियै रू रा, चोळमैं रंगरा, लांघियै सिंघ ज्यूं लकां चढिया थका, भागा गाडा ज्यूं वठठाट करता थका, वेस्या स्यूं झाला करता थका, मातै हाथी ज्यूं हूंकारा करता थका)
(खींची गंगेव नींबावतरौ दो-पहरौ

२ देखो 'रुई' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां दीवै ऊपरां आगीयौ वेताल वोलियौ—पहिलै लोहरौ घडीयौ दीवौ। माहि घातियौ तेल। रू री वाट जगाई। —चौवोली

रूअड़उ, रूअडउ, रूअडु, रूअड़ो, रूअडौ—देखो 'रूड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ करहा तूं मनि रूअडउ, वेघ्यां करइ विछोह। अजइ कुआरइ वप्पड़ा, नही ज कांमिरण मोह। —ढो. मा.

उ०—२ रवि! ताहरू रथ रूअडउ, आघउ पाछउ वालि। ग्रेकइ पडइइ ऊथल्यू. तउ हिजि रहिउ तरीयालि। —मा. कां. प्र.

उ०—३ मुख पखालेवा गयु प्रीउडउ, आवतु हुसीइ कंत रूअडउ। वाट जोइ नारी तिहां, मझ मूंकीनइ नल गयुं किहां। —नल-दवदंती रास

उ०—४ नाभि विवर अति रूअडुं, घरण नलीआरइ पेटि। उन्नत उर विसाल परण, भल तइ सकइ न भेटि। —मा. कां प्र.

उ०—५ चरइ मेलडी साकर द्राख, अति रूअडा तुरंगम लाख। पांगीहारि पोलीआ मूआर, दासदी कोलां संख न पार। —कां. दे. प्र.

उ०—६ सदा फलांरिग निंवु आंगी राइरगी महूअडा कल्हार जंवुई नारंग रंग वाग रूअडा। —गु. रू. वं.

उ०—७ एकवीस छत्र चांमर ढलइ, छपन कोडि लक्ष्मी वसइ। पातसाह मदाफर टोडरमल्ल, रंगि रुपि रूअडइ हमइ। —व. स.

८ परिण कसिउ एक छि जे सासू तरणु सरणगार ? करि कंकरण मोवररगमि चूडी रूपइ रंभा अनि रूअडी। —व. स.

((स्त्री. रूअडी, रूअडी)

रुई-सं. स्त्री.—१ कपास के डोडे या कोश में से निकलने वाले वारीक रेशों का घुआ।

उ०—१ एरगी पिरि ते रजनी वीती, थयूं प्रात काल जी नाठां भागां सोघी काढि, रह्यां रूई छि वाल जी। —नलाख्यांन

रू. भे.—रूं रु; रूइ।

रुईदार-वि.—१ रुई के समान।

२ जिसमे रुई भरी गई हो।

रुउ-सं. पु.—१ एक सिक्का विशेष।

उ०—१ अंतर दीसइ एवडू नवडउ सोनईउ रूंउ रे। अंतर दीसइ एवडू जेवडउ वाप नइ फूउ रे। —नल-दवदंती

२ गायों का समूह, गोभुण्ड।

उ०—रुउ मधउ रणांगरिग मूंकइ तेह नांमु निमुणी जग थुकइ गायत्री य छलि जे नर नासइ वीर मांहि सु पडइ पुरिग हासई। —सालि सूरि

रुक-सं. स्त्री.—१ तलवार, कृपाण। (डिं. को ह. नां. मा.)

उ०—१ महा जुपइ मत्तं, हमो आवरत्तं रुके उड्डि रीठं गुड़े जोध ग्रीठं। —गु. रू. वं.

उ०—२ तोड़िचंदी तोड़ियौ निहंग चढियौ पडि नाळौ। गढ विकराळौ 'गजरण' रूक वळि लियौ रनाळौ। —सू. प्र.

रू. भे.—रुक।

यौ.—रूकचालक, रूकचाळौ, रूकभड़ी, रूकभल, रूकहथ

मह.—रूकड़।

रूकड़—देखो 'रूक' (मह., रू. भे.)

उ०—१ रुक रुक तीरां-रूकड़ां, मुख मुख वीरां मोळ। पूंचाळा हेकरण पखें, दळ में प्रवळ दरोळ। —वी. स.

उ०—२ घरणी लाज वीटियौ वाज मेलिया नत्रीठै। दहूँ ग्रोर रूकड़ां, रीठ उडियौ गरीठै। —वगतौ खिड़ियौ

रूकचलाक, रूकचालक-वि. यौ.—१ योद्धा, वीर।

उ०—१ क्रोधार महंतां कथा राखवा समंदा कड़े, स्रीहथां रांम ज्यूं मारीच सुवाह। मारगी कदीम रूकचलाक भारथा मुड़े, दयाळ मारगी तथां आहुड़े दुवाह। —दादूपंथी सावां रौ गीत

रूकचाळौ-यौ. सं. पु. यौ.—१ युद्ध।

उ०—१ रिरणमलां के जोड़े जंगी महावाहु भाटी जाके वंस पढे रूकचाळै ही की पाटी। —रा. रू.

रूकभड़ी-सं. स्त्री. यौ.—तलवारों का प्रहार।

उ०—१ तळवाड़ौ थांणौ तटै, सूवै वंधव साथ। वीरां थां पर वाजसी, रूकभड़ी अध-रात। —वी. मा.

रूकभल-वि. यौ—खड़गधारी, तलवारधारी, योद्धा, वीर।

उ०—आया भड भाटी दौढी आडा रावत दौढा रूकाभल। —गु. रू. वं.

रूकमणी—देखो 'रुकमरणी' (रू. भे.)

उ०—१ देवर रूकमण हंसै हरि निभावे अनेको रे। भाइ तूं निभावी न सकै, तिरणसूं डरता न परणै एकौ रे। —जयवांणी

रूकरस-सं. पु. यौ.—युद्ध, संग्राम।

उ०—१ रूकरस राठोड गुरड़ प्रगटो गैणाग। —गु. रू. वं.

रूकसओधा-वि. यौ.—१ तलवार धारण करने वालों के वंशज, योद्धा।

उ० जसराज मरण 'जोधा' हरा रूकसओधा राजवळ। छित लाज दिली महाराज छळ, इळ पड़िया राखे अचळ। —रा. रू.

रूकहत्य, रूकहत्थौ, रूकहथ, रूकहथौ-वि. यौ. [सं. रुक+हस्त]

२ जिसके हाथ में तलवार हो, खड्ग धारी।

उ०—१ रूकहथ पेखिसौ हाथ जसराज रा, ठिवतां पांव धीरा दियौ ठाकुरां —हा. भा.

उ०—२ ऊदौ 'केहर' तरणौ पड़ै धारा 'मांनावत'। रूकहथौ धनराज वाज पड़ियौ वीकावत। —रा. रू.

रूक्मणी—देखो 'रुकमरणी' (रू. भे)

उ०—देवी रूक्मणी रुप तूं कांन मोहै। देवी कांन रै रूप तूं गोपि मोहै। —देवि

रूख-सं. पु.—देखो 'रुख' (रू. भे.)

उ०—१ तौ नापो कहीं-थांहरी रूख किण वात ऊपर। प्यार हुवे तो आछौ कै ना हुवै तौ आछौ। —नापे साखले री वारता

उ०—२ कटं पीतपट्टं, सुवंधे सुघट्टं गतं पंचमुखं चले चाप रूखं। —र. ज. प्र.

उ०—३ थेट सूं भायां थकां जयसिंह जी री रूख औरंगजेव सूं रही। —महाराजा जयसिंह आमेर रा धणी री वारता

२ देखो 'रूंख' (रू. भे.)

उ०—१ अपणी आरत कारणें वाके पांइ परिजै हो। चंदन केरा रूख ज्यूं चरणां लिपटीजै। —मीरां

रूखड़ौ—देखो 'रूंख' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ तन दुख नीर तड़ाग, रोज विहंगम रूखड़ौ। विसन सलीमुख वाग, जरा वरक ऊतर जवल। —वां. दा.

रूखापण, रूखापणो—देखो 'रुखाई'

रूखाळौ—देखो 'रुखाळौ' (रू. भे.)

रूखि, रूखी—देखो 'रिसि' (रू. भे.)

रूखौ-वि.—१ जिसमें चिकनाहट या स्निग्धता की कमी हो।

२ खुरदरा।

३ जिसमें चिकने पदार्थ न पड़े हों।

४ जो अप्रिय व नीरस हो।

५ जिसमें आत्मीयता उदारता आदि गुणों का अभाव हो।

६ उदासीन, विरक्त।

रूड़उ, रूड़ौ-वि. [स्त्री. रूड़ी] १ सर्वोतम, सर्वोत्कृष्ट।

उ०—१ तूं स्वांमी प्रिथुराज ताहरौ, वळि बीजां को करै विलाग। रूड़ौ जिको प्रताप रावळौ, भूंडौ जिको अमीणो भाग। —प्रिथीराज राठौड़

उ०—२ रामचंद्र करसी रूड़ी सगळी विध स्रीरंग। भगतां-पत भूधरधणी, चाढण रूप सुचंग। —ह. र.

उ०—३ करणीगर रूड़ा करै, करतै विलंब न काय। मार उपावै मेदनी, मुहूरत हेकण माय। —ह. र.

२ वढिया, श्रेष्ठ।

उ०—१ ताहरां औ लगन ठेलि अर कहाड़ियौ राजाजी नूं अर रांणीजी नूं-कुंवर जी कारी अजे रूड़ा सांसा री नहीं हुई। —द वि.

उ०—२ रूठर कहै अतर नह रूड़ौ, तूठ न देऊं तार। पूठ फिराय पीनमी जपै, गांची ऊठ गिवार। —ऊ. का.

३ समर्थ, सक्षम।

उ०—१ रावौ रूड़ौ स्रीसीतांवर स्वांमी राजै। भाराथां साखां दैतां थोका भाजै। —र. ज. प्र.

४ आकर्षक, मोहक।

उ०—१ रच्या रांम रा दोय चित्रांम रूड़ा, चयां-सरव एकौ बियो सरव चूड़ा। —मे. म.

५ श्रेष्ठ कुल का, कुलीन।

उ०—१ तरै राव दूदै विचार दीठौ—जु आ डावड़ी पण कवारी छै नै औ पण रूड़ौ रजपूत छै। तरै आपरी दीकरी धाऊ भेछळ नूं परणाई। —नैणसी

६ योग्य, चतुर, दक्ष।

उ०—१ ताहरां मोहिल दीठौ काइक और नवी वरती खाटूं। तिण ऊपर मांणस दोय रूड़ा आपरा मेल्हिया। —नैणसी

उ०—२ सुदेवराज लुद्रवौ लेण रा दाव-घाव घड़ै छै। तरै पैहली तौ पंवारा सूं मास ४ कागळवाई कीवी, कांई अवीरी भली वस्तु व्है सु मेलै। तिणां साथै आपरै घर मांहै रूड़ै रा आदमी मेलै। —नैणसी

७ पावन, पवित्र।

उ०—१ गढ चित्तौड़ नां रहां, नहीं रहणका जोग। वसस्यां रूड़ी द्वारका, जहां हरि भगतां का भोग। —मीरां

८ स्वादिष्ट, रुचिकर।

उ०—१ खारिक निमजा खोपरारे लाल प्रीसता रूडी रूंस। —र. ज. प्र.

उ०—२ विधवापणि पहरइ चूडी, राव रसोई रांधइ रूड़ी। कवि गुण विजय

९ सिद्धिदायक।

उ०—१ ग्रहण वेळा गळ समां, पइसी पांणी मांही। रूड़ौ मंत्र जपइ रहइ, राह तणी जिहा छांहि। —मा. कां. प्र.

१० श्रेयस्कर, उत्कृष्टतर, वहत्तर।

उ०—१ कुलटा सांची व्है ठुकरांणी कूड़ी, पड़दै पड़दायत रांणी सूं रूड़ौ। —ऊ. का.

११ स्वस्थ, तंदुरुस्त।

उ०—१ उठै कंवर गजसिंघ जी नूं सीतळा नीसरी। कंवर जी रौ डील रूड़ौ नहीं तरै भाटी गोयंददास मोहणदास नूं कंवर जी रै ऊपर वारियौ। —नैणसी

१२ सुन्दर, मनोहर।

उ०—१ रूप रूड़ौ गुण वायरौ रोहिड़ा रौ फूल।

उ०—२ लांकीलो चूड़ौ घणौ रूड़ौ चमके है, देह जांण दांमणं ही दमके है —र. हमीर

उ०—३ वैणाहार विराजिया, सोव्रन में चूड़ी। कंठसरी चंपह कळीं, राजै गति रूड़ी। —गजउद्धार

उ०—पूरव देस नरेसर भणीई, ईस्वर नउ वरदांन। सरिस चढई निन्याणुं, राजा जो रूड़ौ दीसइ जांन।

१३ जवरदस्त।

तिकां वारलां नूं तौ कठा तक दीजै दाद। पण मांहिलांरी री रज-

पूती हद सूं ज्याद । जिके इण गजब नुं चाहनै पांहुणा करै । जिके पिण इसड़ा ईज होय जिको पांणी री लोट्यो रूड़ां हीज भरै ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

१४ प्यारा, प्रिय ।

उ०—१ घणा दिनां री प्रीतड़ी, किम मुझ छंडी जाय । रूड़ा राजिंद परखज्यो, जीवुं ज्यां लग काय । —वात रीसालू री

१५ उपयुक्त, उचित ।

उ०—१ ताहरां हींगोळै कहियो—प्रथीराजजी । आप तरवार वगसी म्हनै, सो द्यो । ताहरां प्रथीराजजी कह्यो—रे हिंगोळा रूड़ी वेळा मांहे मांगी । —नैणसी

१६ अनोखा, अद्भुत, विचित्र ।

उ०—१ एक तो वडी लड़ाई जीपजै । तव रूड़ौ आणंद होय छै । अर एक रूड़ो विवाह होय छै । तव रूड़ो आणंद हुये छै । सु दुन्यौ ही आणंद एक ही दिन भेळा हुआ । —वेलि

क्रि. वि.—१ वहादुरी से, वीरता से ।

उ०—१ राजि कांटा लिये पधारि उतरिया । उठा हेक दौड़ करा-ड़िवा सोर मारियो । ते सोलंकी 'वीरो' । रूड़ो मूर्यो । —द. वि.

२ अच्छी तरह से, उचित प्रकार से ।

उ०—१ आप नांम इळ उपरां, रसना राघव नांम । रूड़ी विध सूं राखियो, पुरखां जिकां प्रणांम । —वां. दा.

रू० भे०—रूग्रड़उ, रूग्रडउ, रूग्रड्ड, रूग्रड़ो, रूग्रडो, रूयड़ो, रूयडो, रूवड़ो, रूवडो ।

रूठणो, रूठवो—क्रि. अ.—१ कुपित होना ।

उ०—१ भोम भार झल्लियो, खडग झल्लै खुमांणं । किया सेन संघार जांणि रूठै जमरांणं । —गु. रू. वं.

उ०—२ खुरम कहै मन वंध वळ, आतुर न हुइ अधीर । कादर हुवां न छुटि है, जव रूठो जहंगीर । —गु. रू. वं.

२ अप्रसन्न होना ।

रूठणहार, हारौ (हारी) रूठणियौ—वि ।

रूठिग्रोड़ो, रूठियोड़ो, रूठ्योड़ो—भू० का० कृ० ।

रूठीजणो, रूठीजवो—भाव वा० ।

रूठाड़णो, रूठाड़वो—देखो 'रूठाणो, रूठावो'

रूठाड़णहार, हारौ (हारी) रूठाड़णियो—वि० ।

रूठाड़िग्रोड़ो, रूठाड़ियोड़ो, रूठाड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।

रूठाड़ीजणो, रूठाड़ीजवो—कर्म वा० ।

रूठाड़ियोड़ो—देखो 'रूठायोड़ो' (रू. भे.)

रूठाणो, रूठावो—क्रि. स.—१ कुपित या नाराज करना ।

२ अप्रसन्न करना ।

रूठाणहार, हारौ (हारी) रूठाणियौ—वि० ।

रूठायोड़ो—भू० का० कृ० ।

रूठाईजणो, रूठाईजवो—कर्म वा० ।

रूठाड़णो, रूठाड़वो, रूठावणो, रूठाववो—रू० भे० ।

रूठायोड़ो—भू. का. कृ.—१ कुपित किया हुआ. २ अप्रसन्न किया हुआ.

(स्त्री. रूठायोड़ी)

रूठावणो, रूठाववो—देखो 'रूठाणो, रूठावो' (रू. भे.)

रूठावणहार, हारौ (हारी) रूठावणियौ—वि० ।

रूठाविग्रोड़ो, रूठावियोड़ो, रूठाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

रूठावीजणो, रूठावीजणो—कर्म वा० ।

रूठावियोडो—देखो 'रूठायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. रूठावियोड़ी)

रूठियोड़ो—भू० का० कृ०—१ कुपित हुवा हुआ. २ अप्रसन्न हुवा हुआ ।

रूठोड़ो—वि. [स्त्री. रूठोड़ी] १ नाराज अप्रसन्न हुवा हुआ. २ क्रोध किया हुआ ।

रूडीयाळ—वि.—१ वजने वाला ।

उ०—१ खाथा सुर खडीयाळ, त्रिमंक रूडीयाल तवलां, चाकां अरि चडियाल, हाक भिडीयाल हमलां ॥ —पनां

रूडो—देखो 'रूड़ो' (रू. भे.)

उ०—एक परदेसी जांण छै रे कांई जेह नो रूडो रुडो घाट रे ।

—वि. कु.

(स्त्री. रूडी)

रूढ-योवना—सं. स्त्री. [सं. आरूढयोवना] १ पूर्ण यौवन प्राप्त नायिका ।

रूढा—सं. स्त्री. [सं. रूढ+टाप्] १ लक्षणा शब्द शक्ति के दो प्रमुख भेदों में से एक ।

रूढि, रूढी—सं. स्त्री. [स. रुढि] १ प्रथा, चाल, परम्परा ।

२ विचार, ३ निश्चय ।

४ सादित्य में प्रयुक्त वह शब्द जो अपने शब्द के रूढ अर्थ का वोध कराता है ।

रूणंझण—देखो 'रणंझण' (रू. भे.)

उ०—रूंणझण नेवर हुवर रंभ, उठे हसि नारद होय अचंभ ।

—सू. प्र.

२ देखो 'रुणझण' (रू. भे.)

रूण—सं. स्त्री.—१ मूल्य, भाव, कीमत ।

उ०—धन थांरो है तूं ई वोल दे, येंई रुण मुजव कै दो। अरे रांभट छोड जट्टू ! वोलै–नीं आघड़ौ–ई। चार रुपिया।

—वरसगांठ

२ मनोभाव सूचक चहरा, या मुंह की रुख।

रुणभुण-सं. पु.—१ वह रथ जिसके पहियों (चक्कों) में घुघुरू लगे होते हैं। तथा चलते समय रुणझुण की ध्वनि करता है।

रू. भे.—रुणजुण, रुणझुण।

२ देखो 'रणझुण' (रू. भे.)

रुणभुणि—देखो 'रणंभण'

उ०—१ मन करि मधुकरि रुणभुणि नीभरणि रहरण सुहाइ। मलयानिल क्षण माहूरी थाहरी क्षण इकु वाइ। - जयसेखर सूरि

रुणावळी—देखो 'रोमावली' (रू. भे.)

उ०—१ मारु कुच युग कठिन, अति कंचण कळस सगार। रुणावळी विचमें वणी, खिम न दैत आधार। —ढो. मा.

रुणेचौ-सं. पु.—१ प्रसिद्ध सिद्ध पुरुष रामदेव तंवर का निवास स्थान।

रूणौ-सं. पु.—१ ऊंचे स्थानों पर चढने के लिए सीढियों के सबसे ऊपर का चौथा पत्थर।

२ शतरंज का एक मोहरा।

रुपंतर-वि. [सं. रूप+अंतर] १ रूप का वदलना, दूसरे रूप की प्राप्ति, रुपांतरण।

उ०—जस देसंतर जावहीं, रुपंतर वळ हुंत। काळंतर न कळीजणी, जेहा तूं जांणंत। — बां. दा.

२ प्राप्त होने वाला दूसरा रूप।

रूप-सं. पु. [सं. रूप] १ सौंदर्य, सुंदरता। (अ. मा.)

उ०—१ ओपै रूप घणौ रायअंगण, चौकी मुकत कण केसर चंनण तर मंजर फळमाला तोरण, सोहै द्वार मेळ भ्रत सज्जण।

—रा. रू

उ०—२ रामचंद्र करसी रूड़ा, सगळी विध स्त्रीरंग। भगतांपत भूवर घणी, चाढण रूप सुचंग। —ह. र.

उ०—३ रूप कांम आरंभ रांम विद्या अरजण। —गु. रू. वं.

२ पदार्थ विशेष का वह वाह्य गुण या विशेपता (रंग आदि से भिन्न) जिससे उसकी वनावट का पता चल जाता है, पिंड शरीर आदि की रचना या वनावट।

३ शक्ल, सूरत।

उ०—१ मूंडाळौ लाइक शूरां, रांम सरीखौ रूप। ब्रह्म संत गुरु हूंत वडौ, ईसरदास अनूप। —पी. ग्रं.

उ०—२ देखीनै तन नउ हो कीधो पारिखौ, रूपइं पणि दिसै है, उत्तम सारिखौ। —वि. कु.

४ प्रकार, भेद, भांति।

५ दृश्य पदार्थ या वस्तु।

६ प्रकृति, स्वभाव, आदत।

७ शोभा। (नां. मा.)

८ विशेष प्रकार की आकृति में युक्त शरीर।

ज्यूं: वैरूपियौ।

९ शरीर, देह। (अ. मा.)

१० कार्य विशेष की निश्चित और व्यवस्थित पद्धति या प्रणाली, ढंग प्रकार।

११ आकृति।

उ०—१ हरिणाखी कंठ अंतरिख हूंती, विंव रूप प्रगटी वहिरि। कळ मोतियां सुसरि हरि कीरति, कठसरी सरसती किरि। —वेलि

१२ रचना।

उ०—१ दीह धणा माझल दुनीं रुळियौ देखे रूप। माधव हमैं प्रकास मो, सिव ताहरो स्वरूप। —ह. र.

१३ शब्द या वर्ण का स्वरूप या आकार।

१४ वृक्ष। (अ. मा.)

१५ रुपा, रौप्य, चांदी।

उ०—१ निवांण श्री भरंत नीर, रूप कूंभ हेंम रा। मैंमंत जोवनं मनोजं, नेह कत नेम रा। —सू. प्र.

१६ तुल्यता, वरावरी।

१७ दो लघु का नाम। (पिंगल)

१८ सादृश्यता, समानता, प्रतिकृति।

उ०—१ प्रथी करण थिर वेद पुरांणां, करम जिकां वळ हीण कुरांणां। यौं जग में रवि वस उजागर, प्रगटे रूप भूप परमेस्वर।

—रा. रू.

१९ आकार।

उ०—गोचर रूप न रंग न रेख अगोचर अभ्रत कूप अलेख।

—ऊ. का.

२१ लक्षण, पहिचान।

उ०—वडै ठोड राठौड आखिआत राखी वडी, जोरवर जौध जमदाढ जमरा। सलावत दिली-पत देखतां मझियो, अथी तिण वार रा रूप 'अमरा'। —गु. रू. वं.

वि.—१ सुन्दर, मनोहर।

२ समान, वरावर, तुल्य।

उ०—ससूदित साप समाक्रत मूंड, दंतूसळ मूमल रूप दुरंड।

—मे. म.

रू. भे.—रुपु, रूय, रुव।

मह.,—रुपांण।

रूपकंठीर-सं. पु.—१ नृसिंहावतार।

उ०—१ नमो करुणाकर रूपकंठीर, नमो वर लच्छि तणा रघुवीर।

—ह. र.

रूपक-सं. पु. [सं. रूपकम्] १ वह काव्य या ग्रन्थ जिसमें किसी महान योद्धा का चरित्र चित्रण हो।

उ०—१ अथ राजराजेस्वर महाराजाधिराज स्रीछत्रपति प्रिथिपति रघुवससिरताज महाराज स्री स्री स्री स्री स्री अभैसिंघ जी रौ रूपक सूरजप्रकास कविया करणीदांन विजैरांमोत रौ कहियौ। —सू. प्र.

उ०—२ रुघवंसी राठौड़ हर, तेरह साख कमंध। विमर सकत्ती वरणवां, वधे रूपक बंध। —गु. रू. वं.

२ काव्य, कविता।

उ०—कहै 'द्वारौ' धधवाड़, असुर असि धर्क चढाऊं। तिसी झाट रूपकां, जिसी खग झाट वजाऊं। —सू. प्र.

उ०—२ तिकी पांवड़ै पांवड़ै अस्वमेध रौ फळ पावां। चोख तीखरी वातां कांम आयां पछै रूपकां मांहै गवावां अर मुकत जावां ही जावां। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

३ डिंगळ गीत (छंद) विशेष जिसकी संख्या ८४ मानी जाती है।

उ०—१ 'सरूप' कवित नरहरि छप्पै, सूरजमल के छद। गहरी झमक 'गणेसरी', रूपक हुकमीचंद। —अग्यात

उ०—२ मन महरांण गभीर मत, गुरआत सुरांगुर। चौरासी रूपक समझ, खट भाख बहोत्तर। —पाबूदांन आसियो

४ वर्णिक वृत या मात्रिक छंद।

उ०—१ पाए एकणि रूप पणि, चवदह सहस चमाळ। सगण च्यारि लघु दोइ सुजि, रूपक नांम रसाळ —ल. पिं.

उ०—२ पनरह मात्रां जगण पर, एक चरण इहिनांण। चावा रूपक चौपइ, भणि, लखपत्ति कुळ भांण। —ल पिं.

५ कीर्ति, यश।

उ०—प्रविता पारव्वती, कनां कमळा सावंत्री। जमना गंगा जिसी चंद्र-भागा सरसत्ती। 'चंद्रभांण' सधू चंद्रा वदनि, चंद्रावत सीसोदणी, रूपक चडावण रांमपुरी, इधक रूप इंद्रायणी। —गु. रू. बं.

६ प्रशंसात्मक कविता।

उ०—१ अट्ठारे तेंयासियै, चेत मास नम स्यांम। रूपक 'बंक' वणावियौ, घवळ पचीसी नांम। —वां. दा.

१० दृश्य काव्य, नाटक।

उ०—१ आप सवसै आगूं वीजूंजळ वाहे। दईवकै धणी ओर तीसरा न जांणै। असै गुण अनेक कवि कहां लग वखांणै। च्यार प्रकार की जुगति सात रूपकूं के विधांन। पंच प्रकार की उगति अस्टाविधांन। —सू. प्र.

वि. वि.—साहित्यदर्पण ने रूपक (दृश्य काव्य या नाटक) के दस भेद माने है।

८ किसी रूप की बनाई हुई मूर्ति या प्रतिकृति।

९ चांदी का बना कंठ में धारण करने का आभूषण विशेष।

[सं. रूप्यकं] १० रुपया नामक सिक्का।

१० चाँदी।

११ साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जहां उपमावाचक एवं निषेधसूचक शब्दों के बिना ही उपमेय का का वर्णन किया जाता हैं।

वि० वि० इसके सांगरूपक, अभेद रूपक तद्रूपक आदि कई भेद हैं।

मुहा-रूपक बांधणौ: बढ़ा चढ़ा कर आलंकारिक भाषा में वर्णन करना

१२—एक पौराणिक शिव भक्त राक्षस का नाम, जिसके पुत्र का नाम संपति था। ये दोनों अन्याय्य द्वारा संपति उपार्जन कर, वह शिव उपासना में व्यय करते थे। इस कारण मरण के बाद शिव के मानस पुत्र वीरभद्र ने इन्हें कहा अगले जन्म में तुम चोर बनोगे, किन्तु शिव भक्ति के कारण तुम्हारा उद्धार होगा।

रू. भे.—रूपकउ, रूपक्क, रूपग।

रूपकउ—देखो 'रूपक' (रू. भे.)

उ०—मारुवणी मुंहवंन्न, आदित्ताहूं उज्जळी। सोइ भांरवउ सोवन्न, जो गळि पहिरउ रूपकउ। —ढो. मा.

रूपकरण-सं. पु.—१ एक प्रकार का घोड़ा।

रूपकातिस्योक्ति [सं. रूपकातिश्योक्ति] १ वह अलंकार जिसमें उपमेय के बिना ही केवल उपमान का उपमेय से अभेद बतलाया जाय अर्थात उपमान के कथन द्वारा ही उपमेय का बोध कराया जाता है

रूपकार-स. पु. [सं. रूपकार] शिल्पी।

उ०—गीतकार वातकर नृत्यकार पाडकार तुडिकार ध्रुतिकार ······रूपकार। —व. स.

रूपकीस-सं. पु. [सं· कीसरूप] १ हनुमान।

उ०—१ करां जोड़ रूपकीस, सांम पाय नांम सीस। बंध चाळ महावीर, कुदियौ किसीस॥ —र. रू.

रूपक्क—देखो 'रूपक' (रू. भे.)

उ०—२ वीस मात्र पाये विमळ, नवां अंति गुरु टेव। रंगमाळ रूपक्क रा, इण तक्क रा उवेव॥ —ल. पिं.

रूपक्रांता-सं. स्त्री—१ सत्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

रूपग—देखो 'रूपक' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ सुकवि 'मांन' 'गोकुळ' सुकवि, रूपग सुणि बहू रीघ। 'गजै' होय सुरतर गहर, दोय भाटां लख दीघ। —सू. प्र.

उ०—२ भाखा व्रज मारू सुरभाखा, प्राकृत जांन भर. पायौ रचण रूपगां पैंडो, मेहाही थारी महर। —वां. दा.

उ०—३ आखरां समंद थागण अथाह। रूपगां चत्र छतीस राग। —त्रि. सं.

उ०—४ रूपग जस रघुनाथ, रट समझौ गजगत सोय। —र. ज. प्र.

रूपगजोड़ी–सं. पु.—१ कवि

उ०—१ प्रभता समंद कड़ां लग पूगी, ओपम भड़ां अरोड़ां। जगदाता पोसाक न जोजै, जोजे रूपगजोड़ां।

—सिवसिंह मेड़तिया री गीत

रूपगरविता–सं. स्त्री. [सं. रूपगर्विता] अपने रूप का गर्व या अभिमान रखने वाली नायिका (साहित्य)

रूपग्रह–सं. पु [सं.] नेत्र, नयन, आंख (डि. को.)

रूपघर–सं. पु. यौ. [सं. रूपगृह] १ रूपनिधान, सुंदर। [सं. रौप्यगृह] २ खजाना, कोष।

रूपचतुरदसी, रूपचवदस–सं. स्त्री. [सं. रूपचतुर्दशी] कार्तिक वदी चौदस, नरक-चतुर्दशी।

रूपजीवनी–सं. स्त्री. [सं. रूपजीवनी] जिसकी जीविका का आश्रय केवल रूप (सौंदर्य) ही हो, रंडी, वेश्या।

रूपटियौ—देखो 'रुपयौ' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—वै रै गूंजै में झेवरियौ लाडू, वै री पगड़ी में रोकड़ी रूपटियौ।

—लो. गी.

रूपण–सं. पु. [सं. रूपणम्] १ आलंकारिक वर्णन। २ अन्वेषण, अनुसंधान।

रूपणी–वि. स्त्री.—रूप धारण करने वाली। २ रूप की।

उ०—१ दया रूपी दिवलौ करौ, संवेग रूपणी वाट। समगत ज्योत उजवाल ले, मिथ्या अंधोरौ जाय फाट।

—जयवाणी

रू. भे.—रूपनी, रूपिणी।

रूपदे–सं. स्त्री.—देखो 'रूपारेल' (रू. भे.)

उ०—मुरधी दिसां धूंधळी, रयण धूंधळी भयंकर। चिड़ी रूपदे सवद, तरल भुरजाळ सहांतर।

—पा. प्र.

रूपधर–वि.—रूप धारण करने वाला।

रू. भे.—रूवधर।

रूपनाथ–स. पु.—पाबू राठौड़ के गुरु का नाम।

उ०—रूपनाथ गुरु 'पाल' रौ, सुणी यसी म्है ख्यात। —पा. प्र.

रूपनिधांन–वि. [सं. रूपनिधानं] १ रूप का भण्डार।

उ०—नमौ करुणाकर रूपनिधांन, नमौ स्रव संतत तो मुभियांण।

—ह. र.

रूपफौज–सं. पु. १ योद्धा, वीर। (डि. नां. मां.)

रूपमांन–वि. [सं. रूपवान] १ सुंदर, खूबसूरत।

रूपमाळा–सं. स्त्री.—१ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १४ और १० के विराम से २४ मात्रायें होती हैं।

रूपमाळा-नीसांणी–सं. स्त्री.—१ प्रत्येक चरण में ३२ मात्रायें तथा १६ पर यति वाला मात्रिक छंद विशेष।

वि. वि.—इसका दूसरा नाम हंसगत भी है।

रूपमाळी–सं. स्त्री.—६ गुरु अथवा तीन मगण का वर्णिक छंद।

रूपमिण–सं. पु. [सं. रूपमणि] १ तारा (अ. मा.)

रूपराय–स. पु.—१ चांदी के समान रंग का घोड़ा।

रूपरासिक–सं. पु.—१ वह घोड़ा जिसका पिछला बांया पैर सफेद हो (शुभ) (शा. हो.)

रूपरासी–वि.—सुंदर, मनोहर।

उ०—१ पिया समीप रूपरासि, दामि आमि पामियं। भरे प्रकास स्रीउदोत, दीपि जोति भासियं।

—रा. रू.

रूपरेखा, रूपरेह–सं. स्त्री [सं. रूपरेखा] १ किसी कार्य के संबंध में वह प्रमुख बात जो उसके स्थूल रूप की सूचक होती है तथा उसके संक्षिप्त विवरण का सारांश के रूप में होता।

२ वह अंकन या रेखाओं द्वारा अंकित चित्र जिससे किसी पदार्थ के आकार प्रकार का स्थूल ज्ञान रेखाओं आदि के रूप में होता है।

रूपल–सं. स्त्री—१ देखो 'रुपौ' (रू. भे.)

उ०—१ माळ फिरै ज्यूं पनड़ी बाजै, फिरै काळियौ डोरो। ओड्ड पांणी भरै घड़लियां, आगै हालै धोरो। रूपल रेत रै।

—चेत मांनखौ

रूपवंत–वि. [सं रूपवत्] (स्त्री. रूपवती) १ सुन्दर, मनोहर, खूबसूरत, रूपवान।

उ०—१ दोनूं ही ऐसा रूपवंत सो सारी पृथ्वी में जोया न लाभै।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ नेडइ मंढळि काई नारी रूपवंत हुय राज कुंमांरी।

—ढो. मा.

२ शरीरधारी।

रू. भे—रूवव।

रूपवती, रूपवंती–वि. स्त्री. [सं. रूपवती] १ सुंदरी, सुंदर।

उ०—१ द्रूपदी वहिन नइं तदि बइठी, सिंघासण वतीसी रूपवंती तिण कीचक दीठी।

—सालि सूरि

उ०—२ उज्जैण नगर महाराज वीर विक्रमदित्य राज करै। उण रै हुजूर एक कळावत आइयौ। तीं के साथ एक परम रूपवती स्त्री अर एक पुरुस थौ।

—सिंघासण बत्तीसी

रू. भे.—रूववइ।

रूपव–सं. पु.—१ संगीत में सात मात्राओं का ताल विशेष।

रूपवन–सं. पु.—१ चदन (नां. मा.)

रूपवांन–वि. [सं. रूपवत] १ सुंदर मनोहर

रूपसिंहोत–सं. पु.—१ राठौड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

रूपस्री–सं. स्त्री. [सं. रूपश्री] १ संपूर्ण जाति की एक संकर रागिनी

रूपहरी–वि.—१ रूपै की बनी या जिस पर रूपा चढा हुआ हो।

उ०—१ घोड़ा सातसौ अवलख समदा भंवर, गंगाजळ संजब कुम्मेद

ओर गुलदारी फुलवारी तयार कराया, त्यांरै सुनहरी, रूपहरी सागै सामत साज सजाया । —जलाल बूबना री बात

रूपांण—देखो 'रूप' (मह. रू. भे.)

उ०—१ भूल न जाऊं रावळी एहो रूपांण । —गज उद्धार

रूपा देखो 'रूपावत' (रू. भे.)

रूपाजीवा-सं. स्त्री. [सं.] १ वेश्या, रंडी । (अ. मा.)

उ०—१ तिण री एक सकार तदि, जांमिप वय धन जोर । रूपाजीवा रूपरी, जिण मुणियौ अति सोर । —वं. भा.

रूपामाखी-सं. स्त्री. [सं. रूप्यमाक्षिका] १ एक प्रकार का खनिज पदार्थ जो प्रायः ओषधियों में भस्म बना कर प्रयोग किया जाता है । (अमरत)

रूपारास- सं. स्त्री.—१ दक्षिण दिशा और आग्नेय दिशा के मध्य की दिशा ।

उ०—१ दहवारी जाती सहर था कोस ५ छै । केवड़ा री नाळ सहर सूं कोण रूपारास मांहे छै । —नैणसी

उ०—२ बूंदी कोस ६५ तथा ७० उगवण था वयूं ई डावी रूपारास में । —नैणसी

रूपारेल-सं. स्त्री.—१ एक प्रकार की चिड़िया विशेष जिसके यात्रा के समय शकुन लिए जाते हैं । रू. भे.—रूपदे ।

२ ग्रीष्म ऋतु में चलने वाली तेज हवा या आंधी के कारण उड़ने वाली गर्द । ३ वातचक्र ।

रूपालहरी-स. स्त्री.—१ स्त्रियों के धारण करने का आभूपण विशेष । (व. स.)

रूपाळ—१ देखो 'रूपाळौ' (मह. रू. भे.)

उ०—१ अच्छर घण रूपाळ किलोलां, कोल करंता । मार्ल्है आगळ वन्न, सुभागी चौळ भरंता । —मेघ

रूपाळौ-वि॰ [स. रूपं+आलुच्] (स्त्री. रूपाळी) १ सुन्दर, मनोहर ।

उ०—१ रूपाळी रळियांमणी, धोळागिर रौ थांन । तर नीझरण झकर तठै, गिम्मर मेर समांन । —दुरगादत्त बारहठ

उ०— २निळके सोने रा नीलिरिया, वधगी बा रूपाळी पाल कूंपळो किणारो तुळियो आज, गुदळती घण अममांनी ढाल —सांझ

मह. रूपाळ

रूपावत-सं. पु.—राठोड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

रूपिका-सं. स्त्री. [स.] श्वेत पुष्प का मदार का पौधा । (अमरत)

रूपिणी-सं. स्त्री. [सं. रुक्मिणी प्रा. रूप्पिणी] १ श्री कृष्ण की पत्नी रुक्मिणी ।

उ०—१ अरे मधुसूदनु जउ इम भणइ, रूपिणि वयणु सुणेह, अरे नेमिकुमरु, मूहु चवयु पाणिग्गहणु मनावेह । —समधुर

उ०—२ पेखवी पहुतउ महि वसतु, अंतउर लेई । वहू परि केसवु नेमि सहितु उन केलि करइ । रांणिय रूपिणि पमुह, कुसुम आभरण करंति, नियवर देवर देह नेह गहिलि मंडंति ।

—जयसिंह सूरि

२ देखो 'रूपणी' (रू. भे.)

रूपी-वि. [सं.] (स्त्री. रूपणी रूपिणी) १ रूप या आकार प्रकार वाला । २ रूपधारी, सुंदर, मनोहर । ३ तुल्य, समान, सदृश ।

रूपीयौ --देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

उ० —अटै आय वधाईदार ओठी जांगळू मेलीयो सो जाय पोहतो । सारा समाचार खींवसी जी नूं कह्या, सो सुण सादियांणा वजाया वांमणां नूं रूपीय दीया, भोजन करायो ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

रूपु —१ देखो 'रूप' (रू. भे.)

उ० —कुंतादिवि नउं लिविउं रूपु देखीउ चित्रांमि । मोहिउ पंडु नरिंदु चींति अति लीवउ कांमि । —सालिभद्र सूरि

२ देखो 'रूपो' (रू. भे.)

रूपेंद्रिय-सं. पु. [सं.] नेत्र, नयन, आंख ।

रूपेटौ-सं. पु. [सं. रूप्यं+रा. प्र. एटौ] चांदी का बना प्याला विशेष ।

उ०—१ बीजूं हस बोलतौ, जदै, घणां दिनसूं मिळतौ । कुसळायत पूछतौ, अमल रूपेटां गळतौ । —अरजुण जी बारहट

रू. भे.—रूपोटौ

रूपेरण-सं. स्त्री.—१ वह तलवार जिसकी मूठ पर चांदी की पतली तह चढी हो ।

रूपेस्वर-स. पु. [सं. रूपेश्वर] १ एक शिव लिंग ।

रूपेस्वरी-सं. स्त्री.—१ एक देवी का नाम ।

रूपैयौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

उ० —करतव नह राजी क्रपण, राजी रूपैयांह । कंइवौ दास कुटंबियां, प्रांमणड़ां पइयांह । —बां. दा.

रूपोटौ—देखो 'रूपेटौ' (रू. भे.)

उ०—१ कुंवरजी सूरत देख देख थकत हुवै छै । वडारण कन्हैं खडी पुवन करै छै । इता में कुंवरसी वडारण नुं फुरमायो जो रूपोटौ में पांणी घाल ल्याव । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ इण भांत री भांग काढ तयार कीजै छै । कसूंबां नूं होसनायक पवन करै छै । सू रूपोटां में लियां खवास पासेवांण हाजर करै छै । —रा. सा. सं.

रूपो-सं. पु. [सं. रूप्यं] १ चांदी, रजत, रूपा । (अ. मा. नां., ना. ह. नां. मा.)

उ०—१ ऊंची नीची मरवरिया री पाळ जठै नै ऊजळो रूपो नीपजै । रूपो सोहे पावजी घणी रै पाव, रूंआळा पींडा में रूपो

हद सोहे। —पाबू रायवळ

उ०—२ बीजो द्रस्तांत। कि तार कहतां रूपौ हुइ। किना इह तारा छै। —वेलि टी.

२ हंस।

३ श्वेत वर्ण का अश्व।

रू. भे.—रूपल।

४ देखो 'रूप' (रू. भे.)

उ०—उग्रसेन-राय कन्याका, रे राजमती बहु रूपौ। सील गुणे करो सोभती रे, चतुराई बहु चूंपौ। —जयवांणी

रुबकार-सं. पु. [फा.] १ अदालत में उपस्थित होने का आज्ञा पत्र। आदेश-पत्र।

२ सामने उपस्थित होने की किया या भाव।

रुबकारी-सं स्त्री. [फा.] १ मुकद्दमे की पेशी या कार्यवाही।

२ किसी के सामने उपस्थित होने की क्रिया या भाव।

रुबरू-क्रि. वि. [फा.] १ प्रत्यक्ष, सामने, सम्मुख।

उ०—१ अरु मालम करवाया पातसाहजी रै रुबरू द्वारासाह नूं हाजर कियौ। जांणियौ राजी हुसी। —द. दा.

रूम-सं. पु. [फा.] १ एक देश का नाम।

[अ.] २ कमरा, कक्ष। ३ देखो 'रोम' (रू. भे.)

उ०—अवर ही इणरी गुणांरी एक एक वात रूम रूम जीभ हुवै नें जपै दिन रात। —र. रू.

रूमा-सं. स्त्री.—नमक की खान।

रूमाल-सं. पु. [फा॰] हाथ मुंह आदि पोंछने के काम आने वाला कपड़े का चौकोर टुकड़ा जिसकी किनारें सिली होती हैं। हाथ में या जेब में रखा जाता है।

उ०—१ ढाल खवै ढळकती, मूठ तरवार ग्रहौ कर। कर दूजै रूमाल धके काळमी डोर धर। —पा. प्र.

उ०—२ झेली सुंदर गोरी घोड़ी री लगांम, आंसू तौ पुछिया हरिये रूमाल सूं। —लो. गी.

२ पायजामे की मियानी।

रूमाली-स. स्त्री.—१ एक प्रकार का छोटा रूमाल। २ लंगोट।

रूमी-सं. स्त्री.—१ एक प्रकार की छुरी। (जो रोम की बनी होती है।)

उ०—छुरयां सूं छूंणीजै छै सू छुरी किण भांतरी छै। पेसकवज चकचकी रूमी विलायती म्यानां मांहां काढजै छै। —खीची गगेव नीबावत रौ दो-पहरौ

स. पु.—२ घोड़ा (डिं. को.)

३ रोम देश का घोड़ा।

उ०—हुरम्मजि केची, मुकरांणी खंधार हरेवी खुरसांणी। आरब्बी रूमी उजवक्का, समहदी सभर कदक्का। —गु. रू. वं.

४ रोम देश का निवासी, व्यक्ति।

उ०—चडे उजवकी रौद्र रूमी फिरंगी। चडे मुगळ पट्ठांण सैईद संगी। —गु. रू. वं.

रूमीसूरौ-सं. पु.—एक प्रकार की तलवार।

रूय—देखो 'रूप' (रू. भे.)

उ०—जन्ह नरिंदह केरी धूय, गंगा नांमि रइ सम रूय ऊठइ नरवइ सामुहीय। —सालिभद्र सूरि

रूयड़ौ—देखो 'रूड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ रहणी रूयड़ौ ध्यांन रे। (धरम पत्र)

उ०—२ नेमी परणेवा चालिया, म्हारी सहियर रूयड़ो जादव जांन हे छप्पन कोड़ी यादव मिल्या म्हा. अति घणा आदर मांन हे। —स. कु.

उ०—३ इन्द्रांणी गायइ गीत हे, बाजा वाजइ अति घणा म्हा. रूयड़ी सगळी रीत हे। —स. कु.

(स्त्री. रूयड़ी)

रूयडु, रूयडौ—देखो 'रूड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ नाभि-विवर अति रूयडु, उपरि त्रिणि प्रवाह। मुनिवर माघ प्रयाग मांहा, जे नाहिडं ते नाहि। —मा. कां. प्र.

उ०—२ घनवंतरि तुझ थि रूयडौ, विरूइ टली विकधी। संग था तइ सरजिउ सनि, सुरत करंति समाधि। —मा. कां. प्र.

रूळ-सं. पु [अ.] १ लकीर खींचने का डंडा। २ उक्त डडे के सहारे से कागज पर खीची गई सीधी लकीर या रेखा। ३ कायदा, नियम

४ देखो 'रीळ' (रू. भे.)

रूळणौ, रूळवौ—देखो 'रुळणौ, रुळवौ' (रू. भे.)

उ०—लक्ष्मी तणउं भाग्य, अग्नि देवता नौ वांन, रूपिणि उणउं संस्थान, कंठ नवसरहार रूळतइं, जिम दीठी चित्त मांहि पइठी, इसि वाला। —व. स.

रूळदार-वि.—१ जिस पर लकीरें खींची हुई हो।

रूळियोड़ौ—देखो 'रुळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रूळियोड़ी)

रूळीयारौ जोड-वि.—१ भटकने वाले को आश्रय देने वाला, बिछड़े हुए को मिलाने वाला।

उ०—लाखां री लोड़ाउ रूळीयारौ-जोड रांकां री माळवौ अधणियां रौ धणी। —वीरमदे सोनगरा री बात

रूळौ-सं. पु.—१ छोटा वातचक्र, बगूला।

२ कमर व पैरों के विकृत हो जाने से ठीक न चलने वाला व्यक्ति।

रूव—देखो 'रूप' (रू. भे.)

उ०—जइ पड़िहसि 'पास' जिणिंद वसि, नाणवंत निम्मल रयण। न सु घणहरु वांण न रूव नहिं न रूय पियुं हुइ हइमयण। —कविपल्ह

रूवड़उ, रूवड़ौ, रूवडउ, रूवडौ—देखो 'रूड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ नयनी रूप में रूवड़ौ कोट कोसीसां ग्रंत न पार । देवर छड़ रूवड़ड प्रोहित जोवइ पोली पगार । —वी. दे.

उ०—२ कुमरी रूपै रूवडोये घर अगरण वैठी । दीठी राजा खेलतिय तिरण चिता पैठी । —वृ. स्त्र

(स्त्री. रूवड़ी, रूवटी)

रूयव—१ देखो 'रूपवत' (रू. भे.) (जैन)

रूयधर—१ देखो 'रूपधर' (रू. भे.) (जैन)

रूयवइ—१ देखो 'रूपवती' (रू. भे.) (जैन)

रूस-स. पु.—१ एशिया के उत्तर में फैला हुआ देश ।

उ०—मिनखां घणां न मांन, मांन रहे हेकरण मनां । जीतौ जुध जापांन, रूस तणौ बळ राजिया । —फतैकरण उज्वळ

२ देखो 'रूंस' (रू. भे.)

रूसणौ देखो 'रिसाणौ' (रू. भे.)

उ०—१ 'सूप' इत री ज मांगकर, जितौ ज आटे लूण । घड़ी घड़ी रै रूसणौ, तूझ मनासी कूण । —अज्ञात

उ०—२ जोवन गयौ स भलौ हुइ, सिर री टळी बलाय । जणै जणै री रूसणौ, औ दुख सह्यौ न जाय । अज्ञात

उ०—३ माया री वात सुण्यां सेठजी नै निवास मिळ्यौ । वांनै तौ काल मे दीसै ज्यू दीसतौ हौ. के लिछमीजी नै दूजी ठौड़ आवड़ैला नीं । तद अेक दिन सारू औ रूसणौ क्यूं करचौ । —फुलवाड़ी

रूसणौ रूसवौ—देखो 'रीसणौ रीसवौ, (रू. भे.)

उ०—नेली चोळां में मन मोळा में, रोळां में रूळंदा है । पकवांन परसै रूळपट रूसै फरगट मुख फेंकंदा है । —ऊ. का.

रूसणहार, हारौ (हारी) रूसणियौ —वि० ।

रूसिग्रोड़ौ रूसियोड़ौ रूस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

रूसीजणौ रूसीजवौ—भाव वा० ।

रूसी-वि.—रूस देश का ।

स. पु.—१ रूस देश का निवासी । (व्यक्ति)

२ रूस देश की भाषा ।

रूह-स. स्त्री. [फा.] १ आत्मा ।

उ०—१ जीये तेल तिलन्न में, जीये गंध फूलन्न । जीये माखन खीर में, इयें रब्ब रूहन्न । —दादूवांणी

उ०—२ इयें रब्ब रूहन्न, में जीये रूह रगन्न । जीये जेरौ सूर में, ठंडौ चंद्र वसन्न । —दादूवांणी

२ प्राणवायु ।

३ कई बार का खींचा हुआ अरक ।

४ कई बार का खींचा हुआ अधिक फूलों से बनाया हुआ इत्र ।

५ एक प्रकार की मछली विशेष ।

रूहराळ—देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

उ०—रूसाळ फुणाळ मसाळ रळी । रूहराळ हुई कर पाल रळी ।

—पा. प्र.

रूहाड़—देखो 'रुहाड़' (रू. भे.)

उ०—१ जे खाविंद निराठ आबरू सूं राखिया, पेट काठा घपाया मारवाड़ री रूहाड़ मिट गई, तिणसुं इण मांहेलौ कोई रहे नहीं । —अमरसिंह गजसिहोत री वात

रूहि—१ देखो रुधिर' (रू. भे.)

रूहिचाळ-सं. पु.—१ एक प्रकार का घोड़ा ।

रू. भे.—रूहीचाळ ।

रूहिर—देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

रूही—देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

रूहीचाळ – देखो 'रूहिचाळ' (रू. भे.) (ना. डि. को)

रेंगणौ, रेंगवौ—देखो 'रेंगणौ, रेंगवौ' (रू. भे.)

रेंगणहार, हारौ (हारी), रेंगणियौ—वि० ।

रेंगिग्रोड़ौ, रेंगियोड़ौ, रेंग्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

रेंगीजणौ, रेंगीजवौ—भाव वा० ।

रेंण—देखो 'रयण' (रू. भे.)

रेंणकी—देखो 'रेणकी' (रू. भे)

रेंणु – देखो 'रेणु' (रू. भे.)

रें-रें-सं. स्त्री.—१ बिना मन के लड़के (छोटे बच्चे) का धीरे धीरे रुदन ।

२ बकझक ।

रेंवत—देखो 'रेवंत' (रू. भे.)

उ०—रेंवत चढनै रांमड़ा आवै आलमड़ा । —पी. ग्रं.

रेंवतियां—देखो 'रावत्रियां' (रू. भे.)

रेंवती—देखो 'रेवती' (रू. भे.)

रेंवहर-वि.—अधीन, मातहत ।

उ०—सेन मेल सिव पुरी, फौज वेर धांसोहर । जैत हत्य कळि मत्थ, साथि भाटी रिण घोयर । कटि इम पडिगी रै (ण.), धणी अड़ार गिरंदर । लाया पाड रकेब, कीध मछरीक रेंहवर । राठौड़ कुंअर पक्खर रवंद, कवण (झ) समवड करै । जमदाढ छोट विज्जै लई, कना राड अरवड्ड रै । —गु. रू. बं.

रे-सं. पु.—१ निकृष्ट या नीच कार्य ।

२ मुख ।

३ भेद कष्ट ।

४ नभ ।

५ काग, कौग्रा । (एका)

अव्य—सम्बोधनात्मक अव्यय, अरे !

उ०—१ रे ! मठ पंछी जा परी, पिणघट घाटै ऊठ । कोई नार चलावसी, भर जोबन की मूठ । —अज्ञात

उ०—२ वीजळियां चहला वहनि, आभइ आभइ कोडि । कद रे

मिळउंळी सज्जनां, कस कंचूकी छोडि । —ढो. मा.

उ०—३ वळि वंव समरथि रथ ले वैसारी, स्यांमा कर साहे सु-करि। वाहर रे वाहर कोई छै वर। हरि हरिणाखी जाइ हरि।
—वेलि

रू. भे.—रइ, रि।

रेकारो—देखो 'रैकारो' (रू. भे.)

उ०—१ तगा, तगाई मत करै, वोले मूंह संभाळ। नाहर अर रजपूतनै, रेकारै री गाळ। —अज्ञात

उ०—२ कोई स्वभावै रेकारो वहै, चटकी तुरत चढंत। क्रोध विरोध वधारू केतला, आवै किम भव अंत। —ध. व. ग्रं.

रेख-सं. स्त्री. [सं. रेखा] १ लकीर, रेखा।

उ०— १ छकी हीरां मदन छकि, वण वुध सदन वीसेख। चंद वदन मुळकण दमक, रदन तडत की रेख।
—वगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—२ सांवण आवण कह गया, करग्या कौल अनेक। गिणतां गिणतां घिस गई, आंगळियां री रेख। —अग्यात

२ मनुष्य की हथेली या पैरों के तलवे में बने हुए टेढ़े मेढ़े अथवा सीधे प्राकृतिक चिन्ह जो मनुष्य के भावी जीवन के शुभ और अशुभ फल वताने में सहायक होते हैं।

उ०—अमोल तोल मोल कै प्रचोल चोळ अंख के, अडोळ डोल कंध रा रसाल छत्ति मुत्थरै, रहैं पदग्ग रेख तै सु देख तै अरी डरै।
—ऊ. का.

३ मूल्य, कीमत।

उ०—तद सत्रुसाळ कही—महाराज माफ करो, मोनूं हुकम दीजै। इतरी सुणत सुवां आप वांग उठाई सो वेरांणी समसेर नांम घोड़ो सवारी में थो, वडी रेख रो वडो घोड़ो थो।
—महाराजा पदमसिंहजी री वात

४ आय, आमदनी।

उ०—१ सींधल वाघो वीदा रो वीदो मूजा रो, सूजो सीहा रो, सीहो भांडा री गांव कवलां। १,५००) रेख। —वं. दा. ख्यात

उ०—२ सींधल सांवलदास मांनसींहावत रो। १०,०००) रेख।
—वां. दा. ख्यात

उ०—३ संवत १७१४ उजेणी री वेढ पूरै लोहै पड़ियो पै'ले उपाड़ियो। पछै स्रीजी घणो आदर कर पटो रू० ८०००) रेख लवेरो घणा गांवांसू। भोपाळ वधारै दी। —नैणसी

५ राजस्थान के जागीरदारों से जागीर की निश्चित आय पर लिया जाने वाला कर विशेष।

वि० वि०—इस कर का रिवाज सर्व प्रथम अकवर वादशाह के समय चला था। इसलिए मारवाड़ राज्यान्तर्गत यह कर सर्व प्रथम सवाई राजा शूरसिंहजी के समय चला। उन दिनों जागीरदारों को मारवाड़ नरेशों के साथ, वादशाही कार्यों हेतु मारवाड़ से वाहर युद्धों में भाग लेना पड़ता था। इसी लिए उनसे 'चाकरी" (सेवा) के अलावा किसी प्रकार का अन्य कर नहीं लिया जाता था। राजपूत सरदारों को जागीरें देने का मुख्य प्रयोजन यही था कि वे महाराज की तरफ से युद्ध में भाग लेकर शत्रु को दण्ड देने में सहायक हों। किन्तु विजयसिंहजी के समय मारवाड़ का सम्बन्ध मुगल वादशाहत से टूट गया और ठीक इसी समय मरहटों का उपद्रव उठ खड़ा हुआ, उस समय इस नवीन उपद्रव को दवाने हेतु जोधपुर दरवार को रुपयों की आवश्यकता प्रतीत हुई। इस लिए महाराजा श्री विजयसिंहजी ने वि. स. १८१२ में जागीरदारों पर वाहर युद्धों में भाग लेने के वदले प्राप्त आमदनी पर प्रति हजार तीन सौ रुपयों के हिसाव से 'मतालवा' नामक कर लगाया गया। यह कर कई वार लगाया गया मगर इसकी दर डेढ सौ से कम आवश्यकतानुसार घटती वढती रहती थी। और डेढ सौ से कम और पांच सौ से अधिक कभी नही लिया गया था।

महाराजा भीमसिंहजी के समय कर प्रतिहजार तीन सौ रुपयों के हिसाव से दो वार वसूल किया गया था।

महाराजा मानसिंहजी के समय जयपुर की चढाई के पश्चात अमीरखां को रुपये देने हेतु प्रतिहजार तीन सौ रुपये के हिसाव से लगाए गये। यही कर 'रेख' के रूप में वि. स. १८६४ से राज्य के विशेष खर्च हेतु हर पांचवे वर्ष प्रति हजार दो सौ से तीन सौ रुपये तक जागीरदारी से लेना एक नियम सा वना दिया गया था।

वि. स. १८९६ में पोलिटिकल एजेंट की सलाह से प्रति वर्ष प्रतिहजार की जागीर पर अस्सी रुपये रेख स्वरूप लेना निश्चित किया गया। किन्तु एक दो वर्ष वाद जागीरदारों ने देना वन्द कर दिया।

वि. स. १९०१ में महाराजा तखतसिंहजी के समय मुहता लक्ष्मीचन्द ने 'रेख' कर वसूल करने का प्रवन्ध किया। किन्तु इसमें सफलता नही हुई। अन्त में वि. स. १९०६ में पचोली धनरूप ने जो उस समय 'फौजदारी अदालत' का हाकिम था, महाराजा की आज्ञानुसार जागीरदारों से प्रति हजार अस्सी रुपये प्रति वर्ष रेख स्वरूप देने का दस्तावेज लिखवा लिया। जिस पर पोकरण, आउवा, आसोप, नींवाज, रीयां और कुचामन के सरदारों ने दस्तखत किये।

यद्यपि 'रेख- कर मुत्सद्दियों व खवास पासवानों आदि से भी लिया जाता था मगर उसकी शरह (दर) भिन्न थी।

६ प्रतिष्ठा, इज्जत, मान।

उ०—खीजीया यवन ल्यै जींजीया खूटिवैं, खेचलां वीजीयां रैत खाखी। प्रांण जोधांण रै पाजीया पीजीया, रेख 'दुरगदास राठौड़' राखी। —ध. व. ग्रं.

७ सौन्दर्य अथवा नेत्र हितार्थ नेत्र में बनाई गई काजल की रेखा या लकीर।

उ०—काजळ गिरि धार रेख काजळ करि, कटि मेखला पयोधि कटि। मांमोली बिंदुली कुं कूं में, प्रथिमी दीध निलाट पटी।
—वेलि

उ०—२ वीजळियां चहळावहळि, आभइ आभइ अेक। कदी मिळूं उण साहिबा, कर काजळ री रेख। —अग्यात

८ आकार, आकृति, सूरत।

उ०—१ निरालंब निरलेप, जगत गुरु अंतरजांमी। रूप रेख विण रांम, नांम जिण रौ घणनांमी। —मे. म.

उ०—२ गोचर रूप न रंग न रेख, अगोचर अमृत कूप अलेख। थिरा नभ थावर जंगम थांन, महा पद आपद मांन अमांन।
—ऊ. का.

९ सीमा, हद।

उ०—इतरै जाटां रौ राज तौड़ कंवरजी वीकैजी, वा कांधळजी वडौ राज वीकानेर रौ वांधियौ। सरव रेख हजार तीन गांवां में फेरी। —द. दा.

१० भाग्य, प्रारब्ध।

यौ.—करमरेख।

उ०—जो रचना जगपत्ती, लोतै आळ भ्रमै त्रयलोकं सोइ सत्य सद्रढरेखा सार अंक रजपत्ती। —रा. रू.

११ देखो—'रेखा' (रू. भे.)

रू. भे.—रेह, रेहा

रेखग—सं. पु.—शिर, मस्तक।

उ०—"सूर" तणै सुरसरी तणै सर, मांनव विहंडिया वजावै मार। रण रेखग मेळा कर रचिया, सिव घर घर सिवपुरी सिणगार
—किसनौ आढौ

रेखड़ी—देखो—'रेख' (अल्पा रू. भे.)

उ०—काळी रे काळी काजळियै री रेखड़ी हां जी रे काळोड़ी कांठळ में चमके वीजळी। —लो. गी.

रेखतौ—सं. पु. [फा. रेखतः] एक प्रकार की कविता या छन्द रचना जो खुसरो द्वारा प्रचलित की गई है।

वि. वि.—इसमें फारसी और भारतीय छन्द शास्त्रों की अनेक वातों (तान, लय आदि) का समिश्रण होता था।

रेखळौ—देखो 'रेकळौ' (रू. भे.)

उ०—१ कमांण रौ आडो हाथ सूं पकड़ उठाय ऊंची आंम्ही सांम्ही फेर देख उहीज वखत रेखळै में मेल्ह दीन्ही।
—ठाकुर जेतसी री वारता

उ०—२ लांमें मूंडां की रे हंकाई तोप दिल्ली रै वादस्या, ओछै पलां री रे जुजुरवा रेखळा। —लो. गी.

रेखांकन—सं. पु. [सं. रेखा+अंकन] चित्र बनाते समय चित्र की रूप-रेखा बनाने हेतु रेखाएं अंकित करना।

रेखांकित—वि. [सं. रेखा+अंकित] १ जो रेखाओं से बना हुआ हो। २ रेखांकन किया हुआ हो।

रेखांस—सं पु. [सं. रेखा+अंश] १ देशान्तर (भूगोल का)। २ यामोत्तर वृत्त का कोई अंश, द्राघिमांश।

रेखा—सं. स्त्री. [सं] १ लंबा और पतला बनाया हुआ या आप ही आप बना हुआ चिन्ह, लकीर।

२ किसी ठोस पदार्थ के तल पर बनाया हुआ लकीरनुमा चिन्ह।

३ वह कल्पित लकीर जो प्रारम्भ में भारतीय ज्योतिषी अक्षांस सूचित करने के लिए सुमेरु पर्वत से उज्जयिनी होती हुई लंका तक खींची हुई मांनते थे।

वि. वि.—देखो 'रेखाभूमि'।

४ गिनती, शुमार।

५ देखो रेख' (रू. भे.)

रू. भे.—रेहा।

रेखागणित—सं. स्त्री. [सं.] ज्यांमित।

रेखाभूमि—सं. स्त्री.—प्राचीन समय में अक्षांस स्थिर करने के लिए सुमेरु पर्वत से उज्जयिनी होती हुई लंका तक गई हुई रेखा के आस पास पडने वाला प्रदेश या भूमि।

रेखी—म. स्त्री.—रामदेवजी के अनन्य भक्त भांभी (रिखिया) जाति की स्त्री।

उ०—वारट भरोखै वैसिसैं, काइम हुंदै कोटि। रेखी वैठी राज मां, रांणी करिसै रोट। —पी. ग्रं.

रेग—सं. स्त्री. [फा.] वालुका, रेत,।

रेगर—सं. पु.—१ चमड़ा रंगने का कार्य करने वाली एक अनुसूचित जाति या इस जाति का व्यक्ति विशेष। (मा. म.)

उ०—२ गंवि गयो ग्रह रेगर के गल, बंध गयौ ग्रहबंध विगास्यौ। पीनसकाय के पास कपूर, घस्यौ कवि ऊमर तौ हिय हास्यौ।
— ऊ. का.

उ०—२ रंगीलौ चंग वाजणू म्हारै वीरैजी मंढायौ चंग वाजणू। म्हारौ रेगर मंडकै लायौ अै, रंगीलो चंग वाजणू। —लो. गी.

वि. वि.—१ देखो—'जटियौ' (२) ये कहीं चंग आदि मढने का कार्य भी करते है। रू. भे. रैगर

रेगिसतांन—देखो—'रेगिस्तांन' (रू. भे.)

रेगिसतांनी—देखो—'रेगिस्तांनी' (रू. भे.)

रेगिसथांन—देखो—'रेगिस्तांन' (रू. भे.)

रेगिसथांनी—देखो –'रेगिस्तांनी' (रू. भे.)

रेगिस्तांन—सं. पु. [सं. रेगिस्तान] १ मरुस्थल, मरुभूमि, रेगिस्तानी इलाका।

रू. भे. रेगिसतांन, रेगिसथांन, रेगिस्थान।

रेगिस्तांनी – वि. [फा. रेगिस्तानी] १ रेगिस्तान का, रेगिस्तान से सम्बन्धित । रू. भे. रेगिस्थांनी

रेगिस्थांन—देखो—'रेगिस्तांन' (रू. भे.)

रेगिस्थांनी—देखो—'रेगिस्तांनी' (रू. भे.)

रेड़णौ, रेड़बौ–क्रि. स.—१ वहाना, टपकाना ।

उ०—इम सिखांमरण देई करी, रांणी कुटुंब कवीला केड़ै रै । वीर वांदी पाछा वळया, मोहै आंख्या आंसू रेड़ै रै । —जयवांणी

२ गिराना, डालना, उंड़ेलना ।

उ०—ताहरां मालदै दीठौ। सू प्यालौ सयणी मालदै नूं दियौ । ताहरां मालदै प्यालौ लियौ सयणी रै वास्तै । ताहरां मूंछै लायौ बीजौ वागै मांहै रेड़ियौ । —सयणी री वात

३ भगाना ।

उ०—१ छके जोम सूं जाय जमरांण सा छेड़िया, लड़ै अरि रेड़िया खेध लागा । भिडे भाराथ अरणपार दळ भांजिया, वीर भागो नहीं सारवागा । —र. रू.

उ०—२ हाक काळ रूपी डाच उवेड़ै कटार डढ्ढां, भीमनाद भेड़ै रेड़ै गयंदा गंभीर । आहेड़ै तेड़ै पेड़ै वीर देवीसिंघ वाळा, केड़ै लाग तुंडी छेड़ै डांखियौ कठीर । —गीत कवर दौलतसिंघ हाडा रौ

४ नगाड़ा आदि वाजा बजाना ।

उ०—वागै नकीवां अताळी हाक हरोळां जलेव वधै, उरोळां उछाह मडै करोळां अथाह । कौह हाका खेड़ै लोग रेड़ै वंब जोस काथै, सा-रदूळां रोस माथै छेड़ै रांमसाह । —सूरजमल मीसरण

५ मवेशी के दल को अगाड़ी हांकना, चलाना ।

रेड़णहार, हारौ (हारी), रेड़णियौ—वि० ।

रेड़िओड़ौ, रेड़ियोड़ौ, रेड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

रेड़ीजणौ, रेड़ीजबौ—कर्म० वा० ।

रेडणौ रेडबौ—रू० भे० ।

रेड़ाणौ रेड़ाबौ–प्रे. रू.—१ बहवाना, टपकवाना ।

२ भगवाना ।

३ गिरवाना, डलवाना, उड़ेलवाना ।

४ नगाड़ा आदि वजवाना ।

५ मेवेशियों के समूह को अगाड़ी हंकवाना, चलवाना ।

रेड़ाणहार, हारौ (हारी), रेड़ाणियौ—वि० ।

रेड़ायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

रेड़ावीजणौ, रेड़ावीजबौ—कर्म वा० ।

रेडाणौ, रेडाबौ, रेड़ावणौ, रेड़ावबौ, रेडावणौ, रेडावबौ —रू० भे० ।

रेड़ायोड़ौ–भू. का. कृ.—वहाया हुआ, टपकाया हुआ. २ भगाया हुआ. ३ गिरवाया हुआ, डलवाया हुआ. ४ नगाड़ा आदि वाद्य बजावा हुआ. ५ मवेशियों के झुण्ड को हंकाया हुआ. (स्त्री. रेड़ायोड़ी)

रेडाणौ, रेडावौ, रेडावणौ, रेडावबौ—रू. भे. ।

रेड़ावणौ, रेड़ावबौ—देखो 'रेड़ाणौ, रेड़ाबौ' (रू. भे)

रेड़ावणहार, हारौ (हारी), रेड़ावणियौ—वि० ।

रेड़ाविओड़ौ, रेड़ावियोड़ौ, रेवाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

रेड़ावीजणौ, रेड़ावीजबौ—कर्म वा० ।

रेड़ावियोड़ौ—देखो 'रेड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री रेड़ावियोड़ी)

रेड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ वहाया हुआ. टपकाया हुआ. २ गिराया हुआ, डाला हुआ. ३ भगाया हुआ. ४ नगाड़ादि वाद्य बजाया हुआ. हांका हुआ, आगे चलाया हुआ. (मवेशी दल) (स्त्री रेड़ियोड़ी)

रेड़्यौ—देखो 'रेडियौ' (रू भे.)

रेडूंवौ, रेडूवौ–सं. पु.—१ खराव आकृति वाला. विकृत हिंदवानी, मतीरा ।

रेचक–वि.[सं.] १ दस्तावर, दस्त लाने वाला ।

२ फेफड़ों को साफ या स्वच्छ करने वाला ।

सं. पु. [स. रेचकः] १ सांस को विधिपूर्वक बाहर निकालने की प्राणायाम की तीसरी क्रिया ।

उ०—१ निज आठ जोग अभ्याल अहनिस, सधै सुरधर जुगम रवि सस । करै रेचक पूरक कुंभक, वहै दम सिर ठांम । —र. ज. प्र.

उ०—२ रेचक कर्तै तांणै कुंभक ठांणै, पूरक आंणै फिर पाया । काया नै कस्टै कांम न द्रस्टै, सजक चस्टै सील सती । —पा. प्र.

२ जमाल गोटा ।

३ विरेचन औषधि विशेष ।

४ चचल चित्त को एकाग्र या वश में करने वाला ध्यान ।

उ०—नाभि कमल थी पवन निसारचा, रेचक ध्यान चपळ मन मारचा । घट भीतर किया घट आकारा,नाभि पवन कुंभक आकारा । —स. कु

रेचन–सं. पु. [सं. रेचनम्] १ मलस्थली साफ करने की क्रिया या भाव

२ मल, विष्टा ।

३ दस्त लाने की औषधि ।

४ श्वास बाहर निकालने की क्रिया ।

रेच्य–सं. पु. [सं.] १ प्राणायाम में बाहर निकालने की वायु ।

२ जुलाव ।

रेजकी, रेजगारी, रेजगी–सं. स्त्री. [फा. रेजगारी, रेजगी] १ रुपये के मूल्य में मिलने वाले छोटे २ सिक्कों का समूह ।

२ छोटे सिक्के ।

३ चांदी, सोना के तार के छोटे २ टुकड़े ।

रेजमाल-सं. पु. [फा. रेगमाल] एक प्रकार का काच के बुरादे से लपेटा खुरदरा कागज जो लकड़ी आदि का खुरदरापन मिटाने में काम आता है।

रेजलौ-सं. पु.—थकान, थकावट।

उ०—तद जलाल बादशाह नूं आरोगण सारू माजूम लायौ और अरज करी, मांमूजी, घोड़ा सूं खेद हुवौ छै माजुम अरोगौ जो खेद रौ रेजलौ दूर होवे। —जलाल बूबना री बात

रेजीडेंट-सं. पु. [अ.] वह राजकीय अधिकारी जो ब्रिटिश शासनकाल में देसी राज्यों में वहां के शासन आदि पर दृष्टि रखने के लिए अमात्य के रूप में रखा जाता था। वासामात्य ।

रू. भे.—रजीडट।

रेजीमेंट-सं. स्त्री. [अ.] सेना का एक भाग, रिजमिट।

रेजौ-सं. पु. [फा. रेजः] १ बहुमूल्य कपड़े का थान या खंड।

२ हाथ के कते देशी सूत का बना मोटा कपड़ा

उ०—गुठा जीमता गटक, अंब नहिं भावे वांनै। राव रोगता रटक जरे नह सीरो ज्या नै। पुळता नगे पाय, मोल वड वूंट मंगावै। पट रेजा पहरता, अतलसां दाय न आवै। अनाथी भाग आया अठै, आतम जांणी आपसी। कमंध केई लोह कंचन किया, पारस भूप 'प्रतापसी'। —जुगतीदांनजी देथौ

३ सुनारों का लोहे का आयताकार बना सांचा विशेष जिसमे गले हुए सोने य चांदो को डाल कर छड़ के आकार का बनाते है।

४ वेश्या वृति कराने के उद्देश्य से कुटनी द्वारा पाली पोपी लड़की।

रेट-सं. स्त्री. [अं.] १ भाव, दर।

२ गति, चाल।

३ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—हवड राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ......पटणी पटपाट्ट पचवरण छींट नीलवटां कवटां धौत बटां मुहिवटां, नाटी दोटी घटी कठपीठ पाघडी, बींडी रेट चूनड़ी पातलसाडी। —व. स.

रेटणौ, रेटबौ-क्रि. स.—१ धारण करना, पहनना।

उ०—फांली भली ओढणि अंग रेटइ आवी रही जु तुरणी त्रिभटइ। हूं हेलौ देतां पडी जि खेटइ, जाणउ विदेसी मुझ कंत भेटइ। —प्राचीन फागु-संग्रह

२ मिटाना, रद्द करना।

उ०—लाग बाग रेट कीन्ही, लूट काहु की न लीन्ही। भारी वुद्धी भीनी, भूती धन्य जस धारी तूं। —ऊ. का.

३ आज्ञा, नियम प्रथा रीति आदि का पालन न करते हुए विरोध करना।

रेटणहार, हारौ (हारी), रेटणणियौ—वि०।

रेटिओड़ौ, रेटियोड़ौ, रेट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रेटीजणौ, रेटीजबौ—कर्म वा०।

रेटाड़णौ, रेटाड़बौ—देखो 'रेटाणौ, रेटावौ' (रू. भे.)

रेटाणौ, रेटावौ-प्रे. रू.—१ धारण कराना, पहनाना।

२ मिटाना, रद्द कराना।

३ आज्ञा, नियम, प्रथा, रीति आदि का अतिक्रमण कराना।

रेटाणहार, हारौ, (हारी), रेटाणियौ—वि०।

रेटायोड़ौ - भू० का० कृ०।

रेटीजणौ, रेटीजबौ - कर्म वा०।

रेटाड़णौ, रेटाड़बौ, रेटावणौ, रेटावबौ - रू० भे०।

रेटावणौ, रेटावबौ—१ देखो 'रेटाणौ, रेटावौ' (रू. भे.)

रेटावणहार, हारौ (हारी), रेटावणियौ—वि०।

रेटाविओड़ौ, रेटावियोड़ौ, रेटाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रेटावीजणौ, रेटावीजबौ—कर्म वा०।

रेटियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ धारण किया हुआ. २ मिटाया हुआ, रद्द किया हुआ. ३ उल्लघन या अतिक्रमण किया हुआ. (स्त्री. रेटियोड़ी)

रेटौ-सं. पु.—१ पराजित करने की क्रिया या भाव।

उ०—१ भूल लियां थट जांनिया, हयलेवे खेटौ। सावौ अग्रवरत साझियौ भारत में भेटौ। झांफां भरे कवलियौ, रूकां वळ रेटौ। —वी.मा.

रेडणौ, रेडवौ - देखो 'रेड़णौ, रेड़वौ' (रू. भे.)

उ०—१ तद डोकरी बोली—बेटा धणी परौ उजड़तौ देखि चाकर न कहै, सु चाकर काहि रौ ? सु तो हरामखोर। धणी रौ पांणी ईटजे तठै आपरौ लोही रेडजै। अर आ बात जिम छै तिम मालम करौ। —वरसे तिलोकसी री बात

रेडाणौ, रेडावौ—देखो 'रेड़ाणौ, रेड़ावौ' (रू. भे.)

उ०—१ तद राजा कही, 'मोनू तौ तिस लागी हुती, सो ऊपर सुं पांणी रा टिवका पड़ता हुता, सो मैं नीचे कटोरो माडियौ हुतौ, सो दुने ही वरीयां रेडायो तद मैं मारीयौ।

—वात बूढी ठग राजा री

रेडौ-वि.—१ ठिगना, छोटे कद का।

२ देखो—रेढौ (रू. भे.)

रेढ-स. स्त्री.—१ जिद, हठ।

उ०—सिरदे दार मदार सिर हक खेड हुवंदे। संक न माने जीदरो नह रेढ खसंदे। —पा. प्र.

रेढौ-सं. पु.—१ सूअर का बच्चा।

उ०—भूंडण पूरा लोहां छिक रही छै। वडो रेढौ पाछौ फिरियौ। अेक घड़ी तांई मारी फौज थांभ राखी। —डाढाळौ सूर

रू. भे.—रेडौ

रेण—देखो—रयण' (रू. भे.) (ह. नां मा)

उ०—१ नरव्वीर रेण भई भांत केरां। सुणि सेख तत्थ कहे ताम

कथ्यं। —र. ज. प्र.

उ०—२ चित वडपण सुभ चितवण, वजर लीक मम वैण। गाढ स्यामध्रम धरण गह, रहण 'पतौ' दिन रेण। —जैतदान बारहठ

उ०—३ अहल्या पद रेण उधरी, कियौ निरभै कीर। विभीखणकूं लंक वगसी, साथ राखण सीर। —भगतमाळ

उ०—४ दुनियां वरदायक सेव सिहायक, रेण किसौ न्रप रांम सौ जी। —र. ज. प्र.

रेणका—देखो 'रेणुका' (डिं. को.)

उ०—१ लंगरी राव रूकां रटक लेणका, भलो 'अगजीत' ऊमराव भीमेण का, वजाई नारद तणी वैणका रजाइ पलंग रस लूंद रंग रेणका। —महादान मैहडू

उ०—२ विभाड़ी रेणका वड़ी कीधौ विधन, जमदगिनि तणौ परमेस मांडे जिगिन। —पी. ग्रं.

रेणकी—देखो 'रेणकी' (रू. भे.)

रेणदार—सं. पु. [फा. रेहनदार] १ वह जिसके पास कोई जायदाद रेहन रक्खी हो।

रेणनामौ—सं. पु. [फा.] रेहन की शर्तें लिखा हुआ कागज।

रेणविल—सं. पु. [फा.] गिरवी, वंधक, रेहन।

रेणव—सं. पु. [सं. रेणवह] चारणों का एक पर्यायवाची शब्द।

उ०—पड़गनां रेणवां तणां इम पाळजे, सीर संभाळजै वडां सेवी। साद सांपू तणां घणां संभाळिया, दाखजे नाथ ची मदत देवी। —गीत करणीजी री

२ कवि, काव्यकार। (अ. मा.)

उ०—मत्त सतावन सव गाथा मह, कळा तीस पूरवा अरध कह। वीस सात कळ उतर अरध विच, रेणव अेम छंद गाथौ रच। —र. ज. प्र.

रू. भे.—रेणू।

रेणवा—सं. पु.—झाला वंश की एक शाखा।

रेणां, रेणा—देखो 'रेणुका' (रू. भे.)

उ०—ओ अलाह अणधाह, नियौ जम रेणां जायौ। देजां सरिसि घर दियण, असख जिगि करवा आयौ। —पी. ग्रं.

२ देखो 'रैणा' (रू. भे.)

उ०—१ खत्री वंस वार किता तै खेस, रेणा ले दीधी विप्रा रेस। —ह. र.

उ०—२ मिळि अंब साख प्रसाख रसमय, अमिति मंजुर अंजुरै। रसहीन अनि तर सरव रेणा, सीत छळ क्रति संचरै। —रा. रू.

रेणादे—देखो 'राणादे'

उ०—१ धोळौ जी धोळौ कांड करो सहेल्या ए धोळा राणी रेणादे रा दांत। —लो. गी.

रेणाधर—सं. पु. [सं. रत्नधर] १ समुद्र। (ह नां. मा.)

रेणायर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—१ वांम तणै वासतै, रांम मथियौ रेणायर। दईतां रा तिण दिवस, वहत मन मोहै वायर। —पी. ग्रं.

रेणाविखमी—सं स्त्री.—१ सेना, फौज। (अ. मा., नां. मा.)

रेणि, रेणी—देखो 'रेणु' (रू. भे.)

उ०—वाजीय त्रंवक गुहिर निसांण दिणय रौ रेणि हि छाइउ ए। पहुतउ जांणीउ पंडु नरिंदु द्रुपदु पहुचए सामहो ए। —सालिभद्र सूरी

उ०—२ सझ तेरह धुर फेर दस, जांणौ निस्रेणी। रिख नारी तरगी हरी, परसत पग रेणी। —र. ज. प्र.

रेणु—सं. पु. [सं. रेणुः] १ एक इक्ष्वाकु वंशीय राजा, जिसके दूसरे नाम प्रसेनजित, प्रसेन एवं सुवेणु भी थे इसकी पुत्री का नाम रेणुका भी था जो परशुराम की माता तथा जमदग्नि ऋषि की पत्नी थी।

सं. स्त्री.—२ वालुरेत, धूल, रज।

३ पृथ्वी, भूमि। (डिं. को.)

रू. भे.—रेणूं, रैण।

रेणुका—सं. स्त्री. [सं.] इक्ष्वाकुवंशीय रेणु (प्रसेनजित्) राजा की पुत्री, जमदग्नि महर्षि की पत्नी तथा परशुराम की माता थी।

उ०—देवी रेणुका रूप में रांम जाया। देवी रांम रै रूप खत्री खपाया। —देवि.

वि० वि०—कालिका पुराण में इसे विदर्भ राजा प्रसेनजित की कन्या कहा गया है। महाभारत के अनुसार इसका जन्म कमल से हुआ एवं इसके पिता तथा भाई का नाम क्रमशः सोमप एवं रेणु था। सोमप राजा के द्वारा इसका पालन-पोषण होने के कारण संभवतः उसे इसका पिता कहा गया होगा। रेणुका पुराण के अनुसार रेणु राजा ने कन्या-कामेष्ठि यज्ञ किया। यज्ञ कुण्ड से इसकी उत्पत्ति हुई थी।

इसका स्वयंवर भागीरथी क्षेत्र में हुआ, जहां पर जमदग्नि ऋषि ने इसका वरण किया। इसके पाणिग्रहण के समय इन्द्र ने कामधेनु, कल्पतरु, चिंतामणि एवं पारस आदि विभिन्न अमुल्य पदार्थ भेंट किये। एक वार जमदग्नि वाणक्षेपण का कार्य कर रहे थे। उस समय वाण वापिस लाने का कार्य इसे सौंपा गया था। एक दिन वाण लाने में इसे कुछ विलम्ब हो गया जिस कारण क्रुध होकर जमदग्नि ने अपने पुत्र परशुराम को इसका शिर छेदन के लिए कहा। परशुराम ने पिता की आज्ञा अनुसार इसका वध किया एवं तत्पश्चात जमदग्नि से आग्रह कर इसे पुनर्जीवित कराया।

मतांतर से यही कथा इस प्रकार भी मिलती है। एक वार राजा चित्ररथ को स्त्री के संग क्रीड़ा करते देख इसके मनमें कुछ विकार उत्पन्न हुआ जिससे क्रुध हो जमदग्नि ने परशुराम द्वारा

इसका वध करवा दिया। तत्पश्चात परशुराम ने जमदग्नि से ही इसे पुनर्जीवित करा दिया।

कहते हैं कि यह कमल से उत्पन्न अयोनिजा थी। प्रसेनजित इसके पोषक पिता थे। कहीं कहीं इसके पिता का नाम रेणु महर्षि भी लिखा मिलता है।

२ पृथ्वी। (डिं. को.)

३ वालू, रेत।

४ रज, धूलि।

सं. पु.—५ सह्याद्रि पर्वत का एक तीर्थ स्थान।

रू. भे.—रेणका, रेणां, रेणा, रैणका।

रेणूं, रेणू—१ देखो 'रेणु' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—रेणूं रवि मंडळ रसमी रय रोकी। तन मन प्रज कांपत ढांपत त्रयलोकी। —ऊ. का.

२ देखो 'रेणव' (रू. भे.)

उ०—असपतियां उतबंग सूं, ऊंचा छतर उतार। रांणै दीधा रेणुआं 'सांगो' जग-साधार। —वां. दा.

रेत-सं. स्त्री—१ धूल, रज। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—जाग्या सोई जांणियै, हरिया हरि के हेत। हरि वेमुख सुं जागिया, ता मुख पड़सी रेत। —अनुभववांणी

२ पृथ्वी, भूमि।

उ०—हरिया सांमी सतमुखी, माया मांही हेत। क्युंईक गाडै रेत में, और वीयाजू देत। —अनुभववांणी

रू. भे.—रेती, रैत, रैति, रैती।

अल्पा.—रेतड़ली।

मह.—रेतरड़ौ, रेतूड़, रेतूड़ौ, रेतोड़ौ, रेतौ।

३ देखो 'रय्यत' (रू. भे.)

उ०—१ रंड पोखां रा राजमें, रुळगी भूपां रेत। मूकां नित सीरा करै, दंड न चूकां देत॥ —ऊ. का.

४ देखो 'रेतस' (रू. भे.)

५ देखो 'रेती' (रू. भे.)

रेतकुंड-सं. पु. [सं. रेतः कुंड] १ एक नरक का नाम, रेत कुल्या।

२ कुमायूं के पास का एक तीर्थ स्थान।

रेतड़ली—देखो 'रेत' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—म्हांरी आंगड़ल्यां री तारौ दुलारौ प्यारौ है मुरधर देस सोनै रै डूंगर ज्यूं चमके रेतड़ली रा ढेर। —लो. गी.

रेतणौ, रेतबौ—क्रि. स.—१ रेती नामक औजार से किसी पदार्थ के खुरदरे तल को रगड़ कर काटना।

२ किसी पैनी धार वाली चीज से रगड़ कर किसी चीज को काटना।

क्रि. अ.—३ घोड़े का वीर्य पात होना या स्खलन होना।

४ ऊंट का कोमल भूमि पर बैठकर रेत में सहलाने से वीर्यपात होना जिससे वह अशक्त हो जाता है।

५ रेत या भूमि पर बैठे बैठे पेशाब करने से ऊंट की मूत्रेन्द्रिय पर शोथ आना, ऊंट का मूत्रेन्द्रिय से पीड़ित होना।

रेतणहार, हारौ (हारी), रेतणियौ—वि०।

रेतिओड़ौ, रेतियोड़ौ, रेत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रेतीजणौ, रेतीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

रेतरड़ौ देखो—'रेत' (मह. रू. भे.)

रेतस-सं. पु. [सं. रेतस्] वीर्य, शुक्र (डिं. को.)

रू. भे.—रेत।

रेतियोड़ौ—भू.का.कृ.—१ पदार्थ विशेष का रेती नामक औजार से खुरदरापन मिटाया हुआ। २ पैनी धार वाले औजार से रगड़ कर कोई पदार्थ काटा हुआ। ३ स्खलन हुवा हुआ (घोड़ा)। ४ कोमल भूमि पर बैठ कर सहलाने से स्खलन हुवा हुआ (ऊंट) ५ रेत या भूमि पर बैठे बैठे पेशाब करने से मुत्रेन्द्रिय रोग से पीड़ित हुवा हुआ। (ऊंट)

रेती-सं. स्त्री.—१ एक प्रकार का दानेदार औजार विशेष जिस से रगड़ कर पदार्थों का तल चिकना किया जाता है।

२ नदी के बीचोबीच टापू की वह जमीन जो जल के प्रवाह के घटने पर या मंद पड़ने पर ऊपर निकल आती है। नदी का टापू।

उ०—१ नदी माहे पग पैसि अर पोत्यां कियां। नदी माहे पगे पैसि अर रेती पधारिया। ओथि रमण लागा। —द. वि.

रेतीलौ—वि. (स्त्री. रेतीली) १ ऐसा स्थान जहां पर रेत अधिक हो।

२ वह जिसमें वालू या रेत अधिक हो।

रेतूड़, रेतूड़ौ—देखो 'रेत' (मह. रू. भे.)

उ०—ढोला जी करहलौ थांच्यौ रै फेरयौ रे रेतुडै रै मांय। काढचौ डावा पग रौ ताकळौ, कांइ पुगौ छिन रै मांय। —लो.गी.

रेतोड़ौ, रेतौ—देखो—'रेत' (मह. रू. भे.)

उ०—म्हांनी सी एक टोपसी, माहें घाल्यौ सपेतौ। जतन पण कर राखजो, नहीं तौ पड़ेला रेतौ। —भि. द्र.

रेपळ—सं. स्त्री. १ आवड़ देवी की एक वहिन का नाम।

उ०—महा अदभूत जचै उपमांण. जसोमति पूत नचै फण जांण। गंजै दळ रेपळ लांग गहल्ल, मारै बोहो मीर अमीर मुगल्ल। —मे. म.

रू. भे. रेफली

रेफ-सं. पु [स. रेफः] १ र अक्षर का वह रूप जो अन्य अक्षर के र पूर्व आने पर उसके ऊपर रहता है।

२ 'र' अक्षर।

३ ध्वनि विशेष।

रेफळी—देखो—'रेपळ' (रू. भे.)

रेबाव—देखो 'रबाव' (रू. भे.)

उ०—साह तौ डेरै थौ अर ए भरोखे नीचे ओलगण लागौ तठे राजा अर राणी पोढीया छै। तद इहा गावते रेबाव री तार तोड़ नांखी। —ठाकुरे साह री वात

रेबारी—देखो 'रैबारी' (रू. भे.)

उ०—१ रेबारी कावर ने वारी रे, गूजर दरजिया ने बाजारी। कीरतन्या गांम करासी रे, हुआै कीर कुंजरौ घासी। —जयवांणी

(स्त्री. रेबारण)

रेयण—१ देखो 'रयण' (रू. भे.)

उ०—अग्रे दळाय पांणी मभि दळां, कादमं गहणं। दळ पुडि उडि रेयण कौतुहळ कोडि त्रियासा। —गु. रू. बं.

२ देखो 'रजनी' (रू. भे.)

रेयांण-सं. पु.—१ मुसलमान।

उ०—१ संभर ससत डडे डिडवाणी, भटनर पडे भगांणा। रांणां तुभ भये रेयांणा, थर हरिया सह थांणा —महाराणा कूंभा रौ गीत

२ देखो 'रेयांण' (रू. भे.)

रेर-सं. स्त्री—१ राम शब्द की ध्वनि।

उ०—रांम रांम रसणां रटे, वासर वेर अवेर। अटक्यां पछै न आवसी, रांम तणी मुख रेर। —ह. र.

रेरुओ, रेरुवौ-सं. पु—बड़ा उल्लू पक्षी।

रेळ-सं. पु.—प्रातः काल का गायन, गायन।

उ०—क्रूर उनाळे हुरिया पतां, चिड़कोल्यां चग चग करै। कुरदसिया कुत्ता विल्ला, चढ रेळ रग रळ भंग करै। —दसदेव

रेल-सं. स्त्री. [अं] भाप व डीजल तेल से लोह की पटरी पर चलने वाली गाड़ी, रेलगाड़ी।

उ०—नहीं तार नहिं टेम है, नहीं वत्ती में तेल। आ चालै मनरे मतै, मारवाड़ री रेल। —अग्यात

२ वहाव, धारा।

३ ऐसा खेत जिसमें वर्षा के पानी का भराव होता हो और विना सिंचाई के गेहूँ, चनों की फसल भी होती हो।

उ०—सीवांणा था कोस ६ उत्तर दिसी। कुंभार वसै रैवारी रजपूत, वसै। पाही खड़ै छै। ऊनाळी करै तितरी हुवै रेल माहे सेंवज घणा हुवै। —नैणसी

४ वर्षा के पानी का वहाव विशेष जिससे भूमि में पानी समान रूप से फैल जाता है तथा भर जाता है जिससे उस भूमि में बिना सिंचाई के गेहूँ व चनों की फसल होती है।

उ०—१ जैतारण था कोस १। आथण मांहे। जाट नै बांमण वसै। धरती हलवा ३० खेत काठा मटियाळा। ऊनांली अरट १० ढीवड़ा २ हुवै। पहली आगेवा वाळी रेल आवती। चिणा हुवै। —नैणसी

उ०—२ तळाव मास ४ पांणी। कोहर १ सागरी मीठो। रेल आगेवा वाळी आवै। —नैणसी

उ०—३ रेल जैतारण वाळी आथण माहे वहै। असल खालसा री गांव पातु गुजर री वसायौ। —नैणसी

५ आधिक्य, भरमार।

उ०—कर कठ- खग कंठ, कदणरी, खेलै वाळक मेल। भाभी भाळी भंजसी, रण औ विघणां रेल। —रेंवतसिंह भाटी

रेलगाडी—देखो 'रेल' (१)

रेलचोळा-सं. स्त्री.—१ रतिक्रीड़ा का आनंद।

२ संभोग के कारण नवोढा की योनि से रक्त निकलने की क्रिया का भाव।

रेल ठेल—देखो 'रेलपेल'

रेलणौ रेलवौ-क्रि. अ.—१ जल प्रवाह का पृथ्वी पर फैल जाना।

२ भूमि का वर्षा जल के प्रवाह से युक्त होना।

उ०—१ जल वूठा थल रेलिया, वसधा नीलै वेस। मांगौ सीखां म्यारजी. देखां मुरधर देस। — दरजी मयाराम री वात

उ०—२ डूंगर पांणी आवै तिण ता खेत ३० रेलीजै। सेंवज गेहूँ हुवै। —नैणसी

उ० - ३ खेत निपट सखरा भुणीयांणा वाळौ वाहळौ दांतल री सीम में रेलीजै। तेठै सेंवज गेहू १५० मण तथा २०० री ठौड़। —नैणसी

३ जल प्रवाह का गतिमान होना या वहना।

उ०—जिन प्रतिमा निश्चय पणइ, सरस सुवारस रेलि। चिंतामणि सुर तरु सभी, अथवा मोहन वेलि। —वि. कु.

४ भीगोना।

उ०—१ ढव न देय पग ढसकणी, खित वेकळ खिसकाय। रेल रेल निज रगत हुंत, जोधा पग्ग जमाय। —रेवतसिंह भाटी

५ वर्षा का भूमि को जल से भीगोना, तरवतर करना।

उ०—अरहट कूप तमांम, ऊमर लग न हुवे इति। जळहर एकी जांम, रेलै सब जग राजिया। —किरपारांम

६ देना, अर्पण करना।

उ०—'गहांणी' 'जला' 'क्रन' भोज माधव गणां, सुपातां रेल द्रव हलाई सलता। भामणां हू लेऊ कहे सह जग भला, चहीला दांन रा कीया चलता। —माधोसिंह उदावत रौ गीत

७ तीव्र जलप्रवाह का अपने साथ वहा ले जाना।

८ चलना, वहना।

उ०—आवीयां अलजड घणइ, आलस मांहइ गंग। रेलि आविउ रंक घरि, मद-मातउ मातंग। —मा. कां. प्र.

९ नष्ट होना, मिट जाना।

उ०—कु० खुंट खरड झगडइ, कु० वाट पडइ, कु० भूमि सडइ

कु० रेलिजाइ कु० वाणउत्र खाइ। —व. स.

रेलणहार, हारौ (हारी), रेलणियौ—वि०।

रेलिग्रोड़ौ, रेलियोड़ौ, रेल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रेलीजणौ, रेलीजवौ—कर्म वा०। भाव वा०।

रेलत-सं. स्त्री. [ग्र. रिहलत] मृत्यु।

उ०—१ हमीदां री रेलत नागोर में हुई। सेख हमीदुद्दीन नागोरी री रेलत दिल्ली में हुई। जवन कहै सातूं हमीदां री रेलत नागोर में हुती तौ नागोर खुरद मक्कौ होय जातौ। —बां. दा. ख्यात

रेळपेळ, रेलपेल—१ भीड़भाड़, धकमधक्का।

२ भरमार, अधिकता।

रू. भे.—रेळापेळि।

रेलवे-सं. स्त्री.—१ रेल का विभाग, या महकमा।

२ रेल की बिछी हुई पटरियां जिन पर रेल गाड़ी चलती है।

रेळापेळी—देखो 'रेळपेळ' (रू. भे.)

उ०—पतर पुराऊ थारी पेम सूं, रंग री रेळापेळि —पदम भगत

रेलियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ पृथ्वी पर फैला हुग्रा जल प्रवाह. २ वर्षा जल के प्रवाह से युक्त हुवा हुग्रा। ३ जल प्रवाह गतिमान हुवा हुग्रा. ४ भीगोया हुग्रा. ५ वर्षा द्वारा तरबतर किया हुग्रा. ६ दिया हुग्रा, ग्रर्पण किया हुग्रा. ७ तीव्र जल प्रवाह का ग्रपने साथ बहाया हुग्रा. ८ चला हुवा, बहा हुग्रा. ९ नष्ट हुवा हुग्रा, मिटा हुग्रा।

(स्त्री. रेलियोड़ी)

रेळी-सं. स्त्री.—१ शीतल वायु प्रवाह।

२ बारीक धूलि की तह, कण।

उ०—पेंसठ हाथ री पछै रेळी रै कारण वेरौ खुदणौ दूभर व्हैगौ। —फुलवाड़ी

३ गेहूं के पौधों की जड़ों में होने वाला एक प्रकार का रोग।

रेलि—धारा, प्रवाह।

उ०—पसरी ग्रंग इग्यार नी सहेली हे मुझ मन मंडप वेलि सींचू नेह रसइ करी सहेली हे ग्रनुभव रसनी रेलि। —वि. कु.

रेलौ-सं. पु.—१ जल या किसी तरल पदार्थ का बहाव या प्रवाह।

उ०—१ गुरु वांणी सगलउ मोहोयउ, साचा मोहण वेलौ जी। सांभलता सहुनइ सुख संपजइ, जांणि ग्रभी रस रेलौ जी। —ऐ. जै. का. स.

उ०—२ ग्रौरुं ग्रकल उपाय, कर ग्राछौ भूंडौ न कर। जग सह चाल्यौ जाय. रेला की ज्यूं राजिया। —किरपारांम

२ तबला बजाने का एक ढंग विशेष जिसमें कुछ विशेष प्रकार के मधुर ग्रौर हलके बोल बजाये जाते है।

३ भीड़, जमघट।

रेवंत-सं. पु.—ग्रश्व के रूप उत्पन्न हुवे हुए एक सूर्य के पुत्र का नाम।

वि० वि०—यह संज्ञा (छाया) नामक सूर्य की पत्नी के उदर से उत्पन्न हुग्रा। इसके ग्रश्व के रूप में उत्पन्न होने का कारण था कि सूर्य-पत्नी संज्ञा वड़वा (घोड़ी) का रूप धारण किये हुए थी। यह शनिश्चर का भाई था। इसे गुह्यकों का ग्राधिपत्य मिला। मतान्तर से इसे ग्रश्वों का ग्राधिपत्य मिला था। राजा लोग तोरण प्रान्त में प्रतिमा या घट में सूर्य पूजा की विधि के ग्रनुसार इसकी पूजा भी करें, ऐसा कालिका पुराण में लिखा मिलता है।

२ घोड़ा, ग्रश्व। (टि. को.)

रू. भे.—रइवत, रेवत, रेंवत, रैंवत।

रेव-सं. स्त्री. [सं. रव] १ दर्दभरी ग्रावाज, चीख।

२ गिड़गिड़ाने का शब्द।

उ०—रण भाजै कर रेव, जीवण कज केता जिकै। दीधौ सिर जगदेव, महि जस राखण मोतिया। —रायसिंह सांदू

३ शर्याति वंशीय एक राजा का नाम।

रेवड़-सं. पु.—भेड़ों व बकरियों का दल या झुण्ड।

उ०—१ जमनाजी के बांयै डावै, रेवड़ चरतौ जाय। नजर पड़ी करण्यै मीणं की, जद यूं बोल्यौ ग्राय। —डूंगजी री छावली

उ०—२ ग्वाळा रे ग्वाळा भाई, रेवड़ थारौ हळवै हांक। लाडलिया जंवाई रौ पिचरंग पेचौ खेह भरै। —लो. गी.

ग्रल्पा.,—रेवड़ियौ।

रेवड़ा-सं. स्त्री.—बड़ी ग्रौर मोटी रेवड़ी।

रेवड़ियौ—देखो 'रेवड़' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—हाय गंगेरण गेडिया भबुना सिव रेवड़ियौ चरावानै जाय बाई रौ वीरौ बाग में। —लो. गी.

रेवड़ी-सं. स्त्री.—पगी हुई चीनी या गुड़ की एक प्रकार की टिकिया जिस पर सफेद तिल चिपकाए जाते हैं।

रेवट-सं. पु. [सं. रेवट:] १ दक्षिणावर्त शंख।

२ शूकर, सूग्रर।

रेवत-सं. पु. [सं.] १ शर्याति वंशीय रेव राजा का नाम जो रोहिणी पुत्र बलराम के श्वसुर तथा रेवती के पिता थे।

वि. वि.—ये कुशस्थली (द्वारका) के राजा थे।

२ एक राजा का नाम जो वायु पुराण के ग्रनुसार कपोत रोमन राजा का पुत्र था।

३ एकादश रुद्रों में से एक।

४ देखो 'रेवंत' (रू. भे.)

रेवतचीणी-सं. स्त्री.—एक प्रकार का छोटा क्षुप जिसका कद या जड़ ग्रौषध प्रयोग में लिया जाता है। (ग्रमरत)

रेवति, रेवती-सं. स्त्री. [सं. रेवती] १ रेवत मनु की माता का नाम।

२ राजा रेवत की पुत्री तथा बलरामजी की पत्नी जिससे बलराम के निशठ और उलमुक नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए थे ।

वि. वि.—राजा रेवत अपनी पुत्री के लिए सर्व गुण सम्पन्न योग्य वर की खोज में अपनी पुत्री को साथ लेकर ब्रह्म लोक गये। उस समय वहां पर गीत और नृत्य होने के कारण राजा रेवत को दो एक क्षण वहां रुकना पड़ा। राजा रेवत का निवेदन सुन कर ब्रह्मा ने कहा कि आपको यहां रहते हुए सत्ताईस चतुर्युग व्यतीत हो गये हैं। अब द्वापुर युग में भगवान का अंशावतार बलराम द्वारका में रहते हैं। इस नारीरत्न को उन पुरुष श्रेष्ठ बलरामजी को दीजिये। ब्रह्मा को वंदना कर अपनी सुकुमारी पुत्री का पाणिग्रहण बलराम के साथ कर दिया। बलराम की मृत्यु होने पर रेवती भी उनके साथ चिता में अग्नि प्रवेश कर सती हुई थी।

३ महर्षि भरद्वाज की बहन जो अत्यन्त कुरूप थी और भरद्वाज ने अपने कठ नामक शिष्य को विवाह में दी थी। यह गोदावरी में स्नान कर के रूपवती हो गई। जहां पर स्नान करके इसने सौन्दर्य प्राप्त किया था वह स्थान रेवती नामक तीर्थ हो गया

४ अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों के अन्तर्गत अन्तिम नक्षत्र। इसका अधिष्ठाता पूषा नामक सूर्य है।

५ एक मातृका का नाम।

६ एक बालग्रह विशेष जो बच्चों को दुख देता है।

रू. भे.—रेवत्ति

रेवतीभव—सं. पु. [सं.] शनिश्चर। (डिं. को.)

रेवतीरमण, रेवतीरवण—सं. पु. [सं. रेवतीरमण] रेवती से रमण करने वाले, श्री बलराम का एक नाम।

रू. भे.—रैवतीरमण, रैवतीरवण

रेवर—स. पु.—पंवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

रेवल—सं. पु.—दीवार की सतह की समानता बताने वाला एक लकड़ी का औजार जिसके बीच में पारा भरा रहता है।

रेवांण—देखो—'रेयांण' (रू. भे.)

रेवा—सं. स्त्री. [सं.] नर्मदा नदी का एक नाम।

उ०—लीयै तसु अंग वास रस लोभी, रेवा जळि क्रत सौच रति। दखिणानिळ आवतौ उत्तर दिसि, सापराध पति जिम सरति। —वेलि

वि. वि.—इस नदी में शिव लिंगों की उत्पत्ति होती है जिन्हें नर्मदेश्वर कहते हैं।

रू. भे.—रैवा

रेवाउत्तन—सं. पु.—हाथी, गज। (डिं. को.)

रेवाकंकर—सं. पु.—नर्मदा या रेवा नदी में से निकलने वाले शिव की मूर्त्ति की तरह के पत्थर।

उ०—नर्मदा रौ अेक देस धारा-क्षेत्र है जठै बांणनाथ शिव नीसरै है, रेवाकंकर। —बां. दा. ख्यात

रेवाड़ी—देखो—'रैवाड़ी' (रू. भे.)

उ०—अति ऊंचा आवास,पूजइ सइ ग्राम, वसइ जहां पंडित हइ स्त्रेणि मंडित,जहां भोगी करइ रेवाड़ी, इसी विसाल वाड़ी। —सभा.

रेवाड़ीएकादसी—देखो—'रैवाड़ी एकादसी (रू. भे.)

रेवाड़ौ—सं. पु.—भेड़ों व बकरियों के रखने का स्थान।

रेवानद, रेवानदी—सं. स्त्री.—नर्मदा नदी।

रू. भे.—रैवांणनद, रैवानद, रैवानदी।

रेवाळ—१ देखो—'रहवाळ' (रू. भे.)

२ देखो—'रैवाळ' (रू. भे.)

रेवास, रेवासौ—देखो—'रहवास' (रू. भे.)

रेस—सं. स्त्री. [सं. रुश या रिष] १ पराजय, हार।

उ०—मेळ थयौ संघै मुहै, 'रैण' देतां रेस। अर मिळियौ दिन ऊजळें, क्यों निकळै 'महेस'। —रा. रू.

उ०—२ मडियौ जुध मेड़तै, रिण अरियां दे रेस। तन भड़ियौ तरवारियां, मुड़ियौ नही 'महेस'। —महेसदास कूंपावत रौ दूहौ

उ०—३ ज्वार 'डूंग' दीवी जरु, रिपुवां इण विध रेस। रैणव औ इचरज रयौ, सुण जुध बात 'महेस'। —डूंगजी जवारजी रौ दूहौ

२ नाश, सहार।

उ०—१ तठै रुघनाथ तणी 'सुरतेस' रिमां खग झाट करै घण रेस। —सू. प्र.

उ०—२ अणसंख्या मेटै असुरांणी, रावण कुंभ आद खळ रेस। निडर किया सुर नर नागां नै, आचां तौ भांमी अवधेस। —र. रू.

३ सजा, दण्ड।

उ०—रूठ असी दे रेस, ऊठ महाभड़ ऊठ अब। कूट गहै छै केस, दूठ विक्रोदर देख रे। —रांमनाथ कवियौ

४ दवाकत, दवाव।

उ०—देस उगाहै रेस दै, आवै पेम दरब्ब। मार लियौ खग माल-पुर, आसुर पकड़ कुतुब्ब। —रा. रू.

५ शल्य, कसक।

उ०—जग विलग्गो जरमनां,इंगळ हूंत अचांण। अंगरेजां आराधि-या, धूहड़ दुहुं जोधांण। 'धूहड़' दुहुं जोधांण, 'सुमेर' सुरेस सौ। सुपह महापित साथ, रिगां उर रेस सौ। समहर हरख सवाय, बुलाय बहादरां। ऊभळिया आरांण, तरस्सै चढ तरां। —किसोरदांन बारहठ

६ क्षति, हानि।

उ०—'वाव' मुजाव कमंध वरदायक, रैणव वरण न देवै रेस।

जांमी कमंध कलपतर जेहो, नांमी नवा समापण नेस ।
—ग्रार्यसिंह चांदावत री गीत

७ भय, आतंक ।

८ जिसके बिना कार्य की उत्पत्ति न हो सके, हेतु, कारण ।

उ०—मेहां वूठां अन वहळ, थळ ताढा जळ रेस । करसण पाका कण खिरा, तद कउ वळण करेस । —ढो. मा.

९ निर्धनता, कंगाली, दारिद्रय ।

उ०—'वीरम' हरो वसू वड दाता, रेणव वरण मिटावण रेस । नवसहसो अधपत नेठयियो, दस सहसै वर सेवा देस ।
—राव लूणकरण री गीत

१० चाह, इच्छा ।

उ०—१ परिसदा सुण पाछी गई, वलिया क्रस्णलि नरेस । गज कुमार वैरागियो, लागी धरम नी रेस —जयवांणी

उ०—२ धरम करो भणि प्रांणिया, दे सतगुरु उपदेस । साधू स्रावक व्रत आदरो, राखो दया नी रेस । —जयवांणी

११ रहस्य, तात्विक ज्ञान ।

उ०—जीवा चेतो रे रुल्यो अनंतो काल, आद अनाद री प्रांणियो, जीवा चेतो रे । जीवा चेतो रे रह्यो अग्यांनी बाल, समकित रेस म जाणियो, जीवा चेतो रे । —जयवांणी

[अं.] १२ जाति ।

१३ घुड़दौड़ ।

वि.—किंचित, जरा ।

क्रि. वि. – लिए ।

रू भे.—रेसि,

मह;—रेसो

रेसकोरस, रेसकोस–सं. पु. [अं. रेसकोर्स] १ धावन पथ ।

२ अश्वधावन भूमि, घुड़दौड़ का मैदान ।

उ० – रात दिवस के रेसकोस में, वाजी लाव बणावै । जाकी पार कोई हूय जावै, वेनिंग पोस्ट वतावै । —ऊ. का.

रेसण–वि.—१ मारने वाला, सहार करने वाला ।

उ० –१ तारण जण दसरथ तण, रेसण देत सरीसा रांमण । वहनांमी खाटण विरद, थिर करि लंक वभीखण थापण ।
—पि. प्र.

२ पराजित करने वाला, पराजय देने वाला ।

रेसणो, रेसबो–क्रि. स.—१ पराजित करना, हराना ।

उ०—१ अलीमन सूर रो वंस कीधो असत्त, रेस टीपू विजै अंवट रुड़िया । लाट जनरल जरनैळ करनेळ लख, जाट रै किलै जमजाळ जुड़िया ।
—कविराजा वांकीदास

उ०—२ विघांसइ रेसइ राकस वंस, कीयो दह कंध कीयो तै कंस । —पी. ग्रं.

२ मारना, संहार करना ।

उ०—१ फरसिरांम आउध अहियो फरसु अधिक रेसिया खत्री लागो अरसु । —पि. प्र.

उ०—२ कडा जेम सुजड़ां मजै भड़ा अवधी कियां, नियां गुर धांण जोधांण लाजा । रेसवा त्रिपुर जैसिंघ ऊपर रचै, रूप महेस अवतेस राजा । —कीरतदांन वारहठ

३ मिटाना, नाश करना ।

उ०—किसन किसन कहि किसन, हंस वड़ पाप हरै सै । किसन किसन कहि किसन, किसन कल्यांण करै सै । किसन कहंता किसन, देवळ दरसण देसै । किसन किसन क्रिपाळ, रांम पातिग नै रेसै ।
—पी. ग्रं.

रेसणहार, हारो (हारी), रेसणियो—वि० ।

रेसिओड़ो, रेसियोड़ो, रेस्योड़ो—भू० का० कृ० ।

रेसीजणो, रेसीजबो - कर्म वा० ।

रेसम–सं. पु. [फा. रेशम] १ एक प्रकार का बारीक, चमकीला, चिकना और मुलायम दृढ़ तंतु या रेशा विशेष जिससे कपड़े बुने जाते हैं ।

उ०—१ रेसम री जात कवळा केस । गुलाबी नख । —फुलवाड़ी

वि. वि.—यह ततु या रेशा विशेष प्रकार के कीड़ों के कोश पर के रोओं से तैयार होता है । रेशम के कीड़े पल्लू कहे जाते हैं और कई प्रकार के होते है जैसे—विलायती, मदरासी या कनाड़ी, चीनी, अराकानी आसामी इत्यादि । चीनी, बूलू और बड़े पिल्लू का रेशम अत्युत्तम होता है । ये कीड़े तितली की जाति के होते है । इनके कई काया कल्प होते हैं । अंडा फूट जाने पर ये वड़े पिल्लू के आकार के होते और रेंगते हैं । इस अवस्था में ये पत्तियां बहुत खाते हैं । शहतूत की पत्ती इन को बहुत प्रिय और रुचिकर होती हैं । इसे ये बड़े चाव से खाते हैं । ये पिल्लू बढ़ कर कोश बनाकर उसके भीतर हो जाते हैं । इस समय ये कोया कहलाते हैं । कोश के भीतर ही यह कीड़ा व तंतु निकलता है जिसे रेशम कहते हैं । कोश के भीतर रहने का समय जब पूरा हो जाता है तब कीडा रेसम को काटता हुआ निकल कर उड़ जाता है परन्तु कीड़ों को पालने वाले इतने दक्ष होते हैं कि कोयों को गर्म पानी में डाल कर मार डालते हैं और तत्पश्चात ऊपर का रेशम उतार कर ले लेते हैं ।

२ उपर्युक्त रेशम के बने वस्त्र डोरा, रस्सी आदि ।

उ०—१ गाजै घण सुण गावणी, प्याला भर मद पाव । झूलै रेसम रंग झड़, झोटा देर झुलाव । —वां. दा.

उ०—२ झत सोभत रेसम लूंब करै, धुरवा किर फूलिय संझ धरै । —रा. रू.

उ०—३ आसे पासे लालां जड़ाई बिच में रेसम रा फूंदा म्हारो गोर बंद लूंबाळो । —लो. गी.

पर्याय—कोसय, कोसा, पाट ।
३ तलवार, खडग (ना. डिं. को.)

रेसमियौ—सं. पु.—१ रोगियों की रुग्णावस्था में बाजरी के आटे का आंच पर पका कर दिया जाने वाला पेय पदार्थ ।
२ एक प्रकार का घोड़ा विशेष ।
३ शीत कालीन तीक्ष्ण वायु ।
वि.—१ रेशम का; रेशम संबंधी ।
२ देखो 'रेसम' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—होटड़ला मूमल रा रेसमिया रै तार ज्यूं । हो जी रे दांतड़ला उजळ दंती रा दाड़म बीज ज्यूं । —लो. गी.

रेसमी—वि. [फा. रेशम+रा. प्र. ई.] १ रेशम का बना हुआ.
उ०—धोळा कड़प सूं काळा कराया अर ओपता रेसमी कपड़ा सिलाया । —दसदोख
२ रेसम के समान चिकना या मुलायम (सूत, डोरा आदि)
उ०—खूबसूरत पसम पीठ सूरत खतम, रेसमी गलफ साखत रचीतौ । अंग पसम सुलफ आघौ कियां ऊठियौ, चख कुलफ खूठियां मलफ चीतौ । —महादांन महडू
३ कोमल, मुलायम ।
उ०—छोटी पण तीखौ नाक । छोटी छोटी फुरणियां । अबूझ अर निरमळ नैंण । छोटी रेसमी मुफाड़ । छोटा २ हाथ अर छोटा छोटा पगल्या । —फुलवाड़ी

रेसमीघाट—सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।
उ०—आंगणउ ते तु नील रतन तणउ, ऊपरलइ मालि, मध्यांन्ह कालि, केलि पत्रइं छाया, इस्या मंडप नीपाया तलइ मांड्या पाट, ऊपरि पाथरचा रेसमी घाट । —व. स.

रेसमी भइरव—सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।
उ०—अतलस, खासु कमसु भइरव, मिरचु भइरव, रेसमी भइरव । —व. स.

रेसवाड़ौ—सं. पु. [स. रिस्र+हिंसायाम्=रेसवाट] मौसमी बुखार ।

रेसि—देखो 'रेस' (रू. भे.)
उ०—१ सुणि आगम नगर सऊजम, रुखमिणि कसन वधावण रेसि । लहरिउं लियै जांणि लहरीरव, राका दिन दरसण राकेस । —वेलि
उ०—२ इळ राइ करन वारउ कि इंद, गुणियणां ग्रिहै बाधा गईद । ताकुआं रेसि सोभाग तत्ति । हिंदवइ राइ दीन्हा हसत्ति । —र. ज. सी.
उ०—३ चांदलां करि चांद्रियउ, मोरु वयख सुणी जि । एक देसु माहरु, वालभ रेसि कहै जि । —प्राचीन फागु-संग्रह

रेसौ—सं. पु. [फा. रेशः] १ पौधों की छाल आदि से निकलने वाला महीन तंतु या धागा ।
२ वह तंतु जिससे शरीर का मांस तथा कुछ और अंग बनते हैं ।
३ बुनावट के रूप में कोई ऐसा तत्व जिसके ततु या सूत पृथक किये जाते हों ।
४ शरीरस्थ नश ।
५ अंश ।
उ०—बापजी कांई अरज करूं, म्हारौ बाप साव इज भोळौ अर अबूझ लोग उणनै अधवावळौ इज समझै उणरौ थोड़ौ घणौ रेसो म्हा में आग्यौ । —फुलवाड़ी
६ हिस्सा, भाग ।
उ०—वातां सुण सुण नै लोगां री अकल चकरीजगी । अैड़ी अकल रौ हजारवौ रेसौ ई हाथ आय जावै तौ निहाल व्है जावै । —फुलवाड़ी
७ सूक्ष्मातिसूक्ष्म अंश ।
उ०—बापड़ा नाकुछ आखरां री घसकी ई कांई केवै मासी भांण-जियां रै उण आणंद रौ रेसौ ई परगट कर सकै । वांणी अर आखरां सूं परै री आणंद हो वौ । —फुलवाड़ी
८ लहर, प्रवाह ।
९ देखो 'रेस' (११) (मह. रू. भे.)
उ०—नेम भणी परणायवारै, मांगै क्रसण नरेसौ । 'उग्रसेण' राय इम कहैरै, एक सुणौ हमारी रेसौ । —जयवांणी

रेसियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ पराजित किया हुआ, हराया हुआ. २ मारा हुआ, संहार किया हुआ. ३ मिटाया हुआ. ४ कोप किया हुआ. क्रोध किया हुआ ।
(स्त्री रेसियोडी)

रेह—सं. स्त्री. [सं. रेखा] १ कपट, धोखा ।
उ०—ढाल वखांणी तेरमी, विनयचंद्र तजि रेह है ।
ते तिम हिज करि जांणज्यौ, मत आंणौ सदेह है । —वि. कु.
२ सन्देह, शक ।
उ०—ते छह भगवई अंगमां, किम मन आंणइ रेह अग्यांनी । एक सदय गुण तूं करइ, सूत्र वदुल नउ लोप अग्यांनी । —वि. कु.
३ कलक, दाग ।
उ०—कमळ विण नांमियां दंडवत विन किया, वज़ाड़ै प्रथी सिर सुजस वाजा । विरद विण छोडिया कुजस विण बुलायां, रेह विण लगायां गयौ राजा । —महाराजा करणसिंह रौ गीत
४ धूलि; कण ।
उ०—खुरिसांण खड्ंग ऊड़ी खुरेह, रवि छायउ अंबर रजी रेह । चमराळां पाग्रै ऊडि चींव, गूंदळइ व्रिखव मूझइ गईंव । —रा. ज. सी.
५ परिखा, खाई ।
उ०—चुभै चित्त नासां मुड़ै वक्र घाडा, गयां संकड़ै पंथ छेकै छ

गाडा। कबी लेह जे राचिया रेह कूदै, सजै ढांण लंबा अगां मांण सूदै। —वं. भा.

वि.—६ किंचित, लेशमात्र, थोड़ा।

उ०—घाट सुरंगो गोरियां, आदू कहयत एह। पदमणियां हमरोट व्है, राख म संसो रेह। —बां. दा.

७ देखो—'रेख' (रू. भे.)

उ०—१ कुसल ब्राह्मण दूहु कहइ छइ, निसत्व निरदय निस्प, घूरत्त मांहि रेह। अबला नारी तेहनइ, नलइ दीघु छेह। —नळदवदंती रास

उ०—२ ते भणी पुत्र छै ताहराजी, सुलसा रा नहीं एह। मुनि भासित अखा नही जी, न टलै करमनी रेह। —जयवांणी

उ०—३ बावहिया निल पंखिया, मगरि ज काळी रेह। मति पावस सुणि विरहणी, तळफि तळफि जिउ देह। —ढो. मा.

उ०—४ घन घटा गरजित छटा तरजित भयै जरजित गेह। टव टवकि टवकत झवकि झवकत, विचि विचि बीज की रेह। —वि. कु.

उ०—५ भूंडण भूंडो नह जणै, ना पिह लोपै रेह। तिण सूं ठहर तूं, दंद मचावै गेह। —डाटाळा सूर री वात

रू. भे.—रेहा।

रेहड़ली-सं. स्त्री.—धूल।

उ०—फंदा में मोडां रै फंसगो रळगो रेहड़ली। भेक धरंता कीदी भूंडी, कुवचां केहड़ली। —ऊ. का.

रेहण-सं. पु.—कीट, मेल।

उ०—प्रगट कहै जैमल पतो, अचळ अचळ कर अग। कायर रेहण कढ गयां, दीपै कनक दुरग। —वां. दा.

रेहणो, रेहबो-क्रि. अ.—शोभित होना।

उ०—लवणिम रसभर कूवडिय, जसु नाहि य रेहइ। मयणराय किर विजयखंभ जसु ऊरू सोहइ। —जिनपदम सूरि

रेहणहार, हारो (हारी), रेहणियो—वि०।

रेहिओड़ो, रेहियोड़ो, रेह्योड़ो—भू० का० कृ०।

रेहीजणो, रेहीजबो—भाव वा०।

रेहळणो, रेहळबो-क्रि. स.—पराजित करना, हराना।

उ०—१ मेवाड़ां जोधइ मळिय माण, रेहळिय खेति कूंभेण रांण सळखहर वळिय सुरितांणसल्ल, मेवाड़ गाहि ऊग्राहि मल्ल। —रा. ज. सी.

उ०—२ सीवळ संधारै बोल उतारै, मेलै दळ कळि मूळ। खागै खूमांणां रेहळि रांणा, निज थांणा नाडूळ। —गु. रू. बं.

उ०—३ धजवड़ पांण लियां खत्र घोड़े, रेहळिया मोहिल राठोड़े। मेवासी राव जोधै मिळिया, दोमज भाज मिरी सिर दळिया। —नैणसी

रेहळणहार, हारो (हारी), रेहळणियो—वि०।

रेहळिओड़ो, रेहळियोड़ो, रेहळ्योड़ो—भू० का० कृ०।

रेहळीजणो, रेहळीजबो—कर्म वा०।

रेहळियोड़ो-भू. का. कृ.—पराजित किया हुआ, हराया हुआ। (स्त्री. रेहळियोड़ी)

रेहा—१ देखो 'रेखा' (रू. भे.)

२ देखो 'रेह' (रू. भे.)

उ०—१ कहिया रेहा कूड़ नह, वेहा वायक अह। जे जेहा जेहा नहीं त्यागी केहा तेह। —बां. दा.

उ०—२ जीहां हरि रेहा लागी ज्यांह, त्रिलोक नहीं भय तोकां त्यांह। भणै गुण तूझ तणा भगवांन, जावै गळि त्यांह तणा गैमांन। —ह. र.

३ देखो—'रेख' (रू. भे.)

उ०—वेहा लिग मोटा वरण, रेहा हीन रहत। पात अछेहा धन लहै, जेहा धन जहवत। —बां. दा.

रेहिणी—देखो—'रोहिणी' (रू. भे.)

उ०—तस्य मणाहारि ववहारि चूडांमणि. निवसांण माहु वर 'रंदपाळो'। 'वारला' गेहिणी तासु गुण रेहिणी, रमणि गुणि दिप्पए जासु भालो। —मेरुनंदन

रैं—देखो—'रै' (रू. भे.)

उ०—अला पहुवी रैं ऊपरा चोक पूरो, अला चीणमण चीण रा महल चूरो। अला महा सैतांन तोफांन मोडै, अला त्रिधारै खड़ग सां दईत तोड़ै। —पी. ग्रं.

रेंकणो, रेंकबो-क्रि. अ.—गधे का बोलना।

रेंकणहार, हारो (हारी), रेंकणियो—वि.।

रेंकिओड़ो रेंकियोड़ो, रेंक्योड़ो—भू. का. कृ.।

रेंकीजणो, रेंकीजबो—भाव वा.।

रेंकणो रेंकबो—रू. भे.।

रेंकियोड़ो-भू. का. कृ.—गधे का बोला हुआ, आवाज किया हुआ। (स्त्री. रेंकियोड़ी)

रेंग-सं. स्त्री.—रेंगने की क्रिया या भाव।

रेंगणो, रेंगबो-क्रि. अ.—१ भूमि के साथ पेट स्पर्श करते हुए खिसकते हुए या सरकते हुए सरीसृप जानवरों का चलना, गमन करना या आगे बढना।

२ भूमि के साथ पेट सटा कर हाथों पैरों के बल मनुष्यों या बच्चों का चलना या आगे बढ़ना।

रेंगणहार, हारो (हारी), रेंगणियो—वि.।

रेंगिओड़ो, रेंगियोड़ो, रेंग्योड़ो—भू. का. कृ.।

रेंगीजणो, रेंगीजबो—भाव वा.।

रेंगणो, रेंगबो—रू. भे.।

रँगियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ भूमि के साथ पेट स्पर्श करते हुए खिसकते या सरकते हुए सरीसृप जानवर का चला हुआ, गमन किया हुआ या आगे बढ़ा हुआ. २ भूमि के साथ पेट सटा कर हाथों पैरों के बल मनुष्य या बच्चा चला हुआ या आगे बढ़ा हुआ ।
(स्त्री. रँगियोड़ी)

रँट—देखो—'अरट' (रू. भे.)

रँडियौ—देखो—'रँडौ' (अल्पा; रू. भे.)

रँडी–सं. स्त्री.—अजमेर की तरफ पायी जाने वाली एक प्रकार की नस्ल विशेष की गाय जिसके सींग नीचे की ओर झुके होते हैं।

रँडौ–सं. पु. [स्त्री. रँडी] वह बैल जिसके सींग नीचे की तरफ झुके हुए होते हैं।

रँण—देखो—'रयण' (रू. भे.)
उ०—१ विरह खट्टकौ रँण दिन, हरीया सालै मोहि । का तुझि मिळीया भाजिसी, का मुझि मिळीयां तोहि । —अनुभववांणी
उ०—२ माया वादळ विजळी मारै चमक चमंक । हरीया हरिजन ऊवरै, राता रँण समंक । —अनुभववांणी

रँणकी–सं. पु.—राजस्थानी साहित्य में एक छंद विशेष जिसमें प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएं होती हैं तथा क्रमशः ६,६, ६ और ८ मात्राओं पर यति होती हैं। छंद के चार चरणों में कुल १२८ मात्राएं होती हैं।

रँणायर—देखो—'रत्नाकर' (रू. भे.)
उ०—सांमंद्र हु वुह सुजळ सायर, रँणसुत जळ नध रँणायर। सुड़लै गोड़ीरव सायर, महण घण महरांण ।
—महाराजा स्त्री गजसींवजी रौ गीत

रँणू—देखो—'रेणु' (रू. भे.)
उ०—वासप नैणांसूं निकळै भूख वाफां, रँणू एड़ी पर फांटोड़ी राफां, धुर धुर धूजता धुड़तां थाकोड़ा, पीळा पड़ियोड़ा पिळिया पांकोड़ा । —ऊ. का.

रँणौ, रँबौ—देखो 'रहणौ, रहबौ' (रू. भे.)
उ०—१ सायबा म्हांनूं थांरी लारै लै जावौला वो, रसराज संग रँण दी आरजू । ऐस सुहांणै री दिखावौ लावौ सायबा ।
—रसीले राज रौ गीत
उ०—२ घर हाळा भाई वेटा मन्नै सदा कँवता रँता-वदरीजी जावौ, अड़सठ तीरथ न्हावौ । धरम पुन्न करौ, माळा मिणियौ फेरौ
—दसदोख
उ०—३ वेटा पोता न्यारा हुया, भाई भतीजां ऊजळा रांम रांम करचा । नौकरी छूटी अर गांव गरज टूटी । लोगां री मींट ठंडी नहीं रँयी । —दसदोख

रँवी–सं. स्त्री.—१ खरबूजे की काटी हुई पतली सी फांक ।

रँन—देखो—'रयण' (रू. भे.)
उ०—१ जनहरीया सत सवद मैं, सुरिल रँन दिय पोय। माया को डर को नही, रहौ निसंसै होय । —अनुभव वांणी
उ०—२ जिन औ तोकुं धन दीया, तिन कै लेखै लाय । माया सपनौ रँन कौ, हरीया जाय विलाय । —अनुभववांणी
उ०—३ सेझरीयां सुन्य सूंदरी, रमै रांम दिन रँन । उर परमांनंद उपजै, अब औरन कौ दुख दँन । —अनुभववांणी

रँवणौ, रँवबौ—देखो—'रहणौ, रहबौ' (रू. भे.)
उ०—ठाकर भोपाळ सिंघजी, गांव रा भोगता अर जमीदार है । इयां री घरांणौ वडो मालदार रँवतौ आयौ है । —दसदोख

रँवत—देखो—'रेवंत' (रू. भे.)
उ०—१ इक धारण तौ जिम चित आवै, पूजै भेख जिको वर पावै। सुणि न्रप करै प्रणांम सकाजा, रँवत चढि आए जुधि राजा ।
—सू. प्र.
उ०—२ सुणि खबर सभै दळवळ सकाज़, रँवत सिणगारै गजां राज । जगमग करि दरगह नग जहूर, पुर करै चित्र ओछाड़ पूर ।
—सू. प्र.

रँहट—देखो—'अरट' (रू. भे.)

रैं–स. पु. [सं.] १ धन, द्रव्य । (नां. मा, ह. नां. मा.)
रू. भे.—रा ।
२ राजा, न्रप ।
३ सुखघर ।
४ स्यांम रंग । (एका.)
५ संतोष, धैर्य ।
अव्य०—के ।
उ०—१ फतियौ फिरिसै फौज मां, भुंडा रैं उरि भाहि । डोहा करिसै दीनियौ, मुंसै रैं घर मांहि । —पी. ग्रं.
उ०—२ कोई दूथणी री जायौ औ न्याव सळटावणियौ लावौ ई नीं । हचां हचां पाधरा राजाजी रैं गोडै वहीर व्हैगा । —फुलवाड़ी
रू. भे. —रइ, रें

रैंक–सं. पु. [अं.] पुस्तकें आदि रखने के लिए खांचे का बना हुआ ढांचा ।

रैंकळियौ—देखो—'रैंकळौ' (अल्पा; रू. भे.)

रैंकळौ–सं. पु. [सं. रेखा गतो] १ वह छकड़ा जिस पर बहुत सी बंदूकें लगी होती हैं।
२ एक प्रकार की छोटी गाड़ी जो सवारी के काम आती है । यह प्रायः बैलों द्वारा खींची जाती है और किसी किसी पर मंडप भी बना होता है ।
३ एक प्रकार की तोप जो बैलों, या घोड़ों द्वारा खींची जाती है ।
रू. भे.—रहकळौ, रेकळौ, रैंखळौ । अल्पा—रैंकळियौ, रैंखळियौ

रैंकारौ–सं. पु.—(ओछे या नीच वचन) 'अरे' या 'तूं' कहकर अशिष्टता

पूर्वक संवोधन करने की क्रिया या भाव।

उ०—१ वांका विखफळ नीपजै, ज्यौं विस तर री डाळ यूं दुरजण री जीभड़ी, रैंकारो के गाळ। —वां. दा.

उ०—२ जीकारी अम्रत ज्यूं ही, भावै जग नूं भाळ। है रैंकारो आक पय, गरळ वरावर गाळ। —वां. दा.

रू. भे.—रिकारो, रेकारो

रैंकेट-सं. पु. [अं.] १ एक प्रकार का डंडा जिसका आगे का भाग या हिस्सा प्रायः वर्त्तुलाकार होता है। यह टैनिस के खेल में गेंद मारने के काम आता है।

२ वैज्ञानिक परिक्षणों हेतु आकाश में वहुत ऊंचाई तक जा सकने वाला आकाश वाण के आकार का एक वहुत वड़ा यन्त्र।

रू. भे.—राकेट

रैंखळियौ—देखो—'रैंकळौ' (अल्पा., रू. भे.)

रैंखळौ—देखो—'रैंकळौ' (रू. भे.)

रैंगर—देखो—'रेगर' (रू. भे.) (मा. म.)

रैंज-सं. पु.—वह खेत जिसमें वर्षा के दिनों में वर्षाती पानी भर जाता हो और उसमें रवी की फसल अच्छी होती हो।

उ०—वांणीया रजपूत वांमण वसै। रैंज रा खेत २० सेंवज, कोहर ८ मीठा। —नैणसी

रैंडू—देखो—'रहड़' (रू. भे.)

रैंडौ-स. पु.—वड़ा पत्थर। (शेखावाटी)

रैंण-सं. पु. —१ राज्य।

उ०—१ सूर जगै सुभ समय, भूम अन जुमै सुभावां। रैंण सभाळै राव, मिटै अटकाव वधावां। —रा. रू.

उ०—२ गाहिया पिसण घणा वैर अऊगाहिया, माल गमियौ छिलै करन हर मौड़। वडो राव ओपियो वाळियो वीकपुर, रैंण रख-वाळ कलियांण राठौड़। —नगराज हमीर सूजावत रो गीत

२ देखो 'रयण' (रू. भे.)

उ०—१ 'सेख' तजो दळ समर, रैंण वंट कहिक रखावो। तजै विद्ध कुळ तणो, मिळो चित खंत मिटावो। —सू प्र.

उ०—२ चकवा चाकर चोर, रैंण विछोवा राखिया। अव मिळ जावै ओर, (तो) जतनां राखूं जेठवा। —जेठवा

उ०—३ पहिलइ पोहरै रैंण कै, दिवला अंवर डूल। घण कसतूरी हुइ रही, प्रिव चंपा रो फूल। —ढो. मा.

३ देखो 'रेणु' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ विस्वामित्र रै ज्याग सोभा वधारी, त्रिया रैंण पै हूंत गोतम्म तारी। पति स्राप हूं देह पाई पखांणी, जिका दिव्य देहा हुई सव्व जांणी। —सू. प्र.

उ०—२ रचै लार गुंजार रोलव राजी, भगांणां भड़ां रोध औ लंव भाजी। अरांनां हुसै हूगरो रैंण आंटै, एही जै करां ओसरां गैण आंटै। —वं. भा.

उ०—३ आलम मोरा औगुणां साहिव तुम्ह गुणांह। बूंद विरखा रैंण कण, थाघ न लब्भो त्यांह। —ह. र.

४ देखो 'रहणी' (रू. भे.)

रैंणका—देखो 'रेणुका' (रू. भे.)

उ०—हुरी मेल पानग पानंग हाथै, नको नांग गोवै लियो हुक साथै। मदोमत्त हाथी हुवै हौण मर्दै, जिसो रैंणका पुत्र दीसत जर्दै। —सू. प्र.

रैंणपत, रैंणपति, रैंणपती—देखो 'रयणपति' (रू. भे.)

रैंणय-सं. पु.—देखो 'रयण' (रू. भे.)

उ०—हरि गयण रयं तांण हुरन याथि करय येणियं। पानै मनाळो कुंभपाळो, रत्नपाळो रैंणय। —रा. रू.

२ देखो 'रण' (रू. भे.)

रैंणयर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.) (प. मा.)

रैंणा-सं. स्त्री.—१ पृथ्वी, भूमि।

उ०—१ वसुधा खोणी सुरंगी, सुरिग्गां घनळ वित्थुरी रैंणा। पाद्ु चपळ महावो, हुड रत्तो हुड परण्रत्तह। —गु. रू. वं.

उ०—२ मतो गुंभ कीधो जठै रांण माता, भणै वात वक्नीरणां तेम भ्राता। रैंणा लंक धारै किमूं गोटि राजा, कपी मीत छाड़ो करौ एह काजा। —सू. प्र.

२ रत्न।

उ०—मिळै छत्र छत्रां घणै मोड़ माथै, रैंणा हीर मोती भड़े रूप राचै। ओपै जोति नो लाग हूंता अपारा तिकै जांण साजोत रै भोमि तारा। —सू. प्र.

[सं. रज] ३ धूलि, कण, वालू, रेत।

उ०—१ कुटंवां सहेता हुती नांव कोरं, चळै पाय रैंणा तरी रघु-वीरं। मिथल्लेसरं ज्याग आए समीपं, दुवा भूप आए मिळै नात दीप। —सू. प्र.

उ०—२ वहंता तुरां पाय पायाळ वाया, खिळै रज्ज रैंणा उडै वोम छाया। चलंता इसा मोर तीरं चलावै, पंखी जीवता भ्रिग्ग जांणं न पावै। —र. वचनिका

[सं. रजनी] रात, रात्रि।

रैंणाइर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—१ इंद्र छमा किर अगर, निडर राठौड़ निभै नर। वह रैंणा-इर पसर, धणी नवकोट छिहतर। —गु. रू. वं.

उ०—२ भूमंडळ भैकंपै, जांण रैंणाइर फट्टौ। प्रळै काळ कळि-पंत, प्रथी उतपात प्रगट्टौ। —गु. रू. वं.

रैंणादे—देखो 'रांणादे' (रू. भे.)

उ०—पीळी पीळी कांई करो अे, पीळी आ चिणां की री दाळ।

पीळौ सूरजजी रौ घोड़लौ अे, पीळौ बहू रैणादे रौ चीर।
—लो. गी.

रैणापत, रैणापति, रैणापती—सं. पु.—देखो 'रयणपत' (रू. भे.)

उ०—रैणापती लखमसी रांणौ, जगमालम जेसी घण जांण।
भगवतसीह भांणंगसी अणभंग, प्रथीसिंग गरमेर प्रमांण।
—महादांन महड़ू

रैणायर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—१ गाहट्टे गज दळां, कीध कादम्म सरोवर। नह खूटा जळ नयां, जहां संगम रैणायर।
—गु. रू. बं.

उ०—२ नमौ जदुराज हळद्धर-जोड़, रैणायर-रूप नमौ रणछोड़। नमौ सिसुपाळ मनावण संक, जरासंघ जीपण सेन उजंक।
—ह. र.

उ०—३ सवदी लग कोड़ अजाद रायसिंघ, गहवंत रैणायर वड गात। ऊपर लहर सवाई अपतै, छिलतै छातरिया अन छात।
—द. दा.

रैणावर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—कण मुकता धन कोस, भरियौ पण प्रापत विना। दीजै कांसूं दोस, रैणावर नै राजिया।
—किरपारांम

रैणावळि, रैणावळी—सं. स्त्री. [सं. रजनी] रात, रात्रि।

रैणि, रैणिका, रैणी—सं. स्त्री. [सं. रजनी] रात, रात्रि।

उ०—१ अनत घाट घट मांहि रैणि दिन घड़त है, कंचन हिरदा मांहि काच लै जड़त है।
—ह. पु. वां.

उ०—२ विडंगां खड सात्रव आय वगौ, निद्राळु अ नाहर नींद लगौ। दसमी दन जींदय दाव दियौ, अध रैणि रौ चांदोई आथमियौ।
—पा. प्र.

उ०—३ विलम न कीजै वीर रैणिका जांम है। हरि हां जन हरिदास निरमळ अंग अभंग अजब विसरांम है।
—ह. पु. वां.

उ०—४ पहर चारूं सहज वीता, भयौ मूळ गमाय। गयौ वासर रैणी आई, नर चल्यौ खोटा खाय।
—ह. पु. वां.

रैंणौ—देखो 'रहणौ' (रू. भे.)

उ०—जिंतरै अे नेडा जाय कहण लागिया जो ठाकुर कठै छै कीं रैंणौ राखता था। जै पाछा क्यौं वैठ रहिया सीधा मोहडां बात करा हा न।
—सुंदरदास भाटी विकूपुरी री वात

रैणीचर—सं. पु. [सं. रजनीचर] निशाचर, राक्षस।

वि.—१ रात को भक्षण करने वाला।

२ रात को विचरण करने वाला।

रैणीपत, रैणीपति, रैणीपती—देखो 'रयणपति' (रू. भे.)

उ०—मिळै मुनी महारुद्र, मिळै चंद्रांणण अच्छर। मिळै पंख आमंख, मिळै रैणीपति अम्मर।
—मा. वचनिका

रैंणौ, रैंबौ—देखो 'रहणौ, रहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सोचे हैं—जुवांन रै लारै सोक वण'र रैंणौ चोखौ, कदै ही तौ सोनै रौ सूरज ऊगै। पण बूढै रौ धणी वण'र रैंणौ खोटौ जमारौ धुखतौ ही जावै, बळै ही नहीं।
—दसदोख

उ०—२ गूंद सूंठ अर पींपळामोळ जिसा ओखदां में तौ बोतौ मारयां पड़चौ ही रैंणौ चाहीजै।
—दसदोख

रैत, रैति, रैती—१ देखो 'रय्यत' (रू. भे.)

उ०—१ पह सांभर लगि सामंद पाजा, रहसी दास दोय अनि राजा। कुळ पैंतीस सेव स्रब करसी, भूपति रैत जेम दड भरसी।
—सू. प्र.

उ०—२ और क्रिया सव रैत है, तीरथ वरत समेत। इस नगरी में रैत वसत है, गुरु दिलासा देत।
—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—३ राजा भयौ रैति रैति भई राजा, ऊपरि आसण किया। रीतु पलट्या रस फीका लागै, एकै रसि वसि जीया।
—ह. पु. वां.

उ०—४ किस पर पररेजह नांम कोय, है असपति इम हां रैति होय। अयसै कोई हैं उहं अनेक, को गजनी मांडव आदि केक।
—सू. प्र.

२ देखो 'रेत' (रू. भे.)

उ०—और क्रिया सव रैत है, तीरथ वरत समेत। इस नगरी में रैत वसत है, गुरु दिलासा देत।
—स्री हरिरांमजी महाराज

रैदारी—देखो 'राहदारी' (रू. भे.)

रैदास—सं. पु.—रामानन्दजी का चमार जाति का एक शिष्य जो प्रसिद्ध हरि भक्त था।

उ०—कहां लीन सुकदेव, कहां पीपा रैदास। दादू साचा क्यों छिपै, सकळ लोक परकास।
—दादूवांणी

रू. भे.—रविदास।

रैदासी—सं. पु.—रामानन्दजी के शिष्य रैदास द्वारा चलाये गये सम्प्रदाय के अनुयायी।

रैन, रैनि—देखो 'रयण' (रू. भे.)

उ०—दादू विरहनि कुरलै कूंज ज्यौं, निस दिन तळफत जाइ। रांम सनेही कारणै, रोवत रैनि विहाइ।
—दादूवांणी

रैवारण—सं. स्त्री.—रैवारी जाति की स्त्री।

उ०—अवै हळवै चालतौ दीठौ। पछै रैवारण ढोलाजी कनै आय नीसरी तद ढोलाजी नै पूछियौ राज कठा सूं पधारिया आगै कठै। पधारस्यौ।
—ढो. मा.

रैवारी—सं. पु. [स्त्री. रैवारण] भेड़, बकरियां, व ऊंट चराने का व्यवसाय करने वाली एक जाति विशेष या उक्त जाति का व्यक्ति।
(मा. म.)

उ०—१ किणै ई रैवारियां रै वाड़ां री सरण लीवी, किणै

ई भीलां रा झूंपा संभाल्या तौ कोई रा पग ठेठ खेतां री वाजरियां में जावता टिकिया । —रातवासौ

उ०—२ अवै ढोली वेदल थका हळवै हळवै चलीया जाय छै ईसै समै रा एक रेंवारी रेंवारण नै लीयां आवै छै । —ढो. मा.

उ०—३ मुलतांन रै मारग री धाड़ौ आवै सो रात-दिन असवार ओठी दोड़वौ करै । रेंवारियां रा दो सौ ऊठ इण हीज कांम ऊपर लागिया रहै छै । —सूरै खींवै कांधळौत री वात

रू. भे.—रइवारी, रवारी, रयवारी, राहवारी ।

अल्पा; —रव्वारौ ।

रेंबूद, रेंबूदयौ—वि.—१ भोला ढाला, भोला । (ढूंढाड़)

२ वह जिसे सूर्योदय और सूर्यास्त का कुछ भी इलम न हो ।

रहवूत ।

रें'म—देखो 'रहम' (रू. भे.)

उ० करणै री वातां फाजल वडै रें'म सूं सुणी । अजीज दिल सूं आपरी कोठड़ी में जगां दीनी अर धीरज वंधायौ । —दसदोख

रें'मत—देखो 'रहमत' (रू. भे.)

रें'म दिल—देखो 'रहमदिल' (रू. भे.)

रेंयत—देखो 'रय्यत' (रू. भे.)

उ०—१ ठाकरां खंखारो करतां थकां कैयो—हूं सेवरौ वांध'र चाल सूं जद लोग हंसाई हुसी । रेंयत कै जांणसी । —दसदोख

उ०—२ इण वास्तै रेंयत पण अदव न लोप सकसै । —नी. प्र.

उ०—३ दूजी सीयासत खलक छोटा नै रेंयत रीत री सौ पहली भांति तौ वाचै । —नी. प्र.

रेंयांण—सं. स्त्री.—वह स्थान जहां पर गांव के लोग बैठ कर एकत्रित होकर गप्प शप्प करते हैं और अफीम व गोष्ठी भी वहीं करते हैं, बैठक, अथाई ।

रू. भे.—रेयांण ।

रेंय्यत—देखो 'रय्यत' (रू. भे.)

रेंळ, रेंळी—सं. स्त्री.—ठंडी हवा या शीतल हवा का झौंका ।

उ०—१ नणद-भोजाई भीजां, अम्मा, चोड़ै चोघटै जी, इंदर राजा अम्मा मोरी, कोपियो ओ, ठंडी वी चालै रेंळ । —लो. गी.

उ०—२ चारा मिणतोड़ी सजनीं चितचावै, तारा गिणतोड़ी रजनीं वितवावै । ओभक ओळी में आवेस अळूझै, सीळी रेंळी से चीस-ळियां सूझै । —ऊ. का.

रू. भे.—रेंळौ ।

रेंळौ—सं. पु.—कलंक, दोष ।

२ देखो 'रेंळ' (रू. भे.)

रेंवंत—देखो 'रेवंत' (रू. भे.)

उ०—१ 'सूराउत' डावि छतीस सार, मलपियो मयंद गति गयंद मार । रेंवंत चंदि राठौड राव, चढ़ियौ परठि पागडै पाव । —गु. रू. बं.

उ०—२ झेलूं लोह अनेक झिलाऊं, अरुण होय मुजरा कजि आऊं । रेंवंत सहित होय रातंवर, करूं सलांम रंगियै किरमर । —सू. प्र.

रेंवणौ, रेंववौ—देखो 'रहणौ, रहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ एक जतन सत एह, कूकर कुगंध कुमांणसां । छेड़ न लीजै छेह, रेंवण दीजै राजिया । —किरपारांम

उ०—२ वौ चोर हमेसांकीं न कीं अैड़ी वेळ वातां करतौ ई रेंवतौ । —फुलवाड़ी

उ० –३ पीळिया रै रोगी इण चांद रौ नीं तौ पूरौ उजास । फगत अपां रा हुनर रै आडी देवै जैड़ी चांदणी । नीं व्हैतौ तौ कांई कमी रेंवती । —फुलवाड़ी

रेंवत—१ देखो 'रेंवंत' (रू. भे.)

२ देखो 'रेंवतक' (रू. भे.)

उ०—संख मुखिइं जिणि पूरिय भूरिय हरि मनि जंपु, टोल टल-कइ रेंवत दैयत मनि आकंपु । —जयसेखर सूरि

रेंवतक—सं. पु. [सं] गिरनार नामक पर्वत जो गुजरात प्रान्त में आधुनिक जूनागढ़ के पास है । इसी पर्वत पर अर्जुन ने बलराम की वहन सुभद्रा का हरण श्रीकृष्ण की अनुमति से, साधु वेष में, चित्रोत्सव में किया था ।

२ प्रियव्रत के पुत्र तथा पांचवें मन्वन्तर के मनु का नाम ।

रू. भे.—रेंवत ।

रेंवतीरमण, रेंवतीरवण—देखो 'रेवतीरमण' (रू. भे.)

उ०—रेंवतीरमण सुत रोहणी, निराळ'व निगरव नर । काळ घण पूत वंधव किसन, मयण रूप मदमांणगर । —पी. ग्रं.

रेंवांणद, रवांणदी—देखो 'रेवानदी' (रू. भे.)

उ०—माछां महरांण मोरां मेह मिणधरां मळै तर, गयंदां रेंवांण-नद पाळै वड गात्र । पाळै रित-राव रूंखां पावासर हंसां पाळै, पाळगां कल्यांण राव पाळै कवि पात्र । —आसौ वारहठ

रेंवा—देखो 'रेवा' (रू. भे.)

उ०—रेंवा तटि वींझरा, रांन रूपरा गिरंदां । केक मुळावार रा, केक पार रा समुंद्रां । —सू. प्र.

रेंवाड़ी—सं. स्त्री.—चांदी सोने के पत्तरों या झोल के लकड़ी का बना एक पालकीनुमा वाहन जिसमें प्रायः भगवान की सवारी निकला करती है ।

रू. भे.—रइवाड़ी, रयवाड़ी, रवाड़ी, रेवाड़ी ।

रेंवाड़ीएकादसी—सं. स्त्री. [राज. रेंवाड़ी+सं. एकादशी] भाद्रपद शुक्ल पक्ष की एकादशी जिस दिन भगवान को सिंहासनारूढ़ करके वाद्य नगाड़ों के साथ जलाशय पर ले जाया जाता है ।

रू. भे.—रेवाड़ी-एकादसी ।

रंवाळ-सं. पु.—१ जागीरदार द्वारा खलिहान में अपना हिस्सा लेने के वाद किसान के लिए छोड़े हुए अनाज की राशि।
२ देखो 'रहवाळ' (रू. भे.)

रंवास, रंवासौ—देखो 'रहवास' (रू. भे.)
उ०—फाकी टांगां टिरै, कातरी तारै कांचळ। चर चरियां री चांद, फिड़कलां फवतो हांचळ। टीडी री मुदांम, जतन चिड़कोल्या चोळी। लटां सूंट रंवास, घास फूंसा री झोळी। —दसदेव
उ०—२ मोकळी मांण पांवती, घणौ आदर दिरांवती, जद ही तौ बीकांणौ जिसौ वास छोड'र, काळै कोसां कुळ गांव री रंवास मंजूर करची ही। —दसदोख
उ०—३ विण घांघळ खारी विखम, कोळू रै रंवास। गिर री धरती नै गयो, आणंद हुए उदास। —पा. प्र.
उ०—४ सीस्यौं कोट रंवासौ, खंडेलौ तौ छुडाया। बारा गांव स्यांमां नै, बताया सो रहाया। —शि. व.

रंहड़, रंहड़ू, रंहडू—देखो 'रहडू' (रू. भे.)

रंहणौ, रहवौ—रहणौ, रहवौ' (रू. भे.)
उ०—१ भांणजा हुजदारां कह्यौ—जी, थे ठकुराई करौ। पण म्हांनूं कहो नांहीं। सावास, जु उतरियै पटै थांनै गांम मांहै रंहण देवां छां। —नैणसी

रंहळ-सं. स्त्री.—१ शीतल वायु प्रवाह।
२ देखो 'रहळ' (रू. भे.)

रों-सं. पु.—एक प्रकार का घास विशेष।

रोंख—देखो 'रूंख' (रू. भे.)
उ०—म्हारै देस में बाग घणां छै अर बागां में रोंख घणा छै। —नी. प्र.

रोंखड़ो—देखो 'रूंख' (अल्पा; रू भे.)
उ०—मोटा पुरुसां कही छै सरम धरम रै रोंखड़ा री डाळी छै। —नी. प्र.

रो-सं. पु.—१ उदर, पेट. २ बाल, रोमावली. ३ ऋषि, मुनि ४ बिमारी, रुग्णता. ५ त्रसना। (एका.)
६ देखो 'रौ' (रू. भे.)
उ०—१ काळिका तुं हिज कुंवारी काया, मनछा पारवती महमाई। सावतरी सीता सुर सांमणि, साधूडां रो हुवै सिहाई। —पी. ग्र
उ०—२ सूपनखा रो स्रमण, नाक वाढियो निभै नरि। निमो अकळि रुघनाथ, अनंत पंचवटी ऊपरि। —पी. ग्रं.

रोअणौ, रोअवौ—देखो 'रोवणौ, रोववौ' (रू. भे.)
उ०—रोअती रमणि भीमि निवारी, मूं दिखाडि पुणि जीणइ तूं मारी। काढि लोचन करी अणीयाळां, आंणीजै पिसुन अरजनि साळा। —सालिसूरि

रोआवणौ, रोआववौ—देखो 'रोवाणौ, रोवावौ' (रू. भे.)
उ०—एक नवि रहइ पुहर नइ घडी, एक आळोटइ आडी पडी। थ्यु विखवाद पांन नइ फूलि, एक रोआवि मुद्गि मूलि। —कां. दे. प्र.

रोआवियोडौ—देखो 'रोवायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रोआवियोड़ी)

रोइणी—देखो 'रोहिणी' (रू. भे.)

रोई—देखो 'रोही' (रू. भे.)
उ०—करड़ै मचकूर चलै कव चौभौ, जात मुरार हजूर जठै। रथवासण भूर रयौ विच रोई, तूट थयौ महमूर तठै। —भगतमाळ

रोईड़ौ—देखो 'रोहिड़ौ' (रू. भे.)

रोईतास—देखो 'रोहितास' (रू. भे.)

रोक-सं. स्त्री.—१ रुकावट डालने की क्रिया या भाव।
२ रुकावट डालने वाली वात, वस्तु या तत्व।
३ निषेध, मनाही।
४ प्रतिवन्ध।
५ कैद।
उ०—तरै कह्यौ "इणै म्हारी वूढै वारै इजत पाड़ी मोनूं रोक मांहै कियौ। —नैणसी
६ देखो 'रोकड़' (रू. भे.)
उ०—१ कीधा अजन कमंध री, हाथी निजर तुरंग। हीर जवाहर रोक रिध, भूखण वसण सुरंग। —रा. रू.
उ०—२ लाटौ करण कांमदार आवौ तरै आटौ, घी, दांणौ लागै सु लेसी। रोक लेण कुं न पावै। —नैणसी
उ०—३ तनै रोक रुपया देस्यूं, पीळौ द्यूं तेरी मांय। तेरी रै बहुवड़ ने देस्यू जाळी की कढवाय। —लो. गी.
रू. भे.—रोकण।

रोकड़-सं. स्त्री. [व. व. रोकड़ा] १ वह रकम जिसमें से आय-व्यय होता है, नकद रुपया।
उ०—१ दिन दिन लेखण हाथ, म्हारी सुंदर गोरी रे। सांजड़ली पडी रै, रोकड़ सारता ही राज। —लो. गी.
उ०—२ तीन लक्ष द्रव रोकड़ा, चचळ उच्च पच्चीस। निपट विनै धारी निजर, त्रपति निवारी रीस। —रा. रू.
उ०—३ रीछ लै तमाखू, दांम दै रोकड़ा। हैकड भूंडा लगै, हाथ में होकड़ा। —ऊ. का.
२ मूल-धन, पूंजी।
३ नकद रुपये देकर किया जाने वाला सौदा, व्यवहार, क्रय-विक्रय।
४ नकदी सौदों का लेखा जोखा रखने की वही, रोकड़ वही।
५ धन, सम्पत्ति।
—रू. भे.—रोक, रोकड़ी, रोकड़ौ।

रोकड़वही–सं. स्त्री.—नकद रुपये के लेन देन का हिसाब लिखने की वही।

रोकड़वाकी–सं. स्त्री.—किसी निश्चित समय पर आय को जोड़ कर और उसमें से व्यय घटाने के उपरान्त हाथ में वची रहने वाली रोकड़ या नकद रुपया।

रोकड़विक्री–सं. स्त्री.—नकद रुपया लेकर की गई विक्री।

रोकड़भंडार–सं. पु.—राज्य का साधारण खजाना।

रोकड़भंडारी–सं. पु.—खजानची।

रोकड़ियो–स. पु.—नकद रुपये रखने वाला, खजांची।

उ०—कमठांणां माथै मुनीम-रोकड़िया छोडै अर फूलचंदजी आप दिसावर कांनी झांकै है। नांमून रा रूंख ओप रैया है —दसदोख

रोकड़ी—देखो 'रोकड़, (रू. भे.)

उ०—१ पांच सौ रुपया **रोकड़ी**, बीस मण मिठाई मुत्सद्दियां हाथ डेरै मेल्ही। —गोपाळदास गौड़ री वारता

उ०—२ वैरै गूंझै में झेवरियौ लाडू, वैरी पागड़ी में **रोकड़ी** रुपटियौ, होळी आई ए। —लो. गी.

रोकड़ो (वहु व.–रोकड़ा) देखो 'रोकड़' (रू. भे.)

उ०—१ जां वैठेला राजकंवार करौ ना भुवा वाई आरती। आरतियां में रुपयौ **रोकड़ौ**, और मंगाओ वाला चूनड़ी। —लो. गी.

उ०—२ राज, आ सपना में ईं नीं जांणै कै म्हैं मूंजी हूं। वधाई रा पूरा समंचार सुणियां पै'ली ई म्हैंनै उण नैं सिरो पाव अर इक्कीस रिपिया रोकड़ा दिया। —फुलवाड़ी

उ०—३ दाळद घर दोळी हुवै, परणि न आवै पास। रुपिया होवै रोकड़ा, सोरा आवै सास। —ऊ. का.

रोकण—देखो 'रोक' (रू. भे.)

रोकणो, रोकबो–क्रि. स.—१ अधिकारतः बलात् या भय से किसी को आगे जाने से रोकना, रुकावट डालना।

उ०—१ तेज में नाहरखां नाहर से हाथूं, और 'अमरेस' गहै आसमांन वाथूं। प्राग के जै न्याती **रोकै** नाग की सी नांई, सेल साहेटवाळे त वीटा देत वांई। —रा. रू.

उ०—२ समझायौ समझै नही, अंधौ भयौ अगोर। जम **रोकेगो** द्वार नव, निकसन कुं नहीं ठौर। —अनुभववांणी

२ किसी को कोई कार्य या क्रिया न करने देना या किसी के कार्य या क्रिया में वाधा डालना।

उ०—१ मयद धपावै मोतियां, हंमां लांघणियांह। रहै नहीं जुध **रोकियौ**, औ धारां अणियांह। —वा. दा.

उ०—२ नर नाहर कमधज निडर, है छळ वळ हुंसियार। कांम कोई 'पातल' करै, है कुण **रोकणहार**। —ऊ. का.

३ आदेश, प्रार्थना, वल प्रयोग आदि के द्वारा किसी के मार्ग में कोई ऐसी वाधा या रुकावट खड़ी करना कि वह आगे न जा सके।

उ०—वांना वंधां **रोकतौ** सोकतौ गोळां सरांवळी, काळी स्रवा ओकतौ संभाळी स्रोण काज। ऊठै धू तोकतौ गैण 'मावांणी' झोकतौ ऊंडा। आयौ सूधौ कोकतौ कठी नै झालो आज। —जसौ आढो

४ किसी प्रकार के चलते हुए क्रम या प्रथा को आगे न वढ़ने देना, वन्द करवा देना।

उ०—**रोकी** तैं कुरीति रीति, सुरीति को झोकी साथ। ताकत त्रिलोकी एसो, मत अवगाह्यो तैं। —ऊ. का.

५ किसी आघात या प्रहार को वीच में ही रोकने हेतु किसी वचाव के शस्त्र या उपकरण का प्रयोग करना।

६ किसी प्रकार के नियंत्रण या अधिकार में रखना।

उ०—केई दिनां सूं पड़चा भाव है। रईस किरांणौ है, घणा दिना तक **रोकणौ** वाजिव कोनीं। वेचां तो वत्ती वात है। —फुलवाड़ी

७ किसी प्रकार से वश में रखना।

८ कैद में रखना या वन्द करना।

उ०—वारूवार अनम्मी कंध नेत-वांधा, सांमध्रमी भीच जम्मी रुखाळौ सधीर। झोखणौ छौ गैघड़ां छखंडां सीस जाडै झंडै, केसरी न **रोकणौं** छौ वाघळौ कंठीर। —किरपारांम कल्यो

९ मना करना।

उ० - तेरा कोई नहिं **रोकणहार**, मगन होय मीरां चली। लाज सरम कुळ की मरजादा, सिर से दूर करी। मांन अपमांन दोऊ घर पटकै, निकळी हूं ग्यांन गळी। —मीरां

१० अवरुद्ध करना।

उ०—१ वीछड़तां ही सज्जणा, क्यां ही कहण न लध्ध। तिण वेळां कंठ **रोकियउ**, जांणक सिंघी खध्ध। —ढो मा.

उ०—२ नाद बिंद कु उलटि कै, **रोकै** दसवें द्वार। जनहरीया सुख सहज की, इन कुं सुधि न सार। —अनुभववांणी

रोकणहार, हारौ (हारी), रोकणियो—वि०।

रोकिओड़ो, रोकियोड़ो, रोक्योड़ो भू० का० कृ०।

रोकीजणो, रोकीजबो—कर्म वा०।

रोकाई–सं. स्त्री.—रोकने की क्रिया या भाव।

२ देखो 'वार रोकाई'।

रोकाणो, रोकावो–क्रि. स० [रुकणौ व रोकणौ, क्रिया का. प्रे. रू.]

१ किसी दूसरे के अधिकार, वलात् या भय से किसी को आगे जाने से रुकाना, रुकावट डलाना।

२ किसी अन्य को किसी के कार्य में वाधा डालने हेतु प्रेरित करना।

३ किसी तीसरे पक्ष के आदेश, प्रार्थना, वल प्रयोग आदि के द्वारा किसी के मार्ग में कोई ऐसी वाधा खड़ी करने को प्रेरित करना

कि वह आगे न जा सके ।
४ किसी के द्वारा किसी प्रकार के चलते हुए क्रम या प्रथा को आगे न बढने देना, वन्द करवा देना ।
५ किसी को किसी प्रकार से नियंत्रण या अधिकार में रखने को प्रेरित करना ।
६ किसी प्रकार से वश में रखने को प्रेरित करना ।
७ कैद में वन्द कराना ।
८ मना कराना ।
९ अवरुद्ध कराना ।

रोकाणहार, हारौ (हारी), **रोकाणियौ** —वि० ।
रोकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
रोकाईजणौ, रोकाईजवौ—कर्म वा० ।
रोकावणौ, रोकाववौ—रू० भे० ।

रोकायत–वि०—१ रोकने वाला, रुकावट डालने वाला ।

उ०—सीसवद्द भुजां तोकायतां सावळां, रखां **रोकायतां** अरक रीभ । राळिया भड़ज धक नयण रोखायतां, वीच भोकायतां 'रयण' बीज । —रांमकरण महड़

२ कैद में वन्द करने वाला ।

रोकायोड़ौ–भू० का० कृ० --१ किसी दूसरे के अधिकार, वलात् या भय से किसी को आगे जाने से रुकाया हुआ, रुकावट डलाया हुआ. २ किसी अन्य को किसी के कार्य में वाधा डालने हेतु प्रेरित किया हुआ. ३ किसी तीसरे पक्ष के आदेश, प्रार्थना. बल प्रयोग आदि के द्वारा किसी के मार्ग में कोई ऐसी वाधा खड़ी करने को प्रेरित किया हुआ होना कि वह आगे न जा सके. ४ किसी के द्वारा किसी प्रकार के चलते हुए क्रम या प्रथा को आगे न बढने दिया हुआ, वन्द कराया हुआ. ५ किसी को किसी प्रकार से नियत्रण या अविकार में रखने को प्रेरित किया हुआ. ६ किसी प्रकार से वश में रखने को प्रेरित किया हुआ. ७ कैद में वन्द कराया हुआ. ८ मना कराया हुआ. ९ अवरुद्ध कराया हुआ ।

(स्त्री. रोकायोड़ी)

रोकावणौ, रोकाववौ—देखो 'रोकाणौ, रोकावौ' (रू. भे.)

रोकावणहार, हारौ (हारी), **रोकावणियौ**—वि० ।
रोकाविग्रोड़ौ, रोकावियोड़ौ, रोकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
रोकावीजणौ, रोकावीजवौ—कर्म वा० ।

रोकावियोड़ौ—देखो 'रोकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रोकावियोड़ी)

रोकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ अविकारत: बलात या भय से किसी को आगे जाने से रोका हुआ, रुकावट डाला हुआ. २ किसी को कोई कार्य या क्रिया न करने दिया हुआ या किसी के कार्य या क्रिया में वाधा डाला हुआ. ३ आदेश, प्रार्थना, वल प्रयोग आदि के द्वारा किसी के मार्ग में कोई ऐसी वाधा या रुकावट खड़ी कराया हुआ होना कि वह आगे न जा सके. ४ किसी प्रकार के चलते हुए क्रम या प्रथा को आगे न वढ़ने दिया हुआ, वन्द किया हुआ. ५ किसी आघात या प्रहार को वीच में ही रोकने हेतु किसी वचाव के शस्त्र या उपकरण का प्रयोग किया हुआ. ६ किसी प्रकार के नियंत्रण या अधिकार में रखा हुआ. ७ किसी प्रकार से वश में रखा हुआ. ८ कैद में रखा या वन्द किया हुआ. ९ मना किया हुआ. १० अवरुद्ध किया हुआ ।

(स्त्री. रोकियोड़ी)

रोखंगी–वि. [सं. रोष+अंग+ई] १ जोश वाला, जोशीला, उत्साही ।

उ०—घानमाळी पछाड़ा हुकमां चाडा सीस घणी, **रोखंगी** ऊपाड़ा द्रोण भुजां राह दृत । वैरियां ऊवेड़ जाड़ा घखी माह वांवराड़ा, दुवाह अखाड़ाजीत वाड़ा रांमदूत । —र. ज. प्र.

२ क्रोध करने वाला, रोश वाला, क्रोधीला ।

उ०—अध्रियांमणां घाट रौ गुलालौ रहै स्रोण आळी, उरां सालौ केकां फतै खाट रौ अधूत । रोखंगी जलाली सत्रां थाट रौ वखेर राळै, प्रथीनाथ वाळौ भालौ जव्भाट रौ पूत । —राजा वख्तसिंघ रौ गीत

रू. भे.—रोसंगी ।

रोख—देखो 'रोस' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ उरवसि सची वांह गळि आंणै, जियां रोख पाथर सम जांणै । इम करतां रभ कोड इलाजा, रिख व्रत चित डिगियौ नह राजा । —सू. प्र.

उ०—२ वहु घड़ मीन रुधिर उछटै वुडि, अगनि रूप किलकिला पड़ै उडि । मांस पहाड़ वहै जिण माहै, अगनि रोख तिण पर अणथाहै । —सू. प्र.

रोखांनळ—देखो 'रोसानळ' (रू. भे.)

रोखाणौ, रोखावौ–क्रि. अ.—कुपित होना, क्रोधित होना ।

उ० – जकै उणहीज वेळा नवी नवी रीभां मोजां पावै । जको म्हो-कमसिंघ सारो सराजांम आंणनै दीठो । सो औ तौ सदाई रोखातौ नै निरकुरतौ दीठौ । —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

रोखाणहार, हारौ (हारी), **रोखाणियौ**—वि० ।
रोखायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
रोखाईजणौ, रोखाईजवौ—भाव वा० ।

रोखायत–वि. [सं. रोष+रा. प्र. आयत] क्रोध करने वाला, कुपित होने वाला ।

उ०—सीस वद्द भुजां तोकायतां सावळां, रखां रोकायतां अरक रीभ । राळिया भड़ज धक नयण **रोखायतां**, वीच भोकायतां 'रंयण' वीजा । —रांमकरण महड़

रोखि, रोखी–वि. [सं. रोषिन्] १ क्रोधालु, क्रोधी।

२ ईर्ष्या करने वाला, ईर्ष्यालु।

रोग–सं. पु. [सं. रोगः] १ बीमारी।

उ०—१ रोग सोक दुख पाप रिण, अै मत करो प्रवेस। रहो अनीत अनीत बिण, दाता हूंदै देस। —वां. दा.

उ०—२ समापत भोग न रोग न सोग, जपंत निकेवळ केवळ जोग। प्रत्यागम भो लिव भक्ति प्रदीप, समागम सो सिव सक्ति समीप। —ऊ. का.

२ पीड़ा, कष्ट। (ह. नां. मा.)

३ कलंक, दाग।

उ०—परणूं धी पतसाह री, रजवट लागै रोग। वर अपछर वीरम कहे, जांणौ सुरपुर जोग। —वां. दा.

४ व्यसन, आदत, स्वभाव।

उ०—सरूपोत म्है थांनें सावळ ओळखिया कोनी। म्हनें खुद नें ई वातां रौ रोग कीं घणौ इज है। खासौ अवेळौ कर दियौ। —फुलवाड़ी

५ भेद-भाव।

उ०—'जसवत' केतौ जाचनै, ले जावौ सब लोग। उत्तम मद्धम अधम री, राख्यौ एक न रोग। —ऊ. का.

६ सात प्रकार के चौघड़ियों में तीसरा। (अशुभ)

वि. वि.—देखो 'चौघड़ियौ'

रू. भे.—रोगण

रोगकारक–वि. [सं.] बीमारी उत्पन्न करने वाला।

रोगग्रस्त–वि. [सं.] बीमारी या रोग से पीड़ित, बीमार।

रोगचाळौ–सं पु.—रोग का उपद्रव, बीमारी, महामारी।

उ०—गड़ा पड़ वीगड़ै नहीं हरगिज गहूं, चड़ापड़ न आवै रोग-चाळौ न फैलै घड़ाघड़ लाय महमदनगर, भड़ाभड़ भवांनी बोल भाळौ। —खेतसी बारहठ

रोगण–सं. स्त्री.—१ रोग-ग्रस्त स्त्री।

२ देखो 'रोग' (रू. भे.)

उ०—अंग रोगण मेटि ढकै पर औगण, क्रीति अमोघण रीति कियौ। प्रतपाळक बाळक रोग प्रजाळक, जोगणि चाळकनेच जयौ। —किरपारांम

३ देखो 'रोगन' (रू. भे.)

रोगन–सं. पु. [अ. रोग़न] १ चिकनाई, स्निग्ध पदार्थ, तेल, घी।

२ घी।

उ०—१ अपणां री मतवाळ की, करसण खारच खेत। नीर विलीणौ है नहीं, दत अन रोगन हेत। —वां. दा.

उ०—२ मिसटांण मसाला मोकळा, आटा रोगन ऊघडा। उदार चित कुमेर रा, कर भंडार खुला खुला रूड़ा। —बगतौ खिड़ियौ

उ०—३ परूसवारै को ऊरड़ ठांम ठांम सै लगी। चंडी भोग अनाजूं के गंजूं पर रोगनूं की छौळ वगी। —सू. प्र

३ लकड़ी या लोहे की वस्तुओं पर चमक लाने हेतु लगाया जाने वाला स्पिरिट, चमड़े, रूमीमस्तगी आदि के योग से बनने वाला एक प्रकार का घोल, वारनिश, पॉलिश।

४ मिट्टी के बरतनों आदि पर चढाने का लाख आदि से बना हुआ मसाला।

५ तेल।

६ बादाम का तेल।

रू. भे.—रोगण, रोगांन।

रोगनदार–वि.—[फा.] जिस पर रोगन किया हुआ हो।

रोगनासक–वि. [सं. रोगनाशक] रोग का नाश करने वाला, व्याधि को दूर करने वाला।

रोगनिदांन–सं. पु. [सं. रोगनिदान] किसी बीमारी के लक्षण और उत्पत्ति के कारण आदि की पहचान।

रोगनिवारक–वि.—बीमारी को उत्पन्न नहीं होने देने वाला।

उ०—नमो हरि आप धनंतर होय, नमो सब रोगनिवारक कोय। नमो भ्रम-देह विसंभर धार, नमो घर व्यापिय सोय मुरार। —ह. र.

रोगनी–वि.—जिस पर रोगन चढा हुआ हो।

उ०—घड़ पड़ै सझि घमसांण, प्रजळंत मुगळ पठांण। रोगनी खंभ चितरांम, विकराळ झाळ विरांम। —सू. प्र.

रोगलौ—देखो 'रोगी' (अल्पा. रू. भे.)

(स्त्री. रोगली)

रोगवाळ–वि.—रोगीला, रोगी, बीमार। (डि. को.)

रोगहर, रोगहारी–वि.—रोग को मिटाने वाला। (डि. को.)

स. पु.—१ वैद्य, चिकित्सक।

उ०—लायौ जाय रोगहर लांगो, पिलंग सहतौ सुण प्रबळ। देखे जाग रीछ कपि दोळा, दुसह सझोळा रांमदळ। —र रू.

२ एक प्रकार का रत्न विशेष।

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुसपराग वज्र वैडूरय सूरयकांत नील महानील इंद्रलील सवकर विमकर ज्वरहर रोगहर सूलहर विसहर हरिन्मणि चूनडी·········। —व. स.

रोगांन—देखो 'रोगन' (रू. भे)

उ०—भांति भांति के पकवांन भांति भांति कै अनाज। रोगांन मसालै सै सूलूं की सीक वणावै। अनेक भांति के साग तिस का पार न पावै। —सू. प्र.

रोगांनी–वि. [अ.] स्नेहयुक्त, घी या तेल में बना हुआ पदार्थ।

उ०—भांति भांति का मसाला रोगांनी रोसनी केसरिया चक्खी भांति भांति की मिठाई। —सू. प्र.

रोगातुर–वि.—रोग से आतुर, बीमारी से पीड़ित।

रोगित–वि.—रोगी, बीमार। (डि को.)

रोगिय—देखो 'रोगी' (रू. भे.)

रोगियौ—देखो 'रोगी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—रोगियौ आप माथै रिणी, रोज दुख सुख नहीं रती। मोहनी देखि घरमसी महा, जांणै तोइन हुजें जती। —घ. व. ग्र.

रोगिल—देखो 'रोगी' (रू. भे.)

उ०—कुमरि मंगावी मीनति करी, दीन्ही ऊमादे कुंअरी। झाली अजी न मांनी वात, रोगिल देस गंड गुजरात। —ढो. मा.

रोगी–वि. [सं. रोगिन्] रोग से पीड़ित, व्याधिग्रस्त, बीमार। (डि. को.)

उ०—१ जुगति विनां जोगी मूंवा, रोगी ओखद खाय। नांव ओखदी वाहिरो, जीवन कैसें थाय। —अनुभववांणी

उ०—वैद मूंवा रोगी मूंवा मूंवा जुग जेहांन। हरीया हरिजन नां मूंवा, हिरदै हरि का घ्यांन। —अनुभववांणी

उ०—३ पीळिया रै रोगी इण चांद री नीं तौ पूरौ उजास। फगत अपांरा हुनर रै आडी देवै ऊंड़ी चांदणी। नीं व्हैतौ तौ कांई कमी रैवती। —फुलवाड़ी

रू. भे.—रोगिय।

अल्पा;—रोगलौ, रोगियौ, रोगिल, रोगीयौ, रोगीलौ।

रोगीयौ—देखो 'रोगी' (रू. भे.)

उ०—१ एक ओखदी वाहिरो, विरह विथा नहीं जाय। जन हरीया जुग रोगीया, अनत ओखदी खाय। —अनुभववांणी

उ०—२ हरीया सव जुग रोगीया, ओखद खाय न एक। एकै ओखद वाहिरौ, मरि मरि जांहि अनेक। —अनुभववांणी

रोगीलौ—देखो 'रोगी' (रू. भे.)

उ०—रहिया रोगीलाह, वोहळी विथा वियापियां। वेदनि वीच-रियांह, तूं दारू मिळियौ देवजी। —वोल्हीजी

(स्त्री. रोगीली)

रोड़–सं. पु.—१ नगारा, नक्कारा।

सं. स्त्री.—२ कैद, वन्दीखाना।

[अं.] ३ सड़क, रास्ता, राजपथ।

वि.—रोकने वाला, वाधा उपस्थित करने वाला।

देखो 'रोड़ौ' (मह; रू. भे.)

रू. भे.—रोड।

रोड़क–सं. पु.—धावा, हमला।

उ०—तद जांणीजै धाव जवरौ, नहीं तौ मोहनसिंह इसा लोहा नूं छोड़ कई'क तखत री पूठ कान्ही खड़ा था त्यां सांम्ही रोड़क कीन्ही। —महाराजा पदमसिंहजी री वात

रोड़णौ–वि. [स्त्री. रोड़णी] १ रोकने वाला, अवरुद्ध करने वाला। २ वजाने वाला।

उ०—हणू जिसा किंकरा पधारै, कै वंकरा हल्लां। जूंधा जीत अनंक रा, रोड़णा जोधार। —र. ज. प्र.

रोड़णौ, रोड़बौ–क्रि. स.—१ नगाड़ा, ढोल, आदि वजाना।

उ०—१ नमौ तूझ आतम सकति दुरंग अनड़ां नड़ण, रिमां दै झाट त्रंवाट रोड़ै। होड करता जिकै लड़ण हाथूं कियौ, जिकै हाजर खड़ा हाथ जोड़ै। —दुरगादास आसकरणोत राठौड री गीत

उ०—२ रोड़ै वंवीलां अरावां सोर घमावै जागियौ रोस, सेस घू नमावै केड़ै लागियौ संजाट। भूप ऊछाहरां साजै महुंडां तरिंदां भेडै, रांमेड़ गरिंदां छेड़ै नाहरां रंजाट। —महाराव राजा रांमसिंघ हाडा री गीत

उ०—३ एक सहंस मुखि त्रिणा अधारै, वचिया जवन भूप भड़ वारै। रण करि फतै त्रंवक डंड रोड़ै जोए कुंवर सीस घड़ जोड़ै। —सू. प्र.

२ रोकना, अवरुद्ध करना।

उ०—मन तौ उणरौ हवा रै सागै उडतौ, उजास रै भेळौ पलकतौ, चांदणी साथै झोला खावतौ अर वादळां रै माथै हींडतौ, पण काया उणरी गवाड़ी री कार रै मांय रोड़्योड़ी ही। —फुलवाड़ी

३ घेरना, आवेष्टित करना।

उ०—१ एको लाखां आंगमैं, सीह कहीजै सोय। सूरां जेथी रोड़ियै, कळ हळ तेथी होय। —हा. झा.

उ०—२ कुरुदळ अति मोडउं वांणनी कोडि छोडउं, रणि नरवइ रोड़उं एह नूं मांन मोडउं। —सालिसूरि

४ वोलना, कहना।

उ०—रातौ भूझ विखम वच रोड़ै, जवर इसौ कुण जोमंड, मौ ऊभां संकर चौ कोमंड, तांण भीच किण तोड़ै। —र. रू.

रोड़णहार, हारौ (हारी), रोड़णियौ—वि०।

रोड़िओड़ौ, रोड़ियोड़ौ, रोड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रोड़ीजणौ, रोड़ीजबौ—कर्म वा०।

रोड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ ध्वनि उत्पन्न किया हुआ, वजाया हुआ. २ रोका हुआ, अवरुद्ध किया हुआ. ३ घेरा हुआ, आवेष्टित किया हुआ. ४ वोला हुआ, कहा हुआ।

(स्त्री. रोड़ियोड़ी)

रोड़ी–सं. स्त्री.—१ जहां, गोवर, कूड़ा, पखाना आदि डालते हैं।

उ०—मुख ओड़ी रै मांहिलीं, पर काचड़ा पुरीख। पटकै रोड़ी स्रवण पर, से चंडाळ सरीख। —वां. दा.

२ नगाड़े या दुंदुभि की ध्वनि।

उ०—गडडै गयंद करता गोडि, रुड़ता दमांमां हुय रोडि। द्रम्मी वाज घोड़ा दौड़ि, पत्थर पंथां भाजै पौड़ि। —गु. रू. वं.
३ एक प्रकार का वाद्य विशेष।
उ०—१ जोड़ी हंदा घोर जम, रोड़ी हंदा राव। हूं पचहारी हूलसी, वारी वालम आव। —वी. स.
उ०—२ चडै वेल वरियांम, सुजळ तै आगळ चंचळ। गरजि नाद गंभीर, रोड़ि रिणतूर त्रंबागळ। —गु. रू. वं.
उ०—३ त्रवंक नीसांण रोड़ि तूरारव, भेरी गुहीर सद्द ए। वरघू नफेर डोह सहनाई, जांणक मेघं नद्द ए। —गु. रू. वं.

रोड़ो—सं. पु.—१ पत्थर या ईंट का बड़ा ढेला।
उ०—काळी घणी कुरूप, कसतूरी कांटा तुलै। सक्कर घणी सुरूप, रोड़ां तुलै राजिया। —किरपारांम
२ विघन, बाधा, संकट।
३ देखो 'रूड़ो' (रू. भे.)
उ०—मतो धारि पूरब्ब वन्नीत मेलै, पचीसेक रोड़ै कपी साथ पेलै। रमा वेस सातै वली उत्तराध, विनै कोड़ी यक्कीस जै थाट बाधं। —सू. प्र.
रू. भे.—रोड़ो, रोढो।
मह.-रू. भे.—रोड़।

रोड़ो-झोड़ो—सं. पु.—युद्ध, लड़ाई, झगड़ा, कलह।
उ०—ताहरां सिखरो तमकि अर घोड़ै असवार हुवो। ताहरां झोटिंग हाथी हूय आंडो आयं फिरियो। सवळा रोड़ा-झोड़ा हुआ। —नैणसी

रोचक—वि. [सं.] १ रुचिकारक, रुचने वाला, अच्छा लगने वाला, प्रिय।
२ मनोरंजन करने वाला, मनोरंजक।

रोचकता—सं. स्त्री.—रुचिकर या मनोरम होने की अवस्था या भाव, मनोहरता।

रोचणो, रोचबो—क्रि. अ.—शोभायमान होना, फबना।
उ०—परतख पग जळती पेखै नह पाई, डूंगर बळती नै देखै दुखदाई। रचनां ईस्वर री ईस्वरता रोचै, संमदम स्रद्धा बिण संभव नहिं सोचै। —ऊ. का.
रोचणहार, हारो (हारी), रोचणियो—वि०।
रोचिओड़ो, रोचियोड़ो, रोच्योड़ो—भू० का० कृ०।
रोचीजणो, रोचीजबो—भाव वा०।

रोचन—वि.—[सं.] १ शोभाप्रद, दीप्तिमान, मनोहर, प्रिय।
२ पाकस्थली सम्बन्धी।
सं. पु. [सं. रोचनं, रोचनः] ३. कामदेव के पांच बांणों में से एक।
४ गोरोचन।
५ घोड़े की गर्दन के वालों का झूड़ा।
स्त्री. सं.—६ सुन्दरी, स्त्री।

रोचना—सं. स्त्री.—१ गोरोचन।
२ वसुदेव की एक पत्नी का नाम, जो राजा देवक की कन्या थी, इसके हेम एवं हेमांगद नामक दो पुत्र हुए थे।
३ विदर्भराज रुक्मिन् की पौत्री, जो कृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध की पत्नी थी। इसका विवाह भोजकटपुर में संम्पन्न हुआ था।
४ एक लाल कमल।
५ सुंदरी स्त्री।

रोचमांन—वि. [सं. रोचमान] १ चमकता हुआ, चमकीला।
२ मनोहर, सुन्दर, प्रिय।
सं. स्त्री—१ घोड़े की गरदन पर की एक भंवरी। (शा. हो)
सं. पु.—२ एक राजा, जो अश्वग्रीव नामक असुर के अंश से उत्पन्न हुआ था।
३ राजद्वय, जो भारतीय युद्ध में द्रोण के द्वारा मारा गया था।

रोचि, रोची—सं. स्त्री. [सं. रोचिस्] १ दीप्ति, कान्ति, आभा।
२ चारों ओर फैली हुई शोभा।
३ किरण, रश्मि।
उ०—पखै जारज म को अनेरां पतगरै, करै सोभाग आतम सकत कोड़। हरै विकटोरिया रवी रोची हुवो, रजै तण खूंद बळ रूप राठोड़। —किसोरदांन बारहठ

रोज—सं. पु. [सं. रुदन] १ रुदन, रोना-पीटना।
उ०—अबूझ वना रो उणियारो देखूं तो म्हारै सळीका ऊठै। घोड़ी माथै टेल नै पाछो आय दाता री पूछै तो म्हनै मतै ई रोज आय जावै। —फुलवाड़ी
२ शोक, कष्ट।
उ०—१ तन दुख नीर तड़ाग, रोज विहंगम रूखड़ो। त्रिसन सलीमुख बाग, जरा वरक ऊतर जवल। —बा दा.
उ०—२ महिमत देता मोज, घर बैठां घोड़ा घणा। रोट्यां केरी रोज, निजरां देख्यो नोपला। —अग्यात
[फा. रोज] ३ दिन, दिवस।
उ०—१ तद कोटवाळ कह्यो, "अै हिरण तुमारा नही है, अै तो हमारै यहां बौहत रोज सै है, जो तुम कहते हो तीन रोज हुवा है सो झूठे हो।" —द. दा.
उ०—२ कमरुदीन कही, "मैं ऐसा यलम देवुंगा, सो इनका तीर हाथी मांय न अटकैगा।" सो अबै रोजी तीर वावै है सो दोय च्यार रोज हुआ। अरु या कवांण समाई। —राहव साहब री वात

अव्य०—४ प्रतिदिन, हमेशां।

उ०—१ आलिंगी निज हरदयसरोज, घणू घणु प्रेमें रोज। समादिसति भूपति कल्यांण, कुसल अत्र वरत्तइ सुविहांण। —वि. कु.

उ०—२ जनहरीया जहां जाईयें, पखापखी नहीं काय। मूंवां सोग न सांदरो, रोज न रोवें आय। —अनुभववांणी

५ देखो 'रोझ' (रू. भे.)

रू. भे.—रोजि, रोजी।

रोजगार-सं. पु.—१ कार्य, धन्धा, पेशा।

उ०—वरसो, तिलोकसी, दूदो, रायपाल रावळ जेसल कन्हे रहै। इण नूं सवणीपणें रो **रोजगार** जिसड़ो सवण हुवै, तिसड़ो आय मालम करै।। —तिलोकसी भाटी री वात

२ जीवोकोपार्जन करने के लिये किया गया कार्य, व्यापार।

३ वाणिज्य, व्यापार, व्यवसाय।

४ वेतन, तनख्वाह।

उ०—१ हमें गांव सेंसरांम री पठांण सलेमसा नै बेटो सेरखां श्रे दिल्ली में पातसाहजीरी चाकरी घोड़ां हजार एक सूं करता हा पण वगसी सूं वणें नहीं। सू **रोजगार** मिळें नहीं वरस दस हुवा अस्वाव वेच खाधो। —द. दा.

उ०—२ ताहरां रिणधीर पण कटक कियो। **रोजगार** सारां नूं चुकायो। रजपूतां सारां ही कह्यो—'थांहरै साथ छां। —नैणसी

उ०—३ ताहरां राजा पडवो फेरियो—जो चोर म्हारै मुजरै आवै तो चोरी री तकसीर माफ करूं, सिरकार री **रोजगार** कर देवूं। —राजा भोज अर खाफरै चोर री वात

५ दिन भर किये गये परिश्रम का पारिश्रमिक, मजदूरी।

६ देखो 'रोजी' (रू. भे.)

उ०—तिण सूं पुण्य रै ठिकांणै कर उण रा मिनख पूजा प्रभू री नूं राखै, तिण रा **रोजगार** री भली भांति खवर लेय। —नी. प्र.

रोजगारी-सं. पु. [फा. रोजगारी] १ व्यापारी, सौदागर।

२ देखो 'रोजगार' (रू. भे.)

उ०—दूजे पाठसाळा स्थापित कर पंडित तालवेइल्म **रोजगारी** वैठांणै तिके धरम सास्त्र जे खलक नूं भणावै तिण रो पुण्य उण नूं होय। —नी. प्र.

रोजगारौ-सं. पु.—रोजगार पर कार्य करने वाला व्यक्ति।

उ०—लै भड़ां रटाकां पूर अरिदा ताड़व्वा लागा, महावीर खीज में पाड़व्वा लागा मूंठ। वीर वेसतावा जहां दूधारा झाड़व्वा लागा, **रोजगारा** खाती ज्यूं फाड़व्वा लागा रूंठ। —सुखदांन कवियो

रोजनांमचौ, रोजनांमौ-स. पु. [फा. रोजनामचः] १ प्रतिदिन के कार्य का विवरण लिखने की पुस्तक।

उ०—वता, म्हारै इण दूख रो **रोजनांमचौ** दुनियां री सगळी वहियां में किणी जुग पूरो व्है सकै कांई। बेटी! म्हारी ऊमर पायां विना इण दुख रो मरम थारै हीयै परस नीं करैला। —फुलवाड़ी

२ प्रतिदिन के आय-व्यय का विवरण लिखने की पुस्तक।

रोजमेळ-स. पु.—१ हमेशां के नकद लेन देन का विवरण रखने की वही।

२ दैनिक हिसाब का मिलान।

रोजांना-क्रि. वि. [फा. रोजानः] नित्य, प्रतिदिन, हमेशां।

रोजाईद-स. स्त्री. [फा. रोजः+अ. ईद] मुसलमानों की रोजों के ऐन बाद आने वाली ईद, ईदुल फितर।

रोजायत-स. पु.—मुसलमान। (डि. को.)

उ०—**रोजायतां** तणें नव रोजे, जेथ मुसांणां जणो जण। हींदू नाथ दिली चै हाटै, 'पतौ' न खरचै खत्रीपण। —प्रथवीराज राठौड़

वि.—रोजा रखने वाला।

रोजि—१ देखो 'रोज' (रू. भे.)

उ०—आसथांन सदवटा आसता, संसत परखद समिति समाजि। समिजा गोठि छभा सुजि सोहै, **रोजि** हुवै चरचा व्रजराज। —ह. नां. मा.

२ देखो 'रोजी' (रू. भे.)

रोजिना—देखो 'रोजीना' (रू. भे.)

रोजी-सं. स्त्री. [फा.] १ नित्य का भोजन, जीवन निर्वाह का अवलम्ब।

उ०—सिपाही अरज कीवी जै म्हें सिपाही छां **रोजी** रै पगां चाकरी रो इरादो राखां छां। —दूळची जोइयै री वारता

२ जीविका।

३ तनख्वाह।

उ०—तद दीवांन नो मुहरो कराय दियो व रुपया वीस हजार दिवाय **रोजी** चढी थी सो चूकती दिराई। —दूळची जोइयै री वारता

४ प्रारब्ध, भाग्य।

उ०—दादू **रोजी** रांम है, राजिक रिजक हमार। दादू उस परसाद सौं, पोस्या सब परिवार। —दादूवांणी

५ देखो—'रोज' (रू. भे.)

उ०—कमरणैत कही, "मैं ऐसा यलम देवुंगा, सो इनका तीर हाथी मांय न अटकैगा।" मो अवै **रोजी** तीर वावै है। सो दोय-च्यार रोज हुवा। अरु या कवांण समाई। —राहव-साहव री वात

रू. भे.—रोजि

रोजीदार-सं. पु. [फा.] १ वह व्यक्ति जिसे रोजाना खर्च हेतु कुछ रुपया मिलता हो।

२ वह व्यक्ति जो किसी रोजी (नौकरी) में लगा हो, नौकरीदार।

रोजीनदार-सं. पु.—दैनिक मजदूरी लेकर कार्य करने वाला, मजदूर।

उ०—पछै रिपिया डेढसौ रोज खरच री रुक्कौ मेलियौ, सो नाकारौ मेल्हियौ, कह्यौ—म्हैं तौ रोजीनदार नहीं, म्हैं तौ कजियै रा धणी छां, बावेजी रा दरमण करणै नूं ही आया छां। —सूरे खींवै कांधळोत री वात

रोजीना-वि.—नित्य का, रोज का।

उ०—तद राजा बो'त मेहरबांन हुय, गांव अेक पटै दियौ, रुपिया पांच ५) रोजीना कर दिया। —राजा भोज अर खापरै चोर री वात

क्रि वि.—नित्य, प्रतिदिन, सदैव।

उ०—१ आप रोजीना कहता हा म्हारा कंत नं अै तो वधै है सो आज इण जुद्ध में देख लेरावो आप रो देवर इतरा वधिया जिण रो प्रताप हाथीयां रा दांत उखेलै है। —वी स. टी.

उ०—२ यौं लिखिया रोजीना आवै, सरव दिली री विगत सुणावै। वाघी हर मुहकम री वाधै, सैदां द्वार फिरै हित साधै। —रा. रू.

उ०—३ करणसिंघजी औरंगावाद विराजै है। उठै करणपुर मैं स्री करनीजी रो मिंदर करायौ। सू अजेस आरोगण री रोजीना छै।' —द. दा.

उ०—४ रोजीना आपस में वेढां हुवै, सु सारा डीलां कट निवड़िया। मोहिलां री ठकुराई निवळी पड़ी। —नैणसी

रू. भे.—रोजिना, रोजीनौ

रोजीनौ—देखो 'रोजीना' (रू. भे.)

उ०—ओर महा पुरुखां रै रहणै नूं ठोर वणावै उवै उठै आरांम सूं रहै उणारै खांणै पीणै अर पहरणै रो रोजीना करै तो पुण्य पहोंचै। —नीं. प्र.

रोजीविगाड़-सं. पु.—जीविका निर्वाह के लगे हुए साधन को छोड़ने वाला, निकम्मा, निखट्टू।

रोजु—देखो—'रोजौ' (रू. भे.)

उ०—जे नितु रोजु करइ, निनह निम्माज गूंजारइं। पंच वखत ममधरइं, धणी जै एक संभारइं। —व. स.

रोजेदार-सं. पु [फा. रोजे+दार] रोजा रखने वाला, मुसलमान। (मा. म.)

रोजौ-सं. पु.—१ व्रत, उपवास।

उ०—संध्योपासन तजि वांग साज, निस दिवस वूजू रोजा निवाज। मामरत्य मिह हम नहिं स्रगाळ, गौ मांस नांम पै देत गाळि। —ऊ. का.

२ मुसलमानों द्वारा रमजान के महीने में रखा जाने वाला ३० दिन का व्रत, उपवास जिसके अंतिम दिन चन्द्रदर्शन होने पर ईद होती है।

उ०—१ रोजा तीस दिनुं का राखै, सारै पंच निवाजा। मन अपना कुं मारै नाही, मारै मुरगी ताजा। —अनुभववांणी

उ०—२ पांच वखत करि वंदगी, रोजा राखौ तीस जी। देव दसुंध छुटै नहीं सही विसोवा वीस। —दीन मुदरदी

३ देखो 'रोजौ' (रू. भे.)

उ०—पीर वहावुलहक रो रोजौ मुलतांन रा किला में। पीर साह कुल आलम रो ही रोजौ मुल्तांन रा किला में है। —वां. दा. ख्यात

रू. भे.—रोजु।

रोझ-सं. स्त्री. [स्त्री. रोझड़ी] १ नर नील गाय।

उ०—१ सूअर संवर समा सीआळ फिरइं आहेडी तीह ना काल। हरिण रोझ जइ दीठउं किमइ, आगलि मरण ति पांमइं तिमइ। —वस्तिग

उ०—२ दस दस्स कोस मुकांम डेरा, खुरम खेल सिकार ए। संघरै नाहर रोझ सांवर, अरस पंख उतार ए। —गु. रू. वं.

उ०—३ गरदां घर अंवर गूंधाळियौ, घमळागिर डूंगर धूंधुळियौ। कटकां विच मीर सिकार करै, म्रिघ नाहर संवर रोझ मरै। —गु. रू. वं.

२ नील गाय के मिलते जुलते रंग का एक घोड़ा विशेष।

रू. भे.—रोज, रोझौ।

अल्पा.,—रोझड़ी।

रोझड़ौ—देखो 'रोझ' (अल्पा;—रू. भे.)

उ०—१ काळवा कुही करड़ी कियाह, हांसला हरेवी नइ हलाह। रोझड़ा महूड़ा पीत रंग, तोरकी केवि ताजी तुरंग। —रा. ज. सी.

उ०—२ वड़ वेग उड़त मध गरुड़ वेत, कागडा केक भोहा कमेत। रोझड़ा केक भसमय रंग, तांमडा केयक नुकरा तुरंग —पे. रू.

(स्त्री. रोझड़ी)

रोझौ—देखो 'रोझ' (रू. भे.)

उ०—रोझौ निला गंगाजळ, हुंसला नैण काजळ। अंस सेराहा अऊव, खैंग रोहला हाबूव। —गु. रू. वं.

रोट-सं. पु.—१ मोटी रोटी, वड़ी रोटी।

उ०—१ भोगवै कूं जून, खून गूंन तै भरचौ। कांम चून को रोट, न लूंन को करचौ। —ऊ. का.

उ०—२ वारट झरोखै वैसिसै, काइम हुदै कोटि। 'रेखीं' वैठी राज मां, रांणी करिसै रोट। —पी. ग्रं.

उ० - ३ खाय रोट जद टांस होयग्या, दीना पलंग ढळाय। कुरड़

कुरड़ हुक्कौ ठळळावै, गूदड़ा दिया पकडाय । मारुणी घणा कमावणी । —लो. गी.

२ प्रत्येक मंगलवार व शनिश्चरवार के दिन हनुमानजी को चढाई जाने वाली वड़ी व मोटी रोटी ।

रू. भे.—रोटौ, रोठ ।

रोटकौ—देखो 'रोटी' (अल्पा. रू. भे.)

रोटड़ी—देखो 'रोटी' (अल्पा. रू. भे.)

रोटाक-वि'—१ ज्यादा भोजन करने वाला ।

२ दूसरों के घर जाकर भोजन करने वाला ।

रोटी-सं. स्त्री.—१ चकले पर गेहूं, जौ आदि के आटे को वेल कर वनाई हुई चपाती जो आंच पर सेंक कर भोजन के रूप में खाई जाती है।

उ०—जद हाळीड़ा घर नै आया, दीना थाळ लगाय । सेर-सेर दूधड़लो घाल्यौ, दो-दो रोव्यां मांय । मारुणी, घणी कमावणी । —लो. गी.

२ उक्त खाद्य पदार्थ के सिवा, चावल, दाल, तरकारी आदि के साथ एक समय प्रायः एक सञ्च वनाई जाने वाली कुछ विशिष्ट चीजें, रसोई ।

उ०—दोय रुपिया रा गेहुं मेल्या अधेली ना मूंग अनै एक रुपयां रौ घी मेल्यौ । कह्यौ महाजन आवै जिणां नै पइसा लेइ रोटियां कर घालवौ कर । —भि. द्र.

३ भोजन, खाना ।

उ०—१ हरीया हक पिछांणीयै, अनहक सुं क्या कांम । जो कुछि सहजां देत है, रिजक रोटीयां रांम । —अनुभववांणी

उ०—२ जेठ मुदी ४ सनीवार मुःनैणसी दिन घड़ी ४ चढतां पोकरण चालीयौ कोस ४ गांव लोहवै पोकरण रै गांव रोटी खाधी । —नैणसी

क्रि. प्र.—करणी, खांणी, जीमणी, पकांणी, सेंकणी ।

४ उक्त प्रकार की चीजें खाने हेतु किसी के यहां से मिलने वाला निमंत्रण ।

क्रि. प्र.—दैणी, कै'णी ।

५ संपत्ति, धन दौलत ।

उ०—जग में दीठौ जोय, हेक प्रगट विवहार में । ओर न मोटौ कोय, रोटी मोटी राजिया । —किरपारांम

अल्पा;—रोटड़ी ।

रोटीराव, रोटेराव-वि.—१ मेहमानों की अच्छी खातिर करने वाला, आतिथ्य सत्कार करने वाला ।

उ०—१ पण भीमजी रै वडेरां री कमांण दूजी तरै री ही । वै रोटीराव अर तरवार रा धणी हा । पीढियां लग उणां रै घरै आयोड़ो मेहमांण भूखौ कौ गयौ नी । —रातवासौ

उ०—२ सोनगरौ अखैराज रिणधीरोत वडो रजपूत । पाली पटै वालीसां सींधलां सूं वडा-वडा कांम जीतिया वडौ दातार, वडौ जुंझार, रोटेराव वडी चडां रौ खाटणहार । संवत् १६०० री वेढ कांम आयौ । —राव मालदेव री वात

२ वैभव सम्पन्न, धनाढ्य ।

रोटौ-सं. पु.—१ मावे के पेड़े के आकार का अंगारों पर सेका हुआ गेहूं का गोळ रोटा, वाटा ।

उ०—१ रूकां भात गोळिया रोटां, सुजड़ा घीरत सोहितां सार । सारां सरां सावळां सूळां, अण-रुचता पुरसिया अणपार । —सादै सेखावत री गीत

उ०—२ सो एकै दिन देपाळ धाड़ी लेनै आवंतौ । सो हरख री आप रै तळाव ऊपर गोठ कीवी । अठ मांस रांधौ । चावळ रांवा । अर रोटा हुवै छै । — देपाळ धंध री वात

वि. वि.—यह प्रायः दाल के साथ खाया जाता है । इसका चूरमा भी बनता है।

२ तुरन्त की व्याही हुइ गाय, भैंस या वकरी का दूध जो गरम करने पर जम जाता है ।

३ रहंट के चक्र के वीच वाले लकड़ी के स्तम्भ के नीचे रक्खा जाने वाले लोहे का उपकरण ।

वि.—टेढ़ा ।

देखो—'रोट' (रू. भे.)

मह.—रोठ ।

अल्पा.,—रोटकौ ।

रोठ—१ देखो—'रोट' (रू भे.)

२ देखो—'रोटौ' (मह., रू. भे.)

रोड-सं. पु.—१ वोये हुए अनाज के अंकुरित होने पर तेज वर्षा के होने से अनाज के पौधे का विकृत होना ।

२ छोटा घोड़ा ।

वि.—१ दोगला, वर्णसंकर ।

२ मूर्ख ।

उ०—तन अखत रोड डोलै तिकै, उर अंतर सूं आफळै । इम पिमण घूंट पेछू उमग, होकां दीठा हाफळै । —ऊ. का.

३ देखो 'रोड़' (रू. भे.)

रू. भे.—रोढ ।

अल्पा.—रोडियौ ।

रोडणौ, रोडवौ—देखो 'रोड़णौ. रोड़वौ' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां राजा नरसंघ रै साथ सींवळ, सोळंखी, हाडा,

भाखरसी, राव सरव नगारो रोडता कोट मांहे आया ।

—राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ तरुनिकर मोडतउ, वल्लिगहन ओडतउ, पाखांण रोडतउ, मुंडादंडि आच्छोडतउ, गिरिनदी त्रिलोडतउ, महाभद्र डोहतउ,··· ············ —व. स.

रोडणहार, हारौ (हारी), रोडणियौ—वि० ।

रोडिओड़ौ, रोडियोड़ौ, रोड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

रोडीजणौ, रोडीजवौ—कर्म वा० ।

रोडियोड़ौ—देखो—'रोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रोडियोड़ी)

रोडियौ—देखो—'रोड' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—पिगळै ताम्बड़ा कवां हुंता प्रगट, झीक पुठापरै पड़ै जाझी । मठा नर वम रहुंता उरै मोढिया, रोडिया मार सू रहै राजी ।

—पीरदांन आढौ

रोडौ—वि.—१ छोटे कद का, ठिगना ।

रू. भे.—रोढौ

२ देखो—'रोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—कडीउ जांणइ रोडां, सोनी जांणइ सोनाकडां, कंदोई जांणई वारुवड़ां हंस जांणइ क्षीर,मत्स्य जांणइ नीर, मुख जांणइ मीठा द्रस्टि जांणइ दीठां । —व. स.

रोढ—देखो—'रोड' (रू. भे.)

उ०—१ असली री ओलाद, खून करघां न करै खता । वाहे वादोवाद, रोढ दुनातां राजिया । —किरपारांम

उ०—२ वाकरयां रोढ घोडै चढियो वहै छै ।

—ठाकुर जैतसी री वारता

रोढणौ, रोढवौ—क्रि. स.—१ काटना ।

२ नष्ट करना, नाश करना ।

उ०—हरि तणै साथि कै गीद्ध वांनर हुआ, भगत महिति रिखि इंदजीत वाली भूआ । वांधिओ ममंद घर असुर रो वाढियो, रांम-चंद आवि राकस घणो रोढिओ । —पी. ग्रं.

रोढणहार, हारौ (हारी), रोढणियौ—वि. ।

रोढिओड़ौ, रोढियोड़ौ, रोढ्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

रोढीजणौ, रोढीजवौ—कर्म. वा. ।

रोढियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ कटा हुआ. २ नाश या नष्ट किया हुआ ।
(स्त्री. रोढियोड़ी)

रोढौ—१ देखो—'रोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—लिख राजा आप आठ-नै तळाव ऊपर वेठो वेजो करै । उतरै ज जममादे रोढा आंगि नागै । —जममा ओढगी री वात

२ देखो—'रोड' (अल्पा; रू. भे.)

रोण—सं. स्त्री. [सं. रवण] ध्वनि, आवाज ।

उ०—गरज्जै दमांमा गजं थाट गुडिया, रिणं तुर मैं भेर नीसांण रुडिया । असंमांन सूं सीस लागा अभंगां, हुए पक्खरां रोण हाहूलि तुरंगां । —गु. रू. वं.

रोणकियौ, रोणकौ—देखो—'रोवणकौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रोणकी)

रोणौ—देखो—,रोवणौ' (रू. भे.)

रोणौ, रोवौ—देखो—'रोवणौ, रोववौ' (रू. भे.)

उ०—१ रिण रचियां मा रोइ, रोऐ रिण छांडै गया । इण घर तौ आगा लगै, मरणौ मंगळ होइ । —मा. वचनिका

उ०—२ पछै वेटी नीं तौ मां नै हुकम फरमावण री कीं वात करी अर नीं उणरी छाती में मूंडो घालनै रोई । —फुलवाड़ी

उ० ३ भूख न लागइ भाव सिउ, तरस न दीठा तोय । वारी न रहइ विवि किसी, आंखि रही रहि रोय । —मा. कां' प्र.

रोतासळौ—सं. पु.—मोतियों से जड़ा हुआ 'छत्र' ।

उ०—लखीजै असी भांति आकोंश लागौ, भवांनी खड़ा पांण लीधां अभागौ । हमेसां रहै सत्रू रौ सीस हाथै, मुखै रत्र रोतासळौ छत्र माथै । —मे. म.

रोवंगी—वि.—१ जबरदस्त, भयंकर ।

२ क्रोधपूर्ण, क्रोधयुक्त ।

रोद—देखो 'रौद्र' (रू. भे.) (डिं को.)

उ०—१ समोभ्रम 'गोकळ' 'पातल' साह, विभाड़त रोद खड़ा हल-वाह । महाभड़ सूर 'फतावत' 'मांन', तेगां झट रोद । हणै मस-तांन । —सू. प्र.

उ०—२ पुळियां घणां घणां गळि पाळै, रळतळिया पैलां खळ रोद । असपति दळां पडतां आंम्ही, सांम्ही वार चढ्यो मीसोद ।

—रावत केसरीसिंघ सीसोदिया री गीत

उ०—३ कंपौ 'उगर' तठै अत कोड़ै, उदियासिंघ जेही पिण ओड़ै । रोदां कटक अटकिया राहै, 'सांवळ' सूत जूटो पतसाहै । —रा. रू.

उ०—४ रंग भीम उतंग सुढाळै, रोदां मारुत मूकै मांण । मदमूक महावळ प्रेम परघ्घळ, वारामास वसांण । —मा. वचनिका

रोदकार—देखो—'रौद्रकार' (रू. भे.)

उ०—रोदकार अरड़ाव, पडै गोळा अणपारां । व्है असि गज भड़ होम, वोम मिळि घटा अंधारां । —सू. प्र.

रोदन—सं. पु. [सं. रोदनम्] १ रोने की क्रिया या भाव, रुदन, क्रन्दन, विलाप ।

उ०—विकथा चार कीधी वलि, सेव्या पंच प्रमाद । इस्ट वियोग

पड्यां किर्या, रोदन विखवाद । —स. कु.
२ आंसू ।

रोदपत, रोदपति—देखो—'रौद्रपत' (रू. भे.)

उ०—सुरज कलंग न तो पत समहर, पहव ऊजास करै खड़पाड़ । रणां रोदपत पत-रांनी रुकै, राजा सरस न मंडै राड़ । —चावंडदांन बारहठ

२ देखो—'रुद्रपत' (रू. भे.)

रोदराव—देखो—'रौद्रराव' (रू. भे.),

उ०—रेवत चढिया रोदराव, वज जंत्रक भेरी । माग न लाधै भांण रथ, रज डवर घेरी । —लूणकरण कवियो

रोदसी—वि. [सं.] स्वर्ग और पृथ्वी का ।

रोदाळ—देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

उ०—१ पाळां वांधियां वडाळां भडां त्रंमाळां घुरंता चौडै, गैंघटाळां काळी घडां मेळियां गरीठ । अभंगा ग्रौरंगवाळां दिली वाळा वेध ग्राटै, रोदाळां लकाळा वागौ किरम्माळां रीठ । —साहिजादां री वेढ री गीत

उ०—२ मछराळ रढाळ रोसाळ मनै, विकराळ वडाळ जो काळवनै । ढैंचाळ भुजाळ रोदाळ ढहै, सत वीसांए सूर सधीर सहै । —पा. प्र.

रोद्र—देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

उ०—१ 'अखाहर' वाहत खाग उनंग, जुड़ै जिम भारथ दारुण जंग । वळोवळ लूवत रोद्र व्रजाग, भिड़ै सुजि सूर हुवै दुय भाग । —सू. प्र.

उ०—२ जगरांम विजावत काज जुद्ध, रोद्र सूं खडो ग्रादर विरुद्ध । "सामळ" वळ भंजण महा सूर, ग्रारभ कुंभ सुत वित्त ग्रडूर । —रा. रू.

उ०—३ केसरीसिंघ रांमसिंघ सवळसिंघ के जाए, राम बांण से अचूक रोद्र छोभ पाए । भावसिंघ सबळ का माडण सवाई, ग्रोछाह सी लागै जाकूं साह की लड़ाई । —रा. रू.

रोद्रणी, रोद्रांणी—सं. स्त्री.—१ यवन सेना, मुसलमानों की सेना ।

उ०—मुडै नव तेरही नवै ग्रह माडिया, ब्राह्मण फिरै नारद विचाळै । रोद्रणी बीदणी छोहड़ां राळियां, रुधर तवोळ मुख हूंत राळै । —दुरसौ ग्राढो

२ मुसलमान की स्त्री, यवन स्त्री ।
३ असुर सेना ।
४ देखो—'रुद्रांणी' (रू. भे.)

रोद्रांयणि, रोद्रांयणी, रोद्रायणि, रोद्रायणी—सं. स्त्री.—१ मुसलमानों की सेना, यवन सेना ।
२ मुसलमान की स्त्री, यवन स्त्री ।
३ असुर सेना ।

उ०—धरि कोप करणां ग्रेह घजवड़ रूप रचि रोद्रांयणी । जळ निमळ करै मंजण, चरणा चीर धीर चंद्रायणी । —मा. वचनिका

४ देखो 'रुद्रांणी' (रू. भे.)

रोध—सं. स्त्री. [सं. रोधः] १ रोक, रुकावट ।

उ०—१—टळै ढील लागां घणां फील टल्लां, हठै नीठि पाइक्क हल्लां हमल्लां । तिकां ग्रग्ग हेरव कै छैल तूटै, छकायां सुरा रोध रै खेल छूटै । —वं. भा.

उ०—२ दूसरै बुरै न रह्यौ, रोध तैं दियौ । ग्रापनै बुरै पै ग्रैंहो, क्रोध ना कियौ । —ऊ. का.

२ अड़चन ग्रटकाव ।

उ०—सोध सोध गुण सारसौं, रोध बोध बुध रास । मुगधां करण प्रबोधमति, कवि कुळ बोध प्रकास । —क. कु. बो.

[सं. पु.] ३ ग्रावेश, जोश ।
४ क्रोध, गुस्सा ।
[सं. रोधस्] ५ किनारा, तट । (ग्र. मा.)

उ०—निज सिर दे नागारजण, कियौ समर कर क्रोध । पाटण पत भांजै पडै, रेवा सागर रोध । —वां. दा.

६ जलाशयों या नदियों का बांध ।

रोधक—वि.—रुकावट पैदा करने वाला, रोकने वाला ।

रोधणौ, रोधवौ—क्रि. स.—१ रुकावट पैदा करना, रोकना ।
२ कैद करना, बन्दी बनाना ।

उ०—पति ग्रलवर करि कोप, रांमनाथ कवि रोधियौ । पग ग्रंगद ज्यूं रोप, छत्रधर पता छुडावियौ । —ग्रैंवादांन रतनू

रोधणहार, हारौ (हारी), रोधणियौ—वि० ।
रोधिग्रोड़ौ, रोधियोड़ौ, रोध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
रोधीजणौ, रोधीजवौ—कर्म वा० ।

रोधांण—सं. पु.—संहार, नाश ।

उ०—ज्वाला वाळै नेत मीन केत ज्यूं पचातां जयौ, रूकां हूंर रचातां दळां विखम्मी रोधांण । राहां दहूं बीच एक ग्रनम्मी 'बीजैस' राजा, जांणियौ जिहांन जम्मी ठांमतां जोधांण । —हुकमीचंद खिड़ियौ

रोधियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ रुकावट पैदा किया हुग्रा, ग्रवरुद्ध किया हुग्रा । २ कैद किया हुग्रा, बन्दी बनाया हुग्रा ।

(स्त्री. रोधियोडी)

रोप—सं. पु. [सं.] बांण, तीर । (डि. नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ मणियां रयण अमोल, रोप अणियां मोती रुख। सोहत धणियां सीप, मिळै असिवर फणियां मुख। —वं. भा.

उ०—२ तिकां हित हेत दगी नंह तोप, रही वजि रीठ विहूं वळ रोप। जिका सणणंकि भणकिय जेह, सुवा भड़ भुम्मि हुवा घड़ सेह। —मे. म.

२ छिद्र, विवर।

सं. स्त्री.—३ प्याज, मिरच आदि के पौधे विशेष को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान पर लगाने की क्रिया या भाव।

४ उक्त उद्देश्य से उखाड़े गये पौधे।

५ स्थिर रहने की क्रिया या भाव।

रोपण—सं. पु. [सं. रोप] १ तीर, बांण। (अ. मा., ह. नां. मा.)

[सं. रोपणं] २ रोपने की क्रिया या भाव।

उ०—जगत ठांम जग सांमि,रोपण जग रंजण। जग वंदण जग जेठ, जगत भेदण जग भंजण। —पी. ग्रं.

३ घाव पुरने की या घाव भरने की क्रिया। (अमरत)

४ घाव पुरने हेतु लगाई जाने वाली दवा।

वि.—रोपने वाला।

रोपणी—सं. स्त्री.—१ फाल्गुन मास की स्मृति या होलिका संकेत के निमित्त माघ मास की पूर्णिमा को जंगल से काट कर लाया हुआ वह शमी वृक्ष जो गांव के मुख्य द्वार पर खड़ा किया जाता है।

उ०—अरध ऊरध बिच रूपी रोपणी पांचुई गेहर रमो री। तीन गुणारो फागुण कीजे, वसत पचीस करो री। —स्री हरिरामजी महाराज

वि. वि.—कई गांवों में यह गांव के चौहटे पर कहीं मुख्य द्वार पर, कहीं होली जलाने के स्थान पर खड़ी की जाती है।

२ रोपने का कार्य।

रोपणौ, रोपबौ—क्रि. स.—१ स्थिर करना, पांव जमाना।

उ०—१ रावतिया पग रोपसी वतळामी थह वाघ। बौहळां पाटा बांधणां, आछो होसी आघ। —बां. दा.

उ०—२ पर गढ लेणा रोप पग, अरि सिर देणा तोड़। धरा हूंत नहिं धापणौ, खूंदालमां न खोड़। —बां. दा.

उ०—३ जितै करै हट पाहुणौ, इतै करै हट एह। पग थिर रोपै पाहुणौ, एह हुए असनेह। —बां. दा.

उ०—४ पातसाह रो खूनी आगै भी म्होबतखां देवगढ़ हीज सरणै रहियो। दूजा राजा रांणा राव सो तो पातसाहां सूं कोई न रोपै पाव। – प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ ठानना, निश्चय करना।

उ०—१ रोपी अकबर राड़, कोट झड़ै नंह कांगरै। पटकै हाथळ सीह पण, बादळ व्है नह बिगाड। —बां. दा.

उ०—२ इतरी कह मोहकमसिंह नु थथोपियो। पण औ तो कोपियो सो कोपियो। मुंहडै अण-माप री रोस व्यापियो। मन मांहि भीलड़ै नुं मारण री दाव रोपियो। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—३ एक तौ नगारौ धणियां रातैंनाडै वाजै औ, दूजोड़ो नगारो धणियां ठेट वाजै औ क झगड़ो रोपियो। वा वा झगड़ो रोपियो, गौरां रा माथा कंवरा लीधो औ क झगड़ो रोपियो। —लो. गी.

३ किसी कड़ी या नुकीली चीज को किसी पदार्थ में धसाना या गड़ाना।

उ०—१ बार अध्रियावणी वीर किलकै वकै, धीठ कठठै घड़ दीठ धोळै। सार मांचा तणो निजड़ हरनाथ सुत, रोपियो पटाझर सीस रोळै। —विजैदांन सांदू

उ०—२ ओपम नयण धिखंतां आरण, दाखै सूर 'विहारी' दारण। हाथियां तणा जगी हवदां में, रोपूं सेल घड़ां रवदां में। —सू. प्र.

४ किसी पदार्थ का कुछ अंश या भाग जमीन के अन्दर इस प्रकार जमाना या स्थापित करना कि वह पदार्थ वहां स्थित हो जाय।

उ०—हरीया चौरी चहुं दिसां, सत व्रत रोप्या थंभ। हरि हथळेवो हरख सूं, किरत कमाई कभ। —अनुभववांणी

५ खड़ा करना, टिकाना, रोकना, ठहराना।

६ दृढ़ता पूर्वक मुकाबला करने हेतु एक स्थान पर टिकाना, डटाना।

७ बीज रखना, बोना।

८ पौधा जमीन में गाड़ना, किसी पौधे को एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान में जमाना, स्थापित करना।

उ०—उपसम तरुवर रोपइं, लोपइं मनसंदेह। मुक्ति तणउ पंथ दाखिय, राखिय त्रिभुवन रेह। —जयसेखर सूरि

९ सम्बन्ध स्थापित करना।

उ०—लोपै हींदू लाज, सगपण रोपै तुरक सूं। आरज कुळ री आज, पूंजी रांणा प्रतापसी। —दुरसो आढो

१० धारण करना, पहनना।

उ०—पोरस्स नकुळ पडव प्रमांणि, तव बधै जूसण कसण तांणि। ओपत राग हाथां अनोप, तुडतांण सीस रोपंत टोप। —गु. रू. वं.

११ मकान, भवन आदि की नींव लगाना।

रोपणहार, हारौ (हारी), रोपणियौ—वि०।

रोपिओड़ौ, रोपियोड़ौ, रोप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रोपीजणौ, रोपीजबौ—कर्म वा०।

रोपाणौ, रोपाबौ—क्रि. स. [रुपणौ व रोपणौ क्रिया का प्रे. रू.] १ स्थिर करवाना, पांव जमवाना।

२ निश्चय करवाना ।

३ किसी कड़ी या नुकीली चीज को किसी पदार्थ में धंसवाना, गड़वाना ।

४ किसी पदार्थ का कुछ अंश या भाग जमीन में इस प्रकार जमवाना या स्थापित करवाना कि वह पदार्थ वहां पर स्थित हो जाय ।

५ खड़ा करवाना, टिकवाना, रुकवाना, ठहराना ।

६ दृढ़तापूर्वक मुकाबला करने हेतु एक स्थान पर टिकवाना, डटवाना ।

७ बीज रखवाना, बुवाना ।

८ किसी पौधे को एक स्थान से उखड़वा कर दूसरे स्थान पर जमवाना, स्थापित करवाना, पौधा जमीन में गड़वाना ।

९ रखवाना ।

१० धारण करवाना, पहनवाना ।

११ मकान, भवन आदि की नीव दिलवाना ।

उ०—पछै घणौ साथ राखियौ । घणा घोड़ा लिया । गढ घातण री रांग रोपाई । भींत हूंण लागी, सु उठै खेड़ा देवत,सु भींत दीहां री करै तिसड़ी रात री पाड़ नांखै बाज आयौ । —नैणसी

१२ सम्बंध स्थापित करवाना ।

रोपाणहार, हारौ (हारी), रोपाणियौ—वि. ।

रोपायोड़ौ—भू. का. कृ. ।

रोपाईजणौ, रोपाईजबौ— कर्म वा. ।

रोपाड़णौ, रोपाड़बौ, रोपावणौ, रोपावबौ । (रू. भे.)

रोपाड़णौ, रोपाड़बौ–देखो—'रोपाणौ, रोपाबौ' (रू. भे.)

रोपाड़णहार, हारौ (हारी), रोपाड़णियौ—वि. ।

रोपाड़िओड़ौ, रोपाड़ियोड़ौ, रोपाड़्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

रोपाड़ीजणौ, रोपाड़ीजबौ—कर्म वा. ।

रोपाड़ियोड़ौ—देखो 'रोपायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रोपाड़ियोड़ी)

रोपायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ स्थिर करवाया हुआ, पांव जमवाया हुआ. २ निश्चय करवाया हुआ. ३ किसी पदार्थ का कुछ अंश या भाग जमीन में इस प्रकार जमवाया या स्थापित करवाया हुआ होना कि वह पदार्थ वहा पर स्थित हो गया हो. ४ किसी कड़ी या नुकीली चीज को किसी पदार्थ में धंसवाया हुआ, गड़वाया हुआ. ५ खड़ा करवाया हुआ, टिकवाया हुआ, रुकवाया हुआ, ठहराया हुआ. ६ दृढतापूर्वक मुकाबला करने हेतु एक स्थान पर टिकवाया हुआ, डटवाया हुआ. ७ बीज रखवाया हुआ, बुवाया हुआ. ८ किसी पौधे को एक स्थान से उखड़वा कर दूसरे स्थान पर जमवाया हुआ, स्थापित करवाया हुआ, पौधा जमीन में गड़वाया हुआ. ९ रखवाया हुआ. १० धारण करवाया हुआ पहनाया हुआ. ११ मकान भवन आदि की नींव दिलवाया हुआ. १२ सम्बंध स्थापित करवाया हुआ.

(स्त्री. रोपायोड़ी)

रोपावणौ, रोपावबौ–देखो—'रोपाणौ, रोपाबौ' (रू. भे.)

रोपावणहार, हारौ (हारी), रोपावणियौ—वि. ।

रोपाविओड़ौ, रोपावियोड़ौ, रोपाव्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

रोपावीजणौ, रोपावीजबौ—कर्म वा. ।

रोपावियोड़ौ–देखो—'रोपायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रोपावियोड़ी)

रोपियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ स्थिर किया हुआ, पांव जमाया हुआ. २ ठाना या निश्चय किया हुआ. ३ किसी कड़ी या नुकीली चीज को किसी पदार्थ में धंसाया हुआ, गड़ाया हुआ. ४ किसी पदार्थ का कुछ अंश या भाग जमीन के अन्दर इस प्रकार जमाया या स्थापित किया हुआ होना कि वह पदार्थ वहां स्थित रहे । ५ खड़ा किया हुआ, टिकाया हुआ, रोका हुआ, ठहराया हुआ. ६ दृढ़तापूर्वक मुकाबला करने हेतु एक स्थान पर टिकाया हुआ,डटाया हुआ. ७ बीज रखा हुआ, बोया हुआ. ८ किसी पौधे को एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान में जमाया हुआ, स्थापित किया हुआ. ९ रखा हुआ. १० धारण किया हुआ. पहना हुआ, ११ मकान, भवन आदि की नींव लगाया हुआ. १२ सम्बन्ध स्थापित किया हुआ ।

(स्त्री. रोपियोड़ी)

रोब–स. पु. [फा.] १ आतंक दाब ।

२ प्रताप, तेज ।

३ धाक, डर ।

रू. भे.—रौब ।

रोवणौ, रोवबौ—देखो 'रोवणौ, रोवबौ' (रू. भे.)

उ०—स्वांत को सुसांति, सांति सोवणूं करचौं । धोवनूं न कीन ताहि, रोवबूं परचौ । —ऊ. कां.

रोवणहार, हारौ (हारी), रोवणियौ—वि० ।

रोविओड़ौ, रोवियोड़ो, रोव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

रोवीजणौ, रोवीजबौ—कर्म वा० ।

रोवदार–वि. [अ+फा.] जिसकी धाक है । जिसका चहरा तेज है ।

रू. भे.—रौबदार ।

रोवियोड़ौ–देखो—'रोवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रोवियोड़ी)

रोबीलो-वि.—१ जिसका रोब हो।

२ जिसकी धाक हो।

३ जिसका चेहरा रोबदार हो।

रू. भे.—'रोवीलो'

(स्त्री. रोबीली)

रोबो, रोभो-सं. पु.—१ आपत्ति, कष्ट, तकलीफ।

उ०—१ पहली कियां उपाय, दव दुसमण आंमय दटै। प्रचंड हुवां वस वाय, रोभा घातै राजिया। —किरपारांम

उ०—२ घण खोभा लै गाळवां, पिसणां रोभा पाड़। जै सोभा जोधौ लियै, घर थोभा वण धाड़। —रेवतसिंह भाटी

उ०—३ वेरा वैरागर सागर सम सोभा, रीती गागर लै नागर तिय रोभा। धावै द्रगधारा दारा मुख धोवै, जीवन संजीवन जीवन धन जोवै। —ऊ. का.

रोमंच-देखो—'रोमांच' (रू. भे.)

उ०—रोमंच अंग घोम रूप, ब्रह्म तेज में वणं। जटा म छमंटा जडागि, आग नेत्र ऊफणं। —सू. प्र.

रोमंचणो, रोमंचवो-क्रि. अ.—१ रोमांचित होना।

उ०—१ एतला देख अचिरज हुवै, रोमंचै सुर नर सवै। सुप्रसाद कीध जै सिंघ तै, टगमग चाहै चक्खवै। —लक्ष भाट

उ०—२ जिनवर भत्ति समुल्लसिय, रोमंचिय निय अंग। नांना विधि करि वरणवुं, आंणी मनि उछरंग। —स. कु.

रोमंचणहार, हारो (हारी), रोमंचणियो—वि.।

रोमंचिओड़ो, रोमंचियोड़ो, रोमंच्योड़ो—भू. का कृ.।

रोमंचीजणो, रोमंचीजवो—भाव वा.।

रोमंचियोड़ो-भू. का. कृ.—रोमांचित हुवा हुआ।

(स्त्री. रोमंचियोड़ी)

रोम- सं. पु. [सं. रोमन्] १ शरीर पर के महीन बाल, रोआं। (अ. मा.)

उ०—१ छत्रपति हूंत सहंस गुण छाजे, वीरभद्र गण तठै विराजे। रोम जटा ऊभा विकराळा काळा रोम रोम अहि काळा। —सू. प्र.

उ०—२ सो मूरख संसार, कपट जिणां आगळ करै। हरि सह जांणणहार, रोम रोम री राजिया। —किरपारांम

उ०—३ काय निपाप करिस इम केसव, दंडवत करै तुझ दयतां-दव। रोम रोम तो नांम रहाविस, इम करतो हरि-चरणां आविस। —ह. र.

उ०—४ रोम रोम आंमय रहै, पग पग संकट पूर। दुनियां सूं नजदीक दुख, दुनियां सूं सुख दुर। —बां. दा.

रू. भे.—रां, रांम, रांमो, रंम, रु, रुं रू., रूम।

२ छेद, छिद्र।

३ शरीर के बालों के छिद्र जिनमें से बाल निकलते रहते हैं।

उ०—वध्यो बळ घी गल कंज विकास, प्रभा परिपूरण प्रेम प्रकास। हरदै हुय नांम हली हमगीर, नवी रग रोम गुनी गुण मीर। —ऊ. का.

उ०—२ अखंड एक ररंकार की, रोम रोम धुनि होय। जनहरीया जा तन लगी, ता तन जांणै सोय। —अनुभववांणी

४ जल, पाणी।

५ रूम देश।

उ०—...पवरांण भुलांण कुडक्क तोसल सिहल दमिल अरजन विल्लल पारस रास लउस हारो समोम-हिग रोम मरुग......। —व. स.

६ रूम देश में उत्पन्न घोड़ा।

७ घोड़ा।

उ०—चढै उमेद सु ओपम चंद, दिपै दळ ओरन तारल व्रंद। अभंगिय रोम हुवो असवार, दिपै चहूवांण सुकांन उदार। —सि. सु. रू.

रू. भे.—रूमी

८ हरड़, हरें, हरीतकी। (ह. नां. मा.)

९ एक द्वीप का नाम। (सभा)

रोमकंद, रोमकंदो-सं. पु.—प्रत्येक चरण में ८ सगण का डिंगल (राजस्थानी) का एक छंद विशेष जिसमें क्रमशः ६, ६, ८ और ६ वर्णों पर यति होती हैं और अन्तिम चरण के दूसरे छंद के चतुर्थ चरण में पुनरावृत्ति होती है। एक पूरे छन्द में ३२ सगण होते हैं।

रोमक-सं. पु.—१ नमक जो सांभर झील के पानी से उत्पन्न हुआ हो।

२ रोम देश या उक्त देश का निवासी।

३ ज्योतिष सिद्धान्त का एक भेद।

रोमकूप-सं. पु. [सं. रोमन् +कूपः] शरीर की चमड़ी पर के वे छिद्र जिन में से बाल निकले हुए होते हैं।

रोमकेसर-सं. पु. [सं. रोमन् +केशर या केसरं] चंवर, चामर।

रोमगुच्छ-सं. पु.—चवर, चामर।

रोमचरमा-सं. पु.—वह बर्तन जो ऊंट के चमड़े का बना हुआ होता है।

उ०—सर्वंगि सीस मूंडित बिहाल, मग लोपि जात वामांग व्याल। ध्रत पात्र रोमचरमा निहार, क्रम हीन रजक द्विज हेमकार। —ला. रा.

रोमछर-सं. पु.—१ मूर्ति।

२ शारीरिक कान्ति, शोभा।

उ०—पिलांण री साजत ऊची दीठी। तरै छांनै छै विड़ां मांहे दीठी वाइजी रै वर री सवी दीसै छै। नाक री डांडी, आंख्यां, निलाड़ डील रोमछर देखि सही कंवरजी ही छै।
—जगदेव पंवार री वात

रोमणकाच–सं. पु.—एक प्रकार का आईना विशेष।

उ०—राजा सु प्रतीहारि निवेदित मारग हूंतउ आस्थांन मंडपि प्रवेस करइ, तां आगइ किसिउ अरथ देखइ, **रोमणकाच** ढालिउ, बहुल बहल कुंकुम तणउ छडउ दीधउ,...... । —व. स.

रोमत–सं. पु.—लालायित होने की क्रिया या भाव

रोमनकैथलिक–सं. पु.—ईसाईयों का एक सम्प्रदाय तथा इस सम्प्रदाय का व्यक्ति।

रोमपट– सं. पु. यौ.—ऊन मे बना हुआ कपड़ा, ऊनी कपडा।

रोमबद्ध–वि. यौ.—रोग्रों मे बुना या बंधा हुआ।

सं. पु.—१ ऊन की बनी हुई कोई चीज।
२ ऊनी कपड़ा।

रोमभूमि–सं. स्त्री. यौ. [सं. रोमन् +भूमिः] चमड़ा, चर्म।

रोमराइ, रोमराजी–सं. स्त्री. यौ. [सं. रोमन् +राजिः या राजीः]
१ रोमों की पंक्ति, रोमावलि।
उ०—१ कंचन में सोपांन सुपेखित, रोमराइ उलसाई। आगै एक भुवन अति सुंदर, वसुधा जांणि हसाई। —वि. कु.
उ०—२ कवीसर कहै जिका सुण लैणी, पिण कठै त्रिवळी नै कठै त्रिवेणी जोइजै है। —र हमीर

रोमलता–सं. स्त्री. [स रोमन् +लताः] रोमों की पंक्ति. रोमावली।

रोमांच–सं. पु. [रोमन् +आञ्च] आनन्द, आश्चर्य या भय आदि के कारण शरीर के रोंग्रों का उभर जाना या खड़े हो जाना।

उ०—लेण थमौ विसरांम नीचगिर परवत माथै। घण पुहुपां रोमांच मिलतां कदमां साथै। गंवै खोह, सुगंध विलासण कांमणि-यां रै, मद छक जोवन पूर जतावै गण पुरखां रै। —मेघ
क्रि. प्र.—होणौ
रू. भे.—रोमच

रोमांचित–वि. [सं रोमन् +अञ्चित] जिसके आनन्द. आश्चर्य या भय आदि के कारण शरीर के रोंगटे खड़े हो गये हों, हर्षित, पुलकित।
उ०—आणद लखण रोमांचित आंसू, वाचक गदगद कंठ न वर्ण। कागळ करि दीधौ करुणाकरि, तिणि तिणि हीज ब्राहमण तणै। —वेलि
रू. भे.—रुमांचित

रोमांत–स. पु. [सं. रोमन् +अन्त] हथेली की पीठ के वाल।

रोमांतिका–स. स्त्री. [सं.] प्रायः बच्चों को होने वाला एक प्रकार का रोग विशेष जो कि चेचक रोग की तरह का होता है।
(अमरत)

रोमाळी, रोमावळ, रोमावळि, रोमावळी–सं. स्त्री [सं. रोमन्+आली, आवलि, आवली] १ रोग्रों की पंक्ति या कतार। (अ. मा, डिं. को; ह. नां. मा.)
२ पेट के बीचों बीच नाभि से ऊपर की ओर गई हुई रोग्रों की पंक्ति, रोमराजी।
उ०—सुच्छम रोमावळि सुखद, वरणी उकति विचार। सांप्रति रस सिणगार री, वेल कियौ विसतार। —बां. दा.
३ शरीर के वाल।
उ०—१ वसै तूं रोमाळी कवन, थळ खाली तुज विनां। लखां से चोचाळी कल कि, वळ साळी अज किनां। —ऊ. का.
उ०—२ रोमावळी डील री उभरी निजर आवण लागी।
—कुंवरसी सांखला री वारता
वि.—२ सुंदर, रूपमयी।

उ०—पींडळियां रोमाळियां हो जीं, वै री जांघ देवळ केरो थांम। हे गवरल, रुड़ो है नजारो तीखो है नैणां रो। —लो. गी.
रू भे.—रुंआळी, रुंवाळी, रुआमाळ, रुआमाळी, रुंआळी, रुंआवळ, रुंआवळी, रुंवाळी, रूणावळी

रोमि–देखो—'रोम' (रू. भे.)

रोयड़ौ–देखो—'रोहिड़ौ' (रू. भे.)

रोयण–देखो—'रोहिणी' (रू. भे.)

उ०—मिगसर वाव न वजियौ, रोयण तपी न जेठ। कंथा म वांधै झूपड़ौ, रहसां वड़ला हैठ। —अज्ञान

रोयणी–देखो—'रोहिणी' (रू. भे.)

रोयणीपत, रोयणीपति, रोयणीपती—देखो 'रोहिणीपति' (रू. भे.)

रोयतास—देखो 'रोहितास' (रू. भे.)

रोर–सं. पु.—१ कंगाली, निर्धनता।

उ०—१ सिर जोर खग दत संजणा, पह रोर आंसय पंजणा। भड़ जुध असतां भंजणा, रघुराज संतां रंजणा। —र. ज. प्र.
उ०—२ कवी कींत दाखै जिता रोर कापै, अनेकां कुमेरां जिता माल आपै। अपै डायजै भूप अन्नेक अत्थं, राजा ओघि पंथं चडै दासरत्थ। —सू. प्र.

उ०—३ रज रीति रहैं वंस वाट वहै, अरि थाट दहै अविग्राट इसौ। अय लाख अपै कवि रोर कपै, जगि नांम थपै क्रन भोज जिसौ। —ल. पिं.
२ दुःख, कष्ट।
उ०—खळक तारण तरण खळां खंडण खतम, रोर जण विहंडण

सुखद सरसें। सियावर तूझ सौ तुही दाखै सकौ, दूसरौ समोवड़ न कौ दरसै। —र. रू.

३ काला, श्यामवर्ण। * (डि. को.)

४ तरल हलुवा।

उ०—ग्रोगण मेटणहार, ग्रमोलख ग्रोखद इण में। गूंद घणौ गुणकार, ग्रव्यय सक्ति है जिण में। छिण में पीड़ छंटाय, हाड टूटोड़ा सांधै। वूढौ बाळक वणै, रोर जच्चा नै रांधै। —दसदेव

[सं. रवण] ५ कोलाहल, शोरगुल।

६ कोतुहल।

७ देखो—'रोड' (रू. भे.)

रू. भे.—रोरि।

रोरप्रचार-सं. पु.—दुःख, कष्ट। * (डि. को.)

रोरव-सं. पु.—१ कंगाली, निर्धनता, दारिद्रय, निघ।

उ०—कवियणां सनातन जांण नव करै, दोर रोरव तणौ हरै रहणौ। गयौ किण दिन ग्रहळ प्रथी घण गाजणौ, किसन रा पोतरा तणौ कहणौ। —कविराजा वांकीदासजी

२ देखो 'रौरव' रू. भे.।

रोरहर-सं. पु.—राजा. नृप। (डि. को.)

रोरहरणाळ-वि.—१ दुःखों को मेटने वाला।

२ दातार, उदारमना।

उ०—'वीर' तणौ नर वीर वड, तरण रूप तेजाळ। 'चंद' प्रवाड़ा जग चवौ, हुवौ रोरहरणाळ। —किसनजी दधवाड़ियौ

रोरांकुर-सं. पु.—कष्ट, दुख।

उ०—वळदां गाडां सळ पाडां पर बोरा। छोटा डोरांतर रोरांकुर छोरा। करणा दरसावै केटा वरकड़ियां। जूती फाटोड़ी वांधी जेवड़ियां। —ऊ. का.

रोरि—१ देखो 'रोर' (रू. भे.)

उ०—भगवती ग्रावौ भांई, मूझ मदत स्रीमहमाई। नित पढै प्रहस मे नांम, त्यां रोरि भंजि विरांम —मा. वचनिका

२ देखो 'रोळी' (रू. भे.)

रोरी—देखो 'रोळी' (रू. भे.)

उ०—वीणा डफ महुयरि वंस वजाय ए, रोरी करी मुख पंचम राग। तरुणी तरुण विरहि जण दुतरणि, फागुण घरि घरि खेलै फाग। —वेलि

उ०—२ ग्रबीर गुलाल उडावत रोरी, डफ दुंदभी वाजत थोड़ी थोड़ी —मीरां

रोलंव-सं. पु. [सं. रोलम्ब] १ भौंरा, भ्रमर। (ग्र. मा; नां. मा. ह. नां. मा.)

उ०—१ रवै लार गुंजार रोलंव राजी, भगांणां भड़ां रोव ग्रोलव भाजी। —वं. भा.

उ०—२ हर समरौ होसी हरी, जीते जम रौ जंग। कर उदिम रोलंव करै, भमरौ कीटी भ्रंग। —र. ज. प्र.

रोळ, रोल-सं. स्त्री.—१ ध्वनि, ग्रावाज।

उ०—१ घुरजाळ खड़त सँभर घणीह, तिम वजत रोळ घूवर तणीह। —पा. प्र.

उ०—२ त्यां पांतरै वडौ छत्र पड़ियौ, वोटण गढां ग्रथग जळ-वोळ। नेवर रोळ किया ग्रगनैणी, रांणै कियौ न पाखर रोळ। —राणा मांडण रौ गीत

२ स्त्रियों के पैरों में धारण करने का छोटे घुंघरुदार एक ग्राभूषण विशेष।

३ दल, समूह।

उ० —१ पार विहुणा पंखिया, राजहंस ना रोळ। उंचा नीचा उडता, झाझा करइ झकोळ। —मा. कां. प्र.

४ उवटन, लेप।

उ०—ग्रागळि भेटिइ उरवसी, घसी मु चंदन घोळ। को सज्जन कोडे करई, कुंकुम केरा रोळ। —मा. कां. प्र.

५ युद्ध।

उ०— हकां रोळ दरोळ दळ, भमण लगौ भूगोळ। चौळ नजर 'पातल, चढै. हाहुल सिंघ हिलोळ। —किसोरदांन वारहठ

६ चारों ग्रोर उपद्रव व फसल को हानि पहुंचाने वाला पशु, हरहाया।

७ चिल्लाहट, शोरगुल।

८ भय, ग्रातंक, डर।

९ उपद्रव, उत्पात।

वि.—१ ग्रावारा फिरने वाला।

उ०—रोळ व्है डफोळ डावाडोल में रह्यो। मांनगो ग्रमोल गोळ मोळ में रह्यो। —ऊ. का.

२ वदचलन, चरित्रहीन।

४ उत्पाती, उपद्रवी

उ०—१ रोळ विगाडे राज नूं, मोळ विगाड़ै माल। मनै मनै सरदार री, चुगल विगाड़ै चाल। —वां. दा.

५ देखो—'रौळ' (रू. भे.)

उ०—वोखौ ग्राय ग्रभागै वैठै, रस पागै प्रिय रोळ। मूरख रै लागै तन मिरचां, त्यागै तुरत तमोळ। —ऊ. का.

रोळगिदोळ-सं. स्त्री.—१ वने वनाए कार्य या पदार्थ को नष्ट करने या मिटाने की क्रिया या भाव।

उ०—चांद किरण मिळ पवन सूं, टीवा करी किलोळ। पीळौ बादळ खोजळौ, लूंग्रा रोळगिदोळ। —लू

रोलड़-सं. पु.—१ उर्वरा शक्ति बढाने हेतु कुछ समय बिना जुताई बुवाई के खेत को छोड़ने की क्रिया।

२ उक्त प्रकार से परती छोड़ी हुई जमीन या खेत। इजराग्र

रोळण, रोळणौ-वि. [स्त्री. रोळणी] १ विध्वंस करने वाला, संहार करने वाला, मारने वाला।

उ०—१ नमो पहु सायर बांधण पाज नमो रिपु-रावण-रोळण राज। —ह. र.

उ०—२ रहच खळां दळ रोळणा वीर उभै वरियांम। 'किचनर' 'पातल' रै करां, लंदन तणी लगांम। —किसोरदांन बारहठ

रोळणौ, रोळवौ, रोलणौ, रोलवौ-क्रि. स.—१ बजाना, ध्वनि युक्त करना।

उ०—रमझम पाखर रोळती, घम घम पौड़ां घम्म। धम धम पावू धीरपै, खम खम घोड़ी खम्म। —पा. प्र.

२ प्रहार करना।

उ०—१ तिलगां तणां घण सिरतोड़, रुक घणां सिर रोळै। कैतां पाड़ पोढियौ कमधज, वांका थाट विरोळै। —बुधजी आसियौ

३ गमा देना, मिटाना, नाश करना।

उ०—जीत दळ सभि हल्ले राजा, वाजतां रिणजीत वाजा। राव 'ईंदो' मांण रोळै भीम गयंदां हूंत भेळै —सू. प्र.

४ मारना, संहार करना।

उ०—१ खरां हेमरां भड़ां 'पीथल' चढे खेडिया, दुरत गत घेरियां फिरै दोळै। रूकड़ां पांण ऊफडांखिया रोळिया, धोळिया बकाया दीह धोळै। —दलो मोतीसर

उ०—२ रोळंत रिमां घड़ रामचंद। 'संग्रांम' सुत्त सूरत कंद। —गु रू. बं.

उ०—३ 'जैतमाल' अण पाल बींद मेवाड़ तणी धड़। सिवियांणी सोझति 'भांण' रोळियां भडां घड। —गु. रू. बं.

५ फ़ेंकना।

उ०—आरण के स्रंग पार होय जावै है। फूटे घड़ आफळते है ज्वाळानळ ज्यां जळते है। रूई के पहल ज्यों स्रंगू पर चढाइ रोळै। छूटे हंस पड़े जाणै मंजीठ बोळै। —सू. प्र.

६ गिराना, डालना।

उ०—झूंटि झूंबिय महितलि रोली, काढिव वसन कीध हीयाली। अंतरालि थई राक्षिसि राखी, तीणइ हुई हिव होग्रत चाखी। —सालिसूरि

७ बिखेरना।

उ०—हार त्रोडती, वलय मोडती, आभरण भांजती, वस्त्र गांजती, किंकणी कलापु छोडती, माथउ फोडती वक्षस्थल ताडती, कूंतल कलाप रोलती सकज्जल वाष्प जलि कंचुक सींचती। —व. स.

८ आच्छादित करना, ढकना।

उ०—धूलि नइं तिमिर अंबर रोलिउ, सूरय बिंब मसि महि कि बोलउं। अस्ववार फिरतां न सूझइं, ए रणांगणि किसी परि भूझइं। —सालि सूरि

क्रि. अ.—९ भयभीत होना, कंपायमान होना।

उ०—तेज प्रभूता नमो गुमानसिंह तण, रोस घण छ खंड खूरसांण गोळै, जावता चढै दादा जियां रचण जुध, आविया वचण वे तूझ ओळै। —महाराजा मांनसिंह रौ गीत

१० लुढकना, ढुलकना।

उ०—धूलि मिलीय झलमलीय सयल दिसि दिणयरु छाईउ गयणि दुरहि द्रम द्रमीय सुरवरि जसु गाईउ पाडइ चिंध कवध बंध धर मंडलि रोलइ वांणि विनांणि किवांणि केवि अरीमण धंघोलइ। —सालिभद्र सूरि

११ पतन होना, गिरना।

उ०—दैवु न गिणई दैवु पुण्य नइ पापु संतापु सुयणह करई पुण्य-हीन जिम राय रोलइ —सालिभद्र सूरि

१२ तलवार, भाला आदि शस्त्र को हाथ में पकड़ कर घुमाना।

उ०—ठेलहतौ गजां है-थाट लागा अटळ, रीठ वागां खगां दुवै राहां। जोध 'जसराज' पूगौ भली ब्रूजवौ, सेल रोळै दुहूं पातिसाहां। —गु. रू. बं.

रोळणहार, हारौ (हारी), रोळणियौ—वि.।

रोळिग्रोड़ौ, रोळियोड़ौ, रोळयोड़ौ—भू का. कृ.।

रोळीजणौ, रोळीजवौ—कर्म, भाव वा.।

रोळवणौ, रोळववौ, रौळणौ, रौळवो, रौळवणौ, रौळववौ—रू. भे.

रोळदट, रोळदट्ट-सं. स्त्री.—१ अव्यवस्था।

उ०—करै न संका कोय, गांव-धणी संभड गिणै। रेत बराबर होय, रोळदट्ट में राजिया। —किरपारांम

२ गफलत, व्यर्थ।

उ०—जंगां में अढंगी छौ छटा में पाराथ जेहो, माथै राव लीधौ रोळदट्टां में मथोग। छत्री बळूतेस खळां थटां में हकालणौ छौ, जिको सेज सट्टा में न भांजणौ छौ जोग। —रामकरण मेहड़

३ असावधानी।

४ खेल, तमाशा, हंसी मजाक।

रोलर-सं पु.—१ सड़क पर कंकर व मिट्टी दबाकर सड़क को समतल करने वाला बेलन जो खींचा या इंजन लगाकर चलाया जाता है।

३ छापे की मशीन में वह बेलन जिससे अक्षरों पर स्याही लगती है ।

रोळरिगटोळ, रोळ-रिगटोळी—१ मखौल, हंसी मजाक ।

उ०—सारी दिन धड़ै, गप्पां मारै घर सागै-सागै आयां-गयां री रोळ-रिगटोळी तथा गि-गि ही करतां नी संकै । —दसदोख

रोळवणौ, रोळबबौ—देखो—'रोळणौ रोळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ घड धडण गाचइ, वदन वाचइ, पड़इ संटोसंट । हरि कोप कीधूं जइत लीधूं रोळव्यां दणसंट । —रुकमणी मंगळ

उ०—२ जमदृढ राग करै जगरांण, पळभख सावळ रोळवि पांण । छूटै असि तांम चढ़ै छक छोह, लियौ तह दात वनावण लोह । —सू. प्र.

रोळा, रोला-सं. पु.—१ स्त्रियों के धारण करने का आभूषण विशेष । (व. स.)

रोळागार, रोळागारो-वि.—१ कलह प्रिय, झगड़ालू ।

रोळाटो-स. पु.—१ हुल्लड़, शोरगुल ।

उ०—सहर में रोळाटो । हिंदू मुसलमानां रो दगो कोनी कोनी । अल्लाहो अकबर कै'र मुसलमानां एक हिन्दू री दुकान में लाय लगादी । —गरनगांठ

रोळारोळ, रोळारोळि-सं. स्त्री.—१ भय, आतंक या किसी प्रकार की घबराहट, आदि के कारण भीड़ या जनसमूह में होने वाली हलचल, खलबली ।

उ०—पहर हेक लग पोळ जड़ी रही जोधांण री । गढ में रोळारोळ भली मचाई भीमड़ा । —भीमजी रौ दूहौ

रोळि, रोळी, रोलि, रोली-सं. स्त्री.—१ गेहूं की फसल को लगने वाला एक रोग विशेष जिससे गेहूं की 'नाल' में लाल बुकनी जैसा चूर्ण निकलता है ।

उ०—कदै तो ठाकर लाटो लाटग्यो, कदै लाटग्यो बो'रो । कदै तो बैरी दावो पड़ग्यो, कदे आयगी रोळी । —चेतमांनखा

२ विघ्न, बाधा ।

उ०—राज करम में पड़गी रोळी, मनूं गरम मरजादा मोळी । भड़ी सरम फुला री भोळी, हुयगी परम धरम की होळी । —ऊ. का

उ०— २ पालटी वेसि रहियौ वेसि, घण घणां मीत छुटा घरा । घातती रोळि आई घरै, जीव लेंण गोली जुरा । —सुरजनजी

३ भ्रम, संभ्रम ।

उ०—जपइ ए रमणि सिरोमणि रुकमणि रांणीय रोलि । रहि रहि वहिनि ऊतावली पावलि माहि म ढोलि । —जयशेखर सूरि

४ हल्दी और चूने के योग से बना एक प्रकार का चूर्ण जो पवित्र माना जाता है ।

रू. भे.—रोरि, रोरी ।

रोळो, रोलो-सं. पु.—१ एक छंद विशेष जिसके चारों चरणों में ११+१३ यति से २४-२४ मात्राएं होती हैं ।

२ 'हरिपिंगल' के अनुसार एक गीत विशेष ।

३ देखो—'रोळी' (रू. भे.)

उ०—१ कुण्यो गांमां आवगो, दरै न धव रोळा । गिळवां में ठूंठ्या पड़ै, पाळा दिन धोळा । —रू

उ०—२ पसंग पाराजि गुज्ज पताप, रोळा नभि मेलियो मारवे राग । —सू. प्र.

उ०—३ जोधपुरी मिसल रोळो पर सवार ढाई हजार मेड़तियां रा मारवाड़ रै लोगां पर धावा ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

रोवण-वि.—१ रोने वाला, रुआंसा ।

सं. पु.—१ रुदन, रोना ।

रोवणधन-वि.—१ कायर, डरपोक ।

रोवणकाळो, रोवणकियो, रोवणको-वि.—१ रुआंसा, रोने जैसा ।

उ०—राजाजी तो बोलाडो करनै होकरी रा दम भरण लागा । रोवणकाळा होय केवण लागा-थारी मौसरी माय हूं. था यांरयां मूं किड़ छुड़ायो । —फुलवाड़ी

उ०—२ सीवरो छनगाळिओरो यो कण गुणां में छोटो-मोटो गांवड़ो गोद न्हाखियो । सेवट रोवणकाळो होय बापजी नै कह्यो-अठै तो रिपिया है ई कोनी । —फुलवाड़ी

२ रोने वाला, रुदन करने वाला ।

३ जो शीघ्र रो देता हो ।

रू. भे. रोवणो

रोवणो-वि.—१ रोनेवाला, रुआंसा ।

सं पु —१ रोने की क्रिया या भाव, रुदन, रोना ।

उ०—भोला की हठ ठाकुरां, रोळा हेकन राह । नेह रहीजे रोवणो, देह सहीजे दाह । —पी. म.

२ दुःख, कष्ट, तकलीफ ।

उ०—'बाबो' म्हारै मांमो देगने थोड़ो मुळकियो । पण दो ग्रेक सेंनारा करनै कैवण लागो आ छळगारी माया इणी भांत छळिया करै । उणरै झीणा छळ रो पतो पड़ जावै तो पछै रोवणो ई किण बात रो । —फुलवाड़ी

रोवणो, रोवबो-क्रि. अ. [सं. रोदनम्-प्रा. रोग्रन] १ कष्ट से पीड़ित व्यक्ति का ऐसी स्थिति में होना कि उसके नेत्रों से आंसू बहने लग जाय । रुदन करना ।

उ०—१ वा विधवा सोनारी मूंडा सूं कैयनै तो कीं नी दरसायो ठळाक-ठळाक रोवती रोवतो सगळी सोनो ग्रेकट करनै भतीजां रै

सांमी कोपरियां री ढिगली रै उनमांन खिड़क दियौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ भूवा री अेक खोटी आदत ही के वा मरियोड़ा धणी री याद आवतां ई रोवती घणी। उणरा नांम नै भूरती। —फुलवाड़ी

२ वक्षस्थल पर मुष्ठिका प्रहार करते हुए रोना, विलाप करना।

३ किसी प्रकार के कष्ट, क्षति, हानि के लिए दुःखी होना।

उ०—माजी रोवै मांय, वापजी रोवै वारै। भाई रोवै भला, सुणै नही किणरै सारै। वद वद कड़वा वैण, सैंण रोवै सिर खावै। दुसमण ताली देत, हंसै जीवै हरखावै। जिण अमल कियौ देखौ जुलम, कांमण रोवै कांमनै। गांव गिणैं नही गेले नै, ज्यूं गेलौ गिणैं न गांम नै। —ऊ. का.

४ किसी बात पर कुढ, चिढ कर इस प्रकार की शक्ल बनाना कि मानो बच्चे की तरह वैठ कर रोता हो।

रोवणहार, हारौ (हारी), रोवाणियौ—वि.।

रोविओड़ौ, रोवियोड़ौ, रोव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

रोवीजणौ, रोवीजबौ—भाव वा.।

रोअणौ, रोअबौ, रोणौ, रोवौ—रू. भे.।

रोवाकूको – जोर २ से रोना, फूट २ कर रोना।

उ०—गोपाळ ज़ोर-सूं हेलो मारियो–'काकाजी' डैण आंखियां खोली अर पाछी सदा री वास्तै मीच ली। घर में रोवाकूको मचग्यो। —वरसगांठ

रोवाड़णौ, रोवाड़बौ—देखो 'रोवाणौ रोवावौ' (रू. भे.)

उ०—तरै राठौड़ प्रिथीराज कूंपावत जैतमाल जैसावत नूं कह्यो-तू मत रोवै। परमेस्वर कियौ तौ हूं कूंपा रै पेट रौ जो चद्रसेन नू रोवाड़ूं। —राव चद्रसेण री वात

रोवाड़णहार, हारौ, (हारी), रोवाड़णियौ—वि.।

रोवाड़िओड़ौ, रोवाड़ियोड़ौ, रोवाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रोवाड़ीजणौ, रोवाड़ीजबौ—कर्म वा.।

रोवाड़ियोड़ौ–देखो—'रोवायोड़ौ, (रू. भे)

(स्त्री. रोवाड़ियोड़ी)

रोवाणौ, रोवावौ—१ ऐसा काम या कार्य करना जिससे कोई रोने लग जाय।

२ दूसरे को रोने में प्रवृत करना, रुलाना।

रोवाणहार, हारौ (हारी), रोवाणियौ—वि०।

रोवायोड़ौ—भू० का० कृ०।

रोवाईजणौ, रोवाईजबौ—कर्म वा०।

रोआणौ, रोआवौ, रोवाड़णौ, रोवाड़वौ—रू० भे०।

रोंस–सं. पु. – १ वैभव, ऐश्वर्य।

उ०—भांमणि रा सुकुमार भुज, साहव गळै मुहाय। जांण नाळ जळजात रा, कांम पताका काय। कांम पताका काय, उदै जै अंकड़ा। राजस तजि चित रोंस क सोक्यां संकड़ा। —वां. दा.

२ सुख, आराम।

३ देखो 'रोस' (रू. भे.)

रोसंग—देखो 'रोस' (रू. भे.)

उ०—१ सझि थाट चढिया सूर, रोसंग अंग गरूर। अकवर वहादर आय, जुध कीध वोम जगाय। —सू. प्र.

उ०—२ 'सांवत' रौ सुरतांण, तांम वहसै खग तोलै। रग लाल रोसंग, वोळ लोयण करि वोलै। —सू. प्र.

रोसंगी—देखो 'रोखंगी' (रू. भे.)

रोस–सं पु. [सं. रोष] १ कोप, क्रोध, गुस्सा। (अ. मा.)

उ०—१ कर प्रगट दोस खंडण करूं, धीठ रोस मत धारज्यौ। आज रौ वखत भूंडौ अमल, वडपण राज विचारज्यौ। —ऊ. का.

उ०—२ कर सिलांम त्रय वार, तांम आलम्म महातप। ओप जोस असमांण, वधे फिर रोस महावप। —रा. रू.

२ क्रोध जोश आदि से होने वाली नेत्र की ललाई, उवाल, उफान।

उ०—१ नवहत्थो मत्थो वडो, रोस भटक्कै रार। ओ कूंभाथळ ऊपरा, हाथळ वाहणहार। —वां. दा.

उ०—२ अत कोप मुखां,चख रोस चडै। झळ आग लगी, फिर दूंग झड़ै। —रा. रू.

उ०—३ अपनी कवांन आलमसा हाथ दीनी, डाढी नोस हाथ दीनी रार रोस भीनी। —रा. रू.

३ कुढन, डाह, इर्ष्या।

४ वैर, शत्रुता, दुश्मनी।

५ जोश, आवेग।

उ०—रावता रोस वाहंत रुक, इक इक्क घाव दोय दोय टूक। —गु. रू. व.

६ फोड़ा फुन्सी आदि का जोश में आना, पीड़ा का बढना।

७ खुशी, हर्ष।

उ०—१ वसता हरिया वाग विच, होती रोस हजार। वसिया ऊंहीज वांकला, माढू आय मजार। —वां. दा.

८ मकान के भीतर की ओर दीवार में चारों ओर अथवा द्वार पर लगने वाला वह लवा चौड़ा मोटा पत्थर जिसके नीचे तोडी भी लगी रहती है।

वि. वि.—वालकोनी प्राय: इसी को कहते हैं।

९ प्रकाश, रोशनी।

उ०—रात पड़यो जद आंतरो, भूल्यो सारा दोम। पीळोपग मुख रौ, गयो सूरज मागी रोस। —लू

रू. भे.–रोख—अल्पा., रोमो

मह. रू. भे.—'रोसांण'

रोसणो—देखो 'रिसांणो (रू. भे.)

उ०—१ हमै सारण सारा **रोसणो** भंजावण नूं भेळा हुवा । नै पांतियां नांख गोठ जीमिया पीछै मलकी खनै आदमी मैलियो ।
—द. दा.

उ०—२ तद ऊमादे कह्यो रावजी भरमल रै वास पधारो मैं सूं कोई कांम नहीं । इहां आप, मांहे रावजी ऊमादे **रोसणो** हुवो ।
—ऊमादे भटियांणी री वात

उ०—३ सैंणा सेती **रोसणो,** असैंणां सुं गूझ । सांम संनेही नां कीया, औरां रह्या अळूझ । —हरिरांमदास महाराज

रोसणो, रोसवो—१ तंग करना, कष्ट देना ।

उ०—गरथ लेत गोसैह, रात दिवस **रोसै** रयत । मांय मांय मोसैह, मुनक्षी खोसै मुरधरा । —ऊ. का.

उ०—२ रेण लई विण कुटंब **रोसियां,** हुवो सीहायत तेण हर । सत नह 'रहचिया' समहर, 'कळै' हरै भारथ कर ।
—सिढायच किमनो

२ बांधना, कसना ।

३ कोप करना, क्रोध करना ।

४ मारना, काटना ।

रोसधर–वि. [स. रुष+घर] १ कोप करने वाला, रोस करने वाला ।

सं. पु.—२ इन्द्र (डि. को.)

२ वह मकान जिसमें 'रोस' लगे हुए हों ।

रोसन–वि. [फा. रोशन] १ जलता हुआ, प्रदीप्त ।

३ वह (भवनादि) जिसमें खूब चहल-पहल आनंद मंगल हो ।

४ यशवान, कीर्तिवान ।

५ प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर ।

६ प्रकट, जाहिर, विदित ।

रू. भे.—रौसन ।

रोसनचौकी–स. स्त्री. [फा. रोशनचौकी] १ सहनाई नामक वाद्य समूह ।

२ नफीरी नामक वाद्य ।

रोसनदांन–स. पु. [फा. रोशनदान] १ कक्ष (कमरा) की ऊपर की दीवार में बना हुआ छोटा खुला स्थान जिसमें से प्रकाश और पवन आता हो ।

रोसनाई—देखो 'रुसनाई' (रू. भे.)

उ०—१ इतरा में **रोसनाई** री वखत महाराज जयसिंघ जी पधारया । —महाराज जयसिंह आमेर रा धणी री वारता

उ०—२ इतरा में **रोसनाइ** हुई, बडारण उठ मुजरो कियो ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

रोसनी–सं. स्त्री. [फा. रोशनी] १ उजाला, प्रकाश ।

२ मांगलिक अवसरों पर बहुत से दीपक जला कर किया जाने वाला प्रकाश ।

३ चिराग, दीपक ।

४ एक प्रकार के शहतूत ।

उ०—कमला रेसमी नारंगी पैवंदू का हूनर अदभूत । **रोसनी** हमरांनी सुरखानी सहतूत । —सू. प्र.

५ देखो—'रौसनी' (रू. भे.)

रोसांण देखो—'रोस' (मह. रू. भे.)

उ०—वे वे कवांण भूथांण वंध, असमांन छिवत **रोसांण** अंध । चख मछी रंध्र छेदे चकास, उडता विहंग वेधे अकास । —वि. सं.

रोसाग–वि. [सं. रोष+अग्नि] १ जोशीला, ओजस्वी ।

उ०—माचै खाग झाटां राचै तंवाई छ खंडां माथै, रत्रां आट-पाटां नदी वहाई **रोसाग** । पाथ थाटां जंग रूपी कुंवांरां नवाई पाणां, सत्राटां वेढियो थाटा सवाई 'सोभाग' । —सूरजमल्ल मिश्रण

रोसाजळ–वि.—पूर्ण आवेग युक्त, जोशपूर्ण ।

उ०—मुणै वैण खग तोल, सेस उठ्यो **रोसाजळ** । करमाणंद परधांन, आय दाढी हाथोगळ । ऊसस कर आछटै, वीर पायको वकारै । साथ लियां सांवलां, पाल गूंजवै पधारै । —पा. प्र.

रोसानळ–सं. पु. [सं. रोष+अनल] १ ऐसा विकट या भयंकर क्रोध जो अग्नि की तरह नष्ट कर देता हो । क्रोधाग्नि ।

रोसारी–वि. [सं. रोष+अरि] १ शत्रु दल पर कोप करने वाला । क्रोध वाला ।

उ०—मो दळ सिंघ समांन, रवद भांजण **रोसारी** । अहुर 'अमर' आवियो, जांण तन पक्खरधारी । —रां. रू.

२ जोशीला, वीर ।

उ०—देख मुगळ अवदल्ल, फौज अणाचल्ल अफारी । हांक कांम पूरवा, 'रांम' वळियो **रोसारी** । —रा. रू.

रोसाळ, रोसाळो—१ क्रोध वाला, क्रोधी ।

उ०—तुड़तांण पांण कांमा तजंत, जै रांम रांम जीहा जपंत । **रोसाळ** हुआ विकराळ रीस, पडिया लग वाहै दांत पीस ।
—गु. रू. बं.

२ तेजस्वी, पराक्रमी ।

उ०—२ चखचोळ माळ विकराळ चूंच, कळ चाल प्रगट दाढाळ कूंच । **रोसाळ** मिळै ग्रीखम रसम्म, चिता विडाळ नाहर चैसम्म ।
—वि. सं.

उ०—२ कुरवंसी कर चाळौ, रच रोसांलां, भीठ वडाळां भोपाळां। रिळिया रिणताळां, कट किरमाळां, सीस भुजाळां सूंडाळां।
—भगतमाळ

रोसावणौ, रोसाववौ—क्रि. स. [रोसाणौ क्रि. का. प्रे. रू.] १ मरवाना, कटवाना।

उ०—वकरिया रोसावै कूकड़ा कटावै अर दारूड़ी-मारूड़ी तौ उडती ही रंवै है। —दसदोख

२ बंधवाना, कसवाना।

३ क्रोध करवाना।

रोसावणहार, हारौ (हारी), रोसावणियौ—वि०।

रोसाविग्रोड़ौ, रोसावियोड़ौ, रोसाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रोसावीजणौ, रोसावीजवौ—कर्म वा०।

रोसिया-सं. स्त्री.—चौहान वंश की एक उपशाखा।

रोसियौ-सं. पु—चौहान वंश की रोसिया शाखा का व्यक्ति।

रोसीलौ, रोसेल, रोसैल-वि. (स्त्री. रोसीली, रोसेली) १ जोशवाला, जोशीला।

२ निर्भय निर्भीक, निडर।

उ०—१ जांनकी नायक जंग में, रोसेल वीरत रंग में। विरदैत जस रथ धमळ वंका, निमो दसरथनंद। —र. ज. प्र.

२ क्रोधीला, क्रोधी।

उ०—सुख हित स्याळ समाज, हिंदू अकबर वस हुवा। रोसीलौ मृगराज, पजै न रांण प्रतापसी। —दुरसौ आढौ

३ तेजस्वी, पराक्रमी।

रोसौ—१ देखो 'रोस' (रू. भे.)

उ०—१ में मारै हाथे कियो, केहो कीजे सोसो रे। दोस जिको मुझ वचन नो, कीजै किणसु रोसो रे। —प. च. चौ.

उ०—२ सखी री आयो महीनो अब पोसो रंग रमै सहु तजि रोसो। दीनो मुझ जादव दोसो, सवलौ तिण कारण सोसो हो लाल। —ध. व. ग्रं.

रोह-सं. पु.—१ रास्ता, मार्ग।

[सं. रोध] २ रोक, रुकावट।

उ०—१ जांणीय दुरयोधनि वाहु ग्राह्या, रहइं किमइ ते तुरिया न साह्या। किरी रह्या राउत रोह मांडी, जाइ जिसिइ अरजन द्रेठि छांडि। —सालिसूरि

उ०—२ खुरसांण लंक पती खहण, खेध वेध वूहा खडग। पतिसाह दळां पाधर हुग्रो, राड रोह मुर मास लग। —गु. रू. बं.

रोहज-सं. स्त्री.—१ नेत्र, नयन। (डि. को.)

रोहड़ – देखो 'रोहिड़ो' (मह., रू. भे.)

उ०—रांवण रांग रतांजणी, खणी नंइ रुद्राख। रूक रुदंती रायसली, रोहड़ रोहिणि लाख। —मा. कां. प्र.

रोहण-सं. पु. [सं. रोहणः] १ वीर्य, शुक्र।

२ देखो 'रोहणगिरी'

उ०—१ खिसतां निज खांण थी, रयण कहै सांभलि रोहण। अठै अम्हैं उपना, महिर थारी मन मोहण। —ध. व. ग्रं.

उ०—२ धारा धरस्य धारा संख्या, भूतले रेणुका कण ना समुद्रे नीर विंदु संख्या, रोहणे रत्न संख्या न। —व. स.

३ देखो 'रोहिणी' (रू. भे.)

उ०—१ रोहण तपै न मिरगला वाजै, आदरा अणचित्या गाजै। —अग्यात

उ०—२ रोहण वाजै मिरगला तप्पै, राजा भूंझै परजा खप्पै। —अग्यात

उ०—३ अदीतवार घटी ३३/१० रोहण नक्षत्र २६/१६ रात्र गत घटी ५/० समयो माराज स्री अनुपसिंघजी चद्रावत रुखमांगदे जी रा दोहिता माजी री नाम कमळादे। —द. दा.

रोहणगिर, रोहणगिरि-सं. पु. [सं. रोहणः+गिरि] एक पर्वत का नाम जहा पररत्न माणिक्य आदि प्राप्त होते हों।

उ०—असंख्य साहणि चालते हूंते समुद्रसलिल सलसल्यां, घाट घमघमी घाघरयाल वाजी, रथीक राउत तणे रसरसाटि रोहणगिरि रणरण्या। —व. स.

उ०—२ भूप जड़ावै मुकट मभ, रोहणगिर उतपत्त। निस दीपक प्रतिनिधि रतन, प्रभा अपूरब भत्त। —वां. दा.

रोहणचल—१ देखो 'रोहणीगिरि' (रू. भे.)

रोहणदे-स. स्त्री. [सं. रोहणदेवी] १ चन्द्रमा की पत्नी रोहिणी।

उ०—१ वाड़ी वाड़ी भवरौ भिणकै रे सुरंगलो, चद्रमाजी री पाग बिराजै रे सुरंगलौ सुरंगलौ। रोहणदे घिर घिर निरखै रे सुरंगलो सुरंगलौ। —लो. गी.

उ०—२ रांणी रोहणदे हींडण वैस्या धरती न झेलै भार। चंद्रमाजी अै ललकारो दियो, ग्रो हिंडौ गयो गिगनार। —लो. गी.

रोहणद्रुम-स. पु. [स. रोहणः+द्रुमः] १ चंदन (डि. को,)

रू. भे.—रोहिणीद्रम

रोहणधव-सं. पु. [सं रोहिणधव] १ चद्रमा, चाद। (अ. मा., ह. नां. मा)

रोहणप-सं. पु. [सं. रोहणप] १ चंदन।

रोहणाचळ—देखो 'रोहणगिरि'

उ०—१ हा सोभाग्यभवन सस्नेहमन, हा प्रियसर्वजन, हा परोप-

कार वत्सल गुणरत्न रोहणाचल, हा जगद्भूसण गतदूसण। —व. स.

उ०—२ जिसउ नवा कल्पवृक्षनउ पोउ हुइ, रोहणाचल नी भूमि जिसउ रत्ननउ अंकुरउ हुइ। —व. स.

रोहणि—देखो 'रोहिणी' (रू. भे.)

उ०—निसिपति नारी मोहनगारी, रोहणि नइ रंग रातौ। प्रभू करणी परणि तजि तरुणि, अदभुत गुण करि मातौ। —वि. कु.

रोहणियाल–वि.—शत्रुदल को रोकने वाला।

उ०—रोहणियाल सझै रायांगुर, घाये असुर उतारै घांण। अवळा वाल न घारै आडी, खूंदाळम घातै घमांण। —रांणा सांगा रो गीत

रोहणी—देखो 'रोहिणी' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

रोहणीजोग—देखो 'रोहणीयोग' (रू. भे.)

रोहणीवर—देखो 'रोहिणीवर' (रू. भे.) (ना. डि. को.)

रोहणीसिद्धयोग—देखो 'रोहिणीयोग'।

उ०—आलमगीर रौ जन्म स. १६७५ मिगसर वद १ इस्ट १८/३० रोहणीसिद्धयोग। —द. दा.

रोहणेय—देखो 'रोहिणेय' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

रोहणौ, रोहवौ–क्रि. स.—१ रोकना अवरुद्ध करना।

उ०—२ रोहे 'पातल' रांण, जां तसलीम न आदरै। हिंदू मुस्सलमांण, एक नहीं तां दोय है। —सूरायचजी टापरियौ

२ मारना, संहार करना।

उ०—१ कळू मांझ हेम पंथ डोहिता सुभद्रा काळी, निहाळी सोहिता नेत्र जाळी खळां नांम। असुरांण रोहिता दोहिता देवी 'वेद' वाळी, नोहिता अभेद वाळी डाढाळी नमांम। —नवलजी लाळस

उ०—२ महाराज आजांनभुज रांम रघुवंसमण, राड़ भिम जूथ अवनाड़ रोहै, गढां गह गंजणा। वार निरधार आधार आधार आलम वर्णे, भिड़ै दळ भंजणा। —र ज. प्र.

३ घेरना, आवेष्टित करना।

उ०—'सोमा' हर तिलक सींचतौ सावळ, करतौ खग दीना कर। रिण रोहियौ घणौ राठोड़ै' चौवौ एकलवाड़ चर। —दुरसौ आढौ

रोहणहार, हारौ (हारी), रोहणियौ—वि०।

रोहिओड़ौ, रोहियोड़ौ –भू० का० कृ०।

रोहीजणौ, रोहीजबौ—कर्म वा०।

रोहतास—देखो 'रोहितास' (रू. भे.) (अ. मा., ह. ना. मा.)

रोहर—देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

उ०—१ प्रम सीस न प्रांमै पळ नह पंखण, रोहर न धर पर रड़ियौ। ईसरदास तणौ वप आहव, आंमग खग धारां अड़ियौ। —ईसरदास राठोड़ रो गीत

रोहराळ—देखो 'रुधिर' (मह. रू. भे.)

उ०—झाळ बंबाळ 'ईसर' तणौ झळहळै, अळवळै वळै दीजै उथाळा। खाळ रोहराळ गाळां विचै खळहळै, झळहळै गराळां बीच भाला। —उम्मेदसिंह राठोड़ रो गीत

रोहलौ–स. पु.—रग विशेष का घोड़ा।

उ०—रोझौ नीलौ गंगाजळ हंसला नैण काजळ। अस सेराहा अरून खेग रोहला हाबूब। —गु. रू. बं.

रोहवाल–स. पु.—एक प्रकार का घोड़ा।

उ०—तेज सुरंग गव्हरा कारातोरा गुरमाणा भयणा ह्याणा रोहवाल रुढमाल तोरका मदकोरा पीलूआ भाडिजा उराहा सेराहा येकाण। —व. स.

रोहि–स. पु. [सं. रोहिः] १ मृग विशेष।

२ वृक्ष।

३ बीज।

४ देखो 'रोही' (रू. भे.)

रोहिड़ौ–सं. पु.—१ एक वृक्ष विशेष।

उ० —अरक आउल तिणासिरा, सिम रोहिड़ौ रोहिण। इंद्रोस अवरस आमिद्रो, अरम्यज वकाईण। —रुकमणी मंगळ

रू. भे.—रोईड़ौ, रोयड़ौ, रोहीड़ौ

मह.—रोहड़।

रोहिण–सं. पु.—१ एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

२ देखो 'रोहिणी' (रू. भे.)

रोहिणगिर—देखो 'रोहणगिरि' (रू. भे)

रोहिणी–सं. स्त्री. [सं.] १ गो, गाय (अ. मा., ह. ना. मा.)

२ विजली, विद्युत।

३ त्वचा की छठी परत। (अमरत)

४ वसुदेव की धर्मपत्नी जो बलदेव की माता थी।

५ चन्द्रमा की पत्नी, जो दक्ष प्रजापति की कन्या थी।

उ०—कूरंमी कमधज सूं ओपै वांमै अंग। रवि रांना ससि रोहिणी, सुरपति सचि किर संग। —रा. रू.

६ कृष्ण की पत्नियों में से एक।

७ हिरण्यकशिपु की पत्नी।

८ जैनों की एक देवी।

९ ऐसी कन्या जो हाल ही में रजस्वला होने वाली हो (स्मृति)

१० धैवत स्वर की तीन श्रुतियों में से तीसरी श्रुति।

११ पांच तारों से मिलकर बना रथ की आकृति का सत्ताईस

नक्षत्रों में चौथा नक्षत्र (ग्र. मा.)

१२ एक प्रकार का भयंकर संक्रामक रोग जिसमें ज्वर के साथ गले में पीड़ा होती है। (ग्रमरत)

रू. भे.—रोइणी, रोयण, रोयणी, रोहण, रोहणि, रोहणी, रोहिण, रोहिणि।

रोहिणी-ग्राठम—सं. स्त्री. [सं. रोहिणी ग्रष्ठमी] भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की ग्रष्ठमी जिस दिन चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र में होता है।

रोहिणीजोग—देखो 'रोहिणीयोग' (रू. भे.)

रोहिणीतप—सं. पु.—एक प्रकार का व्रत विशेष। (जैन) व. स.

रोहिणीद्रुम—देखो 'रोहणद्रुम' (रू. भे.) (नां. मा; ह. नां. मा.)

रोहिणीपत, रोहिणीपति, रोहिणीपती—सं. पु. [सं. रोहिणीपति]

१ चंद्रमा।

२ वलराम के पिता वसुदेव.

रू. भे.—रोयणीपत, रोयणीपति, रोयणीपती।

रोहिणीवर—देखो 'रोहिणीवर' (रू. भे.)

रोहिणीयोग—सं पु. [सं.] ग्रापाढ के कृष्ण पक्ष में रोहिणी का चन्द्रमा के साथ होने वाला योग।

रू. भे.—रोहिणीजोग

रोहिणीरमण—सं. पु. यौ, [सं. रोहिणीरमणः] १ चंद्रमा, २ सांड, ३ वसुदेव।

रोहिणीवर—सं. पु.—१ चंद्रमा।

२ सांड।

३ वसुदेव।

रू. भे.—रोहिणीवर।

रोहिणीवलंभ, रोहिणीवल्लभ—सं. पु. [सं. रोहिणी वल्लभ] चंद्रमा

रोहिणेय—सं. पु. [सं. रौहिणेय] १ रोहिनी का पुत्र वलराम।

रू. भे.—रोहणेय।

रोहित—वि. [सं. रोहितम्] लाल रंग का।

सं पु. [सं. रोहितः] १ एक प्रकार का मृग।

२. एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

३ मछली विशेष।

४ लाल रंग।

५ लोमड़ी।

६ देखो 'रोहितास'

रोहितबाह, रोहितवाह—सं. पु. [सं. रोहित+वाह=ग्रश्व] १ ग्रग्नि, ग्राग। (डि. को.)

रोहितास—सं. पु. [सं. रोहिताश्व] १ ग्रग्नि, ग्राग। (नां. मा; ह. नां. मा.)

२ वसुदेव का रोहिणी से उत्पन्न पुत्र।

३ सत्यवादी हरिश्चंद्र के पुत्र का नाम।

उ०—सतव्रत सुत हरिचंद सत जिहाज, रोहितास चंद सुत महाराज। रोहितास तणौं ह्वित चंचुराय, तप सुत सुदेव तप भांण ताय। —सू. प्र.

रू. भे.—रोईतास, रोयतास, रुहितास, रोहितास, रोहीतास।

रोहिनी—देखो 'रोहिणी' (रू. भे.)

रोहिलौ—सं. पु.—एक प्रकार का वाद्य।

उ०—डफ खंजरी दुतार, विखम रोहिला वजावै। पसतो ग्ररवी पाड़, गजल कड़खा वह गावै। किवळा सिजदा करै, किलम उच्चरै कुरांणी। जांणि प्रेत जागिया, महारिण काळ मसांणी।
—सू. प्र.

रोहिस—सं. पु. [सं. रोहिप] १ एक प्रकार मृग विशेष।

२ एक प्रकार की मछली।

३ एक प्रकार का घास जिसकी जड़ सुगंधित होती है।

रोही—वि. [सं. रोहिन्] (स्त्री. रोहिणी) १ ऊपर चढने वाला, ऊपर की ग्रोर जाने वाला।

सं. पु.—१ एक प्रकार का हिरन, मृग।

२ रोहिड़ा नामक वृक्ष।

३ रोहू नामक मछली।

४ रीढ़ की हड्डी।

उ०—'सगतीसिंह' तरवार वाही सो प्रेमसिंह घोड़े फेरते रै लागी घोड़े रै खोगीर वढकर रोही री हाडी वैठ गयी जिण सूं घोड़ो भुस हुय गयो। —मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता

५ वन, जंगळ।

उ०—गुण ग्रोगुण जिण गांव, सुणै न कोइ सांभळै। उण नगरी विच नांव, रोही ग्राच्छी राजिया। —किरपारांम

उ०—२ इतरा में रोही मांही एक थोरी सिकार रै पगां हिरणी मुहडा ग्रागै लियां ग्रावै। —रामदत्त साह री वारता

रोहीड़ो—देखो 'रोहिड़ो' (रू. भे)

रोहीतास—देखो 'रोहितास' (रू. भे.)

रोहीस—देखो 'रोहिस' (ग्रमरत)

रोहौ—सं. पु.—१ घेरा, ग्राक्रमण।

२ क्रोध, गुस्सा।

३ वैमनस्य।

४ युद्ध।

वि.—रोकने वाला, थांमने वाला।

उ०—साह दळां सांमहा, राह तोरिया भिडज्जां। दळ रोहा साळुळै, करै ढोहा कमवज्जां। बिना खग्ग भेरियां, वहै कुण मग्ग

विचाळै । जागी हक्कां जांण, लाय लागी ऊनाळै । —रा. रू.

रौंभ—देखो 'रूंभ' (रू. भे.)

रौंभट-सं. पु.—१ युद्ध, लड़ाई ।

उ०—१ रांम थट झट झपट रौंभट, पछट वज्रघट-कुघट, ऊपट । रंगट भट फुट भ्रकुट मरकट, कुळट नटवट उछट कटकट ।
—सू. प्र.

उ०—२ रोस उपट्टां रौंभटां, वहो थटां वथारै । कोड़ि असुर झपटां करै, अंगद एकारै । —सू. प्र.

रू. भे.—रांभट ।

रौंद—देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

उ०—१ 'आसउत' तणी आकाय देखै अकाळ, साहजहां सुतन पटकै घणी मीस । रीस सुज हुती मन 'नींव' हर ऊपरां, रौंदां सीस काढवी रीस । —सवळी सांदू

उ०—२ जठै 'गजसाह' 'करन्न' सुजाव,विभाड़त मेच्छ खगां वनराव । जुड़ै खग झाट 'अनावत' 'जैत' वहादर रौंद हणै विरदैत ।
—सू. प्र.

रौंदग—देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

रौंदणौ, रौंदवौ—देखो 'रूंदणौ, रूंदवौ' (रू. भे.)

रौंदाळ—देखो 'रौद्र' (मह., रू. भे.)

उ०—आरावां उछळ आतस झाळ मंडै किर भाद्रव मेह मंझाळ । पड़ै उतवग चढ़ै तन पीठ, रौंदाळां झीक किरमल्ल रीठ ।
—मा. वचनिका

रौंदियोड़ौ—देखो 'रूंदियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रौंदियोड़ी' (रू. भे.)

रौंधणौ, रौंधवौ—देखो 'रूंदणौ, रूंदवौ' (रू. भे.)

उ०—खिलखिलै वेचरा वीर नारद खिलै, ऊपरां ऊपरी गैढलां ऊथळै । चाय उर अचळ दादौ तिकौ किम चळै, पातिसाही कटक रौंधिया पातळै । —परतापसिंघ सगतावत रौ गीत

रौंधियोड़ौ-देखो—'रूंदियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रौंधियोड़ी)

रौंस-सं. पु.—१ रहस्य, गुप्त तत्व ।

उ०—१ अनातम क्या जांणसी, रांम भजन की रौंस । अलू कुं रवि आंखियां, हरीया देखण सौंस । —अनुभववांणी

उ०—२ रांम महाराज की रौंस जांणै नही, हौंस करि पथर पूजत पाजी । अगम अग्याध कुं साध सूरा लहै, पंथ पूरा गहै गहै मरद गाजी । —अनुभववांणी

२ केलि, क्रीड़ा ।

उ०—१ सव ही काजळ सारिया, करि करि मन की हौंस । मिळी पियारी पीव सुं, हरीया न्यारी रौंस । —अनुभववांणी

उ०—२ सुनि वातां सखियन खिनै, करत कुंवारी हौंस । हरीया पीव विन परसियां, होय नियारी रौंस । —अनुभववांणी

३ समानता, वरावरी ।

उ०—दुस्मन दूर है, सव दुनियां मे हुक्म मंजूर है । मगरुरां की मगरुरी दफै करते हैं, छत्रधारी की सी रौंस धरते हैं । बड़े बड़े छत्रपति गढपति देसोत डंडौंत करते हैं । —उपाध्याय रांमविजय

४ देखो—'रोस' (रू. भे.)

रौ-सं. पु.—षष्टी विभक्ति का चिन्ह ।

उ०—१ जवनांण दळ वीजूझळै, देस भलै कुळ देस रौ । इंद्रभांण खगै वढ ऊजळै, मिळै जोत मुकनेस रौ । —रा. रू.

उ०—२ सखी अमीणा कंथ रौ, अंग ढीलो आचंत । कड़ी ठहक्कै वगतरां, नड़ी नड़ी नाचंत । —हा. झा.

रू. भे.—रउ, रिउ ।

रौगन—देखो 'रोगन' (रू. भे.)

रौगनी—देखो 'रोगनी' (रू. भे.)

रौड़-सं. पु.—१ युद्ध, लड़ाई ।

उ०—(महा) मोट मुरधर तणा खळां दळ मोडतां, दौड़ पतिसाह सुं करै दावा । रौड़ रमतां थकां जोड रिम्म चूरतां, ठौड ही ठौड राठौड़ ठावा । —ध. व. ग्रं.

२ देखो 'रोड़' (रू. भे.)

रू. भे.—रौर ।

रौड़ौ-स. पु.—१ भैंस ।

२ मादा, ऊंट ।

३ देखो 'रोड़ौ' (रू. भे.)

रौजौ-सं. पु. [अ. रौज॰] १ उद्यान, वाग ।

२ हरा भरा मैदान ।

३ वह इमारत जो किसी पीर, सरदार या वादशाह की कब्र के ऊपर वनी हुई हो ।

रू. भे.—रोजौ

रौझट—१ देखो 'रौंझट' (रू. भे.)

२ देखो 'रांझट' (रू. भे.)

रौणौ-सं. पु. [सं. आरण्य] वन, रन, जंगल ।

उ०—मिटै चोर मारग्ग जोर प्रगटै व्यापारां, वधि वसती रन वनै वेळ वरती ऊदारां । वडै क्रोध विसतार रींछ सांवर घर रौणा, जठै सिंघ सहता तठै गरजंत विलौणा । —रा. रू.

रौद—देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

उ०—१ हजारां गुड़ै वीछुड़ै एक होदां, रहचक्क मातौ छुटै तक्क रौदां। सिपायां सिरै सार वाजै सचाळौ, वधै दांमणी सौ अणी भूप वाळौ। —रा. रू.

उ०—२ सूर रौ कुरव्व साह,भांति भांति कीध भाव। देखतां स राह दोड़, रौद खांन भूप राव। —सू. प्र.

उ०—३ ग्रौनाड़ रगत असुरांण ग्रोट, कौंकद रौद चालत कोट। धूमरा नैण ऊठंत धाड़, प्राभ्रंत दैत सेना पहाड़। —मा. वचनिका

उ०—४ पोए तिरसूळ पछांटै प्रांण, घुमाड़ै रौदां दीमभ्र घांण। दुवाह जोध जुटै रिणवाट, घड़छै धाड़ मचै घर घाट। —मा. वचनिका

रौदघड़, रौदघड़ा–स. स्त्री.—मुसलमानों की सेना, यवन सेना।

उ०—१ चखाडै कूंत चखतां वणी चापड़ै, रौदघड़ पछाड़ अचळ राखी। जीवतां सिभ महाराज वणियौ 'जसौ', समर चा करै रवि चंद साखी। —महाराजा जसवंतसिंह जी री गीत

उ०—२ गाजां वाजां अर गेंद गड़ां, जुड़ै न 'चांदौ' रौदघड़ां। जै जुड़सी 'चांदौ' रौदघड़ां, गाज न वाज न गेंद गड़ां। —चांदा वीरमदेवोत राठौड़ री गीत

रौदाळ—देखो 'रौद्र' (मह., रू. भे.)

उ०—१ ढाहंतौ काळां ढेचाळां, रौदाळां पौचाळौ राजा। वडा व्रद वीका वाळा वहै दूजौ वीक। —वीठू दूदौ

उ०—२ रवताळ रौदाळ रोसाळ महारिण, क्राळ खंडाळ ग्राताळ करै। भिलमाळ कंधाळ कराळ पड़ै भड़ि, धू मभि माळ जटाळ धरै। —सू. प्र.

रौद्र–वि. [सं.] १ रुद्र से संबंधित, रुद्र संबंधी, रुद्र का, रुद्र की तरह।

२ अत्यन्त उग्र, प्रचण्ड भीषण या विकट।

उ० –हुय रौद्र हक्कं ग्रेह लक्कं जै किलक्कं जोगणी. वंका गरज्जै खड़ग वज्जै सक्ति रज्जै सक्कणी। —रा रू.

सं. पु- [सं. रौद्रम्] १ क्रोध, गुस्सा, रोष।

२ भयकरता, भीषणता।

३ यमराज।

[सं. रोद्रः] ४ किसी प्रकार का अत्याचार अन्याय अपमान आदि का व्यवहार देखकर उसका प्रतिकार करने या रोकने के लिए मन में क्रोध से उत्पन्न होने वाला भाव विशेष, रौद्ररस (साहित्य)

उ०—जुड़ै भूप जगं, रसै रौद्र रंगं सयद्दांण सूरं, किलम्मं करूरं। —सू. प्र.

५ गर्मी, तेजी।

६ असुर, राक्षस।

७ जंगली जाति का मनुष्य, म्लेच्छ।

८ यवन, मुसलमान।

उ०—लेखा पाखै लूटिया, घोड़ा ऊठ दरव्व। रौद्र प्रचार संघारिया, सारै मार सरव्व। —रा. रू.

रू. भे.—रउद, रउद्द, रउद्ध, रउद्र, रवद, रवद, रवद्द, रवद्दि, रवद्र, रुद्र, रोद, रोद्र, रौद।

मह.—रवदांण, रवदाळ, रोदाळ, रौदाळ, रोदाळ, रौद्रव, रौद्रांण, रौद्राइण, रौद्रायण।

रौद्रकार–सं. स्त्री. [सं. रौद्रकार] १ भयंकर आवाज या ध्वनि।

रू. भे.—रोदकार।

रौद्रकेतु–सं. पु.[सं]आकाश के पूर्व दक्षिण में शूल के अग्र भाग के समान कपासी, रुक्ष (रूखा) और ताम्रवर्ण किरणों से युक्त एक केतु। (ज्योतिष)

रौद्रपत, रौद्रपति–सं. पु.—बादशाह।

रू. भे.—रोदपत, रोदपति।

रौद्रराव–सं. पु.—बादशाह।

रू. भे.—रोदराव।

रौद्रव—देखो 'रौद्र' (मह., रू. भे.)

उ०—१ खगां भट वाहत रौद्रव खूर। सभै जुध 'भारथ' संभ्रम 'सूर'। —सू. प्र.

उ०—२ रौद्रव दुख सुख विघन सुणै रिख। खंडित सेव कीध हेकणि पख। —सू. प्र.

उ०—३ अरड़ाव घोर अंधार रौद्रव रूपरा। रवि तांम ग्रीखम रूप, भड़ सह ऊपरा। —सू. प्र.

रौद्र-सम्प्रदाय–सं. पु.—रुद्र को मानने वाला सम्प्रदाय विशेष।

रौद्रांण—देखो 'रौद्र' (मह., रू. भे.)

उ०—रौद्रांण भचक भालां गरीठ, वारक्क वहै गज वाज धीठ। —सू. प्र.

रौद्राइण, रौद्रायण, रौद्राळ–सं पु.—१ बादशाह।

उ०—१ धूवा रव दव धोम खेहारव डंवर खरा। क्रमतै रौद्राइण कियौ, व्योम विचाळै व्योम। —वचनिका

उ०—२ रचि फोजां रौद्राळ, हैवर नर वहति हसति मांडण इंद्र भड़ मांडियौ, वादळ किर वरसाळ। —वचनिका

२ देखो 'रौद्र' (मह., रू. भे.)

रौद्री–स. स्त्री. [स.] १ शिव की पत्नी पार्वती।

२ सगीत में गांधार स्वर की दो श्रुतियों में से पहली श्रुति।

रौनक–स. स्त्री. [अ. रौनक़] १ सुंदर वर्ण, आकृति या रूप।

२ चमक दमक के कारण होने वाली शोभा या सुंदरता।

३ प्रसन्न-मुख लोगों की चहल पहल ।

रोव—देखो 'रोव' (रू. भे.)

रोवदार—देखो 'रोवदार' (रू. भे.)

रोवीलौ—देखो 'रोवीलौ' (रू. भे.)

रोर-सं. स्त्री.—१ मादा ऊंट, ऊंटनी ।

२ देखो 'रोर' (रू. भे.)

उ०—अजा दहण गज दहण किया अत, उरंग तुरंग नर दहण उधोर । आतम दहण किया अग्रपतियै, रांणा जही न दहिया रोर । —रांणा जगतसिंह रो गीत

रोरव-सं. पु. [सं. रोरवः] इक्कीस प्रकार के नरकों में से एक नरक का नाम ।

वि. [सं. रोरव] भयकर, भयावह ।

रू. भे.—रोरव ।

रोळ-सं. स्त्री.—१ हंसी, मजाक, दिल्लगी ।

उ०—लपसी लपकावै तपसी तावै, आपा मींच उठंदा है । चेली चोळां में मन मोळां में, रोळां में रुठंदा है । —ऊ. का.

२ देखो 'रोळौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ पिड़ चूर दिली घर साहजहांपुर सीत लगै हर प्रात नड़ै । दळ मूळ जड़ां नारनोळ उखेड़े, पोळि दिली दुग रोळ पड़ै । —रा. रू.

उ०—२ छणहणिया छोळां गोमे गोळां दुरगावीर हुआ दोळां चोपट मुख चोळां भांजे भोळां रवदां सवळां मांचे रोळां । —मा. वचनिका

३ देखो 'रोळ' (रू. भे.)

उ०—धमस पाखरां रोळ गैणाग धुजै धरा, नड़ै गजघाट पहाड़ नमिया । गुरड़ 'अनरध' तणी झड़प लागी गढां,गढपती नाग दह-वाट गमिया । —राजा अनिरुद्धसिंघ री गीत

रोळि, रोळी-सं. स्त्री.—देखो 'रोळौ' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—जांणि रै जांणि जुग मांहि जन सूरिवा । दोय दळ बीचमें रोळि घालै । —अनुभववांणी

रोळणौ, रोळबौ-क्रि स.—१ हजम करना, पचाना ।

उ०—इक माटी आवखी, पियै दुब्बार सरावां । भैंसां आधा भखै, बोट नुकळ मैं कबावां । डंड सहत करि दुरत, रवद काचा पळ रोळै । मण वारह मुदगरां, अणां जेही ऊतोलै । भोळै परत्र जम भूपरै, पिंड जांणै अहि पांखिया । विण मुरसवंध भकवी विखम, अध कंध उपडांखिया । —सू. प्र.

२ घोड़े की पीठ को खुरहरे से साफ करना ।

उ०—१ डाच लगांणां डहै, इसा पंडवां अपारां । रोळ पसम गुरहरां, मळै हाथळां अपारां । धंग मांडै धारगी, पीठ भरळकै पराम्मां । दरियाई कस दीप, राळ लूंबै रेसम्मां । भाकलि किना-तुली सजै, तंग रेसम जुग सांगिदा । ऊजळा नीड़ उडणा इसा, उभै फढ़ा कसि सांगिया । —सू. प्र.

३ मिश्रण करना ।

४ अनाज के ढेर पर हाथ फेरते हुए बढ़िया अनाज को पृथक करना ।

५ आलोड़ित करना, मानना ।

६ देखो 'रोळणौ, रोळबौ' (रू. भे.)

उ०—सेना अनड़ रोळतो सेनां, नीर समद ज्यूं त्रुटि नळ । बदळां समर हुवो चंद बीजो, गहली वाळा सळग गळ । —श्रीयसिंह हाडा रो गीत

रोळणहार, हारौ (हारी), रोळणियौ - वि० ।

रोळियोड़ौ, रोळियोड़ौ, रोळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

रोळीजणौ, रोळीजबौ — कर्म वा० ।

रोळणौ, रोळबौ, रोळवणौ, रोळवबौ—रू० भे० ।

रोळवणौ, रोळवबौ—देखो 'रोळणौ, रोळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तोलै कर त्रिमूळ, रातासुर रिण रोळवै । भणगां जड़ उनमूळ, आयस माई ईसहद । —मा. वचनिका

उ०—२ भिड़ै मुग मूंछ धणी भुंवहार, परै रण रोळवियो पव-धार । नमै मुग नोळ द्रिबै अहमंद, 'पतै' घण हाकलियो परचंद । —सू. प्र.

रोळौ-सं. पु.—१ युद्ध, झगड़ा, समर ।

उ०—१ तारां तेजसी कयो 'ओ तो नाटरो है, नै करमचंद डोडो है । तद सांगैजी कयो,' जी इणनूं नाटरो मत देवो । म्हां भेळां घणा रोळा किया है, सू आदमी बडो मरदांनो है । —द. दा.

उ०—२ पछै गढ री पाज लड़ाई हुई, जठै जवदलखां जी सीतार-खांन जी ताजुजी केसरखांन जी नंदा ताज कांम आया । और ही साथ कांम आया तथा घायल हुवा । नै राजसी मुंतो जाळोर रा रोळा में काम आयो । —नैणसी

उ०—३ ऊपर वीस सहंस आखाड़ै, पांच सहंसहूं वाग उपाड़ै । जुटै वागि रावत न्रप जोळा, रोळा हेक मांहि दो रोळा । —सू. प्र.

२ विद्रोह ।

उ०—घोड़ा रोवै घास नै टाबरिया रोवे दांणां नै । बुरजा में ठुकरांण्यां रोवै, जांमण जाया नै क रोळौ वापरियो, वा' वा' रोळौ वापरियो, देस में अंग्रेज आयो रै, क रोळौ वापरियो । —लो. गी

३ उपद्रव, उत्पात, बखेड़ा ।

उ०—अेक डावड़ी बोली—अंदाता, आपरै राज री अेक

आदमी म्हारी बग्घी लूटली । चार हाजंरिया अर दो डावड़ियां नै राहड़ियां सूं बांध आपरै साथै लेयग्यो । आथूंणा दरवाजा सूं पांच कोस आंतरै औ रौळौ व्हियो । सगळौ गैणो गांठो, रोकड़ा रिपिया अर मोहरां गी जको सवाय में । —फुलवाड़ी

४ पिंगल प्रकाश के अनुसार प्रथम यगण, तगण फिर रगण और अंत में मगण सहित एक गुरु वर्ण छंद विशेष ।

५ शोर गुल, हल्ला ।

उ०—१ रातां जागण रौ जंगळ में रौळौ, ढांणी ढांणी में फिरतौ ढिंढोळौ । पावू हरवू रा सुणता परवाड़ा, धुणता नर माथा चुणता घर घाड़ा । —ऊ. का.

उ०—२ कूआं सामां आवतां,डरै न अब रौळां । खेळचां में हुय्या पड़ै, काळा दिन धोळां । —लू

६ देखो 'रोळौ' (रू. भे.)

रौस–सं. स्त्री.—भांति, प्रकार, तरह ।

उ०—जोख एम जोधांण, रीझ मंडै महाराजा । वागां गोठ वणाव, सझै उच्छाह सकाजा । रचै रौस रौसरी, कळा वहतरि अधिकारां । रमै कमंध राजिंद्र, रौस रौसरी सिकारां । जेठी कुरंग मदझर जुटै, होय इनांमां हुन्नरां । क्रीड़ा विलास विधविध करै, 'अभौ' इद आडंवरां । —सू. प्र.

२ देखो 'रोस' (रू. भे.)

उ०—वराळां धोम चख रौस चाळां विढण, तखत ढीली तणौ सांमळै तेम । 'जसावत' तणा खग तेज मांहे जळै, जवन खळ कीट आतस भवक्कै जेम । —महाराजा अजीतसिंघ राठौड़ रौ गीत

रौसन—देखो 'रोसन' (रू. भे.)

रौसनदांन—देखो 'रोसनदांन' (रू. भे.)

रौसनाई—देखो 'रुसनाई' (रू. भे.)

उ०—कायमखां सैद सेख बोलै अलीहार । तीन पोहरूं का आफताफ राठौड़ूं पर रौसनाई ठहरावै । चौथे पहर की रौसनाई सब आलम पर भ्रावै । —सू. प्र.

रौसनी–सं. स्त्री.—१ सफेद रंग की मिठाई विशेष ।

उ०—भांति भांति का मसाला रोगांनी रौसनीं केसरियां चक्खी भांति भांति की मिठाई । मेवै की पुलाव अनेक आई । —सू. प्र.

२ देखो 'रोसनी' (रू. भे.)

रौसाळ—देखो 'रोसाळ' (रू. भे.)

उ०—चखां चौळ रौसाळ भाळा झपट चापड़ै क्रोधतां आगरा दिली क जळै । —महाराजा अजीतसिंह रौ गीत

ल

ल—नागरी वर्ण माला का अट्ठाईसवां वर्ण जिसका उच्चारण दत स्थान है । इसके उच्चारण में संवार, नाद और घोप प्रयत्न लगते हैं । यह पार्श्विक, घोप, वर्त्स्य, अल्पप्राण है ।

लं-सं. पु.—१ लोक २ वचन ३ सुख । (एका.)

लंक-सं. स्त्री.—१ कटि, कमर । (अ. मा.)

उ०—दाढी रंग उजळ भाळ सिंदूर, प्यालां मतवाळ नसौ भरपूर । लोई सिर फावत धावळ लंक, चमूं पर सावळ सूळ चमंक । —मे. म.

उ०—२ डीमू लंक मराळि गय, पिक-सर एही वांणि । ढोला ऐही मारुई, जेहा हंभ निवांणि । —ढो० मा०

उ०—३ दाढ गरद्दां भारिया, अंग जरद्दां दूण । रूप मरद्दां मीर सव, लंक करद्दां तूण । —रा. रू.

सं. पु.—२ ढेर, राशि, समुह ।

३ कलह, झगड़ा, लड़ाई ।

क्रि. प्र.—लगणी, लगाणी, लागणी ।

वि.—१ पतली, कृश (कटि)

उ०—गति गयंद, जंघ केळिग्रभ, केहरि जिम कटि लंक हरि डसण विद्रम अधर, मारू-भ्रकुटि मयंक । —ढो. मा.

उ०—२ कडि लंक चित्रा जंत्र जाण्यौ, जंघ कदळी थंभ । पींडी तिमु सोहई, जांणौं कंनक महावळि रंग । —रुकमणीं मंगळ

३ बहुत, अधिक, अत्यधिक ।

४ देखो 'लंका' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ दाखे ईसरदासियौ, कंटक केण न कोय । रांम हि रांम रटंतड़ां, लंक विभीसण जोय । —ह० र०

उ०—२ एक वार मेल्हौ अंगदं, महि लंक मझारै । दई हुकम अंगद दियौ, वप तांम वधारै । —सू० प्र०

उ०—३ ऊधमतां कोठार अखूटत, नीर समंद जू न क्रूं नमै ।'करण' हरा लंक हुतो प्रभाकर हेमाळै आवियो हमै । —जोगीदास कवारियौ

रू. भे.—लंकी, लक्क, लक्कि, लांक ।

लंकक—वि.—लंका का या लका सम्वन्धी ।

लंक-टंकटा–सं. स्त्री.—१ सुकेस नामक राक्षस की माता जो कि विद्युत-केस की पुत्री थी ।

२ संध्या की कन्या का नाम ।

लंकणी–सं. स्त्री. [सं. लंकिनी] एक राक्षसी जिसे हनुमान जी ने लंका प्रवेश के समय मुष्ठिका प्रहार से गिरा दिया था ।

रू. भे.—लंकिणी

लंकदाह–सं. पु. [सं. लंका दाहिन्] लंका को जलाने वाला हनुमान । (अ. मा.)

लंकदीप—देखो 'लंका' ।

लंकनाथ—देखो—'लंकानाथ' (रू. भे.)

लंकनायक—देखो—'लंकानायक' (रू. भे.)

लंकप—सं. पु. [सं. लंकप:] १ रावण ।

उ०—परै बहु ठोर वमीलनि वंव, नचै मनु लंकप काळ कुटंव । निवालनि घप्पिय लेत डकार, किते सद तोपनि फट्टि पहार ।
—ला० रा०

२ विभीषण ।

लंकपत, लंकपति, लंकपती—देखो—'लंकापति' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ जस जीवण अपजस मरण, कर देखो सब कोय । कहा लंकपत ले गयो, कहा करण गयो खोय । —अज्ञात

उ०—२ जोधाजोध लंकपत जेहा, ए नवकोट तणा छळ एहा ।
—रा० रू०

उ०—३ मेले सेन्या दैतां मारण, पांणी ऊपर बांधै पाजं । कीधो मेरू सीता कारण, रांणो लंकपती चो राजं । —पि० प्र०

लंकपुरी—देखो 'लंका' ।

उ०—लंकपुरी यें सोधै सियारै, एतो सुक्षम रूप सुजांण, हनुमत हालै रे । —गी० रां०

लंकलियण—देखो 'लंकालियण' (रू. भे.)

लंकवरीस—देखो 'लंकावरीस' (रू. भे.)

उ०—सेस हिमालय स्रंग सुरगय हय नय पय दरस । रुद्र सिलोचय रंग, जय जय लंकवरीस जस । —बां० दा०

लंका—सं. स्त्री.—१ भारत के दक्षिण का एक द्वीप जहां रामायण के अनुसार रावण राज्य करता था ।

उ०—अधिप इंदै अजमेर नूं, चढियो संभर सीस । सिर लंका किर सांमघण, रांम विचारी रीस । —रा. रू.

पर्याय—कुनणापुर, पुरटपुरी ।

मुहा.—१ लंका नै मूंदड़ी दिखाणी=समृद्ध व्यक्ति के समक्ष तुच्छ वस्तु पर गर्व करना ।

२ लंका में 'दाळिद्री होणो=अच्छी जगह पर, उच्चकुल में या भाग्यशालियों में बुरा अथवा हतभाग्य होना ।

२ लंका के ओर की दिशा, दक्षिण दिशा ।

३ भारत का दक्षिणावृत देश ।

४ वेश्या ।

रू. भे.—लंक, लंक्क, लंक्कि ।

लंकाऊ—वि. [सं. लंका+रा. प्र. ऊ] लंका की ओर की दिशा का ।

क्रि. वि.—दक्षिण दिशा की ओर ।

लंकाद—देखो 'लंकाध' (रू. भे.)

लंकादती—सं. पु. यौ. [सं. लंका+दत्त+रा. प्र. ई.] लंका का दान करने वाला, श्री रामचंद्र । (अ. मा., नां. मा.)

लंकादहण—सं. पु.—१ ईश्वर, परमेश्वर । (नां. मा.)

२ भगवान श्रीरामचन्द्र ।

३ देखो 'लंकादाही' (रू. भे.)

लंकादाह, लंकादाही—सं. पु.—श्रीहनुमान । (अ. मा.)

रू. भे.—लंकादहण

लंकादीप—देखो 'लंका'

लंकादु, लंकादू—देखो 'लंकाधू' (रू. भे.)

लंकाध—सं. पु. [सं. लंका+ध्रुव] लंका के ओर की दिशा, दक्षिण दिशा ।

रू. भे.—लंकाद

लंकाधु, लंकाधू—सं. पु. [सं. लंका+ध्रुव] १ दक्षिण ध्रुव ।

वि.—१ दक्षिण दिशा का, दक्षिण दिशा सम्बन्धी ।

क्रि. वि.—१ दक्षिण दिशा की ओर ।

रू. भे.—लंकादु, लंकादू ।

लंकानाथ—सं. पु. यौ. [सं.] १ रावण ।

२ विभीषण ।

रू. भे.—लंकनाथ, लंकानाह ।

लंकानायक—सं. पु. [सं.] १ रावण ।

२ विभीषण ।

रू. भे.—लंकनायक ।

लंकानगरी—देखो 'लंका' ।

उ०—अथ रावण, लंकानगरी राजधांनि, चित्रकूंटगढ, अनेक अक्षौहिणी दळ...... । —व. स.

लंकानाह—देखो 'लंकानाथ' (रू. भे.)

लंकापत, लंकापति, लंकापती—सं. पु. [सं. लंकापति] १ लंका का स्वामी लंका का राजा, रावण (अ. मा, डिं. को.)

उ०—१ लंकापति रावण धणी, सात समंद बिच वस्ती फेर ।
—बी. दे.

उ०—२ गरब कियो लंकापति रावण, टूक टूक कर डारा ।
—मीरां

रू. भे.—लंकपत, लंकपति, लंकपती ।

लंकापुरी—देखो 'लंका'

उ०—अमरावती समांन, अलकापुरी प्रतिस्पर्द्धमांन, लंकापुरी सरवांगीण कुबेर ग्रांम निवास नै कहै वाक, जिहां समुंद्र जगतीय यांन प्राकार सागर प्रमांण खादिकावलयावतार, अमरनगरी प्रकार महोदर निम्वकर इसिड नगर । —व. स.

लंकापुरीलुंटाक–वि. [सं. लंकापुरी + लुंटाक] लंकापुरी को लूटने वाला।

लंकाबरीस—देखो लंकावरीस' [रू. भे.]

लंकारि, लंकारी–सं. पु. [सं. लंका+अरि] श्री रामचन्द्र ।

लंका-रो-तोरणियो – देखो 'तोरण' (७)

लंकाळ–सं. पु. [सं. लंका+आलुच्] १ श्री रामचन्द्र।

उ०—लंकाळ सेवग तूझ लांगो, भ्रात लिछमण खळां भांगो । पती कुळ स्वारथी पांगो, करण असह निकंद । —र. ज. प्र.

२ रावण।

उ०—१ तरवार खण खण तूट तण, पण मंत्र भण भण रसण पण, गहवगां जण जण अगणगण, सुर भवण कंपण लगण मण लंकाळ धूजिय लंक । —र. रू.

उ०—२ पण पाळ ब्रह्मा आप चो पण, असुरां गाळ । इम उलट कमळा कदम आयौ, पुरी लंक प्रजाळ । तो लंकाळ जी लंकाळ कप डर वहलियौ लंकाळ । —र. रू.

३ विभीषण ।

४ सिंह, शेर ।

उ०—१ ओ३म नमस्ते चंडका चद्रभाळ री नवीन आभा, छटा मणि भाळरी भुजाटां रही छाय । आरोहा लकाळ री क सत्रां धू भाळ री आग, रमा रूप जयो काछ-पचाळ री राय । —नवळजी लाळस

उ०—२ पळासण अंग भखें भर पेट, भेळा उतमंग सदा सिव भेट । 'लालां' कर थापलि कंध लंकाळ, 'फुलां' सिंघ सग भरावत फाळ । —रा. रू.

उ०—३ सवळे भूखें सीह ज्यूं, चढिया मुहि चुगलाळ । गिलमां ऊमर गिळ गयौ, ज्यां अग आळ लंकाळ । —र. रू.

५ राजा ।

६ अगस्त्य तारा ।

[सं. लंक] ७ ललाट, भाल ।

उ०—भुज विसाळ लंकाळ, वरण झाळाहळ सुंदर । भरि मातै भाद्रवै, जांणि ऊगो भासंकर । —गु. रू. वं.

८ राक्षस ।

उ०—सेना ऊतरे समंद पार पदम्मे अठारह संहस, बहस्से निसांण किनां गाजियौ वारांण । वेद वांण दूण लाख डंडाळा लंकाळ वजे, असुरां सुरांह मांह मांचियौ आरांण । —जोरावरसिंघ

वि.—१ वीर, योद्धा ।

उ०—१ रणखेती रजपूत री वीर न भूलै वाळ । बारह वरसां वापरो, लहै वैर लंकाळ । —षी. स.

उ०—२ झाताळ रा जेठसुद, तीज हुवो रिणताळ । जूटा भाटी जग में, कमंधां छळ लंकाळ । —रा. रू.

२ भयंकर, भयानक, भीषण।

उ०—जिके इंदु फ (पु) ण, इंद कंद तां गळै निकासे । जुध प्रवीण रढरांण, पांण त्यां दूरि पियासे । जिके छत्र गज गत्त, जत्र त्यां हुये अलग्गा । जिके काळ लंकाळ लुळे लुळ पाये लग्गा । पूरब पछिम उत्तर दखिण, कीती रेणां खळभले । अखैराज अरक ओहो-सियो, हुय नरंद हालोहले । —नैणसी

३ जबरदस्त, जोरावर ।

४ लंका का, लंका सम्बन्धी ।

५ दक्षिण दिशा का, दक्षिण दिशा सम्बन्धी ।

मह.—लंकाळौ, लंकालौ ।

लंकालियण–सं. पु.– १ परमेश्वर । (ह. नां. मा.)

२ रामचन्द्र ।

रू. भे.—'लंकलियण'

लंकावरीस–वि. [सं. लंका+रा. वरीस] लंका का दान करने वाला, लंका प्रदान करने वाला ।

सं. पु —श्री रामचंद्र भगवान । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—लंकवरीस, लंकाबरीस

लंकाळौ, लंकालौ–सं. पु.—देखो 'लंकाळ' (मह. रू. भे.)

उ०—'बीक' हर सीह मार करतो वसूं, अभंग अर-व्रंद तो सीस आया । लाग गयणाग भुज तोल खग लंकाळा, जाग हो जाग कलि-यांण जाया । —पदमा सांदू

उ०—२ वाळकिसन पति छळ बांहाळो, 'लाल' जोड़ दळ ढाळ लंकाळौ । सांमि सनाह जिसा विच साथां, हरकिसनोत महावळ हाथां । —रा. रू.

लंकिणी—देखो 'लंकणी' (रू. भे.)

लंकियौ–सं. पु.—एक तारा विशेष ।

लंकी–वि.—१ सिंह के समान कृश कमर वाली, पतली कमर वाली ।

उ०—१ कुच पाकी नारंगियां, सुपारी सा कठोर । पांन सरीखो पेट । केसर लंकी । नाभी मडळ गुलाब रो फूल । —फुलवाड़ी

उ०—२ नख सूं ले चोटी लगै, तन छवि मांह तरंन । लुळ मिळ केहर लंकियां, लांबै नीर भरंत । —वां. दा.

सं. पु.—१ कबूतर ।

उ०—वरचि दीप वेवड़ा, कळी केवड़ा कनोती । लंकी धजर अलोल वजरमणि मोल विचोती । —मे. म.

२ एक विशेष प्रकार

उ०—१ ग्रोछ पड़छ रवि ग्रंग, चंमर भमर सुर चंम्मर। केकी ग्रीव कसस्सि, तिकर लंकी कव्वूतर। —सू. प्र.

उ०—२ तिके किणहेक भांतरी कवांण छै। ग्रसल सींगण, सेर-जवांन खांचतां वड़वडाट करै, कायर देख भागै, ग्रढार टांकरै चिलै लागै, लंकी कवूतर री गरदन ज्यूं वांकी। तिके वांह में घालीजै छै। —जैतसी ऊदावत री वात

३ सिंह।

४ वीर, योद्धा।

५ एक प्रकार का ताम्बूल।

६ देखो 'लंक' (रू. भे.)

उ०—१ भीण लंकी महा दीसइ ए नारि, सरस क़ंठ सोहांयणउ। —वी. दे.

उ०—२ ग्राभा भळपट ग्रंग क चंदे चीरियां। दरियाई धुज देह, हरै मग हीरियां। लटकण भोला लेह, क वेसर वंकियां। भरिया भूषण भार, लचक्कत लंकियां। —र हमीर

लंकीली–वि. स्त्री.—१ सुन्दर कमर वाली।

उ०—ग्रथ कंवरी रै पत्री सिधश्री लग्न री लड़ी, जीव री जड़ी, सजीली फबीली लजीली, छवीली, रमकीली, लंकीली, कमकीली वकीली लटकीली चकीली चटकीली बतीस लछंणी। —र. हमीर

लंकेंद्र–सं. पु. [स. लंका+इन्द्र] १ रावण।

उ०—राजा प्रतापि लंकेंद्र, सत्य वाचा हरिस्चंद्र, साहसिक विक्रमादित्य। —व. स.

२ विभीषण।

लंकेस, लंकेसर, लंकेसरि, लंकेसरी लंकेसुर, लंकेसुरि, लंकेसुरी, लंकेस्वर, लंकेस्वरी–सं. पु. [सं. लंका+ईश, लंका+ईश्वर] १ रावण। —नां. मा.

उ०—१ सुर तजो चित वरतौ ग्रसोक, लंकेस हणूं सुख करा लोक। —सू. प्र.

उ०—२ वकै वयण लंकेस बिभीसण, म्है तौ भुजवळ मिता। वांणी व्रिथा हुवै रे बीरा, चित ग्रधकांणी चिंता —र. रू.

उ०—३ लंकेसर लंक गयौ वा लेय। —रांमरासौ

उ०—४ लंकेसुरि जीता त्रैवैलोक —रामरासौ

२ विभीषण।

उ०—उवै वार वभीखणौ चालि ग्रायौ, लखै ते हणूमांन पावां लगायौ। प्रणांमेस वैभाखणं भूप येनूं, जपै ग्राव लंकेस स्रीरांम जेनूं। —सू. प्र.

३ ग्रगस्त्य नामक तारा।

लंक्क, लंक्कि—१ देखो 'लंक' (रू. भे.)

उ०—ऊमर दीठी मारुई डींभू जेहि लंक्कि। जांणे हर सिरि फूलड़ा, डाकै चढी डहक्कि। —ढो. मा.

२ देखो 'लंका' (रू. भे.)

लंख—वड़े वांस पर खेल करने वाली नट जाति।

उ०— भड (ट्ट) भोजिग वहु भट्ट नट्ट वोलइ विरुदाळी। लंख मंख खेलंति खग्ग, कर देता ताळी। —विजयसिंह सूरि

लंग–सं. पु.—१ देखो 'लिंग' (रू. भे.)

उ०—न रूप रेख लेख भेख तेख तौ निरंजणं। न रंग ग्रंग लंग भंग संग ढंग संजणं। —र. ज. प्र.

२ देखो 'लांग' (रू. भे.)

लंगड़ – देखो 'लंगड़ौ' (मह., रू. भे.)

लंगड़ाणौ, लंगड़ावौ–क्रि. वि.—दोनों ग्रथवा चारों पैरों का बरावर न जमना। कुछ लचका कर या लंगड़ा कर चलना।

लंगड़ावणहार, हारौ (हारी), लंगड़ावणियौ—वि.।

लंगड़ायोड़ौ – भू. का. कृ.।

लंगड़ाईजणौ, लंगड़ाईजवौ—भाव वा.।

लंगड़ौ–वि.—१ शक्तिशाली, वली।

सं. पु.—२ एक प्रकार का छंद।

३ हनुमान।

सं. स्त्री.—४ घोड़े की एक चाल विशेष।

उ०—दुड़की, कदम, खोळ ग्रर नाच री लंगड़ी चालां धुराधुर में जांणै जित्तौ पारंगत व्हैगौ। घोड़ौ तो वादळ री मंसा परवाणैं हुकम वजावतौ। —फुलवाड़ी

५ देखो 'लंगरी' (रू. भे.)

लंगड़ौ, लंगडौ–सं. पु.—१ एक प्रकार का ग्राम।

वि. [फा. लंग] (स्त्री. लंगड़ी) २ जिसका एक पांव क्षत हो गया हो, काम न करता हो।

३ पैर में विकार या कष्ट के कारण जो ठीक से न चल पाता हो।

४ कोई एक ग्राधार विकार युक्त या नष्ट होने से जो भली प्रकार ग्रथवा सीधा खड़ा न रह पाता हो।

५ क्षतिग्रस्त होने या टूटने के कारण जो पैर टेढा हो गया हो, मुड़ गया हो।

रू. भे.—लांगड़ौ; लांगौ, लांघड़ौ, लांघौ।

मह.—लंगड़।

लंगर–वि.—१ बहुत ग्रधिक।

उ०—येट्ठ छोड ववां थोक, मह ग्रघ दीघ हासळ मोक। सातूं ईतरौ नह सोक, लंगर सुखी सगळा लोक। —र. रू.

२ भारी, वजनदार।

३ दुष्ट, निर्लज्ज, ढीठ।

उ०—लंगर लोग लोभ सौं लागै, बोले सदा उन्हीं की भीर। जोर जुल्म बीच वटपारे, आदि अंत उनही सौं सीर। —दादूवांणी

४ नटखट, शरारती।

सं. पु.—१ सांकल, शृंखला।

उ०—१ आसत सगत ऊधरा आचां, जस जालम अखमाल जिसौ। लोह दोयण ताछे लोह लंगर, औ 'लालौ' लोहार यसौ। —लालसिंह राठौड़ री गीत

२ हाथी के चारों पैरो में बांधी जाने वाली सांकल।

उ०—१ डग बेड़ियां दुलट्ठ, लगा चहुंवां पग लंगर। आकासी सारसी, करै आग्राज भयंकर। —सू प्र.

उ०—२ सुजस घंटा वीर पुड़ सादां, लंगर रठीठां क्रपण लग। सत्र भंज थटां निवाजण सकव्यां, जोस ऊपटां गयंद जग। —उदौतसिंह सीसोदिया री गीत

उ०—३ अवलंबि सखी कर पगि पगि ऊभी, रहती मद वहती रमणी। लाज लोह लंगरे लगाए, गय जिम आणी गय गमणी। —वेलि.

३ वंधन।

उ०—१ क्रवसळ सुता राजकंवार, ऋत जन काज रा। दरसै चखां दत खग दोय लंगर लाज रा। —र. ज. प्र.

उ०—२ लंगर लज्जा रा तरभंगर लाडा, गोरख मायां रा गाहिड़ रा गाडा। —ऊ. का.

४ पैरो में धारण किया जाने वाला सोना या चांदी का आभूपण विशेप।

५ जहाज और नाव आदि को ठहराने के लिए लोहे का वना हुआ बहुत वड़ा कांटा जिसे समुद्र या बडी नदी में जहाज पर से गिराकर जहाज को पानी पर स्थिर रखा जाता है।

उ०—नेहा समद वीच नाव लगी है, बाल न लगत वही जात अकेली। लाज को लंगर छूट गयौ है, वही जात विना दांम की चेरी। —मीरां

६ लोहै की वनी वह वजनदार शृंखला जिसे अपराधी के पैरों में इसलिए बांधते हैं कि वह भाग न जाए।

७ वह मोटा रस्सा जो जहाजों पर काम में लाया जाता है।

८ पक्की सिलाई से पूर्व दूर दूर पर डाले जाने वाले कच्चे टांके, कच्ची सिलाई।

९ कतार, पंक्ति।

उ०—परस लसकर घरर थरर कायर पिंजर, लहर आतस लंगर डमर लागी। जोरवर दोयणां भणूं जवर दोहूं, वेध जण वजर खग अजर गत गजर वागी। —पहाड़खां आढो

१० समूह, झुंड।

उ०—नह भूलौ वात सुमंत्रा नंदण, छोह अनाहक छेले। वे सिय सोध हिमैं भड़ आवै, लंगर फोजां ले ले। —र. रू.

११ फौज, सेना।

उ०—१ माथा हालै सेस मह, पड़ै भार अणपार। कूच करै आया कठठ, लंगर लीयां लार। लार लंगर लियौ पदम दस आठ कप। तोय घर कूल वप जोस ताजा। —र. रू.

उ०—२ 'राणौ' 'वाणौ' राड़ रा, भुज भाले भर भार। काळी निस आया कठठ, लंगर लीवां लार। —वी मा.

१२ वीर, योद्धा।

उ०—अरि अळियौ जड़ हूंत उपाड़ै, साकुर चोरी हांक सरै। ल्हास करै फौजां वड़ लंगर, कीध नीनांण समर करै। —लालसिंह राठौड़ री गीत

१३ भोजन।

१४ गरीवों, या याचकों आदि को वांटा जाने वाला भोजन।

उ०—दरवार सूं गरीव गुरवौं नूं खैरायत लंगर वंटणै लागियौ। —कुंवरसी सांखला री वारता

१५ भोजनालय, भोजनशाला।

१६ मंदिर में लटकाया या किसी पशु के गळे में वांधे जाने वाले घंटे के अन्दर वीच में लटकने वाला धातु का गुटका, लोलक। वि. वि.—इस गुटके का निचला शिरा मोटा होता है और ऊपरी शिरे में छेद होता है। यह घंटे के अन्दर वीचों वीच लटकता रहता है और घंटे के हिलने के साथ ही हिलकर घंटे के अन्दर वाले भाग से टकराता है जिससे ध्वनि उत्पन्न होती है।

लंगरखांनौ-सं. पु. [फा. लंगरखाना] १ दीनों व दरिद्रों को भोजन वांटने का स्थान।

उ०—लंगरखाना वेग है, दळ पार न पाई। 'माल' वियौ वळराव है, जैचंद सवाई। —वी. मा.

लंगरगाह-सं. पु.—१ समुद्र या बडी नदी के किनारे का वह स्थान जहां पर लंगर गिराकर जहाज ठहराये जाते हैं।

लंगरलार-वि.—पंक्तिवद्ध, पंक्तियुक्त।

क्रि. वि.—क्रमशः, लगातार।

लंगराई-सं. स्त्री.—१ शैतान, ढीठ या दुष्ट होने की अवस्था, क्रिया या भाव, शैतानी, शरारत, ढिठाई, दुष्टता।

उ०—१ औगुण वहुत सील नहिं सांची, वहौत करी लंगराई। सौ-कणि सकळ वेरती थाकी, (पीव) परकट सेज बुलाई। —ह. पु. वां.

लंगरी-वि.—१ योद्धा, वीर।

उ०—१ लंगरी रिम सेन लाडो, गुमर धारक लाज गाडो। इळ

झडै कूंभेण आडो, भूझ जाडो झूझ जाडो । —र. रू.

उ०—२ लंगरी खगाटां पांण 'डूंग' नै छुडाय लायौ, सोभा तिहुं थांना साख पायौ सूर चन्द । पायौ फतै 'ज्वार' नांम रहायौ छंवतौ प्रभा, वापौ आसमांन लागौ आयौ नेतवंध । —डूंगजी री गीत

२ सेनापति ।

यौ.—लंगरीराव ।

३ देखो 'लंगड़ी' ।

लंगरीराव - योद्धा, वीर ।

उ०—लंगरीराव रूकां रटक लेणका, भलौ 'अंगजीत' 'उमराव' भीमेण का । — महादांन मेहड़ू

लंगळ—देखो 'लांगळ' (रू. भे.)

लंगस—देखो 'लगस' (रू. भे.)

उ०—लंगस ऊपटां फौज गज थटां भुजळग लहर, सूरतन ठहर जळ गहर साजा । प्रथीपत 'अभौ' आयौ उलट छत्रपती, रौद 'सरविलंद' पर समद राजा । —महाराजा अभयसिंह री गीत

उ०—२ लोहरी लहरि नभ गहर परसै लंगस, वार चक्रधार तिण वार दीधा । विलंबौ वार समराथ जळ दळ विगरि, 'कूभ' सुत जेमि सुत 'नाथ' कीधा । —राव सत्रसाल री गीत

उ०—३ तुरत अेक खरचै रतन, लंगस तोड़ लड़ंग । अभंग भूप उवांवरां, वड गज वाज विडंग ।

—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेळ री वात

लंगा-सं. पु.—एक मुसलमान गायक जाति ।

लंगार-सं. स्त्री.—पंक्ति, कतार ।

लंगी-स. स्त्री. [फा. लग] कुश्ती का एक दांव जिससे टांग लंगड़ी करके प्रतिद्वन्द्वी को टांग अड़ाकर गिराया जाता है ।

लंगूर-स. पु. [सं. लांगूलिन्] (स्त्री. लंगूरी) १ साधारण बंदर से कुछ बड़ा काले मुंह व लंबी दुम वाला बंदर।

उ०—वड़ला माथै अेक अचपळा लंगूर रौ वासौ । अठी नै घांचण नै मेर आयी नै उठीनै वो उणरी कोथळियौ उचकाय लीनौ ।

— फुलवाड़ी

२ चपल चंचल वालकों के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला शब्द ।

उ०—मां, घणौ लडाय, थूं इण लंगूर नै इतार देवैला । विना मापा री नेह अर लाड पछै फोड़ा घालैला । छोरो दिन-दिन पर-वारै । —फुलवाड़ी

३ देखो 'लांगूळी' (रू. भे.) (डिं. को.)

रू. भे.—लंगुल, लंगूल

अल्पा.—लंगूरियौ

लंगूरियौ—देखो 'लंगूर' (अल्पा; रू. भे.)

लंगूरी-सं. स्त्री. [सं. लंघन] १ उछल उछल कर चलने वाली घोड़े की एक चाल ।

२ चुराए हुए पशुओं को ढूंढ लाने पर उसको दिया जाने वाला ईनाम ।

वि.—३ लंगूर का, लंगूर सम्वन्धी ।

लंगूल—१ देखो 'लांगुळ' (रू. भे.) (डिं. को.)

२ देखो 'लांगूळी' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा.)

लंगोचा-स. पु.—१ कीमे से भर कर तली हुई जानवर की आंत, कुलमा, गुलाम ।

लंगोट-सं. स्त्री. [सं. लिंग+पट या रा. ओट] १ प्रायः लम्बी पट्टी के आकार का अथवा तिकोना सिला एक वस्त्र विशेष जो केवल उपस्थ ढकने के लिए कमर में बांधा जाता है ।

उ०—तन लाल गुलाल प्रवाल तरै, भल भोग नितंव नितंव भरे । कसिया तन घोट लंगोट कसी, विसियारस अंतर वीच वसी ।

—ऊ. का.

मुहा० लंगोटी री ढीलौ=वह व्यक्ति जो अवसर आने पर स्त्री गमन करने में न संकुचाता हो ।

लंगोट रौ सांचौ=कभी भी पर-स्त्री गमन न करने वाला व्यक्ति ।

अल्पा,—लंगोटी ।

मह.—लंगोटौ ।

लंगोटबंद, लंगोटबंध-वि.—सदैव के लिए जिसने स्त्री गमन, या परस्त्री के साथ संभोग न करने के लिए प्रण कर रखा हो ।

उ०—लंगोटबंध बाला सहूं, लाल चिळ्यौ मुदराळ वणि । ओभिके वीर सहूं जागिया, भगवंती नीपाइ भणि । —मां. वचनिका

लंगोटियौयार-सं. पु. यौ.—वचपन का मित्र ।

लंगोटी-सं. स्त्री.—१ वह छोटा लगोट जो प्रायः वच्चों के उपस्थ एवं गुदा ढकने हेतु कमर में बांधा जाता है ।

मुहा. लंगोटी में मस्त=जिस के पास कुछ भी न हो फिर भी सदैव प्रसन्न रहने वाला ।

२ काछनी, कोपीन ।

लंगोटौ,—देखो 'लंगोट' (मह., रू. भे.)

उ०—१ सिन्यांसी नागा अवधूता, भगवा वसतर अंग वभूता । जटा लंगोटा ससतर धारी, आप न मारै औरां मारी । —अनुभववांणी

उ०—२ लाल लंगोटौ तिलक सिंदूर को, वैठा वजरंग आसण ढाळ । —लो. गी.

लंगोर-सं. पु.—योद्धा, वहादुर ।

उ०—घोड़ा वांधै घूमरां, तोड़ां दए टकोर । नाळां लिए कळाइयां, लड़वा कज लंगोर । —पा. प्र.

लंगोलार-वि.—१ क्रमशः ।

२ पंक्तिबद्ध ।

लंगौ—१ लंगा जाति का व्यक्ति ।

२ देखो 'लांगौ'

उ०—वदै 'अंगदेस' हुवा जोध वंका । लंगा भोकरै भोक प्राजाळ लंका । —सू. प्र.

लंघक-वि. [सं. लंघ] १ लांगने वाला, उल्लंघन करने वाला ।

२ नियम तोड़ने वाला ।

लंघण—देखो 'लांघण' (रू. भे)

उ०—१ सुण ढोला करहउ कहइ, मो मनि मोटी आस । कइरां कूंपळ नवि चरूं, लंघण पड़इ पचास । —ढो. मा.

उ०—२ हंसा विड़द विचार लै, चुगै तो मोती चुग्ग । नित रा करणा लंघणा, जींणो कितैक जुग्ग । —अज्ञात

लंघणियौ—देखो 'लांघणियौ' (रू. भे.)

लंघणीक—देखो 'लांघणीक' (रू. भे.)

उ०—मण, सरद, चकित, निस, रतिपतिह, लंघणीक मंदह चलत । मिथळेस कुवरि, सीता सुतन, कवि एती ओपम कहत । —र. ज. प्र.

लंघणौ, लंघवौ—देखो 'लांघणौ, लांघवौ' (रू. भे.)

उ०—१ भिल्लै नरिंद खटतीस जात, जोगिंद्र जांग ठिल्लै जमात । लंघी अजाद दध लहर लेत, खांगीवंध चढिया वीर खेत । —वि. सं.

उ०—२ कुंभां घउ नइ पंखड़ी, थांकउ विनउ वहेसि । सायर लंघी प्री मिळउ, प्री मिळि पाछी देसि । —ढो. मा.

उ०—३ वेवौ दुंद न वीसरै, 'चंद' तणौ हरनाथ । पथ अलग्गो लंघतां, लारा लग्गो साथ । —रा. रू.

उ०—४ हणमत पवै वांनर अवर, कवण कुदि लंघै महण । —गु. रू. वं.

उ०—५ छोडा छोड करंता छोळां, नांमै सीस नरेस नूं । लंघै रात अणंद अलेखै, सो सुख नहीं सूरेस नूं । —र. रू.

लंघणहार, हारौ (हारी), लंघणियौ—वि. ।

लंघिओड़ौ, लंघियोड़ौ, लंघ्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लंघीजणौ, लंघीजवौ—कर्म वा. ।

लंघन—देखो 'लांघण' (रू. भे.)

लंघाड़णौ, लंघाड़वौ—देखो 'लंघाणौ, लंघावौ' (रू. भे.)

लंघाड़ियोड़ौ—देखो 'लघायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लंघाड़ियोड़ी.

लंघाणियौ—देखो 'लांघणियौ' (रू. भे.)

उ०—केहरी मरण जोहरी चौ कटेड़ै, विछुटियां लंगर लंघाणियौ वाघ । खाग थारी गयौ साहिजादा खड़ै, खांन-जादा गयौ वांहतो खाग । —लालसिंह सोळंकी री गीत

लंघाणौ, लंघावौ—क्रि. स. [लंघणौ या लांघणौ क्रिया का प्रे. रू.] लांघने का काम किसी से करवाना ।

लंघाणहार, हारौ (हारी), लंघाणियौ—वि० ।

लंघायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लंघाईजणौ, लंघाईजवौ—कर्म वा०

वि. वि.—देखो लांघणौ, लांघवौ'

लंवाड़णौ, लंघाड़वौ, लघावणौ, लघाववौ (रू. भे.)

लंघावणौ, लंघाववौ—देखो 'लंघाणौ, लंघावौ' (रू. भे.)

उ०—गाडर पूंछ विलंव कर कोई पार लंघावै । —केसौदास गाडण

लंघावणहार, हारौ (हारी), लंघावणियौ—वि. ।

लंघाविओड़ौ, लंघावियोड़ौ, लंघाव्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लंघावीजणौ, लंघावीजवौ—कर्म वा. ।

लंघावियोड़ौ—देखो 'लंघायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लंघावियोड़ी)

लंघौ-वि. [सं. लंघन] भूखा ।

उ०—कड़ीयां लंघा केहरी, गज राज चलारां । नितंवां दीजै ओपमा, वीणार वैहारां । —मयाराम दरजी री वात

लंचणौ, लंचवौ—देखो 'ललचणौ, ललचवौ' (रू. भे.)

उ०—रसै माधुरै पी जभीरी विजोरा, झुकै साख फूलां फलां भारी झोरा । सनी सी मधू दाख अनार सेवा, दियौ आणि लंचै सुधा जांणि देवा । —रा. रू.

लंचणहार, हारौ (हारी), लंचणियौ—वि. ।

लंचिओडो, लंचियोड़ो, लंच्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लंचीजणौ, लंचीजवौ—भाव वा. ।

लंच्छण, लंच्छन, लंछन—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

उ०—ख्यात मिली जीमण, कीवौ, मिल पास कुमर नामज दीधौ । नागतणौ लंछण जांणी, स्रीपास भजो पुरुसा दांनी । —जयवांणी

२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

३ देखो 'लांछन' (रू. भे)

उ०—१ साल्ह कुंअर सूड़उ कहइ, माळवणी मुख जोइ । प्रांण तजेसी पदमणी, लंछण देस्यइ लोइ । —ढो. मा.

उ०—२ रिसह लंछणि घोरिउ उल्लसइ मु भवपंकि पड़्या जन तारिसिइ । —जयसेखर सूरि

लंछन—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

उ० – १ खड़्ग लंछन तप तेज अखंडित, अरिहंत तीन भुवन अव-

तंस। समय सुंदर कहै मेरौ मन लिनौ, जिन चरणें जिम मांनस हंस। —स. कु.

उ०—२ सीस मांनता देवाधिपती, ससिहर एहवुं जांणी। विनय चंद्र प्रभू चरणां लागौ, लंछन नउ मिस आंणी। —वि. कु.

२ देखो 'लांछन' (रू. भे.)

३ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

लंछौ—स्वभाव।

उ०—पण पुलस हाळा आपरै लंछा सारू बूढै भायलै नवलजी रा पग पकड़ लेसी तथा भूल सिकार जासी। —दसदोख

लंजा-सं. स्त्री.—१ लक्ष्मी।

उ०—ओजी बेटा थारै काहे की गुमराई जी स्यांमसुंदर थारै लंजा सी लुगाईजी। —लो. गी.

२ धन, दौलत।

उ०—पदमणि पूंगळ री ऊगळ गळ आगै, लंजा हंजादै गंजा ग्रह लागै। महितळ मगजाई मेले थळ मेली, लेली महिमा मत महिला दळ लेली। —ऊ. का.

३ सीता।

४ वेश्या।

५ व्यभिचारिणी, कुटिनी, कुलटा।

लंजौ, लंभौ-वि. [स्त्री. लंजा, लंजी, लभा, लंभी] १ सुन्दर।

उ०—उदियापुर लंजा सहर, मांणस घण मोलाह। दे भाला पांणी भरै, आईयौ पिछोलाह। —महादांन मेहड़ू

२ सुकुमार।

३ शौकीन, अलबेला।

उ०—वैवते ओठी नै हेलौ मारियौ ए, लंजा ओठी ए लौ, घड़इयौ उखणावतौ जाव, वाला जी ओ। —लो. गी.

४ रसिक, रसिया।

उ०—तठां उपरांति करि नै भोगिआ भमर लंजा छयल। हुसनाक जुवांन निजर बाज बाजार मांहि ऊभा जोहां खाय छै। —राजांन राउत री वात वणाव

रू. भे.—लांजौ

५ लंपट।

सं. पु.—६ हंस।

लंठ-वि.—१ दुष्ट, कृतघ्न।

उ०—निनाद बंध अंध के दुकव त्रोटतै। नर्दै महांन लंठ संठ के कुकंठ घोटतै मर्दै। —ऊ का.

२ मूर्ख, उजड्ड।

लंठई-स. स्त्री.—लंठ होने की अवस्था या भाव, लंठपनन

लंड-सं. पु. [सं. लड़ि उत्क्षेपणे=उछालना ऊपर फेंकना] पुरुषेंद्रिय, शिश्न।

रू. भे.—लवंड लांड।

लंडण—देखो 'लंदन' (रू. भे.)

लंडी-सं. स्त्री.—कुलटा, दुश्चरित्रा स्त्री।

लंडूरौ-वि. [स्त्री. लंडूरी] १ बिना पूंछ का, जिसकी पूंछ कटी हुई हो।

२ अंग भंग।

लंत—देखो 'लता' (रू. भे.)

लंतग-सं. पु.—देवलोक (जैन)

लंदन, लंधन-सं स्त्री—१ इग्लैंड की राजधानी का शहर।

उ०—त्यां हंदी तरवार पगा पतसाहरै। लंदन घराई लाय निखळ नर नाहरै। —किसोरदांन बारहठ

उ०—२ प्रतापीक जग चावौ 'पातल', दुनियां में ज्यूं सूर दिपै। लंधन धणी जांण वै त्याकत, जन जस लेवण खड़ौ तपै। —जुगतीदांन देथा।

रू. मे.—लंडण

लंप-सं. पु.—१ खनिज तैल, मिट्टी का तेल।

२ देखो 'लैंप' (रू. भे.)

३ देखो 'लांप' (रू. भे.)

लंपक-सं. पु.—१ लामघम देश जो काबुल नदी के उत्तरी तट पर है।

रू. भे.—'लंबक'

लंपट-वि. [सं.] १ व्यभिचारी, विषयी, कामुक।

उ०—लंपट खळ लुच्चा बीजू बुच्चा, टुच्चां पण टोकंदा है। चाकर रा चाकर ठाकर ठाकर, बाकर वण बोकंदा है। —ऊ. का.

२ ऐयाशी।

३ लालची।

४ अनुरक्त, लीन।

उ०—विसै सुख लेण सारूं दारू दीधौ, पण इसौ सूरवीर सौ उण समै वैर हीज याद कियां पण विसय में लंपट न हुऔ। —वी. स. टी.

५ उपपति, यार।

रू. भे.—लंपटी।

लंपटता-सं. स्त्री.—१ लंपट होने का भाव या अवस्था।

२ कुकर्म, व्यभिचार।

लंपटी—देखो 'लंपट' (रू. भे.)

उ०—१ माठा करतब लंपटी, अति घणा। ते तौ लक्षण कहीजै नीचौ रे। —जयवांणी

लंपाक–पु. सं. [सं.] लंपट, दुराचारी।

२ पुराणों में वर्णित उत्तर पश्चिमी भारतवर्ष का मुरंड नामक देश।

लंपी–सं. स्त्री.—१ गोटा किनारी की एक किस्म जो ओढने के लगाई जाती है।

लंपो—देखो 'लांपो' (रू. भे.)

लंफणो, लंफबो–क्रि. अ. [सं लंफ] कूदना, छलांग लगाना।

उ०—वेग सुरंगम् अति विहद, प्राक्रम तन भरपूर। गढ सफील झंप्यौ गिगन, लंफ्यौ जांण लंगूर। —वगसीरांम पुरोहित री वात

लंफणहार, हारौ (हारी), लंफणियो—वि.।

लंफिओड़ौ, लंफियोड़ौ, लंफ्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लंफीजणौ, लंफीजबौ—भाव वा.।

लंफियोड़ौ—कूदा हुआ, छलांग लगाया हुआ।

(स्त्री. लंफियोड़ी)

लंव–सं. पु. [सं.] १ कृष्ण द्वारा मारा जाने वाला एक राक्षस, प्रलंवासुर।

२ खर नामक दैत्य का भाई एक असुर।

३ एक प्राचीन मुनि।

४ शुद्ध राग का एक भेद।

५ ग्रहों की एक प्रकार की गति (ज्योतिष)।

६ वह रेखा जो किसी रेखा पर खड़ी और सीधी गिरती हो।

७ दूरी, फासला।

उ०—किला में लंव घणी पड़ती तिणसूं गोपाळ पोळ रै उरली तरफ नै चोकैळाव रै परली तरफ भैरूंपोळ नै बुरज और फेर नवी कराई। —मारवाड़ री ख्यात

रू. भे.—लंवक।

लंवउ—देखो 'लांवौ' (रू. भे)

उ०—छोटी वीख न आपड़ां, लांवी लाज मरेह। सयण वटाउ वाळ रे, लंवऊ साद करेह। —ढो. मा.

लंव-कंचुक–सं. स्त्री. [सं.] प्रायः विधवा स्त्रियों के पहनने की अंगिया।

लंवक–सं. पु.—फलित ज्योतिष के योग जिनकी संख्या १५ है।

देखो 'लंव' १, २, (रू. भे.)

उ०—ताड वृक्ष अमूल्या कान्हउ, सिकटा सुर संघारचा। नड कूवड नई भंमण कराव्या, खड खड लंवक मारचा। —रुक्मणी मंगळ

देखो 'लंपक' (रू. भे.)

रू. भे.—लंवुक।

लंवकन्न, लंवकरण–वि. [सं. लंव+कर्ण] १ लम्बे कानों वाला, जिसके कान लम्बे हों।

२ मूर्ख।

उ०—विवक्रि वक्र ह्वै अवक्र चन्न चैंठतै वहैं। विवन्न लंवकन्न के दुकन्न ऐंठते वहैं। —ऊ. का.

सं. पु.—१ गधा (डिं. को.)

२ विलाव, ३ हाथी, ४ वकरा, ५ खरगोश, ६ राक्षस।

लंवकराड़ियौ–वि. [सं. लव+रा. कराड़ी=गरदन] लंवी गर्दन वाला।

उ०—करहा लंवकराड़िआ, वे वे अंगुळ कन्न। रातिज चीन्हौ वेलड़ी, तिण लाखीणा पन्न। —ढो. मा.

सं. पु.—ऊंट।

लंवग्रीव–सं. पु. [सं.] ऊंट।

उ०—वांणां भरिया लंवग्रीवा वणै, सीसांण सोरांण अपार सुणै। —विनय-रासौ

वि.—लंवी गर्दन वाला।

लंवड़ाणौ, लंवड़ावौ–क्रि. स.—उद्दण्ड गाय, भैंस आदि पशुओं को खेत में चरने हेतु लम्बे रस्से से बांधना या बांध कर छोड़ देना।

लंवड़ाणहार, हारौ (हारी), लंवड़ाणियौ—वि०।

लंवड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लंवड़ाईजणौ, लंवड़ाईजवौ—कर्म वा०।

लंवराणौ, लंवरावौ, लंवेड़णौ, लंबेड़वौ, लांवेड़णौ, लांवेड़वौ —रू. भे.

लंवड़ायोड़ौ–भू. का. कृ.—उद्दण्ड गाय, भैंस आदि पशुओं को खेत में चरने हेतु लंवे रस्से से बांधा या वांधकर छोड़ा हुआ।

(स्त्री. लंवड़ायोड़ी)

लंवछड़—देखो 'लांमछड़' (रू. भे.)

उ०—छुटै लंवछड़ ताड़ तड़ तड़। वांण छुट वड़ सोक सड़ सड़। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

लंवजीभी–वि. [सं. लंव+जिह्वा] १ जिसकी जीभ लंवी हो।

२ वाचाल, वातुनी।

लंवत—देखो 'लंवित' (रू. भे.)

उ०—चमर धार परवार, करी आंमर परिक्रमा। भुज लंवत डंडोत, वयण व्रत पेख व्रहम्मा। —रा. रू.

लंवतड़ंग, लंवधड़ंग–वि.—ताड़ के समान लम्वा, वहुत लम्वा।

उ०—१ वलिराजा पूरा जिग किया, तव इंद्र हेत हरि आया। पाव पताळि सीस असमांनां, लंवतड़ंग कहाया। —ह. पु. वां.

उ०—२ इत्तै ई में तो अेक लंवधड़ंग काळी कांवळ ओढियोड़ी रति-वाळी जीवती जागती मूरती आय धमकी। —वरसगांठ

रू. भे.—लंवौ-तड़ंग, लांवौ-तड़ंग।

लंवपयोधरा–सं. स्त्री.—कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

लंवमांण–वि. [सं. लंबमान] दूर तक फैलाया गया हुआ।

लंवर—देखो 'नंवर' (रू. भे.)

लंवरदार—देखो 'नंवरदार' (रू. भे.)

लंवराणौ, लंवरावौ—देखो 'लंवडाणौ, लंवड़ावौ' (रू. भे.)

लंवराणहार, हारौ (हारी), लंवराणियौ—वि०।

लंवरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लंवराईजणौ, लंवराईजवौ—कर्म वा०।

लंवहत, लवहथ, लंवहात, लंवहाथ—देखो 'लांवाहाथ' (रू. भे.)

लंवहोठी–वि.—जिसके होठ लवे हो।

लंवाई–सं. स्त्री.—१ लंवा होने की अवस्था या भाव, लम्वापन।

२ किसी वस्तु का सवसे लंवा आयाम या पक्ष।

लंवाणौ, लंवावौ–क्रि. स.—१ लम्वा करना।

२ द्रुत करना।

लंवाणहार, हारौ (हारी), लंवाणियौ—वि०।

लंवायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लंवाईजणौ, लंवाईजवौ—कर्म वा०।

लंवायत–वि. [सं.] १ लंवायमान।

उ०—अर आगै देवराज री रचियौ आठ हाथ उछ्रित, आठ हाथ लंवायत, वतीस पूतळी सहित चन्द्रकांत मणिमय एक सिंघासण कोई प्रासाद री पीठ-भू खोदतां कढियौ तिको ही आप रै भद्रासण वणायौ। —वं. भा.

२ लम्वा।

लंवाहात, लंवाहाथ—देखो 'लांवाहाथ' (रू. भे.)

लंविका–सं. स्त्री. [सं.] गले के अंदर की घंटी, कौआ।

लंवित–भू. का. कृ. [सं.] १ लवा किया हुआ. २ निश्चय किया हुआ. ३ विचार स्थिगित किया हुआ. ४ लटकता हुआ. ५ भूलता हुआ. ६ लंव के रूप में आया हुआ. ७ आधारित, आश्रित, टिका हुआ।

सं. पु.—मांस, गोश्त।

रू. भे.—'लंवत'

लंवी—देखो 'लांवी' (रू. भे.)

लंवीकांचळी—देखो 'लांवीकांचळी' (रू. भे.)

लंवी वांयांरी—देखो 'लांवी वांयांरी' (रू. भे.)

लंवुक–वि.—देखो 'लंवक' (रू. भे.)

लंवू, लंवौ—देखो लांवौ' (रू. भे.)

उ०—यो मन भवंण वसै तन वंवौ' गवन करै कव छोटिय लंवौ।
—अनुभववांणी

(स्त्री. लंवी)

लंवेड़णौ, लंवेड़वौ—देखो 'लंवड़ाणौ, लंवड़ावौ' (रू. भे.)

लंवेड़णहार, हारौ (हारी), लंवेड़णियौ—वि०।

लंवेड़िओड़ौ, लंवेड़ियोड़ौ, लंवेड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

लंवेड़ीजणौ, लंवेड़ीजवौ—कर्म वा०।

लंवेड़ियोड़ौ—देखो 'लंवड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लंवेड़ियोड़ी)

लंवोड़ौ—देखो 'लांवौ' (अल्पा,. रू. भे.)

लंवोतड़ंग, लंवोतडंग देखो 'लंवतड़ंग' (रू. भे.)

लंवोदर–सं. पु. [सं. लंव + उदर] १ जिसका पेट वड़ा हो।

२ भोजन भट्ट।

३ गजानन, गणेश। (अ. मा., डिं. को., ह. नां. मा.)

उ०—गढ जोवांण 'अभौ' गजपत्ती, गुण गाऊ दूजो मदपत्ती।
लंवोदर सारद हित लीजै, दास जांण मोहि वांणी दीजै।
—रा. रू.

रू. भे.—'लंवोवर'

अल्पा.,—लंवोदरौ।

लंवोदरौ—देखो 'लवोदर' (अल्पा., रू. भे.)

लंवोवर—देखो 'लंवोदर' (रू. भे.)

उ०—सिंभू गवरि सुतनं वारण डसण मेक लंवोवर। —रांमरासौ

लंवौ—देखो 'लांवौ' (रू. भे.)

उ०—गोरी पीडी पर ऊघड़ता गोडा। लंवी वीखां दै लेतोड़ी लोडा। —ऊ. का.

(स्त्री. लंवी)

लंवोस्ट–सं. पु. [सं. लंवोष्ठ] १ ऊंट।

२.४६ क्षेत्रपालों में से ४४ वां क्षेत्रपाल।

लंभ–सं. पु. [सं. लंभस] १ धन, दौलत।

उ०—१ पारंभकरण आरंभ में, लियण लंभ सोरंभ जस। रखपाळ मंडोवर राखिया, भू डंडे रखवै अडस। —गु. रू. वं.

उ०—२ लंभ वगासिजै कोडी लाख, भेदगर खट भाख।
—गु. रू. वं.

लंहगौ—देखो 'लहंगौ' (रू. भे.)

ल–सं. पु. [सं.] १ इन्द्र, २ चिन्ह, ३ पैर। (एका.)

४ छंद शास्त्र में लघु मात्रा का संकेत।

सं. स्त्री—५ पृथ्वी। (एका.)

लइयौ-सं. पु.—देखो 'लेखक' (अल्पा., रू. भे.) (जैन)

लई-सं. स्त्री.—१ लक्ष्मी।

२ एक पौधा विशेष।

उ०—जिकौ थे किसा नही जांणौ हो, फोग है जिती धरती थांरी है, अर साजो वा लई है, जिती धरती म्हारी है। —द. दा.

३ देखो 'लेई' (रू. भे.)

लउडौ—देखो 'लकड़ी' (रू. भे.)

उ०—एक तउ माल हूंतउ पडरा पडिवउं। अनेरउं वली ऊपरि माथइ लउडा नउ घाउ। - पष्टी शतक

लउवौ—देखो 'लावौ' (रू. भे.)

उ०—तीतर लउवा वाटवड़, वैदांणी बुगलाह। लखै पंखीवरण उड़ रह्या, वा-वा जी वा-वाह। —गजउद्धार

लउस-स. पु.—देश विशेष। (व. स.)

लक-सं. पु.—१ पसलियों और कटि के मध्य का भाग।

उ०—झांमरै पूंछ रा, भुवरियैरूं रा, चोळमें रंग रा, लांघियै सीह ज्यूं लकां चढिया थका, भागा गाडा ज्यूं ठठठाठ करता थका,...। —खीची गंगेव नींबावत री दोपारी

लकड़—देखो 'लकड़ी' (मह., रू. भे.)

उ०—पीछै सं. १५६४ चैत वद २ नै स्रीकरनी जी आपरै हाथसूं गुंभारौ कियौ, विनां तगारी। नै जाळांरा लकड़ दिया ऊपर। —द. दा.

२ देखो 'लकड़ी'

उ०—जाय जगत में धम जगावै, आप धम कीं गम न पावै। भेदी बिना भरम का भंडा, हाथ लोह लकड़ का डंडा। —अनुभववांणी

लकड़की—देखो 'लकड़ी' (अल्पा., रू. भे.)

लकड़ी-सं. स्त्री. [सं. लगुटः या लगुडः] १ पेड़, झाड़ी आदि की छाल के नीचे का वह ठोस भाग जो जलाने, ईमारत या इमारती सामान बनानेमें प्रयुक्त होता है, काष्ठ।

उ०—१ तठा उपरायंत हिरण खुलै छै सू जांणै धोबी रै घर कपड़ा मोकळा किया छै। मांस उतार-उतार टुकड़ियां में घातजै छै। मिरच धांणा सूंठ हळदी वेसवार दीजै छै। दहीरौ रजवौ दीजै छै। लकड़ी री कठौती में सुदवक राखजै छै। —खींची गंगेव नींबावत री दोपहरौ

उ०—२ जड़ खिण काटी लकड़ी तौ ईत कूंपळ काढि। हरिया फेर न पांगरै, इसी वाढणी वाढि। —अनुभववांणी

२ पेड़ झाड़ी आदि के तनों एव शाखाओं का वह ठोस भाग जो चुल्है आदि में जलाने हेतु काम में आता है, ईंधन।

उ० वडाई भरीजगी। बाप मरग्यौ लकड़यां रा भारिया ढोवतौ ढोवतौ, तीरथ करयौ न वरत। —दसदोख

मुहा.—१ लकड़ी देणी—शव को चिता पर रख कर जलाना। या जलती चिता पर लकड़ी डालना।

२ लकड़ी होणौ—सूख कर लकड़ी जैसा कठोर होना। शरीर कृश या क्षीण होना।

३ कुछ विशिष्ट पेड़ों की वह लम्बी एवं पतली शाखा जो आत्म-रक्षार्थ या वृद्धावस्था में सहायतार्थ रखी जाती है।

मुहा.—लकड़ी चलाणी—आत्मरक्षार्थ लकड़ी को कलात्मक ढंग से चारों ओर घुमाना।

२ लकड़ी चलणी या चालणी=किन्हीं दो पक्षों में लकड़ी द्वारा लड़ाई प्रारंभ हो जाना।

रू. भे.—लक्कड़ी, लाकड़ी।

मह. - लकड़, लकड़ो, लक्कड़।

अल्पा., लकड़की

लकड़ीकार-सं. पु.—सुथार, वढ़ई।

लकड़ौ-सं. पु.—१ लकड़ी का मोटा लट्ठा, लक्कड़।

उ०—जद स्वांमीजी बोल्या—लकड़ा नै पांणी में न्हांख्यां ऊंचौ आवै तौ कुण ही ल्यावै नहीं पिण हलकापणां रा योग सूं तिरै। —भि द्र.

२ देखो 'लकड़ी' (मह., रू. भे.)

उ०—तिण रूपियां री जायगा लेय नै लकड़ा री खटकड़ कीवी। भि. द्र.

मुहा.—१ लकड़ौ करणौ=किसी कार्य के सम्पादनार्थ किसी को वार वार तंग करना।

२ लकड़ौ फंसणौ=विघ्न या बाधा पड़ना।

३ लकड़ौ फंसाणौ=विघ्न या बाधा डालना।

रू. भे.—लउडौ, लाकड़ौ, लाकडौ।

मह.,—लकड़, लक्कड़, लाकड़, लाकड।

अल्पा., —लाकड़ियौ, लाकडियौ।

लकमांन—देखो 'लुकमांन' (रू. भे.)

लकलक-स. पु.—१ सांपों, कुत्तों मनुष्यों की वार-वार व शीघ्रता से जीभ हिलाने की क्रिया।

२ वक-झक करने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—लिकलिक।

लकलकणौ, लकलकवौ-क्रि. अ.—तलवार आदि तेज धार वाले हथियारों का अति तीव्र गति से ऊपर-नीचे, दांये-बांये चमकते हुवे चलना।

लकलकणहार, हारौ (हारी), लकलकणियौ—वि०।

लकलकिओड़ौ, लकलकियोड़ौ, लकलक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लकलकीजणौ, लकलकीजवौ—भाव वा० ।
लकलक्कणौ, लकलक्कवौ—रू० भे० ।

लकलकियोड़ौ-भू. का. कृ.—तलवार आदि तेज धार वाले हथियारों का अति तीव्र गति से ऊपर-नीचे, दांये-बायें चमकते हुवे चला हुआ ।
(स्त्री. लकलकियोड़ी)

लकलक्कणौ, लकलक्कवौ—देखो 'लकलकणौ, लकलकवौ' (रू. भे.)
उ०—लकलक्कै वरछी लगत छळिछाय छछक्कै । —वं. भा.
लकलक्कणहार, हारौ (हारी), लकलक्कणियौ—वि० ।
लकलक्किअोड़ौ, लकलक्कियोड़ौ, लकलक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लकलक्कीजणौ, लकलक्कीजवौ—भाव वा० ।

लकलक्कियोड़ौ—देखो 'लकलकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लकलक्कियोड़ी)

लकवौ-सं. पु. [अ. लकवा] एक प्रकार का वात रोग जिसमें रोगी का मुंह टेढ़ा हो जाता है, अर्दित ।
उ०—सूळी देवै सहज, देयदै फांसी देखौ । मिरघी लकवै मांहि, उभय अंतर अवरेखौ । —ऊ. का.

लकार-सं. पु. [सं.] १ संस्कृत व्याकरण के काल, जो दस माने गये हैं ।
२ ल वर्ण या अक्षर के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द ।

लकारी-सं. पु.—मुसलमानों में सैय्यद वंश की एक शाखा ।
उ०—सिंध में लकारी सइयदांरी मांनता विसेस है ।
—बां. दा. ख्यात

लकीर-सं. स्त्री. [सं. रेखा] १ लम्बाई के आकार में बनाया हुआ कोई चिन्ह या आकृति ।
ज्यूं—कागद माथै लकीर खींचणी ।
२ पंक्ति, कतार ।
ज्यूं—गिलासां री एक लकीर ।
३ लम्बे समय से चली आ रही परम्परा, प्रणाली, प्रथा या रीति ।
मुहा.—१ लकीर कूटणी या पीटणी=एक ही बात को बार-बार दोहराना, बकझक करना, रूढ़िवादी होना ।
२ लकीर री फकीर होणौ=रूढियों का अंधानुकरण करना ।

लकीरिअौ, लकीरियौ-सं. पु.—एक प्रकार का सिंह की जाति का हिंसक जानवर जिसके शरीर पर रेखाएं होती हैं ।
उ० तठां उपरांत करि नै राजांन सिलांमति वडा सिकारी सिंघळी, सादूळ, पटाला, केहरी नवहथा, कंठीरीआं, रीछीआं, तेलिआं, तींदूला, लकीरिआ वघेरिआ, चीतरा, भांति भांति रा जाति जाति रा, नाहर सांकळै जड़िआ रहडुअै गाडे, बैठा, कसता कणणता, बूंबाड़ करता वहे छै । —रा. सा. सं.

लकुट-सं. पु. [सं. लकुटः] लकड़ी ।
उ०—कमळ मुगट गाढौ करै पीतपट बांधकट, भ्रात बळ हाथ दे लकुट भाळौ । कुगळियापीड सिर विकट आग्राज कर, कढ़िछियौ कांन नटराज काळौ । —बां. दा.

लकूंदर-सं. पु.—१ बन्दर ।
२ बन्दूक की कळ (औजार) विशेष जिसकी छोर से बन्दूक छूटती है ।
३ लुच्चा, लफंगा, बदमाश ।
उ०—खांणनै पीण आघा खिसक, लागा लपक लकूंदरा । इम अमल तमाखू है उभै, एकण बिल रा ऊंदरा । —ऊ. का.

लकोणौ, लकोवौ—देखो 'लुकाणौ, लुकावौ' (रू. भे.)
उ०—१ संपत सूं रैवा अर चौड़ै नीं आया । आपरा धन नै लको'र खायौ अर मेवैरा रूंख वाज्या । —दसदोख
लकोणहार, हारौ (हारी), लकोणियौ—वि० ।
लकोयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
लकोईजणौ, लकोईजवौ—कर्म वा० ।

लकोयोड़ौ—देखो 'लुकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लकोयोड़ी)

लकोवणौ, लकोवबौ—देखो 'लुकाणौ, लुकावौ' (रू. भे.)
उ०—घोळा खोसै काच कचूंटी हरदम हाथां ही में राखै । देखणियां सूं संकतौ लकोवै है, पण ठोडी रै चिगदा घालतौ ही जावै है ।
—दसदोख
लकोवणहार, हारौ (हारी), लकोवणियौ—वि० ।
लकोविअोड़ौ, लकोवियोड़ौ, लकोव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लकोवीजणौ, लकोवीजवौ—कर्म वा० ।

लकोवियोड़ौ—देखो 'लुकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लकोवियोड़ी)

लक्क-सं. स्त्री.—१ ललकार, हाक ।
उ०—हुय रौद्र हक्क ग्रेह लक्क जं किलक्क जोगणी । वंका गरज्जै खड़ग वज्जे सक्ति रज्जै सक्कणी । —रा. रू.

लक्कड़-वि.—मूर्ख ।
उ०—पाघरौ कैवै है—वेटै नै लक्कड़ री मक्कड़ कर लियौ है, कैरा फूटा है, जिकौ इयै नै वेटी देवै । —वरसगांठ
२ देखो 'लकड़ी' (मह; रू. भे.)
३ देखो 'लकड़ौ' (मह, रू. भे.)
उ०—लक्कड़ में दीयौ, हुवौ घररौ घोरी रै । घास फूस छांणा देईनै, फूंक दियौ जिम होळी रै । —जयवांणी

लक्कड़ी—देखो 'लकड़ी' (रू. भे.)
उ०—म्हैंनै ढोली भूंबिया, लूंगै-लक्कड़िएह । म्हांनै पिउजी मारिया

चंपारै कळियेह । —ढो. मा.

उ०—ल्यें हाथ लक्कड़ी लाळ मुख पड़े अलेखै । लिचपचती कडि लांक, लाज मन मांहि न लेखै । —ध. व. ग्रं.

लक्ख—देखो 'लक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ रहै रतव्यांन अठयासी रिक्ख, लहै नंहं पार ब्रहम्मा लक्ख । सदा जस नव्व कहे मुख सेस, आदेस आदेस आदेस आदेस । —ह. र.

उ०—२ विसन्न निपाय किती एक वार, ब्रहम्मा हाथ दियौ वोपार । आपांणी इच्छा आप अलक्ख, लिया अवतार चौरासी लक्ख । —ह. र.

लक्खण—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

उ०—सुलतांन पठाई, दूरां आई, मलफंती ज्यूं पांव धरै । तेरा पांचूं लक्खण, सरब सुलक्खण, सैनांणी ज्यूं याद करै । —लो. गी.

२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०—विहूं रघु लक्खण पुत्र बुलाय, सभै जग विस्वामित्र सहाय । जनंक तणी वळि जोयौ ज्याग भांगै धनु कट्टण सीय विसाग । —ह. र.

लक्खणिण—स. पु.—लक्षणों का ज्ञाता ।

उ०—विसम छंद लक्खणिण सत्य अत्यत्थ विसालह । जिणवल्लह गुरुभत्तिवंतु, पयड़उ कालिकालह । —ऐ.. जै. का. सं.

लक्खणौ, लक्खवौ —देखो 'लखणौ, लखबौ' (रू. भे.)

उ०—रटत जेम सुर रोर, मीर घण घोर परक्खै । सरवर जळ पूरियै, भेख हरखै सुख लक्खै । —रा. रू.

लक्खणहार, हारौ (हारी), लक्खणिओ—वि० ।

लक्खिओड़ौ, लक्खियोड़ौ, लक्ख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लक्खीजणौ, लक्खीजवौ—कर्म वा० ।

लक्खारौ—देखो 'लखारौ' (रू. भे.) (डिं. को.)

लक्खि—१ देखो 'लक्ष' (रू. भे.)

उ०—अेकइ वन्नि वसंतड़ां, अे वड अंतर काइ । सीह कवड्डी नह लहइ, गइवर लक्खि विकाइ । —अ. वचनिका

२ देखो 'लखी' (रू. भे.)

लक्खियोड़ौ—देखो 'लक्ख्योड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लक्खियोड़ी)

लक्खी—देखो 'लखी' (रू. भे.)

उ०—१चढचौ मीर काळ हयं वे विरच्चै, मनौ मेक मूंगा यतं थाळ नच्चै । चढचौ पीरखांनं यतै वाज लक्खी, जिनोंके रहे पीर चोवीस पक्खी । —ला. रा.

उ०—२ आगै मिळ गयौ लक्खी विणजारौ लै कितरै निस्वन भाज्यौ रे जाय । —लो. गी.

लक्खीवाळदियौ—देखो 'लक्खीविणजारौ'

लक्खीविणजारौ [सं. लक्ष+वाणिज्यकर] 'विणजारा' जाति का वह व्यक्ति जिसके पास व्यवसाय करने के लिए एक लाख वैल हों ।

वि. वि.—विणजारा जिसको वाळदिया भी कहते हैं प्राचीन काल में यातायात के साधनों के अभाव के कारण ये लोग वैलों की पीठ पर सामान, माल, असवाब लाद कर प्रायः सुदूर प्रांतों में विक्री के लिए जाते थे । इस प्रकार जिस विणजारे के पास कम से कम एक लाख वैल होते थे उसे लक्खी विणजारा कहते थे ।

रू. भे.—लखीविणजारौ

लक्ष—वि. [सं. लक्षं] सौ हजार, लाख ।

उ०—तीन लक्ष द्रव रोकड़ा, चंचळ उच्च पचीस । निपट विनै धारी निजर, न्रपति निवारी रीस । —रा. रू.

सं. पु.—लाख की संख्या ।

रू. भे.—लक्ख, लक्खि, लख, लख्ख, लच्छ, लछ, लाख ।

३ देखो 'देखो लक्ष्य' (रू. भे.)

लक्षक—सं. पु. [सं] संबंध या प्रयोजन से अपना अर्थ सूचित करने वाला शब्द ।

उ०—१ छंद अलंकृत छांह छुवै नहीं, वांह गहै नहिं पुस्तक वांचै । लक्षक लक्ष्य कहां अविधाकथ. वाच्यरु वाचक नाच न नाचै । —ऊ. का.

उ०—२ केई जिकै रसक जांण ज्यौं नायिका भेद जणाय दीजै है, तिण मैं रस री सागै मूरत ही वणाव दीजै है, सुकिया, परकिया सामान्यादि भेद प्रभेद लक्षक वखांणिजै है, तिणां में धुनि, व्यंजना, लक्षणा, अलंकार, भाव, अनुभाव, संचारी, सथायी पिण वचन भास जांणीजै है । —र. हमीर

वि.—१ देखने या दिखाने वाला दर्शक ।

२ जता देने वाला, चेताने वाला ।

लक्षण—सं. पु. [सं.] १ किसी पदार्थ या वस्तु का वह गुण या विशेषता जिससे वह पहचाना जाय ।

२ किसी व्यक्ति या प्राणी का वह गुण या विशेषता जो अन्य में न हो ।

३ किसी रोग के सूचक शरीर में दिखाई देने वाले चिह्न ।
ज्यूं—निकाळा रा एहीज लक्षण व्है ।

४ सामुद्रिक विद्या के अनुसार शरीर के किसी अंग पर दृष्टिगत शुभ या अशुभ चिह्न ।

५ चाल-चलन, कर्म ।

६ स्वभाव, आदत ।

उ०—ताहरां थारा साथी कहिसी, हालो तयार। पिण तूं हूं कहूं तेनूं साथै ल्याए। जिको ईयै लक्षणे हुवै, तीयै नूं ल्याए।
—कांवळ जोईयो नै तीडी खरळ री बात

७ पुरुष के शरीर के अंगों के शुभ चिन्ह या संकेत जो ३२ माने गए हैं—

पांच अंग दीर्घ—दोनों नेत्र, दाढ़ी, जानु और नासिका।

पांच अंग सूक्ष्म—त्वचा, केश, दांत, अंगुलियां और अंगुलियों की गुर्दे।

तीन अंग ह्रस्व—ग्रीवा, जंघा, मूत्रेन्द्रिय।

तीन अंग गंभीर—स्वर, अन्त.करण और नाभ।

छः स्थान ऊंचे—वक्षस्थल, उदर, मुख, ललाट, कंधा और हाथ।

सात स्थान लाल—दोनों हाथ, दोनों आंखों के कोने, तालु, जिव्हा अधर और नख।

तीन स्थान विस्तीर्ण—ललाट, कटि और वक्षस्थल।

८ बुद्धी, अक्ल।

९ चमत्कार, करामात।

१० साहित्य में शब्दों, पदों, वाक्यों आदि की ऐसी परिभाषा या व्याख्या जिससे उसकी वास्तविक स्थिति का स्वरूप प्रकट होता है।

उ०—केई जिकै रसक जांण ज्यों नायिका भेद जणाय दीजै है, तिण में रस री सागै मूरत ही वणाय दीजै है, सुकिया, परकिया सामांन्यादि भेद प्रभेद लक्षण लक्षक वखाणीजै है, तिणां में धुनि, व्यंजना, लक्षणा अलंकार भाव, अनुभाव संचारी, सथायी पिण वचनाभास जांणीजै है। —र. हमीर

११ वत्तीस की सख्या।

१२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

रू. भे.—लंच्छण, लंच्छन. लंछण, लंछन, लक्खण, लखण, लखन, लखयण, लखिण, लख्खण, लच्छ, लच्छण, लच्छन, लछ, लछण, लछन।

लक्षणवंत, लक्षणवंतो–वि. [सं. लक्षणवंत] १ शुभ गुणों से युक्त।

२ बुद्धिमान, चतुर।

रू. भे.—लखणवत, लखणवतो

लक्षणहीन–सं. पु.[सं.] १ वह जिसमें लक्षण न हो।

रू. भे.—लछणहीन

लक्षणा–सं. स्त्री—काव्य में शब्द की तीन शक्तियों में वह दूसरी शक्ति जिसमें मुख्य अर्थ के बाधित होने पर रुढि अथवा प्रयोजन के कारण उसका साधारण से भिन्न और वास्तविक अर्थ प्रकट होता है। यह दो प्रकार की होती है—निरुढ और प्रयोजनवती।

उ०—कई जिकै रसक जांण ज्यों नायिका भेद जणाय दीजै हैं, तिण में रस री सागै मूरतही वणाय दीजै है, सुकिया, परकिया सामांन्यादि भेद प्रभेद लक्षण, लक्षक वखांणीजै है, तिणां में धुनि, व्यंजना, लक्षणा, अलंकार, भाव, अनुभाव, संचारी, सथायी पिण वचनाभास जांणीजै है। —र. हमीर

लक्षणो–वि. [सं.लक्षणी] १ लक्षणों से युक्त, लक्षणों वाला।

उ० - १ राजांन कुअर वत्तीस लक्षणौ छै। तिकै कहे छै।
—रा. सा. सं.

उ०—२ भूपत क्यूं चिंता करी, वरसा होवै नांहि। वत्तीस लक्षणो पुरुस वळि, हो तो वरसा होय। —सिंघासण वत्तीसी

२ समझदार।

रू. भे.—लखणो, लख्खणो, लच्छणो।

लक्षवरीस—लाख रुपयों का पुरस्कार देने वाला।

रू. भे.—लखवरीस, लखवरीस, लाखबरीस' लाखवरीस।

लक्षिता–सं. स्त्री.—वह परकीया नायिका जिसका गुप्त पर-पुरुस प्रेम अभिव्यक्ति द्वारा प्रकट हो जाय।

लक्षेसरी, लक्षेस्वरी–सं. पु. [सं. लक्ष+ईश्वर+रा. प्र. ई] लाख रुपयों का मालिक, लखपति।

उ०—१ कांम कंदला ! न कीजीइ, कूडी माया कोडि। लक्षेसरी नहि लोटिउ, तु आपण नइ खोडि। —मा. कां. प्र.

उ०—२ जं लिइ कैलास परवत सिउ वाद, इसा सरवग्य देव तणा प्रासाद। करइं उल्लास, लक्षेस्वरी कोटिध्वज तणा आवास।
—रा. सा. सं.

रू. भे.—लखेसरी, लखेस्वरी, लाखेसरी।

लक्ष्मण–सं. पु. [सं. लक्ष्मणः] १ रघुवंशी राजा दशरथ की रानी सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र, जो राम व भरत से छोटा था।
(अ. मा.)

पर्या.—अनंत वाळजती रघुवंसमणि, रांमांनुज रुघवीर, सुतदसरथ, सुमंत्रसुत, सोमित्री, सेस।

२ दुर्योधन का एक पुत्र जिसकी श्रेणी कौरव सेना में 'रथसत्तम' थी।

३ अंगिरसकुलोत्पन्न एक मंत्रकार।

४ श्री करणीदेवी के एक पुत्र का नाम।

५ सारस।

६ नाग।

वि.—भाग्यवान।

रू. भे.—लंछण, लक्खण, लक्षण, लखण, लग्मणा, लखन, लखमण, लखम्मण, लखिण, लखिणउ, लखिन, लख्खण, लच्छ, लच्छण, लच्छन, लच्छमण, लछ, लछण, लछन, लछमण, लछमन,

लछम्मन, लछिमन, लाखरा, लाखमरा, लिखमरा, लिछमरा, लिछमन ।

लक्ष्मणा–सं. स्त्री. [सं.] १ एक प्रकार का पौधा विशेष जो पर्वतों पर कहीं २ उत्पन्न होता है।

वि. वि.—इसके पत्ते चौड़े होते हैं। उन पर लाल लाल चंदन के समान बूंदे सी होती है। इसका कंद औषधियों के काम में लिया जाता है।

२ भद्र देश के राजा की कन्या जो कृष्ण की पत्नी थी।

३ एक अप्सरा जो कश्यप मुनी की कन्या थी।

४ दुष्यन्त राजा की प्रथम पत्नी जिसे लाखी सामान्तर भी प्राप्त था।

लक्ष्मी–सं. स्त्री. [सं.] १ भगवान विष्णु की पत्नी जो धन-सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती है। (डिं. को.)

पर्याय.—ग्रा, इंदरा, ई, कमळा, चपळा, छीरोदधजा, नारायणी, पदमा, प्रभा, भा, भुजायत, मा, रमा, रांमा, लोकमाता, विसन-प्रिया, वेळावळघी, सुखदा, स्यामां, स्त्री हरि-वांम।

वि. वि.—लक्ष्मी चार प्रकार की मानी गई है।

(१) राज्य लक्ष्मी (२) गृह लक्ष्मी (३) विजय लक्ष्मी (४) भोग्य लक्ष्मी।

२ धन-सम्पत्ति, दौलत।

३ सीता का नाम।

४ दुर्गा देवी का एक नाम।

५ रुक्मणी का एक नाम।

६ शोभा, सौन्दर्य।

७ भाग्यशाली स्त्री जो धन-धान्य बढाती है।

८ ग्रहस्वामिनी के लिए प्रयुक्त ग्रादर सूचक शब्द या सम्बोधन।

९ हल्दी।

१० वीर पत्नी।

११ समी वृक्ष।

१२ भस्मी, राख।

१३ मिट्टी, धूल।

१४ सफेद तुलसी।

१५ ऋद्धि नामक ग्रौषधि।

१६ वृद्धि नामक ग्रौषधि।

१७ आर्या (गाथा) छन्द का एक भेद विशेष जिसमें २७ दीर्घ ग्रौर तीन ह्रस्व वर्ण सहित कुल तीस वर्ण होते हैं।

१८ एक प्रकार का वर्णव्रत जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण एक गुरु ग्रौर एक लघु वर्ण होता है।

रू. भे.—लखमी, लखम्मी, लखिमी, लख्खमी, लच्छं लच्छमी, लच्छि, लच्छी, लछ, लछमी, लछवि, लछवी, लछि, लछी, लाच्छ, लाच्छी, लाछ, लाछि, लाछी लिखमी, लिच्छमी लिछेमी, लिछम्मी, लीछम्मि लीछम्मी।

लक्ष्मीकंत, लक्ष्मीकांत–सं. पु. यौ. [सं. लक्ष्मी+कांत] १ विष्णु भगवान्।

रू. भे.—लखमीकंत, लखमीकांत, लछमीकंत, लछमीकांत, लिछमी-कंत, लिछमीकांत, लिछम्मीकंत लिछम्मीकांत।

लक्ष्मीकारी–सं. पु. यौ. [सं. लक्ष्मी+कारिन्] धन-सम्पत्ति प्रदान करने वाला।

लक्ष्मीटोडी–सं. स्त्री.—संगीत में कोमल स्वरों वाली एक प्रकार की संकर रागिनी।

लक्ष्मीतात–सं. स्त्री. [लक्ष्मी+तात] समुद्र।

रू. भे.—लखमीतात

लक्ष्मीताळ–सं. स्त्री.]सं. लक्ष्मीताल] १ संगीत में १८ मात्राग्रों का एक ताल।

२ श्री ताल नामक एक वृक्ष।

लक्ष्मीधर–सं. पु. यौ. [सं. लक्ष्मी+धर] १ विष्णु, नारायण।

२ स्रग्विणी छंद का दूसरा साम।

वि.—धनाढ्य. धनवान।

रू. भे.—लछमीधर।

लक्ष्मीनाथ–सं. पु. [सं. लक्ष्मी+नाथ] विष्णु।

रू. भे.—लखमीनाथ, लच्छिनाथ, लछीनाथ, लिखमीनाथ, लिख-मीनाह, लिच्छमीनाथ लिच्छमीनाह, लिछमीनाथ, लिछमीनाहि.

लक्ष्मीनारायण–सं. पु. यौ. [सं. लक्ष्मी+नारायण] १ लक्ष्मी ग्रौर नारायण की युगल मूर्ति।

२ बहुत काले रंग के एक प्रकार के शालिग्राम जिनके एक ग्रोर चार चक्र बने होते हैं, लक्ष्मीजनार्दन।

रू. भे. —लिखमीनारायण, लिछमीनारायण

लक्ष्मीनिधि–सं. पु.—राजा जनक का एक पुत्र। (रामायण)

लक्ष्मीनिवास–सं. पु.—१ वह घोड़ा जिसका शरीर लाल हो, किन्तु दाहिना कान सफेद हो (शुभ)

२ विष्णु, नारायण।

रू. भे.—लच्छिनिवास

लक्ष्मीनृसिंह–सं. पु. [सं. लक्ष्मीनृसिंह] एक प्रकार के विष्णु जिन पर दो चक्र ग्रौर एक वनमाला बनी होती है।

लक्ष्मीपति–सं. पु. यौ. [सं लक्ष्मी+पति] १ विष्णु, नारायण।

२ श्रीकृष्ण।

३ राजा।
४ सुपारी का पेड़।
५ लवंग का वृक्ष।
वि.—धनवान, अमीर।
रू. भे.—लखमीपत, लखमीपति, लखमीपती, लछमीपत, लछमीपति, लछमीपती, लिच्छमीपति, लिछमीपती।

लक्ष्मीपुत्र–सं. पु. यौ. [सं. लक्ष्मी+पुत्र] १ कामदेव, अनंग।
२ घोड़ा, अश्व।
वि.—धनवान, अमीर।

लक्ष्मीभरतार–सं. पु यौ. [सं. लक्ष्मी+भर्तृ] विष्णु।
रू. भे.—लच्छिभरतार, लच्छिभ्रतार, लछिभरतार, लछीभरतार, लिखमीभरतार।

लक्ष्मीरमण–सं. पु. यौ. [सं. लक्ष्मी+रमण] विष्णु, नारायण।
रू. भे.—लखमीरमण।

लक्ष्मीवंत, लक्ष्मीवत्–सं.पु.यौ. [सं. लक्ष्मी+वत्] १ विष्णु, नारायण।
२ धनी व्यक्ति, अमीर।
३ अश्वत्थ या पीपल का पेड़।
४ कटहल का पेड़।
रू. भे.—लिखमीवंत, लिख्मीवंत।

लक्ष्मीवर–स. पु. यौ [सं. लक्ष्मी+वर] १ विष्णु का नामान्तर।
२ कृष्ण का एक नाम।
३ परमेश्वर, ईश्वर।
रू. भे.—लखमीवर, लखमीवर, लच्छिवर, लछवर, लछवर, लछमीवर, लछिवर, लछीवर, लाछवर, लाछिवर, लाछिवर, लाछीवर, लाछीवर, लिखमीवर, लिखमीवर, लिखिमीवर, लिखिमीवर, लिच्छमीवर, लिछमीवर, लिछमीवर।

लक्ष्मीवांन–सं. पु. [सं. लक्ष्मीवत] १ विष्णु २ श्रीकृष्ण।
वि.—१ धनवान, धनाढ्य २ सुंदर, मनोहर।
रू. भे.—लछीवांन।

लक्ष्मीवल्लभ–सं. पु. यौ. [स. लक्ष्मी+वल्लभ] विष्णु, नारायण।

लक्ष्मीस–सं. पु. यौ. [सं. लक्ष्मी+ईश] १ विष्णु, नारायण।
२ सीतापति रामचन्द्र।
३ धनाढ्य व्यक्ति, अमीर।
रू. भे.—लखमीस, लछमीस, लछीस, लिछमीस।

लक्ष्मीसहज–वि. [सं. लक्ष्मी+सहज] १ समुद्र मंथन के समय लक्ष्मी के साथ उत्पन्न होने वाला रत्न।
सं. पु.—१ चन्द्रमा।
२ कपूर।
३ इन्द्र का घोड़ा।
४ शंख।

लक्ष्य–सं. पु. [सं. लक्ष्यं] १ निशान।
ज्यूं—चिड़ी नै लक्ष्य सांधने तीर चलायो।
२ उद्देश्य।
३ प्राचीन काल में अस्त्रों आदि का एक प्रकार का संहार।
४ शब्द की लक्षणा शक्ति के द्वारा निकलने वाला अर्थ।
रू. भे.—लख, लखु, लख्य, लख्य, लछ

लक्ष्यता–सं. स्त्री.—लक्ष्य होने का भाव या धर्म, लक्ष्यत्व।

लक्ष्यभेद, लक्ष्यवेध–सं. पु. यौ. [सं. लक्ष्यं+भेदनं, लक्ष्य+वेधन्] तेजी से उड़ते या चलते हुए पक्षी या जीव पर निशाना लगाने की क्रिया।

लक्ष्यारथ–सं. पु. [सं. लक्ष्यार्थ] शब्द की लक्षणा शक्ति से निकलने वाला अर्थ।

लख—देखो 'लक्ष' (रू. भे.)
उ०—मिळ अंग बगत्तर पक्खर मैं, गज सार गड़ा लख डक्क समै।
—रा. रू.
२ देखो 'लाखपसाव'
उ०—१ प्रथम लाख समपियो, कवी संकर बारठ कर। लखपति बारठ लाख, दीध दूजो करि ढंवर। तीजो लख तिणवार, 'अजा' भादा कर अप्पै। भण ताराचंद भाट, भोज लख चवथ समप्पै।
—सू. प्र.

लखचौरासी–सं. पु. [स, लक्ष+चौरासी] १ पुराणों के अनुसार माने जाने वाली ८४ लाख योनियां।
उ०—१ हरीया दाता रांम है, लखचौरासी मांहि। खावण कुं जन मुख दिया, सो क्युं देसी नांहि। —अनुभववांणी
वि. वि.—देखो 'योनि'

लखण–सं. पु.—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)
उ०—१ लखण बतीसै मारूवी, सिधि चन्द्रमा निलाट। काया कूंकूं जेहवी, कटि केहर सैं घाट। —ढो. मा.
उ०—पछै तो म्हनै इण बैराग अर थांरा आं ठाकुरजी में कीं लखण दीखिया नीं। —फुलवाड़ी
उ०—३ पखवाड़ो बित्यां चौधरण सार्थै तीन दिनां रो भातो बांधण लागी तो चौधरी मुळकनै कियो-बावळी आ कांई गैलाई करै। हाल तांई धणी रा लखण सावळ ओळखिया कोनीं दीसै।
—फुलवाड़ी
२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

२ देखो 'लक्ष्मण'

उ०—तायक लखण पर्यपै तेथी। वायक रोस विरुता, है नर वीर जनक मुखहूंता। जंप न राघव जेथी।। —र. ज. प्र.

लखणवंत, लखणवंतौ—१ देखो 'लक्षणवंत' (रू. भे.)

उ०—१ काया सोहइ कंचण वरणी, सोहइ हाथै सखर समरणी। लखणवंतौ मोहण वैली, हंस हरावई गजगेति गैली। —स्री जिनराज सूरि

लखणौ—१ देखो 'लक्षणौ' (रू. भे.)

उ०- वावळा राजाजी इत्तो मूंडै लगाय लियो कै किण नै ई नीं घारै। छोटा-मोटा रो कायदो ई नीं राखै। खास गिडक लखणौ। —फुलवाडी

लखणौ, लखबौ—क्रि. अ. [सं. लक्ष्] १ दिखना।

उ०—गिरि जांणि चरण लहि लखत गोम, वद्दळ इळ दरसै छांडि व्योम। —रा. रू.

२ मालुम होना, प्रतीत होना।

क्रि. स.—३ देखना।

उ०—१ सता ताड़ वेधै प्रभू हेक साथै, हिचौळै सतां जोजनां दुद्द हाथै। लखै रांम रा पांण री चाप लीधो, कळह वाळि हूंता न सुग्रीव कीधौ। —सू. प्र.

उ० - २ मिरजो श्रायो मेड़तै, मारे गांव महेव। 'सवळो' भूखै सिंह ज्यूं, असुरां लखै अवेव। —रा. रू.

४ समझना, जानना, ताडना।

उ०—१ सतगुरु सब्द वड़ा कुरसांणी, जिण तिण लख्या न जावै। जो लखसी कोइ संत सूरमा, नूर में नूर समावै। —स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ पढै अपढै सारखा, जो न आतम लख। सिल कोरी सादी 'अखा', दोनूं ही डूवण पख। —अखो

उ०—३ घर स्यांमा सरिस स्यांमतर जळधर, वेधूंवे गळि दाहां घाति। भ्रमि तिणि संध्या वंदन भूला, रिखिय न लखै सकै दिन राति। —वेळी

५ आभास होना, अनुमान होना।

६ देखो 'लिखणौ, लिखवौ' (रू. भे.)

उ०—१ इण भांत स्त्री-पुरुस रो हाल आपही लखस्यौ। —पनां

लखणहार, हारो (हारी), लखणियौ—वि०।,

लखिओड़ो, लखियोड़ौ, लख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लखीजणौ, लखीजबौ —भाव वा०/कर्म वा०।

लक्खणौ, लक्खबौ—रू० भे०

लखण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०— नमो अवग्रत्त भगत्त अछेह, नमो सतरुघ्न-भरत सनेह। नमो धक-पख-सहोवर-धज्ज, गुणादि-अतीत लखण्ण-अग्रज्ज। —ह. र.

२ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

लखन—१ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०—रांम लखन अरु भरत मत्रुहन, अगवांणी हनुमांन। मीरां के प्रभू रांम सियावर, तुम हो कृपा निधांन। —मीरां

२ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

लखपत, लखपति, लखपती, लखपत्ती, लखप्पति, लख्खपति—सं. पु. [सं. लक्ष+पति] (स्त्री. लखपतण, लखपतणी) १ कुबेर।

२ वह व्यक्ति जिसके पास लाख रुपये हों।

उ०—१ अगरवालां रै घर सूं तो एक दो आदमी इक्यांतरै आवै-जावै है। वडो कड़ूंबो, लखपती आदमी कंटरोल, कचेडी सफाखांना अर सभा-सोसाइटी रा कांम पड़ता ही रेवै। —दसदोख

उ०—२ उड गया रेसमी गदरा वे, राली रै रंज नहीं लागी। आ फिरै कांमेंतण लडाभूम, लखपतणी मरगी लड़थड़ती। —चेत मांनखो

३ लाखा 'फूलांणी' के नाम से गाया जाने वाला एक लोक गीत।

रू. भे.—लाखपत, लाखपति, लाखपती, लाखपत्ति, लाखपत्ती

लखवरीस—देखो 'लक्षवरीस' (रू. भे.)

लखमण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०—राज मोहरि उपति रघुराई, भिड़ जेण विध लखमण भाई। भिड़ि खळ थाट करूं जुध भूंकां, रांवण जेम 'विलंद' दळ रूकां। —सू. प्र.

लखमणा—देखो 'लक्ष्मणा' (रू. भे.)

लखमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—प्रभू विराजै परमपद, तहां आपणो धांम। लखमीवर लखमी सहित, सारे संतां काम। —गजउद्धार

लखमीकंत, लखमीकांत—देखो 'लक्ष्मीकांत' (रू. भे.)

उ०—समरथ सगलइ ही कामइ रे, तास भ्रात डूंगरसी नांमइ रे। भागचद वडउ भागवंत रे, मन मोटइ लखमीकांत। —प. च. चौ.

लखमीतात—देखो 'लक्ष्मीतात' (रू. भे.) (डिं. को.)

लखमीनाथ—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

उ०—तहां विराजत है सदा, लखमी लखमीनाथ। पलक अेक बिछुरै नही, रहै निरंतर साथ। —गजउद्धार

लखमीनारायण—देखो 'लक्ष्मीनारायण' (रू. भे.)

लखमीपत, लखमीपति, लखमीपती—देखो 'लक्ष्मीपति' (रू. भे.)

लक्ष्मीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—वोहो लोह भूप सुभड़ां वकसि, स्रीहाथ लग साहियो। करि क्रोध मधु माथे किनां, लखमीवर नंदक लियो। —मे. म.

लखमीरमण—देखो 'लक्ष्मीरमण' (रू. भे.)

लखमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—प्रभू विराजे परमपद, तहां आपणो धांम। लखमीवर लखमी सहित, सारे संता कांम। —गजउद्धार

लखमीस—देखो 'लक्ष्मीस' (रू. भे.)

लखमोलो—वि. [सं. लक्ष+मूल्यं] (स्त्री. लखमोली) १ लाख रुपये के मोल का।

उ०—तिण मांय डोर रेसम तणी, कय चाका मंजुल कियो। अठपोर आप रटवा अलख, लखमोलो माळा लियो। —रमण प्रकास

लखम्मण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०—वाळण सीत लियां दळ वांनर, पाज समद परठिण पाथर। रेसण तेसण दांणव रांमण, लेग घणी मन धीर लखम्मण। —पि. प्र.

लखम्मी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—दांमोदर तूझ दसै द्रगपाळ किताइक पार न जांणै काळ। उमा तो पार अगम्म, अलेख, लखम्मी तूझ न जांणै लेख। —ह. र.

लखवरीस—देखो 'लक्षवरीस' (रू. भे.)

उ०—पोरस सपूर कीधां परम, लखवरीस दुनियां लभो। अंबनाम बिच 'अजमाल' रो, इसै रूप आयो 'अभो'। —वखतो खिड़ियो

लखवांन—सं. पु.—सूर्य, भानु। (डि. को.)

लखाई—सं. स्त्री.—दिखने या जताने की क्रिया या भाव।

लखाउ—सं. पु. [सं. लक्षं] लक्षण, पहचान।

लखाड़णौ, लखाड़बौ—देखो 'लखाणौ, लखाबौ' (रू. भे.)

लखाड़णहार, हारौ (हारी), लखाड़णियौ—वि०।

लखाड़िओड़ो, लखाड़ियोड़ो, लखाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

लखाड़ीजणौ, लखाड़ीजबौ—कर्म वा०।

लखाड़ियोड़ो—देखो 'लखायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लखाड़ियोड़ी)

लखाणौ, लखाबौ—क्रि. स.—१ दिखाना।

उ०—गुरुजी गोविंद लखाया ए, लखिया ताय भखया निज अनुभव। परकट गाया ए। —स्री सुखरांमजी महाराज

२ समझाना, बतलाना।

उ०—अधर लगायां लिव दिस्ट, सतगुर समझाई। —केसवदास गाडण

३ पता लगाना, मालूम करवाना, प्रतीत करवाना।

४ आभास करवाना, अनुमान करवाना।

५ नर ऊंट का मादा ऊंट से संगम करवाना।

क्रि. अ.—१ आभास होना, प्रतीत होना।

उ०—१ सीवाण जी नै लखायो के ज्यां मांयली कोई पड़ै हल्यो, पड़ै हल्यो —फुलवाड़ी

उ०—२ पछी १ छुई नु पेट माहे भार लखायो। —पीपोली

लखाणहार, हारौ (हारी), लखाणियौ—वि०।

लखायोड़ो—भू० का० कृ०।

लखाईजणौ, लखाईजबौ—कर्म वा०।

लखाड़णौ, लखाड़बौ, लखावणौ, लखावबौ—रू. भे.।

लखायोड़ो—भू. का. कृ.—१ दिखाया हुआ. समझाया या बतलाया हुआ. ३ पता लगाया हुआ, मालूम कराया हुआ, प्रतीत कराया हुआ. ४ आभास या अनुमान कराया हुआ. ५ नर ऊंट का मादा ऊंट से संयोग कराया हुआ. ६ आभास हुआ हुआ।

(स्त्री. लखायोड़ी)

लखारस—सं. पु.—रस विशेष।

उ०—लखारस में लखगुणी, भाति जीत दिखंत। मुगति किया कामरा रहै, सो पार्यो रिन अनंत। —अ. रू.

रू. भे.—'लाखारस'

लखारा—सं. स्त्री. [सं. लाक्षा+कारिन्] लाख की चूड़ियां बनाने व बेचने का व्यवसाय करने वाली एक जाति विशेष।

उ०—ए तो सोदागर संचारा रे सारोल लखारा कसारा। —जयवांणी

लखारो—सं. पु.—लखारा जाति का व्यक्ति।

उ०—लेसो पीपळ लाख, लाख लखारा लावसी। तांबो देण तळाक, नटियो सुंदर नैणसी। —सुंदर, नैणसी

रू. भे.—'लक्खारो'

लखाव—सं. स्त्री.—जानकारी।

उ०—१ ऊजळा वणाव किंयां ऊजळी चांदणी मिळि गई छै। सू आगली सहिग्रां नूं जावती लागै नहीं छै। लखाव नहीं पड़तो छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ आज हूं जाय, देखि ठीक करि आऊं, जितरै लखाव मतां करो। —पलक दरियाव री बात

उ०—३ तद पड़दो छोड दियो। भरमळ आगियां हुय भीतर गई। सो चकमै री घुघी माहे दोनूं वरावर हालै, सो लखाव कही नुं न

पडियौ। भीतर जाय मुंहरै री मुंहडौ खोल भीतर वाड़ियौ।
—कंवरसी सांखला री वारता

लखावट—देखो 'लिखावट' (रू. भे.)

उ०—चला सदै 'अगजीत' ग्रहीयौ जकौ, लखावट आगळा जकां लारै। सरासन खेवजै टला हमला सकौ, थटै भुज सवाई 'गुला' थारै। —जसजी आढौ

लखावणौ, लखाववौ—देखो 'लखाणौ लखावौ' (रू. भे.)

उ०—ठकराणी सारू ऊजळा दिन तौ काळी अंधारी रातां ज्यूं बण-ग्या अर काळी रातां उणनै सूरज सूं सवाई उजळी लखावण लागी। —फुलवाड़ी

उ०—२ बाळ-कन्हैया थोड़ौ घणोई ओपरौ लखावतौ के मासी नैं वेळा-विसेक री वैं'म व्हैतौ तौ सात वेळा अवारनै लूंण मिरच करती। —फुलवाड़ी

लखावणहार, हारौ (हारी). लखावणियौ—वि०।
लखाविओड़ौ, लखावियोड़ौ, लखाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लखावीजणौ, लखावीजवौ—कर्म वा०।

लखावियोड़ौ—१ देखो 'लखायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'लिखायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लखावियोड़ी)

लखिण, लखिणउ—१ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)
उ०—राघव पास पिनाक रं, आए लखिणउ निज। —रांमरासौ
२ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

लखित-स. पु.—पुरुष की ७२ कलाओं में से प्रथम। (व. स.)

लखिन—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)
उ०—सत्रघन लखिन भ्रात स दोय। —रांमरासौ

लखिमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)
उ०—सुर 'नर नाग तीन्यों लोक जाकी सेवा करै सोई इह वासदेव क्रस्णजी। जा रुखमणी छै सु लिखमी। तूं अह सगाई वरजियौ। वेली. टी.

लखियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ दिखा हुआ. २ देखा हुआ. ३ समझा हुआ, जाना हुआ, ताड़ा हुआ भांपा हुआ. ४ पता लगा हुआ, मालुम हुवा हुआ, प्रतीत हुवा हुआ. ५ आभास हुवा हुआ, अनुमान हुवा हुआ. ६ सावधान, हुवा हुआ, सचेत हुवा हुआ.
७ देखो 'लिखियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. 'लखियोड़ी')

लखौ-सं. पु.—१ एक खास प्रकार के रंग का घोड़ा।
उ०—मोती सुरंग कमेत, लखौ अवलख फुलवारी। रंग जड़ाव हमरंग, हरी सुनहरी हजारी। —सू. प्र.
२ दीवार चुनने का पेशा करने वाली एक मुसलमान जाति विशेष। (डीडवाना)
३ उक्त जाति का व्यक्ति।
४ देखो 'लक्खीविणजारौ'
वि.—१ लाख के समान रंग वाला।
रू. भे.—लक्खि, लक्खी, लाखी।

लखीणौ—देखो 'लाखीणौ' (रू. भे.)
उ०—ऊरि चोडौ कड़ि पातलौ, माहीलै कौयै जीमणी अंखी। काळी तिल भमर जिसौ, सीस तिलक उगतई-विहांण। पाय लखीणी मोचणी, मूंछ करिवाण छै डावड़ हाथी। —वी. दे.
उ०—२ उलिगाणा दिन लेखे ई मत लाई, दिन दिन एक लखीणौ जाई। जाई जोवन धन मसलै ई हाथ, जोवन नवि गिणइ दिन न राति। —वी. दे.
(स्त्री. लखीणी)

लखीवाळदियौ, लखीविणजारौ—देखो 'लक्खीविणजारौ' (रू. भे.)
उ०—तौ भीखणजी नें किम काढां, हाकम द्रस्टांत दियौ विजय-सींवजी रौ राज है मोती वाळदियौ। तिणरै लाख बळद तिणसूं लखीवाळदियौ वाजतौ। तै लूण लेवा मारवाड़ में आवतौ। —भि. द्र.

लखु—देखो 'लक्ष्य' (रू. भे.)
उ०—सारींगुं मिल्हि करि तालरुंख सिरि लखु देविणु तीणं परीक्षां गुर तणी पूगउ एकू जु पत्यु राहावेहु तउ सिखवइ मच्छइ देविणु हत्यु। —सालिभद्र सूरि

लखेर-सं. पु.—१ चौरासी प्रकार के चौहटों में से एक प्रकार का चौहटा विशेष। (सभा)
२ देखो 'लाखेर' (रू. भे.)

लखेसरी, लखेस्वरी—देखो 'लक्षेसरी' (रू. भे.)
उ०—१ आऊवा मैं उत्तमोजी इरांणी बोल्यो: भीखणजी थें देवरां निसेधौ छौ। पिण आगै तो वडा-वडा लखेसरी कोड़ेसरी त्यां देवल कराया। —भि. द्र.
उ०—२ सु भलौ राज जांणि नें। द्रव्य उमेलियौ छै। वारै काठि मांड्यौ छै। ए जु चंपा फुल्या छै। सु ए लखेस्वरी छै। त्यांरै लाख उपरि दीवा वळै छै। —वेलि टी.

लख्ख—देखो 'लक्ष' (रू. भे.)
उ०—खंजर नेत विसाल गय, चाही लागइ चख्ख। एकण साटइ मारुवी, देह एराकी लख्ख। —ढो. मा.

लख्खण—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

उ०—चिण तेज अरक जिप छक जहूर, सुंदर प्रवीण दातार सूर । छत्रपती 'अभौ' छत्र कुळ छतीस, वहत्तर कला लख्खण बतीस । —वि. सं.

२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

लख्खमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—देवी सप्तमी अस्टमी नोम नूजा, देवी चोथ चोदस्स पूनम्म पूजा । देवी सरसती लख्खमी महाकाळी, देवी कम्र विस्णु ब्रह्म्मा कमाळी । —देवि.

लख्य—१ कपट, छल (ह. नां. मा.)

वि.—२ देखो 'लक्ष्य' (रू. भे.)

लख्यण—देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

उ०—१ कागळ हाथि लेतां ही महा आणंद उपज्यो । रोमांचित होण लागो । आस्यां आंसूं आवण लागा । कंठ कै विखै गदगद् वांणि हुइ ए अति हीं ह्रस का लख्यण छै । —वेलि टी.

उ०—२ मट भाग्य लख्यण देग दख्यण राज रख्यण रीति इळि । नांग अंगर गाढ गंमर जोध संमर जीत गढ । कोट गंजण मांण मंजण धूरि भंजण थाट, पर दुग्र पल्लण भूल मल्लण वंस चल्लण वाट । —ल. पि.

लख्यणो—देखो 'लक्षणो' (रू. भे.)

उ०—लखधीर बड़ा गुण लख्यणो, पह पात्र कुपात्र परिख्खणो । कुळ ओपम कोट करम रो, धरिओ अवतार धरम रो । —ल. पि.

लग–सं. स्त्री.—१ लगे हुए होने की अवस्था या भाव ।

२ लग्न, लाग ।

३ प्रेम, अनुराग ।

४ किसी मकान के ऊपरी भाग का ऐसा स्थान जहां से कूद कर दूसरे मकान में जा सके ।

५ मकान की दीवार की ऊंचाई ।

६ एक लोहे का औजार विशेष, जो जमीन में जुड़े हुए दो पत्थरों को अलग करने में काम आता है ।

७ फर्श व छत के बीच की ऊंचाई ।

अव्य.—१ तक, पर्यंत ।

उ०—गोढवाड़ घर गाहटे, पहला पाली मार । लूटी मही अजमेर लग, फूटी देस पूकार । —रा. रू.

उ०—२ अर आप जिसा राजकुमार री इण तरह अठा लग आवणो अरथ विहूंणो खटावै नहीं । —वं. भा.

२ वास्ते, लिए ।

३ निकट, पास ।

४ साथ, सह ।

रू. भे.—लगइ, लगत, लगां, लगि, लगी, लगैं, लग्ग, लग्गां, लागि ।

लगइ–अव्य.—१ के कारण, से ।

उ०—१ अनइ जे परमचंद नई घरि लक्ष्मी हुइ तेह लगइ अनेक तीरथयात्रा प्रासाद संघभक्ति दानादिक अनेक पुन्य करी मरी पञ्चों-कि सुगतिइं जाइं । —षष्टी शतक

उ०—२ त्रिजंग माहि विरहुउ विमानि, हन्ति तुरंगम गयं वारि । अग्यांन कस्ट लगइ जीव जाउ, तिहु लागै देवलोकह माहि । —दशिक

२ से, द्वारा ।

उ०—१ तिणि अवसरि बोलाविउ पंडित, "कहउन कोई काज" । विनय लगइ बोलइ घन सागर, "निसुणउ पंडितराज" । —हीराणंद सूरि

उ०—२ द्रव्य लगइ कहि किसिउं न कोई, इणिइं वलि थाइ सह कोइ । द्रव्य तणउ ए महिमा जांणि, जांणपांणु सहू नुं म वखांणि । —हीराणंद सूरि

३ लगातार ।

४ देखो 'लग' (रू. भे.)

उ०—१ सटमास लगइ तप कियउ अखंडित, श्री धमली वेलनां निघात । सिव सिव सिव हिज कहत सरस, अवर न काई बीजी वात । —महादेव पारवती री वेलि

लगड़–सं. पु.—१ गधों पर पानी लादने का लकड़ी का बना ढांचा ।

देखो 'लगड' (रू. भे.)

उ०—१ नगारै एक डंको वागो छै. मीर सिकारां नै हुकम हुयो छै । बाज, जुररा, कुही, बहरी, सिकरा, लगड़, चिपक तुरमती साथ लीजै छै । —रा. सा. सं.

रू. भे. लगड्ड ।

लगड़कोड़ी रो–वि.—१ मां से कुकर्म करने वाला ।

लगटो—देखो 'लगतो' (रू. भे.)

(स्त्री. लगटी)

लगड—एक प्रकार का पक्षी विशेष जो पक्षियों का शिकार करने में सहायता करता है ।

उ०—१ बोवड़ां ऊपर चिपक छुटै छै । बुरजां ऊपर लगड छुटै छै । कुलंगां ऊपर कुही छुटै छै । इण भांत देसोत राजेसर सिकार सेलै छै । —रा. सा. सं.

उ०—२ सींचांणु समली वली, फूकारी फणि जांणि । लगड लेई मेलि करि, माधव मुझ नइं आणि । —मा. कां. प्र.

२ देखो 'लगडौ' (मह., रू. भे.)

रू. भे.—लगड, लगड्, लगतूं, लगतू

लगड्-सं. पु.—१ देखो 'लगड़' (रू. भे.)

२ देखो 'लगड' (रू. भे.)

३ देखो 'लगडौ' (रू. भे.)

लगडौ-सं. पु. [सं. लकुट] १ पुरूपेन्द्रिय, शिश्न।

रू. भे—लगड्

मह., लगड

मुहा.—लगडां री फौड़ी री=पुंश्चली माता का पुत्र, रंडी का बेटा।

लगण-सं. पु.—छतीस प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों में से एक।

उ०—सेलह त्रिसूल सांठो घकोवली वंसहड़ि कड़ि लगण। भूकंत चहुलि सूलो चटक, दंडायुध छत्रीस रण। —रा. सा. सं.

लगणौ, लगवौ-क्रि. अ.—देखो 'लागणौ, लागवौ' (रू. भे.)

उ०—१ भरियौ भादरवौ खाली पड़ भागौ। लगतां आसू में आंसू झड़ लागौ। छपनै घोरारव आरव रव छायौ। सूरज समिमंडळ गरव्वित गणणायौ। —ऊ. का.

उ०—२ अम्हं विसटाळं आवियौ, लगि ज्यां हिज लारै। कटक सुणि अंगद कहै, पित तूझ प्रकारै। —सू. प्र.

उ०—३ लोग महाजिन बूझियौ जी ओ, कुण्याजी रा कुळवहू जाय, चुड़ली तो ढक चंद्रावळी, थारै। नजर लगैगी गोरी बांह, राजीड़ा। —लो. गी.

उ०—४ उण वेळा वळ अग्गळा, दळ राठौड़ दुवाह। मेघ थया सीसोदिया, लगी लाय अणथाह। —रा रू.

उ०—५ फेरे वग्ग तुरंग री, तोले खग्ग करग्ग। रिणपण उमंगे लगै, रैणायर' गयणंग। —रा. रू.

उ०—६ चरण कमळ की लगन लगी नित, विन दरसण दुख पावै। मीरां कूं प्रभू दरसण दीज्यौ, आनंद वरण्यूं न जावै। —मीरां

उ०—७ वन वैठौ भलां चढौ गिरवदरी, धरा भेख के धारौ। चित नह लग्यौ रांमरै चरणां, नह जव लग निसतारौ —र. रू.

लगणहार, हारौ (हारी), लगणियौ—वि०।

लगिओडौ, लगियोड़ौ, लग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लगीजणौ, लगीजवौ—भाव वा०।

लगत—देखो 'लग' (रू. भे.)

उ०—पछै सांवतसिंघ रा वेटा राव वलूजी रै सांचोर रही, सु हेटै ख्यात में विगत आवसी। नै संमत १६६५ लगत राज रैया तिण री विगत हेटै उतारी छै। —नैणसी

लगतर—देखो 'लिगतर' (रू. भे.)

लगतूं, लगतू—देखो 'लगड' (रू. भे.)

उ०—मीर सिकारू का हुन्नर नजर होता है। लगतूं रमतूं के आतुरी। चरज सींचांणं सो लाग आतुरी। —सू. प्र.

लगतौ-वि. (स्त्री. लगती) १ लगा हुआ, संलग्न।

उ०—१ कोट मांहे पांणी कोई नहीं। कोट सांकड़ो सो छै। तिण में लाव तळाव कोट लगतौ हीज छै। —सोजत रै मंडळ री वात

उ०—२ खींवे सूं घणी मनुहार कीवी पण उवौ गादी ऊपर नहीं वैठियौ। गादी सूं ही लगतौ म्हांडा आगे वैठियौ। —सूरे खींवै कांवळोत री वात

२ निकट, पास।

उ०—सोभत था कोस ८ मगरे लगतौ, नावरा था कोस १ आगे। हुल जिणं री वडी ठकुराई हुई। —नैणसी

३ पीछे लगा हुआ।

उ०—वीजै दिन लगती ही फौज आई। पछै वेउं फौजां री अणी मिळी।

४ निरंतर, लगातार।

उ०—१ पण सौदौ नीं पट्यौ तौ वौ तीन दिन लगतौ ई उठै ढवग्यौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ म्हैं तौ हजार वरसां तांई लगती ई रोवूं तौ ई किणी नै म्हारै दुख रौ मरम नीं समझा सकूं। —फुलवाड़ी

५ साथ ही साथ।

उ०—१ सू गजसिंघजी तौ आगैई इणां सूं विराजी हुता। अरू लगतौ अमरसिंघजी सूं कांम वण आयौ। —राजा स्रीकरणसिंघजी

उ०—२ विवाह वडा हरस सूं हुवौ। माधवसिंघजी दायजौ सखरौ दियौ। लगता ही पछै झिलाय रै ठाकुर कुसळसिंघ री पोती नूं व्याही। —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

लगयग-सं. स्त्री.—१ लचक, लचकनि।

उ०—१ पदमणि लगयग पातळी, रळी तणी छक रूप। सायवण कळी गुलाव सम, ऊघड मिळी अनूप। पनां

उ०—२ केहर लंक लगयग कंदळ, भळकि पदम नग डग भरै। अै वात पळकि नख मैंदियां, रळकि हार उर ऊपरै। —पनां

लगयगणौ,लगयगवौ-क्रि. अ.—१ किसी लम्बी कोमल चीज पर वजन या दवाव के परिणामस्वरूप मध्य भाग से झुकना या मुड़ जाना, लचकना।

२ चलते समय कमर का थोड़ा झुकना, लचकना या मुड़ना जो सौंदर्यसूचक माना जाता है।

उ०—१ हरखै रतना हालवी, लगयगती करि लाज। कीधा साज उछाहरा, कस तोड़ण रै काज। —र. हमीर

उ०—२ मुहडै आगै मालकी, कहती खमकारां। घण वण आवै ढोलियै लगथगती लारां। मद-चकीया म्यारांमजी, तुम होय तैयारां। —मयारांम दरजी री वात

उ०—३ आळस आंख्यां ऊपरै, करती वळ कटियांह। लगथगती करती लजां, अलकां ऊछटियांह। —र. हमीर

लगथगणहार, हारौ (हारी), लगथगणियौ—वि.।
लगथगिओड़ौ, लगथगियोड़ौ, लगथग्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लगथगीजणौ, लगथगीजवौ—भाव वा.।

लगथगियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ दबाव या वजन के कारण झुका या मुड़ा हुआ (कोमल पदार्थ). २ चलते समय नाजुकता वश कमर झुकाया हुआ (स्त्री. लगथगियोड़ी)

लगन—सं. पु.—१ लगने की क्रिया या भाव।

२ मन को एकाग्र चित्त करके ध्यांन लगाने की अवस्था या भाव। एकाग्रचित से ध्यान लगाने की अवस्था या भाव, धुन, लौ।

उ०—१ सुख सागर की सेन बताई, मेरा अंतर जांण रया। लगन मगन सतगुरु कर दीना, वेगम देस गया। —हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ विक्या जी हरि प्यारीजी रै हाथ विक्या। क्रपा करी जी म्है सोही सिरधारां, सोभा देख छक्या। जा दिन तै मेरी लगन लगी है, और न द्वार तक्या। —मीरां

३ प्रेम प्यार, प्रीति।

उ०—१ ऐसी लगन लगाय कहां तूं जासी। तुम देख्यां विन कळ न पड़त है, तलफ तलफ जिय जासी। —मीरां

उ०—२ छोड दै कनैया चीर हमारो, कोर जरी की कांना मेरी छूटै। मीरां के प्रभू गिरधर नागर, लागी लगन कांना नहिं छूटै। —मीरां

उ०—३ अंगरी लगन लागणी जांणी। यां री लगन लागां पछै तौ न छूटसी तिकै तार बांध्या सूं कदे न तूटसी। —र. हमीर

४ चाह, इच्छा।

उ०—१ चरण कमळ की लगन लगी नित, विन दरसण दुख पावै। मीरां कूं प्रभू दरसण दीज्यौ, आनंद वरण्यूं न जावै। —मीरां

उ०—२ रात दिवस हाजर रहैं, रस में आ रुड़ीह। लख जावै दिल री लगन, चातुर चतरूड़ीह। —र. हमीर

४ देखो 'लग्न' (रू. भे.)

उ०—सुभ दिन सुभ मुहरत सुभ वार सुभ लगन सुभ वेळा मांहि आंणि पाट सिंघासण विराजमांन किया छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ त्रिणि दीह लगन वेळा आड़ा तै, घणूं किसूं कहिजै आघात। पूजा मिसि आविसि पुरखोतम, अंबिकाळय नयर आरात। —वेलि.

उ०—३ इतरै कंवर रै विवाह सारू चित्रगढ रा राव 'लखपत' री कंवरी 'चित्रलेखा' तणौ टीकौ लगन आयौ। —र. हमीर

रू. भे.—लगनि, लगन्य, लग्गन, लिगन, लिगन्न

लगन पत्रिका, लगन पत्री—देखो 'लग्नपत्र' (रू. भे.)

लगनयार—सं. पु.—१ श्रीमाली ब्राह्मणों में विवाह का रिवाज जिसमें विवाह से ८-१० दिन पहले वर-पक्ष के यहाँ एक भोज होता है। इस के अनुसार वधु के भाई-बहनों को प्रथम (पहले) भोजन खिला कर तत्पश्चात अन्य सम्बन्धियों को खिलाया जाता है। इस रस्म की विशेषता यह है कि इस दिन चावल व सब्जी अधिक-में बनवाई जाती है। (मा. म.)
नोट—यह रस्म केवल शहरों तक ही सीमित है।

लगनि, लगन्य—देखो 'लगन' (रू. भे.)

उ०—लगनि लगी हरी नांव सुं, हरिया अंतर मांहि। मन बाहरली मिट गई, तन की सुधि बुधि नांहि। —अनुभववांणी

लगभग—अव्य.—समय, संख्या मान आदि की अनुमानित अवधि या मात्रा का बहुत कुछ निश्चित भाव प्रकट करने वाला अव्यय शब्द।

लगर—वि.—स्फूर्ति वाला, फुरतीला, चंचल।

लगरौ—वि.—फटा हुआ वस्त्र।

लगरचौ—सं. पु.—एक झाड़ी विशेष, जो ईंधन के रूप में काम आती है।
रू. भे.—लिगरचौ
२ देखो 'लिगरू' (अल्पा; रू. भे.)

लगलगाट—सं. स्त्री.- लपलपाहट।

उ०—जिकै वासुकि नाग री तरह लगलगाट करती सिळह बंध री कड़ियां नूं कतरती पिंड में वैठतां रणत्कार पड़ी। —वं. भा.

लगलगी—सं. स्त्री.—किसी के विरुद्ध उत्तेजित करने या भड़काने की क्रिया।
क्रि. प्र.—करणी
रू. भे.—लगेलगे, लिगेलिगे।

लगवाड़—सं. स्त्री. [सं. लग्न+वाढ (वृद्धि)] पुरुष या स्त्री का किसी अन्य स्त्री या पुरुष से अनुचित संबंध।
२ पति के अतिरिक्त स्त्री का दूसरे व्यक्ति से अनुचित संबंध।
३ सौत।

लगवाड़णौ, लगवाड़वौ—देखो 'लगवाणौ, लगवावौ' (रू. भे.)
लगवाड़णहार, हारौ (हारी), लगवाड़णियौ—वि.।
लगवाड़िओड़ौ, लगवाड़ियोड़ौ, लगवाड़्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लगवाड़ीजणौ, लगवाड़ीजवौ—कर्म वा.।

लगवाड़ियोड़ौ—देखो 'लगवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री लगवाड़ियोड़ी)

लगवाणौ, लगवावौ–क्रि. स. [लगणौ या लगाणौ क्रि.का. प्रे. रू.]

१ स्पर्श कराना, छुवाना।

२ मिलवाना, जुड़वाना, सटवाना।

ज्यू.—किवाड़ रै कूंटौ लगवाणौ, घर में बिजळी लगवाणी।

३ खर्च करवाना, व्यतीत करवाना।

४ नियोजित करवाना।

५ अनुभव करवाना, अनुभूति कराना।

६ आरम्भ करवाना, शुरू कराना।

७ फैलवाना, पसरवाना, बिखरवाना।

८ किसी वस्तु का दूसरी वस्तु में इस प्रकार लाकर मिलवाना कि वह उपभोग योग्य बन जाय।

९ किसी तरल पदार्थ का लेप करवाना।

१० इकट्ठे करवाना, सम्मिलित करवाना।

११ आघात करवाना, चोट पहुंचवाना।

१२ पेड़- पौवे आदि का आरोपण करवाना।

१३ जन समूह को इकट्ठा होने में प्रवृत्त करवाना।

१४ प्रभाव या असर करवाना।

१५ किसी बात या विषय में किसी व्यक्ति पर आरोप करवाना।

१६ प्रज्वलित करवाना।

१७ किसी कार्य में प्रवृत करवाना।

१८ किसी अनिष्ठ या कष्टदायक बात का किसी से सम्बन्ध करवाना।

१९ किसी आवरण या निरोध के द्वारा किसी विभाग या प्रकोष्ठ को छिपवाना या बंद कराना।

२० किसी पदार्थ या वस्तु का सुनियोजित एवं नियमित रूप से प्रस्तुत करवाना।

२१ धारदार या तीक्ष्ण चीज की नोंक या धार शरीर में चुभवाना या गढ़वाना।

२२ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत करवाना।

२३ घटित करवाना।

२४ गणित के क्षेत्र में कोई क्रिया ठीक और पूरी तरह करवाना।

२५ आर्थिक क्षेत्र में किसी दातव्य राशि का निश्चित करवाना।

२६ अनुगमन करवाना।

२७ पीछे लगवाना।

२८ अन्तर्गत करवाना।

२९ प्रभावित कराना।

३० अन्तिम अवस्था में पहुँचवाना।

३१ किसी वस्तु का दूसरी वस्तु पर जड़वाना, टंकवाना, सटवाना, बैठवाना।

३२ आश्रित करवाना।

३३ आर्द्री करवाना।

३४ अभ्यस्त करवाना।

३५ किसी रूप में सम्मिलित करवाना।

३६ किसी बात या काम को घटित करवाना।

३७ लाक्षणिक रूप में किसी मुख्यतः धार्मिक क्षेत्र में कोई अनिष्ठ बात या कार्य किसी के अनिवार्य रूप से करवाना, पटकाना।

३८ किसी प्रकार की क्रिया की पूर्णता, सिद्धी या स्थापना करवाना।

३९ किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए अपेक्षित या आवश्यक करवाना।

४० किसी को बदनाम करवाना।

४१ अंकित करवाना।

४२ अनुसरण करवाना।

४३ क्रमानुसार लगवाना।

४४ मैथुन या संभोग करवाना।

४५ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध करवाना।

लगवाणहार, हारौ (हारी), लगवाणियौ—वि.।

लगवायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लगवाईजणौ, लगवाईजवौ—कर्म वा.।

लगवाड़णौ, लगवाड़वौ, लगवावणौ, लगवाववौ—रू. भे.।

लगवायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ स्पर्श कराया हुआ, छुवाया हुआ, सम्पर्क कराया हुआ. २ मिलवाया हुआ, जुड़वाया हुआ, सटवाया हुआ. ३ खर्च करवाया हुआ, व्यतीत करवाया हुआ, ४ नियोजित करवाया हुआ. ५ अनुभव करवाया हुआ, अनुभूति करवाया हुआ. ६ फ़ैलवाया हुआ, बिखरवाया हुआ. ७ किसी वस्तु का दूसरी में इस प्रकार मिलवाया हुआ कि वह उपयोग लायक बन गई हो। ८ किसी तरल पदार्थ का लेप करवाया हुआ. ९ शामिल या सम्मिलित करवाया हुआ. १० आघात करवाया हुआ, चोट पहुंचाया हुआ. ११ आरम्भ या शुरू करवाया हुआ. १२ वृक्षारोपण करवाया हुआ. १३ जनसमुह को इकट्टा होने में प्रवृत करवाया हुआ. १४ प्रभाव या असर करवाया हुआ. १५ किसी बात या विषय में किसी व्यक्ति पर आरोप या प्रयोग करवाया हुआ. १६ प्रज्वलित करवाया हुआ. १७ किसी कार्य में प्रवृत करवाया हुआ. १८ किसी अनिष्ट या कष्टदायक बात का किसी से सम्बन्ध करवाया हुआ. १९ किसी आवरण या निरोध

के द्वारा किसी विभाग या प्रकोष्ठ को छिपवाया हुआ, बंद करवाया हुआ. २० किसी वस्तु या पदार्थ को समुचित या नियमित रूप से प्रस्तुत करवाया हुआ. २१ धारदार या तीक्ष्ण चीज की नोक या धार को शरीर में गड़वाया हुआ, चुभवाया हुआ. २२ मानसिक स्थिति को किसी ओर प्रवृत्त करवाया हुआ. २३ घटित करवाया हुआ. २४ गणित के क्षेत्र में किसी क्रिया का ठीक और पूरी तरह करवाया हुआ. २५ आर्थिक क्षेत्र में किसी दातव्य राशि का निश्चित करवाया हुआ. २६ अनुगमन करवाया हुआ. २७ पिछे लगवाया हुआ. २८ अन्तर्गत करवाया हुआ. २९ प्रभावित करवाया हुआ. ३० अंतिम अवस्था में पहुंचाया हुआ. ३१ किसी वस्तु का दूसरी पर जड़वाया हुआ, टंकवाया हुआ, सटवाया हुआ, बिठाया हुआ. ३२ आश्रित करवाया हुआ. ३३ आदी करवाया हुआ. ३४ अभ्यस्त करवाया हुआ. ३५ किसी रूप में सम्मिलित करवाया हुआ. ३६ किसी बात या काम को घटित करवाया हुआ. ३७ लाक्षणिक रूप में किसी मुख्यतः धार्मिक क्षेत्र में कोई अनिष्ठ बात या कार्य किसी के अनिवार्य रूप से करवाया हुआ. ३८ किसी प्रकार की क्रिया की पूर्णता, सिद्धी या स्थापना करवाई हुई । ३९ किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए अपेक्षित करवाया हुआ. ४० किसी को बदनाम करवाया हुआ. ४१ अंकित करवाया हुआ. ४२ अनुसरण करवाया हुआ. ४३ क्रमानुसार लगवाया हुआ. ४४ मैथुन या संभोग करवाया हुआ. ४५ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध करवाया हुआ ।

(स्त्री. लगवायोड़ी)

लगवाळ—सं. पु.—१ द्वार के अतिरिक्त अन्दर जाने का मार्ग, ऊपरी मार्ग ।

२ किसी स्त्री का पर पुरुष या किसी पुरुष का किसी पर स्त्री अनुचित संबंध होने की क्रिया या भाव ।

वि. -१ लगा हुआ ।

२ विलासी, कामुक ।

३ पीछा करने वाला ।

४ सहारा देने वाला, सहायक ।

लगवावणौ, लगवावबौ—देखो 'लगवाणौ, लगवावौ' (रू. भे.)

लगवावणहार, हारौ (हारी), लगवावणियौ—वि. ।

लगवाविओड़ौ, लगवावियोड़ौ, लगवाव्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लगवावीजणौ, लगवावीजबौ —कर्म वा. ।

लगवावियोड़ौ—देखो 'लगवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लगवावियोड़ी)

लगस—सं. पु.—१ बादल-समूह ।

उ०—१ बरन बरन रा बादळा, लगस चढी ने लाव । चित करती जळमय थळां, मत वह वेगी आव । —पा. प्र.

उ०—२ नाग जो छछोहा जांणै बादलां रा लगस पवन जोर सूं चालीआ जाग्रै छै । इण भांत सूं गजराज मुहडा आगै ही टूलै छै । ढोहां करता हमला खाता वहै छै । —रा. ना. सं.

२ समूह, दल ।

उ०—१ लूटवा वधे फौजां लगस, धमस तुरां भाजे धरा । मिळ चली प्रजा भगेळ मग, लग दिली लग आगरा । —रा. रू.

उ०—२ हुतो सयद हुसैन, अंग गढ गभि अजरायन । लोक विदा करि लगस, तिकौ काढै खळ तायल । —सू. प्र.

उ०—३ ऐसैं बिमरीर दळूं सें बिकट गिर भिगर घेरै फौजूं के लगस चौतरफ क्रूं फेरै । —सू. प्र.

३ फौज, सेना, दल ।

उ०—लसां दखणाद रा लगस आया लड़ण, पयोनिध अगस मुनि जेम पीजै । सां'म थापळ कहै राव उगती समीं, दुआ 'कांधळ' जमी खंबौ दीजै । —अरजुनसिंह चूंडावत री गीत

४ अधिकता, प्रचुरता ।

५ एक साथ, साथ-साथ ।

६ कतार, पंक्तिबद्ध ।

वि.—लम्बायमान ।

रू. भे.—लंगस, लगस्स

लगस्स—देखो 'लगस' (रू. भे.)

उ०—लोहां भट वाढत रौद लगस्स, 'बहादर' पीधलऊत वगस्स । 'राघावत' आणंदमिघ दुवाह, बिभाड़त मुग्गळ बीजळ बाह । —सू. प्र.

लगां—अव्य.—देखो 'लग' (१) (रू. भे.)

उ०—१ अंगजितमल्ल हुतउ, वदिअ द तणइ जयजयाकारि चालइ, जांणांइ किरि ब्रह्मांड फूटइ लगउं, नक्षत्र त्रूटी भुइं पडइं लगा गिरि सिखर खडहडइ लगा । —व. स.

लगांण—देखो 'लगांम' (रू. भे.)

उ०—१ दै उवर टकर ढाहे दुरंग, तदि दुहूं दळां इसड़ा तुरंग । अति लौण लोह पतिध्रमी आंण, लहि ठांम ठांम चाढै लगांण । —सू. प्र.

उ०—२ लगी न रहै तिल हेक लगांण, जरद्द मरद्द कटै जंगमाण । सदा सिव तांम लिये खळ सीस, स्रूणी स्रपी चंड देतं असीस । —सू. प्र.

२ देखो 'लगांन' (रू. भे.)

लगांन-सं. पु.—१ किसानों द्वारा ज़मींदार या सरकार को दिया जाने वाला कर, भू-राजस्व ।

रू. भे.—लगांण, लग्गांण ।

लगांम-सं. स्त्री.[फा.] १ तांगा वग्गी आदि में जोते जाने वाले अथवा सवारी किये जाने वाले घोड़े के मुंह में लगाया जाने वाला वह लोह का बना उपकरण विशेष जो घोड़े को रोकने व इधर उधर मोड़ने में सहायक होता है. रास, वाग ।

उ०—१ नीं जणां म्हांरै गिरै सूं के जावै । ठाकर घोड़ी री लगांम थांमी । गुलाव री मां आई सांमी । —दसदोख

उ०—२ काह पयंपो केवियां, धव विन सुनो धांम । आऊं पीळी ऊपरां, लेउं हाथ लगांम । —मुंकनदान खिड़ियौ

२ रोकना, थांमना ।

वि. वि.—एक प्रकार की रस्म जिसके अनुसार वरात चढते समय दुल्हे की वहन दुल्हे के घोड़े की लगाम पकड़ कर रोकती है ।

३ कोई ऐसी वात या चीज जो किसी को नियंत्रण में रखती हो ।

उ०—रहच खळां दळ रोळणा, वीर उभै वरियांम । किचनर पातल रै करां, लंदन तणी लगांम । —किसोरदान वारहठ

मुहा०—लगांम लगाणी=वोलना वंद करना ।

रू. भे.—लगांण, लगांमी, लग्गांण ।

लगांमी—देखो 'लगांम' (रू. भे.)

उ०—चौकड़ै चित धारि चौकस, लगांमी लिव लाय । प्रेम की सिर पहरि पाखर, अगम दिस कूं ध्याय । —अनुभववांणी

लगांवण-सं पु.—१ लगाने की क्रिया या भाव ।

२ वह खाद्य-पदार्थ, जिससे रोटी लगा कर खाई जाय ।

उ०—तरै किलांणदासजी फेर अरज कीवी के म्हांरै घर में तो लगांवण रो तेह है नहीं नै भाभाजी काकाजी दांम देवै नहीं । —नैणसी

रू. भे.—लगावण

लगा-क्रि. वि.—१ तक, पर्यन्त ।

उ०—असा रांण 'राजेस' कमठांण कीधा अकळ, कोड़ जुग लगा नह जाय कळिया । पाळ जोय हेमरा गरव गळीया पहल, टाळ जोय सयंद रा गरव टळिया । —जोगीदास कवारियो

लगाड़णौ, लगाड़वौ—देखो 'लगाणौ, लगावौ' (रू. भे.)

उ०—१ साल्ह चलंतइ परठिया, आंगण वीखड़ियांह । सो मइं हियइं लगाड़ियां, भरि भरि मूठड़ियांह । —ढो. मा.

उ०—२ जिकै वेद सूरति व्रांह्मण छै सु अरणी अगनि लगाड़ होम करै छै । धणो गौघ्रत नै कपूर री आहुति दीजै छै । —रा. सा. सं.

लगाड़णहार, हारौ (हारी), लगाड़णियौ—वि. ।

लगाड़िओड़ौ, लगाड़ियोड़ौ, लगाड़्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लगाड़ीजणौ, लगाड़ीजवौ—कर्म वा. ।

लगाड़ियोड़ौ-भू का. कृ.—देखो 'लगायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री लगाड़ियोड़ी)

लगाणौ, लगावौ-क्रि. स.—१ स्पर्श करना, छूना, सम्पर्क में करना ।

उ०—१ अहरै अहर लगाइ, तनै तन मेळिया । (परिहा) जांणि क गांधी हाट, जुवांनै भेळिया । —ढो. मा.

उ०—देस्यां म्हांरै वीरै नै वुलाय, लैसी थांनै हिवड़ै लगाय । इस विध भुगतो ए भोजाइ म्हारी जाडैनै । —लो. गी.

२ मिलाना, जोड़ना, सटाना ।

उ०—१ अवलंवि सखी कर पगि पगि ऊभी, रहती मद वहती रमणि । लाज लोह लंगरै लगाए, गय जिम आंणी गयगमणि । —वेलि

उ०—२ अर पचास ही घोड़ां नूं सूना छोडि तिकांरै हांनै भाला लगाइ जनक रै आगै प्रणांम पूरवक माथो नमायौ । —वं. भा.

३ शामिल करना, सम्मिलित करना ।

४ किसी तरल पदार्थ का लेप करना, मलना ।

उ०—१ इण भांतरी अगरजो रूपैरा रूपोटां मांहै धात आंण हाजर कीजै छै । अगरजो लगाइजै छै । —रा. सा. सं.

उ० —२ मोतीवुड़ै री सीवरा प्यालां में घात हाजर कीजै छै । सूंवो वगलां लगाइजै छै । —रा. सा. स.

५ चिपकाना, लिपटाना ।

उ०—फोफलिया रूपैरा लागा छै । फळां ऊपर वनात रा मुखमल रा चकारा लगायजै छै —रा. सा. सं.

६ पहुंचाना ।

७ खर्च कराना, व्यय कराना ।

८ किसी वस्तु को दूसरी में इस प्रकार मिलाना कि वह उपयोग में लाने योग्य वन जाय ।

९ मालूम या प्रतीत कराना, अनुभव कराना ।

१० आघात करना या चोट, पहुंचाना ।

उ०—मारू मन चिंता धरइ, करहइ कंव लगाइ । करहउ उठ्यउ उतांमळउ, साल्ह अचंभै थाइ । —ढो. मा.

११ किसी वस्तु के शरीर से स्पर्श कराकर जलन या खाज उत्पन्न करना ।

ज्यूं—मिरचां लगाणी, पांव लगाणी ।

१२ नियोजित करना ।

१३ (१) प्रस्फुटित करना, अंकुरित करना ।

१३ (२) उगाना ।

उ०—१ आसतखांन मन धोखौ आयौ, लोभ विना दुख वाग

लगायौ। असुरां तरां उकत उपजाई, वातां लालच तणी वताई।
—रा. रू.

उ०—२ सोनजी दो पीपळ भळै लगा दिया अर विश्रांरा गट्टा ही पक्का चिणा दिया। —दसदोख

१४ प्रतीत करना।

१५ वहुत से जनसमुदाय को एकत्रित करना।

१६ प्रभाव या असर करना।

१७ किसी वात या विषय में किसी व्यक्ति को आरोपित करना।

१८ प्रज्वलित करना।

उ०—आगि लगाई जळ वुझै, सो फिर सीतळ थाय। हरीया यातै अधिक है, अहूं न मेस्या जाय। —अनुभववांणी

१९ किसी अनिष्ठ या कष्ट दायक वात का किसी से सम्बन्ध करना या सम्पर्क में लाना।

२० किसी वस्तु या पदार्थ को नियमित एवं यथोचित रूप में प्रस्तुत करना।

उ०—भड़ोछी वाफतै री घणी कलावूत रेसम रै कारचोभी रै कांम री, गुजरात रै कारीगररी कीवी छै। तकिया लगाइजै छै।
—रा. सा. सं.

२१ किसी कार्य में प्रवृत करना।

२२ आरम्भ या शुरू करना।

२३ किसी आवरण या निरोध के द्वारा किसी विभाग या प्रकोष्ठ को छिपाना या वंद करना।

२४ फैलाना या पसारना, विखेरना।

२५ धारदार या नुकीली चीज की नोक या धार को शरीर में गड़ाना या चुभाना।

२६ किसी के साथ ऐसा व्यवहार करना जिससे वह कुढ़े या चिढ़े।

२७ किसी वस्तु को अन्य के संसर्ग में लाकर उसका उचित प्रभाव या फल दिखाना।

२८ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत करना।

उ०—ज्यूं ए डूंगर संमुहा, ज्यूं जइ सज्जण हुंति। चंपावाड़ी भमर ज्यऊं, नयण लगाई रहंती। —ढो. मा.

२९ करना, (पहुंचाना)।

उ०—मेरा वेड़ा लगाय दीज्यौ पार, प्रभूजी अरज करूं छूं। या भव में मैं वहु दुख, संसा सोग निमार। —मीरां

३० जुड़ाना, जोड़ना।

उ०—२ जैमल के घर जनम लियौ है, रांणा नै परणाई। सांचा सनेही म्हारै रांम संतजन, जांसूं प्रीति लगाई। —मीरां

३१ अनुगमन करना।

३२ अन्तर्गत करना।

३३ आश्रित करना।

३४ आदी करना, अभ्यस्त करना।

३५ किसी वात या काम को घटित करना।

३६ लाक्षणिक रूप में किसी मुख्यतः धार्मिक क्षेत्र में कोई अनिष्ट वात या कर्म, कार्य, किसी के अनिवार्य रूप से जिम्मे पड़ना।

३७ किसी प्रकार की सिद्धी या स्थापना करना।

३८ किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए अपेक्षित या आवश्यक करना।

३९ आर्थिक क्षेत्र में किसी दातव्य राशि को निश्चित करना या हिस्से में करना।

४० गणित के क्षेत्र में किसी क्रिया को ठीक और पूर्ण करना।

४१ क्रमानुसार पारी लगाना, नम्बर में रखना।

४२ मूल्यांकन करना।

४३ अंकित या चिन्हित करना।

४४ स्त्री के साथ प्रसंग, मैथुन या संभोग करना।

४५ पीछा करना।

उ०—इसा सुवरां रा मोरां ऊपरां राजाना घोड़ा लगाया छै।
—रा. सा. सं.

४६ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध स्थापित कराना।

लगाणहार, हारौ (हारी), लगाणियौ—वि.

लगायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लगाईजणौ, लगाईजवौ—कर्म वा.।

लगाड़णौ, लगाड़बौ, लगावणौ, लगाववौ, लग्गाड़णौ, लग्गाड़वौ, लग्गाणौ, लग्गावौ, लग्गावणौ, लग्गाववौ,—रू. भे.।

लगाय, लगायत—अव्य.—१ लगाकर, से।

उ०—१ गोपाळ-पोळ सूं लगाय फतै-पोळ सुदौ कोट नै फतैपोळ खास माराज जाळोर सूं पधारिया तदै स. १७७४ में करायौ।
—नैणसी

उ०—२ दीवांण फतैखांजी रै समंत १७३८ रा आसोज सु लगायत समंत १७४० रा माहा सुद १५ सुदी रयौ। —नैणसी

लगायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ स्पर्श किया हुआ, सम्पर्क में लाया हुआ। २ मिलाया हुआ, जोड़ा हुआ, सटाया हुआ। ३ शामिल किया हुआ, सम्मिलित किया हुआ। ४ चिपकाया हुआ, लिपटाया हुआ। ५ खर्च किया हुआ, व्यय किया हुआ। ६ नियोजित किया हुआ। ७ (१) अंकुरित किया हुआ, प्रस्फुटित किया हुआ ७ (२) उगाया हुआ। ८ अनुभव किया हुआ, अनुभूति किया हुआ। ९ प्रतीत किया हुआ। १० प्रवृत किया हुआ। ११ आरम्भ व शुरू किया हुआ। १२ फैलाया हुआ, पसारा हुआ, विखेरा हुआ। १३ किसी वस्तु को दूसरी में इस प्रकार मिलाया हुआ कि जिससे वह उपयोग लायक वन गई हो। १४ किसी तरल पदार्थ का लेप

किया हुआ. १५ आघात किया हुआ, चोट पहुंचाया हुआ. १६ किसी वस्तु के शरीर से स्पर्श करके जलन या खाज उत्पन्न किया हुआ. १७ अधिक ताप से खाद्य पदार्थ को तली में जमाया या चिपकाया हुआ. १८ वृक्षारोपण किया हुआ. १९ जनसमुदाय को इकट्ठा किया हुआ. २० प्रभाव या असर किया हुआ. २१ अनुगमन किया हुआ. २२ प्रज्वलित किया हुआ. २३ किसी कार्य में प्रवृत किया हुआ. २४ किसी वात या विपय में किसी व्यक्ति पर आरोप या प्रयोग किया हुआ. २५ किसी अनिष्ट या कष्टदायक वात का किसी से सम्बन्ध कराया हुआ या सम्पर्क में लाया हुआ. २६ किसी आवरण या निरोध द्वारा किसी विभाग या प्रकोष्ट को छिपाया हुआ या वन्द किया हुआ. २७ पीछे किया हुआ. २८ अन्तर्गत किया हुआ. २९ आश्रित किया हुआ. ३० आदी किया हुआ, अभ्यस्त किया हुआ. ३१ किसी वस्तु या पदार्थ को नियमित एवं यथोचित रूप में प्रस्तुत किया हुआ. ३२ धारदार या नुकीली चीज की नौंक या धार शरीर में चुभाया हुआ, गड़ाया हुआ. ३३ किसी से इस प्रकार व्यवहार कराया हुआ कि जिससे वह कुढ़े या चिढ़े. ३४ मानसिक स्थिति को किसी ओर प्रवृत किया हुआ. ३५ किया हुआ. (पहुँचाया हुआ) ३६ मूल्यांकन किया हुआ. ३७ गणित के क्षेत्र में किसी क्रिया का ठीक और पूरी तरह उतरा हुआ. ३८ आर्थिक क्षेत्र में किसी दातव्य राशि को निश्चित किया हुआ, हिस्से में दिया हुआ. ३९ किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए आवश्यक किया हुआ. ४० अंकित या चिन्हित किया हुआ. ४१ खाद्य पदार्थों के सम्बन्ध में तेज आंच (आग) के फलस्वरूप पकाये जाने वाले पदार्थ का वर्तन के पैंदें तले जमाया या चिपकाया हुआ. ४२ अनुसरण किया हुआ. ४३ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध किया हुआ. ४४ स्त्री के साथ मैथुन या सभोग किया हुआ ।

(स्त्री. लगायोड़ी)

लगार–वि.—किंचित, थोड़ा, लेशमात्र ।

उ०—१ आदि ग्रन्थ रै सीअक्षर, सुकवि कहै बुधि सार । तठै अगण दूखण तिता, लगै न हेक लगार । —सू. प्र.

उ०—२ रत्ता तौ नांम जिकै रहमांण, जिकां नह व्यापै आवा-जांण । भणै गुण तोरा लच्छि-भ्रतार, लगै नहं त्यां तन पाप लगार । —ह. र.

रू. भे.—लिगार, लिगारइ, लिगारि, लिगारी, लिगारै लिगीक, लिगीयर

लगालगी–सं. स्त्री.—क्रमवद्धता ।

लगाव, लगावट–सं. पु.—१ लगे हुए होने की अवस्था या भाव ।

२ किले, गढ आदि की दीवार का वह स्थान जहां से विपक्षी आसानी से प्रवेश कर सकें ।

उ०—पहर एक गोली वही पण वाहरला जांणेउ था सो उवे लगाव री जायगां जांणै था सो वीं ठांव सूं वड़ गया । —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

३ संवंध ।

उ०—लुगायां री खांप तौ अेक पण प्रीत री खांपां न्यारी । वौ तौ नेह अर लगाव ई दुजी भांत रौ है । वादळ रा मन में दपटियोड़ी विरखा री नेह फुफकार नै फण ऊंचौ करयौ । —फुलवाड़ी

४ दिलचस्पी, शौक ।

५ पक्षपात ।

रू. भे.—लग्गाव ।

लगावण—देखो 'लगांवण' (रू. भे.)

लगावणी–सं. स्त्री.—लड़ाने भिड़ाने की क्रिया या भाव ।

उ०—ज्यूं आचार तौ सुद्ध पालणी आवै नहीं तिण सूं आचार नी न्याय स्रद्धा री चरचा छोडने लोकां सूं लगावणी वातां करै । —भिक्खु

लगावणौ, लगाववौ—देखो 'लगाणौ लगावौ' (रू. भे.)

उ०—१ म्हारी वाईजी ने वेग वुलावौ, म्हारै साळ साथीड़ा लगावै । मैं घाय चतुरभुज थारी, थारी खेलण की वळिहारी । —लो. गी.

उ०—२ दांणवां तणा फाटिगा डाचा, वाचा नह ऊपड़ै विचार । अणभंग 'सिवौ' खाग ऊपाड़ै, हालियौ लंक लगावणहार । —जोगीदासचारण

उ०—३ ऊंवी चाकी फिरांवता, लारली गळी ल्यांवता अर व्याह-सावा में अळगी राखता । कोड-कुसळ रै कांमां में हाथ लगावणौ ही माड़ौ मांनता । —दसदोख

उ०—४ हमैं 'व्याह कर परौ' र क्यूं कीरी ही भव विगाड़ूं । कंवर तौ करमड़ै में रिजकयोड़ा ही कोनी । नीं तौ हूं बूढौ हूं क ? ठुकरां-ण्यांरी कमी है ? कोरै कांम रो क्यूं छिम्भौ लगावां । —दसदोख

उ०—५ ठंडा होणै रौ थोड़ौ-घणौ ही भौ नीं है वेटी ने घड़ी-घड़ी संभाळै, मूंढौ ढकै है । कांन लगावै, मोड़ै कांनी तकै है । —दसदोख

उ०—६ चौवरी रा सिखायोडा लोग छेलकी चेलकी लगावणै जुट ग्या । —दसदोख

उ०—७ आपण खरच ले जावौ । चारण रै खरच मतां लगावौ । चारण रा हीड़ा करता जाज्यो । —जैसे सरवहिये री वात

लगावणहार, हारौ (हारी), लगावणियौ—वि० ।

लगाविओड़ौ, लगावियोड़ौ, लगाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लगावीजणौ, लगावीजवौ—कर्म वा. ।

लगावियोड़ौ—देखो 'लगायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लगावियोड़ी)

लगावू-वि. लगाने वाला।
उ०—पण सोनजी ग्रोरां सुनांरा दांई नहीं। सफा सूधौ मांणस दिल री दरियाव ग्रर खरच री पूरी लगावू। —दसदोख

लगि—देखो 'लग' (रू.भे.)
उ०—ढाढी एक संदेसड़उ, ढोलइ लगि लइ जाय। जोवण फट्टि तळावड़ी, पाळि न बंधउ कांइ। —ढो. मा.
उ०—२ हाकलि ग्रसि हरवळी, ग्रणी दळ 'विलंद' उडाऊं। खग झाट खेलतौ, जंगि हवदां लगि जाऊं। —सू. प्र.

लगियोड़ौ—देखो 'लागियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लगियोड़ी)

लगी-सं. स्त्री.—१ कलह, लडाई।
२ लड़ाई के लिए उकसाने की क्रिया।
क्रि. प्र.—लगाणी
रू. भे.—लग्गी
३ देखो 'लग' (रू. भे.)
उ०—साठ लाख वरसा लगी पाली सगली ग्रायोजी। सप्तमी वदि ग्रासाड़ नी, सिद्ध थया जिनरायोजी। —स. कु.

लगुता—देखो 'लघुता' (रू. भे.)

लगुड-सं. पु. [सं. लगुडः] १ छड़ी, लकड़ी, लाठी (व. स.)

लगुळ—देखो 'लांगुळ' (रू. भे.) (डिं. को.)

लगुवेस—देखो 'लघुवेस, (रू. भे.)

लगू—देखो 'लग्गू' (रू. भे.)

लगेलगे-क्रि. वि.—१ किसी को पीछे लगाने के लिए कहे जाने वाले उत्तेजनात्मक शब्द।
उ०—सिकारी ऊभौ थकियौ लगे लगे कर कर गंडकड़ौ पहुंच गादड़ै नूं फाड़ नांखै ज्यूं महाराज खड़ां थकां लगेलगे कीज्यौ, ग्रापे लड़से। —मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता
२ कुत्ते को उकसाने की क्रिया।
उ०—सिकारी ऊभौ थकियौ लगेलगे कह कर गंडकड़ौ पहुँच गादड़ै नूं फाड़ नांखै। —मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता
क्रि. प्र.—करणौ।
देखो 'लगलगी' (रू. भे.)

लगै—देखो 'लग' (रू. भे.)
उ०—१ पर भोम लई समंदां लगै, राठोड़ां साका रहै। गळहत्थ वंस गोहिला तणौ, वैठ खड्ग गहि संग्रहै। —गु. रू. वं.
उ०—२ भड तुरंग वीणार, चडै माझी गज केसर। फौज लगै फुलियै, दीव पर राठां पस्सर। —गु. रू. वं.
उ०—३ दस जोयण लगै जियै री देही, ग्रनवतां जोवतां विस्तार। इउं हिज वार तणा ऊपरइ, इसडा ग्रख वाधिया उधार।। —महादेव पारवती री वेलि
उ०—४ जिण गजसिंघ पाट सिव्र जांमळ, वैठौ जसवतसिंघ महावळ। वारौ न्रप्त जिवै वरतायौ, सुरां धरम तहां लगै सवायौ। —रा. रू.

लगैटगै—देखो 'लगभग'
उ०—१ तीस घाट सौ वरसां रै लगैटगै पूगी हूं,' म्हनै तौ सुख नांव इण ग्रमूंझणी रौ ई ग्रायौ। —फुलवाड़ी
२ निकट, पास।

लगोवग-क्रि. वि.—१ वरावर।
उ०—गांव रै काज दीवांण राखी गुसट, लगोवग ग्राय निज कांन लागा। चाटगा हजारां साल चोतीसरी, नीरखलै धांन री वळै नागा। —उमरदांन लाळस
२ देखो 'लगभग'

लगोलग, लगोलगि-क्रि. वि.—१ लगातार, निरन्तर।
उ०—१ दीवांणजी मिसखरी करता बोल्या—म्हनै कीं इनांम देवौ तौ लगोलग तीन दिनां तांई रात नी ढळण दूं। —फुलवाड़ी
उ०—२ वरस वीं च्यारि न मेह वरखि, पड़ै घर काळ लगोलगि पखि। —रांमरासौ

लग्गौ-वि: (स्त्री. लगी) संलग्न, लगा हुग्रा।
उ०—पंथ लगौ मुरधर पाय, तज दिली छळ तैं ताय। सुण वात कमंध सुग्यांन, वळ मूछ धर वळवांन। —रा. रू.

लग्ग—देखो 'लग' (रू. भे)
उ०—१ प्रवाहे खडग्गं झड़ै हत्थ पग्गं, लहै जांण ग्रारा घरं काठ लग्गं। मुड़ै साळळै साळळै पै मुडक्कै, झड़ां ग्रोझड़ां सांड ज्यौं माड झुक्कै। —रा. रू.
उ०—२ चोथौ गाल देनै पाछौ लडैए, उलटी धका धूमां करै ए। वलै इसड़ी चलावै रग्ग ए, खांचै दरवारां लग्ग ए। —जयवांणी

लग्गणौ, लग्गवौ—देखो 'लागणौ, लागवौ' (रू. भे.)
उ०—१ दहुं वळां तोप लग्गी दगण, रूप काळ डाचा रुखी। रवि प्रळै काज जाणै रसम, ज्वाळ झाळ ज्वाळामुखी। —सू. प्र.
उ०—२ उमराव चाव लग्गौ दरस, रूप निहारै निजर भर। ग्रनमेख द्रस्टि पेखंत छवि, मीन चंद्र प्रतिविंव पर। —रा. रू.
उ०—३ जोवौं 'मांन' 'कल्यांण' तणा, गौ तन धारां लग्ग। भड़ सौ पड़िया भांण रा, ग्रन ऊपड़िया वग्ग। —रा. रू.

उ०—४ भाटी 'रांम' 'मुकन्न' तरण, इरण दिस लग्गौ आय । पाळ पुळी पैंठी पूरें, दी डोहळी जळाय । —रा. रू.

उ०—५ रिणमलोत रिण वज्जियौ, 'सुंदर' 'हरि' सुजाव । सहसां ले पड़ियौ समर, घट सो लग्गा घाव । —रा. रू.

उ०—६ सौ तुरंग सारखा, भड़ां अणभंग समेळा । मीट पड़ी मेळिया, घड़ी नह लग्गी वेळा । —रा. रू.

उ०—७ मुहकम लग्गी मैंड़तें, ज्या दणियर पर पेख । आपड़ियौ घर लूटतां, वाहर गौहर सेख । —रा. रू.

उ०—८ वेचौ दुंद न वीसरै 'चंद' तणौ हरनाथ । पंथ अळगौ लांगता, लारा लग्गौ साथ । —रा. रू.

उ०—९ जांण भळक्की जांमगी, पैले दग्गी नाळ । हाडै दुरजण-सल्ल रै, तंन लग्गी तिण काळ । —रा. रू.

उ०—१० अम्हां मन अचरिज भयउ, सखियां आखइ एम । तइं अणदिट्ठा सज्जणां, किउ कर लग्गा पेम । —ढो. मा.

उ०—११ जिम जिम सज्जण संभरइ, तिम तिम लग्गइ तीर । पंख हुवइ तौ जाइ मिळि, मनां वंघाड़ां धीर । —ढो. मा.

उ०—१२ जिणि देसैं सज्जण वसइ, तिणि दिसि वज्जउ वाउ । उआं लगौ मो लग्गसी, ऊ ही लाखपसाउ । —ढो. मा.

उ०—१३ संदेसैं ही घर भरचउ, कइ अंगणि कइ वार । अवसि ज लग्गा दीहड़ा, सेई गिणइ गँवार । —ढो. मा.

उ०—१४ रह रह सुंदरि माठ करि, हळफळ लग्गी काइ । डांभ दिरावइ करहलउ, सेकंतां मरि जाइ । —ढो. मा.

उ०—१५ अंगि अभोखण अच्छियउ, तन सोवन सगळाइ । मारू-अवा-मउर जिम, कर लग्गइ कुंमळाइ । —ढो. मा.

उ०—१६ अहर अभोखण ढंकियउ, सो नयणे रंग लाय । मारू पक्का अव ज्यूं, झरइ ज लग्गे वाय । —ढो. मा.

उ०—१७ सुहिणा हूं तइ दाहवी, तोनइ दहियउ अग्गि । सव जोयण साजण वसइ, सूती थी गळि लग्गि । —ढो. मा.

उ०—१८ दुज्जोहण घर घग्गिण सांमि, सिक्ख रडतीय मग्गइ । धम्मुपुत्त वयणेण पुण, इंद पुत्तु तिणि मग्गि लग्गइ ।
—पं. पं. च.

उ०—१९ किलमांण हलै सुरतांण कोप, उलटै समंद सम दुंद ओप कमधजां अंग ऊतंग कस्स, रिण लग्गा जग्गा वीर रस्स ।
—रा. रू.

उ०—२० उर निस्वास प्रमुक्कै, भग्गौ ज्यास चीत साभ्रंमं । यौं चिंता उद्वेगौ, लग्गी अग्ग वंस घासांण । —रा. रू.

लग्गणहार, हारौ (हारी), लग्गणियौ—वि. ।

लग्गिओड़ौ, लग्गियोड़ौ, लग्ग्योड़ौ—भू. का. कृ० ।

लग्गीजणौ, लग्गीजवौ—भाव वा. ।

लग्गन—१ देखो 'लगन' (रू. भे.)

उ०—सुहड़ां करि जुहार सव्वांही, राज महेल राज धू-आंही । राजा पधारै रळियांही, मुख हंसतै राव लग्गन मांही ।
—गु. रू. बं.

२ देखो 'लग्न' (रू. भे.)

लग्गांण—१ देखो 'लगांम' (रू. भे.)

२ देखो 'लगांन' (रू. भे.)

लग्गाड़णौ, लग्गाड़वौ—देखो 'लगाणौ, लगावौ' (रू. भे.)

लग्गाड़णहार, हारौ (हारी), लग्गाड़णियौ—वि. ।

लग्गाड़िओड़ौ, लग्गाड़ियोड़ौ, लग्गाड़्योड़ौ—भू. का. कृ.

लग्गाड़ीजणौ, लग्गड़ीजवौ—कर्म वा. ।

लग्गाड़ियोड़ौ—देखो 'लगायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लग्गाड़ियोड़ी)

लग्गाणौ, लग्गावौ—देखो 'लगाणौ, लगावौ' (रू. भे.)

उ०—जग लोक वांण सीखै जवन, पढै ब्रहम मुख पारसी । हित देव सेव आधा हुआ, काई लग्गा आरसी । —रा. रू.

लग्गाणहार, हारौ (हारी), लग्गाणियौ—वि० ।

लग्गायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लग्गाईजणौ, लग्गाईजवौ—कर्म वा० ।

लग्गायोड़ौ – देखो 'लगायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लग्गायोड़ी)

लग्गाव – देखो 'लगाव' (रू. भे.)

लग्गावणौ, लग्गाववौ—देखो 'लगाणौ, लगावौ' (रू. भे.)

लग्गावणहार, हारौ (हारी), लग्गावणियौ—वि० ।

लग्गाविओड़ौ, लग्गावियोड़ौ, लग्गाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लग्गावीजणौ, लग्गावीजवौ—कर्म वा० ।

लग्गावियोड़ौ—देखो 'लगायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लग्गावियोड़ी)

लग्गी—देखो 'लगी' (रू. भे.)

लग्गू–वि.—१ लगने वाला ।

२ लगा हुआ, संलग्न ।

३ लीन, अनुरक्त ।

क्रि. वि.—४ लगातार, निरंतर ।

रू. भे.—लगू

लग्न–सं. पु. [सं. लग्नम्] १ दिन का उतना अंश जितने में किसी एक राशि का उदय रहता है । (ज्योतिप)

२ मांगलिक कार्य करने का शुभ मुहूर्त।

उ०—१ सोही स्वीकार करि गोळवाळ री दो ही दुहिता नूं साथ लेर राजकुमार देवीसिंह ऊमरथूंणै आइ पिताहूं-प्रच्छन्न आपरी प्रांणप्रिया छोटी कुमरांणी गोडी मदनावती नूं बुलाइ अनेक उचित वाड़ा वणाइ आपरा अमात्य नूं वंवावदै वरणदूत देर उपयमरै उचित उपहार एकठौ कराइ लग्न पूछियौ। जठै नांम करि देल्है द्विज गणकराज दाधीच व्यास इण रीति कहियौ। —वं. भा.

उ०—२ पंजूनै निवै घणी आदर सनमांन देनै बीजै दिन चढीया मो लग्न रै दिन जालोर आया। —वीरमदे सोनगरा री वात

३ वह समय जब सूर्य किसी राशि में प्रवेश करता है।

रू. भे.—लगन, लिगन, लिगन्न।

लग्नकुंडळी-सं. स्त्री. [सं. लग्न+कुंडली] किसी के जन्म के समय ग्रहों की राशियों की स्थिति जानने का चक्र या कुंडली, जन्म-कुंडली।

लग्नदंड-सं. पु.[सं.] संगीत में वादन के समय स्वर के मुख्य अंश को अलग न होने देकर उनका सुंदरता से संयोग करने की क्रिया।

लग्नदिन-सं. पु. [सं. लग्नं+दिनं] विवाह के लिए निश्चित दिन।

लग्न-पत्र-सं. पु. यौ. [सं.] वह पत्र जिसमें वैवाहिक कृत्यों का ब्यौरे-वार विवरण हो।

रू. भे.—लगनपत्रिका, लगनपत्री, लग्नपत्रिका।

लग्नपत्रिका-सं स्त्री.—देखो 'लग्नपत्र' (रू. भे.)

लग्नायु-सं. स्त्री. यौ. [सं- लग्न+आयु] फलित ज्योतिष में लग्न-कुंडली के अनुसार स्थिर होने वाली आयु।

लग्नेस-सं. पु. यौ. [सं लग्न+ईश] वह ग्रह जो लग्न का स्वामी हो।

लग्नोदय-सं. पु. यौ [सं. लग्न+उदय] किसी लग्न के उदय होने का समय।

लघमा—देखो 'लघिमा' (रू. भे.)

लघिमा-सं. स्त्री. [सं. लघिमन्] १ आठ सिद्धियों में से चौथी सिद्धि, जिसके प्राप्त होने पर मनुष्य बहुत छोटा एवं हल्का रूप धारण कर सकता है। (डिं. को, ह. नां. मा.)

२ हल्कापन. लघुता।

उ०—लक-तणी लघिमा घणी, तउ नीपायुं सीह। तुंब नितंब समां घरी, रुद्र कहि निसि-दीह। —मा. कां. प्र.

रू. भे.—लघमा, लघुमा।

लघु-वि.—किसी की तुलना में छोटा।

उ०—इक कहत गिरवर एह, दरसंत सब लघु देह। स्रब वरण वांण सरीर, इम कहत दुरत अवीर। —रा. रू.

२ तुच्छ, भिन्न।

उ०—सिव संभव सिव रूप सुरेसुर, सिव गुण दियण प्रणंभ कथ सुर। अति लघु तिको सरण तक आवे‥ ‥‥। —सू. प्र.

३ हल्का।

४ तनिक, थोड़ा।

५ दुबला, पतला, कमजोर।

क्रि. वि.—शीघ्र, सत्वर।

सं. पु. [सं. लघुः] १ समय का एक परिणाम, जिसमें १५ क्षण होते हैं।

२ ज्योतिष में हस्त, अश्विनी और पुष्य, इन तीन नक्षत्रों के समूह का नाम।

३ तीन प्रकार के प्राणायाम में से बारह मात्राओं का प्राणायाम।

४ व्याकरण में एक ही मात्रा वाला स्वर, ह्रस्व स्वर।

५ छोटा भाई। (ह. नां. मा.)

रू भे.—लहु, लहू, लाड़ौ, लुघ, लुघवि, लुघु, लोग्रड़ौ, लोड़ौ, लोहड़ौ, लोहडौ, लौड़ौ, लौडौ, लौहड़ौ, लोहडौ, लवड़ौ, लहरौ, लहुंडो, लहुग्रडउ, लहुग्री, लहुड़िग्रो, लहुड़ो, लहुडउ, लहुडुं, लहुडौ, लहोड़ौ, लोड़ियौ, ल्होड्यौ।

लघुग्रंक-सं. पु. [सं. लघु+ग्रंक] वह वर्ण जिसमें एक ही मात्रा हो, एक मात्रिक।

उ०—किवलो पिच्छू कहै, लहू लघुग्रंक लहावै। गिणे छंद बस गुरु कवी, लघु चार कहावै। —र. रू.

लघुग्रसण-स पु.—गरुड़। (ना. डिं. को.)

लघुकंकोळ-सं. पु. [सं. लघु+कंकोल] साधारण कंकोल से छोटा एक प्रकार का कंकोल।

लघुगण-सं. पु.—अश्विनी, पुष्य एवं हस्त, तीनों नक्षत्रों का समूह।

लघुचंदन-सं. पु.— अगर नामक सुगंधित लकड़ी।

लघुचितविलास-सं. पु.—डिंगल (मरुभाषा) का एक गीत छंद विशेष।

लघुचित्त-वि. [सं. लघु+चित्त] दुर्बल या चंचल मन वाला।

लघुचूड़क-सं. पु.—वस्त्र विशेष।

उ०—लघुचूड़क मुक्त'चुडक सुवरणचूडक मोतीसरी करंगीं कंकणी पादवेष्टक पोलरकत्रिक चतुसरक नवसरक अस्तादसरक इति आभ-रणानि। —व. स.

लघुतमसमापवरत—देखो 'लघुत्तमसमापवरत्य' (रू. भे.)

लघुता, लघुताई-सं. स्त्री.—१ छोटापन।

उ०—१ सुत 'धांधळ' केसर वाग सही, जग जेठ मणवर नाग जेही। लघुता दुख गोवड़ियाळ लखै, धिक रोस मुराड़ियै ग्रांख धिखै। —पा. प्र.

२ तुच्छता, निम्नता।

उ०—१ नहिं जागत नहिं सुता, नहिं वै जीवत नहिं वै मरता। नहिं दीरघ नहिं लघुता, चेतन ब्रह्म आप लखिता।
—श्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ जैसें काठ की पुतळी को कारीगर करै। फिर कारीगर को पुतळी चित्रणौं चाहै। तैसैं परमेस्वर करत्तमकरत्ता मुनैं उपायौ। अर हूँ परमेस्वर कौ गुण कह्यौ चाहूं। ग्रंथकरत्ता इह आपणी लघुता करै छै।
— वेलि

३ हल्कापन, नीचता।

४ दुर्बलता, कमजोरी।

रू. भे.—लगुता।

लघुतुपक-सं. स्त्री. [सं. लघु+तुपुक] एक प्रकार की छोटी बंदूक, तमंचा।

लघुत्तमसमापवरत्य-सं. पु. [सं. लघुतमसमापवर्त्य] वह छोटी से छोटी संख्या जो दो या अधिक संख्या से पूरी २ विभाजित हो जाय।

रू. भे.—लघुतमसम्मापवरत।

लघुत्त्व-सं. पु. [स.] १ छोटापन, लघुता।

२ हल्कापन।

३ तुच्छता।

लघुदंती-सं. पु.—प्रथम लघु से पांच मात्रा का नाम।

वि.—छोटे दांत वाला।

लघुनजर-सं. पु. यौ. [सं. लघु+फा. नजर] हाथी। (ना. डि. को.)

रू. भे. लघुनिजर।

लघुनाळीक-सं. पु.—छप्पय छंद का एक भेद विशेष जिसके प्रथम चार चरण १८, १८ वर्णों के और अंतिम दो चरण २२, २२ वर्णों के होते हैं।

उ० - अखर अठारह चरण चव, वे चरणा बावीस। कवित लघुनाळीक कही, वरणत सरव कवीस। —र. ज. प्र.

लघुनिजर—देखो 'लघुनजर' (रू भे.)

लघुनीत-सं. पु.—पेशाब, मूत्र। (जैन)

लघुपंचक, लघुपंचमूळ-सं. पु.—शालीपर्णी पिठवन कटाई (छोटी) कटेहरी (बड़ी) और गोखरू इन पांचों की जड़ों का समूह या समिश्रण। (वैद्यक)

लघुपण-सं. पु.—छोटापन, लघुता।

उ०—पढ़ै कवियण वयण वडपण, ओप गिण सम करण। अरि जण स्रवण कुवयण तजै समझण दियण लघुपण दाव।
—रा. रू.

लघुपाक-सं पु. यौ [सं. लघु+पाक] १ सहज ही पक जाने वाला, खाद्य पदार्थ।

लघुबंधव-सं. पु. यौ. [सं. लघु+बंधव] उम्र में छोटे रिश्तेदार या भाई।

लघुभोजराज-सं पु.—श्रीवस्तुपाल के २४ विरुदों में पांचवां विरुद।
(व. स.)

लघुमति-स. पु. यौ. [सं. लघु+मति] छोटी बुद्धिवाला, मूर्ख।

लघुमांण-सं. पु.—लघु।

उ०—मिळै चवथी पचमी, जिकां अंत गुरू जांण। अनुप्रास की आठ तुक, मिळै अंत लघुमांण। —र. ज. प्र.

लघुमांन-सं. पु.—नायक को किसी दूसरी स्त्री से बातचीत आदि करते देखकर नायिका के मन में होने वाला रोष।

लघुमा—देखो 'लघिमा' (रू. भे.) (अ. मा., डि. को., ह. नां. मा.)

लघुवय-सं. स्त्री. यौ. [सं. लघु+वय] छोटी उम्र।

रू. भे.— लहुवय

लघुवयस, लघुवेस-सं. पु. [सं. लघु+वयस्] १ छोटी उम्र वाला।

उ०—लघुवेसां देवौ दलौ', सुत जसकरण सकज्ज। आप भळावण 'खेम' लै, नेम लियौ घर कज्ज। —रा. रू.

२ बालक। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—लगुवेस

लघुसंका-सं. स्त्री. [सं. लघु+शंका] मूत्रोत्सर्ग, पेशाब करना।

उ०—पतिसाहजी हुकम कियौ पेसरूखांन नूं तूं जाइ अर उस रेती माहै आंवखांन रौ तंवू खांचि। ओथि पातिसाहजी लघुसंका की।
—द. वि.

क्रि. प्र —करणी. लागणी।

लघुसांमंत-सं. पु. [सं. लघु+सामत] छोटा राजा।

उ०—राजा जुवराजकुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सामंत लघुसामंत तलवर तत्रपाल चतुरसीतिक ताडकपति मंत्रि महामंत्रि ग्रहवाहक। —व. स.

लघुहस्त-सं. पु [सं.] शिघ्रातिशिघ्र बाण चलाने वाला व्यक्ति।

२ छोटे हाथ वाला।

लड़ंग-वि.—१ लम्बा।

२ लम्बायमान।

सं. पु.—१ घोड़ा, अश्व।

उ०—घरि वइठा ही आविस्यइ, लाखै लियां लड़ंग। तिणिमइ लेस्यां टाळिमा, वांकड़ मुंहा विडंग। —ढो. मा.

२ कतार, पंक्ति।

उ०—१ पड़ै जांगियां अखमी रोळ विखंमी नीहाव पड़ै, रैण घोम लागी वौम रुके पंख राह। तेडे रथ गिरंभां रा रंभा रा लड़ंग तूटै, साहां वेहूं सीस जूटै वळावंध साह। —राव सत्रसाळ रौ गीत

उ०—२ लड़ंग लाख तुंग तंग, संग जुंग हल्लयै। चढै कि वेळ आकुळं, समुद्र मेळ चल्लयै। —रा. रू.

३ फौजों की टुकड़ियां, दल।

उ०—हम फरतै तोप का गोळा ज्यूं आए। जिन्हूं पर ठांमठांम सेती फौजं के लड़ंग धाए। —सू. प्र.

४ फैलाव, विस्तार।

उ०—लखि फौज तुंग लड़ंग ऊवंघ किर दधि अंग। वांणि सुरथ पायक व्रंद जग जांण दळ जयचंद —रा. रू.

५ झुंड, समूह।

उ०—छछवा मदरा छाकिया, स्हो आछा सिरदार। विडंगा चढिया वीरवळ, लड़ंगां आया लार। —पनां

रू. भे.—लडंग।

लड़ंत-सं. स्त्री—लड़ाई, भिड़ंत, मुकावला।

लड़-सं. स्त्री—१ एक दूसरी से लगकर लम्बाकार में व्यवस्थित रूप से गुंथी हुई वस्तुओं का समुह, माला।

उ०—१ उमड़ घटा घन देखिकै, चढी अटा पर वाळ। मोतिन लड़ मुख में लई, कारण कोण जमाल। —जमाल

उ०—२ हींडा बादळी हिंडाय, विजळी चंवर ढुळाय। लागै विरखा री झड़, जांणै मोतीड़ां री लड़। —चेतमांनखो

२ पंक्ति में लगे हुए फूलों का छड़ी के आकार का गुच्छा।

३ रेखा, पंक्ति, कतार।

उ०—घुरवा धरणी लग लोढा लै धावै, जीमण जीमण नै मोडा जिम वावै। मोरा अनुमोदित लोरां लड़ लागी, नीझर नव नीरद भमनां भव भाजी। —ऊ का.

४ रस्सी।

उ०—पीठ पर वैणी उचटती निजर आवै है, केल रै पांन जांणै नागण लफलफा जावै है। उचकती अलकावली में मुख इण भांत सोभा देवै है, मानूं नाग लड़ां रै हींडै चढ़ झोटा लेवै है। —र. हमीर

५ युद्ध, लड़ाई। (डि. को.)

६ संगीत वाद्यों पर गत के एक ही टुकड़े को वार-वार वजाने की क्रिया।

रू. भे.—लड़ी

लड़कपण, लड़कपणौ-सं. पु.—१ वाल्यावस्था।

२ लड़कों का सा आचरण, चंचलता।

क्रि. प्र.—करणौ, दिखाणौ

लड़कबुद्धि-सं. स्त्री—वालकों जैसी वुद्धि।

लड़काई-सं. स्त्री—लड़कपन, नादानी।

लड़को-सं. पु. [स्त्री. लड़की] १ छोटी अवस्था का वालक।

२ पुत्र, वेटा (डि. को.)

लड़क्कणौ, लड़क्कवौ-क्रि. अ.—परस्पर टकराना, भिड़ना।

उ०—मही चौ धड़क्कै तठै लड़क्कै सेस रा माथा, खड़क्कै हुड़क्कै काळी कड़क्कै खांणास। झड़क्कै कटारां पेस रुड़क्कै मूंडड़ा जठै, वड़क्कै फ्रंगळा कड़ा जड़क्कै वांणास। — गीत वादरसिंघ मेड़तिया रौ

लड़खड़णौ, खड़खड़वौ—देखो 'लड़खड़ाणौ, लड़खड़ावौ' (रू. भे.)

उ०—१ म्हैं तौ ईणनुं अठै वरियौ पण ईणरी कटारी तौ कोट नुं जाय जाय वहै छै। ईण भांत पड़ता लड़ता लड़खड़ता नीसरणियां लगाय नै चढै छै। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ सरप की जीभ ज्यूं परै अणी भलका करै। कै लड़ै कै लड़खड़ै, थक्या उलटा पड़ै। —ह. पु. वां.

उ०—३ उड गया रेसमी गदरा वे राली नै रंज नहीं लागी। आ फिरे कांमेतण लड़ाभूम, लखपतणी मरगी लड़खड़ती। —चेतमांनखां

लड़खड़ाड़णौ, लड़खड़ाड़वौ—देखो 'लड़खड़ाणौ, लड़खड़ावौ' (रू. भे.)

लड़खड़ाड़ियोड़ौ—देखो 'लड़खड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लड़खड़ाड़ियोड़ी)

लड़खड़ाणौ, लड़खड़ावौ-क्रि. अ.—१ डगमगाना, डिगना।

उ०—नाटक गीत तमासौ देखण, तुरत हरक सूं जाई रे। धरम कथा सांधां रै दरसन, जातां पग लड़खड़ाई रे। —जयवांणी

२ कांपना, धूजना, थर्राना।

क्रि. स.—३ भय दिखाना।

उ०—इतरा में वेरसी आय लोगां नू लड़खड़ाया सो मांणस कांप रहिया छै। —सूरै खींवै कांधलोत री बात

लड़खड़ाणहार, हारौ (हारी), लड़खड़ाणियौ—वि०।

लड़खड़ायोड़ौ - भू० का० कृ०।

लड़खड़ाईजणौ, लड़खड़ाईजवौ—भाव वा०, कर्म वा०।

लड़खड़णौ, लड़खड़वौ, लड़खड़ाड़णौ, लड़खड़ाड़वौ, लड़खड़ावणौ, लड़खड़ाववौ, लुड़खुड़ाणौ, लुड़खुड़ावौ—रू० भे०।

लड़खड़ायोड़ौ-भू० का० कृ०—१ डगमगाया हुआ, डिगा हुआ. २ कांपा हुआ, धूजा हुआ, थर्राया हुआ. ३ भय दिखलाया हुआ, रोव गालिव किया हुआ.

(स्त्री. लड़खड़ायोड़ी)

लड़खड़ावणौ, लड़खड़ाववौ—देखो 'लड़खड़ाणौ, लड़खड़ावौ' (रू. भे.)

लड़खड़ावणहार, हारौ (हारी), लड़खड़ावणियौ—वि०।

लड़खड़ाविओड़ौ, लड़खड़ावियोड़ौ, लड़खड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ०

लड़खड़ावीजणौ, लड़खड़ावीजवौ—भाव वा०, कर्म वा०।

लड़खड़ावियोड़ौ—देखो 'लड़खड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लड़खड़ावियोड़ी)

लड़ड़-क्रि. वि. (अनु.) लगातार, निरन्तर।

उ०—घोड़ा री असवारी अर दूध रै पांण वौ तौ लड़ड़-लड़ड ववतौ ई गियौ। —फुलवाड़ी

रू. भे.—लरड़

लड़झड़णौ, लड़झड़बौ–क्रि. अ.—वकझक करना, वड़वड़ाना।

उ०—इम लड़झड़ती वाहुड़ी, पूठी उर पिछताय। छळ करती छूंनौं गयद, जांणै विन नूं जाय। —र. हमीर

लड़झड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—वकझक किया हुआ, वड़वड़ाया हुआ।

(स्त्री. लड़झड़ियोड़ी)

लड़णौ, लड़बौ–क्रि. स. [सं. रणम्] १ शस्त्रास्त्रों द्वारा युद्ध करना, लड़ना।

उ०—१ पिड़ सार धार सिलहां अपार, वाजंत अंत विण वार वार जुध लड़ै भिड़ै नह खड़ै जग, सिर पड़ै झड़ै कर पाव संग। —रा. रू.

उ०—२ करण प्रताप सुणै व्रळ कीधा, लड़वा कटक सांमुहा लीधा। असि सहस विकटा असवारा, वाग उपाड़ि लड़ै जिण वारा। —सू. प्र.

उ०—३ उडै पग हात किरका हुवै अंग रा, वहै रत जेम सावण वहाळा। आप आपी वरी जोय नै आडियां, लड़ै रिण भला भला निराताळा। —र. रू.

२ शारीरिक, आर्थिक, वौद्धिक वल प्रयोग से विपक्षी को परास्त करने या नीचा दिखाने की क्रिया करना।

३ वहस करना, हुज्जत करना।

४ ईर्ष्या-भाव से कलह करना, झगड़ना।

उ०—पिंडत-पिंडत अर साधु-साधु, सागै हुवै जद सागीड़ा लड़े-झगड़े। —दसदोख

५ टकराना, भिड़ना।

उ०—कैर लड़ै विन पांनड़ां, रोकै लूआं रोस। सुंण सुंसाता जोर-सूं, भूले हिरणां होस। —लू

६ विषैले जन्तुओं का डंक मारना।

उ०—१ पनग लड़ौ कीड़ा पड़ौ, सड़ौ झड़ौ दुख संग। जग चुगलां री जीभड़ी, वायस भखौ विहग। —वा. दा.

उ०—२ नाथूरांमजी रै खटमल लड़ियौ, बांकी लूंठी के दाफड़ पड़ियौ। रे खटमल सोवा दै वादस्याई दरोगा सोयवा दै। —लो. गी.

७ कुपित या नाराज होना।

उ०—होय विरंगी नार, डंगरां विच है क्यूं खडी। क्रांई थारौ गीहर दूर, कांई घरां सासू लड़ी। —लो. गी.

८ ऐसी स्थिति में होना जिसमें किसी कार्य के सम्पादन में पूर्ण परिश्रम लग गया हो।

ज्यूं—काम रै मांय दिमाग लड़णौ।

९ ऐसी स्थिति में पहुंचना, जिसमें किसी प्रकार की अनुकूलता या समर्थन सिद्ध होता हो।

लड़णहार, हारौ (हारी), लड़णियौ—वि.।

लड़िओड़ौ, लड़ियोड़ौ, लड़्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लड़ीजणौ, लड़ीजबौ—भाव वा.।

लडणौ, लडबौ—रू. भे.।

लड़त्थड़णौ, लड़त्थड़बौ—देखो 'लड़थड़णौ, लड़थड़बौ' (रू. भे.)

लड़त्थड़णहार, हारौ (हारी), लड़त्थड़णियौ—वि०।

लड़त्थड़िओड़ौ, लड़त्थड़ियोड़ौ, लड़त्थड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लड़त्थड़ीजणौ, लड़त्थड़ीजबौ,—भाव वा०।

लड़त्थड़ियोड़ौ—देखो 'लड़थड़्योड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लड़त्थड़ियोड़ी)

लड़थड़णौ, लड़थड़बौ—देखो 'लडथड़ाणौ, लड़थड़ाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ झाख विन अरावां आगि माथै झड़ै, लड़थड़ै अड़ै गैणानि लागो। झपेटा भाग किलमां करै झोवरै, नाग जिम रांम रौ खाग नागो। —भीमसिंघ हाडा रौ गीत

उ०—२ हाथ डांडौ झालियौ जी, चालतौ लड़थड़ै देह। दांत सूंणी खोळी पडीजी, आपद पडियौ नेह। —जयवांणी

उ०—३ कीधा तिमको कहइ नही, जीभ लड़थड़ झूठ। कांटो भागौ आंगुळी, खोभीजइ अंगूठ। —स. कु.

उ०—४ झड़ अनड़ उड रव वांणि वहिझड़, उरड़ अपहड़ दुझड़ ओझड। कर डंमर गड़ वरड़ कर घड़, लुड़त तड़फड़ जुटत लड़थड़। —सू. प्र.

लड़थड़णहार, हारौ (हारी), लड़थड़णियौ—वि.।

लड़थडिओड़ौ, लड़थड़ियोडौ, लड़थड़्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लड़थड़ीजणौ, लड़थड़ीजबौ—भाव वा.।

लड़थड़ाड़णौ, लड़थड़ाड़बौ—देखो 'लड़थड़ाणौ लड़थड़ाबौ' (रू. भे.)

लड़थड़ाड़ियोड़ौ—देखो 'लड़थड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लड़थड़ाड़ियोड़ी)

लड़थड़ाणौ, लड़थडाबौ–क्रि. अ.—१ डिगमिगाना।

२ भय आदि के कारण जीभ का कांपना।

लड़थड़ाणहार, हारौ (हारी), लड़थड़ाणियौ—वि.।

लड़थड़ायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लड़यड़ाईजणो, लड़यड़ाईजवो—भाव वा. ।

लड़त्यड़णो, लड़त्यड़वो, लड़यड़णो, लड़यड़वो, लड़यड़ाड़णो, लड़यड़ाड़वो, लड़यड़णो, लड़यड़वो, लड़यड़ावणो, लड़यड़ाववो —रू. भे. ।

लड़यड़ायोड़ो-भू. का. कृ.—१ डिगमिगाया हुआ. २ भय आदि के कारण जीभ का कांपा हुआ ।
(स्त्री. लड़यड़ायोडी)

लड़यड़ावणो, लड़यड़ावबो—देखो 'लड़यड़ाणो, लड़यड़ावो' (रू. भे.)

लड़यड़ावणहार, हारो (हारी), लड़यड़ावणियो—वि० ।

लड़यड़ाविग्रोड़ो, लड़थड़ावियोड़ो, लड़यड़ाव्योड़ो—भू० का० कृ०

लड़थड़ावीजणो, लड़यड़ावीजवो—भाव वा० ।

लड़यड़ावियोड़ो—देखो 'लड़यड़ायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. लड़यड़ावियोड़ी)

लड़यट—'देखो 'लडथट' (रू. भे.)

लड़दादो-सं. पु.—प्रपितामह का पिता ।

लड़दो, लड़धो-वि. (स्त्री. लड़दी, लड़धी) १ हृष्ट पुष्ट, युवा ।

२ मस्ताना, मुफ्तखोर ।

उ०—वापड़ी भग्रू-नै तो टुकड़ां-रा ई सांसा अर अठीनै ग्रै लड़धा भांग-बूटी छांणै अर माल उडावै । —वरसगांठ

लड़पोतो-सं. पु. (स्त्री. लड़पोती) पौत्र का लड़का ।

लड़मूरत—गले का आभूषण विशेष ।

लड़लूंव, लड़लूंम, लड़लूंमो—देखो 'लड़ालूंव' (रू. भे.)

उ०—फव कांनन मोती मुगाट फवै, लड़लूंव वनो चित चाव लुवै । कमधेस ग्रछा ग्रस त्यार किया, लखमोल अमोलक साथ लिया । —वख्तावर मोतीसर

लड़ांलूंव, लड़ांभूंम—देखो 'लड़ालूंव' (रू. भे.)

लड़ाई-सं. स्त्री.—१ लड़ने की क्रिया या भाव ।

२ शस्त्रों से (शत्रु को पराजित करने हेतु) रण-क्षेत्र में किया जाने वाला संघर्ष, संग्राम, युद्ध।

उ०—१ कर धूंकळ घर कज्ज, सकत दाखवै सवाई । मध मरणियड़ राड़द्रहि, करै छेहली लड़ाई । —रा. रू.

उ०—२ घणा ग्रगुर भांजे गांगांणी, माड़ेचो नदियो 'मुकनांणी' लागां मूं वधडै लड़ाई, सार प्रथम साकिया सिपाई । —रा. रू.

३ जन-साधारण में एक दूसरे के साथ मारपीट करने का प्रयत्न ।

क्रि. प्र.—करणी, लड़णी ।

४ शारीरिक, आर्थिक व बौद्धिक बल से एक दूसरे को दवाने या नीचा दिखाने का प्रयत्न ।

५ एक-दूसरे के बीच वाद-विवाद या गाली-गलोच होने की अवस्था ।

६ वैमनस्य, शत्रुता, अनवन ।

७ प्रतिस्पर्धा, ।

८ टक्कर, भिड़त ।

यौ. लडाई-खोर

रू. भे.—लड़ाई

लड़ाईखोर, लड़ाईखोरो-वि.—१ लड़ाई करने वाला ।

२ कलह-प्रिय ।

लड़ाक, लड़ाको, लड़ाकू, लड़ाकौ-वि.—१ लड़ाई करने वाला, योद्धा वीर ।

उ०—१ गाज नगारा चिमक खग, वरसत वाजत डाक । घटा नहीं ग्रा कांम री, आवै फौज लड़ाक । —ग्रज्ञात

उ०—२ चठ्ठा करत खप्पराक चंडी, राग वज ग्रयराक । रिणछाक चढ रवि ताक राघव, लखण सहित लड़ाक । —र. ज. प्र.

उ०—३ खांगीवंध खळ गयंद खुराकी, नाकी नह मेल्ही नहराळ । सीह लड़ाकी लड़ण सलूभो, डाकी ठह उभो डाढाळ , ।
—महादांन मेहड़

२ कुश्ती लड़ने वाला, मल्ल-योद्धा ।

लड़ाड़णो, लड़ाड़वो - देखो 'लड़ाणो लड़ावो' (रू. भे.)

लड़ाड़णहार, हारो (हारी), लड़ाड़णियो—वि. ।

लड़ाड़िग्रोड़ो, लड़ाड़ियोड़ो—भू. का. कृ. ।

लड़ाड़ीजणो, लड़ाड़ीजवो—कर्म वा. ।

लड़ाड़ियोड़ो—देखो 'लड़ायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. लड़ाड़ियोड़ी)

लड़ाभूंव, लड़ाभूंम, लड़भूम—देखो 'लड़ालूंव' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रावूवाळा ई समारोह में पूरा-सूरा कपड़ा ग्रर वै भी घाघरा, ग्रोढणी, कुड़ती, कांचळी, इत्याद पैर कर ग्रोर पूरा गैणां गांठां सूं लड़ाभूम लुगायां री सुंदरता री परख व्है । —हरावळ

उ०—२ उड गया रेसमी गदरा वे, राली रै रंज नहीं लागी । ग्रा फिरै कांमेतण लड़ाभूम, लखपतणी मरगी लड़यड़ती ।
—चेतमांनखो

उ०—३ वींदणी ग्रपूठी होय मूंडो उघाड़ वैठगी । ऊंचो जोयो । पतळी पतळी लीली-चेर लड़ाभूम सांगरियां ई सांगरियां । देखतां ई कोयां में टाडोळाई वापरगी । —फुलवाड़ी

लड़ाणो, लड़ावो-क्रि.स. (लड़णो क्रिया का प्रे. रू.)—१ शस्त्रों द्वारा युद्ध में प्रवृत्त करना, लड़ाना ।

२ शारीरिक, बौद्धिक एवं आर्थिक बल प्रयोग से शत्रू को परास्त करने या नीचा दिखाने हेतु प्रवृत्त करना ।
३ बहस या हुज्जत करना ।
४ ईर्ष्या-भाव से कलह कराना, झगड़ाना ।
५ विषैले जन्तुओं से डंक मराना ।
६ टकराना, भिड़ाना ।
७ कुपित या नाराज कराना ।
८ किसी कार्य के सम्पादन हेतु विकटतम परिस्थितियों का सामना करना, पूर्ण परिश्रम कराना ।

उ०—घरम अर पुन्न रा कामां वास्तै केइ कळाप करणा पड़ै। अणूंती अकल लड़ाणी पड़ै । —फुलवाड़ी

९ किसी प्रकार की अनुकूलता या समर्थन प्राप्त करने हेतु किसी प्रकार का इशारा या संकेत करना।

ज्यूं.—आंख लड़ाणी ।

१० अपना कोई अंग दूसरे के सामने लाकर बराबरी कराना ।
११ मुकाबला कराना, प्रतिस्पर्धा कराना ।

लड़ाणहार, हारौ (हारी), लड़ाणियौ—वि. ।
लड़ायोड़ा—भू. का. कृ. ।
लड़ाईजणौ, लड़ाईजबौ—कर्म. वा. ।
लड़ाड़णौ, लड़ाड़बौ, लड़ावणौ, लड़ाववौ, लड़ाणौ, लड़ावौ—रू. भे. ।

लड़ायोड़ौ—भू. का. कृ.—शस्त्रास्त्रों द्वारा युद्ध में प्रवृत्त कराया हुआ, लड़ाया हुआ. २ शारीरिक बौद्धिक एव आर्थिक बल-प्रयोग से विपक्षी को परास्त करने या नीचा दिखाने हेतु प्रवृत्त कराया हुआ. ३ बहस या हुज्जत कराया हुआ. ४ इर्ष्या भाव से कलह कराया हुआ, झगड़ाया हुआ. ५ टकराया हुआ, भिड़ाया हुआ । ६ कुपित या नाराज कराया हुआ. ७ विषैले जन्तुओं से डंक मरवाया हुआ. ८ किसी कार्य के सम्पादन हेतु विकटतम परिस्थितियों का सामना कराया हुआ, पूर्ण परिश्रम कराया हुआ. ९ किसी प्रकार की अनुकूलता या समर्थन प्राप्त करने हेतु कोई संकेत किया हुआ. १० अपना कोई अंग दूसरे के सामने लाकर बराबरी कराया हुआ ११ मुकाबला कराया हुआ, प्रतिस्पर्धा कराया हुआ ।
(स्त्री. लड़ायोड़ी)

लड़ालंव—देखो 'लड़ालूंव' (रू. भे.)

उ०—तठां उपरांत करि ने राजान् कुमारी जांन घणै आडंवर सूं हाथी घोड़ा वहील सुखासण रथ पायकरा वणाव कियां वघेल जांनियारै साथ लियां घणै मोती जड़ाव जरकसी सूं लड़ालंव हुआ छै। —रा. सा. सं

लड़ालूंब, लड़ालूंम, लड़ालूंव—वि.—१ आभूषणों से सुसज्जित ।

उ०—१ सवै अंग उत्तंग सालोत साखी, लड़ालूंव कीधौ थकौ आंण लाखी, । "हरौ" होइ आरुढ ते वार हल्लै, चढै पीठ ऊंचास के इद चल्लै । —हरी पिंगळ प्रवंध

उ०—२ लाख वरीसै भोज तूं, कवित्त नवा कहणांह। लड़ालूंव वणियौ विहद, गढपत जस गहणांह । —वां. दा.

२ फल-फूलों से आच्छादित, युक्त ।

उ०—लड़ालूंम डाल्यां लमूंटै जांणै भवरख भूंटणा । ओयण में लसकर लुगायां, खाणा चुगणा चूंटणा । —दसदेव

रू. भे.—लड़लूंव, लड़लूंम, लड़लूंमौ, लड़ांलूंव. लड़ाभूंम' लड़ाभूंव, लड़ाभूंम, लड़ाभूम, लड़ालूम, लड़ालूंव ।

लड़ावणौ, लड़ावबौ—देखो 'लड़ाणौ, लड़ावौ' (रू. भे.)

उ०—१ वा उणनै विलमावण सारू, राजी करण सारू आखी रात अर आखै दिन अकल लड़ावती पण कीं तोजी वैठी नीं ।
—फुलवाड़ी

उ०—उण रा घर में तौ नितरी दांताकसी अर पाड़ौसियां रै ओड़ौ वांणिया रै ऊभी आडी नीं माई । वौ दोनां नै लड़ावण री अटकळ विचारण लागौ । —फुलवाड़ी

उ०—३ सुखासण पालखी चोडाळ रथ पाइक वणि नै रहीया छै । कटकांरां खूर पडि नै रहीआ छै । हाथी लड़ावीजें छै ।
—रा. सा. सं.

लड़ावणहार, हारौ (हारी), लड़ावणियौ—वि० ।
लड़ाविओड़ौ, लड़ावियोड़ौ, लड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लड़ावीजणौ, लड़ावीजबौ—कर्म वा० ।

लड़ावियोड़ौ—देखो 'लड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लड़ावियोड़ी)

लड़ियंग-सं, स्त्री.—पक्ति, समुह ।

उ०—३ पुण प्राजळै अगनि पूरै पवन, लड़ियंग धाइ धूंवर लोचन । देवी हूंकार कियै भसम दैत, जालिम संघार जुध जैत जैत । —मा वचनिका

लड़ियाल—देखो' लड़ीयाल' (रू. भे.)

लड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ शस्त्रास्त्रों द्वारा युद्ध किया हुआ, लड़ा हुआ. २ शारीरिक, आर्थिक एवं बौद्धिक बल प्रयोग से विपक्षी को परास्त करने या नीचा दिखाने का प्रयत्न किया हुआ. ३ वहस या हुज्जत किया हुआ. ४ इर्ष्या भाव से झगड़ा या कलह किया हुआ. ५ टकराया हुआ, भिड़ा हुआ. ६ विषैले जन्तुओं द्वारा डंक मारा हुआ. ७ कुपित हुवा हुआ, नाराज हुवा हुआ. ८ ऐसी परिस्थिति में हुवा हुआ जिसमें किसी कार्य के सम्पादन में पूर्ण परिश्रम लग गया हो ।
(स्त्री. लड़ियोड़ी)

लड़ियौ-सं. पु.—१ 'खींप' या 'सिणिया' नामक पौधे की बनी हुई रस्सी।
२ भेड़ का बच्चा।

लड़ी-सं. स्त्री.—बेल, लता।
उ०—भूठी भूठ न बोलियै, सांची बात कहंत। लड़ी पड़ी जै खेत में, ढांटा ढोर चरंत। —जलाल बूबना री बात
२ भेड़।
३ देखो 'लड़' (रू. भे.)

लड़ीयाल-वि.—वीर, योद्धा, लड़ाकू।
उ०—ग्रनमी कंद फौजां ग्राफळतौ, कावळतौ दळ तौ कूरम। यळ लड़ीयाळ 'मांन' 'ग्रपणाई', जै खल दा भीड़ीयाळ जम। —चांवडदानजी घघवाड़ियौ
रू. भे.—लडियाळ, लडीयाळ।

लड़ेत-वि.—योद्धा, वीर, लड़ाकू।
उ०—सिलहेत ढहै इम वहे सार, ऊवडे कड़ी वगतर ग्रपार। सामत लड़ेत खडै संग्रांम, रिण गहण गयौ ग्रस तोर रांम। —रा. रू.

लड़ोकड़-वि. स्त्री—कलह-प्रिय, लड़ाई करने या कराने वाला।

लड़ोकड़ौ-पु. (स्त्री. लड़ोकड़ी) कलह-प्रिय, झगड़ालू, लड़ाई करने वाला।
उ०—वडोड़ै वीरेजी री गवरां दै लड़ोकड़ी नार राय सांभतड़ी री लेवेली म्हारैं भाभै जी सू मोरचौ। —लो. गी.
रू. भे.—लडोकडौ।

लच—देखो 'लचक' (रू. भे.)

लचक-सं. स्त्री.—१ लचकने की क्रिया या भाव।
उ०—इळ धुकि लचक सीम ग्रहि वाळा, चंद कटक खड़िया कळ-चाळा। जगत छत्रदिस दिसै जवावां, सभौ विमाह कि समर सतावां —सू. प्र.
२ किसी वस्तु के दबती या झुकती रहने का गुण।
३ ग्रंग में झटका पड़ने से होने वाला दर्द या रोग।
क्रि. प्र.—ग्राणी, खाणी।
रू. भे.—लच, लचक्क

लचकणि-सं. स्त्री.—लचक या लचीलापन।

लचकणौ-वि. (स्त्री. लचकणी) लचकने या झुकने वाला।

लचकणौ, लचकबौ-क्रि. ग्र.—१ किसी लम्बे या कोमल पदार्थ के मध्य भाग का ग्रधिक बोझ के कारण झुकना या मुड़ना।
उ०—ग्राभा झल पट ग्रंगक चंदै चीरियां, दरियाई धुज देह धरै दग धीरियां। लटकण झोला लेहक बेसर बंकियां, भरिया भूसण भार क लचकै लंकियां। —र. हमीर
२ दबना, नीचे झुकना।
उ०—इंद्र ने चंद्र नागेंद्र चित चमकीया, धड़हड़यौ सेस नैं धरा धूजै। लचकि किचकिच करै पीठ कूरम तणी हलहलै मेरु दिगदंत कूजै। —पं. च. चौ.
३ स्त्रियों का चलते समय कोमलतावश कमर का थोड़ा झुकना जो सौन्दर्य सूचक होता है।
उ०—वाळि वाळि नै गांठ दीजै। इण भांतरी तूंजी हलका ज्यौ लचकती रतनाळा लोचना ग्रणिग्राळा काजळ सारीजै छै। —रा. सा. सं.
४ गति सील या स्थित पदार्थ या व्यक्ति का किसी दूसरी दिशा की ग्रोर उन्मुख या प्रवृत्त होना, मुड़ना।
उ०—मचकै हिंड मचोळता, लचकै झीणी लंक। तन दमकै दांमणिहि तिहि, मुखड़ौ जांण मयंक। —र. हमीर
५ किसी लचीले पदार्थ का वायु के संसर्ग से हिलना, लहलहाना।
उ०—गोरै कंचन गात पर, ग्रंगिया रंग ग्रनार। लेंगौं सोहै लचकतौ लहरचौ लफादार। —ग्रग्यात
लचकणहार, हारौ (हारी), लचकणियौ—वि.।
लचकिग्रोड़ौ, लचकियोड़ौ, लचक्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लचकीजणौ, लचकीजबौ—भाव वा.।
लचक्कणौ, लचक्कबौ, लचणौ, लचबौ—रू. भे.।

लचकांणौ-वि.—(स्त्री. लचकांणी) लज्जित, शर्मिन्दा।
उ०—१ तूं भीखणजी री निंदा करै है। जद ग्रोर वायां बोली: भीखण जी छै ए हीज। तीवा रै लचकांणी पड़ऐ घर में न्हास गई। —भि. द्र.
उ०—२ वांरै ढवतांई डोकरी राजाजी रै सांम्ही देखनै कैवण लागी - मन रा साच नै लुकावणौ, खुद भूठ बोलणौ ग्रर भूठा चाकर राखणा म्हांरी जांण में राजाजी री ग्रा खास इदकाई है। राजाजी लचकांणां होय ग्राख्यां नीची करली। —फुलवाड़ी
क्रि. प्र.—पड़णौ।
रू. भे.—लछकांणौ, लजकांणौ, लजखांणौ।

लचकाड़णौ, लचकाड़बौ—देखो 'लचकाणौ, लचकावौ' (रू. भे.)
लचकाड़णहार, हारौ (हारी), लचकाड़णियौ—वि०।
लचकाड़िग्रोड़ा, लचकाड़ियोड़ौ, लचकाड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।
लचकाड़ीजणौ, लचकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

लचकाड़ियोड़ौ—देखो 'लचकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लचकाड़ियोड़ी)

लचकाणौ, लचकाबौ-क्रि. स.—१ चलते समय स्त्रियों का नखरे से कमर को झुकाना।
उ०—कर मुख दे लचकाय कट, झमक चलै सुर झीण। मावड़ियौ महिला तणी, मारै रोज मलीण। —बां. दां.

२ किसी लम्बे या कोमल पदार्थ के मध्य भाग का अधिक वजन के कारण झुकाना ।

३ दवाना या नीचे झुकाना ।

लचकाणहार, हारौ (हारी), लचकाणियौ—वि. ।

लचकायोड़ौ—भू. का. कृ. ।

लचकाईजणौ, लचकाईजबौ—कर्म वा. ।

लचकाड़णौ, लचकाड़बौ, लचकावणौ, लचकावबौ, लचखांणौ लचखाबौ, लचाड़णौ, लचाड़बौ, लचाणौ, लचाबौ, लचावणौ लचावबौ—रू. भे. ।

लचकार-सं. स्त्री.—लचकने की क्रिया या भाव, झुकाव, लचन ।

उ०—वलोचणी ज्यूं लचकार करती थकी, इण भांतरी कमांणां उणहीज दरखतांरी साखां मूं नांगळजै छै । —रा. सा सं.

लचकावणौ, लचकावबौ—देखो 'लचकाणौ, लचकाबौ' (रू. भे.)

लचकावणहार, हारौ (हारी), लचकावणियौ—वि. ।

लचकाविग्रोड़ौ, लचकावियोड़ौ, लचकाव्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लचकावीजणौ, लचकावीजबौ - कर्म वा. ।

लचकावियोड़ौ--देखो 'लचकायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री लचकावियोड़ी)

लचकियोड़ौ-भू. का. कृ. (स्त्री. लचकियोड़ी) १ किसी लम्बे या कोमल पदार्थ का मध्य भाग अधिक बोझ के कारण झुका या मुड़ा हुआ. २ दवा हुआ या नीचे झुका हुआ. ३ स्त्रियों का चलते समय कोमलता वश कमर का थोड़ा झुका हुआ होना जो सौन्दर्य-सूचक होता है. ४ गतिशील या, स्थित पदार्थ या व्यक्ति का किसी दूसरी दिशा की ओर उन्मुख या प्रवृत्त हुवा हुआ, मुड़ा हुआ. ५ किसी लचीले पदार्थ का वायु के संसर्ग से हिला हुआ, लहलहाया हुआ ।

लचकीलौ-वि. [स्त्री. लचकीली] जो सहज ही में लचक या दब जाता हो, लचकदार ।

लचकौ-सं. पु.—१ लचकने की क्रिया या भाव ।

उ०—डाढाळी ग्रेक हाथी रै मुरचै री सांव में खग री खळकाई जको मुरचै री खालड़ी ग्रर मांस चीरनै हाड जाय रड़कियौ । हाथी लचकौ खाय धमीड़ करती धरत्यां ग्राय पड़्यौ । — फुलवाड़ी

२ लचकने के कारण होने वाली चोट या मोच ।

३ लौंदा ।

उ०—१ उठौ म्हारा मारू वना करोनी कलैवौ, फीणां तौ बाटयां वनड़ा लूंजी रौ लचकौ इसड़ौ कलैवौ थांरा माताजी करावै । —लो. गी.

उ०—२ वेटा-वेटी तौ लारै होणा ही हा, पण भंवरी तौ सगळां सूं लाडरौ लचकौ, गुणां रौ गाडौ सी पळती रैयी । —दसदोख

लचक्क—देखो 'लचक' (रू भे.)

उ०—घणां रग मैं घुमडी ग्रठी उमंडी मेहरी घटा, धरै रीत उलट्टी नेह री करै वंक । मो तचक्के हार कुच्चां उपट्टे देहरी सोभा, लचक्कां मचक्को झीणीं केहरी मौ लंक । —र. हमीर

लचक्कणौ, लचक्कबौ—देखो 'लचकणौ, लचकबौ. (रू. भे)

उ०—हय हिंदुनि हक्किय वीर किलक्किय मोर भभक्किय ग्रोर दहूं । सिर सेस लचक्किय भूमि भचक्किय, कोल मचक्किय दंत कहूं । —ला. रा.

लचक्कणहार, हारौ (हारी), लचक्कणियौ —वि. ।

लचक्किग्रोड़ौ, लचक्कियोड़ौ, लचक्क्योड़ौ —भू. का. कृ. ।

लचक्कीजणौ, लचक्कीजबौ – भाव वा. ।

लचक्कियोड़ौ—देखो 'लचकियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लचक्कियोडी)

लचखांणौ—देखो 'लचकाणौ (रू. भे.)

उ०—जद ग्रोर साध स्वांमीजी कानी देखनै हंसवा लागा । पछै साधां कह्यौ पूजनै पग सरकायौ । जद लचखांणो पड़्या ग्रनै पगां ग्राय लागा । —भि. द्र.

(स्त्री. लचखांणी)

लचणौ, लचबौ—देखो 'लचकणौ, लचकबौ, (रू. भे.)

उ० - १ लचै नाग रा सीस गज टलां तोपां लगै, हचै नह ग्ररी छक देख हवता । सचै मन पाथ रुगनाथ रा सीगळी, रचै कण सर ग्रसा जुध रवता । —मेघराज ग्राढौ

उ०—२ धूंमाळौ गाघरौ पहरीजै है, लहरियौ ग्रोढियां जिण मैं तन मन लहरीजै है । लंक जिका लचै है, तिण हूं कटि मेखला रचै है । —र. हमीर

लचपच-वि.—१ तरवतर ।

२ पिलपिला ।

रू. भे.—लिचपिच ।

लचपचौ-वि.—ग्रधिक द्रव्य पदार्थ वाला खाद्य पदार्थ ।

लचपच्च-क्रि. वि.—लपकती हुई, लपलपाती हुई ।

उ०—वाही रांण प्रतापसी वरछी लचपच्चांह । जांणक नागण नीसरी, मुंह भरियौ वच्चांह । —ग्रग्यात

रू. भे.—लचलचौ, लसपस, लिचपिचौ

लचरकौ-सं. पु.—हिलने, डोलने या झुलने की क्रिया या भाव ।

उ०—जिणांरी किलंगियां जिके लचरका लेतीसी, तिके जांणै पाछला नूं झाला देतीसी । —र. हमीर

लचलचौ-वि.—१ लचकने वाला, लचीला ।

२ देखो 'लचपचौ' (रू. भे.)

लचाकेदार-वि.—बढिया, उम्दा ।

लचाड़णौ, लचाड़वौ—देखो 'लचकाणौ, लचकावौ' (रू. भे.)

लचाड़ियोड़ौ—देखो 'लचकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लचाड़ियोडी)

लचाणौ, लचावौ—देखो 'लचकाणौ, लचकावौ' (रू. भे.)

लचाणहार, हारौ (हारी). लचाणियौ —वि० ।

लचायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लचाईजणौ, लचाईजवौ—कर्म वा० ।

लचायोड़ौ – देखो 'लचकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लचायोड़ी)

लचावणौ. लचाववौ —देखो 'लचकाणौ, लचकावौ' (रू भे)

उ०—तीजणियां हीडा मचावै है, लंक लचावै है। वीज री सिळाव, नै मेह री मिळाव । मही फुहारां वरस रही है, तीजण्यां ही इण भांत दरस रही है । —र. हमीर

लचावणहार, हारौ (हारी), लचावणियौ —वि० ।

लचाविग्रोड़ौ, लचावियोड़ौ, लचाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लचावीजणौ, लचावीजवौ —कर्म वा० ।

लचावियोड़ौ—देखो 'लचकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री लचावियोड़ी)

लचोळौ-सं. पु.—लचकने की क्रिया या भाव, लचक ।

उ०—लोभांणी नवोढ़ नेह नसा रा कचोळा लेती, भासै अंग अचोळ सचोळा लेती भाव । करां मक्रकेत रै लचोळा लेती तूंजी कनां, नक्र रै मचोळां सूं हचोळा लेती नाव । —र. हमीर

लच्चर-क्रि. वि.—दीपक के बुझने की क्रिया या अवस्था ।

उ०—तेल जळै तौ जळती है वाती, दिवरा झलमल सीय रांम । जल गया तेल र बुझ गई वाती, लच्चर लच्चर होय रांम । —मीरां

लच्छ—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

२ देखो 'लक्ष' (रू. भे.)

३ देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

४ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

५ देखो 'लक्ष्य' (रू. भे.)

लच्छण—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

उ०—१ वरणी उपमा सार, विचारि विचच्छणां । लियां सही अवतार, वतीसां लच्छणां । —बां. दा.

उ०—२ श्रै भांवियांरा लच्छण है, ईसर री गवर व्है ज्यूं बण-ठण 'र मटका करती फिरै है । —रातवासौ

२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

लच्छणौ —देखो 'लक्षणौ' (रू. भे.)

उ०—स्वस्ति स्री 'चंद्रगढ' सुभ स्थांन अनेक ओपमा लाइक आज-मांन प्यारी सजीली फवीली छवीली नसीली रसीली चकीली ककीली अंगीली रंगीली वंकीली रंकीली रमकीली समकीली चट-कीली जीव री जड़ी लगन री लड़ी वत्तीस लच्छणी चौसठ कला विचच्छिणी केलरस क्यारी प्रीतम प्रांणप्यारी जोगि सरदै री ताजीम । —र. हमीर

(स्त्री. लच्छणी)

लच्छन—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

लच्छमण-वि.—१ धनवान, अमीर (डिं. को.)

२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

लच्छमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

लच्छि – देखो 'लच्छी' (रू.भे.)

उ० — १ असरणसरण अभंग, ब्रह्म मुरारी सवंगह । सक्कर पवन सकत्ति, अवनि ध्रम लच्छि अनंगह । —ह. र.

उ०—२ वडै रूप वाही जकै लच्छि वीजी, त्रियह लोक मांही न को नार तीजी । सुणै वात मारीच थांनं सिधाए, उभै देत मांमो सु भांणेज आए । —सू. प्र.

२ देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

लच्छिनाथ—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

लच्छिनिवास—देखो 'लक्ष्मीनिवास' (रू. भे)

लच्छिभरतार, लच्छिभ्रतार —देखो 'लक्ष्मीभरतार' (रू. भे.)

उ०—रत्ता तौ नांम जिकै रहमांन, जिकै नंह थायै आवाजांण। भणै गुण तोरा लच्छिभ्रतार, लगै नंहं त्या तन पाप लगार । —ह. र.

लच्छिवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—मुख मंद हास आणंदमय, आराधित अहि नर अमर । दडव्रत तूझ मारण दयत, वारण तारण लच्छिवर । —सू. प्र.

लच्छी—१ सूत, रेशम, ऊन आदि की लिपटी हुई गुच्छी ।

उ०—१ पेट ज लच्छी पाट की, नितंब नारियल जांण । मदनां-कुस की जायगा, त्रिवली सीप समांण ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ अधरां रा खरूंट परसै है, दिल रो मोह चौड़ै दरसै है । प्रीतम रा लपेटा री पाट लच्छी वार वार माथै घरै है, नै चूंगन

करै है । छाती ही चिपावै है, खिण खिण में देखै है न खिण में छिपावै है । —र. हमीर

रू. भे.—लच्छि, लछी

२ देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—१ ले लच्छी मरहट्टरी, गूजर खंड अधीस । आय महालच्छी चरण, सीँग नमायौ सीस । —बां. दा.

उ०—२ लच्छी रिद्धी बुद्धी, सजा विद्या खंम्या । लहदेवी गौरी धात्री कवि स चूरण छाया । —र ज. प्र.

लच्छीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

लच्छीवाळापूत—सं. पु.—घोड़ा, अश्व (डि. को.)

लच्छेदार—वि,—१ गुच्छोंवाला ।

२ रुचिकर, मजेदार ।

लच्छौ—देखो 'लछौ' (रू. भे.)

उ०—अबे जलाल बूबना सूं सीख कीवी । तरै झरोखा सूं रैंमस रा लच्छां सू उतरियो । —जलाल बूबना री वात

लछ—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

२ देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—१ हुवै आव दुरवार घर वार घुमै हसत, च्यार परकार लछ मळै चाहै । जग दीयौ भला करतार चारण जनम, मान माहाराज री वार माहै । —सगरांम सांदू

उ०—२ सिघ वुध तिय लछ लाभ सुत, गवरी पुत्र गणेस । महारूप मंगळ करण, समरै सुर नर सेस । —गजउद्धार

३ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.) (अ. मा.)

४ देखो 'लक्ष' (रू. भे.)

५ देखो 'लक्ष्य' (रू. भे.)

लछकांणौ—देखो 'लचकांणौ' (रू. भे.)

—उ०—सेँठौ कीधौ सायधण, म्यारो मेहला मांय । लछकांणौ पड़ियौ 'लचौ' कारी लगी न काय । —मयारांम दरजी री वात

(स्त्री. लछकांणी)

लछण—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

उ०—१ वाक्य दोस प्रतिकूल वरण वद, प्रगट वरण जिण रस प्रतकूल । सुध लछण मति अरुच हुऐं सुण, मति विरुध रस व्रतहत मूळ । —बां. दा.

उ०—२ पतिव्रता नेह अपार, सझि सोळ सरस सिंगार । वह कळा लछण वत्तीस, सझि आभरण खट तीस । —सू. प्र.

२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

लछणहीन—देखो 'लक्षणहीन' (रू. भे.)

उ०—जियां ही संग जातां में सुनार लछणहीण अर वेविसवासी गिण्यौ जावै है । —दसदोख

लछन—१ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

२ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

लछवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—१ वड़ा भाग ज्यांरी विसू, लछवर चरणां लाग । पाव गांम गुण प्रीतसूं, आठ पहर अनुराग । —र. ज. प्र.

लछमण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.) (अ. मा., ना. मा.)

उ०—१ तदि नृप पग वंदि मुनि तणा, क्रोधज छिमा कराय । साथ दिया लछमण सहित, रछ्या कज रघुराय । —सू. प्र.

उ०—२ अधपत वाळौ अंस, पड़ियौ अपछर पेट में । तद लछमण अवतंस, रतन कवर पावू रह्यौ । —पा. प्र.

लछमणझूलौ—सं. पु.—हृषिकेश के आगे बद्रीनारायण के मार्ग में आने वाला एक पुल, जो तीर्थ स्थान माना जाता है ।

लछमणसाही—सं. पु.—बांसवाड़ा राज्य का सिक्का विशेष ।

लछमन—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे)

लछमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—गढ सें तो मीरांबाई ऊतरधाजी, हाथ मगद को थाळ । औरा के तो अनगन लछमी आप फिरो कंगाल । —मीरा

लछमीकंत, लछमीकांत—देखो 'लक्ष्मीकांत' (रू. भे)

उ०—सेस आरवळ कोय न जांणै, जाको आदि न अंत । महा प्रळै व्है जात हि सज्या, पौढै लछमीकंता । —रुकमणि मंगळ

लछमीधर—देखो 'लक्ष्मीधर' (रू. भे)

लछमीपत, लछमीपति, लछमीपती—देखो 'लक्ष्मीपति' (रू. भे.)

उ० लछमीपत रै कर वसै पाच अंक परवांण । पहलौ आखर छोडकर, दीजै चतर सुजाण । —अज्ञात

लछमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—लछमीवर बाहर करो, ढील न कीजै जांण । आवौ एक उसास में, तुम्है भगत की आण । —गजउद्धार

लछमीवाळ—सं. पु. यौ. [सं. लक्ष्मी+सं. आलुच] धनवान, अमीर । (डि. को.)

लछमीस—देखो 'लक्ष्मीस' (रू. भे)

लछम्मण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

लछवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—लछवर धनंख साथ तेज निज हर लिया । रद कर मद दुजरांम अवधपुर आविया । —र. ज. प्र.

लछवि, लछवी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

लछि—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

देखो 'लछी' (रू. भे.)

लछिपति—देखो 'लक्ष्मीपति' (रू. भे.)

उ०—'जगरूप' सधू जगनाथ-कुळ, पदमणि किरि सूरज प्रभा। वनीतो कुलीण कुरम वडी, परम लछिपती वल्लभा। —गु. रू. वं.

लछिवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

लछिभरतार—देखो 'लक्ष्मीभरतार' (रू. भे.)

उ०—करतार लछिभरतार कांन्हउ केसवं, जगदिस जैत जुरार ओपम जादवं। महारांण वाघण रांण मारण रांमणं, निरकारि ध्याइ अनाथ नाथ निरंजण। —पि. प्र.

लछिमन—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०—घट ही में गंगा घट ही में जमना, घट घट है अविनासी। घट ही में पुसकर अो लोधेस्वर, लछिमन कुंवर विलासी। —मीरां

लछी—१ देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—१ लछी रा चहन घण वीज वाळी लपट। क्रोध ममता नता मूढ तज रै कपट। —र. ज. प्र.

उ०—२ लछी रूप सीता प्रभू रांम लीला, कवीपुत्र दाखै नही जेण कीला। अगै वालमीकां जिसा गाय आया, गुणां तास सपेखि अदोख गाया। —सू. प्र.

२ देखो 'लच्छी' (रू. भे.)

लछीधर-सं. पु.—१ बारह अक्षर का वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ४ रगण होते है।

२ देखो 'लक्ष्मीधर' (रू. भे.)

लछीनाथ—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

उ०—महाराज अोधेस आधार संतां, वार खारी रखै लाज वेखो। हरी काज पै आसरा दीह हेकै, लछीनाथ दी सेवगां लक लेखो। —र. ज. प्र.

लछीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—वेल तू जिकां वेली लछीवर, हुअो अधिराज घर जिकां हाणी। निरखतां 'मान' नंद तूझ क्रांमत नखत, न्रप जगतपत न्रपत गत हेक जांणी —जादूरांम जी आढो

लछीभरतार—देखो 'लक्ष्मीभरतार' (रू. भे.)

लछीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—नमो रघुनाथ, सधीर सनाथ। गणां गजगाह, दसांनन दाह। भभीखण आय, सु आस्रय पाय। द्रवी जिण रक, लछीवर लंक। —र. ज. प्र.

लछीवांन—देखो 'लक्ष्मीवांन' (रू. भे.)

उ०—तरै आप पागड़ो छांडियो। ईस्रांनू वौहत लछीवांन देख नै भ्रमिस्रो। तरै सारा ही आय मिळिया। —कल्यांणसिंघ वाढेल री वात

लछीस—देखो 'लक्ष्मीस' (रू. भे.)

उ०—सुणि सुरां अरज बोलै लछीस, आदू यो सेवग अवधि ईस। रीझियो अहं दसरत्थ राय, अवतार धरूं इण ग्रेह आय। —सू. प्र.

२ श्रीरामचन्द्र।

उ०—वेढक फरसधर विकराळ बंक अवंक गा, सुज जिण कीधा रांम नरेस सुयसरांकसा। लहरे हेक दीधी लछीस थांनक लंकसा। सुज पय नमै अविरळ सीस सुरप असंक गा। —र. ज. प्र.

३ धनवान व्यक्ति।

लछो-सं. पु.—१ रंगीन रेसम की डोरियों का गुंथा हुआ मोटा रस्सा विशेष।

उ०—सठ सनेह जीरण वसन, जतन करंतां जाय। सजन प्रीत रेसम लछा, घुळत घुळत घुळ जाय। —अग्यात

२ किसी उबाले हुए या पकाए खाद्य पदार्थ के बारीक रेशे।

३ चांदी के तार का बना स्त्री के पैर का आभूषण।

४ हाथ में एक साथ एक जैसी पहने जाने वाली चूड़ियों का समूह।

५ हाथी की गर्दन के चारों ओर शोभा के लिए बांधा जाने वाला रंगीन रस्सा विशेष।

लज—देखो 'लज्जा' (रू. भे.)

उ० १ बतीस लखण चोसठ कळा, आवेरी उत्तम सहज। कूरंम संपेखै मुख कमळ, सरद इन्द्र पार्वत लज। —गु. रू. वं.

उ०—२ मचे वेढ विकराल जरमन इंगल मारकां, पड़ै खग धारकां पीठ प्राझी। पजावण फारका पीठ नदण पर्तौ, सारकां गढां लज घीठ साझी। —किशोरदांन बारहठ

लजकांणी, लजखांणी—देखो लचकांणी' (रू. भे.)

उ०—१ सू हमैं जांण अजांण होवै है, सहेलियां हो चालै लागी तिरछी निजर कंवर हमीर नूं जोवै है। सू हमैं चमक चवदंत हुय लजकांणी पडगइ, जांणै अंगमाहीज वड़गई। —र. हमीर

उ०—२ मोवन लजखांणो हो र वोलियो-काका ! मनै कूड़ ऊपर चंडाळी घणी चढै 'कूड़े-री काळो मूंडो' र लीला पग। —वरसगांठ

(स्त्री लजकांणी, लजखांणी)

लजणी-सं स्त्री.—लाजाळू का पौधा।

लजणो, लजवौ—देखो 'लाजणौ' लाजवौ' (रू. भे.)

उ०—१ घरा सार धजै, लोह होळी लजै। ताप वीर तजै, ईस रस ऊपजै। —रा. रू.

उ०—२ यो सिसपाल् चंदेरी को राजा, कूड़ी साख भरैगो। मीरां कहे यूं रुकमणि कहत हैं, थांको ही बिड़द लजैगो। —मीरां

लजणहार, हारौ (हारी), लजणियौ—वि०।
लजिग्रोड़ौ, लजियोड़ौ, लज्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लजीजणौ, लजीजवौ—भाव वा०।

लजदार-सं, पु.—१ जिसमें कुछ लज्जा हो, शर्मिला।
उ०—घड़च घाड़ायतां भोग मगरा धनौ, कळह सवळां खळां हूंत राखरा कनौ। वनी लजदार घर सथर प्रतपौ वनौ, पतव्रता नार भरतार रमीयौ पनौ। —महादांन महड़ू

लजरख-वि. [सं. लज+रख] इज्जत या लज्जा रखने वाला। (अ. मा.)
सं. पु.—वस्त्र।

लजराह-सं. पु. यौ. [सं, लज्+राह] लज्जा का मार्ग।
उ०—सू मजेज खगि सभि जेज जुधि काज न रक्खी। सूर सगाह सिपाह ताहि लजराह सु दक्खी। रा. रू.

लजवाळौ-वि०—(स्त्री. लजवाळी) लज्जा वाला, लज्जाशील।

लजाड़णौ, लजाड़वौ—देखो 'लजाणौ, लजावौ' (रू. भे.)
लजाड़णहार, हारौ (हारी), लजाड़णियौ—वि०।
लजाड़िग्रोड़ौ, लजाड़ियोड़ौ, लजाड़्योड़ौ—भू का. कृ.।
लजाड़ीजणौ, लजाड़ीजवौ—कर्म वा।

लजाड़ियोड़ौ—देखो 'लजायोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री. लजाड़ियोड़ी)

लजाणौ-वि० (स्त्री लजाणी) लज्जित करने वाला।
उ०—१ सहणी सबरी हूं सखी, दो उर उल्टी दाह। दूध लजाणौ पूत सम, वलय लजाणौ नाह —वी. स.
रू भे.—लजावणौ।

लजाणौ, लजावौ-क्रि. स.—१ लज्जित करना, शर्मिंदा करना।
उ०—१ ग्रां हाथां लेय वापड़ा ग्वीलां नै ई लजाया। —फुलवाड़ी
उ०—२ पछै मोतीरामजी चौधरी कह्यो—उठौ परहौ म्हानै लजावौ। —भिक्खु
लजाणहार, हारौ (हारी), लजाणियौ—वि.।
लजायोड़ौ—भू. का. कृ।
लजाईजणौ, लजाईजवौ - कर्म वा.।
लजाड़णौ, लजाड़वौ, लजावणौ, लजाववौ लज्जाड़णौ, लज्जाड़वौ, लज्जाणौ, लज्जावौ लज्जावणौ, लज्जाववौ—रू. भे.

लजाथंभ- वि. यौ. [स. लज्जा+स्तम्भ] इज्जत, लज्जा का रखवाला, रक्षक।
उ०—'जसौ' हालियो ग्रागरा हूंत ज्यारां, लियां साहरा उंवरा सव्व लारां। कमंधां वडां कूरमां साथ कीवां, लजाथंभ सीसोदियां लाथि लीवां। —र. वचनिका

लजाधुर वि. [सं. लज्जा+धुर] लज्जावांन, शर्मिला।

लजायोड़ौ-भू. का. कृ.—लज्जित किया हुग्रा, शर्मिंदा किया हुग्रा।
(स्त्री लजायोड़ी)

लजाळु, लजाळू-वि. [सं. लज्जालु:] लज्जा वाला, लज्जाशील, शर्मिला।
उ०—इतरी फिकर क्यूं करै छै। थारी किसी क ग्रवार तो मोकळी फिरै छै। तूं तो छै जनम की ही लजाळू। —पनां
स. पु.—एक प्रकार का पौवा विशेष जिसके पत्ते छौंकर या खैर के समान होते हैं, फूल गुलाबी मिश्रित नीले रंग के होते हैं ग्रौर जड़ लाल होती है। इसे छूने से यह सिकुड़ जाती है ग्रौर फिर फैल जाती है। यह कांटेदार ग्रौर विना कांटेदार दो तरह की होती है। इसे छुईमुई भी कहते हैं।
उ०—सारी हेक सरीसियां, तोलै हैक तुलेह। पात लजाळू री परौ, लागां हाथ लुळेह। —र. हमीर
रू. भे. लज्जाळु, लज्जाळू, लाजलज्जाळू लाजाळू।

लजालूपण, लजालूपणौ-सं. पु.—लज्जा रखने का भाव, लज्जा शर्म।
उ०—हमै इतरै लिखमीक्रम ग्रायौ। सू रतनां घणी उरामणी रहै। पिरा लजालूपणां मैं पडदौ वहै। —र. हमीर

लजावंत—देखो 'लज्जावत' (रू. भे.)
(स्त्री. लजावती)

लजावंती-वि. स्त्री—१ लज्जाशील, शर्मीली।
२ देखो 'लजाळू'
रू. भे.—लाजवती, लाजवती
रू. भे.—लाजवत

लजावण, लजावणौ—देखो 'लजाणौ' (रू. भे.)

लजावणौ, लजाववौ—१ देखो 'लजाणौ, लजावौ' (रू. भे.)
उ०—१ हातां री सुकमारता जांणै कमळ नाळ। जिका हालती लजावै हंस री गत नूं। र. हमीर
उ०—२ हइ रे जीव निळज्ज तूं निकस्यू जात न तोहि। प्रिय बिछुड़त निकस्यऊ नहीं, रह्यउ लजावण मोहि। —ढो. मा.
२ देखो 'लाजणौ, लाजवौ' (रू. भे.)
लजावणहार, हारौ (हारी), लजावणियौ—वि।
लजाविग्रोड़ौ, लजावियोड़ौ, लजाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लजावीजणौ, लजावीजवौ—कर्म वा.।

लजावियोड़ौ—देखो 'लजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लजावियोड़ी)

लजियोड़ौ—देखो 'लाजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लजियोड़ी)

लजीज–वि. [अ.] बढिया स्वाद वाला, स्वादिष्ट।

लजीलौ–वि.— (स्त्री. लजीली) १ लज्जावाला, शर्मिला।

उ०—१ रंग लजीलां लोयणां, वाह छिवि गुंघट ओट। रूकै न भीणां चीर मैं, चखू तिरछी चोट। —पनां

उ०—२ स्वास्ति स्री 'चंद्रगढ' सुभ स्थांन अनेक ओपमा लाइक आजमांन प्यारी सजीली लजीली फबीली छबीली नसीली रसीली चकीली ककीली अंगीली रंगीली वंकीली······।— र. हमीर

लज्ज—देखो 'लाज' (रू. भे.)

ऊ०—१ किणि गळि घालूं घूघरा, किणि मुख वाहूं लज्ज। कवण भलेरउ करहलउ, मूंघ मिळावइ अज्ज। —ढो. मा.

उ०—२ सकती वांवे वीटुळी, ढीली मेल्हे लज्ज। सरढी पेट न लेटियउ, मूंव न मेळउं अज्ज। —ढो. मा.

उ०—३ चंदहरा विय चंद सम, दुंद वधारण कज्ज। वाधे दिन दिन सांम छळ, आराधे कुळ लज्ज। —रा. रू.

उ०—४ चुतरौ फतमल बोलिया, सकतीपुरा सकज्ज। लज्ज न धारै सांम छळ, त्यां रजवट्ट न लज्ज। —रा. रू.

लज्जणौ, लज्जबौ—देखो 'लाजणौ, लाजबौ' (रू. भे.)

उ०—भीम कहै भूलूं नहीं, खेलैवौ खत्र-घोड। मो भग्गै सीसोद हर, गढ लज्जै चीतोड। —गु. रू. बं.

लज्जत–सं. स्त्री. [अ.] १ खाने-पीने की वस्तुओं का स्वाद, जायका।
२ आनन्द।

लज्जतदार–वि. [अ. लज्जत+फा. दार] १ जिसमें लज्जत हो, लज्जत वाला, जायकेदार।
२ आनन्ददायक।

लज्जा—१ चौवीस गुरु ९ लघु का एक मात्रिक छन्द (गाथा)
२ देखो 'लाज' (रू. भे.)

उ०—१ वांह चंदन सुगम सेव्वइ, भाव संचारिक ववइ। तेत्रीस ध्रति मति स्मरण लज्जा, सोक निद्रादिक सघइ। —वि. कु.

उ०—२ अर अल्पधन भुजंग नायक रै समांन लज्जा पाय प्रांमार री समुह नाक रूप विदेश मैं थियौ जूवौ। —वं. भा.

पर्याय—व्रीड़ा, त्तपा, सकुचण, संकोच।

लज्जाड़णौ, लज्जाड़बौ—देखो 'लजाणौ, लजावौ' (रू. भे.)

लज्जाड़ियोड़ौ—देखो 'लजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लज्जाड़ियोड़ी)

लज्जाणौ, लज्जावौ—१ देखो 'लजाणौ, लजावौ' (रू. भे.)
२ देखो 'लाजणौ, लाजबौ' (रू. भे.)
लज्जाणहार, हारौ (हारी), लज्जाणियौ—वि०।
लज्जायोड़ौ—भू० का० कृ०।
लज्जाईजणौ, लज्जाईजबौ—कर्म वा०।

लज्जायोड़ौ—देखो 'लजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लज्जायोड़ी)

लज्जाप्रद–वि. [सं.] जिससे लज्जा उत्पन्न हो, लज्जाजनक।

लज्जाळु, लज्जाळू—देखो 'लजाळू' (रू. भे.)

लज्जावंत–वि. [सं. लज्जा+वत्] (स्त्री. लज्जावती) १ लज्जा वाला, शर्मिला।

उ०—लज्जावंत नरिंद कहै वाई ! सुणौ म्हारा लाल। —श्रीपाल रास

रू. भे.—लजावंत

लज्जावणौ, लज्जावबौ—१ देखो 'लजाणौ, लजावौ' (रू. भे.)

उ०—निज सीस नमै जळ निगमें, पुणै सीस वीआपरौ। लघु तूळ हुए लज्जावियौ, नांम सिंघ सादूळ रौ। —गु. रू. बं.
२ देखो 'लाजणौ लाजबौ' (रू. भे.)
लज्जावणहार, हारौ (हारी), लज्जावणियौ—वि०।
लज्जाविओड़ौ, लज्जावियोड़ौ, लज्जाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लज्जावीजणौ, लज्जावीजबौ—कर्म वा०।

लज्जावती–वि.—लज्जाशील, शर्मीली।

लज्जावांन–वि.—लज्जा वाला, शर्मदार।

लज्जावियोड़ौ—देखो 'लजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लज्जावियोड़ी)

लज्जासील–वि.—लज्जा वाला, शर्मीला।

लज्जू–वि.—लज्जा वाला, इज्जतवाला।

लज्ज्या, लज्या—देखो 'लाज' (रू. भे.)

उ०—१ सिधि गुलिक वेग पर सक्ति पाव। धजराज मुकट खगराज घाव। वसि लोह वदन रसि सरस वेख। लज्ज्या अजाद किरि महण लेख। —रा. रू.

उ०—२ इण विध 'रतनां' लाज में लवलीन होय नै वचन साथणियां हूं कहै है, बाभी मनै भंभोड़ी मत महारी सेज लज्ज्या छाडण री दुख सहै है। —र. हमीर

लभिका–सं. स्त्री.—१ वैश्या, गनिका। (अ. भा.)
२ विपरीत लक्षणा से निर्लज्ज।

लट–सं. स्त्री. [सं. लट्वा] १ नीचे लटकता हुआ सिर के कुछ वालों का समुह, अलक, जुल्फ।

उ०—सांकड़ै मारगियै सरमाय, घूंघटै ओळूंड़ी अटकाय। गई धण सरवरियै री तीर, भुकी भट काळी लट छिटकाय। —सांभ
२ सिर के उलझे हुए वालों का गुच्छा।

३ रेंगने वाला एक लम्बा कीड़ा ।

उ०—टीडी रो मुदाम जतन चिड़कोल्यां चोळी । लटां-सूंट रैवास, घास- फूंसा रो झोळी । —दस देव

वि.—१ दुर्बल काय, कृशकाय ।

२ देखो 'लठ' (रू. भे.)

३ देखो 'लट्टौ' (मह. रू. भे.) (अ. मा)

रू. भे.—लटी, लट्ट ।

लटक, लटकउ–सं. पु..—१ लटकने की क्रिया या भाव, झुकाव ।

२ शरीर के अंगों की लुभावनी गति या चेष्टा ।

३ बात करते या गाते समय दीखने वाले अंगों की कोमल भाव-भंगिमा ।

अल्पा.,—लटकौ

लटकजुहार–सं. स्त्री.—अभिवादन, प्रणाम ।

उ०—वाड़ै तौ पड़ियौ जाया गाडूली, खूंटचां धोळां रा जोत । वीरो तौ आयौ सैयां कांकड़ै, गोरीड़ा सूं लटकजुहार । —लो. गी.

लटकण–सं. पु —१ लटकने की क्रिया या भाव ।

२ लटकती हुई वस्तु ।

३ मंदिर में लटकाया या किसी पशु के गले में बांधे जाने वाले घंटे के अन्दर बीच में लटकने वाला धातु का गुटका, लगर या लोलक ।

वि. वि.—मि. लाळ ।

४ लुभावनी चाल ।

५ नाक में पहना जाने वाला आभूषण विशेष ।

उ०—१ लोयण जिणरा लागणा, पलकां विच पळकेह । लटकण रा मोती लियां, ढीली नथ ढळकेह । —र. हमीर

उ०—२ तिण लटकण रा मोती नूं झोका दीजै है, अधरां री झांई सूं मूंगियां रो रंग कीजै है । जो कदंच मोती री झांई अधर धरै है, तो पिण वीड़ी रो चूनो लागौ जांण पूंछवा री करै है । —र. हमीर

उ०—३ आभा झल पट अंग क चंदै चीरियां, दरियाई धुज देह धरै डग धीरियां । लटकण झोला लेह क वेसर वंकियां, भरिया भुखण भार क लचकै लंकियां । —र. हमीर

६ कान में पहना जाने वाला आभूषण जो लटकता रहता है ।

७ सिंदूर पुष्पी नामक क्षुप विशेष ।

रू. भे.—लटकन ।

लटकणौ, लटकबौ–क्रि. अ. [सं. लडन] १ किसी पदार्थ या व्यक्ति का ऐसी अवस्था में होना कि उसका एक सिरा ऊपर लगा या अटका हुआ हो तथा दूसरा अधर में झूलता हो ।

उ०—ज्यांरा लटकदार लपेटा पर छोगा लटक रह्या है, अलबलिया आंटां में अगानैणियां रा चीत अटक रह्या है । तुररां रा तार पळकै है, पाघां रा लटपटिया पेच खवां पर लटकै है । —र. हमीर

२ झुकना ।

उ०—१ परम गुरू के सरणै जाऊं, करूं प्रणांम सिर लटकी । जेठ बहू की कांण न मानूं, पड़ो घूंघट पर पटकी । —मीरां

उ०—२ नीची धूंण करियां दोनूं जणां रथ सूं हेटै उतरिया नौ वांरै कांनां डोकरी री आवाज सुणीजी—आज दोनां रा माथा लटकियोड़ा कीकर है । —फुलवाड़ी

३ किसी बात या विषय में निर्णय या अभीष्ट सिद्धि के अभाव में दुविधा में पड़ना ।

४ वंचित होना ।

लटकणहार, हारौ (हारी), लटकणियौ—वि० ।

लटकिओड़ौ, लटकियोड़ौ, लटक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लटकीजणौ, लटकीजबौ—भाव वा० ।

लटक्कणौ, लटक्कबौ—रू० भे० ।

लटकदार–वि.—१ लटक युक्त, लटकपूर्ण ।

उ०—ज्यांरां लटकदार लपेटा पर छोगा लटक रह्या है, अलबलिया आंटां में अगानैणियां रा चीत अटक रह्या है । —र. हमीर

वि. वि.—देखो 'लटक'

लटकन—देखो 'लटकण' (रू. भे.)

लटकाड़णौ, लटकाड़बौ—देखो 'लटकाणौ, लटकावौ (रू. भे.)

लटकाड़णहार, हारौ (हारी), लटकाड़णियौ—वि० ।

लटकाड़िओड़ौ, लटकाड़ियोड़ौ, लटकाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लटकाड़ीजणौ, लटकाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

लटकाड़ियोड़ौ—देखो 'लटकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लटकाड़ियोड़ी)

लटकाणौ, लटकावौ–क्रि. स.—१ किसी वस्तु या व्यक्ति को ऐसी स्थिति में करना कि उसका एक छोर ऊपर किसी से लगा (टंगा) हो और अधर झूलता हो, झुलाना, टांगना ।

उ०—किरचा फांक्यांरी कोथली, वीड़ी-सिगरेटां री डबी अर वेटरी, वाजांरी पेटी रासभियां रै पेटां माथै लटकायां खोड़ में विसायत खानौ सो विसायां फिरै है । —दसदोख

२ झुकाना ।

३ किसी कार्य के पूर्ण करने में विलम्ब कराना, इंतजार कराना ।

४ वंचित रखना ।

लटकाणहार, हारौ (हारी), लटकाणियौ—वि० ।

लटकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लटकाईजणो, लटकाईजबो—कर्म वा० ।

लटकाड़णो, लटकाड़बो, लटकावणो, लटकावबो—रू० भे० ।

लटकायोड़ो—भू. का. कृ.—१ किसी वस्तु या व्यक्ति को ऐसी स्थिति में किया हुआ कि उसका एक छोर तो कहीं लगा (टंगा) हो और दूसरा नीचे की ओर अधर झूलता हो, झुलाया हुआ, टांगा हुआ. २ झुकाया हुआ. ३ किसी कार्य के पूर्ण करने में देर किया हुआ. ४ वंचित रखा हुआ.
(स्त्री. लटकायोड़ी)

लटकाळ, लटकाळू, लटकाळो, लटकालो—वि. (स्त्री. लटकाळी, लटकाली) १ लटकता हुआ, लटकने वाला ।
उ०—वैगव बीजगियां वंधण विगताळ लट्के घोतां रा खूंजा लटकाळू । राती कांनी री पोतड़ियां रूड़ी, ऊनी लोवड़ियां बगलां में ऊडी । —ऊ का.
२ सुन्दर
उ०—१ वांह विहु लटकाळी अति ओपै लूंब झुंबाली हो । रूड़ी नै रलियाली हीणी कर चंपक डाली हो । —वि. कु.
उ०—२ भलो वण्यो मुखड़ा नउ मटको, आंखड़ली अणियाली । लटकालो साहिब देखी नई, तो सुं लागी ताली रे —वि. कु.

लटकावणो, लटकावबो—देखो 'लटकाणो, लटकावो' (रू. भे)

लटकावणहार, हारो (हारी), लटकावणियो – वि० ।
लटकाविओड़ो, लटकावियोड़ो, लटकाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
लटकावीजणो, लटकावीजबो—कर्म वा० ।

लटकावियोड़ो– देखो 'लटकायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. लटकावियोड़ी)

लटकियोडो—भू. का. कृ.—१ कोई पदार्थ या व्यक्ति ऐसी अवस्था में हुवा हुआ कि उसका एक सिरा ऊपर लगा (टंगा) हो तथा दूसरा अधर में झूलता हो. २ झुका हुआ. ३ किसी बात या विषय में, निर्णय या अभीष्ट सिद्धि के अभाव में दुविधा में पड़ा हुआ. ४ परीक्षा में असफल हुवा हुआ. ५ वंचित हुवा हुआ ।
(स्त्री. लटकियोड़ी)

लटकीलो—वि. (स्त्री. लटकीली) १ वह जिसकी चाल में लटक हो, नखरे वाला ।
२ सुन्दर, मनोहर ।

लटको—सं. पु.—१ गति या चाल में पाई जाने वाली स्वाभाविक लचक ।
२ झुकने की क्रिया या भाव, सलाम, अभिवादन ।
उ०—१ खिजमतदार दोइ च्यार पासै छै । जाहरां ईयो दीठो राजा ऊभो, ताहरां आडनै लटको कियो ।
—स्यांमसुंदर री बात
उ०—२ एतलै हाट री धणी आयो । पेडी नें नमस्कार करी थोड़ो लटको साधां नेंई कियो । —भि. द्र.
उ०—३ अकवर गरब न आंण, हींदू सह चाकर हुवा । दीठो कोई दीवांण, करतो लटका कटहड़े । —दुरसो आढो
क्रि. प्र.—करणो
३ अंगों के संचालन द्वारा किया गया संकेत या अभिव्यक्ति ।
उ०—१ डोकरी घांटी रा लटका करतै नांई री कूंटियां काढती बोली—मांनो, थां लोगां री मरजी आवै ज्यूं अेक दूजा री वात मांनो । —फुलवाड़ी
उ०—२ जठै कग नीकळै जठै कर ही लोग हाथ जोड़-जोड़ अर रांम-रांम करै । कई रांम-रांम रै सागै, काका, बावां रो संबोधन ही लगावै । मालारांम ही पाछो उथलो संबोधन लगा'र देवै । केवै रांम-रांम भाई । नस रै लटकै रो ठाट-बाट घणो सुवावणो लागै ।
—दसदोख
४ नखरा, चोंचला ।
उ०—१ पटको दै दोढो पलो, अटको चित उळझाय । करि लटको आवै कनै, झटको सो वहि जाय । —र. हमीर
उ०—२ करि लटको ऊभी कनै, आ छंदगारी आय । केसर नीरै खरक नै, कहो चर जांणै काय । —र. हमीर
५ बात चीत में पाया जाने वाला स्वरों का विशेष उतार-चढाव ।
ज्यूं— बात रो लटको ई न्यारो है ।
६ हल्की नींद, झपकी ।
उ०—१ चौको उठाय पड़ी पिलंग पर पड़ती नै लटको आयो मेरा स्यांम, लटको आयो जी लटको आयो जी स्यांम जगायो क्यूं नीं जी लटको आयो । —लो. गी.
उ०—२ दासी न झेलै जंवाई म्हारो बांदी न झेलै । वे तो झेलै जी वाई राजकंवार रो लटको आवतो जी । —लो. गी.
८ केलि, क्रीड़ा ।
उ०—ए यौवन ना दिन च्यार, लटको छै इण संसार, कालांतर नि भलीवार । —वि. कु.
९ संगीत की ध्वनि से शरीरांगों पर होने वाली प्रतिक्रिया ।
१० मंत्र-तंत्र या चिकत्सा आदि के क्षेत्र में कोई ऐसी युक्ति जिससे शीघ्र अभीष्ट सिद्धि होती हो ।
११ ऐसा अस्फुट गायन जिसको सुनकर चित्त प्रसन्न होता हो ।
१२ देखो 'लटक' (अल्पा., रू. भे.)

लटक्कणो, लटक्कबो—देखो 'लटकणो, लटकबो' (रू. भे.)
उ०—१ ससक्कै नगार वंध लटक्कै नाग रा सीस, आग रा अंगार तोपां भटक्कै अवाज । राखियो खंगार दूजा खाग रा पांण सूं रघू,

रांणा वाळौ वाघरा संगार जेम राज ।

—भीमसिंह चूंडावत री गीत

उ०—२ रज भाखी किरणाळ, कमळ जहराळ लटक्कै । चोळ भाळ चापड़ै, कमंध रवदाळ कटक्कै । —सू. प्र.

उ०—३ लटक्कय सीस भटक्कय लाग, अटक्कय सास भटक्कय आग । भटक्कय खाग खटक्कय जाव, गटक्कय ग्रीवरण गूद गुलाव ।

— पे. रू.

लटक्कणहार, हारौ (हारी), लटक्कणियौ—वि० ।

लटक्किओड़ौ, लटक्कियोड़ौ, लटक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लटक्कीजणौ, लटक्कीजवौ—भाव वा० ।

लटक्कियोड़ौ—देखो 'लटकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लटक्कियोड़ी)

लटणौ, लटवौ—क्रि अ.—१ दवना, झुकना ।

उ०—इता हालिया थाट ते भार आगा, लटै सेमरा सीम कांमठि लागा । छछोहा कपी घूमरा एम छूटा, फवै जांण कोटेक सामंद्र फूटा । - सू. प्र.

२ शीथिल या क्षीण होना ।

उ०—सादूळी किण ही समै, लखियौ लांघणियोह । तौ पिण नह खांवण तकै, हूतळ पर हणियोह । —बां दा.

लटपट, लटपटाट—सं. स्त्री.—१ खुशामदखोरी, लल्लों-चप्पों की बातें ।

उ०—दाव धरोहड़ मांड खत, लटपट करके लाय । वटी वडाई वाणिया, धन लेणौ घीजाय । —बा. दा.

३ हिलने डुलने की क्रिया

उ०—अेकर विसूंदरा री पूंछ वाढी तौ वा निरी ताळ आंगणा में लटपट-लटपट करती री' । —फुलवाड़ी

४ आकर्षक या मनोहर (चाल) ।

उ०— ठाकर री लटपट चाल सूं लोग उणां नै आघा सूं ईज ओळख लेवता अर मिळतां ईज कैवता—जै माताजी री ठाकरां ।

—रातवासौ

५ चलने से उत्पन्न ध्वनि या आवाज ।

उ० — इतरी सुणतां इज दो एक बीकण छोरा तौ हिरण्यां रे ज्यूं कांन ऊंचा करनै पड़ भागा । अर लारली नागी-तड़ंग पनटण पण लटपट-लटपट करती 'वाई वूटी थारा कांन' । जांणै चिड़ियां में ढळ पड़ची । —अमरचूंनड़ी

क्रि. वि.—शीघ्र, जल्दी ।

उ० —झटपट छोड जगत का कांमा, लटपट चरणां लागौ । सिर पर तीर लांघिया चावौ, तौ कर सतगुरु जीरौ सागौ ।

—अनुभववांणी

लटपटाणौ, लटपटावौ—क्रि. अ.—१ तड़फना, छटपटाना ।

२ खुशामद करना ।

३ अनुरक्त होना, लुभाना ।

लटपटाणहार, हारौ (हारी), लटपटाणियौ—वि० ।

लटपटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लटपटाईजणौ, लटपटाईजवौ—भाव वा० ।

लटपटायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ छटपटाया हुआ, तड़फड़ाया हुआ. २ खुशामद किया हुआ. ३ अनुरक्त हुवा हुआ, लुभाया हुआ ।

(स्त्री. लटपटायोड़ी)

लटपटियौ—देखो 'लटपटौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ लटपटिया पेचां में उळझिया थका । मोतियां री लड़ां रा पेच उघड़ि रह्या है । —पनां

उ० — २ तुररां रा तार पळकै है. पाघां रा लटपटिया पेच खवां पर लटकै है । —र. हमीर

उ०—३ सईयां कुण छै, अै लागै छै अमीर । किण उळगांणी रा भवर जी । लटपटिया सिर पेच पाग रा, भूंह कवांण-सी ताणी रा निमांणी रा । —रसीलै राज रा गीत

लटपटौ—वि.—वेढंगा, अटपटा, अस्तव्यस्त ।

उ०—लटपटा पेच सिर कंठ मोती लड़ा, खटपटा मिजाजी पांन खावै । पगां कंचन पहर दिखावै पटपटा, जुध वगत भटपटा भाग जावै । —उदैभांण बारहठ

२ खुशामदी ।

३ जो लेई की तरह गाढा हो ।

अल्पा.,— लटपटियौ

लटवा—सं. स्त्री.—खुशामद, चाटुकारिता ।

उ०—एक करै नूंई वीनणी रा कोड, दूजी करै आंख अदीठ बूढौ भोड । पैलड़ौ लटवा करै-हाथ जोड़े । बीजी यूं सुजावै, माथौ फोड़ै । —दसदोख

लटांचट्टां—वि.—गुत्थमगुत्था ।

उ०—काळ हुकंमि जिम काळ रा, किंकर कहरारै । होय लटांचट्टां हिचै, विकटां वाकारै । —सू. प्र.

रू. भे.—लट्टांचट्टां ।

लटांण—सं. स्त्री.—१ सामान रखने के लिए कमरे में छत से कुछ नीचे दीवार में लगाया जाने वाला लम्बा पत्थर या काठ ।

लटा—सं. पु. (ब. व.)—बाल ।

उ०—ऊमटी घटा, बादला होइ एकठा, पड़ई छटा, भाजइ भटा भीजइ लटा । —रा. सा. सं.

लटापट—सं. स्त्री.—१ बंधन की क्रिया या भाव, बंधन के ऊपर आने वाला बंधन ।

वि.—दृढ़, मजबूत (बंधन)

उ०—म्हारै आंगण खूंटी कैर को, जै कै रेसम डोर बंटाय-रसिया मैं तौ ढीलो बांधूं सायबो, कस कर नणदोई जी रा हाथ-रसिया मैं तौ विच-विच बाई जी रा हाथ-रसिया मैं तौ ज्यूं ज्यूं हलावूं डोर नैं, वै तो तीनूं लटापट होय-रसिया. । —लो. गी

लटापटी-सं. स्त्री,—खुशामद ।

लटापुरी—२ देखो 'लटापोरी' (रू. भे.)

उ०—आव जका तरवार देऊं अब, सगा मती मन मांहै सांक । लटापुरी घणी कर लीवी, पीर जळंधर हुंता पाक । —गोगादेजी री गीत

लटापोट—देखो 'लोटपोट' (रू. भे.)

लटापोरी-सं. स्त्री.—खुशामद, मनुहार, आग्रह ।

उ०—१ नाई लटापोरियां करनै घणी ई माफी मांगी । पछै डोकरी रै सांम्ही देखनै कह्यौ—अवैं देखौ कांई हौ । अंदाता स्रीमुख सूं फरमाय दियौ, मांगणौ व्है जकी मांग लीजो । —फुलवाड़ी

उ०—२ नांनी थोरा अर लटापोरियां कर करनै कांई व्हैगी, पण बादळ नीं तौ कलैवो करचौ, नीं रोटी खाई अर नीं रात रा व्याळू करचौ । —फुलवाड़ी

रू. भे. लटापुरी ।

लटारां-सं. पु. (ब. व.) बालों या केशों की लटी ।

उ०—परदेस में वोपार करै खुल्ली लांग री धोती पैरै । केसरिया पाघ बांधै । चौड़ा बाटको सो मूंडो, छीदी लटारां सी दाढी, मोती सा दांत अर ऊजळो सभाव । —दसदोख

लटारौ-सं. पु.—किसान की कृषि उपज में से निश्चित भाग या हिस्सा लेने वाला व्यक्ति

उ०—हाकम लटारा रे, विणजारा सोदारा रे । पटवारी कूंतारा रे, सैंणा भोमिया रे । —जयवांणी

लटाळी-सं. स्त्री.—बालों युक्त ।

उ०—कसंता विजैमंड कोदंड कंधा, बणावै अथा वैर जै जेरबंधा । सटा याळ जाळी लटाळी सुहावै, प्रिया नागवाळी लखै दाग पावै । —व. भा.

लटिआळ—देखो 'लटियाळ' (रू. भे.)

लटिया-सं. पु. (ब. व.) सिर के उलझे हुए बालों का गुच्छा ।

उ०—रीस तौ इसी आवै है कै रांड रा लटिया तोड़ने नांख दूं । —अमर चूनड़ी

लटिआळी, लटियाळ, लटियाळिय-सं. पु.—१ भैरव का एक नाम ।

उ०—लियां पत्र पेज भरै लटियाळ, घणैं तप तेज खमा घटियाळ । दुवै बळ चंचळ पाण दराज, हुवै कुरवांण कवी हिंगळाज । —मे. म.

२ पुष्प, फूल ।

३ बड़ी अयाल वाला (घोड़ा)

उ०—वडा खळ वेघत सावळ वाह, लिये लटियाळ तुरी कपी लाह । जुड़े घज सेल पड़े जवनेस, दखै रवि तांम, भोका 'मुकंदेस' । —सू प्र.

सं. स्त्री.—४ एक देवी का नाम ।

उ०—१ महमाया तुही चांमंडमाय, डीढवंत आरंभै सूं सीहाय । लटियाळ तुंही लख वीरद लैण, वाचाड घूंघी सांच वैण । —रांमदांन लाळस

उ०—२ कमनार गतांम वरात करी, फिर आडिय देवळ आंन फरी । लटियाळिय जोगण साथ लियां, कंकआळण रूप विरूप कियां । —पा. प्र.

५ एक प्रकार की भांग ।

उ०—१ तिका किण भांत री भांग सुघ काका पुरणि वासिंग नाग माथै री नीपनी सिंघ री गुफा मांहै नीपनी, थोहर रै वीड़ै री, भाखर रै खुड़ै री, सूअै री पांख, परड़री आंख, रोज मारि, रिव मारि, लटिआळी वापरी खाधी वैटै नां आवै । —रा. सा. सं.

वि.—१ जटाधारी, जटावाला ।

रू. भे.—लटिआळ, लटयाळिय, लरियाळ

लटियाळौ-वि.—जटाधारी, जटा वाला ।

सं. पु.—भैरव

लटी-सं. स्त्री.—१ झूठी बात, गप्प ।

२ वेश्या ।

३ साधु स्त्री ।

४ केश या डोरों आदि का उलझा हुआ लम्बाकार गुच्छा ।

उ०—काळी अगवांणी करी, गोरी जै री गेल । घमकै कटियां घूघरा लटियां तेल फुलेल । जी मेहाई थांरा वाईसा री करीजै उवेल । —मे. म.

५ घोड़े के गर्दन के बाल, घोड़े की अयाल ।

उ०—ताहरां सिखरै विछेरी पकड़ी, घोड़ै कन्है आयी ताहरां सिखरै लटी पकड़नै चढि गयौ ओर विछेरी दोड़ी । —उदै उगमणावत री वात

वि.—१ बलवान, जबरदस्त ।

२ देखो 'लट' (रू. भे.)

लटूंमणौ, लटूंमवौ-क्रि. अ.—१ किसी वस्तु का मामूली आश्रय लेकर टिकाव करना या लटकना ।

ज्यूं—गाडी लारै लटूंमणौ ।

२ किसी वस्तु का एक सिरा दूसरे से लगाकर अधर लटकना ।

३ स्नेह से गले में बांह डालकर लटकना या झूमना।

उ०—मासी सूं कम काली भांणजी ई नी ही। वा तौ ऊभी ऊभी ही अवूझ टावर री गळाई मासी रै गळै लटूंम उणरा हांचळ चूंगण लागगी। —फुलवाड़ी

लटूंमणहार, हारौ (हारी), लटूंमणियौ—वि०।

लटूंमिग्रोड़ौ, लटूंमियोड़ौ, लटूंम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लटूंमीजणौ, लटूंमीजवौ—भाव वा०।

लटूंमियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ किसी वस्तु का मामूली आश्रय लेकर टिकाव किया हुआ या लटकाया हुआ. २ किसी वस्तु का एक सिरा दूसरे से लगाकर अधर लटका हुआ. ३ स्नेह से गले में बांह डालकर लटका हुआ या झूमा हुआ।
(स्त्री. लटूंमियोड़ी)

लट्ट—देखो 'लट्टू' (रू. भे.)

लट्ट -१ देखो 'लट' (रू. भे.)

उ०—१ पट्टा उतारै पेट री लट्टां मारै अर चालतौ कातीसरौ धाप-धाप'र करै है। —दसदोख

उ०—२ रोटी फलका दही मिडका, रोट वाटियां घूतियौ। फोगलासू सूकी लकड़्यां, लट्टां कातै सूतियौ। —दसदेव

२ देखो 'लट्टौ' (मह, रू. भे)

लट्टांचट्टां—देखो 'लटांचट्टां' (रू. भे.)

उ०—कुर पंडव जीहा अमर, कल रखण कथ्थां। लट्टांचट्टां लूंविया वेदल भर वथ्थां। —लूणकरण कवियौ

लट्टू-सं. पु.—१ लकड़ी का गोलाकार एक खिलौना, जिसमें लगी कील पर डोरी लपेट कर उसे घुमाया जाता है।

२ मोहित, फिदा।

उ०—१ टेढा न हुजै जगी टट्टू ललचायै मत थाए लट्टू। पडित मूरख कीजै परिखा, सगलां नै मत कहिजै सरखा। —ध. व. ग्र.

उ०—२ निजर नांखी भोमी ताकी पण किसनजी कमरै रै रंग-ढंग सूं ढीलौ, लट्टू हुयग्यौ। —दसदोख

क्रि. प्र.—व्हैणौ, करणौ

रू. भे.—लट्ट

लट्टौ-सं. पु.—१ कुत्ता, स्वान। (डि. को.)

रू. भे.—लट्ठौ

मह.—लट्, लट्ट

लट्ठ—देखो 'लठ' (रू. भे.)

उ०—१ वसून बुद्धि वैत नीज मांन पांन है जमां। घुमाय लट्ठ अट्ठ जांम हौ फिरौ धमां धमां। —ऊ. का.

उ०—२ वाघिया नै नीचै आंगणां में सुवाय नै एक मजवूत लट्ठ उणनै सूंप दियौ अर म्हूं ई एक मोटौ छूरी अर एक डंडो सिरांणै ले'र ऊपर मोयग्यौ। —रातवासौ

लट्ठवाज-वि.—लाठी से लड़ने वाला, लठैत।

रू. भे.—लठवाज, लाठीवाज।

लट्ठवाजी-सं. स्त्री.—लकड़ी से होने वाली लड़ाई।

रू. भे.—लठवाजी।

लट्ठभारती-वि.—१ लकड़ी चलाने में दक्ष।

२ उद्दंड, उत्पाती।

रू. भे.—लठभारती।

लट्ठमार-वि.—१ उद्दंड व्यक्ति।

२ (कथन या वात) जिसमें विनय, नम्रता एवं सौजन्य का पूर्ण अभाव हो।

रू. भे.—लठमार।

लट्ठी—देखो 'लाठी' (रू. भे)

उ०—पटाळा हुठाळा महागात पूरा, सूरंगा मगाहा सकोपा सनूरां। सलीना कन्है झंकवै प्राण साहै, लियां हाथ लट्ठी समां सेज ठाहै। —रा. रू.

लट्ठौ-सं. पु.—१ लकड़ी का बहुत बड़ा, मोटा खड, शहतीर।

रू भे.—लाठौ

२ मोटा कपडा विशेष।

उ०—मटिया आंटाळौ पोतियौ, कांटा छाप लट्ठा रौ धोतियौ अर जाळोर रै टुकडी री अगरखी ठाकर री वारौमास री पोसाक ही। —रातवासौ

३ भेड़िया। (शेखावाटी)

४ देखो 'लट्टौ' (रू. भे.)

रू. भे.—लठ्ठौ।

लटचाळिय—देखो 'लटियाळ' (रू. भे)

लठ-वि.—१ हृष्ट-पुष्ट, वलिष्ठ।

२ मजवूत, जवरदस्त।

३ मूर्ख, वेवकूफ।

सं. पु.—१ छकड़ा।

उ०—कमाळा लदै स्रव्व त्या द्रव्व कोड़ी, सकट्टा लठां भार ज्यों टांस जोडी। विभारंभ आचंभ राठोड़वाळा, महि छेलिवा ऊमड़ै मेघमाळा। —रा. रू.

२ भेडिया (शेखावाटी)

३ लाठी।

रू. भे.—लट, लट्ठ

लठवाज—देखो 'लट्ठवाज' (रू. भे.)

लठभारती—देखो 'लट्ठभारती'

लठमार—देखो 'लट्ठमार' (रू. भे.)

उ०—मरदा कोय वाग भलै मुरडो, ग्रस चालव 'पाल' कियो उरडो। ठह वात ग्रमा फिर ग्राय ठगै, लठमार प्रवांनांय सीस लगै। —पा. प्र.

लठायत–वि.—लट्ठ बाज, लकड़ी चलाने वाला।

उ०—ग्राग भड़हड़ै डूंडै रमैं रग ग्रागरौं, नाग फरा नमैं करै समत्र नागा। कठा लग कवादी व्यहू रचना करै, लठायत तरा भड़ लड़न लागा। —कविराजा बांकीदास

लठीभल—देखो 'लाठीभल' (रू. भे.)

लठैत–स पु.—लकड़ी चलाने वाला व्यक्ति, लट्ठधारी।

लट्ठो–स पु. १ मकान की छत में लगाया जाने वाला भारी लम्बा पत्थर-पाट, भारोट या काठ का शहतीर।

२ देखो 'लट्टो' (रू भे.)

उ०—ग्रांगरौ में सीयोड़ी बोरया री तिरपाळ विछयोड़ी हो, छात माथै लांबी लट्ठै री धोती तांण्योड़ी ही। —दसदोख

लडंग—देखो 'लड़ग' (रू. भे.)

लडणौ, लडबौ–क्रि. ग्र.—१ प्यार किया जाना, दुलार किया जाना।

उ०—१ वच्छः सासुरा तणी इसी स्थिति जांणवी, सुसरउ उवेखइ, जेठ नीचउं देखइ, वर पुरा लडइ, देवर नडइ, जेठांणी कुसइ, देग्ररांणी हनइ, नणंद नखरावइ, सासू कांम करावइ। —व. स.

२ देखो 'लड़णौ, लड़बौ' (रू. भे.)

लडणहार, हारौ (हारी), लडणियौ—वि०।

लडिग्रोड़ौ, लाडयोड़ौ, लडयोड़ौ—भू० का० कृ०।

लडीजणौ, लडीजबौ—भाव वा०।

लडत्थड–वि.—भूमता हुग्रा।

उ०—वडव्वड वीजळ धार वहंत, लडत्थड संकर सीस लहंत। भड़ज्भड़ ग्रोभड ग्रावध भट्ट, लडल्लड लागै लोह सुभट्ट। खडक्खड खंडा ग्राट खडंत, धडव्वड हूंता धूंह पडंत। —गु. रू. वं.

लडथट—लडने वालों का समूह।

उ० - धू नाचै भड धड फौंफड, लोडे लडथट लोहि लडै। धीयै दळ वट चढ हुई हड-वड, जोवै धड तड ग्रनड ग्रडै। —गु. रू. व.

लडथडणौ, लडथडबौ—देखो 'लडथड़णौ, लड़थड़बौ' (रू. भे.)

उ०—मिवूगं गरां माथरां मूर, पै करां थरां संघरां पूर। लोहड़ां लगां लडथड़ां लोट वेहड़ां घड़ां मरगटां वोट। —गु. रू. वं.

लडथडियोड़ौ—देखो 'लडथड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लडथडियोडी)

लडल्लड–सं. स्त्री.—शस्त्र प्रहार की ध्वनि।

उ०—वडव्वड वीजळ धार वहंत, लडत्थड संकर सीस लहंत। भडज्भड ग्रोभड ग्रावध भट्ट, लडल्लड लागै लोह सुभट्ट। —गु. रू. वं.

रू. भे.—लडालड।

लटवडणौ, लडवडबौ–क्रि. ग्र.—लटकना।

उ०—कोट गळी बांकी नळी, पिंजर नयन विसाल। लाळ पडै होंठ लडवडै, इसौ वणायौ गात। —श्रीपाल रास

लडवडियोड़ौ–भू का कृ. लटका हुग्रा।

(स्त्री. लडवडियोड़ी)

लडसडणौ लडसडबौ–क्रि. ग्र.—भूमते हुए या मस्ती में चलना।

उ०—१ लडहियतणी लडसडतीय, घडतीय नाव रसाल। नेहगहिल्लय हियडुला, प्रियडुला जंपइ वाल। —मेरनंदन

उ० —२ तदनंतर लाडता लडसडता इसा पुण्यवंत, लीलां कांमदेव जिसा, ग्रारोगिवा वइठा। तदनंतरु ग्राट वाटा वाटी कचोला कचलोलवटी सीप सूनवटी प्रगुणी हुई। तदनंतरु लडहीग्रं, लडसडतीयं, लीलावतीग्रं सुवरणमय करवइं वरवतीग्रं, खलकतइं, चूडइं, भलकतै ककरिए, ढलकतइ सीथ, सीति गंधोदकि हस्तोदकु दीधां। —व. स.

लडहि–वि. [सं. लटभ] सुन्दर।

उ०—१ पेखवि वरु ग्रावंतु सहिय, राजल इम जंपइ, लोयण घुव तुं करि न देवि, वरु ग्रावइ संपइ। लाडिय लडहिय गउखि चडवि, पच्चक्खु ग्रणंगो, जोवउ प्रिय सव्वंगु चंगु, मंनि पावइ रंगो। —जयसिंह सूरि

रू. भे,—लडही।

लडहियतण, लडहियतरिग, लडहियतणी–सं. स्त्री. [सं. लटभिकत्वन] सुन्दरता।

उ० —लडहियतणि लडसडतीय, घडतीय भाव रसाल। नेहगहल्लिय हियडुला, प्रियडुला जंपइ वाल। —मेरुनंदन

लडही—देखो 'लडहि' (रू. भे.)

उ०—तदनंतरु ग्राट वाटां वाटी कचोलां कचोलवटी सीप मूनवटी प्रगुणी हुई। तदनंनरु लडहीग्रं, लडसडतीयं, लीलावतीग्रं सुवरणमय करवइं वरवतीग्रं, खलकतइं चूडइं, भलकतै कंकरिए, ढलकतइ हाथि, सीति गधोदकि हस्तोदकु दीधां। —व. स.

लडांलूंब—देखो 'लड़ालूंब' (रू. भे.)

लडाई —देखो 'लड़ाई' (रू. भे.)

उ०—जोवा रिरामाल दूहूं दळ जूटा, पूरि लडाइय जोर पडी। पाळ हाड छूटा सिरखा, पडयालग हूग्री भारथ हेक घडी। —गु. रू. वं.

लडाड़णौ, लडाड़वौ—देखो 'लडाणौ, लडावौ' (रू. भे)

लडाड़णहार, हारौ (हारी), लडाड़णियौ—वि० ।

लडाड़िग्रोड़ौ, लडाड़ियोड़ौ, लडाड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लडाडीजणौ, लडाड़ीजवौ—कर्म वा० ।

लडांड़योड़ौ—देखो 'लडायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लडाड़ियोड़ी)

लडाणौ, लडावौ—क्रि स. –१ लाड-प्यार करना, दुलार करना ।

उ० –हित विण प्यारा सज्जणां, छळ करि छेतरियाह । पहिली लाड लडाई कइ, पाछई परिहरियाह । —ढो. मा.

उ०—२ फरर जस हाथिया हातलेवौ फवै, जड़लगां वंटे रग पतंग जाडा । वनी साहां तणी घड़ा नवजोवनी, लडाई भली ग्रग पलंग लाडा । —महाराजा राजसिह री गीत

२ फुसलाना ।

३ देखो 'लड़ाणौ, लड़ावौ' (रू. भे.)

लडाणहार, हारौ (हारी), लडाणियौ—वि० ।

लडायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लडाईजणौ, लडाईजवौ—कर्म वा० ।

लडाड़णौ, लडाड़वौ, लडावणौ, लडाववौ—रू. भे. ।

लडायत, लडायतौ—वि. (स्त्री. लडायती) प्यारा, दुलारा ।

लडायोड़ौ—भू का. कृ. १ प्यार किया हुग्रा, दुलार किया हुग्रा ।

२ फुसलाया हुग्रा ।

३ देखो 'लड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लडायोड़ी)

लडालड—देखो 'लडल्लड' (रू. भे.)

लडालौ—वि. (स्त्री. लडाली) प्यारा, दुलारा ।

लडावणौ, लडाववौ—देखो 'लडाणौ, लडावौ' (रू. भे.)

उ०—१ लाडो लाडी जाय लडावण, गत्युं ग्रोलग सारै जन हरिरांम फिरै मन फीटी, ध्यांन हरि का धारै ।

—ग्रनुभववांणी

उ०—२ म्हारा केस ग्रवस थारै काळै केसां सूं उजळा है, पण म्हैं थारा उजास नै नीं पूगूं । पछै थूं म्हनै कित्ती ई लडावै तौ काई व्हे । —फुलवाड़ी

लडाविया—सं. स्त्री.—घोड़ों की एक जाति विशेप ।

उ०—घोटक जाति, केहाडा, नीलडा, हरियाडा, सेसहा, हडाराहा कोहांणा, भरयणा, ताड, तुरगी, ऊघसीया, नीघसीया, डाटकीया डोटकिया, खेलविया, मल्हाविया, लडाविया पुलाविया, सरला, तरला, छोटकरणा, एकरणा । —व स.

लडावियोड़ौ—देखो 'लडायोड़ौ' (रू. भे.)

देखो 'लड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लडायोड़ी)

लडियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ लाड या प्यार हुवा हुग्रा. २ लड़ा हुग्रा ।

(स्त्री. लडियोड़ी)

लडीड़—सं. पु. [ग्रनु.] १ शस्त्र प्रहार की ध्वनि ।

२ प्रहार, चोट ।

उ०—१ पछै ग्रेक फेर लडीड़ उणारी कडियां माथै ग्रावेस जरकायौ जकौ कुत्ता सूं तौ बोवाड़ौ ई नीं व्हियौ ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ भांवी तौ ढूकी जकौ लडीड़-लडीड़ उणानै कूटनौ ई गियौ, मरियां पछै ई को ढवियौ नीं । —फुलवाड़ी

लडीड़ौ देखो 'लडीड़' (मह. रू. भे.)

क्रि प्र.—चेपणौ, धरणौ, मेलणौ, लगाणौ ।

लडीयाळ—१ देखो 'लड़'

उ०—जडियाल खंजर जमडंड जड़ै, वांधिवे वे वडियालसी । रडियाल रूप देखे रंभा, न्हखै हीर लडीयाळसी । —पनां

२ देखो 'लड़ीयाल' (रू. भे.)

लडूककार—सं. पु. [सं.] लड्डू वनाने वाला ।

उ०—कांस्यकार मणिकार पूगीलतांवूलिक मालिकं सौत्रिक लडूककार कांडुकिकार कणकार वेस्याकार चरमकार मल्लक खलक घात्य खलक वाटक वाटिका वापी पुष्करणी क्रीडातडाग सरोवर । —व. स.

रू. भे.—लडूयार

लडूयार—सं पु.—देखो 'लडूककार' (रू. भे.)

उ०– ग्रथ नगर, प्रासाद प्रतोली राजकुल देवकुल त्रिक चउक चच्चर राजमारगि गांधिकापण दोमिकापण कणहट्ट सूपकारहट्ट फोफलहट्ट तांवूलिकहट्ट माली लडूयार सोवरण्णिक माणिकहट्ट कंसारा । —व. स.

लडैत—वि.—लाड-प्यार से इतराया हुग्रा ।

लडोकड़ौ—प्रिय, प्यारा ।

२ देखो 'लड़ोकड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लडोकड़ी)

लड्डु—सं. पु—देखो 'लाड' (रू. भे.)

उ०—कहां जाया कहां जनमिया, कहां लडाया लड्डु । काहु जाणं कही खाड में, जाय पड़ेगे हड्डु । —ग्रज्ञात

लड्डू—देखो 'लाड्डू' (रू. भे.)

लढ—क्रि. वि.—१ लोटपोट ।

उ०—खवां-खच चुड़ाळै हळका हाथांसूं परूसती ग्रर गीता-भागवंत

रा पाठ करती थकी श्राखं वास री लुगायां नै ग्यांन दैती-रैती। घणा र दढ कर देती, लोकाचार सूं लढ कर देती —दसदोख

लढकणौ, लढकबौ–क्रि. अ.—देखो 'लुढकणौ, लुढकबौ' (रू. भे)

लढकणहार, हारौ (हारी), लढकणियौ—वि०।

लढकिग्रोड़ौ, लढकियोड़ौ, लढक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लढकीजणौ, लढकीजबौ—भाव वा०।

लढकाड़णौ, लढकाड़बौ—देखो 'लढकाणौ, लढकाबौ' (रू. भे.)

देखो 'लुढकाणौ, लुढकाबौ' (रू. भे.)

लढकाड़ियोड़ौ – १ देखो 'लढकायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लुढकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लढकाड़ियोड़ी)

लढकाणौ, लढकाबौ–क्रि. स.—१ लिपेटना।

उ०—एक हाथ री श्रांगळी में गगा-जमना हाळी वींटी श्रर दोनूं पगां रै श्र'गूंठा में धरण दाटण वेगी काळा काठा डोरा लढकायोड़ा है। —दसदोख

देखो 'लुढकाणौ, लुढकाबौ' (रू. भे.)

लढकाणहार, हारौ (हारी), लढकाणियौ—वि०।

लढकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लढकाईजणौ, लढकाईजबौ—कर्म वा०।

लढकाड़णौ, लढकाड़बौ, लढकावणौ, लढकावबौ—रू. भे.।

लढकायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ देखो 'लुढकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लढकायोड़ी)

लढकावणौ, लढकावबौ—देखो 'लढकाणौ, लढकाबौ' (रू. भे.)

२ लुढकाणौ, लुढकाबौ' (रू. भे)

लढकावियोड़ौ—देखो 'लढकायोड़ौ' (रू. भे.)

देखो 'लुढकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लढकावियोड़ी)

लढाक–सं. पु.—वह व्यक्ति जो छद्म वेष बनाकर किसी सामुहिक भोज में भोजन कर श्रावे।

(जयपुर)

लढार–सं. पु.—कायस्थ जाति में विवाह के छटे दिन वधू पक्ष की श्रोर से वर-पक्ष को दिया जाने वाला बड़ा भोज। (मा. म.)

वि. वि.—यह भोज श्रनिवार्य नहीं है श्रतः समर्थ व्यक्ति ही दे पाता है।

लढौ–सं. पु.—१ बैलगाड़ी। (मेवात)

२ बैलगाड़ी में से घास श्रादि वस्तुश्रों को गिरने से बचाने के हेतु लगाया जाने वाला वस्त्र।

लणियार, लणिहार–वि.—देखो 'लैणियार' (रू. भे.)

उ०—कुण थारी कुण थारी ए, भाली रांणी श्रायौ लणिहार। कुण कहै बहू जाव, कुण्यांरै खिनाई जावौ बापकै। —लो. गी.

लणणौ, लणबौ—देखो 'लुणणौ, लुणबौ' (रू. भे.)

उ०—जिसउ गुरू तिसउ श्रभ्यास, जिसी दीख तिसी सीख, जिसउ श्राहार तिसउ निहार, जिसउं वावियइ तिसउ लवइ तिसउं कमा इयई, तिसउं प्रामीयइ। —व. स.

लणीहार—देखो 'लैणिहार' (रू. भे.)

उ०—ढोलाई ढोला भरयौ रै लाल करवाई करवा गुवाड इसड़ो कलम को नहीं जी म्हारी लाडो को लणीहार सनेही ढोला।

—लो. गी.

लत–सं. स्त्री. [श्र. इल्लत] १ बुरी श्रादत, श्रादत।

उ०—१ लोगां पूछियौ—थोरी के बावै ? वौ श्रापरी लत परवांण वेड़ाई सूं उत्तर दियौ—को बताऊंनी। —फुलवाड़ी

उ०—२ दिल ऊजळ नर ऊजळ लखि न ऊजळ सिर लेखीय। दौलत दौलत मिळि नि, लगी दौ'लत द्रिढ लेखीय। —र. ज. प्र.

२ देखो 'लात' (रू. भे.)

रू. भे.—'लत्त'

लत्तखोर, लतखोरौ–वि.—१ बुरी श्रादत वाला।

२ लात खाने वाला, नीच।

लता–सं. स्त्री. [सं.] १ कोमल व पतली शाखाश्रों वाला पौधा विशेष जो किसी श्राश्रय के द्वारा ऊपर की श्रोर चढ जाता है। या धरातल पर ही फैल जाता है, बेल।

उ०—१ लोक विदेसां सूं घरै श्रावै, लता बिरछां रौ मिळण श्राळी। रसराज श्रै छांडै छै श्रांपानै, किसा हिया रा कंथ म्हारी श्राली। —रसीले राज रा गीत

उ०—२ स्रीहर परहर श्रवरनूं, मत संभारै श्रयांण। तरु छंडै लागी लता, पत्थर चै गळ जांण। —ह. र.

रू. भे.—लंत, लत्तां, लया।

लताश्रंत–सं. पु. यौ. [सं. लता+श्रंत] पुष्प, फूल।

(श्र. मा., ह. नां. मा)

लताकर–सं. स्त्री.—नृत्य में हाथ हिलाने की एक क्रिया।

लताकस्तूरिका, लताकस्तूरि–सं. स्त्री.—दक्षिण भारत में होने वाला एक पौधा जिसका उपयोग वैद्यक में होता है।

लताग्रह, लताघर–सं. पु. यौ. [सं. लता+गृह] लताश्रों से मंडप की तरह छाया हुश्रा स्थान।

लताड़–स. स्त्री.—१ लताड़नै की क्रिया या भाव।

२ गहरी डांट, फटकार।

क्रि. प्र.—दैणौ, पड़णौ, खाणौ।

रू. भे.—लतेड़'

लताड़णौ, लताड़वौ–क्रि. स.—१ लातों से कुचलना, रौंदना।
२ लातों से मारना।
३ फटकारना, डांटना।
उ०—१ वदनांमी कर' र दूजै कठै ही नहीं परणीजण देवणरौ डराव दिखाळचौ। चढतै लोहौ नै घणी लांणत सूं लताड़चौ —दसदोख
उ०—२ जद नवलजी आपरै जवांई री कूड़ी मदा तथा वार चढसी। आगै जाकर पुलस हाळां नै लताड़सी, ओळभो देसी। —दसदोख
४ भला बुरा कहना, शर्मिन्दा करना।
५ हैरान करना।
लताड़णहार, हारौ (हारी), लताड़णियौ—वि.।
लताड़िग्रोड़ौ, लताड़ियोड़ौ, लताड़्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लताड़ीजणौ, लताड़ीजवौ—कर्म वा.।

लताड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ लातों से कुचला हुआ, रौंदा हुआ. २ लातों से मारा हुआ. ३ फटकारा हुआ, डांटा हुआ. ४ भला-बुरा कहा हुआ, शर्मिदा किया हुआ. ५ हैरान किया हुआ। (स्त्री. लताड़ियोड़ी)

लतैभवन–[सं. लता+भवन]—लताओं के छाजन से बना गृह, लताकुंज

लतामंडप–सं. पु. यौ. [सं. लता+मडप]—लताओं से आच्छादित मंडप या स्थान।

लतामंडळ–सं. पु. यौ. [सं. लता+मंडल] लताओं का झुंड।

लतामणि–सं. पु. यौ. [सं. लता+मणि] मूंगा, प्रवाल।

लतावेस्ट–सं. पु. यौ. [सं. लता+वेष्ट] १ कामशास्त्र में वर्णित सोलह प्रकार के रतिबन्धों में से तीसरा।
२ पुराणों के अनुसार द्वारकापुरी के पास का एक पर्वत।
वि.—लताओं से घिरा हुआ।

लतावेस्टण–सं पु. यौ. [सं. लता+वेष्टण] एक प्रकार का आलिंगन। (कामशास्त्र)

लतासाधन–सं. पु. यौ. [सं. लता+साधन] एक तंत्रोक्त साधना जिसका प्रधान अधिकरण लता अर्थात स्त्री है।

लतिका–सं. स्त्री.—छोटी लता।
उ०—पल्लव लतिका रूप डाळिया डाळां माथै। ओपै वेल अंगूर, अळूझै नाळां साथै। —दसदेव

लतियापण, लतियापणौ–सं. पु.—गुदा मैथुन या अप्राकृतिक मैथुन करने का व्यसन।

लतियौ–सं. पु.—वह जिसे गुदा मैथुन कराने की लत्त हो। (मा. म.)

लती—देखो 'लत्ती' (रू. भे.)

लतीफौ–सं. पु. [अ. लतीफ़ा] हास्य रस की कोई वात, चुटकला।

लतेड़—देखो 'लताड़' (रू. भे.)
उ०—दीवांणजी री कीं दाव नीं चाल्यो। लवखू री लतेड़ सुण लचकांणां पड़ग्या। —फुलवाड़ी

लतेड़णौ, लतेड़वौ—देखो 'लताड़णौ, लताड़वौ' (रू. भे.)
लतेड़णहार, हारौ (हारी), लतेड़णियौ—वि.।
लतेड़िग्रोडौ, लतेड़ियोडौ, लतेड़्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लतेड़ीजणौ, लतेड़ीजवौ—कर्म वा.।

लतेड़ियोड़ौ—देखो 'लताड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लतेड़ियोड़ी)

लत्त—१ देखो 'लत' (रू भे.)
उ०—गज मद चाचर घूंदतां, लग पड़ि नीला लत्त। समर तड़फ्फै सिंहली, मद भरियौ मेमत्त। —रेवतसिंह भाटी
२ देखो 'लत्ती' (रू. भे.)
उ०—जिकै जपै हरि नांम, जियां मन सांसौ भग्गै। जिकै जपै हरि नांम, जियां जम लत्त न लग्गै। —ज. खि.

लत्ता–सं. स्त्री.—विवाहादि मुहूर्त्त में होने वाले दश दोषों में से एक दोष।
उ०—१ लत्ता दि दोस दस लखो, अल्प निवळ सोपण अठै। वदियौ द्विजेण सव सुभ विफळ, कुळ दुलह समता कठै। —वं. भा.
वि. वि.—ये दश दोष निम्न हैं–
१ लत्ता, २ पात ३ युति ४ वेध ५ यामित्र ६ बुध पंचक ७ एकार्गल ८ उपग्रह ९ दग्धातिथि १० क्रांति साम्य।
२ देखो 'लता' (रू. भे)

लत्ती–सं. स्त्री.—१ पशुओं द्वारा पैर से किया जाने वाला प्रहार. आघात।
२ चलते या दौड़ते व्यक्ति के पैर में इस प्रकार पांव अड़ाने की क्रिया कि वह लड़खड़ा कर गिर जाय।
क्रि. प्र. मारणी, लगाणी।
रू. भे.—लत्त·

लत्तौ–सं. पु. [स. लत्तक] (ब. व. लत्ता) १ फटा पुराना कपड़ा, चिथड़ा।
२ पहनने के वस्त्र।
यौ. कपड़ा-लत्ता।

लत्यवत्य, लत्यवथ्य—देखो 'लथवथ' (रू. भे.)
उ०—घडै लगि सार उठै रत धार, उगी फळ विंव कि कंव अपार। हुए इक सत्थ विना खग हत्थ, मिळै लत्यवत्य विना कै मत्थ। —रा. रू.

लत्यापत्यि—देखो 'लथवथ' (रू. भे.)

उ०—अठचासीयउ अन्न आंणि, करइ वलि सुहंगा कांई। लागी लत्यापत्थि किस्यु थास्यइ हो सांई। —स. कु.

लत्योवत्य, लत्यौवथ, लत्योवथ्य, लत्योवत्यांण—देखो 'लथवथ' (रू. भे.)

उ०—१ मत्ता जूझ लत्योवत्यां धारा घोम गोम मच्चै, घोरवाज खंच्चै बीम नच्चै रुद्र धाड़। घाय सल्लां होदां व्है छडाळां हूंत वीर घूमै, रायसल्लां रोदां व्है हमल्लां हल्लां राड़। —हुकमीचंद खिड़ियो

उ०—२ आंम्हो-सांम्हा आहुड़े, लत्योवत्याणं, धाका मूकां वाजियां, गाजे गयणाणं। विढतां पांच हजार लग, वीता वरसाणं, मांग-मांग वर बोलिया मधु-कीटव दाणं। —गज-उद्धार

उ०—३ वहे हाथ रावतां रा आवधां छतीस वहे, कळुं रहे सारां चा वाखांण साच कत्थ। आंवेंरा वळा रवताळा श्री दंताळा असा, वाहरू घरा रा लड़ै पड़ै लत्योवत्य। —हाडा कछवाहा री गीत

उ०—४ नीर सरां मेहा धरां, सारण हूंसा सथ्थ। वेलि तरां नारी नरां, वणिया लत्यौवथ्य। —पनां

लथपथ—वि.—१ किसी तरल पदार्थ से भीगा हुआ या भरा हुआ।

२ मिट्टी, कीचड़ आदि से सना हुआ।

उ०—लारा सूं एक सरड़ाट करती आई अर चोवरी रा कपड़ा लथपथ करती चालती वणी। —रातवासो

लथवत्थ, लथवथ—सं.पु.—१ दो जीवों पशुओं या व्यक्तियों में लड़ाई होते समय की वह स्थिति जिससे वे एक दूसरे को कसकर दवाए या पकड़े रहते हैं।

२ पति पत्नी या, प्रिय प्रेयसी के प्रेमालिंगन की क्रिया या भाव, सुरत-प्रसंग

उ०—रे पिय सोगन राजरी, खोटो सेजां खेल। विलकुल लथवथां वूरो, मोने ढीली मेल। —सुगुना सनुसाल री वात

रू. भे.—लत्यवत्य, लत्यवथ, लत्थवथ्य, लत्थोपत्यि, लत्थोवत्थ लत्थोवथ, लत्थोवत्थांण, लथुवत्थ, लथुवथ, लथुवथ्थ, लथोवत्थ, लथोवथ, लथोवत्थ, लुत्थवत्थ, लुथवत्थ, लुथवथ, लुथवथ्थ, लूथवथ्थ, लूथवाथ, लूथवूथ चोथवत्थ।

लथाड़णो, लथांड़बो—देखो 'लताडणी, लताड़बो' (रू. भे.)

लथाड़ियोड़ो—देखो 'लताड़ियोड़ो' (स्त्री लथाड़ियोड़ी) (रू. भे.)

लथुवत्थ, लथुवथ—१ देखो 'लथवथ' (रू. भे.)

लथैड़णो, लथैड़बो—देखो 'लताड़णी, लताड़बो' (रू. भे.)

लथोवत्थ, लथोवथ, लथोवथ्थ—देखो 'लथवथ' (रू. भे.)

उ०—१ नजरूं का निहार पंजू का दाव। कदमूं का फुरत ढोरयूं का घाव। जंड़ तैहै डोरी लथोवथ होय जावै। —सू. प्र.

उ०—२ कूंभाथळां लागै नरां हेमरां छोहतां फोप, हाथळां हाथियां घड़ा छोहता हटंत। हाथ आगां फौज नूं रोहतां राथोवथ्थां होय, पाछै असा दूजो 'मतो' नोहथ्थां पटंत। —महाराव राजा रायसिंह हाडा रो गीत

लदणो, लदबो—क्रि. अ [सं. लद्] भार या वजन युक्त होना।

उ०—सिनग जमारै आय, रांमजी रा गुण भूला। गहै दाग नग-रांम, इणी राम कांई सूझा। मूळा फोड़ै है इसा, पणी सहोला मार टांकी मोरां रै विचै, ऊपर लदसी भार। ऊपर लदसी भार गधा होवोळा लूला। —मगरांमदास

२ भारी वस्तुओं का वाहनों आदि पर रखा जाना।

उ०—रैवारी का सोज्या म्हारा वीर, रैण घणं री घुड़ला नां लदै। गैली घण असल गंवार, लदिया तो घुड़ला पाछा ना ढळै। —लो. गी.

३ किसी वस्तु से परिपूरित या पूर्ण होना, आच्छादित होना।

ज्यूं—गैणां सूं लदणो, फूलां सूं लदणो।

४ किसी व्यक्ति पर किसी भारी वस्तु का रखा जाना या बोझ, वजन के रूप में पड़ना।

५ व्यतीत होना, कालातीत होना।

उ०—पीढ्यां बीतसी, सदी लद जासी पण लोग थांरो नांवो सदा लैता रैसी। —दसदोख

६ गमन कर जाना, चले जाना।

उ०—१ विणजारी माया को लोभी, सांझ पड़्यां वो लद जासी कोरी-कोरी टीबड़्यां ढळ जासी। —लो. गी.

उ०—२ विणजारी ए हम हंस बोल तांडो लद जासी। —लो. गी.

७ अधिक भार या दायित्व से दबना।

लदणहार, हारो (हारी), लदणियो—वि.।

लदिओड़ो, लदियोड़ो, लद्योड़ो – भू. का. कृ.।

लद्दणो, लद्दबो, लद्धणो, लद्धबो, —रू. भे.।

लदपड़ो—सं. पु.—लम्बे कानों वाला।

लदाऊ—वि.—लादने वाला।

सं. पु—लदाव, भराव।

लदाड़णो, लदाड़बो—देखो 'लदाणी, लदावो' (रू. भे.)

लदाड़णहार, हारो (हारी), लदाड़णियो—वि०।

लदाड़िओड़ो, लदाड़ियोड़ो, लदाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

लदाड़ीजणो, लदाड़ीजबो—कर्म वा०।

लदाड़ियोड़ो—देखो 'लदायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लदाड़ियोड़ी)

लदाणौ, लदाबौ–क्रि. स. [लदणौ या लादणौ क्रि. का. प्रे. रू.] १ भार या वजन से युक्त कराना।
२ भारी वस्तुओं को वाहन आदि पर रखाना।
३ किसी वस्तु से परिपूरित, पूर्ण या युक्त कराना, आच्छादित कराना।
४ किसी व्यक्ति पर किसी भारी वस्तु को रखाना या बोझ के रूप में पटकवाना।
५ व्यतीत करवा देना।
लदाणहार, हारौ (हारी), लदाणियौ—वि.।
लदायोड़ौ—भू. का. कृ.।
लदाईजणौ, लदाईजबौ—कर्म वा.।
लदाड़णौ, लदाड़बौ, लदावणौ, लदावबौ—रू भे.।

लदायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ भार या वजन से युक्त कराया हुआ. २ भारी वस्तुओं को वाहन आदि पर रखाया हुआ. ३ किसी वस्तु से परिपूरित या पूर्ण कराया हुआ, आच्छादित कराया हुआ. ४ किसी व्यक्ति पर किसी भारी वस्तु को रखाया या बोझ के रूप में पटकवाया हुआ. ५ व्यतीत किया हुआ, कालातीत किया हुआ।
(स्त्री. लदायोड़ी)

लदारौ–सं. पु—गुदा-द्वार।
उ०—इतरौ नाहरी सबद सुणितममी पूंछ पटकि धरती सूं मूंडौ लगाय उछळनै पड़ै, तिसै ल्हैस छोडी। तिका सामी टीकै लागी नै लदारा कांनी पार उतरी। —जगदेव पवार री वात
वि.—लदने वाला।

लदाव–सं. पु.—१ लादने की क्रिया या भाव।
२ बोझ, भार।
उ०—१ लसै प्रताव तावदै लदाव को लदावणी सदैव वेरि मींच वीच मींच को सदावनी। —ऊ. का.
३ छत पाटने की एक क्रिया जिसमें विना धरन या कड़ी के ईंट या पत्थर की जोड़ाई की जाती है।

लदावणौ–वि. (स्त्री. लदावणी)—लदाने वाला।
उ०—लसे प्रताव तावदे लदाव को लदावणी, सदैव वैरि मींच वीच मीच को सदावणी। भिरै अभित्ति भित्ति को सबुज्ज को भवावणी, विनां प्रस्वेद वित्त को कुरोर हां कमावणी। —ऊ. का.

लदावणौ, लदावबौ—देखो 'लदाणौ, लदावौ' (रू. भे.)
उ०—१ सूता सखियां सुख भर नींद, बाहर हेलौ, भंवर कुण मारियौ। औ छै गोरी रैवारी री पूत, करहा लदावण हेलौ मारियौ। —लो. गी.
उ०—२ काती भळै दांती फेरी, लासू वन रा वाडतां। झाड़ जुगत लादां लदावै. ढिगलां टोकी काढतां। —दसदेव
उ०—३ विणजारा रै, लोभी जै मैं होती थारै साथ, गोडी दे'र लदावती, विणजारा रै। विणजारी ए लोभण तोड्यौ चनणिये री रूंख तोड़ सती वा होय रही। —लो. गी.
लदावणहार, हारौ (हारी), लदावणियौ—वि.।
लदाविओड़ौ, लदावियोड़ौ, लदाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लदावीजणौ, लदावीजबौ—कर्म वा.।

लदावियोड़ौ—देखो 'लदायोड़ौ' (रू. भे.) (स्त्री. लदावियोड़ी)

लदियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ भार या वजन से युक्त हुवा हुआ. २ भारी वस्तुओं का वाहनों आदि पर रखा हुआ. ३ किसी वस्तु से परिपूरित, पूर्ण या युक्त हुवा हुआ. ४ किसी व्यक्ति पर भारी वस्तु से दवा हुआ. ५ व्यतीत या कालातीत हुवा हुआ. ७ अधिक कार्य-भार या दायित्व से दवा हुआ.
(स्त्री. लदियोड़ी)

लद्दणौ, लद्दबौ—देखो 'लदणौ, लदबौ' (रू. भे.)
उ०—१ हुअौ नगारौ दूसरौ, भेर भणंकै सद्द। सब आतुर जण दळ सकळ, करण मयंदा लद्द। —रा. रू.
उ०—२ सिलह संदूक सलीतै वद्दं, लद्दै ऊंट चलाए गिद्दं। लारोलार कतारां हल्ली, काती जांण कुरज्झां चल्ली। —गु. रू. वं.
लद्दणहार, हारौ (हारी), लद्दणियौ—वि०।
लद्दिओड़ौ, लद्दियोड़ौ, लद्द्योड़ौ भू० का० कृ०।
लद्दीजणौ, लद्दीजबौ—कर्म वा०।

लद्दियोड़ौ—देखो 'लदियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लद्दियोड़ी)

लद्दू–वि.—वह पशु जिस पर माल लादा जाता है।
उ०—ठाकर मदा दो दी ऊंट राखतौ आयौ। एक मोटी लद्दू ऊंट अर दूजोड़ौ कंवळौ पांगळ। —रातवासौ

लद्ध–वि.—१ मुग्ध, मोहित।
उ०—१ अकबर रत्ता राग सूं. रंग त्रिया रस लद्ध। जौं उतपात प्रगट्टियौ, सो सुणियौ निस अद्ध। —रा. रू.
[सं. लब्ध] २ मिला हुआ।
रू भे.—लिद्ध

लद्धणौ लद्धबौ—देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू. भे)
उ०—१ या अक्खै 'जगपत्ती', छत्री उद्धार धार तीरत्थे। सो लद्धौ अवसांणौ, सद्धौ धीर वीर 'चतुरेस'। रा. रू.
उ०—२ लद्धा भोग वारगना धूरजटी माळ लद्धा, धापै चंटी स्रोण लद्धा भाखै विप्रो वित्र। घड़ा भार गीम लद्धा वावनै आहार लद्धा रांमतेज घांम लद्धा दूसरै 'रतन्न'।
—राव सत्रसाळ री गीत

२ देखो 'लदणो, लदबो' (रू. भे.)

लद्धणहार, हारो (हारी), लद्धणियो—वि.।

लद्धिप्रोड़ो, लद्धियोड़ो, लद्धयोड़ो—भू. का. कृ.।

लद्धीजणो लद्धीजबो—भाव वा.।

लद्धियोड़ो—देखो 'लाभियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'लदियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लद्धियोड़ी)

लधणो, लधबो—देखो 'लाभणो, लाभबो' (रू. भे.)

लध्धणो लध्धबो—देखो 'लाभणो, लाभबो' (रू. भे.)

उ०—१ बीछडतां ही सज्जणां, क्यांही कहण न लध्ध। तिण वेळा कंठ रोकियउ, जांणक सिंघी खध्ध। —ढो. मा.

उ०—२ ढोला मारवणी मुई, तइं सारडी न लध्ध। दीवा-केरी वाटि जिम, खोड़ी-खोडी दध्ध। —ढो. मा.

लप–सं. स्त्री—१ अंगुलियों व अंगूठे को मिलाकर गहरी की हुई हथेली, करतलपुट, आधी अंजली, पसर।

२ उतनी वस्तु जितनी उक्त एक संपुट में आती हो।

उ०—१ वसु पूंगलपति रोकियो वावळां, दियै लप चावळां आस देखै। आप जद पांवडा दिया ऊतावळा, सावळां करी जद राव सेखै। —खेतसी बारठ

३ किसी लचीली छड़ी या बेंत को हिलाने से उत्पन्न शब्द।

४ बरछी तरवार आदि की चमक व गति।

५ ध्वनि विशेष।

मुहा.—लप-लप करणो–बीच-बीच में बोलना।

क्रि. वि.—१ शीघ्रता से।

ज्यूं.—व्हो तो लप देतीरो उठ्यो।

उ०—१ मिरघा जांण मलपिया, लप चीत्तो लाई। 'राघा' 'वाघा रिण रिहा, रिण तेग रचाई। —वी भा.

उ०—२ भटियांणी तो जांणै इणरी ई वाट न्हाळती व्है, बोली बोली लप वहीर व्हैगी। —फुलवाड़ी

रू. भे.—लपक, लफ, लिप, लुप

लपक–सं. स्त्री—१ चमक, कांति।

२ देखो 'लप' (रू. भे.)

लपकणो, लपकबो–क्रि.अ.—किसी वस्तु की प्राप्ति हेतु सहसा उठकर जाना, झपटना, लपकना।

उ०—१ वो जाट पगरखियां रै तैल चुपड़ण सारू थोवली रै गळै बैठो ई हो कै कुत्तो लपक नै चार सोगरा उचकाय लिया। —फुलवाड़ी

उ०—२ वो उण नै खेंच र भूंपा में लिजावणो चावै हो, पण रंभा एक जोर रो झटको दियो अर खट्ट करतां हाथ छुड़ाय दियो हाजरियो काती महीना रा कुत्ता ज्यूं लपक्यो पण नजीक आवतां ईज रंभा उणरा मूंडा पर थच्च कर नै थूक दियो। —रातवासो

२ शीघ्रता से जाना, आगे बढ़ना।

३ तेजी से आना

उ०—खिणेक लागी आंखड़ी, चाली ठंडी वाय। अरक उगण दिस ऊगियो, लपको पाछी लाय। —लू

लपकणहार, हारो (हारी), लपकणियो—वि.।

लपकिअोड़ो, लपकियोड़ो, लपक्योड़ो—भू. का. कृ.।

लपकीजणो, लपकीजबो—भाव वा.।

लपकाणो, लपकाबो—रू. भे.

लपकाड़णो, लपकाड़बो—देखो 'लपकाणो, लपकाबो' (रू. भे.)

लपकाड़णहार, हारो (हारी), लपकाड़णियो—वि.।

लपकाड़ीअोड़ो, लपकाड़ियोड़ो, लपकाड़योड़ो—भू. का. कृ.।

लपकाडीजणो, लपकाड़ीजबो—कर्म वा.।

लपकाड़ियोड़ो—देखो 'लपकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लपकाड़ियोड़ी)

लपकाणो, लपकाबो–क्रि. स.—१ खाना

रू. भे. लपकाड़णो, लपकाड़बो, लपकावणो, लपकावबो

२ देखो 'लपकणो, लपकबो' (रू. भे.)

उ०—१ झपटी नह आंख झबकाई, लेगी नह लपकाई नै। लख लांणत मिनकी नै लागी, उण वेळा नहं आई नै। —ऊ का.

लपकाणहार, हारो (हारी), लपकाणियो—वि.।

लपकायोड़ो—भू. का. कृ.।

लपकाईजणो, लपकाईजबो—कर्म वा./भाव वा.।

लपकावणो, लपकावबो—देखो 'लपकाणो, लपकाबो' (रू. भे.)

उ०—लपसी लपकावै तपसी तावै, आपा सींच उठंदा है। चेली चोळा मन मोळा में, रोळा में रुळदा है। —ऊ. का.

लपकावणहार, हारो (हारी), लपकावणियो—वि.।

लपकाविअोड़ो, लपकावियोड़ो, लपकाव्योड़ो—भू. का. कृ.।

लपकाईजणो, लपकाइजबो—कर्म, भाव वा.।

लपको–सं. पु.—बीच बीच में अधिक बोलने की क्रिया, वाचालता।

उ०—राजाजी चिड़ता थका कह्यो, थूं लपका मत कर। दीवांण वणियां पै'ली घणी अकल लड़ाई तो माथा री नसां तिड़ जावैला। —फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—करणो

रू. भे.—लपूको

२ बड़ा ग्रास।

लपड़—देखो 'लप्पड़' (रू. भे.)

लपड़कनो, लपड़कन्नो–वि. (स्त्री. लपड़कनी)—लम्बे कानों वाला।

लपड़ौ—देखो 'लफड़ौ' (रू. भे.)

लपचप—सं. स्त्री.—१ बीच-बीच में व्यर्थ बोलने की क्रिया या भाव।

२ चंचलता।

क्रि. प्र.—करणौ

रू. भे.—लपझप

लपचड़ौ, लपचेड़, लपचेड़ौ—देखो 'लफड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ पैली वै: विहाल की वात नैं डाढी चोखी वतावैं, जिका ही पछैं वीं वात री माड़ी चुगली करण लाग ज्यावैं। दुनियां री इसौ धारी है, इसी रीत है। जगती रा झूठा जाळ है, पापां रा लपचेड़ पंपाळ है। —दसदोख

उ०—२ व्यां 'रा वेगरणी, विचावळा, रुळपट, लपचेड़ अर जार भायेला भोंदू पटावैं तथा खूब खावैं पीवैं है। —दसदोख

लपचोळी, लपचोली—वि.—लालची, लोभी।

लपझप—क्रि. वि.—१ लालटेन या विद्युत पिंड के अपने आप बुझते समय होने वाली क्रिया।

२ देखो 'लपचप' (रू. भे.)

लपट—सं. स्त्री.—आग दहकने पर जलती हुई वायु का उठने वाला स्तूप। आग की लौ, अग्नि-शिखौ।

उ०—लपटां भरता वासदी नैं ठारैं जैड़ो सी पड़न लागौ। —फुलवाड़ी

२ दीप्ति, कान्ति, शोभा।

उ०—अंग २ में छिव री लपटां ऊपटैं अछैह, पातली निराट तो पिण लागैं समर सी देह। —र. हमीर

३ प्रभाव, असर।

उ०—वात मुदौ सधियां विगर, लागैं लपट न लेस। डहकैं न चित्त डुळावज्यौ, ओ इणमें उपदेस। —र. हमीर

४ तलवार (अ. मा.)

५ वायु का झोंका।

६ गंधयुक्त वायु का झोंका।

उ०—आगैं देखै तौ नीवी सिवालोत सात-वीसी सांइना री साथ सूं झूलैं छै। तिकै केवड़ा, चपेल, अरगजा री पांणी मांहै लपटां आवैं छै। केसर रा रंग सूं पांणी वदळ गयौ, रंग फिर गयौ छै। —वीरमदे सोनगरा री वात

७ चमक।

उ०—लछीरा चहन घण वीज वाळी लपट। क्रोध ममता नता मूढ तज रे कपट। —र. ज. प्र.

लपटणौ, लपटवौ—क्रि अ.—१ किसी एक चीज का दूसरी चीज के चारों तरफ इस प्रकार चिपकना, संलग्न होना कि आसानी से अलग न हो सके।

उ०—सळीयळ वाग सिरूज, वीच सरसाविया। सजैं वसंत नीसांण, दळां दरसाविया। पोहपां सुगंध अपार, लपटि तर वांम है, परिहां कै सुरपुर कैलास, मदन रति धांम है। —पनां

२ स्पर्श करना, छूना।

उ०—१ कटै सिर सूर जूटै धड़ केक, उभै हुय टूक पड़ंत अनेक। पड़ै पग हाथ धरा लपटंत, किळा किर राखस वाळ करंत। —सू. प्र.

उ०—२ वाइ पंखरा जोरसूं नीला घास धरती सूं लपट नै रहिआ छै। आसमांन रैं फेर। जितरा जिनावर चिड़ी कमेड़ी झाट मांहि आवै छै। तितरा झपटां सूं मारिआ जावै छै। —रा. सा. सं.

३ आलिंगन करना।

४ लिप्त होना।

उ०—१ अधर कळी में वैस करि, भवरौ रह्यौ लपटि। जनहरीया जव जीवकौ, सांसौ गयौ समटि। —अनुभववांणी

५ संलग्न होना।

उ०—असैं छाया विरख सूं, हरीया रही लपटि। जैसैं माया ब्रह्म सुं, कैसैं जाय विछटि। —अनुभववांणी

लपटणहार, हारौ (हारी), लपटणियौ—वि०।

लपटिओड़ौ, लपटियोड़ौ, लपटयोड़ौ—भू० का० कृ०।

लपटीजणौ, लपटीजवौ—भाव वा०।

लिपटणौ, लिपटवौ—रू० भे०।

लपटाड़णौ, लपटाड़वौ—देखो 'लपटाणौ, लपटावौ' (रू. भे.)

लपटाड़ियोड़ौ—देखो लपटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लपटाड़ियोड़ी)

लपटाणौ, लपटावौ—क्रि स.—१ चिपकाना, लेप कराना।

२ किसी एक चीज का दूसरी चीज पर चारों तरफ इस प्रकार चिपकाना, लिपटाना या संलग्न करवाना कि आसानी से अलग न कर सके।

३ स्पर्श कराना, छूआना।

४ आलिंगन कराना।

लपटाणहार, हारौ (हारी), लपटाणियौ—वि०।

लपटायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लपटाईजणौ, लपटाईजवौ—कर्म वा०।

लपटाड़णौ, लपटाड़वौ, लपटावणौ, लपटाववौ, लिपटाड़णौ, लिपटाड़वौ, लिपटावणौ, लिपटाववौ—रू० भे०।

लपटायोड़ौ—देखो 'लिपटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लपटायोड़ी)

लपटावणौ, लपटाववौ—देखो 'लपटाणौ, लपटावौ' (रू. भे.)

लपटावणहार, हारौ (हारी), लपटावणियौ—वि.।

लपटाविओड़ौ, लपटावियोड़ौ, लपटाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लपटावीजणौ, लपटावीजवौ—कर्म वा.।

लपटावियोड़ौ—देखो 'लपटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लपटावियोडी)

लपटौ-सं. पु.—१ आटे को घृत से सेक कर गुड़ या शक्कर और पानी के सयोग से वनाया हुआ पेय पदार्थ।

२ वाजरी के आटे को सेक कर वनाया गया तरल पेय पदार्थ।

लपणौ, लपवौ—देखो 'लपकणौ, लपकवौ' (रू. भे.)

लपणहार, हारौ (हारी), लपणियौ—वि०।

लपिओड़ौ, लपियोड़ौ, लप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लपीजणौ, लपीजवौ—भाव वा०।

लपतरौ-स. पु.—मांस सहित त्वचा का टुकड़ा।

उ०—पण वा पूगी-पूगी जितरै तौ एक तरवार ठाकर रौ भेजौ फोड'र कनपड़ा रौ लपतरौ उखेलती खांवा तक जाय पूगी।
—रातवासौ

२ देखो 'लिगतर' (रू. भे.)

लपताभिपता—लुकना, छिपना।

उ०—घर मडण आत रनै गमियौ, काळजै भड ऊकळतौ क्रमियौ। लपता छिपता सँह जांण लिया, अतरै समरू खळ ओळखिया।
—पा. प्र.

लपतोळणौ, लपतोळवौ-क्रि. अ.—लथपथ होना।

उ०—वौ दौडण रौ मन करियौ पण पग तौ ऊठै ई नीं। धग धग लोई सूं उणरौ मूंडौ लपतोळीजगौ। —फुलवाड़ी

क्रि. स.—२ लथपथ करना।

लपतोळणहार, हारौ (हारी), लपतोळणियौ—वि.।

लपतोळिओड़ौ, लपतोळियोड़ौ, लपतोळचोड़ौ—भू. का. कृ.।

लपतोळीजणौ, लपतोळीजवौ—कर्म वा./भाव वा.।

लपतोळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ लथपथ या तरवतर किया हुआ. २ लथपथ या तरवतर हुवा हुआ।

(स्त्री. लपतोळियोड़ी)

लपत्तड़-वि.—फटा-पुराना, जीर्ण-शीर्ण।

लपन-सं. पु. [सं.] १ मुंह, मुख। (ह. नां. मा.)

२ भापण, कथन।

लपना-सं. पु [सं. लपन] जीभ, जिह्वा।

उ०—जीभड़ली घण वरजी न जाय, इव घण वारी ए गोरी, थे वस राखौ ए लपना आपकी जी राज। —लो. गी.

लपर-वि.—वाचाल, वातूनी।

उ०—खीच मुफत रौ खाय, करडावण डूंकर घणी। लपर घणौ लपराय, रांड ऊचकसी राजिया। —किरपारांम

अल्पा.—लपरी

लपरक-सं. पु.—१ सर्प आदि का मुंह से जीभ वार-वार निकालने की क्रिया।

२ वार-वार वीच में वोलने की क्रिया।

३ निरर्थक वात कहने का कार्य।

४ जीभ से चाटने से उत्पन्न ध्वनि।

लपरकौ-सं. पु. (व.व. लपरका) १ वार-वार वीच में वोलने की आदत।

२ जीभ से चाटने की क्रिया।

उ०—१ थूं इण वात रौ तूमार देखणौ चावै तौ रात रा सूतोड़ा रा काळजा माथै जीभ रा दो-तीन लपरका लेजै। —फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—लेणौ।

रू. भे.—लपळकौ।

लपरणौ, लपरवौ-क्रि. अ.—१ जिव्हा का वार-वार वाहर निकलना व मुंह में जाना।

२ जीभ से चाटना।

लपरणहार, हारौ (हारी), लपरणियौ—वि०।

लपरिओड़ौ, लपरियोड़ौ, लपरचोड़ौ—भू० का० कृ०।

लपरीजणौ, लपरीजवौ—भाव वा०।

लपराई-सं. स्त्री.—१ वाचालता, लवारपना।

उ०—अदतार दता दीठा अवर, वौह करता वकवाद रै। मौकमा कमंध मोटा मिनख, लपराई नै दाद रै —अरजुणजी वारठ

२ चापलूसी।

उ०—तरै जगदेव कही, कांई ज्यादा दीठी हुवै तौ कहूं नै भूठा लपराई करणी आवै नहीं। —जगदेव पंवार री वात

लपराणौ, लपरावौ-क्रि. स.—१ वार-वार वीच में वोलना।

२ सर्प आदि का वार-वार जीभ निकालना व वापिस मुंह में डालना।

३ निरर्थक वात कहना।

उ०—खीच मुफत रौ खाय, करडावण डूंकर घणी। लपर घणौ लपराय, रांड ऊचकसी राजिया। —किरपारांम

लपराणहार, हारौ (हारी), लपराणियौ—वि.।

लपरायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लपराईजणौ, लपराईजवौ—कर्म वा.।

लपरौ—देखो 'लपर'

उ०—ओछी वोली हाळै पंजाव में वड़णौ पड़ियौ। वठै एक जमी जगां अर पांती-पोळी हाळै लपरै सै लालै रौ छोरौ दाय आयौ।
—दसदोख

(स्त्री. लपरी)

लपळकौ—देखो 'लपरकौ' (रू. भे.)

उ०—पछै कोतवाळ घणौ वाद करचौ तौ लक्खूं नैं वारां मूंडा सांम्ही पग करणौ ई पड़चौ। कोतवाळ निसंक लपळका लेय लेय उणरी पगथळी जीभ सूं चाटण लागौ। —फुलवाड़ी

लपलप–सं. स्त्री.—१ वार वार वोलने की क्रिया।

२ जीभ से पेय पदार्थ पीने वाले जानवरों के मुख से उत्पन्न ध्वनि।

लपलपाट—१ लपलपाने की क्रिया या भाव।

२ किसी चमकीली वस्तु को हिलाने से उत्पन्न चमक।

३ व्यर्थ की वकवाद, वकझक।

लपसी—देखो 'लापसी' (रू. भे.)

उ०—१ लपसी लपकावै तपसी तावै, आपा सीच उठंदा है। चेली चेलां में मन मोळां में गोळां में रूठंदा है। —ऊ. का.

लपाक–क्रि. वि.—शीघ्रता से, तुरंत।

उ०—लुळि लुळि लपाक झोटा लिवै, ऊंचा नीचा आवता। नमीं नमीं नाक अमली निलज, जमीं लगावै जावता। —ऊ. का.

लपादार—१ वह वस्त्र जिसमें सुंदर चमकीला लप्पा लगा हो।

उ०—१ गोरै कंचन गात पर, अंगिया रंग अनार। लहंगौ सोहै लूचकतौ, लहरचौ लपादार। —र. हमीर

रू. भे.—लपेदार, 'लप्पेदार', लफादार।

लपालप, लपालपी–क्रि. वि.—शीघ्रता से, झटपट, तेज गति से।

उ०—थोड़ी ताळ तांई सगळा मुखिया आंख्यां मीचनै वैठा रह्या तौ वौ लपालप सगळा भूंपा रै लाय लगाय दी। —फुलवाड़ी

२ देखो 'लपलप'

उ०—सगळै पूछण आवता पण दुणदुणी वजाय र टरकंत। ग्यांन रा आग्रीटांण हुयोड़ा हा। पराये दुःख में पड़नै री चेतना होती, ओ को हीनी। खाली मूंडै री लपालपी ही। —वरसगांठ

लपी—देखो 'लप्पौ' (अल्पा. रू. भे.)

लपूकौ—देखो 'लपकौ' (रू. भे.)

लपेक–वि. [लप+एक] करीव एक पसर में समा जावै इतना।

लपेट, लपेटण–सं. स्त्री.—१ लपेटने की क्रिया या भाव।

२ लपेटने योग्य पदार्थ का एक चक्कर, फेरा या वंधन।

३ वह निशान जो किसी वस्तु को लपेटते या तह करते समय उसके मोड़ पर वन जाता है।

४ ऐंठन, वल, मोड़।

५ घेरा, परिधि।

६ उलझन, फंसाव, पकड़, वंधन, चक्कर।

७ कुश्ती का एक पेंच।

लपेटणी–सं. स्त्री.—लपेटन नामक जुलाहों की लकड़ी।

लपेटणौ, लपेटवौ–क्रि. स.—१ किसी वस्तु को दूसरी वस्तु के चारों ओर घुमाकर इस प्रकार वांधना कि उसका कुछ या पूर्ण भाग ढक जाय, परिवेष्टित करना।

उ०—म्हांरौ मारूड़ौ रमै छै सिकार, सघन वन झंगरा अलवेलियौ हाथ वंदूक लपेटै जामगी, कमर कसी तरवार। —रसीलै राज रा गीत

२ कपड़ा-कागज आदि में वन्द करना, ढकना, आवेष्टित करना।

उ०—ताहरां सिगळा सुणायौ। कह्यौ जी कपड़ै लपेटि नांखि द्यौं। ताहरां लपेटि नै जंगल में नांखि आया। —देवजी वगड़ावत री वात

३ घेर कर रखना, चारों ओर से घेराव करना।

उ०—गज मोत्यां री दांमणी, मुखड़ै सोभा देत। जांणै तारा पंत मिळ, राख्यौ चंद लपेट। —अज्ञात

४ वणाव, शृंगार कराना।

उ०—याका हंस री टोळी, निवायै री होळी, घणौ हाट नै चीरमां लपेटी थकी विराजमांन होइ नै रही छै। —रा. सा. सं.

५ कावू में करना, वश में करना।

६ उलझन या झंझट में फंसाना।

७ आच्छादित करना, ढकना।

उ०—वरियांम सिलह पोसां विचै, भुजा 'अभै' नभ भेटियौ। तदि जांण भांण ग्रीखम तणौ, काळी घटा लपेटियौ। —सू. प्र.

८ किसी वस्तु का लेप करना, पोतना।

उ०—मैड़ी महल चिणावतै, ऊपरि कळी लपेट। चिणत चिणावत ऊठिगै, लगी काळ की फेट। —अनुभववांणी

लपेटणहार, हारौ (हारी), लपेटणियौ—वि.।

लपेटिओड़ौ, लपेटियोड़ौ, लपेटचोड़ौ—भू. का. कृ.।

लपेटीजणौ, लपेटीजवौ—कर्म वा.।

लपेटमौं–वि.—१ जो लपेट कर वनाया गया हो।

२ जिसके ऊपर कुछ लपेटा हो।

३ लपेटने योग्य।

४ घुमावदार या चक्करदार, गूढ़ व्यंग्य।

लपेटियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ किसी वस्तु को दूसरी वस्तु के चारों ओर घुमाकर इस प्रकार वांधा हुआ कि उसका कुछ अंश या पूर्ण भाग ढक जाय. २ कपड़ा कागज आदि में वन्द किया हुआ, ढका हुआ, आवेष्टित किया हुआ. ३ कावू में किया हुआ, वश में किया हुआ. ४ चारों ओर से घेराव किया हुआ. ५ उलझन या झंझट में फंसाया हुआ. ६ किसी वस्तु का लेप किया हुआ. ७ आच्छादित किया हुआ, ढका हुआ. ८ शृंगार कराया हुआ.

(स्त्री. लपेटियोड़ी)

लपेटियो—देखो 'लपेटो' (रू. भे.)

उ०—आगे धरती सांम्हो जोवै तो वीरमदे ने हाथी लपेटीया में छै। तिसै झरोखे वैठ हाथ पसार नै वीरमदे ने ऊंचो लीधो।

—वीरमदे सोनगरा री वात

लपेटो—सं. पु.—१ दाम्पत्य-सूत्र बंधन।

२ सिर पर लपेटा जाने वाला कपड़ा, साफा, पगड़ी।

उ०—१ इसी भांत वरस पांच सीखतां लागा। माथै केसां री भूली रहै नै ऊपरां लपेटो वांधै। वागो, चिलकता वगतर पैरे।

—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

उ०—२ मत करै सोच सोढी महळ, सीस लपेटो सूंपियो। स्रुग लोक साथ रेसां सदा, कमधज चढता यूं कियो।

—वख्तावरजी मोतीसर

३ टोप के नीचे वांधने का कपड़ा।

उ०—जुध चढियो जगमालदे, कर टोप लपेटो। बगतर कूंटा बीड़ीया, धक पोरस घेटो। —वी. मा.

४ षडयन्त्र, जाल।

५ चक्कर, दाव।

उ०—पण सेठांणी पाछो कोई जबाव दियो नहीं, सायद उंघीज गई ही। सेठ ई उठ्या, वत्ती बुझाई, पाळा में नाळाछोड कियो अर रणछोडा नै लपेटा में लेवण री तरकीवां सोचता-सोचता सोयग्या।

—रातवासो

मुहा. लपेटा में आवणी=चक्कर या धोखे में आना।

लपेटा में लैणी=चक्कर में फंसाना।

वि.—लपेटा हुआ, वांधा हुआ।

रू. भे.—लपेटियो

लपैदार—देखो 'लपादार' (रू. भे.)

उ०—सखि लाल चुंनरिया चमकै हरी हरी कंचुकिया तन पै, लहैगा गुल अनार तापर लपैदार नथनी कंटसिरी चुरियां चमकै तैसै ही नूपर चरनन झमकै। —रसीलैराज रो गीत

लपोड़, लपोड़ो, लपोडो, लपोळ—वि.—मूर्ख, नासमझ।

उ०—१ धन रो मोद आयग्यो, मनडी उघाड़ खायग्यो। जाट पूजतो आदमी, लपोडो'र जिद चेतै आयग्यो। — दसदोख

लपो—देखो 'लप्पो' (रू. भे.)

उ०—साळुड़ी मंगाद्यो सांगानेर रो, अजी रंग भीना राजाजी आगण कटारी भांत अनोखी, लाग्यो छै लपा चहुं फेर रो।

—रसीलै राज री गीत

लपोलप—क्रि. वि.—१ शीघ्रता से, जल्दी-जल्दी।

उ०—सूरज री खीझ सूं डरता सगळा तारा लपोलप वडा होवण लागा जको व्हैताई गिया। —फुलवाड़ी

लप्पड़—सं. स्त्री.—हथेली से किया हुआ आघात, थप्पड़, तमाचा।

रू. भे.—लपड़।

लप्पादार—देखो 'लपादार' (रू. भे.)

लप्पी—सं. स्त्री—१ महीनतम, रजकण या धूलि।

२ देखो 'लप्पो' (अल्पा., रू. भे.)

लप्पेदार—देखो 'लपादार' (रू. भे.)

लप्पो—सं पु.—चाँदी या सोना के तार (गोटा) की पट्टी जो कपड़े के किनारे पर लगाई जाती है।

रू. भे.—लपो।

अल्पा.,—लपी, लप्पी।

लफंगो—वि. [फा. लफंग] १ दुश्चरित्र, हीन।

२ लंपट, व्यभिचारी।

३ लुच्चा, वदमाश।

उ०—वीन रै वाप री एक साथी वराती लफंगो वोल्यो—दायजो कठै मेल्यो है? —दसदोख

४ चोर, लुटेरा।

उ०—म्हे तो धोळो-धोळो दूध जांण नै भरोसो कर लियो। ओ तो साचांणी दूध ई निकळियो जे कोई लफंगो व्हैतो तो कैड़ोक भाहेरो सजतो। —फुलवाड़ी

लफ—देखो 'लप' (रू. भे.)

लफड़ो—सं. पु.—१ वंधन।

उ०—मिनख रै हीयै ओळूं री लफड़ो नीं रैवै तो कित्तो सावळ। आ ओळूं तो जांणै अंस ई काढ न्हाकैला। —फुलवाड़ी

२ सांसारिक झंझट, प्रपंच।

उ०—वेटा धन री जड़ इणी भांत हरी व्हिया करै। धन रै सिवाय मिनख रा सै लफड़ा विरथा है। —फुलवाड़ी

३ भूत प्रेत, शैतान।

४ आफत, इल्लत, वला।

रू. भे.—लपड़ी, लपचड़ो, लपचेड़ू, लपचेड़ो, लफरो

लफलफणो, लफलफवो—देखो 'लपकणी, लपकवो'-(रू. भे.)

उ०—१ सांड टोरड्यां टोड, कोड कर कांट किटाळी। लफ लफ लेत बुगाळ, सूंत खेजड़ला डाळी। —दसदेव

उ०—२ तिको पण वाळक री तरह गोटां रै ही वळ घ्यावै छै। किनरा हैकां का तिग तूट गया छै। तिकै रिगसता थका लफ लफ कोट रै जाय जाय कटारी लगावै छै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

लफज—देखो 'लफ्ज' (रू. भे.)

लफटंट—देखो 'लेफ्टीनेंट' (रू. भे.)

लफटटगवरनर—देखो 'लेफटीनेंटगवरनर' (रू. भे.)

लफटंट जनरल—देखो 'लेफटीनेट जनरल' (रू. भे.)

लफरौ—देखो 'लफड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रै तौ ग्रपां मिनखां रै सो लफरा है, दूजा जीवां नै ग्रैड़ी ऊंची वातां सूं कीं लेणौ देणौ नीं। —फुलवाड़ी

उ०—२ दौड़े छांनी दूतियां, लफरा जिण रै लाख। ग्राप तणी कर ग्रंजसियौ, रसियौ पड़दे राख। —वां. दा.

लफादार—देखो 'लपादार' (रू. भे.)

लफ्ज—सं. पु. [ग्र. लफ़्ज] १ शब्द, बोल।
२ वात।
३ वचन।
रू. भे.—लफज, लवज, लब्ज।

लबकणौ, लबकबौ—क्रि. ग्र.—भक्षण करना, खाना।

उ०—१ ऊंचै मुख सूं ऊंट, चूंट चट लूंगा लवकै। गलर गलर गटकाय, डोलती डागां डवकै। —दसदेव

उ०—२ वीज भवकै, मेह टवकै, हीया दवकै, पांणी भभकै, नदी उबकै बनचर लबकै, ग्राभौ ग्रवकै। —रा. सा. सं.

लबकणहार, हारौ (हारी), लवकणियौ—वि.।
लबकिग्रोड़ौ, लवकियोड़ौ, लबक्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लबकीजणौ, लबकीजबौ—कर्म वा.।

लबकियोड़ौ—भू. का. कृ.—भक्षण किया हुग्रा खाया हुग्रा।
(स्त्री. लवकियोड़ी)

लबकौ—सं. पु.—मोटा ग्रास, लौंदा।

उ०—दही रायतै छोंक, मोकळी निमझर देवै। ललचावै सुरराज, भाज लप लबकौ लेवै। —दसदेव
२ ग्रानन्द, रस।

लबड़काणौ, लबड़कावौ—क्रि. स.—१ परेशान या तंग करना।
२ परिश्रम कराना।
३ फटकारना, दुतकारना।

लबड़काणहार, हारौ (हारी), लबड़काणियौ—वि.।
लबड़कायोड़ौ—भू. का. कृ.।
लबड़काईजणौ, लबड़काईजबौ—कर्म वा.।
लवड़कावणौ, लवड़कावबौ—रू. भे.।

लबड़कायोड़ौ—भू. का. कृ.—परेशान या तंग किया हुग्रा. २ परिश्रम करवाया हुग्रा. ३ फटकारा हुग्रा, दुत्कारा हुग्रा।
(स्त्री. लवड़कायोड़ी)

लबड़कावणौ, लबड़कावबौ—देखो 'लवड़काणौ, लवड़कावौ' (रू. भे.)
लबड़कावणहार, हारौ (हारी), लवड़कावणियौ—वि.।
लवड़काविग्रोड़ौ, लवड़कावियोड़ौ, लवड़काव्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लवड़कावीजणौ, लवड़कावीजवौ—कर्म वा.।

लबड़णौ, लबड़बौ—क्रि. स.—फटकारना, डांटना।

लबड़णहार, हारौ (हारी), लबड़णियौ—वि.।
लबड़िग्रोड़ौ, लबड़ियोड़ौ, लबड़्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लबड़ीजणौ, लबड़ीजबौ—कर्म वा.।

लबड़ाक—वि.—वाचाल, बकवादी।

उ०—समर ढिलौ कर सांम नूं, लस ग्रावै लबड़ाक। मूंछ थकां मूंडत जिकै, नाक थकां विण नाक। —वां. दा.

लबड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—फटकारा हुग्रा, डांटा हुग्रा।
(स्त्री. लबड़ियोड़ी)

लबज—देखो 'लफ्ज' (रू. भे.)

लबथब—देखो 'लबालब' (रू. भे.)

लबथबणौ, लबथबबौ—क्रि. ग्र.—१ पूर्ण भरा जाना, लबालब होना।
२ डगमगाना, लड़खड़ाना।
उ०—ग्राज ज सूती निसह भरी, प्रिय जगाइ ग्राइ। विरह भुयंगम की डसी, लबथबती गळ लाइ। —ढो. मा.

लबथबणहार, हारौ (हारी), लबथबणियौ—वि.।
लबथबिग्रोड़ौ, लबथबियोड़ौ, लबथब्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लबथबीजणौ, लबथबीजबौ—भाव वा.।

लबथबियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ पूर्ण भरा हुग्रा, लबालब। २ डगमगाया हुग्रा।
स्त्री. लबथबियोड़ी)

लबद—वि.—मुलायम. कोमल, नम्र।

उ०—धरती री जित्ती वार काळजौ चीरीज वांणियां लागे उत्ती वत्ती नैपै व्है, साख फळै। उणी भांत बादळ रै लवद-लवद व्हिया काळजा में नांनी रा बोल ऊगता गिया ग्रर सागै रा सागै फळता गिया। —फुलवाड़ी

लबधणौ, लबधबौ—क्रि. स. [सं. लब्धं]—प्राप्त करना, पाना।

उ०—१ रुचक नदी सर परवतै, मुझ, लब्बइ मुनि जाय। चैत्य जुहांरइ सासतां, ग्राणंद ग्रग न माय। —स. कु.

उ०—२ पण ग्रपणौ नहीं पालटै, घरिमी धीरज धार। लाद्व हरि लब्बइ लह्या, तजिया ढंढण त्यार। —ध. व. ग्रं.

लबरौ—देखो 'लपर'
(स्त्री. लबरी)

लबलबी—सं. स्त्री.—वंदूक, पिस्तौल, तमंचा ग्रादि में लगा वह खटका जिसको खीचने से वंदूक का घोड़ा गिरता है।
रू. भे.—लबलबी।

लवलवौ-वि,—किसी तरल पदार्थ से तरवतर ।

लवांणा-सं. पु.—मुसलमान भाटों की एक जात । (मा. म.)

लवाड़ी—देखो लवाळी' (रू. भे.)

लवाड—देखो 'लवाळी' (मह., रू. भे.)

उ०—निरधन उचंड तौ मसांण खंभ, खाटरौ तौ ही नांग, घणूं बोलइ तौ लवाड वाडलौ न वोलइ तौ मूंगड । —व. स.

लवादौ-सं. पु. [फा. लवादः] जाड़ों में पहनने का रूईदार चोगा, दगला ।

लवायचौ-सं. पु. [फा. लवाचः] कुर्त्ते आदि पर पहनने का वस्त्र विशेष ।

उ०—१ तो ही तद रिणमलां रै घरै इसड़ी वडावड हुती । लवायचौ सिआळै जैताजी री मेलियौ पहरता ।

—राव मालदे री वात

उ०—२ बहादुरसिंघजी रै नागोरी धमाकौ खवां में रहतौ । लोहरी मूठ रातै नाळ री तलवार गळडवै रहती । अघोड़ी री गळडवौ रहतौ । नव पलां री मीथौ रहतौ । दस पलां री लवायचौ रहतौ । —बां. दा. ख्यात

लवार—देखो 'लवाळी' (मह., रू. भे.)

लवारी, लवाळ, लवाल—देखो 'लवाळी' (रू. भे.)

उ०—१ हम नहिं चलें तुमारै घरन कौ, तुम ही वहुत लवारी । मीरां कै प्रभू गिरधर नागर, चरन कमळ बळिहारी । — मीरां

उ०—२ न करै वहु हास्य लवाल, कलहौ घणूं काल । उखेलौ मती करौ ए, दंभ नै कदागरौ ए । —जयवांणी

उ०—३ रांड निपूतादिक एहवी, दीधी दुरासी रे गाल । भूंडी गाल कुलक्षणी, निस दिन करै लबाल । —जयवांणी

(स्त्री. लवारण)

लबालब-वि. [फा. लब] १ मुंह या किनारे तक भरा हुआ, छलकता हुआ ।

रू. भे.—लवथव ।

लवाळी-वि.—१ अधिक बातें करने वाला, वाचाल ।

२ मिथ्यावादी, झूठा, गप्पी ।

रू. भे.—लवाड़ी, लवारी, लबाळ, लवोळ, लबोल, लवाल, लावाळी, लिवाळी ।

मह.—लवाड, लवार ।

लवूकणौ, लवूकबौ-क्रि. अ.—हरा-भरा होना, लहलहाना ।

उ०—थळ मध्यइ जळ-बाहिरी, कांई लबूकी वूरि । मीठा-बोला घण-सहा, सज्जण मूक्या दूरि । —ढो. मा.

लवूकणहार, हारौ (हारी), लबूकणियौ—वि० ।

लवूकिओड़ौ, लवूकियोड़ौ, लवूक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लवूकीजणौ, लवूकीजबौ—भाव वा० ।

लवूकियोड़ौ-भू. का. कृ.—लहलहाया हुआ ।

(स्त्री. लवूकियोड़ी)

लवूर-सं. पु.—नाखूनों से नोचने की क्रिया या भाव ।

क्रि. प्र.—भरणौ ।

लबूरणौ, लबूरबौ-क्रि. स.—नाखूनो से नोंचना ।

उ०—अैड़ा अन्याई राजा सूं बदळौ नी लिरीजै जित्तै औ इकळापी सुख म्हनै ठौड़ ठौड़ सूं लवूरै । —फुलवाड़ी

२ छीनना, झपटना ।

उ०—थांरै कीं भूंडी-भली व्हैगी तौ इण लिछमी नै लोग लवूर लवूर खाय जावैला । —फुलवाड़ी

लवूरणहार, हारौ (हारी), लवूरणियौ—वि. ।

लवूरिओड़ौ, लबूररियोड़ौ, लबूरयोड़ौ—भू. का. कृ. ।

लबूरीजणौ, लबूरीजबौ—कर्म वा. ।

लबूरियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ नाखूनों से नोचा हुआ । २ छीना हुआ ।

(स्त्री. लवूरियोड़ी)

लबोळ, लवोल—देखो 'लवाळी' (रू. भे.)

उ०—ऊंचौ तौ एरंड, खाटरौ तोहि नाग, घणौ भोळौ लांफूं, वहु वोलै तौ लवोळा । घणौ जीमै तौ भूखौ थोड़ौ जीमै तौ अभोगियौ ।

—रा. सा. सं.

लब्ज—देखो 'लफ़्ज' (रू. भे.)

उ०—पण कसाई री नीच जात, फेर औरंगजेबी बादसाही सो आंधा हुवा वहे । सो मुंह सूं गैर लब्ज बोलिया अर गाय नूं पछाड़ी ।

—महाराजा पदमसिंह री बात

लब्ध-वि.—१ मिला हुआ, प्राप्त ।

यौ.—लब्ध कांम, लब्ध-प्रतिस्थित, लब्धवरण ।

२ कमाया हुआ, उपार्जित ।

३ गणित में भाग करने पर प्राप्त भागफल ।

४ स्मृति के अनुसार दस प्रकार के दासों में से एक दास ।

लब्धक-सं. पु.—१ राजपूतों के ३६ कुलों में से एक ।

उ०—राजकुली ३६, सूरयवंस, सोमवंस, यादववंस, कदंब, परमार इक्ष्वाक, चाहुमांन, चालुक्य, मोरी, सेलार, सैंघव, विंदक, चापोत्कट प्रतिहार, लब्धक, राष्ट्रकूट, सक, करवट, कारट, पाल, चांदिल, गोहिल, गुहिल पुत्रक, धान्यपाल, राजपाल, अनंग, निकुंभ दधिकर, कालामुह, दापिक, हूण, हरियर, डोसमार । —व. स.

लब्धवरण-सं. पु. यौ. [सं. लब्ध+वर्ण] पंडित, ज्ञानी ।

रू. भे.—लवधवरण, लवधवरण ।

लब्धि-सं. स्त्री.—१ प्राप्त-होने की अवस्था या भाव, प्राप्ति ।

२ लाभ, फायदा ।

३ (गणित) में भागफल ।

४ शुभ अध्यवसाय तथा उत्कृष्ट तप, संयम के आचरण से तत्तत्कर्म का क्षय और क्षयोपशम होकर आत्मा में उत्पन्न एक विशेष शक्ति जो २८ प्रकार की मानी गई है।

उ०—गौतम गणधर गुण निलौ, लब्धि तणौ भडार। चवदे सौ बावन सहु, नमता जय जयकार। —जयवाणी

रू. भे.—लवधि

लब्धिवत-वि. [सं.] जिसने लब्धि प्राप्त करली हो।

उ०—कुसल करण स्री कुसल मुणिंद, स्री जिनपदम सूरि सुखकंद। लब्धिवंत स्री लब्धि सूरीस, स्री जिनचंद नमूं निस-दीस। —स. कु.

वि. वि.—देखो 'लब्धि'

लब्भणौ, लंब्भवौ—देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू. भे.)

उ०—१ आलम मोरा ओगुणा, माहिब तूझ गुणांह। वूंद-विरंक्खा रेण-कण, थाघ न लब्भौ त्याह। —ह. र.

उ०—२ 'अवर' आपाणी छभा, कीवौ त्रंसि विचार। पोरस पार न लब्भ ही, उत्तर पंथ अपार। —गु. रू. वं.

लब्भणहार, हारौ (हारी), लब्भणियौ—वि० ।

लब्भिओड़ौ, लब्भियोड़ौ, लब्भ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लब्भीजणौ, लब्भीजवौ—कर्म वा०

लब्भियोड़ौ—देखो 'लाभियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लब्भियोडी)

लभणौ, लभबौ—देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू. भे)

उ०—सुणि कहै सुभड़ मंत्री मकळ, लड़ौ वडौ मौ सम लभौ। सुण एम वयण 'अगजीत' सुत, अजरायल बोलै 'अभौ'। —सू. प्र.

लभणहार, हारौ (हारी), लभणियौ—वि० ।

लभिओड़ौ, लभियोड़ौ, लभ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लभीजणौ, लभीजबौ—कर्म वा० ।

लभस-सं. स्त्री.—१ घोड़ा बाधने की रस्सी ।

२ धन-दौलत ।

३ याचक ।

लभियोड़ौ-भू. का. कृ.—देखो 'लाभियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लभियोड़ी)

लभौ-वि.—१ लाभ, फायदा ।

२ मिला हुआ, प्राप्त ।

लम्भणौ, लम्भवौ—देखो 'लाभणौ, लाभवौ' (रू. भे.)

उ०—१ मूरख मौलि न जांणियौ, आ ओोडां री मत्ति। पदम न लम्भै पदमणी, जसमल नेहि गत्ति। —जसमा ओोडणी री वात

उ०—२ पतिसाह नमौ पारंभयं, सैन असंख्या लम्भयं। इम किया रांम आरंभयं, धूंवळिया धर अभ्भय। —गु. रू. वं.

लम्भणहार, हारौ (हारी), लम्भणियौ—वि० ।

लम्भिओड़ौ, लम्भियोड़ौ, लम्भ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लम्भीजणौ, लम्भीजवौ—कर्म वा० ।

लम्भियोड़ौ—देखो 'लाभियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लम्भियोड़ी)

लमछड़-सं. पु.—१ भाला या बरछा ।

२ सांग ।

३ देखो 'लांमछड़ (रू. भे.)

वि.—अधिक लम्बा व पतला ।

लमझम—देखो 'रिमझिम' (रू. भे.)

उ०—और ही झूला रा झूला लमझम करता फूल बाग नूं आवै है लहरिया गावै है। गहरौ गहकै है, डेडरा डहकै है। —र. हमीर

लमटंगौ-वि.—लम्बी टांगों वाला ।

लमतड़ंग—देखो 'लंबतड़ंग' (रू. भे.)

लमेक-क्रि. वि. [अ. लम्हः+ग. एक] कुछ समय तक, क्षण भर ।

लय-सं पु.—१ विनाश, समाप्ति ।

उ०—करता अकरता निरगुण मांई, जाग्रत स्वप्न सुसुप्ती तांई। इन तीनो का मन अभिमानी, उत्पति थिति लय मनमानी। —सुखरांमजी महाराज

२ एक पदार्थ का दूसरे में पूर्ण विलीन होना, समा जाना ।

३ अनुराग या लग्न के कारण एकाग्रचित् या मग्न होना ।

उ०—संभव को अनुभौ धरि जातें, मिटै ममता समता रस जागै। पाप संताप मिटैं तब ही जब, आपसुं आपही की लय लागै। —ध. व. ग्रं.

४ किसी कार्य का आगे कारण में समाविष्ट होना या फिर कारण के रूप में परिणित हो जाना ।

५ सृष्टि का नाश, प्रलय ।

६ लोप, विनाश ।

७ यमसभा में उपस्थित एक प्राचीन नरेश ।

सं. स्त्री.—८ संगीत एव कविता में गति सामञ्जस्य रखने वाला तत्त्व, जो कृत्तियों (कविता-पाठ, गायन नृत्यादि) में आपेक्षिक उतार-चढाव को नियमित रखते हुए उसे कोमलता, माधुर्य एवं सौन्दर्य प्रदान करता है ।

वि. वि.—कविता गीतों (गायन) आदि के स्वर-उच्चारण में जो समय लगता है वही लय है तथा जिसे नियन्त्रित एवं संयम रखने के लिए ताल का सहारा लिया जाता है।

९ गीत की धुन, गाने का स्वर।

१० संगीत में गति के विचार से गाने का ढंग या प्रकार जिसके तीन भेद कहे गये हैं—विलंबित, मध्य, द्रुत।

११ वार्तालाप के समय शब्दों के उतार-चढाव की दृष्टि से बोलने का ढंग या क्रिया, लहजा।

उ०—इतरौ सुणतां ईज आदतन ठाकर री एक हाथ चट मूछां माथै जाय पूगतौ अर जै माथै जोर देय नै ठाकर लंबी लय सूं बोलता जै ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ माताजी री —रातवासौ

१२ अवसर, मौका।

रू. भे.—लौ।

लयण-सं. स्त्री. [सं. लयन] १ लय होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

२ आराम, विश्राम।

३ विश्राम गृह।

४ गुफा, कन्दरा।

लयता-सं. स्त्री.—१ लय होने की क्रिया या भाव, समाप्ति, नाश।

उ०—सिव सक्ति का सब विस्तारा, ब्रह्मा कीट लग कर रे। इनमें ई उत्पत्ति थिति अरु लयता, निज स्वरूप निरपख रे। —सुखरांमजी महाराज

लयनपुन्न-सं. पु. यौ. [सं. लयन+पुण्य] जगह या स्थानादि दांन में देने से होने वाला पुण्य। (जैन)

लयलीन-वि. यौ. [सं. लय+लीन] १ किसी के प्रेम में मग्न, लीन, आशक्त।

उ०—माया-जळ-मांहि मच्छरिउ, लागि रहिउ लयलीन। गंगा-तटि मूकी गली, हूं मारिसि मन-मीन। —मा. कां. प्र.

२ लगा हुआ, फंसा हुआ।

उ०—महारौ महारौ करि धन मेलवूं, लोभ वसे लय-लीन। नरक तणां घर घूं छ्ूं नवनवा, इणमें मेख न मीन। —ध. व. ग्रं

३ देखो 'लवलीन' (रू. भे.)

लया—देखो 'लता' (रू. भे.) (जैन)

लयाकत - देखो 'लियाकत' (रू. भे.)

लरड़—१ देखो 'लड़ड़' (रू. भे.)

उ०—अंनदाता, आप किसौ विस्वास करौला—इत्तौ ऊंचौ अेलम के फगत दोय घड़ी में वेंत-बेंत लांबा बाळ आय जावै। सेवां ज्यूं लरड़-लरड वधै। —फुलवाड़ी

लरड़ती—देखो 'लरड़ी'

लरड़ियौ-सं. पु.—१ भेड़ का वच्चा।

२ देखो 'लरड़ौ' (अल्पा., रू. भे)

लरड़ी-सं. स्त्री.—१ मादा भेड़।

२ लाक्षणिक अर्थ में अधेड़ स्त्री के लिए प्रयुक्त शब्द।

मुहा.—१ लरड़ी वणणौ=कायर बनना, डरपोक बनना।

२ लरड़ी माथै ऊन कुण छोडै=गरीब का सब शोषण करते हैं।

लरड़ौ-सं. पु. (स्त्री. लरड़ी) १ नर भेड़।

उ०—व्हा व्हैगी इणरै हाथां न्याव? अेड़ी न्याव निवेड़ण जोग अकल व्हैती तो तड़ौ लियां लरड़ियां रै लारै ढरर-ढरर करतौ क्यूं रवड़तौ। —फुलवाड़ी

२ लाक्षणिक अर्थ में अधेड़ व्यक्ति के लिए प्रयुक्त शब्द।

ज्यूं—मोटौ सारौ लरड़ौ व्हियौ है।

अल्पा.,—लरड़ियौ, लरडियौ।

लरज-सं. पु.- सितार के छः तारों में से पांचवा तार।

लरडियौ—देखो 'लरड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

लरडौ—देखो 'लरड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लरडी)

लराहा-सं. पु.—सोलंकी वंश के क्षत्रियों की एक शाखा।

(वां दा. ख्यात)

लरियाळ—देखो 'लटियाळ' (रू. भे.)

उ०—इसै में भांगेसुर मंगायजै छै। सू किण भांत छै। केसर री क्यारी दोलळी, वासग-माथा री! थोहर रा वीड़ा री, भाखर रा खुड़ा री, भूरै मोर री, काळै पांन री आवू रा विहड़ां री, भमरमार, मिरघमाळ लरियाळ चिड़ियाळ, चोटड़ियाळ। —रा. सा. सं.

लळ-स. स्त्री—१ उत्कंठा, आशा।

लल-सं. स्त्री.—१ अत्यधिक ठंडी वायु।

२ बुद्धि विचार।

३ शक्ति का अंश।

४ शुभ लक्षण या गुण।

लळक-स. स्त्री.—१ लचक, मोच।

२ झुकाव।

उ०—मकोड़ौ कैवै मां गुड़ री भेली ल्याळ, तेरी टांगां री लळक तो कैवै ही है। —दसदोख

ललक-सं. स्त्री—१ गहरी अभिलाषा।

२ लोच, लचक, झुकाव।

३ प्रोत्साहित करने की क्रिया या भाव।

उ०—१ कलक वीरां ललक भड़ां अहंकारीयां, धारीया खत्रीवट घड़ै घूरै। कळाधर फावियौ ईस वाळै कमळ, भुजा यम ढाबियौ दुरंग भूरै। —पीरदांन आढौ

उ०—२ तौ आरवखा हाथी रै होदै वैठौ ललकां करै है वा कबांण कनै है। —द. दा.

४ गायन की तीखी व ऊँची ध्वनि।

उ०—१ लाग सिघवां ललक, खलक हुक वक धूर्जे खित। करण टूक केवियां, रूक रण रहत रूक रत। —गिरवरदांन कवियौ

उ०—२ सहनाइन लागी ललक सिंधु सुणवाया। —व. भा.

५ पक्षियों का मधुर कलरव, मीठी ध्वनि।

उ०—घुमड़ै कांठळ आय, चढी घनघोर की। ललकां कोयल लार, किलका मोर की। —महादांन मेहड़ू

रू. भे.—ललक्क।

लळकणौ, लळकबौ—क्रि. अ.—१ झुकना, लचकना, मोड़ खाना।

उ०—सोढी रांणी राय चंपेली रौ फूल, मूमल केळू कांमठी। महकण लाग्यौ चंपेली रौ फूल, लळकण लागी केळू कांमठी। —लो. गी.

२ देखो 'ललकणौ, ललकबौ' (रू. भे.)

लळकणहार, हारौ (हारी), लळकणियौ—वि०।

लळकिओड़ौ, लळकियोड़ौ, लळक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लळकीजणौ, लळकीजबौ—भाव वा०।

ललकणौ, ललकबौ—कि. अ.—१ तीक्ष्ण स्वर से गायन करना।

२ तेज व प्रखर हवा की ध्वनि होना।

उ०—ललकत जाभलियां वाजणनै लागी भूखां मरतोड़ी खलकत पड़ भा‍ी। वोरा थळ विहूंणा तिल खळवत तरजै। बूढी चैली नै साधू ज्यों वरजै। —ऊ. का.

३ गर्जना, दहाडना।

उ०—माच घमचक मचक अछक दुहुँ मांझियां, तोड़ सांकळ ललक सीह तूटा। सावळां हुलां बीजूजळां सांफळै, जोध रिणमा 'जैमाल' जूटा। —सेरसिंह कुसलसिंह रौ गीत

४ ढीला पड़ना।

उ०—हियै गाडियौ हार, तुररा तूटा तार। नखां री रेख, दूज चद रै वेख। पेच ललकिया, सिरपेच ढळकिया। कंवर ज्यूं ज्यूं रस री वात जपै 'रतना' री त्यूं त्यूं अंग कपै। —र. हमीर

५ शीघ्रता से किसी की रक्षा के लिए दौडना।

उ०—हुतौ हिंदवां तणौ धरम 'सूरा' हरौ, सवळ चिंता पड़ी देस सारै। दुख मरुधर तणा रखै हिव देखस्या, ललकिया देव जसवंत लारै। —ध. व. ग्रं.

६ देखो 'लळकणौ, लळकबौ' (रू. भे,)

उ०—पद्मिनि हस्तिनी संखिनी चित्रिणी एहवी स्त्री सोल स्रंगार मारी, सुवरणमइ करवइ ढलकतइ, चुडइ खलकतइ, कंकण झलकतइ, हाथ ललकतइ, सीतल गगोदकि हस्तोदक दीधां। —व. स.

ललकणहार, हारौ, (हारी), ललकणियौ—वि.।

ललकिओड़ौ, ललकियोड़ौ, ललक्योड़ौ—भू. का. कृ.।

ललकीजणौ, ललकीजबौ—भाव वा.।

ललक्कणौ, ललक्कबौ, लळक्कणौ, लळक्कबौ—रू. भे.।

ललकार—सं. पु.—१ युद्ध में दी जाने वाली प्रोत्साहन युक्त आवाज।

उ०—वित लीजत, सांभळ अठवळां, दुरवेस चडै अस जोस दळां। हलकार भड़ां ललकार हुवै, चगथा मुख तेज सरेज चुवै। —रा. रू.

२ रणागण में ऊंचे स्वर से किया जाने वाला युद्ध, आव्हान, हाका।

उ०—वड रावत ऊमसिया तिण वेळा, एम सुणै भुज आंमळता। ललकार हुवौ भड आवै लासां, छोडै तेज तुरी छिळता। —गु. रू. वं.

३ कोलाहल, शब्दघोष।

उ०—सरकै के गज घकै सकत्ती, रंज धूंधळी कोळाहळ रत्ती। अति वळ अखभे जूट अपारां लगर प्रवळ कळळ ललकारां। —रा. रू.

४ गायन में ऊंची व तीक्ष्ण ध्वनि।

उ०—गहणां में लड़ाभूंब हुयोड़ी लुगायां री लैण लुहर री ललकार में जिण टेम सांमनै वाळी लैण नै जवाव देवणनै आगै वढती तौ उणा रै पगां रै धम्मीड़ां सूं धरती धूजण लागती। —रातवासौ

५ उत्साहित करने की ध्वनि, होंमला बढाने की आवाज।

उ०—आज वा ललकार सुणीजी। पीढियां सूं दव्योड़ा अभ्यागत अेक जत्थै खमखरी खाय माथौ तांण्यौ। —फुलवाड़ी

६ वायु का प्रवाह।

उ०—भातै पहल भगाविया, लूआं ललकारां। जोड़ां कूआं आविया, धोळां दोपारां। —लू.

७ तेज आवाज, ऊंची आवाज।

उ०—कळकार वीरवांणी कजाक, हलकार दुहुं वळ वाज हाक। धांनक टकार भळकार धोह, ललकार मार अणपार लोह। —वि. स.

मह.,—ललकारौ

ललकारणौ, ललकारबौ—क्रि. स.—१ युद्ध झगड़े या प्रतियोगिता के लिए उच्च स्वर में आव्हान करना।

उ०—१ सत्रां दळ मूगळ सैयद सेख, वणै ग्रह वाज कवूतर वेख।

सरां अप्रमांण पठांण संहारि, लिया कर सैल नरां ललकारि ।
—मे. म.

उ०—२ तद कुंवरसी पूठै लागियौ सारै साथ नूं ललकारै छै ।
—कुंवरसी सांखला री वात

३ जोश दिलाना, उत्तेजित करना ।

उ०—वड़ी खपरियां रा तीर च्यार तौ मूठ में छै अर तरकस दोय होदां में छै। राव राजपूतां नूं विरदावै छै ललकारै छै, सो घोड़ां रा सवार हाथी सूं पांवडां वीस-तीस अगल-वगल ऊभा छै ।
—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ अंवर संवर विण संवर अकुळावै, जळहर वळियां विन जळियां जिय जावै । लोरां लै लूरां मोरां ललकारै, पांसू पड़ियोड़ा आंसू पळकारै ।
—ऊ. का.

४ चुनौती देना।

उ०—नांनी मां अर गूंगी जैडी अणगिण, अलेरूं लुगायां रै सागै करघोड़ा अन्याव उणनै ललकारण लागा ।
—फुलवाड़ी

५ तेजी से हांकना, चलाना ।

उ०—देवर म्हांरा, थे छो निपट नादांन जी म्हारा थे छो निपट नादांन जी, थांरी लीलड़ियां ललकारौ, म्हैं वाला जी नै घोखस्यां ।
—लो. गी.

६ सतर्क करना, सावधान करना ।

उ०—म्हांनै गिणजो मूढ, अमलियां आंगणगारां, करण पर उपकार, लार थांनै ललकारां । निज कीन्हो थे नास, कहो किण रक्षा करस्यो, वात खरी है पण, मौत विन नाहक मरस्यो ।
—ऊ. का.

ललकारणहार, हारौ (हारी), ललकारणियो—वि. ।
ललकारिओड़ो, ललकारियोड़ौ, ललकारयोड़ौ—भू. का. कृ. ।
ललकारीजणो, ललकारीजवौ – कर्म वा. ।

ललकारियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ युद्ध या प्रतियोगिता के लिए उच्च स्वर से आव्हान किया हुआ. २ जोश दिलाया हुआ, उत्तेजित किया हुआ. ३ चुनौती दिया हुआ. ४ तेजी से हांका या चलाया हुआ. ५ सतर्क किया हुआ, सावधान किया हुआ ।
(स्त्री. ललकारियोडी)

ललकारौ–सं. पु. (व. व. ललकारा) १ झूले को हिलाने डुलाने हेतु दिया जाने वाला धक्का ।

उ०—रांणी रैणांदे हींडण वैठया, धरती न झेलै भार, ओजी सूरजजी ललकारौ दिओ, ओ हिंडो गयो गिगनार, ओजी वन खंड में हिंडोळो मांड्यौ, रेसम री पट डोर, ओजी ।
—लो. गी.

२ देखो 'ललकार' (मह., रू. भे.)

उ०—१ दोनूं ही माछिव म्हारी पीठ पाछै खड़ा रहो, ललकारा करो चाकरां री रंग देसो ।
—मारवाड़ रै उमरावां री वारता

उ०—२ सो भैंस रड़कती मुरगी छै । नजीक गयां भरमल री वोल सुणियौ जो ऊभी ललकारा करै छै—'फलांणी भैंस दोहौ । फलांणी री कटी छोट दो ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

लळकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ लचका हुआ, झुका हुआ, मोड़ खाया हुआ ।
२ देखो 'ललकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लळकियोड़ी)

ललकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ ऊंचा व तेज स्वर में गायन किया हुआ. २ उत्साहित किया हुआ, जोश दिलाया हुआ. ३ आक्रमण किया हुआ. ४ ललकारा हुआ. ५ शीघ्रता से किसी की रक्षा के लिए दौड़ा हुआ ।
६ देखो 'लळकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. ललकियोड़ी)

लळकौ–सं. पु.—मस्ती में झूमने की क्रिया या भाव ।

उ०—१ जै राजा इण भांत लळका देता फिरै तौ वे राजा ई कांई ।
- फुलवाड़ी

२ नमने या झुकने की क्रिया या भाव ।

उ०—जसरी तुल पगदै लळका ले जावै, हीरा मांणक सब हळका व्है जावै । धिनधिन दाता जग माना मग धाया, जननी जसधारी वारी जिण जाया ।
—ऊ. का.

ललकौ–सं. पु.—गायन की तेज ध्वनि या लहर ।

रू. भे.—ललक्को ।

ललक्क—देखो 'ललक' (रू. भे.)

उ० – हव मुरस ललक्क कलक्क हली, नव लक्ख थई चख लक्ख लली । भड़ खल्ल फगल्ल वगल्ल भड़, घड़ लल्ल पगल्ल नहल्ल घड़ं ।
—पा. प्र.

लळक्कणौ, लळक्कवौ—देखो 'ललकणौ, ललकवौ' (रू. भे.)

उ०—लळक्कै गजां पोगरां नाळ लोभा, गलक्कै मुखां सूरमां भांग सोभा । गुड़ै वैदळां आगळा तोप गाडा, जठै वांण गोळां सराजांम जाडा ।
—सू. प्र.

ललक्कणौ, ललक्कवौ—देखो 'ललकणौ, ललकवौ' (रू भे)

उ० – तुरकांण तलक्किय हिन्दु ललक्किय हूर हलक्किय हेरि वरं । कर सेल भळक्किय ढाल ढळक्किय खाळ खळक्किय स्रोन भरं ।
—ला. रा.

ललक्कणहार, हारौ (हारी), ललक्कणियो—वि० ।
ललक्किओड़ो, ललक्कियोड़ौ, ललक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
ललक्कीजणौ, ललक्कीजवौ—भाव वा० ।

लळक्कणहार, हारौ (हारी), लळक्कणियौ—वि० ।

लळक्किअोड़ौ, लळक्कियोड़ौ, लळक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लळक्कीजणौ, लळक्कीजबौ—भाव वा० ।

लळक्कियोड़ौ—देखो 'ललकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लळक्कियोड़ी)

ललक्कियोड़ौ—देखो 'ललकियोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री. ललक्कियोड़ी)

ललक्कौ—देखो 'ललकौ' (रू. भे.)

उ०—लेण कंत अच्छरा गैणांग माग आवा लागी, पूरां सूरां वीरां सूं जमावा लागी प्रीत । ललक्का उछट्टै भैरूं चंडका रमावा लागी, गावा लागी जोगणी वीरांण मंत्र गीत । —सुखदांन कवियौ

ललचणौ, ललचबौ—क्रि. अ.—१ लालच में पड़ना, लोभ उत्पन्न होना ।

उ०—हियै बसाई हरखसूं, मधुसूदन महाराज । नर जिणसूं ललचै नहीं, सो त्रिभुअण सिरताज । —वां. दा.

२ किसी प्रिय वस्तु को प्राप्त करने हेतु अधीर होना, लालायित होना ।

३ आशक्त या मोहित होना ।

उ०—नैनां लोभी रै वहुरि सकै नहिं आय । रोम रोम नख सिख सब निरखत, ललच रहै ललचाय । —मीरां

ललचणहार, हारौ (हारी), ललचणियौ—वि. ।

ललचिअोड़ौ, ललचियोड़ौ, ललच्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

ललचीजणौ, ललचीजबौ—भाव वा. ।

लंचणौ, लंचबौ, ललच्चणौ, ललच्चबौ—रू. भे. ।

ललचाड़णौ, ललचाड़बौ—देखो 'ललचाणौ, ललचाबौ' (रू. भे.)

ललचाड़णहार, हारौ (हारी), ललचाड़णियौ—वि. ।

ललचाड़िअोड़ौ, ललचाड़ियोड़ौ, ललचाड़्योड़ौ—भू. का. कृ ।

ललचाड़ीजणौ, ललचाड़ीजबौ—भाव वा. ।

ललचाड़ियोड़ौ—देखो 'ललचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ललचाड़ियोड़ी)

ललचाणौ, ललचाबौ—क्रि. अ.—१ लालच या लोभ में पड़ना ।

उ०—लोभै ललचांणा थकौ, मत लागि लपट्टां, काळ तकै सिर ऊपरै करसी चटपट्टां । ले जासी इक छिन में ज्यूं वाउ छलट्टा, राहगीर संध्या समै सौवे इकहट्टा । —घ. व. ग्रं.

२ कोई प्रिय वस्तु की प्राप्ति हेतु अधीर होना, लालायित होना ।

उ०—१ नैनां लोभी रै बहुरि सकै नहिं आय । रोम रोम नख-सिख सब निरखत, ललच रहै ललचाय । —मीरां

उ०—२ तौ भुज पर दिली तखत, अरि क्यूं तक्कत आय । फीटा पड़ घर ग्या फकत, चित जरमन ललचाय । —जैतदांन वारहठ

३ आशक्त होना, मोहित होना ।

उ०—हुय नार सुहग्गा, मिळियौ मग्गा, दांणव पग्गा रच दग्गा । ललचायौ ठग्गा, नाचण लग्गा, सीस करग्गा विणसंतू । —भगतमाळ

४ ऐसा कार्य करना कि जिससे किसी के मनमें कोई वस्तु प्राप्त करने हेतु लोभ या लालच उत्पन्न हो ।

उ०—वेग सिकंदर वचन सिवाई, जवन इनायत तणौ जमाई । इणरै कौल मिळण कै आया, लेखे रीत किता ललचाया । —रा. रू.

५ उमंगित होना, उमंगयुक्त होना ।

क्रि. स.—६ अपने रंग-रूप या हाव-भाव से किसी को मोहित करना या आसक्त करना ।

ललचाणहार, हारौ (हारी), ललचाणियौ—वि. ।

ललचायोड़ौ—भू. का. कृ. ।

ललचाईजणौ, ललचाईजबौ—कर्म वा. ।

ललचाड़णौ, ललचाड़बौ, ललचावणौ, ललचावबौ, ललच्चणौ, ललच्चबौ – रू. भे. ।

ललचायोड़ौ—भू का. कृ.—१ लालच या लोभ में पड़ा हुआ. २ कोई प्रिय वस्तु प्राप्त करने हेतु अधीर हुवा हुआ, लालायित हुवा हुआ. ३ आशक्त हुवा हुआ, मोहित हुवा हुआ. ४ ऐसा कार्य करा हुआ कि जिससे किसी के मन में कोई वस्तु प्राप्त करने के लिए लोभ या लालच उत्पन्न हो । ५ किसी प्रिय वस्तु की प्राप्ति के लिए अधीर या लालायित किया हुआ. ६ उमंगित हुवा हुआ. ७ अपने रंग-रूप या हाव-भाव से किसी को मोहित किया हुआ या आशक्त किया हुआ ।

(स्त्री. ललचायोड़ी)

ललचावण, ललचावणी—सं. स्त्री.—ललचाने की क्रिया या भाव, लालायित होने की क्रिया या भाव ।

उ०—खवास आय कंवर नै हकीकत कही । वावनां चंनण के विडै अैहे रूप मिळजै तो सही । जठै कंवर मनमें तौ आ वात घणी चाही, चौड़े नटवा की सूरत दरसाइ । पाछौ जवाब दियौ अमार तो म्हैं नई रैस्यां, कहस्यौ तौ वावड़ता आवस्यां । म्हांकै तौ तीज को वचन छै, जीसूं पांवणा जास्यां, मन में तौ आ वात छै । औ मेळ तो लाखां ही, वातां मिळाइजै । कवाही तौ सरूपण यां कि ललचा-चावणी देखी ही चाहीजै । खवास पनां नै या हकीकत कही । सुण-तांइ जांण्यौ मन की हूंस मन में ही रही । —पनां

ललचावणौ, ललचावबौ—देखो 'ललचाणौ, ललचाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सकळ चढावै सीस, दांन धरम जिण रौ दियौ । सौ

खिताव वगसीस, लेवण किम ललचावसी।
—केसरीसिंह बारहठ

उ०—२ मोड़ै मुख मोड़ै हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरण नै सीतळ सत वाळी। लुच्चा ललचावै लालच घिन लागै, लोचण जळ मोचण सोचण खिण लागै। —ऊ. का.

उ०—३ सुणै वयण अंगद कळह, सुभड़ सरसाविया, थरक जळ थाळ जिम त्रिकुट जण थाविया। चाळ वाधै धुरा दनुज ललचाविया, अंतवप अकंपन समर सज आविया। —र. रू.

ललचावणहार, हारौ (हारी), ललचावणियौ—वि.।

ललचाविग्रोड़ौ, ललचावियोड़ौ, ललचाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

ललचावीजणौ, ललचावीजवौ—भाव/कर्म वा.।

ललचावियोड़ौ - देखो 'ललचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ललचावियोड़ी)

ललचियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ लालच या लोभ में पड़ा हुआ. २ कोई प्रिय वस्तु प्राप्त करने हेतु लालायित हुवा हुआ. ३ आशक्त हुवा हुआ, मोहित हुवा हुआ।

(स्त्री. ललचियोड़ी)

ललच्चणौ, ललच्चवौ—१ देखो 'ललचणौ, ललचवौ' (रू. भे.)

२ देखो 'ललचाणौ, ललचावौ' (रू. भे.)

उ०—सीहां थाहर सीहरू, हुवा न इचरज होण। कांम 'पता' कमधज्ज रा, सुणण ललच्चै स्रोण। —किसोरदांन बारहठ

ललच्चियोड़ौ देखो 'ललचियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'ललचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ललच्चियोड़ी)

ललणा—देखो 'ललना' (रू. भे)

उ०—ग्वाड़ बिचाळै पींपळी ललणा, ललाजी जै का छै अड़वड़ पांन, प्यारी लागी कुळवहु ललणा —लो. गी.

लळणौ, लळवौ—देखो 'लुळणौ, लुळवौ' (रू. भे.)

उ०—वंका भड़ मुरधर विचै, वळै लळै तज वंक। 'पातल' ताय तपायनै, सीधा किया सणक। —चिमनदांन रतनू

उ०—२ अहप सिर लळ अचळ चळ यळ, वाज हूंकळ कळळ वळवळ। खळळ चळवळ सरित खळ हळ, समळ पळगळ लीध सांमिळ। —र. ज. प्र.

लळणहार, हारौ (हारी), लळणियौ—वि.।

लळिग्रोड़ौ, लळियोड़ौ, लळयोड़ौ—भू. का. कृ.।

लळीजणौ, लळीजवौ—भाव वा.।

लळियोड़ौ—देखो 'लुळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लळियोड़ी)

ललत—देखो 'ललित' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ लुघ चवदह पायं ललत, वलि गुर अति वताइ। गुण सांभळि रीजै गुणी, सग्हा एण सुभाइ। —पि. प्र.

उ०—२ नव नव भांति पटुली नवी, पेखि भावि तै अति भोलवी। ललत गरभेसर लक्षणवंत, मघ माधव रमि वसंत।
—प्राचीन फागु-संग्रह

ललतमुकुट—सं. पु.—डिंगल का एक गीत जो कुंडली या छंद के समान ही दोहे के बाद त्रिभंगी जोड़कर रचा जाता है। हिंदी में इसका दूसरा नाम त्रिभंगी भी है।

उ०—भण दोहे पर छंद त्रिभंगी, सिंघविलोकण सार। ललतमुकुट सो गीत सुलक्षण, वरणै 'मंछ' विचार। —र. रू.

रू. भे.—ललितमुकुट।

ललता—देखो 'ललिता' (रू. भे.)

उ०—पीछोळै आई प्रगट, हीरां उच्छव हेत। बांकी द्रगनि बिलोकतां, ललता मन हर लेत। —वगसीरांम प्रोहित री वात

ललना—सं. स्त्री. [सं.] १ स्त्री, रमणी (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—चंग अनै मुरा चंग वजावै, उडावै गुलाल। लालन जै तजी ललनां, तिण को कवण हवाल। —ध. व. ग्रं.

२ जिव्हा।

३ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, मगण और दो सगण होते हैं।

रू. भे.—ललणा, ललूना

ललपत—सं. स्त्री.—खुशामद, चाटुकारी।

लळभख—सं. पु.—मांस ?

उ०—लळभख सावज लेवतां, होय लत्यौ वत्तै। साजै हाथ कटारियां, मत वाहे खत्तै। —वी. मा.

ललयांगी—वि.—ललितांगी।

उ०—रूप निरोपमी मेदनी, आछा कापड़ भीणइ लंक। ललयांगी घन कूंवली, अहिरघ वाळा निरमळ दंत। —वी. दे.

ललरणौ, ललरवौ—क्रि. स.—१ लड़खड़ाते हुए बोलना।

उ०—वहै इम सेल कढै खग वीज, खळां खग भाट करै घर खीज। उभा घड़ केयक सीस उडंत, लुटै ललरै अरि जेम लुडंत।
—सू. प्र.

२ तुतलाना।

रू. भे.—ललराणौ, ललरावौ, ललरावणौ, ललराववौ

ललराणौ, ललराबौ—देखो 'ललरणौ, ललरवौ' (रू. भे.)

ललराणहार, हारौ (हारी), ललराणियौ—वि.।

ललरायोड़ौ—भू. का. कृ.।

ललराईजणौ, ललराईजवौ—भाव वा.।

ललरायोड़ौ—भ. का. कृ.—१ लड़खड़ाते हुए बोला हुआ. २ तुतलाया हुआ।
(स्त्री. ललरायोड़ी)

ललरावणौ, ललराववौ—देखो 'ललरणौ ललरवौ' (रू. भे.)

उ०—कर कंपै लोयण झरै, मुख ललरावै जीह। मावड़िया जुध में मिळै, पुगतापण रा दीह। —बां. दा.

ललरावणहार, हारौ (हारी), ललरावणियौ—वि.।

ललराविप्रोड़ौ, ललरावियोड़ौ, ललराव्यौड़ौ—भू. का. कृ.।

ललरावीजणौ, ललरावीजवौ—कर्म वा.।

ललरावियोड़ौ—देखो 'ललरयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ललरावियोड़ी)

ळळवळ—सं. स्त्री.—मुड़ने की क्रिया।

उ०—चख आरण धिखता रूप चोळ, क्रीड़ा करंत मधुकर कपोळ। पोगरप लाग ळळवळ अनूप, राग रा रीझिया नाग रूप। —सू. प्र.

ळळवळणौ, ळळवळवौ—१ कोमल व लचिली वस्तु का मुड़ते हुए हिलना।

उ०—१ ळळवळता पोगरां पाय खळहळता लंगर, झळहळता चख झाळ, चोळ भळहळता चाचर। धरा धूळ धकरूळ, करै फूंकार कराळा, ग्रहि उखलै गेंतूळ, तूळ जिम मूळ तराळा। —सू. प्र.

२ मस्ती से झूमना।

उ०—बरबरतां उमरा तुरां आपतां अताई, ळळवळतां सिधूरां त्रंबट वाजतां त्रघाई। जांमगियां जागणी, वहुत लागणी वंदूकां, भरळकतां सावळां, चहूं कांनियां अचूंकां। —वखतौ खिड़ियौ

३ लचकना।

उ०—भींगार भांति भल्ली भड़िज्ज, ळळवळइ अंग लेजम्म लिज्ज। वीदड़ठ चड़िय हइ खत्रीवट्ट, दोखियां सीसि देवा दवट्ट। —रा. ज. सी.

ळळवळौ, ललवलउ, ललवलौ—वि.—कोमल, सुन्दर।

उ०—१ ळळवळ भेवै ळळकता, सुथरै डील सुचंग। भारतवाळी भोम पर, नसल नागोरी रंग। —नारायणसिंह सांदू

उ०—२ अह नव जुव्वण नेमिकुमरू जादव कुल घवलौ। काजल सांमल ललवलउ, सुललिय मुह कमलौ। —प्राचीन फागुन-संग्रह

रू. भे.—लल्लवळ।

ळळवळियौ—वि.—अलबेला, शौकीन।

उ०—आप झरोखै वैठिया, ळळवळिया सिरदार। हाजर रहती गोरड़ी, सज सोळा सिणगार। जी उमराव थांरी सूरत प्यारी लागै म्हारा राज। लो. गी.

ललांम—सं. पु. [स. ललामः] १ घोड़ा।

[सं. ललामम्] २ घोड़े को पहनाए जाने वाला गहना या आभूषण।

३ घोड़े या सिंह की गर्दन के बाल।

वि. [सं. ललाम] १ सुन्दर, रमणीय।

उ०—१ साथ करै 'सिवदत्त' रौ, धन चंद्रा सुरधांम। गुण सीता सत्वर गई, लै गळवांह ललांम। —वं. भा.

उ०—२ हरियौ भरियौ धांन, ऊतरै सदा सतोळौ। ढिगला लगै ललांम धोर धन देवण पोलौ। —दसदेव

२ श्रेष्ठ उत्तम।

३ प्रधान, मुख्य।

४ लाल रंग का।

देखो लीलांम' (रू. भे.)

उ० – गायां-भैंस्यां, सांढयां 'र-ऊंट वोरा लेग्या अर तरवार-बन्दूकां ललांम हुयगी। —दसदोख

लला—सं. पु.—१ एक प्रकार के फूल का पौधा।

उ०—सिव सिसदा व्रख मदार सार लला जाफरा रायवेली गुलाव छवू केवड़ा केतकी जाय धाव —अग्यात

२ देखो 'लालौ' (रू. भे)

उ०—१ जांनै वाला हो लला, फरियाद हमारी सुणाजा। छतियां फटै विरहागन झड़दा, मुखड़ै सै मुखड़ा मिलाजा। —रसीलै राज

ललाई—सं. स्त्री.—लालिमा।

उ०—पिछली दो पहर रात में चोरों के डर से नींद भी न आई ग्रंते में पूरव की तरफ आसमांन में ललाई दिखाई। —दुरगादत्त वारहठ

ळळाक—क्रि. वि.—१ लचक के साथ, लचकता से।

उ०—थोथी करड़ावण राखणवाळा जंगी रूंख चरड़ चरड़ उथळी-जण लागा। लुळताई राखणवाळा कवळा वांटका अठी-उठी ळळाक-ळळाक लुळै पण वांरो कीं नीं विगड़ै। —फुलवाड़ी

ललाड़—देखो 'ललाट' (रू. भे.)

मुहा.—तिलक री वेळा ललाड़ पाछौ करणौ=अवसर खो देना।

ललाट—सं. पु. [सं. ललाटं] १ माथा, मस्तक, भाल।

उ०—तठै आगवो खाग हूं छाग तोड़ै, चंडी काळिका मातरै स्रोण चौड़ै। लगावै सवे सेस विंदी ललाटां, करै फेर विस्रांम पावै कपाटां। —मे. म.

२ भाग्य, तकदीर। (डिं. को)

३ भाग्य में लिखी हुई बात।

पर्याय—भाळ, भोवरी, अलिक, ताळी, गोधि, नसीव, करम, भाग, तकदीर, चाचर, अळीक,

रू. भे.—नलाड, नलाळ, निलाड़, निळाड़ी, निलाट, निलाटी, निलाड, निळाडी, निल्लाट, ललाड, ललाटी, लिलाड, लिलाड़ी, लिलाट, लिलार

अल्पा.—लिलाड़ी, लीलाड़ी।

यौ.—ललाट-पटळ, ललाट-पट्ट, ललाट-पट्टिका, ललाट-रेखा, ललाट-लेख।

ललट-पटळ-सं. पु. यौ. [स. ललाट+पटल]—माथे का तल, भाल।

ललाट-रेखा-सं. स्त्री. यौ. [सं. ललाट+रेखा]—भाग्य की रेखा, प्रारब्ध।

ललाटाक्षि-सं. स्त्री. [सं.] एक राक्षसी जो अशोक वन में सीता के संरक्षण हेतु नियुक्त की गई थी।

ललाटि देखो 'ललाट' (रू. भे.)

उ०—राजांन जांन संगि हुंता जु राजा, कहै सु दीघ ललटि कर। दूरा नयर कि कोरण दीसै, धवळागिरि किना धवळहर। —वेळी

ललाणौ, ललाबौ—देखो 'ललावणौ, ललाववौ' (रू. भे.)

ललाणहार, हारौ (हारी), ललाणियौ—वि।

ललायोड़ौ—भू का कृ.।

ललाईजणौ, ललाईजबौ—भाव वा.।

ललयोड़ौ—देखो ललावियड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. ललायोड़ी)

लळावट-सं. स्त्री झुकना क्रिया का भाव।

उ०—गळोवळ हेक चटा वख गूंथ, लाळावट हेक लुळै हुइ लूंथ चळव्वळ हेक हुआ व्रन चोळ, धारां मुहि हेक दियै धमरोळ —गु. रू. बं.

ललावणौ, ललावबौ-क्रि. स.—टिलाना, फुसलाना।

उ०—रळै रै माथे वोहरां नंदवाणां रो करज, लेवै सु वोहरी रोज मांगण आवै। ताहरां रळौ कहै, 'आज देवां काल देवां।' इण भांत वोहरां नूं रोज ललावै वोहरौ १ कहै, 'रळीया नूं काहूं दवावां'। —वात रळै गढवी री

ललावणहार, हारौ (हारी), ललावणियौ—वि।

ललाविग्रोड़ौ, ललावियोड़ौ, ललाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

ललावीजणौ, ललावीजबौ—कर्म वा.।

ललाणौ, ललाबौ—रू. भे.।

ललावियोड़ौ-भू. का. कृ.—टिलाया हुआ, फुसलाया हुआ।

(स्त्री. ललावियोड़ी)

ललित-सं. पु. [सं. ललितं] १ शृंगार-रस में कामिक हाव या अंग-चेष्टा जिसमें सुकुमारता के साथ भौं, आंख, हाथ, पैर आदि अंग हिलाये जाते हैं।

२ एक विषम वर्ण वृत्त जिसके पहले चरण में सगण, जगण, सगण व लघु, दूसरे में नगण, सगण, जगण व गुरू तीसरे में नगण, नगण, सगण और चौथे में सगण, जगण, सगण जगण होता है।

३ संगीत में षाडव जाति का एक राग जो भैरव राग का पुत्र कहा गया है और जिसमें निषाद स्वर नहीं लगता तथा धैवत और गांधार के अतिरिक्त और सब स्वर कोमल लगते हैं।

४ एक गौंण अर्थालंकार, जिसमें कोई बात छाया के रूप में कही जाती है।

५ एक वार्णिक छंद जिसके प्रथम आठ वर्ण पर यति और फिर १४ (मनु)+१=१५ वर्ण पर यति होती है।

६ बालक।

७ एक गंधर्व जो शाप के कारण राक्षस हुआ तथा 'कामदा' एकादशी का व्रत करने से शाप मुक्त हो गया।

वि.—१ सुन्दर, कमनीय, मनोहर। (अ. मा., ह. नां. मां.)

उ०—१ मधुर वचन छवि चंद मुख, ऊमगै उरज ऊतंग। लीलंबर ढाकै ललित, सुभ कंचन-गिर स्रंग।

—बगसीराम प्रोहित री व्रात

उ०—२ ललित लजीलौ छै, सुभग सजीलौ छै मनोहर इणरी मूरत, कांमणगारी सियावर म्हांनै निरखण दै सखि! प्यारी!

—गी. रां.

२ शुभ, कल्याणप्रद।

उ०—भवसतति ना भय दुख भंजण, पंचम गति दातार रे। त्रिभुवननाथ ललित, गुण तोरा, गावइ देव गंधार रे। —स. कु.

रू. भे.—ललत, ललिय।

यौ.—ललित-कळा, ललित-कांता, ललित-गरभेसर, ललित-त्रिभंगी, ललित-पद, ललित-लता।

ललितकांता-सं. स्त्री. यौ. [सं. ललित+कांता] दुर्गा, देवी।

ललितकीसवर-सं. पु.—हनुमान, पवनसुत। (डि. को.)

ललितगरभेसर-स. पु. [सं. ललित गर्भेश्वर] मनोहर गर्भेश्वर।

उ०—नवनवे लीला विलास रमइ, मुह पूछि जिमि, कजि पूछि पहरइ, खडोखलि तणां पांणी लहरइ, ललितगरभेसर द्रव्य अवनिस्वर, सालिभद्रावतार' मद (न) मुद्रावतार, अस्रांत तंबोल ममरइ, पंच प्रकारि विसयसुख अभाणइ, उगिउ आथमिउ काइ न जांणइ जाइ। —व. स.

ललितमुकुट—देखो 'ललतमुकुट' (रू. भे.)

ललितलता-सं. स्त्री.—माधवी। (अ. मा.)

ललिता-सं. स्त्री. [सं.] १ राधिका की मुख्य आठ सखियों में से एक।

उ०—कहत ललिता वैद बुलाऊं, आवै नंद को प्यारौ। वौ आयां दुख नांहि रहेगो, है मोंहि पतियारौ। —मीरां

२ दक्ष कन्या सती का नामांतर।

३ कृष्ण की पत्नियों में से एक।

४ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तगण जगण और रगण होते हैं।

५ संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

६ रमणी।

७ स्वेच्छाचारिणी स्त्री।

८ कस्तूरी, मुश्क।

९ दुर्गा देवी का रूप।

रू. भे.—ललता, ललित्ता।

ललिताई-सं. स्त्री.—सौंदर्य, सुन्दर।

ललितापंचमी-सं. स्त्री. यौ. [सं. ललिता+पंचमी] आश्विन के शुक्ल पक्ष की पंचमी, जिस दिन पार्वती की पूजा होती है।

ललितासस्ठी-सं. स्त्री. यौ. [सं. ललिता+षष्ठी] भाद्रपद कृष्ण पक्ष की षष्ठी, जिस दिन पार्वती की पूजा होती है।

ललितासप्तमी, ललितासातम-[सं. ललितासप्तमी]—भाद्रपद शुक्ल पक्ष की सप्तमी।

ललितोपमा-सं. स्त्री. यौ. [सं. ललित+उपमा] एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान के समतावाचक पदों का प्रयोग न करके ऐसे पदों का प्रयोग किया जाता है जिनसे समता, मुकाबला आदि के भाव प्रकट होते हैं।

ललित्ता—देखो 'ललिता' (रू. भे.)

उ०—वप सोळह सिणगार वनित्ता, लखण वत्तीस संजुगत ललित्ता। सोभा सारिख किरण सवित्ता, दीपै मंदर राज दुहित्ता। —गु. रू. बं.

ललित्य-सं. पु. [सं.] १ एक राजा जो वायु के अनुसार इंद्रसख अथवा विद्योपरिचरवसु राजा का पुत्र था।

२ कौरवों के पक्ष का एक राजा जिसने अभिमन्यू पर बाणों की वर्षा की थी!

३ एक लोक समुह जो भारतीय युद्ध में त्रिगर्तराज सुशर्मन के साथ उपस्थित था एवं कौरवों के पक्ष में शामिल था। उन्होंने अर्जुन को मारने की प्रतिज्ञा की थी पर अन्त में अर्जुन ने इनका वध किया।

ललिय—देखो 'ललित' (रू. भे.)

ललूड़ौ—देखो 'लालौ' (अल्पा. (रू. भे.)

उ०—पांन फूल नूं जीव तूं, कोमल केलि समांन। ललूड़ौ अति लाडलौ, लालन लीला थांन। —जयवांणी

ललूना—देखो 'ललना' (रू. भे.)

उ०—१ वके दीनताके कितै वैन टेरैं, कवीलै परै काफरां हत्थ मेरे। परे विल्युरै भूमि जाके खिलूना, कहा कैद जांने हमारे ललूना। —ला. रा.

ललोचंपी-सं. स्त्री.—किसी को प्रसन्न या अनुकूल रखने हेतु कही जाने वाली चिकनी-चुपड़ी बात, खुशामद।

उ०—रियासत रा पाणी नूं पूंभै रोवै, अरजन मोजी रा खोज कुण जोवै। पण पाछा पड़ै पूरी ललोचंपी राखै। —दसदोख

क्रि. प्र.—करणी, राखणी।

रू. भे.—लल्लूचप्पू।

मह.—लल्लोचंपी, लल्लोचप्पौ।

१ खुशामद।

उ०—१ भलै भलौ बुरै बुरौ, ललोपतौ लजौ नहीं। प्रभू उचार प्रेम पेख, नेम को तजौ नहीं। —ऊ. का.

उ०—२ जो कही री छोकरी-सहेली क्यूं टुरटुराटी करै तो आप डेरे जाय ललोपतो मुनहारां कर आवै। मन-खांत कही सूं पड़ण न देवै। ऐमी स्यांणी समांमी सी सारी राहणी राजी। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ अमोजीं रावजी कन्है जातो थो। तितरै अभा नूं कह्यौ—म्हारी लाख दुगांणी इण विध री लेहणी छै सू देता जावो। सु अभै तो ललोपतौ घणी करी। —राव मालदे री वात

ललोचंपौ, ललोचप्पौ—देखो 'ललोचंपी' (मह., रू. भे.)

ललोपतौ-क्रि. वि.—१ बिना पता, बेखबर।

२ देखो 'ललोचंपी'

उ०—इतरै गोहिलां पिण आलोच कियो—जो राठौड़ जोरावर सिरांणै आय राजस्थांन माडियो। जो कूं ललोपतौ कीजै तो टिग सकीजै। —नैणसी

ललौ-सं. पु.—१ ल वर्ण या अक्षर।

२ देखो 'लालौ' (रू. भे.)

रू. भे.—लल्लउ।

लल्ल—देखो 'लल' (रू. भे.)

लल्लउ—देखो 'ललौ' (रू. भे.)

उ०—वायस वीजउ नांम, ते आगळि ललउ ठवइ। जइ तूं हुवई सुजांण, तउ तूं वहिलउ मोकळै। —ढो. मा.

लल्लवळ—देखो 'ळळवळ' (रू. भे.)

उ०—१ सेन में सव्वळां, हुई हीलोहळां, जांण निघ्घेजळां, पुळै पाइहळां मल्हपै मैंगळां, सूंड लल्लवळां, आगळी ऊजळा, सेत-दांतूसळा। —गु. रू. बं.

लल्लू—देखो 'लालौ' (रू. भे.)

लल्लू चप्पू—देखो 'ललोचंपी' (रू. भे.)

लवंग–सं. पु. [सं.] लवंग नामक वृक्ष और उसकी कलियां या फूल।
(अमरत) (अ. मा.)

उ०—१ भाग त्रगुण पंकज पर भेळै, मघई पांन छगुण रस मेळै। पाव भाग घरि लवग प्रमांणै, आधै भाग अगाअंक आंणै।
—सू. प्र.

उ०—२ कुण ही पल्लांण्या आसण होड़ा, केइ करहि चडी घइ दह दिसि दोड़ा। केइ मुखि मांणइ तंबोळ लवंग-डोडा।
—रा. सा. सं.

उ०—३ वायक लवंग मसाला बांटे, जीभ सकर मीठम जेम। सौहड़ां कज कोड़ां 'परसा' सुत, आखर तणौ रांमरस प्रेम।
—वसरांम रावळ

२ पुरुष व स्त्रियों के कानों में पहनने के आभूषण विशेष।

उ०—मरद पवसाख भूसण कड़ा मूंदड़ी, क़ंठ डोरी मुरति लवंग कांना। तेमड़ा समोभ्रम खुड़द गेढा तणौ, थांन जाहर थयौ राज-थांनां।
—मे. म.

२ औरतों के नाक में पहनने का आभूषण।

रू. भे.—लवंगि, लविंग, लवींग, लांग, लिवंग, लिविंग, लूंग, लौंग।

लवंगादिचूरण–सं. पु. [सं. लवंगादिचूर्ण] वैद्यक में एक चूर्ण विशेष।

वि. वि.—लौंग कपूर, इलायची. दालचीनी, नागकेशर, जायफल खस सौंठ, काला जीरा, पींपल, अगर, वंशलोचन, जटा-मांसी, नीला कमल, सफेद चंदन, तगर, नेत्रवाला और शीतल मिर्च सब सम भाग मिलाकर यह चूर्ण बनाया जाता है।

लवंगादिवटी–सं. स्त्री [सं.]१ वैद्यक में एक गोली विशेष जो खांसी रोग में सेवन की जाती है।

वि. वि.—लौंग बहेड़े की छाल और काली मिर्च १-१ तोला तथा कत्था ३ तोला मिला बबूल की छाल के क्वाथ में ६ घंटे खरल कर मटर के समान गोलियां बनाई जाती है।

लवंगि—देखो 'लवंग' (रू. भे.)

उ०—लाज-लज्जाळू लक्ष्मणा, लूंणी लसन लवंगि। लीलावंती लुंकड़ी, लाहि लवीरी संगि।
—मा. कां. प्र.

लवंड–सं. पु.—१ दीवाल से उतरी चूने की पपड़ी, लेवड़ा।

उ०—जउ पापी गरभइ आवइ, तउ मात खिहाला खावइ। कइ ठिकरि न खाइ खंड, कइं खायइ भींतं लवंड। —ऐ. जै. का. सं.

२ देखो 'लंड' (रू. भे.)

लव–सं. स्त्री. [सं. लवः] १ भेड़ की ऊन।

२ भेड़ की ऊन उतारने का कार्य।

३ बहुत थोड़ी सी मात्रा, लेश मात्र।

उ०—अर कतराक मूढ भाट विद्या रो लव पाय नव रत्न में आयौ जिको वेताळभट्ट तिणनूं भी भाट कहै। —वं. भा.

४ कवि। (अ. मा.)

५ पंडित। (अ. मा.)

६ काल का एक मान जो ३६ निमेष का माना जाता है।
(डि. को.)

उ०—जिण झालै वळ जोर, जग आहरिण जाड़ेचां। पुहवि कच्छ पंचाळ, गंजि लीधी पटु पेचां। अधिप भीमरै अग्ग, विजय कीधा कई वारां। भड़ सात्रव घण भेटि, किया घड़ पार कटारां। उण सिहदेव रण अग्रणी, लै वळ साथ चउत्थ लव। गरदाय सिबिर दीधौ गरट, जांमिक पण लीधौ सजव। —वं. भा.

७ रामचन्द्र के दो पुत्रों में से कनिष्ट पुत्र का नाम।

८ लवा नामक चिड़िया।

सं. लवं – ९ लवंग, लौंग।

१० सुरा गाय की पूंछ के बाल जिसकी चवर बनाई जाती है।

११ जायफल।

१२ मौका, अवसर।

[अं.] १३ प्यार, मोहब्बत।

१४ देखो 'लिव' (रू. भे.)।

उ०—१ राजा कोड़ निनाणवै, ठेलै ठकुराई। तिण कारण जोगी हुआ, लिव सूं लव लाई। —केसोदास गाडण

उ०—२ नर हर समरतां नह बीतै नांणौ, लवसूं तिको न लेवै। परनारी निरखै कर प्रीतां, दांम हजारां देवै। —र. रू.

वि.—१ किंचित, सूक्ष्म। (अ. मा.)

२ समान, सदृश्य।

३ अत्यन्त अल्प परिमाण।

लवक्कव–वि.—भयभीत।

उ०—दळ सुरितांण जांण डूंगरि दव, कंपी धरा प्रज हुइ लवक्कव। अह सुरितांण आवियउ अवथरि, करन तणा ऊठिय गज केसरि।
—रा. ज. सी.

लवड़ौ–सं. पु.—देखो 'लंड' (रू. भे.)

२ देखो 'लघु' (अल्पा., रू. भे.)

लवण–सं. पु. [सं. लवणं] १ नमक। (डि. को.)

उ०– जिम लवण रहित रसवती, वचन रहित सरस्वती, कंठ रहित गायन। —रा. सा. सं.

[सं. लवणः] २ मधुवन (आधुनिक मथुरा) निवासी एक राक्षस जो मधु नामक राक्षस का पुत्र था तथा जिसका शत्रुघ्न ने वध किया था।

वि. वि.—देखो लवणासुर।

३ समुद्र, सागर। (डि. नां. मा.)

४ एक नरक का नाम।

वि. [सं. लवण] १ नमकीन, खारा।

२ लावण्ययुक्त, सुन्दर।

रू. भे.—लवन, लूंण, लूण, लौंण

लवणजंत्र-सं. पु. यौ. [सं. लवण+यंत्र] औषध बनाने हेतु दो वर्तनों के मुंह जोड़कर बनाया हुआ एक यंत्र विशेष जिसमें एक वर्तन में नमक भरा होता है। (वैद्यक)

लवणत्रय-सं. पु. यौ. [सं. लवण+त्रय] सेंधव, विट, और संचल इन तीन प्रकार के नमक का समूह। (वैद्यक)

लवणधेनु-सं. स्त्री. [सं. लवण+धेनु] नमक के ढेर के रूप में निर्मित एक कल्पित गाय जिसके दान का बड़ा माहात्म्य है। (पौराणिक)

लवणभास्कर-सं. पु.—एक प्रकार का पाचक चूर्ण जो, मदाग्नि में सेवन किया जाता है।

वि. वि.—इसके बनाने में समुन्द्र नमक ८ तोला, काला नमक ५ तोला, कांच लवण, सेंधा नमक, धनिया, पीपल, पीपलामूल, काला जीरा, तेज-पात, नागकेसर, तालीसपत्र, अम्लवेत्र, सब २-२ तोला, कालीमिर्च, जीरा, सोंठ, तीनों १-१ तोला अनारदाना ४ तोला, इलायची और दालचीनी आधा-आधा तोला लेकर सबको मिला-कर कूट कर बारीक चूर्ण किया जाता है।

लवणवरस-सं. पु. [सं. लवणवर्ष] कुश द्वीप के अन्तर्गत एक खंड। (पौराणिक)

लवणसमंद, लवणसमुद्र-सं. पु. यौ. [सं. लवण+समुद्र] पुराणानुसार सात समुन्द्रों में से खारे पानी का समुद्र।

उ०—एहवो जंबू द्वीप महागढ जेम गिरिंद। रवाई रूपे दोइ लख जोयण लवणसमंद। —ध. व. ग्रं

लवणांतक-सं. पु. यौ. [सं. लवण+अंतक] १ लवणासुर नामक दैत्य को मारने वाला, शत्रुघ्न।

२ नींबू।

लवणा-सं. स्त्री—१ दीप्ति, आभा, कान्ति।

२ देखो 'लवल्या' (रू. भे.)

लवणाई-सं. स्त्री—१ लूणी नदी का एक नाम।

२ सुन्दरता, लावण्यता।

लवणाचळ-सं. पु. [सं. लवण+अचल]—१ पहाड़ के रूप में लगाया नमक ढेर जिसका दान देने का बड़ा माहात्म्य है। (पौराणिक)

लवणाकार-सं. पु. यौ. [सं. लवण+आकार]—समुद्र, सागर।

लवणालय-सं. पु. यौ. [सं. लवण+आलय] लवणासुर नामक दैत्य की बसाई गई मधुपुरी जिसे अब मथुरा कहते है।

लवणासुर-सं. पु. [सं.] मधुराक्षस का पुत्र जो लंकापति रावण की मौसी कुंभीनसी का पुत्र था।

वि. वि.—मधु राक्षस ने कठोर तपस्या करके भगवान शिव शंकर से एक शूल नामक शस्त्र प्राप्त किया था जो भगवान शिव के वरदान से लवणासुर की प्राप्त हो गया था। इस शूल के बल से इसने देव, दानव और मनुष्यों को जीत लिया था और अजेय वन गया था। प्रसिद्ध राजा मानधाता का भी वध इसने किया था। महर्षिगण इसके अत्याचार से पीड़ित होकर मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र भगवान की शरण गये। तब भगवान राम महाराज ने शत्रुघ्न को लवणासुर का वध करने के लिए भेजा। जिस समय लवणासुर के हाथ में शंकर द्वारा प्रदत्त शूल न था तब शत्रुघ्न ने इसका वध कर दिया। यह मथुरा का राजा था जिसका दूसरा नाम मधुपुरी भी है। लवणासुर का संहार कर शत्रुघ्न मथुरा का राजा बना।

लवणिम, लवणिमा-सं. स्त्री. [स. लवणिमन्] १ सुन्दरता, सौन्दर्य।

उ०—१ मनमथी ठवीय पयोहर, मोहरसावलि तुंग। लवणिम भरीय अंकुरीय, पूरीय रागि नितंब। —प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ रूपवंत गुण लवणिमा रे, विद्या प्रभूता सार। मदना कारण छै सहू रे, पिण मदन करै लिगार। —श्रीपाल रास

लवणेस्वर-सं. पु. [सं. लवणेश्वर] महादेव का एक नाम।

उ०—लवणेस्वर री क्रपा सूं पांच सै गांवां में अमल कियो। पावागढ रा, सुतरांमपुर रा रांधणपुर रा गांव वीरपुरा दबाया। —वां. दा. ख्यात

लवणोद, लवणोदक, लवणोदधि-सं. पु. यौ. [सं. लवण+उदक, लवण+उदधि]—१ समुद्र, सागर। (डिं. को.)

उ०—मध्य भाग लवणोदधि नै रह्या, जिहां लंक कहवाय, सालूणी द्रव्य उपावण साथै मांनवी, त्यां सुं पूरी रे प्रीत। —वि. कु.

लवणौ-सं. पु.—१ कनपटी।

उ०—अगी धनुस वात जब जांणियै, दीजै खट डंभ क्रिया पिहि-चांणियै। दो लवणै दोइ पाय एक पुनि ताळवै, परिहा गुदड़ी उपरि, एक इणै विध चालवै। —ध. व. ग्रं.

२ एक प्रकार का घास।

लवणो, लववौ-क्रि. अ. [सं. लवनं प्रा. लव] १ पक्षियों का ध्वनि करना, वोलना।

उ०—१ वीज खवइ चातुक लवइ, दादुर तिमरी तेख। विरूहणीआं तनि वेदना, स्रावण सरइ विसेख। —मा. कां. प्र.

उ०—२ आंखि निमांणी क्या करइ, कडवा लवइ निलज्ज। सउ जोइन साहिब वसइ, सो किम आवइ अज्ज। —ढो. मा.

२ गाय का रंभाना।

३ कुत्ते का भौंकना।

उ०—१ हरीया माकट सूकरा, दोउं की परि एक। गयंद चले गय आपनी, कूकर लवौ अनेक। —अनुभववांणी

उ०—२ हाथी हींडत देख, कूकररिया लव-लव करै। वडपरण तणो विवेक, क्रोध न ग्रांणै किसनिया। —किसनिया

४ मेंढक का टर्राना।

उ०—ग्रोडांमरण गर जंत चीह पपीह वडां सिरदर। लवै दादुरा करै, भली वोह भंकर। —पा. प्र.

५ भेड़ की ऊन कतरना।

६ फड़कना।

उ०—१ ग्राघेरू जईनि चीतवि, लोचन माहारूं डावि लवि। जोऊं रहि हसि टलवली, मुनरपि ग्राव्यु पाछु वलि। —नलाख्यांन

लवणहार, हारौ (हारी), लवणियौ—वि।

लविग्रोड़ौ, लवियोड़ौ, लव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लवीजणौ, लवीजवौ—भाव वा.।

लवघवरण—देखो 'लव्घवरण' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

लवघुलउ, लवघुलौ—वि. [सं. लुब्ध] १ ग्रासक्त, लुब्ध।

उ०—कोइल कलिरवि वासइ, मंजरिया सहकार। कुसुम तणइं रसि लवघुला, भमर करइं भणकार। —प्राचीन फागु-संग्रह

लवन—सं. स्त्री.—छेदने की क्रिया या भाव।

उ०—रंगाणी मुभ मतिए रंगइ, समकित नी सहिनांणी। कुमति कमलिनी लवन कृपांणी, दुख तिल पीलण घांणी रे। —वि. कु.

२ देखो 'लवरण' (रू. भे.)

लवना—देखो 'लवल्या' (रू. भे.)

लववांन—देखो 'लोवांन' (रू. भे.)

उ०—भरी सत मत्त गयंदनि सोर, करो फिर पीठ मदत्तिय ग्रोर। हकी सव तोपन जुट्टि लगाय, धुनी लववांन पताकनि छाय। —ला. रा.

लवरू—सं. पु.—एक पक्षी विशेष।

उ०—मन लवरू के पंख है, उनमनि चढै ग्रकास। पग रह पूरे साचकै, रोप रह्या हरि दास। —दादूवांणी

लवल—सं. स्त्री.—ग्रग्नि की ज्वाला।

उ०—कोइ जांण इम कहै, लवल चंदण सम लग्गै। परसै सती सरीर, वर्ण तद नीर वरग्गै। —रा. रू.

लवलवी—देखो 'लवलवी' (रू. भे.)

लवळी—सं. पु.—१ हरफखोरी नाम का वृक्ष या उसका फल।

२ एक विषमवर्ण वृत जिसके पहले, दूसरे, तीसरे ग्रौर चौथे चरण में क्रमशः १६, १२, ८ ग्रौर २० वर्ण होते हैं।

३ एक लता विशेष।

उ०—नैरति प्रसरि निरघण गिरि नीभर, घणी भजै घण पयोधर। भोले वाइ किया तरु भंखर, लवळी दहन कि लू लहर। —वेलि

लवलीन—वि. [स. लय+लीन] १ तल्लीन, तन्मय, मग्न।

उ०—१ गुफा ध्यांन लवलीन गिरोवर, ताळी खुलि उठिया तपेसुर। जांणै निसा ग्रमावस जळधर, माद्रव मैंमट घटा भयंकर। —सू. प्र.

उ०—२ हथणी वरस हजार लग, सांन पांन नही कीन। जितै कियौ गजराज जुध, हरि-चरणां लवलीन। —गज उद्धार

२ देखो 'लयलीन'

रू. भे.—लीलीण।

लवलेस—सं. पु. [सं. लवं+लेश] ग्रत्यन्त ग्रल्प परिणाम या मात्रा, किंचित्।

उ०—ग्रावै इण भासा ग्रमल, वयण सगाई वेस। दग्ध ग्रगण वद दुगणरो, लागै नह लवलेस। —र. रू.

लवल्या—सं. स्त्री.—१ लगन, तन्मयता, एकाग्रता।

२ ग्रभिलाषा, इच्छा।

रू. भे.—लवणा, लवना।

लवाजमौ, लवाजीवौ—स. पु. [ग्र. लवाजिम]—१. राजा महाराणा की सवारी के साथ शोभा वढाने हेतु रहने वाला ठाट वाट व साज सज्जा का सामान (मा. म.)

उ०—१ लवाजमे सूं कुंवर जसवंतसिंह जी नूं परणीजणै मेलिया। —ठाकुर राजसिंह जी री वारता

उ०—२ थारौ घरांणौ घणौ ग्राछौ पण नखै लवाजमौ नहीं। ग्रर ग्राज लवाजमौ विकै छै। ग्रवै थें खेती करो। —पंचमार री बात

२ सामान, सामग्री।

उ०—१ जोधपुर में चाकर रा पेटिया रा टका १२ रोज १ रा पावै। बीजो लवाजमो रांणी हुवै सूं बीजा मेहलां सुं बीवड़ा में टोपावै दस्तूर छै। —नैणसी

उ०—२ स्री कंवरजी नु कंवरपदा रा गांव लवाजमो दीग्रो गांव वीसळपुर सु में संवत १७२४ रा ऊनाळी था दीग्रो नै रु. १ रोजीना माहावदी सुं कर दीयो वागा वा लवाजमो सारो सिरकार था पावै तिण रो जोधपुर री जमैबंधी मैं मंडियो छै —नैणसी

रू. भे.—लाजमौ

लवार—सं. पु.—१ पशु का छोटा वच्चा। (ह. नां. मा.)

उ०—१ सारी गउएं निकस गई यमुना, लेकर संग लवारै। ग्वाळ-बाळ सव द्वारै ठाड़े, ठाईदार तिहारै। —मीरां

उ०—२ तन खेती में चरि चरि जावै, हे नहीं मेरे सारै रे। मिरघा एक पांच है हिरनै, लारि पचीस लवारै रे। —ग्रनुभववांणी

अल्पा.,—लवारियौ, लवारौ, लुवार, लुवारको, लुवारियौ, लुवारौ
२ देखो 'लुहार' (रू. भे.)
उ०—साज लोहरा सांतरा, ताळा करण तयार। किसबी सारा कांमरौ, लीजै सुगड़ लवार। —रमण प्रकाश

लवारको—१ देखो 'लवार' (रू. भे.)
२ देखो 'लुहार' (अल्पा., रू. भे.)
(स्त्री. लवारकी)

लवारणव-सं. पु. [सं. लवार्णव] ४६ क्षेत्रपालों में से ३१वां क्षेत्रपाल।

लवारखाती—देखो 'लुहारखाती' (रू. भे.)

लवारियौ, लवारौ—१ देखो 'लुहार' (अल्पा., रू. भे.)
२ देखो 'लवार' (अल्पा., रू. भे.)

लवावसप्पी, लवावसरपी-सं. पु.—वह जो कर्म-बन्धन को उत्पन्न करने वाले कर्मों के अनुष्ठान से दूर रहता हो। (जैन)

लविंग, लवींग—देखो 'लवंग' (रू. भे)
उ०—१ आरासनउ चूनउ, इमी खांडी। कपूर लविंगा इलायची खदिर-वटिका सहित बीडां कीधां, मुख वासि दीधां। —व. स.
उ०—२ लींव लविंगह लसणीअ, लीवोई लोवांन लूखट लासा लींबरू, लगिथगि लांवां पांन। —मा. कां. प्र.

लवीरौ—१ एक प्रकार की सब्जी।
उ०—लाज-लज्जालू लक्ष्मणा, लूंणी लसन लवंगि। लीलावंती लुंकडी, लाहि लवीरौ संगि। —मा. कां. प्र.

लवेस-सं. पु.—देखो 'लिवास' (रू. भे.)
उ०—जगदेव कहायौ, गैणौ, पोसाख, घोड़ौ, राजा रौ लाजमौ नहीं नै पाळौ तौ इसे लवेस (लिवास) चालणौ आवै नहीं। —जगदेव पंवार री बात
उ०—२ इयां वळे देखनै कह्यौ भाभी जे हिवै ईडौ थाहरै मुंहडा आगै आंणिस्यां तौ थांरै मुंडा आगै तौ जीमस्यां ताहरां साहूकार हुआ वड़ौ लवेस करि थांहेरै स करि वहिल उठ त्यार करि। —चौबोली

लवै—देखो 'लव' १२
उ०—बोल्यौ—आ वात तौ बीलिया खवास री जोड़ायत रै जोग ई करी। थूं साची अेकर तौ वैमाता ई आय भिड़ै तौ लवै ई नीं लागण दे। —फुलवाड़ी

लवौ-सं. पु—१ पतली रस्सी (डोरी) से बंधा पीतल या लोह का बना वह उपकरण जो इमारत बनाते समय दीवार मापने में काम आता है।
२ एक वृक्ष जिसकी कलम बनती है।
३ भूनने से फूला हुआ अनाज का दाना।
४ तीतर से छोटा उसी जाति का एक पक्षी विशेष।
उ०—१ दूसरौ मांस न्यारौ-न्यारौ वणायजै छै। घणा मसाला दीजै छै। लवां रौ मांस होसनाक सुधारै छै। —रा सा. सं.
रू. भे.—लावौ

लस-सं. पु. [सं. लस्] १ एक वस्तु दूसरी के चिपकने का गुण, चिपचिपाहट।
सं. स्त्री.—२ लम्बी लकीर।
वि.—लम्बा, पतला और संकरा।

लसकर, लसकरि-सं. पु. [फा. लश्कर] १ सेना, फौज।
उ०—१ झिलम टोप सूंघी सिर झड़ियौ, पटझर हूं चूड़ामणि पड़ियौ। करि जय घसै नगर मझि लसकर, अटकै नह भिळियौ वरियावर। —सू. प्र.
उ०—२ ताहरां रांमसिंघ जी मुंह रा भारी तिण नूं कह्यौ क्यूं नहीं। आगै लसकर मांहै गया। —द. वि.
उ०—३ लाखां लसकर लार, धरमराज जिसड़ौ धणी। भारत वाळी भार. भीमा अरजुन रै भुजां। —सरूपदास
२ बहुत से व्यक्तियों का समूह, दल।
उ०—१ लड़ालूंम डाळचां लमूटे, जांणै झबरक झूंटणा। ओयण में लसकर लुगायां, छाणां चुगणां चूंटणा। —दसदेव
उ०—२ मिठड़ा सा भोजन वहू बहवड़दे जिमावै, आयौ पितरां रौ लसकर जीमग्यौ। ठंडड़ा सा पांणी वहू लाडलदै पियावै, आयौ पितरां रौ लसकर पी गयौ। —लो. गी.
३ फौज की साज-सज्जा का सामान।
उ०—४ सूरसिंहजी साहयवां कंवरेजी स्रीगजसिंघ जी नै हुकम दीयौ के पातसाह सलांमत आपनै जाळोर सांचोर इनायत कीया है सु थे सारो साथ लै जाळोर जाईजो। नै जाळोर जायनै झगड़ौ कर जाळोर लीजो। तरै जोधपुर सुं फौज लसकर लैर कंवर जी स्री गजसिंघ जी नै सिरदारां में राठौड़ राजसिंघ जी खीमावत सोवायत ले'र जाळोर आया नै गांव गुदरै डेरा किया। —नैणसी
४ सेना का पड़ाव, छावनी।
५ जहाज में कार्य करने वालों का दल।
६ भाला, बरछा।
७ लुटेरा।
उ०—१ अधिक घण झाउ उभाउ अवगाहतां, लसकरां तसकरां पड़चा लारै। धींग गच्छराज री ध्यांन मन ध्यावतां विकट संकट सहू निकट वारै। —ध. व. ग्रं.
उ०—२ जागै जोगणी भय दुख नह व्यापै, पासे ईस पयारै। लसकर तसकर कोय न लागै, चार पहोर नीसतारै। —मालो सांदू

रू. भे.—लसकरी, लसक्कर, लस्कर, लहसंकर, ल्हसकर

अल्पा.,—लसकरियौ, ल्हसकरियौ

लसकरियौ–सं. पु.—१ पति, खाविंद

उ०—१ जाय लसकरिया ने यूं कहै-थारै घर वनड़ी रौ व्यांव सौदागर महंदी राचणी। —लो. गी.

उ०—२ ऊंची तौ खीवै ढोला वीजळी, नीची तौ खींवै छै निवांण जी ढोला ओजी गोरी रा लसकरिया ओळूड़ी लगायर कोठे चाल्या जी। —लो. गी.

२ प्रियतम, प्रेमी।

३ लश्कर में रहने वाला, सैनिक, फौजी।

४ शौकीन।

५. देखो 'लसकर' (अल्पा. रू. भे.)

लसकरी–सं. पु.—१ सेनापति।

२ जहाज सम्बन्धी।

३ देखो 'लसकर' (रू. भे.)

उ०—सुरितांण तणा सेलार सक्ख, लखभूलई ऊपरि लूंबि लक्ख। छेलियउ खेतसी खग्ग छोहि, लसकरी लाख ऊपरइ लोहि। —रा. ज. सी.

लसक्कर—देखो 'लसकर' (रू. भे.)

उ०—अटक पार हूंता जोरावर, आया गयद खरीदण आसुर। विहु दूणां सिरदार बहादर, लारां वार हजार लसक्कर —सू. प्र.

उ०—२ पड़ै जोध जरदेत, पडे वरहास सपक्खर। पड़ै वांण एक लक्ख, सीर 'जिहंगीर' लसक्कर। —गु. रू. वं.

उ०—३ वधियो महवेचौ 'विजो,' सारां सूं अवसांण। खेंम लसक्कर खांन रा, प्रोया सेल प्रमांण। —रा. रू.

लसड़कौ–सं. पु.—१ रगड़, खरोंच।

२ धक्का, झटका।

३ लाक्षणिक अर्थ में किसी कार्य-सिद्धि हेतु दिया जाने वाला सहारा या मदद।

क्रि. प्र.—लागणौ

४ खुशामद, चापलूसी।

क्रि. प्र. लगाणौ

रू. भे. 'लसरकौ'

लसण–सं. पु.—१ प्याज के समान छोटी व सफेद गांठ व उसका पौधा

वि. वि.—एक पौधा विशेष जिसकी पत्तियें (कूंपले) प्याज के समान होती है तथा इसकी जड़ गांठ की तरह होती है। मांसाहारी वर्ग इसका अधिक सेवन करते हैं। इसकी गंध वहुत उग्र होती है, इसी कारण हिन्दुओं में प्रायः वैष्णव इसका सेवन नही करते। वैद्यक में यह वहुत लाभदायक कहा गया है।

उ०—१ वीहै चंदण वावनौ, या लसण के संग। हरीया आंनि कुवासनौ, करै वास कुभंग। —अनुभववांणी

उ०—२ गाजर मूला गिरमिरि, पिंडालू नही नाहि। लसण लसाई डूंगली, तिज परवत अवगाहि। —मा. कां. प्र.

२ जन्म से शरीर पर अंकित लाल रंग का दाग या चिन्ह, लक्षण।

३ मानक का एक दोष जिसे संस्कृत में 'अशोभक' कहते हैं।

४ धूमिल रंग का एक वहुमूल्य रत्न या पत्थर।

रू. भे.–लसणि, लसन, लहण, लहसण, लहसुन, लहस्हन, ल्हसण।

अल्पा.—लसणियौ, लसणीओ, लसुणियौ।

लसणि–सं स्त्री—१ हाव-भाव।

उ०—१ आकरखण वसीकरण उनमादक, परठि द्रविण सोखण सरपंच। चितवणि हंसणि लसणि तणि संकुचणि, सुंदरि द्वारि देहुरा संच। —वेलि

२ देखो 'लसण' (रू. भे.)

लसणियाहिंग–सं. स्त्री. यौ.—एक प्रकार की वनावटी हींग।

लसणियौ—देखो 'लसण' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ लसणिया नील झळक्क, दुजि वंस गोमेदक्क। चत्र असी जाति उचार, जिण वार लूटि जुहार। —सू. प्र.

उ०—२ प्रघळ परोजा नीलवी, मुक्ताफळ ता मांहि। लसत हसत से लसणिया, सोभा कही न जाय। —गजउद्धार

लसणौ—१ एक प्रकार की गाय विशेष।

उ०—कपळा कवळी ने वारै पुचकारै, लाखर लाखर अै आखर मन मारै। हांसी वांसीसी सूकी हिय हारै, ससणी लसणी लख द्वंद-सणीं सारै। —ऊ. का.

२ घर, दर।

लसणीओ देखो 'लसण' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—लींव लविंगह लसणीआ, लींबोई लोवांन। लूखट लासा लीवरू, लगिथगि लांवां पांन। —मा. कां. प्र.

लसणौ, लसबौ–क्रि. अ.—१ शोभित होना, शोभा देना।

उ०—१ करि सिंह वाराह रै तुंड केती, लसै ग्राह चक्री मुखी वाह लेती। लगां नागणी जागणी नींद लोपै, अगां दागणी लागणी भाग ओपै। —वं. भा.

२ युद्ध स्थल से भाग जाना।

उ०—१ समर ढिलोकर सांम नूं, लस आवै लवड़ाक। मूंछ थकां मूंडत जिकै, नाक, थकां विन नाक। —वां. दा.

उ०—२ पाड़ियौ भीम खागां पछटि, गयौ खुरम लसि कुरंग गति। गहतंत एम जीतौ 'गजण', पूरव घर जोधांणपति। —सू. प्र.

उ०—३ लसियौ निवाव कटिया किलम, गह नृप घरि गजगाह रौ। लसकरीखांन लूट लियौ, सोवौ ग्रौरंगसाह रौ। —सू. प्र.

३ लज्जित होना, शर्मिन्दा होना।

उ०—मूरख कथन न मांनियौ, लसियौ मूंछ लजाइ। तोनूं रख न दियौ तखत, दोनूं रखत दिखाइ। —वं. भा.

लसणहार, हारौ (हारी), लसणियौ—वि०।

लसिग्रोड़ौ, लसियोड़ौ, लस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लसीजणौ, लसीजबौ—भाव वा०।

लसन—देखो 'लसण' (रू. भे.)

उ०—लाज-लज्जालू लक्ष्मणा, लूंणी लसन लवंगि। लीलावती लुंकडी, लाहि लरीरी संगि। —मा. कां. प्र.

लसपस—देखो 'लचपच' (रू. भे.)

उ०—ढोला थां जोगी म्हां जोगी करियौ (रे) कसार, थांरै (नै) जीमण नै लसपस लापसी। —लो. गी.

लसरकौ—देखो 'लसड़कौ' (रू. भे.)

लसलसाट, लसलसाहट—सं. स्त्री.—लसीला होने का भाव, चिपचिपाहट।

लसलसाणौ, लसलसाबौ—क्रि. ग्र.—लस से युक्त होने के कारण चिपकना, चिप-चिप करना।

लसलसाणहार, हारौ (हारी), लसलसाणियौ—वि०।

लसलसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लसलसाईजणौ, लसलसाईजबौ—भाव वा०।

लसलसायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ चिप-चिप किया हुग्रा।
(स्त्री. लसलसायोड़ी)

लसलसौ—वि. [ग्रनु] लसदार, लसीला, चिपचिपा।

लसाड़णौ, लसाड़बौ—देखो 'लसाणौ, लसाबौ' (रू. भे.)

लसाड़णहार, हारौ (हारी), लसाड़णियौ—वि०।

लसाड़िग्रोड़ौ, लसाड़ियोड़ौ, लसाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लसाड़ीजणौ, लसाड़ीजबौ—कर्म वा०।

लसाड़ियोड़ौ—देखो 'लसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लसाड़ियोड़ी)

लसाणौ, लसाबौ—क्रि. स.—१ शोभित करना।

२ पराजित करके भागने में प्रवृत्त करना।

३ शर्मिंदा करना, फीका पटकना।

४ लिप्त करना।

उ०—जिहां सुद्ध ग्रासय भूमि पटली, सोहियइ थिरवाय। तिहां ग्यांन दरसन थंभ ग्रनुभव, दिव्य भाउ लसाय। —वि. कु.

लसाणहार, हारौ (हारी), लसाणियौ—वि.।

लसायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लसाईजणौ, लसाईजबौ—कर्म वा.।

लसाड़णौ, लसाड़बौ, लसावणौ, लसावबौ—रू. भे.।

लसायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ शोभित किया हुग्रा। २ शर्मिंदा किया हुग्रा, फीका पटका हुग्रा। ३ लिप्त किया हुग्रा।
(स्त्री. लसायोड़ी)

लसावणौ, लसावबौ—देखो 'लसाणौ, लसाबौ' (रू. भे.)

लसावणहार, हारौ (हारी), लसावणियौ—वि.।

लसाविग्रोड़ौ, लसावियोड़ौ, लसाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लसावीजणौ, लसावीजबौ—कर्म वा.।

लसावियोड़ौ—भू. का. कृ.—देखो 'लसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लसावियोड़ी)

लसियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ शोभित हुवा हुग्रा, शोभायमान हुवा हुग्रा. २ पराजित होकर भागा हुग्रा. ३ शर्मिंदा हुवा हुग्रा, फीका पड़ा हुग्रा।
(स्त्री. लसियोड़ी)

लसी—सं. स्त्री—१ चिपचिपाहट, चेप।

२ देखो 'लस्सी' (रू. भे.)

लसीका—सं. पु. [सं. लसिका] १ थूक, लार।

लसीलौ—वि.—१ चिप-चिपा।

२ सुन्दर, शोभायुक्त।

लसुणियौ—देखो 'लसण' (ग्रल्पा. रू. भे.)

लसूंबौ—स. पु.—१ लालिमा।

उ०—नासिका में वेसर ग्रसी छवि पावै छै, जांणै मुख में मोती लसूंबौ छिटकावै छै। मांनूं फूंका दे मदन जगावै छै। —पनां

लसोड़ौ—सं. पु.—१ गोल-गोल पत्तियों वाला एक वृक्ष जिसके फल वेर के समान होते हैं।

२ उक्त पेड़ के फल।

रू. भे.—लिसोडा, लेसुवौ, लेसूड़ौ, ल्हेसवौ।

लस्कर—देखो 'लसकर' (रू. भे.)

उ०—१ इतरौ माल दरवेसां नूं नहीं दियौ चाहिजै। लस्कर विगर सांमांन नहीं रहै। —नी. प्र.

उ०—२ नीठ से दीध दूजांण नेक, ग्राठमें दौह ताजीम एक। वढवा दल दिखणी तेण वार, ग्राविया लियां लस्कर ग्रपार। —वि. सं.

लस्सी—सं. स्त्री.—छाछ, मट्ठा, दूध, दही में पानी मिलाकर वनाया हुग्रा गाढा पेय पदार्थ।

रू. भे.—लसी।

लहंगौ—सं. पु.—कटि के नीचे के ग्रंग को ढकने वाला घेरदार स्त्रियों का पहनावा जो कमर पर इजारवन्द द्वारा कस कर पहना जाता है,

लहंगा, घाघरा (डिं. को.)

उ०--हरी जरी का लहंगा सोवै, फुलभड़ी की सारी। अनवट ऊपर बिछिया सोवै, नथ सोवै भलकां री। —मीरां

रू. भे.—लेहंगो, लेंगो।

लंहरी देखो 'लहरी' (रू. भे.)

लंहरिग्रो, लंहरीग्रो—देखो 'लहरियो' (रू. भे.)

उ०—भळकंति कंठळ गोदरी, लहंरीग्रां मोती सार। मांणिक मयण तै सदळ सोहइं, ऊरि एकावळ हार। —रुकमणी मंगळ

लहक-सं. स्त्री.—१ शोभा, सुन्दरता।

उ०—रतन में राखड़ी वेणी वासग जड़ी, सूभरा वांहड़ी लहक लोड़ै। स्वाति नों विंदलो नासिका निरभयो, ग्राज ग्रालयंगन क्रस्न क्रोडै। —रुकमणी मंगळ

२ लहकने की क्रिया या भाव।

३ ढंग या तरीका।

४ गायन की लय।

५ देखो 'लहको' (ग्रल्पा., रू. भे.)

लहकणौ, लहकबौ-क्रि. ग्र. [सं. लसत+कृत प्रा. लहक्किग्र] १ किसी हलके पदार्थ, कागज, वस्त्र ग्रादि का हवा में फर फर शब्द करते उड़ना, फरहराना, फरफराना।

उ०—१ सगळा नर तिण पासै ग्रावै, देखि धजा लहकांणी। उत्तमकुमर तिहां निज वातां, भाखी चित्त सुहांणी। —वि. कु.

उ०—२ ध्वज पताका लहकई, पुस्प परिमळ वहकई। नाचइं पात्र, राज भवनि ग्रावइं ग्रक्षत पात्र। —रा. सा. स.

२ लटकना, भूलना।

उ०—फूलहरो ग्रति फावतो, फूंदे लहकै फूल। महकै परिमळ फल महा, इग्यारमी पूज ग्रमूल। —घ. व. ग्रं.

३ हिलते हुए लटकना, लुढ़कना।

उ०—१ नवजोवन नारी मिली, उरि लहकइं हे नवसरहार। हसगमण ग्रगलोग्रणी, मुहि बोलइ हे मंगलचार। —हीराणंद सूरि

उ०—२ सोल कला सुंदरि ससिवयणी' चंपकवन्नी वाल। काजल सांमल लहकइ वेणी, चंचल नयण विसाल। —हीराणंद सूरि

४ हवा का चलना, भोंके ग्राना।

५ मस्ती से चलना, मस्त चाल से चलना।

उ०—लुळती लफती लहकती, ग्रलवेलण छिव ग्रच्छ। वालम रसियो वण रह्यो, वेली छयो विरच्छ। —र. हमीर

६ ग्राग की लपटें निकलना।

७ लंगड़ाते हुए चलना।

८ लहलहाना।

९ ग्रभिलापा करना, चाहना।

१० कटाक्ष करना।

११ लपलपाना, लचकना।

लहकणहार, हारो (हारी), लहकणियो—वि०।

लहकिग्रोड़ो, लहकियोड़ो, लहक्योड़ो—भू० का० कृ०।

लहकीजणो, लहकीजबो—भाव वा०।

लहकुडलणो, लहकुडलबो, लहक्कणो लहक्कबो, लहरकणो, लहरकबो —रू. भे.

लहकडउ-सं. पु. [सं. लसत+कृत प्रा. लहक्किग्र] कटाक्ष।

लहकाड़णो, लहकाड़बो—देखो 'लहकाणो, लहकाबो' (रू. भे.)

लहकाड़ियोड़ो—देखो 'लहकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लहकाड़ियोड़ी)

लहकाणो, लहकाबो-क्रि. स. (लहकणो का प्रे. रू.) १ भोंसे खिलाना, लहराना।

२ लटकाना, भुलाना।

३ हवा के भोंके देना।

४ ग्राग की लपटें निकालना।

लहलहाना।

६ ग्रभिलापा कराना।

७ लंगड़ाते हुए चलना।

लहकाणहार, हारो (हारी) लहकाणियो—वि०।

लहकायोड़ो—भू० का कृ०।

लहकाईजणो, लहकाईजबो—कर्म वा०/भाव वा.।

लहकाड़णो, लहकाड़बो, लहकावणो, लहकावबो—रू. भे.।

लहकायोड़ो-भू. का. कृ—१ लहराया हुग्रा. भोंसे खिलाया हुग्रा. २ लटकाया हुग्रा, भुलाया हुग्रा. ३ हवा के भोंसे दिया हुग्रा. ४ ग्राग की लपटें निकाला हुग्रा. ५ लंगड़ाते हुए चला हुग्रा. ६ लहलहाया हुग्रा. ७ ग्रभिलापा कराया हुग्रा. ८ कटाक्ष कराया हुग्रा।

(स्त्री. लहकायोड़ी)

लहकावणो, लहकावबो —देखो 'लहकाणो, लहकाबो' (रू. भे.)

उ०—तिमरी ग्राविया, पइसारा मोटेइ मंडांण कराविया, जांगी ढोल भालरि संख वादित्र वजाविया। बिहुं पासै पटकूल तणा नेजा लहकाविया, पागि-पागि खेला नचाविया, तणिया तोरण वंधाविया। —रा. सा. सं.

लहकावणहार, हारो (हारी), लहकावणियो—वि.।

लहकाविग्रोड़ो, लहकावियोड़ो, लहकाव्योड़ो—भू. का. कृ.।

लहकावीजणो, लहकावीजबो—कर्म वा.।

लहकावियोड़ो—देखो 'लहकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लहकावियोड़ी)

लहकियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ लहरा हुआ, झोंखे खाया हुआ. २ लटका हुआ, झुला हुआ. ३ हवा के झोंखे में बहा हुआ. ४ आग की लपटें निकला हुआ. ५ लंगड़ाते हुए चला हुआ. ६ लहलहाया हुआ. ७ अभिलाषा किया हुआ, चाहा हुआ।

(स्त्री. लहकियोड़ी)

लहकुडलणौ, लहकुडलवौ—देखो 'लहकणौ, लहकवौ' (रू. भे.)

उ०—वंकुडियाली मुंहडिहं, भरि भुवणु भमाडइ। लाडी लोयण लहकुडलइ, सुर सग्गह पाडइ। —प्राचीन फागु-संग्रह

लहकुडलणहार, हारौ (हारी), लहकुडलणियौ—वि०।

लहकुडलिओड़ौ, लहकुडलियोड़ौ, लहकुडल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लहकुडलीजणौ, लहकुडलीजवौ—भाव वा०।

लहकुडलियोड़ौ—देखो 'लहकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लहकुडलियोड़ी)

लहकौ-सं. पु.—१ झलक, आभास।

२ ढंग, तरीका।

रू. भे.—लहक, लैं'कौ।

लहक्कणौ, लहक्कवौ—देखो 'लहकणौ, लहकवौ' (रू. भे.)

उ०—१ चंचळि चड़ी चिहुं दिसि चपइ, थर थर थांणदार उर कपइ। कमवज करि घरि लोह लहक्कइ, विवहर बुंवग्र बुंवग्र वक्कइ। —रणमल्ल छंद

उ०—२ सज्जणिया ववळाइ करि, गउखै चढी लहक्क। भरिया नयण कटोर ज्यउं, मुंधा हुई डहक्क। —ढो. मा.

उ०—३ महा अणंदहू पंछी डहक्कै गहक्कै मोर, खाट सो चहक्कै वणं डसै रूप खेल। सांमीर री भूलपट्टां महक्कवै जेण समैं, अच्छ धू लहक्कै जांणं चांमीर री वेल। —र. हमीर

लहक्कियोड़ौ—देखो 'लहकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लहक्कियोड़ी)

लहचाळ—देखो 'लैं'चाळ' (रू. भे.)

लहजौ-सं. पु. [अ. लह्जः] १ बात करने या बोलने का ढंग, तरीका।

२ स्वर, आवाज, लय (गायन में)

३ अल्प काल, क्षण।

रू. भे.—लैं'जौ

लहण-वि.—१ लेने वाला।

उ०—१ अपणी खाटी संपति जगत कूं खुलावै। लख लहण सवा-लख विद्रवण विरद बुलावै। —सू. प्र.

२ देखो 'लसण' (रू. भे.)

लहणायत-सं. पु.—देखो 'लैणायत' (रू. भे.)

लहणियौ—देखो 'लैं'णौ' (अल्पा., रू. भे.)

लहणौ—देखो 'लैं'णौ' (रू. भे.)

उ०—१ धरमसीह कहै सात, सात दुख जाय न सहणा। दीसै घर में दलिद, लोक वलि मांगै लहणा। —ध. व. ग्रं.

उ०—२ कवड़ी रा लहणां मही, राखे हट कर रोक। पाग कांख मांझल लिया, लूंड वजारी लोक। —वा. दा.

लहणौ, लहवौ—देखो 'लैं'णौ, लैं'वौ' (रू. भे.)

उ०—१ उपजै अहोनिस आप आप में, रुखमणि क्रिसन सरख रति। कहै वेलि वर लहै कुमारी, परणि पूत सुहाग पति। —वेलि

उ०—२ आरोपित हार घणउ थयौ अतर, ऊरस्थळि कुंभस्थळि आज। सु-जु मोती लहि न लहइ सोभा, रज तिणि सिर नाखइ गजराज। —वेलि

उ०—३ जिणि दीहै पाळउ पड़इ, टापर पड़ तुरियांह। तियां दिहांरी गोरड़ी, दिन दिन लाख लहांइ। —ढो. मा.

उ०—४ प्रीतम-हूती वाहिरी, कवड़ी ही न लहांइ। जव देखूं घर-आंगणइ, लाखे मोल लहांइ। —ढो. मा.

उ०—५ जिण दिन ढोलउ आवियउ, तिण अगलूणी रात। मारू सुहिणउ लहि कह्यउ, सखिया सूं परभात। —ढो. मा.

उ०—६ अर ओर भी भाई भतीजा वडा वडा रजपूतवट रा सुभाव लीधा थका रावत प्रतापसिंघ री हजूरी रहै। वडी वडी रीझां मोजा हमेसा लहै। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—७ नले जाण्यूं हूं जीतीस सही, ए वसभ हारवा आव्युं अही, कही भालणः 'अभिमान' ज वहि, पणि काल तणि गति को नवि लहि। —नळाख्यांन

उ०—८ तइ दिख राजा तणइ साठ ताय पुत्री, साठ हजार कुंवर सिरदार। नव खंड रा भूपाल नमइ जिण, परग्रह लहइ तियइ कुण पार। —महादेव पारवती री वेलि

लहण्यौ—देखो 'लैं'णौ' (अल्पा., रू. भे.)

लहयोड़ौ—देखो 'लियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लहयोड़ी)

लहर-सं. स्त्री. [सं. लहरिः, लहरी] १ तरल पदार्थों के ऊपरि तल में हवा लगने पर उस तल से उत्पन्न होने वाली वक्राकार रेखाए, तरंग, हिलोर। (डिं. को.)

उ०—१ जगजीत जोधांण के दरियाव कैसे। अभैसागर वाळसमंद दोऊ, मांनसरोवर जैसे। अम्रित के समुद्र तैसे लहरूं के प्रवाह छाजै। —सू. प्र.

उ०—२ हंसा कहै रे डेडरा, सायर लहर न दिट्ठ। ज्यां नांळेर न चक्खिया, (त्यां) काचरिया ही मिट्ठ। —अग्यात

पर्याय. उमेल, उतकलिका, उरमी, वेक, भंगि, हिलोळ।

२ पौधों के समूह पर हवा के झोंके से उत्पन्न गति या कंपन।
ज्यूं—चौधरी गवूं में उठती लहरां देख 'र घणौ राजी व्हेतो।
३ सहसा मन में जागृत होने वाली इच्छा, मन की मौज।

उ०—आलम हाथ री रघुनाथ अचरिज, अवध भूप असंक। दिल गहर दीधी सरण हित दत, लहर हेकण लंक।
—र. ज. प्र.

४ मन में उठने वाली आवेग पूर्ण प्रवृत्ति, आवेश, जोश।

उ०—लसकरां फिरै अग घाव चढती लहर, आलमां दाव भवणां अलोड़ै। समद कछवाह तणौ वरण सुकजं, 'माधहर' तणा खग झाळ मुहोड़ै। —राव दुरजणसाल हाडा री गीत

५ क्षण, पल।

उ०—सदा प्रसन्न कव सदन सीतळ नजर सुपेखै, मनवंछत करै हेकै लहर मांय। न देखै भाव भगती दिसा 'करनला', सनातन घरम लेखै करै साय। —मा. बचनिका

६ मादक या विषाक्त पदार्थ के सेवन करने से शरीर में उत्पन्न प्रतिक्रिया, नशे की तरंग।

उ०—विविध प्रकारे भोजन हुता, जीमतां आई लहर। राय पएसी जांणियो, इण रांणी दीधौ जहर। —जयवांणी

७ अनुराग, प्रेम।

उ०—कहत ललिता वैद बुलाऊं, आवै नद को प्यारौ। वो आयां दुख नाहिं रहेगौ, है मोहि पतियारौ। वैद आयकर हात जो पकड़्यो, रोग हैं भारौ। परम पुरुस की लहर व्यापी, डस गयौ कारौ।
—मीरां

८ पवन का झोंका, वायु का झोंका।

उ०—१ उत्तर आजस उत्तरइ, वाजइ लहर असाधि। संजोगणी सोहामणइ, विजोगणी अंग दाधि। —ढो. मा.

उ०—२ नैरंति प्रसरि निरधण गिरि नीझर, धणी भजै घण पयोधर। झोलै वाइ किया तरु झंखर, लवळी दहन कि लू लहर।
—वेलि

९ गंध-युक्त वायु, महक।
क्रि. प्र.—आणी
१० कृपा, महर।

उ०—लहर कर लहर कर विटक घर लांगड़ा, पहर कर कछोटी निज पगांमां। डाक डमकार समकार कर डैरवां। महर कर महर कर मांमा। —गजौ खिड़ियौ

११ आनन्द, सुखभोग।
ज्यूं—सहर री लहरां लेवणी।
१२ सिर के वालों, वस्त्रों की रंगाई तथा खाट की बुनाई में होने वाला वक्र रेखांकन।

उ०—अगर खेवै है, सुगंध देवै है। सूंघौ सूंधीजै है, सीसियांरी सीसियां ऊंधीजै है। चोटी करै है, तिण आगै नायण री लोटी फिरै है। गुंथवा में पड़ै है लहर, तठै कहो कुण सकै ठहर।
—र. हमीर

१३ महिलाओं के कान का आभूषण विशेष।
१४ स्फुट गायन की क्रिया, रागणी करने की क्रिया।
१५ पुराणों के अनुसार निष्फलीय शख के बोलने की ध्वनि।

उ०—तद संख लहरां दीवी, रांड तूं ईयैं नूं क्यों मारै ? हूं थारै आफै आयौ छूं। —बूढी ठग राजा री बात

रू. भे.—लहरांण, लहरि, लहरी, लहरीय, लहिर, लहिरी, लैं'र, लैर।
अल्पा.—लहरकौ, लहरौ

लहरकणौ, लहरकबौ—देखो 'लहकणौ, लहकबौ' (रू. भे.)

उ०—मोठ बाजरी सूं खेत लहरकै, वण-वण हरियाळी छायी। रुत आयी, रे पपइया, तेरे बोलण री रुत आयी। —लो. गी.
लहरकणहार, हारौ (हारी), लहरकणियौ—वि.।
लहरकिओड़ौ, लहरकियोड़ौ, लहरक्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लहरकीजणौ, लहरकीजबौ—भाव वा.।

लहरकियोड़ौ—देखो लहकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लहरकियोड़ी)

लहरकौ—देखो 'लहर' (अल्पा., रू. भे.)

लहरणौ, लहरबौ—१ घनघटा युक्त हो बरसना, वर्षा होना।

उ०—सांवण तौ लहरयौ भादवौ रै, वरसै च्यारूं कूंट। म्हारा मारूला सांवण लहरयौ रै। —लो. गी.
२ मंडराना, झूमना।

उ०—विदिसा जग विख्यात राज री नगरी जातां, सगळा भोग विलास पावसी प्रीत जतातां। वेत्रवती जळ पीय लहरतौ घण गरजंतां, ज्यूं मुख भौंह विलास अधर घण पांन करंता। —मेघ

३ समुद्र में तरंगें उठना, तरंगित होना।
४ प्रसन्न होना, हर्षित होना।

उ०—अधरां रै रंग दीजै है, तिलक कीजै है। घूंमाळौ गाघरौ पहरीजै है, लहरियौ ओढियां जिणमें तन मन लहरीजै है।
—र. हमीर

५ तरल पदार्थ में हवा के झोंके से हल-चल होना, लहरें उठना।
६ किसी लचीले पदार्थ का वायु के संसर्ग से हिलना, लहलहाना।
७ किसी का लहरों के रूप में उठना, चलना या आगे बढना।

उ०—बाड़ा में लाय लागी जिणरी लहरावती लपटां ठाकर रै माळियै लागण ढूकी। —फुलवाड़ी

८ शोभित होना, फबना।
९ मादक या विषैले पदार्थ के प्रभाव में आना।
१० अनुराग या प्रेम में लीन होना, अनुरक्त होना।
११ मन में उमंगे, इच्छाएं उठना।
१२ किसी वस्तु को वायु के वेग में उड़ते रहने के लिए छोड़ देना, तरंगित करना।
लहरणहार, हारौ (हारी), लहरणियौ—वि.।
लहरिप्रोड़ौ, लहरियोड़ौ, लहरयोड़ौ—भू का. कृ।
लहरीजणौ, लहरीजबौ—भाव वा.।
लहराड़णौ, लहराड़बौ, लहराणौ, लहराबौ, लहरावणौ, लहराववौ, लैराणौ, लैराबौ—रू. भे.।

लहरदार-वि. [सं. लहरिः+फा. दार] १ जिसकी बनावट लहरों जैसी हो।
२ जिस पर लहरों जैसी आकृति बनी हो।
रू. भे.—लैरदार, लैरियादार।

लहरनिध, लहरनिधि-सं. पु. यौ. [सं लहरि.+निधि] समुद्र, सागर।
उ०—दनुज आवियौ वळै हियै दोयणां, लाल मुख दसूं भटकै अगन लोयणां। रांम सांमौ घसै दंभ रिण रोपनै, लहरनिध छळै जाणै हदां लोपनै। —र. रू.

लहरबंबाळ-वि.—वड़ा दातार, उदार-चित। महान उदार।
उ०—धन दे घर दे धांम दे, निबळां करै निहाल। दिल दधि में दातार रे, लहरै लहरबबाळ। —रैवतसिह भाटी

लहरसंख-सं. पु.—पुराणों के अनुसार वह शख, जो अर्थ-सिद्धि नही करता हो।
उ०—तद समुद्रजी कही, 'तौ भलां, यै हीरां मांणक छै, ले अर इसड़ौ तौ सख कोई नही।' तद कांमदारै कही, महाराज एक लहरसंख छै, सो दीजै। —वूढी ठगराजा री वात

लहरांण-वि.—१ लहरों से युक्त।
उ०—रजधांनी उच्छव रहसि, मणि दीपक अप्रमांण। सूंघै महल सिंगारिया, सोरंभी लहरांण। —रा. रू.
२ देखो 'लहर' (रू. भे.)

लहराज-सं. पु.—शेष नाग ?
उ०—लगै सर स्रोण जगै लहराज, सजै अंग जांण कसूंबल साज। जमातिय जोध जमातिस जांन, वजै सुर सिंधव राग विधांन। —सू. प्र.

लहराड़णौ, लहराड़बौ—१ देखो 'लहरणौ, लहरबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'लहराणौ, लहराबौ' (रू. भे.)
लहराड़णहार, हारौ (हारी), लहराड़णियौ—वि०।
लहराड़िप्रोड़ौ, लहराड़ियोड़ौ, लहराड़योड़ौ—भू० का० कृ०।
लहराड़ीजणौ, लहराड़ीजबौ—कर्म वा०।

लहराड़ियोड़ौ—१ देखो 'लहरायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'लहरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लहराड़ियोड़ी)

लहराणौ, लहराबौ-क्रि. स.—१ झंडा आदि का हवा में लहराना।
२ देखो 'लहरणौ, लहरबौ' (रू. भे.)
लहराणहार, हारौ (हारी), लहराणियौ—वि०।
लहरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
लहराइजणौ, लहराइजबौ – भाव वा० /कर्म वा.।

लहरायोड़ौ—देखो 'लहरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लहरायोड़ी)

लहरावणौ, लहराववौ—१ देखो 'लहरणौ, लहरबौ' (रू. भे.)
उ०—वादळ रा मन में भांत-भांत रै फूलां रा अणगिण वगीचा लहरावण लागा। —फुलवाड़ी
२ देखो 'लहराणौ, लहराबौ' (रू. भे.)
लहरावणहार, हारौ (हारी), लहरावणियौ—वि.।
लहराविप्रोड़ौ, लहरावियोड़ौ, लहराव्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लहरावीजणौ, लहरावीजबौ—कर्म/भाव वा.।

लहरावियोड़ौ—देखो 'लहरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लहरावियोड़ी)

लहरि—देखो 'लहर' (रू. भे.)
उ०—१ चिहुंर जाळ से व्रह्म, लहरि लगै केवांणह। ओडणि कमळणि पत्र, भ्रमर गूंजै नीसांणह। —गु. रू. वं.
उ०—२ स्रीमहाराज राजेस्वर, 'अभैसाह' नरनाह प्रमेसुर। आयौ सूत मागध कविंद्र के भाय, दांन की लहरि समुद्र तें सवाय। —रा. रू.
उ०—३ इम चहुवांण प्रवळ दळ ओपै, लहरि अजाद जांणि दधि लोपै। जांणै छपन कोड़ि जळ जाळां, मंडि उमंडै वरसण घणमाळां। —सू. प्र.
उ०—४ पीव पीव मैं रटूं रात दिन, दूजी सुधि वुधि भागी री। विरह-भवंग मेरौ डसै कळै जो लहरि हळाहळ जागी री। —मीरां
उ०—५ भवग मिळै मळयागरी, लहरि विसम की मेट। साव सदा मिळ करत है, रांम नांम सुख भेट। —अनुभववांणी
उ०—६ निज मन विसहर विरह विस, उर विच लागी आंनि। पेम लहरि पल पल उठै, हरीया निरभै जानि। —अनुभववांणी

लहरियादार-वि.—वह जिसमें लहर के समान वहुत सी टेढी-मेढी रेखाएं हों।

लहरियौ-सं. पु.—१ लहर की तरह टेढी-मेढी रेखाओं का समूह।
ज्यूं—लहरिया भांत वुणाई।
२ स्त्रियो के ओढने तथा पुरुषों के सिर पर वांधने का एक वस्त्र विशेष जिसमें रंग-विरंगी धारियें होती हैं।

उ०—१ घरां घेर घाघरै गरक पिसचाजी गोटा । लपदार लहरियौ इधक खुल रहा अंगोटा । —र. हमीर

उ०—२ असी ए टकां को म्हारौ लहरियौ जी, कोई मोहर-मोहर गज भांत राज, लहरचौ, लेदचौ जी । —लो. गी.

३ राजस्थानी में एक लोक गीत ।

उ०—और ही भूलराभूल लमभम करता 'फूलबाग' मे आवै है, लहरिया गावै है । —र. हमीर

वि.—लहरो वाला, लहरो युक्त ।

रू. भे.—लहरिओ, लहरीओ, लहरीयौ, लहरचौ, लेरियौ, लैरियौ, लैरयौ, लैरौ ।

लहरी-वि.—१ वह जिसमे लहर हो, लहर वाला ।

उ०—लहरी दरियाव स्रवण दत लाखां, कीरत सुण आयौ सौ कोस । पहड़ै तू रांणा पारथीयां, 'दीपा' इण कळजुग नै दोस । —ओपौ आढौ

२ समुद्र, सागर ।

उ०—खुरम समंदी मच्छ जिम, लहरी लक्ख दळांह । चडियै पांणी सामुहौ, सुरतांणी फौजांह । —गु. रू. वं.

३ दातार, दानी ।

उ०—१ छोकरी आयिनै पूछियौ । तरै एकण चाकर कह्यौ-साखि राठौड़, नीवौ सिवालौत, लाखां रौ लोड़ाउ, बडौ भोकाउ, सैणां रौ सेहुरौ दुसमण रौ साल, जातां-मरतां रौ साथी, लाखा री लहरी । —वीरमदे सोनगरा री वात

४ आवेश या जोशवाला, जोशीला ।

५ प्रफुल्लित रहने वाला, खुश-मिजाज ।

६ देखो 'लहर' (रू. भे.)

उ०—लहरी सायर-संदिया, वूठउ-संदउ वाव । वीछुड़िया सजण मिळइ, वळि किउं ताढउ ताव । —ढो. मा.

लहरीओ—देखो 'लहरियौ' (रू. भे.)

लहरीय—देखो 'लहर' (रू. भे.)

लहरीयौ—देखो 'लहरियौ' (रू. भे.) (रा. रा.)

लहरीरव, लहरीरवण-सं. पु. [सं] समुद्र, सागर । (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ रटै भागीरथी सुणौ लहरीरवण, लाल रंग रुधिर चौ नीर लागौ । कळह तटि गवड़ है गै भड़ां कचरिया, भिड़ै पूरव तणौ साह भागौ । —अनिरुद्धसिंघ गौड़ रौ गीत

उ०—२ ग्रांरी अणी जीमणी ओपै लहरीरवण अजा किर लोपै । सांम्हे अणी गिरौ अरि सल्ला, मारहथां जोवा रिड़मल्लां । —रा. रू.

वि.—१ वह जिसमें लहरें उठती हों ।

उ०—आतसबाजी गाडियां, आरावां अनमंघ । गडडै गोळी नाळियां किरि लहरीरव सिंध । —गु. रू. व.

२ उदार, दातार ।

उ०—लाखौ लहरीरव नांम खंडै नवपाट रौ रखपाळ । वह जांण महाबळ आधरव, उज्जल दीपिओ विरदाळ । —ल. पि.

लहरीस-स. पु. यौ. [स. लहरिः+ईश] १ समुद्र, सागर ।

उ०—साकिया राज राणां सकळ, अकळ, पाण छिलियौ असुर । लहरीस जांण वारी लहै, गरज निवारी सीम गुर । —रा. रू.

२ जोश या आवेश-युक्त

३ उमंग या उत्साह वाला ।

लहरीसमंद-सं. पु. यौं.—समुद्र, सागर ।

वि.—दानवीर उदार ।

उ०—सरखसाधार मदतार लहरीसमंद, करै अदतार नर मीढ केहा । रार लज धार संसार सारौ रटै, त्रगट गढ बीखोरण हार तेहा । —गुलजी आढौ

लहरौ-सं. पु.—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—सिंह सिचाणौ सापुरुस, ऐ लहुरा न कहाय । वडौ जिनांवर मारकै, छिन में लेय उठाय । —अग्यात

२ देखो 'लहर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—रिमझिम रिमझिम मेवलौ वरसै अंत में ही अचांणचूकौ पून रौ एक लहरौ आयौ अर बादळी उडगी । —कन्हैया लाल सेठिया

लहरचौ—देखो 'लहरियौ' (रू. भे.)

उ०—१ गोरे कंचन गात पर अंगियां रंग अनार । लहंगो सोहै लचकतौ, लहरचौ लपादार । —र. हमीर

उ०—२ लहरचौ तौ लै दो गोरी का सायबा जी, कोई थांरी धण ने लहरचौ री चाव जी लहरचौ ले दो जी । —लो. गी.

लहल-स. पु.—सगीत में एक प्रकार का राग जो दीपक राग का पुत्र माना जाता है ।

लहलहणौ, लहलहवौ—देखो 'लहलहाणौ, लहलहावौ' (रू. भे.)

उ०—लहलहती नाचै लता, पवन सगीती पाय । पंखा-बरदारी करै, रभ विचै वणराय । —बां. दा.

उ०—२ करइं उल्लास, लखेस्वरी कोटिध्वज तणा आवास । आनंद दइ मन, गरूडं राज भवन । उपारी अखंड । ध्वजपट लहलहई प्रचंड । —रा. सा सं.

लहलहणहार, हारौ (हारी), लहलहणियौ—वि० ।

लहलहिओड़ौ, लहलहियोड़ौ, लहलह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लहलहीजणौ, लहलहीजबौ—भाव वा० ।

लहलहाड़णौ, लहलहाड़वौ—देखो 'लहलहाणौ, लहलहावौ (रू. भे.)

लहलहाड़णहार, हारौ (हारी), लहलहाड़णियौ—वि० ।

लहलहाड़िओड़ौ, लहलहाड़ियोड़ौ, लहलहाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लहलहाड़ीजणौ, लहलहाड़ीजवौ—कर्म वा० ।

लहलहाड़ियोड़ो—देखो 'लहलहायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लहलहाड़ियोड़ी)

लहलहाणो, लहलहावो–क्रि. अ.— १ हवा के प्रवाह से पौधे के ऊपरी भाग का हिलना, लहराना।

२ किसी लचीली वस्तु का हवा के झोंके के साथ हिलना या उड़ना।

३ फूल-पत्तियों से हरा भरा होना, पल्लवित होना, खिलना।

४ सूखे हुए पौधे का नवीन पत्तों से हरा-भरा होना, पनपना।

५ प्रफुल्लित होना, आनन्दित होना।

६ दुबले शरीर का फिर से स्वस्थ या हृष्ट-पुष्ट होना।

क्रि स.—७ प्रफुल्लित करना, आनंदित करना।

८ दुबले पतले शरीर को फिर से स्वस्थ या हृष्ट-पुष्ट करना।

लहलहाणहार, हारौ (हारी), लहलहाणियौ—वि।

लहलहायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लहलहाईजणौ, लहलहाईजबौ—भाव/कर्म वा.।

लहलहणौ, लहलहवौ, लहलहाड़णौ, लहलहाड़बौ, लहलहावणौ, लहलहाववौ, लैंलहाणौ, लैंलहावौ—रू. भे.।

लहलहायोड़ो–भू. का. कृ.—१ हवा के झोंके से पौधे का ऊपरी भाग हिला हुआ. २ कोई लचीला पदार्थ हवा के साथ हिला या उड़ा हुआ. ३ फूल-पत्तियों से हरा-भरा हुवा हुआ, पल्लवित. ४ सूखा हुआ पौधा नवीन पत्तों से हरा-भरा हुवा हुआ, पनपा हुआ. ५ प्रफुल्लित या आनंदित हुवा हुआ. ६ दुबला शरीर फिर से स्वस्थ या हृष्ट-पुष्ट हुवा हुआ. ७ प्रफुल्लित किया हुआ. ८ दुबले शरीर को फिर से स्वस्थ या हृष्ट-पुष्ट किया हुआ।

(स्त्री. लहलहायोड़ी)

लहलहावणो, लहलहाववो—देखो 'लहलहाणो, लहलहावो' (रू. भे.)

लहलहावणहार, हारौ (हारी), लहलहावणियौ—वि.।

लहलहाविओड़ौ, लहलहावियोड़ौ, लहलहाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लहलहावीजणौ, लहलहावीजबौ—भाव/कर्म वा.।

लहलहावियोड़ो—देखो 'लहलहायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लहलहावियोड़ी)

लहलहियोड़ो—देखो 'लहलहायोड़ो' १ से ६ (रू. भे.)

(स्त्री. लहलहियोड़ी)

लहव्रह–स. स्त्री.—युद्ध में भैरव या युद्ध देवता की आवाज।

लहवाणो, लहवाबो–क्रि. अ.—छोटा होना, लघु होना।

उ०—पण घोड़ौ उराकी छै। रवीयांण चद, ऐराक वीजं बड़ वीजं, प्रात गाज, सापुरस वेण पैहिली तौ लहवाय लहवाय पीछै गरवाय गरवाय। —हाहुल हमीर री वात

लहवाणहार, हारौ (हारी), लहवाणियौ—वि।

लहवायोड़ौ – भू. का. कृ.।

लहवाईजणौ, लहवाईजबौ—भाव वा.।

लहवायोड़ो–भू. का. कृ.— छोटा हुवा हुआ।

(स्त्री. लहवायोड़ी)

लहसण—देखो 'लसण' (रू. भे.)

लहसणो, लहसवो–क्रि. अ.—प्राप्त होना, मिलना।

उ०—१ घट में एक हक है अला, लहसी भाग जिन्हांदा भला। औउं सोउं जाप अजंपा, घट में किया संप-असंपा। —अनुभववांणी

क्रि. स.—लेना प्राप्त करना।

लहसणहार, हारौ (हारी), लहसणियौ—वि०।

लहसिओड़ौ, लहसियोड़ौ, लहस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लहसीजणौ, लहसीजबौ—भाव वा०।

लहसियोड़ो–भू. का. कृ.—१ प्राप्त हुवा हुआ, मिला हुआ।

२ लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ।

(स्त्री. लहसियोड़ी)

लहसुन—देखो 'लसण' (रू. भे.)

लहि–अव्य.—तक, पर्यंत।

लहिह्यो–सं. पु.—एक विशेष जाति का घोड़ा।

उ०—मल्हड़ा, हरीयड़ा, सरेखंडा, टूंककना, खेत्र खुरांसांणी। वाहडदेसना, वोरीया, लहिह्या, गंगेटिया, हंसजादर, उडणभ्रमर, ऊधस्या फौरणा, चपल चरण विस्तीरण सालिहोत्र प्रतिस्टा सिद्ध। —कां. दे. प्र.

लहिर, लहिरी—देखो 'लहर' (रू. भे.)

उ०—१ तीन प्रकार रौ पवन वाजै छै। सीत, मंद, सुगंध अनेक परिमळ झोला खाई लहिर लै छै। —र. वचनिका

उ०—२ मलयाचल मूकी करी, मारुत आवियउ जेह। वैसाखि वासिग-जिसिउ, लहिर लगाडइ तेह। —मा. कां. प्र.

उ०—३ ढोला हूं तुझ वाहिरी, झीलण गइय तळाइ। ऊजळ काळा नाग जिउं, लहिरि ले ले खाय। —ढो. मा.

लहीखोळणो–सं. पु.—प्रसव के पांचवे दिन स्नानादि स्वच्छता के रूप में किया जाने वाला संस्कार।

लहुडो—देखो 'लघु' (रू. भे)

लहु–सं. पु.—१ शीघ्र कार्य करने वाला।

२ हलका।

३ निस्सार ।

अव्य.—तक, पर्यंत ।

देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—हेम वरनी हेमगिर, वाळी लहुवे वेस । कंथ विहूणी कांमणी, सांचो कहि संदेस । —मा. वचनिका

लहुआ-सं. पु.—१ भाटी वंश की एक शाखा ।

२ सोलह मात्रा का मात्रिक छंद जिसके अन्त में गुरु हो ।

लहुड़ियो, लहुड़ो, लहुडउ, लहुडुं, लहुडो—देखो 'लघु' (रू. भे.) (उ.र.)

उ०—१ पुत्र दोय 'गजपति' रै, सूर दातार सधीर । वडो 'अमर' लहुड़ो 'जसो', वडै नखत नरवीर । —सू. प्र.

उ०—२ तद वायर पूछीयो, सू कहे नहीं । लहुड़ी वाइर री यारी हुती । तिका पूछै पिण कहे नही । —वात पीठवै चारण री

उ०—३ खित्रीवट जे साहस धीर, मालदेव छइ लहुडउ वीर । जिसी प्रीति लखमण नइ रांम, राज अनरेइ एहवी माम ।

—कां. दे. प्र.

उ०—४ जणां मंत्री मुसाहिवां मतो उपाय वीरां लहुड़िया भाई नूं राजतिलक दीन्हूं । —सिघासण वत्तीसी

उ०—५ पिंगळ राय कहावियो, ढोला पाछो आव । मारू लहुडी वहिनडी, तोहि भणी परणाव । —ढो. मा.

(स्त्री. लहुड़ी, लहुडी)

लहुवय—देखो 'लघुवय' (रू. भे.)

उ०—सिरिवत साहि सुतन्न, माता सिरिया देवी नंदणो । वइरागि लहुवय लिद्ध संजय, भविय जण आणंदणो । —स. कु.

लहू—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—१ गरलसहोदर ! गगनचर ! लंछनधर लहू-अद्ध । आवि म माहरइ आंगणइ, उडुप अंधारइ खद्ध । —मा. कां. प्र.

उ०—२ किवळो विच्छू कहैं, लहू लघु अंक लहावै । गिणै छंद वस गुरु कवी, लघु चार कहावै । —र. रू.

लहूअडउ, लहूडो—देखो 'लघु' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—१ नांन्हउ ए स्वांमी लहूअडउ लघु बांधव गुणे करी छइ वडउ । भाई तमारु स्वांमी एह एहसिउ तमे म देसिउ छेह ।

—नळ दवदंती रास

उ०—२ वडां वतू पहिलू करइ लहूडा पछइ लगार । तेहनइ सीस चढावीइ, माधव किसिउ विचार । —मा. कां. प्र.

लहैरी-सं. पु.—समुद्र, सागर ।

वि.—लहर वाला, लहरदार ।

उ०—अवै विनती हेक 'हिंगोळ' वाळी, जिका ध्यांन दे कांन कीजै धजाळी । लहैरी गहैरांण भूगाळ 'गच्छो', 'अगो' दूसरी रीझ मोजाळ अच्छो । —मे. म.

लहैरो-सं. पु.—एक छोटा सदा-बहार पौधा, जो पंजाब, दक्षिण गुजरात और राजस्थान में बहुत होता है ।

लहोड़ा-सं. पु.—१ शस्त्र-प्रहार ।

उ०—बीजै जी महाराजा जद जाम वगैरा भाई रै लहोड़ा लागा राव चंद्रसेण री बेटी जांमवंती बाई बीजाजी रै मारै पड़ी । —मारवाड़ री ख्यात

२ देखो 'लोह' (रू. भे.)

३ देखो 'लघु' (रू. भे.)

लह्य-सं. पु.—१ एक ऋषि, जो भुज्यु ऋषि का पिता था ।

लह्यणो, लह्यबो—देखो 'लैंणो, लैंबो' (रू. भे.)

लह्यणहार, हारो (हारी), लह्यणियो—वि. ।

लह्योड़ो—भू. का. कृ. ।

लह्योजणो, लह्योजबो—कर्म वा.

लह्योड़ो—देखो 'लियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लह्योड़ी)

लांई-वि.—बांयो, वाम ।

उ०—हो मेरी आंखि फरूको लांई, पीव मिळण के तांई । पीव प्यारै को पंथ निहारत, मन तन नुं भई ठाढी । —अनुभववांणी

लांक-सं. पु.—१ देखो 'लूंग' (रू. भे.)

२ देखो 'लंक' (रू. भे.)

उ०—जिसी कमल कोमल नाल तिसी वाहूलता, जिसिउ सिंह तणो लांक तिसिउ मध्य देस, जिसा केलि ना स्तंभ तिसा वे ऊर... । —व. स.

लांकड़ी—देखो 'लांकी' (अल्पा., रू. भे.)

लांकी-सं. स्त्री.—लोमड़ी ।

रू. भे.—लूंकी, लूंकालु, लूंगती, लोका

अल्पा.—लांकड़ी, लुंकड़ी, लुकड़ी, लूंकड़ी, लूकड़ी

वि.—कायर, डरपोक ।

लांकीमूळो-सं. पु.—पत्र-पुष्पहीन एक प्रकार का उद्भिज जिसके अन्दर वदबू निकलती है ।

रू. भे.—लकीमूळो

लांकोलो-वि. (स्त्री. लांकोली) १ सुन्दर ।

उ०—लांकोलो चूड़ो पिण घणो रूड़ो चमकै है, देही तिका जांणै दांमण हीज दमकै है । जिण अंग जावक सूंधारो ही भार है, इण नाजकता रो किसो पार है । —र. हमीर

२ रंगीन ।

लांको-सं. पु. (स्त्री. लांकी) नर-लोमड़ी ।

रू. भे.—लुंको

लांखणो, लांखबो-क्रि. स.—गिराना, डालना, फेंकना ।

उ०—१ टलवलइ जिम निरजालि माछिली, वलवलइ अति अंगि वली वली । झखइ लांखइ लावर आकुलउ, विरहि विह्वल वांतर वाउलउ । —सालिसूरि

उ०—२ पटोलै भूमि वाहिरियइं, चीतवीया पासा पड़इ, उं करतां पाधरउं थाइं, लक्ष्मी वारणि लांखइं अनइं ऊपरवाडि पयसइ, इसिउ दिहाडउ भलउ । —व. स.

लांखणहार, हारौ (हारी), लांखणियौ—वि० ।

लांखिओड़ौ, लांखियोड़ौ, लांख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लांखीजणौ, लांखीजबौ —कर्म वा० ।

लांखियोड़ौ-भू. का. कृ.—गिरायाहुआ, डाला हुआ, फेंका हुआ । (स्त्री. लांखियोड़ी)

लांग-सं. स्त्री.—१ आवड़ देवी की एक वहिन का नाम ।

२ धोती या लंगोट बांधते समय जांघों के बीच में से निकाल कर कमर में खोंसा जाने वाला लगोट या धोती का भाग ।

उ०—इत्यादिक मोथी आदति रा अळिया, थोथी थळवट रा थळिया बेथळिया । ढीली लांगां रा ढेरा ढळकाता, टोघड़ टुकड़ां रा खेरा खळकाता । —ऊ. का.

३ धोती की किनार ।

उ०—तठा उपरांयत सिरदारां देसोतां तळाव में झूलण री हांस करै छै । लाल लांगी री पोतां पहरजै छै । घड़नांवां वणायजै छै । —रा. सा. स.

अल्पा, लांगड़ी'

३ देखो 'लवंग' (रू. भे.)

उ०—तिण भांग साझ मसाला मंगायजै छै । जायफळ, लांग, इळायची, मिरच, विरहाळी अजूं नागकेसर भमर टंटी तज तमाळ-पत्र तंबोळ प्रतसंथी । —रा. सा. सं

रू. भे.—लंग

लांगड़-सं. पु. [सं. लांगलं] १ सूअर, वराह । (अ. मा.)

२ देखो 'लांगळ' (रू. भे.)

उ०—सीहरा कळाधारी अगर 'सांवतां', वळाकारी हरा धार वूतो । मुरड़ भाजड़ पड़ै खाय आंगड़ मठा, जकण लांगड़ ऊरड़ आय जूतो । —आउवा ठाकर हरनाथसिंह रो गीत

३ देखो 'लांगौ' (मह., रू. भे.)

४ देखो 'लंगड़ौ' (मह., रू. भे.)

लांगड़प्रसत्र-सं. पु.—सूअर, वराह । (अ. मा.)

लांगड़ी—देखो 'लांग' (अल्पा., रू. भे.)

लांगड़ौ—१ देखो 'लांगौ' (अल्पा., रू. भे.) (अ. मा., डिं. को.)

उ०—१ गदा ले खड़ौ लांगड़ौ अग्र गांमी, भले मात हिंगोळ हिंगोळ भांमी । मुणीं मैं जिका आदि अन्नादि माई, अवत्तार ले मांमड़ा धांम आई । —मे. म.

उ०—२ जांगड़ा झड़ां सत्र वीर सर गवीजै, ताप पड़ कांगड़ा लंक तांई । पर गढां सांगड़ा दयण आयौ ऊछ्ज, नागध्रह लांगड़ा वीर नाई । —वद्रीदास खिड़ियौ

उ०—३ नांमी गिरंदां लांगड़ा विनां भू-डंडां चढावै न को । तवां रांम बना न को उडावै अ-ताप । निसा, राका विनां वेळ सांमुंद्र वढावै न को, पातां नेस तो विनां को वढावै 'प्रताप' ।
—कीरतसिंह खिड़ियौ

२ देखो 'लंगड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ भगवांनदास भाराथ भल्ल, 'वगडी' तखत्त आखाड़मल्ल । लांगड़ौ हणु जिम लियण वाथ, ओगम लागै अणभंग नाथ । —गु. रू. वं.

उ०—२ जोमंडी भंडीस ज्याग आयौ जिऊं चंडीस जायौ, राजपत्री आयौ जीऊं थंडीस व्याळ रेस । ओडडी असीसतौ लांगड़ौ कपीस आयौ, कोडंडी कसीसतौ क आयौ गुड़ाकेस । —हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—३ तै पाट 'वाघ' वेगड़ी तखत्त, 'वाघ' सुतन भड वांकड़ौ । भगवांन डहै असमांन भुज, हेक हणमत लांगड़ौ । —गु. रू. वं.

लांगटियौ-स. पु.—वाजरी के आटे को पांनी में मिलाकर आंच पर पका कर वनाया हुआ खाद्य पदार्थ ।

लांगडौ-सं. पु.—चकमक पत्थर के साथ लगी हुई छोटी सूत या खीप की रस्सी, जो आग जलाने के काम आती है ।

लांगण—देखो 'लांघण' (रू. भे)

लांगदार-वि.—लांग वाली ।

उ०—एक पग में चांदी री तांती झळकै अर एक कांन री ऊपरली लोळ में खरा मोत्यां री मांमा-मुरकी लटकै । किनारी हाळी लांगदार धोती तथा पागड़ी में तांवै री मादळियौ वांधोड़ौ है । —दसदोख

लांगळ-सं. पु. [सं. लांगलं] १ खेत जोतने का हल । (डिं. को.)

२ एक देश का नाम ।

उ०—कीर कास्मीर द्रविड गउड जांड लाड लांगळ जांग ळखस पार स्व जादव नेपाल अग वंग कलिंग तलिंग, मागध'''। —व. स.

रू. भे.—लंगळ, लांगड़

लांगळचकर, लांगळचक्र-सं. पु. [सं. लांगलम्+चक्र] फलित ज्योतिष में हल के आकार का एक चक्र जिसके द्वारा भावी फसल के वारे में जाना जाता है ।

लांगळधुज, लांगळध्वज–सं. पु. यौ. [सं. लांगलं+ध्वज] बलराम, हलधर ।

लांगळी–सं. पु. [सं. लांगलिन्] १ बलराम, हलधर ।

२ नारियल का पेड़ ।

३ सर्प, सांप ।

४ पुराणों में एक नदी का नाम ।

५ ऋषभक नामक अष्टवर्ग की औषधि ।

६ देखो 'लांगूळी' (रू. भे.)

लांगळीस–सं. पु. यौ. [सं. लांगलं+ईश] १ बलराम, बलभद्र । २ शिवलिंग ।

लांगुळ, लांगुल, लांगूल–सं. पु. [सं. लांगुलं] १ पूंछ, दुम ।

उ०—गळइ घंट गयंद-तणइ, पस्चिम बंध्या पेस । लोडंता लांगुल छटा, श्राइसी श्रवनेस । —मा. कां. प्र.

२ बन्दर, वानर । (ह. नां. मा.)

३ शिश्न, जिननेन्द्रीय । (डिं. को.)

[सं. लांगलं] ४ हल के श्राकार का एक प्रकार का शस्त्र ।

उ०—चाप चक्र, नाराच, श्ररद्धचंद्र, श्रसिपत्र, करपत्र, क्षुरप्र, क्षुरिका, करवाल, कुंत, सल्ल, वावल्ल, भल्ल, सत्यल, त्रिसूल, सक्ति, सर, तोमर, मुरवि, श्ररद्धमुरयि, परसु, पास, पट्टिस, दूस, लांगुल, मुसल, मुखंढि, मुग्दर, लगुड, गदा, दड, भिंडमाल, गांजीव, विस्फोटक, वज्र, तरुवारि, प्रमुख सर्ट्त्रिंसद्दंडायुधानि । —व. स.

५ देखो 'लंगूर' (रू. भे.)

लांगूळी–सं. पु. [सं. लांगूलिन्] १ वन्दर, वानर ।

२ लंगूर ।

३ हनुमान, पवनसुत ।

रू. भे.—लंगूल, लांगळी ।

लांगेरी–सं. पु.—झड़-बेरी के पत्तों सहित कटे हुए सूखे कांटों व डंठलों का समूह या ढेर ।

लांगोवर–सं. पु.—एक मारवाड़ी गीत ।

लांगो–सं. पु. [सं. लांगूलिन्] १ बन्दर, वानर ।

२ लंगूर ।

३ हनुमान, पवनसुत ।

उ०—१ लायो जाय रोगहर लांगो, पिलंग सहतो सुण प्रवळ । देखै जाग रीछ कपि दोळा, दुसह सफोळा रांमदळ । —र. रू.

उ०—२ *लंकाळ सेवग तूझ लांगो, भ्रात लिछमण खळां-भांगो ।* पती-कुळ स्वारथी पांगो, करण असह निकंद । —र. ज. प्र.

४ भैरव ।

उ०—काळा गोरा कंवर, रगतमल लांगो कळवो । मांण भद्र हनुमांन, कोइलो नरसिंघ फळवो । —मा. वचनिका

उ०—२ कळू में वळू तांमापत्र करा दे, भरत खंड सरा दे रोर भांगो । श्रदत गन फिरा दे मुदत करदे श्रग्गां, सग्गां घन दिरादे तुरत लांगो । —भैरूंजी रो गीत

५ वीर, बहादुर ।

उ०—गाय गाय भरी बंगा टोग्ला नांतिया गोरां, बांकीपातसाही जंगां वजाई वांणास । ऊगी दीह लांगो 'सिंघ' श्रायियो 'दलेल' वाळो, रागां पांण कीधा वंदीगांना नै रनास । —संकरदांन सांमोर

६ देखो 'लंगड़ो' (रू. भे.)

उ०—करै उव राव दुसार कटार, वहै कंठि हार परी जिण वार । लांगो हणमंत पराक्रम नेनि, दियै नह हार जति वप देणि । —सू. प्र.

रू. भे. लंगो

अल्पा. लंगड़ो, लांगड़ो

लांघड़ो—देखो 'लंगड़ो' (रू. भे.)

उ०—दूसरां जेम नह रांचियो देस नै, भरस रो सांचियो थको श्रायो । लांघड़ो कपी ज्यूं रांम लायो लड़ै, लड़ै जिम 'जुझारो' श्रात लायो । —बुधजी श्रासियौ

लांघण–सं. पु. [सं. लंघनं] १ भूखा रहने की श्रवस्था या क्रिया ।

उ०—१ 'सांवली श्रा मोहर श्राप कनै किण ही सूल वेळां दुवेळां नूं कठैक छांनी राखी हुती सु श्राज गुढा रा लोग नूं लांघण पड़ती जांण नै मोनूं दी छै । —नैणसी

उ०—२ हरिया लांघण साधकै, जाचै किनी न जाय । यूं लांघणियो केहरी, मूवां पछै न खाय । —श्रनुभववांणी

२ उपवास या व्रत करने की क्रिया ।

उ०—पछै देवी ऊपर लांघण पांच दस किया । देवी प्रसन्न हुई । कह्यौ.—तूठी, मांग ।' —नैणसी

क्रि. प्र.—करणो, पड़णो, होणो ।

३ लांघने या फांदने की क्रिया या भाव ।

४ घोड़े की एक प्रकार की चाल विशेष ।

५ सीमा के बाहिर होने की क्रिया या भाव ।

रू. भे.—लंघण, लंधन, लांगण, लांघन ।

लांघणिश्रो, लांघणियो–वि. [सं. लंघनं+रा. पु. इयो] १ जिसने कुछ भी नहीं खाया हो, भूखा ।

उ०—१ श्रंगिश्रां ऊपरै फूलां रा चौसर पहरिश्रां लांघणिश्रां सिंघ री कटी, लंक घड़ै चड़ रहिश्रो छै । पांन सारिखौ पेट पातळो श्रम्रित सी नाभी कुंडळी माहि पांणी पीतां ढळकतौ दीसै छै । —रा. सा. स.

उ०—२ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति हमै राजांन कांम रा भूखिया, लांघणिया सीह ज्यौं श्रापाळि नै रहिया छै । जांणै

मदन-मयंद पछाड़ीजै छै । काछी जिमपुरि करि नै रहिया छै ।
—रा. सा. सं.

उ०—३ हरिया लांघण साधकै, जाचै किनी न जाज । यु लांघणियौ केहरी, मूवा पछै न खाय । —अनुभववांणी

२ कूद कर या फलाग मार कर एक ओर से दूसरी ओर पंहुचने वाला ।

रू. भे.—लंवणियौ, लंघाणियौ

लांघणीक-वि. ।—१ जिसने कुछ न खाया हो, भूखा ।

२ कृशोदर ।

रू. भे.—लंघणीक

लांघणौ-वि. (स्त्री. लांघणी) १ जिसने कुछ नही खाया हो, भूखा ।

२ लांघने वाला, उल्लंघन करने वाला ।

लांघणौ, लांघवौ-क्रि. स. [सं. लंघनम्] १ डग भर कर, चल कर या किसी वाहन के द्वारा किसी स्थान को पार करना, दूसरे सिरे पर पहुँच जाना ।

उ०—१ जव देहळी भीतर रूखमणीजी आया । तव देहळी लांघता पग आधौ दीयौ। तठे जेहड़ि पग की स्रीक्रस्णजी की नजरि पड़ी । —वेलि टी.

उ०—२ थळ कतार लांघण थटै, लै जिहाज जळ अंत । भोळी ढाळी वांणणी, वेटा घूत जणंत । —बां. दा.

२ छलांग भर कर या कूद कर किसी पदार्थ, नाला, कूप आदि के ऊपर से होकर दूसरे सिरे पर पहुँच जाना ।

उ०—१ सागर तीर मिळै संपाती, कहै लक में सिया दिखाती । जामवंत हनुमंत अराधै, सागर लांघण री विध साधै । —गी. रां.

उ०—२ लांघो चांवल पीळौ हो खाळ, डांवी देवी जीमणी (सिय) माळ । डांवी महासत्ति फै करइ, डांवा सारस, स्यंघ, सियाळ । —वी. दे.

३ इस गति से जाना कि रास्ता शीघ्र पार करके गंतव्य स्थान पर पहुंचा जा सके ।

उ०—राजा नूं देख सो सूअर भागियौ । राजा पीछौ कियौ । वन नदी परवत लांघतौ-लांघतौ सूअर एक वडी गुफा मांही पैठौ । —सिंघासंण वत्तीसी

४ किसी खाद्य-पदार्थ के ऊपर गुजरना, जो कि अनुचित माना जाता है ।

५ सीमा के वाहिर होना या जाना ।

६ व्यतीत करना या होना ।

७ त्यागना, छोड़ना ।

लांघणहार, हारौ (हारी), लांघणियौ—वि. ।

लांघिओड़ौ, लांघियोड़ौ, लांघ्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लांघीजणौ, लांघीजवौ—कर्म वा. ।

लंघणौ, लंघवौ—रू. भे. ।

लांघन – देखो 'लाघण' (रू. भे.)

लांघियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ डग भरकर, चलकर या किसी वाहन के द्वारा किसी स्थान को पार किया हुआ, दूसरे सिरे पर पहुँचा हुआ. २ छलांग भर कर या कूद कर किसी पदार्थ, नाला, कूप आदि के ऊपर से होकर दूसरे सिरे पर पहुंचा हुआ ३ इस गति से गया हुआ कि रास्ता शीघ्र पार करके गंतव्य स्थान पर पहुँचा हुआ. ४ किसी खाद्य पदार्थ के ऊपर से होकर गुजरा हुआ, जो कि अनुचित माना जाता है. ५ सीमा के वाहिर गया हुआ. ६ व्यतीत किया हुआ या हुवा हुआ. ७ त्याग किया हुआ, छोड़ा हुआ । (स्त्री. लांघियोड़ी)

लांघियौ—देखो 'लांघणियौ' (रू. भे.)

उ०—भांमरै पूंछ रा, भुवरियै रूं रा, चोळमै रंग रा, लांघियै सीह ज्यूं लंका चढिया थका, भागा गाडा ज्यूं वठठाठ करता थका वेस्या ज्यूं भाला करता थका, मातै हाथी ज्यूं हुंकारा करता थका । इसा ऊट भेकजै छै । —रा. सा. सं.

लांघौ—१ 'लांगौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लंगड़ौ' (रू. भे.)

लांच-सं. स्त्री.— कमी, अभाव ।

२ दोष, कलंक ।

३ घूस, रिश्वत ।

४ वाधा, कठिनाई ।

५ भुकाव ।

६ दगा, फरेब ।

उ०—क्षत्री लांच ग्राही हुसी, वचन कही नट जासी रे । दगा दगी घणा खेलसी, विस्वास घाती थासी रे । —जयवाणी

क्रि. वि.—७ किंचित शका ।

उ०—लाज न किम रण लांच लग, खग्ग न वाही खांच । समर चढ़ अस पट समै, खाविंद पहरौ खांच । —रैवतसिंह भाटी

लांचण, लांचन—देखो 'लांछन' (रू. भे.)

लांची-सं. स्त्री.—विलम्व, देरी ।

लांचौ-सं. पु—१ उत्तम श्रेणी का घास, जो वुवाई करते समय विशेष परिश्रम करने पर वैलों के लिए संग्रहित किया जाता है, या सुरक्षित रखा जाता है ।

उ०—१ खूटो वीजण कण लांचै खड़ खूटो, छपनै प्रळयागम पावन पड़ छूटो । फीका चै:रा पड़ फीका द्रग फेरै, हाहा ऊंडा दिन भूंडा भय हेरै । —ऊ. का.

उ०—२ करता मांचा दे लाचा कूतरिया, उतरता आसाढां मूंढा

ऊतरिया । सैंणा संकट में वंकट सब राया, घांटा घुटियोड़ा घूंघट घबराया । —ऊ. का.

२ खर्च में कमी पूर्ति के लिए लिया जाने वाला कर ।

उ०—महमंद वारे लोकां नै १८ कर लागा। ते फड़ी (प्रथम) दांण, (बीजौ) पूंछी, हळगत, भोम, भेट, तलार, सूंखड़ी वधांमणी लाग, मळवौ लाग, वळ, लांचौ, घोड़ा-चारण, फवारती सूंखड़ी, पाघड़ी-बरोड़, ढोरनी चराई, वाड़ी नी लाग, कांटी याळी लाग और काजीनी लाग । —नैणसी

वि.-(स्त्री. लांची) खराब, अशुभ ।

उ०—ताहरां पाबूजी कह्यौ जु-म्हांनूं सुगन लाचा हुआ छै। तैसूं म्हे रातौरात घरां जावस्यां । —नैणसी

लांछण, लांछन-सं. पु. [सं. लक्षण] १ दाग, धब्बा ।

२ निन्दनीय अथवा कुकर्म करने पर चरित्र पर लगने वाला कलंक ।

रू. भे.—लंछण, लंचन, लंछण, लंछन, लांचण, लांचन ।

लांजउ-सं. पु —एक देश का नाम ।

उ०—देस संख्या; आदिइं अयोध्या नगरी, उखामंडल, ग्राम च्यारि कोडि, वलवत्ता देस ३ कोडि, खुरसांण ग्राम कोडि १, गाजणउ ३२ लक्ष, कनूज ३६ लक्ष, चौड १४ लक्ष, आंबालू १४ लक्ष, द्रविड १२ लक्ष, विसु १ लक्ष, लांजउ १ लक्ष, वइराट १० सहस्र । —व. स.

लांजौ—देखो 'लंजौ' (रू. भे.)

लांठ-सं. पु.—१ गाय, बैल, भैंस आदि पशुओं का समूह ।

उ०-१ हीर चीर हेम तार घड़ी में विरांण होसी, लाखां द्रय विभौ सवै हाथी घोड़ा लांठ । गांम धांम भूठा नांणौ धंधै भूठा लागा, नरां गार रै मिरग रै पड़ी वायरा री गांठ । —ओपो आढौ

उ०-२ काचा करमां सूं रैंगा गळ रीता, साचा सोनैं रा वालळिया वीता । गोरां खाली हुय खालां री गाठां, लेग्यौ लूंठापण लांठां री लांठां । —ऊ. का.

२ देखो 'लांठौ' (मह. रू. भे.)

लांठाई-सं. स्त्री.—१ जबरदस्ती ।

२ सीनाजोरी, ज्यादती ।

रू. भे.—लूंठाई ।

लांठापण, लांठापणौ, लांठापौ-सं. पु.—१ जबरदस्ती, बलात् ।

उ०—काचा करमां सूं रैंगा गळ रीता। साचा सोना रा वाळलिया वीता। गोरां खाली हुय खालां री गांठां। लेग्यौ लूंठापण लांठां री लांठां । —ऊ. का.

२ सीनाजोरी, ज्यादती ।

रू. भे.—लूंठापण, लूंठापणौ

लांठौ-वि. [सं. लुंठकः या लुंठाकः] (स्त्री. लांठी) १ जबरदस्त, जोरदार ।

उ०—वणावौ आप वातां वडी, साप हुवै किम सींदरौ । सनमंद थयौ लांठौ सदा, जांणां ठणको 'जींद' रौ । —पा. प्र.

२ शक्तिशाली, बलवान ।

उ०-१ यह चालक धनवंतपुर,लांठै लूट लियाह । कांठै नदी कवेरजा, सेमा खड़ा कियाह । —बां. दा.

उ०—२ ताहरां साह कूकियौ, उतावळौ वोलियौ-रै ! लोकां देखो, लांठौ थको खोसै छै । —पलक दरियाव री वात

मुहा.—लांठा रौ डोको ई डांग फाड़ै=सबल आश्रित निर्बल भी सबलों से कम नहीं होते ।

३ वीर, बहादुर ।

उ०—लाभसी विगत लांठा भलां, नरां नाच आयौ नहै । जिहंगीर' 'खुरम' उभै दळां, उभै कोस अंतर रहै । —गु. रू. वं.

५ उत्कंठा, लालसा

उ०—आपरौ सरीर घणौ निरोगौ रै'वै, म्हारी आईज लांठी कांमना । —फुलवाड़ी

६ दृढ़, मजबूत ।

७ जो आकार, भार एवं विस्तार के अनुसार बड़ा हो, विशाल, भारी, विस्तृत ।

उ०—१ धूंद री घेरौ सीना सूं लांठौ । निचलौ तंग हळकौ नै ऊपरलौ भारी। —फुलवाड़ी

उ०—२ जिण गांव री आ बात है उणरा ठाकर अेक वांणिया माथै खीझ करै तो वै उण रा पाड़ौस में गांव-वांभी नै लांठौ थाळी देय उण रै नांव पट्टौ कर दियौ । —फुलवाड़ी

उ०—३ संकर भगवांन भांग री अेक लांठौ लूंदो गिट नै बोल्या-थारै साथै घूमण में ओ ईज तो डर है । —फुलवाड़ी

उ०—४ वेकळू रेत रा लांठा धोरा में विरखा रौ पांणी रिसै ज्यूं उण राज री रैया रै अंतस में सगळा अकरम अन्याव भरै, बुड़को ई नीं ऊठै । —फुलवाड़ी

८ प्रतिष्ठित, सम्माननीय ।

उ०—लांठा लांठा मौतबिर वेळा कुवेळा दही दूध रौ मिस लेय गूजरी रै घरै आवता संकता कोनीं । —फुलवाड़ी

९ जो आयु में बड़ा हो, युवा, नौजवान ।

उ०—१ भूंडण आंसू ढळकावती बोली—थारी देह रै जोखो व्हियां कीकर इण थेह रौ आणंद धिर रै' सकै । म्हैं तो आं चील्हरां नै जाय म्हारी फरजन उतारियौ । अबै थैं आंनै पाळ-पोस लांठा करौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ म्हैं वांनै घणा ई समझाया के अबै तौ सूवर साव साजौ सूरौ व्हैगी है। पींडारौ व्है ज्यूं माच्योड़ौ है। अर भाचरिया ई भरपूर लांठा व्हैगा। —फुलवाड़ी

१०—दीर्घ, लम्बा।

उ०—१ सेठांणी आडौ खोल वोली—वीरा, थारी ऊमर तौ लांठी। —फुलवाड़ी

उ०—२ सोरौ दोरौ दस वरसां री तौ गुड़कौ पाड सकां पण तीस वरस तौ म्हांनै जुग जित्ता लांठा लखावै। —फुलवाड़ी

११ अत्यधिक, अत्यन्त, वहुत।

उ०—१ पण इण सूं कांई व्है। कंवर रै हाथां तोरण री जोग सजणौ, आ इज तौ सव सूं लांठी खुशी री वात है। —फुलवाड़ी

उ०—२ म्हारै वास्तै इण सूं लांठै हरख री वात दुनियां में दूजी कीं नीं व्है सकै। —फुलवाड़ी

उ०—३ दोनां कांनला वैरी मचग्या। लोही सूं लांठा रचग्या। —दसदोख

१२ महान, वड़ा, समर्थ, सक्षम।

उ०—सांप पवन रै वेग आयौ नै निजर रै वेग जावतौ दीस्यौ। मारण वाळा सूं तारण वाळौ लांठौ। —फुलवाड़ी

१३ महत्वपूर्ण।

उ०—विना सोच्यां ई तुरत जवाव दियौ—अदाता, औ कांम आपनै छोटौ निगै आवै! इण सूं लांठौ कांम तौ दुनियां में ई कीं दूजौ नी व्है सकै। —फुलवाड़ी

१३ श्रेष्ठ, उत्तम, वेहत्तर।

उ०—खरचणा रै सिवाय थैं कोई दूजी वात जांणौ ई हौ! हजार वार समझाय दियौ तौ ई थांरै समझ में नीं आवै के इण दुनियां में कमाई करणां सूं लांठौ कीं पुन्न नीं है अर खरचणा सूं लांठौ कीं दूजौ पाप नीं है। —फुलवाड़ी

१४ खराव, वदतर।

१५ जो सख्या, मान, मात्रा में औरों से बढ कर हो।

१६ वयस्क, वालिग।

उ०—उणरी भोळप माथै हंसता थका वोल्या—इत्ता लांठा व्हैगा तौ ई थांरौ मन तौ टावर री गळांई साव भोळौ। —फुलवाड़ी

१७ कठिन, मुश्किल।

१८ आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न, धनी।

रू. भे.—लूठौ, लौठौ

लांड-वि.—१ जवरदस्त, जोरदार।

२ शक्तिशाली, वलवान।

३ देखो 'लंड' (मह., रू. भे.)

लांण—देखो 'लायण' (रू. भे.)

लांणत, लांणति-सं. स्त्री.—१ धिक्कार, फटकार, भर्त्सना।

उ०—१ ताहरां वीसळदेजी विसनदास नूं कह्यौ—'लांणत छै थांनै! सांगमराव थांमें घणी कीवी। —नैणसी

उ०—२ झपटी नही आंख झवकाई, लेगी नह लपकाई नै। लख लांणत मिनकी नै लागी, उण वेळा नह आई नैं। —ऊ. का.

उ०—३ तरै देवड़ां कह्यौ, "ठाकुरां, आपां ही रजपूत छां, ज्यां री धरती पनरह दिन हुवा ओर राठौड़ मारै-लूटै छै! लांणत छै थांनूं थे ही रजपूत कहावौ छौ? —तीडै छाडावत री वात

रू. भे.—नांनत, नांनती, लांनत, लांनती।

लांणौ-स. पु.—एक प्रकार का पौधा विशेष।

लांनत, लांनती—देखो 'लांणत' (रू. भे.)

उ० —१ पातर हूं ता प्रीत कर, आफू डळां अरोग। आखर पछताया अठै, लांनत दे दे लोग। —वां. दा.

उ०—२ कहै कंथ नूं दुहुं कुळ उजळी कांमणी, गजा धजां फौजां लोह लागै। नीसरै तिकै नर तिकां लांनत दियै, लारला वंस नूं लाज लागै। —वीर स्त्री रौ गीत

लांप-सं. पु.—एक प्रकार का घास, जो सवसे घटिया, निकम्मा व अनुपयोगी माना जाता है।

उ०—घण घण साचां धाय, नह फूटै पाहड़ निवड़। जठै लांप फूस लग जाय, राड़ पड़ै जद राजिया। —किरपारांम

रू भे.—लंप

अल्पा.—लांपड़ी, लांपड़ो, लांपळियौ, लांपळौ

लांपड़ी, लांपड़ौ. लांपळियौ, लांपळौ—देखो 'लांप' (अल्पा., रू भे.)

उ० खींपा पींपा फोग, मुरट वूई वरणावै। भुरट लांपड़ी लुळै, गजव वेलां गरणावै। हरियौ भरियौ वांन, ऊतरै सदा सतोलौ। ढिगला लगै ललांग, धोर धन देवण पोलौ। —दसदेव

लांपौ-सं पु. [स. ज्वालाप] १ दाह क्रिया के समय आरंभ में जलाया जाने वाला पूला (पुआल) जिसे जलाकर चिता में अग्नि प्रज्वलित की जाती है।

उ०—१ तद ढोलैजी काठ भेळौ कर नैं आरोगी चिणाई। पछै लांपौ देण रौ हुकम कियौ। —ढो. मा.

उ०—२ अन्नण चन्नण चिता चिणाई, नारेळां में दाग, आरवार फिर जाट लोटियै, लांपौ दियौ लगाय। —डूंगजी जवारजी री छावली

क्रि. प्र —देणौ, लगाणौ

मुहा.—लांपौ लागणौ=नष्ट होना।

लांपौ लगाणौ=नष्ट करना।

२ शव-दाह की अग्नि

३ अग्नि, आग ।

४ निर्लज्जतापूर्ण बात, अश्लील बात ।

उ०— लोक सहू लांपां लवइं, चित्त न राखि ठांहि । फागुण ना गुण स्या कहुं ? विरूआ वसुधा मांहि । —मा. कां. प्र.

वि.—निर्लज्ज ।

उ०—विण अपराधइं विप्र नइं, कहु-किम काढउं आज । जांघ उघाडउ आपणीं, लांपा ! तुम्ह नहीं लाज । —मा. कां. प्र.

लांफु, लांफू, लांफो—वि.—१ सीधा-सादा, सरल स्वभाव का

उ०—ऊंचो तो एरंड, खाटरो तोहि नाग, घणो भोळो लांफुं, वहु वोलै तो लवोळ । घणुं जीमै तौ भूखो, थोड़ो जीमै तौ अभोगियो । —सभा

२ लुच्चा, लफंगा ।

लांव-सं. स्त्री.—अवधि की दृष्टि से लम्बाई ।

उ०—हूं वीसद्धयो तें वेदिठा, म्हा तु वरस वारह की लांव । कइ म्हारइ हीरा ऊगहई, नहीं तो गोरीं ! तिजहूं परांण । —वी. दे.

लांवक भूंवक-सं. पु. [अनु.] गुच्छा ।

उ०—१ सखी मोत्यां रा लांवक भूंवका, किस्तुरी वांदउ माळ । जाय वांदो छतरपतियां रै, मेहळां में छतरपति सा । —लो गी.

वि.—पूर्ण शृंगार युक्त (आभूषणों से सुसज्जित) ।

उ०—लांवकभूंवक लाडली, अंग टेर अपारां । जण पुळमै हाली 'जसां', सजीयां सिणगारां । —मयाराम दरजी री वात

रू. भे.—लूंवकभूंवक, लूमकभूमक ।

लांवड़धकै-सं. स्त्री.—नाराजगी प्रकट करने की क्रिया ।

उ०—सेठ घरै आतां ई पै'ला तो वींनणी माथै अणूता खीभिया उणनै घणी ई लांवड़धकै ली । —फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—लैणी ।

लांवछड़—देखो 'लांमछड़' (रू. भे.)

उ०—धुणियासी वणियां घरी, भुज वल 'पाल' भड़ांह । ले ळळका लाहोरणी, छूटै लांवछड़ांह । —पा. प्र.

लांवलूंव, लांवालूंव—देखो 'लूंवलूंव' (रू. भे)

लांवाहाथ-सं. पु. [सं लंब+हस्त] १ ऐसा हाथ जिसकी पहुंच या प्रभाव बहुत दूर तक हो ।

२ वह दांव या चाल जिससे अधिकाधिक स्वार्थ सिद्धि होती हो ।

रू. भे.—लंवहत, लंवहथ, लंवहात, लंवहाथ, लंबाहात, लंवाहाथ ।

लांवी—१ देखो 'लांवीकांचळी' ।

२ देखो 'लांवो' (स्त्री.)

रू. भे.—लंवी ।

लांवीकांचळी, लांवीवांयांरी-सं. स्त्री.—विधवा स्त्रियों के पहिनने के लिए लंबी बांहों की कंचुकी ।

रू. भे.—लंवीकांचळी

लांवेड़णो, लांवेड़वो—देखो 'लंवड़ाणो, लंवड़ावो' (रू. भे.)

लांवेड़णहार, हारो (हारी), लांवेड़णियो—वि. ।

लांवेड़िग्रोड़ो, लांवेड़ियोड़ो, लांवेड़्योड़ो—भू. का. कृ. ।

लांवेड़ीजणो, लांवेड़ीजवो—कर्म वा. ।

लांवेड़ियोड़ो—देखो 'लंवड़ायोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. लांवेड़ियोड़ी)

लांवेड़ो-सं. पु.—किसी उद्दण्ड गाय, वैल, भैंस आदि के खेत में चरने देने के लिए वांधा गया लम्वा रस्सा ।

वि. वि.—ऐसे पशु को पुनः शीघ्र पकड़ने के लिए इस प्रकार रस्सा वांधा जाता है।

मि.—ओरावो

लांवोड़ो—देखो 'लांवो' (अल्पा., रू. भे)

उ०—थूं है कुण ? सब सूं लांवोड़ो जमदूत वोल्यो - एक ऊंठ वाळो । —रातवासो

(स्त्री. लावोड़ी)

लांवो-वि. [सं. लंव] (स्त्री. लांवी) १ वह पदार्थ जिसके एक सिरे से दूसरे सिरे तक काफी अन्तर हो, लम्वा ।

उ०—१ लांवा मारग दूरि घर, विच है औघट घाट । हरि दरसन किम पाईयै, हरिया दुरलभ वाट । —अनुभववांणी

उ०—२ घणी सोनै-रूपै में गरकाव कीवी थकी । नकसदार जांणै गोड़ियै नागण लांवी कीवी छै । —रा. सा. सं.

२ वह जो ऊंचाई में काफी ऊपर उठा हुआ हो ।

उ०—ओ वंवोई में मजदूरी खातर आयोड़ो हो । वाधियो छः फुट रो लांवो पूजतो जवांन । —रातवासो

३ वह जो अवकाश, काल आदि की दृष्टि से नाप या मान में अधिक हो ।

उ०—पण इण सूं कांई व्है ! दूजा मिनखां रै वास्तै तो ग्रेक पलक मूं वेसी मौत रो वगत नीं व्है, पण म्हारी मौत रो वगत तो सित्तर वरसां घणी लांवो-लड़ाक व्हैगो । —फुलवाड़ी

मुहा.—लांवो होणो=१ वहुत समय तक न लौटना । २ मृत हो जाना । ३ खिसक कर चले जाना ।

लांवो करणो=१ किसी को खिसका देना । २ इतना मारना कि वह जमीन पर वेसुध लेट जाय । ३ किसी कार्य के समापन

में वहुत समय ले लेना। ४ विस्तार एवं ग्रायतन की दृष्टि से किसी निश्चित माप का।

ज्यूं—दस गज लांबौ कपड़ौ, पांच गज लांबौ सांप, वीस गज लाबी पगड़ी।

५ जिसका विस्तार साधारण माप से ग्रधिक हो, दीर्घ।

ज्यूं—लांवी कथा, लांवौ खर्च।

६ वह पदार्थ जो पूरे विस्तार में फैला हुग्रा हो।

उ०—ग्राज घरा दस ऊनम्यउ, काळी घड़ सखरांह। उवा धण देसी ग्रोळंवा, कर कर लांवी बांह। —ढो. मा.

रू. भे.—लंवउ, लंवू, लंवौ

ग्रल्पा.—लंवोड़ौ, लांवोड़ौ

लांबौ-तड़ंग—देखो 'लंवतड़ग' (रू. भे.)

लांम-सं. पु.—युद्ध, लड़ाई।

उ०—घण विरथा घण गाजणा, छित नह संकै छटाय। लांम लोटा झड़ भड़ लगा, फवै खाळ फंटाय। —रैवतसिंघ भाटी

लांमछड-सं. स्त्री.—प्राचीन समय की वह वंदूक जो पलीता (ग्राग की वत्ती) लगाने से चलती थी।

वि.—वह जो वहुत ग्रधिक लंवा हो।

रू. भे.—लंवछड़, लमछड़, लांवछड़।

लांमण—देखो 'लांवण' (रू. भे.)

लांमणीजणौ, लांमणीजवौ—देखो 'लांवणीजणौ, लांवणीजवौ (रू. भे.)

लांमणीजणहार, हारौ (हारी), लांमणीजणियौ—वि.।

लांमणीजिग्रोड़ौ, लांमणीजियोड़ौ, लांमणीज्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लांमणीजियोड़ौ—देखो 'लांवणिजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री लांमणीजियोड़ी)

लांमौ-स. पु.—१ मंगोलिया या तिव्वत में वौद्धों के धर्माचार्य, जो कई ग्रंशों में राजनैतिक नेता भी होते हैं।

२ ऊँट की तरह पागुर करने वाला घास-भक्षी एक जन्तु।

वि.—३ हल्का।

उ०—वात म वोलिसि लांमी, जा मीनति सिर नांमि, इम भणिइ रति सुणि सांमी, पांमीइं सुख एह नांमि। —ग्रागम माणिक्य

४ देखो 'लांवौ' (रू. भे.)

लांयणौ—देखो 'लाइणौ' (रू. भे.)

उ०—घर घर लागो लांयणौ, घर घर धाह पुकार। जनहरीया घर ग्रापणौ, रखै सो हुसीयार। —ग्रनुभववांणी

क्रि. प्र.—लगणौ, लागणौ।

लांवण-सं. स्त्री.—१ स्त्रियों के लहंगे, पेटीकोट या घाघरे का निचला भाग या किनारा।

२ ऋतुमती स्त्रियों के पास ग्राने या स्पर्श मे कुछ वस्तुग्रों या विमारियों में लगने वाला दोष जिससे उनमें विकार उत्पन्न हो जाता है।

ज्यूं—पापड़ां में लांवण लागणी

क्रि. प्र.—करणी, झड़णी, झाड़णी लागणी, होणी।

रू. भे.—लांमण, लावण।

लांवणीजणौ, लाँवणीजवौ-क्रि. ग्र.—१ ऋतुमती स्त्री के पास ग्राने या स्पर्श से किसी वस्तु का विकृत हो जाना।

२ कुछ विशिष्ट विमारियों में ऋतुमती स्त्री के निकट ग्राने या सम्पर्क के कारण विमारियों का उग्र रूप धारण कर लेना।

ज्यूं—ग्रांखियां लांवणीजणी।

लांवणीजणहार, हारौ (हारी), लांवणीजणियौ—वि.।

लांवणीजिग्रोड़ौ, लांवणीजियोड़ौ, लांवणीज्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लांमणीजणौ, लांमणीजवौ—रू. भे.।

लांवणिजियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ ऋतुमती स्त्री के पास ग्राने से या स्पर्श से विकृत हुवा हुग्रा. २ कुछ विशिष्ट विमारियों में ऋतुमती स्त्री के निकट ग्राने या सम्पर्क से रोग का उग्र रूप धारण किया हुग्रा।

(स्त्री. लांवणीजियोड़ी)

लांवणौ-सं पु.—१ शादी या खुशी के ग्रवसर पर सम्वन्धियों ग्रथवा परिचित व्यक्तियों के यहां भेजी जाने वाली मिठाई या गुड़ ग्रादि वस्तु।

२ देखो 'लवणौ' (रू. भे.)

लांवमुंहौ-सं. पु.—एक प्रकार का ग्रशुभ घोड़ा।

लांहण—देखो 'लाहण' (रू. भे.)

उ०—२५१२ माहाजना री लांहण। —नैणसी

ला—१ रक्त खून। २ रंग ३ नालिका ४ स्त्री के वाल ५ रति ६ लक्ष्मी। (एका.)

ग्रं.—७ कानून, नियम।

८ कुछ शब्दों के साथ लगने वाला प्रत्यय जो ग्रभाव या कमी को सूचित करता है।

ज्यूं—लाजवाव, लापरवाह।

९ देखो 'लाह' (रू. भे.)

लाइ—देखो 'लाय' (रू. भे.)

उ०—१ वाजै सीतळ वाय, लगै झळ लाइ री, वैरणि चमकै वीज, दास इण ताइ री। —र. हमीर

उ०—२ ग्रागै विरह वलाइ जिका वणी लाइ रै डोळ, तिण मेटव

नूं 'रतना' आई पावस री छोळ । सोधैथा निध अंजण री जडी, त्यांरै सागै ई निध हुई हाजर खडी । —र. हमीर

लाइक—देखो 'लायक' (रू. भे.)

उ०—१ दुरस 'किसन' लख दोइ, लहै आढ़ां जस लाइक । गाटण 'केसव' गुणे, अवे पंचम लख वाइक । —सू. प्र.

उ०—२ दादू लाइक हम नही, हरि के दरसन जोग । बिन देखे मर जाहिगे, पिव के विरह वियोग । —दादूवांणी

उ०—३ तूं सरहद्दां लियै, तुंहिज सरहद्दां लाइक । तूं सरहद्दां धणी, तुंहिज सरहद्दां नाइक । —गु. रू. बं.

उ०—४ रूपक रख्यण लाइक लख्यण, पात्र परीखण लख्यपती । रीति रहावण क्रीति कहावण मौज महाघण मोट मती ।—ल. पि.

लाइकी—देखो 'लायकी' (रू. भे.)

लाइणौ—सं. पु.—अग्निकांड, आग ।

रू. भे.—लांयणौ, लाईणौ, लायणौ

लाइणौ, लाइबौ—क्रि. स.—स्पर्श कराना, लगाना ।

उ०—१ आज सूती निसह भरि, प्रीय जगाई आइ । विरह भुयंगम की डसी, लवथवतीं गळ लाइ । —ढो. मा.

उ०—२ लाइयां लंगरां पेखि पट्टाभरां, डील भोळी पडै कुंजरां डूंगरां । गज ऊघोळिया रज सूं गूडळा, घोममै पव दीपै फिरै धूंधळा । —गु. रू. बं.

देखो 'लाणौ, लावौ' (रू. भे.)

उ०—१ ससनेही सजण मिळया, रयण रही रस लाइ । चिहुं पहुरे चटकउ कियउ, वैरणि गई विहाइ । —ढो. मा.

उ०—२ दादू भांती पाये पसु पिरी, हांणें लाइ न वेर । साथ सभोई हल्लियों, पोइ पसंदो केर । —दादूवांणी

उ०—३ सकल लाणइ तूं गुण केवली, किम अम्हासि त बोलइ ते वली । इणि परिइं जगदीस्वरु घ्यादयइ, स्तवन नइं मिसि ऊलग लाइअइ । —जयसेखर सूरि

लाइणहार, हारौ (हारी), लाइणियौ—वि. ।

लाइओड़ौ, लाइयोड़ौ, —भू. का. कृ. ।

लाईजणौ, लाईजबौ —कर्म वा. ।

लाइयोड़ौ—भू. का. कृ.—१ स्पर्श कराया हुआ, लगाया हुआ ।

२ देखो 'लायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लाइयोड़ी)

लाइन—सं. स्त्री. [अं.] १ पंक्ति, कतार ।

२ रेल की पटरी ।

३ घरों की पंक्ति ।

ज्यूं—पुलिस लाइन ।

४ रेखा, लकीर ।

५ प्रकृति, स्वभाव ।

ज्यूं—किण लाइन रौ आदमी है ।

६ पेशा, व्यवसाय ।

ज्यूं—आप किण लाइन में हो ।

रू. भे.—लेण, लैण, लैन ।

लाइब्रेरी—सं. स्त्री. [अं.] पुस्तकालय ।

लाइसेंस—सं. पु. [अं.] १ किसी कार्य करने हेतु दिया जाने वाला अनुमतिपत्र ।

२ अनुमति, अनुज्ञा ।

रू. भे.—लैसंस

लाई—वि.—(स्त्री. लांण, लायण) १ बेचारा, गरीब ।

उ०—'लाई' बारह महीनां-सूं निकमो बैठो, घर-में टावर-टोळी कर 'र ५-६ जीव खावण वाळा । —वरसगांठ

[सं. लात] २ ग्रहण किया हुआ, अपनाया हुआ ।

३ देखो 'लाही' (रू. भे.)

४ देखो 'लाय' (रू. भे.)

लाईणौ—देखो 'लाइणौ' (रू. भे.)

लाईरांड—वि —१ कमजोर, डरपोक ।

२ बेचारा, असहाय ।

३ बिगड़ा हुआ, बेकार ।

ज्यूं—लाईरांड मांमलौ कर दियौ ।

४ मूर्ख ।

लाउचौ—देखो 'लावौ' (रू. भे.)

लाऊड़ौ—देखो 'लासू' (रू. भे.)

लाऊझंपौ, लाऊझाऊ—सं. पु.—हर समय कुछ प्राप्ति करने की लालसा, लोभ ।

लाएड़ौ—देखो 'लाड़ायौ' (रू. भे.)

लाकड़—१ लकड़ी का कुंदा ।

२ देखो 'लकड़ौ' (मह., रू भे.)

उ०—१ खड खूटा जंगळे, खूटिगा लाकड़ ईंधण । पांणी खूटा द्रहे, कूंप वापी लेखै कुण । —गु. रू. बं.

उ०—२ हांकणहार 'पाल' सुत हुवै, अचरज गयण वहै अंतरेख । लागवां सीस न ढोहे लाकड़, लाकड़ि लोही छोही लागेक ।

—मानसिंह कल्याणोत कछवाहा रौ गीत

उ०—३ वळण लिया नह गोरधन काज लाकड़ विया, दुजड़ लागी रहो कैतीक देह । भड़ां ज्यां छडालां मांहि घट भांजियो, छड़ां ज्यां दागियो भड़ां अण छेह । —गोरधनसिंह हाडा रौ गीत

लाकड़ि—देखो 'लकड़ी' (रू. भे.)

उ०—१ हांकणहार पाळ सुत हूवै अचरज गयण वहै अंतरेख। लागवां सीस न ढोहे लाकड़, लाकड़ि लोहौ छोहौ लागेक।

—मानसिंघ कल्याणोत कछवाहा री गीत

लाकड़ियौ—१ खूबकला नामक घास या औषधि।

२ देखो 'लकड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

लाकड़ी—देखो 'लकड़ी' (रू. भे.)

उ०—गुण विन ठाकर ठीकरौ, गुण विन मीत गँवार। गुण विन चंदण लाकड़ी, गुण विन नार कुनार। —अज्ञात

उ०—२ नँह पंचां जाय लाकड़ी नांखै, घणां जोर सज वियां घरां। चाड़ी करै कचेड़ी चढियां, नीर ऊतरै तुरत नरां।—वां. दा.

लाकड़ौ—देखो 'लकड़ौ (रू. भे.)

लाकड—देखो 'लकड़ौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ तेल रौ कडाहौ उकळै छै। अगर रा लाकड हेठै धुखै छै। —चौबोली

उ०—२ दिन लागां गिर डुलै, पडै ऐवास प्रथी पर। तरवर लाकड होय, सूख जावै सिंधू सर। —पा. प्र.

लाकडि—देखो 'लकड़ी' (रू. भे.)

लाकडियौ—देखो 'लकड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

लाकडी—देखो 'लकड़ी' (रू. भे.)

उ०—लांबी दाढी हाथ लाकडी. वेड वाजइ जूजुवा संघाण। प्रवत्र जनोई गळइ पहर नइ, आयउ विप्र जाचण आपांण।

—महादेव पारवती री वेलि

लाकडौ—देखो 'लकड़ौ' (रू. भे.)

लाकिनी–सं. स्त्री.—मांस योगिनी, देवी का एक रूप।

लाकेट–सं. पु. [अं.] गले की जंजीर में लटकता हुआ एक स्वर्ण आभूषण।

लाकौ–सं. पु.—आबादी के पास का चिन्हित ऊंचा स्थान।

लाक्षको–सं. स्त्री. [सं] जानकीजी का एक नाम।

लाक्षणिक–सं. पु.—१ लक्षण जानने वाला व्यक्ति।

२ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं।

वि.—१ लक्षण सम्बन्धी।

२ लक्षणों से युक्त।

३ वह जिससे लक्षण प्रकट हों।

४ गौणार्थवाची।

५ जो शब्द की लक्षणा-शक्ति पर आधारित हो।

लाक्षा–सं. स्त्री. [सं.] एक प्रकार का लाल रंग, महावर।

वि. वि.—प्राचीन काल में यह स्त्रियों के शृंगार की सामग्री था। इससे वे अपने पैर के तलवे और ओष्ट रंगती थीं, जैसे आजकल गुलाल पैरों पर लगाती हैं।

लाक्षाग्रह–सं. पु. यौ. [सं. लाक्षा+गृह] दुर्योधन द्वारा पांडवों को जलाने के निमित्त निर्मित लाख का घर।

वि. वि.—पाण्डु की मृत्योपरांत जब पाण्डव हस्तिनापुर में रहते थे तब दुर्योधनादि कौरव उनको अनेक कष्ट देते थे और मार डालने तक की कोशिशें करते थे। प्रजा को युवराज युधिष्ठर का आदर, प्यार देख दुर्योधन के हृदय में ईर्ष्या पैदा हुई। धृतराष्ट्र की अनुमति लेकर, जो पुत्र स्नेह से विवश थे, वारणावत में लाख, घास, वांस आदि जल्दी से आग लगने वाली चीजों से बने, ऊपर से बहुत सुन्दर और मजबूत, लाक्षागृह पुरोचन मंत्री की देखरेख में बनवाया और उसमें रहने के लिए पांचों पाण्डवों को भेज दिया। इस निष्ठुर कृत्य का पता विदुर को लगा और मय नामक असुर से उसमें से निकलने हेतु रहस्य मय भू-गर्भ से एक मार्ग बनवाया और पाण्डवों को सूचना दी। जिस दिन लाक्षाग्रह में आग लगने वाली थी उस दिन एक वृद्धा अपने पांचों पुत्रों के साथ अतिथि के रूप में वहां आकर सोये। दुर्योधन की कुटिलता का पता लगने पर भीम अपने भाईयों व माता कुन्ती को गुप्त मार्ग से ले गये और जंगल में पहुंचे। लाक्षागृह में वह वृद्धा और उसके पांचों पुत्र जल मरे। छः लाशों को देखकर कौरवों ने समझ लिया कि पाण्डव कुन्ती सहित जल मरे हैं। मतान्तर से उस घर में आग भीम ने लगायी थी और उस वृद्धा के साथ पुरोचन मंत्री भी जल मरा था। यह स्थान आज इलाहाबाद जिले में हडिया स्टेशन के पास गंगातट पर है जिसका कुछ अंश अब भी अवशेष है।

रू. भे.—लाखहरड, लाखहरु, लाखहरे, लाखाग्रह, लाखाघर

लाक्षातैल, लाक्षादितैल–सं. पु. [सं.] वैद्यक में एक प्रकार का तेल।

लाखंमण – देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०—जुड़ै रांम लाखंमणां काजि जैता, दुवै रूप मांनिक्ख ज आख देता। पुणै फेरि बब्भीखणौ जोड़ि पांणै, जोधा वंदरा यै नरां यै न जांणै। —सू. प्र.

लाख–सं. स्त्री. [सं. लाक्षा] १ एक प्रकार का लाल पदार्थ जो कई प्रकार के वृक्षों की टहनियों पर लाख कीड़ों की प्राकृतिक क्रियाओं से बनता है। (डि को.)

वि. वि.—यह औरतों के चूड़ियां बनाने, के अतिरिक्त पत्थर व लोहे को जोड़ने व रंग आदि बनाने के काम आता है।

यौ.—लाखाग्रह।

रू. भे. लाखा।

२ एक पेड़ विशेष।

उ०—रावण रांग रतांजणी, रवणी नइं रुद्राख। रुकरुदंति रायसळि, रोहड रोहिणि लाख। —मा. का. प्र.

वि.—बहुत, अत्यधिक ।

उ०—१ दरजै लाचार होय वेटी नं कैवणी ई पड़ची—विना किणी रे वतायां समभणा री वात ही जकी ई थैं नीं समभ सक्या तो पछै म्हारै लाख समभावणा सूं ई आपरी समभ में नीं आवैला । —फुलवाड़ी

उ०—२ जोसीड़ा नै लाख बधाई रे, अब घर आये स्यांम । आजि आनंद उमंगि भयो है, जीव लहे सुख धांम । —मीरां

२ देखो 'लक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ लाखा एक लाख सा, जो लाख मेछ देखे। लाख जोड़ लीन्हे यातें, कोड़ कूं न लेखे । —रा. रू.

उ०—२ ढाल हुवै जींदै घकै, लाखां लोह लियांह । सादा रंग तोनूं सदा, जूंभा जायलियांह । —पा. प्र.

लाखण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे)

लाखणउ—देखो 'लाखीणी' (रू. भे.)

उ०—उठी ! उठी ! गोरी करि सिंगार, लाखणउ कांचवउ नवसर हार । पीहर नु चोळी नवरंगी, वावन चंदन अंग सउहाई । —वी. दे.

लाखपत, लाखपति, लाखपती, लाखपत्ति, लाखपत्ती—देखो 'लखपति' (रू. भे)

उ०—उदै अरक्क ऊगहंत, माळ लक्ख मड्ही, स्रीवंत साह लाखपत्ति, कवि क्रोड दीवुही । —गु. रू. वं.

लाखपसाउ, लाखपसाव—सं. पु. यौ. [सं लक्ष+प्रसाद] चारण कवियों की कृत्तियों तथा उनके द्वारा किये गये महत्वपूर्ण कार्यों पर प्रसन्न होकर राजा, महाराजाओं द्वारा दिया जाने वाला एक लाख रुपये का पुरस्कार या भेंट ।

उ०—१ जिणि देसे सजण वसइ, तिणि दिसि वजउ वाउ । उन्न लगे मो लग्गसी, ऊ ही लाखपसाउ । —ढो. मा.

उ०—२ गांम आठ वारह गयंद, पनरह लाखपसाव । गुण पातां. रीभै 'गजण', दीधा दिल दरियाव । —सू. प्र.

वि वि.—प्राचीन काल में यह नकद रूप में दिया जाता था, कालान्तर में लाख पसाव के पुरस्कार में हाथी, घोड़े, वस्त्र, आभूपण आदि के अतिरिक्त कम से कम एक हजार से पांच हजार तक की वार्षिक आय की जागीर भी होती थी जो कि पुरस्कार की पूर्ति हेतु होते थे ।

रू. भे.—लाखांपसाउ. लाखांपसाव ।

लाखवरीस—देखो 'लक्षवरीस' (रू. भे.)

लाखमण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

लाखर, लाखरी—देखो 'लागेरी' (रू. भे.)

उ०—कपळा कवळी नें वारै पुचकारै, लाखर लाखर श्रै श्राखर मन मारै । हांसी वांसीसी सूकी हिय हारै, ससणीं लसणी लख द्वैदसणीं सारै । —ऊ का.

२ देखो 'लाखेरी' (रू. भे.)

लाखलखीणी—सं. स्त्री.—स्त्रियों के ओढ़ने का वहुत मूल्यवान वस्त्र विशेप ।

लाखवरीस—देखो 'लक्षवरीस' (रू. भे.)

उ०—आठ यगण चोइस अखर, चवि मात्रा चाळीस । दूण भुजंगी छंद दखि, लखपति लाखवरीस । —ल. पि.

लाखहरइ, लाखहरु, लाखहरे—देखो 'लाक्षाग्रह' (रू. भे.)

उ०—१ राति चालइ राउ मागि, सुरंगह कुणवि सउं, दियइ पुरोहितु दाउ, लाख्हरइ, विसनरु ठवइ । —सालिभद्र सूरि

उ०—२ साघीउ पच्छेवांणु भीमि, पुरोहितु लाखहरे, मेल्हीउ दीवु पीयांणु, केडइ आवी पुणु मिळए । —सालिभद्र सूरि

उ०—३ घिगु रि घिगु रि घिग दैवविलासु, पंचह पडव हुइ वणवासु । उतइं लाखहरु परिजळइ उतइ भीमि जु केडइ मिळीइ । —सालिभद्र सूरि

लाखांणी—सं. पु.—विवाह मंडप में भांवरों के उपरांत दुल्हे का विवाह मंडप के वाहर जाते समय ढोली द्वारा गाया जाने वाले लाखा—फूलांणी नामक लोक गीत पर दिया जाने वाला पुरस्कार ।

उ०—पच्छम रा गांवां वींद चँवरी सूं परणीज उतरै जद, चारणां रै रीत है, लाखो फूलांणी गवीजे, रुपियो गायक पावै । ऊ लाखांणी रो रुपियो कहावै । —बां. दा. ख्यात

वि.—लाख से सम्वन्धित ।

लाखांपसाउ. लाखांपसाव—देखो 'लाखपसाव' (रू. भे.)

उ०—नौवत वजाय जीत्यौ नरिंद्र, विरदाय विरद बोले कविंद्र । रीभियो दिया कमवज राव, सासणां गजां लाखांपसाव ।—वि. सं.

लाखा—देखो 'लाख' १ (रू. भे.) (डि. को.)

लाखाग्रह, लाखाघर—देखो 'लाक्षाग्रह' (रू. भे.)

उ०—१ किता वेर पांडव ऊपर कीध, लाखाग्रह कुंता काढे लीध । दुमासन क्रन्न गगेव 'दुजोण', खपे कुरखेत अढार अखोण । —ह. र.

उ०—२ लाखाग्रह री लाय, तैं पंडव राख्या त दिन । वडा किया वन मांय, साथ न छोड्यौ सांवरा । —रांमनाथ कवियो

लाखारस—देखो 'लखारस' (रू. भे.)

उ०—खासो टुकडी जामसाइ मुलतांनी तपाइ सालु मुगीपटण ताखो स्रीसाप तासतो चुनडी चोरसो लाखारस दुदांमी जामावाड कचियो । —व. स.

लाखावट—सं. पु.—वाड़मेर जिले के अन्तर्गत सिवाना नामक गांव के किले का नाम ।

उ०—जुध हुवणव लागो । वीजै दिन पाछिली पहर कोट लीधो ।

आदमी लाख कांम आया। उण पैंलां तियौ रै नांम पातिसाह लाखावट दियौ। —सातळ सोम री वात

उ०—२ 'माल' हरौ गढ सीस मरंतै, मंजन गळिया मलोमळ। लाखावट तुहाळी लोई, जांणै लघियौ गंग जळ। —दूदौ आसियौ

लाखावत-सं. पु.—राठोड़ वंश की एक उप शाखा।

लाखिक—देखो 'लाखीक' (रू. भे.)

उ०—दुघ्धार पटा खांडा दुवाढ, जमदूत अवाहै जम्म-दाढ। कटिया लाखिक लोटै केकांण, पाखरां सहित वढिया पलांण। —गु. रू. वं.

लाखिराज-वि.—कर-मुक्त। (मा. म.)

लाखी, लाखीक-सं. पु.—देखो 'लाखीकउ'

उ०—जै जया सवद विदण भणै, वयणै राजा वांमहा। लाखीक खड़े अकवर लियां, दुरगे दक्खण सांमहा। —रा. रू.

वि.—१ लाख रुपये के मूल्य का।

उ०—१ निकळै मिरड़ां लार, गैंठेली सूकी सांकळ। घर कोटां रै ल्येय, पड़ी लद लकड़चां वाखळ। टेका कड़ियां बांध, ढोवता घर पर आखी। फोगां हुंदी फसल, गैंरीवां गायक लाखी। —दसदेव

उ०—२ देखनै राजा नै कहीयौ, घोड़ा सखरा आया राज, हजारी छै पण लाखी कोई नही। —हाहुल हमीर री वात

उ०—३ ज्यां आगे फेरजे, वडा लाखीक वछेरा, ज्यां दरगह नित दियै, कोड़ सुख इंद्रह केरा। —जगौ खिड़ियौ

उ०—४ लाखीक वरीसण लाखोजी, भूपाळ निरेहण भाखोजी। जाडेज वडा गुण जांणोजी, प्राभौ प्रिथमाद प्रमांणोजी। —ल. पिं.

३ लाख की संख्या का।

उ०—साख साख मिळि भाख, लाख लाखीक लसक्कर। च्यारि चक्क नवखंड, हिलै फौजां गज डंबर। —र. वचनिका

४ लाख रुपयों वाला, लखपति।

उ०—लाखीक मिळइ मांडही लोक, चउहट्ट हाट माणिक्क चौक। अंतरी गउख ऊजळा ओप, अम्मली कोट खाई अळोप। —रा. ज. सी.

रू. भे.—लाक्खिक

५ देखो 'लखी' (१) (रू. भे.)

लाखीकउ, लाखीकौ-वि.—१ लाख रुपये के मूल्य का।

उ०—सांम्हा अस साहसूं, साह सभ्भिया वण चूकां। सार ओप सावळां, धूप खेहयौ बंदूकां। लाखीकां ऊपरा चढे भड़ लक्ख सचेळै। जांण जटी चल्लिया, कुंभ सुरतटीं सचेलै। —रा. रू.

२ सर्वश्रेष्ठ, अत्युत्तम।

उ० — पोतइ संखिणी पदमिणी वेउ लक्ष्मीनिधांन कळस आंणइ, लाखीकउ दीवौ प्रज्वलइ, कोटि ध्वज लहलहइ......। —व. स.

३ लाख (लाक्षा) का।

लाखीणी-सं. स्त्री.—१ नव-विवाहित दुल्हिन के चूड़े के नीचे पहिनी जाने वाली लाख की चूड़ी।

वि —२ चुड़े के नीचे लाख की चूड़ी पहिनी हुई नव-विवाहित कन्या।

लाखीणो-वि. [सं. लक्षम्] (स्त्री. लाखीणी) १ लाख रुपये के मूल्य का।

२ उत्तम गुण वाला, श्रेष्ठ।

उ०—१ लाडी लाखींणीं धारां धूंधाती, पीवर उघां री पारां पय पाती। भाखा-खीणां भड़ एवड़ ले आता, धाया धीणा रा गोधन रा धाता। —ऊ. का.

उ०—२ सुण रे सुवा लाखीणौ, तूं म्हारै पीवर जाय रे। —लो. गी.

उ०—३ सारस मरतौ जोय, सारसणी मरसी सही। लाखीणी आ लोय, जग में रहसी 'जेठवा'। —जेठवा रा दूहा

उ०—४ करहा लंब कराड़िआ, वे वे अंगुल कन्न। राति ज चीन्ही वेलड़ी, तिण लाखीणा पन्न। —ढो. मा.

३ पवित्र, पावन. पाक।

उ०—१ सिघा सिघावौ सिघ करो, रहजो अपणी दाय। इण लाखीणी जीभ सूं, जावौ कह्यौ न जाय। —अज्ञात

४ बहुमूल्य, कीमती।

उ०—कड़िये कटारौ धरमी रे वांकड़ौ सोरठड़ी तरवार ओ, पाय लाखीणो धरमी रे मोजड़ी हलते राता छै पाव म्यो। —लो. गी.

५ आल्हाद, हर्ष, खुशी संबंधी, आराम संबंधी, सौखीय।

उ०—१ सुहाग री लाखीणी रात वींद वींदणी नै सीख री वात बताई के वा घर-घर नीं वासदी लावण सारू जावै अर नीं कदेई परींडौ रीतौ राखै। —फुलवाड़ी

उ०—२ अैड़ी लाखीणी रातां में दिन जातां कांई वार लागै। चिमट्यां रै समचै दिन वीतण लागा। घणौ ई विणज वध्यौ। घणी ई वोरगत वधी। घणौ ई मांन वध्यौ। —फुलवाड़ी

६ दुर्लभ।

उ०—१ कवि एम समयसुंदर कहै, लाखीणौ अवसर लह्यौ। वासुपूज्य सरण आव्यउ वही, लांछन मिसि लागी रह्यौ। —स. कु.

७ अमूल्य।

उ०—थोड़ौ कुण करै भरोसौ थारौ, वीसां ई वातां लखण बुरा। लूंटै तो विन कुण लाखीणौ जोवन सरखौ रतन जुरा। —ओपौ आढौ

रू. भे.— लखीणो, लाखणउ

लाखूटौ—देखो 'लाखोटौ' (रू. भे.)

लाखेक-वि.—एक लख के लगभग।

लाखेटौ—देखो 'लाखोटौ' (रू. भे.)

लाखेर—१ देखो 'लाखेरी' (रू. भे.)

२ देखो 'लाखेरौ' (रू. भे.)

लाखेरियौ—देखो 'लाखेरौ' (अल्पा., रू. भे.)

लाखेरी-सं. स्त्री.—१ हल्का लाल रंग लिये हुए श्याम वर्ण की गाय या बकरी।

रू. भे.—लाखर, लाखरी, लाखेर

लाखेरौ-सं पु. [स्त्री. लाखेरी] १ हल्का लाल रंग लिये हुए श्याम वर्ण का घोड़ा या बैल।

रू. भे.—लाखर, लाखरि

अल्पा,.—लाखेरियौ

लाखेसरी, लाखेस्वरी—देखो 'लक्षेसरी' (रू. भे.)

उ०—अनेक सत्रूकार सत धरम रा राखणहार खैराइतां रा करणहार घजवधी कोड़ीधंज लाखेसरी दौलतिवंत चौरंग लिखमी रा लाडिला लोक वडा वापारी वहवारिया सोदागर वहरांमसंद साहूकार घणा सुख चैन सूं वसै छै। —रा. सा. सं.

लाखोटौ-सं. पु.—१ तालाव के मुख्य घाट के बिलकुल सामने (यानि विपरित दिशा में) खोदी गई मिट्टी डालने से बना हुआ ऊंचा ढेर।

उ०—पीछोला री पाखती दीवांण रा मोहल कोट सहर छै, मोहलां सू निजीक तळाव पीछोला मांहे लाखोटा री ठोड़ तळाव वीच रांणै अमरसिंह बादळ मोहल कराया छै। —नैणसी

२ किसी वस्तु को लाख से चिपकाने की क्रिया या ढंग।

उ०—सो इण तरै कागद लिख थैली में घात लाखोटौ कर प्रोहित नूं सोंपीयो। प्रोहित वहीर हुवौ। —कुंवरसी सांखला री वारता

रू. भे.—लाखूटी, लाखेटी।

लाखोफूलांणी-सं. पु.—लाखाफूलांणी नामक एक यादव की प्रशंसा में गाया जाने वाला एक लोक गीत।

उ०—नाडा भरियोड़ा नैड़ा निजराता, गाडा गुड़काता पैंड़ा रुड़पाता। लाखैफूलांणी भींणां सुर लेता, डीघा गाडीणा डव डव धुनि देता। —ऊ का.

लाखौ-सं. पु.—एक प्रकार का रंग विशेष।

लाग-सं. स्त्री.—१ लगने की क्रिया या भाव।

उ०—तन जोवन दिन चार के, तुं तन पहली त्याग। नही तौ तोकुं त्यागसी, हरीया रहो न लाग। —अनुभववांणी

२ अनुराग, प्रेम, मोहब्बत।

उ०—जिण भांत सूरज नै धूप, इण भांत विरह नै लाग री एक रूप। लाग री सोभा हाती चढियां जिसी, लाग। विना जिके पयादां समांन जांरी गिणती ही किसी। —र. हमीर

३ लगन, लौ।

उ०—दो कुळ त्याग भई वैरागण, आप मिळण की लाग (के काज) मीरां के प्रभु कब र मिळोगे, कुवज्या आई कांई याद। —मीरां

४ इच्छा, चाह।

उ०—मिथ्या द्रस्टि देव सूं, धरियउ पूरउ राग। अरथ तणउ अनरथ कियउ, देखौ नइ निज लाग। —वि. कु.

५ सम्बन्ध, सम्पर्क।

६ ईर्ष्या।

उ०—ओ दूहौ कुंवर कहीयौ ता पाछै लोग सरब कुंवर सुं लाग करै। तद लोकां तौ राजा री छोटी रांणी नुं भखाया नै कही जो वीरभांण ना कढावौ तौ राज थांरौ हुवै। —चौबोली

७ मौका, अनुकूल परिस्थिति।

उ०—पिरि कहूं जु पीहरि जाइ, आज छि ए लाग, सुख पांमि सुंदरि, मुझ मोकलु थाइ पाग८ —नळाख्यांन

८ नेग।

वि. वि.—देखो नेग'

९ दक्षिणा।

उ०—गुरूजी ने गुरां कर थापिया नै कयौ, इण देस मांहै मांहरी जेत होसी तौ मांहरां पुत्र पोता मांहरी साख रा होसी सौ राज नै गुरु कर मांनसी नै व्याह रौ लाग, चवरी रौ लागभाग दीवौ, जोड़ो खीरोदक रौ, जायै परणियै गुरुजी नै देसी। —रा. व. वि.

१० शाक विशेष में दिया जाने वाला वेसन का मिश्रण या पुट।

११ लगान, भूमि-कर।

१२ किसी नशे आदि का व्यसन।

क्रि. प्र.—लागणौ

१३ एक प्रकार का नृत्य।

१४ प्रतिस्पर्धा, होड़।

वि. - योग्य, काबिल।

क्रि. वि.—लिए, वास्ते। (वं. भा.)

लागट-सं. पु.—वह ऊंट जिसके पैर और ईडर परस्पर रगड़ खाते हों। और पैर के निरन्तर रगड़ से होने वाला घाव।

रू. भे.—लागत

लागणियौ—देखो 'लागणौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ राज ऐ तौ मोत्यां रा दातार जवांई म्हांनै घणांई

सवावै। राज ऐं तो लागणियै नयनां रा बाई रा स्यांम। जवांई म्हांनै प्यारा लागै हो। —लो. गी.

उ०—२ आखी जगदीस्वर सांचण अभिलाखी, राखी वांचण री ईस्वर नह राखी। लोयण लागणिया तणियां लजवाळा, कोयण काजळिया रळिया रजवाळा। —ऊ. का.

(स्त्री. लागणी)

लागणो–वि. (स्त्री. लागणी) १ मारने वाला, चोट पहुंचाने वाला।

उ०—प्रेत रा सहंसी सही सावात जागणी पाड़ै, मेळा सोभागणी गाढो भरोसो अचूक। तोल अयागणी पावै सवदां दागणी तोप, वैरियां लागणी हीयै नागणी वंदूक। —चंडजी वारहट

२ आकर्षित करने वाला, मोहित करने वाला।

उ०—चोटी वाळी चमक लोइणां लागणी, फणधर जिसड़ै फैल नवी कांइं नागणी। अळकां वळ अद्भुत्त छुवंती छत्तियां, उभक्रंती अंग अंग कता जण तत्तियां। —र. हमीर

उ०—२ सोनै री आड निलाड रै ऊपर दीना। कुरजां रो टोळो, सहेल्यां रो हबोळो। साथ लीना अै लागणा लोयणां। —पनां

३ लगने वाला।

४ देखो 'लागट'।

अल्पा.—लागणियो।

लागणो, लागवो–क्रि. अ.—१ स्पर्श होना, छूना।

उ०—१ पिण मन मांहै आवटै, वळै घणो, उणरो डील दूवळो हूतो जाय, तिण समै मेरारै को एक आंधो सु मिळण नुं आयो छै, तिणरै मेरी पगै लागो। —नैणसी

उ०—२ इम वागा लागा असमांणां, कूंतां घमक भाट केवांणां जमदढ खंजर अम्होसम्ह जड़िया, लूयवथां जेठी जिम लड़िया। —सू. प्र.

२ चिपकना, लिपटना।

उ०—१ स्रीहर परहर अवर नूं, मत संभरै अयांण। तरु छंडै लागी लता, पत्थर चे गळ जांण। —ह. र.

उ०—२ वीज न देख चहड्डियां, प्री परदेस गयांह। आपण लीय भवुक्कड़ा, गळि लागी सहरांह। —ढो. मा.

उ०—३ सुपनइ प्रीतम मुझ मिळ्या, हूँ लागी गळि रोइ। डरपत पलक न खोलही. मतिहि विछोहउ होइ। —ढो. मा.

३ पहुंचना।

उ०—धर वहतां पुर मारतां, मांडल लागा आय। दूदो साम्है पूरियो, लड़े अमांमै आय —रा. रू.

४ खर्च होना, व्यतीत होना।

उ०—१ जोधपुरो चढियो जरां, ईखण पुर अजमेर। लागी मिळतां खांन सूं, एक महूरत वेर। —रा. रू.

उ०—२ घड़ी दोय आवतां पलक दोय जावतां, सायण्यां में सारो दिन लागै ए मिरगानैणी थारै विना जिवड़ो भग्यो डोले। —लो. गी.

५ नियोजित होना।

उ०—१ जोधांणै लागा रहै, भाटी हरदासोत। मिळ देवीजर मारियो, मेछ गया लख मौत। —रा. रू.

उ०—२ गोरी ए, वांका तो परण्या परदेस वांकी तो लागी नोकरी, श्रो मेरी नार वांकी तो लागी, नोकरी, श्रो मेरी नार —लो. गी.

६ प्रस्फुटित होना, अंकुरित होना, खिलना।

७ फल फूल युक्त होना।

ज्यूं—मतीरो लागणो, वोर लागणा।

उ०—१ सायवा म्हारै छै वाग में चंपेलड़ी जी राज, जें कै लाग्या छै धोळा धोळा फूल, प्यारा लागो भाभी नै देवर लाडला जी राज। —लो. गी.

उ०—२ कासी करवत सिर सहै, गळै हिमाळै देह। हरीया निज फल दूरि है, लागै फूल वनेह। —अनुभववांणी

८ अनुभव होना, अनुभूति होना।

उ०—१ देवर, म्हारी घोती घोवै ए वलाय गौरै पूंचै पर सरदी लागज्यो जी राज। —लो. गी.

उ०—२ चंपा-केरी पांखड़ी, गूंथूं नवसर हार। जउ गळ पहरूं पीव विन, तउ लागै अंगार। —ढो. मा.

उ०—३ विणजारा रै, लोभी, लादचो छै मगरां जी वोझ, पेट में झटको लागियो, विणजारा रै। —लो. गी.

उ०—४ झटको लागतां ई ठाकर अठी-उठी जोयो। —फुलवाड़ी

९ प्रतीत होना।

उ०—१ लागै साद सहांमणउ, नस भर कुंझड़ियांह। जळ पोइणिए छाइयउ, कहउ त पूंगळ जांह। —ढो. मा.

उ०—२ फुरियो भादरवो धुरियो नह फीको, नीरद रज आगै लागै नह नीको। —ऊ. का.

१० प्रवृत होना।

उ०—'रतना' मद मै मत्त निसंक हुई थी तिण रा संकोज हूं रुकण लागी, लाज रै भार आंखियां झुकण लागी। —र. हमीर

११ आरम्भ होना, शुरू होना।

उ०—१ तेतले समइ-फूटेवा लागा कपाळ मंडळ, भाजेवा लागा घनुरमंडळ। जाएवा लागा सिरखंड, पड़वा लागी खांडा तणी

झड । वाजिवा लागी सुभटनी काटकड़ी, नाचेवा लागा घड़-कवंध पाड़िवा लागा ध्वज चिंघ, प्रहार जरजर कुंजर पड़ई ।
—रा. सा. सं.

उ०—२ आरंभ में कियो जेणि उपायो, गावण गुणनिधि हूं निगुण । किरि कठचीत्र पूतळी निजकरि, चीत्रारे लागी चित्रण ।
—वेळी

१२ प्रारम्भ होने के पश्चात लम्बी अवधि तक चलने वाला कार्य काल, समय ।

उ०—१ लागंते वैसाख री, वीज अरी वळवंड । रांम कियो मिळ 'केहरी', करी जिही सतखंड ।
—रा. रू.

उ०—२ उतरतौ आसोज अर लागती काती । वाजरियां सांगोपांग पाकोड़ी । वांस वांस ताळ डोका अर हाथ-हाथ भर सिरटा । दांणा देखो तौ जांणै परड़ रा डोळा ।
—अमरचूंनड़ी

१३ फैलना, पसरना ।

उ०—१ माया पसरी आग ज्यूं, घर घर लागी जाय । जनहरीया दाझै नहीं, मन तन हरि सु लाय ।
—अनुभववांणी

उ०—२ आकास ऊपरै अवीर नै गुलाल री अवरै ढवरी लाग रही छै ।
—रा. सा. सं.

१४ किसी अनिष्ठ या कष्टदायक बात का किसी से सम्बन्ध होना या उसके सम्पर्क में आना ।

उ०—भूत रौ जमारौ सारथक व्हियौ । वींदणी नै लागण रौ विचार आतां ई भूत नै पाछौ चेतौ व्हियौ । लाग्यां तौ आ दुख पावैला ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ म्हैं म्हारा मन सूं साची वात कीकर लुकावतौ । इण पैं'ली घणी ई लुगायां रै डील में लाग लाग वांनै घणौ ई दुख दियौ, पण म्हारा मन री अैड़ी गत तौ कदै ई नी बिगड़ी ।
—फुलवाड़ी

१५ होना ।

उ०—१ पाखती अरटांरी भींगड़ि चींग रड़ि पड़ि नै रही छै । डहा रौ खटाकौ लागिनै रहिआै छै ।
—रा. सा. सं.

उ०—२ दारू रा दाव वीच-वीच लीजै छै । गोळियां री खाटखड़ लागनै रही छै ।
—रा. सा. सं.

उ०—३ आंगणि जळ तिरप उरप अलि पिअति, मारुत चक्र किरि लियत मरू । रांमसरी खुमरी लागी रट, धूया माठा चंद घरू ।
—वेली

१६ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत होना ।

उ०—१ माह महारस मयण सव, अति उलहइ अनंग । मो मन लागौ मारवण, देखण, पूंगळ द्रंग ।
—ढो. मा.

उ०—२ मन भी लागा तन भी लागा, ज्यों वांमण गळ धागा रे मीरां के प्रभू गिरधर नागर, भाग हमारा जागा रे
—मीरां

उ०—३ पंच न डोल अबोल मुख, चंचळ होय न चित । जनहरिया मन थिर भया, लिव लागी नित प्रित ।
—अनुभववांणी

१७ जुड़ना या होना ।

उ०—हूं थने पूछूं वालमा, प्रीत कता मण होय । लागतड़े लेखो नही, टूटी टांक न होय ।
—लो. गी.

१८ अनुगमन (पिछे) होना ।

उ०—पिया गया परदेस में, नैणां टपकै नीर । ओळूं आवै पीव री, जीवड़ो धरै न धीर । जी उमराव थांरै लैरयां लागी आवूं म्हाराराज ।
—लो. गी.

१९ अन्तर्गत होना ।

उ०—अणहलवाड़ा पाटण नूं गांव ४५९ लागै छै तिण में तपो १ गांव ५२ सीधपुर छै । रु. २५००० पचीस हजार उपजतां री नैड़ नै पाटण'तौ आगै वडी ठोड़ हुती ।
—नैणसी

२० पीछे पड़ना, होना ।

उ०—१ गिरै-गोचर वतावै,'भोळां नै भरमावै अर गूंगा नै चरावै । लुगायां नै ठगै, पीमांळा नै अैठै अर लारै लागै है ।
—दसदोख

२१ प्रभावित होना ।

उ०—हरीया सो दिन वार धिन, आय मिळै सत संग । अब तौ चढै न ऊतरै, लागा हरि का रंग ।
—अनुभववांणी

२२ अन्तिम अवस्था में होना ।

ज्यूं —सूरज आयमण लागौ, जांनवर मरण लागौ ।

२३ किसी वस्तु का दूसरी पर जड़ा जाना, टांका जाना, वैठाया जाना या सटाया जाना ।

उ०—१ सू नमचा किण भांतरा छै ? वीटीवा चौगांनिया, घणै वनात रा लपेटिया, सालू रा लपेटिया, वोयदार रा मढिया, चैंत रा, कलावूत रै काम रा, सोनैरूपै रै वळां रा, रूपै रा कुलावा लागा थका, सोनै री टूंटी, रूपै री चिलमपोस छै ।
—रा. सा. सं.

उ०—२ सू आभरण पहरै छै । जरकसी साढी, अतलसी चरणौ, केसरी अंगिया, घणै विरांणपुरै री कोर पटै लागां थका ।
—रा. सा. सं.

२४ आश्रित होना ।

ज्यूं – ढोली हरेक जात रै लारै लागोड़ा है ।

२५ प्रज्वलित होना, जलना ।

उ०—फेर हुकम हुवै छै । महतावांरौ चांदणौ हुवै । सू महितावां पचास सब सांवठी ही लागी छै ।
—रा. सा. सं.

२६ आदी होना ।

ज्यूं—चाय, दारू लागणो ।
२७ किसी तल पर किसी गाढे तरल पदार्थ का लेप आदि के रूप में पोता जाना ।
ज्यूं—मेंदी लागणी, रंग लागणो, कीचड़ लागणो ।
२८ अभ्यस्त होना ।
२९ किसी रूप में सम्मिलित होना ।
ज्यूं—पोथी में परिसिस्ट लागणो ।
३० किसी आवरण या निरोध के कारण किसी विभाग या प्रकोष्ठ का ढक जाना या छिप जाना ।
ज्यूं—आडो लागणो, आंख लागणी ।
३१ किसी चीज़ का ऐसे क्रम से आना कि उसका यथोचित उपयोग हो सके ।
ज्यूं—हाट लागणी ।
३२ धारदार या नुकीले पदार्थ का शरीर में गढ़ना, धंसना, चुभना ।
ज्यूं-नख लागणो, हळवांणी लागणी, छुरी लागणी, तरवार लागणी
उ०—१ दीठी रूपाळी म्हैं ई धणियां, पण इसी यांही ज लोहणां री अंणियां । जिण भांत खतंग रा वांण लागां पछै हरै हीज प्रांण ।
—र. हमीर

उ०—२ कुंवरसी रै हाथ रो तीर जिण रै लागै, सो घोड़े रै मांह पार नीसर जावै । असवार रै लागै जै मांहा पाखरा भीजै नहीं । सो पूठ लागा मारता जावै छै । —कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—३ वस राखी जीभ कहै इम 'वांकी', कड़वा बोल्यां प्रभत किसी । लोह तणी तरवार न लागै, जीभ तणी तरवार जिसी ।
—वां. दा.

३३ किसी पदार्थ का उपयोग में प्रयुक्त होने पर अपना प्रभाव दिखाना ।
ज्यूं - दवा लागणी
३४ मंडराना, छा जाना ।
उ०—सांवळि कांइ न सिरजियां, अंबर लागी रहंत । वाट चलंता साल्ह प्रिय, ऊपर छांह करंत । —ढो. मा.
३५ किसी विषय में या व्यक्ति पर किसी बात या वस्तु का आरोप या प्रयोग होना ।
ज्यूं—कलंक लागणो, धारा लागणी ।
३६ लाक्षणिक रूप में किसी मुख्यतः धार्मिक क्षेत्र में कोई अनिष्ठ बात या कार्य किसी के अनिवार्य रूप से जिम्मे पड़ना ।
ज्यूं—पाप लागणो, दोष लागणो, सूतक लागणो ।
३७ जान पड़ना, मालूम होना ।
उ०—वां रै एक कांनी मोटरां री लैंण चाल री' धीरै धीरै । इसो लागै जांणै कीड़ी नगरो जाग गयो । —अमर चूनड़ी
३८ किसी काम या बात का घटित होना ।
ज्यूं—गरैण लागणो, भोग लागणो, ढेर लागणो ।
३९ किसी प्रकार की क्रिया की पूर्णता सिद्धि या स्थापना होना ।
ज्यूं—होड लागणी ।
४० किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए अपेक्षित या आवश्यक होना ।
ज्यूं—घर में दो मण धान महीना रो लागै ला ।
४१ पारिवारिक सम्बन्ध या रिश्ते के विचार से किसी के साथ किसी रूप में सम्बद्ध होना ।
ज्यूं—भाई, बैंन या देवर लागै ।
४२ गणित के क्षेत्र में कोई क्रिया ठीक और पूर्ण उतरना ।
ज्यूं—जोड़ लागणी
४३ आर्थिक क्षेत्र में अनिवार्य रूप से किसी प्रकार का दायित्व देना या निश्चित होना, हिस्से लगाना ।
ज्यूं—व्याज लागणो, चूंगी लागणी
४४ पेड़ पौधों के सम्बन्ध में किसी स्थान पर जमकर जीवित रहना, प्रफुल्लित होना, फूलना ।
ज्यूं—गुलाब लागणो, नींव, पिंपळ, वड़लो लागणो
४५ घोड़े, ऊंट, बैल आदि के सम्बन्ध में किसी प्रकार के दबाव या संघर्ष के कारण घाव उत्पन्न होना, गलने या सड़ने की किसी क्रिया का आरम्भ होना ।
ज्यूं—बलद रै खांधो लागणो, घोड़ा रै पीठ लागणी
४५ किसी पदार्थ में ऐसे किटाणु उत्पन्न होना या बाहर से आकर सम्मिलित होना जिससे उक्त वस्तु किसी प्रकार से नष्ट होती है ।
ज्यू– गवां रै खुपरयो लागणो, आटा में इलियां लागणी,
४६ खाद्य पदार्थों के सम्बन्ध में तेज आंच (आग) के कारण पकाये जाने वाले पदार्थ का बर्तन के पैंदे में जमना, चिपकना या सट जाना ।
ज्यूं—खीच लागणो, दूध लागणो, रोटी लागणी
४७ आघात होना, चोट पहुँचना ।
ज्यूं—सोनार रै घरै वड़तांई बारोत रो भचीड़ लागो ।
४८ किसी के साथ ऐसा व्यवहार होना कि वह उससे कुढ़े या चिढ़े ।
ज्यूं—भूंडो लागणो ।
४९ क्रमानुसार बारी आना, नम्बर आना ।
ज्यूं—कचैड़ी में मुकदमो लागणो, डाकखाना में रजिस्टरी नै पारसल लागणी ।
५० अंकित या निश्चित होना ।
ज्यूं—मौ'र लागणी, आंक लागणो
५१ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध होना ।

ज्यूं—व्हीं उण लुगाई रै लागोड़ी

५२ किसी वस्तु के शरीर मे स्पर्श होने से जलन या खाज उत्पन्न होना।

ज्यूं—मिरचां लागणी, कैवंच लागणी।

५३ स्त्री के साथ प्रसंग, मैथुन या संभोग होना।

५४ घोड़े का घोड़ी मे संभोग होना।

उ०—१ चौधरी कह्यो, सांवण रै महीनै मांहे समुन्द्र रै तीर घोडा बांधीजै अर रात री पोहरी दीजै। जद घोड़ी री पूंछ महा-झाल नीसरै तद जांणजै जळ घोडो लागौ। —राव रिणमल राठौड़ खावड़ियै री वात

उ०—सु काछेलां चारण समुद्र खेप भरण गया हुता, सु ईंयां एक घोड़ी लीवी लेनै समुद्र रै कांठै आय उतरिया। ताहरां तेजल घोड़ो नीसरनै घोड़ी नूं लागो। —नैणसी

लागणहार, हारौ (हारी), लागणियौ—वि.।

लागिओड़ो, लागियोड़ो, लाग्योड़ो—भू. का. कृ.।

लागीजणो, लागीजवौ—भाव वा.।

लगणौ, लगवौ, लग्गणौ, लग्गवौ—रू. भे.।

लागत-सं. स्त्री.—१ व्यय, खर्च।

उ०—मेरां नै कह्यो:—अठै उत्तम घर नहीं सो म्हैं थांनै लागत दां छा अनै अठै उत्तम घर विनां रोटी पांणी री अबखाई पड़ै। —भि द्र.

२ किसी वस्तु के बनाने या किसी अवसर विशेष पर खर्च की जाने वाली धन-राशि।

ज्यूं—मकांन वणावण में दस हजार रीपिया री लागत है। लड़की रा व्याव मे पांच हजार रिपिया री लागत है।

३ देखो 'लागट' (रू. भे.)

लागती-स. स्त्री.—सम्बन्ध, रिश्ता।

लागदार-स. पु.—१ नेग लेने वाला, नेगदार।

उ०—ओर ही इणै पईसौ-टको सारा नेगियां लागदारां नूं दियो। —नैणसी

२ कर या टेक्स वसूल करने वाला।

३ कर या टेक्स देने वाला।

लागवाग, लागभाग-सं. पु.—१ लगान, कर, टेक्स।

२ दक्षिणा।

उ०—राणां री पुरोहित पालीवाळ १ नै सिवड़ पुरोहित अठी सूं ओर ४ ब्राह्मण जूना विद्या पात्र वेद पढै छै। लागवाग दीजै छै। —राव रिणमल री वात

३ दस्तूर, नेग।

रू. भे.—लागवाग

लागमौ—देखो 'लाग'।

उ०—थोड़ी देर वाद फरीदै कयौ—माजी! तमाकू-री टक्को दिरावो नी। "अरे राड-रा! ओ फेर कांयरौ लागमौ लगायौ? —वरसगाठ

लागलपेट-सं. पु.—१ दुराव, छिपाव।

२ किसी वात में अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा या लगा हुआ तत्व या भाग।

उ०—वा तौ आवै ज्यूं, जका बोल उकळिया, वै ई विना लाग-लपेट रै पाधरा खळकाय दिया। —फुलवाड़ी

२ कपट, छल।

उ०—घणै हरख सूं विना लागलपेट रै विदा किया। —कुंवरसी साखला री वारता

३ सम्बन्ध, लगाव।

लागव-सं. पु.—वैरी, शत्रु।

उ०—हांकणहार 'पाळ' सुत हुवै, अचरज गयण वहै अंतरेख लागवां सीस न ढोहे लाकड़, लाकड़ि लोहो ढोहो लागेक। —मानसिंघ कल्यांणोत कछवाहा री गीत

लागवाग—देखो 'लागवाग' (रू. भे.)

ऊ०—१ फीटन को फेट दीन्ही, मरम परम मेट दीन्ही, भूमि भूप भेट दीन्ही, ऐसो उपकारी तं। लागवाग रेट कीन्ही, लूट काहू की न लीन्ही, भारी बुद्धि भीनी भूती, धन्य जसधारी तूं। —ऊ. का.

उ०—२ लागवाग दापै विना, त्यासूं हुवै न तांन। कद इक कळह करावसी, 'जीदे' तणी जवांन। —पा. प्र.

लागियोड़ो-भू. का. कृ. (स्त्री. लागियोड़ी) १ स्पर्श हुवा हुआ, छूआ हुआ. २ चिपका हुआ, लिपटा हुआ. ३ पहुँचा हुआ. ४ खर्च हुवा हुआ, व्यतीत हुवा हुआ. ५ नियोजित हुवा हुआ. ६ प्रस्फुटित हुवा हुआ, अंकुरित हुवा हुआ. ७ अनुभव हुवा हुआ, अनुभूति हुवी हुई. ८ प्रतीत हुवा हुआ. ९ प्रवृत्त हुवा हुआ. १० आरम्भ हुवा हुआ, शुरु हुवा हुआ. ११ प्रारम्भ होने के पश्चात् लम्बी अवधि तक चला हुआ कार्यकाल, समय, फैला हुआ, पसरा हुआ. १२ किसी अनिष्ट या कष्टदायक वात का किसी से संवध हुवा हुआ या उसके सम्पर्क में आया हुआ. १३ हुवा हुआ. १४ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत्त हुवा हुआ १५ जुड़ा हुआ या हुवा हुआ. १६ अनुगमन हुवा हुआ, पीछा हुवा हुआ. १७ अन्तर्गत हुवा हुआ. १८ पीछे पड़ा हुआ. १९ प्रभावित हुवा हुआ. २० अन्तिम अवस्था में हुवा हुआ. २१ किसी वस्तु का दूसरी वस्तु पर जड़ा हुआ, टांका हुआ, बैठाया हुआ या सटाया हुआ. २२ आश्रित हुवा हुआ. २३ प्रज्वलित हुवा हुआ. २४ आदी हुवा हुआ. २५ किसी तल पर किसी

गाढे तरल पदार्थ का लेप आदि के रूप में पोता हुआ. २६ अभ्यस्त हुवा हुआ. २७ किसी रूप में सम्मिलित हुवा हुआ. २८ किसी आवरण या विरोध के कारण कोई विभाग या प्रकोष्ठ ढका हुआ या छिपा हुआ. २९ किसी चीज का ऐसे क्रम से आया हुआ होना कि उसका यथोचित उपयोग हो सके. ३० धारदार या नुकीला पदार्थ शरीर में गढ़ा हुआ, धंसा हुआ, चुभा हुआ. ३१ किसी पदार्थ का उपयोग में प्रयुक्त हुवे होने पर अपना प्रभाव दिखाया हुआ. ३२ किसी विषय में या व्यक्ति पर किसी बात या वस्तु का आरोप या प्रयोग हुवा हुआ. ३३ लाक्षणिक रूप में किसी मुख्यतः धार्मिक क्षेत्र में कोई अनिष्ठ बात या कार्य किसी के अनिवार्य रूप से जिम्मे पड़ा हुआ. ३४ किसी काम या बात का घटित हुवा हुआ. ३५ किसी प्रकार की क्रिया की पूर्णता, सिद्धी या स्थापना हुवा हुआ. ३६ किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए अपेक्षित या आवश्यक हुवा हुआ. ३७ पारिवारिक सम्बन्ध या रिश्ते के विचार से किसी के साथ किसी के रूप में किसी के साथ सम्बद्ध हुवा हुआ. ३८ गणित के क्षेत्र में कोई क्रिया ठीक और पूर्ण उतरी हुई. ३९ आर्थिक क्षेत्र में अनिवार्य रूप से किसी प्रकार का दायित्व दिया हुआ, निश्चित हुवा हुआ या हिस्से लगा हुआ. ४० पेड़-पौधों के सम्बन्ध में किसी स्थान पर जम कर जीवित रहा हुआ, फला हुआ, फूला हुआ. ४१ घोडे, ऊंट, बैल आदि के सम्बन्ध में किसी प्रकार के दबाव या संघर्ष के कारण घाव उत्पन्न हुवा हुआ, गलने या सड़ने की किसी क्रिया का आरम्भ हुवा हुआ. ४२ किसी पदार्थ में ऐसे किटाणु उत्पन्न हुवा हुआ या बाहर से आकर सम्मिलित हुवा हुआ जिससे उक्त वस्तु खाए जाने से या किसी प्रकार से नष्ट होती है. ४३ खाद्य पदार्थों के सम्बन्ध में तेज आंच (आग) के कारण पकाये जाने वाले पदार्थ का बर्तन के पेंदे में जमा हुवा हुआ, चिपका हुवा हुआ या सटा हुवा हुआ. ४४ आघात हुवा हुआ, चोट पहुंची हुई. ४५ किसी के साथ ऐसा व्यवहार हुवा हुआ होना कि वह उससे कुढे या चिढ़े. ४६ क्रमानुसार वारी आई हुई या नम्बर आया हुआ. ४७ अंकित या निश्चित हुवा हुआ. ४८ किसी वस्तु के शरीर से स्पर्श हुवा हुआ होने से जलन या खुजली उत्पन्न हुवी हुई. ४९ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध हुवा हुआ. ५० अनुसरण हुवा हुआ. ५१ किसी स्त्री के साथ प्रसंग, मैथुन या संभोग हुवा हुआ. ५२ घोड़े का घोड़ी से संभोग हुवा हुआ. ५३ मल युक्त हुवा हुआ. ५४ मालूम हुवा हुआ. ५५ मंडराया हुआ, छाया हुआ।

लागु, लागू-वि.—१ वैरी, दुश्मन।

उ०—१ 'दला' रौ दौलतावाद टल्लै दिया, वाद भांजि दिखण नाद वागौ। दीह सिवरात री भांत दीठी दळां, लागुवां इसौ गुर कांन लागौ। —राव महेसदास राठौड़ रौ गीत

उ०—२ हाथि हुवौ संग्रांम तणी हर, थियै कळह तौ प्रकट थियौ। लागुवां भड़पां दियतां लागै, कमधज सावळ पनंग कियौ। —नांदण बारहठ

उ०—३ ऊभै कुंभ न लीनै असुरां, लागुवां पड़ियां पछै लयी। गढ़ गागरौणि गउ-त्री ग्रहतां, गांगू का ऊपरै गयी। —कुंभा खीची री गीत

२ पीछे पड़ने वाला।

उ०—१ रांणौ जगमाल राव मांनसिंघ रौ जमांई हुवै। सु वरती री लागू हुवौ। सिरोही जगमाल विजय कीधी। —राव चंद्रसेन री वात

३ कायम, मुकर्रर।

उ०—ठीक तौ थूं उण रौ वाप है। वडौ खतरनाक छोरौ है। उण माथै तीन सौ दो पूरौ लागू व्हैग्यौ है, वचणौ मुसकल है। —अमर चूनड़ी

४ लगने योग्य।

५ प्रयुक्त होने योग्य।

लागोड़ौ—देखो 'लागियोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ चतुरभुजजी रै भोग लागोड़ौ थाळ सूरजमलजी रै भोग लागै, पछै ओ थाळ ठाकुर जी रा रसोवड़ा दाखळ हुवै। —बां. दा. ख्यात

उ०—२ महल रै नीसरणी लागोड़ी राव ऊंची खैंच लिवी। महल रा किंवाड़ आडा जड़िया जिण सूं राव नूं मार सकिया नहीं। —बां. दा. ख्यात.

(स्त्री. लागोड़ी)

लाघव-सं. पु. [सं. लाघवं] १ लघु, छोटा।

उ०—१ देवी कालिका मा नमौ भद्र काळी, देवी दूरगा लाघव चारिताळी। देवी दांणवां काळ सुरपाळ देवी, देवी साधकं चारणं सिध सेवी। —देवि.

उ०—२ मुख मंगळ नांम उचार सदा, तन के अघ ओघन दाघव रे। हनमंत विभीखन भांन तनै, जिन कीन वडे, जन लाघव रे। —र. ज. प्र.

२ कमी, अल्पता।

३ दस प्रकार के यति धर्मों के अन्तर्गत पांचवां यति धर्म।

उ०—खंति मुति अज्जव मद्दव, लाघव पांचमो जांण। नित वखांण्या मुनिराज ने, भगवंत स्री वरधमांन। —जयवांणी

४ हल्कापन।

५ तेजी, शीघ्रता।

६ हाथ की सफाई या चालाकी।

७ संक्षिप्तता ।

८ असम्मान, अप्रतिष्ठा ।

लाड़वाड़, लाड़वाड़ियौ—देखो 'लारवाळ, लारवाळियौ' (रू. भे.)

उ०—फूलकंवर रै कांनां भणक पाड़्यां विना ई वौ अठी-उठी भाई गनायतां सूं ठसियौ भिड़ाय अेक अधबूढ बांमणी सूं नातौ कर लियौ । नातायत बांमणी रै सार्थं फूलकंवर रै साईनी अेक लाड़वाड़ छोरी आई लाड़वाड़ री अेक आंख में छिम अर दूजोड़ी में फूलौ । —फुलवाड़ी

लाड़ायौ–सं. पु. (स्त्री. लाड़ाई) १ कपड़ा, जूतादि पर मुंह मार कर खाने की आदत वाला पशु ।

२ विना आमंत्रण या मनुहार के जाकर भोजन करने वाला व्यक्ति ।

रू. भे.—लाएड़ो, लाड़ेवौ लाड़ो, ला'ड़ो, लायेड़ो, ल्या'ड़ो, ।

लाड़ेवौ—देखो 'लाड़ायौ' (रू. भे.)

लाड़ौ—१ वृद्ध, बूढ़ा ।

२ देखो 'लाड़ायौ' (रू. भे.)

लाचार–वि. [अ.] १ विवश, मजबूर ।

उ०—आंख्यां वळती ही । रंजी रै कारण गिज्या साव परवारि-योड़ी ही । दरजै लाचार होय सेठजी नै वहीर व्हैणौ ई पड़्यौ । —फुलवाड़ी

२ दीन, दुखी ।

३ असमर्थ, असहाय ।

लाचारगी, लाचारी–सं. स्त्री.—१ विवशता मजबूरी ।

उ०—बेटी! म्हारी आ भुळावण थारै वास्ते अणूंती मूंघी पड़ैला, आ जांणतां थकां ई म्हैं थनैं विखा रा ऊंडा वेरा में धरकावूं, थूं म्हारी इण लाचारी नै समझै है के नी । —फुलवाड़ी

२ असमर्थता ।

उ०—दोड़ा दोड़ी कर गिण गिण दुख गेरै । हाथा जोड़ी कर जिण तिण मुख हेरै । छंदागारी छिब प्यारी पुळवंती, कर कर लाचारी हारी कुळवंती । —ऊ. का.

३ दीनावस्था ।

रू. भे.—लचारी

लाच्छ, लाच्छी, लाछ—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—१ धरम कियां सुख होय, लाछ लिछमी वन पावै । धरम उतिम कुळ अवतरै, जळम दाळिद नहीं आवै । —वील्हौजी

उ०—१ दसमो वरस उतरतां ई तौ माईत पीळा हाथ करनै पराई करण री चिंता करण लागा । नीं आंगणै मावती अर नीं गिगन में । छाछ अर लाछ मांगण री कूंड़ी मेहणी । सगपण मार्थे सगपण आवण लागा । —फुलवाड़ी

लाछवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.) (डिं. को.)

लाछरी–सं. पु.—वस्त्र विशेष ।

उ०—पीतांबर चादर रत्तांबर नेत्रांबर खासरी सालूर चौलहिगं नीलुहूरां जरजरी मलवारी लाछरी अवोतरी अमरी गंगापारी । —व. स.

लाछवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—गज ग्राह विन्है ही तारिया, रीझै खीझै लाछवर । अजमाल चरण वंदण करै, धन तौ लीला चक्रधर । —गजउद्धार

लाछि—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—१ क्रखी विणज्ज आकर णि, पसू चौपदी धणी । अनेक संपदा उपाउ, लाछि चतुरांगणी —गु. रू. बं.

उ०—२ गोरी सण कातइ, लाछि वस्तु सातइ, नारद हेरउं करइ, नव खडि फिरइ, धनद यक्ष भंडारउं करइ, इसिउ रांवण नरेस्वर । —व. स.

उ०—३ कहि कुण आपणां मंदिर मांहि, लाछि उवेखई आवती ए । तीणइं मांनीय तैं सवि वात पुण, मनि ए इसुं चीतवइ ए । —हीराणंद सूरि

उ०—४ गरथ पांमी गुण कीजे इम कहै गंगो, साहमी साधु सुपुत्र संतोखीजे सगो । लाछि छै जे, लाधि, कहैं धरम लाहल्यो, परिहां संची राख्या सेण अपां नै स्वाद सो । —घ. व. ग्रं.

उ०—५ सरस वाना मगळ कीध सजळ थळ, प्रगट पुहवी निपट प्रेम प्रघळा । लहकती लाछि वळि लील लोकी लही, सुध मन करैं धरम-सीळ सगळा । —घ. व. ग्रं.

लाछिवर, लाछिवर—देखो लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

लाछी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

लाछीवर, लाछीवर—देखो लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

लाछुबाई–स. स्त्री.—चारण वंशोत्पन्न एक देवी विशेष ।

लाज–सं स्त्री. [सं. लज्जा] १ अन्तकरण की वृत्ति विशेष जिसमे स्वाभावत: या किसी निन्दनीय आचरण की भावना के कारण दूसरों के समक्ष वृत्तियां संकुचित हो जाती हैं मुंह से बात नहीं निकलती, चेष्टा मन्द पड़ जाती है, सिर व दृष्टि नीची हो जाती है, लज्जा, शर्म ।

उ०—१ नारायण रा नांम सूं लोक मरत जो लाज । बूडैला बुध वायरा, जळ विच छोड जहाज । —ह. र.

उ०—२ तद वार अंस पुरसां तणी आय वणी जग ऊपरा । महाराज तणै छळ मारवां, धारी लाज मुरद्धरा । —रा. रू.

२ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत ।

३ मर्यादा ।

उ०—१ कहियौं भीम हूँत कमधज्जै, सूर उदै ग्रावौ दळ सज्जै । दोनूं तरफ लाज कुळ राखौ, रूकां जोर सरीखौ राखौ । —रा. रू.

उ०—२ तन मन धन सब अरपन कीनूं, छाडी छै कुळ की लाज । दो कुळ त्याग भई वैरागण, ग्राप मिळण की लाज [के काज] । —मीरां

४ लगांम, नेकेल, बाग ।

उ०—१ सजि कसणा, करि लाज ग्रहि, चढियउ साल्हकुमार । करह करंकउ स्रवण सुणि, निद्रा जागी नार । —ढो. मा.

उ०—२ धावउ धावउ हे सखी, को दांवणि को लाज । साहिब म्हांकउ चालियउ, जइ कउ राखइ ग्राज । —ढो. मा.

२ रस्सी ।

रू. भे.—लज, लज्ज, लज्जा, लज्ज्या, लज्या, लाजा, लाजि, लाजी ।

मह.—लाजौ ।

लाजणौ, लाजवौ—क्रि. अ.—लज्जित होना, शर्मिन्दा होना, संकुचित होना ।

उ०—१ वडौ वोल खाटियौ । तठा पछै रावत मेघ परणीजियौ थौ सु ग्रायौ । वात सुणी । गाढौ लाजियौ । —नैणसी

उ०—२ वहु सव दइ लाजती न वोलइ, कहिस्यइ वळै ग्रनेरी काय । ग्रांगणइ कांइ माहरइ ग्रायउ, जांणइ परउ रिखीसर जाइ । —महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ दीधा मणि मंदिरै कातिग दीपक, सुत्री समांणियां माहि सुख । भीतर थका वाहिर इम भासै, मनि लाजति सुहाग मुख । —वेलि

२ सम्मान, प्रतिष्ठा, स्तर या शोभा में तुलनात्मक पतन होना । हल्का लगना, नीचा दिखना ।

उ०—१ जिस ग्रवास की सीढियूं के ऊपर रगदार सवजू पसमीन पायंदाज राजै । सो कैसी जिसकी सोभा के देखै तै नील घन सघन के वद्दळ लाजै । —सू प्र.

लाजणहार, हारौ (हारी), लाजणियौ—वि० ।

लाजिग्रोड़ौ, लाजियोड़ौ, लाज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लाजीजणौ, लाजीजवौ—भाव वा० ।

लजणौ, लजवौ, लजाणौ, लजावौ, लजावणौ, लजाववौ, लज्जणौ, लज्जवौ, लज्जाणौ, लज्जावौ, लज्जावणौ, लज्जाववौ—रू. भे. ।

लाजम, लाजमी—देखो 'लाजिमी' (रू. भे.)

उ०—१ ताइयां मिळ वैठोय वंध तनूं, मरणौ हव लाजम जग मनूं । परदेसिय 'वूडोय' 'जींद' परा, दुरही वित लेसिय 'देवळ' रा । —पा प्र.

उ०—२ एक तौ जिकौ कांम ग्रारंभ करै तिण रौ निरवाह करणौ ग्रापरै जुम्मै लाजमी जांणै । —नी. प्र.

लाजमौ—सं. पु.—१ सभ्यता, शिष्टता ।

२ देखो 'लवाजमौ' (रू. भे.)

उ०—१ तद खाफरी राजा रै दरवार वडै लाजमै पोसाख सूं जाय मुजरौ कियौ । —राजा भोज ग्रर खाफरै चोर री वात

उ०—२ तरै जगदेव नै कहायौ, कंवरजी जांन नै तयारी कीज्यौ । जगदेव केहायौ—गैणौ, पोसाख, घोड़ौ, राजा रौ लाजमौ नहीं नै पाळौ तौ इसै लवेस(लिवास) चालणौ ग्रावै नहीं । —जगदेव पंवार री वात

उ०—३ तरै भालां रै वीहा हुग्रौ सौ भाली नूं ग्रांणौ ग्रायौ । भाली पीहर ग्राई तरै लाजमै सूं हलाई । —कुंवरसी सांखला री वारता

लाजलज्जाळू—देखो 'लजाळू' (रू. भे.)

उ०—लाजलज्जाळू लक्ष्मणा, लूंणी लसन लवंगि । लीलावंती लूंकड़ी, लाहि लवीरी संगि । —मा. कां. प्र.

लाजवंत—देखो लजावत' (रू. भे.)

(स्त्री. लाजवंती)

लाजवंती, लाजवती—देखो 'लजावंती' (रू. भे.)

उ०—ग्रागळि पितमात रमंती ग्रंगणि, कांम विरांम छिपाड़ण काज । लाजवती ग्रंगि एह लाज विधि, लाज करंती ग्रावै लाज । —वेलि

लाजवरद—सं. पु [सं. राजवर्त्तक] १ एक कीमती पत्थर या रत्न ।

२ विलायती नील जो गंधक के मेल से वनता है ग्रौर वहुत वढ़िया तथा गहरा होता है ।

उ०—लाजवरद सील सुपेद, जंघाळ जुगत व्रत । रचि ग्रमाम नवरंग, करै मधि चित्र देव क्रत । —रा. रू.

लाजवरदी—वि. [फा.] लाजवरद के रंग का, हल्के नीले रंग का ।

लाजवाव—वि. [फा.] १ जो उत्तर न दे सके, निरुत्तर

२ अनुपम, अद्वितीय, वेजोड़ ।

लाजा—देखो 'लाज' (रू. भे.)

उ०—१ ना कीज्यौ सैणा नरां, काचौ वीजौ कांम । राखै लाजा संतरी, राजा साचौ रांम । —र. ज. प्र.

उ०—२ कांन सुणै कुण कवीदां काजा, लाजां वात रहै किम लाजा । पोढी नाथ धरम सत पाजा, राखी रीत रिड़मलां राजा । —भवूतसिंघजी रौ गीत

लाजामुखी–सं. स्त्री.—मुख की शर्म या लज्जा ।

वि.—लज्जित या शर्मिंदा रहने वाली ।

लाजाळू देखो 'लजाळू' (रू. भे.)

उ०—१ डोरा डिगमगता ग्राटी गुल दुळती, तिरछी भांकणिया बरछी सी तुलती । दुरबळ लाजाळू साळू में दीसै, भांमण भुगाळू व्याळू विन वीसै । —ऊ. का.

उ०—२ लाजाळू गुल चिमन में, राग कुळि मांहि कपोट । माळ-ड़िया मिनखां मही, या तीना में खोट । —बां. दा.

लाजाळूपण, लाजाळूपणौ—देखो 'लजाळूपण' (रू. भे.)

लाजि – देखो 'लाज' (रू. भे)

उ०—केहरी तणा जगगंग मचनै कंदळि, दुम्रे कर जोड़ियां सबी दोहां । पुकारै जवांनी, नेम दिस पधारो, लाजि मारो, हमैं खाखि लोहां । —गिरधीदास रतनू

लाजिम, लाजिमी–वि. [ग्र.] १ उचित, मुनासिब ।

२ आवश्यक, जरूरी ।

३ निर्भर ।

उ०—सैणां ममलत पेस करजै नहीं, सैणां ममलत नूं पेस कर दौलतमंदां रो कहियो छै पातै बादसाह ऊपर लाजिम छै ।

—नी. प्र.

रू. भे.—लाजम, लाजमी ।

लाजियोड़ो–भू. का. कृ.—१ शर्म या लज्जा किया हुग्रा, लज्जित ।

२ सम्मान, प्रतिष्ठा या स्तर में निम्न (पतन) हुवा हुग्रा ।
(स्त्री. लाजियोड़ी)

लाजी–सं. पु.—१ एक प्रदेश जिसे नल राजा ने विजय किया था ।

उ० —मलय सिंगल कोसल नर ग्रंध्य, स्रीपरवत द्राविड नड़ बंध्य । वैरोट तापी लाजी धार, स्रीवैदरभ पाटन प्रति सार ।

— नळदवदंती-राम

२ देखो 'लाज' (रू. भे.)

लाजूकाजू–सं. पु.—बारात की सूचना कन्यापक्ष के घर पर देने के लिए जानेवाले, वर के बहनोई या भांणजे को कन्या पक्ष की ग्रोर से दिया जाने वाला एक नेग । (दाहिमा ब्राह्मण)

लाजो – देखो 'लाज' (मह , रू. भे.)

उ०—पूछै कारिज पय नमी, कहो ग्राया किण काजो रै । 'लालचंद' कहै तस ग्रखीइं, जस मुख हुवै लाजो रै । —पं. च. चौ.

लाट–सं. पु —१ देश का नाम ।

उ०—लाट विरद सिंधु देस सहु, केकट ग्ररध जांण । गाढां पचवीस देस भरत में ग्रारभ प्रवांन । —ग्र. स्त.

२ गुजरात के एक भाग का नाम, जहां अब अहमदाबाद, भड़ौंच आदि नगर हैं ।

[अ. लॉर्ड] ३ ब्रिटिश शासन में किसी प्रान्त या देश का सर्वोच्च शासक ।

उ०—थयौ गत सूर रौ वंस कीधौ थयग, देस हींदू तिकै थंभ ढहिया । लाट अंगरेज अरनैस ... मग, लाट रै तिकै ... जुड़िया । —कविराजा बांकीदास

४ बहुत सी चीजों का एक समूह या विभाग जो एक साथ रखा, बेचा या नीलाम किया जा सके ।

५ समूह, झुण्ड ।

उ०—दस हजार ओटका दुरस, साहस लोक री लाट ज्यां लोटका माथै ऊपर, 'जीवण' थानी मार । —बी. मा.

६ लाटानुप्रास नामक अलंकार ।

७ एक व्यावसायिक जाति या उसका व्यक्ति ।

८ नमक ।

उ० – बापड़ो नाड़ौ मूंगरो नगमजी देवतो ही रैय ग्यो । मोटी धान जिद'र गंगै धावो ही, ... माथै धांगी ... । देखो—ढिग्यो गो जवाई पावणो ... 'र बारै चाल्यो जावै । ... घर में गरळाई । नगजी रै काळजै में लाट हलदी-मेरी ... आ हालत जीवतां ही हुवणी ? —दसदोख

९ लूटने की क्रिया ।

उ०—हारै माहे ए तो मरणा त्यार ही ज बैठा हता । अट पागड़ा पग दीया । इणां पागड़े पग दीनां नै धाड़वी बजार नूं लाट मचावै है । —तिलोकसी वरसे भाटी री बात

क्रि. प्र.—मचाणी

१० बड़ा सरदार ।

[सं. लाट;] ११ पुराना कपड़ा, जीर्ण वस्त्र ।

वि.—१ शक्तिशाली, जबरदस्त ।

उ०—चोखो कमायो अर खायो, कीरी ही डर-भौ नीं राख्यो । दोजखी'र दगेगी बण्यां, दुनियां रै ईसरां ...'र बण्यां लाट हां, बांमण-बांणियां सूं के घाट हां । —दसदोख

२ देखो 'लाठी' (मह., रू. भे.)

३ देखो 'लाठ' (रू. भे.)

लाटणी–सं. स्त्री.—खलिहान में साफ किये हुए धान को वितरण करने का एक उपकरण विशेष ।

२ खलिहान में कृषिउपज में से जागीरदार द्वारा अपना हिस्सा लेने की क्रिया या ढंग ।

लाटणो, लाटबो–क्रि. स. [सं. लाटनम्] १ खलिहान मे से जागीरदार या शासक द्वारा कृषि उपज (अनाज) का निश्चित हिस्सा लेना या

वसूल करना ।

उ०—१ कदै तो पड़ग्यो काळ अभागो, गिण-गिण काढ्यो दो'रो। कदै तो ठाकर लाटो लाव्यो कदै लाटग्यो वो'रो ।
—चेतमांनखो

उ०—२ अनत आतमा और न जाचै खळै वहुत सुख पाया। निज तत तिको लाटतां लीयो, लाटै लोक धपाया। —ह. पु. वां.

२ कर्जदाता द्वारा कर्ज वसूल करना ।

उ०—कदै तो पड़गी काळ अभागो, गिण गिण काढ्यो दो'रो । कदै तो ठाकर लाटो लाव्यो, कदै लाटग्यो वो'रो। —चेतमानखो

लाटणहार, हारो (हारी), लाटणियो—वि० ।

लाटिओड़ो, लाटियोड़ो, लाट्योड़ो—भू० का० कृ० ।

लाटीजणो, लाटीजवो—कर्म वा० ।

लाटरी–सं. स्त्री. [अं.] राशि या वस्तु के रूप में पुरस्कार देने की वह योजना जिसमें तन्निमित्त विके हुए टिकिट या कूपन की संख्या की चिट डालकर विजेता का नाम निश्चित किया जाता है ।

उ०—भोभर में ठंडो पांणी सो पड़ग्यो । लाटरी रै इनांम दांई कुंवर वेगी कांन खड़ा कर लीना। —दसदोख

क्रि. प्र.—आणी, खुलणी, खोलणी, लगाणी, लागणी ।

लाटसा'ब, लाटसाहव–सं. पु [अं. लार्ड साहिव] दिल्ली का वाइसरॉय

लाटानुप्रास–सं. पु.—एक अनुप्रास अलंकार जिसमें शब्दों की पुनरुक्ति होती है, पर अन्वय करने पर वाक्यार्थ में भेद हो जाता है ।

लाटियोड़ो–भू. का. कृ.—१ खलिहान में जागीग्दार या शासक द्वारा कृषि उपज (अनाज) का निश्चित हिस्सा लिया हुआ या वसूल किया हुआ। २ ऋणदाता द्वारा खलिहान में कर्ज वसूल किया हुआ ।

लाटियो–सं. पु.—उस चक की धुरी जिसके सहारे कुए से चड़स निकाला जाता है।

लाट्टपाट्ट–वि.—१ डरपोक, कायर ।

उ०—तठा पछै घोघै मोरवी रो विगाड़ कियो हुतो, सु मोरवी वीरमगांम रा थांणा रो साथ अजांणजक रो घोघां माथै तूट पड़ियो, मांणस हजार तीन, तिण मांणस ७०० मारिया, बीजा लाट्टपाट्ट हुता सु नास गया । —नैणसी

२ कमजोर, अशक्त ।

उ०—देखो, कै कैंईरी होड तो हुवै कोय नीं, सिरदार ! पिण म्हांरी जांण में तो कैई सू लाट्टपाट्ट को रैवां नीं। —वरसगांठ

३ साधारण ।

उ०—ताहरां राजा साथ लाट्टपाट्ट आदमी मेल राजा नूं मजल पोहचायो और लोक सभनै उभो रहियो ।
— नरसिंघ राजा री वात

४ तुच्छ, नगण्य ।

लाटो–स. पु.—१ खलिहान ।

उ०—छैवट चौवरण आय नै उणरो विचार तोड़चो—आज यूं ठाडा होय नै कियां वैठा हो ? रोटी खाय नै लाटै चालण रो विचार कोय नी कांई ? —रातवासो

२ खलिहान में पड़ी अन्न-राशि ।

उ०—कदै तो पड़ग्यो काळ अभागो, गिण गिण काढ्यो दो'रो। कदै तो ठाकर लाटो लाव्यो, कदै लाटग्यो वो'रो। —चेतमांनखो

३ हिस्सा, वंटवारा ।

उ०—१ सूर खळां सिर साखती, हरीया आज' क काळि । लाटो लूटै लोभीयां, हकै आयो हाळि । —अनुभववाणी

उ०—२ अगम लाटो लीयां निगम संसा नहीं, राज तपतेज डर नाहिं कोई । दास हरिरांम ऊ देस अदेजगर, आप कमाय अर खाय सोई । —अनुभववांणी

क्रि. प्र.—काढणो, लाटणो

मुहा.—लाटा ऊं ई नहीं धापै जका चारा ऊं कांई धापसी=अत्यन्त लोभी ।

लाठ–सं. स्त्री—१ मोटा व ऊंचा खंभा या स्तम्भ ।

२ कपास से रूई पृथक करने के चरखे का एक काष्ट का मोटा उपकरण जिसके साथ एक लोहे की छड़ लगी रहती है। इसमें कपास फंसाने से विनौला भूमि पर गिर जाता है और रूई पृथक हो जाती है ।

३ काष्ट का एक प्रकार का मोटा व लम्वा लट्ठा जो कोल्हू की कूंडी के मध्य में लगा रहता है, जिसके घूमने से तथा दबाव पड़ने से कोल्हू में डाले हुए पदार्थ पेले जाते हैं।

४ रहट में वांगड़ो तथा डावड़ो से सम्वद्ध लकड़ी का एक मोटा लट्ठा जिसके घूमने से डावड़े में लगी माल घूमती है।

वि. वि.—१ देखो 'डावड़ो'
२ देखो 'वांगड़ो'

५ लकड़ी का मोटा लट्ठा जो कच्चे मकानों की छाजन में लम्बा लगा रहता है।

उ०—फळसा टाटा ठाट, लाठ घरकोट वणावै । ढूंढा पड़वा छांन, कोड़वा ठाढ चढावै। —दसदेव

६ देखो 'लाट' (रू. भे.)

उ०—कंठीर काटकै छूटै सांकळां राटकै किना, मेळै चमू थाट कै अरेहां सत्रां मीच । केवांण भाटकै वाढ भाड़िया भूरियां केंघां, विभाड़िया लाठ कै वूरिया घोरां वीच । —संकरदांन सांमोर

७ देखो 'लाठी' (रू. भे)

लाठा-सं. स्त्री.—एक जाति विशेष ।

उ०—मणीयार सोनार कुंभार ठठार लोहार तलाल पटोळिया पटसुत्रीया माली तंबोली हरमेखलिया जोगी भोगी वइरागी नट विट खुट खरड लाठा माठा रंगाचारय''''''। —व.स.

लाठी-सं. स्त्री. [सं. यष्ठी, प्रा. लट्ठी] १ पतली लंबी लकड़ी ।

मुहा.—जिण री लाठी उण री भैंस=शक्ति सर्वोपरि ।

रू. भे.—लट्ठी ।

मह.—लाट, लाठ ।

२ सुम पर होने वाला घोड़े का रोग विशेष । (शा. हो.)

लाठीभल, लाठीभल्ल—हाथ में लाठी रखने वाला, लट्ठबाज ।

रू. भे.—लठीभल ।

लाठीवाज—देखो 'लट्ठवाज' (रू. भे.)

लाठौ—देखो 'लट्ठौ' (रू. भे.)

उ०—तांगड़ रा रस्सा ऊपर लेय चढिया वे ऊपर दोय लाठां सूं काठा वांधिया । —ठाकर जेतसी री वारता

लाड-सं. पु. [सं. लाड्=थपथपाना, थपकी देना] १ बच्चों को प्रसन्न करने हेतु किया जाने वाला स्नेह पूर्ण व्यवहार, दुलार ।

उ०—जीओ, घण मुढ लै पिव पालिणै, तौ दोय जणा मतौ ए उपाइयौ जी । जी पिया, जैं म्हारै जलमेगौ पूत, तौ किसड़ा लाड लडास्योजी । —लो. गी.

उ०—२ राजूखां रै अेक भतीजो आठ या दस वरसां रो छै। मुंहडै लाड लगायोड़ो, वडो लाड कुमायो ।
—सूरै खींवै कांधळोत री वात

२ प्यार, प्रेम ।

उ०—हित विण प्यारा सज्जणां, छळ करि छेतरियाह । पहिली लाड लडाइ कइ, पाछइ परहरियाह । —ढो. मा.

क्रि. प्र.—आणौ, करणौ, लगाणौ, लडाणौ ।

३ एक देश का नाम ।

उ०—१ कीर कासमीर द्रविड गउड जाड लाड लांगळ जांगळ खस पारस्व, जादव नेपाल अंग वंग कलिंग'''। व. स.

उ०—२ २७२ गाजण, ३४ कनूज, १८ लक्ष वांगू मालवउ, ६ लक्ष गौड, ६ करु, ६ डाहल, ७० सहस्र गुजराति, ६ सहस्र सोरठ, ४० जेजाहुत, २४ सहस गंगपार, २१ लाड देस, १४ सहस्र व्यालकुण नमियाड । —व. स.

रू. भे.—लड्डु ।

लाडउ—देखो 'लाडौ' (रू. भे.)

उ०—गंगाजळ अघर भीलियइ भिलतउ, दोमति जिम वाजें दरवार । लाडउ नवउ किनां लाडली, वळै सुयट मिळइ सुविचार ।
—महादेव पारवती री वेलि

लाडकड़ौ, लाडकलौ—देखो 'लाडकौ' (अल्पा. ,रू. भे.)

(स्त्री. लाडकड़ली, लाडकड़ी, लाडकली)

लाडकवायौ-वि. (स्त्री. लाडकवाई) १ जिसका वहुत लाड या प्यार हो, प्यारा, दुलारा ।

रू. भे:—लाडायौ ।

लाडकियौ—देखो 'लाडकौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—वांधोड़ी कमरां अो बुजीसा, नहीं खोलै, लाजै म्हांरौ लाडकियौ मांमाळ, भोमियाजी भगड़ै जूजिया । —लो. गी.

लाडकी-वि. स्त्री.—प्यारी, दुलारी ।

उ०—हूं लूकिड रै लाडकी, दिहाडी दूरि पीयांण । माहरु भमड तुह्यारडा, पंजर पूठइ प्रांण । —मा. कां. प्र.

लाडकोड-स. पु.—खुशी, हर्ष ।

उ०—१ वापड़ां वेदां वेटी नै जापो करायो हो, दोहितै जायै रा लाडकोड करता हा । —दसदोख

उ०—२ वरस तीन रै आंतरै वळै कंवर हुवौ । तिण रौ नांम जगधवळ दीधौ । घणा लाडकोड कीजै छै । राजा री रीभां लीजै छै । —जगदेव पंवार री वात

लाडकौ-वि. (स्त्री. लाडकी) जिसका वहुत अधिक प्यार या दुलार हो, प्यारा, दुलारा ।

उ०—१ मांरै वेटो एकाएक होवण सूं घणौ लाडकौ ।
—रातवासौ

उ०—२ घर रा कांम काज सूं निवड़नै उणै जेठूता जवरजी नैं पकड़ लियौ । खोळा में विठायनै लाड करण लागी—म्हारौ लाडकौ वेटो, म्हारो समभणौ वेटो, म्हारो नैनकियौ वीरो, घणौ हुंसियार, घणौ फूटरो, अर बुचकारतां एक वाल्हो दे दियौ ।
—अमर चूंनड़ी

रू. भे.—लाडिकूं, लाडिकौ ।

अल्पा.—लाडकड़ौ, लाडकलौ, लाडकियौ ।

लाडखांनी-सं. पु.—कछवाहा वंश की शेखावत शाखा के अन्तर्गत एक उप शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—जेसा सांमळाती कासळी सें लोग आयौ, ऊंनें लाडखांनी भायपां का भी खिनायौ । - सि. वं.

लाडगहेलौ, लाडगे'लौ-वि.—(स्त्री. लाडगहेली, लाडगे'ली) वह जो अधिक लाड के कारण नटखट या उद्दंड हो गया हो ।

उ०—सोल स्रंगार सज्या, बीजा कांम तिज्या, सुजांण सहेली, लाडगहेली, हंस गतइं चालती, गजगतइ माहलती । —व. स.

लाडडौ—देखो 'लाडलौ' (रू. भे.)

उ०—हैरांन हुआ हिंदू तुरक, आया लोह न आडडै। गजगाह 'भीम' गाजी' हुऔ, व्याहक लाडी लाडडै। —गु. रू. वं.

लाडण-सं. पु. [सं. लालन] १ सुन्दर पति।

उ०—१ लाडण वांनि चडावीउ ए, परिणेवा तोरणि आवीउ ए लाडी हिव सिणगारीइ ए, वर पीठी देह ऊतारीइ ए। —हीराणंद सूरि

उ०—२ एक वार मोरी वीनतडी सुणि सुंदर लाडण रे। लाडण नइ मांडण नारिनइ नाहलु ए। —नळदवदंती रास

सं. स्त्री. [सं. लालन, प्रा. लाडणी] २ पत्नी।

उ०—लाडीय कोटं कुसुमह माल लाडीय लोचन अति अणियाल। लाडीय नयणे काजल रेह, सहजिहिं लाडण सोवन देह। —सालिभद्र सूरि

वि.—लाडला, प्यारा।

उ०—विणजारी ए क लोभण, गोद लियौ लाडण पूत, घर-घर वूझत वा फिरै, विणजारी ए। —लो. गी.

लाड़णउ, लाडणौ-सं. पु.—१ ऊट के तंग के साथ लटकने वाला फूल के आकार का गुच्छा, २ औरतों के फेटिए (घाघरा) के नाड़े के साथ भी गुच्छा रहता है।

२ देखो 'लाडलौ' (रू. भे.)

उ०—१ समुद्र खारउ, वाउल कंटालउ, सरप कालउ, वाउ वायणउ, जन वोलणउ, सुणह भसणउ ससउ नासणउ रांणउ लेणाज, स्त्री स्वभाव लाडणउ, सांड आडणउ, कुमित्र फाडणउ, दरजन दुस्ट, स्वजन सिस्ट, आगि ताती, घाहु राती। —व. स.

उ०—२ लाडेकोडे लाडणौ, लाडी परण्यौ जेह। विसमय पांम्यौ अति घणी, देखी कुंमरी तेह। —ढो. मा.

(स्त्री. लाडणी)

लाडणौ, लाडवौ-क्रि. स.—लाड करना, प्यार करना।

लाडबाई-सं. स्त्री.—एक देवी का नाम।

लाडल-वि.—प्यारा, दुलारा।

उ०—१ भल खेलो गनगौर सुंदर गोरी, भल पूजो गनगौर। हो जी थांनै देवै लाडल पूत, अंतस प्यारी भल खेलौ गनगौर। —लो. गी.

उ०—२ म्हारी लाडली वेटी थूं दुहाग री चिंता मत करज्यै। —फुलवाड़ी

लाडलड़ौ—देखो 'लाडलौ' (रू. भे.)

उ०—१ अेक आवै गूगळ की वास सुगंधी, कुण सुवागण, गणपत पूजियो। गणपत पूजै लाडलड़ै री माय सुवागण, ज्यां घर विड़द ऊंतावळी। —लो. गी.

उ० – २ ढोली का चढ ढोलदै रांणी गढ सरवरिये री पाळां जी। ज्यां सुणै म्हारै बाप के, रांणी लाडलड़ी ननसाळां जी। —लो गी.

उ०—३ घी भर दिवलौ वहू लाडलड़ी संजोवै; आयौ पितरां री लसकर च्यांनणौ। —लो. गी.

(स्त्री. लाडलड़ेती, लाडलड़ी)

लाडळदै—देखो 'लाडली' (रू. भे.)

उ०—मिठड़ा सा भोजन वहू वहवड़दै जिमावै, आयौ पितरां री लसकर जीमग्यौ। ठंडड़ा सा पांणी वहू लाडळदै पियावै, आयौ पितरां री लसकर पी गयौ।

लाडलियौ देखो 'लाडलौ' (अल्पा., रू. भे.)

लाडलिवी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की लिपि।

लाडली-सं. स्त्री.—१ पत्नी, भार्या। (डिं. को.)

उ०—रांणी रतनागर तणी, आंणी 'पतै' अनूप। लूणी सिरखी लाडली, भोगै 'जसवंत' भूप। —चिमलदांन रतनू

२ दुल्हिन, नव-वधु। (डिं. को.)

उ०—१ अेक आरतड़ै जस देई ओ विनायक, लाडली री भूआ भैण नै। अेक जीभड़ली जस देई ओ विनायक, लाडली री दादी माय नैं। —लो. गी.

उ०—२ छठो तो वासो फेरां जी वसियो, फेरा में वैठ्या लाडो लाडली। म्हारी लाडली को चीर बघज्यो, राईवर को वागो वींटली। —लो. गी.

३ राधिका।

उ०—पुलिण रविसुता फहरावजै पीतपट, आवजै रासथळ व्रजनाथ आथ। कांन कवार विहरि गळी व्रज कुंजरी, सुभ रळी कीजियै लाडली साथ। —वां. दा.

स्त्री. वि.—प्यारी, दुलारी।

लाडलौ-सं. पु. (स्त्री. लाडली) १ पति (डिं. को)

२ दुल्हा। (डिं. को.)

वि.—प्यारा, प्रिय, दुलारा।

उ०—१ भूंडण आंसू थांमती वोली—म्हारा लाडलां, इण वात री सोच थें आछौ करियौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ मात कहै सुत सांभळो, संयम दुक्कर अपार। तूं लीला री लाडलौ, सुख विलसौ संसार। —जयवांणी

उ०—३ मेवाड़ ढूंढाड़ जीऊं ही हाड़ौती माळवो मोळो, दौळा काळ चक्र सौ किणी न आवै दाय। भालै किसौ तो विनां पायाळ

जाती काळ भांपा, लाडली पंगुळी चांपा अंगुळी लगाय ।
—सूरजमल मीसरण

रू. भे.—लाडडो, लाडणउ, लाडणो, लाडिलउ, लाडिलो ।

अल्पा.,—लाडेलड़ो, लाडलियो

मह.—लाडल, लाडेलो ।

लाडवो—देखो 'लाड्डू' (रू. भे.)

उ०—एकण नै तुस ढोकळा जी, पूरा पेट न थाय । एकण रै रहे लाडवा जी, वैठा भांणं के माय । —जयवांणी

लाडांणी—देखो 'लाडखांनी'

उ०—जूटियो ज्यूं रांम जोध चाडांणी त्रकूट ज्वाळा, घके वज्र गिरां परां वाढांणी सघीठ । खूटिया माडांणी जांणं सांकळा मयंद खूनी, ऊठिया लाडांणी प्रळै काळ री अंगीठ । —सुखदांन कवियो

लाडायो—देखो 'लाडकवायो' (रू. भे.)

(स्त्री. लाडाई)

लाडिकूं, लाडिको—देखो 'लाडको' (रू. भे.)

उ०— (सेजि) सूतां कठिण लागती, हंसपिछ तलाई, डाभ पा (थरी) नि सुयि छि एह लाडिका भाई । —नळाख्यांन

लाडिलउ, लाडिलो—देखो 'लाडलो' (रू. भे.)

उ०—१ आहे सुंदर रूप मुहामणउ, सिवा देवी मात मल्हार । आहे नवयोवन भर आवियउ, लाडिलउ नेम कुमार । —स. कु.

उ०—२ तुम वीरा में वहनड़ी, लाडिलो धणी सांभरी को राव । तु उड़ीसा को धणी, थारउ उलिगांणउ घरि वेगि पठाव ।
—बी. दे.

उ०—३ तिण इण परि कीधो हास जो, आवो रै बाई वेस्या लाडिली रे लो । —वि. कु.

उ०—४ मीरां हरि की लाडिली जी, तुम मीरां के स्यांम । मीरां के प्रभु गिरधर नागर, दरसण द्यो म्हारै रांम । सुरत निज नांम से लागी जी । —मीरां

उ०—५ हरिजन हरि को लाडिलो, लीवलीण न दूजा लाड ।
—अनुभववांणी

(स्त्री. लाडिली)

लाडी-सं. स्त्री.—१ पत्नी, स्त्री । (डिं. को.)

उ०—१ थांरी लाडी सा कागद मेहलियो, म्हारै सेंजां रा सिणगार घरै आवो थ्रो जुंभारजी, भगड़ै किण विध जूंजिया ।
—लो. गी.

उ०—२ लाडीजी रा मुख रा बोलण री तरह, चलण री अनोखी देखी मा म्हैं । कांई चितवन रसराज नैणां री, उसी छै भूंहां री रेख । —रसीलैराज रा गीत

२ दुल्हिन, नव-वधु । (डिं. को.)

उ०—१ वर लाडी मोतियां वधाया, अति आणंद विनोद अति । मंगळाचार सिवपुरी माहैं, गूडी ऊछळी दैव गति ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ पुड़ करै पंखणी अपछर पूंखणो । धार तोरण अणी वंदै खग घोड़ । विकट लाडी वणी वींद बांको त्रिवंक, 'मयंक' रो परणजै बांधियो मोड़ । —दुरसो आढो

३ राज्य के सामंत व जागीरदार के घराने की सघवा के लिए आदर सूचक एवं सम्बोधन सूचक शब्द ।

उ०—कुंवरजी लाडी जी साहिबा मुजरो करवाइयो छै ।
—कुंवरसी सांखला री वात

४ पुत्री, बेटी ।

उ०—म्हारी लाडी सात भायां की भैण म्हारा पिवजी, कोई ऊभी सोवै आंगणं जी । टोळा मांला हसती क्यूं ना हारचा म्हारा पीवजी, म्हारी राजकंवर क्यूं हारिया जी । —लो. गी.

५ बच्चों के लिए उपयुक्त प्यार सूचक सम्बोधन । (बीकानेर)

वि.—प्यारी, दुलारी ।

उ०—प्रभणं पितु मात पूत मत पांतरि, सुरनर नाग करै जसुसेव । लिखमी समी रुकमणी लाडी, वासुदेव सम सुत वसुदेव । —वेलि

लाडु, लाड्डू-सं. पु.—१ गेंद के आकार की गोलाकार मिठाई ।

उ०—१ पछै पिरीसियां खाजा जांणं देहरांना छाजा, चिहु सुणं साभा, गरमागरम ताजा । पीछै आया लाडु, तै किसी जात रा ?
—व. स.

उ०—२ बोदा रै आडा वहै, सोदा मिळनै सेंग । भूकोड़ा भंवता फिरै, लाड्डू खावै लेंग । —ऊ. का.

मुहा. (क) मन रा लाड्डू खावणा=मन ही मन किसी लाभ की कल्पना करना । (ख) लाड्डू री कोर की खारी की मीठी=लाड्डू की कौनसी कोर खारी और कौनसी मीठी=संतान में से कौनसा प्रिय और कौनसा अप्रिय यानि बराबर ।

२ एक प्यार-सूचक सम्बोधन ।

उ०—लारली वेळा छुट्टी सूं रवांनै व्हिया जद री वात है-पुणचो काठो पकड़ लियो अर वट्ट करती कांवळी वदार नांखी । इण उपरांत ई हंसनै वोल्या—वो रोज गावो जिको चाकरी वाळो गीत तो एकर सुणायदो नीं लाड्डू । आज तो म्हूं सांचांणी चाकरी माथै वहीर व्हियो हूं—

कालोड़ी तो कांठळ राज ऊपड़ी, कांई मोटोड़ी छांटां रो वरसै मेह, भंवर भल चढजो राज, चाकरी····

कांई रैवो तो रांधू ए राज लापसी, कांई चढो तो वाजरियो खीच,
भंवर भल चढजो राजा चाकरी...।

म्हारी आंख्यां में पांणी आयग्यो हो तो ई म्है मुळक नें कह्यो—
गीत री छेली कड़ी तो पूरी करता पधारो—

एक टका री ए राज चाकरी, कांई लाख रुपियां री घर री नार,
भंवर भले चढजो राज, चाकरी...।
—अमर चूंनड़ी

रू. भे.—लड्डू, लाडवो।

अल्पा.,—लाडूड़ो।

मह.—लाडूव।

लाडूड़ो—देखो 'लाडू' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ महलां में जातां गोरी रा सायवा, प्यारी घण पै लाडूड़ा कुण मारया म्हारा राज। —लो. गी.

उ०—२ तीजो मास उलरियो ए जच्चा नींवूड़े मन जाय। चौथो मास उलरियो ए जच्चा लाडूड़ै मन जाय ए। —लो. गी.

लाडूव—देखो 'लाडू' (मह., रू. भे.)

लाडेलुड़ो, लाडेलो—देखो 'लाडलो' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—१ सुणो नणद लाडेलड़ी, ग्रे रै भावज का वोल, साळां लिखो ना साथीड़ा, हंस हंस लो रै तमोळ, इण साथीड़ां रै आगै, द्यो गज मोतीड़ा रा हार। —लो. गी.

उ०—२ कंवर लाडेलड़ै रा वावोजी भला छै, महंगै मुलाई ओ-राज। —लो. गी.

उ०—३ वूझत वूझत नगर पईठ्या, पोळ बतावो लाडेलो रै वाप की, ऊंची सी मैड़ी लाल किंवाड़ी, केळ भंवरकै राजीड़ा रै वारणै।
—लो. गी.

(स्त्री. लाडली, लाडिलड़ी)

लाडेसर-वि.—वह जो अधिक प्यार एवं दुलार मिल जाने के कारण उद्दण्ड और नटखट हो गया हो।

उ०—बाळ घोळा हुयग्या, सगाई नीं हुई। लोग लुक-लुक ठाली-भूली ठिठकारी वतावै। उलाड़ी, उभागी अर खुरड़-पगी कैवै है। लाडेसर-वोछरड़ी, गतराड़ी तथा नुगरी। —दसदोख

लाडो-सं. पु.—१ दुल्हा, वींद, वर। (डिं. को.)

उ०—१ मोटर धीरै धीरै हांक ड्राइवर वनड़ो छै नादांन क लाडो छै नादांन। —लो. गी.

उ०—२ मह मह सुगंध चिक्कस मळण, जीतण तप अहमद जूई। जह मह विवाह लाडां जुडण, हांडां घरघर गहमह हुई।
—वं. भा.

२ पति, प्रियतम।

उ०—लाडो लाडी जाय लडावण, रात्यूं ओळग सारै। जन हरि-रांम फिरै मन फीटी, ध्यांन न हरि का धारै। —अनुभववांणी

३ मालिक, पति, स्वामी।

उ०—१ त्रुटै घाव तूंड, भिड़ै रुंडमुंड। लड़ै फौज लाडा, उडै लोह आडा। —सू. प्र.

उ०—२ दहुंव पटां लागो खग दांनै, गोडै खळ करणां गरद। लख दळ मिल्यां दळां चौ लाडो, हाथी हाडो मसत हद।
—महाराज छत्तरसिंघ री गीत

वि.—प्यारा, दुलारा।

उ०—वाळपणै पूंख खावती खावती धापती ई कोनीं। आज पाछी हर आयगी। लाडी वेटी, थारीं काली मासी नै थोड़ा पूंख तौ खवाड़। —फुलवाडी

रू. भे.—लाडउ।

लाढ-सं. पु.—प्रासुक आहार से निर्वाह करने वाला।

लाणो, लावो-क्रि. स.—१ कोई वस्तु अपने साथ लेकर आना।

उ०—इण भांत री पहलड़ो तोडै री धातो, सू दारू केसरिया गुलाविया रा दाव दीजै छै, मुजरा कीजै छै। मुनहारां हुवै छै। मतवाळा हुयजै छै। उपरा उण भांत रां सूळां री थाळ वीच में लाया छै। —रा. सा. सं.

२ प्रत्यक्ष करना, उपस्थित करना।

उ०—अहर अभोखण ढंकियउ, सो नयणे रंग लाय। मारू पक्का अव ज्यू, झरइ ज लग्गै वाय। —ढो. मा.

३ उत्पन्न करना।

लाणहार, हारो (हारी), लाणियो—वि.।

लायोड़ो—भू. का. कृ.।

लाईजणो, लाईजवो—कर्म वा.।

लाइणो, लाइवो, लावणो, लाववो, ल्याणो, ल्यावो, ल्यावणो, ल्याववो—रू. भे.।

लात-सं. स्त्री.—पांव, पैर।

२ पैर से किया जाने वाला आघात, प्रहार, पदाघात।

उ०—'रिणमाळ' ऊठि नरसिंघ रुख, पय ग्रहि लात पछाड़िया। लोहाळ अठारहि पिंड लगां, पिसण अठारह पाडिया। —सू. प्र.

उ०—२ हिरण्या डागळै री छत मायै लाते मारचां वगी जावै, लारली वातां काळजो वाळण नै लारै लागी आवै। —दसदोख

उ०—३ आ वात माळी कही। ताहरां माळीं नूं सातल चावखे वायो। लात सो भांज किमाड़ नै माहै वाग में पैठो। माळी तो पाधरो राव सूजै कन्है पुकारू गयो। —सातल जोधावत री वात

क्रि. प्र.—पड़णी, मारणी, लगाणी, वाहणी।

मुहा.—१ लात खाणी=मार खाना, पिटना।

२ लात मारणी=(क) पशुग्रों का दूध दुहते समय पैर से लात मार कर दूर हट जाना ।
(ख) तुच्छ समझ कर उपेक्षा या अवहेलना करना ।

ज्यूं—नौकरी रै लात मारणी, संपत्ति रै लात मारणी ।

३ लातां रा भूत वातां सूं नीं मांनणा=विनम्र व्यवहार की अपेक्षा न करना ।

रू. भे.—लत ।

लातर-सं. स्त्री.—फटकार ।

उ०—रांमा ग्रभिरांमा कांमातुर रोवै, हड़मल हुड़दंगी सेजां में सोवै । ललनां लातरियां खातरियां खारी, भड़वी भगतणियां पातरियां प्यारी । —ऊ. का.

लातरणो-वि. (स्त्री. लातरणी) १ थकने वाला, हैरान होने वाला ।

२ पथ भ्रष्ट होने वाला ।

३ शर्मिदा होने वाला ।

४ हारने वाला ।

५ फटकारने वाला ।

लातरणो, लातरबो-क्रि. अ.—१ थकना, हैरान होना ।

उ०—१ तो पिण स्वांमीजी रात्रि में वखांण वांचै जठै वावेचा ढोलक वजावै । गावै । वखांण में विघ्न पाड़ै । जद भायां कह्यौ—महाराज ! दूजी जायगां उतरो । स्वांमीजी वोल्या—खेतसीजी नव दिक्षित है सो देखां परीखह खमवा किसायक सैंठा है । कितरायक दिना वेदो कियो पछै वावेछा लातर गया । —भि. द्र.

उ०—२ फेर स्वांमीजी पूछ्यो—साधु ग्राहार करै, सो चोखो के खोटो ? जीवणजी वोल्यो—साधु ग्राहार करै, ते खोटी कांम, त्यागै ते चोखो कांम । दिशां ग्रादि जातां मिळै जद स्वामीजी पूछै जीवनजी ! खोटो कांम कीधो के करणो है । इम वार वार पूछतां लातरियो । —भि. द्र.

२ पथ-भ्रष्ट होना ।

उ०—थिर न्रप हिंदुस्थांन, लातरग्या मग लोभ-लग । माता भूमि मांन, पूजै रांण प्रतापसी । —दुरसी ग्राढो

३ शर्मिन्दा होना, लज्जित होना ।

उ०—१ किण रो इ वेटो मारचो, किण री भाई मारचो, किण री ही वाप मारचो । सहर में भयंकार मंडचो । नगरी नां लोक साहुकार नें निंदवा लागा तिण रै घरै जाय रोवा लागा—रै पापी थारै घन घणो हूंतो तो कूवा में क्यूं नहीं न्हाख्यो । चोर छुडायनै म्हारा मनुस्य मराया । साहूकार लातरियो । सहर छोडनै दूजै गांम जाय वस्यो । —भि. द्र.

४ हारना ।

५ फटकारना ।

लातरणहार, हारो (हारी), लातरणियो—वि० ।

लातरिग्रोड़ो, लातरियोड़ो, लातरचोड़ो—भू० का० कृ० ।

लातरीजणो, लातरीजवो—भाव वा० ।

लातरियोड़ो-भू. का. कृ. (स्त्री. लातरियोड़ी) १ हैरान हुवा हुग्रा, २ पथ-भ्रष्ट हुवा हुग्रा. ३ शर्मिदा हुवा हुग्रा, लज्जित हुवा हुग्रा. ४ हारा हुग्रा. ५ फटकारा हुग्रा ।

लातरो-सं. पु, (व. व. लातरा) हिंदवानी या ककड़ी का सूखा छिलका ।

लाद-सं. स्त्री.—१ किसी पदार्थ का वह बोझा जो पशु की पीठ पर लद कर ले जाता है ।

२ ऊंट पर भूसा के वंधे हुए चार वोरों का समूह या घास के पुग्रालों का गट्ठर ।

३ चमड़े का वना वड़ा जल पात्र ।

उ० वूंठां बीतोड़ा जांभरकै जाता, लादां विसनोई ऊंटां पर लाता । ढांचां खांचां सूं कळसां जळ ढारा, जोगी जांभै रा घुरता जमवारा । —ऊ. का.

४ देखो 'लीद' (रू. भे.)

ग्रल्पा.-रू. भे.—लादड़ी ।

लादक-सं. स्त्री.—सवारी के उपयोगी एवं वोझा लादे जाने वाले पशु की पीठ ।

उ०—उर ढाल ग्रैसा, कूकड़ कध तैसा । ग्रांख पांणी मोती तवा लिलाड़ का वेठा तवां, जळ ग्रंजळ पीवै, कनोती लोय दीवै । मगर लादक ग्रछी, छोटी पड़छी । पूठ वाथां न मावै, पूछी चवर दावै । फीचां घनख जैसी, काछ नारंगी तैसी । ग्रैसा घोड़े राव चाकरां रै हाथां में काढणा । —रा. सा. स.

वि.—लादने या सवारी के उपयुक्त ।

लादड़ी—देखो 'लाद' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—सिर सेळां ज्यूं सूळ ग्रमीरां दोरी डाढी, गरीवां रै ना गडै पांव जूत्यां किन वाढी । भीठकिया भरणाय घणेरी उंवार घालै, तीजै दिन झड़काय लादड़ी भर लै हालै । —दसदेव

लादणभार-सं. पु.—गघा, खर । (ग्र. मा.)

लादणो, लादवो-क्रि. स.—१ किसी वाहन या पशु विशेष की पीठ को भार या वजन से युक्त करना ।

उ०—१ ऊंट भया वह वोज उठाया, परदेसां कूं लाद पठाया । चांदी पडै कीड़ा वोह खावै, कडवा टांचै ज्यूं दुख पावै । —ऊदोजी नैण

उ०—२ वांणियो तो सुय रह्यो । सूतां भाख फाटी । तद उठीया । तणै सारां सु पैहली रळो उठि नै पोठीयो एकलै हीज लादीयो । पछै वांणीयां ही लादीयो । —रळै गढवै री वात

२ भारी वस्तुओं का वाहनों, पशुओं आदि पर रखना, चढाना या भरना।

उ०—थेह पुरांणा छोड़ि अयांणां, वाळदि लादि सवेरियां। जम के आए पकड़ि चलाए, वारी पूगी तेरियां। —रैदास घत्तरवाळ

३ किसी वस्तु से परिपूरित या पूर्ण युक्त करना, आच्छादित करना।

ज्यूं—गैणां सूं लादणौ।

४ किसी की इच्छा के विपरीत अधिक कार्य या दायित्व से बोझिल करना।

५ कुश्ती में विपक्षी को अपनी पीठ पर उठा लेना।

लादणहार, हारौ (हारी), लादणियौ—वि०।

लादिओड़ौ, लादियोड़ौ, लादयोड़ौ—भू० का० कृ०।

लादीजणौ, लादीजबौ—कर्म वा०।

लादियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ किसी वाहन या पशु विशेष की पीठ को भार या वजन से युक्त किया हुआ. २ भारी वस्तुओं का वाहनों, पशुओं आदि पर रखा हुआ, चढ़ाया हुआ, भरा हुआ. ३ किसी वस्तु से परिपूरित या पूर्ण युक्त किया, आच्छादित किया हुआ. ४ किसी इच्छा के विपरीत अधिक कार्य या दायित्व से बोझिल किया हुआ. ५ कुश्ती लड़ते समय विपक्षी को अपनी पीठ पर उठाया हुआ।

(स्त्री. लादियोड़ी)

लादियौ–सं. पु—१ घोड़ा-घोड़ी के मल (लीद) त्यागने का अवयव। (मेवाड़)

२ देखो 'लादौ' (अल्पा. रू. भे.)

रू. भे.—लाद्यौ।

लादी–सं. स्त्री.—१ चौड़ा-चौकोर पत्थर।

२ लकड़ी, घास आदि का छोटा गट्ठर।

उ०—दळिया रांवै दळवळिया हळवांणै। वेचण वीदणियां ईंधणियां आंणै। लादी भारी नै ओळावौ लेती, दुरख वारी नैं बोळावौ देती। —ऊ का.

लादौ–सं. पु.—१ ऊंट, गधा या सिर आदि पर विक्रयार्थ लाया जाने वाला लकड़ियों (ईंधन) का गट्ठर।

उ०—१ काती भळै दांती फेरी, लासू वन रा वाडतां। झाड़ जुगत लादां लदावै, ढिगलां टोकी काढतां। —दसदेव

उ०—२ लादौ नाखीजग्यौ। डोकरी पईसा देवण लागी। इत्तै-ई में दो लकड़ियां न्यारी पड़ी दीसी। गरज र' वोली—अै लकड़ियां को नाखै नी कांई? —वरसगांठ

२ वजन, बोझ।

३ ओस, शबनम।

क्रि. प्र.—नांखणौ, पड़णौ, भरणौ, लदणौ, लादणौ

अल्पा.,—लादियौ

लाद्यौ—देखो 'लादियौ' (रू. भे.)

लाधणौ, लाधबौ—देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हीलाकर हिणकै ईळा हुय आधा, लीला भगवत री लीला नहीं लाधा। ढाळां ढाळांतर सांतर ढळियोड़ा। वैठा नीरांतर आंनर वळियोड़ा। —ऊ. का.

उ०—२ सार तरस्सै सूरमां, सारा साहसवंत। सुजड़ै लाधै सांम छळ, वाधै तेज अनंत। —रा. रू.

उ०—३ पघरावि त्रिया वांमै प्रभणावै, वाच परस्पर जथा विधि। लाधी वेळा मांगी लाधी, निगम पाठकै नवै निधि। —वेलि

उ०—४ च्यारूं जणा अेकण सागै घोड़ा सूं हेटै कूदया जांणै हीरां मोत्यां री कोई अमोलक खजांनौ लाधग्यौ व्है। —फुलवाड़ी

उ०—५ झींटा वखेरचां, दांतां माथै अलेवण चढायां, मांची माथै सूती उठती गुलाब री मां अंगाड़ी तोड़ती लाधी। —दसदोख

उ०—६ वंभण मिसि वंदै हेतु सु वीजौ, कही स्रयणि संभळी कथ। लिखमी आप नमै पाइ लागी, अचरिज कौ लाधै अरथ। —वेलि

लाधणहार, हारौ (हारी), लाधणियौ—वि०।

लाधिओड़ौ, लाधियोड़ौ, लाध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लाधीजणौ, लाधीजबौ—भाव वा०।

लाधियोड़ौ—देखो 'लाभियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लाधियोड़ी)

लापड़—देखो 'लापड़ौ' (मह. रू. भे.)

उ०—बूटी लापड़ गीचांवर विन बूटी, खांडी वांडी सव खावण खिन खूटी। वैड़ां व्यायोड़ी खैड़ा में खांसै। कोमळ काछड़िया वाछड़िया वांसै। —ऊ. का.

लापड़कनौ–सं. पु. (स्त्री. लापड़कनी) लंबे कान वाला पशु।

लापड़ियौ—देखो 'लापड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

लापड़ौ–वि. (स्त्री. लापड़ी) वड़ा और लम्बा (कान)

उ०—तठा उपरांत करि नै राजांन सिलांमति कावळी कूतरा. लाहोरी कूतरा, विलाती कूतरा लोळमी, लाळमी जीभ रा, वळि में पूंछ रा, लापड़ै कांन रा, दाड़मी दंत रा, सिंध रा हय रा, केहरी कंध रा……। —रा. सा. सं.

सं. पु—१ वड़े और लंबे कानों वाला पशु।

२ मोट को पानी में डुबाने के लिए उस पर बांधे हुए पत्थर के

नीचे लगा हुआ चमड़े का टुकड़ा।
अल्पा.,—लापड़ियौ
मह.,—लापड़

लापता–वि. [अ. ला.+रा. प्र. पता] १ वह जिसका पता न हो, खोया हुआ।
२ जान-बूझ कर कही छिपा हुआ, गायब।
उ०—जे किणी घरगोड़िया रजपूत रै सागै उण री व्याव व्हियौ व्हैतो तौ नीं वा इत्ता दिन मसा परवांण लापतै रै पाती अर न इण भांत लापतै रह्यां पछै पाछी गांव में पग घर सकती। —फुलवाड़ी
३ पत्र आदि जिस पर पता न लिखा हो।

लापर—देखो 'लोफर' (रू. भे.)
उ०—सीकरि की गादी न्याय नीति राज कीनां। झूंठा चोर लापर नें प्रांण दंड दीनां। —शि. वं.

लापरपण, लापरपणौ—देखो 'लोफरपणौ' (रू. भे.)
उ०—आखर बावन करै अेकठा, तै कागळ लिख कीना त्यार। लापरपणौ कियौ तौ लड़सूं, चिड़सूं दियूं न कोडी च्यार। —वां. दा. ख्यात

लापरवा–वि. [अ. ला+फा. परवाह] १ जिसे किसी बात की चिन्ता या फिक्र न हो, निश्चिन्त।
२ असावधान।
रू. भे.—लापरवाह।

लापरवाई–सं. स्त्री. [अ. ला+फा. परवाह+रा. प्र. ई.] निश्चिन्तता, वेफिक्री।
उ०—१ भांवण रा तणियोड़ा लिलाड़ में तिरछा सळ देख नै सेठ समझग्या के निसांणौ ठांणै लागौ है। वै झट मांचा सूं ऊभा व्हिया। लापरवाई सूं बोल्यां—नीं मांनै तौ बात कीं कोनी अर मांनै तौ घणौ ई है। —फुलवाड़ी
२ असावधानी।
रू. भे.—लापरवाही।

लापरवाह—देखो 'लापरवा' (रू. भे.)

लापरवाही—देखो 'लापरवाई' (रू. भे.)

लापळो देखो 'लांप' (रू. भे.)

लापसड़ी—देखो 'लापसी' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ नणदळ-बाई रे लापसड़ी रंधाय, ओ घण वारी रे हंजा, देवरजी छिनगाळा रे घेवर छांटमा, ओ राज। —लो. गी.

लापसी, लापी, लाफसी–सं. स्त्री. [सं. लप्सिका] गेहूँ के दलिये का बनाया हुआ एक प्रकार का मीठा व्यंजन।
उ०—१ छट्ठै प्रहरै दिवस कै, हुई ज जीमणवार। मन चावळ तन लापसी, नैण ज घी की धार। —ढो. मा.
उ०—२ चंपला की डार सूवा, पींजरी वंधाऊं रे, घ्रत घेवर सोलमां, लापसी परसाऊं रे। —मीरां
उ०—३ वडार रै नातै गांव नूंत्यौ, सोनजी रात सुख री नींद सूत्यौ। लाफसी र' घी री धूंवौ नूंतौ कर दियौ है। —दसदोख
रू. भे.—लपसी
अल्पा.,—लापसड़ी

लाव—देखो 'लाभ' (रू. भे.)

लाबाळी—देखो 'लवाळी' (रू. भे.)

लाभंकर—देखो 'लाभकर' (रू. भे.)
उ०—तिथ तेरस पख तरणि, वार सुभ करण चंद्र वर। एकादस ग्रह अरक, लगन कन्या लाभंकर। —रा. रू.

लाभ–सं. पु. [सं लभ्] १ प्राप्ति।
२ हित।
उ०—लियां नांम मुख लाभ, व्याधि दुख आधि न व्यापै। कुळ सज्जण थिर करै, अरी वडपणृ ऊथापै। —रा. रू.
३ सुअवसर।
उ०—'चतुर' कहै 'रामंग' रौ, ग्रहूं भुजा वळ आभ। मरण न पायौ धार मुंह, तिकौ गमायौ लाभ। —रा. रू.
४ फल, नतीजा।
५ उपकार, भलाई।
६ व्याज का धन।
७ व्यापार में होने वाला मुनाफा।
८ आनन्द, मौज।
उ०—दुसमणां लाभ दांनां दहण, खुली न कांनां खिड़कियां। नर परम धरम बूझै नहीं, हूकौ सूझै हिड़कियां। —ऊ. का.
९ सात प्रकार के चौघड़िये में से चौथा चौघड़िया, जो शुभ माना जाता है।
१० फायदा, मुनाफा।
रू. भे.—लाव, लाह, लाहु, लाहौ।

लाभकर, लाभकारक, लाभकारी—वि.—१ वह जिससे लाभ होता हो।
२ औषध आदि क्षेत्र में गुण करने वाला, फायदेमन्द।
रू. भे.—लाभंकर

लाभणौ, लाभबौ–क्रि. स. [सं. लब्धं] १ प्राप्त करना, पाना, मिलना।
उ०—१ ढोला, सायधण मांणजे, झीणी पासळियांह। कइं लाभै हर पूजियां, हेमाळै गळियांह। —ढो. मा.
उ०—२ हरीया आघी लाभतां, सारी सुरित न धारि। लूखी सूखी खाय के, सांई नांव संभारि। —अनुभववांणी

उ०—३ मांग्या लाभै जव चणा, मांगी लभै जवार। मांग्या साजन किम मिळै, गहली गूढ गिवार। —अज्ञात

२ जानना, पहचानना।

३ प्राप्त होना।

४ अचानक सामना होने पर किसी विशिष्ट स्थिति में मिलना या देखना।

क्रि. अ.—५ सूझना, उपजना।

६ लाभ होना, फायदा होना।

लाभणहार, हारो (हारी), लाभणियो—वि.।

लाभिओड़ो, लाभियोड़ो, लाम्योड़ो—भू. का. कृ.।

लाभीजणो, लाभोजवो—कर्म वा./भाव वा.।

लद्धणो, लद्धबो, लघणो, लघवो, लध्धणो, लध्धवो, लब्भणो, लब्भवो, लभणो, लभवो, लम्भणो, लम्भवो, लाघणो, लाघवो, लाहणो, लाहवो—रू. भे.।

लाभस्थान—सं. पु. यौ. [सं. लभ्+स्थान] जन्मकुंडली में लग्न से ग्यारहवां स्थान। (फलित ज्योतिष)

लाभांतराय—सं. पु. [सं.] जैन मतानुसार एक अन्तराय कर्म जिसके उदय होने से मनुष्य के लाभ में विघ्न पड़ता है।

लाभियोड़ो—भू. का. कृ (स्त्री. लाभियोड़ी) १ प्राप्त किया हुआ, पाया हुआ, मिला हुआ. २ जाना हुआ, पहचाना हुआ. ३ प्राप्त हुवा हुआ. ४ अचानक सामना होने पर किसी विशिष्ट स्थिति में मिला हुआ या देखा हुआ. ५ सूझा हुआ, उपजा हुआ. ६ लाभ हुवा हुआ, फायदा हुवा हुआ।

लाय—सं. स्त्री. [स. अलात, प्रा. अलाट] १ दावानल, आग, अग्नि।

उ०—१ उण वेळा वळ अग्गळा, दळ राठौड़ दुबाह। मेघ थया सीसोदियां, लगी लाय अणथाह। —रा. रू.

उ०—२ अजा रै जगाई जका सवाई सवाई ऊठै, लाख दळां विरोळै वुझायै न ज्वाळा लाय। कूरमां सीसोधां हाडां चहुवांणां सारां केतां, घजां नेजां गजां सूधी ले गयौ घकाय। —राजाधिराज वखतसिंघ रो गीत

क्रि. प्र.—लागणी

मुहा.—लाय लागणी=१ जलना, भस्म होना, अग्नि कांड होना। २ नष्ट होना। ३ जल्दी होना। (मचना) ३ कुछ विगाड़ या नष्ट होना।

२ लपट, ज्वाला।

३ जलने की क्रिया या भाव।

४ प्रचण्ड गर्मी।

उ०—आज पेमजी रै माथै सूं मुरळी दलाल री मांड्योड़ी मूळी हाळी मोवणी सीवी साफ हुवै, नीकळै है। जांणै आ मूळी तो वसंत पांच्यूं री परमळ नीं, उन्नाळै री लाय है। —दसदोख

उ०—२ जीवणदाता वादल्यां, थां सूं जीवण पाय। भल लूआं वाजो किती, मुरधर सहसी लाय। —लू

रू. भे.—लाइ, लाई।

लायक—वि. [अ. लाइक] १ सुयोग्य।

उ०—"मोटा तो थें करसो जद हुसां, हणै तों (निसासां नाख'र) रुई सूं ई हळका अ'र धूड़ सूं ई हीणा हां।" "कुण कैवै है? थां जिसा लायक सिरदार किता'क है?" —वरसगांठ

२ उचित, ठीक।

३ गुणवान, गुणी।

४ समर्थ।

उ०—डांढा तांभाड़ै केरड़िया ढींकै, रोटी पांणी नै टीगरिया रीकै। चित पर घोरारव आकर वरचावै, घर घर नर नायक लायक घवरावै। —ऊ. का.

५ भला, सीधा।

सं. पु.—मंत्री। (नां डि. को.)

रू भे.—लाइक, लायक्क

लायकी—सं. स्त्री. [अ. लायक+रा. प्र. ई.] लायक होने का भाव या अवस्था, योग्यता।

उ०—आ थांरी लायकी है। वाकी कणैई म्हांरै चोक दीसिया पधारो, पछै देखो म्हारा भाई कांई कैवै है? —वरसगांठ

लायक्क—देखो 'लायक' (रू. भे.)

उ०—डूंगरपुर वांसवाड़ाह देस, पाटवी राण राखीह पेस। लायक्क लूणपुर ग्रह लगांण, राय कुंवर दीध छालक्क रांण। —वि. स.

लायभळ—स. स्त्री. यौ. [स. अलात+ज्वाला] आग की लपट, ज्वाला।

लायण—देखो 'लांण' (रू. भे.)

उ०—लिखमी घर में दीया संजोया। पूजन सारू चावळ कूंकूं काढिया। अोर तो लायण कनै हो-ई कांई। —वरसगाठ

लायणो—देखो 'लाइणो' (रू. भे.)

लायपाय—सं. स्त्री.—१ चिन्ता, घवराहट, वेचैनी।

उ०—अेक पखवाड़ा तांई गांव रा कोई समंचार नी आया तो ठाकरसा रै ई लायपाय लागी। इत्ता दिन तो दूजै तीजै समंचारां रै साथै आदमी ई आवता पण आं पंद्रै दिनां में तो कोई खवर ई नीं ली। —फुलवाडी

२ प्राप्ति की लालसा।

उ०—दुनियां रो धन दुनियां रै पाखती ई रैवण दो, त्रिरथा लायपाय में कीं आंणी जांणी नीं। —फुलवाड़ी

लायपूळो—वि.—अति क्रोध-पूर्ण, उग्र।

लायल-वि. [अं.] स्वामिभक्त, राजभक्त।

लायलटी-सं. स्त्री. [अं.] राजभक्ति, स्वामिभक्ति।

लायोड़ो-भू. का. कृ.—१ कोई वस्तु अपने साथ लेकर आया हुआ. २ प्रत्यक्ष किया हुआ, समक्ष उपस्थित किया हुआ. ३ उत्पन्न किया हुआ।
(स्त्री. लायोड़ी)

ला'यो—देखो 'ल्हासियो' (रू. भे.)

लार-सं. पु.—एक प्रकार की लाग विशेष जो किसान से खलिहान में जागीरदार का हिस्सा ले लिए जाने के बाद ली जाती थी।
क्रि. वि. [सं. लहर] १ पीछे।

उ०—१ लघु लघु सर कर धनक लघु, लघु वय बाळक लार। रामंति सरजू तटि रमैं, कीळा राजकुमार। —सू. प्र.

उ०—२ कंवर रै साथ 'रतना' री निजर इण भांत वहै है, भागीरथ रै लार गंगधार वहै जिण भांत उपमा लहै है। बळै कितरी हेक दूर दूरबीण लगाई, सारां हीं वधती सनेह री सगाई। —र. हमीर

मुहा.—लार छूटणी=सम्बन्ध टूटना।
२ साथ, संग। (डि. को.)

उ०—जात पांत कुल कुटम कबीलो, साधु ही परवार है। मीरां के प्रभु गिरधरनागर, रमस्यां साधां री लार है। —मीरां

३ लिए, कारण।

लारड-सं. पु. [अं. लार्ड] १ स्वामी, मालिक।

२ अधिकारी, अफसर।

३ इंगलैण्ड के जागीरदारों या रईसों को सम्राट द्वारा दी जाने वाली एक आदर-सूचक उपाधि।

लारणो-सं. पु.—ग्राम-युवतियों के लम्बा अधोवस्त्र पहनने पर उसके ऊपर कसने की लम्बी डोरी।

लारलड़ो—देखो 'लारलो' (रू. भे.)

उ०—ज्यूं लारलड़ा वह गया, वरतमांण वह ज्याय। काळ कळत में कळ रह्या, ठीक न विसना ठाय। —अज्ञात
(स्त्री. लारलड़ी)

लारलेवार—देखो 'लारवार' (रू. भे.)

लारलो-वि. (स्त्री. लारली) पीछे का, पिछला।

उ०—१ देखो विगड़ी देह, डोळ विगड़गो देखो। विगड़ गई सब वात, लारलो ले कुण लेखो। —ऊ. का.

उ०—२ कदै ही इसो जमांनो हो जको लुगाई नातै ल्यांवता जद घर हाळा तो पं'लीपोत मूंढो ही नीं देखता। थावर री रात नै चोर दांई घरां लेय'र वड़ता अर घर हाळा मिनख घर छोड'र वारै निकळ जाता। ऊंधी चाकी फिरांवता, लारली गळी ल्यांवता अर व्याह-सावां में अळगी राखता। —दसदोख
२ बीता हुआ, विगत।

उ०—१ हिरण्यां डागळै री छत माथै लात मार्यां वगी जावै, लारली बातां काळजो वाळण नै लारै लागी आवै है। —दसदोख

उ०—२ कींरै सारै—माया तेरा तीन नांव, फरसियो, फरसो अर फरसरांम। लारला दिन भूलग्यो। —दसदोख

उ०—३ अबै कीकर सळटणी आवै। कुण जांणै कुण दाव-घाव करयो। मेड़ी तो लारला चार वरसां सूं भिळै ? इण नै नी अगेजियां तो हवेली री लाज ई भिळ जावैला। —फुलवाड़ी
३ बाद वाला, बाद का।

उ०—१ इसो विचार राजा कनकरथ नै अेकांत में ले पूछियो—महाराज सांच कहो, नेठ तो सांच कह्यां तपावस होसी। लारली सरब वात कहो। —पलक दरियाव री बात
४ बचा हुआ, अवशिष्ठ।

उ०—आं लुगायां रै घणा नी तो छ हांचळ तो बणावणा हा। दो चूंघै जितै च्यांरूं ई लारला चूं चूं करै। —फुलवाड़ी
५ पहले वाला, पूर्व का।

उ०—१ लारला खुटाई जेड़ी तो म्है लुगायां होय नै ई नीं खुटावां। —फुलवाड़ी

उ०—२ कहै कथ नूं दुहुं कुळ उजली कांमणी, गजां घजां फौजां लोह लागै। नीसरै तिके नर तिका लांनती दियै। लारला वंस नै गाळ लागै। —वीर स्त्री रो गीत
६ पूर्व जन्म का।

उ०—१ धूळ री कमाई खावणिया अे लोग भाठा नै पूजै, मिनख नै धुरकारै, राजा नै परमेस्वर जांणै अर खुदोखुद नै लारलै करमां रो फळ मांनै। —फुलवाड़ी

उ०—२ पण कोई आगै होय मरणा वास्तै वकारै ई तो ! अेड़ी मौत सूं लारलो जमारो ई सारथक व्है। —फुलवाड़ी
७ नीचे का, निचला।

उ०—चौधरी रै घरै मोटै मूंज रै मांचै माथै थांणेदार हुकमीदौनजी होको डरडकाय रैया हा। लांबी डील, वटवां वाळ, रंग तो तवै रै लारलै पींदै नै ही लारै छोड रैयो है। —दसदोख
८ अतिरिक्त, अलावा।
ज्यूं—म्हारै साथै चालो जिकी वात करो, लारली वात जावण दो।
अल्पा.—लारलड़ो

लारवाळ, लारवाळियो-सं. पु.—विधवा स्त्री का वह लड़का या लड़की जिसे वह पुनर्विवाह करने पर अपने साथ नए पति के घर ले जाती है।

रू. भे.—लाड़वाड़, लड़वाड़ियौ, लारलेवाळ ।

लारां, लारा, लारि, लारियां, लारी, लारीयां—देखो 'लारै' (रू. भे.)

उ०—१ कलह विन्न ता दिन बह्यौ, लारां 'घूंकल' लाय । आंणि मिल्यौ 'जगतेस' सूं, यम जुध करिय उपाय । —ला. रा.

उ०—२ हरीय मन हसती भया, जगत कूकरा लारि । हरिजन कै भावें नहीं, भौंक रह्या झख मारि । —अनुभववांणी

उ०—३ हरिया केता वहि गया, कीया करम कै लारि । घिल वंघे घन वीच मैं, व्यांन सघे नही धारि । —अनुभववांणी

उ०—४ वाणीं लिखि गया साघ विचारौ, मुकति हुवै मन मारियां । मारण में निति ही झखमारी, लज मारी कुळ लारियां । —ऊ. का.

उ०—५ लियां नव लाख थंड सुचारण लारियां, खड़ग ऊभारियां खळां खावै । बीदगां विकट दुख पड़ै जिण वारियां, धावळी-धारियां तुरत धावै । —ठाकुर जुंझारसिंह मेड़तियौ

उ०—६ भोजन करणौं भूल खेलै, वूढा लारी खड़भड़ै, हेठै हाळी चालौ भणै, रुळा रुखाळी रड़भड़ै । —दसदेव

उ०—७ वात विसटाळ 'फिरिया' जिकण वारीयां, भटी कह 'दांन' 'सादुळ' छक भारीयां । घणी सुपां सरण मरण संक-धारीयां, लाज मन घरै 'जेसांण' गढ़ लारीयां । —जसजी आढ़ौ

लारै—क्रि. वि.—पीछे ।

उ०—१ अम्ह विसटाळै आवियौ, लगि ज्यां हिज लारै । कंटक सुणि अंगद कहै, पित तुझ प्रकारे । —सू प्र.

उ०—२ सूकी सुदरांणीं झाड़ां रै सारै,लाघी विदरांणीं वाड़ां रै लारै । सद व्रत करतोड़ी बरणास्रम सेवा, काढे मरतोड़ी रेवा तट केवा । —ऊ. का.

उ०—३ अै साच वोल जाता तो पछै धांदौ ई कांई वात रौ हो । व्हा, व्हैगो इण रै हाथां न्याव ? अैड़ी न्याव निवेड़न जोग अकल व्हैती तौ तड़ौ लियां लरड़ियां रै लारै ढरर-ढरर करतौ क्यूं रवड़तो । —फुलवाड़ी

२ वाद में ।

उ०—पग पाछा पड़ै पूरी ललो-चम्पो राखै । नहीं तो लारै सूं लांबी पैरायदै । —दसदोख

३ मरणोपरान्त, मृत्योपरान्त ।

उ०—१ लारै एक लिछियै नांव री न्हांनी पौतौ अर वींरी विधवा मा रै'यी । —दसदोख

४ कुछ कर लेने के वाद ।

उ०—लारै राख्योड़ा कामां खातर मरती विरियां रावण ही मोकळौ पिछतावौ करतौ मरयौ । —दसदोख

५ बढ़ कर ।

उ०—सथराई अर खांमचीपणौ तौ मांसी सूं लारै हो । —फुलवाड़ी

६ साथ में ।

उ०—१ वांधी मूठी बापड़ा ले जासी की लार । क्रपण नै निसदिन कहै, ओ नाहर परमार । —भोपाळदान सांदू

उ०—२ 'गजन' वडी कै गेडंवर तद मुझ हुकम दियौ सुरतांण । लसकर खच्चर दी लारै आज अटक पर फेरु आंण । —मालौ सांदू

मुहा.—लारै आंणौ=पत्नी रूप होना ।

लारै लागणौ=पीछे पड़ना, आश्रित होना ।

रू. भे.—लरां, लारां, लारा, लारि, लाग्यिां, लारी, लारीयां, लारोवरि, लारोवरी, लारो, लारचां, लाहरां लाहरै, लैर, लैरां, लैरियां, लैरचां ।

लारै-लारै—क्रि. वि.—पीछे-पीछे ।

उ०—नाई रै लारै लारै सगळा लोग केई वेळा अंदाता री जै जै कार वोली । अंदाता रै माथै नसा रौ तौ जांणै भूत ई सवार व्हैगौ । —फुलवाड़ी

रू. भे.—लारोलार, लारोलारि

लारोलार, लारोलारि—क्रि. वि.—१ एक के वाद एक, क्रमशः ।

उ०—१ सिलह संदूक सलीतै वड्डै, लद्दै ऊंट चलाए गिड्डै । लारोलार कतारां हल्ली, काती जांण कुरज्झां चल्ली । —गु. रू. वं.

उ०—२ हरीया जुग लोपै नहीं, कुळ अपने की कार । पूंछड़ बांध्यां ऊंठ ज्यूं, लारोलारि कतार । —अनुभववांणी

२ निरन्तर ।

३ देखो 'लारै लारै' (रू. भे.)

उ०—लारोलार लगावचौ जी, छेटि म राखौ काय । केळवणी करचौ इसीं जी, जिम वाहिर न दीखाय । —प. च. चौ.

लारोवरि, लारोवरी—देखो 'लारै' (रू. भे.)

उ०—लारोवरि अस चित्रांम कि लिखिया, निहखरता नरवरै नर । मांखण चोरी न हुवै माहव, महियारी न हुवै महर । —वेलि

लारो—सं. पु.—१ पीछे पड़ने या पीछा करने की क्रिया या भाव ।

२ पीछा ।

उ०—१ रोणो-ई है तौ अेक दिन भेळौ-ई, मनै रोय-धोय' र लारौ छोडौ । —वरसगांठ

उ०—२ खासी भांय तांई लारौ करचौ । पण कुचमादी री कीं पतौ नीं पड़चौ । —फुलवाड़ी

३ पृष्ठ भाग, पीछे का भाग ।

४ देखो 'लारै' (रू. भे.)

उ०—जलंम सुधारौ जंम वहै लारौ छाडौ सकळ विकारा। श्रो संसार चिहर की वाजी, देखौ सोचि विचारा। —ऊदोजी नैण

लारचां—देखो 'लारै' (रू. भे.)

उ०—ए जी सरदार थारी घण लारचां लागी श्रावै मेरी जांन, उमराव जी श्रो रसिया। —लो. गी.

लालंखर, लालंवर–वि.—रक्तवर्ण युक्त, पूरा लाल।

उ०—कंवर रै पलकां पीक, श्रधरां काजळ री लीक। श्राळस श्रंग, भाल श्रलता रो रंग। लालंखर नैण, चळविचळ वैण। हियै गडियौ हार, तुररा रा तूटा तार। —र. हमीर

उ०—२ वोळ करै श्रसमर रत वोहां, लालंवर हुय पूरां लोहां। सत्र विहंड खुरसांण सकाजा, मुजरौ करूं एम महाराजा। —सू. प्र.

उ०—३ लालंवर नैण श्रनै मुख लाल, उपै वप तेज समुद्र उकाळ। —सू. प्र.

सं. पु.—सूरज, सूर्य।
(मि. रातंवर)

लाळ–सं. स्त्री. [सं. लाला] १ पतला तार जैसा मुंह में से निकलने वाला थूक। (डि. को.)

उ०—डावी श्रांख थोड़ी टेडी रैवती श्रर डावौ होठ ढीलो रैवण सूं हरदम लाळ पड़ती रैवती। —रातवासौ

मुहा.—लाळ टपकणी, लाळ पड़णी=मुंह में पानी श्राना, लालायित होना।

२ मन्दिर में लटकाया या किसी पशु के गले में वांधे जाने वाले घण्टे के श्रन्दर वीच में लटकने वाला धातु का गुटका, लंगर या लोलक।

उ०—मांड पीवइ कण राळजे लाळ विहूणी वाज छै घंट। ईसी सकति तिहां देव की, चोर नाहर नहीं देव कइ पंथ —बी. दे.

३ चौपाये पशुश्रों के मुंह का एक रोग विशेष।

लाल–सं. पु.—१ पुत्र, बेटा।
२ वालक, लड़का।
३ श्रीकृष्ण का एक नाम।
४ एक प्यार श्रोर वात्सल्य भरा सम्वोधन सूचक शब्द।

उ०—१ तेल फुलेल मद वाटळा श्रो भैरू, श्रोर चोत्र्याळा नाळेर, श्रो लाल। मैं छूं घरम की वैनड़ी, श्रो भैरू, तूं मेरो समरथ भाई श्रो लाल। —लो. गी.

उ०—२ मुरला लाल, थे छो जवाई म्हारै माथै परली मैंमद श्रो, मेड़तिया श्रो लाल, कमघजिया श्रो लाल, थे छो जंवाई, म्हारै कांनां परला कुंडळ, मुरला लाल। —लो. गी.

उ०—३ या ल्यो राजाजी थांरी नोकरी जी राज, यो ल्यो साथीड़ां थांरो देस रै पपइया रै लाल। —लो. गी.

उ०—४ पहली प्रीत करो पीतव सुं, पीछै छाडि विकारी। जन हरिरांम करत हरिजी सुं लाल पुकार हमारी। —श्रनुभववांणी

५ एक प्रकार का पक्षी विशेष जो प्रायः जलाशय के पास रहता है।

उ०—जांणै दूसरी घटा छै। दरखतां ऊपर मोर कुहक रह्या छै। सुवा केळ करै छै। तूती वोल रही छै। लाल हाक मार रह्यो छै। —रा. सा. सं.

६ ताश के पत्तों में चार रंगों में से एक रंग या उक्त रंग का पत्ता।
७ भंगियों (हरिजनो) के गुरु।
८ खेल में पहले जीता हुवा खिलाड़ी।
सं. स्त्री.—९ मानिक, रत्न।

उ०—म्हारै नवघा नथ सुहावणी, सांवलड़ो है मोत्यां विचली लाल। म्हारै फूल झूमका फव रह्या, सांवलड़ो है झूमर री लूम। —मीरां

श्रल्पा.—लालड़ी
१० भूरापन लिए हुए लाल रंग की एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया।
११ श्री करनीदेवीजी की वहिन का नाम।
१२ वच्चों के खेल विशेष में जीती हुई वाजी का नाम।
ज्यूं—एक लाल माथै करणी।
[सं. लालसा] १३ इच्छा, चाह।

उ०—स्वयंवर छि तेहनु, तांहां जाय छि भूपाळ। पांमवूं वसि दैवनि, श्रासा तणी छि लाल। —नळाख्यांन

वि.—१ रक्त वर्ण का। (डि. को.)

उ०—उड़त गुलाल लाल भये वादळ, वरसत रंग श्रपार रे। घट कै सव पट खोल दिये हैं, लोकलाज सव डार रे। —मीरां

२ क्रोघयुक्त, श्रावेश में।
मुहा.—लाल होणौ=क्रोध में श्राना, श्रावेश में श्राना।
३ खेल में सबसे पहले जीता हुश्रा।
४ प्रिय, प्यारा।

उ०—ऊंचो घालूं पालणो, यो जळ जमना कै तीर। झोटो देसी सायवो, म्हारी लाल नणद को वीर। गीगा सोज्या मेरा लाल। —लो. गी.

रू. भे.—लल्ल।

लालकणेर, लालकनेर–सं. स्त्री.—एक पेड़ विशेष, जिसके फूल गुलाव के फूल जैसे होते हैं।

उ०—सोरंभां केसर श्रगर, रहे जायफळ फूल लालकणेरां श्रर समी, फिर कहुं कहूं वबूळ। —गज-उद्धार

लालकबांण, लालकमांण–सं. स्त्री.—एक प्रकार का धनुष ।

उ०—१ मुंछा हाथ ज फेरिया, खेचूं लालकबांण .फोजां फेरूं पतस्याह की, तो राहव मुभि जांण । —राहव-साहव री वात

उ०—२ वहिलउ आए वल्लहा, नागर चतुर सुजांण। तुझ विण घण विलखी फिरइ, गुण विन लालकमांण । —ढो. मा.

लालकी–सं. स्त्री.—जीभ, जिह्वा ।

उ०—दिल कहै न धारू देणहिक दोकड़ो लालकी अणूंता करै लपका । —अग्यात

२ देखो 'लाली' (अल्पा., रू. भे.)

लालकेसियौ–सं. पु —एक प्रकार का अश्लील लोकगीत ।

वि.—रसिक ।

मि.—केसियौ ।

लालड़ी—देखो 'लाल' (अल्पा., रू. भे.)

उ०–वाजी वुलावै है, सनस खुलावै है। प्यारी री लालड़ी प्रीतम रौ हीरौ। प्यारी री चूंदड़ीं प्रीतम रौ चीरौ रात्यूं चौपड़ रमणी भेळी, प्यारी री आंम केरी प्रीतम रौ केळौ।पासौ जीतै न पासौ हारै, दोनूं वातां मतलब सारै। — र. हमीर

लालड़ौ–वि. (स्त्री. लालड़ी) लाल रंग का ।

लालचंदन–सं. पु.—मैसूर प्रान्त व अरकाट में वहुतायत से होने वाला लाल रंग का चंदन, जिसका पेड़ लम्बाई में छोटा होता है, रक्तचंदन ।

लालच–सं. पु. [सं. लालसा] १ कोई वस्तु प्राप्त करने की अत्यधिक लालसा या इच्छा, जो अनुचित या अशोभनीयता के कारण प्रकट न की जा सके, लोलुप्तापूर्ण लोभ ।

उ०—१ ज्यूं ज्यूं लालच खार जळ, सेवै दुरमत संग । 'वांका' अत त्यूं त्यूं वधै, त्रसणा तणी तरग । —वां. दा.

उ०—२ मोड़ै मुख मोड़ै हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरणनै सीतळ सतवाळी। लुच्चा ललचावै लालच घिन लागै, लोचण जळ-मोचण सोचण खिण लागै। —ऊ. का.

उ०—३ कापुरसां फिट कायरां, जीवण लालच ज्यांह । अरि देखै आरांण में, त्रण मुख मांझळ त्यांह । —वां. दा.

रू. भे.—लालच्च

लालचख, लालचक्ख–सं पु.(स्त्री. लालचक्खी, लालचखी) भैंसा । (डि. को.)

लालचट—देखो 'लालचुट' (रू. भे.)

लालचांच–सं. पु.—तोता, सुग्गा । (डिं. को.)

लालचियौ–वि.—१ लाल रंग वाला ।

२ देखो 'लालची' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—लालचिया निरधार तिहां रे, मांनि हुकम तिहां जाय मेरे। देखि दरीयौ इम कहै रे, खोदे कुण खुदाय मेरे। —प. च. चौ.

लालची–वि.—लालच करने वाला, लोभी ।

उ०—सगुरा सत सयम रहै, सन्मुख सिरजनहार। निगुरा लोभी लालची, भूंचे विसय विकार। —दादूवांणी

अल्पा., –लालचियौ ।

लालचीणी–सं. पु.—सिर पर लाल छिटकियां व सफेद शरीर वाला एक प्रकार का कबूतर ।

लालचुट–वि.—अत्यधिक लाल ।

उ०—पकै ठूंठियां ईंट, चूनो, सुरखी हुळकीफूल घुट। ठंठेरा लुहारा सारा, लोह चढावै लालचुट । —दसदेव

रू. भे. लालचट ।

लालचोळ–वि.—१ गहरा लाल ।

२ क्रोधित, आवेशयुक्त ।

लालच्च—देखो 'लालच' (रू. भे.)

उ०—वादळ देखी जव आवती, तव सुचित विसमु भयु, लालच्च नारि निरखुं हवइ, तु मोहि सूर साहस गयौ। —प. च. चौ.

लालजटा–सं. पु.—मुर्गा ।

उ०—लालजटा धुनी वोलियौ, स्याळ सुणं कर सोच। कांमण सारा कदे नर को, लस्यो वदन को लोच। —पनां

लालजी–सं. पु.—१ किसी सम्मानित घर के युवक, राजकुमार तथा कुमार के लिए प्रयोग किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द ।

उ०—१ रावजी वातां सुण राजी हुवा। जिसै मा री वडारण आई, रावजी सुं मुजरो कर अरज कीवी—लालजी नुं भीतर वोलावै छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ जदी छोकरी गई। सो आप घोड़ा चढता था, जितरै जाय करि कह्या, 'लालजी, वाईजी बुलाती है।' जदी पागड़ा में सें पग काढचा पीछा अरु मांही आया, आय करि सलांम करी। —राहव-साहव री वात

२ राजा के उप-पत्नी की सन्तान (पुरुष) के लिए प्रयुक्त होने या किया जाने वाला सम्मान-सूचक शब्द। (जयपुर)

३ पति के लघु भ्राता (देवर) व नणंद के पुत्र (नांणदा) के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द। (चारण राजपूत)

लालटेण, लालटेन–सं. स्त्री [अं.] मिट्टी के तेल से जलने वाला वह उपकरण जिसमें तेल भरने का स्थान एव वत्ती लगी रहती है

तथा काच पारदर्शी पदार्थ का आवरण (गोला) लगा रहता है, कंडील ।

उ०—दोय जणा-अेक कईक ढळती ओस्था-रौ अर अेक मोटियार जिकै रै हाथ में लालटेण, वारणौ खोल र हड़वड़ावतां खाथाखाथा टुर पड़चा । —वरसगांठ

लालण-सं. पु.—१ अत्यन्त स्नेह, लाड़-प्यार ।

२ प्यारा बच्चा।

रू. भे. लालन

लालणौ, लालबौ-क्रि. स.—१ लाड-प्यार करना ।

उ०—१ बेटी घर संमुहउ पाउ चालइ, दारिद्र वाट देखाडइ, जाउं वाली ताउं, हुई लाली पाली। —व. स.

उ०—२ बेटी घर सम्महौ पाउ चालइ, दरिद्र वाट दिखाड़इ। जां हुई वालि, ताउं हुइ लालि पाली । —रा. सा. सं.

२ देखो 'लोळणौ, लोळबौ'

लालणहार, हारौ (हारी), लालणियौ—वि. ।

लालिओड़ौ, लालियोड़ौ, लाल्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लालीजणौ, लालीजबौ—कर्म वा. ।

लालतातौ-वि—क्रोधित, नाराज।

उ०—इतरै समय हुवां सो यक्ष आय कन्या पास बैठो। राजा खग लेय, सांम्है यक्ष देख, लालतातौ हुवौ। —सिंघासण बत्तीसी

लालधजा-सं. स्त्री [सं. लालध्वजा] १ श्री करनीजी, भैरूंजी व हनुमानजी की ध्वजा ।

२ लाल रंग की पताका ।

लालन—देखो 'लालण' (रू. भे.)

उ०—पांन फूल नूं, जीव तूं कोमल केलि समांन। ललूड़ौ अति लाडलौ, लालन लीला थांन। —जयवांणी

लालपांणी-सं. स्त्री.—शराब, मदिरा ।

लालपिलकौ-सं. पु.—सफेद दुम व सफेद डेनों वाला एक प्रकार का कबूतर ।

लालपोस-सं. पु.—हरिजन, भंगी ।

लालफूल-सं. स्त्री.—अनार, दाड़म ।

लालबंब-वि.—अत्यधिक लाल रंग का, गहरा लाल ।

लालबजार, लालबाग, लालबाजार-सं. पु.—वेश्याओं का मोहल्ला ।

उ०—सुंणी न दीठी आज अेसी संसार में, वण भगतण घण थाट कै लालबजार में। —महादांन मेहड़

लालबुझक्कड़-सं. पु.—वह जो किसी विषय में अनभिज्ञ होते हुए भी अनुमान या अटकल द्वारा समस्या का हल ढूंढता है ।

लालबुरज-सं. पु.—कपड़ों की धुलाई करने पर अधिक कान्ति के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला एक प्रकार का पाउडर, नील ।

लालबेग-सं. पु.—१ परों वाला एक लाल रंग का कीड़ा विशेष ।

२ मुसलमान भंगी ।

३ मेहतरों (हरिजनों) के एक कल्पित पीर ।

लालबेगी-सं. पु.—लालबेग का अनुयायी हरिजन ।

लालमन-सं. पु.—१ श्री कृष्ण ।

२ लाल शरीर, हरे डेनै, गुलाबी चोंच व काली दुम वाला एक प्रकार का तोता ।

लालमिरच-सं. स्त्री. यौ.—१ एक प्रकार का क्षुप के समान पौधा जिसके सफेद रंग के फूल एवं फली के आकार के फल लगते हैं जो अपक्व अवस्था में हरे एवं पकने पर पीले होकर लाल हो जाते हैं। मिरच छोटी, बड़ी, देशी, देशान्तरीय अनेक प्रकार की होती है।

२ उक्त पौधे की फली खाने में तीक्ष्ण (चरकी) एवं कटु स्वाद वाली होती है एवं जिसे सब्जी व नमकीन व्यंजनों में प्रयुक्त किया जाता है ।

लालमी-वि. [सं. लाला+रा. मी.] जिस से लारा टपकती हो, अधिक लारा युक्त ।

उ०—तठा उपरांत करि नै राजांन सिलामति कावली कूतरा, लाहोरी कूतरा, बिलाती कूतरा, लोलमी, लालमी जीभ रा, वलि-में पूंछ रा, लापड़े कांन रा, दाड़मी दत रा, सिंघ रा हथ रा, केहरी कंध रा, भांफरै रोम रा, के विना रोम रा, इण भांत रा कूतरा। —रा. स. सं.

लालमुरगा-सं. पु. यौ.—एक प्रकार का पौधा या उक्त पौधे के फूल मयूर शिखा, जो औषधि के काम में आता है ।

२ एक प्रकार का पहाड़ी पक्षी जिसका शिकार किया जाता है।

लालमूली-सं. स्त्री.—शलगम, शलजम ।

लालमेह-सं. पु.—रक्त प्रमेह नामक पुरुषों का एक रोग विशेष ।

लालर-सं. स्त्री.—१ विधवा स्त्रियों के ओढ़ने का एक वस्त्र विशेष ।

२ व्यर्थ की बकवाद ।

लालरणौ, लालरबौ—१ देखो 'ललरणौ, ललरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ अै कितरा-अेक ठाकुर घरे हालिया। घोडै आया लालरता थका। तरै आपस में घोड़ा ओळखै नहीं। औ कहै—थांह रौ ठाकुरे! औ घोड़ो है। आपस में लालरण लागा।

—प्रतापमल देवड़ा री वात

उ०—२ लड़खड़ाती पड़ती लालरती, मेल मांग सिर संबर मरती। गी 'अभमळ' अगै पड़ गळियां, मरमट मूंक मरद्दां मिळियां । —द्वारकादास दधवाड़ियौ

उ०—३ वीरमदे छेड़चौ किनां मुचकंद जगायौ । रिण हुवियौ

विकरोळ, दोहूं घाड़वियां दौड़ा, वहै गजर वांणास, घजर ऊर कूंत घमोड़ा । लोह छकै लालरै, रुघिर धकधकै वराळां, ग्रोयण अंत्राळा उळझि, रंग कंठां वरमाळां । चाडता उरां तुरंग चपळ, बहसंता वांवाड़ता, झाड़ता कलम सूवां झिलम पिसण खगां झट पाड़तां । —पनां

उ०—४ सेलां हियां दुसार, लोह वाहै लालरता । वीखरता बावरां, भ्रगुट फाटा हौफरता । —सू. प्र.

लालरणहार, हारौ (हारी), लालरणियौ—वि० ।

लालरिश्रोड़ौ, लालरियोड़ौ, लालरचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लालरीजणौ, लालरीजबौ—भाव वा० ।

लालरयोड़ौ—१ देखो 'ललरियोड़ौ' (रू० भे.)

(स्त्री. लालरियोड़ी)

लालरियौ-सं. पु. (व. व. लालरिया) १ खुशामद, जी हजूरी ।

उ०—१ रोयनै आंख्या री भरम गमावणौ । घणा नीं, दोय वीसी टकां माथै चढायनै लाय दै तौ पछै देख सगळाई कैड़ा लालरिया लेवै । —फुलवाडी

उ०—२ झाड़ूं ढांणी झालरिया झाड़ै, पांणी पालरिया पीवण पछखाडै । लोरीदै पोलछ लालरिया लेती, दड़खिल खोड़ा नें हालरिया देती । —ऊ. का.

लालरी-सं. स्त्री.—चमड़ी ।

उ०—माथउं घवलउं देह जाजरी, वांकउ वांमउ भूवइं लालरी । घर हूंतउ नवि क्याहइं जाइ, सघला कुटुंव ऊभीठउ थाइ । —वस्तिग

लालसर-सं. पु.—लाल रंग की गर्दन एवं सिर वाला एक पक्षी ।

लाळसा, लालसा-सं. स्त्री. [सं. लालसा] १ किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा, लिप्सा, उत्सुकता ।

उ०—जुजठळ वाळी मरजादा निभाई । वोल्यौ—म्हैं लुगायां री चांम रै मांयलो सूछम जीव हूं । वांरी प्रीत रौ घणी हूं । बिणज ग्रर कमाई विचै म्हनै हेत-प्रीत री लाळसा वत्ती है । —फुलवाड़ी

२ गर्भिणी स्त्री के मन में होने वाली अभिलाषा, साध।

रू. भे.—लाला ।

लालसागर-सं. पु.—अरब और अफ्रिका के बीच पड़ने वाला भारतीय महासागर का अंश, जिसका पानी कुछ ललाई देता है ।

लालसाटी-सं पु.— वह पुनर्नवा जिसका पत्ता एक ओर से लाल रंग का हो ।

लालसिखी-सं. पु.—मुर्गा ।

लालसी-वि.—लालसा या अभिलाषा करने वाला ।

लालसुरंग-वि.—गहरा लाल ।

लालां-सं. स्त्री.—श्री करनी देवी जी की वहिन ।

उ०—पळासण अंग भखै भर पेट, भेळा उतभंग सदा सिव भेट । लालां कर थापलि कंघ लंकाळ, फूलां सिघ संग भरावत फाळ । —मे. म.

लाला-सं. पु.—१ कायस्थों के लिए सम्मान सूचक सम्वोघन ।(मा. म.)

२ माहेश्वरी व अग्रवाल आदि महाजनों के लिए सम्मान—सूचक सम्वोघन । (गंगानगर, बीकानेर)

३ स्नेह सूचक सम्वोधन ।

४ प्यारा, प्रिय ।

व. व.—५ अभाव, दारिद्रता ।

उ०—वेमारी में तौ भळै दूध को खरच लागै । भाग आयग्यौ, रोट्यां री ही लाला पड़ग्या । —दसदोख

सं. स्त्री – ६ ध्यान, समाधि ।

७ देखो 'लालसा' (रू. भे.)

अल्पा. – लालू, लालूड़ौ ।

लालाटि-सं. पु.—१ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

२ देखो 'ललाट' (रू. भे.)

लालाटिक-सं पु. [सं. लालाटिकः] १ सावधान अनुचर ।

२ निठल्ला ।

३ एक प्रकार का आलिंगन विशेष ।

वि. [सं. लालाटिकं] १ माल सम्बन्धी ।

२ भाग्य पर निर्भर रहने वाला ।

३ निरर्थक, नीच, कमीना ।

लालाभक्त-सं. पु.—एक नरक का नाम । (पौराणिक)

लालाभक्ष-सं. पु.—एक नरक विशेष जहां वे लोग भेजे जाते हैं जो भगवान को विना भोग लगाये या अतिथियों को भूखा रखकर स्वयं पेट भर भोजन कर लेते हैं । (पुराण)

लालासरव, लालासव, लालास्त्रव, लालास्राव-सं. स्त्री.—१ मकड़ी । (डिं. को.)

२ मकड़ी का जाला ।

३ मुंह से लार गिरने की क्रिया ।

लालिमा-सं. स्त्री.—ललाई, सूर्खी, अरुणता ।

लाळियोड़ौ—देखो 'लोळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लाळियोड़ी)

लाळियौ-सं. पु.—१ छोटे वच्चों के वक्ष स्थल पर वांधा जाने वाला कपड़ा विशेष ।

२ ग्वार के डंठल व पत्तियां ।

३ देखो 'लाळौ' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—सू उण ही बादळां सूं घोड़ां रा लाळिया छांटजै छै। फेर बादळा खखोळ उणहीज तळाव रै पांणी सूं छांण भरजै छै।
—रा. सा. सं.

लाळी-सं. स्त्री.—१ बाजरी व ज्वार की बालों पर दाना पड़ने से पूर्व आने वाला सफेद सा पदार्थ, फूग्री।

२ भूसे का वह भाग जो अनाज निकालते समय हवा से उड़ कर दूर इकट्ठा हो जाता है।

३ देखो 'ल्याळी' (रू. भे.)

उ०—डावा लाळी जिगणी मलाळी तंदळ भरं भांणां, नीरभरि वहिहूं सवदी गाढ, सपळांणु छोडु, रामु धोरी। —व. म.

लाली-सं. स्त्री —१ लाल होने का भाव या अवस्था, ललाई, सुर्खी।

उ०—सांवरिया म्हांनै भांग पिलाई, मेरी अंगियां में लाली छाई। काहे री कूंडी (राधा) काहे रा घोटा, काहे री सुवाफी बणाई।
—मीरां

उ०—२ इण अधरां रा मिठास री तौ वात कुण कहै, मूंगियां री लाली तौ यां री दलाली में वहै। आ छोटी मफाड़ किसड़ीक सोहै है, औ मंदहास किणनूं न मोहै है। —र हमीर

२ प्रतिष्ठा, इज्जत।

उ०—धन री धूड़ हुयगी, माया रा कोयला बणग्या। अळेवण अरजन रै पगां पूगी, लाली लेवै हुगी। —दसदोख

३ जीभ, जबान।

उ०—होटां रो सिणगार। लाली री झिकाळ। पण मन री तो भेद ई अगम। — फुलवाड़ी

४ रौनक, शोभा।
अल्पा.—लालकी।

लालुरणौ, लालुरबौ—देखो 'ललरणौ, ललरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ लडै हिक लालुरता छकि लोह, पडै हिक पाइक ऊठै छोहि। आवै हिक वाहे खाग उभारि, मुखां हिक जोध कहै मारि मारि। —गु. रू. वं.

उ०—२ लालुरै हेक हेकां दिसा लोडता। काळ नां बाथ घाते जिसा कोडता। —हरि पिंगळ प्रबन्ध

उ०—२ अरस हूंत ऊतरै, एक वर अच्छर वरिया। एक पडै लोहडै, लोह छक्का लालुरिया। —गु. रू. वं.

लालुरणहार, हारौ (हारी), लालुरणियौ—वि०।
लालुरिओड़ौ, लालुरियोड़ौ, लालुरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
लालुरीजणौ, लालुरीजबौ—भाव वा०।

लालुरियोड़ौ—देखो 'ललरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लालुरियोड़ी)

लालू, लालूड़ो—१ देखो 'लालो' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ छना छोगाळा छका छूटोड़ा, फिरतां फिरतां रा फीफर फूटोड़ा। लालू लोकां रा खाता जग गोणा, बाबा बैलां रा जाता पग जोणा। —ऊ. का.

उ०—२ लालूड़ा ! हरि सूरज हरि चंद्रमा, लाला म्हारा रै हरी बिन घोर अंधार। —मी. रां.

लालूवाड़-सं. स्त्री.—एक प्रकार की तलवार।

लाळौ-सं. पु.—१ घोड़े के मुंह की मोरी में नीचे की ओर लगी हुई कपड़े की पट्टी जिसका दूसरा हिस्सा तंग में लगा रहता है।
उ०—रूपा रा पागड़ा। सुरंगी तंग। फबती लगांम। झूलतौ लाळौ। —फुलवाड़ी

२ घोड़े के मुंह के दोनों छोर।

उ०—मद साहिजादो मोमण तळाव उपरि आय उतरयो घोड़ां का लाळा छांटया। अर भाला परि हाथ दीयां खड़ा है।
—राहब साहब री वात

अल्पा.— लाळियो, लाल्यो

लालौ-सं. पु.—१ पुत्र, बेटा।

उ० —वरतै मोड़ मोड़िया बेटो, पैगद हेटो बाप पटै। मूंडा हूंत न बोलै मीठो, लालो बूढां हूंत लड़ै। —हिंगळाजदांन कवियौ

२ लड़का, शिशु।

३ बच्चों के लिए स्नेहपूर्ण सम्बोधन।

४ कायस्थ माहेश्वरी, अग्रवाल आदि जातियों के व्यक्तियों के लिए सम्मानसूचक सम्बोधन। (गंगानगर, बीकानेर)

उ०—लालो वरसां सूं मांनीजतौ आदमी, नगद पीसो तो रानै घणो नीं पण मांण मुलाकात उतरादै इलाकै में वड़ पीपळ दाई पाकी पड़ रैयी ही। मालमता अर जगां सेठाई रै पगां, सदा सुरंगी रैती आई ही। —दसदोख

अल्पा.,— ललूड़ो, लल्लो, लल्लू, लाल्यो

५ ल अक्षर या वर्ण।

उ०—लघुनीति लोभ लिग लिग लहरि, लाल लीख वलि लाल्हरा। ले आइ साथि साते लला, जिका काइ कीधी जरा। —ध. व. ग्रं.

लाळचौ - देखो 'लाळौ' (अल्पा,. रू. भे.)

लाल्हरणौ, लाल्हरबौ—देखो 'ललरणौ, ललरबौ' (रू. भे.)

उ०—तुरी करनाळ रणसींगो वाज रह्या छै। सहनाय मांहै खंभायची हुय रही छै। साथ सारो अमलां सूं लाल्हरतौ थको वहै छै। —रा. सा. सं.

लाल्हरणहार, हारौ (हारी), लाल्हरणियौ—वि.।
लाल्हरिओड़ौ, लाल्हरियोड़ौ, लाल्हरयोड़ौ—भू. का. कृ.।
लाल्हरीजणौ, लाल्हरीजबौ—भाव वा.।

लाल्हरियोड़ी—देखो 'ललरियोड़ी' (रू. भे.)
(स्त्री. लाल्हरियोड़ी)

लाल्हरियौ—स. पु.—एक प्रकार का पौधा विशेष जिसे ऊंठ चाव से खाते हैं।

लाव—सं. स्त्री.—१ चमड़े या जूट का बना मोटा रस्सा, जो प्रायः कूएं से चरस खीचने के काम आता है।
उ०—'अणंदो' कूप पैसतां 'आऊ,' तूटी लाव तिसार। भुजंग रूप वण वीस-भुजाळी, जुड़ी बरत रै जा'र। —किसोरसिंह बारहस्पत्य
स. पु.—२ लाभ।
उ०—१ नेन न पेम न प्रीत हरि, आव न कहै सिघाव। हरिया परहरि हित विन, वा घरि लाव न साव। —अनुभववांणी
उ०—२ हरीया प्याला पेम का, पीया भरि भरि दाव। और अमल किस कांम का, लीयां लाव न साव। —अनुभववांणी

लावक—सं. पु. [सं. लावकः] एक प्रकार का पक्षी विशेष। (सभा)
वि.—१ लाने वाला। २ काटने वाला।

लावक्कि—वि.—योग्य, लायक।
उ०—अल्पमांम निरलोम दाक्षिण्य पर दया पर मया पर क्षमा पर शाचावोली हितवोली मितवोली ऊपजावकि लावक्कि द्रावकि समयती मांनयती सतीमिती अनुरक्ति सक्ती···। —व स.

लावड़ौ—सं. पु.—लोमड़ी।
उ०—लावड़ौ, हरणइ, सिंह, सियाळ, पहुंत समीहोज्यौ लोवा सीयमाळ। घन हरिणाखी ईम कहई, निहचई ओळग चालणहार। —वी. दे.

लावण—सं. पु.—१ गायन विशेष।
उ०—गायण तठै करै व्रत गावै, लावण वांणि अनेक लगावै। छक छोह जोवनां छाकां, पुहपांतणी वणी पोसाकां। —सू. प्र.
२ नमकीन पदार्थ।
उ०—रूप अपूरव पेखीयौ, लावण लाडु अरी पकवांन। सेना सहित राज जीमीयौ, राई भतीजौ भोज दे बहुमांन। —वी. दे.
३ वह नमकीन पदार्थ जिससे लगाकर रोटी खाई जाय, लगावण।
वि.—१ नमकीन।
२ देखो 'लावण' (रू. भे.)
उ०—घर हाळी पर भूजै, दांत भीचै। वापडी दांतां में लावण लियां रात-दिन पांणी पीसणौ करै। —दसदोख

लावणता—देखो 'लावण्यता' (रू. भे.)

लावणी—सं. स्त्री—१ गाने का एक प्रकार का छंद या गीत, ख्याल।
२ मतान्तर से तारक छंद का एक भेद विशेष जिसमें लघु-गुरु का कोई भेद नहीं होता।
[सं. लव] ३ खेतों में फसल काटने की क्रिया।
उ०—खेत जाय'र कदै ही आंखै नहीं देख्यौ जकी लुगाई, निनांण-लावणी री मजूरी करै, भाजी वगै। —दसदोख

लावणियौ, लावणीयौ—सं. पु.—एक प्रकार के वेर विशेष।
उ०—भमरा वे फळ परहरै, निस वद लाख कठोर। की राता दीसै नहीं, ज्यूं लावणीया वोर। —अज्ञात

लावणौ—सं. पु.—मांगलिक अवसर या वहू के पीहर से आगमन पर कुटुम्वियों में वांटा जाने वाला खाद्योपहार या मिष्ठान्न।

लावणौ, लावबौ—देखो 'लाणौ, लावौ' (रू. भे.)
उ०—१ कड़ाछ' र जर चाळै, वाळटी, दुकड़िया वगै। हाथै ही लावै, हाफै ही उठावै। —दसदोख
उ०—२ अर जे पछै ई थनै पतौ नीं पड़ियौ तौ म्हनै किसौ मोल लावणौ है। —फुलवाड़ी

लावण्ण, लावण्य, लावण्यता—सं. पु. [सं. लावण्यता] १ सुन्दरता, सलोनापन।
उ०—सीख-पसा करि स्वांमिनूं, सिउं करिवा अधिकार। हूं मति-हीणी मांनिनी लावण्य नहीं लगार। —मा. कां. प्र.
२ चातुर्य, सुघड़ता।
३ लावण का धर्म या भाव, नमकीनपन।
रू. भे.—लावणह, लावणता, लावन्न, लावन्य

लावण्यवती—सं. स्त्री.—१ रथंतर कल्प के राजा पुष्पवाहन की पत्नी का नाम।
२ सुन्दर अंगों वाली स्त्री।

लावन्न, लावन्य—देखो 'लावण्य' (रू. भे.)
उ०—नमौ लख कंद्रप कोटि लावन्न, नमौ हरि मारण रूप मदन्न। वदन्न उलासित नेत्र विसाळ, मुकुट्ट किरीट अखै गळ माळ।—ह.र.

लावर—सं. पु.—क्रोध युक्त वाणी, कटु-शब्द।
उ०—टलवळइ जिम निरजळि माछिळी, वळवळइ अति अंगि वळी। झखइ लांखइ लावर आकुळउ, विरहि विव्हल वांतर वाउळउ। —सालिसूरि

लावरी—स. पु.—कुत्ता, श्वान। (शेखावटी)

लावल्द—वि. [अ.] निःसंतान।

लावल्दी—सं. स्त्री.—निःसंतानावस्था।

लावांणक—सं. पु.—एक प्राचीन स्थल विशेष जो मथुरा के पास है।

लावा—वि.—खराव, वुरा।
उ०—१ काळौ धवळ कहाय नह, धोळौ धवळ कहाय। जो काळौ धुर जूपणौ, लावा लखण न जाय। —वां. दा.
उ०—२ लावा लखणां रौ दस दस सुत देवै। उतम लखणां रौ

ग्रेको उर लेवे । सिंधुर वर वावर भूंडण कर सांधे । वामा वीजळ नै थावर गळ बांधे । —ऊ. का.

लावाळी–सं. स्त्री.—लम्बी लकड़ी का रहंट का एक उपकरण जो चक्र पर लगाकर बैलों की ओर बढाया जाता है ।

लावालूत्र–सं. स्त्री.—इधर उधर की बात करने की क्रिया, लबालीपन ।

उ०—म करे रवि सांम्हो मलमूत्र, लखण म करीजे लावालूत्र । पाप तजे तुं सकजे पूत्र, सांभाळिजे सुभ सास्त्र सूत्र । —घ. व. ग्रं.

लवारिस–सं. पु. यो. [ग्र.] १ जिसका कोई उत्तराधिकारी या वारिस नहीं हो ।

२ जिसका कोई स्वामी या मालिक न हो ।

लावारिसी–वि.—जिसका कोई अधिकारी न हो ।

लावौ–सं. पु. [सं. लवा] १ लावा नामक पक्षी ।

उ०—१ सित्तर खांन वहोतर मीरां, आइस दाखे सास अधीरां । द्रढ पण करख वाज लख दावे, देखौ लावौ आंख दिखावे । —रा. रू.

उ०—२ लावां तितर लार, हर कोई ह्राका करे । सिंहां तणी सिकार, रमणी मुसकल राजिया । —किरपारांम

[सं. लाभ] २ आनन्द, मौज ।

क्रि. प्र.—लेणौ ।

३ लाभ ।

४ वहु या पुत्री को ससुराल से लाने या ले जाने वाला व्यक्ति ।

५ ज्वालामुखी पर्वतों के मुख से विस्फोट होने पर निकलने वाला राख, पत्थर और धातु आदि मिला हुआ द्रव पदार्थ ।

१ बुरा शकुन ।

रू. भे.—लउवौ, लाहौ ।

लास–सं. स्त्री.—१ मृत शरीर, शव ।

उ०—भाग सूं अचाचूंक री कोई पाड़ोसी कनै आयौ अर राजी री अधवळी लास नै उवारी । —दसदोख

२ काष्ठ-निर्मित पायेदार एक प्रकार का उपकरण जिसमें पशुओं को चरने हेतु भूसी डाली जाती है । (मेवात)

३ दल, समूह ।

उ०—वड रावत ऊससिया तिण वेळा, एम सुणे भुज आंमळतां ललकार हुवौ भड आवे लासां, छोडे तेज तुरी छिळता । —गु. रू. वं.

३ देखो 'ल्हास' (रू. भे.)

४ देखो 'लासू' (रू. भे.)

उ०—लकड़ी थांरी रीढ, लास रोमावळ लै'रां । ढिस्सा मठ ढमढेर, ईळ जळ ऊंडा वेरा । —दसदेव

रू. भे.—ल्हास

लासक–सं. पु. [सं.] (स्त्री. लासकी) १ मोर, मयूर ।

२ मटका, घड़ा ।

३ नाचने वाला ।

४ एक प्रकार का रोग विशेष जिसमें शरीर का कोई अंग बराबर हिलता-डुलता न हो ।

लासरियेगाळौ–सं. पु.—वह युवक जिसके मूंछों के बाल न निकले हों ।

लासरीक–वि. [अ.] बिना किसी सहायक के, निःसहाय ।

उ०–तोहीन अदालत अल-कितीक, लिल्ला वजूद हैं लासरीक । मालुम मुलायजे करह माफ, आलिम हैं आलिमगीर आप । —ऊ. का.

लासलूसणौ–क्रि. वि.–पोंछने की क्रिया, पोंछ ।

लासियौ—देखो 'ल्हासियौ' (रू. भे.)

लासू–सं. पु.—फोग वृक्ष की पतली सलाख या टहनी, वृक्ष के तार ।

उ०—काती भळे दांती फेरी, लासू वन रा वाडतां । झाड़ जुगत लादां लदावे, ढिगलां टोकी काढतां । —दसदेव

रू. भे.—लास

अल्पा.,—लाऊड़ौ, लासूड़ौ, लाहुड़ौ, लाहूड़ौ

लासूड़ौ—देखो 'लासू' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—पाळौ पड़े अयोग, झड़े लासूड़ा नीचे । आरत-बुभुक्षित पसू, खोड़ में खारी बीचे । —दसदेव

लास्य–सं. पु. [सं.] एक प्रकार का नृत्य विशेष जिसमें हाव-भावों व अंगविन्यासों से प्रेम की भावनाएं प्रकट की जाती हैं ।

लास्यप्रिया–सं. स्त्री.—एक देवी जिसे लास्य नामक नृत्यविनोद प्रिय है ।

लाह–सं. पु. (व. व. लाहा) १ घुड़-दौड़ में छलांग मारकर आगे निकल जाने वाला घोड़ा ।

सं. स्त्री.—२ छलांग, कूद ।

उ०—सो घोड़ी उछळती, लाहां भरती आवे छै सो जांणे आकास नूं ही ठोकरां मारती आवे छै । —सूरे खींवें कांधळोत री वात

[सं. लाक्षा] ३ लाख, चपड़ी ।

४ देखो 'लाभ' (रू. भे.)

उ०—१ हर मत छाडे रे हिया, लिया चहै जो लाह । दिल साचे तेड़ौ दियां, नेड़ौ लिछमी नाह । —र. ज. प्र.

उ०—२ जन हरिदास हरि सुमरतां, सब घरि सदा उछाह । तब थी सो मति अब नहीं, तब तोटा अब लाह । —ह. पु. वां.

उ०—३ जोड़ी सरखि जांणि नै, ते परणे हे योवन नै लाह । विचि मांहे थई डोकरी, तिहां कीधौ हे गंधरव वीवाह । —वि. कु.

५ देखो 'ल्हास' (रू. भे.)

रू. भे.—ला

लाहउरी—देखो 'लाहोरी' (रू. भे.)

लाहण-सं. स्त्री.—एक जाति विशेष। (नैणसी)

रू. भे.—लांहण, लांहिण, लाहीण।

लाहणौ, लाहबौ—देखो 'लाभणौ, लाभवौ' (रू. भे.)

उ०—एक अमोलिक वसत का, विरळा विणजणहार। जनहरीया सो विणजसी, लाहै अत न पार। —अनुभववांणी

लाहणहार, हारौ (हारी), लाहणियौ—वि०।

लाहिओड़ौ, लाहियोड़ौ, लाह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लाहीजणौ, लाहीजवौ—भाव वा०।

लाहरणौ, लाहरबौ—देखो 'ललरणौ, ललरबौ' (रू. भे.)

उ०—इण भांतरै चांदणै में जीमण री हौंस मांणजै छै। दारू सूं मतवाळा सिरदार लाहरता बोलै छै। —रा. सा. सं.

लाहरणहार, हारौ (हारी), लाहरणियौ—वि०।

लाहरिओड़ौ, लाहरियोड़ौ, लाहरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

लाहरीजणौ, लाहरीजवौ—भाव वा०।

लाहरां—देखो 'लारै' (रू. भे.)

लाहरियोड़ौ—देखो 'ललरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लाहरियोड़ी)

लाहरै—देखो 'लारै' (रू. भे.)

उ०—तिण समें मारवणीजी पिण ढोलाजी रै लाहरै ई ज हुवा। —ढो. मा.

लाहा-सं. स्त्री.—सोलंकी क्षत्रियों की एक शाखा।

लाहानूंर-वि. [फा. लाह+अ नूर] कच्चे रेशम के चमकदार।

उ०—फरासूं नै आवासूं वीच विछायत वणावाए। लाहानूंर मुसैद अजील की चौपस्मी गिलमूं की विछायत करै। —सू. प्र.

लाहि-सं. स्त्री.—१ वनस्पति विशेष।

उ०—लाज लज्जाळू लक्ष्मणा, लूंणी लसन लवंगि। लीलावंती लुंकडी, लाहि लत्रीरी संगि। —मा. का. प्र.

२ देखो 'लाही' (रू. भे.)

उ०—कतास अतलस खासु कमसू भइरव, मिस्रू भइरव, रेसमी भइरव, लाहि महीमुंदीसाही मलमलसाही प्रमुख नांनाविध भातिनां, नांनाविध देस नां वस्त्र आंणी समस्त परिवार, नगरलोक पहिरावी, नांमस्थापना कीधी। —व. स.

लाहिण—देखो 'लाहण' (रू. भे.)

उ०—पुज्य पाल्हण पुरि पहुंता सुभ दिनइ, संघ सकल उच्छाहो जी संघ पाटण नउ गुरु वांदी वलिउ, लाहिण करिल्यइ लाहो जी। —ऐ. जै. का. सं.

लाहियोड़ौ—देखो 'लाभियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लाहियोड़ी)

लाहियौ—देखो 'ल्हासियौ' (रू. भे.)

लाही-सं. स्त्री. [सं. लाक्षा] १ लाख, चपड़ी।

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

रू. भे.—लाई, लाहि

लाहीण—देखो 'लाहण' (रू. भे.)

लाहु—देखो 'लाभ' (रू. भे.)

उ०—१ सुख अपूरव भोगवइ, नळ दवदंति नारि। इच्छा पहुचाउइ मन तणी, लीह लाहु संसारि। —नळदवदंती रास

उ०—२ उस्ण जळ मज्जन की कीजीइ, तांवूलन लाहु लीजीइ। एहवु सीआळु मझ संभरइ, नळजी वाहळु नवि वीसरइ। —नळदवदंती रास

उ०—३ रत्नजटित तिलक चुवीस, आभरणे पूजी मूर्ति चुवीस बिहु भेदे तेणइ पूजा किद्ध, धरम प्रीछियांनु लाहु लिद्ध। —नळदवदंती रास

लाहुड़ौ, लाहूड़ौ—१ देखो 'लासू' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'लघु' (रू. भे.)

लाहोरणी-सं. स्त्री.—लाहोर में निर्मित एक प्रकार की वंदूक।

उ०—घुणियासी घणियां घरी, भुज बळ पाळ भड़ांह। ले लळकां लाहोरणी, छूटै लांवछड़ां। —पा. प्र.

लाहोरी-सं. पु.—१ शिकारी कुत्ता विशेष।

उ०—सौगंध लीध सिकारियां, नह लाहोरी आय। थांरो सेको एक वस, लूआं प्रांण सुकाय। —लू

२ लाहोर में निर्मित एक प्रकार की वंदूक।

वि.—लाहोर सम्वन्धी, लाहोर का।

उ०—गुजराती कसमीरी कसूरी मारवाड़ी दखणी मिरजाई भटनेरी लाहोरी हजारमेखी घणी रंग रंग री वनात मुखमल कळावूनी सोनै रूपै रा वणिया जीणं हजार कीजै छै। —रा. सा. सं.

रू. भे.—लाहउरी

लाहोरीनमक-सं. पु. यौ.—सैंधा नमक।

लाहौ—देखो १ 'लाभ' (रू. भे.)

उ०—देई न दीन्ही वांटि, आदमगीरी अकलि कुं। लाहा छेवा गांठि, हरीया ऐसे आप सिर। —अनुभववांणी

२ देखो 'लावौ' (रू. भे.)

लाहोल—सं. स्त्री. [अ.] घृणा एवं उपेक्षा सूचक शब्द या वाक्य।

लिंग—सं. पु. [सं. लिंगम् ३] १ चिन्ह, निशान।

२ न्याय-शास्त्र में वह वस्तु जिसके माध्यम से किसी प्रकार की घटना या उसके तथ्यों का अनुमान हो।

वि. वि.—न्याय-शास्त्र में ये चार प्रकार के कहे गये हैं—(क) संबद्ध (ख) व्यस्त (ग) सहवर्ती (घ) विपरीत

३ प्रमाण, साक्षी।

४ मीमांसा के अनुसार लिंग निर्णय के छ: लक्षण:— उपक्रम, उपसंहार, अभ्यास, अपूर्वता, अर्थवाद उपपत्ति।

५ शिव की एक विशेष प्रकार की मूर्ति जो पुरुष की जननेन्द्रिय के रूप में होती है।

उ०—लिंग कों चढावै लाडू भाटै को लगावै भोग, भड़वै पुजावै भग स्वामि सेल सोधां की। —ऊ. का.

६ सांख्य के मतानुसार वह मूल प्रकृति जिसमें सारी विकृत्तिया फिर से लीन होती हैं।

७ जननेन्द्रिय, शिश्न। (डिं. को.)

उ०—करवाय मोल गजराजको, लिंग हाथ मांहे लियो। सुग्व-सींग कमध करतब समै, किसो कांम आंछो कियो। —अग्यात

८ व्याकरण में शब्दों का वह वर्गीकरण जिससे यह ज्ञात किया जाता है कि कोई संज्ञा या सर्वनाम पुरुष जाति का वाचक है या स्त्री जाति का।

वि. वि.— संस्कृत, फारसी, मराठी, अंग्रेजी आदि भाषाओं में तीन प्रकार के लिंग होते हैं— (क) पुल्लिंग (ख) स्त्रीलिंग (ग) नपुंसक लिंग। इसके अतिरिक्त हिन्दी, उर्दू आदि कई भाषाओं में दो ही प्रकार के लिंग होते हैं—स्त्री लिंग और पुलिंग।

९ देवता की मूर्ति या प्रतिमा।

१० वेदान्त में आत्मा का सूक्ष्म रूप।

११ लिंगायत लोगों द्वारा किसी आवरण में आवेष्टित करके गले में लटकाई जाने वाली प्रतिमा या मूर्ति।

लिंगटी—देखो 'लींगटी' (रू. भे.)

लिंगतियो—देखो 'रिंगतियो, (रू. भे.)

उ०—"ढक ढक भायला वारणो! क्यों माथो लगावै है।" "हांजी, साळा लिंगतिया खेतरपाळ है।" —बरसगांठ

लिंगदेह—सं. स्त्री [सं.] अध्यात्म के अनुसार स्थूल शरीर के नष्ट होने पर मिलने वाला वह अन्नकोश रहित अति सूक्ष्म शरीर जिसमें ज्ञानेन्द्रियां व कर्मेन्द्रियां विद्यमान रहती हैं।

लिंगनास—सं. पु. [सं.] नेत्र का एक रोग विशेष। —(अमरत)

लिंग-पुरांण—सं. स्त्री. [सं.] १८ पुराणों में से एक पुराण, जिसमें शिव एवं उसके लिंग पूजा के माहात्म्य का उल्लेख है।

लिंग पूजा—सं. स्त्री.—शिव की पिंडी की पूजा।

लिंगसरीर—देखो 'लिंगदेह'

लिंगायत—सं. पु.—१ एक शैव सम्प्रदाय।

२ शैव सम्प्रदाय का अनुयायी।

लिंगूर—देखो 'लंगूर' (रू. भे.)

लिंगेंद्रिय, लिंगेंद्री—स. पु. [सं. लिंगेन्द्रिय] १ जननेन्द्रिय, शिश्न। (अमरत)

लिंगेटिंग—देखो 'लगेटगे' (रू. भे.)

लिंघो—स. पु.—वस्त्र विशेष।

उ०—कंचू नीलक को कीयो, उपरि चीर उढाइ। लिंघो लुंगी भाति को, मुंदर नें वहोत सुहाय। —व. स.

लिंडवा—सं. पु.—एक नदी जो अलवर रियासत के प्रतापगढ व अजवगढ के नालों से निकल कर रेवाड़ी से आगे तक चली जाती है। (वीर विनोद)

लिंपणो, लिंपबो—देखो 'लीपणो, लीपबो' (रू. भे.)

उ०—लिंपइ ताव निकंदनी, चंदनि चंदनी देहु। निज निज नाथ संभाग्यि, नारिय नवलउ नेहु। —जयसेखर सूरि

लिंपणहार, हारो (हारी), लिंपणियो—वि०।

लिंपिओड़ो, लिंपियोड़ो, लिंप्योड़ो—भू० का० कृ०।

लिंपीजणो, लिंपीजबो—कर्म वा०।

लिंपियोड़ो—देखो 'लीपियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लिंपियोड़ी)

लि—सं. स्त्री.—१ दासी। (एका.)

२ विछी।

३ सखी, सहेली।

स. पु.—४ सर्प, साँप।

५ चूहा।

लिअण—वि.—देखो 'लियण' (रू. भे.)

उ०—लंक लिअण अण दन दीअण, वरण धण मह महण। नंद कुंअर अर निडर नर, सुममरि हरियै लगै। —पि. प्र.

लिए—अव्य.—व्याकरण के अन्तर्गत सम्प्रदान कारक में प्रयुक्त होने वाला शब्द, हेतु, निमित्त।

लिकणी—सं. स्त्री.—१ कुण्डी के आकार का पत्थर का बना वह पात्र जिसमें घर के बर्त्तन साफ करके पानी व जूठन डाली जाती है और जिसे कुत्ते आदि पशु चाटते हैं।

२ लिक लिक करने की क्रिया या भाव।

३ कुत्ता आदि के जलपान करते समय उत्पन्न होने वाली ध्वनि विशेष।

लिकणौ, लिकबौ–क्रि. स.—१ कुत्ता, सियार आदि का जिह्वा से जलपान करना।

२ देखो 'लिखणौ, लिखबौ' (रू. भे.)

लिकणहार, हारौ (हारी), लिकणियौ—वि.।

लिकिश्रोड़ौ, लिकियोड़ौ, लिक्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिकीजणौ, लिकीजबौ—भाव वा.।

लिकाणौ, लिकाबौ—१ कुत्ते, बिल्ली आदि से जूठा करवा देना।

२ देखो 'लिखाणौ, लिखावौ' (रू. भे.)

लिकाणहार, हारौ (हारी), लिकाणियौ—वि.।

लिकायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लिकावीजणौ, लिकावीजबौ—भाव वा.।

लिकावणौ, लिकावबौ—रू. भे.।

लिकायोड़ौ—१ कुत्ते बिल्ली आदि से जूठा करवाया हुआ।

२ देखो 'लिखायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिकायोड़ी)

लिकावणौ, लिकावबौ—१ देखो 'लिकाणौ, लिकावौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लिखाणौ, लिखावौ' (रू. भे.)

लिकावणहार, हारौ (हारी), लिकाकवणियौ—वि.।

लिकाविश्रोड़ौ, लिकावियोड़ौ, लिकाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिकावीजणौ, लिकावीजबौ—कर्म वा.।

लिकावियोड़ौ—१ देखो 'लिकायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लिखायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिकावियोड़ी)

लिकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ कुत्तें, बिल्ली आदि का चाटा हुआ।

२ देखो 'लिखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिकियोड़ी)

लिकलिक—देखो 'लकलक' (रू. भे.)

उ०—१ रांडां में बुवारियां रा लोतर ई कोनीं। दो महींना सूं लिकलिक करूं के म्हारा डील में आतस घणी पांच सेर कड़कड़ खांड पांणीं में रळाय नै पीवूं तौ कीं ठंडक वापरै। —फुलवाड़ी

उ०—२ अेकर आं दोनूं धणियां नै राजाजी रै हवालै कर दां। पछै राजाजी जांणै अर सेठजी जांणै। आपां बीच में क्यूं लिकलिक करां। —फुलवाड़ी

लिक्खणौ, लिक्खबौ—देखो 'लिखणौ, लिखबौ' (रू. भे.)

लिक्खणहार, हारौ (हारी), लिक्खणियौ—वि.।

लिक्खिश्रोड़ौ, लिक्खियोड़ौ, लिक्ख्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिक्खीजणौ, लिक्खीजबौ—कर्म वा.।

लिक्खाडणौ, लिक्खाडबौ—देखो 'लिखाणौ लिखावौ' (रू. भे.)

उ०—राजा कागळ मेलियौ, लिक्खाडै चड चोट। जिम जांणै तिम मारलै कुंअर कर्णगिर कोट। —गु. रू. बं.।

लिक्खाडणहार, हारौ (हारी), लिक्खाडणियौ—वि.।

लिक्खाडिश्रोड़ौ, लिक्खाडियोड़ौ, लिक्खाड्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिक्खाडीजणौ, लिक्खाडीजबौ—कर्म वा.।

लिक्खाडियोड़ौ—देखो 'लिखायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिक्खाडियोड़ी)

लिक्खाणौ, लिक्खाबौ—देखो 'लिखाणौ लिखावौ' (रू. भे.)

लिक्खाणहार, हारौ (हारी), लिक्खाणियौ—वि.।

लिक्खायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लिक्खाईजणौ, लिक्खाईजबौ—कर्म वा.।

लिक्खायोड़ौ—देखो 'लिखायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिक्खायोड़ी)

लिक्खावणौ, लिक्खावबौ—देखो 'लिखाणौ, लिखावौ' (रू. भे.)

लिक्खावणहार, हारौ (हारी), लिक्खावणियौ—वि.।

लिक्खाविश्रोड़ौ, लिक्खावियोड़ौ, लिक्खाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिक्खावीजणौ, लिक्खावीजबौ—कर्म वा.।

लिक्खावियोड़ौ—देखो 'लिखायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिक्खावियोड़ी)

लिक्खियोड़ौ—देखो 'लिखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिक्खियोड़ी)

लिक्ख—देखो 'लीख' (रू. भे.)

लिखण—देखो 'लिखत' (रू. भे.)

लिखणौ–सं. पु.—लिखने की क्रिया या भाव।

उ०—पछै हीरांजी हेमजी स्वांमी नें कह्यौ: आप लिखणौ कांइ करौ। उदैरांम जी स्वांमी नै पांणी पावौ। —भि. द्र.

लिखणौ, लिखबौ–क्रि. स.—१ किसी तिक्ष्ण या नुकीली चीज से कुछ अंकित करना।

२ कलम, पेन्सिल आदि के माध्यम से कागज पर अपने विचार, सिद्धांत, लेख आदि को वर्णाक्षरों द्वारा अंकित करना, लिपिबद्ध करना।

उ०—मांणस हवां त मुख चवां, म्हैं छा कूंभड़ियांह। प्रिउ संदेसउ पाठविसु, लिखि दै पंखड़ियांह। —ढो. मा.

३ कूंची, ब्रुश आदि से चित्र बनाना।

उ०—लारोवरि अस चित्रांम कि लिखिया, निहखरता नरवरै नर। माखण चोरी न हुवै माहव, महियारी न हुवै महर। —वेलि

४ किसी साहित्यिक कृति की रचना करना, साहित्य-सृजन करना।

ज्यूं—वात लिखणी, गीत लिखणौ

क्रि. अ. ५ किसी कारण एवं परिणाम के घटित होने पर संयोग की प्रतीति होना ।
ज्यूं—भाग में लिखा होना, प्रारब्ध में होना ।
उ०—धारै मन वैठूं घोळै हर, तापै सूनां ढूंढ तठै। मोटा आखर कवण मेटवै, कुटी लिखी सो महल कठै। —ओपो आढो
लिखणहार, हारौ (हारी), लिखणियौ—वि० ।
लिखिओड़ौ, लिखियोड़ौ, लिख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लखीजणौ, लिखीजवौ—कर्म वा० ।
लखणौ, लखवौ, लिक्खणौ, लिक्खवौ, लिहणौ, लिहवौ, लीखणौ, लीखबौ—रू० भे० ।

लिखत-सं. पु.—१ लिखने की क्रिया या भाव ।
२ लिखा हुआ, लिपि वद्ध ।
३ नियम ।
उ०—जद स्वांमी जी कह्यौ थांरा नियम टोळा में इसौ लिखत है—इकीस टोळां री थांमें आवै तौ दिक्षा देइ मांहे लेणो । —भि. द्र.
४ कानूनी रूप से प्रमाणित माना जाने वाला दस्तावेज, लिखा हुआ प्रमाण-पत्र या सनद ।
५ भाग्य का लेख ।
रू. भे.—लिखण, लीखत ।

लिखमण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)
उ०—१ चरस करत लिखमण चमर, सरस अगर सांमीर । इम सियजुत जन-मंछ उर, वसौ सदा रघुवीर । —र. रू.
उ०—२ वैद पतूसतूसू लंका वस, सो आवै धारक सुरत। जिकौ वतावै जड़ी संजीवन, तौ लिखमण ऊठै तुरत । —र. रू.

लिखमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.) (ह. नां मा.)
उ०—प्रभणे पितमात पूत मत पांतरि, सुर नर नाग करै जसु सेव । लिखमी समी रुकमणी लाडी, वासुदेव सम सुत वसुदेव । —वेलि

लिखमीनाथ—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)
उ०—सरव कांम नांमै-लेखै री मुदार वेटै ऊपर और देवीदास रै ठाकुरां रै दरसण री प्रतिग्या सो सहर सूं वाहिर अधकोस देहरी तठै स्री लिखमीनाथ जी विराजै सो देवीदास नित दरसण करवानै जावै । —पलक दरियाव री बात

लखमीनारायण—देखो 'लक्ष्मीनारायण'

लिखमीनाह—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)
उ०—ग्राह जूंण तज ग्राह, देह दिव्य पाई तुरत । निरखै लिखमी नाह, परसै पग पावन हुवौ । —गज उद्धार

लिखमीबर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)
उ०—अकळ तुहिज कै कोइ अवर, बोहोनांमी बूझव्व । लिखमीबर लेखै नहीं, समवड प्रांणी सव्व । —ह. र.

लिखमीभरतार—देखो 'लक्ष्मीभरतार' (रू. भे.)

लिखमीवंत—देखो 'लक्ष्मीवंत' (रू. भे.)

लिखमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)
उ०—लिखमीवर आयां सुर लाधै, वेळां चढै अजोबळ बाधै नरवर प्रथी खवर सुज पाया, चगथो आवै राह चलाया । —रा. रू.

लिखम्मी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)
उ०—लिखम्मी पग्ग धरै उर लेह, रहै सिघ वुद्ध पगां तळ वेह । नमै पग छांह गोतम्म नारद्द, वंदै प्रग गरग कपिल्ल वेहद्द । —ह. र.

लिखवाई—देखो 'लिखाई' (रू. भे.)

लिखांतर—देखो 'लेखांतर' (रू. भे.)

लिखाई-सं. स्त्री.—१ लिखने की क्रिया या भाव ।
२ लिखने का तरीका, ढंग, लिखावट ।
३ लिखने की मजदूरी
४ चित्र अंकित करने की क्रिया या भाव ।
रू. भे. लिखवाई

लिखाड़णौ, लिखाड़वौ—देखो 'लिखाणौ, लिखावौ' (रू. भे.)
लिखाड़णहार, हारौ (हारी), लिखाड़णियौ—वि० ।
लिखाड़िओड़ौ, लिखाड़ियोड़ौ, लिखाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लिखाड़ीजणौ, लिखाड़ीजवौ—कर्म वा० ।

लिखाड़ियोड़ौ—देखो 'लिखायोड़ौ' (रू.)
(स्त्री. लिखाड़ियोड़ी)

लिखाणौ, लिखाबौ-प्रे. रू.—१ किसी तीक्ष्ण या नुकीली चीज-से कुछ अंकित कराना ।
२ कलम, पेंन्सिल आदि के माध्यम से वर्णाक्षर अंकित कराना, लिपिवद्ध कराना ।
३ कूंची, ब्रुश आदि से चित्र वनवाना ।
४ किसी साहित्यिक कृति की रचना कराना, साहित्य सृजन कराना ।
लिखाणहार, हारौ (हारी), लिखाणियौ—वि. ।
लिखायोड़ौ—भू. का. कृ. ।
लिखाईजणौ, लिलाईजवौ—कर्म वा. ।
लिक्खाड़णौ, लिक्खाड़बौ, लिखाड़णौ, लिखाड़वौ, लिखावणौ, लिखाववौ, लिहाडणौ, लिहाडवौ, लिहाणौ, लिहाबौ, लिहावणौ, लिहाववौ—रू. भे. ।

लिखापढी-सं. स्त्री. —१ लिखने का कार्य, लिखाई ।

२ पत्र-व्यवहार, पत्राचार ।
३ लिखित संधि, शर्तनामा या अनुबन्धन ।
क्रि. प्र.—कराणी, व्हैणी, होणी

लिखावट, लिखावटि, लिखावटी—देखो 'लिखावट' (रू. भे.)

उ०—पांती चंद्रसेणी भूप देणी धार लीनी । पांतीवार तीनां की लिखावटी मांड दीनी । —शि. वं.

लिखायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ किसी तीक्ष्ण या नुकीली वस्तु से अंकित कराया हुआ. २ कलम पेन्सिल आदि से वर्णाक्षर अंकित कराया हुआ. ३ कूंची ब्रुश आदि से चित्र बनाया हुआ. ४ साहित्य-सृजन कराया हुआ ।
(स्त्री. लिखायोड़ी)

लिखारौ—वि.—लिखने वाला, लेखक ।

लिखावट—सं. स्त्री.—लेखन प्रणाली, लिखने का तरीका, ढंग ।
२ किसी के हाथ से लिखे अक्षर, लिपि ।
३ लिखे हुए वाक्यों का समूह, लेख ।
उ०—लिखै है अेक अ्रित-संजीवणी दवा री नुसखौ, प्रांण भर दै जिसौ सावर-मंतर । ई लिखावट,माथै ई तौ सगळी दारमदार है । —वरसगांठ
रू. भे.—लखावट, लिखावट, लिखावटि, लिखावटी

लिखावणी—सं स्त्री.—लिखाने की मजदूरी, लिखाई ।

लिखावणौ, लिखाववौ—देखो 'लिखाणौ, लिखावौ' (रू. भे.)

उ०—पण उण में अेक मोटी खोड़ आ ही के नीं तौ वौ किणी आसांमी सूं खातौ लिखावतौ अर नीं किणी नै खातौ लिखतौ । —फुलवाड़ी

लिखावणहार, हारौ (हारी), लिखावणियौ—वि. ।
लिखाविप्रोड़ौ, लिखावियोड़ौ, लिखाव्योड़ौ—भू. का. कृ. ।
लिखावीजणौ, लिखावीजबौ—कर्म वा. ।

लिखावियोड़ौ—देखो 'लिखायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लिखावियोड़ी)

लिखावत, लिखावतू—सं. पु.—बादशाह एवं महाराजाओं द्वारा अपने सम्मानित व्यक्तियों के पत्र में प्रयोग किया जाने वाला शब्द ।

उ०—पछै महेसदासजी जाळोर पायी, गढपती हुवा जिणसू लिखावट आगै न रही । प्रथीराज रै मनसब घणौ ही जिण सूं वचनात् नही नै लिखावतू लिखीजतौ । —वां. दा. ख्यात

लिखित—भू का. कृ.—१ लिखा हुआ, लिपि वद्ध ।
२ किसी प्रमाण या सनद के रूप में लिखा हुआ ।
सं. पु.—१ एक मुनि, जो जैगीष्व्य के दो पुत्रों में से एक था ।
२ चंपकापुरी के हंसध्वज राजा का एक दुष्ट कर्मा पुरोहित ।

लिखितकला—सं. स्त्री.—७२ कलाओं में से एक ।

लिखिमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

लिखमीवंत—देखो 'लक्ष्मीवंत' (रू. भे.)

उ०—लिखमीवंत खेतसी तणउ, अखइराज सोनिगिरउ भणउं । ब्राह्मण तणा कराव्या ज्याग, सवा लाख जिणि दीधा त्याग । —कां. दे. प्र.

लिखू—सं. स्त्री.—सप्तकोशी नदी की एक सहायक नदी का नाम ।

लिग—१ किंचित, थोड़ा ।

उ०—जनहरीया नहीं भाजिसी, संदेसौ डिगमिग । पीव मिळै परमातमा, अनेसौ नही लिग । —अनुभववांणी

लिगतर—सं. पु—फटा पुराना जूता ।

उ०—थोड़ी ताळ पछै फाटोड़ा लिगतरां रा फटकारा वजावतौ अेक डोकरौ म्हारै पाखती आयनै ऊभग्यौ । —फुलवाड़ी

रू. भे.—लगतर, लिग्तर ।
अल्पा.—लपतरौ, लिगतरौ, लिग्तरौ, लीतरौ ।

लिगतरौ—देखो 'लिगतर' (अल्पा. रू. भे)

लिगतौ—सं. पु. [स्त्री. लिगती] कुत्ता, श्वान ।
वि.—पीछै पड़ने वाला पिछलग्घू ।

उ०—तनै ठा कोनी, अै लिगता है साळा, इयां नै घालसां तौ बीजा चार ओर आय जासी, इयै वास्तै टैम-बे-टैम को हिळावां नी । —वरसगांठ

लिगदौ—सं. पु. (स्त्री. लिगदी) १ दुर्वल, अशक्त ।
२ गिले चूर्ण का लौंदा ।

लिगन, लिगन्न—१ देखो 'लग्न' (रू. भे.)

उ०—लिगन्ना नारेळ लेर देर सावौ नकौ लीधौ, सजाये ठीकांणा वेहूं व्याव का सांमांन । हंगामा होकवा राग रंग रा हमेस हुवै । अठी जांन वाळी सोभा वणावै आजांन । —वादरदांन दधवाड़ियौ

२ देखो 'लगन' (रू. भे.)

लिगरियौ—१ देखो 'लगरचौ' (रू. भे.)
२ देखो 'लिगरू' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—ताहरां ईयै कही, 'साह तौ लिगरू रावळ जी रा खांनैजाद छै सुकुनां री ईहां कही सु इहां री मोय हंती पण ईहां भरीयै दरवार कही, इतरी इणां मांहै चूक छै । —वरसै तिलोकसी री वात

२ एक प्रकार का वरसात में होना 'वाला पौधा या घास विशेष ।
अल्पा.,—लिगारियौ, लिगरचौ

लिगलिगाटिया-सं. पु.—१ विलविलाने की क्रिया।

उ०—माथै खरोटिया, जकां में थोड़ो सांमांन' र पूर-पल्लो मारग वैता-प्रादमियां नै लिगलिगाटिया करता कैता हा—"वावूजी! आटो, अेकांनै रो आटो। भूखा हां दया करो।" —वरसगांठ

२ वक-झक।

लिगार, लिगारइ, लिगारि, लिगारी, लिगारै—देखो 'लगार' (रू. भे.)

उ०—१ 'मुकन' सुतन वळ मडम्रत, पड़ी न खड लिगार। 'रेणायर' 'रामंग' रू, सरू हुवो गह सार। —रा. रू.

उ०—२ पाखलि करया काठगढ खाई, नहीय लिगारइ माग। घोडा हाथी रहइ पाखरया, किम लहेसइ लाग। —कां. दे. प्र.

उ०—३ हम सोई सत्ता सत्ता सोई हम हैं, ज्यूं अग्नि उस्ण इक सारी। सुखरांम आपनां आप अनंता, नहिं द्वैताद्वैत लिगारी —सुखरांमजी महाराज

उ०—४ सु राव छोड़ करण पधारण लागा। तरै कूतरै कांन फड़फड़ाया। तरै राव हेटा बैठा। लिगारै वळै उठीयां तरै वळै कूतरै कांन फड़फड़ाया। —राव लाखै री वात

लिगीक, लिगीयर—देखो 'लगार' (रू. भे.)

लिग्तर—देखो 'लिगतर' (रू. भे.)

लिग्तरो—देखो 'लिगतर' (अल्पा ,रू. भे.)

उ०—वूटी री नांव घोखतो घोखतो चोथोड़ो वेटो ई ढळग्यो कोई आध घड़ी रै उपरांत नाड़ देखतो देखतो वेदराज डोकरिया रा माथा में आवेस लिग्तरा री जंतराई। —फुलवाड़ी

लिड़की-सं. स्त्री.—उद्दण्ड गाय के गले या सींगों से हर समय वंधी रहने वाली रस्सी।

लिड़ाणो, लिड़ावो-क्रि. स.—१ वांधना या कसना।

उ०—सो किण भांति रा वाकरा जिके कड़कती नळीरा, भाहरै साद रा, मादळिए पेट रा, माडि वोर, काचर रा वरड़णहार, घणं कूंमट नै वावली री टीसीआं रा झाड़णहार, सिखिरि रा मालणहार, फिरणीआै रा वैसणहार, वालखसी वाकड़ा विसे वोकड़ा, खोरडे खोलहरी रा चारीओडा, सौ ऊंठा विसे वोकड़ा मसकां री भांति सों लिड़ाइ नै घातिआ छै। —रा. सा. सं.

२ लंबछड़ से दग्ध करना, दागना।

लिचणी-सं. स्त्री.—१ घुटने के पीछे का भाग जहाँ से पैर मोड़ खाता या झुकता है।

लिचपिच—देखो 'लचपच' (रू. भे.)

उ०—ल्यावणवाळां नै लिचपिच लापसी जी, काटणवाळां नै गुदळी खीर ओ क वरसै वरसोदण होळी पावणी जी। —लो. गी.

लिचपिचो—देखो 'लचपचो' (रू. भे.)

लिचापिच्च—१ चिन्ता, उचाट।

उ०—लिचापिच्च लागी घड़ीताल भाजै, अहो कोई राखै अठै अम्ह काजै। इसै संकटै जे जपै जैनराजै, सही पार पांमै तिके सुक्ख साजै। —ध. व. ग्रं.

लिच्छमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

लिच्छमीनाथ—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

लिच्छमीनारायण—देखो 'लक्ष्मीनारायण' (रू. भे.)

लिच्छमीनाह—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

लिच्छमीपति – देखो 'लक्ष्मीपति' (रू. भे.)

लिच्छमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

लिच्छवी-सं. पु.—१ एक ऐतिहासिक राजवंश जिसका नेपाल, कोशल और मगध में राज्य था।

२ देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

लिछपचती-वि.—कोमल, मुलायम।

लिछमण, लिछमन—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०—लिछमण वोलणा एक वार, म्हारी सिन्या का सिरदार। —गी. रां.

लिछमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—१ म्हारै आंगण आंम, पिछोकड़ै मरवो यो घर सदा ए सुवावणो। तूं तो चाल लिछमी जै घर चालां, जै घर रळी अे वधांमणा। —लो. गी.

उ०—२ मोटियार हाथां पर थुकावतो रैतो, सो: वास दातारी रा गुण गावतो कैतो—लुगाई के है, लिछमी है। —दसदोख

उ०—३ एक दिन लिछमी सेठ नै दरसण दिया। कह्यो सात पीढियां सूं इण घर रो ठायो नीं छोडियो। —फुलवाड़ी

लिछमीकंत, लिछमीकांत—देखो 'लक्ष्मीकांत' (रू. भे.)

लिछमीनाथ, लिछमीनाह—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

उ०—हर मत छोडै रे हिया, लिया चहै जो लाह। दिल सांचै तेड़ो दियां, नेड़ो लिछमीनाह। —र- ज. प्र.

लिछमीपति—देखो 'लक्ष्मीपति' (रू. भे.)

उ०—मामूली मजूरी पर कांम कर' र जिण मकांन में एक मजूर रातवासो लैणो चावै है। उणनै घेरयां ऊभी ही लिछमीपतियां री टोळी अर खनै ऊभी ही वांरी आपरी पुळिस। —रातवासो

लिछमीवर, लिछमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—वरणीतळ व्याकुळ छेलो सिर धुणियो, सरणागत वच्छळ हेलो नह सुणियो। लिछमीवर छांनूं कांनूं लै लीनूं, दीनन-बंधु हुय दीनन दुख दीनूं। —ऊ. का.

उ०—२ भरै न जम नै भोग, डरै न किण सूं देखजो। लिछमीवर रा लोग, मरै न जलमें मोतिया। —रायसिंह सांदू

लिछमीस—देखो 'लक्ष्मीस' (रू. भे.)

उ०—लिछमीस रांम अणभंग लखो, परमेस पाळ जन दीन पखो। हर पाप ताप दुख-ताप हरी, तिण पांय रेण रिख नार तरी। —र. ज. प्र.

लिछम्मी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

लिछम्मीकंत, लिछम्मीकांत—देखो 'लक्ष्मीकांत' (रू. भे.)

उ०—ज्वाळानळ जाळण काळ-जवन्न, कियो मुचकंद हुकम्म किसन्न। वांणासुर छेद भुजा वळवंत, कीधो वोह चीर लिछम्मीकंत। —ह. र.

लिछम्मीनाथ, लिछम्मीनाह—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

उ०—नमो वपु दीरघ वांमन वेख, भिखंग पुरंदर मांजण भेख। नमो नरसिंघ लिछम्मीनाह, विसंभर विट्ठल आदि वराह। —ह. र.

लिटणो, लिटवो—क्रि. अ.—लोट-पोट होना, लुटना।

उ०—ऊटड़ा उगाळी सारे, झोक लिटै फिर फिर चरै। इण घिटाळ घसकै घणेरा, गोळ टोळ मीगण करै। —दसदेव

लिटणहार, हारो (हारी), लिटणियो—वि.।

लिटिओड़ो, लिटियोड़ो, लिट्योड़ो—भू. का. कृ.।

लिटीजणो, लिटीजवो—भाव वा.।

लिटियोड़ो—भू. का. कृ.—१ लोटपोट हुवा हुआ, २ लुटा हुआ.

(स्त्री. लिटियोड़ी)

लिता—देखो 'लता' (रू. भे.)

उ०—कहियो मैं के कहूं किसूं अंघो तें कहियो। लिता पांन धनंख रांम, छवकाळो लहियो। —र. ज. प्र.

लित्त—सं. पु.—तुरन्त की लिपी हुई जमीन लांघकर आहार आदि लेने का दोष। (जैन)

लिद्ध—देखो 'लद्ध' (रू. भे.)

उ०—इसीय वाच गयणह पडी, तउ मइं लिद्ध कुमारि, सत्यवती नांमि हुसिए संतण घर नारि। —सालिभद्र सूरि

लिप—सं. स्त्री.—१ प्लीहा, तिल्ली।

२ देखो 'लप' (रू. भे.)

लिपटणो, लिपटवो—क्रि. अ.—देखो 'लपटणो, लपटवो' (रू. भे.)

उ०—लोहा लिपट्या काठ नूं, घूम रह्या जळ मांय। वडा डूबण नांहि दै, जांकी पकड़ी बांय। —अग्यात

लिपटणहार, हारो (हारी), लिपटणियो—वि०।

लिपटिओड़ो, लिपटियोड़ो, लिपट्योड़ो—भू० का० कृ०।

लिपटीजणो, लिपटीजवो—भाव वा०।

लिपटाड़णो, लिपटाड़वो—देखो 'लपटाणो, लपटावो' (रू. भे.)

लिपटाड़णहार, हारो (हारी), लिपटाड़णियो—वि.।

लिपटाड़िओड़ो, लिपटाड़ियोड़ो, लिपटाड़्योड़ो—भू. का. कृ.।

लिपटाड़ीजणो, लिपटाड़ीजवो—कर्म वा.।

लिपटाड़ियोड़ो—१ देखो 'लिपटायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपटाड़ियोड़ी)

लिपटाणो, लिपटावो—देखो 'लपटाणो, लपटावो' (रू. भे.)

उ०—१ पल्लव फूल वसन आभूसण, इतर पराग लगायो। वेल्यां मन सजधज अलवेल्यां, पति तरु सूं लिपटायो। —लो. गी.

उ०—२ हल्दी तो पीठी म्हारै अंग लिपटाई, मंहदी सूं राच्या म्हांरा हाथ। छपन कोड़ जादू जान पधारया, दूल्हो स्रीनंदकवार। —मीरां

लिपटाणहार, हारो (हारी), लिपटाणियो—वि०।

लिपटायोड़ो—भू० का० कृ०।

लिपटाईजणो, लिपटाईजवो—कर्म वा०।

लिपटायोड़ो—देखो 'लपटायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपटायोड़ी)

लिपटावणो, लिपटाववो—देखो 'लपटाणो, लपटावो' (रू. भे.)

लिपटावणहार, हारो (हारी), लिपटावणियो—वि०।

लिपटाविओड़ो, लिपटावियोड़ो, लिपटाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

लिपटावीजणो, लिपटावीजवो—कर्म वा०।

लिपटावियोड़ो—देखो 'लपटायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपटावियोड़ी)

लिपटियोड़ो—देखो 'लपटियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपटियोड़ी)

लिपणो, लिपवो—क्रि. अ.—किसी वस्तु का किसी तरल पदार्थ से लिपना या पुतना।

उ०—सील संतोस सदा रहै सीतल, आनंद रूप रहै जांह तांही। पेम प्रवाह भयै तन भीतरि, और विकार लिपै नहीं कांही। —अनुभववांणी

लिपणहार, हारो (हारी), लिपणियो—वि.।

लिपओड़ो, लिपयोड़ो, लिप्योड़ो—भू. का. कृ.।

लिपीजणो, लिपीजवो—भाव वा.।

लिपत—देखो 'लिप्त' (रू. भे.)

उ०—पसरे तीनों लोक में, लिपत नहीं धोखै। सो फल लागो सहज में, सुंदर सब लोकै। —दादूवांणी

लिपरको—सं. पु. [अनु.] १ भय या चिंता के कारण विशिष्ट अंगों में स्फुरण होने की क्रिया। लिप-लिप होने की क्रिया।

उ०—ओथि कुंवर जी पधारै हुंता चढिया तठै सुरतांण, प्रिथीराज,

श्रमरो, गोपाळदास श्रै ब्यारं दीठा श्रर मदनै री गांडि फाटि श्रर लिपरका करणै लागी। —द. वि.

२ देखो 'लपरको' (रू. भे.)

लिपळी-सं स्त्री.—१ लार, थूक।

२ टक्कै धेले पर संभोग कराने वाली, व्यभिचारिणी।

उ०—सरती मदनांमी चाहत नहीं चोरी, डरती बदनांमी गावत नहि डोरी। चित भव मांडां री चरचा नहि चावै। लिपळी रांडां री श्ररचा नहि लावै। —ऊ. का.

लिपळौ-वि. (स्त्री. लिपळी) १ जो कभी किसी बात की ओर कभी अन्य बात की तरफ झुकने वाला, अस्थिर दिमाग वाला।

उ०—दुनियां दातारां जूझारां देवै। लिपळा लोकां नै लेखै कुण लेवै। —ऊ. का.

२ अविवेकी, मूर्ख।

३ व्यभिचारी, जार।

लिपवाड़णौ, लिपवाड़बौ—देखो 'लिपाणौ, लिपावौ' (रू. भे.)

लिपवाड़णहार, हारौ (हारी), लिपवाड़णियौ—वि.।

लिपवाड़िश्रोड़ौ, लिपवाड़ियोड़ौ, लिपवाड़्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिपवाड़ीजणौ, लिपवाड़ीजबौ—कर्म वा.।

लिपवाड़ीयोडौ—देखो 'लिपायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपवाड़ियोड़ी)

लिपवाणौ, लिपवावौ—देखो 'लिपाणौ, लिपावौ' (रू. भे.)

लिपवाणहार, हारौ (हारी), लिपवाणियौ—वि.।

लिपवायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लिपवाईजणौ, लिपवाईजबौ—कर्म वा.।

लिपवायोड़ौ—देखो 'लिपायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपवायोड़ी)

लिपवावणौ, लिपवाववौ—देखो 'लिपाणौ, लिपाणौ' (रू. भे.)

लिपवावणहार, हारौ (हारी), लिपवावणियौ—वि०।

लिपवाविश्रोड़ौ, लिपवावियोड़ौ, लिपवाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लिपवावीजणौ, लिपवावीजवौ—कर्म वा०।

लिपवावियोड़ौ—देखो लिपायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपवावियोड़ी)

लिपसा—देखो 'लिप्सा' (रू. भे.)

लिपाई-सं. स्त्री—१ लीपने की क्रिया या भाव।

२ उक्त कार्य का पारिश्रमिक या मजदूरी।

लिपाड़णौ, लिपाड़बौ—देखो 'लिपाणौ, लिपावौ' (रू. भे.)

लिपाड़णहार, हारौ (हारी), लिपाड़णियौ—वि०।

लिपाड़िश्रोड़ौ, लिपाड़ियोड़ौ, लिपाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लिपाड़ीजणौ, लिपाड़ीजबौ—कर्म वा०।

लिपाड़ियोड़ौ—देखो 'लिपायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपाड़ियोड़ी)

लिपाणौ, लिपावौ-क्रि. स. (लिपणौ क्रि. प्रे. रू.) किसी वस्तु को किसी तरल पदार्थ से लेप कराना, पुताना।

ज्यूं—चौक लिपाणौ, घर लिपाणौ।

उ०—लिपइ तावनिकंदनि, चदनि देहु। निज निज नाथ संभारिय, नारिय नवलउ नेहु। —जयसूरि

लिपाणहार, हारौ (हारी), लिपाणियौ—वि०।

लिपायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लिपाईजणौ, लिपाईजबौ—कर्म वा०।

लिपवाड़णौ, लिपवाड़बौ, लिपवाणौ, लिपवावौ, लिपवावणौ, लिपवाववौ, लिपाड़णौ, लिपाड़बौ, लिपावणौ, लिपाववौ—रू० भे०

लिपायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ किसी तरल पदार्थ से लेप कराया हुआ, पुतवाया हुआ।

(स्त्री. लिपायोड़ी)

लिपावणौ, लिपावबौ—देखो 'लिपाणौ, लिपाबौ (रू. भे.)

लिपावणहार, हारौ (हारी), लिपावणियौ—वि०।

लिपाविश्रोड़ौ, लिपावियोड़ौ, लिपाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लिपावीजणौ, लिपावीजवौ—कर्म वा०।

लिपावियोड़ौ—देखो 'लिपायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपावियोड़ी)

लिपि-सं. स्त्री. [सं.] १ वर्णाक्षर लिखने का ढंग, लिखावट।

उ०—लिपि लापर लेख लिखावन की, दुनियां विधि देख दिखावन की, परमातम को नही पावन की, वक व्रत्तिय व्रह्म बतावन की। —ऊ. का.

२ लेख, हस्तलेख।

लिपिभेद-सं' स्त्री.—७२ कलाओं में से एक।

उ०—दंडलक्षण, रत्नपरीक्षा, कनक परीक्षा, टंक परीक्षा वस्त्र-परीक्षा, लिपिभेद। —व. स.

लिपियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ तरल पदार्थ से लिपा हुआ, पुता हुआ।

लिपी-सं. स्त्री.—देखो 'लीपी' (रू. भे.)

लिप्त-वि. [सं.] १ पुता हुआ, लिपा हुआ. २ ढका हुआ, छिपा हुआ। ३ लगा हुआ, संलग्न।

रू. भे.—लिपत

लिप्तर-सं. स्त्री. [अनु.] १ चलते समय फटी-पुरानी जूती से उत्पन्न ध्वनि।

उ०—बापड़ौ लिसर-लिसर किता कोस सूं चलायनै आयौ, जल्दी सूं सीदौ देय उणनै सीख देवौ। —फुलवाड़ी

२ फटी पुरानी जूती।

लिप्ता-सं. स्त्री.—समय का एक मान जो प्रायः एक मिनिट के बराबर होता है। (ज्योतिष)

लिप्सा-सं. स्त्री. [सं.] १ किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा या अभिलाषा।

२ लालच, लोभ।

रू. भे.—लिपसा

लिप्सु-वि.—लोलुप, लालची।

लिफाफौ-सं. पु. [अ. लिफाफः] १ कागज का बना वह थैला जिसमें पत्र अथवा अन्य सामान डाला जा सके।

उ०—कारड तौ केतौ फिरै, हर कोइ ने हकनाक। जिण री व्है जिणनै कहै, लेवै लिफाफौ राख। —अग्यात

२ लाक्षणिक अर्थ में ऊपरी तड़क-भड़क, बाह्य आडम्बर।

लिबरल-वि. [अं.] ऊंचे दिल का, असंकीर्ण।

उ०—अर इण वात माथै घर, रा मिनखां में फंट पड़ग्यौ। दो दैळ वणग्या है। एक लिबरळ अर दूजौ कंजरवेटिव। —अमर चूनड़ी

लिबाळी—देखो 'लवाळी' (रू. भे.)

लिबास-सं. पु.—शरीर पर धारण करने के वस्त्र, पोशाक विशेष।

उ०—वांका लिबास तेरा सब जांनी घोडा वे। पायकी पनियाइयां वीछु डांक वे। —रसीले राज

रू. भेः लवेस, लिवास

लियण-वि.—लेने वाला।

उ० —१ भगवांनदास भाराथ भल्ल, 'वगड़ी' तखत आखाडमल्ल। लांगुडौ हणु जिम लियण वाथ, ओगम लागै अणभंग नाथ। —गु. रू. वं.

उ०—२ परभोम पंचायण, घर दियण, जस लियण, कळायरौ मोर। —रा. सा. सं.

रू. भे.—लिअण

लियणौ, लियबौ—देखो 'लैणौ,लेवौ' (रू. भे.)

उ०—१ ढाढी एक संदेसड़उ, ढोलइ लगि लइ जाइ। कण पाकउ करसण हुअउ, भोग लियउ घरि आइ। —ढो. मा.

उ०—२ आंगणि जळ तिरप उरप अलि पिअ्रति, मरुत चक्र किरि लियत मरू। रांमसरी खुमरी लागी रट, धूमा माठा चंद घरू। —वेलि

उ०—३ ऊंचा मंदिर अति घणउ, आवि सुहावा कंत। बीजळि लियइ भबूकड़ा, सिहरां गळि लागंत। —ढो. मा.

लियणहार, हारौ (हारी), लियणियौ—वि.।

लियणिओड़ौ, लियणियोड़ौ, लियण्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लियणीजणौ, लियणीजवौ—कर्म वा.।

लियाकत-सं. स्त्री. [अ.] १ योग्यता, काबिलियत।

२ सामर्थ्य, शक्ति, उत्साह।

३ विद्वत्ता।

४ व्यवहार आदि में शिष्टता, भद्रता, शालीनता।

रू. भे.—लयाकत, ल्याकत

लियाज—देखो 'लिहाज' (रू. भे.)

लियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ. २ हाथ में पकड़ा हुआ, हस्तगत. ३ खरीदा हुआ. ४ अधिकार या कब्जे में किया हुआ. ५ धारण किया हुआ. ६ उधार के रूप में प्राप्त किया हुआ. ७ वहन किया हुआ. ८ पहुंचाया हुआ. ९ सेवन किया हुआ, खाया हुआ।

(स्त्री. लियोड़ी)

लिराड़णौ, लिराड़वौ—देखो 'लिराणौ, लिरावौ' (रू. भे.)

लिराड़णहार, हारौ (हारी). लिराड़णियौ—वि.।

लिराड़िओड़ौ लिराड़ियोड़ौ, लिराड़्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिराड़ीजणौ लिराड़ीजवौ—कर्म वा.।

लिराड़ियोड़ौ—देखो 'लिरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिराड़ियोड़ी)

लिराणौ, लिरावौ-क्रि. स.—किसी पदार्थ को लेने में प्रवृत कराना।

२ किसी वस्तु को हस्तगत कराना।

३ कटाना, कटवाना।

उ०—तठा पछै कितरै हेक दिने राव मंडळीक रौ नाई नागही रै गांव गयौ हुतौ। तिण कना नागही वेटा री वहु पदमणी रा नख लिराया। —नैणसी

लिराणहार, हारौ (हारी), लिराणियौ—वि.।

लिरायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लिराड़णौ, लिराड़वौ, लिरावणौ, लिराववौ—रू. भे.।

लिरायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ प्राप्त कराया हुआ. २ खरीदवाया हुआ. ३ धारण कराया हुआ. ४ अधिकार या कब्जे में कराया हुआ।

लिरावणौ, लिराववौ—देखो 'लिराणौ, लिरावौ' (रू. भे.)

लिरावणहार, हारौ (हारी), लिरावणियौ—वि.।

लिराविओड़ौ, लिराविंयोड़ौ, लिराव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिरावीजणौ, लिरावीजवौ—कर्म वा.।

लिराविंयोड़ौ—देखो 'लिरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिराविंयोड़ी)

लिलड़ी—देखो 'लीली' (रू. भे.)

उ०—बागो सोवै पाट को ए लिलड़ी हरे हरे सूत को, पीळै पीळै पाट को, श्रोर मखतूळ को, वादस्या नवाब म्हारो दुलीराजा, निरखरण श्राई हो राज। —लो. गी.

लिलवट—देखो 'निलं' (रू. भे.)

उ०—भंवारे हो भंवारो गवरळ हे फिरै, हो जी वैरो लिलवट श्रांगळ च्यार, हे गवरळ रूड़ो हे नजारो तीखो हे नैणां रो। —लो. गी.

लिलाम—देखो 'लीलांम' (रू. भे.)

उ०—जव लूं नित नांम तिलोचन बोल्यो, भांमरण भीयड़ होम भिड़ै। करवा ग्रह काज इसो मोय श्रागळ, मांरास कोय लिलांम भिळै। —भगतमाळ

लिलाड़—देखो 'ललाट' (रू. भे)

उ०—१ जिरण दीठां श्रंतर न मावै खिरण रो, इरण मूंढा री होड करै इसूं मूंडो किरणरो। एक मिळै है लेखो, लिलाड़ देखो भावै श्ररघ चंद देखो। —र. हमीर

उ०—२ लिलाड़ में सळ घाल्यां वींद श्रांकड़ा रो जोड़-तोड़ बिठाव तो हो कै वींदणी वेहल री चांदणी उघाड़ वारै जोयो। चिळको पड़ै जेड़ो श्राकरो तावड़ो। —फुलवाड़ी

लिलाड़ी—देखो 'ललाट' (श्रल्पा., रू. भे)

उ०—सो रन में एक जवांन रूपवंत भला स्वभावां वडी लिलाड़ी भगवांन मिळियो। —नी. प्र.

लिलाट, लिलार—देखो 'ललाट' (रू. भे.)

उ०—१ मथुरा में कुब्जा कर राखी, म्हाजन की सी हाट। केसर चंदन लेपन कीन्हो, मोहन तिलक लिलाट। —मीरां

उ०—२ वस्यो लिलाट राह बिग्रहतै, संकर मयंक न राखि सकेह। सरणाई 'खेता' सीसोदा, लाल केणी नह कीयो लेह। —लाला हाडा रो गीत

लिल्ला—क्रि. वि. [श्र] ईश्वर के लिए, ईश्वर के नाम पर।

उ०—तोहीन श्रदालत श्रल-कितीक, लिल्ला वजूद है लासरीक। मालुम मुलायजे करहु माफ़, श्रालिम हैं श्रालिमगीरश्राप। —ऊ. का.

लिवंग—देखो 'लवंग' (रू. भे.)

उ०—साग सीसव सरघू घणा रे, बोर कदंब नारंग नाग पुनाग रतांजणी रे, दीसता सार लिवंग। —कल्यांण

लिव-सं. स्त्री—एकाग्रचित्तता से किसी वात की श्रोर ध्यान लगाना। ध्यान-मग्न होना।

उ०—१ पेम प्रीत का पागड़ा, लिव की करूं लगांम। हरीया सासित, सुरति की, कीया निरत मुकांम। —श्रनुभववांणी

उ०—२ संता घर ही में वइरागा, श्रापा उलट श्राप कूं देखै, रहे रांम लिव लागा। —श्रनुभववांणी

रू. भे.—लव।

लिवणो, लिववो—देखो 'लैणो, लैवो' (रू. भे.)

उ०—१ तूं तो सूतो नींद भरि, लिवै नचीतो घंम। हरीया श्राया जोवतां, एक जुरा एक जंम। —श्रनुभववांणी

लिवणहार, हारो (हारी), लिवणियो—वि०।
लिविश्रोड़ो, लिवियोड़ो, लिव्योड़ो—भू० का० कृ०।
लिवीजणो, लिवीजवो—कर्म वा०।

लिवाड़णो, लिवाड़वो—देखो 'लिवाणो, लिवावो' (रू. भे.)

लिवाड़णहार, हारो (हारी), लिवाड़णियो—वि०।
लिवाड़िश्रोड़ो, लिवाड़ियोड़ो, लिवाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।
लिवाड़ीजणो, लिवाड़ीजवो—कर्म वा०।

लिवाड़ियोड़ो—देखो 'लिवायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लिवाड़ियोड़ी)

लिवाणो, लिवावो-क्रि. स.—१ लेने का कार्य श्रन्य से कराना।

२ हस्तगत कराना, पकड़ाना, थमाना।

३ मंगाना।

लिवाणहार, हारो (हारी), लिवाणियो—वि.।
लिवायोड़ो - भू. का. कृ.।
लिवाईजणो, लिवाईजवो—कर्म वा.।
लिवाड़णो, लिवाड़वो, लिवावणो, लिवाववो—रू. भे.।

लिवायोड़ो-भू. का. कृ.—१ लेने का कार्य श्रन्य से कराया हुश्रा. २ हस्तगत कराया हुश्रा, पकड़ाया हुश्रा, थमाया हुश्रा. ३ मंगाया हुश्रा।

(स्त्री. लिवायोड़ी)

लिवाळ—देखो 'लेवाळ' (रू. भे.)

लिवावणो, लिवाववो—देखो 'लिवाणो, लिवावो' (रू. भे.)

लिवावणहार, हारो (हारी), लिवावणियो—वि०।
लिवाविश्रोड़ो, लिवावियोड़ो, लिवाव्योड़ो—भू० का० कृ०।
लिवावीजणो लिवावीजवो—कर्म वा०।

लिवावियोड़ो—देखो 'लिवायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लिवावियोड़ी)

लिवास-सं. स्त्री.—१ छिपकली।

२ देखो 'लिवास' (रू. भे.)

लिवासड़ो—देखो 'लिवास' (श्रल्पा. रू. भे.)

लिविंग—देखो 'लवंग' (रू. भे.)

उ०—केवडीउ काथु लिविंग एलची वोदा काठी जाइफल जावित्री करपूर कस्तूरी तणइ संयोगि चुमरां पाननां बीड़ा इम सरव परिवार नइं भोजन तंबोल दीधा । —व. स.

लिबियोड़ो—देखो 'लियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. लिबियोड़ी)

लिसद-सं. स्त्री.—यश, कीर्ति (अ. मा.)

लिसोड़ा—देखो 'लसोड़ा' (रू. भे.)

लिह-वि.—चाटने वाला।

लिहणो—देखो 'लें'णो' (रू. भे)

उ०—जीरण रिणउं बांधे पांजरै करि दीजइ, लिहणा देवा लोहडी यानी लाज न कीजइ, लेखउं करि लीजइ, राति जागीइ, दफ्तरी लिखइ । —व. स.

लिहणो, लिहबो—क्रि. स.—१ चाटना ।
२ देखो 'लिखणो, लिखबो' (रू. भे.)

उ०—वनीता-पति विदेस गय, मदिर मभे अइरयणीए । वाळा लिहइ भुयंगो, कहि सुंदरि कवण चुज्जेण । —ढो. मा.

लिहणहार, हारो (हारी), लिहणियो—वि. ।
लिहिओड़ो, लिहियोड़ो, लिह्योड़ो—भू. का. कृ. ।
लिहीजणो, लिहीजबो—कर्म वा. ।

लिहाड़ी-सं. स्त्री.—मसाला पीसने की सिला ।

लिहाज-सं पु. [अ.] १ आचार-व्यवहार में किसी के प्रति आदरवश रखा जाने वाला ध्यान, मान, मर्यादा ।

उ०—लिहाज-लचका री कीं तो माठ व्हे । आवै जिणनै ई हुंकारो भर दो। —फुलवाड़ी

२ ध्यान, खयाल ।

उ०—यूं सोनार री जात छाकटी गिणीजै । वां रै धंधे में सगी मा गै ई लिहाज कोनी राखै । —अमरचूनड़ी

३ संकोच ।

४ लज्जा, शर्म ।

५ पक्षपात, तरफदारी ।

उ०—दीवांण जी रै हेलो मारयां विना कोई पंचायती करी तो बारै जेड़ो भूंडो नीं हैं । इण कांम मे कोई लिहाज नीं बरतेला । —फुलवाड़ी

लिहाजा—देखो 'लेहाजा' (रू. भे.)

लिहाणो, लिहाबो—क्रि. स.—१ चटाना ।
२ देखो 'लिखाणो, लिखावो' (रू. भे.)

लिहाणहार, हारो (हारी), लिहाणियो—वि० ।
लिहायोड़ो—भू० का० कृ० ।
लिहाड़णो, लिहाड़बो, लिहावणो, लिहावबो—रू० भे०

लिहाफ-सं. पु [अ.] १ सर्दी में ओढने का रूईदार मोटा भारी वस्त्र, रजाई ।
रू. भे.—लेहाफ

लिहायोड़ो-भू. का. कृ.—१ चटाया हुआ ।
२ देखो 'लिखायोड़ो' (रू. भे)
(स्त्री. लिहायोड़ी)

लिहालु-सं. पु.—कोयला ।

उ०—कुडिनइ कारणि करि कुण, नर नींगमइ कोडि । लिहाला तणइ कारणइ कुण, ज्वालइ रे चंदन खोडकि । —नळदवदंती रास

लिहावणो, लिहावबो—१ देखो 'लिहाणो, लिहाबो' (रू. भे.)
२ देखो 'लिखाणो, लिखावो' (रू. भे)

उ०—देखि देखि नृपनंदन दीमइ, एति सैन्य जिणि कीरति वरि सीड । चंद्र नांमु तुझ आज लिहावउं, ताहरु यग्य समुद्रि वहावउं । —सालिसूरि

लिहावणहार, हारो (हारी), लिहावणियो—वि. ।
लिहाविओड़ो, लिहावियोड़ो, लिहाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
लिहावीजणो, लिहावीजबो—कर्म वा० ।

लिहावियोड़ो—१ देखो 'लिहायोड़ो' (रू. भे.)
२ देखो 'लिखायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. लिहावियोड़ी)

लिहियोड़ो-भू. का. कृ.—१ चाटा हुआ ।
२ देखो 'लिखियोड़ो' (रू. भे)
(स्त्री. लिहियोड़ी)

लींगटी-स. स्त्री.—१ रेखा, लकीर ।

उ०—रिसता लोई री लींगटियां आडी अंवळी कुरचोड़ी ही —फुलवाड़ी

२ पंक्ति, लाइन ।
३ रीति-रिवाज, प्रथा ।
रू. भे —लिंगटी, लीगठी ।

लींगी—देखो 'लूंगी' (रू. भे.)

लींड—देखो 'लींडो' (मह. रू. भे.)

लींडी—देखो 'लींडो' (अल्पा., रू. भे.)

लींडो-सं. पु.—१ मल-त्याग के समय बंधने वाली मल की बत्ती, विष्टा ।

अल्पा.—लींडी

मह.—लींड

२ छोटे बच्चों में एक दूसरे को चिढ़ाते समय हाथ के अंगूठे का इशारा।

क्रि. प्र.—दिखाणौ, बताणौ

लींण—देखो 'लीन' (रू. भे.)

उ०—भींणी माया लींण हुय, रही प्रांण सूं रचि। सिध सिन्यासी जोगना, गए मुनि जन पचि। —अनुभववांणी

लींव-सं. पु.—१ नींबू, नींव

उ०—लींव लविंगह लसणीम्रा, लींबोई लोवांन। लूखठ लासा लींवरू, लगिथगि लांवां पांन। —मा. कां. प्र.

रू. भे.—लीव

लींवड़ो-सं. पु.—देखो 'नीम' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—१ लोक परासि लींवड़ु, मधुरपणांनी माठि। काठि काठि कुंपलि सिरइ, पणि अेखरू क-काठि। —मा. कां. प्र.

उ०—२ देवी वम्मरै डूंगरै रत्न वन्नै, देवी थूंवड़ै लींवड़े थन्न थन्नै। देवी भंगरै पाचरै छव्व-छव्वै, देवी अंवरै अंतरीखं अलवं।। —देवि.

लींबरू-सं. पु.—वृक्ष विशेष।

उ०—१ लींव लविंगह लसणीम्रा, लींबोई लोवांन। लूखट लोसा लींवरू, लगि थगि लांवां पांन। —मा. कां. प्र.

लींबू-सं. पु. [सं. नीम्बूक] नींबू।

उ०—लाभइ नवी तिली नइ विही, कोठी बडां तणी काचरी। आदां सूरण केलां हुआ, बीजोरां दाड़म लींबूआं। —कां. दे. प्र.

लींबोइ-सं. स्त्री.—वृक्ष विशेष।

उ०—लींव लविंगह लसणीआ लींबोइ लोबांन। लूखट लासा लींबरू, लगिथगि लांवा पांन। —मा. कां. प्र.

ली-सं पु.—१ भौंरा, भ्रमर। (एका.)

२ ईश्वर।

३ मिलन, संगम।

सं. स्त्री.—४ सखी, सहेली।

५ पृथ्वी।

लीअण—१ देखो 'लियण' (रू. भे.)

लीक-सं. स्त्री.—१ लम्बा व पतला बनाया हुआ या अंकित किया हुआ चिह्न, लकीर, रेखा।

उ०—१ पइहिली ही पोति आंणि गलै वांधी। ताकौ द्रस्टांत। जैसे कपोत कहतां कंमेडा का कठ की स्याह लीक देखीयै। —वेळि.

उ०—२ कंवर रै पलकां पीक, अधरां काजळ री लीक। आळस अंग भाल अलतारो रंग। —र. हमीर

२ सत्य वचन। (डि. को.)

३ रास्ता, मार्ग।

उ०—लीक लीक गाडी वहे, कायर अनै कपूत। लीक तजे ऊवट वहे, सायर सिंघ सपूत।

४ पगडंडी।

५ सीमा, मर्यादा।

उ०—चुंगलाळ प्रवळ भड चंचळां, लाख उभै चढि चल्लिया। मिटि जांणि लीक सातों महण, हैक समुच्चै हल्लिया। —रा. रू.

६ प्रतिष्ठा, मान, मर्यादा।

उ०—हसक पाव हंमगत हसहम, प्रंसक प्रया उदंत। बांझ नारि कुल लीक विधुसक, कहत नपुंसक कंत। —ऊ. का.

७ प्रथा, रीति।

८ दोष, कलंक।

उ०—रांवण करतां राज, लीक लंका तै लागी। जीवतै किसनजी, द्वारका नगरी दागी। पावा रवि चंद नइ, राहु आवी नै रोकै। पांडव कौरव प्रसिद्ध, सहु पड़िया दुख सोकै। —घ. व. ग्रं.

९ गिनती, गणना।

१० मटियाले रंग की चिड़िया विशेष।

११ लम्बी व संकड़ी जमीन।

१२ देखो 'लीख' (रू. भे.)

१३ देखो 'लीकी' (रू. भे.)

मुहा.—लोह री लीक=लोह की बनी रेखा, दृढ बात।

लीक कुटणी=पुरानी प्रथा पर चलना।

रू. भे.—लीह, ल्हीक

अल्पा. लीकटी. लीकड़ो, लीगटी

लीकटी—देखो 'लीक' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—चिड़ी कमेड़ी चील, जुजळा गोह टिटणिया। सरप संवार सरीर, लीकटी कोर लिटणिया। —दसदेव

लीकड़ियौ—१ देखो 'लीकी' (अल्पा., रू. भे.) (१)

लीकियौ-सं. पु.—१ लकड़ी पर लकीर या रेखा बनाने का औजार।

२ देखो 'लीकी' (अल्पा., रू. भे.)

लीकी-सं. स्त्री.—१ संकड़ी व लम्बी कृषि उपयोगी भूमि का मालिक।

२ संकड़ी व लम्बी कृषि उपयोगी भूमि।

उ०—भींडर रा महाराज री मां बाई राज बाई जे मोटा पली तीनै लीकी पातसाह री दीवी है। —बां. दा. ख्यात

३ देखो 'लीक' (अल्पा, रू. भे.)

लीख-सं. स्त्री [सं. लिक्षा] १ जूं का अंडा।

उ०—१ लारै बादळ री डेरौ लीनोड़ौ, दोळौ दाळदरौ घेरौ दीनोड़ौ।
जूंवां लीखां रा जमियोड़ा जाळा, नीचा नमियोड़ा कड़ कोड़ा काळा
—ऊ. का.

रू. भे.—लिकसा, लिक्स, लीक

लीखत—देखो 'लिखत' (रू. भे.)

लीखणौ, लीखबौ—देखो 'लिखणौ, लिखबौ' (रू. भे.)

उ०—जद स्वांमीजी बोल्यां; थांरै बाप हुंड्यां लीखी, थांरै दादै हुंड्यां लीखी, पाटा पाटी थेई संवेटचा कोई नहीं। —भि. द्र.

लीखीयौ-वि.—१ लिखा हुआ।

उ०—१ हरीया लीखीयौ भाग में, रांम मता धन माल। एतौ नितप्रित संपजै, मेटै कौंण मजाल। —अनुभववांणी

लीग-सं स्त्री. [अं.] दूरी का एक नाप।

लीगटी—देखो 'लींगटी' (रू. भे.)

लीड़ी-सं. स्त्री.—१ शरीर में दर्द के स्थान पर अग्निदग्ध लगाने की क्रिया या अग्निदग्ध से होने वाला निशान, चिन्ह, डाम।
रू. भे.—लीरड़ी।
२ रेखा, लकीर।
३ देखो 'लीरौ' (अल्पा., रू. भे.)

लीड़ौ-सं. पु.—देखो 'लीड़ी (मह., रू. भे.)

लीची-स. स्त्री.—१ एक सदा-बहार पेड़ जिसका फल मीठा होता है।
२ उक्त पेड़ का फल।

लीछम्मि, लीछम्मी – देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

लीडर-सं. पु. [अं.] मुखिया, नेता,

लीडीकट-वि.—रेखा के समान सीधा।

उ०—डार अेकै पासै छै। अेकल अेक तरफ छै। सू अेकल किण भांतरो छै। जैरो बारह आंगळ खग लीडीकट छै।
—गंगेव नींबावतरौ दो-पहरौ

लीण-सं पु.—१ वर्षा ऋतु में आकाश में आच्छादित जल रहित बादल लौर।

उ०—१ राग सांमीर सारंग डांणै ग्रहै, वाइ ऊपडीया लीण जांणै वहै। —गु. रू. वं.

उ०—२ जूंमगौ मुहै हुए दखणि जळा हीण। किरि वरखा रित चालिया, घणहर वूठै लीण। —गु. रू. वं.

२ उचित, योग्य।

उ०—लीण ओ अलीण, भीन चीन्ह तें लह्यो। लीण व्है अलीण, दोंउ दीन तें गयो। —ऊ. का.

३ देखो 'लीन' (रू. भे)

उ०—१ लीण हीण ज्यां सौं गज लागै, ए कोई वळ सादूळै आगै। सेवै छत्रपति छोड समीसर, ओपै वजा जगत चै ऊपर।
—रा. रू.

उ०—२ हंस गमणि हेजइं हीइं, राति दिवस सुख संग। रांणौ लीण हुओ तुरत, जिम चंदन तरुहि भुजंग। —प. च. चौ.

४ देखो 'लीन्हौ' (रू. भे.)

लीणउ—देखो 'लीन्हौ' (रू. भे.)

लीणता—देखो 'लीनता' (रू. भे.)

लीतरौ—देखो 'लिगतरौ' (रू. भे.)

लीद-सं. स्त्री—१ हाथी, घोड़ा, गधा आदि का मल।

उ०—१ हुंसनै कंवण लागा—सेठां जे ताकड़ी चालणा सूं ई राजी व्हौ तौ तवेला में छोटा मोटा साठ घोड़ा घोड़ी है। नित दोनूं टंक वांरी लीद जोख्या करो। फुलवाड़ी

मुहा.—लीद काडणी=कीसी को बुरी तरह पीटना, मारना।
रू. भे.—लाद
मह.—लीदड़

लीदड़—देखो 'लीद' (मह., रू. भे.)

लीध, लीधुं, लीधु, लीधू, लीधौ—देखो 'लीन्हौ' (रू. भे.)

उ०—आंणै सुर असुर नाग नेत्रै नहि, राखियौ जइ मंदर रई। महण मथैमूं लीध महमहण, तुम्हां किणै सीखव्या तई। —वेलि

उ०—२ जिण रांणी चवदै सुत जाए, सो पित हंता तेज सवाए। दक्खिण लीध जीपि खग दावें, कपाळिया भड़ तिकै कहावै।
—सू. प्र.

उ०—३ खुरम प्रवांणा मेलिया, लीधा राठौडेय। 'गजवंधी' आयौ खडै, चडि तीन्है घोडेय। —गु. रू. वं.

उ०—४ 'केहर' 'अचळ' कमंध तण, उर पण लीधौ एम। वरण त्रिविद्धि साह घड़, मरण तणै द्रढ नेम। —रा. रू.

उ०—५ सुंदरि चोरै संग्रही, सब लिया सिणगार। नक फूली लीधी नहीं, कहि सखि कवण विचार। —ढो. मा.
(स्त्री. लीधी)

लीधमिण-सं. स्त्री. [सं. ऋद्ध+मणि] १ मूंगा, प्रवाल। (अ. मा.)

लीधियोड़ौ—देखो 'लियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लीधियोड़ी)

लीन-वि. [सं.] १ विल्कुल मिला हुआ, समाविष्ट।
२ अनुरक्त।

उ०—१ मीरां हरि में लीन भई। सवकूं छांड भज्यौ साहिब कूं, गुरु की सरण गई। —मीरां

उ०—२ कहां लीन सुकदेव था, कहां पीपा रेदास। दादू साचा क्यों छिपै, सकळ लोक परकास। —दादूवांणी

३ लुप्त, गायब।

उ०—जो कहां हिरण री खुरी, दीठा किणनूं सुहावै सुणतांही लागै बुरी कदंच जो कहां समंदरी सीप, तिका पिण न फावै इणरै समीप। भेर जो मीठां छोटी सी मीन, तिका तो लाजां मरती हुई जल में लीन। —र. हमीर

४ किसी कार्य में निमग्न या तल्लीन।

उ०—१ सहज प्रमाणी सांपरत, लहौ एक रस लीन। मुकता चुगही हम मिळ, मिळ बक चुनही मीन। —र. हमीर

५ चिपटाया हुआ, सटा हुआ।

६ देखो 'लीन्हौ' (रू. भे.)

रू. भे.—लीण।

लीनता-सं. स्त्री.—१ लीन होने की अवस्था या भाव।

रू. भे.—लीणता।

लीनोड़ौ—देखो 'लीन्हौ' (रू. भे.)

उ०—लारै बाळद रो डेरो लीनोड़ो, दोळी दाळद री घेरो दीनोड़ो। जूंवा लीखा रा जमियोड़ा जाळा, नीचा नमियेड़ा कड़ कोड़ा काळा। —ऊ. का.

(स्त्री. लीनोड़ी)

लीनौ—देखो 'लीन्हौ' (रू. भे.)

उ०—मेरो मन हरी हर लीनौ राजा रणछोड़। राजा रणछोड़ प्यार रंगीला रणछोड़। —मीरां

लीन्ह, लीन्हउ, लीन्होड़ौ, लीन्हौ-भू. का. कृ. (स्त्री. लीन्होड़ी) १ लिया हुआ।

उ०—१ लाखा एक लाख सा जो लाख मेछ देखे। लाख जोड़ लीन्है यातैं कोड़ कूं न लेखे। —रा. रू.

उ०—२ रांणाजी विस रो प्यालो भेज्यो, म्हैं सिर लियो चढाय। चरणाम्रत को नांम ज लीन्हौ, पीगी प्रेम अघाय। —मीरां

उ०—३ दादू नीकी वरियां आय करि, रांम जप लीन्हा। आतम साधन सोध कर, कारज भल कीन्हा। —दादूवांणी

रू. भे.—लीण, लीणउ, लीध, लीधोड़ौ, लीधौ, लीन, लीनोड़ौ, लीनौ।

लीपणौ, लीपबौ-क्रि. स.—१ किसी तरल पदार्थ से लेप करना या पतली तह चढाना, पोतना।

उ०—१ घरि घरि कै विखै भीति। हीगुलुरी गारि सों लीपै छै। फिटक की ईंटा सों भीति चुणी छै। पाट चढीया छै सु चंदण का छै। —वेळि

उ०—२ लीप्यौ-ढोळचौ मोटो आंगणो, लुगाई-टाबर फिरै-घिरै सै हंसै बोले अर खेले खावै। —दसदोख

२ छूबना, लुप्त होना।

उ०—पिण कुमर ते नही राचसी, मुख मांहे हो ग्रद्धि नहि थाय। जिम कमळ पांणी में नीपजे, नही लीपै हो ऊंचो रहिवाय। —जयवाणी

३ लिप्त होना।

लीपणहार, हारौ (हारी), लीपणियौ—वि०।

लीपिग्रोड़ौ, लीपियोड़ौ, लीप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लीपीजणौ, लीपीजबौ—भाव वा०।

लीपाड़णौ, लीपाड़बौ—देखो 'लिपाणौ, लिपाबौ' (रू. भे.)

लीपाणौ, लीपाबौ—देखो 'लिपाणौ, लिपाबौ' (रू. भे.)

लीपाणहार, हारौ (हारी) लीपाणियौ—वि०।

लीपायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लीपाईजणौ, लीपाईजबौ—कर्म वा०।

लीपायोड़ौ—देखो 'लिपायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लीपायोड़ी)

लीपावणौ, लीपावबौ—देखो 'लिपाणौ, लिपाबौ' (रू. भे.)

लीपावणहार, हारौ, (हारी), लीपावणियौ—वि०।

लीपाविग्रोड़ौ, लीपावियोड़ौ, लीपाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लीपावीजणौ, लीपावीजबौ—भाव वा.।

लीपावियोड़ौ—देखो 'लिपायोड़ौ' रू. भे.)

(स्त्री लिपावियोड़ी)

लीपियोचूपियौ, लीपियोचूपियौ-वि.—लिपा-पूता, साफ-सुथरा।

लीपियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ लिपा हुआ. २ डूबा व छिपा हुआ. ३ लिप्त हुवा हुआ।

(स्त्री. लीपियोड़ी)

लीपी-स. स्त्री.—१ किसी स्थान पर पानी के सूख जाने पर तले में जमी हुई पपड़ी।

२ चूने के घोल को गड्ढे में भरकर तैयार किया जाने वाला लेप।

रू. भे.—लिपी।

लीव—देखो 'लीव' (रू. भे.)

उ०—जउ तेहू मध्यस्थ कहवराइं तउ विख अनइ अम्रत तथा रत्न अनइ काच, आंबउ अनइ लीव, साप अनइ फूलमाल, अंधारउ अनइ अजआलूं एहइ तोल तेहइ सरीखइ जि थिया। —सस्टीसतक

लीयण—देखो 'लियण' (रू. भे.)

लीर-सं. पु.—१ फटा हुआ, जीर्ण।

उ०—लीर-लीर व्हियोड़ो कूधा वरणो ई घाघरो। —फुलवाड़ी

२ देखो 'लीरो' (मह, .रू. भे.)

उ०—दुःखी देख प्रभू द्रोपदी, दई चीर की लीर। दस हजार गज-बळ घटचौ, घटचौ, न दस गज चीर —अग्यात

लीरड़ी-सं. स्त्री.—देखो 'लीड़ी' (रू. भे.)

लीरड़ौ-सं. पु.—देखो 'लीड़ी' (रू. भे.)

उ०—सैंती सैंती पीड़ ताड़ो, लपेट लकड़ी लीरड़ा। तीजै दिन वन पयांन करै त्याग दुवाई चीरड़ा। —दसदेव

लीरी-सं. स्त्री.—देखो 'लीरौ' (अल्पा., रू. भे.)

लीरौ-सं. पु.—१ वस्त्र का फटा, पुराना जीर्ण-क्षीण टुकड़ा, धज्जी।

उ०—१ कहै दास सगरांम, हमैं तो चेतौ वीरा। भूखां मरता मरौ, कमर में लटकै लीरा। —सगरांम

२ शरीर पर गर्म धातु से दागने पर बना हुआ चिन्ह, डांम।

३ ककड़ी, मतिरा आदि की फांक।

रू. भे.—लीड़ौ, लीर, लीरी, लीरड़ौ।

अल्पा.—लीड़ी, लीरड़ी, लीरी।

लीलंग-सं. पु.—१ हंस (नां मा.)

उ०—१ मांन सरोवर के भोळै भूल अनेक (क) लीलंग आवै। —सू. प्र.

उ०—२ मोताहळ कमळ चुणतौ मांभी, असमरि मुंह साजंतौ अरि। पै लीलंग 'पंचायण' पेठौ, धेर तणी दळ मांनसरि। —पंचायण करमसोत री गीत

उ०—३ भाखित वेद विचार, माळा अपकंठ धरमधर आसन। चर थिर जंत्रु दयालं, लीलंग वाहेणं नम। —मा. वचनिका

२ डिंगल के वेलिया सांणोर (छोटा सांणोर) छंद का एक भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले में १६ लघु २४ गुरु कुल ६४ मात्राएं होती हैं तथा इसी क्रम से शेष द्वालों में १६ लघु व २३ गुरू कुल ६२ मात्राएं होती हैं।

वि.—लीला करने वाला।

रू. भे. – लीलग

लीलंगरित-सं. पु.—तोता, सुवा। (अ. मा.

लीलंबर-सं. पु. यौ. [सं. नील+अम्बर] नीला आकाश, नीलगगन।

उ०—मधुर वचन छवि चंद मुख, ऊगमै उरज ऊतंग। लीलंबर ढाकै ललित, सुभ कंचन-गिर स्रंग। —वगसीरांम प्रोहित री वात

लील—देखो 'लीला' (रू. भे)

उ०—वसै न वाड़ी नांव न वासा, रहत उदास न लील निवासा। —अनुभववांणी

२ आनद, मंगल, परमसुख।

उ०—रिखिदत्ता रांणी रूड़ी परि, पाल्युं निरमल सील रे। समयसुंदर कहइ मुगति पहूंती, लाधा अविचल लील रे। —स. कु.

३ पानी पर जमने वाली काई।

४ हरियाली।

उ०—उन्नाळै दे ईल, लील चौमास खुलावै। सीयाळै न्यायास आखरचां सुखी सुळावै। —दसदेव

५ शरीर पर चोट या प्रहार से उभरा हुआ नीला चिन्ह।

उ०—दीवांण जी इण हालत में कांई जवाव देवता। ठौड़-ठौड़ लील जम्योड़ी। मूंडौ सूज्योड़ौ। —फुलवाड़ी

६ श्याम स्तनों वाली गाय।

७ रंग विशेष की घोड़ी।

८ सारस्वत नगर के वीरवर्मन राजा का पुत्र।

लीलग—देखो 'लीलंग' (रू. भे.)

लीलगर—१ देखो 'नीलगर' (डि. को.)

उ०—१ हालो न भुवाजी वाई चालो नी भतीजी आपां लीलगरां कै चाला मोरी भुवा ए, नींद घणेरी लीलगरी का वेटा भाई, मनै लीलो डोरो रंग दै ना वीरा मेरा रै, नींद घणेरी —लो. गी.

लीलगरी – देखो 'नीलगरी'

उ०—लीलगरी का वेटा भाई, मनै लीलो डोरो रंग दैना वीरा मेरा रे, नींद घणेरी। —लो. गी.

लीलगवाहणी-सं. स्त्री. यौ. [राज. लीलग+सं. वाहनी] हंसवाहनी, सरस्वती (ह. नां. मा.)

लीलड़-सं. पु.—ऊंट का एक रोग विशेष जिसमें ऊंट का मल या विष्टा पतला हो जाता हैं।

लीलड़ी-स. स्त्री.—१ न्योहरा, खुशामद।

उ० —१ घरवाळा वासण तौ पड़ग्या कूवा में, पारकां रौ किसोक ओळभौ आयौ। धण्यां नै बुलाया, मूंता हाथ जोड़'र गिड़गिड़ाया, लीलड़ी काढी। —दसदोख

उ०—२ भुवाळी खावतौ फिरै ! घर-घर गेड़ा काटै। मिनखां नै रिरावै, लीलड़ी काढै। —दसदोख

उ०—३ ऊजळौ सुभाव, चड़्ड़ चल्लो, गांव री वेटी पण सगळां सूं गूंघटौ। सूधी गऊ रा ऊपरला दांत। किरगरांवती सी वोलै, लीलड़ी सी काढै। —दददोख

२ गहरे बैंगनी रंग का भ्रमर से कुछ वड़ा पक्षी जो फूलों की पत्तियां व पराग खाता है।

वि. वि.—यह पक्षी ग्रीष्म ऋतु में ही भारत में आता है और सर्दी प्रारंभ होते ही उष्ण देशों में चला जाता है। मादा लीलड़ी वैशाख से श्रावण तक पेड़ों की उच्चतम शाखा पर बय के नीड़ की तरह लटकता हुआ घौंसला वना कर अडे देती है।

३ देखो 'लीली' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—लीलड़ी वांधौ, भंवर जी ल्हास पै जी, कोअी सेल घरो धम (अे जी अे) साळ आप पधारो मारूजी महल में जी। —लो. गी.

लीलड़ो-सं. पु.—१ सब्जी बनामें प्रयुक्त होने वाला काला मोटा पापड़ ।
२ देखो 'नीलो' (रू. भे.)
उ०—जिण घर घोडो लीलड़ो, ऊजळ चिंती नार। तिण घर सदा ऊजासणो, दिवलै तेल न बाळ । —अग्यात

लीलणो, लीलवो-क्रि अ —नीला होना ।
उ०—थांरो मारगियो लीलांणो । घरै पधारो हो राज, म्हारा साथीड़ा रै पावस मास प्रगटियो रे, काइ धरती उगळयो भंडार ।
—पाबू जी रा पवाड़ा
लीलणहार, हारो (हारी), लीलणियो – वि. ।
लीलिओड़ो, लीलियोड़ो लील्योड़ो—भू. का. कृ. ।
लीलीजणो, लीलीजवो—भाव वा. ।

लीलपत—देखो 'लीलापत' (रू. भे.)

लीलभवाळ, लीलभुआळ, लीलभुवाळ-सं. पु.—इन्द्र, सुरपति ।
वि.—उदार, दातार ।
उ०—१ पायै छंद प्रमोद रै, सोल मात्र सविसाळ । वाखांणै अठ-रह वरण, लखपति लीलभुआळ। —ल. पिं.
उ०—२ दूजो भारमल तणो दीपक रीति रो रखपाल । लाज घण विरदाळ लाखो, भूप लीलभुवाळ । —ल. पिं.
रू. भे.—लीलाभवाळ, लीलाभुआळ, लीलाभुवाळ

लीलरी-सं. स्त्री.—सल, झुर्री ।
उ०—तेह पुरुस-जरजर हुवो जी सिथिल पड़ी छे जी काय। लीलरी पड़ी सरीर में जी चांमड़ी हाड विराय । —जयवांणी

लीलवण—देखो 'नीलवण' (रू. भे.)

लीलविलास-सं. पु.—इन्द्र, सुरपति ।
उ०—१ आगलि रही करि अरदास, जाहू आंण राउ लीलविलास। जउ साउर वडवांनल समइ, तउ कांन्हउ तुरकांनइ नमइ ।
—कां. दे. प्र.
२ समुद्र, सागर।
३ अष्ट वर्ण सहित १२ मात्रा का छंद विशेष ।
उ०—उगणत्रीस मात्रा उचित, जगण अंति पय जास । तवां इसी विधि आंटको, लखपति लीलविलास । —ल. पिं.
४ आनन्द, मंगल ।
उ०—जे विध सूं यात्रा करै, सुर नर सेवक तास । 'राजसमुद्र गुप्तगावता, अविचल लीलविलास । —वृ. स्तो.
वि.—१ लीला करने वाला ।
उ०—१ गायो रसायण लीलविलास, 'नाल्ह' कहइ सब पूरज्यो आस । रास रसायण उपजाई, गढ अजमेरां उत्तिम ठाई ।
—वी. दे.
२ दातार, उदार ।
उ०—विदणां वरहास वगसै, वधारण जसवास । कुंअर देसल तणो कारईम, वडो लीलविलास । —ल. पिं.
रू. भे.—लीलाविलास

लीलांण-सं स्त्री.—हरियाली ।

लीलांम-सं. पु. [पुर्त्त, लेलम] १ वह सार्वजनिक बिक्री जिसमें अधिक कीमत बोलने वाले को वस्तु बेची जाती है । नीलाम ।
२ इस प्रकार की चीज बेचने की क्रिया या भाव ।
रू. भे.—नीलांम, ललाम, लिलांम

लीलांमघर-सं. पु. यौ. [पुर्त्त लेलम+राज. घर] १ वह स्थान जहां पर नीलाम की जाने वाली वस्तुओं की बोली लगायी जाती है जहां वह वस्तुए रखी जाती हैं ।
रू. भे.—'नीलामघर' ।

लीलांमी-सं. स्त्री.—१ नीलाम की जाने वाली वस्तु ।
२ नीलाम करने की क्रिया या भाव ।
रू. भे.—नीलांमी ।

लीला-सं. स्त्री. [सं.] १ आनन्द, मौज ।
उ०—१ सिर, संती जिणेसर सेवत ही सुख खांण । इण भव लहै लीला पर भव पद निरवांण । —ध. व. ग्रं.
२ ऐसा कार्य जो केवल मन की उमंग से मनोरंजन के लिए किया जाय ।
उ०—लखण बत्रीस संयुक्त । बाल लीला माहे राजकुआरि दुलडिया रमै छइ । —वेलि
३ भगवान द्वारा विभिन्न अवतारों में किए गये आचरण व कार्यों का प्रदर्शन या अभिनय करना ।
ज्यूं—रांमलीला, क्रस्णलीला ।
४ रचना, बनावट ।
उ०—१ कुदरत री इण लीला सूं डरण री कांइ जरूरत ।
—फुलवाड़ी
उ०—२ हीलाकर हिणके ईला हुय आधा, लीला भगवत री लीला नहीं लाधा । —ऊ. का.
५ चरित्रगान ।
उ०—चाकर रहसूं बाग लगास्यूं नित उठि दरसण पास्यूं । ब्रंदावन की कुंज गलिन में, तेरी लीला गास्यूं । —मीरां
६ नायिका का एक भाव, चेष्टा ।
७ ईश्वरावतार द्वारा मनुष्योचित की जाने वाली क्रीडा
वि. वि.—भक्तिमार्ग के मतानुसार भगवान विभिन्न कार्य-सिद्धि हेतु या मनोरंजनार्थ अवतार धारण करके जो आचरण करते हैं उसे भगवान की लीला कहते हैं ।

उ०—१ मणि अइलोक प्रभा जग मंडित, इक पतनीव्रत घरम अखडित । कारज सुरां कर किय क्रीला, लीला समद मांनखी लीला ।
—सू. प्र.

८ विशेपक नामक छंद का दूसरा नाम ।

९ बारह मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में एक जगण होता है।

१० एक प्रकार का वर्णवृत जिसके प्रत्येक चरण में भगण तगण और एक गुरु होता है ।

११ चौबीस मात्राओं का छंद विशेष जिसमें ७+७+७+३ पर विराम होता है और अन्त में सगण होता है।

१२ हरा घास ।

उ०—हीलाकर हिरणकै ईला हुय आघा, लीला भगवत री लीला नहीं लाधा ।
—ऊ. का.

१४ निसांणी छंद का भेद विशेष जिसके प्रत्येक चरण दस गुरु और तीन लघु वर्ण हो ।

१५ पद्मराज की पत्नी जिसने अपनी पति की मृत्यु के पश्चात सरस्वती की कृपा से उसे पुनः जीवित किया ।

रू. भे.—लील ।

लीलाकरण-सं. स्त्री.—स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक ।

लीलाड़ी—देखो 'ललाट' (अल्पा., रू. भे)

उ०—पचै 'मुंदचाड़' पर 'बादरी' पीलाड़ी, कंवर रै लीलाड़ी मांय करके । हारगा बीयां सू हिलै नां हीलाड़ी, सीलाड़ी तो विनां नहीं सरकै ।
—अमरदांन लाळस

उ०—२ बा घण देई हे सीख, मिरगानैणी राज । थांरी ए लीलाड़ी ए प्यारी की पगथळी जी म्हारा राज ।
—लो. गी.

लीलाती-सं. स्त्री. [सं. लीलायतं] मनोरंजन, आनन्द ।

उ०—महा कलपवृक्ष-उल्हस पांम्यां, आव्या मांडी क्षत्रि वराह । बाल मात्र वट संपुट पौढ्या लीलाती लक्ष्मीनाह ।
—रुक्मणी मंगळ

लीलाधण-सं. पु. यौ. [सं. लीला+राज. धण] १ भगवान, ईश्वर, लीला के स्वामी ।

उ०—१ लीलाधण ग्रहे मांनुखी लीला, जगवासग वसिया जगति । पित प्रदुमन जगदीस पितामह, पोतौ अनिरुध ऊखापति ।
—वेलि

लीलाधर-सं. पु. यौ. [सं. लीला+धर] १ ईश्वर, परमेश्वर ।

उ०—१ जेह मगावूं ते जई, संभाळै तूं स्वांमि । लीलाधर ते त्याविसिइ, धीर म था तुं धांमि ।
—मा. कां. प्र.

लीलापत, लीलापति-सं. पु. यौ. [सं. लीला+पति] १ लीला स्वामी, ईश्वर ।

२ इन्द्र ।

रू. भे.—लीलपत ।

लीलापुरसोत्तम-सं. पु.—श्री कृष्ण ।

लीलावर-सं पु. यौ. [स. लीला+वर] १ लीला स्वामी, ईश्वर ।

लीलाभवाळ, लीलाभुआळ, लीलाभुवाळ—देखो 'लीलभुवाळ' (रू. भे.)

उ०—खट भाख जांण तप तेज भांण । विप्र गऊ पाळ, लीलाभुआळ ।
—र. वचनिका

लीलामय-वि. [सं.] क्रीड़ा युक्त, लीला युक्त ।

लीलावंती—१—एक वृक्ष विशेष ।

उ०—लाज लज्जाळू लक्ष्मणां, लूंगी लसन लवंगि । लीलावंती, लुंकड़ी, लाहि लवीरी संगि ।
—मा. कां. प्र.

लीलावती-सं. स्त्री.—१ प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कराचार्य की कन्या का नाम, जिसने अपने नाम पर गणित नामक पुस्तक बनायी थी ।

वि. वि.—कुछ इसे भास्कराचार्य की पत्नी भी मानते हैं ।

२ एक देवी का नाम ।

३ सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी ।

४ बत्तीस मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसमें लघु गुरु का विचार नहीं होता ।

उ०— गुरु लघु विण नियम तीस विमत्ता, लीलावती गुरु अंत कहै । जो रघुवर गावै सव सुख पावै, निभय जिकां जम ताप नहै ।
—र. ज. प्र.

लीलावर-वि.—लीला करने वाला ।

सं पु.—१ विष्णु २ श्रीकृष्ण ।

लीलाविलास – 'देखो 'लीलविलास' (रू. भे.)

लीलासंध-वि.—१ क्रीड़ायुक्त, अद्‌भुत खेल करने वाला ।

उ०—किणै न दीठौ कांनवो, सुण्यौ न लीलासंध । आप वंधाणा ऊखलै, बीजा छोडण बंध ।
—नागदमण

लीलासागर-सं. पु. यौ. [सं. लीला+सागर] लीला का समुद्र, भगवान कृष्ण ।

उ०—स्रीमद्‌भागोत स्रवण सुनी, रसना रटत हरी । मन डूवत लीलासागर में, देही प्रीत धरी ।
—मीरां

लीली साड़ी-सं. स्त्री.—१ देव स्थान पर जाते समय दुल्हा दुल्हिन को गाया जाने वाला एक लोकगीत ।

लीलोती, लीलोतरी, लीलोत्री—१ देखो 'नीलोतरी' (रू. भे.)

उ०—१ लीलोती चौवीस मांगे, गिणै न छोटी गांवड़ी । जद नीम सगळांसूं पैली, थांरो ही मुभ नावड़ी ।
—दसदेव

१ हरी घास ।

लीलौ-सं. पु.—१ हरा घास ।

उ०—हीलाकर हिरणकै ईला हुय आघा, लीला भगवत री लीला नहीं लाधा ।
—ऊ. का.

२ हरा रंग।

उ०—पांन फूल नूं जीव तू, कोमल केलि समांन। ललूड़ो अति लाडलो, लालन लीला पांन। —जयवांणी

३ देखो 'नीलो' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ लीला किम ढीलो वहै, पंथ पयाणो दूर। गोख उडीके गोरड़ी, जोबन में भरपूर। —अग्यात

उ०—२ कै लीला के कागड़ा करड़ा हरड़ा केक। मुसकी नुकरा मेटिया इसड़ा तुरंग अनेक। —पे. रू.

उ०—३ आवे कुण खड़ उपरै, दीसे किणरो डोळ। जायो लीलो जोरवर, पीळो वंवियो पोळ। —मुकनदांन खिड़ियो

उ०—४ गावे सखी वधावणा, मोत्यां भर भर थाळ। आंक दियो सिर ऊपरै, लीलो सुत लंकाळ। —मुकनदांन खिड़िया

उ०—५ सैल करण गयो सायबो, हुय लीलो असवार। कै जगळ की मिरगल्यां, म्हारो लियो छै स्यांम विलमाय। —लो. गी.

उ०—६ आवूं लीलो ऊपरा, लेवूं हाथ लगांम।
—मुकनदांन खिड़ियो

उ०—७ लीलो घोड़ी हांसली, अलवेलो, असवार। कड़चां कटारी, वांकड़ी, सोरठड़ी तरवार। —लो. गी.

उ०—८ उणहीज वंदूकां गिलोलां सूं मुरगाव्यांनै चोटां कीजै छै। तमासो हुयनै रह्यो छै। सिकार मुरगावी अेकठी कर तळावसूं वाहर पधारजै छै लीलोपोतां दूर कीजै छै।
—गंगेव नींवावतरो दो-पहरो

(स्त्री. लीली)

लीलोचेर—देखो 'नीलोचेर'

उ०—वींदणी अपूठी होय मूंडो उघाड़ वैठगी। ऊंचो जोयो। पतळी-पतळी लीलोचेर लड़ाभूम सांगरियां ई सांगरियां।
—फुलवाड़ी

लोवड़ो—देखो 'नीम' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—साकर सेलडी नो स्वाद तजी नै, कडवो लीवडो घोळयां रे। चांदा सूरज नूं तेज तजीनै, आंगिया संगा थे प्रीत जोड़चां रे।
—मीरां

लीवलीण—देखो 'लयलीन' (रू. भे.)

उ०—हरिजन हरि को लाडलो लीवणीण न दूजा लाड। भूठे भामरभोर में, उळभ रहे नर अंध। —अनुभववांणी

लीह—देखो 'लीक' (रू. भे.)

उ०—१ लीह नदी छाडण लगी लागा छोळ उलार। वागा कांमण वाहरा, लागा गावण मलार। —र. हमीर

उ०—२ लीह नहीं लज्जा नहीं, नहीं रंग नहि राग। ते मांणस इम छंडियै, जिम अंधारै नाग। —अग्यात

उ०—३ अणवीह तूं नरसींह ओपै, लीह संतां नकूं लोपै। ईस वात अघात हाथ, ब्रवण रंकां आथ। —र. ज. प्र.

लीहटी—देखो 'लीकटी' (रू. भे.)

उ०—पंथी हाथ संदेसड़उ, धण विललंती देह। पगसूं काढइ लीहटी, उर आंसूआं भरेह। —ढो. मा.

लीहवणो, लीहववो—क्रि. स.—झींगुर का ध्वनि करना।

उ०—१ भींमरी भमती लीहवइ, स्रांवण नी चकचाळ। उहां सिर तिहां अमीयमइ, विरहणीआं मनि काळ। —मा. कां. प्र.

लुंकड़ी, लुंकडी—१ एक वृक्ष विशेष।

उ०—लाज-लज्जालू लक्ष्मणा, लूंणी लसन लवंग। लीलावंती लुंक्डी, लाहि लवीरी सगि। —मा. कां. प्र.

२ देखो 'लांकी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—घेरै सिकार मांहि ससा लुंकड़ी सीह गोभ स्याळ रींछ अनेक हिरण आदि दे अर भेळा हुया छै। —द. वि.

लुंकारियो—देखो 'लूंकार' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—वठै अघवूढी सी एक धिरांणी, लाल लुंकारियो ओढ्यां चूलै कनै बैठी काचर छोलै है। —दसदोख

लुंकालु—वि. कृश, पतला।

उ०—स्वांन तणी जिह्वा समांन पाय तल कूरमोन्नत चरण रक्तो त्पल सद्रश नख, हंसगति, वट्ठी रोमराइ, गंभीर नाभि मध्यदेसि चफली, ईट सद्रस कटि, लुंकालु पेट, सुवरण्ण सद्रस सरीर कांति।
—व. स.

लुंगाड़, लुंगाड़ो—वि.—वदमाश, धूर्त, चालाक।

लुंगी—देखो 'लूंगी' (रू. भे.)

उ०—१ ओथि पातिसाह जी लघु-संका की। करि अर लुंगी पहिरी पहिर अर नदि माहै पधारिया। —द. वि.

उ०—२ कचू नीलक को कीयो, उपरि चीर उढाइ। लिंघो लुंगी भांति को, सुंदर नें वहोत सुहाय। —व. स.

लुंचन—सं स्त्री. [सं. लुंचनम्] बाल उखाड़ने या नोचने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—लोच

लुंचित—वि.—१ नोंचा हुआ।

उ०—दाड़िमी वीज विसतरिया दीसै निउंछावरी नांखिया नग। चरणे लुंचित खग फळ चूंबित, मधु मुंचंति सीचति मग।
—वेलि

२ उखेड़ा हुआ। ३ काटा हुआ।

लुंचियोड़ो—भू. का. कृ.—१ उखेड़ा हुआ। २ काटा हुआ। ३ नोंचा हुआ।

(स्त्री. लुंचियोड़ी)

लुंछणो, लुंछवो—देखो 'लूंछणो, लूंछवो' (रू. भे.)

उ०—खीरोदक लुंछणडइं करी राजा, नाखइं चिहूं दिसि फिरी तिणि रसि रंजिउ भणइ नरेस, मूंकड नाच हुआ आदेस।
—हीराणंद सूरि

लुंजी—देखो 'लूंजी' (रू. भे.)

उ०—फीणा ती वाव्या वनड़ा लुंजी री लचको इसड़ो कलेवो थारी माताजी करावै।
—लो. गी.

लुंठक-वि.—लुटेरा।

उ०—प्रहार पड़िया लग्ग मो, लुंठक पड़िया लग्ग। मह पड़ पांणि न मांगियो, मर मर ले स्रग मग्ग।
—रेवतसिंह भाटी

लुंठि, लुंठी-स. स्त्री.—१-३६ प्रकार के दडायुधों में से एक।

उ०—१ चक्र धनुस वज्र खङ्ग क्रपांणी तोमर कुंत त्रिसूल सक्ति पासु मुग्दर मसिका भल्ल भिंडमाल गुर्ज लुंठि गदा संख परसु पटसु यस्टि।
—व. स.

२ घोड़े के लोटने की क्रिया।

लुंणणो, लुंणवो—देखो 'लुलणो, लुलवो' (रू. भे.)

उ०—जां वाह्यो तांही लुंण्यो विण वाह्यो न लुणाय।
—विल्होजी

लुंणणहार, हारो (हारी), लुंणणियो—वि.।
लुंणओड़ो, लुंणियोड़ो, लुंण्योड़ो—भू. का. कृ.।
लुंणीजणो, लुंणीजवो—कर्म वा.।

लुंणाणो, लुंणावो—देखो 'लुणाणो, लुणावो' (रू. भे.)

उ०—जां वाह्यो तांही लुण्यो विण वाह्यो न लुंणाय।
—विल्होजी

लुंणाणहार, हारो (हारी), लुंणाणियो—वि.।
लुंणायोड़ो—भू. का. कृ.।
लुंणावीजणो, लुंणावीजवो—कर्म वा.।

लुंणायोड़ो-भू. का. कृ.—१ फसल कटवाई हुई।

(स्त्री. लुंणायोड़ी)

लुंणावणो, लुंणाववो—देखो 'लुणाणो, लुणावो' (रू. भे.)

लुंणावणहार, हारो (हारी), लुंणावणियो—वि.।
लुंणावियोड़ो, लुंणाव्योड़ो—भू. का. कृ.।
लुंणावीजणो, लुंणावीजवो—कर्म वा.।

लुंणावियोड़ो—देखो 'लुंणायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लुंणावियोड़ी)

लुंणियोड़ो—देखो 'लुणियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री लुंणियोड़ी)

लुंपट—देखो 'लंपट' (रू. भे.)

उ०—संक्रम सुभ स्रस्टी द्रस्टी लुभ देती। लुंपट संपुट लरख घूंघट पट लेती। लुळ कर लकुटी ले भ्रकुटी सळ लाती। मूखी वाघण जी भ्रकुटी भळकाती।
ऊ. का.

लुंवक-सं. पु.—१ फलित ज्योतिष के २८ योगों में से एक योग।

लुंवझुंवाळी—१ देखो 'लूंवलूंवाळी' (रू. भे.)

लुंवणो, लुंववो—देखो 'लूंवणो, लूंववो' (रू. भे.)

उ०—१ भरिया रंग सुरंग भाद्रवइ, लुंबीया ताइ अंबर लगस। अहर डसण ओपिया अनोपम, रसण जुडीया तवोळ रस।
—महादेव पारवती री वेळि

उ०—२ छिलता पहाड़ २ पाखती, अधर झरंतां चरण धरइ। अंब तणां अख लुंव आविया, कुंजर विच सारसी करइ।
—महादेव पारवती री वेळि

लुंवणहार, हारो (हारी), लुंवणियो—वि.।
लुंविओड़ो, लुंवियोड़ो, लुंव्योड़ो—भू. का. कृ.।
लुंवीजणो, लुंवीजवो—भाव वा.।

लुंवाळो, लुंवालो-वि. (स्त्री. लुंवाळी) १ आरामदायक।

उ०—कठै प्रीत सावां तणी, कठै रांण्यां री हेज जी। अठै धरती सोवणो, कठै लुंवालो सेज जी।
—जयवांणी

२ झूमा हुआ।

३ सूत या रेशम के धागों के साथ पिरोए हुए लाल व मोतियों से युक्त गुच्छा।

रू. भे.—लूंवाळो।

लुंवनी-सं. स्त्री [सं] १ कपिलवस्तु के पास का एक वन जहां गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे।

लुंवेक-सं. पु.—वार व नक्षत्र सम्बन्धी बनने वाले २८ योगों में से पद्रहवां योग।

लुंमणो, लुंमवो—देखो 'लूंवणो, लूंववो' (रू. भे.)

उ०—रेसमी गुल व गेंद केवड़ा समुहेह छै। और लीलडवर तरोवर पर वेलिडियां लुंम रहे छै।
—वगसीरांम प्रोहित री वात

लुंमणहार, हारो (हारी), लुंमणियो—वि.।
लुंमिओड़ो, लुंमियोड़ो, लुंम्योड़ो—भू. का. कृ.।
लुंमीजणो, लुंमीजवो—भाव वा.।

लुंमियोड़ो—देखो 'लुंवियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री लुंमियोड़ी)

लु-सं. स्त्री—१ पृथ्वी। (एका.)

सं पु—२ माली।
३ काटना।
४ संसार।
वि.—भक्षण करने वाला।

लुआव-सं. पु. [अ.] १—चिपचिपा पदार्थ।

लुआवदार-वि. [अ +फा.] १ लेसदार, चिपचिपा।

लुआरियो, लुआरो-स. पु. (स्त्री. लुआरी) १ गाय का छोटा बच्चा।
२ देखो 'नुहार' (अल्पा., रू. भे.)

लुआळ-वि.—उष्ण ज्वाला की लपट।
उ०—कहर वाज लोहाळ लुआळ झाटक फटक, तुटतां वराळां जोम तायै। अरक ग्रीखम तणै तेज तपीयो 'अजन' मेछ पाळागरां तणै माथै। —नाथो मांदू

लुकंजण-सं. पु.—एक प्रकार का कल्पित अंजन जिसको आँखों में डालने से डालने वाले को सब कुछ दिखता है, परन्तु उसे कोई नहीं देख सकता।

लुकंदर—१ देखो 'लकूंदर' (रू. भे.)

लुक-वि.—१ तेज प्रज्वलित।
२ लुप्त, छिपा हुआ। (अ. मा.)

लुकड़ी—देखो 'लांकी' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ वाट काटे मंजारड़ी, सांमही छींक हणइ कपाळ। आडी लुकड़ी आवज्यो, गोरड़ी कउ प्रीय पाछो हो वाळ। —वी. दे.

लुकट-सं. पु. [सं. लकुट] १ डंडा, लकड़ी।
२ वांसुरी।

लुकणाडाई-सं. स्त्री.—वच्चों का एक देशी खेल, जिसमें एक दल दूसरे छिपे हुए दल की तलाश करता है।

लुकणो, लुकवो-क्रि. अ. [सं. लुक] १ किसी गुप्त स्थान में रहना या होना।
उ०—१ वांरै विस्वास रा सगळा असवार आप आपरो ठांणो भेल्यां लुक्योड़ा वैठा हा। —फुलवाड़ी
उ०—२ करणो फुल्यो नीं समावै है, मन मन में घणो राजी हुवै है। आखा कांम आपरी कोटड़ी में लुक-लुक करै है। —दसदोख
२ किसी वस्तु की ओट या आड़ में आने से दिखाई न देना।
उ०—१ इण सारू म्हारा गाघरा रै ओळै लुक जाओ नहीं तो वैरी रो कांही विसवास अठै आयनें मार नांखै। —वी. स. टी.
उ०—१ रातां हव थोड़ी रही, वातां वह निसतार। सातां उठ सहेलियां, लुको कनातां लार। —मयारांम दरजी री वात
२ अदृश्य होना, मिटना।
उ०—१ तेल-सावण लगावै, वंग-सलाजीत खावै, अर गोटा पीवै है तो ही बुढापो-वैरी लुक्यो नीं चावै। —दसदोख
उ०—२ इण विध आपरै पगां में लोगां नै माथो निवाता देख्या, तो कंवर रो लुक्योड़ो जोस पाछो वावड़ियो। —फुलवाड़ी
उ०—३ दिवलो वडो व्हैतांई जिण भांत लुकयोड़ो अंधारो सागै ई प्रगट व्है जावै, उणी भांत आ सुणतांई कंवर रो मूंडो काळो धाक पड़ग्यो। —फुलवाड़ी
४ वंद होना, मिलना। (पलक का)
उ०—भिड़िया रत रण कुच भड़ां, दुरसहि रीझ दियेह। लुकी पलक तिण लाजहूं, हव फिर धरत हियेह। —र. हमीर
लुकणहार, हारो (हारी), लुकणियो—वि०।
लुकिओड़ो, लुकियोड़ो, लुक्योड़ो—भू० का० कृ०।
लुकीजणो, लुकीजवो—भाव वा०।
लुक्कणो, लुक्कवो—रू० भे०।

लुकथुको—देखो 'लुगथुगो' (रू. भे.)

लुकमांन-सं. पु. [अ. लुक्मान] १ कुरआन में वर्णित एक प्रसिद्ध वैद्य व वैज्ञानिक।
उ०—कीधी लुकमांन स्रोहतां अवाजा नाळवाळी कुहा, छोहामाळ वाळी गुंजा ऊतारै छाकोट। तसां प्रथीनाथ सोरभखी नराताळ-वाळी, चाड छाती छुटै प्रळै काळ वाळी चोट। —चुंडो जी वारहठ
२ तोप।
उ०—इतने लुकमांन डकार लयं, उडि धूम धरा असमांन गयं। चहुं ओर नरुकन के दळयं, ऊलटै मनूं सिंधु हिलोर लयं। —ला. रा.
३ वंदूक।

लुकमींचणी-सं. स्त्री.—१ वच्चों द्वारा खेला जाने वाला आँख-मिचौनी का खेल।
उ०—१ इण सासरियै भाई रै साथै पै'ली वार अठै आई तो म्हनै ओ लखायो के म्हैं लुकमींचणी री रमत रमूं हूं। —फुलवाड़ी
उ०—२ साथणियां री भूलरो भाई-भतीजा नाडी री पाळ, गीत, गट्टा, ढूलियां झुरणी लुकमींचणी—ऐ सगळा सुख छिटकाय इण धणी री हाथ झाल्यो। मां रो खोळो छोड पराया घर री हर करी। —फुलवाड़ी
रू. भे.—लुकलुकमींचणी।

लुकमो-सं. पु. [अ. लुक्मः] १ ग्रास, निवाला।
उ०—१ झगड़ां तन भुकमाह, सोख न लुकमा साझिया। तुकमां पर तुकमाह, पतसाही पावै 'पता'। —जुगतीदांन देथो
उ०—२ ले लीघा लुकमाह, अकल सला अवसांण रा। तिण पुळ रा तुकमाह, पावै अव लग तूं 'पता'। —जुगतीदांन देथो

लुकम्मीनाळ—देखो 'लुकमांन' (२)

उ०—कड़क्कै लुकम्मीनाळां भड़क्कै गिरंद काळा, सोह सूरां फड़क्कै फींफरा सांडीस। पत्रांजे खड़क्कै पंगी धडक्कै कायरां प्रांण, वड़क्कै उरेव छड़ां रड़क्कै भू सीस। —चीमनजी

लुकलुकमींचणी—देखो 'लुकमींचणी' (रू. भे.)

उ०—तिण वखत इण भांतरी समै है, पड़तालां पड़ती जमी नीठ खमै है। जठै वीज जिका आभानूं घमै है, किनां लुकलुकमींचणी री रांमत रमै हैं। —र. हमीर

लुकवेस-सं. पु.—कुंज (अ. मा.)

लुकसाज-सं. पु.—चमकाया व सिझाया हुआ विशेष प्रकार का चमड़ा।

लुकाड़णो, लुकाड़बो—देखो 'लुकाणो, लुकाबो' (रू. भे.)

लुकाड़णहार, हारो (हारी), लुकाड़णियो—वि०।
लुकाड़िओड़ो, लुकाड़ियोड़ो, लुकाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।
लुकाड़ीजणो, लुकाड़ीजबो—कर्म वा०।

लुकाड़ियोड़ो—देखो 'लुकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लुकाड़ियोड़ी)

लुकाणो, लुकाबो-क्रि. स.—१ किसी गुप्त स्थान में रखना।

उ०—सात ताळा जड़्यां ऊंडोड़ा भंवारा में मजूस लुकायोड़ो है। —फुलवाड़ी

२ किसी वस्तु की आड़ या ओट में छिपाना।
उ०—म्हारी मरजी रा खास विस्वासी असवारां नै पांच-पांच, सात-सात री टोळियां वणाय नाकै रै नाकै ठौड़ ठौड़ लुकाय नै बैठांण दूंला। —फुलवाड़ी

३ अदृश्य करना, मिटाना।

४ गुप्त रखना।
पछै मासी उणनै डोकरा डोकरी रै जीमण वाळी सगळी बात मांडनै बताई। उछांट घुराघुर री बात उण सूं नीं लुकाई। —फुलवाड़ी

लुकाणहार, हारो (हारी), लुकाणियो—वि०।
लुकायोड़ो—भू० का० कृ०।
लुकाईजणो, लुकाईजबो—कर्म वा०।
लकोणो, लकोबो, लकोवणो, लकोवबो, लुकाड़णो, लुकाड़बो, लुकावणो, लुकावबो—रू० भे०।

लुकायोड़ो-भू. का. कृ.—१ किसी गुप्त स्थान में रखा हुआ। २ किसी वस्तु की आड या ओट में छिपाया हुआ। ३ अदृश्य किया हुआ, मिटाया हुआ। ४ गुप्त रखा हुआ।
(स्त्री. लुकायोड़ी)

लुकावणो, लुकावबो—लुकाणो, लुकाबो' (रू. भे.)

उ०—१ मिनख री भूख आगै इत्ती लांठी दुनियां में डाढाळ नै आपरी जीव लुकावण री ई ठौड़ नीं लाधी। —फुलवाड़ी

उ०—२ डोकरी कह्यौ—भला आदमियां, आ भीड़वाळी वात वळै कांई है। ओळियाकड़ा, बातां लुकावण री थांरी आ कांई कुवांण है? —फुलवाड़ी

उ०—३ म्हैं म्हारा मन सूं साची वात कीकर लुकावतो। —फुलवाड़ी

लुकावणहार, हारो (हारी), लुकावणियो—वि०।
लुकाविओड़ो, लुकावियोड़ो, लुकाव्योड़ो—भू० का० कृ०।
लुकावीजणो, लुकावीजबो—कर्म वा०।

लुकावियोड़ो—देखो 'लुकायोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. लुकावियोड़ी)

लुकियोड़ो-भू. का. कृ.—१ किसी गुप्त स्थान में रहा हुआ। २ किसी वस्तु की आड़ या ओट में आने से दिखाई न दिया हुआ। ३ अदृश्य हुवा हुआ, मिटा हुआ।
(स्त्री. लुकियोड़ी)

लुक्कणो, लुक्कबो—देखो 'लुकणो, लुकबो' (रू. भे.)

उ०—गूदळ व्योम ढंकै गरद, रवि लुक्कै घूंआं रवण। आलम्म पयांणो एण पर, कोप तेण झल्लै कवण। —रा. रू.

उ०—२ सीह किसी साराह सरभ रव सुणै सळक्कै। एकळ की ओपमा, लड़ै भागै थह लुक्कै। —रा. रू.

लुक्कणहार, हारो (हारी), लुक्कणियो—वि०।
लुक्किओड़ो, लुक्कियोड़ो, लुक्क्योड़ो—भू० का० कृ०।
लुक्कीजणो, लुक्कीजबो—भाव वा०।

लुक्कियोड़ो—देखो 'लुकियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लुक्कियोड़ी)

लुक्ख, लुक्खो, लुख—देखो 'लूखो' (रू. भे.)

उ०—१ आप निमित्त कढियो वाहिर, अयथा न काढ्यो बहार। तीजै खातै ऊबरै, पंत वलै लुख आहार। —जयवांणी

उ०—२ लुख आहारी निकंचनी गरव स्लाघावंत। अवूज पेट भरा कह्या, वलि वलि भगवंत। —जयवांणी

लुखो-वि.—देखो 'लूखो' (रू. भे.)

उ०—१ लूंण अलूंणो घ्रत लुखो, सील तेज पावक सरस। मव नाथ सिद्ध पूछै 'अलू', जोग स्रंगार क वीर रस। —अल्लूनाथ जी कवियो

लुगड़ो—देखो 'लूगड़ो' (रू. भे.)

लुगड़ियो—देखो 'लूगड़ो' (अल्पा., रू. भे.)

लुगडो—देखो 'लूगड़ो' (रू. भे.)

लुगथुगो–वि. (स्त्री. लुगथुगी) कान्तिहीन, शोभाहीन।

उ०—पण राजाजी रै डर री ई पार नीं ही। वां री लुगथुगो मूंडो किणी री निजर सूं ई छांनी नीं रह्यो। —फुलवाड़ी

२ कम पानी की या लचपची सब्जी।

रू भे.—लुकथुको।

लुगदी–सं. स्त्री.—पदार्थ विशेष को सिला पर किसी तरल पदार्थ के साथ बांट कर या पीस कर बनाया हुआ लौंदा।

मुहा.—कूट'र लुगदी करणी=बुरी तरह पीटना।

लुगदी लागणी=किसी को कटु अप्रिय वचन कहना।

मह.—लुगदो।

लुगदो–सं. पु.—देखो 'लुगदी' (मह., रू. भे.)

लुगाई–सं. स्त्री.—१ स्त्री, औरत।

उ०—१ लुगाई रै रूप री अर पुरख रै प्रेम री आ इज तौ छेहली मरजादा। —फुलवाड़ी

उ०—२ गाळ लुगायां गावही, नर मुख उचत न गाळ। अमल गाळ मनावर कर, का सुभ वचन उगाळ। —बां. दा.

२ पत्नी।

उ०—पूरा सौ रिपियां री मेळ। दोनूं लोग लुगायां रै हरख री पार नीं। —फुलवाड़ी

रू. भे.—लोगाई

अल्पा.,—लुगावड़ी, लोगावड़ी

लुगावड़ी—देखो 'लुगाई' (अल्पा., रू. भे.)

लुघ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—मैं कब लुघ दीरघता जांनि, का मुझि मांन वडाई ठांनि। मैं कब साझै असट जोग, मैं कब नांनां करत भोग। —अनुभववांणी

लुघता—देखो 'लघुता' (रू. भे.)

उ०—बडा होंन कुं सब खसै, लुघता विरळा कोय। हरीया लुघता वाहिरो, रांम न परसन होय। —अनुबववांणी

लुघवी—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—मुहरि अंति लुघवी गुरभक्ति, वार चिआर विनांण। पय सोलह आखर परठि, आखि रूप इहनांण। —ल. पिं.

लुघसंधांनिक–सं. पु.—१ तीर चलाने में दक्ष, कुशल।

उ०–तेहे घोडे किस्या किस्या खिम्री चडीया। पंचवीस वरस ऊपहरा। पंचास वरस मांहि। लुघसंधांनीक विराघिवीर। —कां. दे. प्र.

लुघु—देखो 'लघु' (रू. भे.)

लुड़णो, लुड़वो–क्रि. अ.—मुड़ना, हटना।

उ०—इण दिस 'अजन' लियां दळ आयो, सांभर वाळै कोट संभायो। वयौं मुंहमेळ प्रथम दिन कीधो, लुड़ मुड़ गयो कोट निठ लीधो। —रा. रू.

लुड़कणो, लुड़कवो—देखो लुढकणो, लुढकवो' (रू. भे.)

लुड़कणहार, हारो (हारी), लुड़कणियो—वि०।

लुड़किओड़ो, लुड़कियोड़ो, लुड़क्योड़ो—भू० का० कृ०।

लुड़कीजणो, लुड़कीजवो—भाव वा०।

लुड़काड़णो, लुड़काड़वो—देखो 'लुढकाणो, लुढकावो' (रू. भे.)

लुड़काणहार, हारो (हारी), लुड़काणियो—वि०।

लुड़काड़िओड़ो, लुड़काड़ियोड़ो, लुड़काड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

लुड़काड़ीजणो, लुड़काड़ीजवो—कर्म वा०।

लुड़काड़ियोड़ो—देखो 'लुढकायोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. लुड़काड़ियोड़ी)

लुड़काणो, लुड़कावो—देखो 'लुढकाणो, लुढकावो' (रू. भे.)

लुड़काणहार, हारो (हारी), लुड़काणियो—वि०।

लुड़कायोड़ो—भू० का० कृ०।

लुड़काईजणो, लुड़काईजवो—कर्म वा०।

लुड़कावणो, लुड़कावबो—देखो 'लुढकाणो, लुढकावो' (रू. भे.)

लुड़कावणहार, हारो (हारी), लुड़कावणियो—वि०।

लुड़काविओड़ो, लुड़कावियोड़ो, लुड़याव्योड़ो—भू० का० कृ०।

लुड़कावीजणो, लुड़कावीजवो—कर्म वा०।

लुड़कावियोड़ो—देखो 'लुढकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लुड़कावियोड़ी)

लुड़कियोड़ो—देखो 'लुढकियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लुड़कियोड़ी)

लुड़की–सं. स्त्री.—दही में बनी हुई भांग।

लुड़खुड़ाणो, लुड़खुड़ावो—देखो 'लड़खड़ाणो, लड़खड़ावो' (रू. भे.)

लुड़खुड़ाणहार, हारो (हारी), लुड़खुड़ाणियो—वि०।

लुड़खुड़ायोड़ो—भू० का० कृ०।

लुड़खुड़ाईजणो, लुड़खुड़ाईजवो—भाव वा०।

लुड़खुड़ायोड़ो—देखो 'लड़खड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लुड़खुड़ायोड़ी)

लुड़णो, लुड़वो—देखो 'लुढणो, लुढवो' (रू. भे.)

लुड़णहार, हारो (हारी), लुड़णियो—वि०।

लुड़िओड़ो, लुड़ियोड़ो, लुड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

लुड़ीजणो, लुड़ीजबो—भाव वा० ।

लुड़ाड़णो, लुड़ाड़बो—देखो 'लुढाणो, लुढावो' (रू. भे.)

लुड़ाड़णहार, हारो (हारी), लुड़ाड़णियो—वि० ।

लुड़ाड़िओड़ो, लुड़ाड़ियोड़ो, लुड़ाड़योड़ो—भू० का० कृ० ।

लुड़ाड़ीजणो, लुड़ाड़ीजबो—कर्म वा० ।

लुड़ाड़ियोड़ो—देखो 'लुढायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लुड़ाड़ियोड़ी)

लुड़ाणो, लुड़ावो—देखो 'लुढाणो, लुढावो' (रू. भे.)

उ०—चित गयो चहुं चालि दिस, एक पड़ी अणराय । हरीया वाड़ी फूल ज्युं, लेग्यो पौंण लुड़ाय —अनुभववांणी

लुड़ाणहार, हारो (हारी), लुड़ाणियो—वि० ।

लुड़ायोड़ो—भू० का० कृ० ।

लुड़ाईजणो, लुड़ाईजबो—कर्म वा० ।

लुड़ायोड़ो—देखो 'लुढायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लुड़ायोड़ी)

लुड़ियोड़ो—देखो 'लुढियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लुड़ियोड़ी)

लुड़ींद–वि.—प्रिय, प्यारा ।

उ०—अट्ठे पहर अरस यें, लुड़ींदा आहीन । दादू पसे तिन्न कें, असा खबर डीन्ह । —दादूबांणी

लुचाई, लुच्चाई—सं. स्त्री.—१ धूर्तता । २ नीचता । ३ कमीनापन ।

उ०—पण एक वात कांनजी रै वडी जोर की ही, वा आ कै वांनै लुच्चाई लफगाई अर चोरी जारी सूं वड़ी चिड़ ही ।

लुच्चो–वि. [सं. लुंच्] (स्त्री. लुच्ची) १ दुराचारी, कुमार्गी, लंपट ।

उ०—लुच्चा ललचावै लालच धन लागै, लोचण जळ मोचण सोचण खिण लागै । —ऊ. का.

२ चोर, उचक्का ।

उ०—जिण भांत जहर सूं जहर दबै उणी ज भांत ए चोर गुंडा पुलिस सूं दबै । पुलिस जे मारकूट नीं करै तो ए लुच्चा लफंगा आभै रै फांडो कर दे । —अमर चूनड़ी

३ दुष्ट, कमीना ।

४ ढोंगी, पाखंडी, लफंगा ।

लुटकणियो–सं. पु.—किसी किसी बकरी के गर्दन के नीचे लटकने वाला अंग ।

लुटणो, लुटबो–क्रि. अ.—१ लुट जाना, लूटा जाना ।

उ०–उघड़ी छित्र अदभूत, लुटी छित्र लाज री । नोबत घुरी निहंग, मदन महाराज री । —र. हमीर

२ किसी प्रिय वस्तु का हाथ से निकल जाना ।

३ चोर या डाकू द्वारा लूटा जाना ।

४ परेशान होना, बरबाद होना ।

उ०—तलवां सूं लुटता तिकै मेट करी मां-बाप । कासीदी कोसां मुजब, 'पातल' रो परताप । —जुगतीदान देथो

५ शयन करना ।

उ०—जद कूख में लुटिया वेटा ई धावळा रा गुलाम व्हैगा तो श्री जैमतिया क्यूं म्हारो घ्यांन राखै । —फुलवाड़ी

५ उपभोग करना, आनंद लेना, रसास्वादन करना ।

उ०—२ इण भात मदन रस लुटिया, छछोहा छूटिया । गुलाब कळी विकसी, भंवर गुंजार निकसी । —र. हमीर

६ देखो 'लोटणो, लोटबो' (रू. भे.)

उ०—१ मा री आदेस सुणतांई छवूं वेटा मलापता आय उण रै पगा में लुटण लागा । —फुलवाड़ी

उ०—२ परम गुरा के सरण में रहस्यां, परणांम करा लुटकी । मीरां के प्रभू गिरधरनागर जनम मरण सूं छुटकी । —मीरां

लुटणहार, हारो (हारी), लुटणियो—वि० ।

लुटिओड़ो, लुटियोड़ो, लुटयोड़ो—भू० का० कृ० ।

लुटीजणो, लुटीजबो—भाव वा० ।

लुट्टणो, लुट्टबो—रू० भे० ।

लुटाणो, लुटावो–क्रि. स. (लुटणो क्रि. का प्रे. रू.) १ किसी को ऐसी परिस्थिति में डालना कि वह लूटा जाय ।

२ अपनी वस्तु व माल को दूसरों के समक्ष इस प्रकार डाल देना कि वह उसका अपने मनमाने ढंग से अधिकार कर सके, प्रयोग कर सके ।

३ बरबाद करना, अपव्यय करना ।

४ किसी वस्तु को सस्ती कीमत पर बेचना ।

५ दिल खोल कर दान देना, बांटना ।

उ०—रुपिया मुहर लुटाई रात, भगत हुआ सगळा परभात । निरख निरख दळ सिमरै-नांम, राधा गोविंद सीतारांम । —रा. रू.

६ लुटने में प्रवृत्त करना ।

७ बच्चे को देवता के चरणों में लुटाना ।

८ जमीन पर लोट-पोट कराना ।

लुटाणहार, हारो (हारी), लुटाणियो—वि० ।

लुटायोड़ो—भू० का० कृ० ।

लुटाईजणो, लुटाईजबो—कर्म वा० ।

लुटावणो, लुटावबो—रू० भे० ।

लुटायोड़ो–भू का. कृ.—१ किसी को ऐसी स्थिति में किया हुआ कि वह लुट जाय. २ अपनी वस्तु या सामान दूसरे के समक्ष इस

प्रकार रखा हुआ कि वे मनमाने ढंग से उसको प्रयोग में ले. ३ अपव्यय किया हुआ, वर्बाद किया हुआ. ४ सस्ती कीमत पर औरों को अपनी वस्तु दी हुई. ५ खुले दिल से बांटा हुआ, दान दिया हुआ ६ लोटने में प्रवृत किया हुआ. ७ छोटे बच्चों को देवताओं के समक्ष लुटाया हुआ, ८ जमीन पर लोट-पोट कराया हुआ.

(स्त्री. लुटायोड़ी)

लुटावणौ, लुटाववौ—देखो लुटाणौ, लुटाबो' (रू. भे.)

उ०—घर घर ओघट घाट, दाट निस दीह कुटावै। दिल नहि लेवै दाट, लाट गज हाट लुटावै। —ऊ का.

लुटावणहार, हारौ (हारी), **लुटावणियौ**—वि०।

लुटाविओड़ौ, लुटावियोड़ौ, लुटाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लुटावीजणौ, लुटावीजवौ—कर्म वा०।

लुटावियोड़ौ—देखो 'लुटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुटावियोड़ी)

लुटियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ वह अवस्था या स्थिति जिसमे कोई प्रिय वस्तु हाथ से छीनी गई हो. २ चोर या डाकू द्वारा लूटा हुआ. ३ अपव्यय किया हुआ, वर्बाद किया हुआ. ४ अपनी वस्तु किसी को सस्ती कीमत पर दी हुई. ५ खुले दिल से बांटा हुआ, दान दिया हुआ।

६ देखो 'लोटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुटियोड़ी)

लुटेरौ-वि.—वह जो लूट पाट करता हो, डाकू, बागी।

लुट्टणौ, लुट्टबौ—देखो 'लुटणौ, लुटवौ' (रू. भे)

उ०—स्रोण के फुंहारे आसमांन को छुटे, लगो घख जमी पर लोटण ज्यूं लुट्टै। ऐसे किसवूंका हुन्नर करि मुजरे को आवै। कड़े सूंने की गुरज इनांमूं में पावै। —सू. प्र.

लुट्टणहार, हारौ (हारी), **लुट्टणियौ**—वि.।

लुट्टिओड़ौ, लुट्टियोड़ौ, लुट्टयोड़ौ—भू. का. कृ.।

लुट्टीजणौ, लुट्टीजवौ—भाव वा.।

लुट्टियोड़ौ—देखो 'लुटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुट्टियोड़ी)

लुडणौ, लुडवौ—देखो 'लुढणौ, लुढवौ' (रू. भे.)

उ०—लै मुख उडत नाग जिम लुडियौ, श्री सिव सिंघल दीप दिस चढियौ। दीप सिंघल पदमण दरसाई, आकरखण मंत्र पढै उडाई। —सू. प्र.

लुडणहार, हारौ (हारी), **लुडणियौ**—वि.।

लुडिओड़ौ, लुडियोड़ौ, लुड्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लुडीजणौ लुडीजवौ—भाव-वा.।

लुडियोड़ौ—देखो 'लुढियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुडियोड़ी)

लुढकणौ, लुढकवौ-क्रि अ.—१ गेंद की तरह वरावर ऊपर नीचे चक्कर खाते हुए नीचे गिरना।

ज्यूं—डूंगर माथै सूं भाटो लुढकणौ।

२ गुड़क जाना।

३ मर जाना।

४ परीक्षा में असफल होना।

लुढकणहार, हारौ (हारी), **लुढकणियौ**—वि.।

लुढकिओड़ौ, लुढकियोड़ौ, लुढक्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लुढकीजणौ, लुढकीजवौ—भाव वा.।

लढकणौ, लढकबौ, लुड़कणौ, लुड़कबौ—रू. भे.।

लुढकाड़णौ, लुढकाड़वौ—देखो 'लुढकाणौ, लुढकावौ' (रू. भे.)

लुढकाड़णहार, हारौ (हारी), **लुढकाड़णियौ**—वि.।

लुढकाड़िओड़ौ, लुढकाड़ियोड़ौ, लुढकाड़्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लुढकाड़ीजणौ, लुढकाड़ीजवौ—कर्म वा.।

लुढकाड़ियोड़ौ—देखो 'लुढकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुढकाड़ियोड़ी)

लुढकाणौ, लुढकावौ-क्रि. स.—१ किसी को इस प्रकार चलाना या गति देना कि वह गेंद की भांति चक्कर खाता हुआ नीचे चला जाय।

२ गुड़काना, लुढकाना।

३ मराना।

४ परीक्षा में असफल कराना।

लुढकाणहार, हारौ (हारी), **लुढकाणियौ**—वि.।

लुढकायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लुढकाईजणौ, लुढकाईजवौ—कर्म वा.।

लुड़काड़णौ, लुड़काड़वौ, लुड़काणौ, लुड़कावौ, लुढकाड़णौ, लुढकाड़वौ, लुढकावणौ, लुढकाववौ—रू. भे.।

लुढकायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ इस प्रकार चलाया या गति दिया हुआ कि वह गेंद की तरह चक्कर लगाता चला गया हो. २ गुड़काया हुआ, लुढकाया हुआ. ३ परीक्षा में असफल किया हुआ।

(स्त्री. लुढकायोड़ी)

लुढकावणौ, लुढकाववौ—देखो 'लुढकाणौ, लुढकावौ' (रू. भे.)

लुढकावणहार, हारौ (हारी), **लुढकावणियौ**—वि.।

लुढकाविओड़ौ, लुढकावियोड़ौ, लुढकाव्योड़ौ भू. का. कृ.।

लुढकावीजणौ, लुढकावीजवौ—कर्म वा.।

लुढकावियोड़ौ—देखो 'लुढकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुढकावियोड़ी)

लुढकियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ गेंद की तरह बराबर ऊपर नीचे चक्कर खाते हुए नीचे गिरा हुआ. २ गुकड़का हुआ, लुढका हुआ. ३ मरा हुआ. ४ परीक्षा में असफल हुवा हुआ।
(स्त्री. लुढकियोड़ी)

लुढणौ, लुढबौ—क्रि. अ.—१ लटक कर बार बार इधर उधर हिलना, झूलना।
उ०—काचल कातरिया बाजू में काठा, भुतजळ भेटै जां मेटै अघ माठा। कर में कांकणियां जसदा गळ काठी, अदभुत मोरां पर लुढतोड़ी आटी। —ऊ. का.
२ लुढकना, गिरना।
३ मस्ती में झूमना।
लुढणहार, हारौ (हारी), लुढणियौ—वि०।
लुढिओड़ौ, लुढियोड़ौ, लुढ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लुढीजणौ, लुढीजबौ—भाव वा०।
लुड़णौ, लुड़बौ, लुडणौ, लुडबौ—रू० भे०।

लुढाड़णौ, लुढाड़बौ—देखो 'लुढाणौ, लुढावौ' (रू. भे.)

लुढाड़ियोड़ौ—देखो 'लुढायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लुढाडियोड़ी)

लुढाणौ, लुढाबौ—क्रि. स.—१ लटका कर बार २ इधर उधर हिलाना, झूलाना।
२ गिराना, लुढकाना।
३ मस्ती में झूमाना।
लुढाणहार, हारौ (हारी), लुढाणियौ—वि०।
लुढायोड़ौ—भू० का० कृ०।
लुढाईजणौ, लुढाईजबौ—कर्म वा०।
लुड़ाड़णौ, लुड़ाड़बौ, लुड़ाणौ, लुड़ाबौ, लुढाड़णौ, लुढाड़बौ, लुढावणौ, लुढावबौ—रू० भे०।

लुढायोड़ौ—भू. का. कृ—१ लटका कर बार २ इधर उधर हिलाया हुआ, झूलाया हुआ. २ गिराया हुआ, लुढकाया हुआ।
(स्त्री. लुढायोड़ी)

लुढावणौ, लुढावबौ—देखो 'लुढाणौ, लुढावौ' (रू. भे.)
लुढावणहार, हारौ (हारी), लुढावणियौ—वि०।
लुढाविओड़ौ, लुढावियोड़ौ, लुढाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लुढावीजणौ, लुढावीजबौ—कर्म वा०।

लुढावियोड़ौ—देखो 'लुढायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लुढावियोड़ी)

लुढियड़ौ—भू. का. कृ.—१ गिरा हुआ, लुढका हुआ. २ लटक कर बार बार हिला हुआ, झूला हुआ. ३ झूमा हुआ।
(स्त्री. लुढियोड़ी)

लुणणौ, लुणबौ—क्रि. स. [सं. लुञ्चनम्] १ काटना।
उ०—कल्पव्रक्ष मनोकांमना पूरै, एकवार वावै, इकवीस वार लुणै। —रा. वं. वि.
२ भेड़ की ऊन को कतरना, काटना।
लुणणहार, हारौ (हारी), लुणणियौ—वि.।
लुणिओड़ौ, लुणियोड़ौ, लुण्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लुणीजणौ, लुणीजबौ—कर्म वा.।
लणणौ, लणबौ, लवणौ, लवबौ, लुणणौ, लूंणबौ—रू. भे.।

लुणाई—स स्त्री [सं. लुंचन] १ भेड के बाल कतरने की क्रिया या भाव।
२ वह समय (मौसम) जब भेड के बाल (ऊन) कतरे जायें।
३ भेड़ के बाल कतरने की मजदूरी।

लुणाणौ, लुणाबौ—क्रि. स.—१ कटाना।
२ भेड़ की ऊन कतराना, कटवाना।
लुणाणहार, हारौ (हारी), लुणाणियौ—वि०।
लुणायोड़ौ—भू० का० कृ०।
लुईजणौ, लुईजबौ—कर्म वा०।
लुणाणौ, लुणावौ, लुणावणौ, लुणावबौ—रू० भे०।

लुणायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ कटाया हुआ।
२ भेड़ की ऊन कतरी (काटी) हुई।
(स्त्री. लुणायोड़ी)

लुणावणौ, लुणावबौ—देखो 'लुणाणौ, लुणाबौ' (रू. भे)
लुणावणहार, हारौ (हारी), लुणावणियौ—वि.।
लुणाविओड़ौ, लुणावियोडौ, लुणाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लुणावीजणौ, लुणावीजबौ—कर्म वा.।

लुणावणौ, लुणावबौ—देखो 'लुणायोड़ौ' (रू. भे.)

लुणावियोड़ौ—देखो 'लुणायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लुणावियोडी)

लुणियोडौ—भू. का. कृ.—१ काटा हुआ।
२ ऊन कतरी हुई (भेड़)।
(स्त्री. लुणियोड़ी)

लुतफ—देखो 'लुत्फ' (रू. भे.)

लुत्त—देखो 'लुप्त' (रू. भे.)

लुत्तकेस—वि.—केश लुंचन करने वाला (जैन)

लुत्यवत्य—देखो 'लथवथ' (रू. भे.)
उ०—दळ मुसळमांन वळवांन खळ, लुत्यवत्य घप्पै लरत। घप्पै न युद्ध पद्धरपति, सूर वीर वकै भिरत। —ला. रा.

लुत्थि—देखो 'लोथ' (रू. भे.)

उ०—खंधे खेल्ह खिल्हार के भट सेल भचक्कै। खंड चटक्कै खपरी लगि लुत्थि लटक्कै। —वं. भा.

लुत्फ-सं. पु. [अ] १ आनन्द, मजा।

२ स्वाद, रोचकता।

रू. भे.—लुतफ

लुथवत्य, लुथवथ, लुथवथ, लुथबुथ—देखो 'लथवथ' (रू. भे.)

उ०—१ पाट तग बरंग जंट झाट खागां पड़ै, वहै घड़ खाग पड़ीया भ्रगट रड़वड़ै। हर खड़ा वीर चोसट सहत हड़हड़ै, लुथवथ हुआ उमराव खामंद लड़ै। —किसनो आढो

उ०—२ लंगरा रठ्ठां झाट नागेस नमावां लागो, रिमां थाट अरावां घमावा लागो रेण। लोहा लुथवुथा कूंपो गनीमां रमावा लागो भारायां भमावा लागो गजां भीमसेण।

—राठौड़ महेसदास रो गीत

लुदराक, लुदराक्ख, लुदराख—देखो 'रुद्राक्ष' (रू. भे.)

लुदरी-सं. स्त्री.—१ एक आभूषण विशेष। (अ. मा.)

२ देखो 'रुद्री' (रू. भे.)

लुद्ध-वि. [सं. लुब्ध] लोभी, लालची।

लुद्राक, लुद्राक्ख, लुद्राख—देखो 'रुद्राक्ष' (रू. भे.)

लुध्ध, लुध्धो-वि. [सं. लुब्ध] १ लालची, लोभी।

२ चाहने वाला, इच्छुक, अभिलाषी.

उ०—१ ऊलंबे सिर हथ्थड़ा, चाहदी रस-लुध्ध। विरह-महाघण ऊमट्यउ, थाह निहाळइ मुध्ध। —ढो. मा.

उ०—२ उक्कंबी सिर हथ्थड़ा, चाहंती रस-लुध्ध। ऊची चढि चाद्रंगि जिउं, मागि निहाळइ मुध्ध। —ढो. मा.

उ०—३ थाह निहाळइ दिन गिणइ, मारू आसा-लुध्ध। परदेसे धांघल घणा, विसउ न जांणइ मुध्ध। —ढो. मा.

लुप—देखो 'लप' (रू. भे.)

लुपकै छुपकै-क्रि. वि.—गुप्त रूप से, लुके-छिपे।

उ०—लुपकै छुपकै घी लोगां रो, पधरावै भरि पारियां। पाप चिकणां भव पेलैमें, खूब करैला ख्वारियां। —ऊ. का.

उ०—२ लुपकै छुपकै राजमें, मांडै रूळपट रोळ। खावै न कोई मारादे, डोफा देवै ढोळ। —नारायणसिंह सांदू

लुपणो, लुपबो—देखो 'लुकणो, लुकबो'

उ०—चिलकंतो भूपाट निजर सूं लुपतो जावै। पवन अबोळी उरामणी सी, सायत दरसावै। —शक्तिदान कविया

लुपणहार, हारो (हारी) लुपणियो - वि०।

लुपिओड़ो, लुपियोड़ो, लुप्योड़ो—भू० का० कृ०।

लुपीजणो, लुपीजबो—भाव वा०।

लुपत—देखो 'लुप्त' (रू. भे.)

लुपतोपमा—देखो 'लुप्तोपमा' (रू. भे.)

लुपियोड़ो—देखो 'लुकियोड़ो'

(स्त्री. लुपियोड़ी)

लुप्त-वि.—१ छिपा हुआ।

२ गुप्त गोपनीय।

३ नष्ट, भग्न।

रू. भे.—लुत्त, लुपत

लुप्तोतमा-सं स्त्री. [सं.] उपमा अलंकार का चौथा भेद जिसमें उपमेय, उपमान धर्म और उपमावाचक में से किसी एक का लोप हो।

रू. भे.—लुपतोपमा

लुब-सं पु.—१ चाह, इच्छा, लोभ।

उ०—थित दाहन मेलन थेलिय की, चित चाहन चेलन चेलिय की। लुब लायन पाय पुजावन की, सुभ राय सु न्याय सुभावन की।

—ऊ. का.

२ कानों में पहनने का स्त्रियों का आभूषण।

उ०—लुब झुलत कांन प्रभा सुघरै दहुंधा मनु कांमहि चक्र करै।

—सगुणा सत्रसाळ री वात

लुबकौ-सं. पु. (स्त्री. लवकी) गाय का नव जात बच्चा।

लुबध—१ देखो 'लुब्धो' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—जिम मधुकर नइ कमलणी, गंगा सागर वेल। लुबधा ढोलउ-मारुवी, कांम-कत्तहळ केल। —ढो मा.

२ देखो 'लुब्धक' (रू. भे.)

लुबधक—देखो 'लुब्धक' (रू. भे.)

लुबधी, लुबधो-वि.—लोभी, लालची, इच्छुक।

उ०—भंवरा लुबधी वासका, मोह्या नाद कुरंग। इयौं दादू का मन रांम सूं, ज्यों दीपक जोत पतंग। —दादूवांणी

उ०—२ ललना मूं लुबधो थको, लोपि गमावै लज्जा लीक कि। जाय घन पिए जूजूओ, नीर रहै नहि फूटी नीक कि।

—घ. व. ग्रं.

लुबांन—देखो 'लोबांन' (रू. भे.)

उ०—१ पिया समीप रूपरासि दासि आसि पासियं, भरै प्रकास स्री उदोति दीप जोति भासियं। सुगंध गंध सार एण सार मेघसार ए, सवास अंबरै लुबांन डंबरै निसार ए। —रा. रू.

लुबुद, लुबुध—देखो 'लुब्ध' (रू. भे.)

उ०—१ सर सरित निरमळ नीर सुंदर अमळ अंबर-ओपायं। किरि सुबुधि वधि सतसंग कारण, लुबुध होत विलोपयं। —रा. रू.

लुब्ध-वि.—१ लोभ ग्रसित, लालची।

उ०—लालचै दांम खाटण लुब्ध, दुसमन सास्त्रारां दसै। कर इता दूर धर्मसी कहै, विद्या भणिवा ने वसै। —ध. व. ग्रं.

२ मुग्ध, मोहित, आसक्त।

३ ललचाया हुआ, अभिलाषी।

रू. भे. लुब्ब्रध, लुबुद, लुबुध।

लुब्धक-सं. पु. [सं. लुब्ध] वहेलिया, व्याघ्र, शिकारी।

२ उत्तरी गोलार्द्ध का एक वहुत तेजवान तारा।

रू. भे.—लुबध, लुबधक

लुब्धणौ, लुब्धबौ-क्रि. अ.—आसक्त होना, निमग्न या तल्लीन होना।

उ०—परदारा सूं पापियउ, भोगवइ कांम भोग। विसयारस लुब्धउ थकउ, न वीहइ परलोग। —स. कु.

लुब्धणहार, हारौ (हारी), लुब्धणियौ—वि.।

लुब्धिओड़ौ, लुब्धियोड़ौ, लुब्ध्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लुब्धीजणौ, लुब्धीजबौ—भाव वा.।

लुब्धियोड़ौ-भू. का. कृ.—आसक्त हुवा हुआ, तल्लीन या निमग्न हुवा हुआ।

(स्त्री. लुब्धियोड़ी)

लुभाणौ, लुभाबौ-क्रि. अ.—लोभ या लालच में पड़ना।

उ०—झाली सिहदेव तो प्रथम अणी में ही लोह छक होय प्रांणां रा पोखण में लुभायो थकौ प्रमदा रौ प्राहुणौ अपूठौ खड़ियो। —वं. भा.

२ सुध-बुध भुलाना, मोह में पड़ना।

क्रि. स.—१ मोहित करना, आसक्त करना।

२ किसी के मन में लोभ या लालच पैदा करना।

३ मोह से युक्त करना, अनुरक्त करना।

लुभाणहार, हारौ (हारी), लुभाणियौ—वि.।

लुभायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लुभाईजणौ, लुभाईजबौ—भाव वा., कर्म वा.।

लुभावणौ, लुभाववौ, लोबाणौ, लोबावौ, लोभाणौ, लोभावौ—रू. भे.

लुभायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ लोभ या लालच में पड़ा हुआ. २ सुध-बुध भूला हुआ. मोह में पड़ा हुआ. ३ किसी के मन में लोभ या लालच उत्पन्न किया हुआ. ४ मोह से युक्त किया हुआ।

(स्त्री. लुभायोड़ी)

लुभावणौ-वि. [स्त्री. लुभावणी] १ मोहित करने वाला, लुभाने वाला, मनोहर।

उ०—नै वा अचिंत खवसूरत, इसी सुवावणी, इसी मनहरणी, इसी सुखदायी अर इसी लुभावणी, लागै के वात छोडौ। —फुलवाड़ी

२ सुन्दर, खूबसूरत।

लुभावणौ, लुभाववौ—देखो 'लुभाणौ, लुभावौ' (रू. भे.)

उ०—सिल-किस्तूरी-गंध समांणी घण मिरगाळै, गंग वहावणहार, हेमाळ-सीस हिमाळै। लेत विसांणी मेघ सांवळो इसो लुभावै, भोळ नादियै कीच गुदळता सींग सुहावै। —मेघदूत

लुभावणहार, हारौ (हारी), लुभावणियौ—वि.।

लुभाविओड़ौ, लुभावियोड़ौ, लुभाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लुभावीजणौ, लुभावीजबौ—कर्म वा.।

लुभावियोड़ौ - देखो 'लुभायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुभावियोड़ी)

लुरडणौ, लुरडबौ-क्रि. स.—तोड़ना।

उ०—इण निमझर नै सूरड़ बुरड़ भेळी कर राखै, लुरड़ लाव सांभाळ, साल भर सागां नाखै। दही रायतै छोंक, मोकळी निमझर देवै, ललचावै सुरराज भाज लप लवको लेवै। —द. दे.

लुरड़णहार, हारौ (हारी), लुरड़णियौ—वि.।

लुरड़िओड़ौ, लुरड़ियोड़ौ, लुरड़्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लुरड़ीजणौ, लुरड़ीजबौ—कर्म वा.।

लुरड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—तोड़ा हुआ।

(स्त्री. लुरड़ियोड़ी)

लुरणौ, लुरबौ—देखो 'लुळणौ लुणवौ' (रू. भे)

उ०—काहे को देह धरी भजन बिन काहे को देह धरी। गरभवास की त्रास दिखाई, बाकी पीठ लुरी —मीरां

लुरणहार, हारौ (हारी), लुरणियौ—वि०।

लुरिओड़ौ, लुरियोड़ौ, लुर्योड़ौ - भू० का० कृ०।

लुरीजणौ, लुरीजबौ—भाव वा०।

लुरियोड़ौ—देखो 'लुळियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. लुरियोड़ी)

लुरियौ-सं. पु.—ऊंट की चाल या गति विशेष।

लुरी-सं. स्त्री.—१ लम्बे कानों वाली बकरी।

२ अत्यधिक शीतल वायु।

लुळणौ, लुळबौ-क्रि. अ.—१ झुकना, नीचा होना।

उ०—अठी, 'रतना' सांमी आय लटकै लुळी, तठै पूरण प्रेम री गांठ पूरण घुळी। कंवर छातींहूं भिड़ मिळियौ, सनेह रौ सांमंद्र पाजांहूं छिळियौ। —र. हमीर

२ लथपथ होना।

उ०—चोखां ओढूं चीर, लाळ मांही लुळ जावै। अतर लगाऊं अंग, पाद आगै पुळ जावै। —ऊ. का.

३ कार्य सिद्धि या उद्देश्य की पूर्ति के लिए थोड़ा आगे बढ़ते हुए नीचे की ओर प्रवृत्त होना, झुकना।

उ०—१ लागू हूं पहलो लुळे, पीतांवर गुर पाय। भेद महारस भागवत, प्रांमूं जेण पसाय। —ह. र.

उ०—२ पुन चेत आसोज रा स्वेत पाखां. लुळै मात नूं जातरी लोक लाखां। वदीजै किसूं कीरती हेक वांकै, थळी री दुती दाखतो सेंस थाकै। —मे. म.

उ०—३ भरी रूप रंग रस भरी, लुळ आवै जळ लेण। सरवर त्यां निरखण सही, नीरज कियाक नेण। र. हमीर

४ नम्र भाव से आचरण या व्यवहार करना, अभिमान वल आदि को छोड़ विनीत और सरल होना।

उ०—वेटी री वाप सूको लक्कड़ तथा टूंठ लुळै नहीं टूटणो जांणै। —दसदोख

५ प्रवृत होना, उन्मुख होना।

उ०—१ कोइ आठ-दस हजार हाथ लाग्या। वस, मन री विरती खरचै खांनी लुळी। —दसदोख

उ०—२ लिछमी जी लुळताह, टुकीयक म्हां खांनी हुता। (तो) भायां नै भ्रमताह. कदेइ कर देतो 'करन' —*लक्ष्मीदांन वारहठ*

६ मंडराना, घुमड़ना।

उ०—१ सांवण आयो सायवा, लुळ लुळ वरसै लूर। गोख उडीकै गोरड़ी, जोवन में भरपूर। —नारायणसिंह सांदू

उ०—२ घण रा सायवा रै, ओ तो सांवण लुळचां घर आय। वेटो जाट को रै, ओ तो सांझ पड़यां घर आय। —तेजाजी री लावणी

७ कोमलतावश इधर-उधर झुकना, सिमटना।

उ०—१ तंवोळ विनां खाधां आहार विकार थावै, माडी मोडी कटारी री पड़दळी समावै। उतर रो वाव वाजै दखण नै लुळै चोवारो वाजै तो, वीच सूं भाज जावै। —खींची गगेव नींवावत री दोपहरी

उ०—२ थोथी करड़ावण राखणवाळा जंगी रूंख चरड़ चरड़ उथळीजण लागा। लुळताई राखणवाळा कंवळा वांटका अठी-उठी लळाक लळाक लुळै पण व्हांरो की नीं विगड़ै। —फुलवाड़ी

८ गतिशील या स्थित व्यक्ति या पदार्थ का दूसरी दिशा की ओर उन्मुख या प्रवृत्त होना, मुड़ना।

उ०—रायजादो लुळ-लुळ पाछो जोवै, जांणु म्हारी जांन में भावोसा पधारै। —लो. गी.

९ प्रभाव कम होना।

उ०—इव तूं झुकज्या इव तूं लुळज्या, झिरोखै झाला दै रही अै भांगड़ली। भवर रो रस लै रही अै भांगड़ली। —लो. गी.

१० प्रभाव में आना, प्रभावित होना।

उ०—किसूं व्याकरण अवर भाखा अनै पराक्रत, संसक्रित तणै मयूं फिरै सांग। लाख रा ठाकरां तणा माया लुळै, आखरां तणा गजवोह आगै। —नवलजी लाळस

११ देखो 'रळकणो, रळकवो'

उ०—कड़ियं ओ भैरव कड़ियै, लुळता केस, पावां ओ भैरव पावै वाज्या घूघरा। —लो. गी.

लुळणहार, हारो (हारी), लुळणियो—वि०।

लुळिओड़ो, लुळियोड़ो, लुळयोड़ो—भू० का० कृ०।

लुळीजणो, लुळीजवो—भाव वा०।

लळणो, लळवो, लुरणो, लुरवो—रू० भे०।

लुळताई—सं. स्त्री.—१ लचीलापन, लचक, कोमलता।

उ०—थोथी करड़ावण राखणवाळा जंगी रूंख चरड़ चरड़ उथळीजण लागा लुळताई राखणवाळा कंवळा वांटका अठी-उठी लळाक लळाक लुळै पण व्हांरो कीं नीं विगड़ै। —फुलवाड़ी

२ विनम्रता, नम्रता।

उ०—अवै संगीजी थोड़ा ओर नेड़ा भिड़'र लुळताई-सूं वेटी री मां नै कयो—"वीनणी नै वरो इसी चढासां जिको घणां भाइ देखसी। —वरसगांठ

लुळाड़णो, लुळाड़वो—देखो 'लुळाणो, लुळावो' (रू. भे.)

लुळाड़णहार. हारो (हारी), लुळाड़णियो—वि०।

लुळाड़िओड़ो, लुळाड़ियोड़ो, लुळाड़चोड़ो—भू० का० कृ०।

लुळाड़ीजणो, लुळाड़ीजवो—कर्म वा०।

लुळाड़ियोड़ो—देखो 'लुळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लुळाड़ियोड़ी)

लुळाणो, लुळावो—क्रि स.—१ झुकाना, नीचा करना या कराना।

२ लथपथ करना या कराना।

३ कार्य सिद्ध या उद्देश्य की पूर्ति हेतु नीचे की ओर प्रवृत्त करना या झुकाना।

४ नम्र भाव से आचरण या व्यवहार कराना या अभिमान वल आदि को छोड़ाना, विनीत वनाना।

५ प्रवृत या उन्मुख करना या कराना।

६ मंडराना, घुमड़ाना।

७ कोमल वस्तु या पदार्थ को इधर उधर झुकाना, मोड़ना।

उ०—जच्चा रांणी रै हळद, तेल अर गुज्जी रै आटा री पीठी कर नै आखो डील मसळियो। वाटां उतारी। हाडका लुळाया। —फुलवाड़ी

८ प्रभाव कम कराना।

९ गतिशील या स्थित व्यक्ति या बात को एक तरफ. से हटा कर दूसरी दिशा की तरफ उन्मुख या प्रवृत्त कराना, मुड़ाना।

उ०—दीवांणजी री अकल अैड़ी वात में अणूंती भंवती ही। कैड़ी ई बात नै लुळाय कठी नै ई पुगाय देता। —फुलवाड़ी

१० मोड़ना।

उ०—ओ तो साव इज पतळो। धोळो धोळो जांणै मांदगी सूं उठ्यो व्है। इणनै लुळायो कुण! साव इज दोलड़ो कर न्हांकियो। —फुलवाड़ी

११ देखो 'रळकाणो, रळकावो'

लुळाणहार, हारौ (हारी) लुळाणियो—वि०।

लुळायोड़ो—भू० का० कृ०।

लुळाईजणो, लुळाईजवो—कर्म वा०।

लुळाड़णो, लुळाड़वो, लुळावणो, लुळाववो—रू० भे०।

लुलाय–सं. पु. [सं. लुलायः] भैंसा।

उ०—कर चाप अठारटंकी करखै, परखा सर एलम की परखै। उडि वेघ अकास हुवै डरता, छिक जाय लुलाय पखाल छता। —मे. म.

लुळायोड़ो–भू. का. कृ.—१ झुकाया हुआ. २ लथपथ किया हुआ. ३ कार्य सिद्धि या उद्देश्य की पूर्ति के लिये थोड़ा आगे बढ़ते हुए नीचे की ओर प्रवृत किया हुआ, झुकाया हुआ. ४ नम्रता से आचरण या व्यवहार किया हुआ, अभिमान बल आदि को छोडा कर विनीत व सरल किया हुआ. ५ प्रवृत किया हुआ. ६ मंडराया हुआ, घुमड़ाया हुआ. ७ कोमल पदार्थ को इधर उधर झुकाया या मोड़ा हुआ. ८ गतिशील या स्थित व्यक्ति, पदार्थ या बात को दूसरी ओर उन्मुख या प्रवृत्त किया हुआ।

९ देखो 'रळकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लुळायोड़ी)

लुळावणो, लुळाववो—देखो 'लुळाणो, लुळावो' (रू. भे)

लुळावणहार, हारौ (हारी), लुळावणियो—वि०।

लुळावियोड़ो—भू० का० कृ०।

लुळावीजणो, लुळावीजवो—कर्म वा०।

लुळावियोड़ो—देखो 'लुळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लुळावियोड़ी)

लुळियोड़ो–भू. का. कृ.—१ झुका हुआ. २ लथपथ हुवा हुआ. ३ कार्य सिद्धि या उद्देश्य पूर्ति हेतु आगे बढ कर थोडा नीचे झुका हुआ या प्रवृत्त हवा हुआ. ४ नम्रता से आचरण या व्यवहार किया हुआ, विनम्र हवा हुआ. ५ प्रवृत हवा हुआ. ६ कोमलतावश इधर उधर झुका हुआ. ७ मंडराया या घुमड़ाया हुआ. ८ गतिशील या स्थित व्यक्ति, पदार्थ या बात का दूसरी तरफ उन्मुख या प्रवृत हुवा हुआ. ९ प्रभाव कम हुवा हुआ. १० प्रभाव में आया हुआ, प्रभावित।

(स्त्री. लुळियोड़ी)

लुलूलिया, लुलूसाही–सं. पु.—१ मारवाड़ राज्यान्तर्गत चलने वाला एक सिक्का विशेष।

वि. वि. यह जोधपुर राज्यान्तर्गत महाराजा तखतसिंह जी के समय नाजर हरकरण द्वारा चलाया गया था।

लुवणो, लुववो–क्रि. स.—पोंछना।

उ०—लेता यूं विसरांम, सींचता कळी चमेली। वरस फुहारां वाग, वाहणी तीर सकेली। मगसी भूठण-लूंव कपोळां नीर लुवंती। तिण भांमणियां छाह करो जे फूल विणती। —मेघ

लुवणहार, हारौ (हारी), लुवणियो—वि०।

लुविओड़ो, लुवियोड़ो लुव्योड़ो—भू० का० कृ०।

लुवीजणो, लुवीजवो—कर्म वा०।

लुहणो, लुहवो, लुणो, लुवो, लूअणो, लूअवो, लूणो, लूवो, लूवणो, लूववो, लूहणो, लूहवो—रू० भे०।

लुवरड़ो, लुवरडो–सं. पु. (स्त्री. लुवरड़ी लुवरडी) वेटा, पुत्र।

उ०—थारी लुवरडी म्हारो लुवरड़ो अव तो करो निगोडचो व्याव रायजादी ये लूर छैला प्यारी ये लूर जेसलमेरी ये। —लो. गी.

लुवार—१ देखो 'लुहार' (रू. भे.)

उ०—१ साज लोहा रा सांतरा, ताळा करण तयार। किसवी सारा कांमरो, लीजै सुघड लुवार। —रमणप्रकास

उ०—२ रूप जेम वारंगणा, रस छंदा गारीह। सारी वातां सुलखणी, लीजै लुवारीह। —रमण प्रकाश

२ देखो 'लुवारो' (रू. भे.)

(स्त्री. लुवारी)

लुवारियो, लुवारो–सं. पु.—१ गाय का छोटा वच्चा।

उ०—दादीसासू पोतिया जुवाई नै देखण नै तरसी अर हाथ री कांपती दो आंगळयां एक आंख रै ऐड़ै छेड़ै देय'र रसोई री वारी सूं उलळी, जांणै सुवाड़ी गाय लुवारै टोघड़िये पर रांभी है। —दसदोख

२ देखो 'लुहार' (अल्पा., रू भे)

लुवियोड़ो–भू का. कृ.—पोंछा हुआ।

(स्त्री. लुवियोड़ी)

लुह–सं. पु.—१ शस्त्र प्रहार।

उ०—हुवै असि तांम चढै सु दुझाळ, लुहां अवधूत दियै नंदलाल। —सू. प्र.

२ लूखा, रूक्ष।

उ०—अरस विरस अंत पंत लुह, ए चाल्या पंच आहार। ए जीमी जीवै मुनि धन, मोटा अणगार। —जयवांणी

लुहण-वि.—चूसने वाला, शोषण करने वाला।

उ०—आंत्र-लुहण तूं माहरेजी, काळेजा नी कोर। तूं वच्छ आंधा-लाकड़ी जी, किम हुवै कठिन कठोर —जयवाणी

लुहणौ, लुहवौ—देखो 'लुवणौ लुववौ' (रू. भे.)

उ०—प्रीथीराज माहली चाळ था वरछी लुही ऊजळी थकां आयो। —नैणसी

लुहणहार, हारौ (हारी), लुहणियौ—वि०।

लुहिओड़ौ, लुहियोड़ौ, लुह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लुहीजणौ लुहीजवौ—भाव वा०।

लुहार-सं. पु. [सं. लोहा+कार, प्रा. लोहार] (स्त्री. लुहारण, लुहारी) लोहे की चीजें बनाने या काम करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति।

उ०—१ ससो सास सम्हातां समरण, तन मन खुब तपावै। लोह लुहार तणी गति लागै, मारोमार मचावै। —ऊ. का.

उ०—२ हर सिर घर लाल लुहारी नीसरीजी हर भर हटवाड़ै रै मांय। घड़ल्या म्हारा अजवे लुहारा दीवलौ जी। —लो. गी.

२ चौरासी चोहट्टों में से एक। (सभा)

रू. भे.—लवार, लुवार, लोहकार, लोहार

अल्पा.,—लवारियौ, लवारौ, लुवारियौ, लुवारौ

लुहारखाती—बढई जाति का वह व्यक्ति जो लोहार का पेशा भी करता हो। (मा. म.)

रू. भे.—लवारखाती

लुहास-सं. पु.—श्याम घटा के शिखर पर उठने वाले बादल जो घटा को स्पर्श करते ही उनमें पानी ही पानी हो जाता है। (शेखावाटी)

लुहियोड़ौ—देखो 'लुवियोड़ौ' (रू. भे.)

लुही—देखो 'लोही' (रू. भे.)

उ०—१ कटै पळ कमळ स्रीफल कीध, लुही घट काढ जिकौ घ्रत लीध। घुवै रणताळ सझाळ त्रत्रोम, हकां धुनि वेद करै इम होम। —सू. प्र

उ०—२ भयांनक हेक करै भाराथ, हिकां ममतक्क पडै पग हाथ। वैणी-डंड हेकां वीखरियाह, लुटै भुंइ हेक लुही भरियाह। —गु. रू. बं

लूंक—देखो 'लूंग' (रू. भे.)

लूंकड़ौ—देखो 'लांकी' (अल्पा., रू. भे.)

लूंकार-सं. पु.—ऊन का बना मोटा वस्त्र जो ओढने के काम आता है तथा इकरंगा होता है। कसीदा नहीं होता।

लूंकी—देखो 'लांकी' (रू. भे.)

लूंकीमूळौ—१ देखो 'लांकी मूळौ' (रू. भे.)

लूंकौ-(स्त्री. लूंकी)—देखो 'लांकौ' (रू. भे.)

उ०—१ प्रगत तणौ परताप, नहीं पास्यौ नर देही। जगमें वीजै जनम, हुस्यो भुंगर कनसेही। लूंकी छलड़ी किना, वूट इजगर कन बोधी। गोगो हुस्यौ क गोह, भेड भीलां घर जोगी। —अरजुनजी बारहठ

उ०—२ लूंक्यां करै न लोप, वन केहर भेळा वसै। करै न सबळा कोप, रंको ऊपर राजिया। —किरपारांम

लूंग-सं. पु.—१ शमी, बबूल वृक्ष के पत्ते जो ऊंट भेड़ व बकरियों को चराने के काम आते हैं।

उ०—१ मस्तक लीली लूंग, धरण री धूड़ ठरावै। खेजड़ खेवा खाय, मरु में छांन छवावै। —दसदेव

उ०—२ ऊंचै मुख सूं ऊंट, चूट चट लूंगां लवकै। गलर गलर गटकाय, डोलती डागां डवकै। —दसदेव

उ०—३ खेजड़ी रा लूंग ई इण तड़ा आगे नीं ढबै, पछै वापड़ा साचरी कांई जिनात। —फुलवाड़ी

२ बंदूक पर बारुद रखने का स्थान।

उ०—लखवार बंदूकांय लूंग लिया, करि अंग भालोड़ दुसोर किया। घाह साहर ऊपर घोर घलै. सत बीसांय नाहर ठौर सलै।—पा. प्र.

३ एक पक्षी विशेष।

उ०—चरज सीचांण सो लाग आतुरी, बाज बहरूं की झपट। कुही कुही लूंगूं की उच्चट। —सू. प्र.

रू. भे.—लूंक।

४ देखो 'लवंग' (रू. भे)

लूंगती—देखो 'लांकी' (रू. भे)

लूंगाकरौ—स. पु—एक मारवाड़ी लोकगीत।

लूंगी—सं. स्त्री.—१ वह वस्त्र जो कमर से बांधा जाता एवं टखनौ तक लटकता है।

२ सिर पर बांधने या बिछाने के काम आने वाला वस्त्र विशेष।

उ०—करसे रे पितळ रौ पिलांण, लाल लूंगी रौ घामियौ। कसणा कसुमल डोर, सरब सोना रा पागड़ा। —लो. गी.

३ स्त्रियों के ओढने का वस्त्र विशेष।

उ०—१ लूंगी लाज्यो जी, ओ जी म्हारा ईसरजी ओ उमराव, जटाधारी, लूगी लाज्यौ जी। लूंगी महंगी ए, ओ ए म्हारी पातलड़ी ए गणगोर गढां री गंगी, लूंगी महंगी ए। —लो. गी.

४ एक राजस्थानी लोक गीत।

५ छोटे बच्चे का शिश्न ।

रू. भे.—लूंगी, लींगी, लोंगी ।

लूंचणो, लूंचबो—१ हड़पना ।

उ०—१ उजवक थका राजमें उभा, लाखां रो धन लूंचै । गहर गंभीर अभनमी 'गांगो' पाछो जाव न पूछै । —बुधजी आसियो

लूंचणहार, हारो (हारी), लूंचणियो—वि० ।

लूंचिओड़ो, लूंचियोड़ो, लूंच्योड़ो—भू० का० कृ० ।

लूंचीजणो, लूंचीजबो—भाव वा० ।

लुंचणो, लुंचबो—रू० भे० ।

लूंचाड़णो लूंचाड़बो—देखो 'लूंचाणो लूचावो' (रू. भे.)

लूंचाणो लूंचावो–क्रि. स.—हड़पवाना ।

लूंचाणहार, हारो (हारी), लूंचाणियो—वि० ।

लूंचायोड़ो,—भू० का० कृ० ।

लूंचाईजणो, लूंचाईजबो— कर्म वा० ।

लूंचाड़णो, लूंचाड़बो, लूंचावणो, लूंचाववो – रू० भे० ।

लूंचायोड़ो–भू. का. कृ.—हड़पाया हुआ ।

(स्त्री. लूंचायोड़ी)

लूंचावणो लूंचाववो—देखो 'लूंचाणो, लूंचावो' (रू. भे.)

लूंचावणहार, हारो (हारी), लूंचावणियो - वि० ।

लूंचाविओड़ो, लूंचावियोडो, लूंचाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

लूंचावीजणो, लूंचावीजबो—भाव वा० ।

लूंचावियोड़ो—देखो 'लूंचायोड़ो' (रू. भे.)

लूंचियोड़ो–भू. का. कृ.—हड़पा हुआ ।

(स्त्री. लूंचियोड़ी)

लूंछण–सं. स्त्री.—१ किसी वस्तु या पदार्थ को सिर के ऊपर फेर कर दान देने की क्रिया या न्योछावर करने की क्रिया ।

२ वस्त्र विशेष ।

उ०—खीरोदक ततखेव-मांहां, आप्यां लूंछण अंग । पछइ पटुलां पहिरणइ, नवहत्थां नवरंग । —मा. कां. प्र.

लूंछणो, लूंछबो–क्रि. स.—१ न्योछावर करना ।

उ०—रत्न-कवल सिरि लूंछणां, तनु लूहवा तनु-सुख । अवला. आरीसु लेई रही, जमली जोवा मुख । —मा. का. प्र

लूंछणहार, हारो (हारी), लूंछणियो—वि० ।

लूंछिओड़ो, लूंछियोड़ो, लूंछयोड़ो—भू० का० कृ० ।

लूंछीजणो, लूंछीजबो कर्म वा० ।

लुंछणो, लुंछबो - रू० भे० ।

लूंछियोड़ो–भू. का. कृ.—१ न्योछावर किया हुआ ।

(स्त्री. लूंछियोड़ी)

लूंजी–सं. स्त्री—एक प्रकार का खाद्य पदार्थ विशेष ।

रू. भे.—लुंजी ।

लूंटणो, लूंटबो—देखो 'लूटणो, लूटबो (रू. भे.)

उ०—थोड़ो कुण करै भरोसो थारो, वीसां वातां लखण बुरा । लूंटै कुण तो विन लाखीणो, जोवन सरखो रतन जुरा । —ओपो आढो

लूंटणहार, हारो (हारी), लूंटणियो—वि० ।

लूंटिओड़ो, लूंटियोड़ो, लूंटचोड़ो—भू० का० कृ० ।

लूंटीजणो, लूंटीजबो—कर्म वा० ।

लूंटियोड़ो—देखो 'लूटियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लूंटियोड़ी)

लूंठाई—देखो 'लांठाई' (रू. भे.)

लूंठापण, लूंठापणो, लूंठापो — १ देखो 'लांठापणो' (रू. भे.)

उ०—१ काचा करमां सू रै'गा गळ रीता । साचा सोना रा वाळ-लिया वीता । गोरां खाली हुय खालां री गांठां । लेग्यो लूंठापण लांठां री लाठा । —ऊ. का.

लूंठो - देखो 'लांठो' (रू. भे)

उ०—१ कद मरै कुटिल ओ काळसू, कहै उडाऊं कागलो । लागगो लार लूंठो लियण, आंटो कोइक आगलो । —ऊ. का.

उ०—२ खळ दसखंध उपाड़ण खूटा, कीरत भुज जाहर चिहूं कूंटा । लखण काज आंणण गिर लूंठा टेक निवाह वाह किप-टूंटा । —र. ज. प्र.

उ०—३ ए तो सगळी थोथी वातां है चोधरियां । असली वात तो कोई दूजी दीसै । स्यात् राजा सूं कांम कढावणो व्है'ला, लूंठो इनांम लेवण री मसा व्हैला । —अमर चूनड़ी

लूंड—देखो 'लूंडो' (मह रू. भे)

उ०—कवडी रा लहण मही, राखे हट कर रोक । पाग कांख मांझल लियां, लूंड वजारी लोक । —वां. दा.

लूंडो–(स्त्री. लुंडी)—१ मूर्ख बेवकूफ ।

२ लुच्चा, लफंगा ।

उ०—१ लूंडा मुलक रा भेळा हुइ गया । सो एक तो मुगळ इसा वेग और एक पठांण सु सेखा सो दोनूं मुलक नूं लूटै । —गोपाळदास गौड़ री वारता

देखो 'लोंडो' (रू भे.)

उ०—जदी लूंडीया जाय हुरमां सुं मालुम करी वाई जी सायव खीज करि महल सें नीचै आया अरु आतै ही बोलीया नहीं पोढा रहै । —राहव-साहव री वात

(स्त्री. लूंडिया)

लूंण—देखो 'लवण' (रू. भे.)

उ०—भखियो ज लूंण भूपाळ रौ, घणा रिजक सांभळ घणौ। कहि सभरीक ऊजल करां, तिकौ लूंण सांभर तणौ। —सू. प्र.

लूंणहरांम-वि. यौ. [सं. लवण+अ. हराम] कृतघ्न, नमकहराम।

उ०—लांणत लूंणहरांम, 'जसवंत' में कीधी जका। कुळ विदरां रौ कांम, सावत तो में 'सादला'। —दळजी महड़ू

रू. भे.—लूणहरांम।

लूंणहरांमी-सं. स्त्री.—१ कृतघ्नता।

रू. भे.—लूणहरांमी।

२ देखो 'लूणहरांम' (रू. भे.)

उ०—लूंणहरांमी वहुत देख्या, वचन न मांने तोरा। म्हैं तौ सांमधरम रे कारण अरजी करूं सवेरा। —हरिरांमजी महाराज

लूंणियोड़ौ—देखो 'लुवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लूंणियोड़ी)

लूंणी-सं. स्त्री.—१ मारवाड़ की एक नदी का नाम।

२ वनस्पति विशेष जिसके छोटे २ लाल फूल लगते हैं।

उ०—लाज-लज्जालू लक्ष्मणा, लूंणी लसन लवंगि। लीलावंती लुंकडी. लाहि लवीरी संगि। —मा. कां. प्र.

सं. पु.—३ मक्खन।

लूंणौ, लूंवौ—देखो 'लुवणौ, लुववौ' (रू. भे.)

लूंणहार, हारौ (हारी), लूंणियौ—वि०।
लंणिओड़ौ, लूंणियोड़ौ, लूंण्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लूंणीजणौ, लूंणीजवौ—कर्म वा०।

लूंथ—देखो 'लोथ' (रू भे)

उ०—गळोवळ हेक चटा-वख गूंथ, लळावट हेक लुळै हुइ लूंथ। चळव्वळ हेक हुआ ग्रन चोळ, धारां महि हेक दियै घमरोळ।

—गु. रू. बं.

लूंदौ-सं. पु—किसी गाढे गीले पदार्थ का ढेले की तरह बधा हुआ गोलाकार पिंड, लौंदा।

उ०—म्हनै थांरै काकोसा रौ कागद पढनै सुणाय दो वीरा! म्हूं थांनै विलांवणौ करती वगत बूजी रै छांनै मांखण रौ लूंदौ दूंला।
—अमर चूंनड़ी

रू. भे.— लोंदो, लोंदौ।

लूंधियौ-सं. पु.—संध्याकाल का वह समय जब कुछ अंधेरे के कारण कोई स्पष्ट पहचाना न जा सके।

लूंब-सं. स्त्री. [सं. लंबुक] १ रेशम या सूत के धागों का गुंथा हुआ गुच्छा जो आभूषणों की शोभा वृद्धि के लिए लटकाया जाता है।

उ०—ऊंचण लागी नार नवेली, माथै ऊपर मटकी। बाजूड़े री लूंबां बैं'री, ईंढांणी में अटकी। —चेतमांनखौ

२ ऊंट घोड़े आदि के चारजामों के इर्द-गिर्द लटकाया जाने वाला लाल व कोड़ियों का गुच्छा, झूमका।

उ०—क्रत सोभति रेसम लूंब करै, घुरवा किर फूलिय संझ धरै। अति उग्र तुरंगम अंग बियै, क्रम सोभत आवत डोर कियै।
—रा. रू.

३ बहुत सी वस्तुओं का ऐसा समूह जो एक साथ उगा, उपजा या बना हो।

उ०—१ वेदांनै दाखां वेदांनै अनार। चिलकोचै वेह ओर सेवूंका विस्तार। कपूर-गरभ केळीका जूथ केळूंकी झूंब। स्रीफळ विदांम ओर नींवू के लूंब। —सू .प्र.

उ०—२ करतीयां री झूंबकौ, मोतियां री लूंब हीरां री लछौ सरग री झूंब। —मयारांम दरजी री वात

४ सावन भादों में अविच्छिन्न व निरन्तर होने वाली छोटी छोटी बूंदों की वर्षा, इस वर्षा के बादल।

उ०— १ केहरी दीठां कळा, खळ दल करसी खेह। लूंबां झड़ नह लग्गिया, लुवां न कांनौ लेह। —बां. दा.

उ०—२ अगिणत दांन निजर पह आगै। लूंबां किर स्रावण झड़ लागै। —रा. रू.

उ०—३ लूंबा झड़ नदियां लहर, बक पंकत भर बाथ। मोरां सोर ममोलियां, सांवण लायौ साथ। —बां. दा.

५ मकान में दीपक रखने हेतु दीवार में लगाया हुआ पत्थर।

६ मकान में छज्जे के नीचे लगे पत्थर पर खोद कर बनाए हुए गोले।

७ झूले की अवरोह गति।

उ०—पवन का परवाह, गुलाव की मूठ, सिधराजकौ गोटकौ, तारे की तूट। आतस कौ भमकौ, चक्री की चाल, चपलाकौ चमकौ छाती की ढाल। सींचाणै की झड़प, हींडे की लूंब खगराज का बचा, खेतु में खुंब। —मयारांम दरजी री वात

लूंबड़ौ-सं. पु.—नारियल वृक्ष का फल जिसके छिलके के अन्दर गिरि रहती है।

लूंबझूंब—१ सुसज्जित, शृंगारयुक्त।

उ०—१ कलाबातु सागता जरी रा लूंबझूंब किया, संगीत नाचणा भाव परीरा सारीख। आकरा झालियां पाव तुरी सावतां ऊठै, अढाई खुरीरा घाव छूरी रा आरीख।
—महाराजा बळूंतसिंह री गीत

उ०—२ सो किण भांतरा पलांण जिके समंकरी नीपनी मोरवी पलांणी, दांमण चमकती, पिडांमारी लगांमी आरसी आलीआंरी

छालीग्रा पाखरां घातिग्रां, पलांण लगांण, जीण साकति साझ-वाझ लूंबझूंब करि नै स्रांमण री त्रीजणी ज्यों पांडवै सिणगार पाखर घाति चोकि ग्राणि हाजर किग्रा छै।

—राजांन राउत री वात-वणाव

२ ग्राच्छादित, ग्रावेष्टित।

उ०—लुळि लूंबझूंब कदंब होवत, ग्रंब के चिहूं फेर। तरु डार घूजत मधुर कूजत, कोकिला तिहि वेर। —वि. कु.

रू. भे.—लूंमभूम, लूमझूम

लूंबणो, लूंबबो—क्रि. ग्र.—१ किसी वस्तु का एक सिरा किसी दूसरी वस्तु से लगा हुग्रा हो तथा दूसरा सिरा ग्रधर में लटकता हो, लटकना, लटूमना।

उ०—जे करतो हुवै चोरी जारी, उणसूं ग्रनि नहीं कीजै यारी। वसत न लीजै चोरी वाळी, लूंबै मत तुं निवळी डाळी।

—घ. व. ग्र.

२ लिपटना, चिपटना।

उ०—विरछां लूंबी वेलियां, फूली फली फवैह। सीतळ छांह सुहावणी, दणियर किरण दवैह। —र. हमीर

उ०—१ यौं करतां सीख करी, तद रतना' ग्रांखियां भरी। वाला लूंबी, गळै विलूंबी। वोलणी नह ग्रायो, गळो गहरायो।

—र. हमीर

४ ग्राक्रमण करना, हमला करना।

उ०—१ हे हेली म्हारै पती घरोघर मूं वैर वसाया है दिनोदिन रोजीना दुसमण ग्राय घाड़ री घाड़ माथै लूंबै है। —वी. स. टी.

उ०—२ ग्रणभंग जोध ग्रसमांन दिस, ऊनरिया ग्रसमांन रा। कमधज्ज कणंगिरि लूंबिया, किरि लंका गढ वांनरा। —गु. रू. वं

उ०—३ सूता पर जुद्ध में म्हारा कत सूं दस दस वीसां ग्रादमी ग्रायनै लड़ण वासतै लूंबिया तिकांनै ऊठतै ही कंत भजाय दीघा।

—वी. स. टी.

५ घेरना, ग्रावेष्टित करना।

उ०—गढ लूंबी चहुंवळ मचि दमगळ, कोट वळवळ प्रळै जळ कळ। घोम झळवण गयण घूंघळ, काजि पळ मुख सकति कळकळ।

—रा. रू.

उ०—२ वांमै वार हाक लूंबिया वैरी, वागिया फारक धार वहै। जोबन कहे 'कमां' नीसरजै, करि भारथ कुळवाट कहै।

—करमसेन कल्यांणोत कछवाह री गीत

उ०—३ सु ग्रठै वडो झगड़ो हुवो। ग्रादमी ग्राठ मा'राज रै हाथै ठौड़ रया ग्रठै। ग्रर, माराज पण घावां पूर हुवा। सत्रसाल जी घावां पूर हुवा। दिखणी च्यारूं कांनी लूंबिया है वा लोकनूं घणा सांकड़ै लियो। —द. दा.

उ०—४ दारण 'कमां' लूंबिया दोळा, 'ग्रांनै' लिया दिवाळां ग्रोळा। 'ग्रांनै' तणा सुहड़ रिण ग्राया, पड़िया तेरह ग्रवर पुळाया।

—रा. रू.

६ लूटना,

उ०—पछै श्री रावजी री फोजा ठोड़-ठोड़ मेवाड़ में ग्राय लूंबी। देसरो जळळ जादा दीवांणजी नूं पहुंतो। दीवांणजी नै फिकर सबळो हुवो। —नैणसी

७ झूमना, उमड़ना।

लूंबणहार, हारो (हारी), लूंबणियो—वि०।

लूंविग्रोड़ो, लूंबियोड़ो, लूंब्योड़ो—भू० का० कृ०।

लूंबीजणो, लूंबीजबो—भाव वा०।

लुंबणो, लुंबबो, लुंमणो, लुंमबो, लूंमणो, लूंमबो, लूबणो, लूबबो, लूमणो, लूमबो—रू० भे०।

लूंबलूंबाळी—वि०—लूंबोवाली, जिसके लूंबे लगी हो, लूंमो से युक्त।

उ०—१ ग्रोरां रै मोचरा डोडा एलची ए, म्हारी ग्रंबाजी रै नागर वेल। ग्रोरां रै पोडण हिंगळू ढोलियो ए, म्हारी ग्रबा जी रै लूंबलुंबाळी सेज। —लो. गी.

लूंबालूंब—वि०—१ पूर्ण शृंगार से सुसज्जित, सजा हुग्रा।

रू. भे.—लांबलूंब, लांबालूंब,

लूंबाळो – देखो 'लुंबाळो' (रू. भे.)

उ०—खारा रै समंदा सूं कोडा मंगाया, जूनेगढ गूंथाया रे, म्हारो गोरबंद लूंबाळो। —लो. गी.

लूंबियोड़ो—भू. का कृ.—१ किसी वस्तु का एक छोर किसी में ग्रटका हुग्रा हो तथा दूसरा छोर ग्रधर में लटका हुग्रा. २ झूमा या लिपटा हुग्रा. ३ ग्रावेष्ठित किया हुग्रा, घेरा हुग्रा. ४ ग्राक्रमण किया हुग्रा।

(स्त्री. लूंबियोड़ी)

लूंबो—सं. पु.—१ धन सम्पत्ति।

२ लाभ।

उ०—ग्रमळ गळै छै। तिण समीयै जखड़ो जाय निकळियो। तरै भीलां दीठो नै कह्यो—स्रीमाता जी लूंबो दीधो।

—जखडा मुखड़ा भाटी री बात

लूंम—सं. स्त्री.—देखो 'लूम' (रू. भे.)

उ०—सांवण मास सुहावणो, लागै झड़ जळ लूंम। उण दिन ही ग्रासव तणी, सौरभ नह ले सूंम। —वां. दा.

लूंमणो, लूंमबो—देखो 'लूंबणो, लूंबबो' (रू. भे.)

उ०—रेसमी, गुलाव, गैंद, केवड़ा समुहै छै। ग्रोर लीलडंबर तरोवर पर वेलिडियां लूंम रहै छै। —वगसीरांम प्रोहित री बात

लूंमणहार, हारो (हारी), लूंमणियो—वि० ।
लूंमिश्रोड़ो, लूंमियोड़ो, लूंम्योड़ो—भू० का० कृ० ।
लूंमीजणो, लूंमीजबो—भाव वा० ।

लूंमियोड़ो—देखो 'लूं बियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. लूंमियोड़ी)

लूंमभूंम—देखो 'लूंबझूंब' (रू. भे.)

लूंमी—देखो 'लूंब' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—ईढी कवडाळी माथै पर श्रोडी । छैली अलकावळ मुखड़ै पर छोडी । झणकै झालरियो झूमरियां झटकै । लूंमी भीगां री लूंणी तळ लटकै । —ऊ. का.

लू—सं. पु.—१ लोप ।
२ काल । ३ प्रलय । ४ छेदन । ५ गुदा । ६ रुद्र । (एका.)
सं. स्त्री.—१ ग्रीष्म ऋतु में चलने वाली बहुत गरम हवा ।
उ०—गियो सियाळो, आयो ऊनाळो । लू वाजइ छै, सीत लाजइ छै । पग दाझइ छै । तावड़ो तपीजइ छै । —सभा स्रंगार
उ०—२ सादूळा केसरीसिंह ज्वाळानळ 'अगनी सूं बळतां थका वीझावन रा हाथिश्रांरी पेटरी छाया विसरांम करै छै । भुयंग सरप नीसरीश्रा छै । सो लू नै तावड़ै री अगनि सूं बळता थकां द्रौड़ि द्रौड़ि नै हाथीश्रां रै सीतळ सूंडाहुळा मांहे पेसि पेसि रहीश्रा छै । —राजांन राउतरो वात - वणाव
उ०—३ लू बाजै धरती तपै, मास आकरो जेठ । आंग्या पावस ऊलरै, ऊभी मिंदर हेठ । —अग्यात
क्रि. प्र.—लागणी, चालणी, वाजणी ।
रू. भे.—लूश्र, लूय ।
क्रि. वि.—तक, पर्यन्त ।

लूश्र—देखो 'लू' (रू. भे.)
उ०—१ दूखण दीधे दुरजणे, ओपै कवित असल्ल । लूश्र झलक्कै लागतै, आवै स्वाद अवल्ल । —ध. व. ग्रं.

लूश्रणो, लूश्रबो—पोंछना ।
उ०—वस्त्र कमाया जटामल-भरी दुरबळ प्रभा ऊनरी । लूई आसूं वांणी वकि, सोक प्रवाह सही नवि सकि । —नळाख्यांन

लूश्रर—देखो 'लूर' (रू. भे.)

लूकड़ी—देखो 'लांकी' (रू. भे.)

लूकमुल—सं. पु.—एक देश का नाम ।

लूको—सं. पु.—लुच्चा, बदमाश ।
२ लफगा, चोर

लूखट—स. पु.—वृक्ष विशेष ।
उ०—लीव सविगह लगरणीश्रां, लीवोई लोबांन । लूखट लासा लींबरू, सगियगि लांबां पान । —मा. कां. प्र.

लूखाणो, लूखासणो, लूखाहणो—सं. पु.—१ मवेशी रखने वाले परिवार की वह स्थिति जब कोई मवेशी दूध न देता हो ।
२ परिवार विशेष की वह स्थिति जब घर में दूध देने वाला मवेशी न हो ।

लूखो—वि. (स्त्री. लूखी) १ जिसमें चिकनाहट न हो, अस्निग्ध । चिकनाहट रहित ।
उ०—१ इण भांत मनूरूदास रै तो माम्नरी फाचरै आई पण आई । कठै तो वे बी० टी० श्रो० रा ऐंठा-चूंठा वासण मांजनै लूखा सूखा टुकडा खावण अर कठै श्रा मायची भोगणी । —अमर चूंनड़ी
२ पौष्टिक तत्त्व रहित भोजन या जिसमें पौष्टिक तत्त्व की कमी हो, सार रहित ।
उ०—इम जाणे पकवांन अरोगू, धापर मिलै न लूखो धान । आदम की विध करै 'श्रोपला', भोळा जै रचियो भगवांन । —श्रोपो आढो
३ नीरस, फीका ।
उ०—१ लाग लाडरी धारहूं काई घटै, जिणमे कटिया हुवै जिकै हीज कटै । काइ खाया अर काइ भूखा, लाग बिना सारा ही लागै लूखा । —र. हमीर
उ०—२ रहण कह्यां राजनै, दुरस नह प्रभता दावै । इलण कह्या हित हांण, जिका विण सही न जावै । मिया दिया मोकलै, वर्णै किम लूखा बाइक । साथ हुवां सांपरत, लोकलज रहै न लाइक । —र. हमीर
४ अप्रिय, अरुचिकर ।
उ०—माहिमां परमातम आतम नही मालम । वाल्ही धण नै तज बिलखांणो बालम । भाई भाई, नै भूखो तज भागो । पग पग पुरसा नै लूखो जग लागो । —ऊ. का.
५ जिसमें नम्रता या शिष्टता का अभाव हो ।
६ जिसमें दया, स्नेह आदि मधुर प्रवृत्तियों का अभाव हो ।
७ खुरदरा ।
रू. भे.—लुक्ख, लुक्खो ।

लूगड़ी—स. स्त्री.—१ स्त्रियों के श्रोढने का वस्त्र ।
उ०—झूठी लूसड़ी की खाली आंख ऊगड़ी कोन्या, झांकै इसी रीस आवै लेल्यू लूगड़ो उतार । —ऊ. का.
२ देखो 'लूगड़ो' (अल्पा., रू. भे.)

लूगड़, लूगड़, लूगड़ो, लूगड़ू, लूघड़ो–सं. पु.—१ ओढने का एक वस्त्र विशेष ।

उ०—१ आज अपूजित देव छइ, पात्री लाविन पुत्र । करि लेई कटकु । लूगड़ कछोटी कटि सूत्र । —मा. कां. प्र.

२ वस्त्र, कपड़ा ।

उ०–१ वरिहाहां री गांव लूटियो । सासू रवाय रा लूगड़ा खोसणां । सु देवराज देखतां खोसणा —नैणसी

उ०–२ ताहरां वीजा ही ठाकुरां ही कहियो-म्हे पणि लूगड़ा पहिरअर उठेहीज मुजरो करिस्यां । —द. दा.

उ०—३ न पावै राव मीठो कदे न जीमें, न पैरे लूघड़ा कदे नीका । डाकियो प्रसण जम जिम हैंला दियै, कसी विध आवसी नीद कीका । —ओपो आढो

रू. भे.—लुगड़ो, लुगडो

अल्पा.,—लुगड़ियो, लूगड़ी, लूगडियो, लूगडी

लूघा–स. पु.—१ मुसलमानों की जाति विशेष ।

उ०—चडे सब्बदां-वेध लूघा सिघाणं । चडे तूणमें घातिआ भूल वांण । —गु. रू. बं.

२ ढीला-ढाला ।

उ०—धुर पेंड न हालै मायो धूंणै, हाकुं केण दिसा हेराव । दत मौने राघव तै दीनो, पाछो लै तो लाखपसाव । चौड़ी पीठ सांकड़ी छाती, करड़ उघड़ी लूघा कांन । लाखांई बाता पाछो लीजे, कवर न दीजे दांन कुदांन । —ओपो आढो

लूचबांण–सं. पु.—एक प्रकार का कुत्ता ।

उ०—लाहोरी ताजी लूचबांण गिलजा पहाड़ी । जिकांरी मूडहथ मोह नाळ, हाथ भर नस, वड़ रै पांन जिसा कांन । —रा. सा. मं.

लूट—सं. स्त्री—१ वलपूर्वक किया जाने वाला किसी वस्तु का अपहरण, छीनने की क्रिया ।

उ०—तुरक पण मांणस घणां कांम आया, सु तुरक पाछा वळिया, लूट काई न की । —नैणसी

२ लूट में प्राप्त धन, असवाव ।

उ०—प्रगट गांम पुर धवै अप्रवळ, मार-लियो वहतां पुर मंडळ । ओपत साथां मिळै अलेखै, लूट तणी विगती कुण लेखै ।—रा. रू.

३ विशेष परिस्थितियों में किसी की विवशता से अनुचित लाभ उठाने की क्रिया या भाव ।

क्रि. प्र.—मचांणी

लूटक–वि.—लूटने वाला, लुटेरा ।

लूटखसोट–सं. स्त्री.—लोगों को मारपीट कर माल असवाव छीनने का व्यापार या क्रिया ।

क्रि० प्र०—करणी, मचणी ।

लूटडू–सं. पु.—लूटेरा ।

उ०—दूसरा वढेरा ठाकुर कहे, 'समझ राखो गांव तो पांच दस आपणा मारीया, उजाड़ीया चोकस जो उठा हीज सों पाछो घिरतै री मारग जाय चांपां । कटक उहा री माल वित सो अभरी हुवो छै । अग पाछै घिरतै नुं इसड़ो दवावां लूटडू लोक छै सु हालतो रहसी । —तीडै छाडावत री वात

लूटणो, लूटवो–क्रि स. [सं. लुट्] १ चलते राहगीर से वलात् किसी वस्तु को छीनना ।

उ०—मिळ दळ प्रवळ राड़द्रह मारै, सार असुर साचोर संघारै । मीर पचास सहर में मारै, पमंग दरक लूटै अणपारै । —रा. रू.

२ शहर, गांव, वाजार, वरात और मकान आदि में अनधिकार रूप में घुस कर प्रवेश कर उसमें रखा माल असवाव उठा ले जाना ।

उ० —१ पड़ियो हाको पड़गनां, लियो भीमपुर लूट । रयण उंगाड़ा रूखड़ा, काट दिया ज्यां कूट । —भोपालदांन सांदू

उ०—२ आंगमियो कमधां असुर, लूटीजै अजमेर । किलम सफी-खां कांपियो, जवन थया सह जेर । —रा. रू.

उ० —३ मुहकम लग्गो मेड़तै. ज्यां दरियर पर पेख । आपड़ियो घर लूटतां, वाहर गोहरसेख । —रा. रू.

३ वेईमानी या धोखे से किसी की वस्तु या धन को हड़पना, अधिकार में करना ।

४ किसी के हाथ से पड़ी या छूटी वस्तु पर कब्जा करना ।

५ रसास्वादन करना, संभोग करना ।

उ०—जाभ रूप लूटियो विलास आठूं जांम । रोस, पुंज अली नांमरो स पूतली पाखांण । भूलां 'चन्द्रगाम' रो न धामरो बाखांण भूलां, वाम रो न भूलां भूलां काम रो वखांण । —र० हमीर

६ मोहित करना, वशीभूत करना ।

७ किसी दूसरे की वस्तु मनमाने ढंग से उपयोग करना ।

८ उचित मूल्य से अधिक कीमत पर विक्रय करके ठगना ।

९ वरवाद करना, नष्ट करना, नाश करना ।

लूटणहार, हारो (हारी), लूटणियो—वि० ।

लूटिओड़ो, लूटियोड़ो, लूट्योड़ो—भू० का० कृ० ।

लूटीजणो, लूटीजवो—कर्म वा० ।

लूटमार–सं. स्त्री.—लूटने व मारने का व्यापार या क्रिया ।

लूटाणो, लूटावो—देखो 'लुटाणो, लुटावो' (रू. भे.)

लूटाणहार, हारो (हारी), लूटाणियो—वि० ।

लूटायोड़ो—भू० का० कृ० ।

लूटाईजणो लूटाईजवो—कर्म वा० ।

लूटायोड़ो–भू० का० कृ०—देखो 'लुटायोड़ो (रू. भे.)

लूटावणो, लूटावबो—देखो 'लुटाणो, लुटावो' (रू. भे.)

लूटावणहार, हारो (हारी), लूटावणियो—वि० ।
लूटाविश्रोड़ो, लूटावियोड़ो, लूटाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

लूटावियोड़ो—देखो 'लुटायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लूटावियोड़ी)

लूटियोड़ो—भू. का. कृ.—१ चलते राहगीर से बलात् किसी वस्तु को छीना हुआ. २ शहर, गांव, बाजार, बरात और मकान आदि में अनधिकार रूप से घुस कर प्रवेश कर उसमें रखा माल-असबाब उठा ले गया हुआ. ३ बेईमानी या धोखे से किसी वस्तु या धन को हड़पा हुआ, अधिकार में किया हुआ. ४ किसी के हाथ से पड़ी या छूटी वस्तु पर कब्जा किया हुआ. ५ रसास्वादन किया हुआ, संभोग किया हुआ. ६ मोहित किया हुआ, वशीभूत किया हुआ. ७ किसी वस्तु का मनमाने ढंग से उपयोग किया हुआ. ८ उचित मूल्य से अधिक कीमत पर विक्रय करके ठगा हुआ. ९ बरबाद किया हुआ, नष्ट किया हुआ, नाश किया हुआ ।

(स्त्री. लूटियोड़ी)

लूटी—सं. स्त्री.—वह बकरी जिसके कान उसके शरीर के साथ चिपके हुए हों ।

लूटेरो—वि.—१ कूट-मार कर जबरन वस्तु छीनने वाला, लूटने वाला, लुटेरा, डाकू ।

उ०—कान्हो साथ ले पाली ऊपर आयो । आमथांन जो नीमरिया । कानै पाली मारी । लूटेरू लोग वित्त ले चालता रह्या ।
—नैणसी

२ किसी वस्तु का अनुचित मूल्य प्राप्त करने वाला ।
३ मोहित या वशीभूत करने वाला ।

लूठानई—देखो 'लांठो' (रू. भे.)

उ०—१ सार सुलक्षण जांणि करी, सदा निरंतर सेव । लूठानइ तू लेखवइ, देव करीनइ देव । —मा. कां. प्र.

लूड—वि.—१ बदमाश, शैतान ।

उ०—१ कोतिक लखे हुय विकराळ दीरघ रद किया, सालुल वरो चड सरीर खावण कज सिया । लेखे असतरी प्रभू लूड सारग सर लिया, दोऊ कांन नासा दूर आछट कर दिया । —र. रू.

लूडणो, लूडबो—क्रि. अ.—१ लड़खड़ाना ।

उ०—१ कटीए कल्लरा लूडता लालरा भोमि होदव्भरा गज्ज नारंगरा । —सू. प्र.

उ०—२ न जांणीइ रात्रि न जांणिश्र दीस, न जांणीअ पूरब न जांणीअ पस्चिम, सहू एकाकार हुई, इसिइ समय (पर) दलइ वरतमांनि राजा सन्नद्धबद्ध लोह चूर्ण हुइ सुहड सुहडइं सगुड हात्यीश्रा लूडइ, रथावली ऊथालवइ । —व० स०

लूडणहार, हारो (हारी), लूडणियो—वि० ।
लूडिश्रोड़ो, लूडियोड़ो, लूड्योड़ो—भू० का० कृ० ।
लूडीजणो, लूडीजबो—भाव वा० ।
लूडाणो, लूडावो, लूडावणो, लूडावबो—रू० भे० ।

लूडाणो, लूडावो—देखो—'लूडणो, लूडणो' (रू. भे.)

लूडाणहार, हारो (हारी), लूडाणियो—वि० ।
लूडायोड़ो—भू० का० कृ० ।
लूडाईजणो, लूडाईजबो—भाव वा० ।

लूडायोड़ो—भू. का. कृ.—१ लड़खड़ाया हुआ ।

(स्त्री. लूडायोड़ी)

लूडावणो, लूडावबो—देखो 'लूडणो, लूडबो' (रू. भे.)

लूडावणहार, हारो (हारी), लूडावणियो—वि. ।
लूडाविश्रोड़ो, लूडावियोड़ो, लूडाव्योड़ो—भू. का. कृ. ।
लूडावीजणो, लूडावीजबो—भाव वा. ।

लूडावियोड़ो—देखो 'लूडायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लूडावियोड़ी)

लूडियोड़ो—भू. का. कृ.—१ लड़खड़ाया हुआ ।

(स्त्री. लूडियोड़ी)

लूण—देखो 'लवण' (रू. भे.)

उ०—१ लागै दाधै लूण ज्यान व्है जीव रो । वैरी दयण न बोल पपीहा पीव रो । धणहर की व्है गाज क गाज अमागळां । सावळ बीज सळाव वगत्तर बादळां । —र. हमीर

उ०—२ श्रावहिया नील-पंखिया, वाढत दइ-दइ लूण । प्रिउ मेरा मइ प्रीउकी, तूं प्रिउ कहइ स कूण । —ढो. मा.

मुहा.—१ लूण खावणो=किसी का अन्न खाना । किसी के आश्रय में पलना ।

२ लूण-मिरच लगाणो=किसी बात को बढाचढा कर तोड़ मरोड़ कर कहना ।

३ बळधा माथै लूण बुरकणो=किसी को चिढाना, चुभती बात कहना ।

४ लूण उतारणो, लूण उवारणो=एक रस्म विशेष जिसमें विवाह के समय दूल्हे के पीछे बैठकर उसके ऊपर से नमक घुमाना जिससे दृष्टि-दोष आदि का असर न हो ।

लूणका—सं. स्त्री.—१ भाला क्षत्रिय वंश की एक शाखा ।

२ देखो 'लूणी'

लूणणो, लूणबो—क्रि. सं.—१ भेड़ की ऊन कतरना ।

२ फसल काटना ।

उ०—१ सातां सात कांनी व्है, मलार नै वितूण्यो । जांणि सांभठा सा व्है, किसाणां ईख लूण्यो । —शि. वं.

लूणणहार, हारो (हारी), लूणणियो—वि०।
लूणिग्रोड़ो, लूणियोड़ो, लूण्योड़ो—भू० का० कृ०।
लूणीजणो, लूणीजबो—कर्म वा०

लूणपण लूणपणो-सं. पु.—१ स्वामिभक्त होने का भाव। नमक-हलाल।
उ०—१ लेय ढाल हथावय लोह लगै, अणियां तुल पायक पाल अगै। सज ऊभाय पैदल सांम हणो, परधांन उजाळत लूणपणो। —पा. प्र.

लूणराव-सं. स्त्री.—१ भाटी वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।
उ०—१ गोपाळदेग्रोत, हड़वा, लूणराव, संमा, सांमेजा कंदल। —बां दा. ख्यात

लूणहरांम-वि.—देखो 'लूंणहरांम' (रू. भे.)
उ०—१ तिण पातिसाह रो मांमो ममरेजखांन तिणि एदल नू मारि अर टीको लियो दिल्ली रो। वरस एक राज कियो। पातिसाह सेती लूणहरांम कियो। —द. वि.

लूणहरांमी-सं. स्त्री.—देखो 'लूंणहरांमी' (रू. भे.)
उ०—१ तरै मांन कह्यो—ग्रै तो सोहैं म्हारा कांम आया।" तरै तुरकां कह्यो—ये लूणहरांमी की तिसी सजा। —नैणसी
उ०—२ नागजी खायो खजानै रो मालरे, वैरी. लूणहरांमी हो गयो, ओ नागजी। —लो. गी.
क्रि. प्र.—करणी।

लूणाई-सं. स्त्री.—१ भेड़ की ऊन कतरने की क्रिया या भाव।
२ फसल काटने का कार्य।

लूणागर-सं. स्त्री.—१ लूनी नदी का एक नाम।

लूणाणो, लूणाबो—१ भेड़ की ऊन कतराना।
२ फसल कटवाना।
लूणाणहार, हारो (हारी), लूणाणियो—वि०।
लूणायोड़ो—भू० का० कृ०।
लूणावणो, लूणावबो—रू० भे०।
लूणाईजणो, लूणाईजबो—कर्म वा०।

लूणायोड़ो-भू. का. कृ.—१ ऊन कतरा हुआ. २ फसल काटी हुई।

लूणावणो, लूणावबो देखो—'लूणाणो, लूणावो' (रू. भे.)
लूणावणहार, हारो (हारी) लूणावणियो—वि०।
लूणावियोड़ो, लूणाव्योड़ो—भू० का० कृ०।
लूणावीजणो, लूणावीजबो—भाव वा०।

लूणावियोड़ो—देखो 'लूणायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. लूणावियोड़ी)

लूणि-सं. पु.—१ मांस, गोश्त।
उ०—१ कोई दीह तांई घाव में लूणि न आया चिगदा घण सजोरा सेवसिघ जी घांम पाया। —शि. वं.

लूणियो-सं. पु.—१ एक प्रकार का घास विशेष।
२ मक्खन।
वि.—१ नमक का बना, नमकीन।

लूणियोड़ो-भू. का. कृ.—ऊन कतरा हुआ मेंढा।
(स्त्री. लूणियोड़ी)

लूणी-सं. स्त्री.—१ बच्चों का एक देशी खेल।
२ लूनी नदी।
वि. वि.—यह पुष्कर के पास से नागपहाड़ से निकल कर कच्छ के रन में समाने वाली मारवाड़ की एक प्रसिद्ध नदी है।

लूणो, लूबो—देखो 'लुवणो, लुवणो' (रू. भे.)
लूणहार, हारो (हारी), लूणियो—वि०।
लूणिग्रोड़ो, लूणियोड़ो, लूण्योड़ो—भू० का० कृ०।
लूणोजणो, लूणीजबो—कर्म वा०।

लूत-सं. स्त्री. [सं. लूता] १ मकड़ी, ऊर्णनाभ। (डि. को.)
रू. भे.—लूता, लूतार।

लूतरी-वि.—ढीठ, निर्लज्ज।
उ०—जाळ जीम विलाला जांमै, सांडा मात सपूतरी। मरु नाव खेवैया मयिहा, ल्यावण लोचै लूतरी। —दसदेव

लूता, लूतार—देखो 'लूत' (रू. भे.) (अ. मा.)

लूथ-सं. स्त्री.—कुंज।
उ०—बाग अनेक बावड़ी, अद्भुत फूल अपार। कोयल मोर चकोर पिक, जपत भंवर गुंजार। जपत भंवर गुंजार, गुलावां जूथ में। लता फूल लपटात, सरोवर लूथ में। —वगसीरांम प्रोहित री वात

लूथबत्थ, लूथवथ, लूथवाथ, लूथवूथ—देखो 'लथवथ' (रू. भे.)
उ०— हुवे लोह हत्थं, विन्है लूथवत्थं। जड़ै जमदाढं, करं पास काढं। —सू. प्र.
उ०—२ वेंडा जुधां गयंदां ढाल वे खेत वेढीगारो, चाळवै ससत्रां पंजा विरुथै सचाळ। लूथवत्थां अंगरेजां सूं सूर काळ रूपी लड़ै, उनागां खड़ग्गां सीह, विरद्दां उजाळ। —बुधजी सिंढायच
उ०—३ दोनूं ग्रोड खांपा सू, उ खाली तेथ हाथां। गोळी तीर सेलां, जराख सूं लूथवाथां। —शि. वं.
उ०—४ सीसोद कमधां सेंफळा, वहि सेल झळहळ वीजळा हुय लूथवाथ हकारियां, कर खंजर वाह कटारियां। —सू. प्र.

लूघड़ी-वि. [सं. लुब्ध प्रा. लुद्धा] १ आसक्त, लुब्ध।

उ०—१ आसो आसा लूधड़ी, हुं मेली ईणि कंति । मधुकर मालती परिहरी, पारधि पुठि भमति । —प्रा. फा. सं

लूमड़ो—देखो 'लूंवडो' (रू. भे.)

लूम-सं. स्त्री—१ पूंछ, दुम । (डि. को.)

उ०—१ सचोड़ा उरां सांकड़ां आसणोटा, मंडै पीठ मंचा जिसा गात मोटा । जिका गोळ पींडा उभै चाक जोड़े, तिकां चांमरी लूम भा लूम तोड़े । —वं. भा.

उ०—२ कसता विजै मंड कोदंड कंधा, वणावै अथा वेररै जेरवंधा । सटाया लजाळी लटाळी सुहावै, प्रिया नाग वाळी लखे दाग पावै । करै हालरा कालरा नाद कंठां, ग्रथीला मणी झालरा लूम गंठां । —व. भा.

२ संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें सभी शुद्ध स्वर लगते है ।

३ कपडा बुनने का करघा ।

४ देखो 'लूंब' (रू. भे.)

उ०—१ एक समय जागीरदार उणरै वाग में विगैर माळी री आग्या एक लूम दाख री लीवी । —नी. प्र.

उ०—२ म्हारै सील को वाजूवंद थिरक रह्यो, सांवलड़ो है वाजू-वंद री लूम । —मीरां

रू. भे.—लूंम ।

लूमकझूमक—देखो 'लांवकझूंमक' (रू. भे.)

लूमझूम—देखो 'लूंवझूंव' (रू. भे.)

उ०—वणे लूमझूमां हुवा सज्ज वाजी, तुखारी खुरासांण माड़ेच ताजी । किता खेत कंवोज वाल्हीक कच्छी, उडै फाळ लै लै फिरै ढाळ अच्छी । —वं. भा

लूमड़ी—देखो 'लोमड़ी' (रू. भे.)

लूमणो, लूमबो—देखो 'लूंवणौ, लूंववौ' (रू. भे.)

उ०—१ गह घूमी लूमी घटा, पावस उळट्या पूर । सांवण महिने सायवा, कदे न राखूं दूर । —अज्ञात

उ०—२ नख नहिं निरखाती नाजक, नखराळी, पिय जिय प्रत-पाळी जाती पथ पाळी । घूरण नयणां चल काजळ जळ घूमै । लड़थड़ आथड़ती प्रीतम गळ लूमै । —ऊ. का.

उ०—३ वाजरी रै लूमता सिट्टां नै देख मासी री मन थोड़ो घणो डुळियो । चालू वात रै भच मूचो देय वोली—पूंख खायां नै कई जुग वीत्या । —फुलवाड़ी

उ०—४ पवन चक्र वाजै पिछम, गळ लूमी कर गाढ । छैल महल मत छोड़ज्यो, आयो मास असाढ । —अग्यात

लूमणहार, हारौ (हारी), लूमणियो—वि० ।

लूमिओड़ो, लूमियोड़ो, लूम्योड़ो—भू० का० कृ० ।

लूमीजणो, लूमीजबो—कर्म वा० ।

लूमाणो, लूमावौ—देखो 'लूंवाणौ, लूंवावौ' (रू. भे.)

लूमाणहार, हारौ (हारी), लूमाणियो—वि० ।

लूमायोड़ो—भू० का० कृ० ।

लूमीजणो, लूमीजवो—कर्म वा० ।

लूमावणो, लूमाववो—रू० भे० ।

लूमाळो—देखो 'लूंवाळो' (रू. भे.)

उ०—पावां पचडोरी पगरखियां पैरै, सूरत सिघण सी वन जंगळ वैरै । लोई ओढणनै साड़ो लूमाळो, फूटर लटकंतो नाड़ो फूंदाळो । —ऊ. का.

लूम्यांरीडोरी-सं. स्त्री.—१ एक राजस्थानी लोक गीत ।

उ०—वाड़ विचाळै पींपळी, अे लूम्यांरीडोरी जेका झिरमिरिया पांन, वारी अे लूम्यांरीडोरी । —लो. गी.

लूय—देखो 'लू' (रू. भे.)

उ०—महा पित्रुनउ आलउ, आव्यो उन्हालउ लूय वाजइ कांन पापड़ि दाझइ । —रा. सा. स.

लूअर--देखो 'लूर' (रू. भे.)

लूर-सं स्त्री.—१ राजस्थान का एक लोकगीत जो फागुन मास में स्त्रियों द्वारा चक्राकार वृत में झूमझूम कर करतल ध्वनि के साथ नृत्य करते हुए गाया जाता है ।

उ०—होनी आयी, अे सहेल्यां, मिळ खेलां लूर होळी आयी अे कोरी कोरी ओढ्यां झींणी चूनड़ । कोरी कोरी ओढ्यां दिखणी चीर होळी आयी अे । —लो. गी.

२ गणगौर के त्यौहार पर, गणगौर की परिक्रमा करती हुई, पात-रियों द्वारा नृत्य के साथ गाया जाने वाला एक लोकगीत, जिसमें किसी विशेष पुरुष या राजा की कीर्ति का वर्णन रहता है । (वीकानेर)

३ लोक मंच पर, मारवाड़ी ख्याल करने वालों की ओर से, ख्याल की समाप्ति पर रात्रि के व्यतीत होने के समय, नृत्य के साथ गाया जाने वाला एक लोकगीत ।

४ सावण में तीज के त्यौंहार के दिन तीजणियों द्वारा गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

अल्पा.,—लूरड़ी ।

५ देखो 'लोर' (रू. भे.)

उ०—१ है थट हमस-हाहुस होय,. कटकां ग्यांन संख न कोय । लैणां चलै वळ-वळ लूर, खांन पठांण लसकर खूर । —गु. रू. बं.

उ०—२ सांवण आयो सायवा, लुळ लुळ वरसै लूर । गोख उडी-कै गोरड़ी, जोवन में भरपूर । —नारायणसिंह सांदू

रू. भे.—लूअर, लूवर, लूहर ।

लूरड़ी—देखो 'लूर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ अे मा, काकोजी नै कहकै मनै चूनड़ मंगा दे, मैं खेलण जास्यूं लूरड़ी। —लो. गी.

लूलण-सं. पु.—१ शिश्न, मूत्रेन्द्रिय।

लूली—देखो 'लूलौ' (पु.)

लूलू-वि.—मूर्ख, बेवकूफ।

उ०—अनधन जिण घर आसरौ। भला अरोगे भोग। पइसौ हुवै न पास में, लूलू कर दे लोग। —ऊ. का.

लूलोरा-सं. पु.—१ परिहार वंश की एक शाखा, जो बाद में मुसलमान हो गई।

लूलौ-सं. पु.—शिश्न, मुत्रेन्द्रिय।

अल्पा.—लूली।

वि. (स्त्री. लूली) १ जिसके हाथ-पांव कटे हुए हो।

२ जो कोई कार्य करने में असमर्थ हो।

लूवणौ, लूवबौ—देखो 'लुवणौ, लुवबौ' (रू. भे.)

लूवणहार, हारौ (हारी), लूवणियौ—वि०।

लूविओड़ौ, लूवियोड़ौ, लूव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लूवीजणौ, लूवीजबौ—भाव वा०।

लूवर—देखो 'लूर' (रू. भे.)

उ०—१ ओ जी ओ, मनै पाली री पोमचियौ रंगा दे, मोरी माय। लूवर रमबा मैं जास्यूं। —लो. गी.

लूस-सं. स्त्री.—१ सार तत्त्व।

उ०—गुण को प्रवाह, रूप को निघांन, गुणवंत की लूस जोवन को पेखणौ इसी उमां सांखुली छै। —लाली मेवाड़ी की बात

लूसणौ, लूसबौ-क्रि. स.—लूटना।

उ०—१ घरचां वांद मुंहडा सूं भागूं, गांमे घाली लाइ। गांमि गांमि लूसइ लूटायत, द्रूडी धाडां धाइ। —कां. दे. प्र.

उ०—२ कइ मइ कोइ मुनिवर संतापिउ, कइ उगती वेलिं कापी रे। कइ मइ कहिना भंडारज लूस्या, कइ लोधी वस्तु नापी रे। —नळदवदंती रास

उ०—३ जिहां भंडार भरचा हुता, चोर पइट्ठा त्यांहि। सरवस लूसी नीसरिउ, झाली आंणउ आंहि। —मा. कां. प्र.

लूसणहार, हारौ (हारी), लूसणियौ—वि०।

लूसिओड़ौ, लूसियोड़ौ, लूस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लूसीजणौ, लूसीजबौ—कर्म वा०।

लूसाणौ, लूसाबौ-क्रि. स.—(लूसणौ क्रि. का प्रे. रू.) लुटाना, लुटवाना।

उ०—सोरठ मांहि सहू को नाठउं, भरचा देस लूसाई। भाजइ नगर अभंग आगिलां, आडई कोइ न थाइ। —कां. दे. प्र.

लूसाणहार, हारौ (हारी), लूसाणियौ—वि०।

लूसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लूसाईजणौ, लूसाईजबौ—कर्म वा०

लूहणौ, लूहबौ—१ बाल नोंचना, उखेड़ना।

उ०—आवइ आवासि आपणइ, अगिं लूहंता केस। पुण्य हुई तु पांमीइ, वेस्या-केरु वेस। —मा. कां. प्र.

२ देखो 'लुवणौ, लुवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां राजा ऊठि, हाथ झालि, उरौ खेंचि गादी कन्हैं आंण बैसाणियौ। कुंवर री आंखी रांणी लूही मुंहडै ऊपरि हाथ फेरै है। —पलक दरियाव री बात

उ०—२ कांमण तणा कपोल री, प्यारौ लूहै पीक। अलवेलण पिया अधर री, लूहै काजळ लीक। —र. हमीर

उ०—३ ताहरां लाखैजी घोड़ै ऊपर पछेवड़ी फेरी। पछेवड़ी सूं घोड़ौ लूह्यौ। —नैणसी

लूहणहार, हारौ (हारी), लूहणियौ—वि०।

लूहिओड़ौ, लूहियोड़ौ, लूह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लूहीजणौ, लूहीजबौ—कर्म वा०।

लूहर—१ देखो 'लूर' (रू. भे.)

ऊ०—१ गहणां में लड़ांभूंब हुयोड़ी लुगायां री लैंण लूहर री ललकार में जिण टेम सांमने वाळी लैण नै जवाव देवण आगै बढती तौ उणां रै पगां रा धम्मीड़ा सूं धरती धूजण लागती। —रातवासौ

उ०—२ उण दिन सूं इण चाकरी में लाखणसी रौ ठिकांणौ बीदासर बराबर बांधियौ अरु मीरगढ रै नवाव नूं पण इण मारियौ तिण सूं लाखणसी री लूहर गाईजै है। —द. दा.

उ०—३ तरै सांवणरी तीज ऊपरां चढियौ तिकौ पाछिलै पोहर घड़ी दोय दिन थकां महेवै तीज मिळी छै, तीजणियां लूहर गावै छै। —जगमाल मालावत री बात

लूहियोड़ौ—देखो 'लुवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लूहियोड़ी)

लैंग-सं. पु.—१ वह पुरुष जिसके बाल-बच्चे व स्त्री आदि न हो।

उ०—बोदारे आडा वहैं, सोदा मिळने सैंग। भूकोड़ा भंमता। फिरै, लाडू खावै लैंग। —ऊ. का.

ले-सं. पु.—१ दान २ तार ३ पुत्र, सुत ४ राम ५ दक्ष ६ वस्तु ७ मलिन ८ ढंग, तरीका ९ मेल, मित्रता। (एका.)

अव्य.—१ तक, पर्यन्त।

लेइणौ, लेइबौ—देखो 'लैणौ, लैबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जिम नांमूं जूठूं जांणि ते वांणिक लेइनि वालि। तिम ध्याताए जूठा जमणी, रवि ससि नि कुंडालि। —नळाख्यांन

उ०—२ आडो अड़ि एकाएक आपड़े, वाग्यो एम रुखमणी वीर। अबळा लेइ घणी भुंइ आयो, आयो हूं पग मांड अहीर। —वेलि.

लेइणहार, हारो (हारी), लेइणियो—वि०।

लेइओड़ो, लेइयोड़ो, लेयोड़ो—भू० का० कृ०।

लेईजणो, लेईजवो—कर्म वा०।

लेइयोड़ो—देखो 'लियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री लेइयोड़ी)

लेई-सं. स्त्री.—१ आटा या मैदा को पानी के साथ घोलकर आग पर पका कर गाढा बनाया हुआ लसदार पदार्थ जो कागज आदि चिपकाने के काम में आता है।

२ गाय भैंस के दूध पीने वाले बच्चे का मल, विष्टा।

रू. भे.—लई

लेकचर-सं. पु. [अं.] १ व्याख्यान, भाषण।

लेकचरबाजी-सं. स्त्री.—२ खूब भाषण देने या करने की क्रिया।

क्रि. प्र.—करणी।

लेकण—देखो 'लेखण' (रू. भे.)

उ०-लेकण कर खाग राड़ रा लहणा, सिंगवी तै लीधा सरताज। मागै जकै अर्जे नह मूकै, आठ गुणा देतांई आज। —बुधजी आसियो

लेखंगी-वि.—१ लिखने वाला, लेखक।

लेखइ-सं. पु.—१ हिसाव।

उ०—'रतनिगु' ए 'पुनिगु' बेवि, दांणु दियंतउ नवि खिसए। मांणिक ए मोतिए दांनि, कणय कापडु लेखइ किसए। —ऐ. जै. का. सं.

लेख-सं. पु.—१ लिखे हुए अक्षरों का समूह।

२ लिखावट।

३ पत्र, चिट्ठी।

उ०—१ लेखिणि कागल लेई-करि, लिखवा बईठी लेख। गुण गणतां गहिली थई, जांणउ रती न रेख। —मा. कां. प्र.

उ०—२ मया करनै मूकजो, कुसळ खेम ना लेख। लीलापति लखजो वळी, समाचार सु विशेष। —ढो. मा.

४ निबन्ध, रचना।

५ लिपिबद्ध किये हुए विचार, लिखी हुई बात।

[सं.] ६ देव, देवता। (ह. नां. मा.)

उ०—१ स्रीरघुनाथ समत्थ, हत्थ धारण धनु सायक। सेवक सरण सधार, लेख सेवै पद लायक। —र. ज. प्र.

उ०—२ दांमोदर तूझ दसै द्रगपाळ, किता इक पार न जांणै काळ। उमा तो पार अगम्म अलेख, लखम्मी तूझ न जांणै लेख। —ह. र.

७ प्रारब्ध, भाग्य।

उ०—१ सुभ मझि असुभ लेख विध साखै, असुभ सगुन प्रथमी सह आखै। जोतिस सगुन विहूं विध जांणै, पोह ज्यां वरजै लेख प्रमांणै। —सू. प्र.

उ०—२ सांभळि ध्यांन धरै दुज साचो, तिणनूं वर वाळा त्रपुराचो। करतां ध्यांन सकति इम कहियो, लेख प्रमांण सुपनि न्रप लहियो। —सू. प्र.

उ०—३ अई लेख असी भइ, हर हर कर जिग्र हाय। कासी दिस कलिआंणमल, चलैह भसम चढाय। —कल्याणसिंघ बाढेल री बात

उ०—४ गैहणो पोसाख नहीं तो पिण रिणधवळ सूरज आगै चंद्रमा दीसै त्यूं दीसै थो। पिण लेख सूं जोर नहीं। —जगदेव पंवार री बात

८ लौकिक मान्यतानुसार विधाता द्वारा भाग्य में लिखा शुभाशुभ घटना-चक्र।

उ०—१ कह्यो न मांनत क्यूं कह्यं, भूलत हौ द्रग देख। टळै नहीं तिल टाळियो, लिख्यो विधाता लेख। —गज उद्धार

९ समाचार।

१० प्रतिज्ञा-पत्र।

उ०—रांणै समांन वय रा विवाह रो नरम कीधो सुणि कुमार चूंडै वडा प्रसभ रै प्रमांण पिता रो संबंध करवाइ आप चित्तोड़ री गादी छोडण रो लेख करि मारवाड़ रै अधीन कीधो। —वं. भा.

११ परस्पर की हुई लिखापढी, लिखत।

उ०—इण कारण जिण रै जमी होइ सोही सूरवीर ठाकुर कहावै। परन्तु जैता अबही सौं मीणां री चाल चोडि रजपूतां री राह री राह में रहण रो लेख करि सूंपै तो यो संबंध करण में आवै। —वं. भा.

१२ पाप, कुकर्म।

उ०—बिलफत करै विसेस, प्यारी गळ लाग पिया रै। हो बिरचां मति हीण, किसका लेख किया रै। रंग उछरंग री रात, दुरंग जिण साथ दिखाई। ईस्वर गति अलेख, पार किणही नह पाई। —बख्तावरजी मोतीसर

रू. भे.—लेखउ, लेखव, लेखि, लैखव।

लेखउं—देखो 'लेखो' (रू. भे.)

उ०—१ जीरण्ण रिणउं खांधे पांजरे करी दीजइ, लिहणा देवा लोहडीयानी लाज न कीजइ; लेखउ कगी लीजइ। —व. स.

उ०—२ हरिद्रा तणउ रंग, पाणी तणउ तरंग, दासि तणउ हेज, आंवा तणउ मउर, कलालनउ लेखउं मद्यप तणउं प्रतिपन्नउ। —व. स.

लेखक—सं. पु.—१ लिखने का कार्य करने वाला, वह जो लिखता हो।
२ आजीविका या मनोरंजन हेतु कहानी, उपन्यास आदि लिखने वाला।
३ किसी कृति का रचयिता।
अल्पा.,—लइयो, लेहियो

लेखण, लेखणि, लेखणी—सं. स्त्री.—१ लिखने या अक्षर बनाने की वस्तु, कलम, लेखनी।

उ०—१ अर जो तूं कागज दोत लेखण लै आवै तो तोनै लिख द्यां तद गुवाळ तीरै कागद दोत लेखण पेटी मांहै थी सो काढै नैं राजा हजूर मेल्या। —गांम रा धणी री वात

उ०—२ मन जांणै पिऊ पै मिसरी, छाछ सोवनी मिळै न छांट। वळिया सो पाछा कुण वाळै, उण घर री लेखण रा आंट। —ओपो आढो

उ०—३ जाळी मगि चढि चढि पंथी जोवै भुवणि सुतन मन तसु मिळित। लिखि राखै कागळ नख लेखणि, मसि काजळ आंसू मिळित। —वेलि.

२ लिखने की क्रिया या कला।
३ कै या वमन करने की क्रिया।
४ हिसाव करने की क्रिया।
५ खांसी नामक रोग।
६ वहत्तर कलाओं में से एक।
७ समझने या जानने की क्रिया।
रू. भे.—लेकण, लेखण, लेखन, लेखिणि।

लेखणो, लेखबो—क्रि. स.—१ लिखना।

उ०—१ 'अजन' तणो लख जोस अफारो, सोच करै जवनां दळ सारो। पातसाह उर में भ्रम पायो, लेखिस पुत्र 'अजीम' बुलायो। —रा. रू.

उ०—२ कागळ नहीं क मस नहीं, नहीं क लेखणहार। संदेसा ही नाविया, जीवुं किसइ आधार। —ढो. मा.

२ समझना, जानना।

उ०—१ लग मत्ता चौवीस छंद मत्त लेखजै, सुज यां अधिका मत उपछंद विसेखजै। वरण मत सम नहीं असम पद जांणजै, वै छंदा मिळ दंडक मत्त वखांणजै। —र. ज. प्र.

उ०—२ जिणसूं किणही नै फरमाय हाथ देखीजै। कै तो मारि आवां कै पकड लावां तो रजपूत लेखीजै। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

३ सोचना, विचारना।
४ मानना, स्वीकार करना।

उ०—पेखियो सहर जोधांण पत, सव जग धणी संपेखियो। वप आंभ परख च्यारू वरण, लाभ नयण पण लेखियो। —रा. रू.

५ देखना।

उ०—समग्रि भार घर गुणां सवाया, ओडै कंध धमळ थळ आया। भुजे ऐम कहि भार भळायो, लेखि प्रीत सुत हियै लगायो। —रा रू.

६ हिसाव करना. गिनती करना।

उ०—चंद्रकला ते विकला जांणी, घटत वढत नइ लेखइ। साहिव नइ तउ सदा सुरंगी, वाधई कला विसेखइ। —वि. कु.

लेखणहार, हारो (हारी), लेखणियो—वि०।
लेखिओड़ो, लेखियोड़ो, लेख्योड़ो—भू० का० कृ०।
लेखीजणो, लेखीजवो—कर्म वा०।
लेखवणो, लेखववो—रू० भे०।

लेखन—देखो 'लेखण' (रू. भे.)

उ०—परीक्षासुद्ध रत्नजाति लीजइ, परदेसी वस्तुनां आय पूछीइं वाणुत्रना लेखना टीपणा संभालीइं। —व. स.

लेखप्रणाळी—सं. स्त्री. यौ.—१ लिखने की शैली, ढंग तरीका।

लेखरिखम—सं. पु. [सं. लेखर्षभ] १ इन्द्र, सुरपति। (ह. नां. मा.)

लेखवणो, लेखववो—देखो 'लेखणो, लेखबो' (रू. भे.)

उ०—१ 'लखो' 'कमो' आचागलो, 'सूजो' 'जैत' हराह। चींत भळावी दुरगसी, लेखवि प्रीत घराह। —रा. रू.

उ०—२ उठै हसन दळ लियां अभूता, हिलियो महण क दवखणं हुंता। ओ वी समें दिवस खड़ि आयो, लेखवतां मग मास न लायो। —रा. रू.

उ०—३ तांणतो मांण ताकै तिकौं, ऊंधै मुख सूं आंगणो। लेखवो दुरस सगळै लखण, मरण सरीखो मांगणो। —ध. व. ग्रं.

उ०—४ हमै पीठी सिनांन सारू भूखण वसतर खोलै है. तिण समै इणरो रूप देख नायण 'रंभा' वोलै है। जो कमलां ऊपर हीरा देखवां तो नखां सहत यां पगां नै उपमा लेखवां। —र. हमीर

उ०—५ विण हणू लंक परखण विभो, सम्र गुणि कुंण मांडै स्रमण। 'अभसाह' विनां पतिसाह अति, लेखवि और न लख जण। —रा. रू.

उ०—६ निलवटि कस्तूरी तिलक, म करिसि मुधि ! अयांण। सहिजि ससिहर लेखवी, करसि राहु-विनांण। —मा. कां. प्र.

लेखवणहार, हारो (हारी), लेखवणियो—वि०।

लेखविम्रोड़ो, लेखवियोड़ो, लेखव्योड़ो—भू० का० कृ०।

लेखवोजणो, लेखवीजवो—कर्म वा०।

लेखवळि-वि.—१ भाग्यवश, प्रारब्धवश।

उ०—पड़हार घणा हणि सुजस पांमि, कमधज्ज लेखवळि अयो कांमि। रच सींची महुरत इसै रेण, जिण वंघराज घर अडिग जेण। —सू. प्र.

लेखवि-सं. स्त्री.—१ पुष्प, सुमन। (ह. नां. मा.)

२ लक्ष्मी।

लेखवियोड़ो—देखो 'लिखियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लेखवियोड़ी)

लेखसाल—१ पाठशाला।

उ०—१ देवकुल अट्टालप्रासादभाल पोसघसाल लेखसाल हस्तिसाल तुरगसाल, व्यायामसाल। —व. स.

उ०—२ वररुचि माडी लेखसाल, पंडित छात्रप ठावि रे। छीलर जल यू हंसलु, कारणि किठइ आविरे।। —प्राचीन फागु-संग्रह

लेखांतर-सं. पु. [सं. लेख+अन्तर] भाग्य, प्रारब्ध।

रू. भे.—लिखांतर।

लेखापाखे-वि.—१ अपार, असंख्य।

उ० -१ लेखापाखे लूटिया, घोड़ा ऊट दरब्ब। रौद्र प्रचार संघारिया सारे मार सरब्ब। —रा. रू.

लेखाफाड़, लेखावही-सं. स्त्री.—लेनदेन का हिसाब या लेखा रखी जाने वाली वही जिसमें सूद आदि जोड़ा जाता है।

लेखारिखभ-सं. पु. [सं. लेखर्षभ] १ इन्द्र, सुरपति (ह. ना. मा.)

लेखि—देखो लेख' (रू. भे.)

उ०—१ ढोला रहिसि निवारियउ, मिळिसि दई कइ लेखि। पूंगळ हुइस ज प्राहुणउ, दसराहा लग देखि। —ढो. मा.

लेखिणि—देखो 'लेखण' (रू. भे.)

उ०—१ लेखिणि कागळ लेई करि लिखवा बईठी लेख। गुण गणतां गहली थई, जाणउ रती न रेख। —मा. कां. प्र.

लेखियोड़ो-भू. का. कृ.—१ लिखा हुआ. २ समझा हुआ, जाना हुआ. ३ सोचा हुआ, विचारा हुआ. ४ हिसाब लगाया या किया हुआ, गिना हुआ. ५ देखा हुआ. ६ माना हुआ, स्वीकार किया हुआ.।

(स्त्री. लेखियोड़ी)

लेखिराति, लेखिराती-सं. पु. [सं. लेख्यराति] १ श्वान, कुत्ता।

लेखूं—देखो 'लेखो' (रू. भे.)

उ०—सुंदर मुग्ध मोहामणू रे, तेह हवि किहां देखूं। एक वारि दुःख पड्यूं ए, क्रियहि नावि लेखूं। —नलाख्यान

लेखे, लेखै-क्रि. वि.—१ हिसाब में, गिनती में।

२ निमित्त।

लेखैपासो-सं. पु—१ वही का वह भाग जिस ओर खर्च की जाने वाली राशि अंकित की जाती है।

लेखो-सं. पु.—१ आय-व्यय का विवरण, खाता।

३ समानता, सादृश्यता।

उ०—एक मिळै है लेखो. लिलाड देखो भावै अरधचंद्र देखो। आ उपमा सुणतां ही आवै रीस, कठै नाळेर नै कठै सीस। —र. हमीर

३ व्यवहार।

उ०—सांचापण रहियो सरस, लेखो समझ लियोह। आप दियो जद आप नूं, दिल म्हैं पहल दियोह। —र. हमीर

४ हिसाव, विवरण।

उ०—१ नगद खजांनै रो लेखो करो सो लेखो कियां खजांनो घणो दीठै तरै उजीरां अमरावां कही—इतरो माल दरवेसां नूं नहीं दियो चाहिजै। लस्कर विगर सांमांन नहीं रहै। —नी. प्र.

उ०—२ आंगण म्हारे लोटाजी तिरिया, पिछवाड़े हसती तिरांया जी। भोळा सा राजन लेखो भी मांगे, दमड़ी को तेल कठै गयो जी। —लो. गी.

उ०—३ देखो बिगड़ी देह, डोळ बिगड़गो देखो। विगड़ गई सब बात, लारलो लै कुण लेखो। —ऊ. का.

५ गिनती, गणना।

उ०—तीन बरसा में वे तीन वेळा घरै आया। बीस...बीस दिन री छुट्टी में। वा आगळियां माथै गिणण लागी।...एक बीसी... दो बीसी अर तीन बीसी...तीन बीसी दिनां रा महीना कितरा महीना व्है। भगवांन जाणैं। किणनै लेखो आवै। —अमरचूंनड़ी

रू. भे.—लेखउ, लेखूं।

लेड़ो-सं. पु.—१ ऊंट का पतला विष्टा, मल।

लेचि, लेछी—देखो 'लैंची' (रू. भे.)

लेजम-सं. स्त्री. [फा.] १ एक प्रकार का धनुष।

उ०—वंकि पटां फूलहथां, सोरि खिलकार फुसत्री। तस कसीस लेजमां, जजर गत्ती जाजत्री। ज्यांन मढ़ी बज्जर. भूर दाढा चव फेरां। भौंह चढी मौसरां, होथ कड्ढी समसेरां। इलमां कुरांण कहि कहि अली, वदै बीद हूरां वरण। हावस्स खेल जैहीं हरख, मुसलमांन वहमै मरण। —सू. प्र.

२ धनुष चलाने का अभ्यास करने के निमित्त बनी हुई नरम और लचकदार कमान।

लेट-सं. स्त्री—१ लेटने की क्रिया या भाव ।

[अं.] २ देरी, विलम्ब ।

उ०—जिणदिन सूं म्हूं इणरी मा नै खांधै चढायनै पुगायनै आयो हूं, उणदिन सूं लगायनै आजदिन तांई औ नितरोज मोटर माथै जावै अर उणरै आवणरी वाट उडीकै । मोटर पांच दस मिनट लेट भलांई व्हो पण इण रै जावण में जेज नीं व्है । —अमर चूंनड़ी

वि०—जिसे देरी हुई हो ।

लेटणो, लेटबो-क्रि. अ. [सं. लेटनम्] १ किसी खड़ी रहने वाली वस्तु या प्राणी का जमीन पर गिर पड़ना, या जमीन से सटना ।

उ०—कर विधांन करवत ले कासी, ले व्रज रेणू लेटै । पग्यो न दिल प्रभुरै पद पंकज, भिसत न त्यांतिक भेटै । —र० रू०

२ शयन करना, नींद लेना ।

३ आराम करना, सुस्ताना ।

लेटणहार, हारो (हारी), लेटणियो—वि० ।

लेटिओड़ो, लेटियोड़ो लेटयोड़ो—भू० का० कृ० ।

लेटीजणो, लेटीजबो—भाव वा० ।

लेटफीस-सं स्त्री., यौ. [अं. लेट+फी] १ निश्चित अवधि के पश्चात् किसी वस्तु अथवा व्यक्ति को प्रवेश हेतु दिया जाने वाला अतिरिक्त शुल्क ।

लेटरबाक्स-सं. पु. यौ [अं. लैटर+बॉक्स] १ डाकखाने का वह डिब्बा, जिसमें बाहर भेजी जाने वाली चिट्ठियां आदि डाली जाती हैं ।

लेटाड़णो, लेटाड़बो—देखो 'लेटाणो लेटाबो' (रू. भे.)

लेटाड़णहार, हारो (हारी), लेटाड़णियो—वि० ।

लेटाड़िओड़ो, लेटाड़ियोड़ो, लेटाड़योड़ो—भू० का० कृ० ।

लेटाड़ीजणो, लेटाड़ीजबो—कर्म वा० ।

लेटाड़ियोड़ो—देखो 'लेटायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लेटाड़ियोड़ी)

लेटाणो, लेटाबो-क्रि. स. (क्रि. का. प्रे. रू.) १ किसी खड़ी रहने वाली वस्तु या व्यक्ति को झुका कर जमीन पर गिराना, या सटाना ।

२ शयन कराना, सुलाना ।

३ आराम करने में प्रवृत्त करना ।

लेटाणहार, हारो (हारी), लेटाणियो—वि० ।

लेटायोड़ो—भू० का० कृ० ।

लेटाईजणो लेटाईजबो—कर्म वा० ।

लेटाड़णो, लेटाड़बो, लेटाणो, लेटाबो, लेटावणो, लेटावबो ।

—रू० भे० ।

लेटायोड़ो-भू० का० कृ०—१ किसी खड़ी रहने वाली वस्तु या व्यक्ति को झुका कर जमीन पर गिराया हुआ, सटाया हुआ. २ शयन कराया हुआ, सुलाया हुवा. ३ आराम करने में प्रवृत कराया हुआ ।

(स्त्री. लेटायोड़ी)

लेटावणो, लेटावबो—देखो 'लेटाणो, लेटाबो' (रू. भे.)

लेटावणहार, हारो (हारी), लेटावणियो—वि० ।

लेटाविओड़ो, लेटावियोड़ो, लेटाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

लेटावीजणो, लेटावीजबो—कर्म वा० ।

लेटावियोड़ो—देखो लेटायोड़ो'

(स्त्री. लेटावियोड़ी)

लेटियोड़ो-भू. का. कृ.—१ कोई वस्तु या व्यक्ति झुक कर जमीन पर गिरा हुआ या सटा हुआ. २ सोया हुआ, सुप्त ।

(स्त्री लेटियोड़ी)

लेठो-सं. पु.—कमी ।

लेड—देखो 'लेडो' (रू. भे.)

लेडको-सं. पु.—देखो 'लैंडको' (रू. भे.)

लेडो (स्त्री लेडी)—१ मूर्ख, बेवकूफ ।

२ कायर राजपूत ।

उ०—फिट 'वीकां' फिट कांधलां, जंगळधर लेडांह । 'दळपत' हुड ज्यूं पकड़ियो, भाज गइ भेडांह । —अज्ञात

मह.—लेड

लेण—देखो 'लाइन' (रू. भे.)

लेणदार—देखो 'लैणदार' (रू. भे.)

लेणरित-सं पु. १ याचक, भिखारी । (अ. मा.)

लेन-देन—देखो 'लेण देण' (रू. भे.)

लेना-सं. स्त्री.—१ भाटी वंश की एक शाखा ।

उ०—भाटियां री खांप लिखते-जेचंद, जेतुंग, बुध केलण सरूपसी, सीहड़, लेना, छीकण । —बां. दा. ख्यात

लेप-सं. पु.—१ कोई गाढी एवं गीली वस्तु जो किसी दूसरी वस्तु पर लगाई या पोती जाने की हो ।

२ उक्त प्रकार की वह तह जो किसी दूसरी वस्तु पर लगाई या चढाई गइ हो ।

३ उबटन

उ०—ऊगटि-काजि ऊतावलुं, कीधुं करदम-यक्ष । ललना लेप करइ रही, सेवा-विसइ समक्ष । —मा. कां. प्र.

क्रि. प्र. करणो, चढाणो, लगाणो

रू. भे. लेपन

लेपक-वि.—लेप करने वाला।

लेपकरम्म-सं. पु.— १ स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक।

उ०—१ अंजन, लेपन, चित्रकरम्म, उपलकरम, लेपकरम्म लोहकरम्म। —व. स.

लेपड़ो—देखो 'लेवड़ो' (रू. भे.)

लेपणो, लेपबो-क्रि. स. [लिपनम्] १ किसी गाढी व गीली वस्तु की तह चढ़ाना, पोतना, लेपना

लेपणहार, हारो (हारी), लेपणियो—वि०।

लेपिग्रोड़ो, लेपियोड़ो, लेप्योड़ो—भू० का० कृ०।

लेपीजणो, लेपीजबो—कर्म वा०।

लेपन—१ चौसठ कलाओं में से एक।

उ०—१ अंजन, लेपन, चित्रकरम्म, उपलकरम,, लेपकरम्म। —व. स.

२ देखो 'लेप' (रू. भे.)

उ०—अग लेपन लगावीजै छै। अंगे खोलीजै छै। —रा. सा. सं.

लेबल-सं. पु. [अ.] १ बोतल, पुस्तक, डिब्बा आदि पर लगी हुई कागज की वह छोटी चिट जिस पर उस वस्तु का नाम व विवरण लिखा होता है।

लेबो-वि.—लटकता हुआ। (होठ)

उ०—लास रै खनै ऊभै पुजारी लेबो होठ कियां जरदा री पिचकारी छोडतां कह्यौ—सिवहरे सिवहरे घोर कळजुग आयगो। इण गाम री पुन्याई अवै खतम व्हैगी। —अमर चूनड़ी

लेमटो-सं. पु.—१ बाजरी के आटे का बना खाद्य पदार्थ।

उ०—१ मैं अवै थोड़ो म्हारो काजळ वाली डबी मे मूंडो तो देखो किस्यो व्है गयो है, लेमटा री घर छै जिसो। —रातवासो

लेमन-स. पु.—१ नीबू के सत का वह शरबत जो हवा के जोर से बोतल में बन्द किया गया हो।

लेरियो—देखो 'लहरियो' (रू. भे)

उ०—१ ऊनाळा रा पोमचा, चोमासा रा लेरिया। सियाळा रा फागण्यां, छपावो म्हारा जोड़ीरा रतन सियाळो राजन यूं ही गियो जी। —लो० गी०

लेळ—देखो 'लेलिह' (रू. भे.)

लेलर, लेलरी-सं स्त्री—चूने की मिट्टी की दीवार में लगने वाला एक प्रकार का रोग या किटाणु जिसके कारण दीवार टूटने व खराब होने लगती है।

क्रि. प्र.—लागणो

लेलक-सं. पु.—एक प्रकार का घास।

लेलहांन, लेलिह लेलिहांन-सं. पु.—१ सर्प, सांप (अ. मा., ह. नां. मा.)

लेली—१ देखो 'लैली' (रू. भे.)

२ देखो 'लैला' (रू. भे)

लेळो—१ जिसके लार टपकती हो।

२ भोला।

लेव-सं. पु. [सं लेप] १ स्पर्श, असर।

उ०—१ गाईजे नवरंग फाग ए लागए नवि पाप लेव। सेवक सिवपुर माग ए, मागए भवि भवि सेव। —प्राचीन फागु-संग्रह

२ देखो 'लेवड़ो' (मह. रू. भे.)

लेवड़—देखो 'लेवड़ो' (मह. रू. भे.)

लेवड़ो-सं. पु. [स. लेप प्रा. लेव+ रा. प्र. ड़ो] १ कच्ची या चूने की दीवार की पपड़ी।

रू. भे. लेपड़ो

मह.—लेव, लेवड़

लेवणो, लेवबो—देखो 'लैणो, लैबो' (रू. भे.)

उ०—१ विरछां वेलां पर चढणै बुधि चाही, उर में अलबेलां बेलण सुध आई। आणां लेवणनैं अंवूळा आया, दरसण दैवणनैं मोभी मुळकाया। —ऊ. का.

उ०—२ नवी हुवोड़ा नीच, डबी भर लेवै डाकी। दैठ सभा रै बीच करै मगवार कजाकी। —ऊ. का.

लेवणहार, हारो (हारी), लेवणियो—वि.।

लेविग्रोड़ो, लेवियोड़ो, लेव्योड़ो—भू. का. कृ.।

लेवीजणो, लेवीजबो—भाव वा.।

लेवाड़, लेवाड़ो, लेवाळ-वि.—१ लेने वाला।

उ०—१ दाखै दाद हिंदवाद राज रीज वनां दाखो, लाखां वातां गोरा दळां रटक्कां लेवाड़। चंद सूर साखी दाखी जहांन भावती चूंडा, मूंडै मूछ्यां राखी, राखी जावती मेवाड़।

—सलूंवर रावत केसरीसिंह रौ गीत

उ०—२ खिजायो त्रिनेण प्रळै काळ रौ रिमां धू खगे, पांखियो नागेंद्र फतै पाव रौ प्रभाव। लेवाळ अंतरौ गजां घाव रौ सुमार लागै, सेल मास'रावरी क्रतान्त रौ सुजाव।

—राजा बलूंसिंघ रौ गीत

२ खरीददार, ग्राहक

रू. भे.—लिवाळ

लेवियोड़ो—देखो 'लियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लेवियोड़ी)

लेवी-सं स्त्री.—१ सरकार द्वारा अभावग्रस्त क्षेत्रों में अनाज भेजने हेतु या अन्य कारणवश की जाने वाली अनाज की वसूली।

लेवो-सं. पु.—१ ऊनी वस्त्रों को खराब कर काट देने वाला एक सूक्ष्म कीड़ा।

उ०—१ पसू खाल की वर्ण पगरखी, पैर पैर सुख पावै । अरथ खाल थारी नहिं आवै, लेवौ अरथ लगावै । —ऊ. का.

लेस–वि. [सं. लेश] १ सूक्ष्म ।

२ अत्यल्प, थोड़ा (डि. को.)

उ०—१ रज तम गुण को लेस न राख्यो, सत्वगुण लयो सभागी । सत्त्वगुण की सम्प्रदाय सवही, विवेक आदि लिया सागी । —सुखरांमजी महाराज

उ०—२ वात मुदौ संधियां विगर, लागै लपट न लेस । डहकि न चित्त डुळावज्यो, इण में औ आदेस । —र. हमीर

उ०—३ मन खंडण की येहि उपाई, द्वैत अद्वैत उठाजी । से सरहे सो अपना आपही, लेस नहीं दूजाजी । —सुखरांमजी महाराज

३ किंचित, तनिक ।

उ०—१ न दियै दुख लेस किणी जण नांमी, केसव वेस मजूर कियौ । मंड पाव कळे स कळे स मिटावण, देस कहै छज नेस दियौ । —भगतमाळ

४ अणु

५ एक अलंकार विशेष जिसमें किसी वस्तु के वर्णन के केवल एक ही भाग या अंश में रोचकता आती है ।

६ देखो 'लैस' (रू. भे.)

लेसाळ, लेसाळा—देखो 'नेसाळ' (रू. भे.)

उ०—१ जिहां भोगी करइ रेवाड़ी, इसी विसाल वाडी । जिहां पढइ छत्र चउसाल, तिहां इसी अनेक लेसाळ । —सभा

लेसाळियौ लेसाळीयउ—देखो 'नेसाळियौ' (रू. भे.)

लेसूड़ौ, लेसूवौ—देखो 'लसोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ तिण ऊपर घणां वड़ा पींपळां वोर वकायण नींव नाळेर आंवा आंवली सीसूं सरेस खेजड़ जाळ आसपालो खिजूर गूंदी लेसूड़ौ केसूला खिरणी मोळसिरी । —रा. सा. सं.

लेस्या–सं. स्त्री—१ जैन धर्मानुसार जीव की वह अवस्था जिससे कर्मों का आत्मा के साथ सम्बन्ध हो ।

वि० वि०—यह छः प्रकार की होती है ।

लेहंगौ—देखो 'लहंगौ' (रू. भे.)

लेह–सं. पु. [सं. लेह्य] १ भोजन, आहार (अ. मा.)

२ आनन्द, मजा ।

उ०—१ हँसज्यो कसज्यो खेलज्यो, लीज्यो जीवन लेह । पलक न न्यारां पोढज्यो, नाजक घण रा नेह । —वगसीरांम प्रोहित री वात

३ चाटकर खाई जाने वाली वस्तु ।

४ ग्रहण का एक भेद जिसमें पृथ्वी की छाया सूर्य को जीभ के समान चाटती हुई प्रतीत होती हैं ।

रू. भे.—लेहण

लेहण—देखो 'लेह' (रू. भे.) (डि. को.)

लेहणौ—देखो 'लैणौ' (रू. भे.)

लेहणौ, लेहवौ–क्रि. स. [सं. लेहः] १ चाटना ।

२ स्वाद, लेना, चखना ।

लेहणहार, हारौ (हारी), लेहणियौ—वि. ।

लेहिग्रोड़ौ, लेहियोड़ौ, लेह्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लेहीजणौ, लेहीजवौ—भाव वा. ।

लेहल्ल–वि.—१ पकड़ कर रखने वाला ।

लेहाफ—देखो 'लिहाफ' (रू. भे.)

लेहाल—देखो 'नेसाल' (रू. भे.)

लेहासभा–सं. स्त्री—१ लेखक मण्डली

उ०—१ आस्थानसभा स्त्रीगरणसभा व्ययकरणसभा धरम्माधिकरण-सभा देवकरणभा पंडितसभा लेहासभा भांडाकार कोस्टाकार । —व. स.

लेहियोड़ौ–भू. का कृ.—१ चाटा हुआ. २ स्वाद लिया हुआ, चखा हुआ ।

(स्त्री. लेहियोड़ी)

लेहियौ—देखो 'लेखय' (अल्पा. रू. भे.)

लेह्य–सं. पु.—१ चाटने के लिए बना पदार्थ ।

लैंगिक–सं. पु. [सं.] १ वैशेषिक दर्शन के अनुसार लिंग द्वारा प्राप्त होने वाला ज्ञान, अनुमान ।

वि.—१ लिंग सम्बन्धी, लिंग का ।

२ चिन्ह सम्बन्धी ।

३ अनुमित ।

लैंगौ—देखो 'लहंगौ' (रू. भे.)

उ०—गोरे कंचन गात पर, अंगिया रंग अनार । लैंगौ सोहे लचकतो, लहरचौ लफादार । —र. हमीर

लैंण—देखो 'लाइन' (रू. भे.)

उ०—वे सगळाई पोत पोतारा ध्यांन में नीचा माथा कियोड़ा खाता-खाता चाल रह्या । वांरै एक कांनी मोटरां री लैंण चाल री धीरै-धीरै । इसौ लागै जांणै कीड़ी नगरौ जागग्यौ ।

—अमर चूंनड़ी

लैंप–सं. पु. [अं.] १ दीपक ।

रू. भे.—लंप ।

लंसर-सं. पु. [अं.] १ रिसाले का एक भेद, जिसके व्यक्ति भाला लिए हुए घोड़े पर सवार रहते हैं।

लै-सं. पु.—१ राम २ प्रलय ३ उमया ४ रमा, लक्ष्मी ५ करुणा दया ६ अवसर मौका (एका.)

७ ध्यान, लगन।

उ०-१ दादू द्रम्टें द्रस्टि समाइले, सुरतें सुरति समाइ। समझें ससझ समाइले, लै सौं लै ले लाइ। —दादूवांणी

उ०—२ रांम कहै जिस ग्यांन सौं, अम्रत रस पीवैं। दादू दूजा छाडि सब, लै लागी जीवै। —दादूवांणी

८ वश, अधिकार।

ज्यूं—आ उणरैं लै पड़ती वात है।

लैकार-सं. स्त्री.—१ लयपूर्ण ध्वनि, मधुर ध्वनि।

उ०—१ वाळूं वावा देसड़उ, जहां पांणी सेवार। ना पणिहारी झूलरउ, ना कूवइ लैंकार। —ढो. मा.

[सं. लय+कार] २ विनाश, संहार।

उ०—संघार मार लैंकार सेन, मिळ सार धार अंधार मेन। घड गुंड खंड वे रुंड धक्क, करमाळ वहै किरि काळ चक्क। गु. रू. वं.

लैंफो - देखो 'लहको' (रू. भे.)

लैखव—देखो 'लेख' (रू. भे.)

लैचाळ-सं. पु.—१ तलहटी।

उ०—दोळो जिण दूरगरैं, वसियो नगर विसाळ। यूं वसियो अमरावती, मेर तणो लैचाळ। —भोपाळदान सांदू

२ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष।

वि. वि.—इसके विषम चरणों में दस मात्राओं और आठ मात्राओं पर विश्राम होता है। सम चरणों में आठ मात्राएं रखकर रगण के बाद 'जी' शब्द लगता है।

रू. भे.—लहचाळ

लैची-सं. स्त्री.—१ चारण कुलोत्पन्न एक देवी।

उ०—सचीयाय तुं ही वांकल विसेक, लोलीयें लाल लैंची तुं लेख। —रांमदांन लाळस

रू. भे.—लेची, लेछी।

लैजो—देखो 'लहजो' (रू. भे.)

लैण-सं. स्त्री.—१ तुरंत व्याई हुई गाय।

२ मृतक के बारह दिवसोपरान्त जाति में वितरित किया जाने वाला बरतन या पात्र।

३ देखागे.

४ देखो 'लाइन' (रू. भे.)

लैण किलियर-सं. पु. [अं. लेनक्लियर] रेलगाड़ी के गार्ड या ड्राईवर को आगे रास्ता साफ होने की दी जाने वाली सूचना।

लैणदार-सं. पु.—जिसका ऋण चुकाना हो।

लैणदण-सं. स्त्री.—१ लेन और देन का व्यवहार, आदान-प्रदान।

२ व्यापारिक व सामाजिक क्षेत्र में लेन-देन का व्यवहार।

३ व्याज पर रुपया उधार देने व लेने का व्यवहार।

रू. भे.—लेन देन, लैणो दैणो, लैन दैन

लैणायत, लैणायती-वि.—१ ऋण दाता, कर्ज देने वाला।

उ०—१ तठां उपरांति करि नै राजांन सिलामति जिण भांत लैणायत दीठां दैणांयत घटै तिम तिणि भांति दिन दिन निसि दीठै सूरज री तेज घटण लागो नैं सूरज री तेज घटियो राति मोटी होण लागी। —रा. सा. सं.

उ० —२ सुणां नाग नर देव सकोई, विमगो दांन अछूनी वात। कीवी किणी न कोई करसी, पदम जिसी लैणायत पात। —महाराज पदमसिंह री गीत

रू. भे.—लहणायत, लेणायत, लेणायती।

लैणार लैणियार-वि.—१ लेने वाला।

उ०—१ तकण समै कासी माहै वरस दंन माहै हेकण दंन वैसांखी पूरणमासी करवत देअै। तठै करवत रा लैणार सारा बीजा ही कोहीं हूंता ते पण आंण मिळिया। —कल्याणसिंघ वाढेल री वात

रू. भे.—लणियार, लणिहार, लणीहार।

लैणियो-स पु.—१ लाभ, मुनाफा।

२ कर्ज ऋण।

लैणो-सं. पु.—१ ऋण, कर्जा।

२ लाभ, मुनाफा।

३ हित, भलाई।

रू. भे.—लहणो, लिहणो

अल्पा.,—लहणियो, लहण्यो

लैणो दैणो—देखो 'लैणदैण' (रू. भे.)

उ०—थारै नैं राजा रै कांई लैणो दैणो रै चौधरी? यूं उणनैं मतीरो क्यूं भेट करणो चावै। —अमर चूंनड़ी

लैणो, लैवो—क्रि. स.—१ प्राप्त करना, पाना।

उ०—१ उणरै रूप री हाको चौफेर हवा में घुळग्यो हो सोळै। वरस तो लैणा दूभर व्हैगा। मां री कूख में मायगी पण माईतां रै आंगणै नीं माई। —फुलवाड़ी

उ०—२ लोभी ठाकुर आवि घरि, कांई करइ विदेसि। दिन दिन जोवण तन खिसइ, लाभ किसाकउ लेसि। —ढो. मा.

२ मोल लेना, खरीदना।

उ०—१ ईडर की धर अउलगरा, हूं तउ जांरा न देसि। घरि वइठाही आभरण, मोल मुहंगा लेसि। —ढो. मा.

उ०—२ घरि वइठा ही आविस्यइ, लाखे लियां लड़ंग। तिणमइ लेस्या टाळिमा, वांकड़ मुहां विड़ंग। —ढो. मा.

३ किसी पदार्थ को उठाकर या व्यक्ति को चलाकर कहीं से लाना या पहुंचाना।

उ०—१ भरी रूप रंग रस भरी, लुळ आवै जळ लैण। सरवर त्यां निरखरा सही, नीरज किया क नैरा। —र. हमीर

उ०—२ मीर सिकारां नै हुकम हुवौ छै। वाज, जुररा, कुही, वहरी, सिकरा लगड़ चिपक तुरमती साथ लीजै छै।

—खीची गंगेव नींबावत रो दोपहरो

उ०—३ दूजै दिन मांरास वडारण मा री छोकरी आदमी सव हेक आया भरमल नुं लैण नुं। —कुंवरसी सांखला री वारता

४ सेवन करना, खाना।

ज्यूं—दवा लैणी, परसाद लैणौ।

५ अधिकार या कब्जे में करना।

ज्यूं—जमीन लैणी, गांव लैणौ।

६ पहुंचना।

ज्यूं—आपां नै अठासूं गांव लैणौ मुसकल ज्यूं त्यूं कर घर तांइ लैणौ।

७ वहन करना, उत्तरदायी वनना।

८ किसी वस्तु या व्यक्ति का उपभोग या उपयोग करना, काम में प्रवृत्त करना।

ज्यूं—बळद नीं हा तौ ट्रेक्टर सूं कांम लैणौ हो। इण वगत में नोकर सूं कांम लैणौ कठण है।

९ अमूर्त वातों, विचारों, परामर्श आदि के सम्वन्ध में किसी रूप में प्राप्त करना।

ज्यूं—सलाह लैणी, मन रौ भाव लैणौ, थाह लैणौ

विशेष:—'लैणौ' क्रिया का प्रयोग वहुत सी क्रियाओं के साथ संयोजक क्रिया के रूप में होता है जहां पर यह क्रिया उस क्रिया की पूर्ति या समाप्ति का सूचक होती है। जैसे—खा लैणौ, पी लैणौ, उठा लैणौ, सुरा लैणौ आदि। कुछ अवस्थाओं व परिस्थितियों में यह इस वात का भी सूचक होता है कि कर्ता कोई वहुत ही कठिनता से, जैसे-तैसे अथवा भद्दे या वहुत ही साधारण रूप में कोई क्रिया पूरी करने में समर्थ होता है। जैसे—टूटी-फुटी अंग्रेजी वोल लैणी, थोड़ी घणी संस्कृत समझ लैणी।

मुहा.—लैणौ एक नै देणां दो—कोई सम्वन्ध न होना।

लैणौ न कोइ देणौ—सम्वन्ध विच्छेद करना।

लैणा रा देणा पड़णा—जान पर आ पड़ना।

लैणहार, हारौ (हारी), लैणियौ—वि०।

लियोड़ौ—भू० का० कृ०।

लिरीजणौ, लिरीजवौ—कर्म वा०।

लहणौ, लहवौ, लह्यणौ, लह्यवौ, लियणौ, लियवौ, लिवणौ, लिववौ, लेवणौ, लेववौ, लेहणौ, लेहवौ—रू० भे०।

लैन—देखो 'लाइन' (रू. भे.)

लैनदैन—देखो 'लैणदेण' (रू. भे.)

उ०—हियै हठी हमीरसौ अठी अमीर अैन में। दया गंभीर देखिये, घमीर लैनदैन में। —ऊ. का.

लैम-सं. पु.—किंचिनकाल, अल्पकाल।

लैर-क्रि. वि.—१ देखो 'लारै' (रू. भे.)

उ०—१ मत ना अे रांणी! ममळौ मारो, मत ना काढो सेल जैपुर मिळी जोधपुर मिळगी, मिळगी वीकानेर दोय पगां नै जागां कोनी, भाई होग्या लैर। —डूंगजी जवारजी री छावळी

उ०—२ लागौं रै थां सू नेह पनाजी म्हांरो अव जोरा जोरी तो निभावौ सांवळड़ा थांरी लैर म्हांरो मागो रे।

—रसीलैराज रा गीत

उ०—३ गिरचो काळ कूट परी भग तुच्छी, परे विथुरे भूमिपै नाग विच्छी। जटी भूत प्रेतं लियै लैर लग्यौ, हठी वीरभद्र तमासै उमग्यौ। —ला रा.

२ देखो 'लहर' (रू. भे.)

उ०—१ लैर-लैर में धमचक लागी, पांणी जाय पाळ नैं लड़ियो। काछव पूछ्यो माछळी, कांइ चूक पड़ी कै घाटो पड़ियो।

—चेतमांनखो

उ०—२ ठडी वूठोड़ां री लैर मीठा वटाउ रा गीत। भली भादरवा री रात, मिळी मनड़ै रा मीत। —चेतमांनखो

उ०—३ नित भूधर सीत निवारन का, विन जे गळ गूदर धारन का। कर ले धर लैर कमंडळ की, महिमा हर लै महिमंडळ की।

—ऊ. का.

रू. भे.—लैरां, लैरयां।

लैरको, लैरड़ो—देखो 'लहर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ वड़ला री जाडी छींया नै पांणी रा ठाडा लैरका।

—फुलवाड़ी

लैरदार—देखो 'लहरदार' (रू. भे.)

लैरां—देखो 'लारै' (रू. भे.)

उ०—कमधजिया लैरां चालां ली, मोहौ मोही वांकड़ी तरै मुं।

आय खड़ी छै तुरी घर आंगण, लूंवाभूंमा दावण झालां ।
—रसीलैराज रा गीत

लैराणो, लैरावो—१ देखो 'लहरणो, लहरवो' (रू. भे.)
२ देखो 'लहराणो, लहरावो' (रू. भे.)
लैराणहार, हारो (हारी), लैराणियो—वि० ।
लैरायोड़ो—भू० का० कृ० ।
लैराईजणो, लैराईजबो—भाव वा० ।

लैरियादार—देखो 'लहरदार' (रू. भे)

लैरियां—देखो 'लारै' (रू. भे.)

लैरियो—देखो 'लहरियो' (रू. भे)

लैरी—देखो 'लहरी' (रू. भे.)

लै'रो—१ देखो लहर' (अल्पा., रू. भे.)
२ देखो 'लहरियो' (रू. भे.)
उ०—१ पणिहारयां परवार, जाय सरवर जळ ल्यावण । झूलरियै झणकार, लसकरां लैरो गावण । —दसदेव
उ०—२ लबालव जळ लैरो भीजै, हरख वगै घर हांफती । चटकै नीर निचोय नारयां, कुड़ कुड़ती सी कांपती । —दसदेव

लैरयां—१ देखो 'लारै' (रू. भे.)
२ देखो 'लैर' (रू. भे.)

लैरयो—देखो 'लहरियो' (रू. भे.)

लैलहाणो, ललहावो—१ देखो 'लहलहाणो, लहलहावो (रू. भे.)
लैलहाणहार, हारो, (हारी), लैलहाणियो—वि० ।
लैलहायोड़ो—भू० का० कृ० ।
लैलहाईजणो, लैलहाईजबो—भाव वा० ।

लैलहायोड़ो—देखो 'लहलहायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. लैलहायोड़ी)

'**लैला-सं. स्त्री.**—१ ईरान के प्रसिद्ध आशिक मजनू की प्रेमिका ।
रू. भे.—लेली, लैली ।

लैली-सं. स्त्री.—१ एक प्रकार का पक्षी ।
रू. भे.—लेली ।
२ देखो 'लैला' (रू. भे.)

लैस-सं. पु.—१ वड़ी व लम्वी नोंक वाला एक प्रकार का वाण ।
२ भाला ।
३ कपड़ों पर लगाने का वेल-बूंटेदार फीता या वेल ।
उ०—छैल दुपट्टा द्यो तो दुपट्टा री लैस द्यो तो। पीळी पीळी मोहरां द्यो तो, पूजूं गणगोर । —लो. गी.
वि.—१ वर्दी व शस्त्रों से सुसज्जित ।
उ०-जमदूत ठाकरां रै बिलकुल सांमनै उभा हा-सस्तर पाती सूं लैस मूंडा रै बुकनी दियोड़ा अर हाथां में नागी तरवारां लियोड़ा ।
—रातवासो
२ सब प्रकार की सामग्री से सजा हुआ, पूर्णयुक्त ।
रू. भे.—लेस, ल्हेस ।

लों—देखो 'लौ' (रू. भे.)
उ०—१ नभाग्नी वायु लों जळ धरनि आपू इन नहीं । महात्मन तेरे हैं अवर, नहि मेरे इन, मही । —ऊ. का.
उ०—२ गुडी लों उडी गिद्धनी व्योम छायो । नहीं हूर रंभा रथां पथ पायो । भिरी पक्खरां पक्खरां भीरि पूरं । हयं गज गाहं भय चूरमूरं । —ला. रा.

लोंक-सं. स्त्री.—लचक ।

लोंगी – देखो 'लूंगी' (रू. भे.)
उ०—माथै केसरीया पाग छै पैहरण लाल लोंगी छै । नै कहै छै, "रे रात तीतर बोलै छै । —खोखर छाडावत री वात

लोंड—देखो 'लोंडो' (मह., रू भे.)

लोंडपण, लोंडापणो-सं. पु.—१ वच्चों जैसी हरकत, छिछोरापन ।

लोंडो-स पु.—देखो 'लौंडो' (रू. भे.)
(स्त्री. लोंडी)

लोंदो – देखो 'लूंदो' (रू. भे.)

लो-सं. पु.—१ मोह ।
२ प्रीति ।
३ मछली ।
४ शिला ।

लो'—देखो 'लोह' (रू. भे.)
उ०—१ ऊजळ मळ संकुळ पीठी उवटांणीं, करडै लो' साथै अरण कूटांणी । कळिया कूंळां री कादै में कळगी, विसहर संगत सूं पीपळियां वळगी । —ऊ. का.

लोअड़ो—१ देखो 'लंड' (अल्पा., रू. भे.)
२ देखो 'लघु' (रू. भे.)

लोअण—देखो 'लोचन' (रू. भे.)
उ०—१ लोअण तेह खिसि पडउ, केय पर त्रीय उल्हासी । चरण गेह तलि जाउ, जेणरिण पाछा नासी । —प. च. चौ.
उ०—२ 'कामकंदला' कही कही, अडहड मूकइ धाह । पूरि चढियां पांणि वहइ, लोअण ना परवाह । —मा. कां. प्र.

'**लोअणडो**—देखो 'लोचन' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—लोअणडे लेखूं नहीं, वाधिउ पूर-प्रवाह । दीन वयणइं वेहूं दुखी, दैवइ दीधु दाह । —मा. कां. प्र.

लोअरकोरट-सं. पु. [अं. लोअर कोर्ट] १ नीचे की अदालत।

लोइ—देखो 'लोक' (रू. भे.)

उ०—१ पंचेन्द्रिय भव मनुस्यह तणु. आरय देस उत्तम कुल गणु। साधु तणउ योग दोहिलु होइ, ग्यानद्रस्टि जोउ भविया लोइ।
—नळदवदंती रास

उ०—२ देस निवाणूं सजळ जळ, मीठा बोला लोइ। मारू कांमिणी दिखणि घर, हरि दीयइ तउ होइ। —ढो. मा.

२ देखो 'लोई' (रू. भे.)

उ०—प्रघळी पटाट पूर, गाढ दाढ गज्ज-ऊर। लोइ दीप में लोचन्न, कांगरि सारीखा कन्न। —गु. रू. बं.

लोइण—देखो 'लोचन' (रू. भे.)

उ०—१ दीठी रूपाळी म्हैंई घणियां, पण इसी यांही ज लोइणां री अणियां। जिण भांत खतंग रा वांण,लागां पछै हरै हीज प्रांण।
—र. हमीर

उ०—२ चोटी वाळी चमक लोईणां लागणी, फणधर जिसडै फैल नवी कांइ नागणी। अलकां वळ अदभूत छुवंती छत्तियां, ऊभकती अंग अग कता जण तत्तियां। —र. हमीर

लोइयौ-स. पु.—१ कच्चा मतीरा। (बीकानेर)

लोई-सं. स्त्री—१ आटे की रोटी वेलने हेतु बनाया गोलीनुमा अंश।

२ स्त्रियों के ओढने का एक खास रंग में रंगा हुआ ऊनी वस्त्र।

उ०—१ लोई ओढण नै साड़ौ लूंमाळौ, फूटर लटकंतौ नाड़ौ फूंदाळौ। पावां पचडोरी पगरखियां पैरै, सूरत सिघण सी बन जगळ बैरै। — ऊ. का.

उ०—२ अंबर घावळ आंगी, सिर लोई सोहै। —मे. म.

उ०—३ लोई सिर फावत घावळ लंक, चमूं पर सावळ सूळ चमंक।
—मे. म.

३ देखो 'लोवड़ी' (रू. भे.)

मह.—लोवड़।

४ कबीर की पत्नी का नाम।

५ प्रसव के पश्चात स्त्री या बच्चे के की जाने वाली मालिश।

६ देखो 'लोही' (रू. भे.)

उ०—खरी नींद में ग्वाज, मूढ खिण बैठै मारै। नख लांबा सूं निठुर, लोई काढै ललकारै। —ऊ. का.

मुहा.-लोई मरणौ=कायरता आना।

लोई ठसणौ=खून जमना, आश्चर्य चकित होना।

लोई पीवणौ=रक्तपान करना, परेशान या दुखी करना कष्ट देना।

लोई भरीजणौ=पशुओं से अधिक परिश्रम लेने के बाद किसी बंद स्थान पर बांधने से रक्त संचार का बंध हो जाना।

रू. भे.—लोइ।

लोईझांण—देखो 'लोहीझांण' (रू. भे.)

लोईयाळ-वि.—१ रक्त से भरा हुआ, रक्त-पूर्ण।

लोकंजन-सं. पु.—एक प्रकार का कल्पित अंजन जिसके लगाने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है।

रू. भे.—लोपांजन।

लोक-सं. पु.—१ संसार, जगत।

उ०—१ नारायण रा नांम सूं, लोक मरत है लाज। बूडैला बुध वायरा, जळ बिच छोड जिहाज। —ह. र.

उ०—२ चैत मास री चांदणी, सरस बधी संग सोक। जांण आज खुमजाइला, लोम सरां सइ लोक। —र. हमीर

२ समाज।

उ०—नायण जिण में गुण नहीं, लोक कुटब लड़ैह। पथ वहां इण प्रेम रै, परवस प्रांण पड़ैह। —र. हमीर

३ ऐसी जगह या स्थान जिसका बोध देखने से होता है।

४ विभिन्न प्राणियों का विशिष्ट निवास स्थान।

ज्यूं—जीवलोक, मनुष्यलोक, देवलोक आदि।

५ पुराणानुसार माने गये वह स्थान जहां भगवान के भक्त मरणोपरान्त जाकर रहते हैं।

वि. वि.—पृथ्वी, स्वर्ग, और पाताल लोक ये तीन तीन लोक माने गये हैं, परन्तु आगे चलकर विभिन्न विद्वानों के मतानुसार १४ लोक माने जाने लगे, जिनमें सात ऊर्ध्व लोक एवं सात अधः लोक। भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक महर्लोक, जनर्लोक तपर्लोक और सत्यलोक, ये सात ऊर्ध्व लोक हैं। अतल, वितल, सतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल ये सात अधःलोक हैं।

६ प्रजा, जनता।

उ०—१ तिण ऊपरै रजपूत वेसै तिको इसड़ी आखडी पाळै, तिको इज वेसै नहीं तौ तलाक छै। गांव रौ धणी पाटवी नै छै। और लोक नचंत वेठौ व्यापारी नचित।
—रांमदास वेरावत री आखडी री वात

उ०—२ आवे मीर गांव ऊतरियौ, धूजै लोक तुरक अत धरियौ। इसड़ी ताल 'पाल' हर आया, दुयणां निजर कूंत दरसाया।
—रा. रू.

उ०—३ कोटवाळ कन्हे आदमी गयौ, बोलाय ल्याया। कोटवाळ पत्र ढूंढियौ लोक भेळा हुआ। —खापरे चोर री वात

७ सेना, फौज।

उ०—१ अठै जादुराय रा असवार हजार छव मारया गया। तथा मा'राज खनैं हजार तीनक लोक रयो। —द. दा.

उ०—२ जोधांणै 'माल' अजैगढ 'जैतौ' 'कूंप' बीकपुर राज करै। लाखां लोक चढे ज्यां लारै, दिली आगरौ दहूं डरै। —जेता कूंपा रौ गीत

उ०—३ जद कुंवर चांदसिंघ सिवसिंघोत नै किसनसिंघ सादावत दोनूं पांच हजार लोक ले चढिया। —वां. दा. ख्यात

उ०—४ तद पाछा फिर खेतसी नूं मारियो जुहर हुवौ लोक घणौ कांम आयौ।

८ परिग्रह, परिजन।

उ०—१ रांणीजी मास १॥ दोढ बीकानेर रहि अर रांणीजी रै टीकै री पहिरावणी लोकां नूं दे अर वळै राजाजी रा तेड़ाया ताहरां राजाजी दिसा सिधाया। —द. वि.

उ०—२ तद चहुवांण मंडळीक री घोड़ियां रा पूंछ वाढिया, अर भैंसियां रा मगर तेल सूं बाळिया। तरै ओ किसो मन में राखि अर आपरे लोकां में समचो कर अर आपरा मांमा सूं चूक कियौ। —नैणसी

उ०—३ तद इयै राजा सांम्हां आपरा परधांन मेल्हीया। कुंवर पासै आय पूछण लागा कैरौ साथ छै। तद कुंवर रा लोकां कही कुंवर वीरभांन छै फलांणा रौ बेटौ छै सु वापरै पासै आवै छै देसौटै गयो हुंतौ तिको आयौ छै। —चौबोली

९ व्यक्तियों का समुह, झूण्ड, दल।

उ०—तद तलवाड़ै थी चहुवांण पीहर गई बाहड़मेर। लोक साथै घणौ हुतौ, सु चहुवांणां रै उजाड़ रोज घणौ करे। —नैणसी

१० कृषक, किसान।

उ०—१ खेड़ौ सूनौ वसीवांन लोक को नहीं। गांगारडै रा लोक खेत खड़ै। —नैणसी

उ०—२ रा० मानसिंघ मुरारदास री वसी रा लोक खेत खड़ै। —नैणसी

उ०—३ खेत सखरा सेंवज गेहूं चिणा हुवै। सेझौ नहीं काहथ वासणी रा लोक वाहे। —नैणसी

११ साथ।

उ०—पछै आप सारा लोकां सूं अरोगण पधारिया। त्यां परीसारौ हुओ। सारै साथ नूं सीरौ, तरकारियां, भाजी, इण भांति परीसारौ हुओ। लोक जीमियो। आप ही अरोगिया। —नैणसी

१२ पति, स्वामि।

१३ वत्तख की तरह का एक प्रकार का बड़ा पक्षी।

१४ सात या चौदह की संख्या। * (डिं. को.)

रू. भे.—लोग, लोय

अल्पा.,—लोकड़ौ, लोकौ, लोगड़ौ

लोकईख-सं. पु. [सं. लोक + ईक्ष्] ब्रह्मा (डि. नां. मा.)

लोकड़ौ—देखो 'लोक' (अल्पा., रू. भे.)

लोकचख-स. पु. यौ. [सं. लोक+चक्षु] १ सूर्य, भानु।

लोकधारणी, लोकधारिणी-सं. स्त्री. यौ. [सं लोक+धारिणी] १ पृथ्वी, भूमि।

लोकधुन, लोकधुनि-सं. स्त्री. यौ [सं. लोक+ध्वनि] १ अफवाह, जन रव।

लोकनाथ-सं. पु. यौ. [सं. लोक+नाथ] १ संसार का स्वामी, ईश्वर।

२ राजा, नृप।

लोकनीत, लोकनीति-सं स्त्री. यौ. [सं. लोक+नीति] १ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक।

उ०—१ न्रत्यकला, राजनीति, लोकनीति, धरम्मनीति, काव्यरीति साहित्यविद्या। —व. स.

लोकप, लोकपत, लोकपता, लोकपति, लोकपती-सं. पु. [सं. लोकप, लोकपति, लोकपिता] १ ब्रह्मा। (डिं. को.)

२ ईश्वर, प्रभू।

३ नृप, राजा।

लोकपाळ, लोकपाल-सं. पु.—१ राजा, नृप।

उ०—इंद्र संमानि देव सपरिवार ते त्रायस्त्रिंस इसिइ नामइं। दो दुगुंदुग देव, ४ लोकपाल पद्मासिवा सुलसा अचला कालिंदी। —व. स.

२ ईश्वर, प्रभू।

३ देखो 'दिकपाल' (रू. भे.)

लोकपितामह-सं. पु. यौ. [सं. लोक+पितामह] १ ब्रह्मा। (डिं. को.)

लोकबंधु, लोकबंधू-सं. पु. यौ. [स. लोक+बंधु] १ सूर्य, भानु। (डिं. को)

उ०—सको सोखियौ हाकड़ौ नांम सिंधू' वहंतौ थको रोकियौ लोकबंधू। चक्री पीवणों पाय भाई वचायौ। क्षुधाळी हणे हेक हेरंब खायौ। —मे. म.

२ शिव, महादेव।

लोकबळ-सं. पु. यौ. [सं लोक+बल] १ जन-शक्ति।

लोकमाता-सं. स्त्री. यौ. [सं. लोक+माता] १ जगत-जननी, लक्ष्मी।

उ०—लोकमाता सिंधुसुता स्री लिखमी पदमा पदमालया प्रमा। अवरग्रहे अस्थिरा इंदिरा, रांमा हरिवल्लभा रमता। —वेलि.

लोकलाज-सं. स्त्री. यौ. [सं. लोक+लज्जा] १ देखो 'लोकालाज' (रू. भे.)

लोकलीक-सं. स्त्री. यौ.—१ लोक मर्यादा।

लोकवौ-वि. लुप्त।

उ०—सूं ऊंट किण भांतरा छै, थापवीं तळी रा, सुपवीं नळी रा, नाळेरा गोडां रा, बीलफळ इरकी रा, हथाळियै ईडर रा, ससा सेरी बगलां रा घाट बाजोट रा, वाथमें कांधै रा, कसतूरिया पटां रा कोरवे कांन रा, टांमकसै माथै रा, लोकवै नाक रा तजियै होठ रा ।
—रा. सा. सं.

लोकव्यवहार-सं पु.—१ समाज में किया जाने वाला शिष्ट व्यवहार ।

२ स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक ।

उ०—केसबंधन वीणानिनाद वितंडावाद अंकविचार लोकव्यवहार प्रहेलिका, स्त्री चतुः सस्टिकला । —व. स.

लोकस-सं. पु.—१ एक प्रकार का वृक्ष ।

उ०—भाखर में गढ में कुवा तळाव, भरणा वावड़ी घणा छै। भाखर निपट सभाड़ो छै। थोहर, वोर, गूंदी गांगड़ी लोकस गूगळ निपट सभाड़ो छै। —वां. दा. ख्यात

लोकांतर-सं. पु. [सं.] १ वह लोक जहां मरणोपरान्त जीव जाता हैं, परलोक ।

लोका—देखो 'लांकी' (रू भे.)

उ०—लोका लह लांणति छुटकारा लेती, दीरघ कांनांसूं फिटकारा देती । —ऊ. का.

लोकाई-सं. स्त्री.—१ प्रजा, जनता, जन समूह ।

उ०—लारै लोकाईह, सह कोळूरी सालुळी । आजो आ आईह, वीरा कमळादे वही । —पा. प्र.

लोकाचार-सं. पु. यौ [सं लोक+आचार] १ समाज में सम्बन्ध बनाये रखने हेतु किया जाने वाला व्यवहार ।

२ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक ।

उ०—लोकाचार, जनानुवृत्ति, फलंभ्र, खड्गक्षुरिवंधन, मुद्रऽमायो।
—व. स.

३ वह व्यवहार जो दुनिया में सवके साथ मेलजोल वनाये रखने के लिए किया जाता है ।

४ किसी की शव-यात्रा में सम्मिलित होने की क्रिया या भाव ।

लोकाचारियो-वि.—१ शव-यात्रा (लोकाचार) में शामिल होने वाला।

लोकालाज—सामाजिक भय, शंका ।

उ०—सोक कियो मन में, डाक चूक डेराह । लीधा लोकालाज हूं, फीके मन फेराह । —र. हमीर

लोकाट-सं. पु.—१ लम्बी तथा नुकीली पत्तियों वाला पौधा विशेष

लोकाधिप, लोकाधिपति, लोकाधिपती-सं. पु. [सं. लोकाधिपः लोकाधिपति] १ राजा, नृप ।

२ ईश्वर, प्रभू ।

रू. भे.—लोकाहिवई

लोकाध्यक्ष-सं. पु. यौ. [सं. लोक+अध्यक्ष] १ संसार का अध्यक्ष, ईश्वर ।

उ०—नमो अग्राह्यारू स्रवन पुट सारू सत नमो । नमो लोकाध्यक्षाभ्रत, विजय लक्ष्यापत नमो । —ऊ. का.

लोकाय-सं. पु.—प्रजा, संसार के लोग ।

उ०—मुख लोचन चोळ करै मयनूं अखवै यम पालक लोकाय नूं ।
—पा. प्र.

लोकायक-सं. पु.—जगत, संसार ।

उ०—हे पंचो थे पंच कहावो छो, लोकायक में पण पंच परमेस्वर कहिजै छै । —पलक दरियाव री वात

लोकायत-सं पु.—१ समाज ।

२ भारतीय दर्शन में एक प्राचीन भूतवादी नास्तिक सम्प्रदाय जिसे देवगुरु वृहस्पति ने देत्यों का नाश करने के लिए चलाया था ।

३ चार्वाक दर्शन जिसमें परलोक एवं परोक्षवाद का खंडन है ।

४ दुर्मिल छंद का एक नाम ।

लोकालोक-सं. पु.—१ एक पौराणिक पर्वत का नाम ।

२ ससार, जगत ।

उ०—ताहरी ज्योति सकल त्रिभुवन में, गावै सगला संत जी । केवल ग्यान करीनै देखे, लोकालोक अनंत जी । —स्रीपाल

लोकीक—देखो 'लौकीक' (रू. भे.)

लोकेस-सं. पु. [लोक+ईश] १ ब्रह्मा । (डि.को., नां. मा., ह. नां. मा.]

उ०—हिंदुवांण री धांण देसांण हूगो । वणांरो अलंकार प्राकार ऊगो । बुरज्जा चहू जांण लोकेस बाका, प्रथी आभ रो वीच भागै पताका । —मे. म.

२ राजा, नृप । (अ. मा.)

३ इन्द्र ।

रू. भे.—लौकेस ।

लोकेसवर, लोकेस्वर-सं. पु. [सं. लोक+ईश्वर] ईश्वर, प्रभू ।

२ राजा, नृप ।

उ०—लेखइ कुळ की लाज, लाज लोपि लोकेसवर । स्वांमि-कथन आयी सुणण, तणी भोजाउत भाजि । —अ. वचनिका

लोकैसणा-सं. स्त्री. यौ. [सं. लोक+एषणा] १ ससार में प्रतिष्ठा एवं यश की कामना ।

२ स्वर्ग-सुख की कामना ।

लोकोकत, लोकोकती, लोकोक्ति, लोकोक्ती-सं. स्त्री. [स. लोक+उक्ति]
१ कहावत, जनश्रुति ।

उ० -- बदां कनें तो बद बसै, नेकां पासे नेक। मन तो सारिसां मिळै, आ लोकोक्ति एक। —ऊ. का.

२ एक अलंकार जिसमें लोक-प्रसिद्ध कहावत का प्रसंगवश वर्णन हो।

लोकोत्तर—वि.—१ अलौकिक, विलक्षण।

लोको—देखो 'लोक' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—निरभय नारायण सुद्धी सिर नाऊं, परहर संसय भय बुद्धि बर पाऊ। संवत छपनै रो केवण सिरलोको, लौकिक लेयणनै सांभळ-ज्यो लोको। —ऊ. का.

लोग—देखो 'लोक' (रू. भे.)

उ०—१ जाडो तो पड़ियो जी नणद बाई सहर में, मारया मारया हूटवा जी लोग, किस विध भुगतांजी नणदबाई जाडै नें। —लो. गी.

उ०—२ लोगां री बतूळियो पगां हालियो। दोनू घणी गांयै बंध्योड़ा हा। सेठ ई खुर रगड़ता साथै चालता हा। —फुलवाड़ी

उ०—३ खेड़ो सूनो खेत जागीदारां रा लोग खड़ै। —नैणसी

(स्त्री. लुगाई)

लोगड़ो—देखो 'लोक' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—गांम में घणो दूध घणो घी. कोठियां कणा रा में ऊन्हो ठाडो धांन, राजा राजनै प्रजा चैन। नी कोई दुख अर नीं कोई दुआळ। लोगड़ा प्रभू छांनां दिन काटै। -- अमर चूनड़ी

लोगाई—देखो 'लुगाई' (रू. भे.)

लोड़—सं. पु.—१ बलात्कार।

२ लूटने की क्रिया।

लोड़णो, लोड़बो—क्रि. स.—१ लूटना, खोसना।

उ०—ल्यावै लोड़ि पराइयां, नहूँ दे आपणियांह। सखी अमीणा कंथ री, उरसां झूपड़ियांह। —हा. झा.

२ हड़पना, छीनना।

उ०—धन लोड़ै तोड़ै धरम, विध विध जोड़ै वात। जड़ सनेह खोड़ै जड़ण, गिनका मोड़ै गात। —बां. दा.

३ प्राप्त करना, पाना।

उ०—जोड़ विराजै वर तरुणि, मोड़ विराजै सीस। कव आसीसै लोड़ धन, जीवो कोड़वरीस। —रा. रू.

४ छूना, स्पर्श करना।

उ०—लागै आज लोड़ती लहरां, ऊमड़तै दरियाव उतंग। सूरज-तणो हींदवा सूरज, पांणीपंथो कियो पमंग। —महारांणा राजसिंह रो गीत

५ 'मस्ती से झूमना।'

उ०—वड सिरहूं नांखे वढवडती, विसरसि पूरति विपरति वेस। लाडी आवै गगन लोड़ती, दौड़ाया भड़ चौदस देस। —रतनसिंघ राठोड़ री वेलि

लोड़णहार, हारो (हारी), लोड़णियो—वि०।

लोड़िओड़ो, लोड़ियोड़ो, लोड़्योड़ो —भू० का० कृ०।

लोड़ीजणो, लोड़ीजबो —कर्म/भाव वा०।

लोडणो, लोडबो, लोढ़णो, लोढ़बो —रू० भे०।

लोड़वड़ाई—सं. स्त्री. यो.—१ छोटे बड़े की आयु का अन्तर।

ज्यूं—इण दोनां रै कित्ती लोड़वड़ाई है।

लोड़ाऊ—वि.—लुटाने वाला, उड़ाने वाला, खर्च करने वाला।

उ०—उत्तर जाइजो दिक्खण जाइजो समंद्रां जाइजो पार। मारवणी रै नथ लाइजो मोती लाइजो चार। गाढा मारू छो जी राज लाखां रा लोड़ाऊ मारु-मारे नथ लायजो राज। —लो. गी.

रू. भे.—लोडाउ, लोडाऊ।

लोड़ियोड़ो—भू. का. कृ.—१ लूटा हुआ, खोसा हुआ। २ हड़पा हुआ, छीना हुआ। ३ प्राप्त किया हुआ। ४ स्पर्श किया हुआ, छूआ हुआ। ५ मस्ती में झूमा हुआ।

(स्त्री. लोड़ियोड़ी)

लोड़ियो—देखो 'लघु' (अल्पा., रू. भे)

उ०—ओलग थारै लोड़ियै वीर ने भेज पन्ना मारू। चतुर चोमासे राजन, घर बसोजी महारा राज। —लो. गी.

लोड़ो—१ देखो 'लघु' (रू. भे.)

२ देखो 'लंड' (रू. भे.)

लोच—सं. स्त्री.—१ किसी वस्तु या पदार्थ का वह गुण जिससे वह दबाने अथवा मोड़ने पर दब या मुड़ जाती है एवं पुनः अपनी पूर्व अवस्था को प्राप्त हो जाती है। लचक, लचीलापन।

२ कोमलता, नरमी।

३ अभिलाषा, इच्छा।

४ गूंधे हुए आटे का वह गुण जो लोई बनाते समय लंबी बधती है।

२ सार, तत्त्व।

लोचण—देखो 'लोचन' (रू. भे.) (डिं. को., ना. डिं. को.)

उ०—मोड़ै मुख मोड़ै हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरगनैं सीतल सतवाळी। लुच्चा ललचावै लालच धिनलागै, लोचण मोचण सोचण खिण लागै। —ऊ. का.

लोचणियो—स. पु.—१ प्रातः काल का नाश्ता।

उ०—उठो म्हारा ओ ढोलाजी करो नीं लोचणियो, लूंग सुपारी बनड़ो पांन री बिड़ली, इसड़ा लोचणियां थांरी भोजायां करावै। —लो. गी.

२ देखो 'लोचन' (अल्पा., रू. भे.)

लोचणो, लोचवो—क्रि. स.—१ सोचना, विचार करना।

उ०— वहतां वरस पच्यासियो, श्री गुजरात अथाह। उर लोचै असपति हुग्रण, सोचै महमंदसाह। —रा. रू.

२ पक्षपात करना।

३ कोशिश या प्रयत्न करना।

उ०—जाळ नीम विलाला जांमै, सांडां मात सपूतरी। मरु नाव खेवैया मयिहा, त्यावण लोचै छूतरी। —दसदेव

लोचणहार, हारो (हारी), लोचणियो—वि०।

लोचिग्रोड़ो, लोचियोड़ो, लोच्योड़ो—भू० का कृ०।

लोचीजणो, लोचीजवो—कर्म वा०।

लोचन, लोचन्न—सं. स्त्री. [सं. लोचन] १ आंख, नेत्र। (ह. नां. मा.)

उ०—प्रगळी पटाट पूर, गाढ दाढ गज्ज-ऊर। लोइ दीप में लोचन्न कांगरि सरीखा कन्न। —गु. रू. बं.

रू. भे.—लोग्रण, लोइण, लोचण, लोयण, लोयणि, लोयन।

अल्पा., रू. भे.—लोग्रणडो, लोचणियो।

लोचपलोच—सं. पु.—आवेष्टन करने या घेरने की क्रिया।

उ०—१. रसिया री तन रोगसूं, सड़ जावे नह सोच। हेम रजत खातर हुवै, पातर लोचपलोच। —बां. दा.

उ०—२ गोरी मिलै गीत सह गावै, जतन रहावै जुवा जुवा। फेरू हमें किता घर फिरसी, होरू लोचपलोच हुवा। —ग्रोपो आढो

लोवालाचो—सं. पु.—१ शीघ्रता।

उ०—भिणीयांणी बारह कोस जायनै बकरी खाघो लोवालाचो घणो ही कियो पण उरै बाकरो खावण न पाया। नरै री चोकियां ठांम-ठांम बैठी छै। —नैणसी

क्रि. प्र.—करणो।

लोचियोड़ो—भू. का. कृ.—१ सोचा या विचारा हुआ. २ पक्ष किया हुआ. ३ कोशिश, प्रयत्न किया हुआ।

(स्त्री. लोचियोड़ी)

लोचून—सं. पु. यौ. [सं. लोह+चूर्ण] १ लोहे का चूर्ण।

लोट—सं. स्त्री.—१ लोटने की क्रिया या भाव।

उ०—ग्रणिया धार ग्रनेक आवरत, पाडे मूंठज पांण गया। खडग परवांण खेडतै खेता, थाट रवंद रण लोट थयां। —रांणा खेता री गीत

क्रि. प्र. लगाणी।

२ देखो 'लोटड़ी' (मह., रू. भे.)

३ देखो 'नोट' (रू. भे.)

४ देखो 'लूट' (रू. भे.)

रू. भे.—लोट।

लोटड़ी—सं. स्त्री.—१ ग्वालों व किसानों के साथ में रखा जाने वाला मिट्टी का जल पात्र विशेष।

उ०—छोटी दीवड़ियां कांखां तळ छालै, मोटी लोटड़ियां दाबां जळमालै। निरवळ चोरां डर वसियोड़ा नेड़ा, दुरवळ मौरां पर कमियोड़ा डेरा। —ऊ. का.

मह., रू. भे.—लोट।

लोटण—वि.—१ लेटने वाला।

२ एक विशेष जाति का कबूतर जो आकाश में लुढकता हुआ उड़ता है। लंकी कबूतर।

उ०—तिके सिर ईस लियै मुसताक, पड़ै छक जांणिक फूल पियाक किता घट फूट लुटै हिचकंत, कबूतर लोटण जेम करंत। —सू. प्र.

रू. भे.—लोटीगण।

लोटणकरवो, लोटणकरियो—सं. पु.—१ प्रसिद्ध राजस्थानी लोकगीत।

उ०— कोठे भुवाऊं डोडा इलायची रे म्हारा लोटणकरवा कोठे भुवाऊं नागर-वेल हैं जी ओ मिरगा-नैणी रा ढोला, मारुणी उडीकै घर आव। —लो. गी.

लोटणो, लोटवो—क्रि. अ. [सं. लुट] १ पेट या कमर के बल इधर-उधर लुढकना, लुटना, घुड़कना।

उ०—सांमंत विछोहै ग्रंग सार, दोय जेम करै करवत्त दार। पड़ सीस विना लोटै पठांण, किर ज्वार सिरै टूका कसांण। —रा. रू.

२ शयन करना, सोना (गर्भ में)

उ०—बाबाजी रा पोता जीग्रो, बापूजी रा बेटा, माता जननी के ग्रोदर लोटिया। —लो. गी.

३ विश्राम करना।

४ चाटुकारिता, खुशामद करना।

उ०—ग्रगर खेवै है, सुगंध देवै है। सूंघो सूंघीजै हैं, सीसियां री सीसियां ऊंधीजै है। चोटी करै है, तिण आगै नायण हीं लोटी फिरै है। गुंथवा में पड़ै है लहर, तठै कहो कुण सकै ठहर। —र. हमीर

लोटणहार, हारो (हारी), लोटणियो—वि०।

लोटिग्रोड़ो, लोटियोड़ो, लोट्योड़ो भू० का० कृ०।

लोटीजणो, लोटीजवो—भाव वा०।

लुटणो, लुटवो—रू० भे०।

लोटपोट—वि.—१ विपर्यस्त, ग्रस्त-व्यस्त।

उ०—इण भांत कटारियां री घमरोळ पड़ै। लोटपोट हुवा तिको आलात चक्र री सी लीक बंघी न जांणजै भेळा छै क जुवा जुवा। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ कुलांच खाने की क्रिया ।

उ०—१ सत्र लोटपोट वडि दोट सिर, धजर चोट खग घोहड़ां।
नवकोट छ खंड वागा निडर, लालकोट मझि लोहड़ां।

—सू. प्र.

उ०—२ वगतरं आग उडुंत बूंग, दवहरण जांण होळी दवूंग।
घण भूंभा वाथां पडै घोट, लोटीगण खावै लोटपोट।

—गु. रू. बं.

३ आनंदित, अत्यधिक प्रसन्न (प्रसन्नता से उन्मत्त)

उ०—कांमणी घणीं क्रिसनागर कस्तूरी अंवर अंतर सांधे सूं गरकाव हुई थकी उवां राजां रा मलूकजादां रा मन राखती थकी लोटपोट हुइ रही छै। —राजांन राउतरो वात-वणाव

४ ध्वस्त, नष्ट, विनाश ।

उ०—चले चंदोल चैंन में, हरोल दग्गती चलें । दरार हेत द्रुग्ग को चिरार चुग्गती चलें। प्रकोट चोट मार कोट लोटपोट व्है जहां।
प्रवेस कोट रोक देन यप्प थप्परे कहां। —ऊ. का.

५ सुद्ध-बुद्धहीन, मस्त, बेहोश ।

उ०—तिसैं दूजो प्यालो चावड़ो वळै भरियो। जांणियो गोलो अजे सपगां छै। दारू आयो तो खरो पिण लोटपोट न हुवो।

—जगदेव पंवार री वात

रू. भे.—लटापोट, लोटपोट ।

लोटमाळी-सं. स्त्री.—१ कच्ची दीवार को वर्षा से बचाने के लिए उस पर लगाया हुआ घास-फूस व कांटों का छप्पर। दीवार का छाजन ।

लोटाड़णो, लोटाड़बो-क्रि. स.—देखो 'लोटाणो, लोटाबो' (रू. भे.)

लोटाणो, लोटाबो-क्रि. स.—१ पेट या कमर के बल इधर-उधर लुढ़काना, लुटाना, घुड़ाना ।

२ शयन कराना ।

३ विश्राम कराना ।

४ खुशामद कराना ।

५ धराशायी कराना, गिराना ।

लोटाणहार, हारो (हारी), लोटाणियो—वि० ।

लोटायोड़ो—भू० का० कृ० ।

लोटाईजणो, लोटाईजबो—कर्म वा० ।

लोटाड़णो, लोटाड़बो, लोटावणो, लोटावबो—रू० भे० ।

लोटायोड़ो-भू. का. कृ.—१ पेट या कमर के बल इधर-उधर लुढ़काया हुआ. २ शयन कराया हुआ. ३ विश्राम कराया हुआ. ४ खुशामद कराया हुआ ।

(स्त्री. लोटायोड़ी)

लोटावणो, लोटावबो—देखो 'लोटाणो, लोटाबो' (रू. भे.)

लोटावणहार, हारो (हारी), लोटावणियो—वि० ।

लोटाविओड़ो, लोटावियोड़ो, लोटाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

लोटावीजणो, लोटावीजबो—कर्म वा० ।

लोटावियोड़ो—देखो 'लोटायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लोटावियोड़ी)

लोटियोड़ो-भू. का. कृ.—१ पेट या कमर के बल धरातल पर लेटा हुआ, लुढका हुआ. २ शयन किया हुआ. ३ विश्राम किया हुआ. ४ धराशायी हुवा हुआ ।

(स्त्री. लोटियोड़ी)

लोटियो-सं. पु.—१ मिट्टी का बना छोटा जल-पात्र ।

उ०—संज्यां पड़तां लोटियो हाथ ले जंगळ गयो सो सहर सूं निसर गयो। —नांपै सांखले री वारता

२ देखो 'लोटो' (अल्पा., रू. भे.)

लोटी-स. स्त्री.—पीतल का बना एक विशेष बनावट का जल पात्र ।

रू. भे.—लोटीका

लोटीका—देखो 'लोटी' (रू. भे.)

उ०—रहि रहि वेहनड़ी वचन तू रोई ले लोटीका जळ मुख धोई।

—बी. दे.

लोटीगण—देखो 'लोटण' (रू. भे.)

उ०—वगतरं आग उडुंत बूंग, दवहरण जांण होळी दवूंग। घण भूंभा वाथां पडै घोट, लोटीगण खावै लोटपोट। —गु. रू. ब.

लोटो, लोठो-सं. पु.—१ चांदी, तांबा, पीतल आदि धातु द्वारा निर्मित जलपात्र विशेष ।

उ०—१ हाथां हुकलिया लटकंता लोटा, रिणरिण रीकंता सुपनं में रोटा। कोडी कोडी लें कळियोड़ा कूंगा, ढाला भूंडोड़ा ढळियोड़ा ढूंगा। —ऊ. का.

उ०—२ म्हैं उणीं कह्यो ज्यू पे'ली बांयां में सूं हाथ काढनै पछै उणनैं बाल्टी रै खनै बिठाय नै लोटो भरनै उणरै माथा माथै कूडण लाग्यो। —अमरचूनड़ी

उ०—३ म्हूं उणरा हाथ-पग भिगोय नैं डरतो-डरतो धीरै-धीरै मेल करण लाग्यो। कांई भरोसो रीसां वळतो अवकै लोठो लेयनै माथा में नीं ठरकाय दे। —अमर चूनड़ी

उ०—४ सकर कूई तो भंवर जी मैं बणूं जी, हां जी ढोला वण ज्याग्रू लोठो-डोर प्यास लगे जद मारू जी भर पिग्रो जी।

—लो. गी.

अल्पा.,—लोटियो ।

लोडणो, लोडबो—१ साफ की हुई रूई की पूनियां बनाना ।

२ कपास से रूई व बिनोलों को पृथक करना ।

३ पत्थर पर मसाला पीसना ।
४ मस्ती से झूमना ।
५ देखो 'लोड़णौ, लोड़बौ' (रू. भे.)
उ०—१ वैरका झुंडये, गिगने लोडयं, फौज हेमज्जय म्रिग्ग अमूंजय । —गु. रू. बं.
उ०—२ हाजर हिंदू वै तुरक लिये न पर भुंइ लोडि । चीत वटावण हेक तूं, बीत वटावण कोडि । —गु. रू. बं.
लोडणहार, हारौ (हारी), लोडणियौ—वि० ।
लोडिम्रोड़ौ, लोडियोड़ौ, लोड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लोडीजणौ, लोडीजबौ—भाव वा० ।
लोढणौ, लोढबौ—रू० भे० ।

लोडाउ, लोडाऊ-वि.—देखो 'लोड़ाऊ' (रू. भे.)
उ०—निंबौ सेवालोत । साख राठोड । घिणलारी धणी । लाखा री लोडाउ । रूळीयारा जोड । —वीरमदे सोनगरा री बात

लोडियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ कपास से रूई व बिनौले प्रथक किये हुए
२ मस्ती मे झूमा हुआ ।
(स्त्री. लोडियोडी)

लोडौ—देखो 'लघु' (रू. भे.)
उ०—नरा मडोवर नर समद, खिति लोडौ खुरसाण । है केइ देस न हक्कडौ, दोइ तेहा वाखांण । —गु. रू. ब
२ देखो 'लोढौ' (रू. भे.)
उ०—गोरी पीडी पर उघड़ता गोडा, लवी बीखां दे लेतोड़ी लोडा । सेणा साजनिया ऊमर भर सालै, घूमर देतोड़ी केता घर घालै । —ऊ. का.

लोढ-सं पु —१ समूह, झुण्ड ।
उ०—मिळ आवत लोढ कि वोढ मही, जमना दळ वेळ समुद्र जही । —रा. रू.
२ वजन, भार ·
३ तरंग ।
४ लोक वाहन ।
५ देखो 'लोढौ' (मह , रू. भे)

लोढणौ, लोढबौ—देखो 'लोडणौ, लोडबौ' (रू. भे.)
लोढणहार, हारौ (हारी), लोढणियौ—वि० ।
लोढिम्रोड़ौ, लोढियोड़ौ, लोढ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लोढीजणौ, लोढीजबौ—कर्म वा० ।

लोढियोड़ौ—देखो 'लोडियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लोढियोड़ी)

लोढियौ—१ देखो 'लघु' (रू. भे.)
उ०—रांधां वाईजी जिनवा रा भात, थारै वीरै की पांत वैठायस्यां । देस्यां वाई थांनै लोढियौ वीरौ साथ, भली ए जुगत मं घर पुगायस्या । —लो. गी.
२ देखो 'लोढौ' (अल्पा , रू. भे.)

लोढी-सं. स्त्री.—१ हाथी-दांत का वह खोसला एव गोलाकार ढाचा जिसको चीर कर चूड़ा वनाया जाता है ।
२ देखो 'लोढौ' (अल्पा., रू. भे.)

लोढौ-सं. पु.—१ पत्थर का वह लम्बा व गोल टुकडा जिससे सिला पर कोई वस्तु रख कर पीसी जाती है ।
२ मस्ती मे झूमते हुए गतिमान होने की क्रिया या भाव ।
उ०—धुरवा धरणी लग लोढा लै धावै । जीमण जीमण नैं मोडा जिम जावै । मोरा अनुमोदित लोरा लड़ लागी, नीझर नव नीरद भमना भय भागी । —ऊ. का.
रू. भे.—लोडौ
अल्पा., रू. भे.—लोढी, लोढियौ
मह. रू. भे.—लोढ

लोणी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की हरी सब्जी ।

लोतर-स. पु.—शुभ लक्षण, ज्ञान ।

लोतंम्राळ-स. पु.—जंजाल-चक्र ।
उ०—जो रचना जगपत्ती, लोतंम्राळ भ्रमै त्रयलोक । सोई सत्य सद्रढ, रेखा सार अक रजपत्ती । —रा. रू.

लोथ-स. स्त्री.—शरीर, देह ।
उ०—१ छुटै लंबछड़, ताड़ तड़ तड़, वांण छुट बड सोक सड सड । फूट फिफरड़ कळिज झड़फड अतड़ उघरड़ लोथ लडथड़ । —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात
उ०—२ कह केविया तणी कत सूं कांमणी, करडा वचन अणायर कोथ । कूरम नणै जावस्यौ कांकड, लड़थड़ती आवसी लोथ । —राजसिंघ भाखरोत-री गीत
उ०—३ अर श्री आप पूरौ भरोसौ राखावौ ए दोन्यूं लोथां जमी माथै पडैला, अर पछै इज कोई ठाकर कांनी हाथ आगै करेला । —अमर चूनडी
२ शव, लाश ।
उ०—१ जठै माहिली वदूका छुटै छै । जको येक येक गोळी दस दस आदम्यां में फूटै छै । लोथ पर लोथ पडै छै । —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—२ सेरखांन भर समर, कहर परखै घर कदळ । लोथ लोथ ऊपरा, गरा भिड़जां गज तंडळ । —रा. रू.
३ किसी गीली व गाढी वस्तु का अंश, लौदा ।
उ०—१ अगसा नेत्र, मीन जैसा चपळ । भूंह जांणै इंद्र धनख छै ।

मुख पून्यू रै चंद ज्यूं, सोळहकळा संपूरण छै । पेट पींपळ री पांन छै। पासा माखण री लोथ छै। नाभी मंडळ गुलाव री फूल सी छै।

—खीची गगेव नींबावतरी दो-पहरी

उ०—२ पेट गीवां की लोथ, मिरगानैंणी राज । सूंडी तो कहिए ए रतन कचोळियां जी म्हारा राज । —लो. गी.

रू. भे.—लोथि ।

मह.,—लोयड़ी, लोथौ ।

अल्पा.,—लोयड़ी ।

लोयड़ी—देखो 'लोथ' (अल्पा., रू. भे.)

लोयड़ौ—देखो 'लोथ' (मह., रू. भे.)

लोथवत्यां—देखो 'लथवथ' (रू. भे.)

उ०—सीह छूटो सांकळां चोछूटो गाळा लेगे सही, भीड़ियां कपट्टां वट्टां भाजिगो भरम्म । ब्राहे साघ खाग भट्टां विकट्टां सूं लोथवत्यां, केवियां किना चा रूड़ै दड़ा ज्यूं करम्म ।

—गंगाराम नागा री गीत

लोथि—देखो 'लोथ' (रू. भे.)

उ०—१ 'अमर' लोथि आविया, वीर दारण विकराळा । पाड़ि खळां जुघि पड़े, काळझाळा किरमाळा । —सू प्र.

उ०—२ जोगणी उवक्कै पत्र हुवक्कै हुवाई जंत्र लोथि छक्कै घुवक्कै लटक्कै गजां लोथ । भुटक्कै अकारो सेन वैढेगारो क्रोधां भाय, जोधारो हुचक्कै अजा रो महाजोध । —वखतसिंघ री गीत

लोथौ—देखो 'लोथ' (मह., रू. भे.)

लोदंग—सं पु.—१ महादेव, शिव । (ना. डि. को.)

लोद—१ देखो 'लोदी' (रू. भे.)

२ देखो 'लोध' (रू. भे.)

लोदरवौ—सं. पु.—१ जैसलमेर राज्य का एक प्राचीन नगर ।

रू. भे.—लोद्र ।

लोदी—सं. स्त्री.—१ मुसलमानों में पठानों की एक जाति ।

२ कपड़े से वंधी हुई गठरी ।

रू. भे.—लोद, लोधी ।

लोध—सं. स्त्री. [सं. लोध्र] एक पेड़ विशेष जिसके लाल व सफेद फूल लगते हैं तथा इसकी छाल लकड़ी व फूल औषध में काम आते हैं । (डि. को.)

उ०—लीला पोयण पांण केसड़ा कुंदम राजै । लोध-रजां भल भामणियां रै मुखड़ै साजै । चोटी कुरवक फूल सिरिसा करण सजावै । सीस कदवां फूल गोरियां घणी लुभावै । —मेघ

रू. भे.—लोद, लोध्र

लोधा—सं. स्त्री.—एक राजपूत वंश ।

उ०—वरसिंघदे वाघेलो गुजरात सौं गंगाजी री जात आयो हुतो, तद अठै वंघवरी ठोड़ निवळा सा लोधा राजपूत रहैता, ठोड़ खाली दीठी, तरै गंगाजी रा पुलण मनोहर देखनै अठै रहण री कीवी । —नैणसी

लोधी—देखो 'लोदी' (रू. भे.)

लोधेस्वर—सं. पु.—एक तीर्थ का नाम ।

उ०—घट ही में गंगा घट ही में जमना, घट घट है अविनासी । घट ही में पुसकर औ लोधेस्वर लछिमन कंवर विलासी । —मीरां

लोप—सं. पु.—१ क्षय, नाश ।

२ व्यतीत या गायव होने की अवस्था, लुप्त ।

उ०—सेवट अेक दिन औ खगडो तो व्हैणो इज हो । अै चार वरस तो सपनां रै उनमांन लोप व्हैगा । भलां सपनां री कित्तीक थावस ! अर कित्तीक इणरी जड़ ऊंडी । —फुलवाड़ी

३ अभाव, कमी ।

४ व्याकरण के एक नियमानुसार शब्द के साधन में कोई वर्ण उड़ा या हटा दिया जाता है ।

लोपणौ, लोपवौ—क्रि. स. [सं. लोपन] १ उल्लंघन करना ।

उ०—विलूव्यो निधी नीर त्री हाथ वांमै । पुरी में सको सीर हम्मोज पांमै । सजा हूं छुडायो आई राव सेखो । लाई पुत्र पित्रेस री लोप लेखो । —मे. म.

उ०—२ अवध्रा धणी रिण सीह भजण असह, लीह संवा तणी निकूं लोपै भणै किव भेद में । तई सांमाथ प्रभ वंधु दीना तणा अनाथां नाथ भुज विरद ओपै । वणै कव वेदमें । —र. ज. प्र.

२ पार करना, लाघना ।

उ०—१ डाक्या टोडा टोडड़ी, लोपी नदी बनास । आडावळो उलांघियो, जद छोडी घण आस । जी उमराव म्हांनै कर दुखिया, चढ चाल्या म्हाराराज । —लो. गी.

उ०—२ सुण वाल तणौ सुत, मेले मारुत लोप घसे गढ लंक में जी । पेखे मख प्रारंभ खोय अडीखंभ, कीध सांमग्री पकमें जी ।

—र. रू.

३ जब्त करना ।

उ०—सोजत था कोस ३ मूल कूण मांहे । कुंभार बांमण बसै । पहली वांमणां नुं सासण थो, सु मोटे राजा लोपीयो । —नैणसी

४ मिटाना, साफ करना ।

५ अन्तर्ध्यान होना ।

लोपणहार, हारौ (हारी), लोपणियौ—वि० ।

लोपिओड़ौ, लोपियोड़ौ, लोप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लोपीजणौ, लोपीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

लोपन—१ लुप्त करने की क्रिया या भाव ।

२ नष्ट करने की क्रिया।
३ लांघने की क्रिया।
५ अवहेलना करने की क्रिया।

लोपांजन—देखो 'लोकंजन' (रू. भे.)

लोपा-सं. स्त्री.—प्रयाग में एक देवी का स्थान।
उ०—लोपा मुद्रा दोय देवी प्रयागे। —बां. दा. ख्यात

लोपाड़णो, लोपाड़बो—देखो 'लोपाणो, लोपावो' (रू. भे.)
लोपाड़णहार, हारो (हारी), लोपाड़णियो—वि०।
लोपाड़िओड़ो, लोपाड़ियोड़ो, लोपाड़चोड़ो—भू० का० कृ०।
लोपाड़ीजणो, लोपाड़ीजबो—कर्म वा०।

लोपाड़ियोड़ो—देखो 'लोपायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. लोपाड़ियोड़ी)

लोपाणो, लोपावो-क्रि. स.—१ उल्लंघन कराना।
२ पार करवाना, लंघवाना।
उ०—मालदे नुं मुवां थोड़ा दिन हुवा था। सु चंद्रसेन कन्है साख साख रा सवळा रजपूत था। सु पहिलां रांमा री खबर आई। सु रांमा नु'''नें घाटो लोपायो। नीठ रांमो कुसले गयो।
—राव चंद्रसेन री बात
३ जब्त कराना।
४ साफ करवाना, मिटवाना।
लोपाणहार, हारो (हारी), लोपाणियो—वि०।
लोपायोड़ो—भू० का० कृ०।
लोपाईजणो, लोपाईजबो—कर्म वा०।
लोपाड़णो, लोपाड़बो, लोपावणो, लोपावबो—रू० भे०।

लोपायोड़ो-भू. का. कृ.—१ उल्लंघन कराया हुआ। २ पार कराया हुआ। ३ जब्त कराया हुआ। ४ साफ कराया हुआ मिटाया हुआ।
(स्त्री. लोपायोड़ी)

लोपामुद्रा-सं. स्त्री.—१ अगस्त्य ऋषि की पत्नी का नाम।

लोपावणो, लोपावबो—देखो 'लोपाणो लोपावो' (रू. भे.)
लोपावणहार, हारो (हारी), लोपावणियो—वि०।
लोपाविओड़ो, लोपावियोड़ो, लोपाव्योड़ो—भू० का० कृ०।
लोपावीजणो, लोपावीजबो—कर्म वा०।

लोपावियोड़ो—देखो 'लोपायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. लोपावियोड़ी)

लोपियोड़ो-भू. का. कृ.—१ उल्लंघन किया हुआ. २ पार किया हुआ. ३ जब्त किया हुआ. ४ मराया हुआ. ५ अंतर्ध्यान हुवा हुआ।
(स्त्री. लोपियोड़ी)

लोफर-सं. पु. [अ.] १ आवारा व्यक्ति।
२ धूर्त, कपटी।
३ व्यभिचारी, लम्पट।
४ बातूनी।
रू. भे.—लापर।

लोफरपण, लोफरपणो-सं. पु.—१ आवारापन।
२ धूर्तता, कपट।
३ व्यभिचारिता, लम्पटता।
रू. भे.—लापरपण, लापरपणो।

लोब—देखो 'लोभ' (रू भे.)

लोबांन-सं. पु. [फा.] १ एक प्रकार का सुगंधित गोंद, जो जलाने के अतिरिक्त दवाओं में भी काम आता है।
रू. भे.—लववांन, लुबांन।

लोबाणो, लोबावो—देखो 'लुभाणो, लुभावो' (रू. भे.)
लोबाणहार हारो (हारी), लोबाणियो—वि०।
लोबायोड़ो—भू० का० कृ०।
लोबाईजणो, लोबाईजबो—कर्म वा०।

लोबायोड़ो—देखो 'लुभायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. लोबायोड़ी)

लोबियाकंज-सं. पु.—१ एक प्रकार का गहरा रंग।

लोबी—देखो 'लोभी' (रू. भे.)

लोभ-स. पु.—१ लालच, लिप्सा। (डिं. को.)
उ०—आसतखांन मन घोखो आयो, लोभ विना दुख वाग लगायो। असुरां तरां उकत उपजाई. वातां लालच तणी वताई। —रा. रू.
२ कृपणता, कंजूसी।
३ ब्रह्मा का एक मानस पुत्र, जो उसके अधरोष्ठ से उत्पन्न हुआ था।
४ इच्छा, लालसा, चाह।
उ०—दोनां री जिवड़ो जहूर, तिसडो ही सहूर, परसपर री सारीखो ही सोभ, नै सारीखो ही देखण री लागो लोभ। —र. हमीर
रू. भे.—लोब
५ काला श्याम। * (डिं. को)

लोभणो, लोभबो-क्रि. स.—१ लोभ करना, लालच करना।
२ देखो 'लुभाणो, लुभावो' (रू. भे.)
उ०—१ दकूळ पीत लोभयं सुरुप वीज सोभयं। निखंग पीठ रज्जयं, सुचाप पांणि सज्जयं। —र. ज. प्र.
उ०—२ कवण अखेवड़ विगर, प्रळै सागर सिर सोभै। कवण विनां सुखदेव, देव माया नह लोभै। —रा. रू.

लोभणहार, हारो (हारी), लोभणियो—वि० ।
लोभिश्रोड़ो, लोभियोड़ो, लोभ्योड़ो—भू० का० कृ० ।
लोभीजणो, लोभीजबो—भाव वा० ।

लोभाऊ-वि.—देखो 'लोभी' (रू. भे.)

उ०—सवा कोड़ लग आगे सयणां, पात्र भगावै महापसाव । लोभाऊ दियो लाखावत, सिंध तणो छत्र सांमां-राव ।
—जांम ऊनड़ री गीत

लोभाणो, लोभाबो—देखो 'लुभाणो, लुभावो' (रू. भे.)

उ०—ताहरां त्रिभुवणसी री भाई पदमसी हुतो, तियै नूं भखायो 'तूं त्रिभुवणसी नूं मारै तो तोनूं टीको देवां'। ताहरां पदमसी लोभायै थकै जाइनै त्रिभुवणसी नूं पाटां मांहे सोमल नीव मांहे भेळियो । —नैणसी

लोभाणहार, हारो (हारी), लोभाणियो—वि. ।
लोभायोड़ो—भू का. कृ ।
लोभाईजणो, लोभाईजबो—कर्म वा. ।

लोभायोड़ो—देखो 'लुभायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लोभायोड़ी)

लोभाळ—देखो 'लोभी' (रू. भे.) (डि. को)

लोभियो—देखो लोभी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—आक संसार रंजियो घणो आतमा, अलख न भेटियो कदै आंबो । योभियै दीह घड़ियेक न योभियो.। लोभियै पयाणो कीयो लावो । —ओपो आढो

(स्त्री. लोभणी)

लोभी-वि. [सं. लोभ+इन्] (स्त्री. लोभण) १ जिसे किसी वस्तु पाने का लोभ हो, अभिलाषी ।

उ०—१ लोभी ठाकुर आवि घरि, कांई करइ विदेसि । दिन दिन जोवण तन खिसइ, लाभ किसाकउ लेसि । —ढो. मा.

उ० —२ थारे भाभोसा नै चायै भंवरजी धन घणो जी, हां जी ढोला ! कपड़े री लोभण थांरी माय । सेजां री लोभण उडीकै गोरड़ी जी, थारी गोरी उडावै काग । अब घर आवौ जी धाई थांरी नोकरी । —लोकगीत

२ अधिक लालसा वाला, लालची ।

उ०—सगुरा संत संयम रहै, सन्मुख सिरजनहार । निगुरा लोभी लालची, भूंचै विसय विकार । —दादूबांणी

३ कृपण, कंजूस । (डि. को.)
४ मांगने वाला, याचक (अ. मा.)
५ प्रिय, प्यारा

उ०—१ लोभी अणवट ले गयो, दाग दे गयो देह । किसा अनाड़ी सूं कियो, सखि में आज सनेह । —अग्यात

उ०—२ नहीं बोल्यो जावै निपट, लोभी आवै लाज । नथ तुटै विदली पड़ै, इतरो हठ क्यूं आज । —अग्यात

रू. भे.—लोवी, लोभाऊ लोभाळ

अल्पा.—लोभियो, लोभीड़ो

लोभीगुण-सं. पु.— १ कवि (अ. मा.)

लोभीड़ो - देखो 'लोभी'.(अल्पा., रू. भे.)

लोम-सं. पु.—१ शरीर के छोटे-छोटे बाल, रोमावलि ।
(अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—चैत मास री चांदणी सरस बधी संग सोक । जांण आज खुसजाइला, लोम सरा सह लोक । — र. हमीर

लोमकरणी-सं. स्त्री.—१ हिमालय पर्वत में १७००० फुट की ऊंचाई पर पाई जाने वाली एक वनस्पति की सुगंधित जड़ । जटामासी

लोमड़ी-स स्त्री. [स. लोमशा] १ कुत्ते या गीदड़ की तरह का छोटा हिंसक जानवर, जिसकी चालाकी प्रसिद्ध है ।

रू. भे.—लूमड़ी ।

लोमधराज, लोमपद-सं. पु.—अंग देस का एक सुविख्यात राजा जिसे रोमपाद, चित्ररथ एव दशरथ आदि नामांतर प्राप्त थे ।

लोमपादपुर-स पु.—भागलपुर का प्राचीन नाम ।

लोमविलोम-स.पु.-साहित्य में एक प्रकार का शब्दालंकार, जिसको सीधा पढने से जो अर्थ निकलता है वही अर्थ उल्टा पढने से भी निकलता है ।

लोमस, लोमसरिख-स. पु. [सं. लोमश+ऋषि]पुराणानुसार एक दीर्घजीवी महर्षि जिनके शरीर पर अत्यधिक लोम (केश) होने के कारण इनका नाम लोमस पड़ा ।

उ०—संनक संनक रिख तेड़ो, लोमस आतस अस्वास्ति रे। सुक सनकादिक तेड़ो, जक्ष किन्नर ने कहावोरे । —रुकमणि मंगळ

लोमहरसण-सं. पु. [सं. लोमहर्षन] सूतकुलोत्पन्न एक मुनि जो समस्त पुराणग्रन्थों का आद्य कथनकर्त्ता माना जाता है ।

लोय-स. स्त्री. [स. लोक] १ स्त्री, पत्नी ।

उ०—'लाखो' अघो घी अघी, अंधी 'लखै' नी लोय । सांस वटाऊ पावणो आवण होय न होय । —अग्यात

२ लक्ष्मी ।

उ०—लाखां आवै लोय, सपनां ज्यूं जावै सरब । हुवै भगत ज्यूं होय, मुगत परापत 'मोतिया' । —रायसिंह सांदू

३ लोकगीतों में प्रयुक्त सम्बोधन वाचक शब्द ।

उ०—१ दिखण दिसा सूं आई लोय, इसलांमी ओ वादस्या ।
—लो. गी.

उ०—२ कुण रे खुदाया कुआ वावड़ी पिणियारी जीरै लोय कुण रे खुदाया समंद तळाव वाल्हा जी । —लो. गी.

४ देखो 'लोक' (रू. भे.)

उ०—१ जिण तिण आगळ जोय, पड़िया काज न पांतरै । लागै सैणां लोय, मिसरी सरिखा 'मोतिया' । —रायसिंह सांदू

उ०—२ हर हर तणा हमीर नरेसुर, लाभ थका मूका रह लोय । एकण आस तुहाळी ऊपर, सीसोदा आवै सह कोय ।
—महारांणा हम्मीरसिंघ री गीत

उ०—३ लिखियौ लाभै लोय, पर-लिखियौ लाभै नहीं । पर सिर पदमहि जोय, जेविह विहवै अप्पियौ । —नैणसी

५ देखो 'लौ' (रू. भे.)

उ०—१ सारस मरता जोय, सारसणी मरसी सही । लाखीणी आ लोय, जग में रहसी जेठवा । —जेठवा

उ०—२ काया दीपक मन वाट है, चित की जगेज लोय । अंतर घर के जोयले, ब्रह्म उजाळो होय । —स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—३ पेट भार हिरण्यां वहै, रह्यौ न ओटौ कोय । रूआं रूआं नीसरै, लूआं धूआं लोय । —लू.

लोयंण—देखो 'लोचन' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ रांम न भूलौ बप्पड़ा, जे सिर छत्र प्रळोय । कर जीहा लोयण स्रवण, बियौ न आपै कोय । —ह. र.

उ०—२ मोज महण मूरत मयण, लोयण लाज अपार । 'जेहल' राज कुंवार जिम, कुण अन राजकुंवार । —वां दा.

लोयणकमळ—सं. पु. यौ. [सं लोचन+कमल] विष्णु । (डिं. को.)

लोयणधूम्र—सं. पु.—देखो 'धूमलोचन' ।

उ०—लोयण-धूम्र लुळाय, सुम्भ निसुम्भ सहारचा । रकत बीज आरोगि, मुंड चंडादिक मारचा । —मे. म.

लोयणि—देखो 'लोचन' (रू. भे.)

उ०—नव नव पुर परि पणिनवा, नव नव भूखण भाख । नव नव नारी नर नवा, लोयणि जोतु लाख । —मा. कां. प्र.

लोयन—देखो 'लोचन' (रू. भे.)

लोयांणा—देखो 'लोहांणा' (रू. भे.)

लोयौ—स. पु—आटे का लोंदा ।

लोर—सं. पु.—१ सावन-भादो मास में अविच्छिन्न व निरन्तर छोटी छोटी दूंदों की वर्षा करने वाले बादल या उक्त बादलों से होने वाली लगातार वर्षा, झड़ी ।

उ०—१ थांनै थांनै ए म्हारी वाड़ा री वडवेल, थांनै ए कुण सींचैगो । सींचै सीचै, ए म्हारौ सांवळिया री लोर भादूड़ै री झड़ झेलेगो । —लो. गी.

२ तीक्ष्ण ध्वनि, टेर, रट ।

उ०—१ बावहिया तूं चोर, थारी चांच कटाविसूं । राति ज दीन्ही लोर, मइ जांण्यउ प्री आवियउ । —ढो. मा.

उ०—२ बावहिया तर-पंखिया, तइं किउं दीन्ही लोर । मइं जांण्यउ प्रिय आवियउ, ससहर चंद चकोर । —ढो. मा.

३ समूह, झुण्ड ।

उ०—पखक्खर-रोर, लसक्कर लोर । झमै दळ कोम, गह-मह गोम । —गु रू. वं.

४ तरंग, लहर ।

५ खेत की सीमा पर प्राकृतिक रूप से पंक्तिबद्ध वृक्षों की कतार ।

रू. भे.—लूर, लौर ।

लोरियौ—सं. पु.—१ चुम्बक का टुकड़ा जो किसी धातु के चूरे में से लोहे के कण अलग करने के काम में आता है ।

लोरी—सं. स्त्री. [स. लोल] १ बच्चों को थपकी देकर सुलाने की क्रिया या ढग ।

उ०—झाड़्दै ढांणी झालरिया झाडै, पांणी पालरिया पीवण पछाडै । लोरी दे पोलछ लालरिया लेती, दड़खिल खोडा नै हालरिया देती । —ऊ. का.

लोळ—स. स्त्री.—१ कान के नीचे का हिस्सा ।

उ०—निज कुंभ सिभ जुग वण अनोप, उत्तग सिखर घण सिखर ओप । कर लोळ झुलत अति चपल कान, विखई मन जाणिक उकतिवांन । —रा. रू.

२ अग्नि की लपट

उ०—ग्रह झाळां गरजत, वधै लोळां वैसानर । नर पुर जन हरि नांम, उचरि समरंत अगोचर । सती अंग पति संग उलसि रंग पावक अंकित । रोम अस्त पळ चरम होय वपु नाड़ि सांमि-हित ।
—रा. रू.

३ समूह, झुंड ।

उ०—१ छिलै दधि छोळ, दळां वधि लोळ । पवंगां पाई, पडै खड हाइ । —गु. रू. वं.

४ पतंग में धनुपाकार लगने वाली वांस की खपची ।

५ कानों में धारण किया जाने वाला आभूपण ।

६ एक अस्त्र विशेष

७ मंदिर व पशुओं के गले में वांधे जाने वाले घंटे के अदर वीचों-बीच लटकने वाला धातु का गुटका, लंगर ।

वि: वि.—लगर

वि०—१ चपल, चंचल (ह. नां. मा.)

उ०—१ कटी सु छीन केहरी प्रवीन पायका नहीं, विनीत वांनि वीनसी नवीन नायका नहीं। सुचैंन दैंन सैंन स्वीय रैंन ये रूठै नहीं। अपांग लोळ गोलती इलोल में उठै नहीं। —ऊ. का.

अल्पा. रू. भे.—लोळकी

लोळकी—देखो 'लोळ' अल्पा. (रू. भे.)

लोल-वि.—१ परिवर्तनशील

२ क्षणिक

३ मूर्ख, वेवकूफ

उ०—राज हंस सम राजवी, वैठा करै किलोल। काग सरीखो कूंवड़ो, आवि उभो लोल। —स्रीपाल

४ खेल, क्रीड़ा

उ०—सरसा सरोवर विमल जल सैं भरया है भरपूर। लख लोल करत हिलोल हरखित हंस पक्षि पडूर। —वि. कु.

लोळणो, लोळवो-क्रि. स.—१ मिट्टी या कीचड़ में लथपथ करना।

उ०—वाहळ खाहळ लाज वचाई, कादै लोळण काया। कांमण वैरण सांच कर कंथा, इण विध पाछा आया। —कायर री गीत

२ मोड़ना, झुकाना।

३ फंसना, उलझना।

ज्यूं—कांटां, भूरटां में लोळीजणो।

४ दौड़ कर पकड़ना।

ज्यूं—गांववाळा चोरां नै तालर में आवतां लोळ लिया, कुत्तां टोगड़ी नै लोळ ली।

लोळणहार, हारो (हारी), लोळणियो—वि.।

लोळिओड़ो, लोळियोड़ो, लोळयोड़ो—भू. का. कृ.।

लोळीजणो, लोळीजवो—कर्म वा.।

लाळणो, लाळवो—रू. भे.।

लोलणो, लोलवो—१ तड़फना, लुटना।

उ०—हार ग्रोड़ती, वलक मोडती, आभरण भांजती, वस्त्र गांजती, किंकणीकलापुच्छोडती, माथउ फोडती, वक्षःस्थल ताडती कुंतल-कलाप रोलती, प्रथ्वीतल लोलती। —व. स.

२ देखो 'लोळणो लोळवो (रू. भे.)

लोलणहार, हारो (हारी), लोलणियो—वि.।

लोलिओड़ो लोलियोड़ो लोल्योड़ो—भू. का. कृ.।

लोलीजणो लोलीजवो—कर्म वा.।

लोळमी-वि.—१ मुड़ने वाली

उ०—१ तठा उपरांत करिनै राजांन सिलांमति कावली कूतरा लाहोरी कूतरा, विलायती कूतरा, लोळमी लालमी जीभ रा वळिमें पूंछ रा, लापड़ै कांन रा। —रा. सा. सं.

लोला-सं. स्त्री.—१ जीभ, जिव्हा। (डि. को.)

२ राठौड़ वंश की एक शाखा। (वां. दा. ख्यात)

लोळाणो, लोळावो—१ मिट्टी या कीचड़ में लथपथ कराना।

२ मोड़ना, झुकाना।

३ उलझाना, फंसाना।

लोळाणहार, हारो (हारी), लोळाणियो—वि.।

लोळायोड़ो—भू. का. कृ.।

लोळाईजणो, लोळाईजवो—कर्म वा.।

लोळावणो, लोळाववो—रू. भे.।

लोलाणो, लोलावो—१ तड़फाना, लुटाना।

२ देखो 'लोळाणो, लोळावो' (रू. भे.)

लोलाहणहार, हारो (हारी), लोलाणियो वि.।

लोलायोड़ो—भू का. कृ.।

लोलाईजणो, लोलाईजवो—कर्म वा.।

लोलावणो, लोलाववो—रू. भे.।

लोळायोड़ो-भू का. कृ.—१ मिट्टी या कीचड़ में लथपथ किया हुआ.

२ मोड़ा हुआ. ३ उलझाया हुआ, फंसाया हुआ.

(स्त्री. लोळायोड़ी)

लोलायोड़ो-भू. का. कृ.—१ तड़फाया हुआ, लुटाया हुआ।

२ देखो 'लोळायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. लोलायोड़ी)

लोळावट-सं. स्त्री—१ मुड़ने या झुकने की क्रिया।

उ०—जुध सीस पडंत धडांह जोळा, वीजळ धक्क चरक्क वहै। गळिवांह लोळावट होय गळोवळ, गूथावरथ सुभट्ट ग्रहै। —गु. रू. बं.

लोळावणो, लोळाववो—देखो 'लोळाणो, लोळावो' (रू. भे.)

लोळावणहार, हारो (हारी), लोळावणियो—वि.।

लोळाविओड़ो, लोळावियोड़ो, लोळाव्योड़ो—भू. का. कृ.।

लोळावीजणो, लोळावीजवो—कर्म वा.।

लोलावणो, लोलाववो—१ देखो 'लोलाणो, लोलावो' (रू. भे.)

२ देखो 'लोळाणो, लोळावो' (रू. भे.)

लोलावणहार, हारो (हारी), लोलावणियो—वि.।

लोलाविओड़ो, लोलावियोड़ो, लोलाव्योड़ो—भू. का. कृ.।

लोलावीजणो, लोलावीजवो—कर्म वा.।

लोळावियोड़ो—देखो 'लोळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लोळावियोड़ी)

लोलावियोड़ो—देखो 'लोलायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लोलावियोड़ी).

लोलासन–सं. पु.—योग के ८४ आसनों में से एक, जिसमें पावों की स्थिति पद्मासन की तरह रखकर दोनों हाथों के करतलों(हथेलियों) को जमीन पर टिका कर उनके बल शरीर को ऊंचा उठाना होता है।

लोळियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ मिट्टी या कीचड़ में लथपथ किया हुआ. २ मोड़ा या झुकाया हुआ. ३ उलझाया या फंसाया हुआ।

(स्त्री. लोळियोड़ी)

लोलियोड़ौ—१ तड़फा हुआ।

२ देखो 'लोळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लोलियोड़ी)

लोली–सं. स्त्री.—मस्ती में सिर हिलाने की क्रिया।

उ०—तिण मांहे बादळा भांति भांति रा निजर आवै। तिण भांति केइक तौ गाहड़मल झोखा खाई रह्या छै। केइक वाका पाघड़ा रा लोली दे रह्या छै। केइक डाकी जमदूत। —मा. वचनिका

लोलु–वि.—जिव्हा रस का शौकीन।

उ०—जिस्यु वहुबोलानी जीभनु लोलु, जिस्यु कागनु डोलौ। ० जिस्यु धजनु अंचल, तिसिउ संसार चंचल वैराग्य। —व. स.

लोलुप–वि.—१ लोभी, लालची (डिं. को.)

२ उत्सुक, इच्छुक

लोलौ–सं. पु.—१ शिश्न, लिंग।

अल्पा. लोली।

सं. स्त्री—२ भग, योनि।

वि.—१ मूर्ख, अज्ञानी।

२ भोला, सीधा-साधा।

उ०—मुग्ध लोला तेह ना रंजववा आवरजवा भणी। —सष्टि शतक

लोळौ–स. पु.—१ वाण, शर।

उ०—दुरग अचीत वेरियौ देतां, पमगां आठ सहस पखरैतां। वीरारस जांगी गिर वागा, लोळा पुंज सिखर सिर लागा। —रा. रू.

२ वुत्ता, झांसा।

३ मांस पिण्ड।

लोल्या–सं. स्त्री—१ वासना, इच्छा।

उ०—नींदइं झकोल्या, मुकी संभोग नी लोल्या, स्त्री भरतार डमडोल्या —रा. सा. सं.

लोव—देखो 'लोह' (रू. भे.)

उ०—जीण मेरी बाई ये! मतै गया छै वे घोड़ा टारड़ा! तोड़ी बां लोवां री लगांम, जांमण की ये जाई, खेड़ी रा तोड़चा ये दुवकी दांवणा। —लो. गी.

लोवड़—१ देखो 'लोई' (मह. रू. भे.)

२ देखो 'लोवड़ी' (मह. रू. भे.)

उ०—वंधु बचायौ व्याळ जहर सूं, वैस जहाज तिरांणी। रवि रौ रथ ऊगतां रोक्यौ, आडी लोवड़ आंणी। —राघोदास भादो

लोवड़ियाळ, लोवड़ियाळी–वि.—लोवड़ी नामक ऊनी वस्त्र धारण करने वाली।

सं. स्त्री—देवी।

उ०—१ पथ पीर पैकंबर लार पुळचा, महमाय सूं आय आघोट मिळचा। भखिया नव पीर संताप भग्यौ, लोवड़ियाळ पगां पड़ रोण लग्यौ। —करणी जी रौ छंद

उ०—२ 'अभसाह' सहायति ईसरी लोवड़ियाळी लक्ख नव। रथ खेड़ि मिळी गिळवा रवद, रूप हद्द जैं सद्द रव। —रा. रू.

रू. भे.—लोवडियाळ, लोवडियाळी, लोहड़ियाळ लोहड़ियाळी

लोवडियाळ, लोवडियाळी—देखो 'लोवड़ियाळ, लोवड़ियाळी' (रू. भे.)

उ०—'वांकौ' कहै टळै दिन विखमा, धणियांणी नै धायां। लोवडियाळ ताप नह लागै, ओलै थारै आयां। —बां. दा.

लोवड़ी–स. स्त्री.—१ लोवड़ी नामक ऊनी वस्त्र धारण करने वाली देवी के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द।

उ०—जपियौ नांथू जाप, कव चालक कदमां रह्यौ। उण कुळ री अव आप, लाज रुखाळै लोवड़ी। —गणेशदांन लाळस

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष जो ऊन का बना होता है।

उ०—१ चारणां वरण पर कृपा नित चोवड़ी, तोवड़ी नको मां सूल तोलै। दिपै हव सांसणां अजादां दोवड़ी, एक इण लोवड़ी तणै ओलै। —खेतसी बारहठ

उ०—२ वरजती बाप रखावती व्याह, अंकन कुंवारी रहती सखी। ओढण लोवड़ी काटती झाड़, खेत कमाती जाट ज्यूं। —वी. दे.

उ०—३ वैणव वीजणियां वंधण विगताळ, लटूं घोतां रा खूजा लटकाळ। राती कांनी री पोतड़ियां रूड़ी, ऊनी लोवड़ियां वगला में ऊड़ी। —ऊ. का.

३ देखो 'लूंकार'

उ०—मूंगी छम लोवड़ियां लियां, विच विच चुन्नी चींवटा। खोढ मदीनां खड़ा मोहै, सकड़ सदीनां मीवटा। —दसदेव

रू. भे.—लोवडी, लोहडी

लोवडी—देखो 'लोवड़ी' (रू भे.)

उ०—नंदरवारी पाघडी, पामडी लोवडी, वादृणवही लोवडी। पछेडी चूनडी, गजवडी वोरी आवडि हसवडि सुवरणवडि। —व. स.

लोवळवाळी–वि.—लोवड़ी नामक वस्त्र, ओढने वाली।

उ०—सवै लोवळवाळीयां, न जांणु घण काय। ऊजळदंतो मार-वण, पदम जड़ावै पाय। —ढो. मा.

लोवांणियो-स. पु.—मुसलमानों की एक जाति या इस जाति का व्यक्ति।

लोवा-सं. स्त्री.—१ लोमड़ी।

उ०—चाला चउरास्या न लावी वार, आड़ी आवज्यो ईंघणहार। वूड मल्हा लोवा सीयमाल, चाल्यो राजा जाई भोवाल। —वी. दे.

लोसक-सं. पु.—ताना।

लो'सार—देखो 'लोहसार' (रू. भे.)

लोह-सं. पु.—१ लोहा नामक प्रसिद्ध धातु (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—राम भणै भण रांम भण, अवरां रांम भणाय। जिण मुख रांम न ऊचरै, ता मुख लोह जड़ाय। —ह. र.

२ शस्त्र प्रहार।

उ०—१ वव नयण विक्रम गजबोहां, लागां लड़ै असीचत्र लोहां। घारण चित्त सिरदार नजर धरि, असि तौरियौ सेरखां ऊपरि। —सू. प्र.

उ०—२ दोही तरफां लोह रा प्रभाव में कसर न राखी तथापि पश्चिम रो अधीस जांणि वारसुंदरी रै स्वभाव जय लक्ष्मी रो कटाक्ष तो भोळाराव री तरफ हुवो। —व. भा.

३ शस्त्र, हथियार।

४ तलवार।

उ०—स्रोन धार घर चलत, चलत लख पंक्ति पलच्चर। कातर विमुहे चलत, चलत समुहे नर हैमर। चलत लोह उत्ताल, सूल सरगदा परिघ्घन। चलत सोर सावत, मनहुं डंडूर वूंद घन। —ला. रा.

मुहा०—१ लोह करणौ=तलवार का प्रहार करना।
२ लोह भेळणौ=युद्ध करना।
३ लोह लेणौ=मुकावला करना।
४ लोह मांनणौ=हार स्वीकार करना।

५ लगाम, वलगा।

उ०—१ खित पुडि पडी भांति खुरांह, तीनां ऊरवरवं तुरांह। तपिए ताळुए उतंग, पीसै मुहे लोह पवंग। —गु. रू. वं.

उ०—२ पाइगाह मंडण चढण पाट, सांहणी छोड सिणगार थाट। लाखीक तणै मुंह दीध लोह, सोवन्न जोत नग जडत सोह। —गु. रू. वं.

वि.—अत्यधिक कठोर।

७ काला, श्याम। * (डिं. को.)

रू. भे.—लोव, लोहउ, लोहड़उ, लोहड़ो, लोहडो, लौहो, लोह।
मह.—लोहड़, लोहड।

लोह अभिसार-स पु.—१ दशहरा पर किया जाने वाला तलवार का पूजन।

उ०—पावस चौमासो आयां जक पड़ै घरै रहै जितरै चौमासो न आवै इतरै पैलां, सत्रुआं नै, घणी दहल पड़ै है—शोर भाजड़ री (भाग जांण री) घरोघर में तयारी हुवै है जदकै हुवां लोह अभिसार (दसरावै तरवार री पूजन) होवतां ही। —वी. स. टी.

२ सामरिकरीति।

लोहउ—देखो 'लोह' (रू. भे.)

उ०—करहा माळवणी कहइ, संभळि वोल्य सच्च। तातउ लोहउ ताहरइ, वयण न लागो जच्च। —ढो. मा.

लोहकरम्म-सं. पु.—पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक।

उ०—उपलकरम लेपकरम्म लोहकरम्म मणिकरम्म सुवरण्णकरम्म दासकरम्म। —व. स.

लोहकार-स. पु. [सं.] लुहार।

उ०—लोहकार उत्ताल मनहुं अरन घन गज्जिय। गजर मनहुं घरियार, जांम पूरन प्रति वज्जिय। —ला. रा.

रू. भे.—लोहकार

लोहड़—१ देखो 'लघु' (मह. रू. भे.)

उ०—केहरि छोटो वहुत गुण, मोड़ै गयंदां मांण। लोहड़ वडाई की करै, नरां नखत परमांण। —हा. झा.

२ देखो 'लोह' (मह., रू. भे.)

लोहड़उ—देखो 'लोह' (रू. भे.)

उ०—इसउ नहीं हो ठाकुरे! इसउ कीजइ-गळइ सात सइ सालि-ग्रांम तुळसी की माळा घातिजइ अचळेसर का आवास-थइ लोहड़उ करतां करतां गोरी-राजा का गूडरहइ जाइजइ। —अ. वचनिका

क्रि. प्र.—करणौ

लोहड़ियाळ, लोहड़ियाळी—देखो 'लोवड़ियाळ' (रू. भे.)

उ०—हिय मांझळ होळीह, अर सावत सुण उठती। झलकत झब-झोळीह, लोहड़ियाळी पुणच लग। —पा. प्र.

लोहड़ी—देखो 'लोवड़ी' (रू. भे.)

लोहड़ो—देखो 'लोह' (मह. रू. भे.)

उ०—१ कांन किसनावत। मोटै कुंडळ मांहे भाटियां सूं वेढ की तद पूरै लोहड़ै पड़ियो। —नैणसी

उ०—२ इण भांत कमंधां अगळी, रूक वजायो रोहड़ै। वीरांण कि आरण वावरै, ज्यां घण तत्त लोहड़ै। —रा. रू.

२ देखो 'लघु'

उ०—तरै जेसो मंडळीक रो लोहड़ो भाई, तिण सारी धरती रो भार संभायो। —नैणसी

लोहछक, लोहछक्क, लोहछाक-वि.—शस्त्र प्रहारों से क्षत-विक्षत, घायल।

उ०—१ झालो सिंह देवतो प्रथम अणी में ही लोहछक होय प्रांणां रा पोखण में लुभायो थको प्रमदा री पांहुणो अपूठो खड़ियो। —वं. भा.

उ०—२ तडछिया जांहि गोडिया तांण, जमदढां टेवउ ऊठे जुवांण। लागे भड लोहे लोहछाक, घूमंति जांण पीयें ऐराक। —गु. रू. वं.

उ०—३ या सुणतांही लोहछक होय पडियें थकें ही मलप लेर चालुक्य राज हमीर कैमांस री कांख में चंपिया आपरा स्वांमी नूं झाटकियो। —वं. भा.

लोहडिया-सं. पु.—राजलोक वर्ग विशेष का नाम।

उ०—लोहडिया दीवटिया मसूरिया तलार तंत्रपाल चामरधार बालउ अंतेउर कांमतेउर। —व. स.

लोहटोप—देखो 'लोहलटोप' (रू. भे.)

लोहड—१ देखो 'लोह' (मह., रू. भे.)

उ०—करहा माळवणी कहइ, संभळि वोल्यो सव्व। तातो लोहड ताहरइ, वळि लागो ना वद्ध। —ढो. मा.

लोहडियाळ—शस्त्रों से सुसज्जित, लेस।

उ०—उडतांण ग्रहे कर मूठ अड़ां, भड़ धीवांय लोहडियाळ भड़ां। भुरजाळाय जोर रखो भुजरो, घण घोडांय सीस घलां गजरो। —पा. प्र.

लोहडो—देखो 'लोह' (रू. भे.)

उ०—अरस हूंज ऊतरे एक वर अच्छर वरिया, एक पडे लोहडे लोहछक्का लालुरिया। —गु. रू. वं.

२ देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—मंडोवर मुरधरा खेत लोहडा खुरसांणह। नर समंद तै नांम, सहू सिर हिंदुसथांनह। —गु. रू. वं.

लोहण—१ देखो 'लोही' (रू. भे.)

उ०—तस जंत्र जंत्री तांणिया, वरमाळ गह गिरवांणिया। घण वहण लोहण सघण घण, हुय गजण कण २ असण हण। —र. रू.

२ देखो 'लोह' (रू. भे.)

लोहणो, लोहबो-क्रि. स.—पोंछना।

उ०—तठा उपरांयत पाळा झारा चळू करण रे पग मंगायजे छै। चळू कीजे छै। कुरळा कीजे छै। हाथा लोहण नूं रूमाल हाजर हुवा छै। —खीची गंगेव नींबांवत री दो-पहरो

लोहणहार, हारो (हारी), लोहणियो—वि०।

लोहिओड़ो, लोहियोड़ो, लोह्योड़ो—भू० का० कृ०।

लोहीजणो, लोहीजबो—कर्म वा०।

लोहतचंदण—देखो 'लोहितचंदण' (रू. भे.)

लोहतम-सं. पु. [सं. लोह+उत्तम] १ स्वर्ण, सोना। (अ. मा.)

लोहतरंग-सं. स्त्री.—लोहे का बना एक बाजा जो लोह के डंडों से बजाया जाता है।

लोहतोड़ो-सं पु.—ऊंट। (ना. डि. को.)

लोहघात-सं. स्त्री.—तलवार। (अ. मा.)

लोहबद्ध-सं. पु.—हथियार विशेष।

उ०—यंत्रमुक्त मुक्तामुक्त दुस्फोट तरवारि आनि तेल लोहबद्ध लुडि एवंविध आयुध विसेसि ढांचा भरियां। —व. स.

लोहमोगळ लोहमोगल-सं. पु.—लोह की बनी अर्गला।

उ०—गढ गिरुउ अनइ विसमउ, जेहनउ पायउ पातालि पयठउ, महागज तणा जिसा पाग तिसा कोसीसां गरुई पोलि, निविड कमाड, लोहमोगळ, विज्ञांहरी तणी पद्धति। —व. स.

लोहमइअंगी-सं. पु. —कवच विशेष।

उ०—असवार असवारि, पायक पायकि, भथाइतु भथाइति, सरासरि खड्गा खड्गी, गदागदि केसाकेसि, दंतादंति, मुस्टामुस्टि एक अंगी लोहमइअंगी करी। —व. स.

लोहमराट—देखो 'लोहमराट' (रू. भे.)

उ०—विढता वीर ति वाट चाल्या राइ चाली हुवइ। कह खूंचइ कह खिलसता, लोहचा लोहमराट। —अ. वचनिका

२ दृढ, मजबूत।

लोहमिपोलि-सं. स्त्री—लोहे की पोल या दरवाजा।

उ०—जे नगर मांहइ चुरासी चुहुटां तणी उलि, बारे दरवाजे लोहमिपोलि। —व. स.

लोहमीवाड़-सं. स्त्री.—अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित।

उ०—बीस लाख असवार पाखरीआ लोहमीवाड़ किआं, बगतर, हाथल, टोप, झिलमें चिलकतां ऊपरै पूरी सिलहा किआं। —राजान राउतरो वात-वणाव

लोहमे-वि. [सं. लोहमय] लोहे का, लोह निर्मित।

उ०—पवै गिरां पगार पोळि, लोहमे कपाट ए। स्त्रिगमेर सीस जांणि, ओपियंत आट ए। —गु. रू. वं.

लोहर-सं. पु.—एक देश का नाम।

उ०—डाहला, नवलक्ष, लोहर नवलक्ष, लावनवलक्ष हीरालूलि। —व. स.

लोहलंगर-सं. पु.—१ जहाज का

वि.—दृढ, मजवूत ।

लोहलटोप-सं. पु.—युद्ध के समय सिर पर धारण करने का लोहे का टोप ।

उ०—लोहलटोपा वंध धूपा, कडी ट्टपा कस्सए । ग्राठी ग्रलोजा मूठ तोजा, घल्ल मोजा तस्सए । —पा. प्र.

रू. भे.—लोहटोप ।

लोहलठ, लोहलाठ, लोहलाठियांणी-सं. पु.—शेर, सिंह । (ना. डि. को)

वि.—दृढ, मजवूत ।

उ०—१ लोहलाठ कड़ावंध संघी खड़ै ग्राभ लागा, नागा घड़ा वंध ग्राहुड़ै निघात । काळा कूंभां के खंड़ां नरिंद वाळा झड़ै किनां, पड़ै पव्वै माळा इद्रवाळा वज्रपात । —हुकमीचंद खिड़िया

उ०—२ लोभी पनां ग्रांनाड़ा सग्रांमां लोहलाठीयांणी, वागां फोजां फाड़ा पोड़ां झाठीयांणी वेस । पढी संथां मेवाड़ा ग्रारोह वीर पाटीयांणी, पांणीपंथा काठीयांणी घाड़ा पमंगेस । —महादांन महड्ड

उ०—३ खतंगा कराड़े झाट वागै राठरीठ खागै, जागै पाट प्रेत काळी ग्रनाढ जुग्रांण । सतारा हजारां ग्राठ लोहलाठ ग्रायो सजै, 'रासा' रा तीन मैं साठ नीमजे 'ग्रारांण' । —पहाड़खां ग्राढो

लोहवात-सं. पु.—१ एक प्रकार का वात रोग ।

उ०—ग्रथ रोगा, कास स्वास ज्वार भगंदर गुल्मवात गल्लवात, रक्तवात भस्मवात उस्णवात ग्रग्निवात लोहवात लूतिवात । —व. स.

लोहसंकु-सं पु. [सं. लोहशंकु] १ पुराणानुसार एक नरक का नाम ।

२ लोह का कांटा ।

लोहसार-सं. स्त्री —१ तलवार । (डि. ना. मा.)

२ लोह भस्म । (वैद्यक)

रू. भे.—लो'सार, लोहसार

लोहांण—देखो 'लौहांण' (रू. भे.)

लोहांवोह—शस्त्र प्रहार ।

उ०—पंखण समर विचार धरै पुर, चुतरंग वर पूरै कुण चाड । लोहांवोह 'लालावत' लेतौ, वळ करत्तौ वांका यर वाढ । —सांगा रौ गीत

लोहाकार—देखो 'लुहार' (रू. भे.)

उ०—लोहाकार उत्ताल मनहु ग्रैरन घन गज्जिय । गजर मनहु घरियार, जांम पूरन प्रति वज्जिय । —ला. रा.

लोहागर-स. पु.—लोह निकालने का स्थान, लोह खान ।

उ०—किहां करीरतरु, किहा कल्पतरु, किहा लोहागर किहा वयरागर. किहा गुंजाफल, किहा मुक्ताफल, किहा काचखंड, किहा पाथरखंड । —व. स.

लोहागिरी-सं. स्त्री.—वैष्णव सम्प्रदाय की एक शाखा ।

लोहायळ-सं. पु.—नाथ-सम्प्रदाय का संन्यासी ।

उ०—लोहायळ ग्रन चोलिए सुंदर, नागायरूजरण मैं नहुं दासिक । मैं न मछंदर मैं न जळंधर, मैं हूं री गोरख तूं झरडा लख । —पा. प्र.

लोहार—देखो 'लुहार' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ ग्रासत सगत ऊघरां ग्राचां, जस जालम ग्रखमाल जिसो । लोह द्रोयण ताछै लोहलंगर, ग्रो 'लालो' लोहार यसो । —लालसिंह राठौड़ रौ गीत

उ०—२ काळै सार वडे कारीगर, जींजरिया रण जुवा जुग्रा । पर लोहार किया सर पाधर, हालै सात्रव जेर हुग्रा । —तेजसी सांदू

उ०—३ राव लाखणसी पिण सांभळियौ जे सोनगिरी नें ले गयौ । लोहारां नैं बुलाया । इसौ भालौ घड़ौ तिण सुं एथ वैठा निबळा नैं मारां । —वीरमदे सोनगरा री बात

(स्त्री. लोहारण)

लोहाळ-सं. पु.—शस्त्र प्रहार ।

उ०—'रिणमाल' ऊठि नरलिंघ रुख, पय ग्रहि लात पछाड़िया लोहाळ ग्रठारहि पिंड लगां, पिसण ग्रठारह पाड़िया । —सू. प्र.

लोहित-सं. पु. [सं] १ रगसाल । (ग्र. मा.)

२ महादेव का त्रशूल ।

[सं. लोहित] ३ रक्त, खून ।

४ मंगलग्रह ।

५ सर्प विशेष ।

वि.—१ रक्त से सना हुग्रा ।

२ लाल रंग का ।

रू. भे.—लोहित्त ।

लोहितक-सं. पु. [स.] १ लाल मणि ।

२ मंगल ग्रह ।

लोहितचंदण-सं. पु —१ केसर । (ग्र. मा., नां. मा.)

२ लालचंदन ।

रू. भे.—लोहतचंदण

लोहितभाळ-सं. पु.—शकर, महादेव । (नां. मा.)

लोहितांग-स. पु. [सं.] मगल ग्रह । (ग्र. मा.)

लोहिताक्ष-सं. पु.—एक प्रकार का रत्न ।

उ०—हरिन्मणि चूनडी लोहिताक्ष मसारगल्ल हंसगरब्भ पुलक ग्रंक ग्रंजन ग्ररिस्ट चिंतामणि । —व. स.

लोहित्त—देखो 'लोहित' (रू. भे.)

उ०—हुवै धत्त लोहित्त मैंमत्त हाला, नसारा किसा पार सूळा निवाळा। मधू-मास ग्रासोज में रास मंडे, तिहूँ लोक री डोकरी तेथि तंडे। —मे. म.

लोहिय—देखो 'लोही' (रू. भे)

लोहियो–सं पु.—लोहे की वस्तुओं का व्यापार करने वाला।

लोही–सं. पु.—रक्त, खून।

उ०—पछै राव जिण वड़ हेठै वैठो थो, सु वड़ लोही वूठो, तोही समझै नहीं। —नैणसी

रू. भे.—लुही, लोई, लोहू

अल्पा.,—लोहीड़ो

लोहीड़ो—देखो 'लोही' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—धरती नैं सींचां म्हैं तो लोहीड़ै री धार। इतरी कीकर मांगै ग्रो वीघोड़ी सरकार। —चेतमांनखां

लोहीझांण–वि.– खून से लथ-पथ, तरवतर।

रू. भे. - लोईझांण

लोहू—देखो 'लोही' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

लौं–ग्रव्य.—तक, पर्यन्त।

उ०—१ कोटि वरस लौं राखिये, वंसा चंदन पास। दादू गुण लीयें रहै, कदे न लागै वास। —दादूवांणी

उ०—२ तो वडारण कही, ग्राज लौं तो ज्यूं री त्यूं छै। —नापे सांखलै री वारता

रू. भे.—लौं, लो।

लौंग—देखो 'लवंग' (रू. भे.)

उ०—तेजपुंज ग्रासप ग्ररोगीजै छै। प्यार नैं सोंस दे दे नैं प्याला दीजै छै। घणां लौंग पांन वीड़ा रा रस लीजै छै। —राजांन राउत री वात-वणाव

लौंठो—देखो 'लांठो' (रू. भें.)

उ०—१ 'जोगो' किण हि न जोग, सह जोगो कीधो मुकव। लौंठा चारण लोग, तारण कुळ खत्रियां तणा। —महाराजा मांनसिंह

उ०—२ जणां कुंवरसी दीठो जे लियां तो वणै नहीं। ग्रागै लौंठा मांणसां सूं कजियो छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

लौंड—देखो 'लौंडो' (मह. रू. भे.)

उ०—तद वां देखनैं कहियो। गोळी री तो न देणी। इण लौंड री भी मजवूती देखणी। —प्रतापसिंह म्होकमसिंह री वात

लौंडापण, लौंडापणौ—१ लौंडा होने का भाव, लड़कपन।

२ लौंडेबाजी के कार्य का भाव।

लौंडावाज—देखो 'लौंडेवाज' (रू. भे.)

लौंडावाजी—देखो 'लौंडेवाजी' (रू भे.)

लौंडी–सं. स्त्री.—दासी, सेविका।

लौंडेवाज–सं. पु.—१ वह लड़का या पुरुष जो लड़कों के साथ प्रकृति विरुद्ध ग्राचरण करता हो। (वाजारू)

२ (स्त्री) जो नवयुवकों से प्रेम करती हो।

रू. भे.—लौंडावाज।

लौंडेवाजी–सं. स्त्री.—१ लौंडेवाज का कार्य।

२ लौंडेवाज होने की ग्रवस्था या भाव।

रू. भे.—लौंडावाजी।

लौंडो–सं. पु. [स्त्री. लौंडी, लौंडिया] १ लड़का, नवयुवक।

२ ग्रबोध या नासमझ बालक।

३ ऐसा लड़का जिसके साथ लोग ग्रप्राकृतिक ग्राचरण करते हों।

मह.—लौंड।

लौंण—देखो 'लवण' (रू. भे.)

उ०—ज्यों जळ पैसै दूध में, ज्यों पांणी में लौंण। ऐसे ग्रातम रांम सों, मन हठ साधै कौंण। — दादूवांणी

लौंद–स पु.—१ ग्रधिमास, मलमास।

लौंदो—देखो 'लूंदो' (रू. भे.)

लौ–सं. स्त्री.—१ दीप-शिखा।

२ ज्योति।

३ ग्राग की लपट, ज्वाला।

४ इच्छा, चाह।

५ लगन, चित्तवृत्ति।

उ०—जनम जनम को साहिव मेरो, वाही सों लौ लागी। ग्रपणा पिया संग हिल-मिल खेलूं, ग्रधर सुधारस पागी। —मीरां

क्रि. प्र.—लागणी।

६ देखो 'लौं' (रू. भे.)

७ देखो 'लय' (रू. भे.)

रू. भे.—लोइ, लोय, ल्यौ।

लौकिक, लौकीक–सं. स्त्री. [सं. लौकिक] १ परम्परा।

उ०—१ खतरनाक उमर री लुगायां कई वार ठाकर री मौजूदगी नै भूल जावती ग्रर लौकिक मरजाद नैं तोड़ नांखती। —रातवासो

उ०—२ पराई लुगाई ग्रर पराया मोट्यार सारू मन तागड़ा तोड़ै पण लौकीक री मरजाद सारू ढकणौ उघाड़चां नीं ग्रवै। —फुलवाड़ी

२ समाज।

उ०—सती लुगायां रै चरित रा चाळा म्हैं घणा घणा दीठा डर तो सगळो लौकीक री व्है । —फुलवाड़ी

३ लोकवृत्तान्त, सांसारिक हाल ।

उ०—निरभय नारायण सुद्धी सिर नाऊं, परहर संसय भय बुद्धी वर पाऊं। संवत छपनै री केवण सिरलोको, लौकिक लेवण नै साभळज्यो लोको । —ऊ. का.

४ व्यवहारिकपन, व्यवहार कुशलता ।

वि.-१ लोक संबंधी. २ इस लोक से संबंध रखने वाला. ३ लोक व्यवहार से संबंध रखने वाला, व्यवहारिक ।

लौकेस—देखो 'लोकेस' (रू. भे.)

लौड़णौ, लौड़बौ - देखो 'लोड़णौ, लोड़बौ' (रू. भे.)

लौड़णहार, हारौ (हारी), लौड़णियौ—वि० ।
लौड़िग्रोड़ौ, लौड़ियोड़ौ, लौड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लौड़ीजणौ, लौड़ीजबौ—कर्म वा० ।

लौड़ियोड़ौ—देखो 'लोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लौड़ियोड़ी)

लौड़ौ—१ देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—इण वास्तै म्हनै तौ तुलै है की वाभी जी साहब म्हारै पती लौड़ी सोक वसावैला अरथात जुद्ध में मारीज अपछरा वरसी हूं सत करनै जासूं जितरै लौड़ी सोक धकै मिळसी । —वी. स. टी.

(स्त्री. लौड़ी)

२ देखो 'लंड' (रू. भे.)

लौचणौ, लौचबौ—देखो 'लोचणौ, लोचबौ' (रू. भे.)

उ०—कहर म्लेच्छां सहर डहर कंद काटिवा, लहर दरियाउ निज घरम लौचै। हिन्दुओं राउ आइ दिली लेसी उरै, सबल मन मांहि सुलतांण सोचै । —घ. व. ग्रं.

लौचणहार, हारौ (हारी), लौचणियौ—वि० ।
लौचिग्रोड़ौ, लौचियोड़ौ, लौच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लौचीजणौ, लौचीजबौ—कर्म वा० ।

लौट—देखो 'लोट' (रू. भे.)

लौटण—देखो 'लोटण' (रू. भे.)

उ०—स्रोण के फुंहारे आसमांन को छूटै, लगौ धख जमीं पर लौटण ज्यूं लुट्टै । ऐसे किसबूं का हुन्नर करि मुजरै को आवै, कड़े सूंनै की गुरज इनांमूं में पावै । —सू. प्र.

लौडस्पंकर-सं पु. [अं. लॉउडस्पीकर] विपुल भाप, ध्वनि विस्तारक यंत्र ।

उ०—सगळाई गांव वाळा मिळनै एक गांवसांऊ रेडियो अर लौडस्पंकर ले आवौ । —अमरचूनड़ी

लौढौ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—'गोम्ररधन' गाढिम लोह-गाहड़, संग्राम-चंद समोभ्रम सनद्ध। वाळा-पुर विढियौ वळ-प्रमांण, वड रावत लौढौ सुरगमांण । —गु. रू. बं.

लौर—देखो 'लोर' (रू. भे.)

उ०—सारंग वैरी सातमां, मीठा गावै मोर । क्यां वरसै बादळी, लूंवा-भूंबा लौर । —मयाराम दरजी री बात

लौलीण—देखो 'लवलीन' (रू. भे.)

उ०—सहज मंडळ धंमकही, वाजै अनहद वीण । नोरंगी वांणी तन रतन, साध भगत लौलीण । —आलम जी

लौह—देखो 'लोह' (रू. भे.)

लौहकार—देखो 'लोहकार' (रू. भे.)

लौहड़ौ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

लौहचारक-सं. पु.—एक भीषण नरक का नाम । (पौराणिक)

लौहमराट-सं. पु.—शस्त्र चलाने में प्रवीण, योद्धा ।

उ०—१ आरण कियौ उछाह, वीरातन वद्धियौ । मारु लौहमराट, समू सभ चढ़ियौ । आरण मभ अखड़ैत उडंडा ओरिया । भिलिमां वीजळ भाट, निराट निझोरिया · —किसोरदांन बारहठ

उ०—२ 'मायावत' रांमसि लौहमराट, भपेटत मीर घटां खग भाट । समोभ्रम 'मांडण' दारण सूर हठी खळ मीर बरावत हूर । —सू. प्र.

रू. भे.—'लोहमराट'

लौहसार—देखो 'लोहसार' (रू. भे.)

लौहांण-सं. पु.—एक राजपूत वंश ।

उ०—भिड़िया तिकै मुंवा काइ भ्रमिया, जट लौहांण खत्री जोख-मिया, जुड़ि गज खेत पड़े बौह जिसड़ा, इकसठ समर जीपियो इसड़ा । —सू. प्र.

लौहित—देखो 'लोहित' (रू. भे.)

लौहित्य-सं. पु.—१ ब्रह्मपुत्र नदी का नाम ।

२ एक पर्वत का नाम ।

३ वरमा की सीमा पर स्थित प्रदेश का प्राचीन नाम ।

४ लालसागर का पुराना नाम ।

लौहोडौ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—कमधज्जां नाहूल लसक्कर, लौहोडौ खुरसांण मंडोवर । हेरि कतार नयर डूनाडै, मांडै डांण रांण मेवाडै । —गु. रू. बं.

(स्त्री. लौहडी)

ल्याकत—देखो 'लियाकत' (रू. भे.)

ल्या'ड़ो—देखो 'लाड़ायो' (रू. भे.)

ल्याणो, ल्याबो—देखो 'लाणो, लावो' (रू. भे.)

उ०—१ ए मा ल्याग्रो ल्याग्रो पांचूं हथियार, तो पांचूं ल्याग्रो म्हारा कापड़ा जी। घरण नैं भेजांगा बाप कै जी। —लो. गी.

उ०—२ नागही नूं कहण लागो, 'म्हांनूं थांहरी वहू दिखावो' तरै नागही वहू नूं सिरणगार ल्याई। वहू रा पग धरती लागै नहीं। —नैणसी

उ०—३ तरै भींम सांमो जाय पगै लागो। आपरो डेरो नींबड़ी हुतो, तठै साथै तेड़नै ल्यायो। —नैणसी

ल्याणहार, हारो (हारी), ल्याणियो—वि०।

ल्यायोड़ो—भू० का० कृ०।

ल्याईजणो, ल्याईजवो—कर्म वा०।

ल्यायोड़ो—देखो 'लायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. ल्यायोड़ी)

ल्याळ—देखो 'लाळ' (रू. भे.)

उ०—व्याह रो नांवो कांनां पड़ियो, हाथ सूं काच छूट'र टुकड़ा हुयग्या। दलाल सांमो मूंडो ढीलो करघो, राफां तिड़ाई जद ल्याळ चाल पड़ी। —दसदोख

ल्याळी-सं. पु.—भेड़िया।

उ०—सू गाडर ल्याळियां आगै बच्चां नूं ले रही है, तारां नापै जी ल्याळियां नूं ताड़ दूर किया। —द. दा.

रू. भे.—लाळी।

ल्यावणो, ल्यावबो—देखो 'लाणो, लावो' (रू. भे.)

उ०—१ म्हारै गळै नै हारज ल्याव, म्हारा हंजामारू यांही रेवो जी। —लो. गी.

उ०—२ माजी! थे म्हारो मुंह दीठो जीवतै रो। हिवै राखाइत म्हारै कनारै ल्यावो। ज्युं हुं हाथ लाऊं, ज्यूं इयै नूं मुगत हुवै। —नैणसी

उ०—३ ल्यावै लोड़ि पराइयां, नहं दे आपणियांह। सखी अमीणा कंथरी, उरसां झूंपड़ियांह। —हा. झा.

ल्यावणहार, हारो (हारी), ल्यावणियो—वि०।

ल्याविश्रोड़ो, ल्यावियोड़ो, ल्याव्योड़ो—भू० का० कृ०।

ल्यावीजणो, ल्यावीजबो—कर्म वा०।

ल्यावियोड़ो—देखो 'लायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. ल्यावियोड़ी)

ल्यो—देखो 'लौ' (रू. भे.)

उ०—१ दादू मरणा मांड कर, रहै नहीं ल्यो लाइ। कायर भाजे जीव ले, आ रण छांडे जाइ। —दादूवांणी

उ०—२ दादू अहनिस सदा सरीर में, हरि चिंतन दिन जाइ। प्रेम मगन लै लीन मन, अंतर गति ल्यो लाइ। —दादूवांणी

ल्रपक-सं पु. [सं. लूपक] १ उनचास क्षेत्रपालों में से ४१ वां क्षेत्रपाल।

ल्रपतकेस-सं. पु. [सं लूपतकेस] १ उनच्चास क्षेत्रपालों में से ४२ वां क्षेत्रपाल।

ल्हसकर—१ देखो 'लसकर' (रू. भे.)

उ०—१ सांम्हा ल्हसकर मेळि (ल्हि) या, जाळंधर 'अगजीत'। खड़ आयो ईवरांमखां, मिळण जवण स-जमीत। —रा. रू.

उ०—२ लूटीयो ल्हसकर आंण वासि. कर छोडियो आलिम। जीत्यो पवाड़ो धरम आडो आवीयो क्रत करम। —प. च. चौ.

ल्हसकरियो—१ देखो 'लसकरियो' (रू. भे.)

२ देखो, 'लसकर' (अल्पा. रू. भे.)

ल्हसण—देखो 'लसण' (रू. भे.)

ल्हास-सं. स्त्री.—१ फसल की कटाई, बुवाई आदि के समय सामुहिक रूप से कार्य संलग्न व्यक्तियों को खिलाये जाने वाला भोज, भोजन।

उ०—अरि चारो जड़ हूंत ऊपाड़ै, साकुर घोरि हांक सर। ल्हास करै फौजां वड लंगर, क्रोध निनांणी हमल कर। —लालसिंह राठौड़ री गीत

क्रि. प्र.—करणी।

२ देखो 'लास' (रू. भे.)

उ०—घोड़ी म्हारी चंद्रमुखी इंदरलोकां सै आई हो राज। आई रतनाळी हो तीजण, ल्हास बंधाई हो राज। —लो. गी.

रू. भे.—ला', लास, लाह।

ल्हासक-वि. [सं. लासक] १ खिलाड़ी, क्रीड़ा प्रिय।

२ इधर उधर हिलने वाला।

ल्हासणो, ल्हासबो-क्रि. अ.—१ भागना, दौड़ना।

उ०—धडच कनांता धार सूं, गौ रहवास मझार। नूरमली लख ल्हासतै मीर भली तरवार। —रा. रू.

ल्हासियो-वि.—'ल्हास' में जाकर काम करने वाला।

रू. भे.—लहासियो, लासियो, लाहियो, ला'यो

ल्हीक—देखो 'लीक' (रू. भे.)

ल्हेस—देखो 'लैस' (रू. भे.)

उ०—१ तरै जगदेव जी ल्हेस काढि चिलै आंणि नै कह्यो, नाहरी तूं रांड री जात छै, तूं हत्या मती चाढे, मारग सूं उठि नै डावी जीमणी टळि वैसि। —जगदेव पंवार री वात

उ०—२ तिसै ल्हेस री दीघी । तिको लागी टीकं माहैं नै मूळद्वारै नीकळी । —जगदेव पंवार री बात

ल्हेसवो—देखो 'लसोड़ो' (रू. भे.)

ल्होड़-सं. स्त्री. [सं. लघु] १ छोटापन, लघुता ।

२ दो पत्नियों में से छोटी ।

ल्होड़ती-वि.—छोटी वाली ।

उ०—जंवाभ्रीड़ा मेरी वडोड़ी से ल्होड़ती परणायूं रे क लाडो मेरी ना चलै । —लो. गी.

ल्होड़ियो—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—जद हरियाली ले घर आई मनै ल्होड़ियै देवर देगी मं भूवा ए नींद घणेरी ।

ल्होड़ो—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—ल्होड़ी-वडी का दोय स्याळ, मंगावोजी । सायबा, नवराढ री भांगड़ली छणावो । —लो. गी.

(स्त्री. ल्होड़ी)

ल्होड्यो—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—विदली तो नणद गमाई, म्हारै ल्होड्यो देवर पाई है नणदल बिंदली ल्ये । —लो. गी

—*—

Forwarded With Compliments From
The Department Of Education
Government of India.

पृष्ठ ३६५३से ४४५२ (य र ल) शब्द संख्या १२४०५

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]

(प्रथम जिल्द)



संपादक
(संपादन, परिवर्द्धन एवं संशोधन कर्ता)
सीताराम लाळस

व्युत्पति आदि द्वारा परिष्कारक
स्व० पं० नित्यानन्द शास्त्री दाधीच
[आशुकवि, कविभूषण, व्याकरण साहित्य, कोशादि तीर्थं
श्री रामचरिताब्धिरत्नम् महाकाव्य आदि के प्रणेता]

कर्ता
सीताराम लाळस
स्व० उदयराज उजळ

प्रकाशक
चौपासनी शिक्षा समिति
जो ध पु र .